

॥ पुनःसंस्करणीयानतयोविज्ञसयश्च ॥

श्रीः ॥ ज्ञेयपरिष्ठाद्विनयेन दोषहानाय विज्ञप्तिरलं कृतास्ति ॥ पूर्वकनीया पुनरंकेने तु पुनर्न तामत्र नति विधास्ये ॥ १ ॥ श्रीशेच्छावशतो मयाश्चिह पुनर्लब्धेऽस्य संशोधने याज्ञिक्यप्रवणान्वहूननवमान्ग्रथान्विलोक्यादयात् ॥ पूर्वावृत्तिगताः प्रमादजनिता दोषा मदक्ष्णो. पयं प्राप्तास्ते पुनरंकेनेऽपि च यथाप्रज्ञं पुनर्मार्जिताः ॥ २ ॥ दोषाः प्रमाददृक्चापल्याव्युत्पत्तिनिबधनाः ॥ सदा सर्वत्र सर्वेषां प्रभवतीश्वरादृते ॥ ३ ॥ न शास्त्र-वरुणालयोऽत्र सुतरो ह्यपारत्वतो निसर्गकरुणालयास्तु कृतिनो ह्युदारत्वतः ॥ क्षितावखिलविन्न कोऽपि नरधर्मिणी हि च्युतिर्नतिः सकलमार्जनीति रचये गुणिभ्योऽद्य ताम् ॥ ४ ॥ न निजवदनोद्विक्तो भूयात्कचित्कवलः श्रिये जडपरिकरो अयारभेऽप्यय न तथा मम ॥ द्विजगणकृतेऽनिद्यः सेवोद्यमो निजशक्तितो वियति विहगा नीचैरुच्चै. पतंत्यनुवासरम् ॥ ५ ॥ आस्तां विस्तृतफलगुवल्गनगिरा नूतै. सुरनैरिव प्रलैः प्रोद्धलितेऽग्निबाण ५३ विपयैरायासत. शोधिते ॥ श्रीशः पूरयताद्यदक्षरपदभ्रंशोत्थमूनाधिक विद्वासः करुणादृशोनमधिकं समार्जयेयु. सदा ॥ ६ ॥ नतितितिनुतिविज्ञप्तिष्वन्यतमाराधिता ह्यघ विबुधाः ॥ भंत्यखिलाभिर्दोषान्कि नो न हरेयुरर्चिताः सुबुधाः ॥ ७ ॥ अर्थमेनमनवं हृदि कृत्य ननमीति विदुषोऽजलिपूर्वम् ॥ विद्वरिष्ठनुतलक्षमणजन्मा

॥ २ ॥

वासुदेवपणशीकरशर्मा ॥ ८ ॥

प्रस्तावना

यो देव सवितास्माक धियो धर्मोदिगोचरे । प्रेरयेत्तस्य तद्भर्गस्तद्वरेण्यमुपास्महे ॥



मुक्ताविद्रुमहेमनीरधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्ष्णैर्युक्ताभिदुकलानिचक्षमुकुटा तत्त्वार्थवर्णोत्तिकाम् ।
गायत्री वरदाभयाकुशकशाशुभ्र कपाल गुण शख चक्रमथारविद्युगुल हस्तैर्वहती भजे ॥

अथब्रह्मकर्मसमुच्चयस्थविषयानुक्रमः ।

| विषया | पत्र | विषयाः | पत्र. | विषया | पत्र |
|--------------------------------------|------|--------------------------------|-------|-------------------------------|------|
| रंगरंजितमंडलानि । | | आह्निकादिप्रकरणम् ॥ १ ॥ | | ११ कुशग्रहणविधिः.... | ७ |
| १ सर्वतोभद्रमंडलम् | | १ मंगलमुपोद्धातश्च | १ | १२ मालालक्षणेसंस्कारश्च | ७ |
| २ द्वादशलिंगतोभद्रम् (हरिहरमंडलं) | | २ प्रातःस्मरणम् | १ | १३ प्रातःसंध्या | ८ |
| ३ अष्टलिंगतोभद्रमंडलम् | | ३ प्रज्ञाविवर्धनस्तोत्रम् | ३ | १४ अग्निकार्यब्रह्मचारिणः ... | ११ |
| ४ चतुर्लिंगतोभद्रमंडलम् | | ४ मूत्रपुरीषोत्सर्गविधिः.... | ३ | १५ औपासनःसायंहोमः | १२ |
| ५ एकोद्भवलिंगतोभद्रमंडलम् | | ५ दंतधावनविधिः.... | ४ | १६ प्रातर्होमः | १३ |
| ६ ग्रहदेवतामंडलम् | | ६ प्रातःस्नानविधिः | ४ | १७ द्वादशनमस्काराः | १३ |
| ७ गृह्वास्तुमंडलमेकाशीतिपदम् | | ७ उष्णोदकस्नानविधिः | ५ | १८ तृचाकल्पनमस्काराः | १३ |
| ८ प्रासादादिवास्तुमंडलंचतुःषष्टिपदम् | | ८ गौणस्नानानि | ६ | १९ सौरसूक्तमंत्राः | १४ |
| ९ सप्तशतीमहायंत्रम् | | ९ भस्मधारणविधिः | ६ | २० देवपूजा | १७ |
| १० रुद्रमहायंत्रम् | | १० गोपीचंदनधारणम् | ६ | २१ पुरुषसूक्तम् | २१ |

| पत्र. | विषय | पत्र. | विषय | पत्र. | विषय |
|-------|-----------------------------|-------|-------------------------|-------|----------------------------|
| २२ | मुद्रालक्षणानि | २४ | भोजनविधि: | ४७ | रुद्रसूक्तम् |
| २३ | दिनद्वितीयतृतीयभागकृत्यं | २५ | सायंसंध्या | ४८ | मन्युसूक्तम् |
| २४ | मध्याह्नलानम् | २६ | रात्रिकर्तव्यानि | ४९ | गणपतिसूक्तम् |
| २५ | मध्याह्नसंध्या | २६ | आसनविधिर्भूशुद्धिः | ५० | देवीसूक्तम् |
| २६ | ब्रह्मयज्ञः | २७ | भूतशुद्धिः | ५१ | श्रीसूक्तम् |
| २७ | वैश्वदेवप्रयोगः | २८ | प्राणप्रतिष्ठा | ५२ | नारायणार्थवर्षीर्षम् |
| २८ | भूतयज्ञः | २८ | अंतर्मातृकान्यासः | ५३ | शिवाथर्वशीर्षम् |
| | बलिहरणचक्रम् | ४० | बहिर्मातृकान्यासः | ५४ | गणपत्यथर्वशीर्षम् |
| २९ | पितृयज्ञः | ४१ | पवनपावनम् | ५५ | सूर्यार्थवर्षीर्षम् |
| ३० | मनुष्ययज्ञः | ४२ | महान्यासः | ५६ | देव्यथर्वशीर्षम् |
| ३१ | गोपूजनं ब्राह्मणपूजनंच | ४४ | लघुन्यासः | ५७ | सुवर्णधर्मानुवाकः |
| ३२ | त्रिसुपर्णानुवाकः | ४५ | रुद्राध्यायः | ५८ | इन्द्रियंवेतिलंडक्यम् |
| ३३ | अन्नसमर्पणविधिः | ४६ | विष्णुसूक्तानि | ५९ | महापुरुषविद्या |

| विषया | पन्ना |
|------------------------------|-------|
| ६० देवेप्रारंभः | ६६ |
| ६१ पवमानपंचसूक्तसर्वानुक्रमः | ६८ |
| ६२ पवमानम् | ६८ |
| ६३ नतमंहोनसूक्तम् | ८३ |
| ६४ इतिवाइतिसूक्तम् | ८३ |
| ६५ वामनसूक्तम् | ८३ |
| ६६ पंचगव्यमेकलनम् | ८५ |
| ६७ उत्सर्जनप्रयोगः | ८६ |
| ६८ स्नानविधिः | ९२ |
| ६९ ऋषिपूजनम् | ९४ |
| ७० ऋष्यादितर्पणम् | ९५ |
| ७१ उपाकर्मप्रयोगः | ९७ |
| ७२ यज्ञोपवीताभिमंत्रणम् | ९९ |

| विषया | पन्ना |
|----------------------------------|-------|
| ७३ नूतनब्रह्मचारिआवणी | १०० |
| ७४ सभादीपदानम् | १०० |
| ७५ शांतिपाठः | १०१ |
| ७६ पर्जन्यसूक्तानि | १०५ |
| ७७ प्रतिसांवत्सरिकश्राद्धम् | १०८ |
| ७८ अन्नसूक्तानि | ११८ |
| ७९ राक्षोघ्नादिसूक्तानि | १२० |
| ८० दर्शश्राद्धसंकल्पः | १२३ |
| ८१ अक्षय्यतृतीया | १२४ |
| ८२ दौहित्रप्रतिपच्छ्राद्धम् | १२५ |
| ८३ अविधवानवमीश्राद्धम् | १२५ |
| ८४ सांकल्पिकश्राद्धविधिः | १२५ |
| ८५ महालयश्राद्धम् | १२६ |

| विषया | पन्ना |
|----------------------------------|-------|
| ८६ आमश्राद्धहिरण्यश्राद्धं च | १२७ |
| ८७ यत्तराराधनविधिः | १२८ |
| ८८ यत्तेरेकादशेहनिपर्वणश्राद्धम् | १३० |
| ८९ विधवाकर्तृकमहालयः | १३० |
| ९० तीर्थश्राद्धम् | १३० |
| संस्कारप्रकरणम् ॥ २ ॥ | |
| ९१ संस्कारक्रमः | १३१ |
| ९२ गणपतिपूजनम् | १३१ |
| ९३ पुण्याहवाचनम् | १३२ |
| ९४ मातृकापूजनम् | १३५ |
| ९५ नांदीश्राद्धम् ... | १३५ |
| ९६ ग्रहयज्ञःपरिशिष्टोक्तः | १३६ |

| विषयः | पत्रं. | विषयः | पत्र. | विषयः | पत्र. |
|---------------------------------|--------|-----------------------|-------|----------------------------------|-------|
| ९७ ग्रहयज्ञोमात्स्योक्तः | | १०९ पुंसवनम् | १७७ | १२२ विनायकशंतिः | १८५ |
| (अयुतहोमश्च) | १५२ | ११० अनवलोभनम्..... | १७७ | १२३ कूष्माण्डहोमः | १८८ |
| ९८ बलिदानम् | १५५ | १११ सीमंतोन्नयनम् | १७८ | १२४ बृहस्पतिशंतिः | १९१ |
| ९९ वसोधोरानुवाकः | १५७ | ११२ जातकर्मप्रयोगः | १७९ | १२५ उपनयनम् ... | १९२ |
| १०० अश्व्युपवातेप्रायश्चित्तानि | १५८ | ११३ पष्ठीपूजा | १७९ | १२६ मंडपदेवताप्रतिष्ठा | १९३ |
| १०१ अभिनामानि | १५९ | ११४ नामकरणप्रयोगः | १८० | १२७ घटीस्थापनम् | १९३ |
| १०२ स्थालीपाकप्रयोगः | १६० | ११५ सूर्यावलोकनम् | १८१ | १२८ येयज्ञेनसूक्तम् | १९४ |
| १०३ गृह्याग्नेःपुनःसंधानम् | १६६ | ११६ निष्क्रमणप्रयोगः | १८१ | १२९ उपनयनप्रयोगः | १९५ |
| १०४ भुवनेश्वरीशंतिः | १६७ | ११७ उपवेशनविधिः | १८२ | १३० अनुप्रवचनीयहोमः | १९८ |
| १०५ गर्भधानप्रयोगः | १७१ | ११८ अन्नप्राशनप्रयोगः | १८२ | १३१ प्रदोषगर्जितादिशंतिः..... | १९८ |
| १०६ नारायणबलिः..... | १७३ | ११९ वर्धापनविधिः..... | १८३ | १३२ उपनयनाग्निनाशेप्रायश्चित्तम् | १९८ |
| १०७ नागबलिः | १७४ | १२० चूडाकर्मप्रयोगः | १८४ | १३३ मेधाजननप्रयोगः | १९९ |
| १०८ दत्तपुत्रविधानम् | १७६ | १२१ अक्षरारंभविधिः | १८५ | १३४ महानात्रीव्रतम् | १९९ |

| विषया. | पत्र. |
|-------------------------------------|-------|
| १३५ महाव्रतम् | २०१ |
| १३६ उपनिषद्गतम् | २०१ |
| १३७ गोदानव्रतम् | २०१ |
| १३८ ब्रह्मचारिव्रतलोपप्रायश्चित्तम् | २०२ |
| १३९ समावर्तनम् | २०२ |
| १४० श्रीपूजनादिशांति. | २०५ |
| १४१ प्रतिकूलदोषशांति: | २०६ |
| १४२ वाग्दानप्रयोग: | २०६ |
| १४३ विवाहपूर्वदिनकृत्यम् | २०७ |
| १४४ कर्मार्गदेवता: | २०८ |
| १४५ सीमांतपूजनम् | २०८ |
| १४६ वरस्यवधूगृहगमनम् | २०८ |
| १४७ मधुपर्क: ... | २०९ |

| विषया | पत्र |
|---------------------------------|------|
| १४८ गौरीहरपूजा | २१० |
| १४९ सत्येनोत्तमितासूक्तम् | २१० |
| १५० ऋक्वेखंडवाक्यानि | २१२ |
| १५१ कन्यादानम् | २१३ |
| १५२ विवाहहोम: | २१६ |
| १५३ गृहप्रवेशनीयहोम: | २१७ |
| १५४ विवाहचतुर्थदिनकृत्यम् | २१८ |
| १५५ वधूगृहप्रवेश: ... | २१९ |
| १५६ देवकोत्थापनमंडपोद्भासने | २२० |
| १५७ अग्निद्वयसंसर्गप्रयोग: | २२० |
| १५८ आशौचेहोमविधि: ... | २२१ |
| १५९ आपत्कालेकर्तव्योहोमद्वयसमा- | |
| सप्रयोग: ... | २२१ |

| विषया | पत्र |
|----------------------------------|------|
| १६० गुर्वापदिपक्षहोम: | २२२ |
| १६१ अग्निसमारोपविधि: | २२२ |
| १६२ अग्निसंसर्गदोषप्रायश्चित्तम् | २२३ |
| १६३ अर्कविवाह. | २२३ |
| १६४ गोप्रसवशांति: ... | २२४ |
| १६५ मूलजननशांति: | २२६ |
| १६६ आग्नेषाजननशांति: | २३० |
| १६७ ज्येष्ठाजननशांति: | २३२ |
| १६८ कृष्णचतुर्दशीजननशांति: | २३४ |
| १६९ सिनीवालीकुहूजननशांति: | २३६ |
| १७० दर्शजननशांति: | २३७ |
| १७१ व्यतीपातसंक्रमणजननशांति: २३८ | |
| १७२ वैधृतिजननशांति: | २३९ |

| विषयः | पत्र |
|---------------------------------|------|
| १७३ भद्राजननशांतिः | २३९ |
| १७४ अधोमुखजननशांतिः ... | २४० |
| १७५ एकनक्षत्रजननशांतिः | २४० |
| १७६ ग्रहणजननशांतिः | २४१ |
| १७७ नक्षत्रगंडांतशांतिः | २४२ |
| १७८ तिथ्यादिगंडांतशांतिः | २४२ |
| १७९ विपनाडीजननशांतिः | २४३ |
| १८० यमलजननशांतिः | २४४ |
| १८१ त्रिकप्रसवशांतिः | २४४ |
| १८२ सदंतजननशांतिः | २४५ |
| १८३ सिद्धान्तगोप्रसवशांतिः | २४५ |
| १८४ प्रसववैकृतशांतिः | २४६ |

| विषयः | पत्र |
|-----------------------------------|------|
| ब्रतोद्यापनादिमिश्रप्रकरणम् ॥ ३ ॥ | |
| १८५ सर्वतोभद्रमंडलम् | २४७ |
| १८६ लिंगतोभद्राणि ... | २४७ |
| १८७ ब्रतोद्यापनविधिः | २४८ |
| १८८ ब्रह्मादिमंडलदेवताः | २४८ |
| १८९ पौराणमंडलदेवताः | २५१ |
| १९० मुख्यदेवतापूजनम् | २५३ |
| १९१ ब्रतोद्यापनहोमः | २५३ |
| १९२ शुक्लकादशीव्रतोद्यापनम् | २५४ |
| १९३ कृष्णकादश्युद्यापनम् | २५६ |
| १९४ हरितालिकाव्रतम् | २५७ |
| १९५ परशुरामजयंतीव्रतम् | २५८ |
| १९६ संकष्टचतुर्थीव्रतम् | २५८ |

| विषयः | पत्र |
|--------------------------------|------|
| १९७ शुक्लचतुर्थीविनायकव्रतम् | २५८ |
| १९८ ऋषिपंचमीव्रतम् | २५९ |
| १९९ उपांगललिताव्रतम् | २५९ |
| २०० मुक्ताभरणसप्तमीव्रतम्.... | २६० |
| २०१ जन्माष्टमीव्रतम् | २६० |
| २०२ रामनवमीव्रतम् | २६१ |
| २०३ रामनामलेखनव्रतम् | २६२ |
| २०४ अदुःखनवमीव्रतम् | २६२ |
| २०५ गोपद्मव्रतम् | २६३ |
| २०६ श्रवणद्वादशीव्रतम् | २६३ |
| २०७ प्रदोषव्रतम् | २६४ |
| २०८ अनंतचतुर्दशीव्रतम् | २६४ |
| २०९ वैकुण्ठचतुर्दशीव्रतम् | २६५ |

| विषया | पत्र. | विषया: | पत्र. | विषया. | पत्र |
|--------------------------|-------|-------------------------------|-------|------------------------------|------|
| २१० शिवरात्रिव्रतम् | २६५ | २२३ विष्णुलक्षपूजाव्रतम् | २७० | २३६ समुद्रस्नानविधिः | २७५ |
| २११ वटसावित्रीव्रतम् | २६६ | २२४ लक्षप्रदक्षिणाव्रतम् | २७० | २३७ पार्थिवलिगोद्यापनम् | २७६ |
| २१२ कोजागरव्रतम्..... | २६६ | २२५ लक्षवर्तिव्रतम् | २७१ | २३८ पार्थिवशिवपूजा | २७६ |
| २१३ सोमवतीव्रतम् | २६७ | २२६ रुद्रलक्षवर्तिव्रतम् | २७१ | २३९ प्रबोधोत्सवतुलसीविवाहौ | २७७ |
| २१४ पिठोरीव्रतम् | २६७ | २२७ कदलीव्रतोद्यापनम् | २७१ | २४० तुलसीविवाहःकौस्तुभीयः | २७८ |
| २१५ सूर्यव्रतम् | २६७ | २२८ कर्कटीव्रतोद्यापनम् | २७२ | २४१ अश्वत्थोद्यापनंशौनकीयम् | २८० |
| २१६ आशादित्यव्रतम् | २६८ | २२९ कूष्मांडीव्रतम् | २७२ | २४२ अश्वत्थोपनयनम् | २८२ |
| २१७ सोमवारव्रतम्..... | २६८ | २३० कूष्मांडाष्टकफलदानम् | २७२ | २४३ अश्वत्थविवाहः..... | २८३ |
| २१८ शिवमुष्टिव्रतम्..... | २६८ | २३१ दशहराव्रतविधिः | २७३ | २४४ गृहप्रकारः | २८३ |
| २१९ मंगलगौरीव्रतम् | २६९ | २३२ दशहरास्तोत्रम् ... | २७३ | २४५ अश्वत्थोद्यापनंवौधायनीयं | |
| २२० भौमवारव्रतम्..... | २६९ | २३३ मलमासव्रतम्..... | २७४ | (पंचकुंडी) | २८३ |
| २२१ शनैश्वरव्रतम् | २६९ | २३४ कोकिलाव्रतम्..... | २७५ | २४६ वदोद्यापनम् | २८५ |
| २२२ शिवलक्षपूजाव्रतम् | २७० | २३५ अर्धोदयव्रतम् | २७५ | २४७ वास्तुशांतिप्रयोगः | २८६ |

| विषयः | पत्र | विषयः | पत्र | विषयः | पत्र |
|-----------------------------------|------|-----------------------------------|------|--------------------------------|------|
| २४८ वास्तुमंडलदेवताः | २८७ | २५९ जलाधिवासः | २९९ | २७२ कूपतडागादौमृतदोषशान्तिः | ३२१ |
| २४९ गृहप्रवेशविधिः | २८९ | २६० प्रासादादिवास्तुप्रकारः.... | ३०१ | २७३ काम्यवृषोत्सर्गः | ३२१ |
| २५० पंचकुंडीमंडपप्रकारः | २८९ | २६१ कुंडसंस्कारादि | ३०२ | २७४ रुद्रपद्धतिः | ३२६ |
| २५१ संकल्पोक्तस्तिवग्वरणंच.... | २९० | २६२ देवस्थापनदिनकृत्यम् | ३०४ | २७५ रुद्रजपादौन्यासविधिः | ३२७ |
| २५२ मंडपपूजाचंडेश्वरोक्ता | २९० | २६३ प्राणप्रतिष्ठा ... | ३०५ | २७६ रुद्रसंछंदर्ष्यादि | ३२८ |
| २५३ शान्तिहोमः | २९४ | २६४ षोडशतत्वन्यासोहोमश्च | ३०७ | २७७ मंडपकुंडस्थंडिलादिप्रमाणम् | ३२९ |
| २५४ देवहस्तेकंकणबंधनेजलाधिवासे | | २६५ चलार्चोप्रयोगः | ३०९ | २७८ रुद्रहोमप्रयोगः.... | ३३० |
| चवासुदेवीस्थोविशेषः.... | २९५ | २६६ एकाध्वरचलप्रतिष्ठा | ३१४ | २७९ रुद्रयंत्रस्कांदोक्तम् | ३३२ |
| २५५ पंचकुंडीपक्षेन्वाधानादि | २९६ | २६७ जीर्णोद्धारैरअधोरहोमः | ३१५ | २८० हविर्द्रव्याणांनियमः | ३३४ |
| २५६ पंचकुंडीहोममंत्रद्वारपालजप- | | २६८ प्रासादप्रतिमयोर्जीर्णोद्धारः | ३१६ | २८१ रुद्रहोमेमंत्रविभागः | ३३५ |
| क्रमः | २९७ | २६९ जीर्णप्रतिमापिंडिकाप्रतिष्ठा | ३१६ | २८२ तृचाकल्पपद्धतिः ... | ३४१ |
| २५७ सप्रासादस्थिरप्रतिष्ठाप्रयोगः | २९८ | २७० प्रोक्षणविधिः ... | ३१७ | २८३ उदकशान्तिःसप्रयोगा | ३४६ |
| २५८ अभ्युत्तारणम् | २९९ | २७१ वापीकूपतडागाद्युत्सर्गः | ३१७ | २८४ अपामार्जनम् | ३६० |

| विषयः | पत्रः | विषयः | पत्रः | विषयः | पत्रः |
|-----------------------------------|-------|-----------------------------------|-------|--------------------------------|-------|
| २४८ वास्तुमंडलदेवताः | २८७ | २५९ जलाधिवासः | २९९ | २७२ कूपतडागादौमृतदोषशान्तिः | ३२१ |
| २४९ गृहप्रवेशविधिः | २८९ | २६० प्रासादादिवास्तुप्रकारः | ३०१ | २७३ काम्यवृषोत्सर्गः | ३२१ |
| २५० पंचकुंडीमंडपप्रकारः | २८९ | २६१ कुंडसंस्कारादि | ३०२ | २७४ रुद्रपद्धतिः | ३२६ |
| २५१ संकल्पोक्तत्विग्वरणंच | २९० | २६२ देवस्थापनदिनकृत्यम् | ३०४ | २७५ रुद्रजपादन्यासविधिः | ३२७ |
| २५२ मंडपपूजाचंडेश्वरोक्ता | २९० | २६३ प्राणप्रतिष्ठा ... | ३०५ | २७६ रुद्रसंछंदर्ष्यादि | ३२८ |
| २५३ शान्तिहोमः | २९४ | २६४ षोडशतत्वन्यासोहोमश्च | ३०७ | २७७ मंडपकुंडस्थंडिलादिप्रमाणम् | ३२९ |
| २५४ देवहस्तेकंकणबंधनेजलाधिवासे | | २६५ चलार्चोप्रयोगः | ३०९ | २७८ रुद्रहोमप्रयोगः | ३३० |
| चवासुदेवीस्थोविशेषः | २९५ | २६६ एकाध्वरचलप्रतिष्ठा | ३१४ | २७९ रुद्रयंत्रस्कांदोक्तम् | ३३२ |
| २५५ पंचकुंडीपक्षेन्वाधानादि | २९६ | २६७ जीर्णोद्धारैरअधोरहोमः | ३१५ | २८० हविर्द्रव्याणांनियमः | ३३४ |
| २५६ पंचकुंडीहोममंत्रद्वारपालजप- | | २६८ प्रासादप्रतिमयोर्जीर्णोद्धारः | ३१६ | २८१ रुद्रहोमेमंत्रविभागः | ३३५ |
| क्रमः | २९७ | २६९ जीर्णप्रतिमापिंडिकाप्रतिष्ठा | ३१६ | २८२ तृचाकल्पपद्धतिः ... | ३४१ |
| २५७ सप्रासादस्थिरप्रतिष्ठाप्रयोगः | २९८ | २७० प्रोक्षणविधिः ... | ३१७ | २८३ उदकशान्तिःसप्रयोगा | ३४६ |
| २५८ अभ्युत्तारणम् | २९९ | २७१ नापीकूपतडागाद्युत्सर्गः | ३१७ | २८४ अपामार्जनम् | ३६० |

विषया.

| | | |
|-----------------------------|------|-----|
| ३२२ प्रथमदिनविधिः | | ४०४ |
| ३२३ नव (विपम) आह्नम् | | ४०४ |
| ३२४ नम्रप्रच्छादनआह्नम् | | ४०५ |
| ३२५ पाथेयआह्नम् | | ४०५ |
| ३२६ अस्थिसंचयनम् | | ४०६ |
| ३२७ अस्थिसंचयनआह्नम् | | ४०७ |
| ३२८ तीर्थेस्थिप्रक्षेपविधिः | | ४०७ |
| ३२९ द्वितीयदिनादिनित्यविधिः | | ४०८ |
| ३३० दशमदिनविधिः | | ४०९ |
| ३३१ एकादशाहकृत्यम् | | ४०९ |
| ३३२ पंचकत्रिपादसाधारणशंतिः | | ४१० |
| ३३३ पंचकशंतिः (महती) | | ४१० |
| ३३४ त्रिपादशंतिः (महती) | | ४१० |

विषया.

| | | |
|-------------------------|------|-----|
| ३३५ वृषोत्सर्गविधिः | | ४११ |
| ३३६ महैकोदिष्टम् | | ४१४ |
| ३३७ अन्नौमहैकोदिष्टम् | | ४१४ |
| ३३८ रुद्रगणआह्नम् | | ४१५ |
| ३३९ वसुगणआह्नम् | | ४१५ |
| ३४० षोडशमासिकानि | | ४१५ |
| ३४१ दशदानानि | | ४१६ |
| ३४२ अष्टदानानि | | ४१७ |
| ३४३ उपदानानि | | ४१७ |
| ३४४ प्रायश्चित्तगोदानम् | | ४१८ |
| ३४५ पंचगोदानानि | | ४१९ |
| ३४६ अश्वदानम् | | ४१९ |
| ३४७ शय्यादानम् | | ४२० |

विषया

| | | |
|-----------------------------------------|------|-----|
| ३४८ भूमिदानादि | | ४२० |
| ३४९ सर्पिणीकरणम् | | ४२१ |
| ३५० पाथेयआह्नम् | | ४२३ |
| ३५१ त्रयोदशदिनविधिः | | ४२३ |
| ३५२ त्रयोदशश्रवणामान्नविधिः | | ४२४ |
| ३५३ उदकुंभआह्नम् | | ४२४ |
| ३५४ मासिकआह्नानि | | ४२५ |
| ३५५ जीवच्छाद्दविधिः | | ४२५ |
| ३५६ पालाशविधिः | | ४२५ |
| ३५७ और्ध्वदेहिकोपयोगिताराय- णबल्यादि | | ४२६ |
| ३५८ सर्पहतेव्रतम् | | ४२७ |
| ३५९ ब्रह्मचारिमरणविधिः | | ४२८ |

| विषय | पत्र | विषय | पत्र | विषय | पत्र |
|---------------------|------|-------------------------|------|-----------------------------------------|------|
| ३६० स्नातकमरणविधिः | | ३६७ आतुरसंन्यासविधिः | | ३७४ मृतयतिसंस्कारः | |
| ३६१ रजस्वलामरणविधिः | | ३६८ संन्यासग्रहणविधिः | | ३७५ एकादशेहनिर्वाणश्राद्धम् | ४३९ |
| ३६२ गर्भिणीमरणविधिः | | ३६९ सावित्रीप्रवेशः.... | | ३७६ द्वादशाहेनारायणबलिः | ४४० |
| ३६३ सूतिकाभरणविधिः | | ३७० विरजाहोमः . . | | ३७७ यतिधर्मोः | ४४० |
| ३६४ संकेशामरणविधिः | | ३७१ पर्यंकशौचप्रयोगः | | ३७८ त्रिंशच्छ्लोकी (आशौच- निर्णयः) | ४४१ |
| ३६५ संकेशावपनविधिः | | ३७२ योगपट्टः | | | |
| ३६६ सहगमनविधिः | | ३७३ ब्रह्मान्वाधानम् | | | ४४२ |



विषया.

| | | |
|-------------------------------|------|-----|
| २८५ शीतलाष्टकस्तोत्रम् | | ३६६ |
| २८६ नवचंडीशतचंडीप्रयोगः | | ३६७ |
| २८७ गोप्रदानप्रयोगः | | ३७२ |
| २८८ वृषभदानप्रयोगः | | ३७४ |
| २८९ महिषीदानप्रयोगः | | ३७५ |
| २९० मेषदानप्रयोगः | | ३७७ |
| २९१ ग्रहणशान्तिः | | ३७८ |
| २९२ ग्रहणेदानादि | | ३७९ |
| २९३ ग्रहणेपुरश्चरणविधिः | | ३७९ |
| २९४ गायत्रीपुरश्चरणप्रयोगः | | ३८० |
| २९५ गणपत्यथर्वशीर्षपुरश्चरणम् | | ३८१ |
| २९६ गणपत्यथर्वशीर्षहवनविधिः | | ३८२ |
| २९७ ज्वरशान्तिप्रयोगः | | ३८२ |

विषया

| | | |
|----------------------------------|------|-----|
| २९८ मृत्युंजयजपविधिः | | ३८३ |
| २९९ अच्युतानंतगोविंदनामजपः | | ३८३ |
| ३०० षड्ग्रहादियोगशांतिः | | ३८४ |
| ३०१ सर्वान्धुतशांतिः | | ३८५ |
| ३०२ जनमारशांतिः | | ३८६ |
| ३०३ दीपपतनशांतिः | | ३८६ |
| ३०४ पल्लीसरठशांतिः | | ३८७ |
| ३०५ काकमैथुनदर्शनादिशांतयः | | ३८७ |
| ३०६ षष्टितमाब्दशांतिः | | ३८८ |
| ३०७ द्वादशाब्दोत्तरमवलोकनविधिः | ३८९ | |
| ३०८ जीवतोमृतिवार्ताश्रवणेविधानम् | ३८९ | |
| ३०९ कृतौर्ध्वदेहिकस्यसंग्रहविधिः | ३९० | |

विषया

| | | |
|-------------------------------|-------|-------|
| और्ध्वदेहिकादिप्रकरणम् | ॥ ४ ॥ | पत्र. |
| ३१० सर्वप्रायश्चित्तप्रयोगः | | ३९१ |
| ३११ ब्रह्मकूर्चपंचगव्यविधिः | | ३९४ |
| ३१२ प्रायश्चित्तोत्तरांगानि | | ३९५ |
| ३१३ स्त्रीशूद्रप्रायश्चित्तम् | | ३९६ |
| ३१४ आतुरसंनिधौजाप्यम् | | ३९६ |
| ३१५ मरणोत्तरविधिः | | ३९७ |
| ३१६ गृहात्स्मशानेशवनयनम् | | ३९८ |
| ३१७ प्रेतस्यपुनःसंधानम् | | ३९९ |
| ३१८ और्ध्वदेहिकविधिः | | ४०० |
| ३१९ पंचकादिदाहविधिः | | ४०१ |
| ३२० चित्तिपूरणम् | | ४०२ |
| ३२१ तिलांजलिदानम् | | ४०३ |

ब्रह्मकर्मसमुच्चयांतर्गतमंत्राणामकारादिवर्णक्रमः ।

| मन्त्रः | पत्र | मन्त्र | पत्र. | मन्त्र | पत्र. | मन्त्र | पत्र |
|-----------------------|---------|------------------------------|-------|------------------------------|-------|-----------------------------|------|
| अ | | अग्निमीळेपुरोहितं० (९) | २८ | अग्नेरक्षाणो० | | अतोदेवाअवंतु० (ऋ० ६) | २२ |
| अंगादगाहोन्नोन्नोन्नो | ... ९३ | अग्निरितिभस्स | ६ | अग्नेर्वर्मपरि | ४०१ | अन्निर्यद्वामवरोहन् | ९५ |
| अंगादगात्संभवसि | ... १७९ | अग्निरैतुप्रथमो० (६).... | १७७ | अग्नेहंसि० (ऋ. ९)... | १२२ | अन्नैर्यगानुमूया० | ९५ |
| अग्नआयाहिवीतये० | ... २९१ | अग्निर्मूर्धादिव.ककुत् | १४० | अग्नेबृहन्नृपसामूर्ध्वो | ८९ | अथपुरुषोह्वे० (नारायणायर्व) | ५७ |
| अग्नआयूषि (ऋ. ३) | १२ | अग्निर्यजुर्भि. (अनु.).... | ३०३ | अघोरचक्षुरप०... | | अदिति.केशान्... | १८४ |
| अग्नयेसमिधमाहार्ष | ... ११ | अग्निःससिवाज०(वर्ग.) | २९९ | अघोरेभ्योथत्रोरेभ्यो .. | ६ | अदितिर्ह्येजनि० | २५० |
| अग्नावग्निश्चरति० | ... २२० | अग्निस्तुविश्रवस्तमं | ३१ | अच्छावदतवस०(ऋ. १०) | १०५ | अद्यामुरीययटि | ९६ |
| अग्निदूतंपुरोदधे | ... ९७ | अग्नेत्वन्नोअन्तम० | १२ | अजतित्वामध्वरे० | ३०० | अन्धःसभृतःपृथिव्यै .. | ४६ |
| अग्निदूतंवृणीमहे० | ... ३७ | अग्नेत्वंपारया० | ४३ | अजैष्माद्यासनाम० | ३ | अध.पश्यस्वमोपरि .. | ९२ |
| अग्निनरोदीधितिभि० | ... ८९ | अग्नेबाधस्व० | ९७ | अतिद्रवसारमेथो ... | ३९८ | अधस्यायोपणा० | २८१ |
| अग्निनाग्निःसमि० | ... २२० | अग्नेभवसुधमिधा० | ९३ | अतीयामनिद०.... | | अधीवासपरि० | ९६ |

| मंत्रः | पङ्. | मंत्रः | पङ्. | मंत्रः | पङ्. | मंत्रः | पङ्. |
|------------------------|----------|------------------------|----------|-----------------------|----------|-------------------------|----------|
| अध्वर्योद्वावया० | ९६ | अभित्वादेवसवित० | २४८ | अश्वत्थेवोनिपदनं | १३२ | अक्षीम्यांतेनासिकाम्यां | ९३ |
| अनाधृष्टमस्यनाधृष्ट्यं | २१४ | अभ्यारमिद० | २२० | अश्विनावर्तिरसदा० | १४३ | आ | |
| अनाज्ञातंयदाज्ञातं | १६४ | अभ्रातृघ्नीवरुणा० | २११ | अष्टौदेवावसवः.... | १३४ | आकलशेषुधावति | १३१ |
| अनृक्षराऋजवः० | २१३ | अमोहमस्मितात्वं० | २१६ | असुनीतेपुनर०.... | ३८ | आकृष्णेनरजसा | १३ |
| अन्नपतेन्नस्यनोदेह्य० | ३४ | अयंतइध्मआत्मा० | १६३ | असेष्वामरुतः० (ऋ० २) | २९८ | आग्नाअग्नइहावसे | ९६ |
| अपनःशोशुच० (ऋ. ८) | १७२ | अयंतेयोनि० | २२० | असेप्रयंधि० | १७९ | आग्नेयाहिमरुत्सत्वा | ८९ |
| अपहताअसुरा | १११ | अयंमेहस्तोभगवा० (ऋ० २) | २४ | अस्यपिबक्षुमतः.... | २०७ | आतूनइंद्र० (ऋ० ९) | ९९ |
| अपेतवीतविन | ४०० | अययज्ञोदेवया० | ९६ | अस्यवामस्य० (वामनसू०) | ८३ | आतेगर्भे० (ऋ० ९) | १७७ |
| अप्सरसांगंधर्वाणां | २४९ | अयाश्चाग्ने० | १६४ | अस्तीदमधि० (ऋ० ३) | २२० | आत्वावहंतुहरयः.... | १४८ |
| अप्सुमेसोमो० | ३७ | अर्यमणंनुदेवं०.... | २१६ | अहंगर्भमदधा०.... | १७३ | आदित्यप्रत्नस्य०.... | ४९ |
| अबोधयग्निःसमिधा० | ८९ | अवतेहेळोवरुण० | ९३ | अहंवर्षसजातानां | २०९ | आनःप्रजां० (ऋ० ४) | ३७ |
| अभित्यंदेवं | २४९ | अश्माभवपरशु० | १७९ | अहिरिवभोगैः.... | २२ | आनोभद्राः० (शांतिपाठः) | १०१ |
| अभित्वागोतमा० | ९९ | अश्वक्रांतिरथक्रांते० | ९३ | अक्षंनमीमदंत० | ११९ | | |

| मन्त्रः | पत्र | मन्त्रः | पत्र | मन्त्रः | पत्र | मन्त्रः | पत्र | मन्त्रः | पत्र | | |
|------------------------|------|---------|--------------------------|---------|------------------------|----------------------------|------|---------|----------------------|------|-----|
| आन्त्रेभ्यस्तेगुदाभ्यो | | ९३ | आयमेतेपरायणे० | ... | ९२ | इदंतेन्याभिरसमान० | | ९४ | इद्रंवोविश्वत० | | १४४ |
| आपउदंतुजीवसे० | | १३३ | आयुष्यंर्वचस्यं० (ऋ० ११) | २०४ | इदंपितृभ्यो० | | ११३ | ११३ | इद्रंश्रेष्ठानि० | | १४१ |
| आपःपुनंतुष्टिर्वी | | ५ | आयुःप्रजाधनं० | | ११७ | इदंपितृभ्योनमोअस्त्वद्येति | | ११८ | इद्राणीमासुनारिपु | | १४१ |
| आपोअस्मान्मातरः० | .. | १६५ | आरुद्रासइद्रवंतः | | २४९ | इदमापःप्रवहत० | | १६५ | इद्रार्थेदोमरुत्वते | | २३२ |
| आपोवाइद५सर्वं० | | ५ | आवदंस्त्वंशकुनेभद्रमावद | ८८ | इमेजीवाविमृतै | | | ४०३ | इद्रासोमा० (ऋ० २१) | | १२१ |
| आपोहयदृहती० | | ३०० | आवोराजानं० | | १६९ | इदंविष्णुर्विचक्रमे | | ९९ | इद्रियंवाएत० (खंड २) | | ६४ |
| आपोहिष्ठा (ऋ० ३) | | ८ | आशुःशिशानो. (ऋ. ११) | १०३ | इंदुर्देवानासुप० | | | २०७ | इममग्नेचमसं | | ४०० |
| आपोहिष्ठा० (ऋ० ९) | | ९ | इ | | इंद्रत्वावृपमं० (ऋ० ५) | | | १७१ | इममश्मानमारोहा० | | २१७ |
| आप्यायस्वसमे० | | २० | इडादेवहू० (रुद्रः) | | ४९ | इंद्रमिद्वेवतातय० | | १४१ | इमंमेगंगेयमुने | | ५ |
| आभिर्गीभियदतो० | ... | १५९ | इतिवाइति० (ऋ० १३) | ८३ | इंद्रनरोनेमधिता० | | | २६६ | इममेवरुण० | | २३५ |
| आमावाजस्य० | | ११७ | इद५सर्पेभ्यो० | | २३१ | इंद्रमित्रवरुण० | | १५ | इमाआपःशिवतमा | | १३५ |
| आमामुपक० (ऋ० १५) | ११८ | ११८ | इदकवेरादित्य. (ऋ. १२) | २३३ | इद्रविश्वाअवीवृधन्० | | | ३४६ | इमामग्नेशरणि (ऋ० ४) | | १४५ |
| आयगौष्टिभि० (ऋ० ३) | १६ | १६ | इदतएकपरऊत० | १५८ | इंद्रविश्वा० (ऋ० ८) | | | २३३ | इमाधियशिक्ष | | ३२० |

| मन्त्रः | पत्रः | मन्त्रः | पत्रः | मन्त्रः | पत्रः | मन्त्रः | पत्रः | मन्त्रः | पत्रः |
|-------------------------|-------|---------------------------------|-------|--------------------------|-------|-------------------------|-------|---------|-------|
| इमारुद्रायतवसे० (ऋ० ११) | ५४ | ईशानः सर्वविद्यानां | ६ | उदीर्ष्वीतः पतिव० (ऋ० २) | १७२ | उशंतस्त्वानिधीमहि | | ११२ | |
| इमारुद्रायस्थिर० | १६९ | उ | | उदुत्तमं मुमुग्धिनी | | उष्णेनवायउदकेने० | | १८४ | |
| इमारुद्रायस्थिर (ऋ० ४) | ४१३ | उ | | उदुत्यं जातवेदस (ऋ० १३) | १४ | ऊ | | | |
| इमांकुमारो० | १७९ | उच्चादिविदक्षिणा० | १३३ | उदुत्यदर्शतवपुः (३) | | ऊरुम्यांते अष्टीवद्धां | | ९३ | |
| इयंदुरुक्ता० | १९७ | उच्छृंचमानापृथिवी | ४०६ | उद्गातेवराकुने | | ऊ | | | |
| इषएकपदी० | २१७ | उच्छृंचस्वपृथिविमा | ४०६ | उद्धृतासिवराहेण | | ऊक्कवाइदमग्रे० (खंड) | | २१२ | |
| इषेत्वोर्जेत्वा० | २९१ | उत्तासिमैत्रावरुणो० | ९५ | उहुध्यध्वं० | | ऊतंचसत्यंचामीद्धात् | | ९ | |
| इहप्रियं प्रजया० | २१९ | उत्तमाप्रतिष्ठा० | २१३ | उद्धेति सुभगो (४॥) | | ऊच्यामस्तोमं० | | १३४ | |
| इहैवस्तं माविष्यौष्टं | ११७ | उत्तिष्ठब्रह्मण० | २१९ | उपसर्पमातरं (ऋ० ४) | | ऊध्यासहव्यैः० | | १३४ | |
| इहैवैधिमापच्योष्टाः | ३०६ | उत्तेस्तभ्रामि | ४०० | उपहृताः पितरो० | | ऊषयोवैसरस्वत्यां० (खंड) | | १०७ | |
| इळामग्ने पुरुदंसं | १३६ | उत्सूर्योबृहदूर्वाण्यश्रेत् (३) | १५ | उपासैगायतानरः (५).... | | ऊषभं मासमानानां | | २५० | |
| इळा मुपह्वयते | १३७ | उदीरतामवर० (ऋ० १४) | १२२ | उभयं शृणच्चन | | ऊषभं मा (ऋ० ५) | | ४११ | |
| इळैवावापृथिवी (ऋ० २५) | ४२३ | उदीरताम० | २५० | उरुणसावसुत्पुपा | | ऊषेमंत्रकृतां० | | ९५ | |

मन्त्रः

ए

पत्र

मन्त्र

क

पत्र

मन्त्र

कव्यादमग्निप्रहिणोमि

पत्र.

मन्त्रः

घ

पत्रं

एतेनहवाऐद्रेण० (खंड)

एतोन्विद्रं० (ऋ० ३)

एतंयुवानंपरि०

एवानस्पृधः०

एवापित्रेविश्वदेवाय

एह्यग्रहहोता०

ओं

ॐचमेस्वरश्चमे०

ओंतद्ब्रह्म० (अनु०)

ओमासश्चर्पणी०

ओपधय.संवदंते०

ओपधेन्नायस्वेनं०

कहुद्रायप्रचेतसे०

कहुद्राय० (ऋ० ९)

कनिकदज्जनुप० (ऋ० ३)

कयानश्चित्र०

कयानश्चित्र(ऋ० ३)

कांडात्काडात्०

कुमारश्चित्पतर०

कुमारमाता०

कुपुंभकस्तद०

कुणुष्वपाजः (ऋ० १९)

केतुकुण्वन्न०

कुबेरतेमुखरौद्रं०

.... १४४

.... १४९

.... २०८

.... १२४

.... ४००

.... १३२

.... १४०

.... २९०

.... ८८

.... १२०

.... १४२

.... ३८२

क्राणाशिशुर्मही०

ग

गणानात्वागणपति०

गुणानाजमदग्नि०

गृभ्णामितेसौभग०

गृहवैप्रतिष्ठा

गौरीर्मिमाय०

गंतानोयज्ञयज्ञियाः

गधद्वारादुराधर्षा

ग्रहाणामादि०

ग्रीवाम्यस्तउष्णिहाभ्य

.... ४०२

.... १४३

.... १६

.... ८८

.... २१६

.... २२

.... १३९

.... ८९

.... ८९

.... १९०

.... ९३

घृतादुर्लुसं०

घृतंमिमिक्षे

च

चत्वारिवाक्परिमिता०

चत्वारिशृंगात्रयोअस्य

चरणपवित्रंविततं

चित्तिःसुगासीत्

चित्पतिर्मापुनातु०

चित्रदेवानामुद (ऋ० ६)

ज

जज्ञानसप्तमातरो०

जातवेदसेसुनवाम०

.... २०७

.... २०

.... ४०

.... ३०

.... ३३

.... ३९८

.... ४०

.... १९

.... २६७

.... १०

| मन्त्रः | पत्र | मन्त्रः | पत्र | मन्त्रः | पत्र | मन्त्रः | पत्र |
|----------------------|------|----------------------|------|--------------------------|------|----------------------------|------|
| जुष्टोदमूनाअतिथि० | ३० | तद्विष्णोःपरमंपदं | ११७ | तांस्तुतेकीर्ति० (ऋ० ६) | २१८ | त्वमग्नेद्युभिस्त्वमाशु० | ८८ |
| ज्मयाअन्नवसवो० | २४९ | तपोष्पवित्रंविततं | ११० | तिस्रोवाचः (ऋ० ६) | १०६ | त्वमग्नेप्रथमो (१६) | १४६ |
| तच्चक्षुर्देवहितं | १९ | तमर्वतं (ऋ० १) | १०५ | तुभ्यंताअंगिर० | १६१ | त्वमग्नेरुद्रोअसुरो० | १७० |
| तच्छंयोरारवृणीमहे | १० | तमीशानंजगत० | १०१ | तेजोसिशुक्रमस्य० | ३०० | त्वमयमाभवसि० | १६६ |
| ततमआपस्तदुतायते | १९८ | तरत्समंदी० (ऋ० ४) | ९४ | त्यमूपुवानिनं० (ऋ० ३) | १०३ | त्वमिद्रसजोषस० | ९३ |
| तंतुतन्वन्नजसो... | १२ | तववायवृतस्पते० | १४४ | त्यानुक्षत्रियां०.... | २४९ | त्वंह्यग्नेप्रथमोमनोता० | ८९ |
| तत्पुरुषायविद्महे | ६ | तस्यैवविदुषो० (अनु०) | ३४ | त्रातारमिद्रमवितारमिद्रं | ९२ | त्वंह्यग्नेअग्निना० | २२१ |
| तत्वायामिब्रह्मणा० | ९२ | ताएतानवा० | १०७ | त्रायंतामिहदेवा० (ऋ० ३) | १३५ | त्वांह्यग्नेसदमित्समन्यवो० | ८८ |
| तत्सवितुर्वरेण्यं... | ८ | तमुष्टुहियःस्विपुः | १६९ | त्रिभिर्द्वंद्वं | १११ | द | |
| तत्सर्वतुर्वृणीमहे० | १९६ | तान्वोमहोमरुत | २१५ | त्र्यंबकंयजामहे० | १० | दधिकाव्णोअकारिषं० | २० |
| तत्सूर्यरोदसीउभे | ९२ | तांपूषंच्छिव० | १७३ | त्वंनोअग्नआयुषु० | २९२ | दशावनिभ्यो० (४) | २१५ |
| तदस्तुमित्रावरुणा | २२ | तामग्निवर्णा० | २५० | त्वंनोअग्नेवरुणस्य० | २३२ | दिवेदिवेसहशी० | १९ |
| | | | | त्वंनःसोमविश्वतो० | १४४ | देवस्यत्वासवितुः | २२ |

| मन्त्र | पत्र | मन्त्र | पत्र | मन्त्र | पत्र | मन्त्र | पत्र |
|----------------------------|------|---------------------------|------|--------------------------|------|--------------------|-----------|
| देवाएतस्या० | ९५ | नतमंहो० (ऋ० ८) | ८३ | नाकेसुपर्ण० | ३४६ | परमृत्यो अनु० | १४२ |
| देवानांनुवयं० (ऋ० ९) २८२ | १२३ | नमस्तेगणपतये (गणपत्यथर्व) | ६० | नानानंवाउनो० (ऋ० ३२) ३९७ | ३९७ | पत्रमानमुवर्जन० | (अनु०) ४० |
| देवानापत्नी० (खड) | १२३ | नमोअस्तुसर्पेभ्यो० | १७४ | नाभानाभिनआदे | ९३ | पवित्रते० | १०८ |
| देवाहवैस्वर्गलोक(शिवाथर्व) | १२३ | नमोब्रह्मणेनमो० | ११ | नारायणायविद्महे | ३९ | पात्रजन्यायविद्महे | ११७ |
| देवाजनमगन्यज्ञ० | १२३ | नमोमहद्भ्यो० | ३७ | नामानितेशतक्रतो | ३९ | पाहिनोअग्नएकया | १९ |
| द्रप्सश्चस्कद० | १२३ | नमोमहद्भ्यो० (देवे ३०) | ६६ | नीललोहित० | ३९ | पितुनुस्तोपं० | २२१ |
| द्रविणोटाद्रविणस० | १२३ | नमोमित्रस्य० (१२) | १६ | नेजमेपपरापत० (ऋ० ३) १७२ | १७२ | पिशगभृष्टि० | ११८ |
| द्रुपदादिवेन्सुमुचान | १२३ | नमोव पितरइषे | १६ | पयःपृथिव्या | २९९ | पुनरग्निश्चक्षु० | ११३ |
| धाताददतु० (ऋ० २) १७८ | १७८ | नर्यप्रजामेगोपाय | ११६ | पयस्वतीरोपधय० | ३१९ | पुनरूर्जानिर्वतस्व | २०२ |
| धामंतेविश्वभुवनमधि | ८९ | नवाउदेवाः० (ऋ० ९) ११९ | १३३ | परित्वागिर्विणो० | २१९ | पुनर्नोअसु | ४२७ |
| धाम्नोधाग्नो० | २९१ | नवोनवोभवति० | १३३ | परोमात्रया० (ऋ० ११) ९४ | ९४ | पुनस्त्वादित्या० | १४९ |
| ध्रुवाद्यौर्ध्रुवा० | २१३ | नहितेक्षत्रं० (ऋ० २१) १३९ | १३९ | | | | १५८ |

| मन्त्रः | पत्र | मन्त्र | पत्र | मन्त्र | पत्र | मन्त्र | पत्र |
|--------------------------|------|-------------------------------|------|--------------------------|------|--------------------------|----------|
| पुरुषसंमितो० ... | १६४ | प्रवोगज्ञेषुदेवयंतो० | | बृहस्पतिःप्रथम० | | भद्रोभद्रयासचमान० | २६१ |
| पूर्णाद्विपरापत० | | प्रसुगमंता० | | बृहस्पतिर्ब्रह्मा | | भास्करायविद्महे | ६८ |
| पूर्णाहुतिमुत्तमां | | प्रसुवआपो० (ऋ० ९) | १६७ | बृहस्पतेअतिय० | | भीपासाद्वातः (अनु०) | १२९ |
| पूर्णनुदेवं०.... | | प्रसूतोभक्षमकरं.... | | बृहस्पतेप्रथमं (ऋ० ११) | ५६ | भुवनस्यपितरं० | १६९ |
| पूषात्वेतश्चावयतु (ऋ० ४) | ४०२ | प्रक्षोदसावायसा० | | ब्रह्मजज्ञान० | | भूरग्रेयच० (महाव्याह०) | २०२ |
| प्रजनने० (लघुन्या०) | | प्राच्यांदिशिदेवा० | | ब्रह्मणाग्निः (ऋ० ६) | १२२ | म | |
| प्रजापतेनत्वदेता० | | प्रातरग्निप्रातरिंद्र० (ऋ० ७) | ३ | ब्रह्मणातेब्रह्मयुजा० | | मधुवातान्कृता० (ऋ० ३) | २१ |
| प्रतिचक्ष्विचक्ष्वे० | | प्रेतिचेतिचेत्येतैद्वे | | ब्रह्ममेतुमां० (अनु०) | | मनोज्योतिर्जुपता० | १५९ |
| प्रतेददामि० | | प्रेहिप्रेहिपथिभिः | | भ | | मनोन्वाहुवामहे० | ११६ |
| प्रत्यवरोह० | | व | | भद्रंकर्णेभिः० | | ममव्रतेहृदयं | १९७ |
| प्रदक्षिणिदभि० (ऋ० ३) | २०८ | वण्महौअसिसूर्य (२).... | १५ | भद्रंनोअपिवात० | | ममाग्नेवर्चो० (ऋ० १०) | १०९ |
| प्रदेवत्रा० (ऋ० १५) | १०६ | बह्वीनांपितावहुरस्यपुत्रः | ९३ | भद्रंवददक्षिण० (ऋ० ४) | २०८ | मयिमेधांमयिप्रजां | ११ |
| प्रनुध्यावर्हरेते० | | बळित्यापर्वतानां० | | भद्राअग्नेः० (ऋ० १२) | २३२ | मरुतोयस्य० | २५० |

| मन्त्र | पत्र. | मन्त्रः | पत्र. | मन्त्र | पत्र | मन्त्र | पत्र. |
|--------------------------|-------|---------|----------------------------|--------|---------------------------|--------|------------------------------|
| महालक्ष्मीचविग्रहे | | ६८ | मूर्धानंदिवो० | ११३ | यज्जाग्रतो० (ऋ० ६) | १७० | यथावः स्वाहाग्नये ४८ |
| महातत्त्वामहीना | | १३४ | मेधातेदेवः सविता | १७९ | यतइद्रभयामहे० | २३६ | यदक्रंदः प्रथमं० १५३ |
| महित्रीणामवो० (ऋ० ३) | | १०३ | मेधामह्य० (ऋ० ८) | १९९ | यतइंद्रभयामहे० (ऋ० ६) | १०२ | यदगदागुपे० २८ |
| महीद्वौःपृथिवीचन | | १३२ | मेहनाद्वनकरणात् | ९३ | यंतुनदयोवर्षतु | ३४ | यदद्यसूर्य० १५ |
| माकाकंचीर० | | १०९ | मेनमग्नेविद (ऋ० ६) | ४०२ | यत्किंचेदंवर्षण ... | १०९ | यदस्यकर्मणो० १६४ |
| माचिदन्यद्विश० | | ८९ | मोपुणः परापरा० | १४३ | यत्कक्षीवासंवननं | २१४ | यद्वेवादेवहेडनं० (अनु०) ४० |
| मातारुद्राणां० | | २१० | य | | यत्तेयमवै (ऋ० १२) | ४२७ | यद्वेदेवाअति० १६४ |
| मानस्तोकेतनये० | | ६ | यआत्मदावलदा० | ३०० | यत्तेराजन्च्छृतंहवि० | ८९ | यन्मआत्मनो० ... १५८ |
| मानः प्रजापरासिचं | | १६५ | यएकइत्० .. | १७० | यत्तेसुशीमे० | १७८ | यः प्राणतोनिमिप० ३०० |
| मावोरिपत्त्वनिता० | | ९२ | यः कुक्षिः सोमपातम० .. | ९३ | यत्क्षुरेणमर्चयता | १८९ | यमायसोमंसुनुत० ९२ |
| मित्रस्यचक्षुर्धरुणं | | १९५ | यंक्रंदसीअवसा० | ३०० | यत्पाकत्रामनसा० | १६४ | यस्यविश्वानिहस्तयोः ९३ |
| मित्रोजनान्यातय (ऋ० ९) | १० | १० | यच्चगोपुदुष्यश्चं (ऋ० ६) | ३ | यत्पुण्यंनक्षत्रं० ... | १३४ | यश्चिदापो० ... ३०० |
| मुंचामित्वा० (ऋ० ५) | १०३ | १०३ | यच्चिद्विजेविशो० (१०) | ३६ | यजवेत्थवनस्पते० | १५९ | यस्तेमन्यो० (ऋ० १४) ५५ |

| मन्त्रः | पत्रः | मन्त्रः | पत्रः | मन्त्रः | पत्रः | मन्त्रः | पत्रः |
|-------------------------------|----------|------------------------|----------|-----------------------------------------------------------------|----------|-------------------------------|----------|
| सहस्रशीर्षा (ऋ० १६) | २१ | सोमोधेनुंसोमो | ४११ | स्वस्त्ययनंताक्षर्य० | १०१ | हंसः शुचिषद्वसु | २७ |
| सहिरलानिदाशुषे० | १३२ | सोमोनोराजा० | १७८ | स्वादिष्ठयामदिष्ठया (पवमान) | ६८ | हिरण्यगर्भः समवर्त | १२ |
| साम्राज्यं भौज्यं .. | ६७ | सोमं राजानमवसे | ३०४ | स्वादुः पवस्व० | २१ | हिरण्यगर्भः (ऋ० ८) | ३०० |
| सुत्रामाणं पृथिवी | ३६ | स्तोत्रियं शंस० (खंड) | २१२ | स्वादुषसद० | ११७ | हिरण्यवर्णां (श्रीसूक्त) | १३२ |
| सुरास्त्वामभि० | १९१ | स्योनापृथिवि० | ३७ | स्वादुष्कलायं० | १२३ | हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका० | ४१ |
| सुवर्णधर्म० (अनु०) | ६३ | स्वप्नस्वप्नाधिकरणे० | १०४ | स्वादोपितो मधो० | ३४ | हिरण्यशृंगं वरुणं प्रपद्ये | ९३ |
| सूर्य आत्मा जगतः (सूर्याथर्व) | ६१ | स्वर्मानोरधयदिद्र० | २४१ | स्वादोरभक्षि० (ऋ० १९) | ११९ | हिं कृण्वती विसुपती० | २०७ |
| सूर्यो नो दिवस्पानु० (ऋ० ९) | १६ | स्वस्तये वायुमुप० | १३४ | हविष्पांतमजरं० (ऋ० ९) | २२१ | क्ष | १४३ |
| सोम एकेभ्यः (ऋ० ९) | ८८ | स्वस्तिदाविश० | १७० | हव्यवाहमभिमा० (कृष्मा०) | १८८ | क्षेत्रस्य पतिना० | १४३ |
| सोमस्य मातवसे० | ९३ | स्वस्तिनइन्द्रो० | १०१ | ब्रह्मकर्मसमुच्चयांतर्गतं मंत्राणामकारादिवर्णक्रमकोशः समाप्तः । | | | |
| सोमानं स्वरणं० | ८८ | स्वस्तिनोमिमीता (ऋ० ९) | १०१ | | | | |

॥ १ ॥ अथमंगलमुपोद्घातश्च ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीवेदपुरुषायनमः ॥ ॥ सूर्यसिंदूरोल्लसितास्यंगिरमादौब्रह्मश्रीशेखरश्चानथवाचंयमवृंदम् ॥ नत्वा
प्रत्यूहौघनिवृत्त्यैपितरौचकुर्वेद्ब्राह्मं कर्मसमूहं सुखसिद्धौ ॥ १ ॥ समूहेऽस्मिन्नित्याह्निकविधिसुसंस्कारनिचयप्रकर्षांप्रांत्येति
प्रकरणचतुष्केऽत्रबहवः ॥ प्रयोगाःसंक्षुप्तानवचनगणोविस्तृतिभियासमूलग्रंथेभ्योनिपुणमवसेयःसुकृतिभिः ॥ २ ॥
॥ आश्वलायनः ॥ अथोच्यतेगृहस्थस्यनित्यकर्मयथाविधि ॥ यत्कृत्वानृण्यमामोतिदेवातिपत्र्याच्चमानुपात् ॥ अथा
त्रब्राह्ममुहूर्तमारभ्यास्वापंकर्माण्युच्यंते ॥ ब्राह्ममुहूर्तश्चद्वेधा अंत्ययामात्मकोरान्तेरुपांत्यमुहूर्तश्च ॥ मनुः ॥ ब्राह्मेमुहूर्तेबुध्ये
तधर्मार्थावनुचितयेत् ॥ कायक्लेशांश्चतन्मूलान्वेदतत्त्वार्थमेवच ॥ अत्रस्मरणीयमाहव्यासः ॥ ॥ ३ ॥

॥ २ ॥ अथप्रातःस्मरणम् ॥

श्रीः ॥ महर्षिर्भगवान्व्यासःकृत्वेमांसंहितांपुरा ॥ श्लोकैश्चतुर्भिर्धर्मार्त्मापुत्रमध्यापयच्छुकम् ॥ १ ॥ मातापितृसहस्राणिपुत्रदा
रशतानिच ॥ संसारेष्वनुभूतानियांतियास्यंतिचापरे ॥ २ ॥ हर्षस्थानसहस्राणिभयस्थानशतानिच ॥ दिवसेदिवसेमूढमा
विशंतिनपंडितम् ॥ ३ ॥ ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येषनचकश्चिच्छृणोतिमे ॥ धर्मादर्थश्चकामश्चकिमर्थनसेव्यते ॥ ४ ॥ नजातु
कामान्नभयान्नलोभाद्धर्मैत्यजेजीवितस्यापिहेतोः ॥ धर्मोनित्यःसुखदुःखेत्वनित्येजीवोनित्योहेतुरस्यत्वनित्यः ॥ ५ ॥ इमां

भारतसावित्रीप्रातरुत्थाययःपठेत् ॥ सभारतफलंप्राप्यपरंब्रह्माधिगच्छति ॥ ६ ॥ योगोशतंकनकशृंगमयंददातिविप्रायवे
दविदुपेचबहुश्रुताय ॥ पुण्यांचभारतकथांशृणुयाच्चनित्यंतुल्यंफलंभवतितस्यचतस्यचैव ॥ ७ ॥ अथभानोः श्लोकाः ॥ प्रातः
स्मरामिखलुतत्सवितुर्वरेण्यंरूपंहिमंढलमृचोऽथतनुर्यजूषि ॥ सामानियस्यकिरणाःप्रभवादिहेतुंब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमार्चित्य
रूपम् ॥ १ ॥ प्रातर्नमामितरणितनुवाङ्मनोभिर्ब्रह्मैद्रपूर्वकसुरैर्नुतमर्चितं च ॥ वृष्टिप्रमोचनविनिग्रहेहेतुभूतत्रैलोक्यपालनपरं
त्रिगुणात्मकं च ॥ २ ॥ प्रातर्भजामिसवितारमनंतशक्तिपापौघशत्रुभयरोगहरंपरं च ॥ तंसर्वलोककलनात्मककालमूर्तिगो
कंठबंधनविमोचनमादिदेवम् ॥ ३ ॥ श्लोकत्रयमिदंभानोःप्रातःपठेत्तुयः ॥ ससर्वव्याधिनिर्मुक्तःपरंसुखमवाप्नुयात् ॥
॥ ४ ॥ विघ्नेशस्य ॥ प्रातःस्मरामिगणनाथमनाथबंधुंसिंदूरपूरपरिशोभितगंडयुग्मम् ॥ उदंडविघ्नपरिखंडनचंडदंडमाखं
डलादिसुरनायकंवृंदवंधम् ॥ १ ॥ प्रातर्नमामिचतुराननवंद्यमानमिच्छानुकूलमखिलंचवरंददानम् ॥ तंतुंदिलंद्विरसन
प्रियचक्षुसूत्रंपुत्रं विलासचतुरंशिवयोःशिवाय ॥ २ ॥ प्रातर्भजाम्यभयदंखलुभक्तशोकदावानलंगणविभुवरकुंजरास्यम् ॥
अज्ञानकाननविनाशनहव्यवाहमुत्साहवर्धनमहंसुतमीश्वरस्य ॥ ३ ॥ श्लोकत्रयमिदंपुण्यंसदासाम्राज्यदायकम् ॥ प्रातरु
त्थायसतंतंयःपठेत्प्रयतःपुमान् ॥ ४ ॥ देव्याः ॥ प्रातःस्मरामिशरिंदंदुकरोज्ज्वलाभांसद्रत्नवत्सकलकुंडलहारशोभाम् ॥ दि
व्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तारकोत्पलाभचरणांभवतींपरेशाम् ॥ १ ॥ प्रातर्नमामिमहिषासुरचंडमुंडशुभासुरप्रमुखदैत्यवि
नाशदक्षाम् ॥ ब्रह्मैद्रुद्रमुनिमोहनशीललीलांचंडींसमस्तसुरमूर्तिमनेकरूपाम् ॥ २ ॥ प्रातर्भजामिभजतामभिलाषदात्रीं

धात्रीसमस्तजगतांदुरितापहंत्रीम् ॥ संसारबंधनविमोचनहेतुभूतांमायांपरांसमधिगम्यपरस्यविष्णोः ॥ ३ ॥ श्लोकत्रयमिदं
 देव्याश्चंडिकायाःपठेन्नरः ॥ सर्वान्कामानवामोतिविष्णुलोकेमहीयते ॥ ४ ॥ शिवस्य ॥ प्रातःस्मरामिभवभीतिहरंसुरेशं
 गार्धरं वृषभवाहनमंबिकेशम् ॥ खट्वांगशूलवरदाभयहस्तमीशंसंसाररोगहरमौपधमद्वितीयम् ॥ १ ॥ प्रातर्नमामिगिरिशंगिरि
 चंदेवेदांतवेद्यमनघंपुरुषमहांतम् ॥ नामादिभेदरहितंपडभावशून्यंसंसार० ॥ २ ॥ प्रातर्भजामिशिवमेकमनंतमा
 नंपठंति ॥ तेदुःखजातंबहुजन्मसंचितंहित्वापदंयांतितदेवशंभोः ॥ ४ ॥ विष्णोः ॥ प्रातःस्मरामिभवभीतिमहार्तिंशांलैनारा
 यणंगरुडवाहनमजनाभम् ॥ ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुंचक्रायुधंतरुणवारिजपत्रनेत्रम् ॥ १ ॥ प्रातर्नमामिमनसावचसा
 चमूर्ध्नापादारिविंदयुगुलंपरमस्यपुंसः ॥ नारायणस्यनरकार्णवतारणस्यपारायणप्रवणविप्रपरायणस्य ॥ २ ॥ प्रातर्भजामि
 भजतामभयंकरंतंप्राक्सर्वजन्मकृतपापभयापहत्यै ॥ योग्राहवक्रपतितांघ्रिगजेंद्रघोरशोकप्रणाशमकरोद्धृतशंखचक्रः ॥ ३ ॥
 श्लोकत्रयमिदंपुण्यंप्रातःकालेपठेत्तुयः ॥ लोकत्रयगुरुस्तस्मैदद्यादात्मपदंहरिः ॥ ४ ॥ राघवस्य ॥ प्रातःस्मरामिरघुनाथमु
 खारविंदमंदस्मितंमृदुलभापिविशालभालम् ॥ कर्णावलंबिचलकुंडलशोभिगंडकर्णोतदीर्घनयनंनयनाभिरामम् ॥ १ ॥
 प्रातर्भजामिरघुनाथकरारविंदंरक्षोगणायभयंदवरदंनिजेभ्यः ॥ यद्राजसंसदिविभज्यमहेशचांपसीताकरग्रहणमंगलमापस
 द्यः ॥ २ ॥ प्रातर्नमामिरघुनाथपदारविंदंपद्मांकुशादिशुभरेखिसुखावहमे ॥ योगींद्रमानसमधुव्रतसेव्यमानंशापापहंसप

दिगौतमधर्मपत्न्याः ॥ ३ ॥ प्रातर्वदामिवचसारधुनाथनामवाग्दोषहारिसकलंशमलं करोति ॥ यत्पार्वतीस्वपतिनासहभो
 कुक्कामांप्रीत्यासहस्रहरिनामसमंजसाप ॥ ४ ॥ प्रातःश्रयेश्रुतिनुतारधुनाथमूर्तिनीलांबुजोत्पलसितेतररत्ननीलाम् ॥ आ
 मुक्तमौक्तिकविशेषविभूषणाढ्यांध्येयांसमस्तमुनिभिर्जनमुक्तिहेतुम् ॥ ५ ॥ यःश्लोकपंचकमिदंप्रयतःपठेत्तुनित्यंप्रभातसमये
 शशीभूमिसुतोबुधश्च ॥ गुरुश्चशुक्रःशनिराहुकेतवःकुर्वंतुसर्वमसुप्रभातम् ॥ ६ ॥ ब्रह्मासुरारिस्त्रिपुरांतकारीभानुः
 हश्चगौतमः ॥ रैभ्योमरीचिश्च्यवनश्चदक्षःकुर्वंतुसर्वे ॥ १ ॥ भृगुर्वसिष्ठःऋतुरंगिराश्चमनुःपुलस्त्यःपुल
 स्वराःसत्तरसातलानिकुर्वन् ॥ २ ॥ सप्तर्षिणाःसप्तकुलाचलाश्चसप्तर्षयोद्धीपवनानिसप्त ॥ भूरादिकृत्वाभुवनानिसप्तकुर्वन् ॥ ४ ॥
 पृथ्वीसंगंधासरसास्तथापःस्पर्शीचवायुर्ज्वलनंचतेजः ॥ नभःसशब्दंमहतासहैतेकु ॥ ५ ॥ इत्थंप्रभातेपरमंपवित्रंपठेत्समरेद्वाश्रु
 णुयाच्चनित्यम् ॥ दुःस्वप्ननाशस्त्वहसुप्रभातंभवेच्चनित्यंभगवत्प्रसादात् ॥ १ ॥ पुण्यश्लोकोनलोराजापुण्यश्लोकोयुधिष्ठिरः ॥
 पुण्यश्लोकाचवैदेहीपुण्यश्लोकोजनार्दनः ॥ २ ॥ कर्कोटकस्यनागस्यदमयंत्यानलस्यच ॥ ऋतुपर्णस्यराजर्षेःकीर्तनंकलिनाश
 नम् ॥ ३ ॥ अश्वत्थामाबलिर्व्यासोहनूमांश्चविभीषणः ॥ कृपःपरशुरामश्चसप्तैतेचिरजीविनः ॥ ४ ॥ सप्तैतान्संस्मरेन्नित्यं
 मार्कण्डेयमथाष्टमम् ॥ जीवेद्वर्षातंसाग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥ ५ ॥ धर्मोविवर्धतियुधिष्ठिरकीर्तनेनपापंप्रणश्यतिवृकोदरकी
 र्त्तनेन ॥ शत्रुर्विनश्यतिधनंजयकीर्तनेनमाद्रीसुतौकथयतांनभवंतिरोगाः ॥ ६ ॥ अहल्याद्रौपदीसीतातारामंदोदरीतथा ॥

पंचकंनास्मरेन्नित्यंमहापातकनाशनम् ॥ ७ ॥ विश्वेशंमाधवंदुर्द्धिदंडपाणिंचभैरवम् ॥ वंदेकाशींगुहांगंगांभवानींमणिकर्णी
 काम् ॥ ८ ॥ बलिर्विभीषणोभीष्मःप्रह्लादोनारदोध्रुवः ॥ षडेतेवैष्णवाःप्रोक्ताःस्मरणंपापनाशनम् ॥ ९ ॥ इत्यादिपौराण
 श्लोकान्पठित्वा ॥ समुद्रवसनेदेविपर्वतस्तनमंडले ॥ विष्णुपलिनमस्तुभ्यंपादस्पर्शक्षमस्वमे ॥ इतिभूमिंप्राथ्योत्थायरविंगुरुं
 चनमस्कृत्यप्रातरग्निमितिसप्तचंपठेत् ॥ हरिः ॐ प्रातरग्निंप्रातर्द्रहवामहेप्रातर्मित्रावरुणाप्रातरश्विनो । प्रातर्भगपणंब्रह्म
 णस्पतिंप्रातःसोममृतरुद्रंहुवेम ॥ प्रातर्जितंभगमग्रंहुवेमवयंपुत्रमादितेयोविधुता । आग्रश्चिदंमन्यमानस्तुरश्चिद्राजाचिदं
 भगंभक्षीत्याह ॥ भगप्रणैतर्भगसत्यराधोभगेमांघियमुदवादनः । भगप्रणोजनयगोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नवंतःस्याम ॥ उतेदा
 नीर्भगवंतःस्यामोतप्रपित्वब्रतमध्येअह्ना । उतोदितामघवन्नत्सूर्यस्यवयंदेवानांसुमतौस्याम ॥ भगएवभगवोऽअस्तुदेवास्ते
 नवयंभगवंतःस्याम । तंत्वाभगसर्वंऽइज्जोहवीतिसनोभगपुरऽएताभवेह ॥ समध्वरायोपसोनमतदधिक्रवैवशुचयेपुदाय ।
 अत्राचीनंवसूविदुंभगैर्नोरथमिवाश्वावाजिनऽआर्वहतु ॥ अश्वावतीर्गोमतीर्नऽवपासोवीरवतीःसदमुच्छंतुभद्राः ॥ घृतंदुहाना
 चिश्वतःप्रपीतायूयंपातस्वस्तिभिःसदानः ॥ ॐयज्ञगोपुदुष्वभ्यंयज्ञास्मेदुहितर्दिवः । त्रितायतद्विभावयास्यायपरावहानेहसो
 वज्रतयःसुज्रतयोवज्रतयः ॥ निष्कंवाधाकृण्वतेस्त्रजवादुहितर्दिवः । त्रितेदुष्वभ्यंसर्वमाह्येपरिदन्नस्यनेहसोवज्रतयःसुज्र
 तयोवज्रतयः ॥ तदन्नायतदपसेतंभागमुपसेदुषे । त्रितायचद्वित्रितायचोपोदुष्वभ्यवहानेहसोवज्रतयःसुज्रतयोवज्रतयः ॥
 यथाकलांयथाशफंयथऽऽकृणंसंनयामसि । एवादुष्वभ्यंसर्वमाह्येसंनयामस्यनेहसोवज्रतयःसुज्रतयोवज्रतयः ॥ अजैष्माद्या

सनामचाभूमानागसोवयं । उषोयस्माहुःष्वभ्यादभैष्मापतदुच्छत्वनेहसौवज्रतयःसुज्रतयोवज्रतयः ॥ ॐ अजैष्माद्यासना
मचाभूमानागसोवयं ॥ जाग्रत्स्वप्नःसंकल्पःपापोयं द्विष्मस्तंसकृच्छतुयो नोद्वेष्टितमृच्छतु ॥ इतिप्रातःस्मरणंसंपूर्णम् ॥

॥ ३ ॥ अथप्रज्ञाविवर्धनस्तोत्रम् ॥
सनत्कुमारोभगवान्भोगमोक्षफलप्रदः ॥ तारकारिरुमापुत्रःक्रौचारिश्चषडाननः ॥ २ ॥ शब्दब्रह्मसमुद्रश्चसिद्धःसारस्वतोगुहः ॥
प्रदर्शनः ॥ ४ ॥ अष्टाविंशतिनामानिमदीयानीतियःपठेत् ॥ शरजन्मागणाधीशःपूर्वजोमुक्तिमार्गकृत् ॥ सर्वागमप्रणोताचवांछितार्थ
नीतिममनामानुकीर्तनं ॥ महाप्रज्ञामवामोतिनात्रकार्याविचारणा ॥ ६ ॥ इतिश्रीरुद्रयामलेप्रज्ञाविवर्धनस्तोत्रंसंपूर्णम् ॥ ५ ॥ महामंत्रमया
अथद्वितीयंप्रज्ञाकरंस्तोत्रं ॥ प्राचीसंध्याकाचिदंतर्निशायाःप्रज्ञादष्टेरंजनश्रीरपूर्वा ॥ वक्त्रीवेदान्भान्तुमेवाजिवक्त्रावागीशाख्या
वासुदेवस्यमूर्तिः ॥ १ ॥ प्रणताज्ञानसंदोहध्वांतध्वंसनकर्मठं ॥ नमामितुरग्रीवंहरिसारस्वतप्रदं ॥ २ ॥ श्लोकद्वयमिदं
प्रातरष्टाविंशतिवारकं ॥ प्रयतःपठतेनित्यंकृत्स्नाविद्याप्रसिध्यति ॥ ३ ॥ इतिप्रज्ञाकरंहयग्रीवस्तोत्रं ॥ ४ ॥
श्रीः ॥ ततःप्रातःसमुत्थायकुर्वाद्विष्णुमूत्रमेवच ॥ नैर्ऋत्यामिषुविक्षेपमतीत्याभ्यधिकंभुवइति ॥ १ ॥ तत्रप्रयोगः ॥ पूर्वो

॥ ४ ॥

॥ ३ ॥

मूत्रपुरी०
॥ ४ ॥

कब्राह्ममुहूर्ते उत्थायाचम्य इष्टदेवतां नमस्कृत्य प्रातःस्मरणं विधाय रविगुरुं नमस्कृत्य ग्रामाद्धर्निर्ऋत्यामिपुक्षेपात्यये शुद्धमृत्ति
 कांससिकतां जलपात्रं चादाय कीटादिरहितस्थलं गत्वामृज्जलपात्रे निधायायज्ञिधैरनाद्रैस्तृणैर्भूमिमाच्छाद्य प्रावृतशिराः पृष्ठतः
 कंठलंबितयज्ञोपवीतो यद्येकवस्त्रश्चेद्दक्षिणकर्णे निहितयज्ञोपवीतो मौनी घ्राणास्ये पिधाय दिवोदङ्मुखो रात्रौ दक्षिणामुखो मूत्रपु
 रीषे उत्सृज्य लोष्ठादिना गुदं परिमृज्य गृहीतशिश्रुत्थाय पूर्वगृहीतमृज्जलपात्रे गृहीत्वा द्रोमलकमात्रमृज्जलैर्द्विवारं लिंगशौचं कृ
 त्वार्धप्रसृतितदर्धार्धैर्मृज्जलैस्त्रिवारमपानं शोधय पुनर्जलैरेवलिंगगुदे प्रक्षाल्य शुद्धमृत्तिकयैकवारं हस्तं प्रक्षाल्य शुद्धभूमिमागत्या
 न्यमृज्जलैर्दशवारं वामकरं प्रक्षाल्य ततः करद्वयं सप्तवारं तावद्भिरिव मृज्जलैः प्रक्षाल्य वामदक्षिणपादौ प्रत्येकं त्रिः प्रक्षाल्यान्यजलेन
 द्वादशगंडूषान्वामभागं कृत्वा जलपात्रं त्रिः पर्युक्ष्य जलबिंदून्जले निक्षिप्योपवीतीद्विराचामेत् ॥ मूत्रमात्रोत्सर्गे तु पूर्ववदेकवारं
 लिंगं प्रक्षाल्य वामकरं त्रिः प्रक्षाल्य करद्वयं द्विः प्रक्षाल्यैककयामृदापादौ प्रक्षाल्य गंडूषचतुष्टयं विधाय आचामेत् ॥ उक्तशौचाकरणे
 प्रायश्चित्तं स्मृतिरत्नावल्यां ॥ गायत्र्यष्टशतं चैव प्राणायामत्रयं तथा इति ॥ जपेदितिशेषः ॥ इति मूत्रपुरीषादिविधिः ॥

॥ ५ ॥ अथ दंतधावनविधिः ॥

श्रीः ॥ मुखे पर्युषिते नित्यं भवत्यप्रयतो नरः ॥ तदार्द्रकाष्ठं शुष्कं वा भक्षयेद्दंतधावने ॥ १ ॥ उत्थाय नेत्रे प्रक्षाल्य शुचिर्भूत्वास
 माहितः ॥ परिजप्य च मंत्रेण भक्षयेद्दंतधावनं ॥ २ ॥ शुचिर्भूत्वा विष्णुमूत्रोत्सर्गेण शुचिर्भूत्वेत्यर्थः ॥ प्रतिपत्पष्ठचष्टमीनवम्येका
 दशी चतुर्दशी पंचदशी संक्रांतिव्यतीपातव्रतोपवासश्राद्धदिनार्कभौमशुक्रमंददिननिषिद्धदिनातिरिक्तदिनेषु ब्राह्मणो द्वादशां

गुलप्रमाणेन दशांगुलप्रमाणेन वा कनिष्ठांगुलिवत्स्थलेन तित्तिण्यादिविहितवृक्षोद्भवेन चूर्णीकृताग्रेण प्रक्षालितेन शुष्केणाद्र्णेण वा ॥ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च ॥ ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥ इति मंत्रेणाभिर्मन्त्रितेन काष्ठेन—मुखदुर्गे गंडूषांश्च कृत्वा ॐ कारं गायत्री च स्मृत्वा शिखां बध्नीयात् ॥ इति मंत्रमुक्त्वा दंतान्संशोध्य जिह्वोलेखं कृत्वा द्वादश

श्रीगणेशाय नमः ॥ ६ ॥ अथ प्रातः स्नानविधिः ॥

नराणाम् ॥ १ ॥ गंगागंगेतियो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि ॥ मुख्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं सगच्छति ॥ आचम्य प्राणायामं कृत्वा श्री

मद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वंतरे कलियुगे प्रथमचरणे भरतवर्षे भरतखंडे जंबुद्वीपे दंडकारण्ये देशे गोदावर्याः दक्षिणे तीरे कृष्णावेण्यो रुतरे तीरे वाशालिवाहनशर्केबौद्धासरे अमुकदिक्क्षेत्रे अमुकस्थे वर्तमाने चंद्रे अमुकस्थे श्रीसूर्ये अमुकस्थे देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथं स्थानस्थितेषु सत्सु शुभयोगे शुभकार्यिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकज्ञाताज्ञातस्पृष्टास्पृष्टमुक्तामुक्तपीतापीतसकलपापक्षयार्थं गंगाभागीरथीप्रातः स्नानमहंक

रिष्ये ॥ गंगाप्रार्थनं करिष्ये ॥ ॐ हिरण्यशृंगं ० नंदिनी नलिनी ० ॥ आपो हि छेति तृचस्यां वरीपः सिंधुद्वीप आपो गायत्री मार्जने वि
 नियोगः ॥ ॐ आपो हि धाम यो भुवस्तानं ऊर्जे दधातन । महेरणा यचक्षसे ॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः । उशतीरिव मा
 तरः ॥ तस्मा अरगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा चनः ॥ आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
 आपो न्नमापो मृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडा पृच्छन्दां स्यापो ज्योतीं ऽप्यापो यजं ऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भू
 भुवः सुवराप ओम् ॥ स्नानं कृत्वा ॥ इमं मे गंग इत्यस्य सिंधु क्षिप्रमेधो नद्यो जगती तीर्था लोडने विनियोगः ॥ ॐ इमं मे गंगेय मुने
 सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं स च ताप रुष्या । असिक्त्या मरुद्वधे वितस्तया जी कीये शृणु ह्या सुयोमया ॥ इत्यंगुष्ठेन त्रिरुदकमालोड्य ॥
 ऋतं चेति तृचस्य माधुच्छंदसो घमर्पणो भाववृत्तमनुष्टुप् अघमर्पणे विनियोगः ॥ ॐ ऋतं च सत्यं चाभीष्टात्तपसो ध्यायत । ततो
 रात्र्य जायत ततः समद्रोऽर्णवः ॥ समुद्रादर्णवा दधि संवत्सरोऽर्जजायत ॥ अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिपुतो वृशी ॥ सूर्या
 चंद्रमसौ धातार्यथा पूर्वमकल्पयत् ॥ दिवं च पृथिवीं चांतरिक्षमथोऽस्वः ॥ इति त्रिरावृत्त्या घमर्पणं कुर्यात् ॥ अथाह्यमंत्राः ॥
 नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने ॥ नमस्ते केशवानंतगृहाणा ह्यनमोऽस्तुते ॥ एहि सूर्य सहस्रांशो ते जोराशे जगत्सते ॥ अ
 नु कं पय मां भक्त्या गृहाणा ह्यनमोऽस्तुते ॥ धातुः कमंडलूद्भूते गंगे त्रिपथगामिनि ॥ त्रैलोक्यं यदि ते देवि गृहाणा ह्यनमोऽस्तुते ॥
 पापो हं पापकर्मा हं पापात्मा पापसंभवः ॥ त्राहि मां कृपया गंगे सर्वपापहराभव ॥ स्नानांगतर्पणं कुर्यात् ॥ ब्रह्मादयो ये देवास्तान्
 देवांस्तर्पयामि ॥ भूर्देवांस्तर्पयामि ॥ भुवर्देवांस्तर्पयामि ॥ स्वर्देवांस्तर्पयामि ॥ भूर्भुवः स्वर्देवांस्तर्पयामि ॥ निवीती ॥ तानृषी

स्तर्पयामि ॥ भूर्ऋषींस्तर्पयामि ॥ भुवर्ऋषींस्तर्पयामि ॥ स्वर्ऋषींस्तर्पयामि ॥ भूर्भुवःस्वर्ऋषींस्तर्पयामि ॥ सव्येनापसव्येनवा ॥
 तान्पितृंस्तर्पयामि ॥ भूःपितृंस्तर्पयामि ॥ भुवःपितृंस्तर्पयामि ॥ भूर्भुवःस्वःपितृंस्तर्पयामि ॥ अग्निदग्धा
 श्वयेजीवायेष्यदग्धाःकुलेमम ॥ भूमौदत्तेनतोयेनतृद्यायांतुपरांगतिम् ॥ इत्युदकांजलितेटेप्रक्षिप्य ॥ यन्मयादूषितंतोयं
 शारीरमलसंभवात् ॥ तद्दोषपरिहारार्थयक्ष्माणंतर्पयाम्यहम् ॥ इतियक्ष्मतर्पणंकुर्यात् ॥ स्नानविधौविशेषविधिरुत्सर्ज
 नप्रयोगेद्रष्टव्यः ॥ ततःशुष्कंवासःपरिधायोतरीयार्थद्वितीयंप्रावृत्यपरिधानीयमुपरिदशंनिष्पीडयेत् ॥ इतिस्नानविधिः ॥

॥ ७ ॥ अथोष्णोदकस्नानविधिः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पात्रेकिंचिच्छीतोदकंप्रक्षिप्यतदुपर्युष्णोदकेनपात्रमापूर्य ॥ ॐ शन्नोदेवीरुभिष्टय आपो भवतु पीतये ।
 शंयोरभिसंवतुनः ॥ आपःपुनंतुपृथिवीपृथिवीपूतापुनातुमाम् । पुनंतुब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूतापुनातुमाम् ॥ इपदाद्विवेन्मुमु
 चानः । स्विन्नस्नात्वीमलादिव ॥ पतंपवित्रेणैवाज्यं । आपःशुंधंतुमैर्नसः ॥ ऋतं च सत्यं चाभीह्वात्तपसोर्ध्यायत । ततोरा
 त्र्यजायतततःसमुद्रोर्अर्णवः ॥ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान्ऊर्जेदधातन । महेरणायचक्षसे ॥ इतिपंचमंत्रैरुष्णोदकमभिमंत्र्य
 गंगादितीर्थानिसरन्स्नात्वाआचम्यआपोहिष्ठेतितिसृभिर्मार्जनंकुर्यात् ॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

श्रीः ॥ आचम्ययथानिमित्तसंकल्पादिकृत्वा आपोहिष्ठादिमंत्रैः प्रोक्षणं मंत्रस्नानं ॥ ८ ॥ अथ गौणस्नानानि ॥

नसर्वाङ्गप्रोक्षणं गायत्रं ॥ २ ॥ अग्निरिति भस्मेत्यादि मंत्रैः प्रोक्षणं मंत्रस्नानं ॥ १ ॥ गायत्र्या दशकृत्वो जलमभिमन्त्र्यते ॥ ४ ॥ विष्णुपादोदकविप्रपादोदकोक्षणविष्णुध्यानादिभिश्च स्नानांतराणि ॥ ५ ॥ गौणस्नानैर्जपसंध्यादौ शुद्धिर्न तु श्राद्धदेवार्चनादौ ॥ ब्रह्मयज्ञे विकल्पः ॥ नैमित्तिककाम्यादिस्नाननिमित्तानि ग्रन्थांतरे आलोच्यानि ॥ ३ ॥ आर्द्रवस्त्रेणाङ्गमार्जनं कापिलं

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्राद्धेयज्ञे जपे होमे वैश्वदेवे सुरार्चने ॥ ९ ॥ अथ भस्मधारणविधिः ॥

म्यप्राणायामं कृत्वा ॥ अद्येत्यादि पूर्वोऽंशरीरशुद्ध्यर्थं भस्मधारणमहं करिष्ये ॥ ॐ मारुतस्तोके तनये मानं आयौ मानो गोपमा नो अश्वेषुरीरिषः । वीरान्मानोरुद्रभामितो वधीर्हविर्भतुः सदुमित्वा हवामहे ॥ आर्सेने उपविश्य आच

१ अग्निहोत्राग्निजं भस्मद्विरजाहोमं जंतथा ॥ औपासनसमुत्पन्नं समिदग्निं समुद्भवम् ॥ इत्यादि ॥ २ आसनान्याह व्यास ॥ कौशिकं कवलैव अभिचारे नीलवर्णं रक्तवर्णादिकर्मणि ॥ शातिका कवलः प्रोक्तः सर्वेष्टा चित्रकं बले ॥ वशाजिने व्याधिनाशः कवले दुःखमोचन ॥

॥ इत्यादि ॥ २ आसनान्याह व्यास ॥ कौशिकं कवलैव अभिचारे नीलवर्णं रक्तवर्णादिकर्मणि ॥ शातिका कवलः प्रोक्तः सर्वेष्टा चित्रकं बले ॥ वशाजिने व्याधिनाशः कवले दुःखमोचन ॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवो मे अस्तु सदा शिवो मे ॥ शिरसि ॥ ॐ तत्पुरुषाय
विद्महे महादेवाय नमः ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ मुखे ॥ ॐ अघोरेभ्यो धोरेभ्यो धोरेभ्यो धोरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो
नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ हृदये ॥ ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बले
तायै नमो नमः ॥ भवे भवे नारि भवे भवस्व मां भवो ब्रवाय नमः ॥ गुह्ये ॥ ॐ सुद्योजातं प्रपद्यामि सुद्योजा
अग्निरिति भस्म । वायुरिति भस्म । जलमिति भस्म । अग्निरिति मंत्रस्य पिप्पलादो रुद्रो गायत्री जपे वि० ॥ पादयोः ॥
पिभस्मानि ॥ इत्यभिमंत्र्य जलमिष्टितेन मध्यमांगुलित्रयगृहीतेन ललाटहृदयनाभिगलांसबाहुसंधिपृष्ठशिरःस्थानेषु ॐ नमः
शिवायेति शिवमंत्रेण ॐ नमो नारायणायेत्यष्टाक्षरेण वागायत्र्यावाप्राणवेन वा त्रिपुंड्रां कुर्यात् ॥ इति भस्मधारणविधिः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ प्रातः पुंड्रमुदकुर्वाह्युत्वा चैव तु भस्मना ॥ १० ॥ गोपीचंदनधारणम् ॥
चंदनतुलसीमूलसिंधुतीरजाह्नवीतीरवल्मीकादिस्थाग्राह्याः ॥ मृदं हस्ते जलेनार्द्रां कृत्य शुक्लपक्षे केशवाय नमः इतिललाटे । ना
रायणे त्युदरे । माधवेति हृदये । गोविंदायेति कंठे । विष्णवेति दक्षिणपार्श्वे । मधुसूदनेति दक्षबाहुमूले । त्रिविक्रमेति दक्षकर्ण
मूलदेशे । वामनेति वामपार्श्वे । श्रीधरेति वामबाहौ । हृषीकेशेति वामकर्णदेशे । पद्मनाभेति पृष्ठे । दामोदरेति ककुदि । ए

गोपीचं०
॥ १० ॥

॥ ६ ॥

वंद्वादशतिलकान्कृत्वा कृष्णपक्षसंकर्षणादिद्वादशनामभिर्निर्दिष्टद्वादशस्थानेषुकृत्वांते शिरसि ॐ नमो भगवेतवासुदेवायेति त्रयोदशतिलकोविधेयः ॥ विध्यंतरं यथा—वामहस्ते जलंकृत्वा सावित्र्या चाभिमंत्रितम् ॥ तद्विष्णोरिति मंत्रेण मर्दयेन्मृत्तिं कांततः ॥ अतो देवेति सूक्तेन तिलकंधारयेत्सदा ॥ एवं यथासंप्रदायं तिलकान्कुर्यात् ॥ इति गोपीचंदनादिमृद्धारणविधिः ॥

॥ ११ ॥ अथ कुशग्रहणविधिः ॥

श्रीः ॥ तत्र दशविधदर्भा यथा ॥ कुशाः काशायवा दूर्वा उशीराश्च सकुंदकाः ॥ गोधूमा व्रीहयो मुंजा दशदर्भाः सबल्वजाः ॥ कुशाभावे तु काशाः स्युः काशाः कुशसमाः स्मृताः ॥ कुशाभावे गृहीतव्या अन्ये दर्भा यथोचितम् ॥ कुशग्रहणकालः ॥ मासेन भस्यमावास्या तस्यां दर्भोच्चयोमतः ॥ अयातयामासे दर्भा विनियोज्याः पुनः पुनः ॥ शुचिर्भूत्वा शुचौ देशे स्थित्वा पूर्वोत्तरा मुखः ॥ ॐ कारेणैव मंत्रेण कुशान्स्पृष्ट्वा द्विजोत्तमः ॥ मंत्रस्तु ॐ विरिंचिनासहोत्पन्नपरमेष्ठी निसर्गज ॥ दहस्व सर्वपापानि दर्भस्वस्तिकरो भव ॥ हुंफट् ॥ इति सकृच्छित्त्वासमुद्धरेत् ॥ पवित्रलक्षणं तु—अनंतर्गभिणं साग्रं कौशं हिदलमेव च ॥ प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्र कुत्रचित् ॥ चतुर्भिर्दर्भैर्पि जलैर्वाक्षिणस्य पवित्रकम् ॥ एकैकन्यूनमुद्विष्टवर्णे वर्णयथाक्रमम् ॥ अन्यान्यपि चित्राणि कुशदूर्वामयानि च ॥ हेमात्मकपवित्रस्य कलानार्हतिपोडशीम् ॥ इदं पवित्रमनामिकया धारयेत् ॥ काम्याद्यन्यपि त्राण्यन्यत्रालोचनीयानि ॥ इति कुशग्रहणविधिः पवित्रलक्षणं च ॥ ॥ ११ ॥

सा० सं०
॥१२॥

॥ ३२ ॥ अथमालालक्षणं संस्कारश्च ॥

श्रीः ॥ अंगुलीगणनादेकरेखयाष्टगुणंभवेत् ॥ कुशग्रंथ्याकोटिगुणंरुद्राक्षैःस्यादनंतकम् ॥ अक्षगणनाप्युक्ताप्रजापतिना ॥
अष्टोत्तरशतंकुर्याच्चतुःपंचाशदेवतु ॥ सप्तविंशतिकंवापिततोनैकाधिकावरा ॥ रक्तवर्णैरमिश्रैश्चकीटंरंध्रविवर्जितैः ॥ अक्ष
पंकुर्यान्नेवेदुक्तफलंप्रिये ॥ एकैकमणिमंगुष्ठेनाकर्षन्प्रजपेन्मनुस्मृ ॥ मेरौतुलंघितेदेविनमंत्रफलभागभवेत् ॥ पश्चात्तेनज
सूत्रेजपेदष्टोत्तरशतं ॥ पादयोःपतितेतस्मिन्प्रक्षाल्यद्विगुणंजपेत् ॥ इतिसूत्रमाला ॥ एतच्चगायत्रीजपातिरिक्तजपेज्ञेयम् ॥
॥ अथसंस्कारः॥ कुशोदकसहितैःपंचगव्यैर्मालांप्रक्षाल्य ॥ ॐ ह्रीं अंआंइंईंउंऊंऊंऊंऊं ॥ प्रमादात्पतिते
झंजं दंढंढं तंथंदंथं पंफंभंभं चंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षं एतानिपंचाशन्मातृकाक्षराणिअश्वत्थपत्रस्थापितमालायांविन्यस्य
ॐ सद्योजातं० ॐ वामदेवाय० ॐ अघोरेभ्यो० ॐ तत्पुरुषाय० ॐ ईशानःसर्वविद्यानां० इतिपंचमंत्रान्जपित्वा ॥ सद्योजा
तेतिमंत्रेणमालांचपंचगव्येनप्रोक्ष्य ॥ शीतलजलेनप्रक्षाल्य ॥ वामदेवेतिचंदनेनावधृष्य ॥ अघोरेतिमालांधूपयित्वा ॥
तत्पुरुषेतिचंदनकस्तूर्यादिनालेपयित्वा ॥ ईशानइतिमंत्रेणप्रतिमणिंशतवारंदशवारंवाभिमंत्र्य ॥ अघोरइतिमंत्रेणमेरुंश
तवारमभिमंत्रयेत् ॥ ततएतैरेवपंचभिर्मंत्रैर्मालांपंचोपचारैःपूजयेत् ॥ रुद्राक्षान्कंठदेशेदशनपरिमितान्मस्तकेद्वेचविंशेषद्

9

第 〇 号

11611

षट्कर्णप्रदेशेकरयुगलकृतेद्वादशद्वादशैव ॥ बाह्वोरिदोःकलाभिर्नयनयुगकृतेएकमेकंशिखायावक्षस्यष्टाधिकंयःकलयतिश
तिकंसःस्वयंनीलकंठः ॥ ३ ॥ इतिमालासंस्कारः ॥

॥ ६१ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ १३ ॥ अभ्यासःशुद्ध्या ॥ ॥ ६१ ॥

॥ उत्तमातारकोपेतामध्यमालुप्ततारका ॥ अधमासूर्यसहिताप्रातःसंध्यात्रिधामता ॥ शुचौदेशे

नाब्रह्मतीर्थेनकेशवनारायणमाधवेतिसंबुद्धयंतैस्त्रिभिर्नामभिस्त्रिरपःपिबेत् ॥ ब्रह्मतीर्थमंगुष्ठमूलम् ॥ ॐकेशव । नारायण ।
माधव । गोविंदायनमः । विष्णवेनमः । मधुसूदनायनमः । त्रिविक्रमायनमः । वामनायनमः । श्रीधरायनमः ।

१ प्रतिनामादौप्रणवमुच्चेत् । केशवनारायणमाधवेतिनामभिराचमनम्, गोविदनाम्ना दक्षिणकरप्रक्षालनम्, विष्णुनाम्ना वामकरप्रक्षालनम्,
मधुसूदनत्रिविक्रमेतिद्वाभ्यां ओष्ठद्वयप्रोक्षणम्, वामनश्रीधरेतिद्वाभ्यां मुखमार्जनम्, हृषीकेशेन वामकरप्रोक्षणम्, पद्मनाभेन पादप्रक्षालनम्,
दामोदरेण मस्तकप्रोक्षणम्, संकर्षणेन ऊर्ध्वोष्ठप्रोक्षणम्, वासुदेवेन दक्षिणनासाच्छिद्रस्पर्शः, प्रद्युम्नेन वामनासाच्छिद्रस्पर्शः, अनिरुद्धेन दक्षिण-
नेत्रस्पर्शः, पुरुषोत्तमेन वामनेत्रस्पर्शः, अधोक्षजेन दक्षिणकर्णस्पर्शः, नारासिंहेन वामकर्णस्पर्शः, अच्युतेन नाभिस्पर्शः, जनार्दनेन हृदयस्पर्शः,
श्रीः, उपेक्षेण मस्तकस्पर्शः, हरिणा दक्षिणमुजस्पर्शः, श्रीकृष्णेन वाममुजस्पर्शः, इतिविधिवदाचमनम् ॥ एवमाचमनासंभवेत्रिःपीत्वाहस्तंप्रक्षाल्य

श्रीः ॥

हृषीकेशायनमः । पद्मनाभायनमः । दामोदरायनमः । संकर्षणायनमः । वासुदेवायनमः । प्रद्युम्नायनमः । अनिरुद्धायनमः । पुरुषोत्तमायनमः । अधोक्षजायनमः । नारसिंहायनमः । अच्युतायनमः । जनार्दनायनमः । उपेन्द्रायनमः । हरयेनमः । श्रीकृष्णायनमः ॥ पूर्वोक्तवद्भद्रयकृतपवित्रेग्रंथिरहितेग्रंथियुतेवाहस्तयोर्धृत्वा ॥ प्रणवस्यपरब्रह्मऋषिः । परमात्मादेवता । देवीगायत्रीछंदः । सप्तानांव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतमात्रिवसिष्ठकश्यपाऋषयः । अग्निवायुसूर्यबृहस्पतिवरुणैर्द्रविश्वेदेवादेवताः । गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छंदांसि । गायत्र्याविश्वामित्रऋषिः । सवितादेवता । गायत्रीछंदः । गायत्रीशिरसःप्रजापतिर्ऋषिः । ब्रह्माग्निवाय्वादित्यादेवताः । यजुश्छंदः । प्राणायामेविनियोगः ॥ ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ॐ आपोज्योतीरसो मृतं ब्रह्म भूर्भुवःस्वरोम् एवं त्रिरुक्त्वा ॥ ममोपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रातःसंध्यामुपासिष्ये ॥ आपो हि ष्ठे तितृचस्यांबरीषः सिंधुद्वीपऋषिः । आपो देवता । गायत्रीछंदः । मार्जने विनियोगः ॥ ॐ आपो हि ष्ठामयो भुवः । ॐ तान ऊर्जे दधातन । ॐ महेरणाय चक्षसे ॥ ॐ यो वः शिव तमो रसः । ॐ तस्य भाजय ते हनः । ॐ उशतीरिव मातरः ॥ ॐ तस्मा अरं गमामवः । ॐ यस्य क्षयायुजिन्वथ (इत्यधः) ॥ ॐ आपो जनयथाचनः ॥ सूर्यश्चेति

१ दक्षिणे रेचयेद्वायुं वामेनापूरितोदरम् ॥ कुंभकेन जपं कुर्यात्प्राणायामो भवेदिति ॥ पंचांगुलीभिर्नीसाग्रं पीडयेत्प्रणवेनैव ॥ मुद्रयं सर्वपापघ्नीवानप्रस्थगृहस्थयोः ॥ कनिष्ठानामिकां गुष्ठैर्यते श्वब्रह्मचारिणः ॥ प्रणवव्याहृतीः सप्तगायत्री शिरसा सह ॥ त्रिः पठेदायतप्राणः प्राणायामः स उच्यते ॥ इति ॥

मंत्रस्य याज्ञवल्क्यउपनिषदऋषिः । सूर्यमन्युमन्युपतिरात्रयोदेवताः । प्रकृतिश्छंदः । अभ्यंतरशुद्धयर्थेमंत्राचमनेविनियोगः ॥ ॐ सूर्यश्चमामन्युश्चमन्युपतयश्चमन्युकृतेभ्यः ॥ पापेभ्योरक्षंताम् ॥ यद्रात्रियापापमकार्ष ॥ मनसावाचाहस्ताभ्यां ॥ इतिजलंपीत्वाआचम्य ॥ प्रणवस्यपरब्रह्मऋषिः परमात्मादेवता देवीगायत्रीच्छंदः ॥ इदमहंमाममृतयोनौ ॥ सूर्येज्योतिपिबुहोमिस्वाहा ॥ बृहती गायत्र्याविश्वामित्रःसवितागायत्री ॥ आपोहिष्ठेतिनवर्चस्यसूक्तस्यांवरीपःसिंधुद्वीपआपोगायत्री । पंचमीवर्धमानासप्तमीप्रतिष्ठाअंत्येद्वेअनुष्टुभौ ॥ मार्जनेविनियोगः ॥ ॐ भूर्भुवःस्वरितिद्वितीयं ॥ गायत्र्यातृतीयंमार्जनंकृत्वा ॥ आपोहिष्ठेतिऋक्त्रयेणसंमार्ज्यं ॥ ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपोभवतुपीतये ॥ शंयोरभिस्रवंतुनः ॥ ईशानावार्योणांभयतीश्चैवान्वचारिपूरसेनसमगस्महि ॥ इदमापःप्रवहतयत्किंचदुरितंमार्चि ॥ अग्निंचविश्वशंभुवम् ॥ आपःपूर्णतिभेपूजं स्यमाधुच्छंदसोऽघमर्पणऋषिः । भववृत्तंदेवता । अनुष्टुप्छंदः । इतिनवर्गिभश्चतुर्थमार्जनं ॥ ॐ ऋतंचेतितृचस्यसूक्तं जायत ॥ ततोरात्र्यजायतततःसमुद्रोअर्णवः ॥ समुद्रार्दणवादीधिसंवत्सरोअजायत ॥ अहोरात्राणिविदधद्विश्वस्यमिप्रतो

? ' याज्ञिक्यउपनिषत्काण्डऋषिः , इत्थमपिपाठउपलभ्यते ॥

वृशी ॥ सूर्याचंद्रमसौ धातायथा पूर्वमकल्पयत् ॥ दिवं च पृथिवीं चांतरिक्षमथोऽस्वः ॥ इति वामनासापुटेन वायुं निरुद्ध्य दक्षि
णनासया पापपुरुषं निरस्य तज्जलमनवलोक्त्वामभागे क्षितौ क्षिपेत् ॥ आचम्य ॥ गायत्र्या विश्वामित्रः सविता गायत्री ॥ श्रीसूर्यायाध्यदाने विनियोगः दे
ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धियो नो ज्ञानं ॥ कुशोदके न जपस्थानं प्रोक्ष्य ॐ भूर्भुवःस्वरो मिति जपित्वासने पद्मासने नोपविश्य ॥ पृथ्वीति मंत्र
लोपजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं चतुर्थार्थं ध्यानं करिष्ये इति दद्यात् ॥ आत्मानं प्रदक्षिणं परिषिंचेत् ॥ तच्च काल
आचम्य प्रणायामं कृत्वा ॥ कुशोदके न जपस्थानं प्रोक्ष्य ॐ भूर्भुवःस्वरो मिति जपित्वासने पद्मासने नोपविश्य ॥ पृथ्वीति मंत्र
स्य मेरुपृष्ठऋषिः । कूर्मो देवता । सुतलच्छंदः । आसने विनियोगः ॥ ॐ पृथिव्यया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं
च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मां सशोणितभक्षणे ॥ तिष्ठ देवि शिखाबंधे चामुण्डे ह्यपराजिते ॥ अ
पसर्पे तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः ॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते गच्छंतु शिवाज्ञया ॥ अपक्रामंतु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ॥
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे ॥ गायत्र्या विश्वामित्रऋषिः । सविता देवता । गायत्रीछंदः । न्यासे विनियोगः ॥ ॐ त
त्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धियो नो ज्ञानं ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धियो नो ज्ञानं ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
कनिष्ठिकाभ्यां नमः । वरेण्यं तर्जनीभ्यां नमः । प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ इदमर्घ्यं पूर्णजलिः सूर्याभिमुखं स्तिष्ठन् गोकर्णाकारं जलीकृतपाणिभ्यामूर्ध्वक्षिपन्पान्ने दद्यात् ॥

शिखार्यैवपद् । धीमहिक्वचायहुम् । धियो यो नो नेत्रत्रयायवौपद् । प्रचोदयात् अस्त्रायफद् । इतिदिग्बंधः ॥ यो देवः सवि
तास्माकं धियो धर्मा दिगोचरे । प्रेरयेत्तस्य तद्गर्गस्तद्वरेण्यमुपासहे ॥ शुक्लो वर्णः । अग्निमुखं । ब्रह्माशिरः । चिण्णुर्हृदयं । रु
मुक्ताचिद्रुमहेमनीरधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तमिंदुकलानिबद्धमुकुटांतत्स्वार्थवर्णात्मिकाम् ॥ गायत्रीवरदाभयांकुशकशाशु
भ्रंकपालंगुणंशंखंचक्रमथारविंदयुगलंहस्तैर्वहंती भजे ॥ बालांबालादित्यमंडलमध्यस्थारक्तवर्णारक्तांबरानुलेपनस्त्रगाभरणां
चतुर्वक्त्रांदंडकमंडल्वक्षसूत्राभयांकचतुर्भुजांहंसासनारूढां ब्रह्मदैवत्यामृगवेदमुदाहरंती भूर्लोकधिष्ठात्रीगायत्रीनामदेवतांध्या
यामि ॥ आगच्छवरदेदेविजपेमेसंनिधौ भव ॥ गायंतंत्रायसेयस्माद्गायत्रीत्वंततः स्मृता ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः । तत्संवितुर्वरे

१ गायत्रीपदार्थविवरणम् ॥ 'तदित्यवाङ्मनोगम्यंधेययत्सूर्यमडले । सवितुः सकलोत्पत्तिस्थितिसहारकारिणः ॥ वरेण्यमाश्रयणीयं यदाधार
मिदं जगत् । भर्गः स्वसाक्षात्कारेण ह्यविद्याशक्तिदाहकृत् । देवस्य ज्ञानरूपस्य स्थानं दाक्रीडतोपिवा । धीमह्यहंस एवेति तेनैवाभेदसिद्धये । धियो तं
करणे वृत्तीः प्रत्यक्प्रवणचारिणीः । यदित्यलिगम्यं तत्सत्यज्ञानादिलक्षण । नोऽस्माकं बहुधाभ्यस्तभेदभिन्नधियापुनः । प्रचोदयात् प्रेरयतु प्रार्थनाया
जपे स्मृता ॥ गायत्र्या मूलवेदत्वाद्देदः पूर्वसुगीयते ॥ आरभ्यानामिकामध्यपर्वण्युक्तान्यनुक्रमात् ॥ तर्जनीमूलपर्यंतजपेद्दशसुपर्वसु ॥ मध्यमागुलिमू
ले तु यत्पर्वद्वितयं भवेत् ॥ तत्रैवैरुविजानीयाज्जपेतनातिलंघयेत् ॥ वस्त्रेणाच्छादितकरंदक्षिणय सदाजपेत् ॥ तस्य स्यात्सफलजाप्यंतद्धीनमफलं स्मृतम् इति

ण्यंभगोदिवस्यधीमहि ॥ धियोयोनःप्रचोदयात् ॥ इतिगायत्रीमंत्रं
 तिर्दशवारंवाजस्वा ॥ पुनःतत्सवितुरितिपङ्गन्यासंकृत्वाउपस्थानंकुर्यात् ॥ जातवेदसेमारीचःकश्यपोजातवेदाअग्निस्त्रिष्टु
 प् ॥ उपस्थानेविनियोगः ॥ ॐ जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदंहातिवेदः ॥ सनःपर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवसिंधुदु
 पस्थानेविनियोगः ॥ ॐ मित्रोजनान्यातयतिब्रवाणोमित्रोदाधारपृथिवीमतद्यां ॥ मित्रःकृष्टीरनिमिषाभिचष्टेमित्रायत्र्यः सूर्यो
 धृतवज्रुहोत ॥ प्रसमित्रमर्तोअस्तुप्रयस्वान्यस्तआदित्यशिक्षतिव्रतेन ॥ नहन्यतेनजीयतेत्वोतैननमंहोअश्रोत्यंतितोनदूरात् ॥
 अनमीवासइळ्यामदंतोमितज्ञवोवर्मन्नापृथिव्याः ॥ आदित्यस्यव्रतमुपक्षिपंतोवयंमित्रस्यसुमतौस्याम ॥ अयंमित्रोर्नमस्यः
 सुशेवोराजासुक्षत्रोअजनिष्टवेधाः ॥ तस्यवयंसुमतौयज्ञियस्यापिभद्रसौमनसेस्याम ॥ महोआदित्योनमसोपसद्योयातयज्जनो
 गुणतेसुशेवः ॥ तस्माएतत्पन्यतमायजुष्टमग्नौमित्रायहविराजुहोत ॥ मित्रस्यचर्पणीधृतोवोदिवस्यसानसि ॥ द्युम्नंचित्रश्रवस्तम
 म् ॥ अभियोमहिनादिवमित्रोबभूवसप्रथाः ॥ अभिश्रवोभिःपृथिवीं ॥ मित्रायपंचयेमिरेजनाअभिष्टिशवसे ॥ सदेवान्विश्वा
 न्विभर्ति ॥ मित्रोदेवेष्वायुषुजनायवृक्तबीहिषे ॥ इपइष्टव्रताअकः ॥ इदमुपस्थानंमित्रस्यचर्पणीत्यादिचतुर्भिर्वोक्तं ॥ त्र्यंबकंमै
 त्रावरुणिवसिष्ठोरुद्रोऽनुष्टुप् ॥ उपस्थानेविनियोगः ॥ ॐ त्र्यंबकंयजामहेसुगंधिपुष्टिवर्धनम् ॥ उर्वारुकमिवबध्नान्मृत्योर्मु
 क्षीयमामृतात् ॥ तच्छंयोःशंयुर्विश्वेदेवाःशक्ररी । उपस्थानेविनियोगः ॥ ॐ तच्छंयोरावृणीमहेगातुंयज्ञायगातुंयज्ञपतयेदेवीः

स्वस्तिरस्तुनःस्वस्तिर्मानुषेभ्यः ॥ ऊर्ध्वजिगतुभेपुजम् ॥ शंनो अस्तु द्विपदुञ्चतुष्पदे ॥ नमो ब्रह्मणे प्रजापतिर्विश्वे देवाजगती ।
 उपस्थाने विनियोगः ॥ ॐ नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्ये नमो ओषधीभ्यः ॥ नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे
 महते करोमि इति त्रिः ॥ प्राच्यै दिशे इन्द्राय च नमः । आग्नेय्यै दिशे अग्नये च नमः । दक्षिणायै दिशे सोमाय च नमः । नैऋत्यै दिशे
 निर्ऋतये च नमः । प्रतीच्यै दिशे वरुणाय च नमः । वायव्यै दिशे वायवे च नमः । अधरायै दिशे अनंताय च नमः । संध्यायै नमः । ईशान्यै दिशे
 श्वराय च नमः । ऊर्ध्वायै दिशे ब्रह्मणे च नमः । अथरायै दिशे अनंताय च नमः । संध्यायै नमः । गायत्र्यै नमः । सावित्र्यै नमः ।
 सरस्वत्यै नमः । सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ॥ यांसदा सर्वभूतानि स्थावराणि चराणि च ॥ सायं प्रातर्नमस्यं तिसामासंध्याऽभिरक्ष
 तु ॥ उत्तमेशिखरे जाते भूग्यां पर्वतमूर्धनि ॥ ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथा सुखम् ॥ भद्रं न इति मंत्रस्य एद्रोचिमदक्रुपिः ॥
 अग्निर्देवता ॥ एकपदा विराट्छंदः । शान्त्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ भद्रं नो अपि वातय मनः ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥
 प्रदक्षिणं परिभ्रन् ॥ आसत्य लोकात्पातालादालोकालोकपर्वतात् ॥ ये संति ब्राह्मणा देवास्तेभ्यो नित्यं नमो नमः ॥ इति गुरुन
 भिवादयेत् ॥ स्वस्तिकाकारहस्ताभ्यां कर्णौ स्पृष्ट्वा अमुकप्रवरो मुकगोत्रोऽहममुकशर्मा भोगुरोत्त्वामभिवादयामि इति प्रण
 म्य ॥ अनेन प्रातः संध्यावंदनेन कर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम् ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ द्विराचम्य ॥ प्रायश्चित्तान्यशेषाणि
 तपः कर्मात्मकानि वै ॥ यानि ते पापशेषाणां कृण्वानुस्मरणं परम् ॥ विष्णवे नम इति त्रिः ॥ इति प्रातः संध्या ॥ ॥ ४९ ॥

॥ १४ ॥ अग्निर्गन्धर्वाह्वारिणः ॥

श्रीः ॥ ब्रह्मचारीसंध्योपासनोत्तरं आचम्य प्राणानायम्य देशकालाद्युच्चार्य श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रातरग्नि कार्यं (सायंकाले साय मग्नि कार्यं) करिष्ये इति संकल्प्य अग्निं ध्यात्वा अग्नेः परितस्त्रिवारं सोदके न पाणिना परिसमूहं त्रिवारं पर्युक्षणं च कृत्वा समिधमा दाय ॥ अग्नये समिधमित्यस्य हिरण्यगर्भोऽग्निर्बृहती ॥ समिदाधाने विनियोगः ॥ ॐ अग्नये समिधमा हविर्ष्वबृहते जातवेदसे ॥ तथात्वमग्नेवर्धस्व समिधा ब्रह्मणा वयं स्वाहा ॥ इति समिधमग्नौ प्रास्य अग्नय इदं नममेति त्यागमुच्चरेत् ॥ ततः पाणी प्रक्षाल्या भौ प्रताप्य ॥ ॐ तेजसामासमनजि म इति मुखमवाङ्निमृज्य पाणी प्रक्षाल्य एवं पुनर्द्विवारं कृत्वा ॥ उपस्थानं कुर्यात् ॥ मयि मेधा मितिषण्णां हिरण्यगर्भ ऋषिः ॥ पूर्वेषां त्रयाणामग्नीं द्रसूय देवताः ॥ उत्तरत्रयाणामग्निं देवता ॥ गायत्री छंदः ॥ अद्वयुपस्था ने विनियोगः ॥ ॐ मयि मेधां मयि प्रजां मय्यग्निस्तेजो दधातु ॥ मयि मेधां मयि प्रजां मयीं द्रं द्रिचं दधातु ॥ मयि मेधां मयि प्रजां मयि सूर्यो भ्राजो दधातु ॥ यत्तै अग्ने ते जस्ते नृा हं ते जस्वी भूयासं ॥ यत्तै अग्ने वर्चस्ते नृा हं वर्चस्वी भूयासं ॥ यत्तै अग्ने हुरस्ते नृा हं हुरस्वी भूयासं इत्यग्निमुपस्थाय ॥ मानस्तोक इति कुत्सोरुद्रो जगती ॥ विभूतिग्रहणे विनियोगः ॥ ॐ मानस्तोके तनये मानं आयौ मानो गो पुमानो अश्वेषुरीरिषः ॥ वीरान्मानोरुद्रभामितो वधीर्हृविष्मंतः सद्मि त्वाहवामहे ॥ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे ॥ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति कंठे ॥ अगस्त्यस्य त्र्यायुषमिति नाभौ ॥ यद्वेदानां त्र्यायुषमिति दक्षिणस्कंधे ॥ तन्मे अस्तु त्र्यायुषमिति वामस्कंधे ॥ सर्वमस्तु शतायुषमिति शिरसि ॥ ॐ चर्मेश्वरश्च मे युशोर्पचते नमश्च ॥ यत्ते न्यूनं तस्मै त उपयत्तेति रिक्तं तस्मै तेनमः ॥ अग्नये नमः

ॐ स्वस्ति ॥ श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलं ॥ आयुष्यं ते जआरो ग्यं देहि मे हव्यवाहन ॥ इति संप्रार्थ ॥ अनेना
निकार्य होमेन भगवान् श्रीअग्नि नारायणः प्रीयताम् ॥ इत्यग्निकार्यप्रयोगः ॥

॥ १५ ॥ अथौपासनाः सायं होमः ॥
रूपी परमेश्वर प्रीत्यर्थं सायमौपासनं होमं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ चत्वारिंशं गेत्यग्निपुरुषं ध्यात्वा त्रिः परिसमुह्य दर्भैः परिस्तीर्याग्निः प
रुक्ष्य होमद्रव्यमग्नेरुत्तरतो निधाय ज्वलता दर्भद्वयेनावज्वल्य प्रोक्ष्य तेन त्रिः पर्यग्निकृत्वा तदुल्मुकं निरस्याप उपस्पृश्य अग्नेः पश्चिम
त आस्तीर्णं पुकुरोपुसमिधा सह विनिर्धाय ॥ विश्वानि न इति तृचस्यात्रेयो वसुश्रुतोऽग्निस्त्रिष्टुप् ॥ अग्न्यर्चने विनियोगः ॥ इति
पूर्वाभ्यामृभ्यां प्रतिपादमष्टासु दिक्षु गंधादिनाग्निमभ्यर्च्य ॥ तृतीयया वज्रांजलिर्नमस्कृत्य दक्षिणं जान्वाच्य समिधं तूष्णीमग्नौ
प्राक्षिष्याप उपस्पृश्य समिधि प्रदीप्तायां विधूमज्वालांगारेषु शतसंख्यान् प्रस्थस्य चतुःषष्टितमभागमितान्वातं दुलान् दक्षिणहस्ते
नादाय सव्यपाणिं हृदि निधायां गुल्युत्तरपार्श्वे न समिन्मूलतो द्व्यंगुलप्रदेशे ॥ ॐ अग्नये स्वाहेति हुत्वा ॥ अग्नय इदं ० ॥ पुनस्तंडुलाना
दाय तस्या ऐशानदेशे पूर्वाहुते भूयसीमाहुतिं ॥ ॐ प्रजापतिपदं चतुर्थं तं मनसा स्मरन् स्वाहेत्युच्चार्या संसृष्टां हुत्वा प्रजापतय इदं न
ममेतित्यक्त्वा पूर्ववदुपविश्य परित्तरणानि विसृज्य परिसमूहन पर्युक्षणे कृत्वोपस्थानं कुर्यात् ॥ तत्र मंत्राः ॥ अग्न आयूंषीति

१ अयं सर्वपागृह्याग्निमता विवाहोत्तराव्यवहितागामिरात्र्यारब्धत्वादावश्यकत्वाच्च पूर्वमुपन्यस्तः ।

सुणांशतैवलानसाकृषयः ॥ अग्निःपवमानोदेवता ॥ गायत्रीछंदः ॥ अद्भ्युपस्थानेविनियोगः ॥ ॐ अग्नआयूषिपवसआसुवोर्ज
मिषंचनः ॥ ओरेबाधस्वदुच्छुनां ॥ अग्निर्कृषिःपर्वमानःपांचजन्यःपुरोहितः ॥ तमीमहेमहागयं ॥ अग्नेपर्वस्वस्वर्पाअस्मेव
र्षःसुवीर्य ॥ दधद्रयिमयिपोषं ॥ इत्युपस्थाय ॥ अग्नेत्वन्नइतिचतसृणांगौपायनालौपायनावाबंधुःसुबंधुःश्रुतबंधुर्विप्रबंधुश्चैक
र्चाकृषयः ॥ अग्निर्देवता ॥ द्विपदाविराट्छंदः ॥ अद्भ्युपस्थानेवि० ॥ अग्नेत्वंनोअंतमउतत्राताशिवोभवावरूथ्यः ॥
वसुरमिर्वसुश्रवाअच्छानक्षिद्युमत्तमंरयिंदाः ॥ सनोबोधिश्रुधीहवमुर्गुष्याणोअघायतःसमस्मात् ॥ तंत्वाशोचिष्ठदीदिवःसु
न्नार्यन्नूनमीमहेसखिभ्यः ॥ प्रजापतेहिरण्यगर्भःप्रजापतिस्त्रिष्टुप् ॥ प्रजापत्युपस्थानेवि० ॥ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योविश्वजा
तानिपरिताबभूव ॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोअस्तुवयंस्यामपतयोरयीणां ॥ तंतुतन्वन्नित्यस्यदेवाअग्निर्जगती ॥ अद्भ्युप
स्थानेवि० ॥ तंतुतन्वन्नजसोभानुमान्विह्रिज्योतिष्मतःपथोरक्षधियाकृतान् ॥ अनुल्बणंवयतजोगुवामपोमनुर्भवजनयादे
व्यंजनं ॥ हिरण्यगर्भइत्यस्यहिरण्यगर्भःप्रजापतिस्त्रिष्टुप् ॥ प्रजापत्युपस्थानेवि० ॥ हिरण्यगर्भःसमवर्तताग्नेभूतस्यजातःप
तिरेकआसीत् ॥ सदाधारपृथिवीद्यामतेमांकस्मैदेवार्चहविषाविधेम ॥ एतैर्मत्रैर्वायव्यदेशेप्रह्वःकृतांजलिरग्निमीक्षमाणउप
स्थायपुनरुपविश्यमानस्तोकेतिविभूतिंघृत्वान्यूनातिरिक्ताछिद्रत्वार्थंविष्णुस्मरणंकृत्वाअनेनहोमेनभगवान् परमेश्वरःप्रीयता
मित्युक्त्वान्निसंभारयेत् ॥ इतिसायंहोमः ॥ ॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥१२॥

प्रातहा०
॥१६॥

॥ ५ ॥

श्रीः ॥ ममोपात्तदुरितक्षयद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रातरौपासनहोमं करिष्ये ॥ चत्वारिंशं गेति ध्यानादि पूर्ववत् ॥ परिसमू-
 हनावज्वलनाद्यर्चनं पूर्ववत् ॥ समिधं तूष्णीं अग्नौ निधाय ॥ ॐ सूर्याय स्वाहा सूर्यायेदं ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा प्रजापतय-
 स्थाने वि० ॥ ॐ सूर्यो नो दिवस्योपस्थानं कुर्यात् ॥ तिष्ठन् ॥ मन्त्राः ॥ सूर्यो नो दिवस्या त्वित्यस्य सौर्यश्चक्षुः सूर्यो गायत्री ॥ सूर्योप-
 स्थाने वि० ॥ ॐ उदृत्यं जावेदसं देवं वहंति केतवः ॥ इति विश्वायसूय ॥ उदृत्यं काण्वः प्रस्कण्वः सूर्यो गायत्री ॥ सूर्योप-
 यश्च ॥ नमो मित्रस्येति सौर्यो भितपाः सूर्यो जगती ॥ चित्रं देवानामित्यस्यां गिरसः कुत्सः सूर्यश्चिष्टुप् ॥ सू-
 त ॥ दूरे दृशे देवानामुदगाद नो कंच क्षुमित्रस्य चरुणस्याग्नेः ॥ आप्राद्या चार्वा पृथिवी अंतरिक्षं सूर्य आत्मा जगत्सुस्थु-
 समवर्तत इति द्वाभ्यां प्रजापतिं चोपस्थाय विभूतिं धृत्वा ॐ च मे स्वरश्च मे इति प्रातर्होमे विशेषः ॥ प्रजापते न त्वदेतान् ० हिरण्यगर्भः
 पणादि पूर्ववत् ॥ अस्तोत्तरं त्रिमुहूर्ततः उदयोत्तरं त्रिमुहूर्तं तरेवो भयत्रहोमं कुर्यात् ॥ इति प्रातर्होमः ॥ कर्मेश्वरा
 श्रीगणेशाय नमः ॥ आचम्य प्राणानायम्य ॥ अथ द्वादशान् मरुकाशः ॥ ॐ ॥ ३७ ॥ अथ पूर्वोच्चरितवर्तमान एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ मम आत्मनः
 ॥ ३६ ॥ अथ प्रातर्होमः ॥ ॐ ॥

श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीसवितृसूर्यनारायणप्रीत्यर्थं द्वादशनमस्काराख्यं कर्म करिष्ये इति संकल्प्य ॥ (पात्रे जलं गृही
त्वा तन्मध्ये गंधाक्षतपुष्पाणि क्षिप्वा ध्यानम्) आकृष्णे नागिरसो हिरण्यस्तूपः सविता त्रिष्टुप् ॥ सूर्यध्याने विनियोगः ॥ ॐ
डलमध्यवर्ती नारायणः सरसि जासनसन्निविष्टः ॥ हिरण्ये न सवितारथे नाद्वयो याति भुवनानि पश्यन् ॥ ध्येयः सदा सवितुम्
शिंश्रियायुक्तं तप्तकांचनसन्निभम् ॥ किरीटिनं पद्मनेत्रं पद्मरागविभूषितम् ॥ पद्मासनं पद्मकरं पद्मगर्भं समद्भुतिम् ॥ तेजोरा
थमारूढं द्विभुजं वरदं रविम् ॥ ॐ मित्राय नमः ॥ ॐ रवये नमः ॥ ॐ सूर्याय नमः ॥ ॐ भानवे नमः ॥ ॐ सप्ताश्वर
ॐ पूष्णे नमः ॥ ॐ हिरण्यगर्भाय नमः ॥ ॐ मरीचये नमः ॥ ॐ आदित्याय नमः ॥ ॐ सवित्रे नमः ॥ ॐ अर्काय नमः ॥
ॐ भास्कराय नमः ॥ मित्ररवि सूर्य भानु खगपूष हिरण्यगर्भ मरीच्यादित्य सवित्र कर्मास्करेभ्यो नमः ॥ विनतातनयो देवः कर्म
साक्षी सुरेश्वरः ॥ सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च अरुणो मे प्रसीदतु ॥ कर्मसाक्षिणे अरुणाय नमः ॥ आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिनेदि
ने ॥ जन्मांतरसहस्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते ॥ अनेन द्वादशनमस्काराख्येन कर्मणा भगवान्सवितृसूर्यनारायणः प्रीयतां नमः ॥
अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् ॥ सूर्यपादोदकं तीर्थं जठरे धारयाम्यहम् ॥ इति द्वादशनमस्काराः ॥ ॥ १८ ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ आचम्य प्राणायामं कृत्वा तिथिर्विष्णुस्त ० अद्येत्यादि ० श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीसवितृसूर्य

नारायणप्रीत्यर्थं तृचाकल्पविधिनानमस्काराख्यं कर्म करिष्ये ॥ (पात्रे जलं गृहीत्वा तन्मध्ये गंधाक्षतपुष्पाणि क्षिप्त्वा) ॥ ध्येयः स
दासवितृमंडलमध्यवर्ती नारायणः सरसि जासनसं निविष्टः ॥ केयूरवान्मकरकुंडलवान्किरीटो हारी हिरण्यवपुर्धृतशंखचक्रः ॥
ॐ नमः रोपणाकारं सुदधमसि नमः ॥ ॐ नमः हरिमाणं च नाशय नमः ॥ ॐ नमः भानवे नमः ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे
धमसि नमः ॥ ॐ नमः मरीचये नमः ॥ ॐ नमः पूष्णे नमः ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥
मः ॥ ॐ नमः द्विपंतं महरंधयन् नमः ॥ ॐ नमः अर्काय नमः ॥ ॐ नमः आदित्याय नमः ॥ ॐ नमः हरिमाणं च नाशय नमः ॥
मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवं नमः ॥ ॐ नमः मोअहं द्विपते रंधम् नमः ॥ ॐ नमः विश्वे नमः सहसा नमः ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥
भ्यां नमः ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥
रिमाणं निदधमसि नमः ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥
त्यसवितृभ्यां नमः ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥
द्यन्नद्य ० दिवं हृद्रो ० नाशय नमः ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥
निदधमसि नमः ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥ ॐ नमः अथोहारिद्रवेषु मे ॥

॥ ५ ॥

11 22 11 23 11

॥ १९ ॥ अथसौरप्रारंभः ॥
 त्वोर्ध्वचोद्विषन्नः ॥ चित्रदेवानामितिषळं
 स्त्रिष्टुप् ॥ हंसःशुचिषः

॥ ३९ ॥ अथ सैरप्रारंभः ॥
त्योर्ध्वचोद्विषन्नः ॥ चित्रदेवानामितिषळर्चस्यसूक्तस्यांगिरसःकृतमन्त्रं
स्त्रिष्टुप् ॥ हंसःशुचिषदित्यस्यगौतमोवामदेवः
देवीतिचतस्रोर्धपंचमाः

सौर
॥१६॥

118311

वं व॒ह॒ति॒के॒त॒वः ॥ ह॒शे॒वि॒श्व॒ाय॒सूर्य॑ ॥ अ॒प॒त्ये॒ता॒य॒वो॒य॒था॒न॒क्ष॒त्रा॒य॒त्य॒क्तु॒भिः ॥ सू॒रा॒य॒वि॒श्व॒च॒क्ष॒से ॥ अ॒ह॒श्र॒म॒स्य॒के॒त॒वो॒वि॒र॒इ॒म॒यो॒
 जा॒नो॒अ॒नु ॥ आ॒र्ज॒तो॒ऽअ॒ग्न॒यो॒य॒था ॥ त॒र॒णि॒वि॒श्व॒दर्श॒तो॒ज्यो॒ति॒ष्क॒द॒सि॒सूर्य॑ ॥ वि॒श्व॒मा॒भा॒सि॒रो॒च॒नं ॥ प्र॒त्य॒ङ् दे॒वा॒नां॒वि॒शः
 ज॒स्प॒श्व॒ह॒मि॒मा॒नो॒ऽअ॒क्तु॒भिः ॥ प्र॒त्य॒ङ् वि॒श्वं॒स्व॒ह॒शे ॥ १ ॥ ये॒ना॒पा॒व॒क॒क्ष॒सा॒भु॒र॒ण्यं॒तं॒ज॒नो॒अ॒नु ॥ त्वं॒व॒रु॒ण॒प॒श्य॑सि ॥ वि॒द्या॒मे॒पि॒र
 स॒शु॒ध्यु॒वः॒सू॒रो॒रथ॑स्य॒न॒स्यः ॥ ता॒भि॒र्या॒ति॒स्व॒यु॒क्ति॒भिः ॥ उ॒द्भ॒यं॒त॒म॒स॒स्प॒रि॒ज्यो॒ति॒ष्प॒श्य॑त॒उ॒त्तरं ॥ दे॒वं दे॒व॒त्रा॒सूर्य॑म॒ग॒न्म॒ज्यो॒ति॒
 रु॒त्त॒मं ॥ उ॒द्य॒न्न॒द्या॒मि॒त्र॒म॒ह॒ऽआ॒रो॒ह॒न्नु॒त्तरां॒दि॒वं ॥ ह॒द्रो॒गं॒म॒सूर्य॑ह॒रि॒मा॒ण॑च॒ना॒शय ॥ शु॒क्रे॒षु॒मे॒ह॒रि॒मा॒ण॑रो॒प॒णा॒का॒सु॒द॒ध॒म॒सि ॥ अ॒यु॒क्त॒स
 अथो॒हा॒रि॒द्र॒वे॒षु॒मे॒ह॒रि॒मा॒णं॒नि॒द॒ध॒म॒सि ॥ उ॒द॒गा॒द॒य॒मा॒दि॒त्यो॒वि॒श्वे॒न॒स॒ह॒सा॒स॒ह ॥ द्वि॒प॒तं॒म॒ह्यं॒रु॒ध॒य॒न्मो॒ऽअ॒हं॒द्वि॒प॒ते॒र॒धं ॥ २ ॥
 चि॒त्रं दे॒वा॒ना॒मु॒द॒गा॒द॒नी॒कं॒च॒क्षु॒मि॒त्र॒स्य॒वरु॑ण॒स्या॒ग्नेः ॥ आ॒प्रा॒द्या॒वा॒पृ॒थि॒वी॒ऽअं॒त॒रि॒क्षं॒सूर्य॑ऽआ॒त्मा॒ज॒ग॒त॒स्त॒स्थु॒प॒श्च ॥ सू॒र्यो॒दे॒वी
 म॒ष॒सं॒रो॒च॒मा॒नां॒म॒र्यो॒न॒यो॒षा॒म॒भ्ये॒ति॒प॒श्चात् ॥ य॒त्रा॒न॒रो॒दे॒व॒यं॒तो॒यु॒गा॒नि॒वि॒त॒न्व॒ते॒प्र॒ति॒भ॒द्रा॒य॒भ॒द्रं ॥ भ॒द्रा॒ऽअ॒श्वो॒ह॒रि॒तः॒सूर्य॑स्य
 चि॒त्रा॒ऽए॒त॒ग्वा॒ऽअ॒नु॒मा॒द्या॒सः ॥ न॒म॒स्यं॒तो॒द्वि॒व॒ऽआ॒प॒ष्ठ॒म॒स्थुः॒प॒रि॒द्या॒वा॒पृ॒थि॒वी॒य॒ति॒स॒द्यः ॥ त॒त्सूर्य॑स्य॒दे॒व॒त्वं॒त॒न्म॒हि॒त्वं॒म॒ध्या॒क
 स्थे ॥ अ॒न॒त॒म॒न्य॒द्रु॒शं॒द॒स्य॒पा॒जः॒कृ॒ण॒म॒न्य॒छ॒रि॒तः॒सं॒भ॒रं॒ति ॥ अ॒द्या॒दे॒वा॒ऽउ॒दि॒ता॒सूर्य॑स्य॒नि॒र॒ह॒सः॒पि॒प॒ता॒नि॒र॒व॒द्यात् ॥ त॒न्नो
 मि॒त्रो॒वरु॑णो॒मा॒म॒हं॒ता॒म॒दि॒तिः॒सिं॒धुः॒पृ॒थि॒वी॒ऽउ॒त॒द्यौः ॥ ३ ॥ इ॒ंद्रं॒मि॒त्रं॒वरु॑ण॒म॒ग्नि॒मा॒हुर॒थो॒द्वि॒व्यः॒स॒सु॒पु॒र्णो॒ग॒रु॒त्मा॒न् ॥ ए॒कं॒स

द्विप्राबहुधावदंत्यग्निंयममातरिश्वा॒नमाहुः ॥ कृ॒णं॒न्या॒नं॒हर॑यः सु॒पर्णा॒ऽअ॒पो॒वसा॑ना दि॒वमु॒त्स॑रंति ॥ तऽआ॒र्ववृ॒त्रन्त्स॑द॒ना
 ह॒तस्या॑दि॒द्धूते॑न॒पृथि॒वीव्यु॑द्यते ॥ हंसः शु॒चिष॑द्धु॒रंतरि॑क्षस॒ङ्गोत॑वेदि॒षद॑तिथि॒दुरो॑णस॒त् ॥ अ॒क्षेत्र॑विद्य॒थामु॒ग्धोभु॑व॒नान्य॑दी॒धयुः ॥ ४ ॥ यदु॒द्यसू॑र्य
 ब्र॒वोना॑गाऽउ॒द्यान्मि॒त्राय॑व॒रुणाय॑स॒त्यं ॥ व॒यं दे॒वत्रा॑दि॒तेस्या॑म॒तर्व॑प्रि॒यासौऽअ॒र्यम॑न्गण॒तः ॥ उत्सू॑र्यो॒बृह॒दूर्चो॑ष्य॒श्रेत्पु॑रु॒विश्वा
 च॒न्द्राऽउ॒पम॑नोऽअ॒र्कमा॑नः॒कत्वा॑कृतः सु॒कृतः॒कर्त॑भिर्भू॒त् ॥ ससू॑र्यप्रति॒पुरो॑नऽउ॒द्गाऽए॒भिः॒स्तोमे॑भि॒रत॑शेभि॒रे
 स्य॒दे॒वश्च॑मे॒वयः॒सम॑वि॒व्यक्त॑मांसि ॥ वि॒नः॒सह॑स्रं शु॒रधो॑र॒दंत्व॑तावा॒नोव॑रु॒णोमि॒त्रोऽअ॒ग्निः ॥ यच्छं॑तु
 ध॒र्षयु॑क्तः ॥ वि॒भ्राज॑मानऽउ॒षसा॑मु॒पस्था॑द्रेभैरु॒देत्य॑नु॒मद्य॑मानः ॥ ए॒षमे॑दे॒वः स॒विता॑ चच्छं॒दयः॒समा॑नं॒नप्र॑मि॒नाति॑धाम ॥ द्वि
 वो॒रुक्मऽउ॒रुच॑क्षाऽउ॒देति॑दरेऽअ॒र्थस्तर॑णि॒भ्राज॑मानः ॥ न॒नंज॑नाः सूर्येण प्रसू॒ताऽअ॒यन्न॑थो॒निक॑णवृ॒न्नपों॑सि ॥ यत्रा॑च॒क्रु॒रमु
 तं॒शुक॑म॒मुच्च॑रत् ॥ पश्ये॑मशर॒दः श॑तं जी॒वेम॑शर॒दः श॑तम् ॥ सप्त॑स्वसा॒रः सु॒विता॑य॒सूर्य॑व॒हति॑ ह॒रितो॑र॒धे ॥ ६ ॥ तच्च॑क्षु॒र्दे॒वाहि

ॐ देवमहोअसि ॥ बद्रसूर्यश्रवसामहोअसिसत्रादेवमहोअसि ॥ महादेवानामसूर्यः पुरोहितो विभुज्योतिरदाभ्यं ॥ ७ ॥
 निपातु विश्वतोद्यावाचयत्रतनन्नहोनिच ॥ दरेदृशेदेवजातायकेतवेदिवस्पत्रायसूर्यायशंसत ॥ सामासत्योक्तिः प
 गच्च विश्वमुदित्यर्षिभानुना ॥ प्राचीनमन्यदनुवर्तते रजः सूर्योतिषायासिसूर्यः ॥ न ते अदेवः प्रदिवो
 न्नच्चरसि स्वधाऽअनु ॥ यदुद्यत्वासूर्योपन्नवामहूतन्नोदेवाऽअनुमंसीरतक्रतु ॥ विश्वस्य हि प्रोषितो रक्षसि ब्रतमहेळ्य
 हवंवचः ॥ माशूनेभूमसूर्यस्य संहृदि भद्रं जीवतो जरणमंशीमहि ॥ ८ ॥ विश्वाहृत्वासुमनसः सूचक्षसः प्रजावतोऽअनमीवाऽअ
 नागसः ॥ उद्यंतं त्वामिन्नमहोदिवोदेवेज्योर्गजीवाः प्रतिपश्येमसूर्य ॥ महिज्योतिर्विभ्रंतत्वा विचक्षणभास्वतंचक्षुषेचक्षुषेमयः ॥
 आरोहंतं बृहतः पार्जस्यारैवयं जीवाः प्रतिपश्येमसूर्य ॥ यस्य ते विश्वाभुवनानि केतुना प्रचेरते निचविशंतेऽअकुभिः ॥ अनागा
 स्त्वेन हरिकेशसूर्याहो हानो वस्यसावस्यसोदिहि ॥ शन्नोभवचक्षसाशन्नोऽअह्नाशं भानुना शं हिमाशं घणेन ॥ यथाशमध्वं च्छ
 मसं हुरोणे तत्सूर्यद्रविणं धेहि चित्रं ॥ अस्माकं देवाऽउभयाय जन्मने शर्मयच्छत द्विपदे चतुष्पदे ॥ अदत्पि बद्धं जयमानमाशितं तद्
 स्मेशं यो ररपो दधातन ॥ यद्वो देवाश्चक्रमजिह्वया गुरुमनसो वा प्रयुती देवहेळनं ॥ अरावा योनोऽअभिदुच्छुनायते तस्मिन्तदे
 नो वसवो निधेतन ॥ ९ ॥ सूर्यो नो दिवस्य तु वारोऽअंतरिक्षात् ॥ अग्निर्नः पार्थिवेभ्यः ॥ जोषासवितर्यस्यते हरः शतं सवो

अहति ॥ पाहिनोद्विद्युतःपतंत्याः ॥ चक्षुर्नोदेवःसविताचक्षुर्नऽलुतपर्वतः ॥ चक्षुर्धातादधातुनः ॥ चक्षुर्नोदेहिचक्षुषे
चक्षुर्विख्यैतनूभ्यः ॥ संचेदंविचपश्येम ॥ सुसंहशंत्वावयंप्रतिपश्येमसूर्य ॥ विपश्येमनचक्षसः ॥ १० ॥ विभ्राड्बृह
ल्लिबतुसोम्यमध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविहुतं ॥ वातजतूतोयोऽभिरक्षतित्मनाप्रजाःपुपोषपुरुधाविराजति ॥ विभ्राड्बृहत्सुभृतंवा
जसातमंधर्मदिवोधरुणैःसत्यमर्षितं ॥ अमित्रहावृत्रहादस्युहंतमंज्योतिर्जज्ञेऽसुरहासपलहा ॥ इदंश्रेष्ठंज्योतिर्पांज्योतिरु
त्तमंविश्वजिह्वनजिह्वच्यतेबृहत् ॥ विश्वभ्राड्भ्राजोमहिषूर्योदृशऽलुरुपप्रथेसहऽओजोऽअच्युतं ॥ विभ्राजंज्योतिषास्व १
रगच्छोरोचनंदिवः ॥ येनेमाविश्वभुवनान्याभृताविश्वकर्मणाविश्वदेव्यावता ॥ ११ ॥ आयंगौःपृश्निकमीदसदन्मातरं
पूरः ॥ पितरंचप्रयन्त्स्वः ॥ अंतश्चरतिरोचनास्यप्राणादपानती ॥ १२ ॥ ऋतंचसत्यंचाभीह्रात्तपसोध्यजायत ॥ त्रिंशद्धामविराजतिवाकपतंगाय
धीयते ॥ प्रतिवस्तोरहुद्याभिः ॥ १२ ॥ अहोरात्राणिविदधद्विश्वस्यमिपतोवशी ॥ सूर्याचंद्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत् ॥ स-
मुद्रार्दणवादाधिसंवत्सरोऽअजायत ॥ अहोरात्राणिविदधद्विश्वस्यमिपतोवशी ॥ सूर्याचंद्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत् ॥ स-
दिवंचपृथिवीचांतरिक्षमथोस्वः ॥ सवितापृथ्वातात्सवितापुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविताधरात्तात् ॥ सवितानःसुवतुसर्वता
तिसवितानोरासतांदीर्घमायुः ॥ श्रीसवितृसूर्यनारायणार्पणमस्तु ॥ ॥ इति सौरसूक्तानि ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ आचम्यप्राणायामं कृत्वा ॥ श्रीमन्महागणाधिपतयेनमः ॥ लक्ष्मीनारायणाभ्यांनमः ॥ उमामहेश्वराभ्यांनमः ॥ शचीपुरंदराभ्यांनमः ॥ मातापितृभ्यांनमः ॥ इष्टदेवताभ्यांनमः ॥ कुलदेवताभ्यांनमः ॥ ग्रामदेवताभ्यांनमः ॥ स्थानदेवताभ्यांनमः ॥ वास्तुदेवताभ्यांनमः ॥ आदित्यादिनवग्रहदेवताभ्यांनमः ॥ सर्वेभ्योदेवे गजकर्णिकः ॥ लंबोदरश्च विकटो विघ्ननाशोगणाधिपः ॥ एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यांनमः ॥ अविघ्नमस्तु ॥ सुमुखश्चैकदंतश्च कपिलो भुजम् ॥ प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ शुक्लांबरधरं देवं शशिवर्णं चतुस्तुते ॥ सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषामं गलम् ॥ सर्पमंगलमंगल्येशिवे सर्वार्थसाधिके ॥ द्वादशैतानि नामानि यः हृदयस्थो जनार्दनः ॥ विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तं ऽघ्निगुं स्मरामि ॥ शरण्ये त्र्यंबके गौरिनारायणि नमो ऽलंतदेव ॥ विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तं ऽघ्निगुं स्मरामि ॥ लाभस्ते पांजयस्ते पांकुतस्ते पांपराजयः ॥ येषामिंदीवरक्ष्यामो तार्चनम् ॥ भुक्ते सयाति नरकं सूकरं प्वभिजायते ॥ इति कैर्मि ॥ अतो हरहर्देवपूजाप्रतिपुरुषमावश्यकी । अकरणे प्रत्यवायप्राप्ते ॥

१ कामासक्तो ऽथवा कुञ्ज शालिग्रामशिलार्चनात् । भक्त्या वायद्विवाभक्त्या कलौ मुक्तिमवाप्नुयात् ॥ इति स्कादे ॥ यो मोहादथवालस्यादकृत्वा देवतार्चनम् । भुक्ते सयाति नरकं सूकरं प्वभिजायते ॥ इति कैर्मि ॥ अतो हरहर्देवपूजाप्रतिपुरुषमावश्यकी । अकरणे प्रत्यवायप्राप्ते ॥

सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ॥ सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ सर्वेष्वाब्धकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ॥ देवादिशतुनः
 सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः ॥ श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे विष्णुपदे श्रीश्वे
 तवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतिमेयुगचतुष्के कलियुगे प्रथमचरणे जंबुद्वीपे भरतवर्षे दक्षिणापथे रामक्षेत्रे बौद्धावतारे दं
 यने अमुकतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकदिवसनक्षत्रे अमुकस्थिते वर्तमाने चंद्रे अमुकस्थिते श्रीसूर्ये अमु
 कस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु शुभनामयोगे शुभकरणे एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ
 मम आत्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं अस्माकं सकुटुंबानां सपरिवाराणां (द्विपदचतुष्पदसहितानां) क्षेमस्थैर्यायुरारो
 ग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं समस्ताभ्युदयार्थं च श्रीअमुकदेवताप्रीत्यर्थं यथामीलितोपचारद्रव्यैः ध्यानावाहनादिषोडशोपचारपूजां करि
 ष्ये ॥ आसनादिविधिं शरीरशुद्ध्यर्थं पुरुषसूक्तन्यासं षडंगन्यासं कलशशंखधंदादीपपूजनं च करिष्ये ॥ आदौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं
 महागणपतिसरणं च करिष्ये ॥ गणानां त्वाशौनको गृत्समदोगणपतिर्जगती गणपतिस्मरणे विनियोगः ॥ ॐ गुणानां त्वागुणप
 तिंहवामहे क्विं क्वीनामुपमश्रवस्तमं ॥ ज्येष्ठराजं ब्रह्मणं ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नृतिभिः सीदुसादनं ॥ वक्रतुंडमहाकायसूर्य
 कोटिसमप्रभ ॥ निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ महागणाधिपतये नमो नमः ॥ आसनं विधिः ॥ पृथ्वीतिमंत्रस्य । मेरु

१

महानासनविधिः सर्वे न्यासाश्च सविस्तरमाहिकाते योजितास्तत्र द्रष्टव्याः सतिसंभवे कार्यं च ॥

देवपूजा
॥२०॥

पृष्ठऋषिः । कूर्मो देवता । सुतलं छंदः । आसने विनियोगः ॥ ॐ पृथिव्यया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता ॥ त्वंचधारय
 मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ अपसर्पेतु वामदेवो भूतान्यनुष्टुप् । भूतोत्सादने विनियोगः ॥ ॐ अपसर्पेतु ते भूता ये भूता भूमिं सं
 स्थिताः ॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते गच्छंतु शिवाज्ञया ॥ अपक्रामंतु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ॥ सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्मस
 मारभे ॥ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकायकल्पांतदहनोपम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥ इति भैरवं नमस्कृत्य ॥ वामपा
 दतलपार्श्वे न भूमिं त्रिः प्रहृत्य ॥ देवा आयांतु ॥ यातु धाना अपयांतु ॥ विष्णो देवयजनं रक्षस्व ॥ भूमौ प्रादेशं कुर्यात् ॥ येभ्यो
 माता इत्यस्य गयः प्लातो विश्वे देवा जगती ॥ मनुष्यगंधनिवारणे विनियोगः ॥ एवापि त्रइत्यस्य वामदेवो बृहस्पतिर्विश्वे देवास्त्रि
 ष्टुप् ॥ मनुष्यगंधनिवारणे विनियोगः ॥ ॐ येभ्यो मातामधुमस्य न्वते पर्यः पीयूषं द्यौरा देति राद्रि बर्हाः ॥ उक्थय शुष्मान्वृषभरा
 त्स्वभ्रमसस्तो आदित्यो अनुमदास्वस्तये ॥ ॐ एवापि त्रैविश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसाहुर्विभिः ॥ बृहस्पते सुप्रजावीरवतो
 वयं स्याम पतयोरयीणाम् ॥ सहस्रशीर्षा षोडश नारायणः पुरुषोऽनुष्टुप् । अंत्या त्रिष्टुप् । स्वांगन्यासे विनियोगः ॥ ॐ सहस्रशीर्षा
 पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिं विश्वतो वृत्वा त्यतिष्ठ द्दशंगुलं ॥ वामकराय नमः ॥ ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यं ॥
 उतामृतत्वस्येशानो यदज्ञेनातिरोहति ॥ दक्षिणकराय नमः ॥ ॐ एतावानस्य महिमा तोज्यायांश्च पूरुषः ॥ पादौ स्य विश्वा

१ इमौ मंत्रौ पठित्वा घटासवाद्यचानंतरं सकल्पादिपूजारं भूतकार्यः (धर्म.)

भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ वामपादाय नमः ॥ ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैतुपूरुपः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ॥ ततो विष्वङ् व्यक्राम
 त्साशनानशनेऽभि ॥ दक्षिणपादाय नमः ॥ ॐ तस्माद्विराजोऽधिपूरुपः ॥ सजातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भू
 मिमथो पुरः ॥ वामजाने नमः ॥ ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवाय ज्ञमर्तन्वत ॥ वसंतोऽअस्यासीदार्ज्यं ग्रीष्म इधमः शरद्धविः ॥
 दक्षिणजाने नमः ॥ ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ॥ तेन देवाऽअयं जंतसाध्याऽऽर्षयश्च ये ॥ वामकव्यै नमः ॥ ॐ
 तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृपदाज्यं ॥ पशून्तांश्च क्रेवाय व्यानारण्यान्ग्राम्याश्च ये ॥ दक्षिणकव्यै नमः ॥ ॐ
 तक्रवः सामानि जज्ञिरे ॥ छंदानि जज्ञिरे तस्माद्यज्ञस्तस्मादजायत ॥ नाभ्यै नमः ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहु
 गावो हजज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः ॥ कंठाय नमः ॥ ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ॥ मुखं किमस्य कौबुह
 काजूरूपादोऽच्येते ॥ कंठाय नमः ॥ ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्ब्राह्मणं जन्यः कृतः ॥ ऊरुतदस्य यद्वैश्यः पश्यांश्चाद्रोऽअजायत ॥
 वामभुजाय नमः ॥ ॐ चंद्रमामनसो जातश्चक्षुः सूर्योऽअजायत ॥ मुखं दिं द्रश्चाग्निश्च माणाद्वायुरजायत ॥ दक्षिणभुजाय
 नमः ॥ ॐ नाभ्याऽआसीदंतं रिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ॥ पृथ्वां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तर्था लोकाऽअकल्पयन् ॥ मुखाय नमः ॥
 ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधः कृताः ॥ देवाय द्यज्ञं तन्वानाऽअर्बभन्पुरुषं पृथुं ॥ नेत्राभ्यां नमः ॥ ॐ यज्ञेन यज्ञमय

जंतदेवास्तानिधर्माणिप्रथमान्यासन् ॥ तेहनाकमहिमानःसंचंतयन्नपूर्वसाध्याःसंतिदेवाः ॥ मूर्धेनमः ॥ पङ्गन्यासः ॥ ॐ
र मुखमासीह्रह्राजन्त्यःकृतः ॥ ऊरुतदस्ययद्वैश्यःपद्मांशद्रोऽअजायत ॥ अंगुष्ठाभ्यांनमःहृदयायनमः ॥ ॐ ब्राह्मणो
सीदंतारिंक्षंशीर्णोद्यौःसमवर्तत ॥ मुखार्दिन्द्रश्चाग्निश्चप्राणाह्वायुरजायत ॥ तर्जनीभ्यांनमःशिरसेस्वाहा ॥ ॐ चंद्रमामने
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधःकृताः ॥ पद्भ्यांभूमिर्दिशःश्रोत्रात्तथालोकोऽअकल्पयन् ॥ मध्यमाभ्यांनमःशिखायैवपद् ॥ ॐ चंद्रमामने
ॐ यज्ञेनयज्ञमयजंतदेवास्तानिधर्माणिप्रथमान्यासन् ॥ देवायद्यज्ञंतन्वानाऽअवध्नन्पुरुषंपशुं ॥ अनामिकाभ्यांनमःकवचायहुम् ॥ ॐ
ष्ठाभ्यांनमःअस्त्रायफट् ॥ इतिदिग्बंधः ॥ कलशस्यमुखेविष्णुःकंठेरुद्रःसमाश्रितः ॥ कनिष्ठिकाभ्यांनमःनेत्रत्रयायवौषट् ॥ ॐ
ताः ॥ कुक्षौतुसागराःसर्वेसप्तद्वीपावसुंधरा ॥ तेहनाकमहिमानःसंचंतयन्नपूर्वसाध्याःसंतिदेवाः ॥ ॐ
ताः ॥ अत्रगायत्रीसावित्रीशांतिःपुष्टिकरीतथा ॥ मूलेतत्रस्थितोब्रह्मामध्येमातृगणाःस्मृ
१ अयमित्थंपङ्गन्यासआचारादत्रस्थापित । धर्मसिधावन्यत्रच ॥ ब्राह्मणो० हृदये ॥ अंगैश्चसहिताःसर्वेकलशंतुसमाश्रि
कवचा० ॥ यज्ञेन० अस्त्रायफट् ॥ इतिनेत्रन्यासरहितएवंपंचांगन्यासोविहितःसचयुक्तः ॥ गंगेचयमुनेचैवगोदावरिसरस्व
देवेतिपङ्गउक्तः ॥

१ अयमित्थंपङ्गन्यासआचारादत्रस्थापित । धर्मसिधावन्यत्रच ॥ ब्राह्मणो० हृदये ॥ अंगैश्चसहिताःसर्वेकलशंतुसमाश्रि
कवचा० ॥ यज्ञेन० अस्त्रायफट् ॥ इतिनेत्रन्यासरहितएवंपंचांगन्यासोविहितःसचयुक्तः ॥ गंगेचयमुनेचैवगोदावरिसरस्व
देवेतिपङ्गउक्तः ॥

ति ॥ नर्मदेसिंधुकावेरिजलेऽस्मिन्सन्निधिंकुरु ॥ कलशेगंगादितीर्थान्यावाहयामि ॥ कलशदेवताभ्योनमःसर्वोपचारार्थं
 गंधाक्षतपुष्पंसमर्पयामि ॥ धेनुमुद्रांप्रदर्श्य ॥ प्रक्षालितंशंखंप्रणवेनापूर्य ॥ ॐ शंखादौचंद्रैवत्यंकुक्षौवरुणदेवता ॥ पृष्ठेप्र
 जापतिंविद्यादग्नेगंगासरस्वती ॥ त्रैलोक्येयानितीर्थानिवासुदेवस्यचाज्ञया ॥ शंखेतिष्ठतिविप्रैर्द्रतस्माच्छंखंपूजयेत् ॥ पृष्ठेप्र
 न्नःशंखःप्रचोदयात् ॥ शंखदेवताभ्योनमः ॥ नमितःसर्वदेवैश्चपांचजन्यनमोस्तुते ॥ ॐपांचजन्यार्थविघ्नहेपावमानार्थधीमहि ॥ त्वं
 गमनार्थतुरक्षसाम् ॥ कुर्वेधंदारवंतत्रदेवताह्वानलक्षणम् ॥ शंखमुद्रांप्रदर्श्य ॥ आगमार्थेतुदेवानां
 दृशीरन्यमर्धकृष्णाअसेधदपुसन्ननोजाः ॥ घंटायै०सर्वोपचारार्थेगंधाक्षतपुष्पंसमर्पयामि ॥ ॐ द्विवेदेवस
 यामि ॥ अपवित्रःपवित्रोवासर्वावस्थांगतोऽपिवा ॥ अहंदासार्वभौवस्त्रयतोदत्रजेवार्तिनंशंबरंच ॥ ॐ द्विवेदेवस
 चसंप्रोक्षेत् ॥ अथध्यानम् ॥ शांताकारंभुजगशयनंपद्मनाभंसुरेशंविश्वाधारंगगनसदृशंमेघवर्णंशुभांगम् ॥ गंधाक्षतपुष्पंसमर्प
 नयनंयोगिभिर्ध्यानगम्यवंदेविष्णुंभवभयहरंसर्वलोकैकनाथम् ॥ १ ॥ ध्यायेन्नित्यंमेहेशंरजतगिरिनिभंचारुचंद्रावतंसंरत्ना
 कल्पोज्ज्वलांगपरशुमृगवराभीतिहस्तंप्रसन्नं ॥ पद्मासीनंसमंतात्स्तुतममरणैर्व्याघ्रकृत्तिवसानंविश्वाद्यंविश्ववंद्यंनिखिलम्

| विष्णुपंचायतनं | | शिवपंचायतनं | | सूर्यपंचायतनं | | देवीपंचायतनं | | गणेशपंचायतनं | |
|----------------|-------|-------------|-------|---------------|--------|--------------|------|--------------|-------------|
| शंकर | गणेश | विष्णु | सूर्य | शंकर | गणेश | विष्णु | शंकर | विष्णु | शंकर |
| २ | ३ | २ | ३ | २ | ३ | २ | ३ | २ | ३ |
| विष्णु | | शंकर | | सूर्य | | देवी | देवी | गणेश | दक्षिणादिशा |
| १ | | १ | | १ | | १ | १ | १ | |
| देवी | सूर्य | गणेश | देवी | देवी | विष्णु | सूर्य | गणेश | देवी | सूर्य |
| ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ |

गहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं ॥ २ ॥ गजवदनमचिंत्यं तीक्ष्णदंष्ट्रं त्रिनेत्रं बृहदुदरमशेषभूतिराजं पुराणं ॥ अमरवरसुपूज्यं रक्तवर्णं सुरेशं
 पशुपतिसुतमीशं विघ्नराजं नमामि ॥ ३ ॥ सशंखचक्रं रविमंडलस्थितं कुशेशयाक्रांतमनंतमच्युतं ॥ भजामि बुद्ध्या तपनीयमू
 रसेविताम् ॥ हस्तैश्च क्रदरालिखेदविशिखांश्चापंगुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥ ५ ॥ ध्याया
 १ एतेष्वन्यतमं स्वेष्टदेवतायाः पंचायतनं प्रकल्प्य तत्क्रमेणैव ध्यानश्लोकादिपठनीय ॥

मिहतिपुष्पांजल्यर्पणं ॥ ॐ सहस्रशीर्षा० आगच्छदेवदेवेशतेजोराशेजगत्पते ॥ क्रियमाणांमयापूजांगुहाणसुरसत्तम ॥
 श्रीअमुकदेवताभ्योनमःआवाहनार्थेपुष्पांजलिसमर्पयामि ॥ ॐ पुरुषएवेदं० नानारत्नसमायुक्तंकार्तस्वरविभूषितम् ॥ आ
 सनंदेवदेवेशप्रीत्यर्थप्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीअ० आस० तुलसीपत्रं० ॥ ॐ एतावानस्य० पाद्यंगुहाणदेवेशसर्वभक्षेमसमर्थभो ॥ आ
 भक्त्यासमर्पितंदेवलोकनाथनमोऽस्तुते ॥ श्रीअ० आस० पाद्यं० ॥ ॐ त्रिपादूर्ध्वउद्वै० नमस्तेदेवदेवेशनमस्तेधरणीधर ॥ नमस्ते
 जगदाधारअर्घ्यनःप्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीअ० अर्घ्यं० ॥ ॐ तस्माद्द्विराळं० कर्पूरवासितंतोयंमंदाकिन्याःसमाहृतम् ॥ आचम्यतां
 जगन्नाथमयादत्तांहिभक्तिः ॥ श्रीअ० आचमनीयं० ॥ ॐ यत्पुरुषेणहविषा० गंगासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः ॥ स्ना
 पितोऽसिमयादेवतथाशांतिंकुरुवमे ॥ श्रीअ० स्नानीयं० ॥ पंचामृतैःस्नपयिष्ये ॥ ॐ आप्यायस्वसमेतुतेविश्वतःसोमवृष्ण्यं ॥ स्ना
 भवावार्जस्यसंग्रहे ॥ कामधेनोःसमुद्भूतंदेवर्षिपितृसिदम् ॥ पयोददामिदेवेशस्नानार्थप्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीअ० स्नानार्थेपयः
 स्नानं० ॥ पयःस्नानानंतरंशुद्धोदकस्नानं० ॥ शुद्धोदकस्नानानंतरमाचमनीयंसमर्पयामि ॥ ॐ स्नानार्थेपयः
 व्याणिसं० ॥ ॐ दधिक्राव्णोअकारिषंजिष्णोरश्वस्यवाजिनः ॥ सुरभिर्नोमुखाकर्तृप्रणआयूषितारिषत् ॥ चंद्रमंडलसंका
 शंसर्वदेवप्रियंदधि ॥ स्नानार्थेतेमयादत्तंप्रीत्यर्थप्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीअ० दधिस्नानं० दधि० संगंधा० ॥ ॐ घृतंमिमिक्षे
 घृतमस्ययोनिर्घृतेऽश्रितोघृतमवस्यधाम् ॥ अनुव्वधमार्वहमादयस्वस्वाहाकृतंवृषभवक्षिहृव्यं ॥ आज्यंसुराणामाहारआज्यंयज्ञे
 १ शालिग्रामादावावाहनाभावान्मंत्रपुष्पसमर्पयेत् ॥ अन्यत्रावाहनंविहितमेव ॥

प्रतिष्ठितम् ॥ आज्यं पवित्रं परमं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीअ० घृत० स० गंधा० ॥ ॐ मधुवाताऋतायेते मधुक्षरं तिसिंधवः ।
 माध्वीर्नः संत्वोपधीः ॥ मधुनक्तं मतोपसोमधुमत्पार्थिवं रजः । मधुद्वोरस्तुनः पिता ॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमो अस्तसूर्यः ॥
 माध्वीर्गावो भवंतुनः ॥ सर्वोपधिसमुत्पन्नपीयूषसदृशं मधु ॥ स्नानार्थं ते प्रयच्छामि गृहाण परमेश्वर ॥ श्रीअ० मधु० स०
 गंधा० ॥ ॐ स्वादुःपवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिद्राय सुहवी तु नास्ते । स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे वृहस्पतये मधुमो अदाभ्यः ॥
 इक्षुदंडसमुद्भूतं दिव्यं शर्करया हरिम् ॥ स्नापयामि महाभक्त्या प्रीतो भवसुरेश्वर ॥ श्रीअ० शर्करा० स० गंधा० ॥ गंधद्वारां
 दुराधर्षी नित्यं पुष्टां करीपिणीं ॥ ईश्वरो सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ कर्पूरैः लासमायुक्तं सुगंधिद्रव्यं संयुतम् ॥ गंधोदकं म
 यादत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीअ० पङ्कगंधोदकस्ना० स० ॥ आपो हि षादिति तृचेन शुद्धोदकस्नानं स० ॥ अमुकदे०
 नमः ॥ विलेपनार्थं चंदनं समर्पयामि ॥ अमु० नमः ॥ अलंकारार्थं अक्षतान्समर्पयामि ॥ अमु० नमः ॥ पूजार्थं पुष्पाणि तुलसीपत्रा
 णि च समर्पयामि ॥ अमु० नमः ॥ बिल्वपत्राणि दूर्वाकुरांश्च समर्पयामि ॥ अमुकदेवताभ्यो नमः ॥ धूपं समर्पयामि ॥ अमुकदे
 वताभ्यो नमः ॥ दीपं समर्पयामि ॥ अमु० नमः ॥ नैवेद्यार्थं पंचामृतशेषनैवेद्यं शर्करां वा समर्पयामि ॥ अमृतोपस्तरणमसि ॥
 ॐ प्राणाय स्वाहा ॥ ॐ अपानाय स्वाहा ॥ ॐ व्यानाय स्वाहा ॥ ॐ उदानाय स्वाहा ॥ ॐ समानाय स्वाहा ॥ ॐ ब्रह्मणे
 स्वाहा ॥ नैवेद्यमध्ये प्राशनार्थं पानीयं समर्पयामि ॥ ॐ प्राणाय स्वाहा० ॥ उत्तरापोशनं समर्पयामि ॥ हस्तप्रक्षालनं समर्प
 यामि ॥ मुखप्रक्षालनं समर्पयामि ॥ करोद्धर्तनार्थं चंदनं समर्पयामि ॥ मुखवासार्थं पूगीफलतांवूलं समर्पयामि ॥ सुवर्णपुष्पद

क्षिणांसमर्पयामि ॥ अमुकदेवताभ्योनमः ॥ प्रदक्षिणानमस्कारंचसमर्पयामि ॥ मंत्रपुष्पंसमर्पयामि ॥ अनेनयथाज्ञानेनकृ
तपूर्वाराधनेनअमुकदेवताप्रीयतानमम॥तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु॥ उत्तरदिशिनिर्माल्यंविसर्जयेत्॥ पुरुषसूक्तेनअभिषेकंकुर्यात् ।

श्रीगणेशायनमः ॥ सहस्रशीर्षाषोऽशनारायणः पौरुषमानुष्टुभं त्रिष्टुवंतं ॥ अभिषेके विनियोगः ॥ हरिः ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः
सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिं विश्वतोवृत्वात्यतिष्ठदशंगुलं ॥ पुरुषएवेदंसर्वयद्भूतं यच्च भव्यं ॥ उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेना
तिरोहति ॥ एतावानस्यमहिमातो ज्यायांश्च पूरुषः ॥ पादौस्यविधाभूतानि त्रिपादस्यामृतं द्विवि ॥ त्रिपादूर्ध्वउदैत्पुरुषः पा
दौस्येहाभंवत्पुनः ॥ ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ तस्माद्विराळजायत विराजोऽधिपूरुषः ॥ सजातोऽत्यरिच्य
तपश्चाद्भूमिमथोपूरुः ॥१॥ यत्पुरुषेण हविषा देवाय शमर्तन्वत ॥ वसंतोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मः शरद्ध्रुविः ॥ तं यज्ञं बर्हिषिभ्यो
क्षन्पुरुषं जातमग्रतः ॥ तेन देवा अयं तसा ध्याक् ऋषयश्च ये ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यं ॥ पशून्तांश्चैक्रेवायव्यानां र
ण्यान् ग्राम्याश्च ये ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे ॥ छंदोऽसि जज्ञिरे तस्माद्यज्ञस्तस्मादजायत ॥ तस्मादश्वा अजायं
तयेकैर्चोभयादतः ॥ गवो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावचः ॥२॥ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ॥ मुखं किमस्य कौबाहू
१ स्नाने धूपे च दीपे च घंटा देर्नादमाचरेत् ॥ रुद्राद्यभिषेकविहितसूक्तान्यथर्वशीर्षाणि च आहिकान्ते संगृहीतानि संति तत्र द्रष्टव्यानि ॥

काङ्कुरूपादाउच्येते ॥ ब्राह्मणोस्यमुखमासीद्वाहुराजन्यःकृतः ॥ ऊरुतदस्ययद्वैश्यःपुत्र्यांशद्रोअजायत ॥ चंद्रसामनसो
 जातश्चक्षोःसूर्योअजायत ॥ मुखादिंद्रश्चाग्निश्चप्राणाद्धापुरजायत ॥ नाभ्यांआसीदुतरिक्षंशीर्ष्णोद्यौःसमवर्तत ॥ पद्भ्यांभू
 मिर्दिशःश्रोत्रात्तथांलोकोअकल्पयन् ॥ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधःकृताः ॥ देवायद्यज्ञंतेनानाअवध्नन्पुरुषंपशुं ॥
 यज्ञेनयज्ञमयजंतदेवास्तानिधर्माणिप्रथमान्यासन् ॥ तेहनाकंमहिमानःसंचंतयन्नपूर्वेसाध्याःसंतिदेवाः ॥ ३ ॥ अतोदेवाइ
 तिपणांकाणवोमेधातिथिर्देवाविष्णुर्गोयत्री । अभिपेकेवि० ॥ ॐ अतोदेवाअवंतुनोयतोविष्णुर्विचक्रमे ॥ पथिव्याःससधा
 मभिः ॥ इदंविष्णुर्विचक्रमेन्नेधानिदेधेपदं ॥ समूळहमस्यपांसुरे ॥ त्रीणिपदाविचक्रमेविष्णुर्गोपाअदोभ्यः ॥ अतोधर्माणि
 धारयन् ॥ विष्णोःकर्माणिपश्यतयतोव्रतानिपस्पशे ॥ इंद्रस्ययुज्यःसखा ॥ तद्विष्णोःपरमंपदंसदापश्यंतिसरथः ॥ दिवीव
 चक्षुरातंतं ॥ तद्विप्रासोविपन्यवौजागुवांसःसमिधते ॥ विष्णोर्यत्परमंपदं ॥ इतिपुरुषसूक्तंविष्णुसूक्तंच ॥ देवस्यत्वासवितुः
 प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्यामग्नेस्तेजसासूर्यस्यवचसेंद्रस्येद्रियेणाभिर्पिचामि ॥ बलायश्रियैयशसेन्नाद्याय अमृताभि
 पेकोस्तु शांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु ॥ अमुकदेव० महाभिपेकस्त्वानंसमर्पयामि ॥ महाभि० शुद्धोदकस्त्वानंसमर्पयामि ॥ स्त्वा
 नांतेआचर्मनीयंस० ॥ ॐ तदस्तुमित्रावरुणातदग्नेशंयोरस्मभ्यमिदमस्तुशस्तं ॥ अशीमहिगाधमुतप्रतिष्ठानमोदिवेवृहतेसा
 दनाय ॥ गृहावैप्रतिष्ठासूक्तंतत्प्रतिष्ठितमथावाचाशंस्तव्यंतस्माद्यद्यपिदूरइवपशूल्लभतेगृहानैवैनानाजिगमिपतिगृहाहिपशू

१ स्नानेवस्त्रेचनैवेद्येदद्यादाचमनतथा ॥

३०३०

॥२२॥

नांप्रतिष्ठाप्रतिष्ठा ॥ ॐ नर्यप्रजांमैगोपाय ॥ अमृतत्वार्यजीवसे । जातार्जनिष्यमाणांच ॥ अमृतैसत्येप्रतिष्ठितां ॥ सुप्रति
 छितमस्तु ॥ ॐ तंयज्ञं बर्हिषिप्रौक्षन्पुरुषंजातमग्रतः ॥ तेन देवाऽअयजंतसाध्याऽर्षयश्चये ॥ सर्वभूषाधिकेसौम्येलोकलजा
 ज्यं ॥ पशून्तांश्चक्रेवायुर्व्यानारुण्यान्प्राभ्याश्चये ॥ अमुं वस्त्रं ॥ आचमनीयं ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःसंभृतं पृषदा
 म ॥ अमुं यज्ञोप० आचमनीयं ॥ देवदेवनमस्तेस्तुत्राहिमांभवसागरात् ॥ ब्रह्मसूत्रंसोत्तरीयंगृहाणपुरुषोत्त
 म् ॥ हरिद्रांस० ॥ हरिद्राचूर्णसंयुक्तंकुंकुमंकामदायकं ॥ वस्त्रालंकरणंसर्वदेवित्वंप्रतिगृह्यताम् ॥ अमुकदे० कुंकुमंसमर्पया
 मि ॥ कज्जलंकामिकंरम्यंकामिनीकामसंभवं ॥ नेत्रयोर्भूषणार्थायसिंदूरंप्रतिगृह्यताम् ॥ अमुकदे० कज्जलं समर्पयामि ॥
 उदितारुणसंकाशंजपाकुसुमसंनिभं ॥ सीमंतभूषणार्थायसिंदूरंप्रतिगृह्यताम् ॥ अमुकदे० कज्जलं समर्पयामि ॥
 मुक्ताफलविराजितम् ॥ कंठस्यभूषणार्थायप्रीत्यर्थंप्रतिगृह्यताम् ॥ अमुकदे० कंठसूत्रंस० ॥ मांगल्यतंतुमणिभि
 श्वरि ॥ हस्तालंकरणार्थायकंकणंप्रतिगृह्यताम् ॥ अमुकदे० कंठसूत्रंस० ॥ काचस्यनिर्मितंदिव्यंकंकणंचसुरे
 प्रीत्यर्थंतवदेवेशिभूषणंप्रतिगृह्यताम् ॥ अमुकदे० नानाभूषणानिस० ॥ अलंकारान्मयादेविसुवर्णेनविनिर्मितान् ॥
 चमयादेविताडपत्रंप्रगृह्यताम् ॥ अमुकदे० ताडपत्रं सम० ॥ नानाभरणशोभाढ्यंतानारलोपशोभितं ॥ अर्पितं
 २ इतआरभ्यसौभाग्यद्रव्याणिविभवेसतिदेव्यैदेयानिपरिमलद्रव्याणितुदेवेभ्योऽपि ॥

॥२२॥

पुरुषसू.
॥२१॥

स्तुमोविश्वावयुनानिविद्वान्पुमान्पुमांसंपरिपातुविश्वतः ॥ ज्योत्स्नापतेनमस्तुभ्यंनमस्तेविश्वरूपिणे ॥ नानापरिमलद्रव्यंगृ
 हाणपरमेश्वर ॥ अमुकदे० नानापरिमलद्रव्याणि स० ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋचःसामानिजज्ञिरे ॥ छंदांसिजज्ञिरेत
 स० ॥ अक्षतास्तंदुलाःशुभ्राःकुंकुमेनविराजिताः ॥ मयानिवेदिताभक्त्यागृहाणपरमेश्वर ॥ अमुकदे० चंदनं
 तस्मादर्थाअजायंतयेकेचोभयादतः ॥ गावोहजज्ञिरेतस्मात्तस्माज्जाताअजावयः ॥ मात्यादीनिसुगंधीनिमालत्यादीनिवैप्र
 भो ॥ मयाहृतानिपूजार्थपुष्पाणिप्रतिगृह्यतां ॥ सेवंतिकाबकुलचंपकपाटलाजैःपुन्नागजातिकरवीररसालपुष्पैः ॥ अमुकदे० अक्षतान्स० ॥ ॐ
 लतुलसीदलमालतीभिस्त्वांपूजयामिजगदीश्वरमेप्रसीद ॥ पुष्पाणि० स० ॥ केशवादिचतुर्विंशतिनामभिर्वाअष्टोत्तरशतना
 मभिःसहस्रनामभिर्वातुलसीदलैरन्येनद्रव्येणवापूजयेत् ॥ ॐ यत्पुरुषंव्यर्द्धुःकतिधाव्यकल्पयन् ॥ मुखंकिमस्यकौबाहूका
 ऊरूपादाउच्येते ॥ वनस्पतिरसोऽद्भूतोगंधाढ्योगंधउत्तमः ॥ आग्नेयःसर्वदेवानांधूपोऽयंप्रतिगृह्यताम् ॥ अमु० धूपंस० ॥
 १ पत्रपुष्पफलंचैवयथोत्पन्नंतथार्पयेत् ॥ बिल्वंतुन्युब्जस्वाभिमुखाग्रच ॥ विष्णोःप्रियपुष्पाणि—मालतीजातिकेतकीमल्लिकाशोकचपकपुन्ना
 गबकुलोत्पलकुंदकरवीरपाटलातगरपुष्पाणिअन्यानिसुरभीणिच ॥ अपामार्गभृंगराजखदिरशमीदूर्वाकुशदमनकबिल्वाम्रमंजरीतुलसीपत्राण्युत्तरोत्तरं
 प्रियाणि तुलसीतुसर्वाधिका ॥ शिवप्रियाणि—अर्ककरवीरबिल्वबकुलधत्तूरपाटलमंदारतगरपुन्नागशमीद्रोणपुष्पनीलोत्पलानिप्रियाणि ॥ अस्य
 केतकचपकेमहाशिवरात्रावेवविहिते ॥ सूर्यविघ्नेशदेःप्राग्योविष्णुवत् रक्तत्वतिप्रियं । देव्याःप्रायःशिववत् ॥—पर्युपितदिनविचार.—बिल्व ३०

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्वाहूराज्जन्तः ॥ ऊरूतदस्य यद्वैश्वदेवः पृथ्वांशूद्रोऽजायत ॥ आज्यं सुवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ॥ दीपंगृहाण देवेश त्रैलोक्यं तिमिरापह ॥ भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ॥ त्राहि मां निरयाच्छोरा दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते ॥ अमु० दीपं स० ॥ ॐ चंद्रमामर्नसो जातश्चक्षुः सूर्योऽजायत ॥ मुखं दिद्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥ नैवेद्यं गृह्यतां देवभक्तिं मे ह्यचलांकुरु ॥ ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परांगतिम् ॥ शर्करा खंडखाद्यानि दधि क्षीरघृतानि च ॥ आहारं भक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ अमु० नैवेद्यं स० ॥ अमृतोपस्तरणमसिस्वाहा ॥ ॐ प्राणायस्वाहा ॐ अपानाय० ॐ व्यानाय० ॐ उदानाय० ॐ समानाय० ॐ ब्रह्मणे० ॥ नैवेद्यमध्ये पानीयं स० ॥ ॐ प्राणायस्वा० उत्तरापोशनं स० ॥ हस्तप्रक्षालनं स० ॥ मुखप्रक्षालनं स० करोद्धर्तनार्थं चंदनं स० ॥ पूगीफलं महद्विव्यं नागवल्लीदलैर्युतं ॥ कर्पूरैलासमायुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ अमु० तांबूलं स० ॥ इदं फलं मया देवस्थापितं पुरतस्तव ॥ तेन मे सुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ फलेन फलितं सर्वत्रैलोक्यं सचराचरं ॥ तस्मात्फलप्रदानेन सफलाः स्युर्मनोरथाः ॥ अमु० फलं स० ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ॥ अनंतपुण्यफलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ अमु० दक्षिणां स० ॥ ॐ श्रिये जातः श्रिय आनिरियाय श्रियं वयोजरितुभ्यो ददाति ॥ श्रियं वसाना अमृतत्वमायुर्न भवंति सुत्यासं मिथामितद्रौ ॥ श्रिय एवैनंतत् श्रियामादधाति संततमृचावषट्कृत्यं

अपामार्गं ३ जाती १ तुलसी ६ शमी ६ शतावरी ११ केतकी ४ दूर्वा ८ मदारः १ पद्मं १ नागकेसर २ दर्भ ३० अगस्त्य ३ मल्लिका ४ चपक ९ करवीर ८ एतेषां निर्दिष्टदिनोत्तरं पर्युषितत्वं । पत्रपुष्पादीनां ग्रहणादिविचारोऽन्यत्र द्रष्टव्यः ॥

संतत्यैसंधीयतेप्रजयापशुभिर्यएवंवेद ॥ याज्ययायजतिप्रतिवैयाज्यापुण्यैवलक्ष्मीःपुण्यामेवतल्लक्ष्मीसंभावयतिपुण्यांलक्ष्मीं
संस्क्रुते ॥ चंद्रादित्यौचधरणिर्विद्युदग्निस्तथैवच ॥ त्वमेवसर्वज्योतीषिआतिव्यप्रतिगृह्यताम् ॥ अमुं महानीराजनदीपं
स ॥ हतज्ञानतमोनाशक्षमंभक्त्यासमर्पितं ॥ कर्पूरदीपममलगृहाणपरमेश्वर ॥ अमुकदे० कर्पूरार्तिव्यदीपं स ॥ ॐ ना
भ्याआसीदुतारिंक्षंशीर्ष्णोद्यौःसमवर्तत ॥ पद्भ्यांभूमिर्दिशुःश्रोत्रात्तथा॥लोकोअकल्पयन् ॥ नमःसर्वहितार्थायजगदाधारहेत
वे ॥ साष्टांगोऽयंप्रणामस्तेप्रयत्नेनमयाकृतः ॥ नमोस्त्वनंतायसहस्रभूर्तयेसहस्रपादाक्षिशिरोरुवाहवे ॥ सहस्रनाम्नेपुरुषाय
शाश्वतेसहस्रकोटीयुगधारिणेनमः ॥ अमुं नमस्कारान् स ॥ ॐ सुप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधःकृताः ॥ देवायद्य
ज्ञेर्तन्वानाअर्बुधन्पुरुषंपशुं ॥ यानिकानिचपापानिजन्मांतरकृतानिच ॥ तानितानिविनश्यंतिप्रदक्षिणपदेपदे ॥ अमुक०
प्रदक्षिणाः स ॥ ॐ यज्ञेनयज्ञमयजंतदेवास्तानिधर्माणिप्रथमान्यासन् ॥ तेहुनाकंमहिमानःसंचंतयन्त्रपूर्वसाध्याःसंतिदे
वाः ॥ नमोमहद्भ्योनमो० राजाधिराजाय० ॥ मंत्रपुष्पांजलिंसमर्पयामि ॥ अग्निमावाह्य पुरुषसूक्तेनप्रत्यृचमाज्यंहुत्वा त
दसंभवेसूक्तावृत्तिद्वयंजह्वा ॥ पुनस्तैनैवसूक्तेनषोडशपुष्पाण्यर्पयित्वा ॥ सूक्तंजपेत् ॥ तदनंतरंस्वोपदिष्टमूलमंत्रयथाशक्ति
जह्वा ॥ ततोगीतंवाद्यंनृत्यंछत्रंचामरंदर्पणंआंदोलनंसर्वराजोपचारार्थेतुलसीपत्रं० ॥ ॐ अयंमेहस्तोभगवानयंमेभगवत्त
रः ॥ अयंमेविश्वभेषजोयंशिवाभिमर्शनः ॥ अयंमातायंपितायंजीवातुरागमत् ॥ इदंतवप्रसर्पणंसुबन्धवेहिनिरिहि ॥ आवा
हनंनजानामिनजानामितवार्चनं ॥ पूजांचैवनजानामिक्षमस्वपरमेश्वर ॥ मंत्रहीनंक्रियाहीनंभक्तिहीनंसुरेश्वर ॥ यत्पूजितं

मयादेवपरिपूर्णतदस्तुमे ॥ अपराधसहस्रं चक्रियतेहर्निशंमया ॥ दासोऽयमितिमांमत्वाक्षमस्वपरमेश्वर ॥ पूजांते ॥ दत्त्वा
षोडशभिर्ऋग्भिःषोडशान्नस्यचाहुतीः ॥ सूक्तेन (पौरुषेण) प्रत्युचंपुष्पंदत्त्वासूक्तेनसंस्तुयात् ॥ अन्यैःपौराणैश्च ॥ गतंपा
पंगतंदुःखंगतंदारिद्र्यमेवच ॥ आगतासुखसंपत्तिःपुण्याच्चतवदर्शनात् ॥ रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि ॥ गतंपा
हिधनंदेहिसर्वान्कामांश्चदेहिमे ॥ यस्यस्मृत्याचनामोक्त्यातपःपूजाक्रियादिषु ॥ न्यूनंसंपूर्णतांयातिसद्योवंदेतमच्युतं ॥ पुत्रान्दे
तिप्रार्थना ॥ अनेनमयायथाज्ञानेनयथामीलितोपचारद्रव्यैःकृतपूजनेनश्रीअमुकदेवताःप्रीयंताम् ॥ निर्माल्यं (विष्णुभि
न्नं) देवदत्तंभावयित्वाशिरसिधारयेत् ॥ शंखमध्येस्थितंतोयंभ्रामितंकेशवोपरि ॥ अंगलग्नंमनुष्याणांब्रह्महत्यांव्यपोहति ॥
अनेनमंत्रेणशंखोदंकंशिरसिधारयेत् ॥ अकालमृत्युहरणंसर्वव्याधिविनाशनं ॥ देवपादोदंकपीत्वाशिरसाधारयाम्यहं ॥ ती
र्थग्राह्यं ॥ तत्तुपात्रांतरेणैवविहितंनहस्तेन ॥ ॥ इतिदेवपूजा ॥ इतिअष्टधाविभक्तदिवसस्यप्रथमभागकृत्यं ॥ ६३ ॥

श्रीः ॥ मुद्राविमुक्तहस्तेनक्रियतेकर्मदैविकम् ॥ यदितन्निष्फलं तस्मात्कर्ममुद्रान्वितश्चरेत् ॥ त्रिचाभास्करे ॥ हस्तद्वयेत्वधो
१ शंखोदंकंशिरसिधृत्वादेवतीर्थपूजांतेवैश्वदेवांतेवाशिरसिधार्यपेयं च । तत्रक्रमःविप्रपादोदंकपीत्वादेवपादोदंकंपिबेत् । शालिग्रामशिलातोयमपी
त्वायस्तुमस्तके ॥ प्रक्षेपणंचक्रुर्गतेब्रह्महासनिगद्यते ॥ पात्रांतरेणैवग्राह्यंनकरेणकदाचन ॥ इतिकमलाकरः ॥ २ एवंदेवंसंपूज्यमातापितृप्रमुखान्
गुरुनपूजयेत् । यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवतथागुरौ ॥ इतिश्रुतेरितिमाधवः ॥ एकादश्याद्युपवासदिनेपितीर्थग्राह्यं ॥ (कमला.)

वक्रसंमुखेचपरस्परम् ॥ वामांगुलिर्दक्षिणानामंगुलीनांचसंधिषु ॥ संवेद्यमध्यमाभ्यांतुतर्जन्यांद्वेप्रयोजयेत् ॥ कनिष्ठेद्वेअ
 नामाभ्यांयुज्यात्साधेनुमुद्रिका ॥ १ ॥ वामांगुष्ठंतुसंगृह्यदक्षिणेनतुमुष्टिना ॥ कृत्वोत्तानंतथामुष्टिमंगुष्ठंतुप्रसारयेत् ॥ वा
 सारितौ ॥ कनिष्ठांगुष्ठकौलमौमुद्राचक्रस्यसिद्धिदा ॥ २ ॥ हस्तौतुसंमुखौकृत्वासंलग्नौसुप्र
 भूयःसंलग्नसुप्रसारिते ॥ गदामुद्रासमाख्यातापरामुक्तिकरीतथा ॥ ३ ॥ अन्योन्याभिमुखौहस्तौकृत्वातुप्रथितांगुली ॥ अंगुल्यौमध्यमे
 मिलातांगुष्ठौकुर्वात्सापन्नमुद्रिका ॥ ४ ॥ करौतुसुमुखौकृत्वासंमुखाबुद्धतांगुली ॥ अंगुल्यौमध्यमे
 तौचेद्भ्रथितांगुली ॥ अंगुष्ठौचमिथःश्लिष्टौमुद्रपात्रथितानिष्ठिके ॥ तर्जन्यौमुखतःश्लिष्टेभ्रिष्टावंगुष्ठकौत
 चेदसौमुद्रायमपाशाभिधामता ॥ ५ ॥ हस्तौतुविमुखौकृत्वाप्रथितानिष्ठिके ॥ तर्जन्यौमुखतःश्लिष्टेभ्रिष्टावंगुष्ठकौत
 अत्रैवमध्यमायाअपिप्रसारणंसंप्रदायसिद्धं ॥ ६ ॥ मुष्टिद्वयस्यतर्जन्यौप्रसार्योर्ध्वाधरीकृते ॥ ग्रथिते
 वाहनीस्मृता ॥ १० ॥ अधोमुखीत्वयंचेत्यान्मुद्रासंस्थापनीमता ॥ ११ ॥ अंगुष्ठौनिक्षिपेत्संयमुद्रात्वा
 ॥ १२ ॥ अंतःप्रवेशितांगुष्ठौसैवसरोधिनीमता ॥ १३ ॥ मुष्टिद्वयस्थितांगुष्ठौसंमुखौतुपरस्परम् ॥ संश्लिष्टाबुच्छितौकुर्वा
 त्सेयंसंमुखमुद्रिका ॥ १४ ॥ मुष्टिद्वयस्यतर्जन्यौप्रसार्योर्ध्वाधरीकृते ॥ अनुलोमविलोमेनभ्रामितेदेवताभितः ॥ दुष्टदृष्टि

निरासायसैषामुद्रावगुंठिनी ॥ १५ ॥ हृदयादिषडंगानामुद्रादेवतनौकृताः ॥ संकलीकरणाभिख्याःसर्वावयवपूर्तिदाः ॥
 त्रिद्व्येकदशसंख्याकत्रिवेदांगुलिभिःक्रमात् ॥ हृदयादिषडंगानामुद्राऋद्ध्याविपश्चिता ॥ तर्जन्यादित्रयेणप्रसारितेनहृदयम् ॥ १६ ॥ अंगुष्ठंतर्जनीभ्यांयोजितमुखाभ्यामधोत्राभ्यांशिरः ॥ १७ ॥ प्रसृतांगुष्ठेनाधोमुखेनशिखा ॥ १८ ॥ करद्वयद
 शांगुलिभिःप्रसृताभिःकवचम् ॥ १९ ॥ तर्जन्यादित्रयेणाग्नेत्रिकोणाग्रतुल्येननेत्रम् ॥ द्विनेत्र्यांत्वनामिकालोपः ॥ २० ॥ करद्वयद
 हस्तद्वयस्याप्यंगुष्ठतर्जनीभ्यांसशब्दमभितोभ्यामिताभ्यामस्त्रमितिसांप्रदायिकोर्थः ॥ २१ ॥ अधोमुखीधेनुमुद्रादेवस्योप
 रिदर्शिता ॥ अमृतीकरणीप्रोक्तापरमानंददायिनी ॥ २२ ॥ अधोमुखौग्रथितांगुष्ठौप्रसृतांगुलिकौकरौ ॥ परमीकरणनाम
 देवस्योपरिचालितौ ॥ २३ ॥ प्रसृतांगुलिकौहस्तौमिथःश्लिष्टौचसंमितौ ॥ कुर्यात्स्वहृदयेसंयमुद्राप्रार्थनसंज्ञिका ॥ २४ ॥
 अंजल्यांजलिमुद्रास्याद्वासुदेवाभिधाचसा ॥ २५ ॥ सैवशीर्षादिपादांतंचालिताचेदधोमुखी ॥ मुद्रैषाव्यापिकानामसद्गुण
 व्यासिदायिनी ॥ २६ ॥ तर्जन्यादित्रयेकार्येहस्तयोःसंकुचन्मुखे ॥ प्रसारितेसुसरलेतथांगुष्ठकनिष्ठिके ॥ दक्षहस्तस्यतर्ज
 न्यावामस्यानामिकामुखम् ॥ अनामयाचतर्जन्यामुखंमध्यांचमध्यया ॥ अंगुष्ठेनकनिष्ठायाअंगुष्ठस्यकनिष्ठया ॥ स्पर्शयेद्वा
 लिनीमुद्रासैषार्तीर्थार्पकविणी ॥ २७ ॥ अंगुष्ठाग्नेणसंस्पृश्यकनिष्ठामध्यपर्वणी ॥ गंधमुद्रेतिसाख्यातांगुष्ठयोर्मध्यपर्वणी ॥
 तर्जन्यग्नेणसंस्पृश्येपुष्पमुद्रेतिकीर्तिता ॥ २८ ॥ तर्जनीमध्यमानामामध्यपर्वणिंसंस्पृशेत् ॥ अंगुष्ठाग्नेणताधूपदीपनैवेद्यमु
 द्रिकाः ॥ २९ ॥ ऊर्ध्वात्रांगुलिभिर्त्रासमुद्रावामकरेकृता ॥ ३० ॥ सैवतांबूलमुद्रास्याद्दक्षेसंकुचित्तांगुलिः ॥ ३१ ॥ तर्जनी

मध्यमांगुष्ठैःप्राणमुद्राप्रकीर्तिता ॥ ३२ ॥ मध्यमानामिकांगुष्ठैःस्यादपानस्यमुद्रिका ॥ ३३ ॥ कनिष्ठानामिकांगुष्ठैर्व्यान
 मुद्राप्रकीर्तिता ॥ ३४ ॥ तर्जन्यनामिकांगुष्ठैःस्यादुदानस्यमुद्रिका ॥ ३५ ॥ समानमुद्रांगुलिभिःसंहताभिस्तुपंचभिः
 वरांकरी ॥ ३७ ॥ मिलितानामिकांगुष्ठमध्यमाग्राणियोजयेत् ॥ शिष्टेद्वेउच्छित्तेकुर्वान्मृगमुद्रयमीरिता ॥ अनयोरुपयोग
 स्तुहोमविधौभविष्यति ॥ ३८ ॥ कमलाकृतिमुद्रातुसौरमुद्रेतिकीर्तिता ॥ ३९ ॥ मुष्टिद्वयंतथोत्तानंकृत्वासंयोज्यपार्श्वतः ॥
 दक्षिणस्यकनिष्ठादीन्प्रसार्यक्रमतःपुरः ॥ तथावामकनिष्ठादीनैककान्सुप्रसारयेत् ॥ अष्टौमुद्राःसमाख्यातानामतासांक्रमा
 च्छृणु ॥ प्रोन्नामोन्नामनीचैवविंवंपाशुपतंतथा ॥ शुद्धंत्यागःसारिणीचतथाचैवप्रसारिणी ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥
 धोमुखेवामहस्तऊर्ध्वास्यंदक्षहस्तकं ॥ क्षिप्वांगुलीरंगुलीभिर्ग्रथयित्वाविवर्तयेत् ॥ प्रोक्तासंहारमुद्रयंविनियुकाविसर्जने
 ॥ ४९ ॥ इयमेवनिर्वाणमुद्रेत्युच्यते ॥ इतितृचाभास्करेमुद्रालक्षणानि ॥ ४९ ॥

॥ २३ ॥ अथदिनद्वितीयतृतीयभागकृत्यम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ दिवसस्याद्यभागेतुसर्वमेतत्समाचरेत् ॥ द्वितीयेचतथाभागेवेदाभ्यासोविधीयते ॥ वेदस्वीकरणंपूर्व
 ॥ ४९ ॥

ऋ० ब्र०

॥२६॥

विचारोभ्यसनं जपः ॥ तद्दानं चैव शिष्येभ्यो वेदाभ्यासो हि पंचधा ॥ जपे दध्यापयेच्छिष्यान्धारयेद्वा विचारयेत् ॥ अवेक्षेत च शास्त्राणि धर्मादीनि द्विजोत्तमः ॥ तृतीये च तथा भागे पोष्यवर्गार्थसाधनम् ॥ इति दिनाद्वितीयतृतीयभागकृत्यम् ॥ ॥ २४ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ चतुर्थे च दिवा भागे स्नानार्थं मृदमाहरेत् ॥ तिलपुष्पकुशादींश्च स्नायाच्चाकृत्रिमे जले ॥ नदीतीरे मेत्यप्रक्षालितमुखपादपाणि राचांतो बद्धशिखः शुचौ देशे शुद्धमृत्तिकांतं दुलचं वतिलांश्च निधाय मलस्नानं विधाय देशकालौ स्मृत्वा ॥ मसमस्तपापक्षयायुरभिवृद्धिद्वारा श्रीप० मध्याह्ने स्नानं क० इति संकल्प्य मृत्तिकां गायत्र्या दाय ॥ अश्वक्रांते ० ॥ उद्धृतासि वराहेण ० ॥ इत्यभिमंत्र्य गायत्र्या प्रोक्ष्य ॐ आपोज्योतीर सोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो मिति मंत्रेणा वृत्त्या त्रिधा विभज्यैकेन भागेन मूर्धा दिनाभिपत्यंतं द्वितीयभागे न नाभेरधः पादपर्यंतं मनुलिप्यां गानि क्षालयित्वा दित्यं निरीक्ष्य द्विराचम्य तृतीयभागं प्रचोदया दित्यस्त्रेणादाय सव्ये पाणौ कृत्वा ॐ भूरिति दक्षिणभागं ॐ भुव इति मध्यमभागं ॐ स्वरित्युत्तरभागं विधाय दक्षिणभागमस्त्रे सर्वांगमनुलिप्य ॐ सुमित्र्यान आप ओषधयः संतु इति मंत्रेणाग्निप्रक्षाल्या चम्य प्रातः स्नानवद्धरुणा वा हनादिवस्त्रनिष्पीडनवर्जं कुर्यात् ॥ अशक्तौ प्रातर्वत्स्नायात् ॥ इति ॥ २६ ॥

म. स्नान-
॥२४॥

॥२६॥

॥ २४ ॥

॥ २६ ॥

॥ २४ ॥

॥ २६ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ दर्भपवित्रपाणिराचम्यप्राणानायम्य ॥ समोपात्तदुरितक्षयद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमध्याह्नसंध्या ॥
सिष्ये ॥ आपोहिष्ठेति तृचेन पूर्ववत्प्रथमं मार्जनं कृत्वा मंत्राचमनं कार्यं ॥ आपः पुनं त्वित्यस्यानुवाकस्य नारायण आपो अष्टी मंत्रा

चमने विनियोगः ॥ ॐ आपः पुनंतु पृथिवी पृथिवी पुता पुनातु मां ॥ पुनंतु ब्रह्मणस्पतिं ब्रह्मपुता पुनातु मां ॥ यदुच्छिष्टमभोज्यं
यद्वा दुश्चरितं मम ॥ सर्वपुनंतु मामापो सतां च प्रतिग्रहं स्वाहा ॥ इति अपः पीत्वा ॥ आचम्य प्रातः संध्यावत् द्वितीयं तृतीयं चतु
र्थमार्जनं अघमर्पणं तं कृत्वा ॥ आचम्य ॥ हंसः शुचिपदिति मंत्रस्य गौतमो वामदेवः सूर्यो जगती ॥ सूर्यायार्घ्यदाने विनियोगः ॥
ॐ हंसः शुचिपदसुरंतरिक्षसद्गोतो विदुपदतिथिर्दुरोणसत् ॥ नृपद्मसदृतसद्व्योमसदुद्भागो जातु जा अद्रिजा कृतं ॥ श्रीसू
र्याय इदमर्घ्यं समर्पयामि ॥ इति त्रिः सकृद्वा दद्यात् ॥ आत्मानं परिरिपिच्य ॥ असावादित्यो ब्रह्म ॥ क्षिराचम्य ॥ ऊर्ध्वबाहुरु
न्मुखः सूर्यमुपतिष्ठेत् ॥ उदुत्यमिति त्रयोदशर्चस्य सूक्तस्य काण्वः प्रस्कण्वः ऋषिः श्रीसूर्यो देवतानवाद्या गायत्र्यः अंत्याश्च तत्त्वो नु
ष्टुभः ॥ चित्रं देवानामिति पळचस्य सूक्तस्य आंगिरसः कुत्सः सूर्यस्त्रिष्टुप् सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ ॐ उदुत्यं जातवैदसं देवं वहं

१ साचद्वादशघटीदिनोत्तरं विहित ॥ अर्घ्यार्थमावादासायं संध्यामाध्याह्निकीप्यते ॥ इति वचनात् ॥ य सध्यायदिनोपास्ति अग्निकार्यं न चेत्कृतम् ॥
गायत्र्यष्टशतं जप्यं प्रायश्चित्तं द्विजन्मनामिति ॥

तिके॒तवः ॥ ह॒शेवि॒श्वाय॒सूर्य ॥ अप॒त्येता॒यवो॒यथा॒नक्ष॒त्राय॑त्य॒क्तुभिः ॥ सू॒राय॑वि॒श्वच॑क्ष॒से ॥ अह॑श्रमस्यके॒तवो॒विर॒मयो॒
 ज॒नो॒अ॒नु ॥ आ॒ज॑तो॒अ॒ग्नयो॑यथा ॥ त॒राणि॑वि॒श्वदर्श॑तो॒ज्योति॑ष्क॒दसि॒सूर्य ॥ वि॒श्वमा॒भा॑सिरो॒चनं ॥ प्र॒त्यङ्दे॒वानां॑वि॒शःप्र॒
 त्यङ्दे॒षिमा॑नु॒षान् ॥ प्र॒त्यङ्वि॒श्वंस्व॒ह॒शे ॥ १ ॥ येना॑पावक॒क्षसा॑मु॒रुण्यं॑तंज॒नो॒अ॒नु ॥ त्वं॒वरु॑णप॒श्यसि ॥ वि॒द्यामे॑षि॒र
 ज॒स्पृथ॒वा॒मिमा॑नो॒अ॒क्तुभिः ॥ प॒श्यन्ज॒न्मानि॑सूर्य ॥ ताभि॑र्याति॒स्वयु॑क्तिभिः ॥ उ॒द्धयं॑तम॒सस्य॑रि॒ज्योति॑ष्प॒श्यं॑तउ॒त्तरं ॥ अ॒यु॒क्तस॒प्त
 शं॒धुवः॒सूरो॑रथ॒स्यनु॑स्यः ॥ ताभि॑र्याति॒स्वयु॑क्तिभिः ॥ उ॒द्धयं॑तम॒सस्य॑रि॒ज्योति॑ष्प॒श्यं॑तउ॒त्तरं ॥ दे॒वदे॒वत्रा॑सूर्यम॒गन्म॒ज्योति॑रु
 त्तमं ॥ उ॒द्यन्न॒द्याभि॑त्रमह॒ारोह॑न्नु॒त्तरा॑दि॒वं ॥ ह॒द्रो॒गंम॒सूर्य॑हरि॒माणं॑च॒नाश॑य ॥ शु॒क्लैषु॑मे॒हरि॑माणं॒रोप॒णाका॑सु॒दध॑मसि ॥ अ
 थौ॒हारि॒द्रवेषु॑मे॒हरि॑माणं॒नि॒दध॑मसि ॥ उ॒दगा॑द॒यमा॑दि॒त्योवि॒श्वेन॑सह॒सास॑ह ॥ आ॒प्राद्या॑वापृ॒थिवी॑अं॒तरि॑क्षं॒सूर्य॑आ॒त्माज॑ग॒तस्त॒स्थुष॑श्च ॥ सू॒र्यो॒द्वीम॑ष
 चि॒त्रदे॒वाना॑मु॒दगा॑दनी॒कं॒चक्षु॑र्मि॒त्रस्य॑वरु॒णस्या॑ग्नेः ॥ यत्रा॒नरो॑दे॒वयं॑तो॒युगानि॑वि॒तन्व॑तेप्र॒तिभ॒द्राय॑भ॒द्रं ॥ भ॒द्राअ॒श्वा॒हरि॑तः॒सूर्य॑स्यचि
 सं॒रोच॑मानां॒मर्यो॑षा॒मभ्ये॑तिप॒श्चात् ॥ नम॑स्यं॒तो॒द्वि॒वआ॑पृ॒ष्ठम॑स्थुःप॒रि॒द्यावा॑पृ॒थिवी॑यं॒तिस॒द्यः ॥ तत्सूर्य॑स्यदे॒वत्व॑तन्महि॒त्वंम॒ध्याक॑तोर्वि॒ते
 त्सं॒ज॒भार ॥ यदे॒दयु॑क्तह॒रितः॑स॒धस्था॑दा॒द्रीवा॑सस्तनु॒तेसि॒मस्मै ॥ तन्मि॒त्रस्य॑वरु॒णस्या॑भि॒चक्षे॑सूर्यो॒रूपं॑कृ॒ण्युते॒द्योरु॑प॒स्थे ॥ तन्नो॑मि॒त्रोव॑रु
 अ॒नंत॑म॒न्यदु॒शद॑स्यपा॒जःकृ॒णम॒न्य॒कृ॒रितः॑संभ॑रति ॥ अ॒द्यादे॒वाज॑दि॒तासूर्य॑स्य॒निर॑हसःपिपू॒तानि॑र॒वद्या॑त् ॥ तन्नो॑मि॒त्रोव॑रु
 णो॒माम॑हं॒ताम॑दि॒तिःसि॑न्धुःपृ॒थिवी॑उ॒तद्यौः ॥ ३ ॥ इत्यु॑प॒स्थाच॑उपवि॒द्याच॑म्यप्रा॒णायाम॑सा॒नवि॑धि॒न्यासां॑श्चकृ॒त्वा ॥ यु॒व

तींयुवादित्यमंडलमध्यस्थांश्वेतवर्णांश्वेतांबरानुलेपनस्रगाभरणांचतुर्वक्त्रांप्रतिवक्त्रं त्रिनेत्रांचंद्रशेखरांत्रिशूलखड्गखट्वांगडमर्वक
चतुर्भुजांवृषभासनारूढारुद्रदैवत्यांयजुर्वेदमुदाहरंतींभुवर्लोकाधिष्ठात्रींसावित्रींनामदेवतांध्यात्वा ॥ आगच्छवर० ॥ यथे
ष्टकामजपंकुर्यात् ॥ अन्यत्प्रातःसंध्यावत् ॥ इतिमध्याह्नसंध्या ॥ ॥ ७३ ॥

॥ २६ ॥ अश्वमेधायज्ञः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ दर्भेपुदर्भपाणिःप्राञ्जुखण्डोपविश्य आचम्यप्राणानायम्यदेशकालाद्युच्चार्यममोपात्तदुरितक्षयद्वाराश्री
परमेश्वरप्रीत्यर्थब्रह्मयज्ञेनयक्ष्ये ॥ पृथिवीतिमंत्रस्यमेरुपृष्ठऋषिः ॥ कूर्मोदेवता ॥ सुतलंछंदः ॥ आसनेविनियोगः ॥ ॐ
पृथिवत्वयाधृतालोकादेवित्वंविष्णुनाधृता ॥ त्वंचधारयमादेविपवित्रंकुरुचासनं ॥ अपसर्पेतुतेभूतायेभूताभूमिसंस्थिताः ॥
येभूताविघ्नकर्तारस्तेगच्छंतुशिवाज्ञया ॥ अपक्रामंतुभूतानिपिशाचाःसर्वतोदिशं ॥ सर्वेषामविरोधेनब्रह्मकर्मसमारभे ॥ वि
द्युदसीतिमंत्रस्य ॥ अग्निर्ऋषिः ॥ वरुणोदेवता ॥ उदकोपस्पर्शनेविनियोगः ॥ ॐ विद्युदसि विद्यमेपाप्मानुमृतात्सत्यमुपै
मि ॥ इतिमंत्रेणायपउपस्पृश्यवामजानूपरिदक्षिणंपादंनिधायदक्षिणजानुनिकुशपवित्रगर्भेप्रांगंगुलिमुत्तानंसव्यपाणिंनिधाय
तदुपरिदक्षिणंपाणिंप्रांगंगुलिमेवंन्यंचनिधायव्याहृतिपूर्वोपच्छोर्ध्वर्चशःसर्वासावित्रींपठेत् ॥ (प्रणवस्यपरब्रह्मऋषिः ॥ परमा

१ सचप्रातर्होमोत्तरमध्याह्नसंध्योत्तरंवावैश्वदेवातेवासकृदेवकार्यः । आश्वलायनैस्तुमध्याह्नसंध्योत्तरमेवानुष्ठेयः ॥ २ विद्युदसीत्यादेराद्यतेपाठस्तैत्ति
रीयविपयइति धर्मसिधुः ॥ ३ ऋग्याद्येतन्नित्यनपठेत् । नचस्मरेदपिछदःश्राद्धैवैतानिकेमले । ब्रह्मयज्ञेचेतिवचनात् ।

त्मादेवता ॥ दैवीगायत्रीछंदः ॥ व्याहृतीनांविश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजभृगवऋषयः ॥ अग्निवायुसूर्यप्रजापतयोदेवताः ॥
 गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बहल्यश्छंदांसि ॥ गायत्र्याविश्वामित्रःसवितागायत्री ॥ ब्रह्मयज्ञेविनियोगः ॥ अग्निमीळइत्यादीनांछंदसांमधुच्छंदादयऋष
 यः ॥ अग्न्यादयोदेवताः ॥ गायत्र्यादीनिछंदांसि ॥ ब्रह्मयज्ञेविनियोगः ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः ॥ तत्सवितुः० इतिपादःअर्ध
 ऋक् ॥ ३ ॥ अग्निमीळपुरोहितंयज्ञस्यदेवमत्विजं ॥ होतारंरत्नधातमं ॥ अग्निःपूर्वाभिर्ऋषिभिरीज्योनूतनैरुत ॥ सदेवो
 एहवक्षति ॥ अग्निनारयिर्मश्रवत्पोषमेवादिवोदेवे ॥ यशसंवीरवत्तमं ॥ अग्नेयंयज्ञमध्वरंविश्वतःपरिभूरसि ॥ सइहेवेषुग
 च्छति ॥ अग्निर्होताकविक्रतुःसत्यश्चित्रश्रवस्तमः ॥ देवोदेवेभिरागमत् ॥ १ ॥ यदुंगदाशुषेत्वमग्नेभद्रंकरिष्यसि ॥ तवेत्त
 त्सत्यमंगिरः ॥ उपत्वाग्नेदिवेदेवोषावस्तार्धियावयं ॥ नमोभरंतएमसि ॥ राजंतमध्वराणां गोपामृतस्यदीदिविं ॥ वर्धमा
 नंस्वेदमे ॥ सनःपितेर्वसनवेग्रेसूपायनोभव ॥ सचस्वानःस्वस्तये ॥ २ ॥ वायवायार्हादिदर्शत ॥ अग्निर्वैदेवानामवमोविष्णुः
 परमः ॥ अथमहाव्रतं ॥ एषपंथाएतत्कर्म ॥ अथातःसंहितायाउपनिषत् ॥ विदामघवन्विदा ॥ महाव्रतस्यपंचविंशतिसा
 मिधेन्यः ॥ इषेत्वोर्जेत्वा ॥ अन्नआयार्हाहिवीतये ॥ शन्नोदेवीरभिष्टये ॥ अथैतस्यसमान्नायस्य ॥ समान्नायःसमान्नातः ॥
 मयरसतजभनलगसंमितं ॥ गौः । रमा ॥ पंचसंवत्सरमयं ॥ अथशिक्षांप्रवक्ष्यामि ॥ वृद्धिरादैच् ॥ योगीश्वरंयज्ञवल्क्यं ॥
 नारायणंनमस्कृत्य ॥ अथातोर्धमंव्याख्यास्यामः ॥ अथातोर्धमजिज्ञासा ॥ अथातोब्रह्मजिज्ञासा ॥ तच्छंयोरावृणीमहेगातुंय
 ज्ञार्यगातुंयज्ञपतयेदैवीस्वस्तिरस्तुनःस्वस्तिर्मानुषेभ्यः ॥ ऊर्ध्वजिगातुभेषुजं ॥ शन्नोअस्तुद्विपदेऽं चतुष्पदे ॥ नमोब्रह्मणेन

मौअस्त्वग्रयेनमःपृथिव्यैनमओषधीभ्यः ॥ नमोवाचेनमोवाचस्पतयेनमोविष्णवेमहतेकरोमि ॥ इतित्रिः ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः
शांतिःशांतिःशांतिः ॥ वृष्टिरसीतिमंत्रस्य ॥ अग्निर्ऋषिः ॥ वरुणोदेवता ॥ उदकोपस्पर्शनेविनियोगः ॥ ॐ वृष्टिरसिवृश्च
मेपाप्मानुमृतात्सत्यमुपागामित्यपःस्पृष्टा ॥ देवतीर्थेनकुशाग्रैरेकैकांजलितर्पयेत् ॥ प्रजापतिस्तृप्यतु ॥ ब्रह्मातृप्यतु ॥ वे
दास्तृप्यंतु ॥ देवास्तृप्यंतु ॥ ऋषयस्तृप्यंतु ॥ यज्ञास्तृप्यंतु ॥ ॐकारस्तृप्यतु ॥ अकारस्तृप्यतु ॥ वषट्कारस्तृप्यतु ॥ वे
स्तृप्यंतु ॥ सावित्रीतृप्यतु ॥ यज्ञास्तृप्यंतु ॥ द्यावापृथिवीतृप्यतां ॥ अंतरिक्षंस्तृप्यतु ॥ अहोरात्राणिस्तृप्यंतु ॥ व्याहृतय
गास्तृप्यंतु ॥ वयांसितृप्यंतु ॥ समुद्रास्तृप्यंतु ॥ नद्यस्तृप्यंतु ॥ गिरयस्तृप्यंतु ॥ क्षेत्रौषधिवनस्पतिगंधर्वाप्सरसस्तृप्यंतु ॥ सांख्यास्तृ
नितृप्यंतु ॥ एवमंतानितृप्यंतित्वत्येकोनत्रिंशन्मंत्रैः ॥ अथनिवीतीऋषितीर्थेनकुशमध्येनद्विःप्रत्येकं ॥ रक्षांसितृप्यंतु ॥ ना
माध्यमास्तृप्यंतु ॥ गृत्समदस्तृप्यतु ॥ विश्वामित्रस्तृप्यतु ॥ यक्षास्तृप्यंतु ॥ विप्रास्तृप्यंतु ॥ अत्रिस्तृप्यतु ॥ भरद्वाजस्तृप्यतु ॥ वसि
ष्ठस्तृप्यतु ॥ प्रगाथास्तृप्यंतु ॥ पावमान्यस्तृप्यंतु ॥ क्षुद्रसूक्तास्तृप्यंतु ॥ महासूक्तास्तृप्यंतित्वितिद्वादशमंत्रैः ॥ अथप्राची
नावीतीपितृतीर्थेनकुशमूलैस्त्रिःप्रत्येकं ॥ सुमंतुजैमिनिवैशंपायनपैलसूत्रभाष्यभारतमहाभारतधर्माचार्यास्तृप्यंतु ॥ जानं
तिबाहविविगार्ग्यगौतमशाकल्यवाञ्छ्रव्यमांडव्यमांडूकेयास्तृप्यंतु ॥ गर्गीवाचक्कवीतृप्यतु ॥ वडवाप्रातीथेयीतृप्यंतु ॥ सुलभा

? अगुल्यग्रेतीर्थैर्देवस्वल्पागुल्योर्मूलेकाय । मध्यगुणगुल्योःपैत्रमूलेत्वंगुष्ठस्यब्राह्मम् ॥

मैत्रेयीतृप्य० ॥ कहोळंतर्पयामि ॥ कौषीतकंत० ॥ महाकौषीतकंत० ॥ पैग्यंत० ॥ महापैग्यंत० ॥ सुयज्ञंत० ॥ सांख्या
यनंत० ॥ ऐतरेयंत० ॥ महैतरेयंत० ॥ शाकलंत० ॥ बाष्कलंत० ॥ सुजातवक्रंत० ॥ औदवाहित० ॥ महौदवाहित० ॥
सौजामित० ॥ शौनकंत० ॥ आश्वलायनंत० ॥ येचान्येआचार्यास्तेसर्वेतृप्यंतु ॥ इतित्रयोविंशतिर्मंत्रैस्तर्पयित्वापितृस्तर्प
येत् ॥ यथा (प्रत्येकमंजलित्रयं) ततःअस्मत्पितरंअमुकशर्माणंअमुकगोत्रंवसुरूपंस्वधानमस्तर्पयामि ॥ अस्मत्पितामहंअ
मुकशर्माणंअमुकगोत्रंरुद्ररूपंस्व० ॥ अस्मत्पितामहंअ०श०अ०गो०आदित्यरूपंस्व० ॥ अस्मत्मातरंअमुकदांअमुकगो
त्रांवसुरूपांस्व० ॥ अस्मत्पितामहींअ० दांअ० गो० रु० स्व० ॥ अस्मत्प्रपितामहींअमुकदांअ० गो० आदित्यरूपांस्व०॥
अ०सापलमातरंअमु०दांअमु०गोत्रांवसु०स्व० ॥ अस्मत्मातामहंअमुकशर्माणंअमुकगोत्रंसपत्नीकंवसुरूपंस्व० ॥ अस्मत्मा
तृपितामहंअमुकशर्माणंअमुकगोत्रंसपत्नीकर०स्व० ॥ अस्मत्मातृप्रपितामहंअमुकशर्माणंअ०गोत्रंसपत्नीकंआदित्यरूपं
स्व० ॥ अस्मत्पत्नींअमुकदांअमुकगोत्रांवसुरूपांस्वधान० ॥ अस्मत्सुतंअमुकशर्माणंअमुकगोत्रंसपत्नीकंससुतंवसुरूपंस्वधा
न० ॥ अस्मत्दुहितरंअमुकदांअमुकगोत्रांसभर्तृकांवसुरूपांस्व० ॥ अस्मत्पितृव्यंअमुकशर्माणंअमुकगोत्रंसपत्नीकंससुतंवसु
रूपंस्व० ॥ अस्मत्मातुलंअमुकशर्माणंअमुकगोत्रंसपत्नीकंससुतंवसुरूपंस्व० ॥ अस्मत्भ्रातरंअमुकशर्माणंअमुकगोत्रंसपत्नी
कंससुतंवसुरूपंस्व० ॥ अस्मत्पितृभगिनींअमुकदांअमुकगोत्रांसभर्तृकांससुतांवसुरूपांस्वधा० ॥ अस्मत्मातृभगिनींअमुक

१ मातृत्रयीभिन्नस्त्रीभ्यएकांजलिः ॥ २ इतोऽनुक्रमज्ञापनायपत्न्याद्युच्चार.कृतोपितर्पकैःस्वमृतपित्रूहएवकार्यः ॥

दांअमुकगोत्रांसभर्तृकांससुतांवसुरूपांस्व० ॥ अस्मत्भगिनींअमुकदाअमुकगोत्रांसभर्तृकांससुतांवसुरूपांस्व० ॥ अस्मत्
 श्वशुरंअमुकशर्माणंअमुकगोत्रंसपत्नीकंससुतंवसुरूपंस्वधा० ॥ अस्मत्गुरुं(पितरं)अमुकशर्माणंअमुकगोत्रंसपत्नीकंससुतंवसुरू
 पंस्व० ॥ अस्मत्शिष्यंअमुकशर्माणंअमुकगोत्रंवसुरूपंस्वधानमस्तर्पयामि ॥ आब्रह्मस्तंवपर्यंतदेवर्षिपितृमानवाः ॥ अस्मत्
 तरःसर्वेमातृमातामहादयः ॥ अतीतकुलकोटीनांससद्वीपनिवासिनां ॥ आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तुतिलोदकमितित्रिदं
 शंवस्त्रंस्थलेवामभागेनिष्पीडयेत् ॥ तेगृह्णुमयादत्तंवस्त्रनिष्पीडनोदकमिति ॥ उपवीती चतुर्गुणमुपरिद
 अेषांपिताननभ्रातानपुत्रोनान्यगोत्रिणः ॥ तेसर्वेत्तुसिमायांतुमयोत्सृष्टैःकुशैस्तथा ॥ इतिदमत्यागः ॥ इतिब्रह्मयज्ञः ॥

॥ २७ ॥ अशनैश्चदेवग्रयोगः ॥
 श्रीगणेशायनमः ॥ अग्नेःपश्चात्साङ्गुखउपविश्य आचम्यप्राणायामंकृत्वादेशकालौनिर्दिश्यममोपात्तदुरितक्षयद्वाराश्रीपर
 मेश्वरप्रीत्यर्थंआत्मान्नसंस्कारद्वारांपंचसूनादोपपरिहारार्थंप्रातःसायंवैश्वदेवौतंत्रेणकरिष्ये ॥ जुष्टोदमूनाआत्रेयोवसुश्रुतो
 ऽग्निस्त्रिष्टुप् ॥ एह्यमेराहगणोगेतमोऽग्निस्त्रिष्टुप् ॥ अस्यावाहनेविनियोगः ॥ ॐ जुष्टोदमूनाअतिथिर्दुरोणइमंनोयज्ञमुपया
 हिविद्वान् ॥ विश्वाअग्नेअभियुजोविहत्याशन्नयतामभराभोजनानि ॥ एह्यमइहहोतानिपीदादब्धःसुपुंरएताभवानः ॥

१ तिलतर्पणगृहेनिपिद्धमितिधर्मसिधुः ॥ २ पृथक्सायकर्वव्यश्चेत्प्रातर्वैश्वदेवकरिष्यइतिप्रातः । सायतुसायवैश्वदेवमित्याद्यहःकार्यः ॥

अर्चतां त्वारोदसी विश्वमिन्वेयजामहे सौमनसार्यदेवान् ॥ इत्यक्षतैरावाह्य आच्छादनं दूरीकृत्य समस्तव्याहतीनां परमेष्ठी प्रजा
 पतिः प्रजापतिर्बृहती ॥ अग्निप्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः रुक्मकनामानमग्निं प्रतिष्ठापयामि ॥ प्रोक्षितैधनानि नि
 क्षिप्य वेणुधमन्या प्रबोध्य ध्यायेत् ॥ चत्वारि शृंगा गौतमो वासदेवो मिस्त्रिष्टुप् ॥ अग्निमूर्तिं ध्याने विनियोगः ॥ ॐ चत्वारि शृं
 जिह्वो द्विशीर्षकः ॥ त्रिपात्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मितः ॥ स्वाहां तु दक्षिणे पाश्वर्धे देवी वासमेस्वधां तथा ॥ विश्वदक्षिणह
 स्तैस्तु शक्तिमन्त्रं सुचं सुचं ॥ तोमरं व्यजनं वामैर्घृतपात्रं च धारयन् ॥ मे पारुढो जटाबद्धो गौरवर्णो महौजसः ॥ धूम्रध्वजो लोहि
 ताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः ॥ आत्माभिमुखमासीन एव रूपो हुताशनः ॥ अग्नैवैश्वानरशां दिल्य गोत्रमेपध्वजप्राङ्मुखो देवममसं
 मुखो वरदो भव ॥ इति ध्यात्वा परिसमूहन पर्युक्षणे कृत्वा ॥ विश्वानि न इत्यलं कृत्य ॥ विश्वानि न इति तिसृणामात्रेणो वसुश्रुतो
 ऽग्निस्त्रिष्टुप् ॥ इयोरर्चने ऽत्याया उपस्थाने विनियोगः ॥ ॐ विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः ॥ ॐ सिंधुननावा दुर्गहा तैर्षि ॥
 ॐ अग्ने अत्रि वन्नमसा गृणानः ॥ ॐ अस्माकं बोध्यं चिता तनूनां ॥ ॐ यस्त्वाह दकीरिणामन्यमानः ॥ ॐ अमर्त्यं मर्त्यो जोह
 नं ॥ अश्विनं सपुत्रिणं वीरवंतं गोमंतर्यिनं शते स्वस्ति ॥ आत्मानं चालं कृत्य हस्तं प्रक्षाल्य ॥ सिद्धमन्नमन्नावधि श्रित्य उदगुद्रास्य
 प्रोक्ष्य अग्नेः पश्चिमतो निधाया भिधार्य त्रिधा विभज्य ॥ सव्यं पाणितलं हृदि न्यस्य दक्षिणहस्तेन दक्षिणभागा दार्द्रा मलकमितम

न्नमादायांगुष्ठाग्नेर्पीडितंसंहतांगुल्युत्तानपाणिनाप्रणवादिरहितैःस्वाहातैःसूर्यादिमन्त्रैर्जुहुयात् ॥ तच्चप्रातरित्थं ॥ सूर्या
 यस्वाहा ॥ सूर्यायेदंनमः ॥ प्रजापतयेस्वाहा ० ॥ सोमायवनस्पतयेस्वाहा ० ॥ अग्नीषोमाभ्यां ० ॥ इंद्राग्निभ्यां ० ॥ द्यावापृथिवी
 भ्यां ० ॥ धन्वंतरयेस्वाहा ॥ इंद्राय ० ॥ विश्वेभ्योदेवेभ्यः ० ॥ ब्रह्मणेस्वाहाब्रह्मणइदं ० ॥ सायंतु ॥ अग्नयेस्वाहा ॥ अग्नयइदंनमः
 स्वाहासूर्यायेदं ० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहाप्रजापतयइ ० ॥ (भूःस्वाहाअग्नयइदंनमः ॥ भुवःस्वाहावायवइ ० ॥ स्वः
 ते ॥ अग्निस्तुविश्रवइत्यान्त्रेयोवसूयवोनिस्त्रिष्टुप् ॥ पुष्पांजलौविनियोगः ॥ ॐ अग्निस्तुविश्रवस्तमंतुविब्रह्माणमुत्तमं ॥ अतू
 तैश्चावयत्यतिपुत्रंददातिदाशुबै ॥ इतिपुष्पांजलिसमर्प्यविभूतिंधारयेत् ॥ मानस्तोकइत्यस्यकुत्सोरुद्रोजगती ॥ विभूतिग्रहणेवि
 नियोगः ॥ ॐ मानस्तोकेतनयेमान्आर्योमानोगोपुमानोअश्वेशुरीरिषः ॥ वीरान्मानोरुद्रभामितोवर्धाहुर्विष्मंतुःसदुमित्वा
 हवामहे ॥ त्र्यायुषंजमदग्नेरितिललाटे ॥ कश्यपस्यत्र्यायुषंकंठे ॥ अगस्त्यस्यत्र्यायुषंनाभौ ॥ यदेवानांत्र्यायुषंदक्षिणस्कंधे ॥
 तन्मेअस्तुत्र्यायुषंवामस्कंधे ॥ सर्वमस्तुशतायुषंशिरसि ॥ ॐ चमेस्वरंश्चमेयशोपंचतेनमश्च ॥ यत्तन्यूनंतस्मैतत्तपयत्तैतिरि
 कंतस्मैतेनमः ॥ अग्नयेनमः ॥ स्वस्ति ॥ श्रद्धांमेधांयशःप्रज्ञांविद्यांबुद्धिंश्रियंबलं ॥ आयुष्यंतेजआरोग्यंदेहिमेहव्यवाहन ॥

? अयव्याहृतिहोम. कृताकृत. । अग्नेनव्याहृतिहोमोविधुरपरइतिभातीतिचंद्रिकायाम् ।

प्रमादात्कुर्वतां कर्मप्रच्यवेताध्वरेषु यत् ॥ स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णस्यादिति श्रुतिः ॥ अनेन प्रातः सायं वैश्वदेवांगहोमाख्येन कर्मणा भगवान्यज्ञरूपी परमेश्वरः प्रीयतां ॥ इति देवयज्ञः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ (भूतपितृमनुष्ययज्ञेन यक्ष्ये) ॥ २८ ॥ अथ भूतयज्ञः ॥

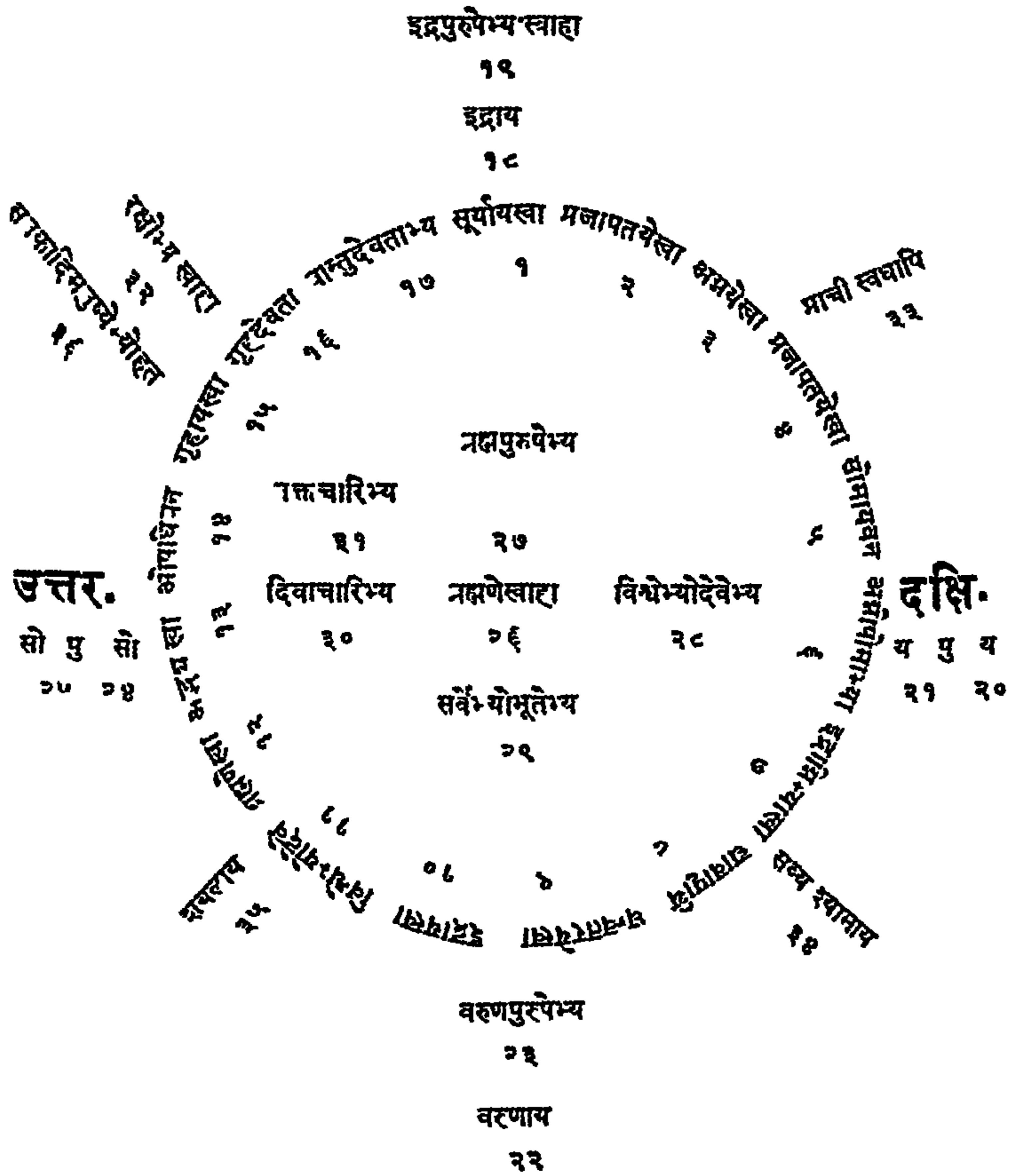
रंतर्येण ॥ सूर्याय स्वाहा ॥ प्रजापतये स्वाहा ॥ (अंग्रये स्वाहा ॥ अद्भ्यः स्वाहा ॥ आवापृथिवीभ्यां स्वाहा ॥ इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा ॥ इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा ॥ प्रजापतये स्वाहा ॥ (अंग्रये स्वाहा ॥ अद्भ्यः स्वाहा ॥ आवापृथिवीभ्यां स्वाहा) ॥ सोमाय वनस्पतये स्वाहा ॥ अग्नीषो

माभ्यां स्वाहा ॥ इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा ॥ (अंग्रये स्वाहा ॥ अद्भ्यः स्वाहा ॥ आवापृथिवीभ्यां स्वाहा) ॥ सोमाय वनस्पतये स्वाहा ॥ अग्नीषो देवताभ्यः स्वाहेति पंचभिश्च दत्त्वा चक्राद्वह्निः प्राच्यां प्राक् संस्थं ॥ इन्द्राय ० ॥ इन्द्रपुरुषेभ्यः ० ॥ दक्षिणत उदक् संस्थं ॥ यमपुरुषेभ्यः ० ॥ पश्चिमतः प्राक् संस्थं ॥ वरुणाय ० ॥ वरुणपुरुषेभ्यः ० ॥ उत्तरस्यामुदक् संस्थं ॥ यमाय ० ॥ प्रोक्ष्य द्वितीयभूतयज्ञं कुर्यात् ॥ तत्र सूर्यपदस्थानेऽग्निपदं दिवापदस्थानेऽनकमिति विशेषः ॥ शेषं पूर्ववत् ॥ इति भूतयज्ञः ॥

१ इदं धनुश्चिह्नस्य माहुतिद्वयं तत्रैकैश्वदेवकरणे तैकबलिहरणपक्षेऽत्र योजनीयं पथक्करणे तु नैव ॥

बलिहरणं.

पूर्व.



पश्चिम.

१ चक्राकारं तंत्रपक्षेबलिहरणमिदं ॥ पृथग्बलिहरणपक्षेप्रातरग्निप्र
जापतिरहिताश्चक्रेपंचदशैवाहुतयो मध्येदिवाचारीत्येकैवाहुतिश्च ॥
द्वितीयंत्वाद्याहुतिद्वयरहितंमध्येनक्तंचारियुक्तंच ॥—नराकारंतुप्राक्स
स्थाहुत्यात्मकंधर्मसिधावालोचनीयं ॥ विस्तरभियानात्रन्यस्तं ॥ बला-
वनुद्धृतेनाद्यान्नोद्धरेच्चस्वयंबलिम् ॥ इतिवाक्याद्बलिहरणंतत्कालएवोद्ध
रेदितिसिद्धम् ॥

श्रीः ॥ अतिथिभोजनपर्याप्तं षोडशाग्रासमितं वाग्रासचतुष्टयं वाग्रासमिति त्वान्नं सन्नकादिमनुष्येभ्यो हतेति दद्यात् ॥ बहुबुद्धिस्तु ॥ ३२ ॥

॥ ३० ॥ इति पितृयज्ञः ॥ ॐ
अथ मनुष्ययज्ञः ॥ ६१ ॥
अथ मनुष्ययज्ञः ॥ ६२ ॥

केष्वागतेष्वशक्तेन त्रिभ्योऽग्रासत्रयंदेयम् ॥ (बलिदानोत्तरमंगणएवगोदोहनमात्रंतत्रस्थित्वातिथिमाकांक्षेत्) ॥ इतिमनु
व्ययज्ञः ॥ इतिदिनचतुर्थभागकृत्यम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अथादिनपंचमभागकृत्यानि ॥ ३१ ॥ गोपूजनं ब्राह्मणपूजनं च ॥ इतिमनु
तिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीरुद्ररूपिणीगोदेवताप्रीत्यर्थं यथाज्ञानेन यथामीलितोपचारैः पूजनमहं करिष्ये ॥ ३२ ॥
तिष्ठंति भुवनानि चतुर्दश ॥ अद्य पूर्वोच्चरित एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ मम आत्मनः श्रु
अ० स्त्वा० च० अक्षतान्० चं० पु० धू० दी० ओदननैवेद्यं (गोत्रासं) समर्पयामि ॥ सौरभेद्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः ॥
प्रतिगृह्णंतु मे त्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ॥ गवामंगेव्यतिमंत्रेण प्रदक्षिणामंत्रपुष्पसमर्प्य ॥ आगावो इत्येकं वर्गं पठित्वा ॥ गावो
मे अग्रतः संतु गावो मे संतु पृष्ठतः ॥ गवामंगेव्यतिमंत्रेण प्रदक्षिणामंत्रपुष्पसमर्प्य ॥ अनेन गोपूजनेन श्रीरुद्ररूपिणीगैः
प्रीयतां ॥ इति गोपूजनं समाप्तं ॥ अथ ब्राह्मणपूजा ॥ महाविष्णुस्वरूपिणे ब्राह्मणाय इदमासनं ॥ इदं पाद्यं ॥ चरणं पवित्रं वि
तंतं पुराणं ॥ येन पूतस्तरति दुष्कृतानि ॥ तेन पवित्रेण शुद्धं नैपूताः ॥ अतिपाप्मानमरातिं तरेम ॥ भूमिदेवाग्रजन्मासित्वं विप्र
पुरुषोत्तम ॥ प्रत्यक्षो यज्ञपुरुष अर्धो यं प्रतिगृह्यतां ॥ इदमर्घ्यं स० ॥ गंधाः पांतु सौमंगल्यं चास्तु ॥ अक्षताः पांतु आयुष्यम
स्तु ॥ पुष्पाणि पांतु सौश्रियमस्तु ॥ तांबूलं पांतु ऐश्वर्यमस्तु ॥ दक्षिणाः पांतु बहुदयं चास्तु ॥ नमोस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये सह

स्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ॥ सहस्रनाम्नेपुरुषायशश्वतेसहस्रकोटीयुगधारिणेनमः ॥ सकलाराधनैःस्वर्चितमस्तु ॥ अस्तुसकलाराधनैःस्वर्चितं ॥ इतिब्राह्मणपूजनंसमाप्तं ॥

॥ ४३ ॥

॥ ३२ ॥ अथत्रिसुपुर्णग्नारंभः ॥

श्रीः ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ॐ ब्रह्ममेतुमां ॥ मधुमेतुमां ॥ ब्रह्ममेवमधुमेतुमां ॥ यास्तेसोमप्रजावत्सोभिसोअहं ॥ दुर्बमहंदुरुग्रह ॥ यास्तेसोमप्राणास्तान्जुहोमि ॥ त्रिसुपुर्णमयाचितंब्राह्मणायदद्यात् ॥ ब्रह्महृत्यांवाएतेध्वंति ॥ येषां ब्राह्मणास्त्रिसुपुर्णपठति ॥ तेसोमंप्राप्नुवंति ॥ आसहस्रात्पंक्तिंपुनंति ॥ ॐ ब्रह्ममेधया ॥ मधुमेधया ॥ ब्रह्ममेवमधुमेधया ॥ अद्यानोदेवसवितः प्रजावत्सावीः सौभगं ॥ परादुर्ब्वमियसुव ॥ विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव ॥ यद्भद्रंतन्मआसुव ॥ मधुवाताऋतायतेमधुक्षरतिसिधवः ॥ माध्वीनः संत्वोषधीः ॥ मधुनर्कमतोषसिमधुमत्पार्थिवश्रजः ॥ मधुद्यौरस्तुनः पिता ॥ मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाऽअस्तुसूर्यः ॥ माध्वीर्गावोभवंतुनः ॥ यद्भमंत्रिसुपुर्णमयाचितंब्राह्मणायदद्यात् ॥ भ्रूणहृत्यांवाएतेध्वंति ॥ येषां ब्राह्मणास्त्रिसुपुर्णपठति ॥ तेसोमंप्राप्नुवंति ॥ आसहस्रात्पंक्तिंपुनंति ॥ ॐ ब्रह्ममेधया ॥ मधुमेधया ॥ ब्रह्ममेवमधुमेधया ॥ ब्रह्मादेवानांपदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषोमृगाणां ॥ ज्येनोगृध्राणां स्वर्धित्तिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येतिरेभन् ॥ हुंसः शुचिपद्मसुरंतरिक्षसद्भोतविद्विषदतिथिर्दुरोणसत् ॥ नृषद्भरसहस्रद्वयोमसदुज्जागो जाऋतजा अद्रिजाऋतबृहत् ॥ ऋचेत्वारुचेत्वासमित्स्रवंतिसुरितोनधेनाः ॥ अंतर्हृदामनसापयमानाः ॥ धृतस्य धारा अभिचाकशीमि ॥ हिरण्य

योचेत्सोमर्ध्यासां ॥ तस्मिन्सुपर्णोमधुकृत्कुलायीभजन्नास्तेमधुदेवताभ्यः ॥ तस्यासतेहरयःसप्ततीरेस्वधांदुहानाअमृत
 स्यधारां ॥ यद्दंत्रिसुपर्णमयाचितं ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ वीरहत्यांवापुतेमति ॥ ये ब्राह्मणास्त्रिसुपर्णपठति ॥ ते सोमं प्राप्नुवं
 ति ॥ आसहस्रात्पत्तिपुनति ॥ ॐ तस्यैवंविदुषोयज्ञस्यात्मायजमानः श्रद्धापत्नीशरीरमिध्ममुरोवेदिर्लोमानिबहिर्वेदः शिखा
 हृदयंयूपः कामआज्यमन्युः पशुस्तपोग्निर्दर्मः शमयितादक्षिणावाग्धोताप्राणउद्गाताचक्षुरध्वयुर्मनो ब्रह्माश्रोत्रमग्नीद्यावद्भिर्यते
 सादीक्षायदश्रातितद्धविर्यत्पिबतितदस्यसोमपानं यद्रमतेतदुपसदोयत्संचरत्युपविशत्युत्तिष्ठतेचसप्रवर्ग्योयन्मुखंतदाहवनी
 योयाव्याहृतिराहुतिर्यदस्यविज्ञानंतज्जुहोति यत्सायंप्रातरत्तितत्समिधंयत्प्रातर्मध्यंदिनं सायंचतानिसर्वनानियेअहोरात्रेतेद
 र्शपूर्णमासैर्येधमासाश्चमासाश्चतेचातुर्मास्यानियक्त्वस्तेपशुबुंधायेसंवत्सराश्चपरिवत्सराश्चतेर्हर्गणाः सर्ववेदसंवापुतत्सत्रंय
 न्मरणंतदवभृथएतद्वैजरा मर्थमग्निहोत्रं सत्रंय एवंविद्वानुदुगयनेप्रमीयतेदेवानमिवमहिमानं गत्वादित्यस्यसार्युज्यगच्छत्यथ
 योदक्षिणेप्रमीयतेपितृणामेवमहिमानं गत्वाचंद्रमसःसार्युज्यं सलोकतामामोत्येतौवैसूर्याचंद्रमसोर्महिमानौ ब्राह्मणोविद्वान्
 भिजंयतितस्माद्ब्रह्मणौमहिमानंमामोतितस्माद्ब्रह्मणोर्महिमानं ॥ सहनाववतु ॥ सहनौभुनक्तु ॥ सहवीर्यंकरवावहै ॥ तेज
 स्विनावधीतमस्तुमाविद्विपावहै ॥ ॐ शान्तिःशान्तिःशान्तिः ॥ इतित्रिसुपर्णसमाप्तं ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ ३३ ॥ अथान्नरामर्षिगविधिः ॥

श्रीः ॥ पात्राधोमंडलंकृत्वापात्रमध्येऽन्नंवामेभक्ष्यभोज्यंदक्षिणेघृतपायसंपुरतःशाकादीन् एवंपरिवेपणंकारयित्वा ॥ ब्राह्म

णभोजनसंकल्पः ॥ गायत्रीमंत्रेणप्रोक्ष्य ॥ नानापात्रस्थमन्नंतस्मैतस्मैसंप्रददे ॥ प्रजापतेहिरण्यगर्भःप्रजापतिस्त्रिष्टुप्अन्नस
मर्पणेविनियोगः ॥ ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योविश्वाजातानिपरितार्भव ॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोअस्तुवयंस्यामपतयोर
यीणाम् ॥ १ ॥ एकोविष्णुर्महद्भूतंपृथग्भूतान्यनेकशः ॥ त्रीन्लोकान्व्याप्यभूतात्माभुंकेविश्वभुगव्ययः ॥ अनेनब्राह्मण
अनेनसुवासिनीभोजनेनअमुकदेवीप्रीयतांनमम ॥ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ अन्नपतेन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः ॥ प्रप्रदाता
रंतरिषऊर्जनोधेहिद्विपदेचतुष्पदे ॥ यंतुनदयोवर्षतुपर्जन्याः ॥ सुपिप्पलाओर्षधयोभवंतु ॥ अन्नवतामोदुनर्वतामामिक्ष्व
तां ॥ एषाराराजभूयासं ॥ ओदुनमब्रुवते ॥ परमेष्ठीवाएषः ॥ यदोदनः ॥ परमामैवैनुश्रियैगमयति ॥ पार्वतीपतेहरहर
महादेव ॥ ॥ इतिअन्नसमर्पणं ॥

भोजन-
॥३४॥

श्रीः ॥ पाणिपादौप्रक्षाल्याचम्यश्रीपण्यादिपीठेप्राङ्मुखःप्रत्यङ्मुखोवोपविश्यभूमिंप्रोक्ष्यचतुरस्रमंडलंकृत्वातदुपरिद्विपंचा
शतलपरिमितंकांस्यपात्रमन्यद्वापर्णपात्रंनिधायपरिवेषणंकारयित्वातस्मादन्नाहोत्रासार्थमन्नपात्रांतरेकृत्वा सौरभेय्यःसर्वहि
ता इतिमंत्रेणगवेग्रासंदत्वाआचम्यप्रांजलिरन्नंप्रणम्य अस्माकंनित्यमेतदस्तुइतिप्रार्थ्य ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितु० इत्यन्नम
भ्युक्ष्य ॐ स्वादोपितोमधोपितोवयंत्वाववृमहे ॥ अस्माकमविताभवं ॥ इत्यभिमंत्रितोदकेनान्नंप्रोक्ष्य ॥ सत्यंत्वर्तेनपरिधिं

॥ ३४ ॥

॥ ३४ ॥

अथभोजनविधिः ॥

॥ ३४ ॥

॥३४॥

चामि ॥ इतिदिवा ॥ रात्रौतु ॥ ऋतंत्वासत्येनपरिषिंचामि ॥ इतिप्रदक्षिणमन्नपरिषिंच्य ॥ अंतश्चरतिभूतेषुगुहायांविश्व
 तोमुखः ॥ त्वंयज्ञस्त्वंवषट्कारस्त्वंविष्णुःपुरुषःपरः ॥ पात्रादक्षिणतोभुविउदकधारांप्राक्संस्थांकृत्वातत्रक्रमेणबलित्रयंदद्यात् ॥
 ॐ भूपतयेनमः ॥ ॐ भुवनपतयेनमः ॥ ॐ भूतानांपतयेनमः ॥ एवंबलित्रयंप्राक्संस्थंदत्वाउपर्युदकंदत्वाबलीनुष्कृत्यहस्तंप्रक्षा
 यतांभगवानीशःपरमात्मासदाशिवः ॥ अहंवैश्वानरोभूत्वाप्राणिनांदेहमाश्रितः ॥ प्राणापानसमायुक्तःपचाम्यन्नंचतुर्विधम् ॥
 इत्यस्यार्थध्यात्वावामकरेणपात्रंघृत्वा ॥ अहंवैश्वानरोभूत्वाप्राणिनांदेहमाश्रितः ॥ प्राणापानसमायुक्तःपचाम्यन्नंचतुर्विधम् ॥
 मांगुष्ठैः ॥ ॐ प्राणायस्वाहाप्राणायेंदनमम ॥ मध्यमानामिकांगुष्ठैः ॥ ॐ उदानायस्वाहा ॥ ॐ अपानायस्वाहा ॥ तर्जनीमध्य
 ॐ व्यानायस्वाहा ॥ मध्यमानामिकांगुष्ठैः ॥ ॐ उदानायस्वाहा ॥ ॐ अपानायस्वाहा ॥ कनिष्ठिकानामिकांगुष्ठैः ॥
 हा ॥ जलंस्पृष्ट्वायथेष्टंभोजनंकुर्यात् ॥ ततोभोजनातेपात्रस्थमन्नंकिंचिद्गृहीत्वाअवघ्राय ॥ उच्छिष्टभारभ्योनमः ॥ इतिभू
 मौत्रिसृज्य ॥ उत्तरापोशनार्थंउदकंगृहीत्वा ॥ अमृतापिधानमसिस्वाहा ॥ इतिमंत्रेणतदर्धपीत्वा ॥ रौरेवपूयनिलयेपद्मा
 बुदनिवासिनाम् ॥ अर्थिनामुदकंदत्तमक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥ इतिमंत्रेणावशिष्टंजलंपितृतीर्थेनभूमौनिषिंच्यअंगणादौपाणिमुखे
 संशोधयेत् ॥ हस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्यशतपदानिगत्वा ॥ अगस्तिरग्निर्वडवानलश्चमुक्तंमयान्नंजरयंतवशेषम् ॥ सुखंममैतत्स
 १ केचन-ॐ चित्रायस्वाहा । ॐ चित्रगुप्ताय ॥ ॐ यमाय ॥ ॐ यमदूताय ॥ ॐ सर्वेभ्योभूतेभ्यः ॥ इतिपचाहुतीःददति ॥

रिणामसंभवंयच्छत्वरोगोममचास्तुदेहः ॥ १ ॥ इत्युदरंपरिमृज्यतांबूलंभक्षयेत् ॥ इतिदिनपंचमभागकृत्यं ॥ षष्ठसप्तमौ पुराणादिनानयेत् ॥ इतिभोजनविधिःसमाप्तः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अथदिनाष्टमभागकृत्यम् ॥ अथसायंसंध्याभारंभः ॥ ३५ ॥ अथसायंसंध्याभारंभः ॥ ३५ ॥ अथसायंसंध्याभारंभः ॥ ३५ ॥ अथसायंसंध्याभारंभः ॥ ३५ ॥

सा.संध्या
॥३५॥

कृतेभ्यः ॥ पापेभ्योरक्षंताम् ॥ यदह्नापार्षमकार्ष ॥ मनसावार्चहस्ताभ्यां ॥ ॐ अग्निश्चमामन्युश्चमन्युपतयश्चमन्यु
त्किंचदुरितंमर्थ ॥ इदमहंमाममृतयोनौ ॥ सत्येज्योतिषिजुहोमिस्वाहा ॥ पद्भ्यामुदरेणशिशा ॥ अहस्तदवलंपतु ॥ य
मार्जनानिकृत्वा ॥ तथापश्चिमाभिमुखस्तिष्ठन्गायत्रीमंत्रेणसूर्यायत्रिवारमर्घ्यंदत्वा ॥ प्रातःकालवद्वितीयतृतीयचतुर्थ
णामेकवत्त्रांशंखचक्रगदांकचतुर्भुजांगरुडासनारूढां विष्णुदैवत्यांसामवेदमुदाहरंतींस्वर्लोकाधिष्ठात्रींसरस्वतींनामदेवतांध्या
त्वा ॥ ततोयथाशक्तिगायत्रीजपः ॥ ततःइमंमेवरुणतत्त्वायामीत्युचोराजीगर्तिःशुनःशेषऋषिः वरुणोदेवताआद्यागायत्रीद्वि
तीयात्रिष्टुप्पस्थानेविनियोगः ॥ इत्युगंध्यामुपस्थाप्य (अत्रकेचनयश्चिद्धितइत्युपस्थानंकुर्वति ॥ यच्चिद्धितइतिदर्शसूक्त

॥३५॥

स्य ॥ आजीगर्तिःशुनःशेषत्रयिः ॥ वरुणोदेवता ॥ गायत्रीछंदः ॥ वरुणोपस्थानेविनियोगः ॥ ॐ यच्चिद्धितेविशोयथाप्र
देववरुणव्रतं ॥ मिनीमसिद्यविद्यवि ॥ मानोविधार्यहृत्वैजिहीलानस्यरीरधः ॥ माहृणानस्यमन्यवे ॥ विमृळीकार्यतेमनोर
धीरश्वंनसंदिदं ॥ गीर्भिवरुणसीमहि ॥ पराहिमेविमन्यवःपततिवस्यइष्टये ॥ वयोनवसतीरुप ॥ कदाक्षत्रश्रियंनरमावरुणं
करामहे ॥ मृळीकायोरुचक्षसं ॥ तदिदंमानमाशातेवेनतानप्रयुच्छतः ॥ धृतव्रतायद्राशुपे ॥ वेदायोवीनापदमंतरिक्षे
णपततां ॥ वेदनावःसमुद्रियः ॥ वेदमासोधृतव्रतोद्वादशप्रजावतः ॥ वेदायउपजायते ॥ वेदुवातस्यवर्तनिमुरोर्ऋज्वस्यवृ
हृतः ॥ वेदायेअध्यासते ॥ निर्यसादधृतव्रतावरुणःपुस्त्यइस्वा ॥ साम्राज्यायसुक्रतुः ॥) यांसदासर्वभूतानीतिसमासिपयंत
प्रातःकालवतकुर्वात् ॥ अंतद्विराचम्ययस्यस्मृत्येतिविण्णुस्मृत्वाप्रायश्चित्तान्यशपाणीतिजपेत् ॥ इतिसायंसंध्यासमाप्ता ॥

॥ ३६ ॥ अथरात्रिर्गर्तव्यानि ॥
संध्याहोमादिनिर्वर्त्यप्राक्प्रत्यगुदङ्मुखंदीपंप्रज्वाल्यपूजांकृत्वा त्रिघटीरात्र्युत्तरंभोजनंकृत्वास्तोत्रपाठादिनाप्रथमयाममतिक्र
म्यशयनगृहंगत्वाशय्यासमीपमुपविश्यजपेत् ॥ ॐ सुत्रामाणंपृथिवीद्यामनेहसंसुशर्माणमर्दितिसुप्रणीतिं ॥ देवानावस्वरि
त्रामर्नागसमस्त्रवंतोमारुहेमास्वस्तये ॥ रात्रीव्यख्यदायतीतिपठचसूक्तंजप्त्वा ॥ भोसर्पभद्रेतिऋग्वेदयंयोजरत्कारुणेत्युचंचज
प्त्वा ॥ अगस्तिर्माधवश्चैवमुचुकुंदोमहामुनिः ॥ कपिलोमुनिरास्तीकःपंचैतेसुखशायिनः ॥ कफल्लकस्यद्वेभार्येस्तांविनीमोहि
नीतथा ॥ तयोःस्मरणमात्रेणचोराभवंतुनिष्फलाः ॥ इतिपठित्वास्वपेत् ॥ उपानहौवेणुदंडंमुपात्रंतथैवच ॥ तांबूलादीनि

सर्वाणिसमीपेस्थापयेद्गृही ॥ नार्द्रवासाश्चनगश्चनोत्तरापरमस्तकः ॥ नाकाशेसर्वतःशून्येनचैत्यदुमेतथा ॥ पूर्वरात्रेव्यती
तेतुसगच्छेद्रतिमंदिरं ॥ पादौप्रक्षालयेत्पूर्वपश्चाच्छय्यांसमाविशेत् ॥ धौतवस्त्रंचतांबूलंसंयोगेचशुभावहं ॥ उक्तदिनेशय्यां
तःस्मरणादिकुर्यात् ॥ इतिनैशोविधिः ॥ बह्वल्पंवास्वगृह्योक्तंयस्यकर्मप्रकीर्तितं ॥ तस्यतावतिशास्त्रार्थेकृतेसर्वःकृतोभवे
त् ॥ नान्योविमुक्तयेपथामुक्त्वाश्रमविधिंस्वकं ॥ तस्मात्कर्माणि कुर्वीततुष्टयेपरमेष्ठिनः ॥ इति ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ आचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यअमुककर्मकरिष्ये ॥ तदंगत्वेनकर्माधिकारार्थआसनविधिकरि
ष्ये ॥ इतिसंकल्प्य ॥ उत्पतंत्विहभूतानिपृथिव्यंतरवासिनः ॥ आसनादौनमस्कृत्यब्रह्मकर्मसमारभे ॥ अपसर्पेतुतेभूतायेभू
ताभूमिसंस्थिताः ॥ येभूताविघ्नकर्तारस्तेगच्छंतुशिवाज्ञया ॥ अपक्रामंतुभूतानिपिशाचाःसर्वतोदिशं ॥ सर्वेषामविरोधेनभू
ह्मकर्मसमारभे ॥ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकायकल्पांतदहनोपम ॥ भैरवायनमस्तुभ्यमनुज्ञांदातुमर्हसि ॥ इतिवामपादपाष्णिनाभूमिं
त्रिस्ताडयेत् ॥ समुद्रवसनेदेविपर्वतस्तनमंडिते ॥ विष्णुपत्निनमस्तुभ्यंपादस्पर्शक्षमस्वमे ॥ इतिवामपादपाष्णिनाभूमिं
कूर्मोदेवता । सुतलंछंदः । आसनेविनियोगः ॥ पृथिव्ययाधृतालोकादेवित्वंविष्णुनाधृता ॥ पृथ्वीतिमंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः ।
वासनं ॥ अनंतासनायनमः ॥ विमलासनायनमः ॥ योगासनायनमः ॥ कूर्मासनायनमः ॥ आधारशक्तयेनमः ॥ दुष्टवि

॥ ३७ ॥

॥३६॥

आसनः
॥३७॥

॥३६॥

द्राविणेनृसिंहायनमः ॥ मध्येपरमसुखायनमः ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःइत्यासनेउपविश्य ॥ अंगुष्ठाग्रेतुगोविंदतर्जन्यांतुमहीधरं ॥
 मध्यमायांहृषीकेशमनामिक्यांत्रिविक्रमं ॥ कनिष्ठिक्यांन्यसेद्विष्णुंकरमध्येतुमाधवं ॥ एवंचकरविन्यासंसर्वपापप्रणाशनं ॥
 (ॐकारःसर्वत्र) ॥ भूःपादाभ्यांनमः ॥ भुवःजानुभ्यांनमः ॥ स्वःकटिभ्यांनमः ॥ महःनाभ्येनमः ॥ गुंगुरुभ्योनमः ॥ जनःहृदयायनमः ॥
 तपःकंठायनमः ॥ सत्यंललाटायनमः ॥ परब्रह्मशिरसेस्वाहा ॥ स्वशिरसि ॥ गुंगुरुभ्योनमः ॥ वामभुजे गंगणपतयेनमः ॥
 राक्षसगुरुभ्योनमः ॥ पंपरमेष्ठीगुरुभ्योनमः ॥ दक्षिणभुजे गंगणपतयेनमः ॥ वामभुजे अंआत्मनेनमः ॥ पंपरमगुरुभ्योनमः ॥
 शंक्षेत्रपालायनमः ॥ वामजानुनि संसरस्वत्यैनमः ॥ हृदये अंआत्मनेनमः ॥ वामभुजे दुंदुर्गायैनमः ॥ दक्षिणजानुनि
 जआत्मनेनमः ॥ तंतमात्मनेनमः ॥ नमोस्त्वन्तायनमोस्तुवेधसेनमोवसिष्ठायनमोस्तुशक्तये ॥ पराशरायाथनमोस्तुसात्वतेन
 मोस्तुतेसत्यवतीसुताय ॥ नमोगुरुभ्योगुरुपादुकाभ्योनमः परेभ्यःपरपादुकाभ्यः ॥ आचार्यसिद्धेश्वरपादुकाभ्योनमोस्तुसात्वतेन
 क्षमीपतिपादुकाभ्यः ॥ ॐ नमोमहद्भ्योनमोअर्भकेभ्योनमोयुवभ्योनमोआशिनेभ्यः ॥ यजामेदेवान्यदिशक्त्वाभ्योनमोस्तुल
 शंसमार्गक्षिदेवाः ॥ सर्वभूतनिवारणायसशराय हःसशार्जायसुदर्शनायास्त्रराजायहुंफद् ॥ इतिछोटिकावंधंकृत्वा ॥ उद
 कोपस्पर्शः ॥ प्राणायामः ॥ ॐ धर्मकंदसमुद्भूतंज्ञाननालंसुशोभितं ॥ ऐश्वर्याष्टदलोपेतंपरैरव्यक्तैर्गणैकं ॥ अधोमुखंतुह
 त्र्यंघ्रप्रणवेनोर्ध्वमुन्नयेत् ॥ ॐ इतिप्रणवेनविकसितंकृत्वातत्रत्यजीवात्मानंहंसइतिमंत्रेणांकुशमुद्रयासुपुन्नानाडीमार्गेणब्रह्मरं
 धंणीत्वा ॥ तत्रत्यसहस्रदलपद्मकर्णिकांतर्गतनपरमात्मनासहैक्यभावमापादयेत् ॥ हंसःसोहं ॥ ब्रह्महत्याशिरस्कंचस्वर्णस्ते

यमुजद्वयं ॥ सुरापानहृदायुक्तं गुरुतल्पकदिद्वयं ॥ तत्संसर्गिपदद्वंद्वमंगप्रत्यंगपातकं ॥ उपपातकरोमाणं रक्तश्मश्रुविलोचनं ॥
अधोमुखं कृष्णवर्णमंगुष्ठपरिमाणकं ॥ खड्गचर्मधरं पापं वामकुक्षौ विचिंतयेत् ॥ एवं लक्षणं वामकुक्षौ पापपुरुषं विचिंत्य ॥ य
तिबीजेन १६ षोडशवारं वामनासापुटेन संशोष्य ॥ रमित्यग्निबीजेन ६४ चतुःषष्टिवारं कुंभकेन संदह्य ॥ पुनर्यमि

श्रीगणेशाय नमः ॥ पादादिजानुपर्यंतं पृथिवीस्थानं चतुरस्रं चतुर्दिक्षु लंछितं तन्मध्ये पीतवर्णं लंबीजयुक्तं ध्यायेत् ॥ ॐ स्योना
पृथिविभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानः शर्मसप्रथाः ॥ लंभूयै नमः ॥ जान्वादिनाभिपर्यंतं मण्यस्थानं धनुराकारमुभयोः क
द्योः श्वेतपद्मलंछितं तन्मध्ये श्वेतवर्णं वंबीजयुक्तं ध्यायेत् ॥ ॐ अभूयै नमः ॥ ३८ ॥ अथ भूतशुद्धिः ॥

मार्पश्च विश्वभैषजीः ॥ वंअन्नो नमः ॥ नाभ्यादिहृदयपर्यंतं मणिस्थानं त्रिकोणं स्वस्तिकलंछितं तन्मध्ये रक्तवर्णं रंबीजयुक्तं ध्या
येत् ॥ ॐ अग्निदूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं ॥ अस्य यज्ञस्य सुक्रतु ॥ रंअग्नये नमः ॥ हृदयादिभ्रूमध्यपर्यंतं वायुस्थानं पट्को
णं पद्मविंदुलंछितं तन्मध्ये धूस्रवर्णं वंबीजयुक्तं ध्यायेत् ॥ ॐ वायौ शतं हरीणां युवस्व पोष्याणां ॥ उत वा ते सहस्रिणो रथ आयातु
पार्जसा ॥ वंवायवे नमः ॥ भ्रूमध्यादिब्रह्मरंध्रपर्यंतं माकाशस्थानं वृत्ताकारं ध्वजलंछितं नीलवर्णं हंबीजयुक्तं ध्यायेत् ॥ ॐ आ
दित्प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिष्पद्वयं तिवासरं ॥ पुरोयद्विध्यते दिवा ॥ हं आकाशाय नमः ॥ पृथिवीं पंचगुणं लंबीजेन पडुद्धातप्रयोगेणा

प्सुप्रविलापयामि ॥ लंलंलंलंलं ॥ चतुर्गुणा आपः वंवीजेन पंचोद्धातप्रयोगेणाग्नौ प्रविलापयामि ॥ वंवंवंवं ॥ त्रिगुणं वह्निं
 रंवीजेन चतुर्द्धातप्रयोगेण वायौ प्रविलापयामि ॥ रंरंरं ॥ द्विगुणं वायुं वंवीजेन त्रिरुद्धातप्रयोगेणाकाशे प्रविलापयामि ॥
 यंयंयं ॥ एकगुणमाकाशं हंवीजेन द्विरुद्धातप्रयोगेणाहंकारे प्रविलापयामि ॥ हंहं ॥ तमहंकारं महत्तत्त्वे प्रविलापयामि ॥
 न्महत्तत्त्वं प्रकृतौ प्रविलापयामि ॥ तां प्रकृतिं परब्रह्मणि प्रविलापयामि ॥ इति प्रविलाप्य ॥ शुद्धोहं मुक्तोहं सच्चिदानंदस्वरू
 पोहं ब्रह्माहमस्मीति चिरं भावयेत् ॥ तस्मात्सर्वज्ञात्सर्वशक्तेः परब्रह्मणः सकाशात् प्रकृतिः प्रकृतेर्महान् महतोहंकारः अहंका
 रादाकाशः आकाशाद्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यः पृथिवी पृथिव्या ओषधयः ओषधीभ्योन्नं अन्नाद्देतः रेतसः पुरुषः
 सवा एष पुरुषोन्नरसमयः ॥ इति देहोत्पत्तिविभाव्य पुनर्जीवात्मानं हंस इति मंत्रेणां कुशमुद्रया सुपुन्नानाडी मार्गेण ब्रह्मरंध्रादानी
 यहृदि प्रतिष्ठापयेत् ॥ हंसः सोहं ॥ इति भूतशुद्धिः ॥

॥ ३९ ॥

अथ प्राणप्रतिष्ठा ॥
 अथ प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वराऋषयः ॥ ऋग्यजुःसामाथर्वाणि छंदांसि ॥ परा प्राणश्च
 णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ ह्रीं शक्तिः ॥ क्रौं कीलकं ॥ तत्र ऋग्यादिन्यासः ॥ ब्रह्मवि
 मः गुह्ये ॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ क्रौं कीलकाय नमः सर्वांगे ॥ प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं अंकं खं गंधं डं आं

॥ ४३ ॥

॥ ४३ ॥

ॐ क्रौंहींआं पृथिव्यसेजोवाग्वाकाशात्मनेअंगुष्ठाभ्यांनमःहृदयायनमः ॥ ॐ आंहींक्रौंइंचंछंजंझंअंईक्रौंहींआं शब्दस्पर्शरूप
 रसगंधात्मनेतर्जनीभ्यांनमःशिरसेस्वाहा ॥ ॐ आंहींक्रौंउंटंठंढंणंजंक्रौंहींआं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मनेमध्यमाभ्यां
 नमःशिखायैवषट् ॥ ॐ आंहींक्रौंएतंथंदंधंनंऐक्रौंहींआं वाक्पाणिपादपायूपस्यात्मनेअनामिकाभ्यांनमःकवचायहुं ॥ ॐ
 क्रौंअंयंरंलंवंशंपंसंहंअंक्रौंहींआं वक्तव्यादानगमनविसर्गानंदात्मने कनिष्ठिकाभ्यांनमः नेत्रत्रयायवौषट् ॥ ॐ
 ॐ आंहींक्रौंअंयंरंलंवंशंपंसंहंअंक्रौंहींआं मनोबुद्ध्यहंकारचित्तविज्ञानात्मनेकरतलकरपृष्ठाभ्यांनमः अस्त्रायफट् ॥ ॐ आंहीं
 तः॥ ॐ आंहींक्रौंअंयंरंलंवंशंपंसंहंअंक्रौंहींआं ममप्राणाइहप्राणाः॥ ॐ आंहींक्रौंअंयंरंलंवंशंपंसंहंअंक्रौंहींआंममजीवइहस्थि
 स्वस्थानेइहैवागत्यसुखंचिरंतिष्ठंतुस्वाहा ॥ ॐ असुनीतेपुनरस्मासुचक्षुःपुनःप्राणमिहनोधेहिभोगं ॥ ज्योक्पर्षयेमसूर्यमुच्चरंतु
 मनुमेतेमर्क्यानःस्वस्ति ॥ गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारसिद्ध्यर्थंपंचदशप्रणवावृत्तीःकरिष्ये ॥ ॐ आंममजीवइहस्थि
 रक्तांभोधिस्थपोतोहसदरुणसरोजाधिरूढाकराजैःपाशंकोदंडमिक्षूभ्रवमथगुणमज्यंकुशंपंचवाणान् ॥ ॐ कारंपंचदशवारंजह्वा ॥
 त्रिनयनलसितापीनवक्षोरुहाढ्यादेवीबालार्कवर्णाभवतुसुखकरीप्राणशक्तिःपरान् ॥ इतिप्राणप्रतिष्ठा ॥
 ॥ ४० ॥ अथांतर्मातृकान्यासः ॥

श्रीः ॥ अस्यश्रीअंतर्मातृकासरस्वतीमंत्रस्य ब्रह्माऋषिः ॥ गायत्रीछंदः ॥ अंतर्मातृकासरस्वतीदेवता ॥ हलोबीजानि ॥

स्वराःशक्तयः ॥ बिंदवःकीलकं ॥ मातृकान्यासेविनियोगः ॥ तत्रऋष्यादिन्यासः ॥ ब्रह्मर्षयेनमःशिरसि ॥ गायत्रीछंद
सेनमोमुखे ॥ अंतर्मातृकासरस्वतीदेवतायैनमोहृदये ॥ हल्बीजेभ्योनमोगुह्ये ॥ स्वरशक्तिभ्योनमःपादयोः ॥ बिंदुकी
लकायनमःसर्वांगे ॥ मातृकान्यासेविनियोगः ॥ ॐ अंकखंगंधंआंगुष्ठाभ्यांनमः ॥ ॐ इंचंछंजंझंजंईतर्जनीभ्यांनमः ॥ ॐ
शंपंसंहंअःकरतलकरपृष्ठाभ्यांनमः ॥ एवंहृदयादिन्यासः ॥ ॐ ओपंपंवंभंमंऔकनिष्ठिकाभ्यांनमः ॥ ॐ
अं अः एतान्पोडशवर्णान्कंठस्थानेपोडशदलपद्मेन्यसामि ॥ ॐ अंनमःआंनमःइं ईं उं ऊं ऋं ॥ ॐ अंयंरंलंवं
र्णान्हृदयस्थानेद्वादशदलपद्मेन्यसामि ॥ ॐ कंनमःखं गं घं ङं चं छं जं झं जं दं ठं ॥ एतान्द्वादशव
मि ॥ बं भं मं यं रं लं ॥ एतान्षड्वर्णान्त्रिंशदलपद्मेन्यसामि ॥ ॐ वं शं पं सं ॥ एतांश्चतुर्वर्णानाधारस्थानेचतुर्द
लपद्मेन्यसामि ॥ हं क्षं ॥ एतद्वर्णद्वयंभ्रूमध्यगतेद्विदलपद्मेन्यसामि ॥ ॐ वासांतेबालमध्येडफकठसहितेकंठदेशेस्वराणांहंक्षंतत्त्वार्थयुक्तंसकलदलगंतवर्ण
पोडशारेद्विदशदलेद्वादशार्धचतुष्के ॥ वासांतेबालमध्येडफकठसहितेकंठदेशेस्वराणांहंक्षंतत्त्वार्थयुक्तंसकलदलगंतवर्ण
रूपंनमामि ॥ बंधूकाभांत्रिनेत्रांपृथुजघनलसत्कुक्षिसुद्रक्तवस्त्रापीनोत्तुंगप्रवृद्धस्तनजघनभरांयौवनारंभरूढां ॥ सर्वालंकारयु
क्तांसरसिजवदनामिंदुसंक्रांतमौलिमंवापाशंकुशेष्टाभयवरदकरामंबिकांतानमामि ॥ इतिअंतर्मातृकान्यासः ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

श्रीः ॥ अस्यश्रीबहिर्मातृकासरस्वतीमंत्रस्य ब्रह्माऋषिः ॥ गायत्रीछंदः ॥ बहिर्मातृकान्यासेविनियोगः ॥ तत्रऋष्यादिन्यासः ॥
 दसेनमोमुखे ॥ बहिर्मातृकान्यासेविनियोगः ॥ गायत्रीछंदः ॥ बहिर्मातृकासरस्वतीदेवता ॥ हलोबीजानि ॥ स्व
 लकायनमःसर्वांगे ॥ बहिर्मातृकान्यासेविनियोगः ॥ अंनमःमूर्ध्नि ॥ अःनमोमुखे ॥ इन्नमोदक्षिणनेत्रे ॥ गायत्रीछं
 उंनमोदक्षिणकर्णे ॥ ऊंनमोवामकर्णे ॥ ऐंनमोऽधरोष्ठे ॥ ऐंनमोवामनासापुटे ॥ इन्नमोदक्षिणनेत्रे ॥ इन्नमोवामनेत्रे ॥
 गंडे ॥ एंनमऊर्ध्वोष्ठे ॥ ऐंनमोऽधरोष्ठे ॥ औंनमःअधोदंतपंक्तौ ॥ औंनमोदक्षिणगंडे ॥ लंनमोवाम
 कं. खं. गं. घं. ङं. एतान्पंचवर्णान्दक्षिणहस्तेसंध्यग्रेषुविन्यसामि ॥ चं. छं. जं. झं. ञं. एतान्पंचवर्णान्वामहस्तेसंध्यग्रेषुविन्यसा
 मि ॥ टं. ठं. डं. ढं. णं. एतान्पंचवर्णान्दक्षिणपादेसंध्यग्रेषुविन्यसामि ॥ तं. थं. दं. धं. नं. एतान्पंचवर्णान्वामपादेसंध्यग्रेषुविन्य
 सामि ॥ पंनमोदक्षिणपार्श्वे ॥ फंनमोवामपार्श्वे ॥ तं. थं. दं. धं. नं. एतान्पंचवर्णान्वामपादेसंध्यग्रेषुविन्यसा
 दयेन्य ॥ रंनमोऽसृगात्मनेदोर्मूलेन्य ॥ लंनमोमांसात्मनेककुदि ॥ वंनमोमेदात्मनेकक्षद्वयेन्य ॥ यंनमस्त्वगात्मनेह
 नेहृदयादिहस्तयुगलेन्य ॥ पंनमोमज्जात्मनेहृदयादिपादयुगलेन्य ॥ संनमःशुक्रात्मनेजठरेन्य ॥ शंनमोऽस्थ्यात्म
 न्य ॥ क्षंनमोजीवात्मनेसर्वशरीरेषुविन्यसामि ॥ पंचाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोःपादहत्कुक्षिवक्षोदेशांभास्वत्कपर्दकलित

॥॥

बहिर्मा-
॥४१॥

॥३९॥

शशिकलामिंदुकुंदावदातां ॥ अक्षस्रक्कुंभचिंतालिलितवरकरां त्रीक्षणांपद्मसंस्थामच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां
नमामि ॥ ॐ चत्वारिवाक्परिमितापदानितानि विदुर्ब्राह्मणायैर्मनीषिणः ॥ गुह्यात्रीणि निहितानि गयंति तुरीयं वाचो मनुष्या
वदंति ॥ इति बहिर्मातृकान्यासः ॥ ॥ ४१ ॥

॥ ४२ ॥ अथ पवन्पावनम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ सुमुखश्चेत्यादि० ॥ श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं शरीरशुद्ध्यर्थं आत्मानं पावयिष्ये ॥ आचार्यः ऋत्वि
ग्यजमानैः सहैकविंशतिदर्भपिंजलान्यादाय सप्तभिः सप्तभिः पावयति ॥ नाभ्याः सोदकैर्दर्भैर्मुखपर्यंतं समाष्टि ॐ चित्पतिर्मा
पुनात्वच्छिद्रेण पुवित्रेण वसोः सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ सकृन्मंत्रेण द्विस्तूष्णीं ॥ अथ मार्जनं ॥ ॐ यद्देवा देव हेडनं ॥ देवांसश्च कृमाव
यं ॥ आदित्यास्तस्मान्मां मुंचत ॥ ऋतस्य ते नमामुत ॥ देवा जीवनकाम्याय त् ॥ वाचानृतमूदिम ॥ अग्निर्मातस्मा देनसः ॥ गार्हप
त्यः प्रमुंचतु ॥ दुरितायानि च कृम ॥ करोतु मार्गं मे नस ॥ ऋतेन द्यावा पृथिवी ॥ ऋतेन त्वं सरस्वति ॥ ऋतान्मां मुंचत ॥ ह
सः ॥ यदुन्यकृतमारिम ॥ सजातशः सादुतर्वाजामिशः सात् ॥ ज्यायं सः शः सादुतर्वाकनीयसः ॥ अनाज्ञातं देवकृतं यदे
नः ॥ तस्मात्त्वमस्मान्जातवेदो मुमुग्धि ॥ यद्वाचाय न्मनसा ॥ बाहुभ्यां मरुभ्यां मूर्ध्नि वज्रा ॥ शिश्रैर्यदनुतं च कृमावयं ॥ अ
ग्निर्मातस्मा देनसः ॥ यद्धस्ताभ्यां च कर्कित्विपाणि ॥ अक्षाणां वज्रमुपजिघ्रमानः ॥ दूरुपश्या च राष्ट्रभृच्च ॥ तान्यप्सरसाव
नुदत्तामृणानि ॥ अदीव्यं नृणं यदुहंचकार ॥ यद्वादास्यन्त्संजगाराजनेभ्यः ॥ अग्निर्मातस्मा देनसः ॥ यन्मयि माता गर्भसृति ॥

ए॒नश्च॒का॒र॒य॒त्पि॒ता ॥ अ॒ग्नि॒र्मा॒त॒स्मा॒दे॒न॒सः ॥ यदा॑पि॒पे॒ष॒मा॒तरं॑पि॒तरं ॥ पु॒त्रःप्र॒मु॒दि॒तो॒ध॒यन् ॥ अहि॑सि॒तौपि॒तरौ॒मया॒तत् ॥
 तद॒ग्नेअ॒नु॒णो॒भ॒वामि ॥ यदु॑तरि॒क्ष॒पृ॒थि॒वी॒मु॒त॒घां ॥ यन्मा॒तरं॑पि॒तरं॒वाजि॑हि॒सिम ॥ अ॒ग्नि॒र्मा॒त॒स्मा॒दे॒न॒सः ॥ यदा॑श॒सानि॑श
 सा॒य॒त्य॒रा॒श॒सा ॥ यदे॒नश्च॒कृ॒मा॒नू॒त॒न्य॒त्पु॒राणं ॥ अ॒ग्नि॒र्मा॒त॒स्मा॒दे॒न॒सः ॥ अति॑क्रामा॒मिदु॒रि॒तं॒यदे॒नः ॥ यदा॑श॒सानि॑श
 ततो॑मा॒य॒दि॒किं॒चि॒द॒ान॒शे ॥ तमा॒रो॒हामि॑सु॒कृ॒तां॒नु॒ल॒ोकं ॥ अति॑क्रामा॒मिदु॒रि॒तं॒यदे॒नः ॥ जहा॑मि॒रि॒प्र॒प॒र॒मे॒स॒ध
 ताअ॒प्सु॒जा॒ताः ॥ या॒जा॒ताओ॒षधी॑भ्यः ॥ अथो॒याअ॒ग्नि॒जाआ॒पः ॥ त्रि॒त॒ए॒त॒न्म॒नु॒ष्यै॒षु॒मा॒मृ॒जे ॥
 यद्वा॒दि॒वा॒नू॒त॒न्य॒त्पु॒राणं ॥ अथो॒याअ॒ग्नि॒जाआ॒पः ॥ त्रि॒त॒ए॒त॒न्म॒नु॒ष्यै॒षु॒मा॒मृ॒जे ॥
 अ॒या॒सि ॥ इत्य॒नु॒वाकं॑ज॒पि॒त्वा ॥ हि॒र॒ण्य॒व॒र्णास्त॒त॒उ॒त्पु॒नी॒तनः ॥ इमं॑मे॒वरु॒णत॒त्वा॒यामि ॥ त्वन्नो॑अ॒ग्नेस॒त्वंनो॑अ॒ग्ने ॥ त्वम॒ग्ने
 रि॒षत् ॥ इति॑मा॒र्जनं ॥ तां॒स्त्य॒क्त्वा ॥ अ॒न्या॒न्गृ॒ही॒त्वा ॥ स॒कृ॒न्म॒न्त्रे॒णद्वि॑स्तू॒र्णी ॥ ॐ वा॒क्प॒ति॒र्मा॒पु॒ना॒त्वा॒च्छ्रे॒णप॒वि॒त्रे॒णव॒सोःसूर्य॑स्य॒र॒द्दि॒मि॒भिः ॥
 ना॒भ्याःसो॒दकै॑र्द॒र्भैर्ना॑सि॒काप॑र्य॒तंस॑मा॒ष्टि ॥ स॒कृ॒न्म॒न्त्रे॒णद्वि॑स्तू॒र्णी ॥ ॐ वा॒क्प॒ति॒र्मा॒पु॒ना॒त्वा॒च्छ्रे॒णप॒वि॒त्रे॒णव॒सोःसूर्य॑स्य॒र॒द्दि॒मि॒भिः ॥
 ता॒स॒पु॒ना॒तु॒मा ॥ पुन॑तु॒मादे॒व॒ज॒नाः ॥ पुन॑तु॒मर्न॑वो॒धि॒या ॥ पुन॑तु॒वि॒श्वआ॒य॒वः ॥ पु॒वि॒त्रे॒णवि॒च॒र्ष॒णिः ॥ यःपो
 हि॒मा ॥ शु॒क्रे॒णदे॒वदी॒द्यत् ॥ अ॒ग्ने॒क्र॒त्वा॒क॒तू॒र॒नु ॥ यत्ते॑प॒वि॒त्रम॑र्चि॒षि ॥ अ॒ग्नेवि॑त॒तमं॑त॒रा ॥ ब्र॒ह्म॒ते॒न॒पु॒नी॒महे ॥ उ॒भा॒भ्यां
 दे॒वस॑वितः ॥ पु॒वि॒त्रे॒णस॑वे॒न॒च ॥ इदं॑ब्र॒ह्म॒पु॒नी॒महे ॥ वै॒श्वदे॒वीपु॒न॒तीदे॒व्यागा॑त् ॥ यस्यै॒ब॒ही॒स्त॒नुवो॑वी॒तपृ॒ष्टाः ॥ तया॑म॒द॒तः

सधमाद्येषु ॥ वयं स्वामपतयोरयीणां ॥ वैश्वानरोरश्मिभिर्मापुनातु ॥ वातः प्राणेनेपिरोमयोभूः ॥ याचापुथिचीपयमापयो
भिः ॥ ऋतावरीयज्ञियेमापुनीतां ॥ बृहन्निःसवितस्त्वभिः ॥ वपिष्टदेवमन्मभिः ॥ अग्नेदक्षः पुनाहिमा ॥ येनदेवाअपुनत ॥
येनापोदिव्यं कशः ॥ तेनदिव्येनब्रह्मणा ॥ इदं ब्रह्मपुनीमहे ॥ यः पवमानीरुध्येति ॥ ऋषिभिः संभृतश्रसं ॥ येनदेवाअपुनत ॥
ति ॥ स्वदितं मातरिर्ध्वना ॥ पवमानीर्योअध्येति ॥ ऋषिभिः संभृतश्रसं ॥ तस्मै सरस्वती दुहे ॥ क्षीरं सपिर्मधूदकं ॥ पात्रमा
नीः स्वस्त्ययनीः ॥ सुदुघाहिपयस्वती ॥ ऋषिभिः संभृतश्रसं ॥ ब्राह्मणेन्यमृतं श्रुतिं ॥ पावमानीर्देवतुनः ॥ इमं ह्येकमथोअ
मुं ॥ कामान्त्समर्धयंतुनः ॥ देवीर्देवैः समाभृताः ॥ पवमानीः स्वस्त्ययनीः ॥ सुदुघाहिर्दुतश्चुतः ॥ ऋषिभिः संभृतो रसः ॥
ब्राह्मणेन्यमृतं श्रुतिं ॥ येनदेवाः पवित्रेण ॥ आत्मानपुनते सदा ॥ तेन सहस्रधारेण ॥ पवमान्यः पुनंतुमा ॥ प्राजापत्यं पवि
त्रं ॥ शतोद्योमश्हिरण्यं ॥ तेन ब्रह्मविदो वयं ॥ पुतं ब्रह्मपुनीमहे ॥ इंद्रः सुनीतीमहमापुनातु ॥ सोमः स्वस्त्यावरुणः सप्ती
च्या ॥ यमो राजा प्रमणाभिः पुनातुमा ॥ जातवेदामोर्जयत्यापुनातु ॥ इत्यनुवाकं जह्वा ॥ ततोमार्जनं ॥ आपोहिष्ठामयो
भुवः ॥ तानर्जुर्जदधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥ यो वः शिवतमो रसः ॥ तस्य भाजयते हनः ॥ उशतीरिवमातरः ॥ तस्माअर
गमामवः ॥ यस्य क्षयायजिन्वथ ॥ आपोजनयथाचनः ॥ तांस्त्यक्त्वा ॥ अन्यानृहीत्वा ॥ ॐ देवो मासवितापुनात्वाच्छि
त्रेणपवित्रेणवसोः सूर्यस्वरश्मिभिः ॥ नाभ्याः सोदकैर्देवैर्भल्लाटपथतंसमाष्टिं ॥ सकृन्मंत्रेण द्विस्तूर्णी ॥ तस्यतेपवित्रपतेपवि
त्रेणयस्मैकंपुनेतच्छक्रेयं ॥ इतिजह्वा ॥ ततोमार्जनं ॥ हिरण्यवर्णाः शुचयः पावकाया सुजातः कश्यपोयास्विद्रः ॥ अग्निं यागर्भेद

धिरेविरूपास्तान् आपः शः स्योना भवन्तु ॥ यासां राजावरुणो याति मध्ये स तान् ते अवपश्यं जनानां ॥ मधुश्चतुःशुचयो याः पाव
कास्तान् आपः शः स्योना भवन्तु ॥ यासां देवा द्विकृण्वन्ति भक्ष्या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति ॥ याः पृथिवीं पर्यसो दंति शुक्रास्तान् आपः
निर्धत्ता ॥ तांस्त्यक्त्वा ॥ शिवेन माचक्षुषापश्यतापः शिवया तु नुवोर्पस्पृशत त्वचमे ॥ सर्वा अग्नी रं प्रसृषदो हुवेवो मयि वर्चो बलमोजो
योर्वः शिव ० ॥ आपो हि ० क्षंसे ॥ पर्यस्वती रोषधयः पर्यस्वद्वी रुधां पर्यः ॥ अपां पर्यस्वदित्ययस्ते न मामिद्रसं सृज ॥ इति प्रतिमंत्रेणा
चामेत् ॥ ततः स्मृत्युक्ता च मनं कृत्वा ॥ कृत्वा लंपादशौ चं विमलमथ जलं त्रिः पिबेदुन्मृजेद्विदं शिन्यं गुह्यकाभ्यां सजलमभि मृशेन्ना
सिकारं अयुग्मं ॥ अंगुष्ठानामिकाभ्यां नयनयुगयुतं कर्णयुगमं कनिष्ठांगुष्ठाभ्यां नाभिदेशे हृदयमथ तले नांगुलीभिः शिरसौ ॥ १ ॥
इति स्मृत्युक्ता च मनं चरेत् ॥ गायत्री जपः शतकृत्वः सहस्रकृत्वो वापरिमितकृत्वो वावर्तयेत् ॥ दशवारमिडा जपः ॥ ॐ इडा देव
हर्मनुर्यजनीर्बृहस्पतिरुक्थामदानिशंसि पृथ्वी देवाः सूक्ता चः पृथिविमातर्माहिंसि र्मधुमनिष्ये मधुजनिष्ये मधुवक्ष्यामि
मधुवदिष्यामि मधुमतीं देवेभ्यो वाचं मुद्यासं शुश्रूषेण्यामनुष्येभ्यस्तं मा देवा अवंतु शोभायै पितरो नुमदंतु ॥ अर्पनः शोशुचदुधम
मैशुशुग्ध्या रयिं ॥ अर्पनः शोशुचदुधं ॥ सुक्षेत्रिया सुगातु यावसया च यजामहे ॥ अर्पनः शोशुचदुधं ॥ प्रयद्मैः सह स्वतो विश्वतो यतिमानवः ॥ अर्पनः शोशुचदुधं ॥ प्रयद्मैर्दिष्टां प्रास्माकां
सश्च सरयः ॥ अर्पनः शोशुचदुधं ॥ प्रयद्मैः सह स्वतो विश्वतो यतिमानवः ॥ अर्पनः शोशुचदुधं ॥ द्विषो नो विश्वतो मुखार्तिनावे

वपाय ॥ अर्पनःशोशुचदुधं ॥ सनःसिंधुमिवनावयातिपर्वास्वस्तये ॥ अर्पनःशोशुचदुधं ॥ आर्पःप्रवृणोदिवयतीरपास्मत्स्थं
 दतामधं ॥ अर्पनःशोशुचदुधं ॥ उद्धनादुदकानीवापास्मत्स्थदतामधं ॥ अर्पनःशोशुचदुधं ॥ आनंदायप्रमोदायपुनरागांस्वा
 न्गहान् ॥ अर्पनःशोशुचदुधं ॥ नवैतत्रप्रमीयतेगौरश्वःपुरुषःपशुः ॥ यत्रेदं ब्रह्मक्रियतेपरिधिर्जीवनायकमर्पनःशोशुचदुधं ॥ स
 हस्त्रशीर्षांपुरुषः ॥ सहस्राक्षःसहस्रपात् ॥ सभूमिंविश्वतोवृत्वा ॥ अत्यतिष्ठदशांगुलं ॥ पुरुषएवेदःसर्व ॥ यद्भूतंयच्चभव्यं ॥
 उतामृतत्वस्येशानः ॥ यदन्नैनातिरोहति ॥ एतावानस्यमहिमा ॥ अतोऽप्येवदःसर्व ॥ पादोऽस्यविश्वभूतानि ॥ त्रिपा
 दस्यामृतंदिवि ॥ त्रिपादूर्ध्वउदैत्पुरुषः ॥ पादोऽस्येहाभवात्पुनः ॥ ततोविष्वङ्ब्रह्मक्रामत् ॥ पश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ यत्पुरुषेणहविषा ॥ तस्मा
 द्विराडजायत ॥ विराजोअधिपूरुषः ॥ सजातोअत्यरिच्यत ॥ पश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ यत्पुरुषेणहविषा ॥ तस्मा
 वसंतोअस्यासीदाज्यं ॥ ग्रीष्मइधमःशरद्ध्रुविः ॥ सप्तास्यासन्परिधयः ॥ त्रिःसप्तसमिधःकृताः ॥ देवायज्ञमर्तन्वत ॥
 बध्नन्पुरुषंपशुं ॥ तंयज्ञंबर्हिषिप्रोक्षन् ॥ पुरुषंजातमग्रतः ॥ तेनेदेवाअयजंत ॥ साध्याऋषयश्च्ये ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ॥ अ
 संभृतंपृषदाज्यं ॥ पशून्स्तांश्चक्रेवायव्यान् ॥ आरण्यान्त्राम्याश्च्ये ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ॥ ऋचःसामानिजज्ञिरे ॥ छं
 दांसिजज्ञिरेतस्मात् ॥ यजुस्तस्मादजायत ॥ तस्मादध्वाअजायंत ॥ येकेचोभयादतः ॥ गावोहजज्ञिरेतस्मात् ॥ तस्माज्जा
 ताअजावयः ॥ यत्पुरुषंव्यदधुः ॥ कृतिधाव्यकल्पयन् ॥ सुखंकिमस्यकौवाह ॥ कावरूपोदबुच्येते ॥ ब्राह्मणोस्यमुखमा
 सीत् ॥ बाह्वराजन्मःकृतः ॥ ऊरुतदस्ययद्वैश्यः ॥ पञ्चांशद्रोअजायत ॥ चंद्रमामर्नसोजातः ॥ चक्षोःसूर्योअजायत ॥

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च ॥ प्रमणाद्वायुरजायत ॥ नाभ्यां आसीदुत्तरिक्षं ॥ शीर्ष्णोद्यौःसमवर्तत ॥ पृथ्वांभूमिर्दिशःश्रोत्रात् ॥ त
 आलोकाः अकल्पयन् ॥ वेदाहमेतंपुरुषमहातं ॥ आदित्यवर्णतर्मसस्तुपारे ॥ सर्वाणिरूपाणि विचित्यधीरः ॥ नामानिकृत्वा
 अनायविद्यते ॥ धातापुरस्ताद्यमुदाजहार ॥ शुक्रः प्रविद्वान्प्रदिशश्चतस्रः ॥ तमेवंविद्वानमृतं हहर्भवति ॥ नामानिकृत्वा
 त्रिदेवाः ॥ ॐ भूर्भुवःसुवः ॥ अनेनशरीरशुद्ध्यंगभूतपवनपावनन्यासेनश्रीपरमेश्वरः प्रीयतां ॥ यत्र पूर्वसाध्याः सं

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ हरिः ॐ ॥ अथातः पंचांगरुद्राणां न्यासपूर्वकं जपहोमार्चनविधिव्याख्यास्यामः ॥ ॐ यातैरुद्रादि
 वातनूरघोरापापकाशिनी ॥ तयानस्तनुवाशंतमयागिरिशंताभिर्चाकशीहि ॥ शिखायैनमः ॥ ॐ अस्मिन्महत्तुल्यवर्णवैतरिक्षे
 भवाअर्धं ॥ तेषां सहस्रयोजनेवृधन्वानितन्मसि ॥ शिरसेनमः ॥ ॐ ह्रस्वः शुचिषद्वसुरंतरिक्षसद्भोतविदिषदतिथिर्दुरोणसत् ॥ तेषां सह
 स्रयोजनेवृधन्वानितन्मसि ॥ ललाटायनमः ॥ ॐ ह्रस्वः शुचिषद्वसुरंतरिक्षसद्भोतविदिषदतिथिर्दुरोणसत् ॥ नृषद्वरसद्वत्
 सद्भ्योमसद्वजागोजाः कृतजा अद्रिजाः कृतबृहत् ॥ अमध्यायनमः ॥ ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनं ॥ उर्वारुकमिव बंधनान्म
 त्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ नेत्राभ्यां नमः ॥ ॐ नमः सुत्याय च पथ्याय च ॥ कर्णाभ्यां नमः ॥ ॐ मानस्तोकेतनये मान आयुषिमानो

गोषुमानो अश्वेषुरीषिः ॥ वीरान्मानोरुद्रभामितोर्वधीर्हविषं तोनर्मसाविधेमते ॥ नासिकायैनमः ॥ ॐ अवतत्यधनुस्त्व
 ॥ ४३ ॥

सहस्राक्षशतेषुधे ॥ निशीर्षिशुल्यानांमुखाशिवोर्नःसुमर्त्ताभव ॥ मुखायनमः ॥ ॐ नीलक्रीवाःशितिकंठाःशर्वाअधःक्षमाच
राः ॥ तेषांसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ कंठायनमः ॥ ॐ नीलक्रीवाःशितिकंठादिवरुद्राउपश्रिताः ॥ तेषांसहस्र
योजनेवधन्वानितन्मसि ॥ उपकंठायनमः ॥ ॐ नर्मस्तेअस्त्वार्युधायानाततायधृणवै ॥ उभाभ्यामृततेनमोबाहुभ्यातवध
न्वने ॥ बाहुभ्यांनमः ॥ ॐ यार्तेहेतिर्मिदुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः ॥ तथास्मान्विश्वतस्त्वर्मयक्षमयापारेभुज ॥ उपबाहुभ्यांन
मः ॥ ॐ येतीर्थानिप्रचरतिसुकार्वतोनिषंगिणः ॥ भवेभवेनातिभवेभवस्वमांभवोर्भवायनमः ॥ हस्ताभ्यांनमः ॥ ॐ सद्योजातं
प्रपद्यामिसद्योजातायवैनमोनमः ॥ भवेभवेनातिभवेभवस्वमांभवोर्भवायनमः ॥ अंगुष्ठाभ्यांनमः ॥ ॐ सद्योजातं
ज्येष्ठायनमः ॥ ॐ नमोर्द्वयनमः ॥ तर्जनीभ्यांनमः ॥ ॐ तत्पुरुषायविष्णवेमहादेवायधीमहि ॥ तन्नोरुद्रःप्रचोदयात् ॥ अनामिकाभ्यां
दमनायनमोर्द्वयनमः ॥ कलायनमः ॥ ॐ अधोरेभ्योऽधोरेभ्योऽधोरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्योनर्मस्ते
अस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥ मध्यमाभ्यांनमः ॥ ॐ तत्पुरुषायविष्णवेमहादेवायधीमहि ॥ तन्नोरुद्रःप्रचोदयात् ॥ अनामिकाभ्यां
नमः ॥ ॐ ईशानःसर्वविद्यानामीश्वरःसर्वभूतानांब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवोर्मेअस्तुसदाशिवोम् ॥ कनिष्ठिका
ॐ नमोहिरण्यवाहवेसेनान्येदिशांचपतयेनमः ॥ पार्श्वाभ्यांनमः ॥ ॐ विज्यंधनुःकपर्दिनोविशल्योबाणवांस्रुत ॥ अनेश
त्रस्येपवआभुरस्यनिपुंगधिः ॥ जठरायनमः ॥ ॐ हिरण्यगुर्भःसर्मवर्तताग्नेभूतस्यजातःपतिरेकआसीत् ॥ सदाधारपृथिवीद्याम्

विन्यस्यमुखेतत्पुरुषंन्यसेत् ॥ ईशानंहृदि विन्यस्य हंसो नाम सदाशिवः ॥४॥ अस्य श्रीहंसगायत्रीमंत्रस्य आत्मा ऋषिः ॥ परमात्मा
 देवता ॥ अव्यक्तगायत्रीछंदः ॥ हंसन्यासे विनियोगः ॥ ॐ हंसां अंगुष्ठाभ्यां नमः हृदयाय नमः ॥ ॐ हंसीं तर्जनीं शिरसे ॥
 ॐ हंसं मध्यमाभ्यां शिखायै ॥ ॐ हंसैः अनामिकाभ्यां कवचाय ॥ गमागमस्थंगमनादि शून्यं चिदीपदीपंतिमिरां धनांशं ॥
 करतलकरं अस्त्राय फट् ॥ इति दिग्बन्धः ॥ गमागमस्थंगमनादि शून्यं चिदीपदीपंतिमिरां धनांशं ॥ ॐ हंसं हंसं हंसं ॥
 स्थं नमामि हंसं परमात्मरूपं ॥ हंसः । सो हंसः । परमहंसः ॥ ॐ हंसं हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि ॥ पश्यामि ते सर्वजनांतर
 हंसं हंसं त्रयो ब्रूयाद्धंसो नाम सदाशिवः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ततः संपुटमारभेत् ॥ इति तृतीयो न्यासः ॥ ॐ हंसः
 ॐ त्रातारमिंद्रमवितारमिंद्रं हवे हवे स हवः शूरमिंद्रं ॥ हुवे नुशुक्रं पुरुहूतमिंद्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विद्रं ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ॥
 लाटस्थाने इंद्राय नमः ॥ ॐ नं त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो वयासि सीष्ठाः ॥ यजिष्ठो वहितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषां
 सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ नं नेत्रस्थाने अग्नये नमः ॥ ॐ मौ सुगंनः पंथामभयं कृणोतु यस्मिन्नक्षत्रे यम एति राजा ॥ यस्मिन्नेनमभ्य
 शिंचंत देवास्तदस्य चित्रं हविर्षाय जाम ॥ मौ कर्णस्थाने यमाय नमः ॥ ॐ भं असुन्वंत मयजमानमिच्छस्ते नस्ये त्यां तस्करस्यान्वे
 षि ॥ अन्यमस्मादिच्छसा त इत्यानमो देवि निऋते तुभ्यमस्तु ॥ भं मुखस्थाने निर्ऋतये ॥ ॐ गं तत्त्वायामि ब्रह्मणा वंदमानस्तदा
 १ आदौ प्रणवमुच्चार्य व्याहृतिप्रणवान्वितं ॥ बीजमंत्रं समुच्चार्य मंत्राते बीजमेव च ॥ इंद्रादयो दिगीशाश्च नमो ताः सर्व एव हि ॥ बौधायने नमुनिनाप्रो
 क्तं संपुटलक्षणं ॥ २ एवमग्नेपि बीजादौ बीजाते च प्रणवपूर्वा व्याहृतिः प्रतिमंत्रं योजनीया ॥

शास्तेयजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो चरुणे हवो ध्युरुशः समान आयुः प्रमोषीः ॥ गं बाहुस्थाने वरुणाय ॥ ॐ वं आनो नियु
 त्तिः श्रुतिनीभिरध्वरः सहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञं ॥ वायो अस्मिन्हविर्पिमादयस्वयं पातः स्वस्तिभिः सदानः ॥ वं नासिका
 स्थाने वायवे ॥ ॐ तं वयः सोमव्रते तव ॥ मनस्तनू पवित्रतः ॥ प्रजावतो अशीमहि ॥ तं हृदिस्थाने सोमाय ॥ ॐ रुं तमी
 शानाय ॥ ॐ द्रां अस्मे रुद्रा मे हना पर्वता सो वृत्रहृत्ये भरहूतौ सजोपाः ॥ यः शः स ते स्तुवते धारि पञ्चद्रज्येष्ठा अस्मा अवंतु दे
 वाः ॥ द्रां मूर्धस्थाने आकाशाय नमः ॥ ॐ यं स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छानः शर्म सप्रथाः ॥ यं पादस्थाने भू
 र्ये नमः ॥ एतत्संपुटमिन्द्रादीन् दिक्षु विन्यस्यैवमेवात्मनि रौद्रीकरणं कृत्वा ॥ (रौद्रीकरणं चेत्थं) ॥ ॐ विभूरसि प्रवाहणो रौद्रे
 णानी केन पाहि मामिपि पृहिसामामाहिंसीः ॥ श्रोत्राभ्यां नमः ॥ ॐ वह्निरसि हव्यवाहनो रौद्रे णानी केन ॥ त्वचेन ॥ ॐ श्वा
 ॐ अंघारिरसि बंभारि रौद्रे णानी केन ॥ हिंसीः ॥ पायवेन ॥ ॐ अवस्युरसि दुर्वस्वान्न रौद्रे णानी केन ॥ नासिकायै ॥
 ॐ शृङ्घूरसि माज्जलीयो रौद्रे णानी केन ॥ हस्ताभ्यां नमः ॥ उपस्थाय नमः ॥
 रिपद्योसि पर्वमानो रौद्रे णानी केन ॥ वाचेनमः ॥ ॐ प्रतक्कासि नभस्वान्न रौद्रे ॥ पादाभ्यां नमः ॥ ॐ ॥
 ॥ आकाशाय नमः ॥ ॐ ऋतधामासि सुवर्ज्यो तीरौद्रे ॥ वायवे नमः ॥ ॐ असंमृष्टोसि हव्यसूदो रौ
 द्रे ॥ अग्नये नमः ॥

श्वाभूतानि ॥ त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ त्रिपादूर्ध्वं च दैतुपुरुषः ॥ पादौ स्येहाभवात्पुनः ॥ ततो विष्वङ् व्यक्रामत् ॥ साशनान-
 शने अभि ॥ तस्माद्विराडजायत ॥ विराजो अधिपूरुषः ॥ सजातो अत्यरिच्यत ॥ पश्चाद्भूमिमथोपूरुः ॥ यत्पुरुषेण हविषा ॥
 देवायज्ञमर्तन्वत ॥ वसंतो अस्यासीदज्यं ॥ अर्बन्पुनरुषं पृथुं ॥ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् ॥ पशून्स्तांश्च क्रेवायव्यान् ॥ तेन देवा अयजंत ॥ देवा-
 यद्यज्ञात्सर्वहुतः ॥ संभृतं पृषदाज्यं ॥ पशून्स्तांश्च क्रेवायव्यान् ॥ आरुण्यान् ग्राम्याश्च ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ॥ त-
 सामानि जज्ञिरे ॥ छंदांश्च सिजज्ञिरे तस्मात् ॥ यजुस्तस्मादजायत ॥ तस्मादर्धा अजायंत ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ॥ त-
 रेतस्मात् ॥ तस्माज्जाता अजावयः ॥ यत्पुरुषं व्यदधुः ॥ कतिधा व्यकल्पयन् ॥ यैके चोभयादतः ॥ गावो हजज्ञि-
 ते ॥ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् ॥ बाह्वराज्यं कृतः ॥ ऊरुतदस्य च दैत्यः ॥ पश्चात्शूद्रो अजायत ॥ का वरूपादाबुच्ये
 चक्षोः सूर्यो अजायत ॥ मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च ॥ प्राणा ह्यग्रेतं पुरुषं महान्तं ॥ आदित्यवर्णं तमसस्तुपारे ॥ सर्वाणि रूपाणि विचि-
 भूमिदिशः श्रोत्रात् ॥ तथा लोका अकल्पयन् ॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं ॥ आदित्यवर्णं तमसस्तुपारे ॥ सर्वाणि रूपाणि विचि-
 त्यधीरः ॥ नामानि कृत्वा भिवदुन्यदास्तै ॥ धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार ॥ शक्रः प्रविद्वान्प्रदिशश्च तस्रः ॥ तमेवं विद्वानमृतं ह-
 हर्भवति ॥ नान्यः पंथा अर्यनाय विद्यते ॥ यज्ञेन यज्ञमयजंत देवाः ॥ तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ॥ ते हुना कर्म हि मानः सचं
 ते ॥ यत्र पूर्वे साध्याः संति देवाः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय पुरुषसूक्तं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ अन्धः संभूतः पृथिव्यै रसाच्च ॥ विश्व

कर्मणः समवर्तताधि ॥ तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमिति ॥ तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्ने ॥ वेदाहमेतंपुरुषं महातै ॥ आदित्यवर्णेत
 मसः परस्तात् ॥ तमेवं विद्वानमृतं ब्रह्म भवति ॥ नान्यः पन्था विद्यते यनाय ॥ प्रजापतिश्चरति गर्भं अंतः ॥ अजायमानो बहुधा
 विजायते ॥ तस्य धीराः परिजानंति योनिं ॥ मरीचीनां पदमिच्छंति वेधसः ॥ यो देवेभ्य आर्तपति ॥ यो देवानां पुरोहितः ॥
 वा असन्नशे ॥ ह्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ ॥ अहोरात्रे पार्श्वे ॥ देवा अग्ने तदब्रुवन् ॥ यस्त्वैवं ब्राह्मणो विधात् ॥ इष्टं मनिषाण ॥
 सर्वमनिषाण ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय त्र्युत्तरनारायण ॥ शिखायै वषट् ॥ ॐ आशुः शिशानो वृषभो नयुधो नयनायनः क्षोभणश्च
 र्षणीनां ॥ संक्रंदनो निमिष एकवीरः शत ॥ सेना अजयत्साकमिद्रः ॥ संक्रंदनेनानि मिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्चयवनेन धनु
 ना ॥ तदिद्रेण जयत तत्सहध्वं युधोनर इषु हस्तेन वृष्णा ॥ स इषु हस्तैः सनिषंगिभिर्वशीस ॥ स्रष्टा सयुध इन्द्रो गणेन ॥ स ॥ सृष्टि
 त्सोमपाबाहुशर्ध्वं धन्वाप्रतिहिताभिरस्ता ॥ बृहस्पते परिदीयारेथेन रक्षोहामित्रा ॥ अपबाधमानः ॥ प्रभंजन्सेनाः प्रमृणोयु
 धाजयन्नस्माकं मेध्यवितारथानां ॥ गोत्रभिर्देगोविदं वज्रबाहुं जयत मज्मप्रमृणंतमोजसा ॥ इमं स्रज्जाता अनुवीर्यध्व
 मिद्रं सखायोनस ॥ नमः ॥ बलविज्ञायस्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमान उग्रः ॥ अभिवीरो अभिसत्वा सहोजाजै
 त्रिमिद्रं रथमातिष्ठ गोचित् ॥ अभिगोत्राणि सहसा गाहमानो दायो वीरः शतमन्युरिद्रः ॥ दुश्चयवनः पृतना षड्युधैः स्माकं
 सेना अवतु प्रयुत्सु ॥ इन्द्र आसानेता बृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञः पुरएतु सोमः ॥ देवसेनानामभिभंजतीनां जयतीनां मरुतोयुत्वग्ने

इन्द्रस्य वृष्णोर्वरुणस्य राज्ञा आदित्यानां मरुतां शर्धुं उग्रं ॥ महार्मनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात् ॥ अस्मा
 कर्मिन्द्रः समृतेषु ध्वजेषु स्माकं या इषवस्ताजयंतु ॥ अस्माकं वीरा उत्तरे भवंत्वस्मानु देवा अवता हवेषु ॥ उद्धर्षय मघवन्नायु
 धान्युत्सर्वनां मामकानां महोऽसि ॥ उद्धृत्र हन्वा जिनां वा जिना न्युद्रथानां जयता मे तु घोषः ॥ उपप्रेत जयतानरः स्थिरावः संतु
 बाहवः ॥ इन्द्रो वः शर्मय च्छत्वना धृष्यायथा संथ ॥ अर्वसुष्टा परापतशरव्ये ब्रह्मसंशिता ॥ गच्छा मित्रान्प्रविशैर्मेषां कंचनो
 च्छिषः ॥ मर्माणि ते वर्मभिरश्छादयामि सोमस्त्वारजामृतेनाभिर्वस्तां ॥ उरोर्वरीयो वीरवस्ते अस्तु जयंतं त्वामनुमदं तु देवाः ॥
 यत्र बाणाः संपतति कुमारार्विशिखा इव ॥ इन्द्रो नस्तत्र वृत्रहा विधाहा शर्मयच्छतु ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय अप्रतिरथं कवचाय
 हुं ॥ ॐ त्वमग्ने रुद्रो असुरो महोदिवः ॥ त्वं शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे ॥ त्वं वा तैर रुणैर्योसि शंगयः ॥ त्वं पृषा विधतः पासिनुत्स
 ना ॥ देवा दिवेषु श्रयध्वं ॥ प्रथमा द्वितीयेषु श्रयध्वं ॥ द्वितीयास्तृतीयेषु श्रयध्वं ॥ तृतीयाश्चतुर्थेषु श्रयध्वं ॥ चतुर्थीः पंचमेषु
 श्रयध्वं ॥ पंचमाः षष्ठेषु श्रयध्वं ॥ षष्ठाः सप्तमेषु श्रयध्वं ॥ एकादशाः सप्तदशेषु श्रयध्वं ॥ त्रयोदशाश्चतुर्दशेषु श्रयध्वं ॥
 श्रयध्वं ॥ पंचमा एकादशेषु श्रयध्वं ॥ पंचदशाः षोडशेषु श्रयध्वं ॥ षोडशाः सप्तदशेषु श्रयध्वं ॥ त्रयोदशाश्चतुर्दशेषु श्रयध्वं ॥
 चतुर्दशाः पंचदशेषु श्रयध्वं ॥ पंचदशाः षोडशेषु श्रयध्वं ॥ षोडशाः सप्तदशेषु श्रयध्वं ॥ त्रयोदशाश्चतुर्दशेषु श्रयध्वं ॥
 सा एकान्न विंशेषु श्रयध्वं ॥ एकान्न विंशा विंशेषु श्रयध्वं ॥ विंशा एकविंशेषु श्रयध्वं ॥ सप्तदशा अष्टादशेषु श्रयध्वं ॥
 द्वाविंशा त्रयोविंशेषु श्रयध्वं ॥ त्रयोविंशाश्चतुर्विंशेषु श्रयध्वं ॥ चतुर्विंशाः पंचविंशाः षड्विं

शेषुश्रयध्वं ॥ षड्विंशाःसप्तविंशेषुश्रयध्वं ॥ सप्तविंशाःअष्टाविंशेषुश्रयध्वं ॥ अष्टाविंशाःएकान्नत्रिंशेषुश्रयध्वं ॥
 एकान्नत्रिंशास्त्रिंशेषुश्रयध्वं ॥ त्रिंशाःएकत्रिंशेषुश्रयध्वं ॥ एकत्रिंशाःद्वित्रिंशेषुश्रयध्वं ॥ द्वित्रिंशाःस्वयस्त्रिंशे
 षुश्रयध्वं ॥ देवास्त्रिंशेकादशास्त्रिंशेषुश्रयध्वं ॥ उत्तरेभवत ॥ उत्तरवर्त्मान् उत्तरसत्त्वानः ॥ यत्कामइदंजुहोमि ॥ तन्मे
 समृध्यतां ॥ वयंस्यामपतयोरयीणां ॥ ॐ भूर्भुवःसुवःस्वाहा ॥ ॐ नमोभगवतेरुद्रायसर्वक्लेशपहर्त्रेशतरुद्रियमित्यस्त्रायफ
 इ ॥ एवंपंचांगंसकृज्जपेत् ॥ अष्टांगंप्रणम्य ॥ ॐ हिरण्यगर्भःसर्ववर्तताग्नेभूतस्यजातःपतिरेकआसीत् ॥ सदाधारपृथिवीं
 द्यामूतेमांस्मैदेवायहविषाविधेम ॥ ॐ यःप्राणतोनिमिपतोमहित्वैकइद्राजजगतोवभूव ॥ यईशेअस्याह्निपदुश्चतुष्पदःकस्मै
 देवायहविषाविधेम ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपुरस्ताद्विषीमतःसुरुचोर्वेनआवः ॥ सवृद्धियाउपमाअस्यविष्ठाःसतश्चयोनिमस
 तश्चविवः ॥ ॐ महीधौःपृथिवीचनइमंयज्ञंमिमिक्षतां ॥ पिपृतांनोभरीमभिः ॥ ॐ उपश्वासयपृथिवीमुतद्यापुरुत्रातेमनुतां
 वेष्टितंजगत् ॥ सदुदुभेसजूरैर्द्रेणदेवैर्दूराद्वीयोअपसेधशत्रून् ॥ ॐ अग्नेनयसुपथारायेअस्मान्निध्वानिदेवयुनानिविद्वान् ॥
 युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्ठातेनमउक्तंविधेम ॥ ॐ यातेअग्नेयज्ञियातूनूस्तयेह्यारोहात्मात्मानं ॥ अच्छावसूनि कृण्वन्न
 स्मेनयापूरुणि ॥ यज्ञोभूत्वायज्ञमासीदुस्वांयोनौ ॥ जातवेदोभुवआजायमानःसक्षयएहि ॥ ॐ यथावःस्वाहाग्नयेदाशेमप
 रीळाभिर्धृतवन्निश्चहव्यैः ॥ तेभिर्नोअग्नेअभिर्तेर्महोभिःशतंपर्भिरायसीभिर्निपाहि ॥ इमंयमप्रस्तरमाहिसीदागिरोभिःपितृ
 भिःसंविद्वानः ॥ आत्वामंत्राःकविशस्तावंहत्वेनाराजन् हविर्पामादयस्व ॥ उरसाशिरसादृष्ट्यामनसावचसातथा ॥ पञ्चाक

॥ ६३ ॥

गठरेअ
वंद्रम
गोखा
गोब
ॐ
॥ म ।

॥४८॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ॐ प्रजनने ब्रह्मातिष्ठतु ॥ अथ लघुन्यासप्रारंभः ॥ इति महान्यासः ॥

== 3 ==

[illegible]

112811

ह्यणि ॥ पुर्जन्योमेमभिः ॥ मूर्धाहृदये ॥ हृदयंमयि ॥ अमृतंब्रह्मणि ॥ अहममृतं ॥ मन्मुह
 दये ॥ हृदयंमयि ॥ अहममृतं ॥ अमृतंब्रह्मणि ॥ आत्माहृदये ॥ हृदयंमयि ॥ अहममृतं ॥ अमृ
 तंब्रह्मणि ॥ पुनर्मआत्मापुनरायुरागात् ॥ पुनःप्राणःपुनराकूतमार्गात् ॥ वैश्वानरोरश्मिभिर्वावृधानः ॥ अतस्तिष्ठत्वमृतस्य
 गोपाः ॥ एवंसर्वशरीरंस्पृशेत् ॥ अथात्मानंशिवात्मानंश्रीरुद्ररूपंध्यायेत् ॥ व्याघ्रचर्मोत्तरीयंचवरेण्यमभयप्रदं ॥ कंमंडल्वक्षसूत्रा
 दशभुजंसर्वाभरणभूषितं ॥ नीलग्रीवंशशांकांकनागयज्ञोपवीतिनं ॥ अमृतेनाहुतंहृष्टमुमादेहार्धधारिणं ॥ नित्यंचशाश्वतंशुद्धंभुवमक्षरमव्ययं ॥ दिव्यसिंहासना
 भ्यामन्वितंशूलपाणिनं ॥ ज्वलंतंपिंगलजटाशिलमुद्योतकारिणं ॥ अमृतेनाहुतंहृष्टमुमादेहार्धधारिणं ॥ नित्यंचशाश्वतंशुद्धंभुवमक्षरमव्ययं ॥ दिव्यसिंहासना
 सीनंदिव्यभोगसमन्वितं ॥ दिग्देवतासमायुक्तंसुरासुरनमस्कृतं ॥ अमृतेनाहुतंहृष्टमुमादेहार्धधारिणं ॥ नित्यंचशाश्वतंशुद्धंभुवमक्षरमव्ययं ॥ दिव्यसिंहासना
 नरुद्रवैविश्वरूपिणं ॥ एवंध्यात्वादिजःसम्यक्ततोयजनमारभेत् ॥ आर्त्तावहंतुहरेयुःसर्चेतसःश्वेतैरश्वैःसहकैतुमद्भिर्वाताजवैर्वल्वद्भिर्मनोजवैरायाहिशी
 यामिभक्त्यात्वांमांगुहाणमहेश्वर ॥ आर्त्तावहंतुहरेयुःसर्चेतसःश्वेतैरश्वैःसहकैतुमद्भिर्वाताजवैर्वल्वद्भिर्मनोजवैरायाहिशी
 ग्रंममहव्यायशर्वोम् ॥ स्वामिन्सर्वजगन्नाथावत्पूजावसानकं ॥ तावत्त्वंप्रीतिभावेनलिंगेसिन्सन्निधोभव ॥ शान्तिदोभव ॥
 सुप्रसन्नोभव ॥ वरदोभव ॥ अनेनलघुन्यासेनश्रीपरमेश्वरःप्रीयतां ॥ इतिलघुन्यासःसमाप्तः ॥

॥ ४५ ॥ अथरुद्राध्यायः ॥
 अनुष्टुप्छंदस्य ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अस्यश्रीरुद्रस्यप्रश्नस्य ॥ अग्निक्रतुचरमायामिष्टिकायाश्शतरुद्रियजेपेविनियोगः ॥ संकर्षणमूर्तिस्वरूपोयोऽसावादित्यःपरमपुरुषः
 सएषरुद्रोदेवता ॥ अग्निक्रतुचरमायामिष्टिकायाश्शतरुद्रियजेपेविनियोगः ॥ अघोरऋषिः ॥ सकलस्यरुद्राध्यायस्य ॥ श्रीरुद्रोदेवता ॥
 एकागायत्रीछंदः ॥ तिस्रोनुष्टुभस्तिस्त्रःपंचयः ॥ सप्तानुष्टुभौद्वैजगत्तौ ॥ परमेष्ठीऋषिः ॥ अग्नाविष्णूसजोषसेत्येकादशा
 नामनुवाकानां ॥ अग्निःकांडऋषिः ॥ आद्यागायत्री ॥ अग्नावैष्णवी ॥ शिष्टंयजुः ॥ वाजादयोन्नादिविशेषादेवता ॥
 महाविराड्छंदः ॥ ॐ नमःशंभवेतिबीजं ॥ मयोभवेतिशक्तिः ॥ नमःशंकरायैतिबीजं ॥ मयस्करायैतिशक्तिः ॥ नमःशि
 वायैतिबीजं ॥ शिवतरायैतिशक्तिः ॥ ॐकारोबीजं ॥ मायाशक्तिः ॥ ब्रह्माबीजं ॥ सुषुम्नाशक्तिः ॥ नमःशि
 कीलकं ॥ अमुकदेवताप्रीत्यर्थंजपेऽभिषेकेवाविनियोगः ॥ हरिः ॐ ॥ इडादेवहर्मनुर्यज्ञनीर्बृहस्पतिरुक्थामदानेशःसिषद्विभ्वे
 देवाःसूक्तवाचःपृथिविमातृमामाहिःसीर्मधुमनिब्येमधुजनिब्येमधुवक्ष्यामिमधुवदिव्यामिमधुमतीदेवेभ्योवाचमुद्यासंशुश्रू
 षेण्यामनूब्येभ्यस्तमादेवाअवंतुशोभायैपितरोनुमदंतु ॥ ॐ शान्तिःशान्तिःशान्तिः ॥ ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवउतोतुइषवेनमः ।
 नमस्तेअस्तुधन्वनेबाहुभ्यामुत्तेनमः । यातुइषुःशिवर्तमाशिवंबभूर्वतेधनुः । शिवाशरव्यायातवतयानोरुद्रमृडय । यातेरुद्रशि
 वातनूरयोरापापकाशिनी । तयानस्तनुवाशंतमयागिरिशंताभिचाकशीहि । यामिर्बुगिरिशंतुहस्तेविभूर्भ्यस्तवे । शिवांगिरि

१ पूजाप्रसंगायाशएवविहितानिरुद्राध्यायाद्यभिषेकविहितसूक्तान्यपितत्रविस्तरभियेतःसंगृहीतानिसति ॥ पुरुषसूक्ततुतत्रैवगतं ॥

त्रतां कुरुमाहिंसीः पुरुषं जगत् । शिवेन चर्चसा त्वागिरिशाच्छावदामसि । यथानः सर्वमिज्जगदयक्ष्मं सुमना असत् । अर्धवो
 रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वै पाहेर्दईमहे । अर्हींश्च सर्वान्जंभयन्त सर्वान्श्च यातुधान्यः । असौ यस्ताम्रो अरुण उत वभ्रुः सुमंगलः । ये चेमा
 उतै नुं विश्वाभूतानि सहृष्टो मृडयति नः । नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षार्थमीदुषे । अथो ये अस्य सत्वानो हते भ्यो कंरु नमः ।
 प्रमुचधन्व नस्त्वमभयो राल्लियोज्यो । याश्च ते हस्त इपवः पराता भगवो वप । अवतत्य धनुस्त्वसहस्राक्षशते पुधे । निशीर्य श
 ल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव । विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो वाणवा उत । अने शन्नस्येपव आभुरस्य निपुंगाधिः । यातै ह
 तिर्मो ह्रुष्टमहस्ते बभूवते धनुः । तया स्मान् विभ्रतस्त्वमयक्ष्मया परिबभुज । नमस्ते अस्त्वायुधा यानां तताय धृष्णवे । उभाभ्याम
 तते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने । परिते धन्व नो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः । अथो य इपुधिस्तवारे अस्मन्निधे हितं ॥ १ ॥ नमो हिरण्यवा
 हवे से नान्ये दिशां च पतये नमो नमो वक्षेभ्यो हरि केशेभ्यः पशूनां पतये नमो नमः । ससिंजराय त्विषामते पथीनां पतये नमो नमो बभ्रु
 शाय विव्याधिने नानां पतये नमो नमो हरि केशायो पवीतिनैः पुष्टानां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो नमो रुद्राया तता
 विने क्षेत्राणां पतये नमो नमः । सूताया हत्याय वनां पतये नमो नमो रोहिताय स्थपतये वक्षाणां पतये नमो नमो मंत्रिणे वाणिजाय क
 क्षाणां पतये नमो नमो भुवंतये वारिवस्कृतायौषधीनां पतये नमो नमः । ककुभाय निपुंगिणे स्तेनानां पतये नमो नमो
 ते सत्वनां पतये नमः ॥ २ ॥ नमः सहमानाय निव्याधिने आव्याधिनीनां पतये नमो नमः ककुभाय निपुंगिणे स्तेनानां पतये नमो नमो

निषंगिणऽइषुधिमतेतस्कराणांपतयेनमोनमोवंचतेपरिवंचतेस्तायुनांपतयेनमोनमोनिचेरवैपरिचरायारण्यानांपतयेनमोनमः
 सकाविभ्योजिघांसस्र्योमुष्णतांपतयेनमोनमोसिमस्र्योनक्तंचरद्व्यःप्रकृतानांपतयेनमोनमउष्णीषिणैगिरिचरायकुलंचानांप
 तयेनमोनमइषुमस्र्योधन्वाविभ्यश्चवोनमोनमआतन्वानेभ्यःप्रतिदधानेभ्यश्चवोनमोनमआयच्छद्व्योविसृजद्व्यश्चवोनमोनमोप
 स्र्ययध्विभ्यश्चवोनमोनमआसीनेभ्यःशयनेभ्यश्चवोनमोनमःस्वपद्व्योजाग्रद्व्यश्चवोनमोनमस्तिसृष्टद्व्योधावद्व्यश्चवोनमोनमो
 मःसभाभ्यःसभापतिभ्यश्चवोनमोनमोअश्वेभ्योश्वपतिभ्यश्चवोनमः॥३॥नमआव्याधिनीभ्योविविध्यंतीभ्यश्चवोनमोनमो
 णाभ्यस्तुहतीभ्यश्चवोनमोनमोअश्वेभ्योश्वपतिभ्यश्चवोनमोनमः॥३॥नमआव्याधिनीभ्योविविध्यंतीभ्यश्चवोनमोनमो
 श्ववोनमोनमोविरूपेभ्योविश्वरूपेभ्यश्चवोनमोनमोमहद्व्यःक्षुल्लकेभ्यश्चवोनमोनमो नमोव्रातेभ्योव्रातपतिभ्यश्चवोनमोनमउग
 तिभ्यश्चवोनमोनमोविरूपेभ्योविश्वरूपेभ्यश्चवोनमोनमो रथिभ्योरथेभ्यश्चवोनमोनमो नमोगणेभ्योगणपतिभ्य
 लालेभ्यःकुमारेभ्यश्चवोनमोनमःसेनानिभ्यश्चवोनमोनमोमहद्व्यःक्षुल्लकेभ्यश्चवोनमोनमो नमस्तक्षभ्योरथकारेभ्यश्चवोनमोनमःकु
 नमोनमःश्वभ्यःश्वपतिभ्यश्चवोनमोनमःक्षतृभ्यःसंग्रहीतृभ्यश्चवोनमोनमो नमस्तक्षभ्योरथकारेभ्यश्चवोनमोनमःकु
 कपर्दिनेचव्युसकेशायचनमःसहस्राक्षायचशतधन्वनेचनमोगिरिशायचशिपिविष्टायच नमोमीदुष्टमायचेषुमतेचनमोजहस्वा
 यचशीभ्यायचनमज्ज्भ्यायचावस्वन्यायचनमःस्रोतस्यायचवृद्धीप्यायच ॥ ५ ॥ नमोज्येष्ठान्यचकनिष्ठायचनमःपूर्वजायचापर

जाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च त्रुभियाय च नमः सोभ्याय च प्रतिसर्पाय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः
 र्व्याय च खल्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नमः आशुपेणाय च शुरथा
 य च नमः शूराय चावभिदुते च नमो वामिणे च वरूधिने च नमो विल्मिने च कवचिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च ॥ ६ ॥ नमो दुंदुभ्याय
 चाहनन्याय च नमो धृष्णवे च प्रमशाय च नमो दूताय च प्रहिताय च नमो निपंगिणे च पुधिमते च नमः स्तीक्ष्णे च विचायुधिने च नमः स्वा
 युधाय च सुधन्वने च नमः सुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्याय च सरस्याय च नमो नाद्याय च वैशंताय च नमः स्वा
 कूप्याय चावध्याय च नमो वव्याय च नमो मेध्याय च विद्युत्याय च नमः इध्रियाय चातप्याय च नमो वात्याय च रोहिमयाय च
 नमो वास्तव्याय च नमो वव्याय च नमो वव्याय च नमो रुद्राय च नमः स्तात्राय चारुणाय च नमो वात्याय च रोहिमयाय च
 भीमाय च नमो अग्रेवधाय च नमो हुत्रे च हनीये च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमः शंगाय च पशुपते च नमः उग्राय च
 शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च नमः स्तीर्ध्याय च कूल्याय च नमः शंभवे च मयोभवे च नमः
 णाय च नमः आतार्याय चालाद्याय च नमः शङ्ख्याय च फेन्याय च नमः पार्याय चावार्याय च
 य च नमः किंशिलाय च क्षर्याय च नमः कपदिने च पुलस्तये च नमो गोष्ठ्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तर
 गह्वरेष्ठाय च नमो हृदयाय च निवेण्याय च नमः पांसव्याय च रजस्याय च नमः शुङ्ख्याय च हरित्याय च नमः काट्याय च
 च नमः ऊर्ध्व्याय च सूर्याय च नमः पर्ण्याय च पर्णशुद्धाय च नमो पुरमाणाय चाभिघ्नते च नमः आखिलदुते च प्रखिलदुते च नमो वः किं

रिक्तेभ्योदिवानाहृदयेभ्योनमोविक्षीणकेभ्योनमोविचिन्वत्केभ्योनमआनिहतेभ्योनमामीवत्केभ्यः ॥९॥ द्रापेअंधसस्यते
 दरिद्रनीललोहित ॥ एषांपुरुषाणामेषांपशूनामेषमरीरोमोएषांकिंचनाममत् ॥ यातेरुद्रशिवातनूःशिवाविश्वार्हभेषजी ॥
 शिवारुद्रस्यभेषजीतर्यानोमृडजीवसे ॥ इमांरुद्रायतवसेकपादिनेक्षयर्द्धीरायप्रभरामहेमति ॥ यथानुःशमसद्विपदेचतुष्पदे
 विश्वपुष्टंग्रामेअस्मिन्ननातुरं ॥ मृडानोरुद्रोतनोमयस्कृदिक्षयर्द्धीरायनमसाविधेमते ॥ यच्छंचयोश्चमनुरायजेपितातददया
 मतवरुद्रप्रणीतौ ॥ मानोमहांतमृतमानोअर्भकमानुक्षतमृतमानुक्षितं ॥ मानोवधीःपितरंमोतमातरंप्रियामानस्तनुवोरु
 द्ररीरिषः ॥ मानस्तोकेतनयेमानुआयुषिमानोगोषुमानोअश्वेशुरीरिषः ॥ वीरान्मानोरुद्रभामितोवधीर्हविष्मंतोनमसाविधे
 मते ॥ आरातेगोमृडतपूरुषेक्षयर्द्धीरायसुममस्मैतस्तु ॥ रक्षाचनोअर्धचदेवब्रह्मधाचनःशर्मयच्छद्विबर्होः ॥ स्तुहिश्रुतं
 गर्तसदंयुवानंमंगनभीममुपहृत्तुमग्रं ॥ मृडाजरीरेरुद्रस्तवानोअन्यतेअस्मन्निवपंतुसेनाः ॥ परिणोरुद्रस्यहेतिवृणक्तुपरित्वेष
 स्वदुर्मतिरघायोः ॥ अवस्थिरामधर्वद्व्यस्तनुव्वमीदृस्तोकायतनयायमृडय ॥ मीढुष्टमशिवतमशिवोनःसुमनाभव ॥ पुरमेव
 क्षआयुधंनिधायकृत्तंवसानुआचरपिनांकंविभ्रदागहि ॥ विकिरिदुविलोहितनमस्तेअस्तुभगवः ॥ यास्तेसहस्रहेतयोन्य
 मस्मन्निवपंतुताः ॥ सहस्राणिसहस्रधाबाहुवोस्तवहेतयः ॥ तासामीशानोभगवःपराचीनामुखाकृधि ॥ १० ॥ सहस्राणिस
 हस्रशोयरुद्राअधिभूम्यां ॥ तेषांसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ अस्मिन्महत्पर्यवर्तरेक्षेभवाअधि ॥ नीलंग्रीवाःशितिकं
 ठाःशुर्वाअधःक्षमाचराः ॥ नीलंग्रीवाःशितिकंठादिवरुद्राउर्ध्वश्रिताः ॥ येष्वक्षेभुससिंजरानीलंग्रीवाविलोहिताः ॥ येभूता

नामार्धिपतयो विशिखासः कपर्दिनः ॥ ये अत्रैषु विविध्यति पात्रैषु पिबतो जना न् ॥ ये पथां पथिरक्षय एलवदाय व्युर्धः ॥ गेतीर्था
निप्रचरतिसकावतो निपुंगिणः ॥ य एतावतश्च भूयांसश्च दिशो रुद्रावितस्थिरे ॥ तेषां सहस्रयोजने च धन्वानि तन्मसि ॥
भ्योनमस्ते नो मृडयंतु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधामि ॥ १ ॥ ॐ अग्नाविष्णुसजोपसेमावर्धतु वां गिरः ॥ द्युन्नैर्वा
जेभिरागतं ॥ वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रावश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सु
वश्च मे प्राणश्च मे पानश्च मे व्यानश्च मे सुश्च मे चित्तं च मआधीतं च मे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मओजश्च मे स
हश्च मे सत्यं च मे मनुश्च मे भामश्च मे मर्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वारिमा च मे प्रथिमा च मे वृष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृ
त्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च मे सुपथं च मऋद्धं च मऋद्धिश्च मे ऋतं च मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे यशश्च मे भर्गश्च मे द्रविणं च मे यता च मे धर्ता च मे क्षेमश्च मे
धृतिश्च मे विद्वश्च मे महश्च मे संविच्च मे शात्रं च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च मऋतं च मे मृतं च मे यक्षं च मे नामयच्च मे जीवा तुश्च मे दी
घायुत्वं च मे नमित्रं च मे भयं च मे सुगं च मे शयनं च मे सुपा च मे सुदिनं च मे ॥ ३ ॥ ऊर्कं मे सुनुता च मे पर्यश्च मे रसश्च मे घृतं च मे मधु च

मेसर्गिधश्चमेसपीतिश्चमेकपिश्चमेवृष्टिश्चमेजैत्रं चमऔर्द्धिद्यं चमे रचिश्चमेरायश्चमेपृष्टं चमेपुष्टिश्चमेविभुचमेप्रभुचमेबहुचमेभूय
 श्चमेपूर्णचमेपूर्णतरं चमेक्षितिश्चमेकूर्यवाश्चमेन्नचमेक्षुच्चमेव्रीहयश्चमेयवाश्चमेमाषाश्चमेतिलाश्चमे मुह्राश्चमेखल्वाश्चमेगोधूमाश्च
 मेमसुराश्चमेप्रियंगवश्चमेणवश्चमेश्यामाकाश्चमेनीवाराश्चमे ॥ ४ ॥ अश्माचमेमृत्तिकाचमेगिरयश्चमेपर्वताश्चमेसिकता
 श्चमेवनस्पतयश्चमे हिरण्यं चमेयश्चमेसीसं चमेत्रपुश्चमेश्यामं चमेलोहं चमेग्निश्चमआर्पश्चमेवीरुधश्चमओषधयश्चमेकृष्टपच्यं चमे
 कृष्टपच्यं चमेग्राभ्याश्चमेपशवआरण्याश्चयेनकल्पतां वित्तं चमेवित्तिश्चमेभूतं चमेभूतिश्चमेवसुचमेवसतिश्चमेकर्म चमेशक्तिश्च
 मेर्थश्चमएमंश्चमइतिश्चमेगतिश्चमे ॥ ५ ॥ अग्निश्चमइंद्रश्चमेसोमश्चमइंद्रश्चमेसविताचमइंद्रश्चमेसरस्वतीचमइंद्रश्चमेपू
 षार्चमइंद्रश्चमे बहुस्पतिश्चमइंद्रश्चमेमित्रश्चमइंद्रश्चमेवरुणश्चमइंद्रश्चमेसमवित्ताचमइंद्रश्चमेसरस्वतीचमइंद्रश्चमेपू
 षार्चमइंद्रश्चमेमरुतश्चमइंद्रश्चमेविश्वेचमेदेवाइंद्रश्चमे पृथिवीचमइंद्रश्चमे धाताचमइंद्रश्चमेविष्णुश्चमइंद्रश्चमेपू
 षार्चमइंद्रश्चमेप्रजापतिश्चमइंद्रश्चमे ॥ ६ ॥ अशुश्चमेरुदिमश्चमेदाम्यश्चमेधिपतिश्चमउपाशुश्चमेतर्यामश्चमएद्रवा
 श्चमेतिग्राह्याश्चमएद्रागश्चमेवैश्वदेवश्चमे मरुत्वतीयाश्चमेमाहेंद्रश्चमआदित्यश्चमेसावित्रश्चमेसारस्वतश्चमेपौष्णश्चमेपात्नीवत
 श्चमेहारियोजनश्चमे ॥ ७ ॥ इधमश्चमेबृहिश्चमेवेदिश्चमेधिष्णिगश्चमेसुचश्चमेचमसाश्चमेग्रावाणश्चमेस्वरवश्चमउपरवाश्चमेधि
 षवणेचमेद्रोणकलशश्चमेवायव्यानिचमेपूतभृच्चमआधवनीयश्चमआग्नीध्रं चमेहविधानं चमे गृहाश्चमेसदंश्चमेपुरोडाशाश्चमेप

[illegible]

श्रीः ॥ ॐ विष्णोर्नुकवीर्याणि प्रवोचंयः पार्थिवानि विममेरजांसि ॥ यो अस्कभाय दुत्तरं स धस्य विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः ॥ प्रत
द्विष्णुस्तव ते वीर्यं मगोनभीमः कुचुरो गिरिष्ठाः ॥ यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणे च धिक्षियंति भुवना निविश्वा ॥ प्रविष्णवैशपमेतुमन्म

गिरि॒क्षित॑उरुगा॒याय॒वृष्णे ॥ यद्द॒दीर्घ॑प्रय॒तंस॒धस्थ॑मेको॒विम॑मे॒न्निभिरि॒त्यदे॑भिः ॥ यस्य॒त्रीप॒र्णाम॒धुना॒पदान्य॑क्षीयमाणास्व
 धया॒मद॑ति ॥ य॒ज्ञे॒न्निधा॑तु॒पृथि॒वीमु॒तद्या॑मेको॒दाधा॒रमु॒र्वना॒निवि॒श्वा ॥ तद॑स्यप्रियम॒भिपा॑थो॒अद्या॑नरो॒यत्र॑दे॒वय॒वोम॑द॒ति ॥ उ॒रु
 क्रम॑स्य॒सहि॑ब॒ंधुरि॒त्यावि॒ष्णोःप॒दे॒पर॑मे॒मध्व॒उत्सः ॥ ता॒वांवा॒स्तू॒न्यु॒हम॑सि॒गम॑ध्ये॒यत्र॑गा॒वोभू॑रि॒श्रृंगा॒अया॑सः ॥ अ॒त्राहु॑त॒दुरु॑गा॒य
 स्त॒स्थतु॑र॒वते॒वसा॒धुना ॥ त्वे॒षमि॒त्यास॑म॒रणं॑शि॒मीव॑तो॒रि॒द्रावि॒ष्णुसु॒तपा॒वामु॑रु॒च्यति ॥ या॒मर्त्या॑यप्रति॒धीय॑मान॒मित्क॑शानो॒र
 स्तु॒रस॒नामु॑रु॒च्यर्थः ॥ ता॒ईव॑र्ध॒तिम॑ह्य॒स्यपौ॑स्यं॒निमा॑तरा॒नय॑तिरे॒तसे॒भुजे ॥ द॒धाति॑पु॒त्रोव॑रं॒परं॑पि॒तुना॑म॒तृतीय॑म॒धिरो॒चने॑द्वि॒वः ॥
 तत्तदि॑द॒स्यपौ॑स्यं॒गुणी॑म॒सीन॑स्य॒त्रातु॑र॒वक॑स्य॒मीहु॑षः ॥ यःपा॒र्थवानि॒न्निभिरि॒द्विग॑म॒भिरु॒क्कमि॑द्वो॒रुगा॒याय॑जी॒वसे ॥ इ॒दं
 स्य॒क्रम॑णे॒स्वह॑शो॒भि॒ख्याय॑म॒र्त्योमु॑रु॒ण्यति ॥ तृती॑यम॒स्यन॑कि॒राद॑र्ध॒र्षति॒वय॑श्च॒नप॑तय॒तःप॑त॒त्रिणः ॥ च॒तुर्भिः॒साकं॑न॒वति॑च॒ना
 म॒भिश्च॑क॒नव॑तं॒व्यती॑र॒वीवि॑पत् ॥ बृ॒हच्छ॑री॒रोवि॑मि॒मान॒कृक॑भि॒र्युवा॑कु॒मारःप्र॑त्यै॒त्याहु॑वं ॥ २ ॥ भ॒वामि॒त्रो न॑शे॒व्योघृ॑ता॒सु
 ति॒र्विभू॑त॒द्युम्न॑ए॒वया॑उ॒सप्र॑थाः ॥ अ॒धाते॑वि॒ष्णोवि॒दुषा॑चि॒दध्यः॒स्तोमो॑य॒ज्ञश्च॑रा॒ध्योह॑वि॒ष्मता ॥ यःप॑र्व्या॒येवे॒धसे॑न॒वीय॑से॒सुम
 ज्ञान॑ये॒विष्ण॑वे॒ददा॑शति ॥ यो॒जात॑म॒स्यम॑ह॒तोम॑हि॒ब्रव॑त्से॒दुश्र॑वो॒भिर्यु॑ज्यं॒चिद॑भ्य॒सत् ॥ तमु॑स्तो॒तारःप॑र्व्य॒यथा॑वि॒द॒कृत॑स्य॒गर्भं
 ज॒नुषा॑पि॒पर्त॑न ॥ आ॒स्य॒जानं॑तो॒नाम॑चि॒द्वि॒वक्त॑नम॒हस्ते॑वि॒ष्णोसु॑म॒तिर्भ॑जामहे ॥ तम॑स्य॒राजा॑व॒रुण॑स्तम॒श्विना॑क॒तुस॑च॒तमा॑रु॒त
 स्य॒वेध॑सः ॥ दा॒धार॒दक्ष॑मु॒त्तम॑म॒हर्वि॑दं॒ब्रजं॑च॒विष्णुःसखि॑वोऽअ॒पोर्ण॑ते ॥ आ॒योवि॒वाय॑स॒चथा॑य॒दैव्य॑इ॒न्द्राय॑वि॒ष्णुःसु॒कृते॑सु॒कृते॑

रः ॥ वेधाञ्जिन्वत्रिपदस्थार्थमृतस्यभागेयजमानमार्भजत् ॥ ३ ॥ तवश्रिये मरुतो मर्जयन्तरुद्रयत्ते जनिमचारुचित्रं ॥ पदं य
 द्विष्णोरुपमं निधायितेनपासिगुह्यनामगोनां ॥ ॐ संवां कर्मणासमिपार्हेनोमीन्द्राविष्णोऽर्पसस्पारेऽअस्य ॥ जुपेथां
 यज्ञेन्द्रविणं च धत्तमार्हेनः पृथिभिः पारयता ॥ याविश्वासां जनिता रमतीनामिन्द्राविष्णूकलशासोमधानां ॥ प्रवांगिरः शुस्यमा
 नाऽअवंतु प्रस्तोमसो गीयमाना सोऽअर्कैः ॥ इन्द्राविष्णू मदपती मदानामासो मयातुं द्रविणो दधाना ॥ संवां मजन्त्वक्तुभिर्मती
 मुपब्रह्माणि शृणुतंगिरोमे ॥ इन्द्राविष्णूऽअभिमातिपाहोऽइन्द्राविष्णू सधमादौ वहतु ॥ जुपेथां विश्वाहर्वनामतीना
 सि ॥ इन्द्राविष्णू हविषा वावृधानाग्नाद्वानामस्य दस्त्राजठरपुणेथां ॥ आवा मंधासिमदिराण्यग्मन्नुपब्रह्माणि शृणुतंहवमे ॥ इन्द्रो
 विष्णापि बन्तं मध्वोऽअस्य सोमस्य दस्त्राजठरपुणेथां ॥ अर्कणुतमन्तारिक्षं वरीयो प्रथतं जीवसे नोरजां
 जयेथेन पराजिग्ये कतरश्च नैनोः ॥ इन्द्रश्च विष्णो यदपस्पृधेथां त्रेधा सहस्रं वितदैरयेथां ॥ १ ॥ ॐ परोमात्रयातन्वावृ
 धाननतैमहित्वमन्वश्नुवन्ति ॥ उभेतैविन्नरजसी पृथिव्या विष्णो देवत्वं परमस्य वितसे ॥ नतं विष्णो जायमानो न जातो देवमहितः
 परमं तमाप ॥ उदस्त्रभानाकमण्वं बृहन्तं दाधर्थं प्राचीं कुकुभं पृथिव्याः ॥ इरावती धेनु मती हि भूतं सूयवसिनी मनुपेदगस्या ॥ व्य
 स्तभ्नारोदसी विष्णो वेते दाधर्थं पृथिवीमभितो मयूखैः ॥ उरुं यज्ञाय च क्रथुरुलो कं जनयता सूयमपासमग्निं ॥ दासस्य चिह्नं पशिम
 स्यमायाजमर्थुर्नरापृतनाज्येषु ॥ इन्द्राविष्णू हं हिताः शंवरस्य नवपुरो न वति च श्रथिष्टं ॥ शतं वार्चिर्नः सहस्रं च साकं हथोऽअप्रत्य

सुरस्यवीरान् ॥ इयं मनीषा बृहती बृहती रुक्मा तवसा वर्धयंती ॥ रेवांस्तोमं विदथे बुविष्णोऽपि न्वतमिषो वजनैर्विद्र ॥ वर्षद्वते
विष्णवाऽऽर्कणो मितन्मै जुषस्व शिपि विष्टुह्वं ॥ वर्धतु त्वासुष्टु तयो गिरो मेयुयं पातस्व स्तिभिः सदानः ॥ १ ॥ नूमतो दयते स
नुता मेव यावो मतिदाः ॥ पर्चो यथानः सुवितस्य भूरेश्वावतः पुरुश्चंद्रस्य रायः ॥ त्वं विष्णो सुमतिं विश्वजं न्याम प्र
ह्रुवा सोऽअस्य कीरयो जनाः सऽउरुक्षितिं सुजनिमाचकार ॥ प्रतत्तेऽअद्या शिपि विष्टुना मार्गः शंसा मि वयुना निविद्वान् ॥ तं त्वांगु
णामितवसमर्तव्यान्क्षयं तमस्य रजसः पराके ॥ किमिति विष्णो परिचक्ष्य भूस्त्रयद्वक्षे शिपि विष्टोऽअस्मि ॥ मावर्पोऽअस्मद
पंगूह एतद्यदन्यरूपः समिथे बभूथ ॥ वर्षद्वते विष्णवाऽऽर्क ॥ २ ॥ इति विष्णुसूक्तानि समाप्तानि ॥ ४७ ॥

श्रीः ॥ ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभं रामहे मती ॥ यथाशमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पृष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरं ॥
मूळानो रुद्रो तनो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेमते ॥ यच्छं च योश्च मनुराये जे पिता तदश्यामतव रुद्रप्रणीतिषु ॥ अश्यामते सु
कुं कविमवसे निहयामहे ॥ आरे अस्मै हव्यहे को अस्य तु सुमतिमिद्वयमस्यावृणीमहे ॥ दिवो वराहमरुषं कपर्दिनं त्वेषं रूपं नमसा नि

ह्रयामहे ॥ हस्तेविभ्रन्द्रेपुजावार्योणिशर्मवर्मच्छदिस्मभ्ययंसत् ॥ १ ॥ इदंपित्रेमरुतामुच्यतेवचःस्वादोःस्वादीयोरुद्रायव
 धेनं ॥ रास्वाचनोअमृतमर्तभोजनंत्मनेतोकायतनयायमृल ॥ मानोमहांतमृतमानोअर्भकमानुउक्षंतमुतमानुउक्षितं ॥ मानो
 वधीःपितरंमोतमातरंमानःप्रियास्तन्वोरुद्ररीरिपः ॥ मानस्तोकेतनयेमानुआयौमानोगोपुमानोअश्वेपुरीरिपः ॥ वीरान्मानो
 रुद्रभामितोवधीर्हविर्भतुःसदुमिन्त्वाहवामहे ॥ उपतेस्तोमानुपशुपाइवाकरंरास्वापितर्मरुतांसुन्नमस्मे ॥ भद्राहितेसुमतिर्भू
 लयत्तमाथावयमवुइत्तेवृणीमहे ॥ आरेतेगोक्षमुतपूरुपृष्ठक्षयक्षीरसुन्नमस्मेतेअस्तु ॥ मृळाचनोअधिचवृहिदेवाधाचनःशर्मय
 च्छद्विबर्हीः ॥ अर्वाचामनमोअस्माअवस्यवःशृणोतुनोहवर्दुद्रोमरुत्वान् ॥ तन्नोमित्रोवरुणोमामहंतामदितिःसिंधुःपृथिवी
 उतद्यौः ॥ २ ॥ इतिरुद्रसूक्तंसमाप्तं ॥ ॥ ६३ ॥

॥ ४८ ॥ अथमनुसूक्तम् ॥

श्रीः ॥ ॐयस्तेमन्योइतिसप्तर्चस्यसूक्तस्यतापसोमन्युर्ऋषिःमन्युर्देवताजगतीच्छंदःद्वितीयासप्तमीचत्रिष्टुप् ॥ त्वयामन्योइति
 सप्तर्चस्यसूक्तस्यतापसोमन्युर्ऋषिःमन्युर्देवताआद्यास्तिस्त्रिष्टुभःततश्चतस्रोजगत्यः ॥ ॐयस्तेमन्योविधद्वज्रसायकसहओ
 जःपुण्यतिविश्वमानुपक् ॥ साह्यामदासमार्थत्वयायुजासहस्कृतेनसहसासहस्वता ॥ मन्युरिन्द्रोमन्युरेवासदेवोमन्युर्होता
 वरुणोजातवेदाः ॥ मन्युर्विशर्दिळतेमानुपीर्याःपाहिनोमन्योतपसासजोपाः ॥ अभीहिमन्योतवसस्तवीयान्तपसायुजाविजहि
 शन्न ॥ अमित्रहावृत्रहादस्युहाचविश्ववसन्थाभरात्वनः ॥ त्वंहिमन्योअभिभूत्योजाःस्वप्नंभूर्भामोअभिमातिपाहः ॥

विश्वचर्षणिःसहुरिःसहावानस्मास्वोजःपुर्तनासुधेहि ॥ अभागःसन्नपपरेतोअस्मितवक्रत्वातविषस्यप्रचेतः ॥ तंत्वामन्योअ
 क्रतुर्जिहीळाहंस्वातनूर्बलदेयायमेहि ॥ अयंतेअस्म्युपमेह्यर्वाङ्प्रतीचीनःसहुरेविश्वधायः ॥ मन्योवज्रिन्नभिमामाववृत्स्वह
 नावदस्यैरुतबोध्यापेः ॥ अभिप्रोहिदक्षिणतोभवामेधावृत्राणिजंघनावभूरि ॥ जुहोमितेधरुणमध्वोअग्रमुभाउपांशुप्रथमापिवा
 व ॥ १ ॥ त्वयामन्योसरथमारुजंतोहर्षमाणासोधृषितामरुत्वः ॥ तिग्मेष्वआयुधासंशिशानाअभिप्रयंतुनरोअग्निरूपाः ॥
 अग्निरिवमन्योत्वषितःसहस्वसेनानीर्नःसहुरेहूतएधि ॥ हृत्वायशन्नन्विभजस्ववेदोजोमिमनोविमृधानुदस्व ॥ सहस्वम
 न्योअभिमातिमुस्मेरुजन्मणन्प्रमणन्प्रेहिरान्न ॥ उग्रंतेपाजोनन्वारुरुधेवशीवशनयसएकजत्वम् ॥ एकोबहूनामसिमन्यवी
 षितोविशंविशयुधयेसंशिशधि ॥ अकृत्तरुक्त्वयायुजावयंद्युमन्तंघोषंविजयार्थकृणमहे ॥ विजेषकुदिंद्रइवानवज्रवोइस्माकं
 मन्योअधिपाभवेह ॥ प्रियंतेनामसहुरेगुणीमसिविज्ञातमुत्स्यतआबभूथ ॥ आभूत्यासहृजावज्रसायकसहोविभर्ष्यभिभूत
 उत्तरम् ॥ कृत्वानोमन्योसहमेद्येधिमहाधनस्यपुरुहूतसंसृजि ॥ संसृष्टंधनमभयंसमाकृतमस्मभ्यंदत्तांवरुणश्चमन्युः ॥ भियं
 दधानाहृदयेषुशत्रवःपराजितासोअपुनिलयंताम् ॥ २ ॥ इतिमन्युसूक्तंसमासम् ॥ ४९ ॥ अथगणपतिसूक्तम् ॥
 श्रीः ॥ ॐ आतूर्नइंद्रक्षुमंतंचित्रंग्रामंसंगृभाय ॥ महाहृस्तीदक्षिणेन ॥ विज्ञाहित्वापुविकर्मितुविदेणंतुवीमधं ॥ तुविमान्न
 मवोभिः ॥ नहित्वाशूरदेवानमर्तोसोदित्संतं ॥ भीमंनगांवारयंते ॥ एतोन्विद्रंस्तवामेशानंवस्वस्वराज ॥ नराधंसामधिबं

नः ॥ प्रस्तोपदुर्पगासिषच्छ्वत्सामगीयमानं ॥ अभिरार्धसाजुगुत् ॥ १ ॥ आनोभरदक्षिणेनाभिसव्येनप्रमृश ॥ इन्द्रमा
नोवसोर्निर्भाक् ॥ उर्पक्रमस्वामिभरधुपतार्धुष्णोजनानां ॥ अदाशूष्टरस्यवेदः ॥ इन्द्रयजुनुतेअस्तिवाजोविप्रेभिःसर्नित्वः ॥
अस्माभिःसुतंसनुहि ॥ सद्योजुर्वस्तेवाजाअस्मभ्यविश्वश्चद्राः ॥ वशैश्चमक्षूर्जरंते ॥ इतिगणपतिसूक्तंसमाप्तम् ॥ ॥ ६३ ॥

॥ ५० ॥ अश्वदेवीसूक्तम् ॥

श्रीः ॥ ॐ बृहस्पतेप्रथमंवाचोअग्रंयत्नैरतनासुधेयंदधानाः ॥ यदेपांश्रेष्ठयदरिप्रमासीत्प्रेणातदेपांनिहितंगुहाविः ॥ सक्तुमि
वतितडनापुनंतोयन्नधीरामनसावाचमकृत ॥ अत्रासखायःसख्यानिजानतेभद्रैपालक्ष्मीर्निहिताधिवाचि ॥ यज्ञेनवाचःपद्
वीर्यमायन्तामन्वविन्दुन्नपिषुप्रविष्टां ॥ तामाभृत्याव्यदधुःपुरुत्रातांससरेभाअभिसंनवंते ॥ उतत्वःपश्यन्नददर्शवाचमृतत्वः
शृण्वन्नश्नुणोत्येनां ॥ उतोत्वस्मैतन्व १ विसंसेजायेवपत्यजशतीसुवासार्ताः ॥ उतत्वसख्येस्थिरपीतमाहुर्नैर्नहिन्वंत्यपिवाजिने
बु ॥ अर्धेन्वाचरतिमायैपवाचशुश्रुवोऽअफलामपुष्पां ॥ १ ॥ यस्तित्यार्जसच्चिविदंसखायंनतस्यवाच्यपिभागोऽअस्ति ॥
यदीशृणोत्यलंकंशृणोतिनहिप्रवेदसुकृतस्यपंथा ॥ अक्षण्वंतःकर्णवंतःसर्खायोमनोजवेव्समाबभूवुः ॥ आदृग्नासंऽउपक
क्षासंऽउत्वेहृदाऽइवस्तात्वाऽउत्वेददृश्रे ॥ हृदातुष्टेपुमर्नसोजवेपुयद्ब्रह्मणाःसंयजतेसर्खायः ॥ अत्राहत्वंचिजहुर्वेद्याभिरोहन्न
ह्माणोविचरंत्युत्वे ॥ इमेयेनार्वाङ्परश्चरतिनब्राह्मणासोनसुतेर्कासः ॥ तऽएतेवाचमभिपद्यपापयासिरीस्तंत्रतन्वतेऽअग्र

१ असदुपहृतमविष्णुपंचायतनक्रमेणात्रदेवीसूक्तत.पूर्वसूर्याभिपेकसूक्तमपेक्षित परंतुतत्सौरसूक्तेपुगतमितिनात्रनिवेदितं ॥

जज्ञयः ॥ सर्वे नंदं तियशसागतेन सभासाहेन सख्या सखायः ॥ किल्बिषस्पृष्टितुषणिह्येषामरंहितो भवति वाजिनाय ॥ ऋचां
त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान्गायत्रं त्वो गायति शक्करीषु ॥ ब्रह्मा त्वो वदति जातविद्यां यज्ञस्य मात्रां विमिमीत ऽ उत्वः ॥ २ ॥ इति देवीसू०

श्रीः ॥ ॐ हिरण्यवर्णामिति पंचदशर्चस्य सूक्तस्य आनंदकर्मचिह्नं तैदिरासुता ऋषयः ॥ श्रीदेवता ॥ आद्यास्तिस्रो नुष्टु
भः ॥ चतुर्थी प्रस्तारपंक्तिः ॥ पंचमी षष्ठ्यौ त्रिष्टुभौ ॥ ततोष्टावनुष्टुभः ॥ अंत्या प्रस्तारपंक्तिः ॥ जपे विनियोगः ॥ हरिः ॐ

हिरण्यवर्णो हरिर्णीसुवर्णैरजतस्रजां ॥ चंद्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो मआवह ॥ श्रीदेवता ॥ आद्यास्तिस्रो नुष्टु
यस्यां हिरण्यं विदेयं गामश्वं पुरुषानहं ॥ अश्वपूर्वार्थमध्याह्नुस्तिनादप्रबोधिनीं ॥ श्रियं देवीमुपह्वये श्रीमद्देवीजुषतां ॥ कां
सोस्मितां हिरण्यमाकारां माद्रौ ज्वलतीं तृप्तां तपयंतीं ॥ पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियं ॥ चंद्रां प्रभासां यशसां ज्वलतीं
श्रियल्लोके देवजुष्टा मुदारां ॥ तां पद्मिनीं मीशरणमहंपद्ये ऽ लक्ष्मीं मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ १ ॥ आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्य
तिस्तव वक्षोऽथ बिल्वः ॥ तस्य फलानि तपसानुदंतु मायां तारायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ उपैतु मां देवसखः कीर्तिंश्च मणिना सह ॥
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रे स्मिन् कीर्तिं मृद्धिं ददातु मे ॥ क्षुत्पिपासामलं ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहं ॥ अभूतिमसमृद्धिं च सर्वानि णुद मे गृ
हात् ॥ गंधहारां दुराधर्षानित्यपुष्टां करीषिणीं ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियं ॥ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशी
महि ॥ पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ २ ॥ कर्दमे न प्रजाभूता मयि संभव कर्दम ॥ श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममा

लिनीं ॥ आपःस्रजंतुस्त्रिगधानिचिह्नीतवसमेगृहे ॥ निन्देत्वीमातरंश्रियंवामयमेकुले ॥ आर्द्रायःकरिणायुष्टिमवर्णाहिममा
 लिनीं ॥ सूर्याहिरण्मयीलक्ष्मीजातवेदोमआवह ॥ आर्द्रापूकरिणोगुष्टिपिंगलापद्ममालिनीं ॥ चंद्रांहिरण्मयीलक्ष्मीजातवे
 दोमआवह ॥ तांमआवहजातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीं ॥ यस्यांहिरण्यप्रभूतंगात्रोद्यास्योश्चान्विंदेयंपुरुषानहं ॥ ३ ॥ यः
 शुचिःप्रयतोभूत्वाजुहुयादाज्यमन्वहं ॥ सूक्तंपंचदशचंचश्रीकामःमततंजपेत् ॥ (पद्म)ननेपद्मऊरुपद्माक्षीपद्ममंभवे ॥ त
 न्मेभजसिपद्माक्षियेनसौख्यलभाम्यहं ॥ अश्वदायैगोद्वार्यधनदायिमहाधने ॥ धनमेलभतांदेविमर्चकामांश्चदेहिमे ॥ पद्मा
 ननेपद्मविपद्मपद्मप्रियेपद्मदलायताक्षि ॥ विश्वप्रियेत्रिश्चमनोनुकुलेतत्पादपद्मंसयिसंनिधत्स्व ॥ पुत्रपौत्रधनंभान्यंह
 स्त्यश्वादिगवैरथं ॥ प्रजानांभवसीमाताआयुष्मतंकरोतुमे ॥ धनमग्निधनंवायुर्धनंसूयौधनंवसुः ॥ धनमिंद्रोनुहुस्सतिर्वरुण
 धनमस्तुते ॥ वेनेतेयसोमपित्रसोमपित्रुवृत्रहा ॥ सोमंभनस्यसोमिनोमह्यंददतुमोमिनः ॥ नक्रोधोनर्चमात्सर्यनलोभोना
 शुभामतिः ॥ भवतिकृत्पुण्यानांभक्तानांश्रीसूक्तंजपेत् ॥ सरसिजनिलयेसरोजलुस्तेधवलतरांशुकगंधमाल्यशोभे ॥ भगव
 तिहरिवल्लभेमनोनेत्रिभुवनभूतिकरिप्रसीदमह्यं ॥ विष्णुपुल्लाक्षमांदेवीमाधवीमाधवप्रियां ॥ लक्ष्मीप्रियसखीदेवीनमाम्य
 न्युतवल्लभां ॥ महालक्ष्मीचचिह्नहैविष्णुपुल्लीचधीमहि ॥ तन्नोलक्ष्मीःप्रचोदयात् ॥ श्रीवर्चस्त्वमायुग्यमारोग्यमार्चिधात्
 शोभमानंमह्वीयते ॥ धान्यंधनंपशुंवहुपुत्रलाभंशतसर्वत्सरंद्दीर्घमायुः) ॥ इतिश्रीसूक्तंममाप्तं ॥ ७३ ॥

श्रीः ॥ ॐ अथ पुरुषो हवै नारायणोऽकामयत प्रजाः सृजेयेति । नारायणात्प्रजा जायते । नारायणात्प्राणो जायते । मनः सर्वेन्द्रियाणि च । संवायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी । नारायणात्प्रजापतिः प्रजायते । नारायणाद्दिग्बुज्यते । नारायणाद्द्रावसवः सर्वाणि छन्दांसि । नारायणाद्देवाः समुत्पद्यन्ते । नारायणात्प्रवर्तन्ते । नारायणे प्रलीयन्ते । अथादित्यो नारायणः । ब्रह्मा नारायणः । अधश्च नारायणः । अन्तर्बहिश्च नारायणः । शक्रश्च नारायणः । दिशश्च नारायणः । निष्कलो निरञ्जनो निर्विकल्पो निराख्यातः शुद्धो देव एको नारायणो न द्वितीयोऽस्तिकश्चित् । नम इति द्वे अक्षरे । नारायणायेति पञ्चाक्षराणि । एतद्वै नारायणस्याष्टाक्षरं पदं । नारायणायेत्युपरिष्ठात् । ॐ मिथ्ये व्याहरेत् । नम इति पञ्चात् । नारायणायेत्युपरिष्ठात् । नारायणायेति पञ्चाक्षरं पदं । यो हवै नारायणस्याष्टाक्षरं पदं । यमुक्त्वामुच्यते योगी जन्म संसारं बन्धनात् तस्मात्तडिदा भमात्रं । ब्रह्मकारणरूपं परब्रह्मकम् ॥ एतदर्थं वर्षीर्षयोऽधीते ।

सायमधीयानोदिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति । मध्य
न्दिनमादित्याभिमुखोऽधीयानः सद्यः पञ्चमहापातकोपपातकेभ्यो मुच्यते । सर्ववेदपारायणपुण्यं लभते । श्रीनारायणसायु
ज्यमवाप्नोति । य एवं वेद । इत्युपनिषत् ॥ इति नारायणार्थवर्षीर्षिसमाप्तम् ॥ ॥ ७३ ॥

॥ ५३ ॥ अथ शिवाथर्वशीर्षम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ देवाहवैस्वर्गलोकमायं स्तेरुद्रमपृच्छन् को भवानिति ॥ सोऽब्रवीदहमेकः प्रथममासो द्धर्ता मिचमविज्या
मिचनान्यः कश्चिन्मतो व्यतिरिक्त इति । सोऽन्तरादन्तरं प्राविशद्विशश्चाद्विशत्सोऽहं नित्या नित्यो व्यक्ता व्यक्तो ब्रह्मा ब्र
ह्माहं प्राञ्चः प्रत्यञ्चोऽहं दक्षिणाञ्च उदञ्चोऽहमधश्चोर्ध्वश्चाहं दिशश्च प्रतिदिशश्चाहं पुमानपुमान् स्त्रियश्चाहं सावित्र्यहं गायत्र्यहं त्रि
ष्टुब्जगत्यनुष्टुप्चाहं छन्दोऽहं सत्योऽहं गार्हपत्यो दक्षिणाग्निराहवनीयोऽहं गौरहंगौर्यहमृगहं यजुरहं सामाहमथर्वाङ्गिरसोऽहं ज्ये
ष्ठोऽहं श्रेष्ठोऽहं वरिष्ठोऽहमापो हं तेजोऽहं गुह्योऽहमरण्योऽहमक्षरमहं क्षरमहं पुष्करमहं पवित्रमहमुग्रं च बलिश्च पुरस्ताज्ज्योतिरि
त्यहमेव सर्वेभ्यो मामेव स सर्वः समायो मां वेद स देवान् वेद सर्वाश्च वेदान्सांगानपि ब्रह्म ब्राह्मणैश्च गांगोभिर्ब्राह्मणान् ब्राह्मणेन हविर्ह
विषा आयुरायुषा सत्यं सत्येन धर्मेण धर्मं तर्पयामि स्वैन ते जसा । ततो हवै ते देवा रुद्रमपृच्छन् ते देवा रुद्रमध्यायन्
ते देवा ऊर्ध्ववाहवोरुद्रं स्तुवन्ति ॥ १ ॥ ॐ यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च ब्रह्मा तस्मै नमो नमः ॥ १ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च वि
ष्णुस्तस्मै ॥ २ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च स्कन्दस्तस्मै ॥ ३ ॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यश्चेन्द्रस्तस्मै ॥ ४ ॥ यो वै रुद्रः स भ

गवान्यश्चाग्निस्तस्मै० ॥ ५ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्यश्चावायुस्तस्मै० ॥ ६ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्यश्चसूर्यस्तस्मै० ॥ ७ ॥ यो
 वैरुद्रःसभगवान्यश्चसोमस्तस्मै० ॥ ८ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्येऽष्टौग्रहास्तस्मै० ॥ ९ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्येचाष्टौप्रतिग्रहा
 वान्यच्चस्वस्तस्मै० ॥ १३ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्यच्चभूस्तस्मै० ॥ ११ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्यच्चभुवस्तस्मै० ॥ १२ ॥ योवैरुद्रःसभग
 योवैरुद्रःसभगवान्यच्चान्तरिक्षंस्तस्मै० ॥ १६ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्यच्चद्यौस्तस्मै० ॥ १७ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्यच्चपृथिवीस्तस्मै० ॥ १५ ॥
 स्तस्मै० ॥ १८ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्यच्चतेजस्तस्मै० ॥ १९ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्यश्चमृत्युस्तस्मै० ॥ २० ॥ योवैरुद्रःसभ
 गवान्यश्चयमस्तस्मै० ॥ २१ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्यश्चमृत्युस्तस्मै० ॥ २२ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्यश्चकालस्तस्मै० ॥ २३ ॥ योवैरुद्रःसभ
 योवैरुद्रःसभगवान्यच्चाकाशंस्तस्मै० ॥ २४ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्यच्चविश्वंस्तस्मै० ॥ २५ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्यच्चस्थूलं
 तस्मै० ॥ २६ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्यच्चसूक्ष्मंस्तस्मै० ॥ २७ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्यच्चकृत्स्तस्मै० ॥ २८ ॥ योवैरुद्रःसभ
 गवान्यच्चकृष्णंस्तस्मै० ॥ २९ ॥ योवैरुद्रःसभगवान्यच्चसर्वंस्तस्मै० ॥ ३० ॥ योवैरुद्रःसभगवान्यच्चसत्यंस्तस्मै० ॥ ३१ ॥
 शान्तिस्त्वंपुष्टिस्त्वंहुतमहुतंदत्तमदत्तंसर्वमसर्वंविश्वमविश्वंकृतमकृतंपरमपरंपरायणंचत्वं । अपामसोमममृताअभूमागन्म-
 ज्योतिरविदामदेवान् । किंनूनमस्मान्कृणवदरातिः किमुधूर्तिरमृतंमर्त्यस्य । सोमसूर्यपुरस्तात्सूक्ष्मःपुरुषः । सर्वजगद्धितं

[illegible]

अत्र दच्चः प्राञ्चोऽभिव्रजन्येकेतेषां सर्वेषां मिह सङ्गतिः साकं स एकोऽभूदन्तश्चरति प्रजानां तस्मादुच्यते एकः । अथ कस्मादुच्यते रुद्रः यस्माद्विभिर्नान्यैर्भक्तैर्दुतमस्य रूपमुपलभ्यते तस्मादुच्यते रुद्रः । अथ कस्मादुच्यते ईशानः यः सर्वान् देवान् ईशते ईशानीभिर्जननीभिश्च शक्तिभिः । अभित्वाक्षरणो नुमो दुग्धा इव धेनवः । ईशानमस्य जगतः स्वर्ह शमीशानमिन्द्रतस्थुष इति तस्मादुच्यते ईशानः । अथ कस्मादुच्यते भगवान् महेश्वरः यस्माद्भक्तान् ज्ञानेन भजत्यनुगृह्णाति च वाचं संसृजति विसृजति च सर्वान् भावान् परिपूर्वो हजातः स उगर्भे अन्तः । स एव जातः सजनिष्यमाणः प्रत्यङ्जनां स्तिष्ठति सर्वतो मुखः ॥ ४ ॥ एषो ह देवः प्रदिशोऽनुस माँल्लोकानीशत ईशानीभिः । प्रत्यङ्जनां स्तिष्ठति चान्तकाले संसृज्य विश्वाभुवनानि गोप्ता । एको रुद्रो न द्वितीयाय तस्मै य इनेदं सर्वं विचरति सर्वम् । तमीशानं वरदं देवमीज्यं निचाय्ये मां शान्तिमत्यन्तमेति ॥ यो यो नियोनिमधितिष्ठत्येको ये स्थापयित्वा तुरुद्रे । रुद्रमेकं त्वामाहुः शाश्वतं वै पुराणमिषमूर्जेण पशवो नुनामयन्तं मृत्युपाशान् । तदेतेनात्मन्नेतेनार्धचतुर्थेन मात्रेण शान्तिं संसृजति पशुपाशविमोक्षणं चासाप्रथमामात्रा ब्रह्म देवत्यारकावर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं सगच्छेद्ब्रह्मपदं । यासां द्वितीया मात्रा ईशान देवत्या कपिलावर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं सगच्छेद्दैशानं पदं । यासार्धचतुर्थीमात्रा सर्वदेवत्याऽव्यक्तीभूता खं विचरति शुद्धास्फटिकसन्निभा वर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं सगच्छेत्पदमनामयम् । तदेतदुपासीत मनयो वागवदन्ति न तस्य ग्रहणमयं पन्थाविहित उत्तरेण येन देवायान्ति येन पित

रोयेनऋपयः परमपरंपरायणं चेति वालाग्रमात्रं हृदयस्य मध्ये विश्वं देवं जातरूपं वरेण्यं । तमात्मस्थं ये तु पश्यन्ति धीरास्ते पांशान्ति
 भवति नेतरेषां । यस्मिन् क्रोधं यांचतुष्पांक्षमां चाक्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलं बुद्ध्या सञ्चितं स्थापयित्वा तु रुद्रमेकत्वमाहुः रुद्रो
 हि शाश्वतेन वै पुराणेनेपमूर्जेण तपसा नियन्ताग्निरिति भस्मवायुरिति भस्मजलमिति भस्मव्योमेति भस्मसर्वहवा
 इदं भस्ममन एतानि चक्षुःपियस्मादव्रतमिदं पाशुपतं यद्भस्मनाङ्गानि संस्पृशेत् तस्मादब्रह्मतदेतत्पाशुपतं पशुपाशविमोक्षणाय ॥
 ५ ॥ योऽग्नौ रुद्रो योऽप्स्वन्तर्योऽपो धीर्वीरुध आविवेश । य इमा विश्वा भुवनानि च हृपेतस्मै रुद्राय नमोऽस्त्वग्नये । यो रुद्रोऽ
 ग्नौ यो रुद्रोऽप्स्वन्तर्यो रुद्रोऽपो धीर्वीरुध आविवेश । यो रुद्र इमा विश्वा भुवनानि च हृपेतस्मै रुद्राय नमो नमः । यो रुद्रोऽप्सु यो
 रुद्रोऽपो धीर्पु यो रुद्रो वनस्पतिषु । येन रुद्रेण जगदूर्ध्वधारितं पृथिवी द्विधा त्रिधा धर्त्ता धारिताना गायेन्तरिक्षे तस्मै रुद्राय नमो
 नमः । मूर्धानमस्य संसेव्याप्यथर्वाहृदयं च यत् । मस्तिष्कादूर्ध्वं प्रेरयत्यवमानोऽधिशीर्षतः । तद्वा अथर्वणः शिरो देवकोशः स
 मुज्झतः । तत्प्राणोऽभिरक्षति शिरोऽन्तमथो मनः । न च दिवो देवजनेन गुप्तान चान्तरिक्षाणि न च भूमय इमाः । यस्मिन्निदं स
 र्वमोत प्रोतं तस्मादन्यन्न परं किंच नास्ति । न तस्मात्पूर्वन परंतदस्ति न भूतं नोत भव्यं यदासीत् । सहस्रपादेकमूर्ध्ना व्याप्तं स एवेद
 मावरीवर्त्तिभूतं । अक्षरात्संजायते कालः कालाद्व्यापक उच्यते । व्यापको हि भगवान् रुद्रो भोगायमानो यदा शेते रुद्रस्तदा संहा
 र्यते प्रजाः । उच्छृंसिते तमो भवति तमस आपोऽप्स्वं गुल्यामथिते मथितं शिशिरे शिशिरं मथ्यमानं फेनं भवति फेनादण्डं भवत्यण्डा
 ब्रह्मा भवति ब्रह्मणो वायुः वायोरोङ्कारः ओङ्कारात्सावित्री सावित्र्या गायत्री गायत्र्या लोका भवन्ति । अर्चयन्ति तपः सत्यं मधुर

श्रीः ॥ ॐ नमस्तेगणपतये । त्वमेवप्रत्यक्षं तन्त्रमस्मि । ॥ ५४ ॥ गणपत्यथर्वशीर्षम् ॥ ॥ ५४ ॥

त्वमेसर्वखल्विदं ब्रह्मासि । त्वं साक्षादात्मासि नित्यं । त्वमेव केवलं कर्तासि । त्वमेव केवलं धर्तासि । त्वमेव केवलं हर्तासि । अवदातारं । अवधातारं । अवानूचानमवशिष्यं । अवपश्चात्तात् । अवपुरस्तात् । अवोत्तरात्तात् । अवदक्षिणात्तात् । त्वंसच्चिदानंदं द्वितीयोसि । त्वंप्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोसि । सर्वजगदिदं त्वत्तो जायते । सर्वजगदिदं त्वयि प्रत्येति । सर्वजगदिदं त्वयि लयमेभ्यति । त्वं भूमिरापो न लो निलो न भः । त्वंच त्वा रि वा कृ प

दानि । त्वंगुणत्रयातीतः । त्वंदेहत्रयातीतः । त्वंकालत्रयातीतः । त्वंमूलाधारस्थितोसिनित्यं । त्वंशक्तित्रयात्मकः ।
 त्वांगेगिनोऽध्यायंतिनित्यं । त्वंब्रह्मात्वंविष्णुस्त्वंरुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वंवायुस्त्वंसूर्यस्त्वंचंद्रमास्त्वंब्रह्मभूर्भुवःस्वरोम् । ग
 णादिपूर्वमुच्चार्यवर्णादितदन्तरं । अनुस्वारःपरतरः । अर्धदुलसितं । तारेणरुद्धं । एतत्तत्त्वमनुस्वरूपं । गणकऋषिः ।
 अकरोमध्यमरूपं । अनुस्वारश्चांत्यरूपं । विंदुरुत्तररूपं । नादःसंधानं । संहितासंधिः । सैपागणेशविद्या । तन्नोदंतिःप्रचोदयात् ।
 निचृद्गायत्रीच्छंदः । गणपतिर्देवता ॥ ॐ गंगणपतयेनमः । एकदंतायविद्महेयक्रतुंडायधीमहि । रक्तगंधानु
 एकदंतंचतुर्हस्तपाशमंकुशधारिणम् । रदंचवरदंहस्तैर्विन्त्राणंमूपकध्वजम् । रक्तलंबोदरंशूर्पकर्णकरंरक्तवाससं । एवंध्यायतिथो
 लिङ्गांगरक्तपुष्पैःसुपूजितम् । भक्तानुकंपितंदेवंजगत्कारणमच्युतं । आविर्भूतंचसृष्ट्यादौप्रकृतेःपुरुषात्परं । एतत्तत्त्वमनुस्वरूपं । गणकऋषिः ।
 नित्यंसयोगीयोगिनांवरः ॥ एतदथर्वशीर्षयोधीते । सत्रह्रभूयायकल्पते । ससर्वतःसुखमेधते । ससर्वविघ्नैर्नबाध्यते । स
 यश्रीवरदमूर्तयेनमः ॥ एतदथर्वशीर्षयोधीते । प्रातरधीयानोरान्त्रिकृतंपापंनाशयति । सायंप्रातःप्रभु
 पंचमहापापास्रमुच्यते । सायमधीयानोदिवसकृतंपापंनाशयति । इदमथर्वशीर्षमशिक्ष्यायनंदेयं । योय
 जानोअपापोभवति । सर्वत्राधीयानोपविघ्नोभवति । धर्मार्थकाममोक्षंचविंदति । अनेनगणपतिमभिषिंच
 दिमोहादास्यति । सपापीयान्भवति । सहस्रावर्तनात् । गंयंकाममधीते । तंतमनेनसाधयेत् । अनेनगणपतिमभिषिंच
 ति । सवाग्मीभवति । चतुर्थ्यामनश्नजपति । सविद्यावान्भवति । इत्यथर्वणवाक्यं । ब्रह्माद्याचरणंविद्यात् । नविभे

सूयाथिवं०
॥५५॥

11-3-11

ब्रह्मभूर्भुवःस्वरोम् । सूर्यआत्माजगत्तस्तस्थुषश्च । सूर्याद्वैखल्विमानिभूतानिजायन्ते । सूर्याद्यज्ञाःपर्जन्योऽन्नमात्मा । नमस्ते
आदित्याय । त्वमेवकेवलंकर्तासि । त्वमेवप्रत्यक्षंविष्णुरसि । त्वमेवप्रत्यक्षंब्रह्मासि । त्वमेवप्रत्यक्षंरुद्रोऽसि । त्वमेवप्रत्यक्षमुगसि ।

त्वमेवप्रत्यक्षंयजुरसि । त्वमेवप्रत्यक्षंसामासि । त्वमेवप्रत्यक्षमथर्वसि । आदित्याद्व्याहृत्युर्जायते । आदित्या
 ऋमिर्जायते । आदित्यादापोजायन्ते । आदित्याज्योतिर्जायते । आदित्याह्नोमदिशोजायन्ते । आदित्याद्वेदाजायन्ते । आ
 दित्यादेवाजायन्ते । आदित्योवाएपएतन्मण्डलंतपति । असावादित्योब्रह्म । आदित्योवैवाक्पाणिपादोपस्थपायूनि ।
 दित्यादेवानसमानोदानापानप्राणाः । आदित्योवैवचनादानगमनानन्दविसर्गाः । आनन्दमयोज्ञानमयोविज्ञानमयआदि
 आदित्योवैव्यानसमोदस्यशरूपरसगन्धाः ॥ आदित्योवैविविश्वहेतवेनमः । सूर्योऽनोदिवस्यानुवातोअन्तरिक्षात् । अग्निर्नःपाथिवेभ्यः ।
 आदित्योवैवैशब्दस्यशर्मोपाहिन्त्राजिष्णवेविश्वहेतवेनमः । यःसूर्यःसोहमेवच । सूर्योऽनोदिवस्यानुवातोअन्तरिक्षात् । चक्षुर्नउतपर्व
 तः । नमोमित्रायभानवेमृत्योर्मोपाहिन्त्राजिष्णवेविश्वहेतवेनमः । यःसूर्यःसूर्यःप्रचोदयात् । सवितापश्चात्तात् । सवितापुर
 त्त्यः । नमोमित्राण्यभानवेमृत्योर्मोपाहिन्त्राजिष्णवेविश्वहेतवेनमः । तन्नःसूर्यःप्रचोदयात् ॥ ओमित्येकाक्षरं
 सूर्याद्भवन्तिभूतानि । सूर्येणपालितानि तु । सूर्येऽनोरासतां दीर्घमायुः ॥ एतद्वैसूर्यस्याष्टाक्षरंमनुम् । यःसदाहरहर्जपति । अपे
 तः । चक्षुर्धातादधातुनः । आदित्यायविद्महेसहस्रकरायधीमहि । सवितानोरासतां दीर्घमायुः । एतद्वैसूर्यस्याष्टाक्षरंमनुम् । सद्यःपञ्चमहापा
 स्तात् । सवितोत्तरात्तात् । सविताधरात्तात् । सवितानःसुवतुसर्वतातिम् । सवितानोरासतां दीर्घमायुः । एतद्वैसूर्यस्याष्टाक्षरंमनुम् । सद्यःपञ्चमहापा
 ब्रह्म । घृणिरितिद्वेअक्षरे । सूर्यइत्यक्षरद्वयम् । आदित्यइतित्रीण्यक्षराणि । एतद्वैसूर्यस्याष्टाक्षरंमनुम् । सद्यःपञ्चमहापा
 सोब्रह्मण्योब्राह्मणोभवति । सूर्याभिमुखंजट्यामहाव्याधिभयात्प्रमुच्यते । अलक्ष्मीर्नश्यति । अभक्ष्यभक्षणात्पूतोभवति । पशन्विन्दतिवेदार्थ
 यपानात्पूतोभवति । अगम्यागमनात्पूतोभवति । ब्राह्मसंभाषणात्पूतोभवति । मध्याह्नेसूर्याभिमुखःपठेत् । सद्यःपञ्चमहापा
 पात्प्रमुच्यते । सैषासावित्रीविद्यानकस्यचित्प्रशंसेत् । यएतन्महाभागःप्रातःपठतिसभाग्यवान्जायते । पशन्विन्दतिवेदार्थ

लभते । त्रिकालं जप्त्वा क्रतुरातफलं प्राप्नोति । हस्तादित्येजपतिसमहामृत्युं तरति । य एवं वेद । इत्युपनिषत् ॥ इति सूर्याथर्वशीर्षः ॥
श्रीः ॥ ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासित्वं महादेविसा ब्रवीदहं ब्रह्म स्वरूपिणी । मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत् । शून्यं चाशून्यं च
अहमानंदानंदौ अहं विज्ञानाविज्ञाने अहं ब्रह्मा ब्रह्मणी द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये । इति चार्थवर्णी श्रुतिः । अहंपंचभूतानि । अहंपंचत

देव्यथर्व.
॥५६॥

न्मात्राणि । अहमखिलं जगत् । वेदोहमवेदोहं । विद्याहमविद्याहम् । अजाहमनजाहं । अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्काहं । अहं रुद्रेभिर्वसु
भगंदधामि । अहं विष्णुमुरुकम् । ब्रह्माणमुत्पजापतिंदधामि । अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्येयजमानाय सुव्रते । अहं रा
ज्ञी सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमाय श्रियानां । अहं सुवेपितरमस्य मूर्धन्ममयो निरप्स्वंतः समुद्रे । य एवं वेद सदैवी संपदमा
प्नोति । ते देवा अब्रुवन् । नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् । तामग्निवर्णां तप
सा ज्वलंतीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् । दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्रीं तेनमः । देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरू
पाः पशवो वदन्ति । सानो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु ॥ कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् । सरस्वती
मदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम् । महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् । अदितिर्ह्यजनि
ष्टदक्षया दुहिता तव । तां देवा अन्वजायंत भद्रा अमृतबन्धवः ॥ कामेयोनिः कमलावज्रपाणिर्गुहाहं सामातलिश्चात्र मिंद्रः । पु

॥६२॥

नगुहासकलामाययाचापृथक्केशाविश्वमातादिविद्याः ॥ एपात्मशक्तिः । एपाविश्वमोहिनीपाशांकुशधनुर्वाणधरा । एपाश्रा
 महाविद्या । यएवंवेद । सशोकंतरति । नमस्तेभगवतिमातरस्मान्पाहिसर्वतः । सैपावैष्णवावसवःसैवेकादशरुद्राःसैपाद्वाद
 शादित्याःसैपाविश्वेदेवाःसोमपाअसोमपाअसुरारक्षांसिपिशाचयक्षसिद्धाःसैपासत्वरजस्तमांसि सैपाब्रह्मवि
 ण्णुरुद्ररूपिणीसैपाप्रजापतींद्रमनवःसैपाग्रहनक्षत्रज्योतिष्कलाकाष्ठादिविश्वरूपिणीतामहंप्रणौमिनित्यम् । पापापहारिणी
 देवीभुक्तिमुक्तिप्रदायिनी । अनन्तांविजयांशुद्धांशरण्यांसर्वदाशिवाम् ॥ वियदाकारसंयुक्तंवीतिहोत्रसमन्वितम् ॥ अर्धेदु
 लसितंदेव्याबीजंसर्वार्थसाधकम् ॥ एवमेकाक्षरंमंत्रयतयःशुद्धचेतसः । ध्यायन्तिपरमानंदमयाज्ञानांबुराशयः ॥ वाङ्मयाब्र
 ह्मभूस्तस्मात्पृष्ठवक्त्रसमन्वितम् । हृत्पुंडरीकमध्यस्थांप्रातःसूर्यसमप्रभाम् । पाशांकुशधरांसौम्यांवरदाभयहस्तकाम् ॥
 त्रिनेत्रांरक्तवसनांभक्तकामदुहंभजे । भजामित्वांमहादेविमहाभयविनाशिनि ॥ महादारिद्र्यशमनिमहाकारुण्यरूपिणी । यस्यालक्षंनोपलक्ष्यते
 यस्याःस्वरूपंब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञा । एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका । एकाैव विश्वरूपिणी
 तस्मादुच्यते अलक्षा । यस्याजननं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अजा । एकाैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका । ज्ञानानां चि
 तस्मादुच्यते अनेका । अतएवोच्यते ऽज्ञेयानंतलक्ष्याजैकानेका । मंत्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी । ज्ञानानां चि
 तस्मादुच्यते अक्षिणी ॥ यस्याः परतरं नास्ति सैपा दुर्गा प्रकीर्तिता । तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम् ॥
 नमयातीतां शून्यानां शून्यसाक्षिणी ॥

नमामिभवभीतोऽहंसंसारार्णवतारिणीम् ॥ इदमथर्वशीर्षयोऽधीते । सपञ्चाथर्वशीर्षफलमामोति । इदमथर्वशीर्षज्ञा
त्वायोर्चाऽस्थापयति । शतलक्षं प्रजसापिनार्चाशुद्धिं च विंदति । शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्या विधिः स्मृतः । दशवारं पठेद्यस्तु
कृतं पापं नाशयति । सायं प्रातः प्रयुजानो अपापो भवति । निशीथे तुरीयसंध्यायां जह्वा वाक्सिद्धिर्भवति । प्रातरधीयां नोरात्रि
यां जह्वा देवतासां निध्यं भवति । भौमाश्विन्यां महादेवी संनिधौ जह्वा महामृत्युं तरति समहामृत्युं तरति । य एवं वेद इत्युपनिषत् ॥

श्रीः ॥ ॐ सुवर्णघर्मपरिवेदेनं ॥ इन्द्रस्यात्मानं दशधा चरंतं ॥ अंतःसमुद्रे मनसा चरंतं ॥ ब्रह्मान्वं विदुः दशहोतारमर्णे ॥ अं
तः प्रविष्टः शास्ता जनानां ॥ एकः सन् बहूधा विचारः ॥ शतं शुक्राणि यत्रैकं भवति ॥ सर्वे वेदा यत्रैकं भवति ॥ सर्वे होतारो यत्रै
कं भवति ॥ समानसीन आत्मा जनानां ॥ १ ॥ अंतः प्रविष्टः शास्ता जनानां ॥ सर्वोऽप्रजायत्रैकं भवति ॥ चतुर्होता
रो यत्र संपदं गच्छंति देवैः ॥ समानसीन आत्मा जनानां ॥ ब्रह्मैद्रमग्निं जगतः प्रतिष्ठां ॥ दिव आत्मानं सवितारं बृहस्पतिं ॥ च
तुर्होतारं प्रदिशो नुक्कुसं ॥ वाचो वीर्यं तपसा न्वविंदत् ॥ अंतः प्रविष्टं कर्तारमेतं ॥ त्वष्टारं रूपाणि विकुर्वंतं विपश्चिं ॥ २ ॥ अ
मृतस्य प्राणं यज्ञमेतं ॥ चतुर्होतृणामात्मानं कवयो निचिक्वुः ॥ अंतः प्रविष्टं कर्तारमेतं ॥ देवानां बंधूं निहितं गुहासु ॥ अमृतेन
कुसं यज्ञमेतं ॥ चतुर्होतृणामात्मानं कवयो निचिक्वुः ॥ शतं नियुतः परिवेदुः विश्वा विश्ववारः ॥ विश्वमिदं वृणाति ॥ इन्द्रस्या

सुवर्णघर्म
॥५७॥

॥६३॥

त्मानिहितः पञ्चहोता ॥ अमृतं देवानामार्युः प्रजानां ॥ ३ ॥ इंद्रश्च राजानं सवितारमेतं ॥ वायो रात्मानं कवयो निचिकथुः ॥
 रश्मिश्च रश्मीनां मध्ये तपतं ॥ ऋतस्य पदे कवयो निपाति ॥ य आँडकोशे भुवनं विभर्ति ॥ अग्निभिर्गणः सन्नर्थलोकां निवचष्टे ॥
 यस्य आँडकोशश्शुष्ममाहुः प्राणमुल्ब ॥ तेन ऋतममृतं नाहमस्मि ॥ सुवर्णकोशश्च रजसा परीवृतं ॥ देवानां वसुधानां विराजं ॥ ४ ॥
 अमृतस्य पूर्णांतामुकलां चिचक्षते ॥ पादुपङ्क्तौ तुर्न किला विचित्से ॥ येन तवः पञ्चधोतकृताः ॥ उतवापड्धामनुसातकृताः ॥
 तश्च पङ्क्तौ तारमृतुभिः कल्पमानं ॥ ऋतस्य पदे कवयो निपाति ॥ अंतः प्रविष्टं कर्तारमेतं ॥ अंतश्चंद्रमसि मनसा चरंतं ॥ सहैव संतं
 न विजानंति देवाः ॥ इंद्रस्य आत्मानं शतधा चरंतं ॥ ५ ॥ इंद्रो राजा जगतो य ईशे ॥ सप्तहोता सप्तधा विहृषः ॥ परेण तं तु परि
 पिच्यमानं ॥ अंतरादित्ये मनसा चरंतं ॥ देवानां हृदयं ब्रह्मान्व विदत् ॥ ब्रह्मतद्ब्रह्मण उज्जभार ॥ अर्कश्चोततश्च सारिरस्य म
 ध्ये ॥ आयस्मिन्सप्तपरेवः ॥ मेहति बहुलाश्चिथं ॥ बह्वश्वामिन्द्रगोमतीं ॥ ६ ॥ अच्युतां बहुलाश्चिथं ॥ सहर्षिर्वसुचित्त
 मः ॥ पेरुरिद्रा यपि न्वते ॥ बह्वश्वामिन्द्रगोमतीं ॥ अच्युतां बहुलाश्चिथं ॥ मह्यमिन्द्रो नियच्छतु ॥ शतश्शता अस्वयुक्ता ह
 रीणां ॥ अर्वाङ्गायां तु वसुभीरश्मिर्द्रः ॥ प्रमश्च हमाणो बहुलाश्चिथं ॥ रुद्रिर्मरिद्रः सविता मे नियच्छतु ॥ ७ ॥ घृतं ते जोमधु
 मदिन्द्रियं ॥ मय्ययमग्निर्दधातु ॥ हरिः पतंगः पटरी सुपूर्णः ॥ द्विविषयो न भसाय एति ॥ सनु इंद्रः कामवरं ददातु ॥ पंचारं च
 क्रंपरिर्वर्तते पृथु ॥ हिरण्यज्योतिः सारिरस्य मध्यं ॥ अजस्रं ज्योतिर्न भसा सपेदेति ॥ सनु इंद्रः कामवरं ददातु ॥ सप्तयुजं ति रथ
 मेकचक्रं ॥ ८ ॥ एको अश्वो वहति सप्तनामा ॥ त्रिनाभिचक्रमज्जमनर्व ॥ येनेमा विश्वा भुवनानि तस्थुः ॥ भद्रं पश्यत उरपसेदु

रत्रे ॥ तपोदीक्षामृषयःसुवर्चिदः ॥ ततःक्षत्रं बलमोजश्चजातं ॥ तदुस्मै देवा अभिसन्नमंतु ॥ श्वेत॒रश्मि॒बो भुज्यमानं ॥ अपां
ने॒तारं॒भुव॒नस्य॒गोपां ॥ इं॒द्रं नि॒चिक्वुः॒पर॒मेव्यो॒मन् ॥ ९ ॥ रोहि॒णीः पि॒ंगला॒एक॒रूपाः ॥ क्षर॒तीः पि॒ंगला॒एक॒रूपाः ॥ श्वेतो॒रश्मिः
परि॒सर्व॒बभूव ॥ सुव॒न्मह्यं॒पशू॒न्वि॒श्वरू॒पां ॥ पत॒ंगम॒क्तम॒सुर॒स्यमा॒यया ॥ १० ॥ हृदा॒पश्यं॒तिम॒नसा॒मनी॒षिणः ॥ श्वेतो॒रश्मिः
तः क॒वयो॒विच॒क्षते ॥ मरी॒चीनां॒पद॒मिच्छं॒तिवे॒धसः ॥ पत॒ंगोवा॒चंम॒नसा॒विभर्ति ॥ तां॒र्गध॒र्वोव॒दुर्भ॒अंतः ॥ सम॒द्रेअं
स्व॒र्यम॒नीषां ॥ ऋत॒स्यप॒देक॒वयो॒निपाति ॥ ये॒न्नाभ्याः॒पशवो॒विश्व॒रूपाः ॥ वि॒रूपाः॒संतो॒बहु॒धैक॒रूपाः ॥ तां॒द्योत॒मानां
मो॒क्तुदे॒वः ॥ ११ ॥ प्र॒जाप॒तिः प्र॒जया॒संवि॒दुनः ॥ वी॒तस्तु॒केस्तु॒के ॥ यु॒वम॒स्मासु॒निर्य॒च्छतं ॥ अ॒ग्निस्ता॒अग्ने॒प्रमु॒
आ॒र॒ण्याः प॒शवो॒विश्व॒रूपाः ॥ वि॒रूपाः॒संतो॒बहु॒धैक॒रूपाः ॥ तेषां॒सप्त॒ाना॒मि॒हर॒तिर॒स्तु ॥ प्र॒प्रय॒ज्ञप॒तिंति॒र ॥ ये॒न्ना
नः ॥ इ॒डयै॒सुसं॒घृत॒वच्चा॒चरं ॥ दे॒वाअ॒न्ववि॒दुन्गुहा॒हितं ॥ रा॒यस्यो॒षाय॒सुप्र॒जास्त्वाय॒सुवी॒र्याय ॥ य
तेषां॒सप्त॒ाना॒मि॒हर॒तिर॒स्तु ॥ रा॒यस्यो॒षाय॒सुप्र॒जास्त्वाय॒सुवी॒र्याय ॥ य॒आ॒र॒ण्याः प॒शवो॒विश्व॒रूपाः ॥ प्र॒जाप॒तिः प्र॒जया॒संवि॒दु
श्रीगणेशायनमः ॥ ॐ ॥ इंद्रि॒यंवा॒एत॒दस्मि॒होके॒यद्दधि॒यद्द॒माभि॒षिच॒तीन्द्रि॒यमे॒वास्मि॒स्तद्दधा॒तिर॒सोवा॒एषओष॒धिव॒नस्य॒ति

॥ ५८ ॥ इं॒द्रि॒यं वा॒ एत॒ दस्मि॒ ह्योके॒ यद्दधि॒ यद्द॒ माभि॒ षिच॒ तीन्द्रि॒ यमे॒ वास्मि॒ स्तद्दधा॒ ति र॒ सोवा॒ एषओष॒ धिव॒ नस्य॒ ति

॥ ६४ ॥

पुण्यन्मधुयन्मध्वाभिपिंचतिरसमेवास्मिस्तद्वातितेजोवाएतलशूनांयद्धृतंयद्धृतेनाभिपिंचतितेजएवास्मिस्तद्वात्यमृतंवाएत
 दस्मिंल्लोकेयदापोयदद्भिरभिपिंचत्यमृतत्वमेवास्मिस्तद्वाति सोभिपिक्तोभिपेक्त्रेब्राह्मणायहिरण्यंदद्यात्सहस्रंदद्यात्क्षेत्रंचतु
 द्वाद्दद्यात्प्याहुरसंख्यातमेवापरिमितंदद्यादपरिमितोवैक्षत्रियोपरिमितस्यावरुध्याइत्यथास्मैसुराकंसंहस्तआदधाति स्वा
 दिष्टयामदिष्टयापवस्वसोमधारया ॥ इंद्रायपातवेसुतइतितांपिबेद्यदत्रशिष्टंरसिनःसुतस्ययदिंद्रोअपिबच्छचीभिः ॥ इदंत
 दस्यमनसाशिवेनसोमंराजानमिहभक्षयामि ॥ अभित्वावृषभासुतेसुतंसृजामिपीतये ॥ तंपाव्यश्रुहीमदमितियोहवावसोम
 पीथःसुरायांग्रविष्टःसहैवैतेनैंद्रेणमहाभिपेकेणाभिपिक्तस्यक्षत्रियस्यभक्षितोभवति नसुरातांपीत्वाभिमंत्रयेतापामसोमंशंनोभ
 वेतितद्यथैवादःप्रियःपुत्रःपितरंप्रियावाजायापतिसुखंशिवमुपस्पृशत्याविस्त्रस एवंहैवैतेनैंद्रेणमहाभिपेकेणाभिपिक्तस्यक्षत्रिय
 स्यसुरावासोमोवान्यद्वात्राद्यंसुखंशिवमुपस्पृशत्याविस्त्रसः ॥ १ ॥ एतेनहवाऐंद्रेणमहाभिपेकेणतुरःकावपेयोजनमेजयंपारि
 क्षितमभिपिपेचतस्मादुजनमेजयःपारिक्षितःसमंतंसर्वतःपृथिवीजयन्परीयायाश्वेनचमेध्येनेजेतंदेपाभियज्ञगाथागीयते ॥ आ
 संदीवतिधान्यादंरुक्मिणंहरितस्त्रजं ॥ अश्वंबबंधसारंगंदेवभ्योजनमेजयइत्येतेनहवाऐंद्रेणमहाभिपेकेणत्रेगृहपतिरासैते
 र्योतंमानवमभिपिपेचतस्मादुशार्योतोमानवःसमंतंसर्वतःपृथिवीजयन्परीयायाश्वेनचमेध्येनेजे देवानांहापिसन्नेगृहपतिरासैते
 नहवाऐंद्रेणमहाभिपेकेणसोमशुग्मावाजरत्नायनःशतानीकंसात्राजितमभिपिपेचतस्मादुशतानीकः सात्राजितःसमंतंसर्वतःपृ
 थिवीजयन्परीयायाश्वेनचमेध्येनेजेतनहवाऐंद्रेणमहाभिपेकेणपर्वतनारदावांवापृथमभिपिचतुस्तस्माद्वांवापृथःसमंतंसर्व

तः पृथिवीजयन्परीयायाश्वेनचमेध्येनेजएतेनहवाएद्रेणमहाभिषेकेणपर्वतनारदौयुधांश्रौष्ठिमौग्रसैन्यमभिषिचतुस्तस्मादुयु
धांश्रौष्ठिरौग्रसैन्यः समंतं सर्वतः पृथिवीजयन्परीयायाश्वेनचमेध्येनेजएतेनहवाएद्रेण महाभिषेकेणकश्यपोविश्वकर्माणंभौवन
मभिषिषेचतस्मादुविश्वकर्माणंभौवनः समंतं सर्वतः पृथिवीजयन्परीयायाश्वेनचमेध्येनेजएतेनहवाएद्रेण
नदातुमर्हतिविश्वकर्मन्भौवनमांदिदासिथ । निमंक्ष्येहंसलिलस्यमध्येमोघस्तएषकश्यपायाससंगरइत्येतेनहवाएद्रेणमहाभिषे
केणवसिष्ठः सुदासं पैजवनमभिषिषेचतस्मादुसुदाः पैजवनः समंतं सर्वतः पृथिवीजयन्परीयायाश्वेनचमेध्येनेजएतेनहवाएद्रेणमहाभिषे
हाभिषेकेणसंवर्तआंगिरसोमरुत्तमाविक्षितमभिषिषेचतस्मादुमरुत्तआविक्षितः समंतं सर्वतः पृथिवीजयन्परीयायाश्वेनचमेध्येनेजएतेनहवाएद्रेणमहाभिषे
नेजेतदप्येषश्लोकोभिगीतोमरुतः परिवेष्टारोमरुत्तस्यावसन्नगृहे ॥ आविक्षितस्यकामप्रोविश्वेदेवाः सभासदइति ॥ २ ॥
इंद्रियं वेति खंडद्वयं समाप्तं ॥

श्रीः ॥ ॐ जितंतेपुंडरीकाक्षनमस्तेविश्वभावन ॥ ५९ ॥ अथमहापुरुषविद्या ॥
करूपिणे ॥ ॐ नमोवासुदेवायशुद्धज्ञानस्वरूपिणे ॥ २ ॥ देवानां दानवानांचसामान्यमसिदैवतं ॥ सर्वदाचरणद्वंद्वं ब्रजा
मिशरणंतव ॥ ३ ॥ एकस्त्वमसिलोकस्य स्रष्टासंहारकस्तथा ॥ अध्यक्षश्चानुमंताचगुणमायासमावृतः ॥ ४ ॥ संसारसागरं

१ धर्मसिधौदेवपूजांप्रकृत्य 'स्वर्णधर्मानुवाकेनमहापुरुषविद्यया' इत्युक्तमासीदतोऽत्राभिषेकसूक्तेषुपौराणया अपिमहापुरुषविद्यायानिवेशः कृतः ॥

[illegible]

विंदेयं तावतास्मि कृती सदा ॥ १६ ॥ इति महापुरुषावध्यातः ॥
विंदेयं तावतास्मि कृती सदा ॥ १६ ॥ अथ देवे प्रारंभः ॥
पुरुषस्य हरेः सूक्तं स्वर्ग्यं धन्यं यशस्कं ॥ ६० ॥ ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नृतिभिः सीदसा
र्दुनं ॥ किंकरोस्मीति चात्मानं देवायैव निवेदयेत् ॥ यजामि देवान्यदि शक्नोमि माज्याय सः शंसमावृक्षिदे
र्दुनं ॥ किंकरोस्मीति चात्मानं देवायैव निवेदयेत् ॥ यजामि देवान्यदि शक्नोमि माज्याय सः शंसमावृक्षिदे

[illegible]

थातेऽअग्नेशुचर्यतऽआयोर्देदाशुर्वाजेभिराशुषाणाः ॥ उभेयत्तोकेतनेयेदधानाऽऋतस्यसामन्त्रणयैतदेवाः ॥ ३ ॥ यज्ञेनयज्ञ
 मयजंतदेवास्तानिधर्माणिप्रथमान्यासन् ॥ तेहनाकंमहिमानःसंचतयत्रपूर्वेसाध्याःसंतिदेवाः ॥ ४ ॥ पराशुभ्राऽअयासौय
 स्वचिह्नतायोः ॥ तेषुणोमरुतोमृळ्यंतुयेस्मापुरागातूयतीवदेवाः ॥ ५ ॥ त्वेरायंद्रतोशतमाःप्रणेतारःक
 नयो नरथाःसुदास्तरायेषामदंतऽइषयेमदेवाः ॥ ६ ॥ उभाशंसानर्यामामविष्टामुभेमामतीऽअर्वसासचे
 ऽअभिक्षमध्वंयुज्यायेदेवाः ॥ ७ ॥ उत्तर्नईमरुतोवृद्धसेनास्मद्रोदसीसर्मनसःसदंतु ॥ पुषदश्वासोव
 स्वपनयंतदेवाः ॥ ८ ॥ दिवाश्चिदातेरुचयंतरोकाऽउषोर्विभातीरनुभासिपूर्वीः ॥ ययनःपुत्राऽअदितेरदब्धा
 जनयंतदेवाः ॥ ९ ॥ शंसामहामिंद्रयस्मिन्विश्वऽआकृष्टयःसोमपाःकाममव्यन् ॥ अपोयदग्मउशधग्वनेषुहोतुर्मद्र
 तुदेवाः ॥ १० ॥ त्रिरुत्तमादूणशारोचनानित्रयोर्राजंत्यसुरस्यवीराः ॥ ऋतावानऽइषिरादूळभासस्त्रिरादिवोविदथैसं
 ॥ ११ ॥ अप्रतीतो जयतिसंधना निप्रतिजन्यान्युतयासजन्या ॥ समिद्रेणमदथसंमरुद्भिःसंराजभीरल्लधेयायेदेवाः
 कोवस्त्रातावसवःकोव्रुताद्यावाभूमीऽअदिते त्रासीथानः ॥ अवस्यवेयोवरेवःकृणोति ब्रह्मणे राजा तमवंति देवाः ॥ १२ ॥
 त्वमपोयदेवतुर्वशायारमयःसुदुर्घाःपारइंद्र ॥ उग्रमयातमवहोहुकुत्संसंहयद्वा मुशनारंतदेवाः ॥ १३ ॥ मूर्धानं दिवोऽअ

रतिपृथिव्यावैश्वानरमृतऽआजातमग्निं ॥ क्विसन्नाजमतिथिजनानामासन्नापात्रजनयंतदेवाः ॥ १७ ॥ नाभियज्ञानांसदनं
 तेनोरायोद्युमतोवाजवतोदाता ॥ १८ ॥ तेनोरायोद्युमतोवाजवतोदाता ॥ १९ ॥ येकेचज्जमामहिनोऽअहिमाया
 रयीणांमहामाहावमभिसंनवंत ॥ वैश्वानरंरुध्यमध्वराणायज्ञस्येकेतुंजनयंतदेवाः ॥ २० ॥ अस्मेरुद्रामेहनापवतासोवृत्रह
 रोभूतनवतःपुरुक्षोः ॥ दशस्यंतोदिव्याःपार्थिवासोगोजाताऽअप्यामळतांचदेवाः ॥ २१ ॥ परिप्रथन्वद्रायसोमस्वादुर्मित्रायपू
 द्विवोजिज्ञिरेऽअपांसधस्ये ॥ तेऽअसमभ्यमिपयेविश्वमायुःक्षपुस्त्रावरिवस्यंतुदेवाः ॥ २२ ॥ प्रयाजान्मेऽअनुयाजांश्चेकवलानूजैस्वतंहविषोदत्तमा
 त्येभरहूतौसजोपाः ॥ यःशंसतेस्तुवेतार्थिपुत्रइंद्रज्येष्ठाऽअस्मोअवंतुदेवाः ॥ २३ ॥ एभिर्देववृण्ण्यपौस्यानियेभिरौक्षद्वृत्रहत्यायवज्री ॥ समर्थमासंभ
 ष्णेभगाय ॥ इंद्रस्तेसोमसुतस्यपेयाःक्रत्वेदक्षायविश्वेचदेवाः ॥ २४ ॥ अनुक्षराऋजवःसंतुपंथायेभिःसखायोयंतिनोवरेयं ॥ भगोऽअर्थमा
 गं ॥ घृतंचापांपुरुषंचौपधीनामग्नेश्चर्द्धमायुरस्तुदेवाः ॥ २५ ॥ गुणामितेसौभगत्वायहस्तंमयापत्याजरदष्टिर्यथासः ॥ महेयत्वापुरु
 र्भेणःक्रियमाणस्यमहर्कतेकर्ममुदजायंतदेवाः ॥ २६ ॥ समस्मिन्जायमानऽआसतन्नाऽबुतेमवर्धन्नद्यस्वगूतीः ॥ तेनजायामन्वविंदृष्टुहस्य
 गोनोनिनीयात्संजास्पत्यंसुयममस्तुदेवाः ॥ २७ ॥ समस्मिन्जायमानऽआसतन्नाऽबुतेमवर्धन्नद्यस्वगूतीः ॥ तेनजायामन्वविंदृष्टुहस्य
 सवितापुरंधिमह्यत्वादुर्गाहपत्यायदेवाः ॥ २८ ॥ ब्रह्मचारीचरतिवेविषद्विपुःसदेवानांभवत्येकमंगं ॥ अस्यहोतुःप्रदिश्यतस्यवाचि
 वोराणायवर्धयन्दस्यहत्यायदेवाः ॥ २९ ॥ सुद्योजातोव्यमिमीतयज्ञमग्निर्देवानांभवत्पुरोगाः ॥ अस्यहोतुःप्रदिश्यतस्यवाचि
 तिःसोभेननीतांजुह्वंनदेवाः ॥ ३० ॥

स्वाहाकृतं हविरदंतु देवाः ॥ २९ ॥ इदं ते पात्रं सनवित्तमिन्द्र पिबा सोममेनाशतक्रतो ॥ पूर्णं ऽ आहोमदिरस्य मध्वोयं विश्वऽ
 इदं भिर्यति देवाः ॥ ३० ॥ ॐ जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतो निदहाति वेदः ॥ सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिंधु
 लानितक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी ॥ अष्टापर्दी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमेव्योमन् ॥ ॐ सक्तुमिव तितुना पुनंतो य
 त्रधीरामनसा वाचमकृत ॥ अत्रासखायः सखा निजानते भद्रैर्षालक्ष्मीर्निहिता धिवाचि ॥ ॐ प्रणो देवी सरस्वती वाजैर्भिर्वा
 जिनीवती ॥ धीनामं विज्यवतु ॥ ॐ यागं गूर्यासिनी वालीया राकाया सरस्वती ॥ इन्द्राणीं महं कृतये वरुणानीं स्वस्तये ॥ ॐ
 निषुसीद गणपते गणेषु त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनां ॥ न ऽ ऋते त्वत्क्रियते किंच नारो महामर्कं मघवं चित्रमर्च ॥ ॐ आतूनं इन्द्रक्षमं तं चि
 त्रं ग्राभं संगृभाय ॥ महाहृस्तीदक्षिणेन ॥ ॐ वर्षदूते विष्णवा स आकृणो मितन्मे जुषस्व शिपि विष्टहव्यं ॥ वर्धतु त्वासुष्टु तयो गि
 रो मेयं पातस्व स्तिभिः सदानः ॥ ॐ राजा धिरा जाय प्रसह्य साहिने ॥ नमो वंय वै श्रवणाय कुर्महे ॥ समेकामान्कामकामाय म
 ह्यं ॥ कामेश्वरो वै श्रवणो ददातु ॥ कुबेराय वै श्रवणाय ॥ महाराजाय नमः ॥ ॐ स्वस्ति ॥ साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं
 पारमेष्ठ्यं राज्यं माहाराज्यमाधिपत्यमयं समंतपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्वायुष आंतादापराधी ॥ पृथिव्यै समुद्रपर्यं ताया एकरा
 ळिति ॥ तदप्येषः श्लोको भिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्नगृहे ॥ आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वे देवाः सभा सद इति ॥ यो

वासुदेवायधी
नारायणायविद्महे वासुदेवायधी
वक्रतुंडायविद्महे वक्रतुंडायधी
विष्णुप ॥ ७३ ॥

ॐ नारायणायविद्महे ॥ आयुःकीर्तिप्रजाददुः ॥ तन्नोरुद्रःप्र० ॥ महालक्ष्मीचविद्महे ॥ ७३ ॥

तैत्तिरीयब्रह्मणोबुद्ध । अमृतैनामृतांपुरी ॥ तस्मैब्रह्मचब्रह्माच । आयुःकीर्तिप्रजाददुः ॥ तन्नोरुद्रःप्र० ॥ महालक्ष्मीचविद्महे ॥ ७३ ॥
महि ॥ तन्नोविष्णुःप्रचोदयात् ॥ तत्पुरुषायविद्महे महादेवायधीमहि ॥ तन्नोआदित्यःप्र० ॥ महालक्ष्मीचविद्महे ॥ ७३ ॥
महि ॥ तन्नोदंतिःप्र० ॥ भास्करायविद्महे महद्युतिकरायधीमहि ॥ तन्नोअदित्यःप्र० ॥ महालक्ष्मीचविद्महे ॥ ७३ ॥
महि ॥ तन्नोदक्ष्मीःप्रचोदयात् ॥ इति मंत्रपुष्पमंत्राः ॥ एतदन्येपियथादेवतमूहनीयाः ॥

॥ ६१ ॥ अथ पवसानपंचस्तूतसर्वानुक्रमः ॥
तन्नोदक्ष्मीःप्रचोदयात् ॥ इति मंत्रपुष्पमंत्राः ॥ एतदन्येपियथादेवतमूहनीयाः ॥
तन्नोदक्ष्मीःप्रचोदयात् ॥ इति मंत्रपुष्पमंत्राः ॥ एतदन्येपियथादेवतमूहनीयाः ॥

श्रीः ॥ ॐ ॥ सहस्रशीर्षापोलशनारायणः पौरुषमानुष्टुभं त्रिष्टुवंतं ॥ १ ॥
सोमःपरिप्राष्टावेषधियाप्रतेप्रनिम्नेवप
दाःपवस्वमेधातिथिरषशुनःशेषःसनहिरण्यस्तूपः समिद्धएकादशकाश्यपोसितोदेवलोवाविंशतिःसूक्तान्याद्यमाप्रियश्चतुरनु
दुवंतंमंद्रयानवासुग्रमेतसोमाःपरिप्रियाप्रस्वानासउपास्मैसोमाअसुग्रं ॥ १ ॥
रिसुवानःसप्तयत्सोमप्रकविरतेधावत्येते सोमासःसोमाअसुग्रं प्रसोमासः इयावाश्वःप्रसोमासस्तृतः प्रसुवानआ
तएषकविर्नृमेधएषवाजीप्रियमेधःप्रास्यनृमेधःप्रधाराबिंदुःप्रसोमासो गोतमःप्रसोमासः इयावाश्वःप्रसोमासस्तृतः प्रसुवानआ
नःपवस्वप्रभूवसुरसजिससुतो रहूगणएषउस्य आशुरर्षबृहन्मतिःपुनानःप्रयेगावोमेध्यातिथिर्जनयन्योअत्यइव ॥ २ ॥
णोयास्यःसपवस्वासुग्रन्नयासोमःपंचकविर्भागवस्तंवापवस्वोत्तेशुष्मासउचथोध्वर्योपरिद्युक्षउत्तेचतुष्कमवत्सारोस्यप्रत्वांयवं

यवंपरिसोमःप्रतेधारास्तरत्सपवस्वप्रगायत्रेणोपांत्यापुरउष्णिगयावीतीत्रिशदमहीयुरेतेअसृग्रंजमदन्निरापवस्वनिधुविःकाश्ये
 पोवृषासोमकश्यपः ॥ ३ ॥ ॥ हिन्वंतिभृगुर्वारुणिर्जमदन्निर्वापवस्वशतवैखानसाअष्टादश्यनुष्टुप्परास्तिस्त्रआग्नेयस्त्वंसो
 मत्तिस्त्रोनित्यद्विपदागायत्र्योवितानस्तिस्त्रःपौष्ण्योवायत्तेपवित्रंपंचाग्नेय्यःसावित्र्यग्निसावित्रीवैश्वदेवीवासामंत्यास्त्रिशीपुरउ
 ष्णिक्स्त्रसप्तविंश्यनुष्टुबंत्येचतेपावमान्यध्येतृस्तुती ॥ जागतमूर्ध्वप्रागुशनसः ॥ ४ ॥ ॥ नतंशैलूषिःकुलमलबर्हिषोवामदेव्यो
 वांहोसुग्वैश्वदेवमुपरिष्टाद्बर्हितमंत्यात्रिष्टुप् ॥ ॥ इतिवैससोर्नैद्रोलबआत्मानंतुष्टाव ॥ ॥ अस्यद्विपंचाशदल्पस्तवंत्वेत
 त्संशयोत्थापनप्रश्नप्रतिवाक्यान्यत्रप्रायेण ज्ञानमोक्षाक्षरप्रशंसाचंपंचपादंसाकंजानांयद्गायत्रेयं सशित्तेससार्धगर्भागौरिरिति
 जगत्यएतदंतुवैश्वदेवंतस्याःसमुद्राइतिवाचःसमुद्राआपोक्षरंसाप्रस्तारपंक्तिःशकमयमितिशकधूमउक्षाणंपृश्नितिसोमस्त्र
 यःकेशिनइत्यग्निःसूर्योवायुश्चकेशिनश्चत्वारिवाग्वाच इंद्रंमित्रंसौर्यौद्वादशेतिसंवत्सरसंस्थंकालचक्रवर्णनं यस्तेसरस्वत्यैयज्ञेन
 साध्येभ्यःपरानुष्टुप्सौरीपर्जन्याग्निदेवतावांत्यासरस्वतेसूर्यायवा ॥ श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थंजपेअभिषेकेवाविनियोगः ॥ ५ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ हरिः ॐम् ॥ स्वादिष्ठयामदिष्ठयापवस्वसोमधारया ॥ इंद्रायपार्तेवेसुतः ॥ रक्षोहाविश्वचर्षणिर्भियोनि
 मयौहंतं ॥ दुर्णासधस्थमासदत् ॥ वरिवोधातमोभवमंहिष्ठोवृत्रहन्तमः ॥ पर्षिराधोमघोनां ॥ अभ्यर्षमुहानांदेवानांवीतिमंध

सा ॥ अभिवाजमुतश्रवः ॥ त्वामच्छाचरामसितदिदर्थद्विवोद्वे ॥ इंद्रोत्वेनऽआशसः ॥ १ ॥ पुनातितेपरिच्छुतंसोमंसूयस्यदुहि
 ता ॥ वारेणशश्वतातना ॥ तमीमण्वीःसमर्थऽआगुभ्णतियोपणोदश ॥ स्वसारःपार्थद्विवि ॥ तमीहिन्वत्यग्रुवोधमतिबाक्रुंह
 त्ति ॥ त्रिधातुवारुणंमधु ॥ अभीमममह्याऽउतश्रीणंतिधेनवःशिशु ॥ सोममिंद्रोयपातवे ॥ अस्येदिंद्रोमेदृष्वविश्वोवृषोदोद्युन्नवत्तमः ॥
 द्यते ॥ शूरोमघाचमंहते ॥ २ ॥ पर्वस्वदेववीरतिपवित्रसोमंरह्या ॥ इंद्रमिंद्रोवृषाविश ॥ आर्वच्यस्वमहिप्सरोवृषेदोद्युन्नवत्तमः ॥
 आयोनिधर्णसिःसदः ॥ अधुक्षतप्रियंमधुधारोसुतस्यवेधसः ॥ अपोवसिष्टसुक्रतुः ॥ महांतत्वामहोरन्वापोऽअर्पितिसिंधवः ॥
 यद्गोभिर्वासयिष्यसे ॥ समद्रोऽअगुसोमृजेविष्टंभोधरुणोद्विवः ॥ सोमःपवित्रेऽअस्मयुः ॥ ३ ॥ अचिक्रदुहृपाहरेर्महान्मि
 त्रोनदर्शतः ॥ संसूयैणरोचते ॥ अस्मभ्यमिदविद्रुमध्वःपवस्वधारया ॥ गर्जन्गोवृष्टिमोद्विव ॥ गोषाऽइंदोनुपाऽअस्यश्व
 ककृदुमीमहे ॥ तवप्रशस्तयोमहीः ॥ अस्मभ्यमिदविद्रुमध्वःपवस्वधारया ॥ ४ ॥ एषदेवोऽअमर्त्यःपर्णवीरिवदीयते ॥ एषविश्वो
 सावाजसाउत ॥ आत्मायज्ञस्यपूव्यः ॥ एषदेवोविपुन्युभिःपर्वमानऽऋतायुभिः ॥ आविष्कृणोतिवग्वनु ॥ ५ ॥
 तोतिह्रसिंसावति ॥ पर्वमानोऽअदोभ्यः ॥ एषदेवोरेथर्यतिपर्वमानोदशस्यति ॥ आविष्कृणोतिवग्वनु ॥ ५ ॥
 निवार्याशूरोयन्निवसत्वभिः ॥ पर्वमानःसिषासति ॥ एषदेवोरेथर्यतिपर्वमानोदशस्यति ॥ आविष्कृणोतिवग्वनु ॥ ५ ॥
 एषविप्रैरभिष्टुतोपोदेवोविगाहते ॥ दधद्रत्नानिद्राशुपे ॥ एषदिवंविधावतितिरोरजांसिधारया ॥ पर्वमानःकनिक्कदत् ॥

एषदिवंव्यासरतिरोरजांस्यस्पृतः ॥ पर्वमानः स्वध्वरः ॥ एषप्रलेनजन्मना देवो देवेभ्यः सुतः ॥ हरिः पवित्रेऽअर्षति ॥ एष उ-
 स्य पुरुषो जज्ञानो जनयन्निषः ॥ धारया पवते सुतः ॥ ६ ॥ सनाच सोम जेषि च पर्वमानमहिश्रवः ॥ अथानोवस्यसस्कृधि ॥
 स्कृधि ॥ पर्वीतारः पुनीतनसोममिन्द्राय पातवे ॥ अथानोवस्यसस्कृधि ॥ त्वंसूर्ये नऽआभजत वक्रत्वा तवोतिभिः ॥ अथानोवस्यस-
 स्कृधि ॥ ७ ॥ तवक्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक्पश्ये मसूर्य ॥ अथानोवस्यसस्कृधि ॥ अथानोवस्यसस्कृधि ॥ अथानोवस्यस-
 स्कृधि ॥ अभ्यर्षानपच्युतोरयि समत्सुसासहिः ॥ अथानोवस्यसस्कृधि ॥ अभ्यर्षस्वायुधसोमद्विबहंसरधि ॥ अ-
 थानोवस्यसस्कृधि ॥ रयिर्नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमाभर ॥ अथानोवस्यसस्कृधि ॥ त्वां यज्ञैरवीवृधन्पर्वमानविधर्मणि ॥ अ-
 चिर्विराजति द्युमान् ॥ मधोर्धाराभिरोजसा ॥ बर्हिः प्राचीनमोजसा पर्वमानस्तुणन्हारिः ॥ इकेन्यः पर्वमानोर-
 व्हारो देवीर्हिरण्ययीः ॥ पर्वमाने न सुष्टुताः ॥ ९ ॥ सुशिल्पे बृहती मही पर्वमानो वृषण्यति ॥ नक्तोषासान दर्शते ॥ उभादे-
 वानुचक्षसा होतारो देव्याहुवे ॥ पर्वमानऽइन्द्रो वृषा ॥ भारती पर्वमानस्य सरस्वती का मही ॥ इमं नो यज्ञमार्गमन्ति सो देवीः सु-
 पेशसः ॥ त्वष्टारमग्रजां गोपां पुरोयावान्माहुवे ॥ इंदुरिन्द्रो वृषा हरिः पर्वमानः प्रजापतिः ॥ वनस्पतिः पर्वमानमध्वासमङ्धि

[illegible]

नि॒मा॒स॒दं ॥ म॒ज॒त॒त्वा॒द॒श॒क्षि॒पो॒हि॒न्वा॒त॒स॒स॒धी॒तयः ॥ अ॒नु॒वि॒प्रा॒ऽअ॒मा॒दि॒षुः ॥ दे॒वे॒भ्य॒स्त्वा॒म॒दा॒य॒कं॒सृ॒जा॒न॒म॒ति॒मे॒भ्यः ॥
 सं॒गो॒भि॒र्वा॒स॒या॒म॒सि ॥ १५ ॥ पु॒नानः॒क॒ल॒शे॒ष्वा॒व॒स्त्रा॒ण्य॒रु॒षो॒ह॒रिः ॥ प॒रि॒ग॒व्या॒न्य॒व्य॒त ॥ म॒घो॒न॒ऽआ॒र्प॒व॒स्व॒नो॒ज॒हि॒वि॒श्वा॒ऽ
 तं॒स्व॒वि॒दं ॥ भ॒क्षी॒मा॒हि॒प्र॒जा॒मि॒षं ॥ १६ ॥ प॒रि॒प्रि॒या॒दि॒वः॒क॒वि॒र्या॑सि॒न॒ह्यो॒हि॒तः ॥ न॒च॒क्ष॑सं॒त्वा॒व॒य॒मि॒न्द्रो॒पी
 न्य॒से॒ज॒ना॒य॒जु॒ष्टो॒ऽअ॒हु॒हं ॥ वी॒त्य॒र्ष॒च॒नि॒ष्ठ॒या ॥ स॒स॒नु॒र्मा॒त॒रा॒शु॒चि॒र्जा॒तो॒जा॒ते॒ऽअ॒रो॒च॒य॒त् ॥ म॒हा॒न्म॒हो॒ऽऋ॒ता॒वृ॒धा ॥ स॒स॒
 स॒धी॒ति॒भि॒हि॒तो॒न॒द्यो॒ऽअ॒जि॒न्व॒दु॒हः ॥ या॒ऽए॒क॒म॒क्षि॒वा॒वृ॒धुः ॥ ता॒ऽअ॒भि॒स॒त॒म॒स्तृ॒तं॒मे॒हु॒वा॒न॒मा॒द॒धुः ॥ इ॒दु॒मि॒द्र॒त॒व॒व्र॒ते
 ॥ १७ ॥ अ॒भि॒व॒ह्नि॒र॒म॒त्यः॒स॒स॒र्प॒श्य॒ति॒वा॒व॒हिः ॥ क्रि॒वि॒द्वी॒र॒त॒र्प॒य॒त् ॥ अ॒वा॒क॒ल्पे॒षु॒नः॒पु॒म॒स्त॒मो॑सि॒सो॒म॒यो॒ध्या ॥ ता॒नि॒पु
 ना॒न॒जं॒घ॒नः ॥ नू॒न॒व्य॑से॒न॒वी॒य॑से॒स॒क्ता॒य॑सा॒ध॒या॒प॒थः ॥ प्र॒ल॒व॒द्रो॒च॒या॒रु॒चः ॥ प॒र्व॒मा॒नु॒म॒हि॒श्र॒वो॒गा॒म॒श्वै॑रा॒सि॒वी॒र॒व॒त् ॥ ता॒नि॒पु
 मे॒धांस॑ना॒स्वः ॥ १८ ॥ प्र॒स्वा॒ना॒सो॒रथा॑इ॒वा॒र्व॒तो॒न॒श्र॒व॒स्य॒वः ॥ सो॒मा॒सो॒रा॒ये॒ऽअ॒क्र॒मुः ॥ हि॒न्वा॒ना॒सो॒रथा॑ऽइ॒व॒द॒ध॒न्वि॒रे॒ग॒भ
 स्तोः ॥ भ॒रा॒सः॒क्रा॒रि॒णा॒मि॒व ॥ रा॒जा॒नो॒न॒प्र॒श॒स्ति॒भिः॒सो॒मा॒सो॒गो॒भि॒रं॒ज॒ते ॥ य॒ज्ञो॒न॒स॒स॒धा॒तृ॒भिः ॥ प॒रि॒सु॒वा॒ना॒स॒ऽइ॒द॒वो॒म
 दा॒य॒वृ॒ह॒णा॒गि॒रा ॥ सु॒ता॒ऽअ॒र्धं॒ति॒धा॒र॒या ॥ आ॒पा॒ना॒सो॒वि॒व॒स्व॒तो॒ज॒न॑त॒ऽउ॒ष॒सो॒भ॒र्गं ॥ सू॒रा॒ऽअ॒ण्वं॒वि॒त॑न्व॒ते ॥ १९ ॥ अ॒प॒ह्रा
 रा॒म॒ती॒नां॒प्र॒त्ना॒ऽऋ॒ण्वं॒ति॒क्रा॒र॒वः ॥ वृ॒ष्णो॒ह॒र॑स॒ऽआ॒य॒वः ॥ स॒मी॒ची॒ना॒स॒ऽआ॒स॒ते॒हो॒ता॒रः॒स॒स॒र्जा॒म॒यः ॥ प॒द॒मे॒क॒स्य॒पि॒प्र॒तः ॥

[illegible]

श्रीः ॥ हरिःॐ ॥ सोमः पुनानोऽर्षतिसहस्रधारोऽअत्यविः ॥ वायोरिन्द्रस्य निष्कृतं ॥ पर्वमानमवस्यवो विप्रमभिप्रगायत ॥
सृष्ट्वाणं देववीतये ॥ पर्वते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः ॥ गुणानां देववीतये ॥ उत्तनो वाजसातये पर्वस्वबृहतीरिषः ॥ ह्य
मर्दिदो सुवीर्यं ॥ तेनः सहस्रिणं रयिं पर्वतामा सुवीर्यं ॥ सुवानां देवासऽइदं वः ॥ १ ॥ अत्याहियानानहेतुभिरसृग्रं वाजसातये ॥ ह्य
विवारमव्यमाशवः ॥ वाश्राऽअपृद्धिषो जहि ॥ अपम्रंतोऽअराव्णः पर्वमानाः स्वर्हशः ॥ जुष्टऽइन्द्राय मत्सरः पर्वमानकनि
क्रदत् ॥ विश्वाऽअपृद्धिषो जहि ॥ अपम्रंतोऽअराव्णः पर्वमानाः स्वर्हशः ॥ जुष्टऽइन्द्राय मत्सरः पर्वमानकनि
सिंधोरूमावधि श्रितः ॥ कारं बिभ्रत् पुरुस्पृहं ॥ गिरायद्रीसंबंधवः पंचव्राताऽअपस्यवः ॥ २ ॥ परिप्रासिष्य दत्कविः
ष्मिणो रसे विश्वे देवाऽअमत्सत ॥ यद्रीगोभिर्वसायते ॥ निरिणानो विधावति जहृच्छर्वाणि तान्वा ॥ अत्रासंजिघ्रते युजा ॥
नृसीभिर्यो विवस्वतः शुभ्रो न मामजेयुवा ॥ गाः कृण्वानो न निर्णिजं ॥ ३ ॥ अति श्रितो तिरश्च तां गव्यां जिगात्य णव्यां ॥ वसुभि
यतिं यं विदे ॥ अभिक्षिपः समग्मतमर्जयती रिषस्पतिं ॥ पृष्ठार्गृभ्यतवाजिनः ॥ परिदिव्यानि ममृश द्विधा निसोमपार्थिवा ॥
वसूनि याह्य सयुः ॥ ४ ॥ एष धियायात्य णव्याशूरो रथेभिराशुभिः ॥ गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतं ॥ एष पुरुर्धियायते बृहते देवतां त
ये ॥ यत्रा मृतां स आसते ॥ एष हितो विनीयतेऽतः शुभ्रावता पथा ॥ यदीतुं जंति भूर्णयः ॥ एष श्रृंगाणि दोधुवच्छिशीते युध्यो इ
वृषां ॥ नृम्णा दधानोऽओजसा ॥ एष रुक्मिभिरीयते वाजीशुभ्रेभिरशुभिः ॥ पतिः सिंधूनां भवन् ॥ एष वसूनि पिबन्नाप रुषा

ययि॒वोऽअ॒ति ॥ अ॒व॒शा॒दे॒पु॒ग॒च्छ॒ति ॥ ए॒तं॒मृ॒जं॒ति॒म॒ज्य॒मु॒प॒द्रो॒णे॒ज्वा॒य॒वः ॥ प्र॒च॒क्रा॒णं॒म॒ही॒रि॒षः ॥ ए॒त॒मु॒त्त॒मं॒द॒श॒क्षि॒पो॒म॒जं॒ति॒स॒
 स॒धी॒त॒यः ॥ स्वा॒यु॒धं॒म॒दि॒न्त॒मं ॥ ५ ॥ प्र॒ते॒से॒ता॒रं॒ऽओ॒ण्यो॒इ॒र॒सं॒म॒दा॒य॒धृ॒ज्व॒ये ॥ स॒र्गो॒न॒त॒क॒त्ये॒त॒शः ॥ ऋ॒त्वा॒द॒क्ष॒स्य॒र॒थ्ये
 म॒पो॒व॒सा॒न॒मं॒ध॒सा ॥ गो॒पा॒म॒ण॒वेषु॒स॒श्चि॒म ॥ अ॒न॒स॒म॒सु॒दु॒ष्टं॒सो॒मं॒प॒वि॒त्रं॒ऽआ॒सृ॒ज ॥ पु॒नी॒हा॒द्रा॒य॒पा॒त॒वे ॥ प्र॒पु॒ना॒न॒स्य॒चे॒त॒सा
 सो॒मः॒प॒वि॒त्रे॒अ॒र्प॒ति ॥ ऋ॒त्वा॒स॒ध॒स्थ॒मा॒स॒द॒त् ॥ प्र॒त्वा॒न॒मो॒भि॒रि॒द॒व॒इ॒द्र॒सो॒मा॒अ॒सृ॒क्ष॒त ॥ म॒हे॒भ॒रा॒य॒का॒रि॒णः ॥ पु॒ना॒नो॒रूपे॒ऽअ॒
 व्य॒ये॒वि॒श्वा॒ऽअ॒र्प॒न्न॒भि॒श्चि॒यः ॥ शू॒रो॒न॒गो॒पु॒ति॒ष्ठ॒ति ॥ द्वि॒वो॒न॒सा॒नु॒पि॒प्यु॒पी॒धा॒रा॒सु॒त॒स्य॒वे॒ध॒सः ॥ वृ॒था॒प॒वि॒त्रे॒ऽअ॒र्प॒ति ॥ त्वं॒सो
 म॒वि॒प॒श्चि॒त॒त॒ना॒पु॒ना॒न॒ऽआ॒यु॒षु ॥ अ॒व्यो॒वा॒रं॒वि॒धा॒व॒सि ॥ ६ ॥ प्र॒नि॒म्ने॒न॒व॒सि॒ध॒वो॒घ्न॒तो॒वृ॒त्रा॒णि॒भू॒ण॒यः ॥ सो॒मा॒अ॒सृ॒ग्र॒मा॒श॒
 वः ॥ अ॒भि॒सु॒वा॒ना॒स॒इ॒द॒वो॒वृ॒ष्ट॒यः॒पृ॒थि॒वी॒मि॒व ॥ इ॒द्रं॒सो॒मा॒सो॒ऽअ॒क्ष॒र॒न् ॥ अ॒त्यूर्मि॒र्म॒त्स॒रो॒म॒दुःसो॒मः॒प॒वि॒त्रे॒ऽअ॒र्प॒ति ॥
 वि॒घ्न॒न॒र॒क्षां॒सि॒दे॒व॒युः ॥ आ॒क॒ल॒शे॒षु॒धा॒व॒ति॒प॒वि॒त्रे॒परि॒पि॒च्य॒ते ॥ उ॒क्थै॒र्य॒ज्ञे॒षु॒व॒र्ध॒ते ॥ अ॒ति॒त्री॒सो॒म॒रो॒च॒ना॒रो॒ह॒न्ना॒ज॒से॒दि॒व ॥
 इ॒ष्ण॒न्त॒सूर्ध्वे॒न॒चो॒द॒यः ॥ अ॒भि॒वि॒प्रा॒ऽअ॒नू॒प॒त॒मूर्ध॒न्य॒ज्ञ॒स्य॒का॒र॒वः ॥ द॒धा॒ना॒श्च॒क्ष॒सि॒प्रि॒यं ॥ त॒मु॒त्वा॒वा॒जि॒नं॒न॒रो॒धी॒भि॒र्वि॒प्रा॒ऽअ॒
 व॒स्य॒वः ॥ मृ॒जं॒ति॒दे॒व॒ता॒त॒ये ॥ म॒धो॒र्धा॒रा॒म॒नु॒क्ष॒र॒ती॒व्रः॒स॒ध॒स्थ॒मा॒स॒दः ॥ ७ ॥ परि॒सु॒वा॒नो॒गि॒रि॒ष्ठाः॒प॒वि॒
 त्रे॒सो॒मो॒ऽअ॒क्षाः ॥ म॒दे॒षु॒स॒र्व॒धा॒ऽअ॒सि ॥ त्वं॒वि॒प्र॒स्त्वं॒क॒वि॒र्म॒धु॒प्र॒जा॒त॒मं॒ध॒सः ॥ म॒दे॒षु॒स॒र्व॒धा॒ऽअ॒सि ॥ त॒व॒वि॒श्वे॒स॒जो॒ष॒सो॒दे॒वा
 सः॒पी॒ति॒मा॒श॒त ॥ म॒दे॒षु॒स॒र्व॒धा॒ऽअ॒सि ॥ आ॒यो॒वि॒श्वा॒नि॒वा॒र्या॒व॒सू॒नि॒ह॒स्त॒यो॒र्दु॒धे ॥ म॒दे॒षु॒स॒र्व॒धा॒ऽअ॒सि ॥ य॒ऽइ॒मे॒रो॒द॒सी॒म॒ही

संमातरेवदोहते ॥ मदेषुसर्वधाऽअसि ॥ परिचोरोदसीउभेसद्योवाजेभिरर्षति ॥ मदेषुसर्वधाऽअसि ॥ सशृष्मीकलशेष्वा
 पुनानोऽअचिक्रदत् ॥ मदेषुसर्वधाऽअसि ॥ ८ ॥ यत्सोमचित्रमक्थ्यद्विव्यंपार्थिवंसु ॥ तन्नःपुनानऽआभर ॥ युवंहिस्थः
 अवावशंतधीतयोवृषभस्याधिरेतसि ॥ इशानापिप्यतंधियः ॥ वृषापुनानऽआयुषुस्तनयन्नधिबहिषि ॥ हरिःसन्धोनिमासदत् ॥
 उपशिक्षापतस्थुषोभियसमार्धेहिशत्रुषु ॥ कुविद्वृपयंतीभ्यःपुनानोगर्भमादधत् ॥ याःशुक्रंदुहतेपयः ॥
 वा ॥ ९ ॥ प्रकुविदेववीतयेऽव्योवारैभिरर्षति ॥ निशत्रोःसोमवृण्यंनिशुभंनिवर्यस्तिर ॥ दरेवासतोऽअंते
 पर्वमानःसहस्रिणं ॥ परिविश्वानिचेतसामशसेपर्वसेमती ॥ सहान्विश्वाऽअभिस्पृधः ॥ सहिष्माजरितृभ्यऽआवाजंगेमेतमिन्वति ॥
 स्तोतृभ्यऽआभर ॥ त्वंराजैवसुव्रतोगिरःसोमाविवेशिथ ॥ पुनानोर्वहेऽअद्भुत ॥ अभ्यर्पबृहद्यशोमघवन्ध्योध्रुवरयि ॥ इषं
 सोमश्चमूषुसीदति ॥ क्रीलुर्मखोनर्महयुःपवित्रंसोमगच्छसि ॥ सर्वाहिरप्सुदुष्टरोमज्यमानोगर्भस्त्योः ॥
 यः ॥ मत्सरासःस्वर्विदः ॥ प्रवृण्वंतोऽअभियुजःसुव्येवरिवोविदः ॥ १० ॥ एतेधावृतींदवःसोमाऽइंद्रायघृष्वं
 भ्येकमित् ॥ सिधोरुर्माव्यक्षरन् ॥ एतेविश्वानिवार्यापर्वमानासऽआशत ॥ वृथाक्रीळंतुऽइंदवःसधंस्थम
 धातावेनमादिशे ॥ योऽअस्मभ्यमरावा ॥ ऋभुर्नरथ्यंनवंदधाताकेतमादिशे ॥ आस्मिन्पिशंगमिंदवोद
 धातावेनमादिशे ॥ शुक्राःपवध्वमर्णसा ॥ एतऽउत्येऽअवीवश

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नकाष्ठावाजिनोऽअक्रत ॥ सतःप्रासाविपुर्मतिं ॥ ११ ॥ एतेसोमासऽआश्वोरथाइवप्रवाजिनः ॥ सर्गैःसृष्टाऽअहेषत ॥ ए
तेवातोऽइवोरवःपर्जन्यस्येववृष्टयः ॥ अग्नेरिवभ्रमावृथा ॥ एतेपूताविपश्चित्तःसोमासोदध्याशिरः ॥ विपाव्यानशुर्धियः ॥ तं
एतेमृष्टाऽअमेत्याःससवांसोनशश्रमुः ॥ इत्यक्षंतःपथोरजः ॥ एतेपृष्ठानिरोदसोर्विप्रयंतोव्यानशुः ॥ उतेदमुत्तमंरजः ॥ तं
तुतन्वानमुत्तममनुप्रवतंऽआशत ॥ उतेदमुत्तमाख्यं ॥ त्वंसोमपणिभ्यऽआवमगव्यानिधारयः ॥ तुतंतुमचिक्रदः ॥ रुचेर्जनंतसू
सोमासऽअसृग्रमाशवोमधोर्मदस्यधारेया ॥ अभिविश्वानिकाव्या ॥ अनुप्रलासऽआयवःपवंतेमद्यमदं ॥ अभिकोशमधुश्रु
क्ष ॥ आपवमाननोभरायोऽअदोशुपोगयं ॥ कधिप्रजावतीरिपः ॥ अभिसोमासऽआयवःपवंतेमद्यमदं ॥ इंदोवाजंसि
तै ॥ सोमोऽअर्पतिघर्णसिर्धानंऽइंद्रियंरसे ॥ सुवीरोऽअभिशास्तिपाः ॥ इंद्रायसोमपवसेद्वेभ्यःसधमाद्यः ॥ इंदोवाजंसि
वाससि ॥ अस्यपीत्वामदानामिंद्रौवृत्राप्यप्रति ॥ जघानजघनंचनु ॥ १३ ॥ प्रसोमासोऽअधन्विषुःपर्वमानधन्वसिसोमैन्द्रायपात
श्रीणानाऽअप्सुमंजत ॥ अभिगावोऽअधन्विषुरापोनप्रवतांयती ॥ पुनानाऽइंद्रमाशत ॥ प्रपर्वमानधन्वसिसोमैन्द्रायपात
वे ॥ नृभिर्यतोविनीयसे ॥ त्वंसोमनृमादन्नःपर्वस्ववृत्रहन्तमोकथेभिरनुमाद्यः ॥ शुचिःपावकोऽअद्भुतः ॥ शुचिःपावकऽउच्यतेसोमःसुत
वसि ॥ अरुमिंद्रस्यधाम्नै ॥ पर्वस्ववृत्रहन्तमोकथेभिरनुमाद्यः ॥ मरुद्भ्योवायेवमदः ॥ पर्वमानधियाहितोऽ
स्यमध्वः ॥ देवावीरघशंसुहा ॥ १४ ॥ पर्वस्वदक्षसाधनोद्वेभ्यःपीतयेहरे ॥

भियोनि॒कनि॒क्रदत् ॥ ध॒र्मणा॒वायु॒मावि॒श ॥ संदे॒वैःशो॒भते॒वृषा॑क॒विर्यो॒नाव॑धिप्रि॒यः ॥ वृ॒त्रहा॑दे॒ववी॒तमः ॥ वि॒श्वारू॒पा
 ण्यावि॒शन्पु॒नानो॒याति॒ह॒र्यतः ॥ यत्रा॒मृता॑स॒ऽआस॑ते ॥ अ॒रुषो॑ज॒नय॒न्गिरः॒सोमः॑प॒वत॑आयुषक् ॥ इ॒न्द्रं गच्छ॑न्क॒विक्र॑तुः ॥ आ
 प॒वस्व॒मदि॑तमप॒वित्रं॒धार॑याक॒वे ॥ अ॒र्कस्य॒योनि॑मा॒सदं ॥ १५ ॥ त॒र्ममृ॑क्ष॒तवा॒जिन॑मुप॒स्थेऽअ॑दि॒तेर॑धि ॥ वि॒प्रासो॑ऽअ॒ण्व्या
 धि॒या ॥ तं ग॒र्वोऽअ॒भ्यनू॑ष॒तस॒हस्र॑धा॒रम॑क्षि॒तं ॥ इ॒दु॒ध॒तार॑मा॒दिवः ॥ तं वे॒धां मे॒धया॑ह्य॒न्प॒र्वमा॒नम॑धि॒द्यावि ॥ ध॒र्णसि॑भू॒रि
 तं भू॒रिच॑क्ष॒सं ॥ तं त्वा॑हि॒न्वंति॒वे॒धसः॒प॒र्वमा॒नगि॒रावृ॑धं ॥ तं स॒नावा॑धि॒जाम॒योह॑रि॒हिन्वं॒त्यद्रि॑भिः ॥ ह॒र्य
 पु॒नानो॑म॒न्नप॒सिधः ॥ ए॒षऽइ॒न्द्रा॒यवा॑यवे॒स्वजि॑त्स॒रिषि॑च्यते ॥ इ॒दु॒वि॒द्रा॒यम॑त्सरं ॥ १६ ॥ ए॒षक॒विर॑भि॒ष्टुतः॒प॒वित्रे॑ऽअ॒धितो॑शते ॥ ह॒र्य
 सो॒मोव॑नेषुवि॒श्ववि॑त् ॥ ए॒षग॒व्युर॑चि॒क्रदु॒त्य॒र्वमा॒नोहि॒रण्य॒युः ॥ इ॒दुःस॒त्राजि॑द॒स्तृतः ॥ ए॒षसूर्ये॑णहा॒सते॒प॒र्वमा॒नोऽअ॑धि॒द्यावि ॥
 प॒वित्रे॑म॒त्सरो॑म॒दः ॥ ए॒षशु॑भ्य॒सिष्य॑द॒दु॒तरि॑क्षे॒वृषा॑ह॒रिः ॥ पु॒नान॑ऽइ॒दुरि॑न्द्र॒मा ॥ १७ ॥ ए॒षवा॒जीहि॑तो॒नुभि॑र्वि॒श्ववि॒न्मन॑स
 ना॒वम॑र्त्यः ॥ वृ॒त्रहा॑दे॒ववी॒तमः ॥ ए॒षप॒वित्रे॑ऽअ॒क्षर॑त्सो॒मोदे॒वेभ्यः॑सू॒तः ॥ वि॒श्वाधा॑र्मा॒न्यावि॑शन् ॥ ए॒षदे॒वःशु॑भाय॒तेधि॒यो
 नोवि॑च॒र्षणिः ॥ वि॒श्वाधा॑र्मानि॒विश्व॑चित् ॥ ए॒षशु॑भ्य॒दाभ्यः॑सो॒मःपु॒नानो॑ऽअ॒र्षति ॥ दे॒वावी॑र॒घशं॑स॒हा ॥ १८ ॥ प्रा॒स्यधा॑रा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
 अक्षरवृष्णः सुतस्यौजसा ॥ देवोऽअनुप्रभूषतः ॥ सप्तमृजंति वेधसो गणतः कारवोगिरा ॥ ज्योतिर्जज्ञानमुक्थ्य ॥ सुपहा
 ऽअक्षरवृष्णः सुतस्यौजसा ॥ देवोऽअनुप्रभूषतः ॥ सप्तमृजंति वेधसो गणतः कारवोगिरा ॥ ज्योतिर्जज्ञानमुक्थ्य ॥ सुपहा
 सोमतानिते पुनानार्थप्रभूवसो ॥ वर्धसमुद्रमुक्थ्य ॥ विश्वावसूनि संजयन्पवस्व सोमधारया ॥ इन्द्रेणोसि सध्वक् ॥ रक्षा
 सोमतानिते पुनानार्थप्रभूवसो ॥ वर्धसमुद्रमुक्थ्य ॥ विश्वावसूनि संजयन्पवस्व सोमधारया ॥ इन्द्रेणोसि सध्वक् ॥ रक्षा
 सुनोऽअररुपः स्वनात्समस्यकस्य चित् ॥ निदोयत्र मुमूर्ह ॥ इन्द्रोपाधिं वरुणिं दिव्यं पवस्वधारया ॥ द्युमंतं शुष्ममाभर
 सुनोऽअररुपः स्वनात्समस्यकस्य चित् ॥ निदोयत्र मुमूर्ह ॥ इन्द्रोपाधिं वरुणिं दिव्यं पवस्वधारया ॥ द्युमंतं शुष्ममाभर
 ॥ १९ ॥ प्रधारोऽअस्य शुष्मिणो वृथापवित्रेऽअक्षरन् ॥ पुनानोवाच मिष्यति ॥ इंदुर्हियानः सोतुर्भिर्मज्यमानः कनिक्कदत् ॥
 ॥ १९ ॥ प्रधारोऽअस्य शुष्मिणो वृथापवित्रेऽअक्षरन् ॥ पुनानोवाच मिष्यति ॥ इंदुर्हियानः सोतुर्भिर्मज्यमानः कनिक्कदत् ॥
 इयति वदुर्भिर्मिद्रियं ॥ आनः शुष्मन्पाह्यवीरवतं पुरुषृह ॥ पवस्व सोमधारया ॥ प्रसोमोऽअतिधारया पवमानोऽअसिष्यदत् ॥
 इयति वदुर्भिर्मिद्रियं ॥ आनः शुष्मन्पाह्यवीरवतं पुरुषृह ॥ पवस्व सोमधारया ॥ प्रसोमोऽअतिधारया पवमानोऽअसिष्यदत् ॥
 अभिद्रोणो न्यासद ॥ अप्सुत्वामधुमत्तमं हरिं हिन्वंत्याद्रिभिः ॥ इंदुर्विद्रायपीतये ॥ सुनोतामधुमत्तमं सोमं मिद्रायवज्रिणे ॥
 अभिद्रोणो न्यासद ॥ अप्सुत्वामधुमत्तमं हरिं हिन्वंत्याद्रिभिः ॥ इंदुर्विद्रायपीतये ॥ सुनोतामधुमत्तमं सोमं मिद्रायवज्रिणे ॥
 चारुं शर्धायमत्सरं ॥ २० ॥ प्रसोमासः स्वाध्यः पवमानासोऽअक्रमुः ॥ रयिकृण्वंति चेतेन ॥ दिवस्पृथिव्याऽअधिभ
 चारुं शर्धायमत्सरं ॥ २० ॥ प्रसोमासः स्वाध्यः पवमानासोऽअक्रमुः ॥ रयिकृण्वंति चेतेन ॥ दिवस्पृथिव्याऽअधिभ
 वेदोद्युन्नवर्धनः ॥ भवावाजस्य संगथे ॥ तुभ्यं गावो घृतं पयो बभ्रौ दुद्रुहोऽअक्षितं ॥ वरिष्ठेऽअधिसानवि ॥ स्वायुध
 वेदोद्युन्नवर्धनः ॥ भवावाजस्य संगथे ॥ तुभ्यं गावो घृतं पयो बभ्रौ दुद्रुहोऽअक्षितं ॥ वरिष्ठेऽअधिसानवि ॥ स्वायुध
 भेतुते विश्वतः सोमवृष्ण्य ॥ भवावाजस्य संगथे ॥ तुभ्यं गावो घृतं पयो बभ्रौ दुद्रुहोऽअक्षितं ॥ वरिष्ठेऽअधिसानवि ॥ स्वायुध
 भेतुते विश्वतः सोमवृष्ण्य ॥ भवावाजस्य संगथे ॥ तुभ्यं गावो घृतं पयो बभ्रौ दुद्रुहोऽअक्षितं ॥ वरिष्ठेऽअधिसानवि ॥ स्वायुध
 स्यते सतो भुवनस्य पतेत्र्यं ॥ इंदोसखित्वमुद्रमसि ॥ २१ ॥ प्रसोमासोमदृच्युतः श्रवसेनोमघोनः ॥ सुताविदधेऽअक्रमुः ॥
 स्यते सतो भुवनस्य पतेत्र्यं ॥ इंदोसखित्वमुद्रमसि ॥ २१ ॥ प्रसोमासोमदृच्युतः श्रवसेनोमघोनः ॥ सुताविदधेऽअक्रमुः ॥
 आदीक्षितस्य योषणो हारिं हिन्वंत्याद्रिभिः ॥ इंदुर्मिद्रायपीतये ॥ आदीक्षं सो यथागणं विश्वस्यावीवशन्मतिं ॥ अत्योनगोभिर
 आदीक्षितस्य योषणो हारिं हिन्वंत्याद्रिभिः ॥ इंदुर्मिद्रायपीतये ॥ आदीक्षं सो यथागणं विश्वस्यावीवशन्मतिं ॥ अत्योनगोभिर
 ज्यते ॥ उभेसोमावुचाकशन्मगोनतुक्तोऽअर्षति ॥ सीदन्नतस्य योनिमा ॥ अभिगावोऽअनूषतयोपाजारमिव प्रियं ॥ अग
 ज्यते ॥ उभेसोमावुचाकशन्मगोनतुक्तोऽअर्षति ॥ सीदन्नतस्य योनिमा ॥ अभिगावोऽअनूषतयोपाजारमिव प्रियं ॥ अग

ज्ञाजियथाहितं ॥ अस्मेधेहिद्युमद्यशौमघवन्ध्यश्चमह्यं च ॥ सनिमेधामुतश्रवः ॥ २२ ॥ प्रसोमासोविपश्चितोपांनयत्यूर्मयः ॥
 वनानिमहिषाऽईव ॥ अभिद्रोणानिबन्धवःशुक्राऽऋतस्यधारया ॥ वाजंगोमंतमक्षरन् ॥ सुताऽइंद्रायवायवेवरुणायमरु-
 त्यमातरः ॥ मर्मज्यंतेदिवःशिशु ॥ रायःसमुद्रांश्चतुरोऽस्मभ्यंसोमविश्वतः ॥ आपवस्वसहस्रिणः ॥ अभिब्रह्मरनूषतयह्वीर्ऋत-
 तनेदुहिन्वानोऽअर्षति ॥ रुजहुब्बहाव्योजसा ॥ सुतऽइंद्रायवायवेवरुणायमरुद्भ्यः ॥ २३ ॥ प्रसुवानोधारया
 भियंतंसुन्वंतिसोममाद्रिभिः ॥ दुहंतिशक्मनापयः ॥ भुवन्त्रितस्यमज्योभुवदिंद्रायमत्सरः ॥ सोमोऽअर्षतिविष्णवे ॥ वृषाणंवृष-
 तस्यविष्टपदुहतेपुश्चिमातरः ॥ चारुप्रियतमंहुविः ॥ समैनमहुताऽइमागिरोऽअर्पतिसस्रुतः ॥ धेनुर्वाश्रोऽअवीवशत्
 ॥ २४ ॥ आनःपवस्वधारयापवमानरधिपथुं ॥ ययाज्योतिर्विदासिनः ॥ इंदोसमुद्रमीखयपवस्वविश्वमेजय ॥ रायोधतान-
 ऽओजसा ॥ त्वयावीरेणवीरवोभिर्भ्यामपृतन्यतः ॥ क्षराणोऽअभिवार्य ॥ प्रवाजमिंदुरिष्यतिसिषासन्वाजसाऽऋषिः ॥
 व्रतारिविद्वानऽआयुधा ॥ तंगीभिर्वाचमीखयपुनानंवासयामसि ॥ सोमंजनस्यगोपतिं ॥ विश्वोयस्यव्रतेजनोदाधारधर्मणस्प-
 तैः ॥ पुनानस्यप्रभूर्वसोः ॥ २५ ॥ असर्जिरथ्योयथापवित्रैचम्बोःसुतः ॥ कार्भन्वाजीन्यक्रमीत् ॥ सवहिःसोमजागृविः
 पवस्वदेववीरति ॥ अभिकोशमधुश्रुतं ॥ सनोज्योतीपिपूर्व्यपवमानविरौचय ॥ ऋत्वेदक्षायनोहिनु ॥ शुंभमानऽऋतायु

भर्मज्यमानो गभस्त्योः ॥ पर्वतेवारेऽअव्यये ॥ सविश्वाद्वाद्युपेवसुसोमोदिव्यानिपाथीवा ॥ पर्वतामांतरिक्ष्या ॥ आदिवस्प
 उर्मश्चयुर्गव्ययुःसोमरोहसि ॥ वीरयुःशवसस्पते ॥ २६ ॥ ससुतःपीतयेवृषासोमःपवित्रेऽअर्पति ॥ विघ्नन् रक्षांसि देवयुः ॥
 सपवित्रे विचक्षणे हरिर्षति धर्षसिः ॥ अभियोनि कनि क्रदत् ॥ सवाजीरोचनदिवःपर्वमानो विधावति ॥ रक्षोहावारमव्यय ॥
 सन्नितस्याधिसानविपर्वमानोऽअरोचयत् ॥ जामिभिःसूर्यसह ॥ सवृत्रहावृषासुतोवरिवोविददोभ्यः ॥ सोमोवाजमि
 वासरत् ॥ सदेवःकविनेपितोऽभिद्रोणो हिन्वत्यद्रिभिः ॥ इंदुरिद्रायमंहना ॥ २७ ॥ एषऽउस्यवृषारथोव्योवारैर्भिरर्पति ॥
 गच्छन्वाजसहस्रिण ॥ एतं त्रितस्य योपणो हरिर्हिन्वत्यद्रिभिः ॥ इंदुमिंद्रायपीतये ॥ एतं त्यंहुरितो दशमर्मज्यतेऽअपस्युवः ॥
 याभिर्मदायशुभते ॥ एषस्यमानुषीष्वाश्येनो न विभ्रुमीदति ॥ २८ ॥ आशुरर्षवृहन्मतेपरिप्रियेणघा
 यऽइंदुर्वारमाविशत् ॥ एषस्यपीतयेसुतो हरिर्षति धर्षसिः ॥ क्रंदून्योनिमभिप्रियं ॥ सुतऽएतिपवित्रऽआत्विषिंद
 म्ना ॥ यत्र देवाऽइति ब्रवन् ॥ परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाययातयन्निषः ॥ वृष्टिदिवःपरिस्त्रव ॥ आविवासन्परा
 धानऽअोजसा ॥ विचक्षानो विरोचयन् ॥ अयंसयोदिवसरिरघुयामोपवित्रऽआ ॥ सिंधोरूमव्यक्षरत् ॥ २९ ॥
 वतो अथोऽअर्वावतःसुतः ॥ इंद्रायसिच्यतेमधु ॥ समीचीनाऽअनूपतु हरिर्हिन्वत्यद्रिभिः ॥ योनावृतस्यसीदत ॥ ध्रुवेसद
 पुनानोऽअक्रमीदुभिश्चामृधोविचर्षणिः ॥ शुभंतिविप्रधीतिभिः ॥ आयोनिमरुणो रेहृद्रमदिंद्रवृषासुतः ॥ ध्रुवेसद

सिसीदति ॥ नूनोरधिमुहामिदोऽस्मभ्यसोमविश्वतः ॥ आपवस्वसहस्रिणं ॥ विश्वांसोमपवमानद्यन्त्रानौदुवाभर ॥ विदाःस
 हस्रिणीरिषः ॥ सनःपुनानआभररधिस्तोत्रेसुवीर्यं ॥ जरितुर्वधयागिरः ॥ पुनानऽईदुवाभरसोमद्विबहसंरधिं ॥ वृषन्निदो
 नऽउक्थ्यं ॥ ३० ॥ प्रथेगावोनभूर्णयस्त्वेषाऽअयासोऽअक्रमुः ॥ घ्नतःकृष्णामपत्वचं ॥ सुवितस्यमनामहेतिसैतुंदुराव्यं ॥ वृषन्निदो
 साह्यांसोदस्युमव्रतं ॥ शृण्वेवृष्टेरिवस्वनःपवमानस्यशुष्मिणः ॥ चरतिविद्युतोद्वि ॥ आपवस्वमहीमिषंगोमदिंदोहिरण्यव
 त् ॥ अश्वावृद्धार्जवत्सुतः ॥ सर्पवस्वविचर्षणऽआमहीरोदसीपृण ॥ उषाःसूर्योनरुदिमभिः ॥ परिणःशर्मयंत्याधारयासोम
 विश्वतः ॥ सरारसेर्वविष्टपं ॥ ३१ ॥ जनयन्नरोचनादिवोजनयन्नप्सुसूर्यं ॥ वसानोगाऽअपोहरिः ॥ एषप्रत्नेनमन्मनाद्वो
 देवेभ्यस्परि ॥ धारयापवतेसुतः ॥ वावृधानायतूर्वयपवतेवार्जसातये ॥ सोमाःसहस्रपाजसः ॥ दुहानःप्रलमित्पयःपवित्रे
 परिषिच्यते ॥ क्रंदन्देवोऽअजीजनत् ॥ अभिविश्वानिवार्याभिदेवोऽऋतावृधः ॥ सोमःपुनानोऽअर्षति ॥ गोमन्नःसोम
 वीरवृदश्वावृद्धार्जवत्सुतः ॥ पर्वस्वबृहतीरिषः ॥ ३२ ॥ योऽअत्यइवमज्यतेगोभिर्मदायहर्यतः ॥ तंगीभिर्वासयामसि ॥
 तन्नोविश्वाऽअवस्युवोगिरःशुभंतिपूर्वथा ॥ इंदुमिंद्रायपीतये ॥ पुनानोयातिहर्यतःसोमोगीभिःपरिष्कृतः ॥ विप्रस्यमेध्या
 तिथेः ॥ पवमानविदारयिमस्मभ्यंसोमसुश्रियं ॥ इंदोसहस्रवर्चसं ॥ इंदुरत्योनवार्जसुत्कर्णिक्रंतिपुवित्रऽआ ॥ यदक्षारति
 देवयुः ॥ पर्वस्ववार्जसातयेविप्रस्यगृणतोवृधे ॥ सोमरास्वसुवीर्यं ॥ ३३ ॥ ऋचो० ॥ इतिपवमानेद्वितीयोऽध्यायः ॥

श्रीः ॥ हरिःॐम् ॥ प्रणेऽइंदोमेहेतनंऽक्रुमिनविभ्रदर्षसि ॥ अभिदेवोऽअयास्यः ॥ मतीजुष्टोधिघाहितःसोमोहिन्वेपराव
 ति ॥ विप्रस्यधारयाकृविः ॥ अयंदेवेषुजागृविःसुतऽएतिपवित्रऽआ ॥ सोमोयातिविचर्षणिः ॥ सनःपवस्ववाजयुश्चक्राण
 आरुमध्वरं ॥ बर्हिष्मोऽआविवासति ॥ सनोभर्गायवायवेविप्रवीरःसदार्वधः ॥ सोमोदेवेष्वार्थमत् ॥ सनोऽअद्यवसुत्तयेक्र
 तुविद्वातुवित्तमः ॥ वार्जजेषिश्चवोबृहत् ॥ १ ॥ सर्पवस्वमदायकंनचक्षदिववीतये ॥ इंदुर्विद्रायपीतये ॥ सनोऽअर्षाभिदू
 त्यंश्त्वमिंद्रायतोशसे ॥ देवान्त्सखिभ्यऽआवरं ॥ उतत्वामरुणंवयंगोभिरजुमोमदायकं ॥ विनोरायेदुरोवृधि ॥ अत्यूपवि
 त्रमक्रमीद्वाजीधुरंनयामनि ॥ इंदुर्देवेषुपत्यते ॥ समीसखायोऽअस्वरन्वनेकीळतमत्यविं ॥ इंदुनावाऽअनूपत ॥ तयापवस्व
 धारयाययापीतोविचक्षसे ॥ इंदोस्तोत्रेसुवीर्यं ॥ २ ॥ असृग्रन्देववीतयेत्यासःकृत्वाऽइव ॥ क्षरतःपर्वतावृधः ॥ परिष्कृता
 सऽइन्दवोयोषेवपित्र्यावती ॥ वायुंसोमाऽअसृक्षत ॥ एतेसोमासऽइंदवःप्रयस्वंतश्चमूसुताः ॥ इन्द्रवर्धतिकर्मभिः ॥ आधा
 वतासुहस्यःशुक्रागृभ्णीतमंथिना ॥ गोभिःश्रीणीतमत्सरं ॥ सर्पवस्वधनंजयप्रयंतारार्धसोमहः ॥ अस्मभ्यंसोमगातुवित् ॥
 एतंमृजंतिमर्ज्यपवमानंदशुक्षिपः ॥ इंद्रायमत्सरंमदं ॥ ३ ॥ अयासोमःसुकृत्यर्यामहाश्चिदुभ्यवर्धत ॥ मंदानऽउद्धृषायते ॥ क
 तानीदस्यकृत्वाचेतैतदस्युतर्हणा ॥ ऋणार्चधृणुश्चयते ॥ आत्सोमऽइंद्रियोरसोवज्रःसहस्रसार्भुवत् ॥ एकथंयदस्यजायते ॥
 स्वयंकृविर्विधतैरिविप्रायुरत्नमिच्छति ॥ यदीमर्मज्यतेधिचः ॥ सिषासत्तूरयीणांवाजेब्वर्वातामिव ॥ भैरुजिग्युषामसि ॥ ४ ॥

तंत्वा॑नृ॒म्पानि॒बिभ्र॑तंस॒धस्यै॑षु॒महो॒दिवः॑ ॥ चारु॑सुक॒त्यये॑महे ॥ संवृ॑क्तघृ॒णुमु॒क्थ्यम॒हाम॒हिब्र॑तंम॒दं ॥ शतं॑पुरो॒रुरु॒क्षणि॑ ॥
 अ॒र्तस्त्वार॒यिम॒भिरा॒जानं॑सु॒क्रतो॒दिवः॑ ॥ सु॒पर्णो॑ऽअ॒व्यधि॑र्भ॒रत् ॥ वि॒श्वस्मा॑ऽइ॒त्स्वर्ह॑शेसा॒धारणं॑र॒जस्तुरं॑ ॥ गो॒पाम॑तस्य॒वि
 अ॒य॒क्ष्माबृ॑हती॒रिषः॑ ॥ तया॑पवस्व॒धारया॒यया॒गार्वा॑ऽइ॒हाग॑मन् ॥ अ॒भिष्टि॒कृद्विच॑र्षणिः ॥ ५ ॥ प॒र्वस्ववृ॑ष्टिमा॒सुनो॒पाम॑मि॒द्विव॑स्प॒रि ॥
 अ॒स्मभ्य॑वृ॒ष्टिमा॑र्पव ॥ स॒र्नऽऊ॒र्जेव्य॑व्य॒यप॑वि॒त्रधा॒वधार॑या ॥ ज॒न्यास॑ऽउ॒र्पनो॑गृहं ॥ घृ॒तंप॑वस्व॒धारया॒यज्ञे॑षु॒देव॑वी॒तमः॑ ॥
 घ॒नत् ॥ प्र॒लव॑द्रोच॒यन॑रुचः ॥ ६ ॥ उ॒त्ते॒शुष्मा॑स॒र्इर॑ते॒सिंधो॑रु॒मैरि॑वस्व॒नः ॥ वा॒णस्य॑चो॒दया॑प॒वि ॥ प्र॒सवे॑तऽउ॒दीर॑ते॒तिस्रो॑
 वा॒चोम॑ख॒स्युवः॑ ॥ य॒दव्य॑ऽए॒षिसा॑न॒वि ॥ अ॒व्योवा॑रे॒पारि॑प्रि॒यंहरि॑हि॒न्वत्या॑द्रि॒भिः ॥ प॒र्वमा॑नंम॒धुश्रु॑तं ॥ आ॒र्पव॑स्वम॒दि॒न्तम॑
 प॒वित्रं॑धा॒रया॑क॒वे ॥ अ॒र्कस्य॑यो॒निमा॑स॒दं ॥ संप॑वस्वम॒दि॒न्तम॑गो॒भिर॑जा॒नोऽअ॒क्तु॑भिः ॥ इ॒दुवि॑द्रा॒यपी॑तये ॥ आ॒र्पव॑स्वम॒दि॒न्तम॑
 यो॑ऽअ॒र्द्रिभिः॑सु॒तंसो॑मंप॒वित्र॑ऽआ॒सृज ॥ पु॒नीर्ही॑द्रा॒यपा॑त॒वे ॥ दि॒वःपी॒यूष॑मु॒त्तमं॑सो॒मि॒मि॒द्रा॒यवृ॑जि॒णे ॥ सु॒नोता॑म॒धुम॑त्त॒मं ॥ अ॒ध्व
 तव॑त्यऽइ॒दोऽअ॑ंध॒सोदे॒वाम॑धो॒व्यश्र॑ते ॥ प॒र्वमा॑नस्यम॒रुतः॑ ॥ त्वं॒हि॒सोम॑व॒र्धय॑न्त्सु॒तोम॑दा॒यभू॑र्ण॒धे ॥ वृ॒षन्त॑स्तो॒तार॑मू॒तये॑ ॥
 अ॒भ्यर्ष॑विच॒क्षण॑प॒वित्रं॑धा॒रया॑सु॒तः ॥ अ॒भिवा॑ज॒मुत॑श्र॒वः ॥ ८ ॥ परि॑द्यु॒क्षःस॑र्न॒द्रयि॑र्भ॒रद्वा॒जैर्नो॑ऽअ॑ंध॒सा ॥ सु॒वानो॑ऽअ॒र्षप॑वि
 त्रऽआ ॥ त॒र्वप्र॑ले॒भिर॑ध्व॒भिर॑व्यो॒वा॒रे॒परि॑प्रि॒यः ॥ स॒हस्र॑धा॒रोया॑त्त॒ना ॥ च॒रु॒र्नय॑स्त॒र्मा॒ख्ये॒दो॒नदा॑न॒मी॒खय ॥ व॒धैर्व॑ध॒स्त॒वी

पवमान
 ॥६२॥

॥७६॥

निशुब्ममिदवेपांपुरुहूतजनानां ॥ योऽअस्माँऽआदिदेशति ॥ शतनंऽइंदऽऊतिभिःसहस्रैवाशुचीनां ॥ पर्वस्वमंह
खय ॥ निशुब्ममिदवेपांपुरुहूतजनानां ॥ नृदस्वयाःपरिस्पृधः ॥ अयानिजघ्निरोजसारथसंगेधनेहिते ॥
यद्रधिः ॥ ९ ॥ उत्तेथुग्मांसोऽअस्थूरक्षोभिमंदतोऽअद्रिवः ॥ नृदस्वयाःपरिस्पृधः ॥ तंहिन्वन्तिमदृच्युतंहरिर्नदीषुवाजिनं ॥
स्तत्राऽअबिभ्युपाहृदा ॥ अस्यव्रतानिनाधूपेपर्वमानस्यदढ्या ॥ रुजयस्त्वापृतन्यति ॥ तंहिन्वन्तिमदृच्युतंहरिर्नदीषुवाजिनं ॥
इंद्रमिन्द्रायमत्सरं ॥ १० ॥ अस्यप्रलामनुद्युतशुक्रं दुहुहेअग्रयः ॥ पर्यःसहस्रसामृषिं ॥ अयंसूर्येऽइवोपट्टगयंसरासिधाव
ति ॥ सप्तप्रवतऽआदिव ॥ अयंविश्वानितिष्ठतिपुनानोभुवनोपरि ॥ सोमोदेवोनसूर्यः ॥ परिणोदेववीतयेवाजाँऽअर्पसि
गोमतः ॥ पुनानऽइदविंद्रयुः ॥ ११ ॥ यवयवंनोऽअंधसापुष्टं पुष्टं परिस्त्व ॥ सोमविश्वाचसौभगा ॥ इंदोयथातवस्तवोय
अतिज्ञातमंधसः ॥ निवर्हिपिंप्रियेसदः ॥ उतनोगोविदंश्चित्पर्वस्वसोमंधसा ॥ मधूर्तमेभिरहभिः ॥ योजिनातिनजीयते
हंतिशत्रुमभीत्य ॥ सर्पवस्वसहस्रजित् ॥ १२ ॥ परिसोमंऽऋतंबृहदाशुःपवित्रेऽअर्पति ॥ विघ्नरक्षासिदेवयुः ॥ यत्सो
मोवाजमर्थतिशतंधाराअपस्युवः ॥ इंद्रस्यसख्यमाविशन् ॥ अभित्वायोपणोदर्शजारंकन्यानूपत ॥ मुज्यसेसोमसातये ॥
त्वमिन्द्रोयविष्णवेस्यादुरिद्रोपरिस्त्व ॥ नन्स्तोतृन्पाह्यंहसः ॥ १३ ॥ प्रतेधाराऽअसश्चतोदिवोनयतिवष्टयः ॥ अच्छावाजं
सहस्रिणं ॥ अभिप्रियाणिकाव्याविश्वाचक्षोणोऽअर्पति ॥ हरिस्तुजानऽआयुधा ॥ समर्मजानऽआयुभिरिभोरार्जेवसुव्र
तः ॥ श्येनोनवंसुपीदति ॥ सनोविश्वादिवोवसूतोपृथिव्याऽअधि ॥ पुनानऽइदुवाभर ॥ १४ ॥ तरस्ममंदीधोवतिधारा

सुतस्यांधसः ॥ तरत्समं दीर्घावति ॥ उस्त्रावेदुवसूनां मतस्य देव्यवसः ॥ तरत्स० ॥ ध्वस्त्रयोः पुरुषं त्योरासहस्राणि ददद्महे ॥
 तरत्स० ॥ आयथोस्त्रिशतं तनासहस्राणि च ददद्महे ॥ तरत्स० ॥ १५ ॥ पर्वस्वगोजिदं ध्वजिद्विध्वजित्सोमरण्यजित् ॥ प्रजा
 वद्रलमाभर ॥ पर्वस्वान्नोऽअर्दाभ्यः पर्वस्वौषधीभ्यः ॥ पर्वस्वधिषणाभ्यः ॥ त्वंसोमपर्वमानो विश्वानि दुरितार्तर ॥ प्रजा
 सीदुनिबर्हिषि ॥ पर्वमानः स्वविदो जायमानो भवो महान् ॥ इंदो विश्वोऽअभीदसि ॥ १६ ॥ प्रगायत्रेण गायतपर्वमानं विच
 र्णोऽअभिधावति ॥ इंद्रस्य हस्तं च क्षसं ॥ तं त्वासहस्रं च क्षसमथोसहस्रं भर्णसं ॥ अतिवारमपाविषुः ॥ अतिवारान्पर्वमानोऽअसिष्यदत्कल
 परिस्रव्यस्तं इंदो मदेष्वा ॥ इंद्रस्य हाद्यो विशन् ॥ इंद्रस्य सोमराधेः शं पवस्व विचर्षणे ॥ प्रजावद्रेतऽआभर ॥ १७ ॥ अयावीती
 श्वमश्वविज्ञो मदिंदो गिरण्यवत् ॥ अवाहन्नवतीर्नव ॥ पुरःसद्यऽइत्थाधिये दिवो दासाय शंबरं ॥ अधत्यंतुर्वशं यदुं ॥ परिणोऽअ
 मूर्मयो भिक्षरतिधारया ॥ तेभिर्नः सोममृळ्य ॥ १८ ॥ सनः पुनानऽआभर रयिं वीरवतीमिधं ॥ सखित्वमावृणीमहे ॥ येतेपवित्र
 मृत्यं दशक्षिपो मजं तिसिंधुमातरं ॥ समोदित्येभिरख्यत ॥ समिद्रेणोतवायुना सुतऽएतिपवित्रऽआ ॥ संसूर्यस्य रुद्रिमाभिः ॥
 सनो भगा च वायवैपूष्णे पवस्वमधुमान् ॥ चारुमित्रेवरुणे च ॥ उच्चाते जातमंधसोद्विषभ्रूभ्या ददे ॥ उग्रं शर्ममहिश्रवः ॥ १९ ॥
 एना विश्वान्यर्यऽआद्यन्ना निमानुषाणां ॥ सिपासंतो वनामहे ॥ सनऽइंद्राय ज्यैवेवरुणाय मरुद्भ्यः ॥ वरिवो वितरिष्व ॥

उपोषुजातमसुरंगोभिर्भगंपरिष्कृतं ॥ इंदुदेवाऽअयासिषुः ॥ तमिद्धधेतुनोगिरोवत्संसंशिर्ध्वरीरिव ॥ यऽइंद्रस्यहृदंसनिः ॥
अर्षीणः सोमशंगवैधुक्षस्वपिप्युषीमिष ॥ वर्धोसमुद्रमवध्यं ॥ २० ॥ पर्वमानोऽअजीजनद्विवश्चित्रनतन्यतुं ॥ ज्योतिर्विश्वं
रंवहत् ॥ पर्वमानस्येतोरसोमदौराजन्नदुच्छुनः ॥ विवारमव्यमर्षति ॥ पर्वमानरसस्तवक्षोविराजतिद्यमान् ॥ गोपाऽउऽअश्व
स्वर्दृशे ॥ यस्तेमदोवरेण्यस्तेनोपवस्वांधसा ॥ देवावीरघशंसहा ॥ जघ्निर्वृत्रममित्रियंसस्त्रिर्वाजद्विवोदेवे ॥ गोपाऽउऽअश्व
साऽअसि ॥ २१ ॥ संमिश्रोऽअरुषोभेवसूपस्थाभिर्नधेनुभिः ॥ सीदन्छयेनोनयोनिमा ॥ सर्पवस्वयऽआविथेद्रवृत्रायहंतवे ॥
वृत्रिवांसमहीरपः ॥ सुवीरासोवयंधनाजयेमसोममीढूः ॥ पुनानोवर्धनो गिरः ॥ त्वोतासस्तवावसास्यामवन्वंतऽआमुरः ॥
सोमव्रतेषुजागृहि ॥ अपघ्नन्पवतेमृधोऽपसोमोऽअरावणः ॥ गच्छन्निद्रस्यनिष्कृतं ॥ २२ ॥ महोनौरायऽआभरपर्वमानजह्री
मृधः ॥ रास्वैदेवीरव्यद्यशः ॥ नत्वाशतंचनहुतोराधोदित्सैतमामिनन् ॥ यातेभीमान्यायुधाति
शसोजने ॥ विश्वाऽअपद्धिषो जहि ॥ अस्यतेसख्येवयंतवैदोद्यन्ऽउत्तमे ॥ सासह्यामपृतन्यतः ॥ यातेभीमान्यायुधाति
ग्मानिसंतिधूर्ध्वे ॥ रक्षासमस्यनोनिदः ॥ २३ ॥ एतेऽअसृग्रमिंदवस्तिरःपुवित्रमाश्रवः ॥ विश्वान्यभिसौभगा ॥ विघ्नतो
दुरितापुरुषुगातोकायवाजिनः ॥ तनाकृण्वंतोऽअर्वते ॥ कृण्वंतोवारिवोगवेऽभ्यर्षतिसुष्टुतिं ॥ इळामसभ्यंसंयतं ॥ असाव्यं
शुर्मदायाप्सुदक्षो गिरिष्ठाः ॥ इथेनोनयोनिमासदत् ॥ शुभ्रमंधोदेववातमप्सुधृतो नृभिः सुतः ॥ स्वदेतिगावः पयोभिः ॥ २४ ॥

आदीमश्वनहेतारोशूशुभंनमृताय ॥ मध्वोरसंसधमादे ॥ चास्तेधारामधुश्रुतोऽसृग्रमिदऽऊतये ॥ ताभिःपुवित्रमासदः ॥
 सोऽअर्षेद्रायपीतयेतिरोरोमाण्यव्यया ॥ सीदुन्योनावनेष्वा ॥ त्वमिदोपरिस्वस्वाद्विष्टोऽअंगिरोभ्यः ॥ वरिवोविद्धृतंपयः ॥
 अयंविचर्षणिर्हितःपर्वमानःसर्चेतति ॥ हिन्वानऽआर्ष्यबृहत् ॥२५॥ एषवृषावृषव्रतःपर्वमानोऽअशस्तिहा ॥ करद्वसूनिदाशु
 सहस्रोतिःशतामघोविमानोरजसःकविः ॥ इंद्रायपवतेमदः ॥ गिराजातइहस्तुतइंद्रिंद्रायधीयते ॥ वर्योनावसताविव ॥२६॥
 पर्वमानःसुतोनुभिःसोमोवाजमिवासरत् ॥ चमूषशक्मनासदं ॥ तंत्रिपृष्ठेन्निवंधुरेधेयुजंतियातवे ॥ ऋषीणांससर्धातिभिः ॥ तं
 सोतारोधनस्पृतमाशुवाजाययातवे ॥ हारंहिनोतवाजिनं ॥ आविशन्कलशंसुतोविश्वाऽअर्षन्नभिश्चिर्यः ॥ शूरोनगोर्भुतिष्ठति ॥
 आतऽइंदोमदायंकपयोदुहंत्यायवः ॥ देवादेवेभ्योमधु ॥२७॥ आनःसोमंपुवित्रऽआसजतामधुमत्तमं ॥ देवेभ्योदेवश्रुत्तमं ॥ ए
 तेसोमाऽअसृक्षतगुणानाःश्रवसेमहे ॥ मदिन्तमस्यधारया ॥ अभिगव्यानिवीतयेनूग्णापुनानोऽअर्षसि ॥ सनद्वाजःपरिस्त्रव ॥
 उतनोगोमतीरिषोविश्वाऽअर्षपरिष्टुभः ॥ गुणानोजमदग्निना ॥ पर्वस्ववाचोऽअग्निःसोमंचित्राभिरुतिभिः ॥ अभिविश्वा
 निकाव्या ॥ २८ ॥ त्वंसमद्रियाअपोत्रियोवाचइर्यन् ॥ पर्वस्वविश्वमेजय ॥ तुभ्येमाभुर्वनाकवेमहिम्नेसोमतस्थिरे ॥
 तुभ्यमर्षतिसिंधवः ॥ प्रतेदिवोनवृष्टयोधारारंयत्यसश्चतः ॥ अभिशुक्रामुपस्तिरं ॥ इंद्रायैदुपुनीतनोगंद्रक्षायसाधनं ॥ ईशा

नवीतिराधसं ॥ पर्वमानऋतः कविः सोमः पुवित्रमासदत् ॥ दधत्स्तोत्रे मवीर्यं ॥ २९ ॥ आपर्वस्व सहस्रिण रयिं सोमसुवीर्यं ॥
 अस्मेश्रवांसिधारय ॥ इपमूर्जै च पिन्वस इन्द्राय मत्सरितमः ॥ चमूज्यानिपीदसि ॥ सुत इन्द्राय विष्णवे सोमः कलशैः अक्षरत् ॥
 मधुमोऽस्तु वायवे ॥ एते असृग्रमाशवोऽतिहारासि वृत्रवः ॥ सोमाऋतस्य धारया ॥ इन्द्रवर्धतोऽअसुरः कृण्वंतो विश्वमार्यं ॥
 अपघ्नंतो अराव्णः ॥ ३० ॥ सुता अनुस्वमारजोऽभ्यर्पति वृत्रवः ॥ इन्द्रगच्छत इन्द्रवः ॥ अयापर्वस्व धारया यासूर्यमरोचयः ॥
 हिन्वानो मानुपीरपः ॥ अयुक्तसूरऽएतं शंपर्वमानो मनावधि ॥ अंतरिक्षे णयातवे ॥ उत त्याहुरितो दशसूरोऽअयुक्तयातवे ॥
 इंदुरिन्द्र इति ब्रुवन् ॥ परीतो वायवे सुतं गिर इन्द्राय मत्सरं ॥ अव्योवारैः पुसिंचत ॥ ३१ ॥ पर्वमानविदारयि मस्मभ्य सोमदुष्ट
 र ॥ यो दूणाशौ वनुष्यता ॥ अभ्यर्पसहस्रिण रयिं गोमतमश्निनं ॥ अभिवाजं मुतश्चरवः ॥ सोमो देवो नसूर्योऽग्निभिः पवते सुतः ॥
 दधानः कलशैरसं ॥ एते धामान्यार्योऽशुक्राऽऋतस्य धारया ॥ वाजंगोमतमक्षरन् ॥ सुता इन्द्राय वृजिणे सोमा सो दध्याशिरः ॥
 पुवित्रमत्यक्षरन् ॥ ३२ ॥ प्रसोममधुमत्तमो रायेऽअर्पपुवित्रऽआ ॥ मद्यो यो देववीतमः ॥ तमीमृजं त्याय वोहारं नदीपुत्रा
 जिने ॥ इंदुमिन्द्राय मत्सरं ॥ आपर्वस्व हिरण्यवदश्ववत्सो मवीरवत् ॥ वाजंगोमतमाभर ॥ परिव्राजेन वाजयुमव्योचारैः पु
 सिंचत ॥ इन्द्राय मधुमत्तमं ॥ कविं मृजंति मज्ज्यधीभिर्विप्रा अवस्यवः ॥ वृषा कनिक्कदर्पति ॥ ३३ ॥ वृषणं धीभि रसुरं सोमम
 तस्य धारया ॥ मती विप्राः समस्वरन् ॥ पर्वस्व देवायुषि गिन्द्रं गच्छतु ते मदः ॥ वायुमारोह धर्मणा ॥ पर्वमान नितो शसे रयिं सोम

श्रवा॒र्यं ॥ प्रि॒यः स॒मु॒द्र॒मा॒वि॒श ॥ अ॒प॒घ्न॒न् प॒र्व॒से॒मृ॒धः॒ क्र॒तु॒वि॒त्सो॒म॒म॒त्सरः ॥ नू॒द॒स्वा॒दै॒व॒यु॒ज॒नै ॥ प॒र्व॒मा॒नाऽअ॒सृ॒क्ष॒त॒सो॒माः शु॒क्रा
 स॒इ॒द॒वः ॥ अ॒भि॒वि॒श्वानि॒का॒व्या ॥ ३४ ॥ प॒र्व॒मा॒ना॒सऽआ॒श॒र्वः शु॒भ्राऽअ॒सृ॒ग्र॒मि॒द॒वः ॥ घ्न॑तो॒वि॒श्वऽअ॒प॒द्वि॒षः ॥ प॒र्व
 मा॒ना॒द्वि॒व॒स॒र्य॑त॒रि॒क्षा॒द॒सृ॒क्ष॒त ॥ पृ॒थि॒व्याऽअ॒धि॒सान॒वि ॥ पु॒ना॒नः॒सो॒म॒धा॒र॒ये॒दो॒वि॒श्वऽअ॒प॒स्त्रि॒धः ॥ ज॒हि॒र॒क्षां॑सि॒सु॒क्र॒तो ॥ प॒र्व
 अ॒प॒घ्न॒न्त्सो॒म॒र॒क्ष॒सोऽभ्य॑र्ष॒क॒नि॒क्र॒द॒त् ॥ द्यु॒म॑न्तं शु॒भ॒म॒मु॒त्त॒मं ॥ अ॒स्मे॒व॒सू॒नि॒धा॒र॒य॒सो॒म॒दि॒व्या॒नि॒पा॒र्थि॒वा ॥ इ॒दो॒वि॒श्वऽअ॒नि॒वा॒र्या
 ॥ ३५ ॥ वृ॒षा॒सो॒म॒द्यु॒मोऽअ॒सि॒वृ॒षा॒दे॒व॒वृ॒ष॒व्र॒तः ॥ वृ॒षा॒ध॒र्मा॑णि॒द॒धि॒षे ॥ वृ॒ष्णं॑स्ते॒वृ॒ष्ण्यं॑श॒वो॒वृ॒षा॒व॒नं॒वृ॒षा॒म॒दः ॥ स॒त्यं॑वृ॒ष॒न्वृ
 षे॒द॒सि ॥ अ॒श्वो॒न॒र्च॒क्र॒दो॒वृ॒षा॒सं॒गाऽइ॒दो॒स॒म॒र्व॒तः ॥ वि॒नो॒रा॒ये॒दुरो॑वृ॒धि ॥ अ॒सृ॒क्ष॒त॒प्र॒वा॒जि॒नो॒ग॒व्या॒सो॒मा॒सोऽअ॒श्व॒या ॥ शु॒क्रा
 सो॒वी॒र॒या॒श॒र्वः ॥ शु॒भ॒मा॒नाऽऋ॒ता॒यु॒भि॒र्म॒ज्य॒मा॒ना॒ग॒भ॒स्त्योः ॥ प॒र्व॒ते॒वा॒रेऽअ॒व्य॒थे ॥ ३६ ॥ ते॒वि॒श्वऽआ॒शु॒षे॒व॒सो॒मा॒दि॒व्या
 नि॒पा॒र्थि॒वा ॥ प॒र्व॒ता॒मा॒न्तरि॑क्ष॒या ॥ प॒र्व॒मा॒न॒स्य॒वि॒श्व॒वि॒त्स॒ते॒सर्गो॑ऽअ॒सृ॒क्ष॒त ॥ सू॒र्य॑स्ये॒व॒न॒र॒श्म॒यः ॥ के॒तुं॑क॒ण्व॒न्दि॒व॒स्प॒रि॒वि॒श्वऽरू॒पा
 भ्य॑र्ष॒सि ॥ स॒मु॒द्रः॒सो॒म॒पि॒न्व॒से ॥ हि॒न्वा॒नो॒वा॒च॒मि॒ष्य॒सि॒प॒र्व॒मा॒न॒वि॒ध॒र्म॒णि ॥ अ॒क्रा॒न्दे॒वो॒न॒सूर्यः ॥ इ॒दुः॒प॒वि॒ष्ट॒चे॒त॒नः॒प्रि॒यः
 क॒वी॒नां॑म॒ती ॥ स॒ज॒द॒श्व॑र॒थी॒रि॒व ॥ ३७ ॥ ऊ॒र्मि॒थ॑स्ते॒प॒वि॒त्रऽआ॒दै॒वा॒वीः॒प॒र्य॑क्ष॒र॒त् ॥ सी॒द॒न्न॒त॒स्य॒यो॒नि॒मा ॥ स॒नो॑ऽअ॒र्ष॒प॒वि॒त्रऽ
 आ॒म॒दो॒यो॒दै॒व॒वी॒त॒मः ॥ इ॒दु॒वि॒द्रा॒य॒पी॒त॒थे ॥ इ॒षे॒प॒व॒स्व॒धा॒र॒या॒म॒ज्य॒मा॒नो॒म॒नी॒षि॒भिः ॥ इ॒दो॑रु॒चा॒भि॒गाऽइ॒हि ॥ पु॒ना॒नो॒वा॒रि॑
 व॒स्क॒ध॒यू॒र्ज॒ज॒ना॒य॒गि॒र्व॒णः ॥ ह॒रे॒सृ॒जा॒नऽआ॒शि॒रं ॥ पु॒ना॒नो॒दे॒व॒वा॒त॒य॒इ॒द्र॒स्य॒या॒हि॒नि॒ष्कृ॒तं ॥ द्यु॒ता॒नो॒वा॒जि॒भि॒र्यु॒तः ॥ ३८ ॥

प्रीहन्वानासऽइंदुवोच्छासमुद्रमाश्रवः ॥ धियाजुताऽअसुक्षत ॥ मर्मजानासंआयवोचुथासमुद्रमिंदवः ॥ अगमन्नृतस्ययोनि
 ॥ मर्मजानासंआयवोचुथासमुद्रमिंदवः ॥ अगमन्नृतस्ययोनि ॥ प्रयत्संमुद्र
 ॥ मिमातिवह्निरेतशःपदंयुजानऽऋक्भिः ॥ म
 ॥ अभिवेनाऽअनूपतेयक्षंतिप्रचेतसः ॥ म
 ॥ ३९ ॥ अविप्र्रावचोविदुःपरिष्कृण्वंतिवेधसः ॥
 ॥ तंत्वाविप्र्रावचोविदुःपरिष्कृण्वंतिवेधसः ॥
 ॥ त्वंसोमविपुश्चितपुनानोवाचमिष्यसि ॥ प्रियः
 ॥ त्वंसोमविपुश्चितपुनानोवाचमिष्यसि ॥ प्रियः
 ॥ पुनानइंदवेपांपुरुहूतजनानां ॥ पुनानइंदवेपांपुरुहूतजनानां ॥
 ॥ पुनानइंदवेपांपुरुहूतजनानां ॥ पुनानइंदवेपांपुरुहूतजनानां ॥
 ॥ हिन्वानोहूतभिर्यतऽआवाजवाज्यक्रमीत् ॥
 ॥ ४१ ॥ ॐऋचोऽअक्षरैपरमेव्योमन्यसि
 ॥ ४१ ॥ ॐऋचोऽअक्षरैपरमेव्योमन्यसि
 ॥ इतिपवमानसूक्तेतृतीयोऽध्यायः ॥
 ॥ पवमानरुचारुचादेवोदेवेभ्युत्सरे ॥ पवमानरुचारुचादेवोदेवेभ्युत्सरे ॥
 ॥ पवमानरुचारुचादेवोदेवेभ्युत्सरे ॥ पवमानरुचारुचादेवोदेवेभ्युत्सरे ॥
 ॥ महाभिंदुमह्ययुवः ॥ महाभिंदुमह्ययुवः ॥
 ॥ वृषाह्यसिभानुनाद्युमंतत्वाहवामहे ॥ वृषाह्यसिभानुनाद्युमंतत्वाहवामहे ॥
 ॥ इषेपवस्वसंयतं ॥ इषेपवस्वसंयतं ॥
 ॥ १ ॥ यदुद्भिःपरिपिच्यसेमज्यमानोगभस्त्योः ॥ यदुद्भिःपरिपिच्यसेमज्यमानोगभस्त्योः ॥
 ॥ इहोष्विदुवागहि ॥ इहोष्विदुवागहि ॥
 ॥ आपवस्वसुवीर्यमंदमानःस्वायुध ॥ आपवस्वसुवीर्यमंदमानःस्वायुध ॥
 ॥ आपवस्वसुवीर्यमंदमानःस्वायुध ॥ आपवस्वसुवीर्यमंदमानःस्वायुध ॥

सधस्यमश्रुपे ॥ प्रसोमायव्यश्ववत्यवमानायगायत ॥ महेसहस्रचक्षसे ॥ यस्यवर्णमधुश्रुतंहरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ॥ इंदुमिंद्राय
पीतये ॥ तस्यतेवाजिनोवयंविश्वाधनानिजिग्युषः ॥ सखित्वमार्घुणीमहे ॥ वृषापवस्वधारयामरुत्वतेचमत्सरः ॥ विश्वाद
धानऽओर्जसा ॥ २ ॥ तंत्वाधर्तारिमोण्योइःपवमानस्वर्हशं ॥ हिन्वेवाजेषुवाजिनं ॥ अयाचितोविपानयाहरिःपवस्वधार
या ॥ युजंवाजेषुचोदय ॥ आनइंदोमहीमिषंपवस्वविश्वदर्शतः ॥ असभ्यंसोमगातुवित् ॥ आकलशाऽअनूषतेंदोधाराभि
रोर्जसा ॥ इंद्रस्यपीतयेविश ॥ यस्यतेमद्यंसंतीव्रंदुहन्त्यद्रिभिः ॥ सपवस्वाभिमातिहा ॥ ३ ॥ राजामेधाभिरीयतेपवमानो
मनावार्धि ॥ अंतरिक्षेणयातवे ॥ आनइंदोशतृग्विनंगवांपोषंस्वर्ह्यं ॥ बह्वाभर्गत्तिमूतये ॥ आनःसोमसहोजुवोरूपंपनवर्हसे
भर ॥ सुष्वाणोदेववीतये ॥ अपीसोमद्युमत्तमोभिद्रोणानिरोरुवत् ॥ सीदन्छयेनोनयोनिमा ॥ अप्साइंद्रायवायवेवरुणाय
मरुद्भ्यः ॥ सोमोऽअर्षतिविष्णवे ॥ ४ ॥ इषंतोकार्यनोदधेदुस्मभ्यंसोमविश्वतः ॥ आपवस्वसहस्रिणं ॥ येसोमांसःपरावति
येऽअर्वावतिसुन्विरे ॥ येवादःशर्यणावति ॥ यऽआर्जोकेषुकृत्वसुयेमध्येपस्त्यानां ॥ येवाजनेषुपंचसु ॥ तेनोवृष्टिंदिवस्यरि
पर्वतामासुवीर्यं ॥ सुवानादेवासइंदवः ॥ पर्वतेहर्यतोहरिर्गृणानोजमदग्निना ॥ हिन्वानोगोराधित्वचि ॥ ५ ॥ प्रशुक्रासो
वयो जुवो हिन्वानासोनसर्धयः ॥ श्रीणानाऽअप्सुर्मृजत ॥ तंत्वासुतेष्वभुवो हिन्विरेदेवतातये ॥ सपवस्वानयारुचा ॥ आते
दक्षमयोभुवंवल्हिमद्यावृणीमहे ॥ आमंद्रमावरैण्यमाविप्रमार्मनीषिणं ॥ पांतमापुरुस्पृहं ॥ आरयिमासु

वेतुनमासुकृतोतनूज्वा ॥ पांतुमापुरुस्पृहं ॥ ६ ॥ पर्वस्वविश्वचर्षणेभिविश्वानिकाव्या ॥ सखासखिभ्यऽईड्यः ॥ ताभ्यां
विश्वस्यराजसियेपवमानधामनी ॥ प्रतीचीसोमस्तथुः ॥ परिधामानियानितेत्वंसोमासिविश्वतः ॥ पर्वमानऋतुभिःकवे ॥
पर्वस्वजनयन्निपोभिविश्वानिवार्यो ॥ सखासखिभ्यऽद्रुतये ॥ तवशक्रासोऽअर्चयोद्वित्रस्पष्टेचितन्त्रते ॥ पवित्रसोमधामभिः
पर्वस्वजनयन्निधेनवः ॥ तुभ्यधात्रंतिधेनवः ॥ प्रसोमयाहिधारयासुतइंद्रायमत्सरः ॥ दधानोअक्षि
॥ ७ ॥ तवेमेसप्तसिंधवःप्रशिपसोमसिद्यते ॥ विप्रमाजाविश्वतः ॥ मूर्जतित्वासमग्रुबोव्येजीरावधिष्वाणि ॥ रेभो
तिश्रवः ॥ समुत्वाधीभिरस्वरन्हिन्यतीःसप्तजामयः ॥ अच्छाकोगमघृश्रुतमसृग्रचारैऽअव्यये ॥
यदृज्यसेवने ॥ पर्वमानस्यतेक्वेवाजिन्तसर्गाअसृक्षत ॥ अर्चतो न श्रवस्यवः ॥ ८ ॥ अच्छाकोगमघृश्रुतमसृग्रचारैऽअव्यये ॥
अवावशंतर्धातयः ॥ अच्छासमुद्रमिंद्वोस्तंगावोनधेनवः ॥ अगर्मन्नतस्ययोनिमा ॥ प्रणइंदोमहेरण आपोअर्पतिसिंधवः ॥ एं
गद्गोभिर्वासयिष्यसे ॥ अस्यतेसख्येवयमियंभंतुस्त्वोतयः ॥ इंदोसखित्वमुश्मसि ॥ आपवस्वगविष्टयेमहेसोमनुचक्षसे ॥ अन्न
द्रस्यजठरैविश ॥ ९ ॥ महोऽअंसिसोमज्येषुग्राणामिंदुओजिष्ठः ॥ युध्वासन्छश्चजिगेथ ॥ यदृज्यसेवने ॥ तमीमहेमहागयं
श्चिच्छूरतरः ॥ भूरिदाभ्यश्चिन्मंहोयान्न ॥ त्वंसोमसूरएपस्तोकस्यसातातूनो ॥ वृणीमहेसख्यायवृणीमहेयुज्याय ॥ अन्न
ऽआयूपिपवसआसुवोजिमिंचनः ॥ ओरेवाधस्वदुच्छुना ॥ अग्निर्ऋषिःपर्वमानःपांचजन्यःपुरोहितः ॥ तमीमहेमहागयं
॥ १० ॥ अग्नेपर्वस्वस्वपाऽअसेवचःसुवीर्य ॥ दधद्रधिंमयिपोपं ॥ पर्वमानोऽअतिस्त्रियोभ्यर्पतिसुष्टुतिं ॥ सूरोनविश्वदे

02

र्शतः ॥ सममृजानआयुभिःप्रयस्वान्प्रथसेहितः ॥ इंदुरत्योविचक्षणः ॥ पर्वमानऽऋतंबहच्छ्रुक्रंज्योतिरजीजनत् ॥ कृष्णा
 तमांसिजंघनत् ॥ पर्वमानस्यजंघतोहरेश्चंद्राऽअसृक्षत ॥ जीराऽअजिरशोचिषः ॥ ११ ॥ पर्वमानोरथीतमःशुभ्रोभिःशु
 भ्रशस्तमः ॥ हरिश्चंद्रोमरुद्रणः ॥ पर्वमानोव्यश्रवद्रश्मिभिर्वाजसातमः ॥ दधत्सोत्रेसर्वार्थ ॥ प्रसुवानइंदुरक्षाःपवित्रमत्य
 व्यर्थ ॥ पुनानइंदुरिंद्रमा ॥ एपसोमोऽअधित्वचिगवांक्नीळत्यद्रिभिः ॥ इंद्रमदायजोहुवत् ॥ यस्यतेद्युन्नवत्पयःपर्वमानाभृ
 तंदिवः ॥ तेननोमृळजीवसे ॥ १२ ॥ त्वंसोमासिधारयुर्मद्रओजिष्ठोऽअध्वरे ॥ पर्वस्वमंहयद्रयिः ॥ त्वंसुतोनुमादनोदध
 न्वान्मत्सरित्तमः ॥ इंद्रायसूरिरंधसा ॥ त्वंसुष्वाणोऽअद्रिभिरभ्यर्षकनिक्रदत् ॥ ॥ त्वंसुतोनुमादनोदध
 तिरोयारोण्यव्यथा ॥ हरिर्वाजमचिक्रदत् ॥ इंदोव्यव्यमर्षसिविश्रवांसिविसौभगा ॥ इंदुर्हिन्वानोऽअर्षति
 नइंदोशतृग्विनैरयिगोमंतमश्विनै ॥ भरासोमसहस्रिणं ॥ पर्वमानासइंदवस्तिरःपवित्रमाशवः ॥ इंद्रयामैभिराशत ॥ १३ ॥ आ
 हःसोम्योरसइंदुरिंद्रायपूर्य्यः ॥ आयुःपवतआयवै ॥ हिन्वंतिसूरमुखयःपर्वमानंमधुश्चुतं ॥ अभिगिरासमस्वरन् ॥ ककु
 नौअजार्धःपूषायामनियामनि ॥ आभक्षत्कन्यासुनः ॥ १४ ॥ अयंसोमःकपदिनैघृतंनपवतेमधु ॥ आभक्षत्कन्यासुनः ॥ ॥ अविता
 अयंतआघृणैसुतोघृतंनपवतेशुचिं ॥ आभक्षत्कन्यासुनः ॥ वाचोजंतुःकवीनांपर्वस्वसोमधारया ॥ इवेषुरलघाऽअसि ॥ आ
 कलशेषुधावतिश्येनोवर्मविगाहते ॥ अभिद्रोणाकनिक्रदत् ॥ परिप्रसोमतेरसोसर्जिकलशैसुतः ॥ इयेनोनतुक्तोऽअर्षति ॥ १५ ॥

संश्रुत ॥ श्रावणा

॥ त्रैलोक्यसौमिद्विन्तमाः शुक्रावायुमहः ॥ १६ ॥

॥ तस्मैतात्तु ॥ रक्षाहावोरमध्य ॥
पवित्रमतिगाहते ॥ रक्षाहावोरमध्य ॥

तः पावत्रभाः ॥ यः पातः ॥ उभाभ्य
पवित्रेण विचर्षणिः ॥ यः पातः ॥ उभाभ्य

अद्यनःपुनः—
अद्यनःपुनः ॥ ब्रह्मसर्वैःपुनाह ॥ पुनः
पुनःपुनीहिनः ॥ ब्रह्मसर्वैःपुनीहिनः ॥ पुनः

॥ अमृदक्षः पुनातु ॥ अमृदक्षः पुनातु ॥ अमृदक्षः पुनातु ॥

वेत॒वापिष्ठः॑ सा॒
दस्व॒सोमा॒ वश्व॑ । मे॒इन्द्र॑
प्र॒स्यं द॒स्व सोम॑ ॥ आ॒खु-
दे॒व सोम॑ ॥

मा ॥ प्रप्यायस्व ॥ शतमापवस्व ॥ ६ ॥

॥ अलाय्यस्वप्नः ॥ पावमानीयाअध्यर्तुः
॥ नं० ॥ नो० रसो ब्राह्मणे

तस्य दितं माता । रक्षति । संभृता । सा ज्ञाते ।
॥ ऋषिभिः संभृतो रसाज्ज्ञाने ।
द्विधैव श्रुतः ॥ अत्रैवात्मानं पुनर्तप-
स्यन्त्येकस्मिन् यामने ।

॥ यन्नेदं वाः पवित्रं ॥ यन्नेदं वाः पवित्रं ॥ यन्नेदं वाः पवित्रं ॥

विदुर्वदुर्वीःसुमा॥६॥ पुनर्ब्रह्मविदोव्यं पतं ब्रह्मपुनामह ॥ ऋषयस्तुतं पस्तं । ॥ तेन ब्रह्मविदोव्यं पतं ब्रह्मपुनामह ॥ ऋषयस्तुतं पस्तं ।

हेरणमय ॥ तनप्रदामर्जयैलापुनातु ॥ ३३३३३३

॥ पुनातु मां ॥

स्वर्गजिगीषवः ॥ तपस्तपसोऽग्रियं तु पावमानीर्क्चो ब्रवीत् ॥ १ ॥ यन्मे गर्भे वसतः पापमुग्रं यज्जायमानस्य च किंचिदन्यत् ॥
 जातस्य च यच्चापि च वर्धते मे तत्पावमानीर्भिरहंपुनामि ॥ मातापित्रो र्युक्कृतं वचो मे यत्स्थावरं जंगममाब्रूव ॥ विश्वस्य तत्प्र
 हृषितं वचो मे तत्पावमानीर्भिरहंपुनामि ॥ गोघ्नात्तस्करत्वात्स्त्रीवधाद्यच्च किं लिखं ॥ पापकंच चरणेभ्यस्तत्पावमानीर्भिरहंपुना
 न्मातृपितृवधाभूमितस्करात्सर्ववर्णगमनमैथुनसंगमात् ॥ गुरोर्दाराधिगमनाच्च तत्पावमानीर्भिरहंपुनामि ॥ बालघ्ना
 नासि ॥ क्रयविक्रयाद्योनिदोषाभक्षाम्भोज्यात्प्रतिग्रहात् ॥ अपेभ्यश्च प्रतिग्रहात्सद्यः प्रहरति सर्वदुष्कृतं तत्पावमानीर्भिरहंपुना
 दुरधीतं पापं यच्चाज्ञानतो कृतं ॥ अयाजिताश्चासंयोज्यास्तत्पावमानीर्भिरहंपुनामि ॥ २ ॥ दुर्धृष्टं
 शने ॥ संवत्सरकृतं पापं तत्पावमानीर्भिरहंपुनामि ॥ अमंत्रमन्नैयत्किंचिद्धूय तैच हुता
 प्रवहतु पापं शुद्धागच्छामि सुकृतां मुलोकं तत्पावमानीर्भिरहंपुनामि ॥ अमंत्रमन्नैयत्किंचिद्धूय तैच हुता
 श्वभक्षान्भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति ॥ पावमानीः पितृन्देवान्ध्यायेद्यश्च सरस्वतीं ॥ पितृस्तस्योपवर्तेत तक्षीरं सर्पिर्मधूदकं ॥ पुण्यां
 पावमानं परं ब्रह्म शुक्रं ज्योतिः सनातनं ॥ ऋषीस्तस्योपतिष्ठेत्तक्षीरं सर्पिर्मधूदकं ॥ पावमानं परं ब्रह्म ये पठन्ति मनीषिणः ॥ सप्तज
 न्मभवेद्विप्रो धनाढ्यो वेदपारगाः ॥ दशोत्तराण्यृचांश्चैव पावमानीः शतानि षट् ॥ एतज्जुह्वन्जोपेन्मंत्रं घोरमृत्युभयं हरेत् ॥ शत

धोरमुत्समक्षीयमाणं विपुश्चित्पितरं वक्त्वानां ॥ मेळिमदतं पित्रोरुपस्थे तं रोदसी पिपृतं सत्यवाचं ॥ ३ ॥ ऋचोऽअक्षरेपरमेव्यो
 न्यसिन्नेवाऽअधिविश्वे निपेदुः ॥ यस्तं न वेदु किमु चाकर्ण्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते ॥ इति पवमानसूक्ते चतुर्थोऽध्यायः ४

नतमं ह्येनसूक्तम् ॥
 ॥ ६३ ॥ नतमं ह्येनसूक्तम् ॥ नयिष्ठाऽउनोनेपणि
 मन्यसिन्नेवाऽअधिविश्वे निपेदुः ॥ सजोपसोयमर्थमा मित्रो नयतिवरुणोऽअतिद्विषः ॥ नयिष्ठाऽउनोनेपणि
 नतमं ह्येनसूक्तम् ॥ तेनूनो यमतयेवरुणो मित्रोऽअर्थमा ॥ आदि

श्रीः ॥ हरिः ॐ ॥ नतमं ह्येनदुरितं देवा सो अष्टमर्त्यं ॥ सजोपसोयमर्थमा मित्रो नयतिवरुणोऽअतिद्विषः ॥ आदि
 रुणमित्रार्थमन् ॥ येनानिरंहसोयं पाथनेथा चमर्त्यमतिद्विषः ॥ तेनूनो यमतयेवरुणो मित्रोऽअर्थमा ॥ आदि
 पापिष्ठाऽउनः प्रपण्यतिद्विषः ॥ ययं विश्वं परिपाथवरुणो मित्रोऽअर्थमा ॥ युष्माकं शर्मणि प्रिये स्याम सुप्रणीतयोतिद्विषः ॥ आदि
 त्यासोऽअतिस्त्रिधोवरुणो मित्रोऽअर्थमा ॥ उग्रं मरुद्भीरुद्रं हुवेमद्रं मग्निस्वस्तयेतिद्विषः ॥ नेतार ऊषुर्गस्तिरोवरुणो मित्रोऽअर्थमा
 ॥ अतिविश्वानिदुरिताराजानश्चर्पणीनामतिद्विषः ॥ शुनमस्मभ्यमतयेवरुणो मित्रोऽअर्थमा ॥ शर्मयच्छंतुसुप्रथऽआदित्यासो
 यदीमहेऽअतिद्विषः ॥ यथा हृत्यद्वसवो गौर्यं चित्पदिपितामनुचतायजत्राः ॥ एवोष्वऽस्मन्मुचताव्यंहः प्रतार्यन्नेप्रतुरं न आयुः ॥ १ ॥

॥ ६४ ॥ इति वा इति सूक्तम् ॥
 यदीमहेऽअतिद्विषः ॥ यथा हृत्यद्वसवो गौर्यं चित्पदिपितामनुचतायजत्राः ॥ एवोष्वऽस्मन्मुचताव्यंहः प्रतार्यन्नेप्रतुरं न आयुः ॥ १ ॥

श्रीः ॥ हरिः ॐ ॥ इति वा इति मेमनोगामश्वसनुयामिति ॥ कुवित्सोमस्यापामिति ॥ कुवित्सोमस्यापामिति ॥
 कुवित्सोमस्यापामिति ॥ उन्मापीता अयं सतरथमश्वो इवाशवः ॥ कुवित्सोमस्यापामिति ॥

प्रियं ॥ कुवित्सोमस्यापामिति ॥ अहंतष्ट्वंधुरं पचा महदामतिं ॥ कुवित्सोमस्यापामिति ॥ नहिमेऽअक्षिपच्चनाच्छान्तसुः
 पंचकूर्यः ॥ कुवित्सोमस्यापामिति ॥ १ ॥ नहिमेरोदसीउभेऽअन्यं पक्षं चनप्रति ॥ कुवित्सोमस्यापामिति ॥ कुवित्सोमस्यापामिति ॥ अभिद्यां
 महिनाभुवमभीइमां पृथिवीमहीं ॥ कुवित्सोमस्यापामिति ॥ हंताहंपृथिवीमिमां निदधानीहवेहवा ॥ कुवित्सो ॥ ओषमि
 तृथिवीमहं जघनानीहवेहवा ॥ कुवित्सो ॥ द्विविमेऽअन्यः पक्षोइधोऽअन्यमचीकृषं ॥ कुवित्सो ॥ अहमस्मिमहामहो
 भिनभ्यमुदीषितः ॥ कुवित्सोमस्यापामिति ॥ गृहोयाम्यरंकृतोदेवेभ्योहव्यवाहनः ॥ कुवित्सोमस्यापामिति ॥ २ ॥

श्रीः॥ॐ अस्यवामस्यपलितस्यहोतुस्तस्यभ्रातामध्यमोअस्त्यश्रः॥तृतीयोभ्राताघृतपृष्ठोअस्यात्रापश्यंविश्यतिसप्तपुत्रं॥सप्तशुं
 जंतिरथमेकचक्रमेकोअश्वोवहतिसप्तर्नामा॥त्रिनाभिचक्रमजरमनर्वयत्रेमाविश्वामुवनाधितस्थुः॥इमंरथमधिग्रेससतस्थुःस
 तचक्रंसप्तवहंत्यश्वः॥सप्तस्वसारोऽअभिसंनवंतेयत्रगवांनिहिताससाम्॥कोददर्शप्रथमंजायमानमस्थन्वंतंयदनस्थाविभं
 ति॥भूम्याअसुरसृगात्माकस्विकोविद्वांसमुपगात्सष्टमेतत्॥पार्कःपृच्छामिमनुसाविजानन्दवानामेनानिहितापदानि॥
 वत्सेबृष्कयेधिसप्ततंतून्वितलिरेकवयऽओतवाऽहं॥१॥अचिकित्वान्विकितुर्षश्चिदत्रकवीनृच्छामिविद्वनेनविद्वान्॥
 वियस्तसंभषळिमारजांस्यजस्यरूपेकिमपिस्विदेकं॥इहब्रवीतुयईमंगवेदुस्यवामस्यनिहितंपदवेः॥शीर्ष्णःक्षीरंदुहतेगावो

॥ श्री गौरीः वृद्धिर्पूर्णाम् ॥

पञ्चाकर्म
त्रिचोम
द्वादश
दशा
तस्य
बहं
मि
पञ्च

निमेषं विदधाभिस्वरंति॥ इ नो विश्वस्य भुव नस्य गोपाः समाधीरः पाकमत्राविवेश ॥ यस्मिन्वक्षेमध्वदः सुपर्णा निविशते सुवते चा
 धिविश्वे ॥ तस्येदाहुः पिप्पलं स्वाह्वये तन्नोन्नशद्यः पितरं न वेद॥ यद्वा यत्रे अधिगायत्रमाहितं त्रैष्टुभाह्वत्रैष्टुभं निरतक्षत॥ यद्वा जग
 क्षरेण मिमते ससवाणीः ॥ जगता सिंधुं दिव्यस्तभाय द्रथं तरे सूयं पर्यपश्यत् ॥ गायत्रस्य समिधं स्तिस्र आहुस्ततो महाप्रारिं रिचे महि
 त्वा ॥ ५ ॥ उपह्वये सुदुर्धाधेनु मेतां सुहस्तो गोधुगतदो हदेनां ॥ श्रेष्ठं सवं सवित सा विषन्नो भो छो घर्मस्तदुषु प्रवोचं ॥ हिंकृण्वती वसप
 लीवसूनां वत्समिच्छंती मनसाभ्यागात् ॥ दुहामश्विभ्यां पयोऽअहन्येयं सार्वधंतां महते सौभगाय ॥ गौरमीमेदनुवत्सं मिषं तं मर्धा
 नं हिङ्कुणो न्मातवाऽर्ज ॥ सुक्काणं घर्ममभिर्वा वशाना मिमाति मायुं पर्यते पयोभिः ॥ अयं सार्शिङ्गते ये न गौरभी वृता मिमाति मायु
 ध्वसना वधि श्रिता ॥ साचित्तिभिर्निहिचकार मर्त्यं विद्युद्भवती प्रतिवत्रि मौहत ॥ अनच्छये तुरगा तु जीवमेजध्रुवं मध्य आपस्त्या
 नां ॥ जीवो मतस्य चरति स्वधाभिरमर्त्यो मर्त्येनास योनिः ॥ ६ ॥ अपश्यंगो पामनि पद्यमानमा च परां च पृथिभिश्चरंतं ॥
 ससर्ग्रीचीः सविपूर्वीर्वसान आवरीवर्ति भुवनेष्वंतः ॥ यद्वा चकार न सो अस्य वेद यद्वा ददर्श हिरुगिन्नतस्मात् ॥ समातुर्यो नापारि
 वीतो अंतर्बहुप्रजानि ऋतिमाविवेश ॥ द्यौर्मपिता जनिता नाभिरत्र बंधुर्मेमाता पृथिवी महीयं ॥ उत्तानयोश्च ग्म्वोऽयो निरंतरत्रा
 पिता दुहितुर्गर्भमाधात् ॥ पृच्छामित्वा परमं तं पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुव नस्य नाभिः ॥ पृच्छामित्वा वृणो अश्वस्य रेतः पृच्छा

मिवाचः परमेव्योम ॥ इयं वेदिः परो अंतः पृथिव्याऽअयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः ॥ अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परं मे
तेधीतिभिर्मनसा ते विपश्चितः परिभुवः परिभवन्ति ॥
तदामागन्प्रथमजाकृतस्यादिद्वाचो अश्रुवे भागमस्याः ॥ ऋचो अ
न्यंचिकयुर्न निचिकयुरन्यं ॥ यदा मागेन्द्रमजा कृतस्यादिद्वाचो अश्रुवे भागमस्याः ॥ सुयवसाङ्गवती हि
विश्वतः ॥ न विजानामि यदि देवमस्मिनि ण्यः सन्नद्धो मनसा चरामि ॥ ता शश्वता विपचीना वियंतान्य ह्न्यंचिकयुर्न निचिकयुरन्यं ॥ सुयवसाङ्गवती हि
अपाङ्ग प्राडैति स्वधया गृभीतो मर्त्यो मर्त्येनासयोनिः ॥ ता शश्वता विपचीना वियंतान्य ह्न्यंचिकयुर्न निचिकयुरन्यं ॥ सुयवसाङ्गवती हि
क्षरे परमेव्योम नून्यस्मिन्देवा अधिविश्वे निपेदुः ॥ यस्तं न वेद किमु चाकर्ष्यति य इत्त द्विदुस्त इमे समासते ॥ सुयवसाङ्गवती हि
भूयाऽअथो वयं भगवंतः स्याम ॥ अद्वितुर्णमद्वये विश्वदानो पिब शुद्धमुदकमाचरेती ॥ ८ ॥ गौरीर्ममायसल्लिलानित क्षत्येकं
पदी द्विपदी सा चतुष्पदी ॥ अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमेव्योमन् ॥ तस्याः समुद्रा अधिविक्षरंति तेन जीवंति प्रदिश
श्चतस्रः ॥ ततः क्षरत्यक्षरं तद्विश्वमुपजीवति ॥ शुक्रमय धूममारादपश्यं विपवता पर एनावरेण ॥ उक्षाणं पृश्निमपचंत वीरास्ता निध
मानि प्रथमान्यासन ॥ त्रयः केशि न क्रतुथा विचक्षते संवत्सरे वपत एक एषां ॥ विश्वमेको अभिचष्टेश चीभिर्घ्राजिरे कस्य ददृशे न रूपं ॥
चत्वारि वाक्परिमिता पुदानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः ॥ गुहात्रीणि निहिताने गयं तितुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति ॥ इंद्र
मित्रवरुण मिमाहु रथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् ॥ एकं सद्विप्रा बहुधा वदंत्यग्निं यमं मातरिरिवा न माहुः ॥ ९ ॥ कृष्णं निधानं हरे
यः सुपर्णाऽअपो वसाना दिवमुत्पतन्ति ॥ त आर्ववृत्रन्त्स दनादृतस्यादिच्छुतेन पृथिवी व्युद्यते ॥ द्वादशप्रघर्षश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्या

निकुतञ्चिकेत ॥ तस्मिन्त्साकं त्रिशतानशंकवोपिताः षष्टिर्न चलाचलासः ॥ यस्तेस्तनः शशयो यो मयो भूये न विश्वा पुष्यसि
 वार्योणि ॥ गोरलधार्वसुविद्यः सुदत्रः सरस्वतितमिह धातवेकः ॥ यज्ञेन यज्ञमयजंत देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ॥
 ते हुना कर्महिमानः सचंत यत्र पूर्वे साध्याः संति देवाः ॥ समानमेतदुदकमुच्चैत्यवचाहभिः ॥ भूर्मिपर्जन्या जिन्यति दिवजिन्यं
 त्यग्नयः ॥ दिव्यं सुपूर्णं वायुसंबहंतं मपांगभेदशतमोषधीनां ॥ अभीपतो वृष्टिभिस्तर्पयंतं सरस्वतमवसेजो हवीमि ॥ १० ॥
 अतो देवाऽअवंतु नो यतो विष्णुर्विक्रमे ॥ पृथिव्याः सप्तधामभिः ॥ इदं विष्णुर्विक्रमे त्रेधानिर्दधे पदं ॥ समूळहमस्य पांसुरे ॥
 त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपाऽअदाभ्यः ॥ अतो धर्माणि धारयन् ॥ विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो ब्रतानि पस्पशे ॥ इंद्रस्य यु
 ज्यः सखा ॥ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यति सूर्यः ॥ द्विवीचचक्षुराततं ॥ तद्विप्रासो विपुन्यवो जागृवांसः सर्भिधते ॥ विष्णो
 र्धत्पर्दमपदं ॥ १ ॥ ॥ ॐ ऋचोऽअक्षरे परमेव्योमन् ॥ इति पवमानं पंचसूक्तानि समासानि ॥ ॥ ६६ ॥ अयं पंचगव्यमेकलनम् ॥ ॥ ६७ ॥

श्रीः ॥ आचम्य प्राणानायम्य देशकालाद्युच्चार्य श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं उत्सर्जनांगत्वेन पंचगव्यमेलनं करिष्ये ॥ गाय
 त्र्यागोमूत्रं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः ॥ तत्सर्वितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ गंधद्वारेति गोमयं ॥ ॐ गंधद्वारं
 रांदुराधर्षो नित्यं पुष्टां करीषिणीं ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियं ॥ आप्यायस्वेति पयः ॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सो

सुरभिर्नोमुखाकरप्र
 ॥ दधिक्रावणइतिदधि ॥ ॐ दधिक्रावणोअकारिपंजिणोरश्वस्यवाजिनः ॥ सुरभिर्नोमुखाकरप्र
 ॐ देवस्यत्वासचितुःप्रसवेश्विनोबोहुभ्योपुष्णोहस्ता
 ॥ इतिपंचगव्यविधिः ॥

भववाजस्यसंग्रहे ॥ दधिक्रावणइतिदधि ॥ ॐ दधिक्रावणोअकारिपंजिणोरश्वस्यत्वासचितुःप्रसवेश्विनोबोहुभ्योपुष्णोहस्ता
 ॐ देवस्यत्वासचितुःप्रसवेश्विनोबोहुभ्योपुष्णोहस्ता
 ॥ इतिपंचगव्यविधिः ॥

॥ ६७ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ आचम्यपवित्रंघृत्वाप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यश्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मामाध्याप्यानांचा
 धीतानांछंदआदीनांयातयामतानिरासेनाप्यायनद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं एभिर्ब्राह्मणैःसह अद्य (औपाकरणेऽह्नि) अंतरित
 मुत्सर्जनार्थंकरिष्ये । तत्रादौशरीरवाज्जनःशुद्ध्यर्थंपंचगव्यप्राशनंनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थंमहागणपतिपूजनंचकरिष्ये ॥ प्रथमं
 सर्वंपंचगव्यंप्राश्रीयुः॥तत्रमंत्रः॥ ॐयत्त्वगस्थिगतंपापंदेहेतिष्ठतिमामके । प्राशनंपंचगव्यस्यदहत्यग्निर्विघ्नं ॐ इतिप्राश्याद
 चामेत् एवंत्रिः । गणपतिपूजयित्वा ॥ अद्येत्यादिउत्सर्जनहोमंकर्तुंस्थंडिलादिसकलंकर्मकरिष्ये ॥ तद्गोमयेनप्रदक्षिणमुपलिप्य
 दक्षिणेऽष्टौचदीच्योद्वेप्रतीच्योचतुःप्राच्यामर्धमित्यंगुलानित्यक्त्वा दक्षिणोपक्रमामुदक्संस्थांप्रादेशमात्रामेकालेखांतस्याद
 र्गव्यं ॥ गणपतिपूजयित्वा ॥ अद्येत्यादिउत्सर्जनहोमंकर्तुंस्थंडिलादिसकलंकर्मकरिष्ये ॥ तद्गोमयेनप्रदक्षिणमुपलिप्य
 दक्षिणेऽष्टौचदीच्योद्वेप्रतीच्योचतुःप्राच्यामर्धमित्यंगुलानित्यक्त्वा दक्षिणोपक्रमामुदक्संस्थांप्रादेशमात्रामेकालेखांतस्याद

१ उत्सर्जनोपाकरणसभाराश्र-रगवल्ली (रागोळी) दर्भदूर्वामृत्समितगोमूत्रगोमयगोपयोदधिघृतभस्मतिलयवतदुलताबूलूगफलनारिकेलफलकद

लीफलककईवस्त्रयज्ञोपवीतगयपुष्पाक्षताघूपदीप गुडशर्कराचरुदधिसक्त्वधनवेणुधमनीपलाशपर्णाम्रपर्णसुक्लुवपर्णपुटासनाचमनपात्रताम्रकलशजल
 सेचनभाजनानि (ब्रह्मचारिणस्तु-बल्लभेखलाजिनकौपीनदंडाःपुण्याहवाचनंच इतिविशेषः) इतिसंपाद्य ।

क्षिणोत्तरयोः प्रागायते प्रादेशसंमिते द्वे लेखे लिखित्वा तयोर्मध्ये परस्परमसंसृष्टाः प्रागायताः प्रादेशसंमितास्ति स इति षड् लेखाय
 त्रिंशत्कलमूलेन दक्षिणहस्ते नो ह्रिष्य लेखा सुतच्छकलमुदगग्रं निधाय स्थंडिलमग्निरभ्युक्ष्य शकलमाग्नेयानिरस्य पाणिप्रक्षा
 गः ॥ ॐ जुष्टोदमूना अतिथिर्दुरोण इमं नो यज्ञमुपयाहि विद्वान् । विश्वा अग्ने अभियुजो विहत्या शत्रूयता मा भूरा भोजनानि ॥ एह्य
 म इह होतानि षीदा दब्धः सुपुंर एता भवानः । अर्वतां त्वारोद सी विश्वमिन्वेयजामहे सौमनसाय देवान् ॥ इत्यक्षतैरावाह्य आच्छा
 दनं दूरीकृत्य समस्तव्याहतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती अग्निप्रतिष्ठापने विनियोगः ॐ भूर्भुवःस्वः बलवर्धननामानम
 निप्रतिष्ठापयामि ॥ प्रोक्षिते धनादिनिक्षिप्य वेणुधमन्या प्रबोध्य ध्यायेत् ॥ चत्वारि शृंगान्नर्यो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्ता सो अस्य ॥ त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यो आ
 ति ध्याने विनियोगः ॥ ॐ चत्वारि शृंगान्नर्यो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्ता सो अस्य ॥ त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यो आ
 विवेश ॥ सप्तहस्तश्चतुःशृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः । त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मितः ॥ स्वाहांतु दक्षिणे पार्श्वे देवी
 वामे स्वधां तथा । बिभ्रद्दक्षिणहस्तैस्तु शक्तिमन्त्रं सुचंसुचं ॥ तोमरं व्यजनं वामैर्घृतपात्रं च धारयन् । मेषारूढो जटाबद्धो गौरवर्णो म
 हौजसः ॥ धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः । आत्माभिमुखमासीन एव रूपो हुताशनः ॥ अग्ने वैश्वानरशांडिल्यगो
 त्रमेषध्वजप्राङ्मुखमसंमुखो वरदो भव ॥ समिद्धयमादाय क्रियमाणे उत्सर्जनहोमे देवतापरिग्रहार्थमन्वाधानं करिष्ये ॥
 अस्मिन्नन्वाहिते गौजातवेदसमग्निमिधमेन प्रजापतिं प्रजापतिं चाधारदेवते आज्ये नानीषोमौ च क्षुषी आज्येन अत्र प्रधानं—सावि

त्रीं ब्रह्माणं श्रद्धां मेधां प्रज्ञां धारणां सदसस्सतिं अनुसतिं छंदांस्यपीन् एताः प्रधानदेवताः आज्यद्रव्येण ॥ पुनरत्र प्रधानं
नां-अग्निं असृणसूर्यान् अग्निं शकुंतं अग्निं मित्रावरुणौ अग्निं मरुतः अग्निं विश्वान्देवान् अग्निं इंद्रासोमौ
इंद्रं अग्न्यामरुतः पवमानसोमं सोमं अग्निं संज्ञानं एताः प्रधानदेवताः गृहसिद्धचक्रद्रव्येण ॥ शेषेणस्त्रिष्टुतमग्निमिध्म
संनहनेनरुद्रमयासमग्निदेवान् विष्णुमग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं चैताः प्रायश्चित्तदेवता आज्येन ज्ञाताज्ञातदोषनिवर्हणार्थं त्रिनारम
ग्निमरुतश्चाज्येन निश्चान्देवान् संस्वावेण अंगदेवताः प्रधानदेवताः सर्वाः सन्निहिताः संतुमांगोपांगेन कर्मणा सद्योयक्ष्ये ॥ सम
स्तव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती अन्नाधानसमिद्धो मेचि नियोगः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतय इदं नमम ॥
इध्मावर्हिपोश्च सन्नहनं त्रिःपरिसमूहनं परिस्तरणं ॥ तत्र प्राच्यां प्रतीच्यां चोदगग्रादर्भाः अत्राच्यामुदीच्यां च प्रागग्राः पूर्व
पश्चात्परिस्तरणमूलयोरुपरिर्दक्षिणपरिस्तरणं उत्तरपरिस्तरणं तु तदग्रयोरधस्तात्ते च दर्भाः अनियतसंख्या एकैकस्यां दिशि चत्वारः
रश्चत्वार इत्येवं षोडशवा ॥ ततोऽग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनार्थं उत्तरतश्च पान्नासादनार्थं कांश्चित् प्रागग्रान्दर्भानां स्तृणीयात् ॥ प्रणीताऽऽ
क्ष्णं ३ पवित्रकरणं पान्नासादनं उत्तरास्तीर्णे पुढर्भे पुदक्षिणसव्यपाणिभ्यां क्रमेण च रुस्थालीप्रोक्षण्यौ दर्धीस्रुवौ दधीभिस्तसा
ज्यपात्रे इध्मावर्हिणीचेति छेदं छेददगपवर्गप्राक्संस्थं न्युज्जान्यासादयेत् ॥ ततः प्रोक्षणीपान्नामुत्तानं कृत्वा तत्रानंतर्गोपकनि
ग्रसमस्थूलप्रादेशमात्रे कुशद्वयरूपे पवित्रे निधाय शुद्धाभिरद्भिस्तत्पात्रं पूरयित्वा गंधपुष्पाक्षतादिक्षित्वा इध्मं च विस्त्रस्य सर्वाणि पा
ष्ठिकाभ्यामुत्तानाभ्यां पाणिभ्यामुदगग्रे पृथक् पवित्रे धृत्वा अपस्तिरुत्पूय पात्राण्युत्तानानि कृत्वा

त्राणित्रिःप्रोक्षेत् ॥ ता अपः किंचित्कमंडलौ क्षिपेदित्येके प्रणीतापात्रमग्नेः प्रत्यङ्निधाय तत्र प्रागग्नेपवित्रे निधाय उत्पूताभिर
 ऋक्षत्पात्रं पूरयित्वा गंधपुष्पाक्षतान्निक्षिप्य मुखसममुद्धृत्य ॐ प्रणय अग्नेरुत्तरतो दर्भेषु निधाय तेषु वित्रे गृहीत्वा अन्यैर्दर्भैरा
 रुदक्रपरिस्तरणाद्वहिर्निरूढ्य तेष्वज्यपात्रे निधाय तत्पात्रं पुरतः संस्थाप्य तस्मिन्नाज्यमासिच्य अग्नेरुत्तरतः स्थितांगारान् भस्मना सहान्ने
 प्रक्षिप्य पुनर्ज्वलता तेनैव दर्भैर्लुकेन चरुणा सहान्नं त्रिःपर्यन्तिकृत्वा तदुल्मुकमपास्य अपः स्पृष्ट्वा आज्यपात्रं भुविकर्षन्निवो
 दगुह्यास्य अंगारान्मौप्रास्य तत्रस्थमेवाज्यं ॥ सवितुष्ट्वेत्यस्य हिरण्यस्तूपः सविता पुरलब्धिक् आज्यस्योत्पवने विनियोगः ॥
 ॐ सवितुष्ट्वा प्रसव उत्पुनाभ्यच्छिद्रेण पवित्रेण वसोः सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ प्रागुत्पुनाति सकृन्मन्त्रेण द्विस्तूर्णीं प्रोक्ष्य पवित्रं स्कंदाय
 स्वाहा स्कंदायेदं नमः । तत आत्मनोऽग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बर्हिः सन्नहनीं रज्जुमुदगग्रां प्रसार्य तस्यां बर्हिः प्रागग्रमुदगपवर्गमविरल
 मास्तीर्य तस्मिन्नाज्यपात्रं निधाय सुवादि संमार्जयेत् दक्षिणहस्तेन सुक्लुष्वौ गृहीत्वा सव्येन कांश्चिदर्भानादाय सहैवाग्नौ प्रताप्य
 सुचं निधाय सुवंवामहस्ते गृहीत्वा दक्षिणहस्तेन सुवस्य बिलंदर्भाग्नेः प्रागादि प्रागपवर्गं त्रिः संमृज्य अधस्ताद्दर्भाग्नेरेवाभ्यात्मं
 बिलपृष्ठं त्रिः संमृज्य ततो दर्भाणां मूर्धैर्दंडस्याधस्ताद्विलपृष्ठादारभ्य यावदुपरिष्ठाद्विलंतावत् त्रिः संमृज्य प्रोक्ष्य प्रताप्य आज्य
 स्थाल्या उत्तरतः स्थापयित्वा तैरेव दर्भैर्जुह्वैव मेव संमृज्य प्रोक्ष्य प्रताप्य सुवादुत्तरतो निधाय दर्भानग्निः क्षालयित्वाऽग्नावनु
 प्रहरेत् । ततः सुश्रुतं चरुं सुवगृहीतेनाज्येनाभिघार्य उदगुह्यास्य अन्याज्ययोर्मध्ये ननीत्वा आज्याद्वक्षिणतो बर्हिषि सां

॥ विश्वानि न रति तिसृणां वसुश्रुतोऽग्नि
 तरमासाद्य पुनरप्यभिघार्य अग्न्यायतनादेकादशांगुलमिते देशे ऽग्निं समंत्रमभ्यर्चयेत् ॥ विश्वानि न रति तिसृणां वसुश्रुतोऽग्नि
 स्त्रिष्टुप् द्वयोरर्चनं त्यायाउपस्थाने विनियोगः ॥ ॐ विश्वानि नो दुर्गाहा जातयेदः । ॐ सिंघुं न नुयादु रिततिपि ॥ ॐ अग्ने
 अत्रि वन्नमसागुणानः । ॐ अस्माकं त्रयोध्यवितातु नूत । ॐ यस्त्वाहृदाकीरिणामन्यमानः । ॐ अमर्त्यमर्त्यो जोहवीमि । अत्रि न
 ॐ जातयेदु यशो अस्मा सुधेहि । ॐ प्रजाभि रग्ने अमृतत्वमश्न्यां । ॐ यस्मत्त्वं सुकृते जातयेद उलोकमग्ने कृणवः स्यो न । अत्रि न
 सपुत्रिणं वीरवंतं गोमंतं र्थिनं शते स्त्रुति । आत्मानं चालं कृत्य हस्तं प्रक्षाल्य इधमंत्रं धनरज्जु मिधमस्थाने निधाय पाणिने धममादाय
 मूलमध्याग्नेषु वेणत्रि रभिघार्य मूलमध्ययोर्मध्यभागे गृहीत्वा ॥ अयं ते वामदेवो जातयेदा अग्निस्त्रिष्टुप् इधमहवने विनियोगः ।
 ॐ अयं त इधम आत्मा जातयेदस्तेनेध्यस्ववर्धस्व चेद्धवर्धय चास्मान् प्रजयापशुभि र्ब्रह्मवर्चसेना त्नाद्येन समेधय स्वाहा प्रजापतय इदं नमम । दक्षिणतः
 य इदं नमम । आधारहोमे वायव्यकोणमारभ्याग्नेयकोणपर्यंतं प्रजापतिपदं मनसोच्चार्य प्रजापतये स्वाहा अग्नय इदं नमम । दक्षिणतः
 नैऋतिकोणमारभ्य ईशानीकोणपर्यंतं प्रजापतये स्वाहा सावित्र्यै स्वाहा प्रजापतये स्वाहा अनुमतय इदं नमम । ॐ
 सोमाय स्वाहा सोमायेदं नमम ॥ अथ प्रधानाज्यहोमः । ॐ सावित्र्यै स्वाहा प्रजापतये स्वाहा अनुमतय इदं नमम । ॐ धा
 मम । ॐ अद्वायै स्वाहा श्रद्धाया इदं नमम । ॐ सदसससतय इदं नमम । ॐ प्रसूतो भक्षमं करं चराय पिस्तोमं चे मं प्रथमः सूरि
 रणायै स्वाहा धारणाया इदं नमम । ॐ सदसससतय इदं नमम । ॐ प्रसूतो भक्षमं करं चराय पिस्तोमं चे मं प्रथमः सूरि
 छंदोभ्यः पिभ्यः स्वाहा छंदोभ्यः पिभ्यः स्वाहा इदं नमम ॥ (अथ पंचावतीतिष्ठन् ॥)

न्मृजे । सुतेसातेनयद्यागमंवांप्रतिविश्वामित्रजमदग्नीदमे । इतिपठित्वाउपविश्यएकमवदानमधिकं गृह्यतामित्याचार्यप्रार्थये
 त्) ततःसुवेणस्रुच्याज्यमुपस्तीर्यचरुं द्विरवदायपात्रस्थमभिघार्यअवत्तंचाभिघार्य (पंचावत्तीचेत्तदाचरुं त्रिरवदाय) ॥ अग्नि
 मीळेवैश्वामित्रोमधुच्छंदाअग्निर्गायत्री उत्सर्जनप्रधानगृहसिद्धचरुहोमेविनियोगः ॥ ॐ अग्निमीळेपुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं ।
 होतारं रत्नधातमं स्वाहा । अग्नय इदं नमम ॥ १ ॥ कुषुंभकस्तदगस्त्योऽसृणसूर्याऽनुष्टुप् उत्सर्जनप्रधानगृह ॥ ॐ कुषुंभकस्त
 दब्रवीद्भिरेः प्रवर्तमानकः । वृश्चिकस्यारसं विषमरसं वृश्चिकते विषं स्वाहा । असृणसूर्येभ्य इदं नमम ॥ २ ॥ त्वमग्ने शौनको गृत्स
 मदोऽग्निर्जगती उत्सर्जन ० ॥ ॐ त्वमग्नेद्युभिस्त्वमागुशुक्षणिस्त्वमभ्यस्त्वमश्मनस्परि । त्वमग्ने भ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वनृणां नृपते
 जायसे शुचिः स्वाहा । अग्नय इदं नमम ॥ ३ ॥ आवदन् गृत्समदः शकुंतो जगती उत्सर्जनप्रधान ० ॥ ॐ आवदंस्त्वं शकुने भद्र
 मार्वदतूष्णीमासीनः सुमतिं चिकिच्छिनः । यदुत्पतन्वदसि कर्करिथेथा बहूह्रदे मविदथे सुवीराः स्वाहा । शकुंतायेदं नमम ॥ ४ ॥
 सोमस्य मागाधि नो विश्वामित्रोऽग्निस्त्रिष्टुप् उत्सर्जन ० ॥ ॐ सोमस्य मातवसं वक्ष्ये मेवाहि च कथं विदथे यजध्वै । देवो अच्छादीद्य
 हं जे आद्रिशमाये अग्ने तन्व जुषस्व स्वाहा । अग्नय इदं नमम ॥ ५ ॥ गृणाना भार्गवो जमदग्निर्मित्रावरुणौ गायत्री उत्सर्जन ० ॥ ॐ
 गणाना जमदग्निना योनौ वृतस्य सीदतं । पातंसोममृता वृधा स्वाहा । मित्रावरुणाभ्यामिदं नमम ॥ ६ ॥ त्वां ह्यग्ने गेतमो वामदे
 वीऽग्निरष्टी उत्सर्जन ० ॥ ॐ त्वां ह्यग्ने सदुमिर्त्समन्यवो देवा सो देवमरतिन्यैरिर इति क्रत्वान्यैरिरे । अमर्त्यं यजतमर्त्येष्वामिदेवमादे
 वं जनतु प्रचेतसं विश्वमादेवं जनतु प्रचेतसं स्वाहा ॥ अग्नय इदं नमम ॥ ७ ॥ धामं ते गेतमो वामदेव आपोजगती उत्सर्जन ० ॥

[illegible]

दिष्टयामधुच्छंदाः पवमानसोमोगायत्री उत्सर्जनप्रधानगृह० ॥ ॐ स्वादिष्टयामदिष्टयापर्वस्वसोमधारया । इन्द्रायपातविसु
तः स्वाहा पवमानसोमायेदं नमः ॥ १७ ॥ यत्तेराजन्मारीचः कश्यपः सोमः पंक्तिः उत्सर्जनप्रधान० ॥ ॐ यत्तेराजन्च्छु
तंहविस्तेनसोमाभिरक्षनः । अरातीवामानस्तारीन्मोचनः किंचनाममदिन्द्रायैदोपरिस्वस्वाहा सोमायेदं नमः ॥ १८ ॥
अग्नेवृहन्नाह्यस्त्रितोमिस्त्रिष्टुप् उत्सर्जनप्रधान० ॥ अग्नेवृहन्नुषसामध्वो अस्थान्निर्जगन्वान्तमसोज्योतिषागात् । अग्निर्भानु
नारुशतास्वंगआजातो विश्वासन्नान्यप्राः स्वाहा अग्नयइदं नमः ॥ १९ ॥ समानीवः संवननः संज्ञानमनुष्टुप् उत्सर्जनप्रधा
नगृहसिद्धचरुहोमेविनियोगः ॥ ॐ समानीव आकूतिः समानाहृदयानिवः । समानमस्तुवो मनोयथावः सुसुहासतिस्वाहासं
ज्ञानायेदं नमः ॥ २० ॥ स्विष्टकृतं द्विरभिधार्य ॥ यदस्येति हिरण्यगर्भोऽग्निः स्विष्टकृदतिधृतिः स्विष्टकृद्धोमेविनियोगः ॥
यश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्तसमर्धयस्वाहा स्विष्टकृतेऽग्नयइदं नमः ॥ त्रिसंनहनेन रुद्रं रुद्राय स्वाहा रुद्राये
दं नमः । अपउपस्पृश्य ॥ सर्वैः सह प्राणानायम्य ॥ पृथ्वीतिमंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः कूर्मो देवता सुतलंछंदः आसनेविनियोगः ।
ॐ पृथिवित्वया धृतालोका देवित्वं विष्णुना धृता । त्वंचधारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनं । अपसर्पंतु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते गच्छंतु शिवाज्ञया । अपक्रामंतु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशं । सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्मसमारभे । शरावे

१ अत्रोक्तं भट्टकुमारिलगृह्यकारिकासु—शाकल्यानां तु तच्छंयोरित्युच्यते । बाष्कलानां तु तच्छंयोरित्युच्यते ।

[illegible]

थाः । इदं जना उपश्रुत) । योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं । नारायणं नमस्कृत्य । अथातो धर्मव्याख्यास्यामः । अथातो धर्मजिज्ञासा । अथा
तो ब्रह्मजिज्ञासा । तच्छंयोरावृणीमहे गातुं यज्ञार्थं गातुं यज्ञपतये देवीः स्वस्ति रस्तु नः स्वस्ति मा नुषेभ्यः । ऊर्ध्वजिगातु भेषजं शनौ
अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ॐ नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नमो ओषधीभ्यः । नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे मह
ते करोमि ॥ इति त्रिः ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः । वृष्टिरसि वृश्च मे पाप्मानमृतात्सत्यमुपागाम् । सर्वे उत्सृष्टा वै वेदाः । इत्यु
क्त्वा जलं स्पृशेयुः । आचार्यहस्ते वेदान् दद्युश्च । ततः अयाश्चेति विमदोऽया अग्निः पंक्तिः प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः ॥ ॐ अ
याश्चाग्नेस्य नमि शस्तीश्च सत्यमि त्वमया असि । अयासावर्षसाकृतोयासं हव्यमूहि पेयानो धेहि भेषजं स्वाहा । अयसेऽग्नय इदं
नमम ॥ अतो देवा मेधातिथिर्देवा गायत्री प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः ॥ ॐ अतो देवा अवंतु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे । पृथिव्याः
सप्तधामभिः स्वाहा । देवेभ्य इदं नमम ॥ इदं विष्णुः काण्वो मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः । ॐ इदं विष्ण
र्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं । समूळमस्य पांसुरे स्वाहा । विष्णव इदं नमम । गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बहृत्यश्छंदांसि प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतय इदं नमम ॥ अनाज्ञात
य ऋषयः अग्निवायु सूर्यप्रजापतयो देवताः गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बहृत्यश्छंदांसि प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतय इदं नमम ॥ अनाज्ञात
इदं नमम । ॐ भुवः स्वाहा वायव इदं नमम । ॐ स्वः स्वाहा सूर्यायेदं नमम । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतय इदं नमम ॥ अनाज्ञात
मिति मंत्रद्वयस्य हिरण्यगर्भो मिरनुष्टुप् ज्ञाताज्ञातदोषनिवर्हणार्थं प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः । ॐ अनाज्ञातं यदाज्ञातं यज्ञ
स्य क्रियते मिथु । अग्नेतदस्य कल्पयत्व हिवेत्थ यथा तथ स्वाहा अग्नय इदं नमम । ॐ पुरुषसंमितो यज्ञो यज्ञः पुरुषसंमितः ।

[illegible]

आपोअस्मानित्यस्यदेवश्रवाआपस्त्रिष्टुप् मार्जनेविानयोगः ॥ ॐ आपोअस्मान्मातरःशुधयंतुघृतेननोघृतज्वःपुनंतु । विश्वं हि
 रिप्रं प्रवहति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतमि ॥ इदमापः सिंधुद्वीप आपोनुष्टुप् मार्जने विनियोगः ॥ ॐ इदमापः प्रवहतयत्किंचिदु
 स्तंहन्मि । इति नैर्ऋत्यां दिशिकुशाग्रैरपः सिंचेत् ॥ माहं प्रजां परा सिंचयानः सयावरीस्थन । समुद्रे वो निनयानि स्वं पाथो अपीथ ॥
 ता आपः समुद्रं गच्छेयुरिति चिन्तयन् गंगायमुनासरस्वत्यः स्मरन् अंजलिस्थदर्भैरात्मानमन्यांश्च मार्जयेत् ॥ ततः अग्नेर्वायव्य
 रादूच्छंदः अग्न्युपस्थाने विनियोगः ॥ ॐ अग्नेत्वन्नो अंतमउतत्राताशिवो भवावरूथ्यः । वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छानि क्षिद्युमत्तं मर
 यिदाः ॥ सनो बोधि श्रुधी हर्वमुरुष्याणो अधायतः समस्मात् ॥ तं त्वा शोचिष्ठदीदिवः सुन्नार्यननमीमहे सखिभ्यः ॥ उपविश्य
 परिस्तरणान्युत्तरे विसृजेत् परिसमूहनपर्युक्षणे कृत्वा विश्वानिन इत्यग्निगंधादिभिश्च पूजयित्वा ॐ अग्निस्तु विश्वस्तमंतु विज्र
 ह्माणमुत्तमम् । अतूर्तश्रावयत्यतिपन्नं ददाति दाशुषे ॥ अग्निर्देदातिसत्यतिसासाहृयोयुधानृभिः । अग्निरत्यैरघुष्यदुं जेतारम
 तनये मान आयौ मानो गोषु मानो अश्वेषुरीरिषः । मानस्तोक इत्यस्य कुत्सोरुद्रो जगती विभूतिग्रहणे विनियोगः ॥ ॐ मानस्तोके
 रितिललाटे कश्यपस्य त्र्यायुषं कंठे अगस्त्यस्य त्र्यायुषं नाभौ यदेवानां त्र्यायुषं दक्षिणस्कंधे तन्मे अस्तु त्र्यायुषं वामस्कंधे सर्व

तिभस्स स्थलमितिभस्स व्योमेतिभस्स सर्वं हवा इदं भस्म । ॐ मानस्तोकेतनयेमान आयौ मानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः । वीरा
 न्मानोरुद्रभामितोर्वधीर्हविष्मंतः सदुमित्वा हवामहे ॥ सर्वागे विलिप्य स्नात्वा आचम्य ॥ उत्सर्जनांगत्वेन गोमयस्नानं करि
 ष्ये ॥ ॐ गंधद्वारांदुराधर्षी नित्यपुष्टां करीषिणीं ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियं ॥ इति गोमयमादाय ॥ अग्रमग्रं चरं
 तीनामोषधीनां वने वने । तामामृपभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनं । तन्मे रोगांश्च शोकांश्च नुद गोमयसर्वदा । इति शिरः प्रभृत्यं
 गानि विलिप्य स्नात्वा आचम्य ॥ उत्सर्जनांगत्वेन मृत्तिकास्नानं मृत्संस्कारं च करिष्ये ॥ ॐ बलिं तथा पर्वतानां खिद्रं बिभ
 र्षिषु धि वि । प्रयाभूमिं प्रवत्वतिमह्नाजिनोर्बिमहिनि । इति भूमिं प्रार्थ्य ॥ ॐ मावोरिषत्खनितायस्मै चाहं खनामिवः । द्विपच्चतु
 ष्षपदुस्माकं सर्वमस्त्वनातुरं । इति खनित्वा । ॐ स्योनापृथिवि भवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्मसप्रथाः । इति मृदमादाय ।
 ॐ आयनेते परायणे दूर्वा रोहंतु पुष्पिणीः । इदाश्च पंडरीकाणिसमुद्रस्य गृहा इमे । इति दूर्वामादाय । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो दे
 वस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् । प्रोक्ष्य भूमौ निधाय । ॐ त्रातारमिंद्रमवितारमिंद्रं हवे हवे सुहवं शूरमिंद्रं । हवामि
 शुकं पुरुहूतमिंद्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विंद्रः ॥ पूर्वतः क्षिपेत् । ॐ यमाय सोमं सुनुतयमार्य जुहुता हविः । यमं हयज्ञो गच्छत्यग्नि
 दूतो अरंकृतः । दक्षिणतः । ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वंदमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेळमानो वरुणे हवो ध्युरुशंस
 मान आयुः प्रमोषीः । पश्चिमतः । ॐ वयं सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावतः सचेमहि । उत्तरतः । ॐ तत्सूर्यरोद
 सी उभे दोषावस्तोरुपब्रुवे । भोजेष्वसोऽभ्युच्चरासदा । उपरिष्ठात् । ॐ अधः पश्य स्वमोपरि संतरां पादुकाँ हर । माते कशलू

कौटुशन्तस्त्रीहिन्त्रह्वावभूर्विथ । अधः । (सर्वैर्मृदंवामहस्तेगृहीत्वाजलेनार्द्राकृत्य) ॐ सहस्रगीर्वापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात् ।
 समूर्मिविश्वतोवृत्वात्यतिष्ठदशांगुलं । शिरसि । ॐ अक्षीभ्यतिनासिकाभ्यांकर्णाभ्यांछुबुकादधि । यक्ष्मन्त्रीपुण्यमस्तिष्काज्जि
 ह्वायाविवृहामिते । मुखे । ॐ ग्रीवाभ्यस्तुष्णिहाभ्यःकीकसाभ्योअनुक्यात् । यक्ष्मदोपुण्य । ॐ नाभानाभिनुआदद्दे
 ठे । ॐ आन्त्रेभ्यस्तेगुदाभ्योवनिष्ठोर्हृदयादधि । यक्ष्मंसर्तस्ताभ्यांयुक्तःप्लाशिभ्योविवृहामिते । हृदये । ॐ नाभानाभिनुआदद्दे
 चक्षुश्चित्सूर्येसर्वा । क्षेत्रपत्यमादुहे । नाभौ । ॐ त्वामिन्द्रसजोपसमर्कविभर्षिन्वातोः । यज्रंशिशानओजसा । वाहोः । ॐ सोमा
 नंस्वरणंकृणुहिन्नक्षणास्पते । कक्षीर्वंत्यऔशिजः । कक्ष्योः । ॐ यःकृधिःसंकाःपुतनाश्चसर्वाःपुष्टेनिन्दोजयतिप्रसूतः ॥
 कुक्ष्योः । ॐ बह्वीनांपितावहुरस्यपुत्रश्चिश्चाकृणोतिसमनावगत्य । इपुधिःसंकाःपुतनाश्चसर्वाःपुष्टेनिन्दोजयतिप्रसूतः ॥
 पुष्टे । ॐ ऊरुभ्यतिअर्धवज्रांपार्णिभ्यांप्रपदाभ्यां । यक्ष्मंश्रोणिभ्यांभासद्वाङ्गंसेसोविवृहामिते ॥ ऊर्वोः । ॐ मेहनाद्धनंकर
 णाछोर्मभ्यस्तेनखेभ्यः ॥ यक्ष्मंसर्वस्माद्रात्मनस्तमिदंविबृहामिते ॥ जान्वोः । ॐ एतावानस्यमहिमातोऽज्यायाश्चपूरुषः ।
 पादोस्यविभ्यांभूतानिन्निपादस्यामृतंद्विवि ॥ पादयोः । ॐ यस्यनिश्वानिहस्तयोःपंचक्षितीनांचसु ॥ स्वाशयस्त्रयोअस्मष्टु
 गिद्व्येवाशनिर्जहि ॥ हस्तयोः । ॐ अंगादंगाछोन्नोलोन्नोजातंपर्ध्वणिपर्ध्वणि । यक्ष्मंसर्वस्माद्रात्मनस्तमिदंविबृहामिते ॥ इतिसतिल
 मंत्रेणपुरुषसूक्तेनचसर्वागविलिप्य । अर्धक्रांतैरथक्रांतैर्विष्णुक्रांतैर्वसुंधरे । शिरसाधारयिज्यामिरक्षस्वमापद्पदे ॥ इतिसतिल
 दूर्वामृदंशिरसिनिधाय मृत्तिकास्थानंप्रक्षाल्य भूमिप्रार्थयेत् ॥ भूमिर्धेनुर्धरणीलोकधारिणी । उद्धृतासिर्वराहेणकृण्वेनश

तवाहुना । मृत्तिकैर्हर्नमेपापंयन्मयादुष्कृतं कृतं । मृत्तिकैर्ब्रह्मदत्तासिकाश्यपेनाभिमन्त्रिता ॥ मृत्तिकैर्देहिमेपुष्टित्वयिसर्वप्र
तिष्ठितं । मृत्तिकैर्प्रतिष्ठितेसर्वतन्मेनिर्णुदमृत्तिके ॥ त्वयाहुतेनपापेनगच्छामिपरमांगतिं ॥ तीर्थप्रार्थयेत् ॥ ॐ हिरण्यशृंगं
द्रोवरुणोबृहस्पतिः सविताचपुनंतुपुनः पुनः । यन्मयाभुक्तमसाधूनापापेभ्यश्चप्रतिग्रहः । यन्मेमनसावाचाकर्मणावादुष्कृतं कृतं । तन्नइ
ध्वंयदंशांतदपगच्छतात् ॥ अत्याशनादतीपानाद्यच्चउग्रात्प्रतिग्रहात् । तन्नोवरुणोराजापाणिनाह्यवमर्शेतु ॥ सौहमपापो
विरजोनिर्मक्तोमुक्तकिल्बिषः । नार्कस्यपृष्ठमारुह्यगच्छेद्ब्रह्मसलोक्तं । यश्चाप्सुवरुणः सपुनात्वधमर्षणः ॥ सौहमपापो
योराजीर्गतिः शुनः शोपोवरुणस्त्रिष्टुप् वरुणप्रार्थनेविनियोगः ॥ ॐ अवतेहेल्लोवरुणनमोभिरवयज्ञेभिरीमहेहविभिः । क्षयै न
स्मभ्यमसुरप्रचेताराजन्नेनासिशिश्रथः कृतानि ॥ उदुत्तमंवरुणपाशमस्मदवाधमंविमध्यमंश्रथाय ॥ अथावयमादित्यव्रतेतवा
नागसोअदितयेस्याम ॥ याः प्रवतोवसिष्ठो नद्यः शक्वरी तीर्थाभिमर्शनेविनियोगः ॥ ॐ याः प्रवतोनिवर्तुद्वर्तुद्वर्तीरनुदुका
श्चयाः । ताअस्मभ्यंपयसापिन्वमानाः शिवादेवीरशिपुदाभवंतुसर्वानद्योअशिमिदाभवंतु ॥ इमंमेगंगइतिद्वयोः सिंधुक्षित्प्रैय
मेधोनद्योजगती तीर्थावल्लोडनेविनियोगः ॥ ॐ इमंमेगंगेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोमंसचतापरुण्या । असिक्न्यामरुद्धधेवि
तस्तयार्जोकीयेश्रृणुह्यासुषोमया ॥ सितासितेसरितेयत्रसंगथेत्त्राप्तासोदिवमुत्पतंति । येवैतन्वंशविसृजंतिधीरास्तेजना
सोअमृतत्वंभजंते ॥ सागरस्वननिर्घोषदंडहस्तासुरांतक । जगत्सहृजगन्मर्दिन्नमामित्वासुरेश्वर ॥ इमंमंत्रंसमुच्चार्यतीर्थस्ना

नंसमाचरेत् ॥ अन्यथातत्फलस्यार्धतीर्थेशोहरतिध्रुवं ॥ ॐ इदंतेन्याभिरसमानमुद्गिर्याःकाश्चमिधुप्रवहतिनद्यः ॥ सर्गो
जीर्णमिवत्वचंजहतिपापंसाशिरस्कोभ्युपेत्य ॥ नंदिर्नानलिलनीसीतामालतीचमलापहा । विष्णुपादानसंभूतांगंगान्निपथगा
मिनी । भागीरथीभोगवतीजाह्नवीत्रिदशेश्वरी । पुष्कराद्यानितीर्थानिगंगाद्याःसरितस्तथा । आगच्छंतुपवित्राणिस्नानकालेस
दामस । गंगांगेतिवोत्रयाद्योजनानांशतरपि । मुच्यतेसर्वपापेभ्योविष्णुलोकंसगच्छति ॥ आपोहिष्ठेतिवृचस्यांनरीपःमि
धुद्वीपआपोगायत्री मार्जनेविनियोगः ॥ ॐ आपोहिष्ठा ० चनः ॥ समुद्रज्येष्ठा आपोदेवीरिहमामवंतु ॥ ग्रामाराजावरुणोयाति
समुद्रज्येष्ठाःसलिलस्यमध्यात्पुनानायंत्यनिचिशमानाः । इंद्रोयात्रज्रीवृपुभोरुराद्रुता आपोदेवीरिहमामवंतु ॥ ग्रामाराजावरुणोयासुसोमोविश्वेदे
उतवास्रवतिखनित्रिमाउतवायाःस्वयंजाः । समुद्रार्थायाःशुचयःपावकास्ता आपोदेवीरिहमामवंतु ॥ यासुराजावरुणोपवत्सारःपवमानःसोमो
मध्येसत्यानेतेअवुपश्यज्जनानां । मधुश्रुतःशुचयोयाःपावकास्ता आपोदेवीरिहमामवंतु ॥ तस्मंदीतिचतसृणांकाश्यपावत्सः । तरुत्समं
वायासूर्जमदति । वैश्वानरोयास्वग्निःप्रविष्टस्ता आपोदेवीरिहमामवंतु ॥ तस्मंदीधोवति ॥ उस्मावेद्वयसूनांमतेस्यदेव्यवसः । तरुत्समं
गायत्री मार्जनेवि ॥ ॐ तरुत्समंदीधोवति ॥ आययोस्त्रिशतंतनासहस्राणिचदद्महे । शुद्धैरुक्थैर्वो
मंदीधोवति ॥ ध्वस्त्रयोःपुरुषंत्योरासहस्राणिदद्महे । एतोन्विद्रंस्तवामशुद्धंशुद्धेनसाम्ना । शुद्धैरुक्थैर्वो
दीधोवति ॥ एतोन्विद्रमिति तिसृणामंगिरसइंद्रोनुष्टुप् मार्जनेवि ॥ ॐ एतोन्विद्रंस्तवामशुद्धंशुद्धेनसाम्ना । शुद्धैरुक्थैर्वो
वृथांसंशुद्धआशीर्वन्ममनु ॥ इंद्रशुद्धोनुआर्गहिशुद्धःशुद्धाभिरुतिभिः । शुद्धोरुयिनिधारयशुद्धोममच्छिसोम्यः ॥ इंद्र

शुद्धो हिनोरयि शुद्धोरत्नानि दुःशुभे । शुद्धो वृत्राणि जिघ्रसे शुद्धो वाजैः सिपाससि ॥ ऋतं चेति तृचस्या धर्मर्षणो भाववृत्तमनुष्टुप् अ
 धर्मर्षणे विनियोगः ॥ ॐ ऋतं च सत्यं चाभीष्टा तपसोऽर्थजायत । ततो रात्र्यर्थाय ततः समुद्रो अर्णवः ॥ समुद्रा दर्पणवादि धिसंवत्स
 रो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्दिश्वस्यमिषतो वशी ॥ सूर्या चंद्रमसौ धाता रथार्थाय पूर्वमकल्पयत् ॥ दिवंच पृथिवीं चांतरिक्ष
 मथोऽस्वः ॥ स्नात्वा स्नानांगतपणं कुर्यात् । ब्रह्मादयो ये देवाः तान् देवांस्तर्पयामि भूदेवांस्तर्पयामि भूदेवांस्तर्पयामि भूदे
 वांस्तर्पयामि भूर्भुवः स्वदेवांस्तर्पयामि ॥ निवीती कृष्णद्वैपायनादयो ये ऋषयः तान् ऋषींस्तर्पयामि भूर्भुवः स्वदेवांस्तर्पयामि भूर्भुवः स्वदे
 र्पयामि स्वर्कृषींस्तर्पयामि भूर्भुवः स्वर्कृषींस्तर्पयामि ॥ भूः पितृंस्तर्पयामि ॥ भूर्भुवः स्वर्कृषींस्तर्पयामि भूर्भुवः स्वर्कृषींस्तर्पयामि भूर्भुवः स्वर्कृषींस्त
 यो ये पितरः ॥ तान् पितृंस्तर्पयामि ॥ भूः पितृंस्तर्पयामि ॥ भूर्भुवः स्वर्कृषींस्तर्पयामि भूर्भुवः स्वर्कृषींस्तर्पयामि भूर्भुवः स्वर्कृषींस्त
 मि ॥ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम ॥ भूवः पितृंस्तर्पयामि ॥ भूर्भुवः स्वर्कृषींस्तर्पयामि भूर्भुवः स्वर्कृषींस्तर्पयामि भूर्भुवः स्वर्कृषींस्त
 चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः ॥ ते गृहं तु मया दत्तं वस्त्रं निष्पीडनोदकं ॥ इति जलांजलिं तदे निक्षिप्य ॥ ये के
 पवीती ॥ यन्मया दूषितं तोयं शरीरमलसं भवात् ॥ तद्दोषपरिहारार्थं यक्ष्माणं तर्पयाम्यहं ॥ इति यक्ष्मतर्पणं कृत्वा ॥ ततः यज्ञो
 नतो वापियन्मे दुश्चरितं कृतं ॥ तत्क्षमस्वाखिलं देवि जगन्मातर्नमोस्तुते ॥ ६९ ॥ अथ ऋषिपूजनम् ॥

श्रीः ॥ धृतशुक्लांबरो निवीती ऋषीन्पूजयेत् ॥ देशकालौ संकीर्त्य उत्सर्जनांगत्वेन अरुंधती सहितकश्यपादिसप्तर्षिप्रीत्यर्थं आवाह
 ॥ ९४ ॥

नादिपोडशोपचारैः पूजनं करिष्ये ॥ ॐ ऋषेर्मंत्रकृतांस्तोमैः कश्यपो हृदयन् गिरः ॥ सोमं नमस्य राजानं योजज्ञे वीरुधां पतिरिन्द्रायै
 दोपरिस्त्रव ॥ कश्यपाय नमः कश्यपं आवाहयामि ॥ अत्रये नमः अत्रिं आवाहयामि ॥ ॐ प्रसूतो भक्षर्मकरं चरावपिस्तो
 नूतनेनागेच्छतमश्चिनाशं तमेन ॥ अत्रये नमः भरद्वाजाय नमः भरद्वाजं आवाहयामि ॥ ॐ गुणानाजमदं
 विद्यामवस्तोरवसागुणं तौ भरद्वाजा उत तं इंद्र नूनं ॥ विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रं आवाहयामि ॥ ॐ
 मंचेमं प्रथमः सूरिरुन्मृजे । सुते स तेन यद्यागं मंवां प्रति विश्वामित्रजमदग्नीदमे ॥ गौतमाय नमः गौतमं आवाहयामि ॥ ॐ
 ॐ अभित्वा गोतमा गिरा जात वेदो विचर्षणे । द्युन्नैरभिप्रणोनुमः ॥ गौतमाय नमः ॥ ॐ उतासिमैत्रावरुणो वसिष्ठो वै
 मिनायो नो वृतस्य सीदतं । पातं सोमं मृतावृधा ॥ जमदग्नये नमः जमदग्निं आवाहयामि ॥ ॐ
 इया ब्रह्मन्मनसोधिजातः । द्रप्सं स्कन्नं ब्रह्मणा देव्ये न विश्वे देवाः पुष्करत्वाददंत ॥ वसिष्ठाय नमः अरुंधतीं आवाहयामि ॥
 अत्रैर्यथानुसूयास्या हृसिष्ठस्याप्यरुंधती । कौशिकस्य यथासती तथा त्वमपि भर्तारि ॥ अरुंधत्यैनमः अरुंधतीं आवाहयामि ॥ ॐ
 तदस्तु मित्रा ० गृहवै ० सुप्रतिष्ठितमस्तु ॥ आवाहनादिप्रत्युपचारं देवा एतस्यामवदंत पूर्वैः सप्त ऋषयस्तर्पयेन्निपेदुः । भीमाज्ञा
 या ब्राह्मणस्योपनीता दुर्धोदधाति परमेव्योमन् ॥ इति मंत्रेण षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ इति ऋषिपूजा ॥ ॥ ४३ ॥

॥ ७० ॥ अथ ऋष्यादितर्पणम् ॥

या ब्राह्मणस्योपनीता दुर्धोदधाति परमेव्योमन् ॥ इति मंत्रेण षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ गौतमं तर्पयामि । जम
 साक्षतहस्तः कुशमध्येन । कश्यपं तर्पयामि । अत्रिं तर्पयामि । भरद्वाजं तर्पयामि । विश्वामित्रं तर्पयामि । गौतमं तर्पयामि । जम

दग्धितर्पयामि । वसिष्ठतर्पयामि । अरुंधतीतर्पयामि । उपवीतीदेवतीर्थेनकुशाग्रैः सावित्रीतर्पयामि । ब्रह्माण्तर्पयामि । श्रद्धांतर्पयामि । मेधांतर्पयामि । प्रज्ञांतर्पयामि । धारणांतर्पयामि । सदसस्यतितर्पयामि । अनुमतितर्पयामि । छंदांस्यूर्ध्वस्तर्पयामि ॥ अग्निंतर्पयामि । असृणसूर्यास्तर्पयामि । अग्निंतर्पयामि । शकुंततर्पयामि । अग्निंतर्पयामि । मित्रावरुणौतर्पयामि । अग्निंतर्पयामि । इन्द्रासोमौतर्पयामि । इन्द्रतर्पयामि । अग्निंतर्पयामि । विश्वान्देवांस्तर्पयामि । अग्निंतर्पयामि । संज्ञानंतर्पयामि ॥ ॥ अथब्रह्मयज्ञांगतर्पणं । प्रजापतिस्तृप्यतु । ब्रह्मातृप्यतु । वेदास्तृप्यतु । देवास्तृप्यतु । ऋषयस्तृप्यतु । सर्वाणिछंदांसितृप्यतु । ॐकारस्तृप्यतु । वषट्कारस्तृप्यतु । व्याहृतयस्तृप्यतु । सावित्रीतृप्यतु । यज्ञास्तृप्यतु । यज्ञास्तृप्यतु । अक्षस्तृप्यतु । रक्षांसितृप्यतु । भूतानितृप्यतु । नागास्तृप्यतु । समुद्रास्तृप्यतु । द्यावापृथिवीस्तृप्यतु । प्रगाथास्तृप्यतु । गृत्समदस्तृप्यतु । विश्वामित्रस्तृप्यतु । वामदेवस्तृप्यतु । अत्रिस्तृप्यतु । भरद्वाजस्तृप्यतु । वसिष्ठस्तृप्यतु । देवतीर्थमुक्तमरेण ' अंगुल्यग्नेतीर्थदैवं' इति । ऋजुहस्तेनांगुल्यग्रगाभिरद्भिरित्यर्थः । २ कनिष्ठांगुलिमूलगाभिरद्भिस्तर्पयेत् ।

गुष्ठपर्यंतं) पितृतीर्थेन द्विगुणीकृतकुशमूलैः । सुमंतुजैर्मिनिवैशंपायनपैलसूत्रभाष्यभारतमहाभारतधर्माचार्यास्तृप्यंतु ।
 जानंतिबाह्विगाग्यगौतमशाकल्यबाभ्रव्यमांडव्यमांडूकेयास्तृप्यंतु । गर्गीवाचकृवीतृप्यंतु । वडवाप्रातीथेयीतृप्यंतु ।
 सुलभामैत्रेयीतृप्यंतु । कहेळंतर्पयामि । कौषीतकंतर्पयामि । महाकौषीतकंतर्पयामि । वाष्कलंतर्पयामि । आश्वलायनंतर्पया
 सुयज्ञंतर्पयामि । सांख्यायनंतर्पयामि । ऐतरेयंतर्पयामि । महैतरेयंतर्पयामि । शौनकंतर्पयामि । शौनकनमस्तर्पयामि ।
 जातवक्रंतर्पयामि । औदवाहितर्पयामि । महौदवाहितर्पयामि । सौजामितर्पयामि । अमुकशर्माणं अमुकगोत्रं वसुरूपं स्वधानमस्तर्पयामि ।
 मि । येचान्येआचार्यास्तेसर्वेतृप्यंतु ॥ ततःस्वपितृतर्पणं ॥ अस्मत्पितरं अमुकशर्माणं अमुकगोत्रं वसुरूपं स्व० । सापत्नमातरं
 ३ । पितामहं अ० श० अ० गो० रुद्ररूपां स्व० । प्रपितामहीं अ० अ० गो० आदित्यरूपां स्व० । मातुःपितामहं अ० श० अ०
 वसुरूपां स्व० । पितामही अ० अ० गो० रुद्ररूपां स्व० । अमुकशर्माणं अमुकगोत्रं वसुरूपं स्व० । पत्नीं अमुकदां वसुरूपां स्व० ।
 अ० अ० गो० वसुरूपां स्व० । मातामहं अ० श० अ० गो० सप० आदित्यरूपं स्व० । सभर्तृकां ससुतां वसुरूपां स्व० । भ्रातरं अ०
 गो० सप० रुद्ररूपं स्व० । मातुःप्रपितामहं अ० श० अ० गो० सप० अमुकदां अमुक० सभर्तृकां ससुतां वसुरूपं स्व० । भ्रातरं अ०
 स्व० । सुतं अमुकशर्माणं अ० गो० सप० वसुरूपं स्व० । दुहितरं अमुकदां अमुक० सभर्तृकां ससुतां वसुरूपं स्व० । भ्रातरं अ०
 पितृव्यं अ० श० अ० गो० सप० वसुरूपं स्व० । मातुलं अ० श० अ० गो० सप० ससुतं वसुरूपं स्व० । भ्रातरं अ०

१ अगुष्ठागुलिमध्यगाभिरग्निः । २ एकैकमंजलिदेवेभ्योद्वौद्वावृषिभ्यस्त्रीस्त्रीन्पितृभ्य इति नियमो बह्वृचावैकल्पिकः । मातृत्रयीभिन्नस्त्रीणामेकोजलिः ।

श० अ० गो० सप० ससुतं वसु० स्व० । पितृभगिनीं अमुकदां अमुकगोत्रां सभर्तृकां वसुरूपां स्व० । मातृभगिनीं
 अमुकदां अमुकगोत्रां सभर्तृकां वसुरूपां स्व० । आत्मभगिनीं अमुकदां अ० गो० स० व० स्व० । श्वशुरं अ० श० अ० गो०
 सप० ससुतं वसुरूपं स्व० । गुरुं अ० श० अ० गो० सप० ससुतं वसुरूपं स्व० । शिष्यं अमुकशर्माणं अ० गो० वसुरूपं
 तर्पयामि । अंतकंतर्पयामि । वैवस्वतंतर्पयामि ॥ ततोचमतर्पणं । यमतर्पयामि । धर्मराजंतर्पयामि । मृत्युं
 पयामि । नीलंतर्पयामि । परमेष्ठिनंतर्पयामि । वृकोदरंतर्पयामि । चित्रगुप्तंतर्पयामि । औदुंबरंतर्पयामि । दधंत
 धर्मराजोवैवस्वतोदंडधरश्चकालः ॥ भूताधिपोदत्तकृतानुसारीकृतांतएतद्दशभिर्जपंति ॥ इतितिष्ठतोदशवारंसर्वजपयुः ॥ ॐ
 आमाअमृइहावसेहोत्रायविष्टभारती । वरूत्रीधिषणोवह ॥ १ ॥ अधीवासंपरिमातूरिहन्नहतुविघ्नेभिः सत्वभिर्थातिविज्र
 चः । वयोदधत्पद्मतेरोरेहृत्सदानुश्येनीसचतेवर्तनीरह ॥ २ ॥ अयं यशोदेवयाअयं मिथेधइमाब्रह्माण्ययमिद्रसोमः । स्त्रीणं
 बर्हिरातुशक्रप्रयाहिपिबानिषद्याविमुचाहरीइह ॥ ३ ॥ अतीयामनिदस्तिरः स्वस्तिभिर्हित्वावद्यमरातीः । वृषीशंयोरार्पण
 त्वर्हिरेर्वियाविस्तृणीतां । ४ ॥ अग्नेरक्षाणोअंहसः प्रतिष्मदेवरीषतः । तपिष्ठैरजरोदह ॥ ५ ॥ अग्नेभर्वसुषमिधासमिद्धउ
 युस्ततपपूरुषस्य । अधासवीरैरुदशभिर्विधूयाथोमामोधंयातुधानेत्याह ॥ ७ ॥ अध्वर्योद्रावयात्वंसोममिद्रः पिपासति । उपनूनं

अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवो आसादयाद्दिह ॥ ९ ॥ अग्नेवाधस्वविमृधो
८ ॥ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवो आसादयाद्दिह ॥ १० ॥ ततः शांत्यर्थे आनोभद्राः शंन
९ ॥ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवो आसादयाद्दिह ॥ ११ ॥ ततः शांत्यर्थे आनोभद्राः शंन

युयुजेवृषणाहरौआचम्योऽङ्गुलीनिचजपेत् ॥ ॐ विश्वेतामस्य ॥ वेदप्रीत्यथैत्राह्वणाः ॥
विदुर्गहापामीवामपरक्षौसिसेध । अस्मात्समद्राक्षुः ॥ इत्युत्सर्जनप्रयोगः ॥
विदुर्गहापामीवामपरक्षौसिसेध ॥ इतिमंत्रेणऋषीन्जलेउद्धासयेत् ॥ इत्यग्निं विसृज्यद्विराचामेत् ॥
इन्द्राग्नीइत्यादिशांतिस्मृत्यान्पठेत् ॥ इत्यग्निं विसृज्यद्विराचामेत् ॥ इत्युत्सर्जनप्रयोगः ॥
पारिवंत्यत्पुरुसंभृतं वस्वपावृणोः शरभाय ऋषिबंधवे ॥ इत्यग्निं विसृज्यद्विराचामेत् ॥
गच्छगच्छसुरश्रेष्ठस्वस्थाने परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छहुताशन ॥ इत्यग्निं विसृज्यद्विराचामेत् ॥
॥ ७१ ॥ अथोपागर्भप्रयोगः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ तदंगणपतिपूजनं स्थंडिलादिसर्वकर्मकरिण्ये ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ तदंगणपतिपूजनं स्थंडिलादिसर्वकर्मकरिण्ये ।

॥ ७३ ॥ अथानांवाधीतानामध्य

[illegible][illegible]

दधिसक्तुद्रव्येण शेषेणस्विष्टकृतमग्निमिधमसन्नहनेनरुद्रं यज्ञोपवीतेनपरमात्मानंअयासमग्निदेवान्विष्णुं० सद्योयक्ष्ये । पात्रो
 सादने दधिसक्तुस्थालीप्रोक्षण्यौइत्यादि दधिसक्तुनासहाज्यंत्रिःपर्यग्निकृत्वाचक्षुष्यतेन्वाधानोक्तसावित्र्यादिदशनाममंत्रैरा
 ज्यंहुत्वा अत्रपंचावत्तिनस्तिष्ठतः ॐ प्रसूतोभूक्षमकरंचरावपिस्तोमंचेमंप्रथमःसूरिरुन्मृजे ॥ सुतेसातेनचद्यार्गमंवांप्रतिविश्वा
 मित्रजमदग्नीदमे ॥ इतिमंत्रंपठेयुः ॥ पंचावतीतुदव्यासुपस्तीर्यमध्यात्पूर्वाधात्पश्चाच्चत्रिहविषोवदायाभिधार्यजुहुयात् ॥ पात्रो
 अग्निमीळेवैश्वामित्रोमधुच्छंदाअग्निर्गायत्री ॥ उपाकर्मप्रधानदधिसक्तुहोमेविनियोगः ॥ ॐ अग्निमीळेपूरोहितयज्ञस्यदेवम
 त्विज ॥ होतारंरत्नधातमंस्वाहा ॥ अग्नयइदं० ॥ कुशंभकस्तदगस्त्योसृणसूर्याअनुष्टुप् ॥ उपाकर्मप्र० ॥ ॐ कृषंभकस्तदब्रवी
 द्विरेःप्रवर्तमानकः ॥ वृश्चिकत्यारसंविषमरसंवृश्चिकतेविषंस्वाहा ॥ असृणसूर्येभ्यइ० ॥ त्वमग्नेद्युभिरित्यस्यशौनकोगृत्सम
 दोऽग्निर्जगती ॥ उपाकर्म० ॥ ॐ त्वमग्नेद्युभिस्त्वमाशुशुक्षणिस्त्वमग्न्यस्त्वमश्मनस्परि ॥ त्वंवनैभ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वनृणांनृप
 तेजायसेशुचिःस्वाहा ॥ अग्नयइ० ॥ आवदन्धौनकोगृत्समदःशकुंतोजगती ॥ उपाकर्म० ॥ ॐ आवदंस्त्वंशकुनेभद्रमावदतू
 षणीमासीनःसुमतिंचिकिद्भिनः ॥ यदुत्पतन्वदसिकर्कुरिथेथावहृदंदेमविदथेसुवीराःस्वाहा ॥ शकुंतायेदं० ॥ सोमस्यमागा
 अधिंशमायेअग्नेतन्वजुपस्वस्वाहा ॥ उपाकर्मप्रधा० ॥ ॐ सोमस्यमातवसंवक्ष्यग्नेवाल्लिचकर्थविदथेयजध्वे ॥ देवोअच्छादीर्घद्युजे
 ? हुत्वाज्यंनवभिर्मत्रैःसावित्र्याधैरतःपरं । अथावदानधर्मेणतान्सक्तून्दधिसंहुतान् । हुत्वाग्निमीळइत्याधैर्मत्रैर्विशतिभिःक्रमात् ॥

[illegible]

ण्यत ॥ इन्द्रमिस्तौतावृषणंसर्चासुतेमुहुरुक्थार्चशंसतस्वाहा ॥ इन्द्राये० ॥ आग्नेयाहिंसौभरिरभामरुतोऽनुष्टुप् ॥ उपाक० ॥
 ॐ आग्नेयाहिमरुत्सखारुद्रेभिःसोमपीतये ॥ सोमर्याऽउपसुष्टुतिमादयस्वस्वर्णरेस्वाहा ॥ अग्नारुद्व्यइ० ॥ स्वादिष्ठया
 नसोमायेदं० ॥ यत्तेराजन्मारीचःकश्यपःसोमःपंक्तिः ॥ उपाकर्म० ॥ उपाकर्म० ॥ इन्द्रायपातेवसुतःस्वाहा ॥ पवमा
 नस्तारीन्मोचनःकिंचनाममदिन्द्रायेंदोपरिस्त्रवस्वाहा ॥ सोमायेदं० ॥ अग्नेबृहन्नाप्यस्त्रितोऽग्निस्त्रिष्टुप् ॥ उपाक० ॥ अरातीवामा
 समानीवइत्यस्यांगिरसःसंवन्नःसंज्ञानमनुष्टुप् ॥ उपाक० ॥ ॐ समानीवआकूतिःसमानाहृदयानिवः ॥ समानमस्तुवोमनोयथा
 वःसुसुहासंतिस्वाहा ॥ संज्ञानायेदं० ॥ ततःस्विष्टकृतंहुत्वारजं प्रहृत्यदधिसक्तुप्राश्नीयुः ॥ दधिक्राव्णोवामदेवोदधिक्रावानुष्टुप्
 दधिसक्तुप्राशनेविनियोगः॥ ॐ दधिक्राव्णोअकारिषंजिष्णोरश्वस्यवाजिनः ॥ दधिक्राव्णोवामदेवोदधिक्रावानुष्टुप्
 प्राश्यआचम्य ॥ ततउत्तरपरिस्तरणतोमार्जनं परिस्तरणदर्भाणामधस्तादंजलिंनिधायअन्येनापःपूरयित्वाताभिःसर्वान्मार्जये
 त् ॥ यज्ञोपवीतमितिमंत्रस्य परब्रह्मपरमात्मान्निष्टुप् यज्ञोपवीतहवनेविनियोगः ॥ ॐ यज्ञोपवीतं परमंपवित्रंप्रजापतेर्यत्सहजंपु
 रस्तात् ॥ आयुष्यमग्र्यंप्रतिमुंचशुभ्रंयज्ञोपवीतंबलमस्तुतेजःस्वाहा ॥ परमात्मनइदंनमम ॥ ततःब्राह्मणेभ्योदत्त्वास्वयंधारयेत् ॥
 अन्येसर्वेपिस्वस्वधार्ययज्ञोपवीतानिपृथगभिमंत्र्यधारयेयुः ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ७२ ॥ यज्ञोपवीताभिमंत्रणम् ॥

उपाकर्मागत्येनयज्ञोपवीताभिमंत्रणधारणंचक० ॥ ब्रह्मजज्ञानंगौतमोवामदेवोब्रह्मात्रिष्टुप् । सूत्रकरणेवि० । ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथ
मंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोर्वेन आवः ॥ सवृद्ध्याऽपुमा अस्य विष्टाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ इदं विष्णुः काण्वो मेधातिथिर्विष्णु
र्गायत्री सूत्रत्रिगुणीकरणेवि० । ॐ इदं विष्णुः ॥ त्र्यंबकं मेत्रावरुणिर्वसिष्ठो रुद्रो नुष्टुप् । ग्रंथिबंधने विनियो० । ॐ त्र्यंबकं यजा
मेहे० ॥ आपो हि षेति तृचस्यांबरीपः सिंधुद्वीप आपो गायत्री यज्ञोपवीताभिमंत्रणेवि० । ॐ आपो हि ष्ठा० ३ ऋचः । हिरण्य
वर्णाः शुचयः पावकाया सुजातः कश्यपो यास्विद्रः । अग्निगर्भे दधिरे विरूपास्तान आपः शः स्योना भवंतु ॥ यासां राजावरु
णो याति मध्ये सत्या नृते अवपश्यं जनानां । मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्तान आपः शः स्योना भवंतु ॥ शिवेन माचक्षुषापश्यतापः शिवर्षिणिः ।
भक्षया अंतरिक्षे बहुधा भवति । याः पृथिवी पयसो दंति शुक्रास्तान आपः शः स्योना भवंतु ॥ पवित्रेण विचर्षिणिः ।
नुवो पस्पृशत त्वचमै । सर्वा अग्नीं रप्सुपदो हुवेवो मयि चो बलमोजो निधत्त ॥ ॐ पर्वमानः सुवर्जनः । पवित्रेण पुनाहि मा ।
यः पोता स पुनातु मा । पुनंतु मा देवजनाः । पुनंतु मनवो धिया । पुनंतु विश्व आयवः । जातवेदः पवित्रवत् । पवित्रेण पुनाहि मा ।
शुक्रेण देव दीधत् । अग्ने क्रत्या क्रतुं ॥ यत्तं पवित्रमर्चिषि । अग्ने विततमंतरा । ब्रह्म तेन पुनीमहे । उभाभ्यां देव सवितः ।
पवित्रेण सुवेन च । इदं ब्रह्म पुनीमहे । वैश्वदेवी पुनती देव्या गात । यस्यै ब्रह्मीस्तनुवो वीतपृष्ठाः । तया मदतः सधमाद्येषु । न

१ वेदारं भणतः पूर्वसक्तु प्राशनतः परं ॥ नवयज्ञोपवीतानि हुत्वा दत्त्वा च धारयेत् ॥

○
○
○
○

11211

यश्चात्मपतयोरयीणां । वैश्वानरोरदिमभिर्मापुनातु । वार्तःप्राणेनेषिरोमयोभूः । द्यावापृथिवीपर्यसापयोभिः । ऋतावरी
यज्ञिथेमापुनीतां । बृहद्भिःसवितस्त्रिभिः । वर्षिष्ठेदेवमन्मभिः । अग्नेदक्षैःपुनाहिमा । येनदेवाअपुनत । येनापोदिव्यंकशः ।
तेनदिव्येनब्रह्मणा । इदंब्रह्मपुनीमहे । यःपावमानीरुध्येति । ऋषिभिःसंभृतश्चरसं । सर्वस्सपुतमश्नाति । स्वद्वितंमातरिश्रवणा ।
पावमानीर्योऽअध्येति । ऋषिभिःसंभृतश्चरसं । तस्मैसरस्वतीदुहे । क्षीरस्सर्पिर्मधूदकं । पावमानीःस्वस्त्ययनीः । सुदुधाहिपर्य
स्वतीः । ऋषिभिःसंभृतोरसः । ब्राह्मणेव्वमृतश्चित्तं । पावमानीर्दिशंतुनः । इमंलोकमथोअमुं । कामान्त्सर्मर्धयंतुनः । दे
वीर्देवैःसमाभृताः । पावमानीःस्वस्त्ययनीः । सुदुधाहिर्घृतश्चुतः । ऋषिभिःसंभृतोरसः । ब्राह्मणेव्वमृतश्चित्तं । येनदेवाः
पवित्रेण । आत्मानंपुनतेसदा । तेनसहस्रधारेण । पावमान्यःपुनंतुमा । प्राजापत्यंपवित्रं । शतोद्यामश्चहिरण्मय । तेनब्र
ह्मविदोवयं । पतंब्रह्मपुनीमहे । इंद्रःसुनीतीसहमापुनातु । सोमःस्वस्त्यावरुणःसमीच्या । यमोराराजाप्रमृणाभिःपुनातुमा ।
जातवेदामोर्जयत्यापुनातु । ॐ भूरग्निंचपृथिवींचमांच । त्रींश्चलोकान्त्संवत्सरंच । प्रजापतिस्त्वासादयतु । तयादेवतयां
गिरस्वष्टुवासीद । ॐ भूर्वायुंचांतरिक्षंचमांच । त्रींश्चलोकान्त्संवत्सरंच । प्रजापतिस्त्वासादयतु । तयादेवतयां
स्वष्टुवासीद । ॐ स्वरादित्यंचदिवंचमांच । त्रींश्चलोकान्त्संवत्सरंच । प्रजापतिस्त्वासादयतु । तयादेवतयां
सीद ॥ ॐ भूर्भुवःसुवश्चंद्रमंसंचदिशश्चमांच । त्रींश्चलोकान्त्संवत्सरंच । प्रजापतिस्त्वासादयतु । तयादेवतयां
वासीद ॥ ॐकारंप्रथमतैतैन्यसामि । अग्निद्वितीयतैतैन्यसामि । नागांस्तृतीयतैतैन्यसामि । सोमंचतुर्थतैतैन्यसामि ।

पितृन्पंचमतंतौन्यसामि । प्रजापतिपष्ठतंतौन्यसामि । वायुसप्तमतंतौन्यसामि । सूर्यअष्टमतंतौन्यसामि । विश्वान्देवान्नव
 मतंतौन्यसामि ॥ ऋग्वेदंप्रथमदोरकेन्यसामि । यजुर्वेदंद्वितीयदोरकेन्यसामि । सामवेदंतृतीयदोरकेन्यसामि । अथर्ववेदं
 मंतंतौन्यसामि ॥ ऋग्वेदंप्रथमदोरकेन्यसामि । यजुर्वेदंद्वितीयदोरकेन्यसामि । सामवेदंतृतीयदोरकेन्यसामि । अथर्ववेदं
 ग्रंथौन्यसामि । प्रतिपक्षोपवीतंदशगायत्रीमंत्रंजप्त्वा । उद्यन्नद्येति सृभिःसूर्यायदर्शयित्वा । ॐ यज्ञोपवीतंप
 ज्ञोपवीतमिति मंत्रस्य परब्रह्मपरमात्मा त्रिष्टुप् । श्रौतस्मार्तिकमनुष्ठानसिद्ध्यर्थं यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः । इति मंत्रेण प्रथमं दक्षिणबाहुमुद्धृत्य
 रमंपवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्रं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः । इति मंत्रेण प्रथमं दक्षिणबाहुमुद्धृत्य
 पश्चात्कंठे धारयेत् ॥ आचम्य ॥ समुद्रंगच्छ स्वाहा । इति जीर्णयज्ञोपवीतं जले विसर्जयेत् । ततः सर्वैः सह प्राणानाचम्य
 पृथ्वीति मंत्रस्य इत्याद्युत्सर्जनं गतं ब्रह्म यज्ञं ते सर्वे उपाकृता वै वेदाः इत्युक्त्वा अंजलिस्थान्कुशान्दक्षिणकटौ निवेशयेयुः ॥
 तत आचार्यः प्रायश्चित्तादि होमशेषं समापयेत् ॥ इत्युपाकर्मप्रयोगः ॥
 विसृज्य कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा विष्णुं नत्वा द्विराचामेत् ॥ ७३ ॥ अथ नूतनं ब्रह्मचारि सिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं उपाकर्मार्ख्यं
 तत्रोपाकर्मणि विशेषः । देशकालौ निर्दिश्यास्य नूतनं ब्रह्मचारिणः वेदग्रहणाधिकारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं उपाकर्मार्ख्यं
 कर्मकरिष्ये । आदौ निर्विघ्नतां सिद्ध्यर्थं महागणपतिपूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नां दीश्राद्धं च करिष्ये इति संकल्प्य
 नां दीश्राद्धांतं कृत्वा शेषं सर्वपूर्ववत्कुर्यात् । यज्ञोपवीतधारणकाले । ब्रह्मचारी चेत्कटिसूत्रकौपीनवस्त्राजिनयज्ञोपवीतमेखला

दंडानुपनयनवद्धारयित्वापुराणानि जले निक्षिपेत् ॥ तत्र मंत्राः । युवंवस्त्राणीत्यस्यौच्यो दीर्घतमामित्रावरुणौ त्रिष्टुप् ॥
 वस्त्रधारणे विनि० ॥ ॐ युवंवस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मंतवो हसर्गाः ॥ अवातिरतमनृतानि विश्वऋतेन मित्रावरुणा
 मिच्छं ॥ अनाहनस्यं वसनं जरिणुपरीदं वाज्यजिनंदधेहं ॥ अजिनधारणे वि० ॥ ॐ मित्रस्य चक्षुर्धरुणं बलीयस्ते जोयशस्वी स्थविरंस
 कादिति द्वयोर्वा मदेवो मेखला त्रिष्टुप् ॥ यज्ञोपवीतमिति० यज्ञोपवीतधारणे० ॥ ॐ यज्ञोप० तेजः ॥ इयंदुरु
 णापानाभ्यां बलमाभरंती प्रिया देवानां सुभगामेखलेयं ॥ ऋतस्य गोप्त्री तपसः परस्वीघ्नती रक्षः सहमाना अरातीः ॥ प्रा
 मनुपरे हि भद्रया भर्तारस्ते मेखले मारिषाम् ॥ मेखलां त्रिरावृत्य नाभिप्रदेशं ग्रन्थि त्रयं कुर्यात् ॥ स्वस्ति न इत्यस्य स्वस्त्या त्रेयो विश्वे दे
 वास्त्रिष्टुप् ॥ दंडदाने वि० ॥ ॐ स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनुवर्णः ॥ स्वस्ति पृषा असुरो दधातुनः स्वस्ति द्या
 वापृथिवी सुचेतुना ॥ अदांतं दमयित्वा मां मार्गं संस्थापय नस्वयं ॥ दंडः करे स्थितो यस्मात्तस्माद्रक्षयतो भयं ॥ इति विशेषः ॥ ततः
 समाप्तौ कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा यथाशक्ति ब्राह्मणभोजनं संकल्प्य ब्राह्मणान्संपूज्य कर्मेश्वरार्पणं ॥ इति नूतन ब्रह्मचारिण उपकर्म ॥

श्रीः ॥ आचम्य देशकालौ संकीर्त्य पुराणोक्तफलावाप्त्यर्थं मम इह जन्मनि जन्मान्तरे चाखंडितसौभाग्याद्यवाप्तये पुत्रपौत्रधन
 धान्यादिसमृद्धये वांछितसर्वमनोरथप्राप्तये च सभादीपदानकल्पोक्तफलावाप्तिकामाऽहं ब्रह्मविष्णुरुद्रप्रीत्यर्थं ब्राह्मणसभायां

अग्निसंनिधौ ब्राह्मणाय सभादीपदानं करिष्ये । तत्रादौ गणपतिपूजनं पंचशब्दैः पुण्याहवाचनं दीपपूजनं ब्राह्मणपूजनं च करिष्ये ।

श्रावणे दीपपूजां कृत्वा ब्राह्मणं संपूज्य । भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं ज्योतिषां प्रभुरव्ययः ॥ आरोग्यं देहि पुत्रांश्च अवैधव्यं प्रयच्छ मे । सपादं तं मास्युपाकर्मण्यारब्धे विप्रसंसदि । ब्रीहितं डुलपिष्टस्य पाचितेन च निमित्तं । घृतवर्त्यग्निं संयुक्तं विमलेकां स्य भाजने । ब्रह्मविष्णुमहे ङुलप्रस्थं पूरितं सुप्रतिष्ठितं । अवैधव्यं सुपुत्रत्वं दीर्घायुः श्रीसुखाप्तये । सभादीपप्रदानेन तु भ्यं विप्रसदक्षिणं । श्रावण्यां श्रावणर्क्षे च शाश्च प्रीयंतां दीपदानतः । ममाभीष्टप्रदाः संतु भवे स्मिन्वा भवांतरे । स्वस्त्यस्तु दीर्घमायुः श्रेयः शांतिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु । इदं सभादीप सभायामग्निसन्निधौ । सभादीपप्रदानेन ततः शांतिं प्रयच्छ मे । स्वस्त्यस्तु दीर्घमायुः श्रेयः शांतिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु । इदं सभादीपदानं दानं दक्षिणां बूलसहितं अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तु भ्यमहं संप्रददे तेन श्रीब्रह्मविष्णुरुद्राः प्रीयंतां ॥ इतिसभादीपदानविधिः ॥

समायामग्निसन्निधानि ॥ ७५ ॥ अथ शांतिस्सूक्तानि ॥

दानं दक्षिणां बूलसहितं अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तु भ्यमहं संप्रददे तेन श्रीब्रह्मविष्णुरुद्राः प्रीयंतां ॥ इतिसभादीपदानविधिः ॥

श्रीः ॥ आनो भद्रा इति दशर्चस्य सूक्तस्य गौतमो राहूगणो विश्वे देवा जगती पष्ठी विराट् स्थाना अंत्या स्तिष्ठ स्त्रिष्टुभः । स्वस्ति न इति पंचानां स्वस्त्या त्रेयो विश्वे देवा स्त्रिष्टुप् अन्ये द्वे अनुष्टुभौ । शंन इंद्राग्नीति पंचदशर्चस्य सूक्तस्य वसिष्ठो विश्वे देवा स्त्रिष्टुप् । य त इंद्रेति पणां भर्गः प्रगाथ इंद्रः प्रागाथं । भद्रं न इत्यस्य ऐंद्रो विमदोऽग्निरेकपदा विराट् । आशुः शिशान इति त्रयोदशर्चस्य सूक्त तं इदं त्रिरथ ऐंद्र इंद्रो देवता चतुर्थ्या बृहस्पतिः द्वादश्या अप्वा त्रयोदश्या इंद्रो मरुतो वा त्रिष्टुब् अंत्यानुष्टुप् । मुंचामित्वेति पंचर्चस्य सूक्तस्य यक्ष्मनाशनः प्राजापत्यो राजयक्ष्मन् त्रिष्टुप् अंत्यानुष्टुप् । त्र्यमृष्वितितृचस्य सूक्तस्यारिष्टनेमिस्ताक्ष्यस्ताक्ष्यं स्त्रिष्टुप् ।

माहित्रीणामितृचस्यसूक्तस्यसत्यधृतिर्वारुणिरदितिः स्वस्त्ययनंगायत्री । रात्रीव्यख्यदित्यष्टर्चस्यसूक्तस्यकुशिकः सौभरो
 रात्रिर्वाभारद्वाजीरात्रिस्तवोगायत्रं । सर्वारिष्टशान्त्यर्थे शांतिसूक्तरात्रिसूक्तजपे विनियोगः ॥ ॐ आनो भद्राः क्रतवो यंतु वि
 श्वतो दब्धा सो अपरीता स उद्भिदः ॥ देवानो यथा स दुमिहृधे असन्न प्रायुवोरक्षितारो दिवो दिवे ॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजयतां
 त्रमादिति दक्षमस्त्रिधं ॥ अर्यमणं वरुणं सोमं भिना सरस्वती नः सुभगमयं स्करत् ॥ तन्नो वातो मयो भुवतु भेषजं तन्माता पृथि
 वी तत्पिता द्यौः ॥ तद्भावाणः सोम सुतो मयो भुवस्तदधिना शृणु तं धिष्ण्यायुवं ॥ तमीशानं जगत्स्तथुषसति धियं जिन्यमवसे
 ह्रमहेवयं ॥ पृषानो यथा वेदं सामस हृधेरक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ १ ॥ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पषाविश्ववेदाः ॥
 स्वस्ति न स्ताक्षर्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ पृषदध्वामरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदधे पूजगमयः ॥ अग्निजि
 ह्वामर्नवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवाऽअवसागमन्निह ॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांस
 रिषतायुर्गतोः ॥ अदितिर्द्यौरदितिरंक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः ॥ विश्वे देवा अदितिः पंचजना अदितिर्जातमदितिर्जनि त्वं
 ॥ २ ॥ स्वस्ति नो मिमीतामधिना भगः स्वस्ति देव्यादिति रनवर्णः ॥ स्वस्ति पपा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावा पृथिवी सुचेतुना ॥ स्वस्त
 ये वायुमुपब्रवामहे सोमं स्वस्ति भुव नस्यय सतिः ॥ बृहस्पतिं सर्वगं स्वस्तये स्वस्तये आदित्या सो भवंतु नः ॥ विश्वे देवा नो अद्यास्व

स्तथैश्वानरोवसुरग्निःस्वस्तये ॥ देवाऽअवत्वभवःस्वस्तयेस्वस्तिनोरुद्रःपात्वंहसः ॥ स्वस्तिमित्रावरुणास्वस्तिपथ्येरेवति ॥
 स्वस्तिनृन्द्रश्चाग्निश्चस्वस्तिनोअदितेकृधि ॥ स्वस्तिपथ्यामनुचरेमसूर्याचंद्रमसाविव ॥ पुनर्ददताघ्नताजानतासंगममहि ॥ ३ ॥
 स्वस्त्ययनंताक्ष्यमरिष्टनेमिमहभ्रूतंवायुसंदेवतानां ॥ असुरघ्नमिंद्रसखंसमत्सुबृहद्यशोनावमिवारुहेम ॥ अंहोमुचमांगिरसंग
 अचस्वस्त्यात्रियंमनसाचताक्ष्य ॥ प्रयतपाणिःशरणंप्रपद्येस्वस्तिसंवाधेष्वभयनोऽअस्तु ॥ ४ ॥ शंनंइंद्राग्नीभवतामवोभिःशंनंइ
 द्रावरुणारातहव्या ॥ शमिद्रासोमोसुवितायशयोःशंनंइंद्रापूषणवावाजसातौ ॥ शंनोभगःशमुनःशंसोअस्तुशंनःपुरंधिःशंमुसं
 तुरायः ॥ शंनःसत्यस्यसुयमस्यशंसःशंनोअग्निर्योतिरनीकोअस्तुशंनोमित्रावरुणावश्चनाशं ॥ शंनःसुकृतौ
 रोदसीबृहतीशंनोअद्रिःशंनोदेवानासुहवानिसंतु ॥ शंनोअग्निर्योतिरनीकोअस्तुशंनोमित्रावरुणावश्चनाशं ॥ शंनःसुकृतौ
 सुकृतानिसंतुशंनंइषिरोअभिवानुवातः ॥ शंनोद्यावापृथिवीपूर्वहृतौशमंतरिक्षंहृशयेनोअस्तु ॥ शंनोरुद्रोरुद्रेभिर्जलाषःशंनस्त्वष्टा
 नोरजससातिरस्तुजिष्णुः ॥ ५ ॥ शंनंइंद्रोवसुभिर्देवोअस्तुशमोदित्येभिवरुणःसुशंसः ॥ शंनोरुद्रोरुद्रेभिर्जलाषःशंनस्त्वष्टा
 नाभिरिहशृणोतु ॥ शंनःसोमोभवतुब्रह्मशंनःशंनोग्रावाणःशमुसंतुयज्ञाः ॥ शंनःस्वरुणांसितयोभवंतुशंनःप्रस्व १ःशम्बस्तुवे
 दिः ॥ शंनःसूर्यउरुचक्षाउदेतुशंनश्चतस्रःप्रदिशोभवंतु ॥ शंनःपर्वताध्रुवयोभवंतुशंनःसिधवःशमुसंतुवापः ॥ शंनोदेवःसंवितात्रायमाणःशंनो
 ब्रतेभिःशंनोभवंतुमरुतःस्वर्काः ॥ शंनोविष्णुःशमुपुषानोअस्तुशंनोभवित्रंशम्बस्तुवायुः ॥ शंनोदेवःसंवितात्रायमाणःशंनो
 भवंतूपसोविभातीः ॥ शंनःपुर्जन्योभवतुप्रजाभ्यःशंनःक्षेत्रस्यपतिरस्तुशंभुः ॥ ६ ॥ शंनोदेवाविश्वदेवाभवंतुशंसरस्वतीसह

धीभिर्स्तु ॥ शर्मभिषाचः शमुरातिषाचः शनोदिव्याः पार्थिवाः शनो आप्याः ॥ शनः सत्यस्य पतयो भवन्तु शनो अर्धतः शमुसंतुगा
वः ॥ शनं क्रमवः सुकृतः सुहस्ताः शनो भवन्तु पितरो हवेषु ॥ शनो अज एक पाहे वो अस्तु शनो हिर्बुध १ शंसं मुद्रः ॥ शनो अपान्नपा
त्पेरुस्तु शनः पृश्नि भवतु देवगोपा ॥ आदित्या रुद्रावसवो जुषते दं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः ॥ शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवा सो गो जा
दानः ॥ ७॥ (शंवतीः पारंयत्येते दं पृच्छंति वचो जुजा ॥ अभ्यारंतं यमाकैतुं य एवेदमिति ब्रवन् ॥ आसारंतं यमाकैतुं य एवेदमिति ब्रवन् ॥ आसारं कैंतुं परि सुतं भारती ब्रह्म
वर्धनीः ॥ संजानानामही माताय एवेदमिति ब्रवन् ॥ इद्रस्तं किं विभुं प्रभुं भानुनेयं सरस्वतीं ॥ येन सूर्यमरोचयद्येनेमरोदसीषु
मे ॥ जुषस्वामे अंगिरः काण्वमेध्यातिथिं ॥ मात्वा सोमस्य बर्बहसु तस्य मधुमत्तमः ॥ त्वमग्ने अंगिरः शोचस्व देववीतमः ॥ आ
शतमशंतमाभिरभिष्टिभिः शांतिस्वस्तिमकुर्वत ॥ शनः कनिष्कदहवः पर्जन्यो अभिर्वषतु ॥ शनो द्यावा पृथिवी शं प्रजाभ्यः शनं
एधि द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ८ ॥) यत इद्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ॥ मर्धवन्छगिध तव तन्न ऊतिभिर्विद्विषो विमृधौ जहि ॥
त्वं हिराक्षस्य ते राध सोमहः क्षयस्यासि विधतः ॥ तं त्वावयं मघवन्निद्रगिर्वणः सुतावतो हवामहे ॥ इद्रस्य तव तन्न हा परस्यानो वरे
णु हि दैव्यं भयमारे हेतीर देवीः ॥ अद्याद्या श्वश्च इद्रन्नास्वपरेचनः ॥ ९ ॥ त्वनः पश्चादधरा दुत्तरात्पु र इद्र निपाहि विश्वतः ॥ आरेऽअस्मत्कु
? एतावत्पर्यंतमेवोत्सर्जनांते शांतिस्त्वानि पठित्वा पर्जन्यसूक्तानि पठेत् । अत्रेतेनो भागः प्रसंगाच्छांतिपाठपूरणाय संगृहीतोऽस्ति ।

गीशूरोमघवातुवीमघःसंमिश्रोवीर्यीयकं ॥ उभातेवाहृवृणेशतक्रतो नियागजमिमिक्षतुः ॥ १० ॥ भद्रंनोअपिवातयमनः ॥
 आशुःशिशानोवृपभोनभीमोघनाघनःक्षोभणश्चर्पणीनां ॥ संक्रंदनोनिमिपएक्योरःशतंसेनाअजयत्साकमिंद्रः ॥ संक्रंदनेना
 निमिपेणजिण्णुनायुत्कारेणदुश्चयघनेनधृणुना ॥ तदिंद्रेणजयतत्सहध्वंयुधोनरइपुहस्तेनवृणा॥मइपुहस्तेःसनिपंगिभिर्वशी
 संस्त्रष्टासयुधइंद्रौगणेने ॥ संसृष्टजित्सोमपावोहृशध्वं ॥ बलविज्ञायस्थत्रिरःप्रवीरःमहस्वान्याजीसहमानउ
 पवाधमानः ॥ प्रभंजन्त्सेनाःप्रमृणोयुधाजयन्नस्माकमेध्यवितारथानां ॥ बलविज्ञायस्थत्रिरःप्रवीरःमहस्वान्याजीसहमानउ
 प्रः ॥ अभिवीरोअभिसेत्वासहोजैत्रिमिंद्ररथमातिष्ठगोवित् ॥ गोत्रभिदगोविदंनज्रवाहुंजयतमज्जमणंतमोजसा ॥ इमं
 सजाताअनुवीरयध्वमिंद्रसखायोअनुसंरंभध्वं ॥ ११ ॥ अभिगोत्राणिसहसागाहमानोद्व्यावीरःशतमन्युरिंद्रः ॥ दुश्चयवनः
 पृतनापाळयुधोइस्माकंसेनाअवतुप्रयत्सु ॥ इंद्रआसांनेतावृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञःपुरएतुसोमः ॥ देवसेनानामभिभंजतीनांजय
 तीनांमरुतोयंत्यग्र ॥ इंद्रस्यवृणोवरुणस्यराज्ञादित्यानांमरुतांशधेनुग्रं ॥ महामनसांभुवनच्यवानांघोषोदिवानांजयतांयंतुघोषाः ॥ अस्मा
 स्थात् ॥ उद्धर्पयमघवन्नायुधान्युत्सत्वेनांमामकानांमनासि ॥ उद्धृन्नहन्वाजिनांवान्युद्रथानांजयतांयंतुघोषाः ॥ उग्रावःसंतु
 कमिंद्रःसमृतपुध्वजेन्वस्माकंयाइपवस्ताजयंतु ॥ अस्माकंवीराउत्तरेभयंतवस्मोइदेवाअवताह्वेषु ॥ अमीपांचित्तंप्रतिलोभयती
 गृहाणांगान्यप्वेपरैहि ॥ अभिप्रेहिनिर्देहहृत्सुशोकैरंधेनामित्रास्तमसासचंतां ॥ प्रेताजयतानरइंद्रैवःशर्मयच्छतु ॥ उग्रावःसंतु
 वाहवोनाधृण्यायथासथ ॥ १२ ॥ असौयासेनामरुतःपरैयामभ्येतिनओजसास्यधमाना ॥ तांगूहृततमसापव्रतेनयथामीपाऽ

अन्योऽअन्यं न जानात् ॥ अंधा अमित्रा भवता शीर्षाणाऽअहय इव ॥ तेषां वोऽअग्निर्दग्धानामग्निर्मूढानामिन्द्रो हंतुं वरं न ॥ १३ ॥
 मुंचामित्वा हविषा जीवनाय कर्मज्ञातयक्षमादुतरा जयक्षमात् ॥ ग्राहिर्जग्राह्यदिदैवतदेनं तस्या इन्द्राग्नीप्रमुमुक्षुर्मेनं ॥ यदि क्षिता
 युषा हविषा हार्षमेनं ॥ शतं यथे मंशरद्वेनया तीन्द्रो विश्वस्य दुरितस्य पारं ॥ शतं जीवशरदो वर्धमानः शतं हेमं तान्छत मुवसंतान् ॥
 शतमिन्द्राग्नीसविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषे मं पुनर्दुः ॥ आहार्षित्वा विदं त्वा पुनरागाः पुनर्नव ॥ सर्वा गसर्वते चक्षुः सर्वमायुश्च ते
 विदं ॥ १४ ॥ त्यमुषु वाजिनं देवजंतुं सहावानं तरुतारं रथानां ॥ अरिष्टनेमि पृतनाजमां शुं स्वस्तये तार्क्ष्यमिहाहुर्वेम ॥ इन्द्रस्येव
 रातिमाजो हुवाना स्वस्तये नार्वमिवारुहेम ॥ उर्वी न पृथ्वी च हुले गभीरे मावा मेतौ मा परेतौ रिषाम ॥ सद्यश्चिद्यः शर्वसा पंचकक्षीः
 सूर्य इव ज्योतिषा पस्ततान् ॥ साहस्रसाः शतसाऽअस्य रं हि न सार्वते युवति न शर्षा ॥ १५ ॥ माहित्रीणामवोस्तु द्युक्षं मित्रस्या
 यम्णाः ॥ दुराधर्षं वरुणस्य ॥ न हितेषां ममाचनना ध्वंसु वारणेभु ॥ ईशे रिपुरघशंसः ॥ यस्मै पुत्रा सो अदितेः प्रजीवसे मर्त्याय ॥
 ज्योतिर्यच्छत्यजस्रं ॥ १६ ॥ रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यं क्षभिः ॥ विश्वा अधि श्रियो धित ॥ ओर्वप्रा अमर्त्या निवतो दे
 व्युर्द्वतः ॥ ज्योतिषा बाधते तमः ॥ निरुस्वसारमस्कृतोपसंदेव्यायती ॥ अपेदुहा सते तमः ॥ सानो अद्य स्यावयं नितेयामं न वि
 क्षमहि ॥ वृक्षे न वसति वर्यः ॥ निग्रामा सो अविक्षत निपुं द्रं तो निपु क्षिणः ॥ निश्येनासश्चिदुर्थिनः ॥ यावया वृक्कं यवयस्ते न मू
 र्भ्ये ॥ अथानः सुतरा भव ॥ उपमापेपि शतमः कृष्णं व्यक्तमस्थित ॥ उषं कृष्णे वयालय ॥ उपतेगा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः ॥ रा

[illegible]

च॒गीःस॒दुमि॒द्धनी॒भूत् ॥ रक्षा॑णो॒अग्ने॒तन॒यानि॒तो॒कार॒क्षोत॒नस्त॒न्वो॒३अ॒ग्रयु॒च्छन् ॥ १९ ॥ ग॒णानां॒त्वाग॒णप॒तिं॒हवाम॒हेक॒विकं॑
 वी॒नामु॒पम॒श्रव॒स्तमं ॥ ज्ये॒ष्ठरा॒जं ब्र॒ह्मणां॒ब्रह्म॒णस्य॒त॒आनः॑ शृण्व॒न्नृति॒भिःसी॒दुसा॒दनं ॥ जा॒तवै॒दसे॒सुन॒वाम॒सोम॒राती॒यतो॒निद॒हा
 नो॒मृळाती॒दृशो॑॥वा॒स्तो॒ष्पते॒प्रति॒जानी॒ह्यस्मान्त्स्वा॒वेशो॒अ॒नमी॒वोभ॒वानः ॥ य॒त्त्वेम॒हेप्र॒तित॒न्नो॒जुष॒स्वश॒नो॒भव॒द्विप॒देशं॒चतु॒ष्पदे ॥
 वा॒स्तो॒ष्पते॒प्रत॒रणो॒नए॒धिग॒यस्फा॒नो॒गोभि॒रश्वे॒भिरि॒दो ॥ अ॒जरा॑स॒स्तेस॒ख्येस्या॑म॒पिते॒र्वपु॒त्रान्प्र॒तिनो॒जुष॒स्व ॥ वा॒स्तो॒ष्पते॒शुग्म॒या
 सं॒सदा॒तिस॒क्षीम॒हेर॒ण्वया॑गा॒तुम॒त्या ॥ पा॒हि॒क्षेम॒उत॒योगे॒वरे॒नोय॒यंपा॑त॒स्वस्ति॒भिःस॒दानः ॥ अ॒मीव॒हावा॑स्तो॒ष्पते॒विश्व॑रूपा॒ण्या
 वि॒शन् ॥ स॒खासु॒शेव॑ए॒धिनः ॥ २० ॥ स्व॒मःस्व॒माधि॒करणे॑स॒र्वनि॒ष्वाप॒याजि॒नं ॥ आ॒सुर्य॑म॒न्यान्त्स्वा॒पय॒द्वय॑१हं॒जात्रि॒यादु
 हं ॥ अ॒जग॒रोना॒मस॒र्पःस॒र्पिर॑वि॒षोम॒हान् ॥ तस्मि॒न्हस॒र्पःसु॒धित॒स्तेन॒त्वास्वा॒पयाम॑सि ॥ स॒र्पःस॒र्पो॒अज॒गरःस॒र्पिर॑वि॒षोम॒हान् ॥
 तस्य॒सर्पा॑त्सि॒धव॒स्तस्य॒गाध॒मशी॒महि॑॥का॒ळिको॒नाम॒सर्पो॒नव॒नाग॒सह॒स्र॒बळः ॥ य॒मुन॒ह॒दे॒हसो॒जातो॒॑इयो॒नोरा॒यण॒वाहनः ॥ य॒दि
 का॒ळिक॑दू॒तस्य॒यदि॒काःका॒ळिका॑ऋ॒यात् ॥ जन्म॑भूमि॒मति॒क्रांतो॒निर्वि॒षोया॒तिका॒ळिकः ॥ आ॒र्याही॑न्द्र॒पथि॒भिरी॒ळितो॒भिर्य॑ज्ञ॒मिमं
 सं॒कीर्ण॑ना॒गाश्व॒पति॒नरा॑णां॒सुमं॒गल्य॑स॒ततं॒दूर्ध॒मायुः ॥ क॒र्को॒टको॒नाम॒सर्पो॒योद॒ष्टीवि॒षउ॒च्यते ॥ तस्य॑स॒र्पस्य॑स॒र्पत्वं॒तस्मै॑स॒र्पन्मो
 स्तु॒ते ॥ २१ ॥ मा॒वि॒भेर्न॑म॒रिष्य॑सि॒परि॑त्वा॒यामि॒सर्व॑तः ॥ घ॒नेन॒हन्मि॒वृश्चि॒कम॒हदं॒डेना॒गतं ॥ आ॒दि॒त्यर॒थवे॒गेन॑वि॒ष्णोर्बा॒हुब॒

लेनच ॥ गरुडपक्षनिपातेनभूमिगेच्छमहायशाः ॥ गरुडस्यजातमात्रेणत्रयोऽलौकाःप्रकंपिताः ॥ प्रकंपितामहीसर्वासैल्व
नकानना ॥ गर्गनेनष्टचंद्रार्कज्योतिर्पेनप्रकाशते ॥ देवताभयभीताश्चमारुतोनप्लवायत्योनमः ॥ भोसर्पभ
द्रभद्रैर्दुरंगेच्छमहायशाः ॥ जन्मेजयस्यज्ञातेआस्तीकवचनंस्मर ॥ आस्तीकवचनंश्रुत्वायःसर्पेननिवर्तते ॥ शतधाभिद्यते
मग्निशिखर्वक्षफलंयथा ॥ अगस्त्योमार्धवश्चैवमुचुकुदोमहामुनिः ॥ कर्पिलोमुनिरास्तीकःपंचैतेसुखशार्थिनः ॥ नर्मदायैनमः
प्रातर्नर्मदायैनमोनिशि ॥ नमोस्तुनर्मदेतुभ्यंत्राहिमांविपुसर्पतः ॥ योजरत्कारुणजातोजरत्कन्यामहायशाः ॥ तस्यसर्पोपि
भद्रतेदुरंगेच्छमहायशाः ॥ २२ ॥ (ग्रहमंत्रानत्रैवशांतिपाठसमाप्त्येतेवापठंति) आकृष्णेनरजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतमर्त्यच ॥ अग्नि
हिरण्येनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन् ॥ आप्यायस्वसमेतुतेविश्वतःसोमवृण्य ॥ भवावाजस्यसंगथे ॥ अग्नि
मूर्धादिवःकुत्सपतिःपृथिव्याअयं ॥ अपारेतांसिजिन्वति ॥ उहृध्यध्वंसमनसःसखायःसमग्निमिध्वंवहवःसनीळाः ॥ दधिक्रा
मग्निमुपसेचदेवीमिंद्रावतोर्वसेनिह्वयेवः ॥ बृहस्पतेअतियदुर्योअर्हाद्यमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छर्वसक्रतप्रजातत
दस्मासुद्रविणंधेहिचित्रं॥शुक्रःशुशुक्कोऽरुषोनजारःप्रासमीचीदिवोनज्योतिः॥शमग्निरग्निभिःकरच्छंनस्तपतुसूर्यः ॥ शंवातो
वात्वरपाअपस्विधः॥ कयानिश्चित्रआभुवदूतीसदार्धःसखा ॥ कयाशचिष्ठयावता ॥ केतुकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याअपेशसे॥समुप
न्निरजायथाः॥ २३ ॥ तच्छंयोरावृणीमहेगातुंग्नायगातुंग्नापतयेदैवीस्वस्तिरस्तुनःस्वस्तिर्मानुषेभ्यः ॥ ऊर्ध्वजिगातुभेषजं॥ शं
नोअस्तुद्विपदेशंचतुष्पदे ॥ ॐ नमोब्रह्मणेनमोअस्त्वग्नयेनमःपृथिव्यैनमओषधीभ्यः ॥ नमोवाचेनमोवाचस्पतयेनमोविष्णवे

निरजायथाः॥२३॥॥
नोअस्तु द्विपदेशंचतुष्पदे॥

महतेकरोमि ॥३॥ शान्तापृथिवीशिवमंतरिक्षं द्यौर्नोद्व्यभयं नोअस्तु ॥ शिवादिशःप्रदिशःउद्दिशोन आपोविद्युतःपरिपातुसर्व
तुःशांतिःशांतिःशांतिः ॥ इतिशांतिसूक्तानि ॥ षष्ठीपूजाशीर्मेन्नाः अच्छानहूतउदरं ॥ उत्तत्यार्जुनाहरीकुमारात्साहदेव्यात् ॥ मर्मज्यंतेदिवोदेवे ॥
बोधयन्माहरिभ्यांकुमारःसाहदेव्यः ॥ दीर्घायुरस्तुसोमकः ॥ तंयुवंदेवावश्विनाकुमारंसाहदेव्यं ॥ प्रयतासद्यआददे ॥ एषवां
देवावश्विनाकुमारःसाहदेव्यः ॥ दीर्घायुरस्तुसोमकः ॥ दीर्घायुषंकृणोतन ॥ इतिशां० ॥

॥ ७६ ॥ अयंपर्जन्यसूक्तानि ॥
श्रीः ॥ अच्चावदेतिदशर्चस्यसूक्तस्यभौमोत्रिःपर्जन्यःद्वितीयाद्यास्तिस्त्रोजगत्यःनवम्यनुष्टुप् शिष्टाःषट्त्रिष्टुभः सुबृह्यर्थजपे
विनियोगः ॥ ॐ अच्चावदतवसंगीभिराभिःस्तुहिपर्जन्यंनमसाविवास ॥ कनिकदद्वृषभोजीरदानरेतोदधात्योषधीषुगर्भं ॥
विवृक्षान्हन्त्युतहैतिरक्षसोविश्वविभायभुवनंमहावधात् ॥ उत्तानागाइषतेवृष्यावतोयत्पर्जन्यःस्तनयन्हतिदुक्कतः ॥ रथी
वकश्याश्वोऽअभिक्षिपन्नाविदूतान्कृणुतेवर्ष्याइअहं ॥ दुरात्सिहस्यस्तनथाउदरैरेत्यत्पर्जन्यःकृणुतेवर्ष्यंनभः ॥ प्रवाता
वांतिपतयंतिविद्युतउदोषधीर्जिह्वेतैपिन्वतेस्वः ॥ इराविश्वस्मैभुवनायजायतेयत्पर्जन्यःपृथिवीरेतुसारवति ॥ यस्यव्रतेपृथि
वीनंनमीतियस्यव्रतेशफवज्जमुरीति ॥ यस्यव्रतओषधीर्विश्वरूपाःसनःपर्जन्यमहिशर्मयच्छ ॥ १ ॥ द्विवोनोवृष्टिमरुतोररी
ध्वंप्रपिन्वतवृष्णोअश्वस्यधाराः ॥ अवाङ्तेनस्तनयितुनेह्यपोनिषिचन्नसुरःपितानः ॥ अभिक्रदस्तनयगर्भमाधाउदन्वताप
रिदीयारथेन ॥ हतिसुकर्षविषितंन्यंचसमामंवतदूतौनिपादाः ॥ महांतकोशमुदचानिषिचस्यंदंतांकुल्याविषिताःपुरस्तात् ॥

ऋतेनद्यावोपृथिवीव्युधिमुप्रपाणंभवत्वद्व्याभ्यः । यत्पर्जन्यकनिःक्रदस्तनयन्हंसिदुष्कृतः ॥ प्रतीदंविश्वमोदतेयत्किंचपृथि
 व्यामधि ॥ अवर्षीर्वर्षमुदुपूग्मायाकधन्वान्यत्येतवाऽडे ॥ अजीजनओषधीर्भोजनायकमतप्रजाभ्योविदोमनीषां ॥ २ ॥
 तिस्रोवाचइतिपठर्चस्यसूक्तस्याग्नेयःकुमारोमैत्रावरुणिःपर्जन्यस्त्रिष्टुप् ॥ सुवृष्ट्यर्थजपेविनियोगः ॥ योवर्धनओषधीनांयोअपां
 दृज्योतिरग्रायाएतदुहेर्मधुदोघमूधः ॥ सवत्संकण्वनर्गर्भमोषधीनांसद्योजातोवृषभोरोरवीति ॥ सुवृष्ट्यर्थजपेविनियोगः ॥ योवर्धनओषधीनांयोअपां
 योविश्वस्यजगतोदेवइशे ॥ सञ्चिधातुशरणंशर्मयंसत्रिवर्तुज्योतिःस्वभिष्ट्य१स्मे ॥ स्तरीरुत्वद्भवतिसूतलुत्वद्यावशतन्वंच
 गोविश्वस्यजगतोदेवइशे ॥ सञ्चिधातुशरणंशर्मयंसत्रिवर्तुज्योतिःस्वभिष्ट्य१स्मे ॥ स्तरीरुत्वद्भवतिसूतलुत्वद्यावशतन्वंच
 क्रपुः ॥ पितुःपयःप्रतिगृभ्णातिमातातेनपितावर्धतेनपुत्रः ॥ यस्मिन्विश्वानिभुवनानितस्थुस्त्रिस्रोद्यावखेधासस्रुपः ॥ तन्मक्रतंपातुशतशोरदायय
 यःकोशोसउपसेचनासोमध्वश्चोतंत्यभितोविरपुशं ॥ इदंवचःपर्जन्यायस्वराजैहृदोअस्त्वंतरंतज्जुजोपत् ॥ मयोभुवोवृष्ट्यः
 संत्वस्मेसुपिप्पलाओषधीर्देवगोपाः ॥ सरेतोधावृषभःशश्वतीनांतस्मिन्नात्माजगतस्तस्थुपश्च ॥ तन्मक्रतंपातुशतशोरदायय
 यंपातस्वस्तिभिःसदानः ॥ १ ॥ ॥ पर्जन्यायेतितृचस्यसूक्तस्यआग्नेयःकुमारोमैत्रावरुणिर्वसिष्ठोवापर्जन्योगायत्री सुवृष्ट्य
 योगः ॥ ॐ पर्जन्यायप्रगायतद्विवस्पुत्रायमीह्वे ॥ सनोयवसमिच्छतु ॥ योगर्भमोषधीनांगवाकृणोत्यवर्ता ॥ पर्जन्यःपुरुषी
 णो ॥ तस्माइडास्येहविर्जुहोतामधुमत्तमं ॥ इळांनःसंयतंकरत् ॥ २ ॥ ॥ संवत्सरमितिदशर्चस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठोमं
 डूकाआद्यानुष्टुप् शिष्टास्त्रिष्टुभः सुवृष्ट्यर्थः ॥ ॐ संवत्सरंशशयानाब्राह्मणाब्रतचारिणः ॥ वाचपर्जन्यजिन्वतांप्रमंडूकांअ
 वादिषुः ॥ दिव्याआपोअभियदेनमायन्हतिंनशुष्कसरसीशयानं ॥ गवामह्वनमायुर्वत्सिनीनामंडूकानांवभुत्रासमेति ॥ य

दीमिनौऽलशतोअभ्यवर्षीत्तुभ्यावतःप्रावृष्यागतायां ॥ अक्खलीकृत्यापितरंनपुत्रोऽअन्योअन्यमुपवदंतमेति ॥ अन्योअन्यम
 नुगृभ्णाल्येनोरपांप्रसर्गेयदमदिषातां ॥ मंडूकोयदुभिवृष्टःकनिक्कन्पृश्चिःसंपुकेहरितेनुवाचं ॥ यदेषामन्योअन्यस्यवाचंशा
 कस्यैववदतिशिक्षमाणः ॥ सर्वतदेषांसमृधेवपर्वयत्सुवाचोवदथनाध्यप्सु ॥ ३ ॥ गोमायुरेकोअजमायुरेकःपृश्चिरेकोहरिते
 रस्यतदहःपरिष्ठयन्मंडूकाःप्रावृषीणंबभूव ॥ ब्राह्मणासःसोमिनोवाचमक्रतब्रह्मकण्वंतःपरिवत्सरीणं ॥ अर्धवर्षवोधर्मिणःसि
 ष्विदानाआविर्भवतिगुह्यानकेचित् ॥ देवाहितंजुगुप्सुदुशस्यंक्रतुंनरोनप्रमिनंत्येते ॥ संवत्सरेप्रावृष्यागतायांतुसाधर्माअ
 भ्रुवतेविसर्गं ॥ गोमायुरदादुजमायुरद्राष्टपृश्चिरद्राक्षरितोनोवसूनि ॥ गवांमंडूकाददतःशतानिसहस्रसावेप्रतिरंतआयुः
 ॥ ४ ॥ उपसर्वदमंडूकिवर्षमावदतादुरि ॥ मध्येहृदस्यस्रवस्वनिगृह्यचतुरःपुरः ॥ ॥ प्रदेवत्रेतिपंचदशार्चस्यसूक्तस्येष्टषः
 कवष अपः अपानसावात्रिष्टुप् सुवृष्ट्यर्थजपेविनियोगः ॥ ॐ प्रदेवत्राब्रह्मणेगातुरेत्यपोअच्छामनसोनप्रयुक्ति ॥ महींमित्र
 स्यवरुणस्यधांसिपृथुज्रचसेरीरधासुवार्कं ॥ अर्धवर्षवोपइतासमद्रमपांनपांतहुविपायजघ्नं ॥ अवयाश्चष्टैअरुणःसुपर्णस्त
 मास्यध्वमर्मिमद्यासुहस्ताः ॥ अर्धवर्षवोपइतासमद्रमपांनपांतहुविपायजघ्नं ॥ सर्वोदददूर्मिमद्यासुपूततस्मैसोमंमधुमंतसुनो
 त ॥ योअनिध्मोदीदयदुण्स्वंतर्त्यविप्रसईक्तेअध्वरेषु ॥ अपान्नपान्मधुमतीरपोदायाभिरिंद्रोवावधेवार्थाय ॥ यामिःसो
 मोमोदतेहर्षतेचकल्याणीभिर्युवतिभिर्नमर्थः ॥ तार्धवर्षोअपोअच्छापरेहियतासिंचाओषधीभिःपुनीतात् ॥ १ ॥ एवेद्यने

युवतयो नमंतयदीमशंनुशतीरेत्यच्छ ॥ संजानतेमनसासंचिकित्रेध्वर्यवोधिपणार्पश्चदेवीः ॥ योवोवृताभ्यो अकृणो दुलो कंयो
 वोमह्या अभिशस्तेरमुचत् ॥ तस्मा इद्रायमधुमंतमूर्मिदेवमार्दनं प्रहिणोतनापः ॥ प्रास्मै हि नोतमधुमंतमूर्मिगर्भो योवः सिंधवो म
 ध्वलत्सः ॥ घृतपृष्ठमीड्यमध्वरेज्वापोरेवतीः शृणुता हवर्मे ॥ तं सिंधवो मत्सरमिद्रपानमूर्मिप्रहेतय उभे इयति ॥ मदृच्युतमौशा
 नं न भोजो पारित्रितं विचरेत्मुत्सं ॥ आववृत्ततीरधनुस्त्रिधारा गोपुयुधो न नियं चरंतीः ॥ ऋपेजनित्री भुवनस्य पत्नी रपोवदस्व
 सवृधः सयोनीः ॥ २ ॥ हि नोतानो अध्वरं देवयज्या हि नोत ब्रह्मसनये धनानां ॥ ऋतस्य योगे विज्यध्वमूधः श्रुष्टीवरी भूतनास्म
 भ्यमापः ॥ आपोरेवतीः क्षयथा हिवस्वः क्रतुं च भद्रं बिभृथामृतं च ॥ रायश्च स्वपत्यस्य पत्नीः सरस्वती तद्गुणं ते वयोधात् ॥ प्र
 तियदापो अहं श्रमायतीर्धं तं पयो सिबिभ्रतीर्मधूनि ॥ अध्वर्युभिर्मनसा संविदुना इन्द्राय सोमं सुषुतं भरतीः ॥ एमा अगमन्नेवती
 जीवधन्या अध्वर्यवः सानुते द्राय सोममभूदुवः सुशका देवयज्या ॥ ३ ॥ ऋपयो वै सरस्वत्या उदकं मापादिति सब
 ध्वरे असदं देवयंतीः ॥ अध्वर्यवः सुनुते द्राय सोममभूदुवः सुशका देवयज्या ॥ ३ ॥ ऋपयो वै सरस्वत्या उदकं मापादिति सब
 मादनयन्दास्याः पुत्रः कितवो ब्राह्मणः कथं नो मध्ये दीक्षिष्टे तितं बहिर्धन्वो दवहन्नत्रैनं पिपासा हंतु सरस्वत्या उदकं मापादिति सब
 हिर्धन्वो दुहूः पिपासया वित्त एतदपो न प्त्रीयमपश्यत्स देवत्रा ब्रह्मणे गातुरे त्विति तेनापां प्रियं धामो पागच्छत मापो नूदायं संसरस्व
 ती स मंतं पर्यधावत्तस्माद्वाप्येत हि परिसारकमित्या च क्षतेय देनं सरस्वती समंतं परिससारते वा ऋपयो ब्रुवन्विदुर्वा इमं देवा उपे मंह
 यामहा इति तथेति तमुपाह्वयंत तमुपह्वयै तदपो न प्त्रीयमकुर्वत्त प्रदेवत्रा ब्रह्मणे गातुरे त्विति तेनापां प्रियं धामो पागच्छतु पदेवाना मु

पापांप्रियं धाम गच्छत्युपदेवानां जयति परमं लोकं य एवं वेद यश्चैवं विद्वानेतदपो न प्त्रीयं कुरुते तत्संततमनुब्रूयात्संततवर्षी ह प्रजा
 भ्यः पर्जन्यो भवति यत्रैवं विद्वानेतत्संततमन्वाहयदवग्राहमनुब्रूयाज्जीमूतवर्षी ह प्रजाभ्यः पर्जन्यः स्यात्तस्मात्तत्संततमेवानूच्यंत
 स्य त्रिः प्रथमां संततमन्वाहते नैव तत्सर्वं संततमनूक्तं भवति ॥ १ ॥ ता एतानवानंतरायमन्वाह हि नो तानो अध्वरं देव यज्येति दश
 मीमावर्तुततीरधनुर्द्विधारा इत्यावृत्तास्वेकधनासुप्रतियदापो अहश्रमायतीरिति प्रतिदृश्यमाना स्वाधेनवः पयसा तूर्ण्यथा इत्यु
 पायतीषु समन्यायन्त्युपयन्त्यन्या इति समाचतीष्वापो वा अस्पर्धतव्यं पूर्वयज्ञं वक्ष्यामो वयमिति याश्चेमाः पूर्वद्युर्वसती वर्यो गृह्यं
 ते याश्च प्रातरेकधनास्ताभृगुरपश्यदापो वैस्पर्धत इति ता एतयर्चा समज्ञपयत्समन्यायं त्युपयं त्यन्या इति ताः समजानत संजानाना
 हास्यापो यज्ञं वहंति य एवं वेदापो न देवीरुपयंति होत्रियमिति होतृ च मसे समवनीयमानास्वन्वाहवसती वरीष्वेकधनासुचावेरपो
 ध्वर्या इ उ इति होता ध्वर्युपृच्छत्यापो वै यज्ञो विदो यज्ञो इ इत्येव तदा होते मनं न मुरित्यध्वर्युः प्रत्याहोते माः पश्येत्येव तदा हतास्वध्व
 र्यो इंद्राय सोमं सोतामधुमंतं ॥ वृष्टि वनितीव्रांतं बहु रम्यं वसुमते रुद्रवत आदित्यवत ऋभुमते विभुमते वाजवते बृहस्पतिवते विश्व
 देव्यावते । यस्येंद्रः पीत्वा वृत्राणि जंघनत्स जन्या नितारिषो इमिति प्रत्युत्तिष्ठति प्रत्युत्थेया वा आपः प्रतिवैश्रेयां समायंत मुत्तिष्ठं
 तितस्मात्प्रत्युत्थेया अनुपर्था वृत्त्या अनुब्रूवैतवानुप्रपत्तव्यमीश्वरो हयद्यज्यं न्यो यजेता
 थ होतारं यशो तोस्तस्मादनुब्रूवैतवानुप्रपत्तव्यमंबयो चं त्यध्वभिरित्येतामनुब्रूवन्ननुप्रपद्येत जामयो अध्वरीयतां ॥ पुंचतीर्मधुना
 पय इति यो मधव्यो यशो तो बुभूषेदमूर्या उपसूर्येयाभिर्वासूर्यः सहेति तेजस्कामो ब्रह्मवर्चसकामो पो देवीरुपह्वये यत्र गावः पिबंति न

॥ ॥ तु - वतु गक गोत्रं

॥ धीएवानुभवन्ननुप्रपद्यतामिति श्रुत्वा ॥


॥ ७७ ॥ अत्रोक्तं "अथवापि विदुः"

१ द्वाभ्यामनामकान्धाः । अन्यानिचपवित्राणिपुशद्वाल्मपाः ।

भिर्वाग्निं थियुक्तं नवाभवात् ।
द्व्यासयवपवित्रधारणवामकद्व्यासतिलपवित्रधारणामत्यापातः ।

पितामहीप्रपितामहीनांअमुकामुकदानांअमुकगोत्राणां)सव्यं(एतेषा)श्रेयोर्थमोक्षार्थतृह्यर्थममपितृणांप्रतिसंवत्सरिकश्राद्धं
 सदैवंसापिंडसामौकरणंपार्वणेनविधिनाअन्नेनहविषासद्यःकरिष्ये ॥ तदंगयवतिलोदकादिकरिष्ये ॥ आत्मशुद्ध्यर्थंभोक्तृगृह
 भांडभाजनशुद्ध्यर्थंचप्रायश्चित्ता(र्थवैश्वदेव)सूक्तजपमहंकरिष्ये ॥ कुरुष्वइतिप्रतिवचनं॥ताम्रपात्रे इमंमेगंगयमुनेसरस्वतिशु
 तुद्रिस्तोमंसचतापरुण्या ॥ असिक्त्यामरुद्धुधेवितस्तयार्जोकीचेशृणुह्यासुषोमया ॥ इत्युदकंनिक्षिप्य ॥ गंधद्वारांदुराधर्षी
 द्यवैरिणाःसर्वसाकंन्यलिप्सत ॥ ईश्वरीसर्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रियं ॥ इतिगंधं ॥ शरासःकुशरासोदुर्भासःसैर्याउत ॥ मौजाअह
 मृषिभिःस्मृतं ॥ इतिचवान् ॥ याःफलिनीर्याऽअफलाअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः ॥ निर्णोदःसर्वपापानांपवित्र
 गीफलं ॥ हिरण्यरूपःसहिरण्यसंहगपांनपात्सेदुहिरण्यवर्णः ॥ हिरण्ययात्यरियोनेर्निषद्याहिरण्यदाददुत्यन्नमस्मै ॥ इतिपू
 रण्यं ॥ गुवासुवासाःपरिर्वीतुआगात्सउश्रेयान्भवतिजायमानः ॥ तंधीरासःकवयउन्नयंतिस्वाध्योइमनसादेवयंतः ॥ यवोद
 सर्वत्रधीमता।इतिवचनात् भारद्वाजसगोत्राणामिति भारद्वाजगोत्राणामितिबोचारःकार्यः । विभक्तिविचारः-षष्ठीविभक्त्यासंकरपःक्षणश्चाक्षय्यकर्मच ।
 षष्ठ्यावास्याच्चतुर्थ्यावासनदानंद्विजातये । द्वितीययावाहनंस्याद्विभक्तिस्तुचतुर्थिका । अन्नदानेपिडपूजास्वधास्वस्तीतिवाचने । पिंडदानेतुसंबुद्धिर्येचत्वे
 त्यादितःपुरा । ततःपरंचतुर्थीचेत्युभयंसर्वसंमतं । शेषाणिसर्वकर्माणिसंबुध्यंतेयथायथं । इदंतेवाइदंवावाप्रयुज्यैवसमाचरेत् ॥ १ कूर्चलक्षणंसूत्राव
 ल्यां-प्रथमाब्देपंचदशैःप्रत्यब्देसप्तमिस्तथा । तीर्थमहालयेचैववनवदुर्भस्तुकूर्चकः ॥ आकरेज्वनुपलंभादयमाचारलब्धोभाति ॥

के॒इदं॑गंधं॒पुष्पं॒तुलसी॒पत्रं॑नमः॥सर्वे॒उप॒चाराः॒यवैः॒संपूर्णाः॒संतु॑॥अ॒पस॒व्यं॥ति॒लोद॑कं॥इ॒मंभे॑गं०॥गंध॒हारां०॥श॒रासः०॥त
 लो॒सिसो॑मदे॒वत्यो॑गो॒सवे॑दे॒वनि॑र्मितः॥प्र॒त्नव॒द्भिः॒प्रतः॑स्व॒धया॒पितृ॑नि॒मांलो॒कान्प्री॒णया॒हितः॑स्व॒धानमः॥इति॑ति॒लान्॥मा॒का
 कं॒बीर॒मुद्दृ॒हो॒वन्स्य॑ति॒मश॒स्तीर्वि॒हिनी॑नशः॥मो॒तसू॒रोअ॒ह॒एवा॒चन॒ग्रीवा॒आद॒धते॒वेः॥इति॑भृ॒ंगरा॒जप॒त्रं॥सर्वे॒उप॒चारा॑स्ति॒लैः
 इति॑पू॒गीफ॒लं॥हि॒रण्य॒रूपः०॥इति॑हि॒रण्यं॥यु॒वा॒सुवा०॥ति॒लोद॑के॒इदं॑गंधं॒पुष्पं॒भृंग॑रा॒जप॒त्रंनमः॥म॒ह्यन॑मंतां॒प्रदि
 संपूर्णाः॒संतु॑॥गंध॒पुष्पैः॒प्रच्छा॒द्य॥स॒हस्र॑शी॒र्पापु॑रुषः०॥सू॒क्तं॒ममा॑ग्ने॒वचो॑वि॒ह्वेष्वा॒होता॑रो॒वनु॑षंत॒पूर्वे॑रि॒ष्टाः॒स्याम॑त॒न्वासु॒वीराः॥
 श॒श्रत॑स्त्र॒स्त्वया॒ध्यक्षे॑ण॒पुत॑ना॒जये॑म॥म॒मदे॒वावि॒ह्वेस॑त॒सर्व॑द्र॒वंतो॑म॒रुतो॑वि॒ष्णुर॒ग्निः॥म॒मांता॑रि॒क्षम॒रुलो॑कम॒स्तुम॒ह्यंवा॒तःप॒त्र
 तां॒कांभे॑ऽअ॒स्मिन्॥म॒यिदे॒वाद्र॒विण॑मा॒यंज॑तां॒मय्या॑शी॒रेस्तु॑म॒यिदे॒वहू॑तिः॥द॒व्याहो॑ता॒रोव॑नुषंत॒पूर्वे॑रि॒ष्टाः॒स्याम॑त॒न्वासु॒वीराः॥
 म॒ह्यय॑जंतु॒मया॑नि॒ह्वया॑कू॒तिः॒सत्या॑म॒नसो॑मे॒अस्तु॑॥ए॒नोमा॑नि॒गांक॑त॒मच्च॑ना॒हंवि॒श्वेदे॒वासो॑ऽअ॒धिवो॑च॒तानः॥दे॒वाःप॒लुर्वी॑रु॒रु
 नः॒कृणो॑त॒विश्वे॑दे॒वासइ॒हवी॑र॒यध्वं॥मा॒हा॒स्महि॒प्रज॒यामा॑त॒नूभि॒र्मो॒र॒धाम॑द्वि॒षते॑सो॒मरा॑जन् ॥१॥अ॒ग्नेम॒न्युप्र॑ति॒नुद॒न्यस्य॑ति॒द्वंत्रा॒ता॒रम
 ष्धो॒गोपाः॒परि॑पा॒हिन्स्त्वं॥प्र॒त्यं॒चोय॑तु॒निगु॑तः॒पुन॑स्ते॒भैपा॑चि॒तंप्र॒बुधा॑वि॒नेश॑त् ॥धा॒ताधा॑त॒ृणां॒भुव॑न॒स्यय॑स्यति॒द्वंत्रा॒ता॒रम
 भि॒माति॑पा॒हं॥इ॒मंय॒ज्ञम॒श्विनो॑भा॒वृह॒स्यति॑दे॒वाःपा॑त॒यज॑मान॒न्यथा॑त् ॥उ॒रुव्य॑चा॒नोम॑हि॒पःश॑र्म॒यंस॑द॒स्मिन्ह॒वेपु॑रु॒हूतः॑पु॒रुक्षुः॥स
 नः॒प्रजा॑यै॒ह्यश्व॑मृ॒ळये॒द्रम॑नो॒रीरि॑पो॒माप॑रा॒दाः॥ये॒नः॒स॒प॒त्नाअ॒पुते॑भ॒यंत्वि॒द्राग्नि॒भ्याम॑व॒वाधा॑म॒हेतान्॥इ॒मंनो॑य॒ज्ञंवि॒ह्वेजु॑प॒स्वा
 त्या॑ड॒परि॑स्पृ॒शमो॑ग्रं॒चेत्तो॑र॒मधि॑रा॒जम॑क॒न् ॥अ॒र्वाच॑मि॒न्द्रम॒मुतो॑ह॒वाम॑हो॒गोजि॒ह्वन्जि॒दश्व॑जि॒घ्रः॥इ॒मंनो॑य॒ज्ञंवि॒ह्वेजु॑प॒स्वा



स्यकुलमोहरिवोमेदिनैत्वा ॥ तरत्समं दीधावति धारासुतस्यांधसः ॥ तरत्समं दीधावति ॥ उसावेदुवसूनांमर्तस्यदेव्यवसः ॥
 तरत्समं दीधावति ॥ ध्वस्योः पुरुषंत्योरासहस्राणिदम्नहे ॥ तरत्समं दीधावति ॥ आययोस्त्रिशतं तनासहस्राणिचदम्नहे ॥
 तरत्समं दीधावति ॥ नतमहोनदुरितं देवांसो अष्टमर्त्य ॥ सजोषसोचर्मथमा मित्रो नयतिवरुणोऽअतिद्विषः ॥ तद्विवयंवृणी
 महेवरुणमित्रार्थमन् ॥ येनानिरहसोयथपाथनेथाचमर्त्यमतिद्विषः ॥ तेननोयमृतयेवरुणो मित्रोऽअर्घ्यमा ॥ युष्माकंशर्मणिप्रियेस्यामसुप्रणीतयोतिद्विषः ॥ आ
 णिपार्षिष्ठाऽऽनःपुष्पयतिद्विषः ॥ ययं विश्वं परेपाथवरुणो मित्रोऽअर्घ्यमा ॥ उग्रं मरुर्भीरुद्रं हुवेमद्रं मिंस्वस्तयेतिद्विषः ॥ नेतारऊषुणस्तिरोवरुणो मित्रोऽअ
 दित्यासोऽअतिस्त्रिधोवरुणो मित्रोऽअर्घ्यमा ॥ उग्रं मरुर्भीरुद्रं हुवेमद्रं मिंस्वस्तयेतिद्विषः ॥ युष्माकंशर्मणिप्रियेस्यामसुप्रणीतयोतिद्विषः ॥ आ
 र्घ्यमा ॥ अतिविश्वानिदुरिताराजानश्चर्षणीनामतिद्विषः ॥ शुनमस्मभ्यमृतयेवरुणो मित्रोऽअर्घ्यमा ॥ एवोष्वस्मन्मुचताव्यहः प्रतार्यमेप्रतरं नऽआ
 त्यासोयदीमहे अतिद्विषः ॥ यथाहृत्यद्वसवोगौर्यचित्पदिषिताममुचतायजत्राः ॥ एवोष्वस्मन्मुचताव्यहः प्रतार्यमेप्रतरं नऽआ
 युः ॥ हुंसः शुचिपद्वसुरंतरिक्षसज्जोतावेदिषदतिथिदुरोणसत् ॥ नृषद्वरसहृतसद्व्योमसदुजागोजाकृतजा अद्भिजाकृतं ॥ य
 त्किंचेदवरुणैर्व्येजनेभिद्रोहंमनुष्या इश्वरामसि ॥ अचितीयत्तवधर्मायुयोपिममानस्तस्मादेनसोदेवरीरिषः ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः
 तत्संवितुं ॥ शुचीवोहव्यामरुतः शुचीनां शुचिं हि नोभ्यध्वरं शुचिभ्यः ॥ कुतेनसत्यमृतसार्पआयन्धुचिजन्मानः शुचयः पाव
 काः ॥ अग्निः शुचिन्नतमः शुचिर्विप्रः शुचिः कविः ॥ शुचीरोचत आहुतः ॥ उदमे शुचयस्तव शुक्राभ्याजत ईरते ॥ तवज्योतीष्यर्च
 यः ॥ एतोन्विद्रंस्तवामशुक्रं शुक्रे नुसाम्ना ॥ शुक्रैरुक्थैर्वीवध्वांसं शुक्र आशीर्वा नमस्तु ॥ इन्द्रशुक्रो नऽआर्गहिशुक्रः शुक्राभिरुति

भिः ॥ शुद्धो रयिनिधारय शुद्धो मे मद्भिः सोम्यः ॥ इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं शुद्धो रत्नानि द्वाशुपे ॥ शुद्धो वृत्राणि जिघ्रसे शुद्धो वाजसि
पाससि ॥ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा ॥ यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥ सर्वस्थलभांडादिशुचि भवतु ॥
अस्तु सर्वशुचि ॥ ब्रह्मदंडार्थं किंचिद्विचरण्यं भूमौ निक्षिप्य स तिलजलकुशहस्तः ब्राह्मणानां प्रदक्षिणात्रयं कुर्यात् ॥ अप
स्वः ॥ समस्तसंपत्समवाप्तिहेतवः समुत्थिता पत्कुलधूमकेतवः ॥ अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनंतुमां ब्राह्मणपादपांसवः ॥ आप
द्धनधातसहस्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः ॥ समस्तीर्थांबुपवित्रमूर्तयो रक्षंतुमां ब्राह्मणपादपांसवः ॥ श्रीपुष्टिकी
तिदं वंदे विप्रश्रीपादपंकजं ॥ यावत्तीर्त्तं वैदुवतास्ताः सर्वान्नेदु विदि ब्राह्मणे वसंतितस्माद्ब्राह्मणेभ्यो वैदु विद्मो दिवे दिवे नमस्कुर्वा
न्नाश्लीलं कीर्तयेदु ता एव देवताः प्राणाति ॥ द्वौ नमस्कारौ कृत्वा ॥ अपसव्यं ॥ अक्रोधनैः शौचपैः सततं ब्रह्मचारिभिः ॥ भवि
तव्यं भवद्भिश्च मया च श्राद्धकारिणा ॥ अद्य तिथौ पितृणां प्रति सांवत्सरिक श्राद्धं कर्तुं ममाधिकार संपदस्त्विति भवंतो ब्रुवंतु ॥
अस्तु श्राद्धाधिकार संपत् ॥ सव्यं ॥ कालोऽयं मुख्यः कालोऽस्त्विति भवंतो ब्रुवंतु ॥ (क्षणादिकरिष्ये ॥) कुरुष्व ॥ (विप्रस्य दक्षिणं जानु स्पृष्ट्वा) पितृणां प्र
यों ग्यतास्त्विति भवंतो ब्रुवंतु ॥ पाकादीनां हविर्योग्यतास्तु ॥ (क्षणादिकरिष्ये ॥) कुरुष्व ॥ (विप्रस्य दक्षिणं जानु स्पृष्ट्वा) पितृणां प्र
तिसांवत्सरिक श्राद्धे पुरवार्षं वसंतं कविश्वेदेवार्थत्वाक्षणः कर्तव्यः ॥ ॐ तथा ॥ (द्वितीये पीत्थं) ॥ अपसव्यं ॥ (विप्रस्य वामं

अस्तुश्राद्धाधिकारसम्पन्नः ॥ पाकादीनां होवयाग्यतास्तु ॥
योग्यतास्त्विति भवतोऽनुबन्तु ॥ विश्वेदेवार्थत्वयाक्षणः कर्त
तिसांवत्सरिकश्राद्धे पुरुरवाद्रवसंज्ञकविश्वेदेवार्थत्वयाक्षणः कर्त

जानुस्पृष्ट्वा) पितृणां प्रति सांवत्सरिकश्राद्धे अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहार्थं त्वया क्षणः कर्तव्यः ॥ ॐ तथा ॥ ग्रामोत्तुभवान्
ग्रामवानि ॥ मंडलानि कुर्यात् ॥ प्रादेशमात्रं देवानां मंडलं चतुरस्रकं ॥ वितस्तिमात्रं पितृमंडलं वतुलं कुर्यात् ॥ सव्यं ॥ देवपा
नमः ॥ पुष्पं नमः ॥ सर्वे उपचाराः तिलैः संपूर्णाः संतु ॥ सव्यं ॥ देवाः स्वागतं सुस्वागतं ॥ पितृपाद्यस्थाने इदमासनं ॥ गंधं
वः स्वः इदं वः पाद्यं ॥ सर्वे उपचाराः तिलैः संपूर्णाः संतु ॥ सव्यं ॥ देवाः स्वागतं सुस्वागतं ॥ पुरुरवारुद्रवसंज्ञका विश्वे देवाः ब्रह्मणे भूर्भु
शुद्धोदकेन पादक्षालनं कुर्यात् ॥ सुपाद्यं ॥ (एवं द्वितीये) ॥ शंनो देवीरभिर्द्वय आपो भवन्तु पीतये ॥ शंनो देवीरभिर्द्वय आपो भवन्तु पीतये ॥ गंधं
इदं वः पाद्यं ॥ सुपाद्यं ॥ एवं पितामहप्रपितामहयोः ॥ सव्यं ॥ सर्वेषां स्वागतं ॥ सुस्वागतं ॥ पितः अमुकशर्मन् अमुकगोत्रवसुरूपब्रह्मणे भूर्भुवः स्वः
प्रक्षाल्य चिम्यपवित्रे धृत्वा ॥ सव्यं ॥ सर्वेषां स्वागतं ॥ सुस्वागतं ॥ (निरंगुष्ठं विप्रदक्षिणहस्तं धृत्वा) देवाः समाध्वं ॥ सुस
मास्महे ॥ अपसव्यं ॥ पितरः समाध्वं ॥ सुसमास्महे ॥ सव्यं ॥ उपक्रांतं पितृणां प्रति सांवत्सरिकश्राद्धं करिष्ये ॥ कुरुष्व ॥

१ संकल्पेक्षणदाने पाद्ये आसने आवाहने धर्मदाने गंधाद्याच्छादनात् पंचोपचारेष्वन्नदाने पिंडदाने जनाभ्यं जनयोरक्षय्ये स्वधावाचने च संबंधगोत्रनामोच्चारणं ॥
२ अंगणे श्राद्धदेशद्वारे वा चतुरस्रं द्विहस्तं प्रादेशमात्रं वोदकप्लवं देवमंडलं कृत्वा ततो दक्षिणे षडंगुलं त्यक्त्वा दक्षिणालवंचतुर्हस्तं वितस्तिमात्रं वा वतुलं पि
तृमंडलं कार्यं ॥ ३ मंडलात् पूर्वतो देवैः पितृभिश्च तथोत्तरे । कर्तव्यं चैव तुरैशान्यामेवमाचमनं स्मृतं ॥

सां-श्राद्धं
॥७७॥

॥११०॥

शन्नोद्वीरुभिष्टयुआपोभवंतुपीतये ॥ शंयोरुभिस्त्रवंतुनः ॥ यवोसियवयास्मद्वेपोयवयाअरातीः ॥ अपसव्यं ॥ शन्नोद्वीरु
 भिष्टयुआपोभवंतुपीतये ॥ शंयोरुभिस्त्रवंतुनः ॥ उदोरतामवरुलरासुन्मध्यमाःपितरःसोम्यासः ॥ असुयईयुरेवुकाःकुतज्ञा
 स्तेनोवंतुपितरोहवेषु ॥ अपहताअसुरारक्षांसिपिशाचायेक्षयंतिपृथिवीमनु ॥ अन्यत्रैतोगच्छन्तुयत्रैतेपांगंतमनः ॥ इतिसर्वत्र
 तिलान्विकीर्य ॥ रक्षोहर्णवाजिनमाजिघर्षिभिन्त्रप्रार्थिषुमुपयामिशर्म ॥ शिशानोअग्निःक्रतुभिःसमिद्धःसनोदिवासरिपःपातु
 नक्तं ॥ अष्टौवसवएकादशरुद्राद्वादशादित्याःश्राद्धद्वारेवैष्णवीरक्षागयेयंभूमिः ॥ सुभूमिः ॥ सव्यं ॥ दर्भैःपाकप्रोक्षणं ॥ विश्वे
 तरत्समंदी० ॥ त्रिभिष्टुदेवसवितर्वर्धैःसोमधामभिः ॥ अग्नेदक्षैःपुनीहिनः ॥ पुनंतुमांदैवजनाःपुनंतुवसवोधिवा ॥ त
 देवाःपुनीतमाजातवेदःपुनीहिमा ॥ प्रज्यायस्वप्रस्यदस्वसोमविश्वेभिर्ंशुभिः ॥ देवेभ्यउत्तमंहविः ॥ भूर्भुवःस्वः ॥ आ
 त्सवितु० ॥ इतिप्रोक्ष्य ॥ पाकादीनांपवित्रतास्तु ॥ सर्वपाकाःशुचयोभवंतु ॥ पाकप्रोक्षणंविधिवदस्तु ॥ अस्तुविधिवत् ॥ आ
 गच्छंतुमहाभागाविश्वेदेवामहाबलाः ॥ येह्यत्रविहिताःश्राद्धंप्रवर्तते ॥ प्रवर्तय ॥ सव्यं ॥ देवविप्रहस्ते अपोदत्वा । (वा
 यांध्यात्वाध्यात्वादेवंगदाधरं ॥ वस्वादींश्चपितृन्ध्यात्वाततःश्राद्धंप्रवर्तते ॥ प्रवर्तय ॥ सव्यं ॥ देवविप्रहस्ते अपोदत्वा । (वा
 मकरालव्धेनोत्तानेनदक्षरेणसयवंदर्भद्वयंआसनदक्षभागे)पुरूरवाद्वैवसंज्ञकानांविश्वेपांदेवानांब्रह्मणेभूर्भुवःस्वरिदमासनं ॥

पितृणाद्विगुणामुग्राह
 प्रदक्षिणतुदेवानापितृणामप्रदक्षिणं । पितृणाद्विगुणामुग्राह
 निपातनात् । प्रदक्षिणतुदेवानापितृणामप्रदक्षिणं । पितृणाद्विगुणामुग्राह
 प्रत्युपचारमाद्यंतयोरुदकदानविहितं ॥

१ निपात्यदक्षिणंजानुदेवानपरिचरेत्सदा । पितृणापरिचर्यानुवामजानुनिपातनात् । प्रदक्षिणतुदेवानापितृणामप्रदक्षिणं । पितृणाद्विगुणामुग्राह
 भौदेवेऽनुत्वागा । दैवेतद्वदुमुखःकर्तापिञ्चयेस्याद्दक्षिणामुखः ॥ २ प्रत्युपचारमाद्यंतयोरुदकदानविहितं ॥

स्वासनं ॥ (एवंद्वितीयदेवे) ॥ अत्रास्यतां ॥ धर्मोसि ॥ (निरंगुष्ठंकरं धृत्वा) ॥ प्रतिसांवत्सरिकश्राद्धे देवेक्षणः क्रियतां ॥ ॐ तथा ॥
प्रमोतुभवान् ॥ प्रामवानि ॥ अर्घ्यमासाद्य ॥ विप्राग्नेभूमिप्रोक्ष्य प्रागग्रौ द्वौ द्वौ दर्भावास्तीर्य पात्रद्वयं न्युञ्जं निधाय गायत्र्या प्रो-
क्ष्य उद्धृत्य पुनः प्रोक्ष्य तदुपरि पूर्वाग्रकूर्चौ निधाय ॥ यवोसि धान्यराजो वा वारुणो मधुसंयुतः ॥ निर्णोदः सर्वपापानां पवित्रमृषिभिः स्मृतं ॥ शंयोरभिर्स्ववंतु
त्रयोः गंधपुष्पंतुलसीपत्रं नमः ॥ सर्वे उपचाराय वै संपूर्णाः संतु ॥ देवाः अर्घ्यपात्रे संपन्ने ॥ सुसंपन्ने ॥ स्वाहा अर्घ्याः ॥ संत्वर्घ्याः ॥
(वामकरं कुशयवयुतं विप्रदक्षिणजानुनित्यस्य हस्ते यवान् गृहीत्वा) पुरुरवार्द्रवसंज्ञकान् विश्वान् देवान् भवत्स्वावाहयिष्ये ॥
हय ॥ विश्वे देवास आगतं शृणुतां मम इमं हवं ॥ एदं बर्हिर्निर्भीदत (इति प्रतिविप्रमावाह्य) ॥ विश्वे देवाः शृणुते मम हवं मे ये अंतरिक्षे य उप-
द्याविष्ठ ॥ ये अग्निजिह्वा उत वायुर्जना आसद्यास्मिन् बर्हिर्भिमादयध्वं ॥ (पात्रोपरित नौदभौ हस्ते दत्त्वा) पुरुरवार्द्रवसंज्ञका विश्वे देवाः इदं वो अर्घ्यं स्वाहानमः ॥
पाददेशे भूमौ क्षिपेत् ॥ अपोदत्त्वा ॥ (पात्रोपरित नौदभौ हस्ते दत्त्वा) पुरुरवार्द्रवसंज्ञका विश्वे देवाः इदं वो अर्घ्यं स्वाहानमः ॥
अस्त्वर्घ्यं ॥ (प्रतिविप्रं) यादिव्या आपः पृथिवि संबभूवुर्या अंतरिक्षा उत पार्थिवीर्याः ॥ हिरण्यवर्णाय शिवास्तान आपः शंस्यो
ना भवंतु ॥ इदमर्घ्यं दत्तं नमम ॥ अस्तु दत्तं ॥ एवं द्वितीयेऽपि ॥ पुरुरवार्द्रवसंज्ञका विश्वे देवाः यथा भागशः अग्नीवो गंधाः स्वा-
धमायने ते च पुष्पकं ॥ धूरसीत्यमुना धूपमुद्दीप्य स्वेति दीपकं ॥ देवतीर्थे नैव तत्पितृतीर्थे न पैतृकं ॥

१ गंधद्वारेति वैगं

२ गंधद्वारेति वैगं

॥१११॥

ॐ ॥ सुगंधिः ॥ पु० इमानिवः पुष्पतुलसीपत्राणि स्वाहानमः ॥ सुपुष्पाणि सुपत्राणि ॥ पु० पूजार्थे एष वो धूपः स्वाहानमः ॥
हानमः ॥ सुगंधिः ॥ पु० इमानिवः पुष्पतुलसीपत्राणि स्वाहानमः ॥ सुपुष्पाणि सुपत्राणि ॥ पु० पूजार्थे एष वो धूपः स्वाहानमः ॥
सुधूपः ॥ पु० एष वो दीपः स्वाहानमः ॥ सुदीपः ॥ पु० आच्छादनार्थे वासो निष्कयं यथा शक्तिद्रव्यं स्वाहानमः ॥ अस्तु स्वाच्छादनं
॥ अनुलेपनार्थे गोपीचंदनं ॥ धारणार्थे यज्ञोपवीतं ॥ फलार्थे पूगीफलं ॥ पवित्रार्थे विमौकुशौ ॥ अस्तु पवित्रं ॥ युवा सुवासाः परि
॥ अतुल्ये पनार्थे गोपीचंदनं ॥ धारणार्थे यज्ञोपवीतं ॥ फलार्थे पूगीफलं ॥ पवित्रार्थे विमौकुशौ ॥ अस्तु पवित्रं ॥ युवा सुवासाः परि
वीत आगात्सलुश्रेयान् भवति जायमानः ॥ तंधीरासः क्वयु उन्नयंति स्वाद्योऽमनसा देवयंतः ॥ देवेभ्य एते गंधपत्रपुष्पधूपदी
पार्चनाच्छादनां ता उपचाराः सर्वे परिपूर्णा भवन्तु ॥ अर्चनविधेः स्वर्चितमस्तु ॥ न्यूनातिरिक्तं विधिवदस्तु ॥ अस्तु विधिवत् ॥ कुरु
यस्य स्मृत्या च नामोत्तया तपो यज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनं संपूर्णं तां यातिसद्यो वेदे तमच्युतं ॥ युष्मदनुज्ञया पित्राद्यर्चनं करिष्ये ॥ कुरु
ब्वा ॥ अपसख्यं ॥ (दक्षिणं जानु निपात्य) अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां अमुकशर्मणां अमुकगोत्राणां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां
ब्रह्मणे भूर्भुवः स्वरिदमासनं (इतिसतिलद्विगुणमुन्नदभेदानं) ॥ स्वासनं ॥ अत्रास्यतां ॥ धर्मोसि ॥ (निरंगुष्ठं चिप्रकरं धृत्वा) प्रति
सांवत्सरिकश्राद्धे पित्र्येक्षणः क्रियतां ॥ अंतथा ॥ प्रामो भवान् ॥ प्रामवानि ॥ अर्घ्यमासाद्य ॥ प्रोक्षितायां भुवि दक्षिणां ग्रांस्त्रीं स्त्री
नृदभानां स्तीर्य तत्राग्नेयीं संस्थं पात्रत्रयं न्युजं निधाय ॥ गायत्र्या प्रोक्ष्य ॥ उद्धृत्य ॥ पुनः प्रोक्ष्य ॥ दक्षिणां ग्रांस्त्रीं स्त्री
नृदभानां स्तीर्य तत्राग्नेयीं संस्थं पात्रत्रयं न्युजं निधाय ॥ गायत्र्या प्रोक्ष्य ॥ उद्धृत्य ॥ पुनः प्रोक्ष्य ॥ दक्षिणां ग्रांस्त्रीं स्त्री
देवत्यो गोसवे देवनिर्मितः ॥ प्रलवद्भिः प्रतः स्वधया पितृनिमांछो कान् प्रीणया हिनः स्वधानमः ॥ इति मंत्रावृत्या तिलान् पृथक् पृ

थक्पान्नेषुप्रक्षिप्य ॥ पित्राद्यर्घ्यपात्रेषु गंधपुष्पभृंगराजपत्रंचनमः ॥ सर्वेऽपचाराःतिलैःसंपूर्णाःसंतु ॥ पित्रर्घ्यपात्राणिसं
पन्नानि॥सुसंपन्नानि ॥ स्वधार्घ्याः॥संत्वर्घ्याः॥ (सव्यकरंकुशतिलयुतंविप्रवामजानुनिन्यस्य) अस्मत्पितृपितामहप्रपिताम
हान्अमुकशर्मणःअमुकगोत्रान्वसुरद्रादित्यस्वरूपान्भवत्स्वावाहयिष्ये ॥ आवाहय ॥ हस्तेतिलान्गृहीत्वा) उशंतस्त्वानि
धीमह्युशंतःसमिधीमहि ॥ उशंतुशतआवहपितृन्हुविषेअत्तवे॥ (इतिप्रतिविप्रमावाह्य) आर्यतुनःपितरःसोम्यासोग्निष्यात्ताः
पृथिभिर्देवयानैः ॥ अस्मिन्यज्ञेस्वधयामदंत्वाधिब्रुवंतुतैवंत्वस्मान् ॥ इतिसकृदुपतिष्ठेत् ॥ पितृपितामहप्रपितामहान्आवा
हयामीत्यावाह्य हस्तेवशिष्टतिलान्द्विजपादमूलेनिक्षिपेत्॥(अधस्यदर्भैःसहार्घ्यपात्रमेकैकंविप्राग्नेस्वधाअर्घ्याःसंत्वर्घ्याःइति
मंत्रावृत्यास्थापयेत्) ॥ सव्यं ॥ अपोदत्वापात्रोपरिस्थदर्भान्विप्रहस्तेदत्त्वाअस्मत्पितरिदंतेऽर्घ्यं ॥ अस्त्वर्घ्यं ॥ अपसव्यं॥
यादिव्याआपःपृथिविसंबभूवुर्याअंतरिक्षयाउतपार्थिवीर्याः ॥ हिरण्यवर्णायज्ञियास्तानआपःशंस्योनाभवंतु ॥ पित्रेइदमर्घ्यं
दत्तंनमम ॥ अस्तुदत्तं ॥ सव्यं ॥ पितामहेदंतेऽर्घ्यं ॥ अपसव्यं ॥ यादिव्या० ॥ पितामहायेदमर्घ्यंदत्तंनमम ॥
सव्यं॥प्रपितामहेदंतेऽर्घ्यंअस्त्वर्घ्यं॥अपसव्यं॥यादिव्या०॥प्रपितामहायेदमर्घ्यंदत्तंनमम॥ अस्तुदत्तं॥प्रथमपित्रर्घ्यपात्रेसंस्त

१ अर्घ्यमावाहनंचैवद्विजांगुष्ठनिवेशनंतुसिप्रशंचविकिरंतीर्थेपंचविवर्जयेत् । संकल्पासनयोःषष्ठीद्वितीयावाहनेतथा । अन्नदानेचतुर्थीस्याच्छेषंसंबो
धनंस्मृतं ॥ २ अन्नमातृश्राद्धेपिपितृनित्येवपठेन्नमातृनित्यहोमंनम्रपठितत्वात् ॥ ३ सव्यहस्तान्वारब्धदक्षिणहस्तेनार्घ्यदानं ॥

बान्समवनीयताभिरङ्घ्रिःपुत्रकामोमुखमनक्ति ॥ पुत्रवान्भव ॥ (संस्त्रवपात्रं देवपात्रादुत्तरतोदर्भोपरि न्युञ्जंस्थापयेत्) ॥ अप
 सव्यं ॥ पितृभ्यःस्थानमसि ॥ प्रणीतायै इदं गंधं पुष्पं तुलसीपत्रं भृंगराजपत्रं सर्वे उपचारस्तिलैः संपूर्णाः संतु ॥ अपउपस्पृश्य ॥ अ
 पसव्यं ॥ अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः शर्माणाः गोत्राः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः यथाभागशः अमीवोगंधाः स्वधानमः ॥ सुगंधिः ॥
 (प्रत्युपचारमादावन्ते चोदकं दद्यात्) अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः अमुकशर्माणाः अमुकगोत्राः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः मातया
 अंश्मनिवः पुष्पाणितुलसीपत्रभृंगराजपत्रसहितानि स्वधानमः ॥ सुधूपः ॥ अस्मत्पितृ ० एषवो दीपः स्वधानमः ॥ सुदीपः ॥ आ
 कशर्माणाः अमुकगोत्राः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः एषवो धूपः स्वधानमः ॥ अनुलेपनार्थं गोपीचंदनं ॥ धारणार्थं यज्ञोपवीतं ॥ फला
 च्छादनार्थं वासोनिष्क्रयं किंचित्द्रव्यं स्वधानमः ॥ इदं पितृभ्यो नमो अस्तु द्यये पूर्वो सो य उपरास इत्युः ॥ येषां धैर्वैरजस्यानिप
 अं पूर्णीफलं ॥ पवित्रार्थं इमे कुशाः ॥ सुपवित्रं ॥ इदं पितृभ्यो नमो अस्तु द्यये पूर्वो सो य उपरास इत्युः ॥ अर्चनविधेः स्वर्चि
 त्तार्थेवान्नं सुवृजना सुविष्टु ॥ पितृभ्यः एते गंधपुष्पधूपदीपार्चनाच्छादनां ता उपचाराः सर्वे परिपूर्णा भवन्तु ॥ पितृपात्रे वतुलं ईशानीतो नैर्ऋत्यं तमप्र
 तमस्तु ॥ अस्तु स्वर्चितं ॥ न्यूनातिरिक्तं विधिवदस्तु ॥ अस्तु विधिवत् ॥ यस्य स्मृत्या ० ॥ सव्यं ॥ युष्मदनुज्ञायामंडलादिपात्रासा
 दनं करिष्ये ॥ कुरुष्व ॥ देवपात्रस्थाने चतुरस्रं नैर्ऋतिमारभ्य ईशान्यंतं प्रदक्षिणं मंडलं कृत्वा ॥ पितृपात्रे वतुलं ईशानीतो नैर्ऋताशन
 १ अत्रपक्षातरं—प्रथमपात्रमुत्तानं संस्त्रावोदकसहितमेत्रेणासाद्य तृतीयपात्रेण सकूर्चपवित्रतवाच्छादयेदिति ॥ २ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्च श्रीहृताशन
 एवच । मंडलान्युपजीवितस्मात्कुर्वीत मंडल ॥ इति ॥ ३ आदित्यावसवोरुद्रा विश्वेदेवा सैपतुका । मंडलेत्रोपतिष्ठतस्मात्कुर्वीत मंडल ॥ इति ॥

दक्षिणमंडलं कुर्यात् ॥ ततस्तेषु भोजनपात्राणि स्थापयेत् ॥ भस्मगृहीत्वा पितृपात्राणां परितः ॥ अपसव्यं ॥ पिशंगं भृष्टिमं भणं
 पिशाचिमिद्रं संमृण ॥ सर्वरक्षोनिर्बहय ॥ सव्यं ॥ देवपात्रपरितः ॥ रक्षाणो अग्नेतवृक्षणे भीरारक्षाणः सुमखप्रीणानः ॥ प्रति
 फुरविरुजवीडूं होज हिरक्षो माहं चिद्रावृधानं ॥ ब्रह्मचते जातवेदो नमश्चैयं चगीः सदुमिद्वर्धनी भूत् ॥ रक्षाणो अग्नेतनयानितो
 कारक्षोतनस्तन्वो ३ अग्रयुच्छन् ॥ यथा चक्रधरो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति ॥ एवं मंडलभस्मां कः सर्वभूतानिरक्षतु ॥ सर्वेषां पापह
 णीनां च क्षुर्बन्धातिशयः ॥ भस्मना मंडलं कुर्यात् किं दोषो न विद्यते ॥ पितृपूर्वकं करशुद्धिः ॥ सव्यं ॥ भवदनुज्ञया विप्रपाणाव
 नौकरणं करिष्ये ॥ क्रियतां ॥ अपसव्यं ॥ घृताक्तमन्नमादाय द्विधा विभज्य ॥ इदं सोमाय पितृमते इदमग्नये कव्यवाहनाय इति
 भागद्वयं दक्षिणसंस्थमभिमृश्य ॥ वामहस्तेन दक्षिणहस्तमुपस्तीर्य ॥ मध्यात्पूर्वार्धादवदानधर्मेणावदाय ॥ पात्रस्थमवत्तंचा
 भिधार्य ॥ सोमाय पितृमते स्वधानमः ॥ सोमाय पितृमते इदं नमः ॥ तथा ॥ अग्नये कव्यवाहनाय स्वधानमः अग्नये कव्यवाह
 नायेदं नमः ॥ एवं सर्वत्र ॥ सव्येनोदकोपस्पर्शनं ॥ उच्चमेस्वरश्च मेयशोपचतेन मश्च ॥ यत्तेन्यूनं तस्मै त उपयत्तेऽतिरिक्तं तस्मै
 तेनमः ॥ अग्नये नमः ॥ स्वस्ति ॥ श्रद्धां मे धांयशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलं ॥ आयुष्यं ते जआरोग्यं देहि मे कव्यवाहन ॥ पाणौ
 हुतं ॥ सुहुतं ॥ घृतेन पात्रेऽभिधारं कृत्वा ॥ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वै ध्यानरमृत आज्ञातमग्निं ॥ कविं सम्राजमतिथिं जना

१ पात्राणि च—पलाशमधूकोटुंबरकुटजप्लक्षजानि शस्तानि । कदलीपनसादीनि मध्यमानि ।
 मित्यूहः कार्यः ॥ ३ मृतभार्यस्यापत्नीकस्य प्रथमे देवद्विजकर एव होमो न पिज्ये इति सिधुः ॥

१ प्रत्येकमेकविप्रपक्षे विप्रपाणिष्वनौकरण

नामासंनपापात्रंजनयंतं देवाः ॥ (इत्यभिघारितेपात्रेविप्राःपाणिस्थमन्नंक्षिपेयुः ॥ अत्रत्रिसुपर्णात्रिसूक्तादीनांजपःकार्यः) ॥
 देवताभ्यःपितृभ्यश्चमहायोगिभ्यएवच ॥ नमःस्वाहायैस्वधायैनित्यमेवनमोनमः ॥ कुरुक्षेत्रंगंगांगंगंप्रभासंपुष्करंतथा ॥
 एतानिपुण्यतीर्थानिश्राद्धकालेसदापठेत् ॥ सप्तव्याधादशाणंपुनृगाःकालांजरेगिरौ ॥ चक्रवाकाःशरद्वीपेहंसाःसरसिमानसे ॥
 तेपिजाताःकुरुक्षेत्रेब्राह्मणावेदपारगाः ॥ प्रस्थितादीर्घमध्वानंयूयंकिमवसीदथ ॥ अमूर्तानांचमूर्तानांपितृणांदीप्ततेजसां ॥
 नमस्यामिसदातेपांघ्यायिनांयोगचक्षुषां ॥ चतुर्भिश्चतुर्भिश्चद्वाभ्यांपंचभिरेवच ॥ ह्येतच्चपुनर्द्वाभ्यांसमेविष्णुःप्रसीदतु ॥
 ईशानःपितृरूपेणमहादेवोमहेश्वरः ॥ प्रीयतांभगवानीशःपरमात्मासदाशिवः ॥ सव्यं ॥ गायत्रीमंत्रेणान्नप्रोक्षणं ॥ दक्षिण
 जानुपातयित्वा ॥ तूष्णींपरिपेचनं ॥ (दक्षिणहस्त उपरि वामोर्ध्व इति पाणिभ्यां पात्रमालभ्य) पृथिवीतेपात्रं चौरपिधानं ब्राह्मण
 स्वामुखेऽमृतं जुहोमि ब्राह्मणानां त्वाविद्यावतां प्राणापानयोर्जुहोम्यक्षितमसि मामैषां क्षेष्ठाः अत्रा मुष्मिं ह्येके ॥ अतो देवा अंचतु
 नोयतो विष्णुर्विचक्रमे ॥ पृथिव्याः सप्त धाम भिः ॥ विष्णो हव्यं रक्षस्वन्युजेन करेण न्युजं द्विजां गुष्ठमूलमन्ने निवेद्य प्रदक्षिणं भ्राम
 येत् ॥ ततो वामहस्तेन पात्रं स्पृशन् पुरुरवार्षवसं ० विश्वे देवा देवता इदमन्नं हव्यमयं ब्राह्मण आहवनीयार्थं इयं भूर्गया अयं भोक्ता गदा
 धर इदमन्नं ब्रह्म इदं सौवर्णेन पात्रमक्षय्यवटच्छायेयं ॥ पुरुरवार्षवसं क्षक विश्वेभ्यो देवेभ्यः इदमन्नं सोपस्करममृतं रूपं परिरितिष्टं परि

१ विप्रा. पाणिस्थस्वपात्रे सस्याप्यभोजनस्थानादन्यत्र हस्तं प्रक्षाल्याचम्य यथास्थानमुपविशेयुः । अन्नौकरणशेषपिंडार्थमवस्थाप्य पितृपात्रे ज्वेदेय ।
 देवद्विजपाणिहोमे तु देवपात्रेषु ॥ २ त्रिसुपर्णपूर्वभोजनविधौ ३३ पत्रेगत । अन्नसूक्तानिराक्षोघ्नादिसूक्तानि च एतच्छ्रद्धप्रयोगाते निवेशितानि सति ॥

वेक्ष्यमाणं चास्य ब्राह्मणस्य आतृषेः स्वाहा हव्यं नमो नमः ॥ ॐ तत्सद्गयायां विष्णुपदादिचतुर्दशपदेषु दत्तमन्नमक्षयमस्तु इति
 सयवदर्भजलं पात्रवामभागे भूमौ क्षिपेत् ॥ गयागदाधरः प्रीयतां ॥ प्रीतो भवतु ॥ देवानुज्ञया पित्राद्यन्ननिवेदनं करिष्ये ॥ कुरुष्व ॥ अपसव्यं ॥ तू
 णीं परिपिच्य (वामहस्त उपरि दक्षिणोऽधः इति पात्रमालभ्य) पृथिवीते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्त्वामुखेऽमृतं जुहोमि ब्राह्मणानां
 त्वाविद्यावतां प्राणापानयोर्जुहोम्यक्षितमसि मामैषां क्षेष्टाः अमुन्नामुष्मि लोके ॥ इदं विष्णुर्विचक्रमेन्नेधानि दधेपदं ॥ तू
 स्य पांसुरे ॥ विष्णोः कव्यं रक्षस्व ॥ विप्रां गुष्ठमूलमन्ने निवेश्य अप्रदक्षिणं भ्रामेयत् ॥ ततो वामहस्तेन पात्रमालभ्य ॥ समूळम
 प्रपितामहादेवताः इदमन्नं कव्यमयं ब्राह्मण आहवनीयार्थे इयं भूर्गया अयं भोक्ता गदाधर इदमन्नं ब्रह्मा इदं राजतं पात्रमक्षयवटच्छा
 येयं ॥ अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहेभ्यः अमुकशर्मभ्यः अमुकगोत्रेभ्यः वसुरुद्रादित्यस्वरूपेभ्यः इदमन्नं सोपस्करममृतरूपं प
 रिचिष्टं परिवेक्ष्यमाणं च अस्य ब्राह्मणस्य आतृषेः स्वधाकव्यं नमो नमः ॥ ॐ तत्सद्गयायां रुद्रपदादिचतुर्दशपदेषु दत्तमन्नमक्षय
 मस्तु ॥ गयागदाधरः प्रीयतां प्रीतो भवतु ॥ ये चेह पितरो ये च नेह यांश्च विज्ञयाँ उचनप्रविज्ञ ॥ त्वं वै तथ्यति ते जातवेदः स्वधाभिर्ग
 जंसुकृतं जुपस्व ॥ पितृभ्यः सांकल्पितः प्रीयतां ॥ सव्यं ॥ ब्रह्मापणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतं ॥ ब्रह्मैव तेन गतं त्वं ब्रह्म कर्मस
 माधिना ॥ हरिर्दाता हरिर्भोक्ता हरिरन्नं प्रजापतिः ॥ हरिर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पंचभिरेव च ॥ हूयते च पुनर्द्वाभ्यां समे विष्णुः
 च यज्वनः ॥ हव्यकव्यमुगेकस्त्वं पितृदेवस्वरूपधृक् ॥ चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पंचभिरेव च ॥ हूयते च पुनर्द्वाभ्यां समे विष्णुः

प्रसीदतु ॥ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ नैवेद्यसमर्पणं ॥ अपसव्यं ॥ ईशानविष्णुकमलासनकार्तिकेयवह्नित्रयाकर्जनीशगणेश्व
राणां ॥ कौचामरद्रकलशोद्धवकश्यपानांपादान्नमामिसततंपितृमुक्तिहेतून् ॥ पंचक्रोशंगयाक्षेत्रं क्रोशमेकंगयाशिरः ॥ यन्नय
त्रस्मरिष्यंतिति पितृणांदत्तमक्षयं ॥ काशीविश्वेश्वरायनमः ॥ पुंडरीकाक्षायनमः ॥ गयागदाधरायनमः ॥ सव्यां मधुमतीः श्रा
वयिष्ये ॥ श्रावय ॥ मधुवाताक्लितायेते मधुक्षरं तिसिंधवः ॥ माध्वीगीर्वाणो भवंतुनः ॥ मधुमधुमधु ॥ सुमधुसर्वान्नमधु ॥
मधुद्वोरस्तुनः पिता ॥ मधुमाश्नो वनस्पतिर्मधुर्मोऽस्तुसूर्यः ॥ माध्वीकान्व्याप्यभूतात्माभुंक्ते विश्वभुगव्ययः ॥ अनेन पितृणां प्रतिसां
अपसव्यं ॥ एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ॥ त्रीँल्लोकान्व्याप्यभूतात्माभुंक्ते विश्वभुगव्ययः ॥ तत्सद्ब्र
वत्सरिकश्राद्धीयब्राह्मणभोजनेन भगवान् पितृपितामहप्रपितामहस्वरूपी जनार्दनवासुदेवः प्रीयतां ॥ प्रीतो भवतु ॥ अमृतोप
ह्वार्षणमस्तु ॥ अपोशनार्थमुदकंदत्वा ॥ सव्यम् ॥ यथासुखं जुषध्वम् ॥ (अमृतऋषिः सत्यो देवता गायत्रीच्छंदः) अमृतोप
स्तरणमसि ॥ श्रद्धायां प्राणे निविष्टो मृतजुहो मिशिवो मां विशाप्रदाहाय ॥ प्राणाय स्वाहा ॥ व्यानाय स्वा
मिशिवो मां विशाप्रदाहाय ॥ अपानाय स्वाहा ॥ श्रद्धायां व्याने निविष्टो मृतजुहो मिशिवो मां विशाप्रदाहाय ॥ दशत्रिर्वागाय
हा ॥ श्रद्धायां मुदुने निविष्टो मृतजुहो मिशिवो मां विशाप्रदाहाय ॥ ब्रह्मणि मआत्मानममृतत्वाय ॥ ब्रह्मणे स्वाहा ॥ करशुद्धिः ॥ दशत्रिर्वागाय
मिशिवो मां विशाप्रदाहाय ॥ समानाय स्वाहा ॥ श्रद्धां भर्गस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि ॥ प्रियं श्रद्धे ददतः प्रियं श्र
त्री जपंकृत्वा ॥ श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया ह्ययते हविः ॥ श्रद्धां भर्गस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि ॥

छेदिदासतः ॥ प्रियंभोजेषुयज्वस्विदंमउदितंकृधि ॥ यथादेवाअसुरेषुअच्छामुग्नेषुचक्रिरे ॥ एवंभोजेषुयज्वस्वस्माकमुदि
तंकृधि ॥ अछांदेवायजमानावायुगोपाउपासते ॥ अछांहृदय्या१याकूत्याअच्छयाविंदतेवसु ॥ अछांप्रातहवामहेअछां
मध्यंदिनंपरि ॥ अछांसूर्यस्यनिम्नुचिअछेअछापयेहनः ॥ अपेक्षितंयाचितव्यंत्याज्यंचैवानपेक्षितम् ॥ उपविश्यसुखेनैवभोक्त
व्यंस्वस्थमानसैः ॥ विद्यमानशाकपाकादिपदार्थेषुयद्रोचतेतद्ब्राह्मंयन्नरोचतेतत्त्याज्यम् ॥ सुखेनैवभोक्तव्यम् ॥ जुषामहे ॥ यथा
शक्तिराक्षोमसूक्तानिआवयिष्ये ॥ आवय ॥ भोजनांतंकिंचिदह्योदनंगंगामृतंच ॥ सर्वसंपूर्णं ॥ सिद्धस्यहविषोमध्येयद्रोचतेतद्वा
चयध्वं ॥ अलं ॥ मधुमतीःआवयिष्ये ॥ आवय ॥ मधुवाताःऋतायतेमधुक्षरंतिंसिधवः ॥ माध्वीर्नःसंतवोषधीः ॥ मधुनर्कमुतोषसो
मधुमत्यार्थिव्रजः ॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता ॥ मधुमान्नोवनस्यतिर्मधुमोऽअस्तुसूर्यः ॥ माध्वीर्गवोभवंतुनः ॥ अपसव्यं ॥ अक्ष
न्नमीमदंतुह्यवप्रियाअधूषत ॥ अस्तौषतुस्वभानवोविप्रानविष्ठयामतीयोजान्विद्रतेहरी ॥ अमुकश्राद्धंसंपन्नं ॥ सुसंपन्नं ॥ सव्यं ॥
विश्वेदेवाःतृताःस्य ॥ तृताःसः ॥ तृताःस्य ॥ तृताःसः ॥ शेषमन्नंकिंक्रियतां ॥ इष्टैः
सहभुज्यतां ॥ सव्यं ॥ अद्यपूर्वोच्चरितं ॥ पितृपितामहप्रपितामहाःतृताःस्य ॥ तृताःसः ॥ तृताःसः ॥ सुसंपन्नं ॥ सव्यं ॥
नंदीयतां ॥ यजमानकुलेजातादासादास्योन्नकांक्षिणः ॥ तेसर्वेवृत्तिमायांतुमयादत्तेनभूतले ॥ अमृतापिधानमसि ॥ रौर

१ अनेनमंत्रेणावशिष्टमन्नंविप्रा पात्राहर्हिदंविदक्षिणैपेतुकंवामेकुर्युः ॥

नीयं० ॥ स्नानं० ॥ गंधस्वधा ॥ पुष्पं० ॥ भृंगराजपत्रं० ॥ धूपं० ॥ दीपं० ॥ अपूपपायसं नैवेद्यं० ॥ तांबूलं० ॥ दक्षिणां० ॥ अथै
 नानुपतिष्ठेत् ॥ नमोवःपितरइषेनमोवःपितरःशुष्मायनमोवःपितरोघोरायनमोवःपितरोजीवायनमोवःपि
 तरोरसाय ॥ स्वधावःपितरोनमोवःपितरोनमएतायुष्माकंपितरइमाअस्माकंजीवावोजीवंतइहसंतःस्याम ॥ मनोन्वाहुवाम
 हेनाराशंसेनसोमेन ॥ पितृणांचमन्मभिः ॥ आतएतुमनःपुनःक्रत्वेदक्षायजीवसे ॥ ज्योक्चसूर्यहृशे ॥ पुनर्नःपितरोमनोद
 दातुदैव्योजनः ॥ जीवंत्रातंसचेमहि ॥ इत्युपस्थायानंतरं ॥ अपसव्यं ॥ उत्तानहस्तेन ॥ परेतनपितरःसोम्यासोगंभीरेभिः
 पथिभिःपूर्विणेभिः ॥ दत्वायास्मभ्यंद्रविणेहभद्रंरयिचनःसर्ववीरंनियच्छत् ॥ इतिपिंडांश्चालयित्वा ॥ वीरमेदत्तपितरःइतित्रिः
 (गयायांधर्मपृष्ठेषुसदसिब्रह्मणस्पतेः ॥ गयाशीर्षेवदेवपितृणांदत्तमक्षयं ॥ गयायांपितरूपेणस्वयमेवजनार्दनः ॥ तंहृष्टापुंड
 रीकाक्षंमुच्यतेचक्रुणत्रयात् ॥ शमीपत्रप्रमाणेनपिंडंदद्याद्गयाशिरे ॥ उद्धरेत्सप्तगोत्राणिकुलमेकोत्तरंशतं) ॥ सव्यं ॥ देव
 द्विजसंनिधौसदर्भभुवि ॥ असोमपाश्चयेदेवायज्ञभागविवर्जिताः ॥ तेषामन्नंप्रदास्यामिविकिरं वैश्वदेविकं ॥ असोमपेभ्योविश्वे
 भ्योदेवेभ्यःइदंविकिरान्नंदत्तंनममइतिसयवजलमन्नंविकिरेत् ॥ अपसव्यं ॥ पित्र्यद्विजसंनिधौसदर्भभुवि ॥ असंस्कृतप्रमीता
 येत्यागिन्योयाःकुलस्त्रियः ॥ दास्यामितेभ्यःप्रकिरमन्नंताभ्यश्चपैतुकं ॥ कुमारकुमारिकाभ्यःगर्भादिनिःसृतेभ्यःइदंप्रकि
 रयेत् ॥ २ अनेनमध्यमपिंडंपत्न्यैदद्यात् । अनिवेद्यनभोक्तव्यपिंडमूलेकथंचन ॥ इतिवचनाच्छ्राद्धीयसर्वपाकजातात्सर्वकिंचित्किंचिन्निवेद
 ॥ १ यत्किंचित्पच्यतेभक्ष्यंभोज्यमन्नमगर्हितं । अधत्तपितरइतिपत्न्यापिंडप्रार्थनमितिचसंप्रतिलुप्तप्रायआचारः ॥

रात्रंदत्तंनमम ॥ इतिसतिलोदकमन्नं विकीर्य ॥ येअग्निदग्धायेअनग्निदग्धामध्येदिवःस्वधर्मा मादयते ॥ तेभिःस्वराळसुनीतिमे
 तांयथावशंतन्वकल्पयस्व ॥ अग्निदग्धेभ्योऽनग्निदग्धेभ्योऽस्मत्कुलप्रसूतमृतेभ्योजीवेभ्यःउच्छिष्टपिंडोगयास्थोदत्तो नमम ॥
 इतिपित्र्यसंनिधौपिंडंतिलोदकंचदत्वा ॥ हस्तौपादौप्रक्षाल्यद्विराचम्य ॥ पवित्रवंतःपरिवाचमासतेपितृपांप्रत्नोअभिरक्षति
 ॥ इतिपित्र्यसंनिधौपिंडंतिलोदकंचदत्वा ॥ इतिपवित्रंधृत्या ॥ देवद्विजहस्तेशिवा आपःसंतु ॥ संतुशिवा
 व्रतं ॥ महःसमुद्रंवरुणस्तिरोदधेधीराइच्छेकुर्धरुणेज्वारभं ॥ दीर्घमायुःश्रेयःशांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्त्वितिभवंतोब्रुवं
 आपः ॥ सौमनस्यमस्तु ॥ अस्तुसौमनीयं ॥ यवाःपांतु ॥ पांतुयवाः ॥ दीर्घमायुःश्रेयःशांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्त्वितिभवंतोब्रु
 तु ॥ दीर्घमायुः० ॥ अपसव्यं ॥ पित्र्यद्विजकरेशिवा आपःसंतु ॥ संतुशिवा आपः ॥ सौमनस्यमस्तु ॥ प्रणीतापात्र
 पांतु ॥ पांतुतिलाः॥दीर्घमायुः० ॥ अस्मद्गोत्रंवर्धतां ॥ गोत्रस्याभिवृद्धिरस्तु ॥ पिंडानामर्चनविधेःस्त्वितिभवंतोब्रु
 मुद्धृत्य ॥ पितृपितामहप्रपितामहानांशर्मणांगोत्राणांयदत्तंप्रतिसांवत्सरिकश्राद्धीयमन्नमुदकादितदक्षय्यमस्त्वितिभवंतोब्रु
 वंतु ॥ अस्त्वक्षय्यंप्रतिसांवत्सरिकश्राद्धीयमन्नमुदकादि ॥ सव्यं ॥ पुरुरवार्षवसंज्ञकानांविश्वेपां देवानांयदत्तंप्रतिसांवत्सरि
 कश्राद्धीयमन्नमुदकादितदक्षय्यमस्त्वितिभवंतोब्रुवंतु ॥ अस्त्वक्षय्यं० ॥ देवानांसुवर्णं ॥ पितृणांरजतं ॥ श्राद्धभोक्तृभ्यो
 ब्राह्मणेभ्यःदक्षिणाःपांतु ॥ पांतुदक्षिणाः ॥ स्वधांवाचयिष्ये ॥ वाच्यतां ॥ अपसव्यं ॥ पितरःस्वधोच्यतांपितामहाःस्व
 धोच्यतां प्रपितामहाःस्वधोच्यतां ॥ अस्तुस्वधा ॥ पिंडोपरितिलोदकंदद्यात् ॥ स्वधासंपद्यंतामितिभवंतोब्रुवंतु ॥ संपद्यं
 तांस्वधा ॥ सव्यं ॥ अग्निपुरोगाविश्वेदेवाःप्रीयंतामितिभवंतोब्रुवंतु ॥ प्रीयंतांविश्वेदेवाः ॥ अपसव्यं ॥ वसुपुरोगाःपितरः

॥ ० ॥
 प्रीयंतामिति भवंतो ब्रुवंतु ॥ प्रीयंतां पितरः ॥ सव्यं ॥ संकल्पसिद्धिरस्त्विति भवंतो ब्रुवंतु ॥ अस्तु संकल्पसिद्धिः ॥ शाकपा
 काः पितृप्रियाः ॥ उत्तमोत्तमाः ॥ आत्मा लंकारः ॥ पिंडान्नमस्कृत्य ॥ गोत्राशिषः प्रार्थयते ॥ प्रार्थय ॥ अधोराः पितरः
 संतु ॥ संत्वधोराः पितरः ॥ दातारो नो भिवर्धतां वेदाः संततिरेव नः ॥ श्रद्धाचनो माव्यगमद्बहुदेयं च नोस्तु ॥ अन्नं च नो बहुभ
 वेदतिथींश्च लभेमहि ॥ याचितारश्च नः संतु माचयाचिष्मकंचन ॥ प्रतिवचनं ॥ दातारो नो भिवर्धतां वेदाः संततिरेव नः ॥ अन्नं च नो बहुभ
 द्वाचनो माव्यगमद्बहुदेयं च नोस्तु ॥ अन्नं च नो बहुभवेदतिथींश्च लभध्वं ॥ याचितारश्च नः संतु माचयाचिद्वंकंचवः ॥ श्र
 रणं करिष्ये ॥ उद्धारय ॥ तद्विष्णोः परमं पदं सदपश्यंति सूर्यः ॥ दिवीवचक्षुराततं ॥ तद्विप्रसो विपुन्यवो जागृवांसः समिधते ॥
 विष्णोर्गर्त्यं पदं ॥ यत्र तत्परं ॥ यत्र गंगार्च ॥ अयोध्यामथुरामायाकाशीकांची अवंतिका ॥ पुरीद्वारावती चैव सप्तैतामोक्षदा
 यकाः ॥ पिंडस्थाने शांतिः पुष्टिस्तुष्टिश्चातु ॥ स्वस्थानेवासः ॥ भोजनपात्राण्युच्चारयिष्ये ॥ कूर्चविसर्जनं ॥ वाजैवाजेवतवा
 जिनो नो धनेषु विप्रा अमृताः कृतज्ञाः ॥ अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृसायां तपथिभिर्देवयानैः ॥ सव्यं ॥ उत्तिष्ठत पितरः विश्वे
 देवैः सह ॥ आमावार्जस्य प्रसवो जगम्यादाद्यावापृथिवी विश्वशंभू ॥ आमां गंतां पितरां मातरां चामासोमो अमृतत्वाय गम्यात् ॥
 स्वादुषंसदः पितरौ वयोधाः कृच्छ्रेऽश्रुतः शक्तीवंतोगभीराः ॥ चित्रसेना इषुबला अमृधाः सतोर्वीरा उरवो ब्रातसाहाः ॥ ब्राह्मणा
 सः पितरः सोम्यासः शिवे नोद्यावापृथिवी अनेहसा ॥ पृषानः पातु दुर्गता हंता वृधोरक्षामाकिर्नो अधशंस ईशत ॥ इहैव स्तं मावि
 यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्रुतं ॥ क्रीळंतौ पुत्रैर्न सृभिर्मोदमानौ स्वर्गहे ॥ आयुः प्रजाधनं विद्यां स्वर्गमोक्षं सुखानि च ॥ प्रयच्छंतु तथारा

सां.श्राद्धं
 ॥७७॥

॥११७॥

ज्यं प्रीतानृणां पितामहाः ॥ एताः सत्या आशिपः संतु गोत्रस्याभिवृद्धिरस्तु ॥ प्रतिसांवत्सरिकश्राद्धं गयाकृतश्राद्धफलमस्तु ॥
 पितृणामक्षय्यात्सिरस्तु ॥ अद्य मे सफलं जन्म भवत्यादाब्जवंदनात् ॥ अद्य मे वंशजाः सर्वे यातावो नुग्रहादिवं ॥ यत्तु शाकादि
 दानेन क्लेशिता यूयमीदृशाः ॥ तत्क्लेशजातं चित्ते तु विस्मृत्य क्षंतुमर्हथ ॥ विस्मृत्य क्षमामहे ॥ अद्यसूर्यपर्वसदृशी तिथिव्या
 सवसिष्ठवामदेवसदृशा ब्राह्मणाः मया यत्कृतं पितृणां प्रतिसांवत्सरिकश्राद्धं तन्मध्ये आसनभोजनमंत्रतंत्रद्रव्यदक्षिणासुन्यूनं
 ब्राह्मणवचनात्सर्वसंपूर्णमस्त्विति भवंतो ब्रुवंतु ॥ सर्वसंपूर्णमस्तु ॥ वासिष्ठासः पितृवद्वाचं मक्रतद्देवोर्द्विळानां क्रपिवत्स्वस्तये ॥
 प्रीता इव ज्ञातयः कामेत्यास्मे देवास्मे देवा सो वधूनुतावसु ॥ देवान्वसिष्ठो अमृतान्वं दुये विश्वाभुवनाभिप्रतस्थुः ॥ तेनोरासंतामुरु
 गायमद्यय्यं पातस्वस्तिभिः सदानः ॥ इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्येति नमस्कारवती मंततः शंसति तस्मादंततः पितृभ्यो नमस्क्रिय
 ते तदा हुर्व्याहावं पित्र्याः शंसे इत् ॥ अब्याहावाऽइति ॥ व्याहावमेव शंसेदसंस्थितं वै पितृयज्ञस्य साध्वसंस्थितं वा एप पितृयज्ञं
 संस्थापयति योन्याहावं शंसति तस्माद्ब्याहावमेव शंस्तव्यं ॥ ब्राह्मणानां सीमांतमनुव्रजेत् ॥ जपच्छिद्रं तपच्छिद्रं यच्छिद्रं श्राद्ध
 कर्मणि ॥ सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः ॥ यस्य स्मृत्या च नामोत्तया तपो यज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनं संपूर्णं तां यातिसद्यो
 वंदे तमच्युतं ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं द्विजोत्तमाः ॥ श्राद्धं संपूर्णं तां यातु प्रसादाद्भवतां मम ॥ अनेन पितृणां प्रतिसांव
 त्सरिकश्राद्धयज्ञेन पितृपितामहप्रपितामहस्वरूपी जनार्दनवासुदेवः प्रीयतां ॥ एष पितृयज्ञः ॥ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ वर्षद्रुते
 विष्णवासाकृणोमितन्मे जुपस्व शिपि विष्टुह्वयं ॥ वर्धतु त्वासुष्टु तयो गिरो मेयुयं पतः स्वस्तिभिः सदानः ॥ विष्णवे नमो वि

णवेनमोविष्णवेनमः ॥ द्विराचम्य ॥ वैश्वदेवंपरेहनितदैववाश्राद्धांगतर्पणंकुर्यात् इतिप्रतिसांवत्सरिकश्राद्धप्रयोगःसमाप्तः॥

श्रीः ॥ आमासुपुक्रमैरयआसूयरोहयोद्वि ॥ ७८ ॥ अथाब्रह्मणानि ॥
मोवीरं कर्मण्यददाति ॥ सादुन्यंविदुथं सभेयंपितृश्रवणंयोददाशदस्मै ॥
श्रेष्ठसर्वसंवित्तासाविषन्तोभीक्षाघर्मस्तदुषप्रवोचं ॥ हिंक्ण्वतीवसुपत्नीवसूनांवत्समिच्छंतीमर्नसाभ्यागात् ॥
योअभ्येयंसार्वधत्तामहतेसौभगाय ॥ इन्द्रहृद्यामकोशाअभूवन्यशायशिक्षगुणतेसखिभ्यः ॥ दुर्मायवोदुरेवामर्त्यासोनि
पंगिणोरिपवोहत्वासः ॥ वारीमंतऋष्टिमंतोमनीषिणःसुधन्वान्इष्टुमंतोनिषंगिणः ॥ दुर्मायवोदुरेवामर्त्यासोनि
मरुतोयाथनाशुभं ॥ चतुष्कपदायुवतिःसुपेशाघतप्रतीकावयुनानिवस्ते ॥ तस्यांसुपुर्णावृषणानिषेदतुयत्रदेवादधिरेभागधैवं ॥
एकःसुपुर्णःससमद्रमाविवेशसहदंविश्वंभुवनंविचष्टे ॥ तपाकैन्मर्नसापश्यमंतितस्तंमातारैर्ऋसउरेऋहमातरं ॥ सुपुर्णविप्राः
कवयोवचोभिरेकंसंतबहुधाकल्पयंति ॥ छंदसिचदधतोअध्वरेषुग्रहान्तसोमस्यमिमतेद्वादश ॥ पितुंनुस्तोषमहोधर्माणंतवि
षी ॥ यस्यत्रितोव्योजसावृत्रंविपर्वमर्दयत् ॥ स्वादोपितोमधोपितोवयंत्वाववृमहे ॥ अस्माकमविताभवं ॥ उपनःपितृवाचं

अन्नसूः
॥७८॥

१ श्राद्धभोजनेभोक्तुःप्रायश्चित्तं—दर्शश्राद्धेषट्प्राणायामाः । महाख्यादिश्राद्धेषुत्रिवर्षोर्ध्वप्रतिवार्धिकेपुचषट्प्राणायामाः गायत्र्यादशकृत्वोभि
मंत्रितस्यजलस्यपानंवा ॥

रशिवः शिवाभिरुतिभिः ॥ मयो मुरे द्विपेण्यः सखा सुशेवो अद्वयाः ॥ तवत्ये पितोरसारजांस्यनुविष्टिताः ॥ द्विविवाता इव श्रि-
 ताः ॥ तवत्ये पितो ददतस्तव स्वादिष्टते पितो ॥ प्रस्वाद्धानोरसानां तु विग्रीवा इवेरते ॥ त्वेपितो महाना देवानां मनोहितं ॥ अ-
 कारि चारुके तु नातवाहिमवसावधीत् ॥ यदुदो पितो अजगन्विष्वस्वपवतानां ॥ आत्रा चिन्नो मधो पितो रभक्षार्यगम्याः ॥ यदुपा-
 मोपधीनां परिशमारिशामहे ॥ वातापि पीव इन्द्रव ॥ यत्ते सोमगवाशिरो यवाशिरो भजामहे ॥ वातापि पीव इन्द्रव ॥ करं भओप-
 धे भवपीवो वृक्ष उदारुथिः ॥ वातापि पीव इन्द्रव ॥ कया शचिष्ठया वृता ॥ कस्त्वा सत्यो मदानां माहिष्ठो मत्सदंधसः ॥
 त्वासधमाद ॥ कयानश्चित्रा अभुवदती सदा बंधः सखा ॥ कया शचिष्ठया वृता ॥ कस्त्वा सत्यो मदानां माहिष्ठो मत्सदंधसः ॥
 दृळ्हा चिद्वारुजे वसु ॥ अभीषुणः सखीनामविताजरितृणां ॥ शतं भवा स्य यथा ताहरसो दैव्यस्य ॥ इदुविं-
 वो वित्तरस्य ॥ विश्वेयं द्वावतमर्त्या सोमधुब्रवंतो अभिसंचरति ॥ अंतश्च प्रागा अदि तिर्भवा स्य यथा ताहरसो दैव्यस्य ॥ इदुविं-
 द्रस्य सख्यं जुपाणः श्रौष्टी वधुरमनुराय ऋध्याः ॥ अपां सोमममृता अभुमागन्मज्ज्योतिरविदामदेवान् ॥ किन्नमसमान्कृणवद-
 रतिः किमु धूर्तिरमृतमर्त्यस्य ॥ शन्नो भव हृद आपां तद्देवो पिते वसोमसूनवे सुशेवः ॥ सखे वस ख्य उरुशंसधीरुः प्रण आयुर्जीवसे ॥ १ ॥
 सोमतारीः ॥ इमे मापीताय शसं उरुख्यवोरथं न गावः समना हृपवसु ॥ ते मां रक्षंतु विस्त्रसंश्च रित्रा दुतमास्त्रामाद्यवयं त्विदं वः ॥ इपिरेण ते मन-
 अग्निं न मां मथितं संदीपः प्रचक्षय कृणुहि वस्य सोमः ॥ अथाहि ते मदु आ सोममन्ये रे वां इव प्रचरापुष्टिमच्छ ॥
 सासुतस्य भक्षीमहि पित्र्यस्येव रायः ॥ सोमराजन्प्रण आयू पितारी रहानीव सूर्यो वासराणि ॥ सोमराजन्मळ्या नः स्वस्ति तव स्म

सिञ्चत्याहस्तस्यविद्धि॥ अलतिदक्षुतमन्युरिदोमानोअयोअनुकामंपरादाः॥ त्वं हिनस्तन्वःसोमगोपागात्रैगात्रेनिषसथानच
 क्षाः॥ यत्तेवयंप्रेमिनामव्रतानिसनोमृळसुषखादेववस्यः॥ २॥ अपत्याअस्थुरनिराअमीवानिरत्रसंतमिषीचीरभैषुः॥ अयंयःसोमो
 हायाअगन्सयत्रप्रतिरंतआयुः॥ ३॥ योनइंदुःपितरोहृत्सुपीतोमर्त्योमर्त्याआविवेश॥ तस्मैसोमायहविषाविधेममृळीकेअस्यसुम
 तौस्याम॥ त्वंसोमपितृभिःसंविदुनोनुद्यावापृथिवीआतंतथ॥ तस्मैतइंदोहविषाविधेमवयंस्यामपतयोरयीणां॥ त्रातारोदे
 वाअधिवोचतानोमानोनिद्राईशतमोतजल्पिः॥ वयंसोमस्यविश्वहप्रियासःसुवीरासोविदथमावदेम॥ त्वनःसोमविश्वतोवयो
 धास्त्वंस्वर्विदाविशानुचक्षाः॥ त्वनइंदऊतिभिःसजोषाःपाहिपश्चातादुतवापुरस्तात्॥ ३॥ नवाडेदेवाःक्षुधमिद्धधंद
 दुहृताशितमुपगच्छंतिमृत्यवः॥ उतोरुचिःपृणतो नोपदस्यत्युतापृणन्मडितारुनविदते॥ यआधायचकमानायपित्वोऽन्नवा
 न्तसन्नपितायोपजग्मुषे॥ स्थिरंमनःकृणुतेसेवतेपुरोतोचित्समडितारुनविदते॥ सइन्द्रो जोगुहवेददात्यन्नकामायचरतेक
 शाय॥ अरंमस्मैभवतियामहृताउतापुरीषुकृणुतेसखायं॥ नससखायोनददातिसख्येसचाभुवेसर्वमानायपित्वः॥ अपा
 स्मात्प्रेयान्नतदोकोअस्तिपुणंतमन्यमरणंचिदिच्छेत्॥ पूर्णयादिन्नाधमानायतव्यान्द्राधीयांसमनुपश्येत्पंथां॥ ओहिवर्त
 तेरथ्येवचक्रान्यमन्यमुपतिष्ठंतरायः॥ १॥ कृषंनिफलआशितंकृणोति यन्नध्वानमपवृंकेचरित्रैः॥ नार्यमणंपुण्यतिनोसखायं
 केवलाधोभवतिकेवलादी॥ वदन्ब्रह्मावदतोवनीयान्पुणन्नापिरपृ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

□□□□□

$$f_1 = \frac{1}{4}$$

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यः सुशेवा अतद्रासोऽवृका अश्रमिष्ठाः ॥ तेषां यवः सध्वं चो निषद्या मेतव नः पांत्वमूर ॥ येषां यवो मास ते यते अग्ने पश्यं तोऽअंधं दु
 रिता दं रक्षन् ॥ रुरक्षतान् त्सुकृतो विश्ववे द्वादिप्स त इन्द्रिपवो नाह देभुः ॥ त्वया वयं सध्वन्य १ स्त्वो तास्तव प्रणीत्य श्यामवाजान् ॥
 स्मान्द्रुहो निदो मित्रमहो अवद्यात् ॥ ३ ॥ रक्षो हणं वाजिन माजि धर्मि मित्रं प्रथिष्ठ मुपया मिशमं ॥ दहाशसो रक्षसः पाह्य १
 समिद्धः स नो दिवा सरिषः पातु नक्तं ॥ अयो दंष्ट्रो अर्चिषा या तु धानानुपस्पृश जातवेदः समिद्धः ॥ शिशानो अग्निः क्रतुभिः
 व्यादौ वृकत्व्यपि धत्स्वासन् ॥ उभो भया विस्त्रपधे हि दंष्ट्रा हिंस्रः शिशानो वरं परं च ॥ आजिह्वयामूर देवान् न भस्वक्र
 यां तु धानान् ॥ यज्ञै रिक्षुः संनममानो अग्ने वाचा शल्यो अशनिभिर्दिहानः ॥ उतां तरे क्षेपरिया हिराजन्जभैः संधे ह्यभि
 धेषां ॥ अग्ने त्वचं या तु धानं स्याभिधि हिंसा शनिर्हरसा हंत्वेनं ॥ तार्भिर्विध्य हृदये या तु धानान् प्रतीचो बाह्वन् प्रतिभङ्
 यन्ने दानीं पश्य सिजातवेदुस्तिष्ठं तमग्र उत वाचरंतं ॥ यद्वां तरे क्षेपथिभिः पतंतं तमस्ता विध्य शर्वा शिशानः ॥ उता लब्धं स्पृणुहि
 जातवेद आलेभाना दृष्टिभिर्या तु धानात् ॥ अग्ने पूर्वो निज हि शोशु चान आमादुः क्षिं वकास्तमदंत्वेनीः ॥ इह प्रब्रह्मियतमः सो अग्ने
 यो या तु धानो य इदं कृणोति ॥ तमारं भस्वस मिधाय विष्ठ न च क्षसश्चक्षुषे रंधयेनं ॥ तीक्ष्णे नग्ने चक्षुषारक्षयज्ञं प्राचं वसुभ्यः प्रणय
 प्रचेतः ॥ हिंस्रं रक्षां स्य भिशोशु चानं मात्वा दभन्या तु धानान् नृचक्षः ॥ नृचक्षारक्षः परिपश्य विक्षुतस्य त्रीणि प्रतिशृणीह्यग्रा ॥
 तस्याग्ने पृष्ठीर्हरसा शृणीहि त्रेधा मूलं या तु धानं स्य वृश्च ॥ २ ॥ त्रिर्या तु धानः प्रसितं त एत्वतं यो अग्ने अनृते न हति ॥ तमर्चिषा स्फु

अथजातवेदःसमक्षमेनंगुणतेनिवृद्धि ॥ तदग्नेचक्षुःप्रतिधेहिरेभेशफारुजयेनपश्यसियातुधानं ॥ अथर्ववज्ज्योतिपादेव्येन
सत्यंधूवेतमचित्त्वन्यौप ॥ यदग्नेअद्यामिथुनाशपातोयद्वाचस्तुष्टंजनयतेरेभाः ॥ मन्योर्मनसःशरव्याइजायतेयातयाविध्यहृद
येयातुधानान् ॥ पराशृणीहितपसायातुधानान्परश्रिरेक्षोहरसाशृणीहि ॥ परार्चिपामूर्देवान्छृणीहिपरासुतपोअभिशोशु
चानः ॥ पराद्यदेवावृजिनंशृणंतुप्रत्यगेनंशुपथायंतुष्टाः ॥ वाचास्तेनंशरवक्रञ्चंतुमर्मन्विश्वस्यैतुप्रसितियातुधानः ॥ संवत्सरीणंप
यःपौरुषेयेणक्रविपासमंक्तयोअश्व्येनपशुनायातुधानः ॥ योअद्यायाभरतिक्षीरमेतेपाशीर्पाणिहरसापिवृश्च ॥ संवत्सरीणंप
ग्रुस्त्रियायास्तस्यमाशीद्यातुधानोनृचक्षः ॥ पीयूषमग्नेयतमस्तिर्ज्मात्तंप्रत्यंचमर्चिपाविध्यमर्मन् ॥ विपंगवायातुधानाःपिवं
त्वावृश्चयंतामदितयेदुरेवाः ॥ परंनादेवःसविताददातुपराभागमोपधीनांजयंतां ॥ सनादग्नेमृणसियातुधानान्नत्वारक्षासिपृ
तेनासुजिग्युः ॥ अनुदहसहमूरान्क्रव्यादोमातेहृत्यामुक्षतदैव्यायाः ॥ त्वन्नोअग्नेअधरादुदक्तात्त्वंपश्चादुतरक्षापुरस्तात् ॥ सखेस
प्रतितेतैअजरासस्तापिष्ठाअघशंसशोशुचतोदहंतु ॥ ४ ॥ पश्चात्पुरस्तादधरादुदक्तात्त्वंपश्चादुतरक्षापुरस्तात् ॥ सं
खायमजरोजरिग्णेऽग्नेमर्तोअमर्त्यस्त्वनः ॥ परित्वाग्नेपुरवयंविप्रसहस्यधीमहि ॥ धपद्वर्णोदिवेदिवेहंतारंभंगरावतां ॥ विपे
णंभंगरावतःप्रतिष्मरक्षसौदह ॥ अग्नेतिग्मेनशोचिपातपुराभिर्क्रुष्टिभिः ॥ प्रत्यग्नेमिथुनादहयातुधानाकिमीदिना ॥ ५ ॥
त्वांशिशामिजागृह्यदब्धंविप्रमन्मभि ॥ प्रत्यग्नेहरसाहरःशृणीहिविश्वतःप्रति ॥ यातुधानस्यरक्षसोबलंविरुजवीर्यं ॥ इंद्रासोमास
इंद्रासोमातपंतरक्षबुब्जतंत्यपयंतंवृषणातमोवृधः ॥ पराशृणीतमचित्त्वन्योपतंहंतुपतंहंतुदेथांनिशिशीतमन्त्रिणः ॥ इंद्रासोमास

मधशंसमभ्यर्धं धतपुर्धयस्तु चरुरग्निर्वोऽइव ॥ ब्रह्मद्विषैकव्यादैधोरचक्षसेद्वेर्षोधत्तमनवायं किमीदिने ॥ इंद्रासोमादुष्कृतोवत्रे
 अंतरनारंभणे तमसिप्रविध्यतं ॥ यथानातः पुनरेकश्चनोदयत्तद्गामस्तु सहसेमन्युमच्छत्रः ॥ इंद्रासोमावर्तयतं दिवोवधंसंपृथि
 न्मभिः ॥ तपुर्वधेभिरजरेभिरत्रिणो निपशने विध्यतं तु निस्वरं ॥ १ ॥ इंद्रासोमापरिवांभूतु विश्वत इयं मतिः कक्ष्याश्वेववा
 इंद्रासोमादुष्कृते मासुगंभूयो नः कदाचिदभिदासतिद्रुहा ॥ योमापाके नमनसा चरतमभिचष्टे अनृते भिर्वचोभिः ॥ आपर्पइ
 वकाशिनासंगृभीता असंनस्त्वासंत इद्रवृक्ता ॥ योपाकशंसं विहरंत एवैर्वाभद्रं दूषयंति स्वधाभिः ॥ अहयेवातान्प्रदातु सोम
 आवा दधातु निर्ऋतेरुपस्थे ॥ योनोरसं दिप्सति पित्वो अग्ने यो अश्वानां योगवायस्तनूना ॥ रिपुस्तेन स्तेयकृद्भ्रमेतु निषहीयतां
 तन्वा इतनाच ॥ २ ॥ पुरः सो अस्तु तन्वा इतना च तिस्रः पृथिवीरुधो अस्तु विश्वाः ॥ तयोर्यत्सत्यं तरहजीयस्तदित्सोमो वतिहं त्यासंत ॥
 प्सति यश्च नक्तं ॥ सुविजानां च किपुषेजनाय सच्चासं च्छवचसी पस्पृधाते ॥ तयोर्यत्सत्यं तरहजीयस्तदित्सोमो वतिहं त्यासंत ॥
 नवाउ सोमो वृजिर्नाहि नोति नक्षत्रियं मिथुयाधारयंतं ॥ हंति रक्षो हं त्यासदं तमभाविं द्रस्य प्रसितौ शयाते ॥ यदिवाहमनृतदे
 यदिवायुस्तपपूरुषस्य ॥ अधासवीरैर्दुशभिर्विधूयायोमो घंयातु धानेत्याह ॥ ३ ॥ योमायातुं यातु धानेत्याह योवारक्षाः

शुचिरस्मीत्याह ॥ इंद्रस्तंहतुमहुतावधेन विश्वस्य जंतोरधमस्पदीष्ट ॥ प्रयाजिगातिखगलैव नक्तमपद्रुहातुन्वं गूहमाना ॥
 वव्रोऽअनंतोऽअवसापदीष्टग्रावो णो घंतुरक्षसं उषब्दैः ॥ वितिष्ठध्वं मरुतो विक्ष्वी ॥ च्छतं गृभाय तं रक्षसः संपिनष्टन ॥ वयो ये भूत्वी
 पतयति नक्तभिर्गेवारिपो दधिरे देवे अध्वरे ॥ प्रवर्तय द्विवो अश्मान मिद्रसो मशितं मघवन्त्सं शिशधि ॥ प्राक्तादपाक्ता दधरा
 दुदंक्ता दृभिर्जहिरक्षसः पर्वतेन ॥ एत उत्येप तयं ति श्वया तव इंद्र दिप्सं ति द्विप्सवो दाभ्यं ॥ शिशीति शुक्रः पिशुनेभ्यो वधं नूनं स्र
 जदृशानियातुमद्भ्यः ॥ ४ ॥ इंद्रो यातनमभवत्पराशरो हविर्मथीनामभ्या ॥ सुपर्णया तु मुत गृध्रया तु हृषदे व प्रमृण रक्ष इंद्र ॥
 भिदन्त्स त एति रक्षसः ॥ उलूकया तुं शुशुलूकया तुं जहि श्वया तु मुत कोकया तुं ॥ सुपर्णया तु मुत गृध्रया तुं हृषदे व प्रमृण रक्ष इंद्र ॥ उति
 मानो रक्षो अभिनख्यातु मावताम पौच्छतु मिथुनाया किमीदिना ॥ पृथिवी नः पार्थिवात्पात्व ह सोऽतारि क्षं द्विव्यात्पात्वस्मान् ॥
 इंद्र जहि पुमां सं यातु धानं मुत स्त्रियं मायया शाशदानां ॥ ५ ॥ अग्ने हंसिन्य ॥ त्रिणं दीद्यन्मर्त्येभ्यः ॥ स्वैक्षये शुचि व्रत ॥ उति
 द्रेश्च सोम जागृतं ॥ रक्षोभ्यो वधमस्य तमशानियातुमद्भ्यः ॥ ५ ॥ अग्ने हंसिन्य ॥ त्रिणं दीद्यन्मर्त्येभ्यः ॥ स्वैक्षये शुचि व्रत ॥ उति
 छसिस्वो हुतो घृतानि प्रति मोदसे ॥ यत्त्वा सुचः सम स्थिरन् ॥ स आहुतो विरोचते गिरील्लेन्यो गिरा ॥ तं त्वा हवंत मर्त्याः
 घृतेनाग्निः समज्यते मधुं प्रतीक आहुतः ॥ अदाभ्यं गृहपतिं ॥ अदाभ्येन शोचिषाग्ने रक्षस्त्वं दह ॥ गोपाकृतस्य दीदिहि ॥
 ॥ १ ॥ तं मर्ता अमर्त्यं घृतेनाग्निं संपर्यत ॥ उरुक्षये पुदीद्यत् ॥ तं त्वागीभि रुरुक्षया हव्यवाहं समीधिरे ॥ यजिष्ठं मानुषे जने ॥ २ ॥
 सत्त्वमग्ने प्रतीकेन प्रत्योषयातु धान्यः ॥ उरुक्षये पुदीद्यत् ॥

ब्रह्मणाग्निःसंविदुनोरक्षोहाबाधतामितः॥अमीवायस्तेगर्भदुर्णामायोनैमाशयै॥अग्नि
 ध्वं ब्रह्मणासहनिष्क्रव्यादमनीनशत्॥यस्तेहतिपुतयंतनिषत्स्नुयःसरीसृपं॥जातंयस्तेजिघांसतितमितोनाशयामसि॥यस्तंऊ
 रूविहरत्यंतरादंपतीशयै॥योनियोअंतरारेळ्हितमितोनाशयामसि॥यस्त्वाभ्रातापतिर्भूत्वाजरोभूत्वानिपद्यते॥प्रजांयस्ते
 जिघांसतितमितोनाशयामसि॥यस्त्वास्वप्नेनतमसामोहयित्वानिपद्यते॥प्रजांयस्तेजिघांसतितमितोनाशयामसि॥१॥॥
 उदीरतामवर्उत्परासउन्मध्यमाःपितरःसोम्यासः॥असुंयईयुरवकाऋतज्ञास्तेनोवंतुपितरोहवेषु॥इदंपितृभ्योनमोअस्त्व
 द्ययेपूर्वासोयउपरसईयुः॥येपार्थिवेजस्यानिषत्तायेवानूनंसुवजनासुचिक्षु॥आहंपितृन्त्सुविदत्राअवित्सिनपातंचवि
 क्रमणंचविष्णोः॥बृहिषदोयेस्वधयासुतस्यभजंतपित्वस्तइहागमिष्ठाः॥बृहिषदःपितरुत्तुर्वागिमावोहव्याचंकृमाजुष
 ध्वं॥तआगतावसाशंतमेनार्थानःशंयोररपोदधात॥उपहूताःपितरःसोम्यासोबृहिष्येषुनिधिषुप्रियेषु॥तआगमंतुतइह
 श्रुवंत्वाधिब्रुवंतुतैऽवंत्वस्मान्॥१॥आच्याजानुदक्षिणतोनिषद्येमंयज्ञमभिगृणीतविश्वे॥मार्हिंसिष्टपितरःकेनचिन्नोयह
 आगःपुरुपताकराम॥आसीनासोअरुणीनामुपस्थैरधिंत्तदाशुषेमर्त्याय॥पुत्रेभ्यःपितरस्तस्यवस्वःप्रयच्छततइहोजेदधा
 त॥येनःपूर्वेपितरःसोम्यासोऽनूहिरेसोमपीथंवसिष्ठाः॥तेभिर्यमःसंराणोहवीष्युशन्नशस्त्रिःप्रतिकाममत्तु॥येतातृषुदे
 वत्राजेहमानाहोत्राविदुःस्तोमंतद्यासोऽअकैः॥आग्नेयाहिसुविदत्रैर्भिरर्वाङ्सत्यैःकव्यैःपितृभिर्धर्मसद्भिः॥येसत्यासोहवि
 रदोहविष्पाइंद्रेणदेवैःसुरथंदधानाः॥आग्नेयाहिसहस्रंदेववन्दैःपरैःपूर्वैःपितृभिर्धर्मसद्भिः॥२॥अग्निष्वात्ताःपितरएहग

छतुसदःसदःसदतसुप्रणीतयः ॥ अत्ताहुर्वीपिप्रयतानिब्रह्मिथारुचिसर्ववीरंदधातन ॥ त्वमग्रईळितोजातवेदोऽवोढुव्या
 निसुरभीणिकृवी ॥ प्रादाःपितृभ्यःस्वधयातेअक्षन्नद्धित्वंदेवप्रयताहुर्वीपि ॥ येचेहपितरोयेचनेहयांश्चविद्मयोलेचनप्रवि
 द्म ॥ त्वंवैथयतितेजातवेदःस्वधाभिर्गुंशंसुक्रंतंजुपस्व ॥ येअग्निदुग्धायेअनेग्निदग्धामधेद्विवःस्वधयामादयते ॥ तेभिः
 स्वराळसुनीतिमेतांयथावृशंतुन्वकल्पयस्व ॥ ३ ॥ देवानापत्नीःशंसत्यनूचीरग्निगृहपतितस्मादनूचीपत्नीगार्हपत्यमासेत
 दाहूराकांपूर्वाशंसत्यनूपत्नीःशंसदेपहवाएतत्पत्नीपुरेतोदधाति यदग्निगार्हपत्योऽ
 ग्निनैवासुतद्गार्हपत्येनपत्नीपुप्रत्यक्षाद्रेतोदधाति प्रजात्यैप्रजायतेप्रजयापशुभिर्यएवंवेदतस्मात्समानोदग्याःस्वसान्योदग्यांशंसत्यवर
 जायायाअनुजीविनीजीवतिराकांशंसति राकाहवाएतांपुरुषस्यसेवनीसीव्यतिचैपाशिश्रेधिपुमांसोस्यपुत्राजायंतेयऽएवंवेद
 पावीरवीशंसतिवाग्वैसरस्वतीपावीरवीवाच्येवतद्वाचंदधाति तदाहुर्यामीपूर्वाशंसत् ॥ पित्र्याइइति ॥ यामीमेवपूर्वाशंसे
 दिमंयमप्रस्तरमाहिसीदेतिराज्ञेवैपूर्वपेयंतस्माद्यामीमेवपूर्वाशंसेन्मातलीकव्यैर्मोअंगिरोभिरितिकाव्यानामनूचींशंसत्यवर
 णैववैदेवान्काव्याःपरेणैवपितृस्तस्मात्काव्यानामनूचींशंसत्युदीरतामवरउत्परासइति पित्र्याःशंसत्युन्मध्यमाःपितरःसोम्या
 सइतियेचैवावमायेचपरमायेचमध्यमास्तान्तस्वीनंतंरायंग्रीणात्याहंपितृन्सुविदत्रोअवित्सीतिद्वितीयांशंसति बर्हिपदोये
 स्वधयासुतस्येतद्वाएपांग्रियंधामयद्बर्हिपदइतिप्रियेणैवैनंस्तद्धाम्नासमर्धयति प्रियेणधाम्नासमृध्यतेयएवंवेदेदंपितृभ्योन
 मोअस्त्वद्येतिनमस्कारवतीमंततःशंसतितस्मादंततःपितृभ्योनमस्क्रियते तदाहुर्व्याहावंपित्र्याःशंसेत् ॥ आव्याहावोइइ

ति ॥ व्याहर्वमेवशंसेदसंस्थितं वैपितृयज्ञस्य साध्वसंस्थितं वा एष पितृयज्ञं संस्थापयति यो व्याहवंशं स तस्माद् व्याहवमेवंशं
व्यं ॥ १ ॥ स्वादुष्किलायं मधुमोऽतायमितीन्द्रस्य द्रीरनुपानीयाः शंसत्येताभिर्वा इन्द्रस्तृतीयसवनमन्वपि बत्तदनुपानीयानां
मनुपानीयात्वं माद्यंतीव वैतर्हि देवताय देता होता शंसति तस्मा देता सुमद्वत्प्रतिगीर्थय योरोजसास्कभितारजांसीति वैष्णुवारुणौ
मृचंशंसति विष्णुर्वैयज्ञस्यदुरिष्टं पाति वरुणस्विष्टं योरुभयोरेवशां त्यैविष्णोर्नुकंवीर्याणि प्रवोचमिति वैष्णवींशंसति यथावैमत्य
मेवंयज्ञस्य विष्णुस्तद्यथादुष्कृष्टं दुर्मतीकृतं सुकृष्टं सुमतीकृतं कुर्वन्निद्यादेवमेवैतद्यज्ञस्यदुष्टं दुःशस्तं सुष्टुतं सुशस्तं कुर्वन्नैतियदेतां
होता शंसति तंतुं तन्वन्नजसोभानुमन्विहीति प्राजापत्यांशंसति प्रजावैतंतुः प्रजामेवास्मा एतत्संतनोति ज्योतिष्मतः पथोरक्षधि
याकृतानिति देवयाना वैज्योतिष्मतः पंथानस्तानेवास्मा एतद्वितनोत्यनुल्बणं वयतजोगुवामपोमनुर्भवजनयादैव्यं जनमित्येवै
नंतन्मनोः प्रजया संतनोति प्रजात्यै प्रजायते प्रजया पशुभिर्य एवं वै देवान इन्द्रो मघवा विरप्शीत्युत्तमया परिदधातीं यवा इन्द्रो मघ
वा विरप्शीकरत्सत्या चर्षणी धृदनर्वेतीयं वैसत्या चर्षणी धृदनर्वा ॥ त्वं राजानुषां धेह्यस्मे इतीयं वैराजानुषामधि श्रवो माहिनं
यज्जरित्र इतीयं वै माहिनं यज्ञश्रवो यजमानो जरिताय जमानायै वैतामा शिषमाशास्ते तदुपस्पृशन्भूमिं परिदध्यात्तद्यस्यामेव यज्ञ
संभरति तस्यामेवैनंतदंततः प्रतिष्ठापयत्यग्नेमरुद्भिः शुभयद्भिर्ऋकभिरित्याग्निमारुतमुक्थं शस्त्वाग्निमारुत्या यजति यथाभागं
तद्देवताः प्रीणाति प्रीणाति ॥ इति द्वे ब्राह्मणखंडे ॥ अथ संक्षिप्तदर्श आर्क्षसंकल्पः ॥ ११ ॥

श्रीः ॥ आचम्य देशकालौ संकीर्त्य ० पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं ॥ पुरुरवार्द्रवसंज्ञकानां विश्वेषां देवानां विश्वेषां देवानां ॥ प्राचीनावी

अमुकशर्मणां ॥ अमुकशर्मणां ॥ सपत्नीकानां ॥ वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ॥ माता
 महमातुःपितामहमातुःप्रपितामहानां ॥ अमुकशर्मणां ॥ अमुकशर्मणां ॥ सपत्नीकानां ॥ वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ॥ स
 ती ॥ अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ॥ अमुकशर्मणां ॥ अमुकशर्मणां ॥ सपत्नीकानां ॥ वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ॥ स
 महमातुःपितामहमातुःप्रपितामहानां ॥ अमुकशर्मणां ॥ अमुकशर्मणां ॥ सपत्नीकानां ॥ वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ॥ स
 न्यं ॥ एतेषां श्रेयोर्थमोक्षार्थतृप्त्यर्थं ॥ ममपितृणां दर्शश्राद्धं ब्रह्मार्पणेन विधिना अन्नेन हविषा सद्यः करिष्ये ॥ तदंगतिलोदका
 दिकरिष्ये ॥ तिलोदकं कृत्वा ॥ पुरुरवाद्रवसंज्ञकानां विश्वेषां देवानां ॥ प्राचीनावीती ॥ अस्मत्पितृ० हाः वसुरुद्रा
 प० वसु० णां माताम० नां गो० सप० वसुरु० ॥ ब्रह्मणे इदमासनं ॥ स्वासनं ॥ अत्रास्यतां ॥ धर्मोसि ॥ अस्मत्पि० हाः वसुरुद्रा
 दित्यस्वरूपाः ॥ यथाभागशः एषवोधूपः ॥ सुधूपः ॥ अस्मत्पि० हाः स० पाः ॥ यथाभागशः एषवोदीपः ॥ सुदी
 पः ॥ अस्मत्पितृ० व० पाः ॥ आच्छादनार्थं किंचिद्वावहारिकं द्रव्यं ॥ स्वाच्छादनं ॥ फलार्थे पूगफलं ॥ सुफलं ॥ पवित्रा
 न्नं ॥ अस्मत्पि० हाः स० पाः ॥ अस्त्वद्येयपूर्वो सोयऽउपरासऽईयुः ॥ येषार्थैर्वेजस्यानिर्षत्तायेवानुसु
 पः ॥ अस्मत्पि० हाः स० पाः ॥ अस्तुपवित्रं ॥ ॐ इदं पितृभ्यो नमोऽस्तु वदन्ताः पंचोपचाराः सर्वपरिपूर्णा भवन्तु ॥ त
 र्धमेकुशाः ॥ अस्तुपवित्रं ॥ ॐ इदं पितृभ्यः आसनादिअन्नगंधपुष्पधूपदीपाच्छादनांताः पंचोपचाराः सर्वपरिपूर्णा भवन्तु ॥ पात्रप्रोक्षणं ॥ त
 वृजनो सुविश्रु ॥ नमः पितृभ्यः आसनादिअन्नगंधपुष्पधूपदीपाच्छादनांताः पंचोपचाराः सर्वपरिपूर्णा भवन्तु ॥ पात्रप्रोक्षणं ॥ त
 र्चितमस्तु ॥ न्यूनंतद्विधिवदस्तु ॥ गदाधराय नमः ॥ पुंडरीकाक्षाय नमः ॥ मंडलादिकरिष्ये ॥ परिविष्य ॥ पात्रप्रोक्षणं ॥ त
 अच्युताय नमः ॥ गयार्यै नमः ॥ ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतं ॥ ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ हरिर्दाता हरिर्भोक्ता ह
 त्सवितुर्वरेण्यं भर्गो० ॥ ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतं ॥ ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ हरिर्दाता हरिर्भोक्ता ह

रिरन्नं प्रजापतिः ॥ हरिर्विप्रशरीरस्थोभुंकेभोजयतेहविः ॥ चतुर्भिश्चचतुर्भिश्चद्वाभ्यांपंचभिरेवच ॥ ह्यतेचपुनर्द्वाभ्यांसमे
विष्णुः प्रसीदतु ॥ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ नैवेद्यंसमर्प्य ॥ अनेनममपितुः दर्शश्चाद्धयशीयब्राह्मणभोजनेनभगवान्पित्रादिस्वरूपीजनार्दनवासुदेवः
प्रीयतांनमम ॥ सव्यं ॥ देवाः तत्सत् अमृतमस्तु ॥ अपसव्यं ॥ पितरः तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ श्राद्धउपविष्टायब्राह्मणायइमां
दक्षिणांतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ दक्षिणाः पांतु ॥ पांतुदक्षिणाः ॥ सकृद्वायत्रीजपंकृत्वा ॥ प्रार्थनाकार्या ॥ अपेक्षितंयाचितव्यंत्या
ज्यंचैवानपेक्षितं ॥ उपविश्यसुखेनैवभोक्तव्यंस्वस्थमानसैः ॥ विद्यमानशाकपाकपदार्थेषुयद्रोचतेतद्ग्राह्यं ॥ यन्नरोचतेत
तः ॥ सर्वेअच्छिद्रंभवतु ॥ जुषामहे ॥ जपच्छिद्रंतपच्छिद्रंयच्छिद्रंश्राद्धकर्मणि ॥ सर्वंभवतुमेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानांप्रसाद
॥ ८१ ॥ अथाक्षय्यतृतीया ॥

श्रीः ॥ (अस्यांतृतीयायांयत्किंचिजपहोमपितृतर्पणं दानादिचक्रियतेतत्सर्वमक्षय्यम् ॥ इयंरोहिणीबुधयोगेमहापुण्या ॥
अस्यांजपहोमादिद्वैत्येपिवक्ष्यमाणयुगादिवन्निर्णयः ॥ इयंकृतयुगस्यादिः ॥ अत्रयुगादिश्राद्धमपिंडकमनुष्ठेयं ॥ श्राद्धासं
भवेतिलतर्पणमप्यत्रकार्यंतत्रासंभवेऽपराह्वेपि ॥ कृष्णयुगादिकार्यत्वपराह्वेत्यादिमन्वादिप्रकरणोक्तनिर्णयः ॥ इदंविभक्त
दिनपूर्वार्धकदेशव्यापिनीदिनद्वयेचेत्त्रिमुहूर्ताधिकव्याप्तिसत्वेपरात्रिमुहूर्तान्यूनत्वेपूर्वा ॥ मन्वादौचयुगादौचग्रहणेचंद्रसूर्य

॥ ४३ ॥

अक्षय्यतृ-
॥८१॥

॥१२४॥

योः ॥ व्यतीपाते वैधृतौ च तत्कालव्यापिनी क्रियेति वचनेन सा कल्पव्याप्तिवाक्यानामपवादात् ॥ श्राद्धादिकंचतृतीयामध्ये एव
 कर्तव्यं ॥ पुरुषार्थचिंतामणौ तु सप्तमाष्टमनवममुहूर्तानां गंधर्वकुतुपरोहिणसंज्ञकानां युगादिश्राद्धकालत्वात् शुक्लमध्यमदिन
 माने त्रयोदश्यादिपंचदश्यां तदघटी त्रयव्यापिन्यां श्राद्धं कृष्णे तु योऽशमीमारभ्य घटिका त्रये उभयत्र तादृश घटी त्रयव्याप्तौ सत्यामस
 त्यां वा शुक्लापरा यदा तु परे द्युस्त्रयोदश घटीतः पूर्वसमाप्ता पूर्वे द्युस्त्रयोदश्यादि घटी त्रये तदेकदेशे वा विद्यते तदा कर्मकालशास्त्र
 बाहुल्यात् पूर्ववग्राह्येत्युक्तं ॥ इदमेव युक्तमिति भाति ॥ अत्र देवतोद्देशेन पित्रुद्देशेन चोदकुंभदानमुक्तं ॥ तत्र संकल्पः ॥ श्रीपर
 मेश्वरप्रीत्यर्थं वसंतमाधवदेवताप्रीत्यर्थं पितृप्रीत्यर्थं च ब्राह्मणायोदकुंभदानमहं करिष्ये ॥ तदंगं उदकुंभपूजनं ब्राह्मणपूजनं च क
 रिष्ये इति संकल्प्य सूत्रवेष्टितं गंधफलयवाद्युपेतं कलशं पंचोपचारैर्ब्राह्मणं च संपूज्य ॥ दानमंत्रः ॥ एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मवि
 णुशिवात्मकः ॥ अस्य प्रदानात्स कलाममसंतु मनोरथाः ॥ इति मंत्रेण दद्यात् ॥ पित्रुद्देशे तु पितृणामक्षय्यतृप्त्यर्थं उदकुंभदानं क
 रिष्ये इति संकल्प्य पूर्ववत्कुंभब्राह्मणौ संपूज्योदकुंभे गंधतिलफलादिनिक्षिप्य ॥ एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविणुशिवात्मकः ॥ अ
 स्य प्रदानात्तृप्त्यं तु पितरोऽपि पितामहाः ॥ गंधोदकतिलैर्मिश्रं सान्नं कुंभं फलान्वितं ॥ पितृभ्यः संप्रदास्यामि अक्षय्यमुपतिष्ठत्व
 ति मंत्रेण दद्यात् ॥ युगादौ समुद्रस्नानं महाफलं ॥ वैशाखस्याधिमासत्वे युगादिश्राद्धमासद्वये पिकार्यं ॥ युगादिपूषवासे महाफ
 लः ॥ युगादिमन्वादौ रात्रिभोजने अभिस्ववृष्टिमिति मंत्रजपः ॥ युगादिश्राद्धलोपजन्यप्रत्यवायपरिहारार्थं मृग्विधानोक्तं प्रा
 यश्चित्तं करिष्ये इति संकल्प्य नयस्य द्यावेत्यृचं शतवारं जपेत् ॥ अयं निर्णयः सर्वयुगादौ ज्ञेयः ॥ श्राद्धं दर्शवत् ॥ इत्यक्षय्यतृतीया ॥

॥ ८२ ॥ अथदौहित्रगतिपञ्चाङ्गं ॥

श्रीः ॥ आश्विनशुक्लप्रतिपदिदौहित्रेणानुपनीतेनापिसपत्नीकमातामहस्यपार्वणमातुलेसत्यपिअवश्यंकार्यं ॥ मातामहीसत्वे केवलमातामहपार्वणं ॥ इदंजीवत्पितृकैवकार्यं ॥ इदंसपिंडकमपिंडकंवा ॥ अत्रपुरुषार्थवसंज्ञकाविश्वेदेवाः ॥ धूरिलोचना इतिकेचित् ॥ इयंप्रतिपदपराह्णव्यापिनीग्राह्येतिबहवः ॥ संगवव्यापिनीतिकेचित् ॥ केशवादिनामानितिथ्यादिचसंकीर्त्य अद्यपूर्वोच्चरितए० श्रुतिस्मृ०र्थमातामहपञ्चाङ्गंकरिष्ये ॥ इतिसंकल्पः ॥ अन्यत्सर्वपञ्चाङ्गवत् ॥ इतिदौहित्रपञ्चाङ्गनिर्णयः ॥

॥ ८३ ॥ अथविधवानवमीपञ्चाङ्गं ॥

श्रीः ॥ आचम्यपवित्रंघृत्वाप्राणानायम्य ॥ देशकालौसंकीर्त्यमआत्मनःश्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थंधूरिलोचनसंज्ञका नांविश्वेषांदेवानां ॥ अपसव्यं ॥ अस्मत्मातृपितामहीप्रपितामहीनांअमुकदानांअमुकगोत्राणांवसुरुद्रादित्यस्वरूपाणांएता सांश्रेयोर्थमोक्षार्थतृप्त्यर्थंअविधवानवमीपञ्चाङ्गंकरिष्ये ॥ अन्यत्सर्वपञ्चाङ्गवत् ॥ इतिअविधवानवमीपञ्चाङ्गसंकल्पः ॥

॥ ८४ ॥ अथसंकल्पिकपञ्चाङ्गविधिः ॥

श्रीः ॥ आचम्यपवित्रादिघृत्वाप्राणानायम्यदेशकालाद्युच्चार्यपुरुषार्थवसंज्ञकानांविश्वेषांदेवानांअस्मत्पितृपितामहप्रपिता महानांशर्मणांगोत्राणारूपाणांअमुकपञ्चाङ्गंसांकल्पिकविधिनाऽन्नेनहविषासद्यःकरिष्ये इतिसंकल्प्य तृतीयक्षणदानांतंपूर्वव त्कृत्वाविधिवदध्यदानंसमंत्रकमावाहनंचवर्जयेत् । किंतुआवाहनेकेवलंदेवानावाहयामिपितृनावाहयामिइत्येवावाह्यकेवल

15

11611

11311

==
=

116311

[illegible]

लीकस्य ससुतस्य वसुरूपस्य ॥ अस्मत्गुरोः अमुकशर्मणः अमुकगोत्रस्य सपत्नीकस्य ससुतस्य वसुरूपस्य ॥ शिष्यस्य अमुकशर्मणः
अमुकगोत्रस्य सपत्नीकस्य ससुतस्य वसुरूपस्य ॥ आसस्य अमुकशर्मणः अमुकगोत्रस्य सपत्नीकस्य ससुतस्य वसुरूपस्य एतेषां श्रेयोर्थं
मोक्षार्थं तृत्यर्थं देशकालाद्यनुसारतः (षोडशमहालयसंकल्पः) पित्रादीनुद्दिश्य कन्यागते सवितरि महालयापरपक्षिकश्रा
द्धं सदैवं सपिंडं सान्नौकरणं पावणैकोद्दिष्टेन विधिना अन्नेन हविषा सद्यः करिष्ये ॥ अन्यत्तिलोदकादिसांवत्सरिकवत्कृत्वा तत्र तत्र
सर्वपितृणामूहः कार्यः ॥ तत्र सर्वेषां सौकर्याय महालयोक्तपावणैकोद्दिष्टपितृणामुच्चारविचारः ॥ संकल्पासनयोः षष्ठी द्वितीया
वाहने तथा ॥ अन्नदाने (ये च त्वेत्युत्तरं पिंडदाने च) चतुर्थी स्याच्छेषाः संबुद्धयः स्मृताः ॥ तत्र षष्ठी निर्देशः संकल्पे एव निर्दिष्टः स आ
सनेऽक्षय्योदकदाने च योज्यः ॥ द्वितीया आवाहने ॥ सा च—पितृपितामहप्रपितामहान् शर्मणः गोत्रान् वस्वादिरूपान् ॥
मातृपिताहीप्रपितामहीः अमुकदाः गोत्राः वस्वादिरूपाः ॥ पत्नी अमुकदां गोत्रां वसुरूपां ॥ मातामहमातुः पितामहमातुः प्रपितामहान् शर्मणः गोत्रान्
सपत्नीकान् वस्वादिरूपान् ॥ पत्नी अमुकदां गोत्रां वसुरूपां ॥ सुतं शर्माणं गोत्रं वसुरूपं ॥ सुतां अमुकदां गोत्रां व
सुरूपं ॥ पितृव्यं शर्माणं गोत्रं सपत्नीकं वसुं ॥ मातुलं शर्माणं गोत्रं वसुरूपं ॥ भ्रातरं शर्माणं गोत्रं सप
दां गोत्रां सभं ससुं ॥ श्वशुरं शर्माणं गोत्रं सपं ससुं ॥ मातृभगिनीं दां गोत्रां सभं ससुं ॥ भ्रातरं शर्माणं गोत्रं सपं
सा च—पितृपितामहप्रपितामहेभ्यः शर्मभ्यः गोत्रेभ्यः वस्वादिरूपेभ्यः ॥ मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यः अमुकदाभ्यः गोत्रा
भ्यः वस्वादिरूपाभ्यः ॥ मातामहं महेभ्यः शर्मभ्यः गोत्रेभ्यः सपत्नीकेभ्यः वस्वादिरूपेभ्यः ॥ पत्न्यै दायै गोत्रायै वसुरू

[illegible]

यादत्तोह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥ शमीपत्रप्रमाणेनपिंडं दद्याद्गयाशिरे ॥ उद्धरेत्सप्तगोत्राणिकुलमेकोत्तरंशतं ॥ (मात्रादिद्वित्वे पिंडदाने एतद्ग्रामस्मन्मातरौ यज्ञदाश्रीदेये च युवामत्रानु ॥ इति पिंडं दत्त्वा ॥ अस्मन्मातृभ्यां अमुकामुकदाभ्यां गोत्राभ्यां वसु रूपाभ्यां अयं पिंडः स्वधानमः तेभ्यश्च इत्येक एव पिंडः ॥ अभ्यंजने अभ्यंजायां अंजने अंजायां इति द्विवचनांत ऊहः कार्यः ॥ मातृ गोत्राभ्यः वसुरूपाभ्यः अयं पिंडः स्वधानमः ॥ अयं ङ्घ्रं अङ्घ्रं इति बहुवचनेनांजनाभ्यंजने देये ॥ अमुकामुकदाभ्यः वसु सप्तजनेनीमातामहादित्रयं सस्त्रिंशत्तनयादितातजननी स्वभ्रातरः अ० दाः गोत्राः इदं वो ङ्घ्रं इति एक एवार्घः ॥ तातां वा त्रितयं दुरुः शिष्यासाः पितरो महालयविधौ तीर्थे तथा तर्पणे ॥ इति महालयश्राद्धे विशेषः ॥

श्रीः ॥ आचम्य पवित्रपाणिः प्राणानायम्य देशकालाद्युच्चार्य पुरु० पितृपितामहप्रपितामहानां शर्मणां गोत्राणां स्वरूपाणां अमुकश्राद्धं सैदं वसपिंडमाभेन हविषा (हिरण्येन वा) करिष्ये ॥ इति संकल्पः ॥ अन्यः प्रयोगस्तु सामान्यतः सांवत्सरिकश्राद्धवदेव । इयान् विशेषः । पाकप्रोक्षणस्थाने आमप्रोक्षणं । आवाहने जशं तस्त्वेति मंत्रे पितृन् हविषे स्वीकर्तव्ये इत्यूहः । भस्म मर्यादां तं यथावत् । विग्रहस्तेतुं दुर्लभौ करणं । आसादितपात्रेषु अन्नाच्चतुर्गुणं द्विगुणं समं वा तत्तदामं संस्थाप्य पाणिहोमशेषं ॥ ८६ ॥ अथ आमश्राद्धं हिरण्यश्राद्धं च ॥ ८७ ॥

आमश्रा.
॥८६॥

॥१२७॥

पिंडार्थसंस्थाप्य पात्रेषुदत्त्वापृथिवीतेपात्रमित्यादिइदममहव्यंकव्यमित्यादि इदमामममृतंरूपंस्वाहाइत्यादिमध्वित्यंतप्रा
 पिंडार्थसंस्थाप्य पात्रेषुदत्त्वापृथिवीतेपात्रमित्यादिइदममहव्यंकव्यमित्यादि इदमामममृतंरूपंस्वाहाइत्यादिमध्वित्यंतप्रा
 गवत् । यथासुखंजुषध्वमित्यस्यआपोशनप्राणाहुतितृप्तिप्रश्रानांचलोपः । संपन्नवाचनांतिन्नशेषप्रश्रलोपः । सर्वमतेतंदुलैःस
 कुम्भिवीपिंडदानं । केचिद्गृहसिद्धान्नेनपायसेनवापिंडानाहुः । पिंडोपस्थाने नमोवःपितरइषेइतिमंत्रेइषेपदस्थाने नमोवःपि
 तरआमद्रव्यायइत्यूहः । स्वस्तीतिब्रूतेतिवर्ज्यं । तथावाजेवाजेइतिमंत्रेतृतायातइत्यस्यस्थाने तर्प्यथयातपथिभिरित्यूहःका
 र्थः । शेषंप्रागवत् ॥ अत्रपिंडदानविकल्पात्सांकल्पविधिनाप्येतद्व्यंभवति ॥ इतिआमश्राद्धहिरण्यश्राद्धयोःसामान्यप्रयोगः ॥

॥ ८७ ॥ अथयत्तेशराधनविधिः ॥ तत्रायंप्रयोगः ॥ गुरुचतुष्टयस्यकेशवादी
 त्रिःक्षणःकर्तव्यः ॥ अयंद्वादशाहेत्रयोदशाहेवायथाचारंपार्वणश्राद्धानंतरंकार्यः ॥ तत्राभीभूतस्यगुरोःसमाराधनेगुर्वर्थेभव
 श्रीगणेशायनमः ॥ अयंद्वादशाहेत्रयोदशाहेवायथाचारंपार्वणश्राद्धानंतरंकार्यः ॥ तत्राभीभूतस्यगुरोःसमाराधनेगुर्वर्थेभव
 नांचप्रत्येकमेकइत्येवंपोडशब्राह्मणपक्षमभिप्रेत्योच्यते ॥ कृतनित्यक्रियोयजमानःप्रातःब्रह्मीभूतस्यगुरोःसमाराधनेगुर्वर्थेभव ॥ त
 त्रिःक्षणःकर्तव्यः ॥ अतथाइतिप्रतिवचनं ॥ एवंपरमगुर्वर्थेपरमेष्ठीगुर्वर्थेपरात्परगुर्वर्थेभ ॥ यद्वा ॥ विश्वरूपधराचार्यार्थे ॥ मधु
 तोगुरुत्रयमितिवाचतुरोब्राह्मणान्निमंत्र्य ॥ शुक्लकेशवार्थेक्षणःकर्तव्यः ॥ नारायणार्थे ॥ माधवार्थे ॥ गोविंदार्थे ॥ संकर्ष
 सूदनार्थे ॥ त्रिविक्रमार्थे ॥ वामनार्थे ॥ श्रीधरार्थे ॥ हृषीकेशार्थे ॥ पद्मनाभार्थे ॥ दामोदरार्थे ॥ १२ ॥ कृष्णपक्षेतु ॥ जनार्दना
 णार्थे ॥ वासुदेवार्थे ॥ प्रद्युम्नार्थे ॥ अनिरुद्धार्थे ॥ पुरुषोत्तमार्थे ॥ अधोक्षजार्थे ॥ नारसिंहार्थे ॥ अच्युतार्थे ॥ जनार्दना
 र्थे ॥ उपेन्द्रार्थे ॥ हर्यार्थे ॥ श्रीकृष्णार्थे ॥ १२ ॥ एवंद्वादशविप्रान्निमंत्र्य ॥ कर्तोशुचिः आचम्यपवित्रपाणिःप्राणानायम्यदेश

कालौसंकीर्त्यनारायणप्रीत्यर्थब्रह्मीभूतस्यगुरोःसमाराधनंकरिष्येइतिसंकल्प्य ॥ गंधाक्षततुलसीदलकर्पूरमिश्रजलेनवरणक्र
मेणतेषांपादप्रक्षालनंकृत्वा तानाचमय्य स्वयंद्विराचामेत् ॥ पादप्रक्षालनोदकंपात्रांतरेगृहीत्वातत्पादौसाक्षतगंधपुष्पतुलसी
दलैरभ्यर्च्य ॥ आनंदमानंदकरंप्रसन्नज्ञानस्वरूपंनिजबोधरूपं ॥ योगींद्रवंद्यंभवरोगवैद्यंश्रीमदुहंनित्यमहनमामि॥इतिनम
इयपुरुषसूक्तेनप्रत्यृचं ॐ नमोनारायणायेतिमंत्रसहितेनावहनादिषोडशोपचारैः ॥ कुशासनेषुप्राङ्मुखानुदङ्मुखान्वाउपवे
षधूपदीपाच्छादनांपूजाद्रष्टव्या ॥ ततः चतुरस्त्राणिमंडलानिकृत्वातेषुपात्राण्यासाद्यपात्रेषुपायसादिविशिष्टद्रव्यंसाज्यं
जनसहितंचपरिविष्यगायत्र्याप्रोक्ष्यगुरवेइदमन्नंपरिविष्टंपरिवेक्ष्यमाणंचातृसेःस्वाहा हव्यंनमम एवंसर्वत्रान्ननिवेदनंकृत्वा ॥
ॐतद्ब्रह्म॥ ॐतद्वायुः॥ ॐतद्वात्मा॥ ॐतत्सत्यं॥ ॐतत्सर्वं॥ ॐतत्पुरोर्नमः ॥ अंतश्चरतिभूतेषुगुहायांविश्वमूर्तिषु॥त्वयज्ञस्त्वंवष
इकारस्त्वमिंद्रस्त्वरुद्रस्त्वंविष्णुस्त्वंब्रह्मत्वंप्रजापतिः ॥ त्वंतेदापआपोज्योतीरसोमृतंब्रह्मभूर्भुवःसुवरोम् ॥ इत्यनुवाकंपठि
त्वाब्रह्मार्पणमितिचजपित्वाभुंजानेषूपनिषन्मंत्रान्श्रावयेत् ॥ तृसेषुसत्सु ॐतद्ब्रह्मेत्यनुवाकंपठित्वाउत्तरापोशनोत्तरमाचांतेषू
पविष्टेषुविशिष्टांबूलदक्षिणावस्त्रादिभिरभ्यर्च्यउपविष्टेज्वेतेषुगुर्वारधनांगभूतंतीर्थपूजनंकरिष्येइतिसंकल्प्य ॥ चतुरस्त्रमं
डलंगोमयेनोपलिप्यतत्रंगवह्न्यादिभिरलंकृत्य तन्मंडलेधान्योपरिपादोदककलशंसंस्थाप्य तत्रगंगादिसर्वतीर्थानिभावयि
त्वापुरुषसूक्तेनप्रत्यृचंतीर्थराजायनमइतिमंत्रेणषोडशोपचारैरभ्यर्च्यतत्पात्रंशिरसिधृत्वा ॥ ॐलोकःसरस्वत्यायांत्येषवैदेवया

नः पंथास्तमेवान्वारो हृत्या क्रोशतो यात्यवर्तिमेवान्धसिन्प्रतिष्यज्यप्रतिष्ठांगच्छति यदा दशशतं कुर्वत्यथैकमुत्थानं शतायुः पुरु
 षः शतं द्रिग्य आयुष्ये वै द्विग्रे प्रति तिष्ठति यदा शतं सहस्रं कुर्वत्यथैकमुत्थानं सहस्रं समितो वा असौ लोको मुमेवलोकमभिजयंति य
 दैषां प्रमीयेत यदा वा जीये रन्नथैकमुत्थानं तद्धि तीर्थं ॥ १ ॥ भीषास्माद्वातः पवते ॥ भीषो देति सूर्यः ॥ भीषास्मादग्निश्चेद्रथ ॥ मृ
 त्युर्धावतिपंचम इति ॥ सैपानंदस्य भीमा सा भवति ॥ युवा स्यात्साधुयुवा ध्यायकः ॥ आशिष्ठो द्रिद्यो बलिष्ठः ॥ तस्येयं पु
 थिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात् ॥ स एको मानुष आनंदः ॥ ते ये शतं मानुषा आनंदाः ॥ १ ॥ स एको मनुष्यगंधर्वाणामानंदः ॥
 ओत्रियस्य चाकामहतस्य ॥ ते ये शतं मानुषा आनंदः ॥ ओत्रियस्य चाकामहतस्य ॥
 ते ये शतं देवगंधर्वाणामानंदाः ॥ स एको देवगंधर्वाणामानंदः ॥ ते ये शतं पितृणां चिर
 ओत्रियस्य चाकामहतस्य ॥ स एकः पितृणां चिरलोकलोकानामानंदः ॥ ते ये शतमाजानजानां देवा
 लोकलोकानामानंदाः ॥ स एकः आजानजानां देवानामानंदः ॥ २ ॥ ओत्रियस्य चाकामहतस्य ॥ ते ये शतं कर्मदेवानां
 नामानंदाः ॥ स एकः कर्मदेवानां देवानामानंदः ॥ ये कर्मणा देवानामानंदाः ॥ स एक इद्रस्यानंदः ॥ ३ ॥
 देवानामानंदाः ॥ स एको देवानामानंदः ॥ ओत्रियस्य चाकामहतस्य ॥ ते ये शतं बृहस्पतेरा
 ओत्रियस्य चाकामहतस्य ॥ ते ये शतं मिद्रस्यानंदाः ॥ स एको बृहस्पतेरानंदः ॥ स एको ब्रह्मण आनंदः ॥ ओत्रिय
 नंदाः ॥ स एकः प्रजापतेरानंदः ॥ ओत्रियस्य चाकामहतस्य ॥ ते ये शतं प्रजापतेरानंदाः ॥ अस्माल्लोकात्प्रेत्य ॥ एतमन्नमय
 स्य चाकामहतस्य ॥ ४ ॥ स यश्चायं पुरुषे ॥ यश्चासावादित्ये ॥ स एकः ॥ स य एवं वित् ॥ अस्माल्लोकात्प्रेत्य ॥ एतमन्नमय

मात्मानमुपसंक्रामति ॥ एतंप्राणमयमात्मानमुपसंक्रामति ॥ एतमनोमयमात्मानमुपसंक्रामति ॥ तदप्येषश्लोकोभवति ॥ यतोवाचोनिर्वर्तते ॥ एतंविज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामति ॥ एतमानंदमयमात्मानमुपसंक्रामति ॥ नविभेतिकुतश्चनेति ॥ एतदहंवैषएतेआत्मानस्स्पृणुते ॥ उभेह्यैषएतेआत्मानस्स्पृणुते ॥ उभेह्यैषएतेआत्मानस्स्पृणुते ॥ किमहंसाधुनाकरवम् ॥ किमहंपापमकरं ॥ आनंदमानंदकरंप्रसन्नंज्ञानस्वरूपंनिजबोधरूपं ॥ योर्गीद्रमीड्यंभवरोगवैद्यंश्रीमद्गुरुंनित्यमहंनमामि ॥१॥ गुरुःसाक्षात्परंब्रह्मतस्मैश्रीगुरुवेनमः ॥२॥ इतिमंत्रेणद्विजान्तीर्थराजंचनमस्कृत्य गुरुवर्धनं ॥ (पुत्रादिकामनायांतु ॥ तत्रमंत्रः ॥ अविद्यामूलशमनंसर्वपापप्रणाशनं ॥ गुरुपादोदकं पश्चात्सुहृद्भुतोभुंजीत ॥ तान्पुनःप्रणम्यतानन्यांश्चदक्षिणादिभिस्तोषयित्वासन्मानपुरःसरंताननुब्रज्यकर्मेश्वरार्पणंकुर्यात् ॥ अत्रषोडशब्राह्मणाशक्तावष्टौचत्वारोवा ॥ इत्थंकरणाशक्तौयथाशक्तियतीन्ब्राह्मणांश्चाह्वयपादप्रक्षालनपूर्वकंगंधादिभिरभ्यर्च्यभोजयेत् ॥ इतिनागरखंडांतर्गतोयतेराराधनाविधिःसमाप्तः ॥

22

—

4

1

16

==

५

ता

न्यागतेसवितरिसकृन्महालयापरपक्षिकश्राद्धंकरिष्ये ॥ एवंसंकल्पंस्वयंकृत्वा ब्राह्मणद्वाराअग्नौकरणादिसहितंसर्वमविकृतं प्र
योगंकारयेत् ॥ (अशक्तौ भर्त्रादित्रयं स्वपित्रादित्रयं स्वमात्रादित्रयं मातामहादित्रयंसपत्नीकं इतिपार्वणचतुष्टयोद्देशेन
भर्तृतत्पितृपितामहेत्याद्युच्चार्यइतरत्सर्वंनिर्दिष्टश्राद्धवत्समंत्रकंकुर्यात् ॥ ब्राह्मणस्तु अमुकनाम्नयायजमानायाः

श्रीः ॥ तत्रगंगादितीर्थप्रासावध्यावाहनद्विजांगुष्ठनिवेशनतृप्तिप्रश्रविकरिविसर्जनदिग्बन्धवर्ज्यसकृन्महालयवत्सर्वपितृग
णोद्देशेनधूरिलोचनसंज्ञकविश्वेदेवसहितंतीर्थश्राद्धंकुर्यात् अग्नौकरणंकृताकृतं करणपक्षेतीर्थजलसमीपेश्राद्धंचैत्तदाप्राकृतमं
त्रयुतंतीर्थजलेकार्यम् अन्यथाहस्तादौ पिंडानांतीर्थेप्रक्षेपएवप्रतिपत्तिः अत्रतीर्थवासिनएवविप्राविगुणाअपिमुख्याः तदभा
वेन्ये अत्रश्राद्धीयेदेशेन्नादिद्रव्येचकाक्रभ्वादिभिर्दृष्टेपिनदोषः तीर्थश्राद्धांगतर्पणंदशवत्पूर्वकार्यम् देशकालौसंकीर्त्यसर्वपितृ
गणमुच्चार्यएतेषाममुक्ततीर्थप्राप्तिनिमित्तकंतीर्थश्राद्धंसपिंडंसदैवंसद्यःकरिष्येइतिसंकल्पः धूरिलोचनविश्वेदेवादिसर्वसकृन्म

हालयवत् तीर्थयात्रायांसाग्नेःसपत्नीकस्यैवाधिकारःनिरग्निंकस्यत्वपत्नीकस्यापि स्त्रियाःस्नानदानतीर्थयात्रानामस्मरणादि
कंपुत्राद्यनुमत्यैव सधवायायात्रादिकंपत्यासहैव ॥ इतितीर्थश्राद्धविचारःसंपूर्णः ॥ ३ ॥

समाप्तश्रायमालिकादिविषयःप्रथमोभागः ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

तीर्थश्रा.
॥९०॥

॥१३०॥

॥ अथसंस्कारप्रकरणम् ॥ २ ॥

॥ ११ ॥ अथसंस्कारक्रमः ॥

श्रीः ॥ अंगिराः—पंशविंशतिसंस्कारैःसंस्कृतायेद्विजातयः ॥ तेपवित्राश्चयोग्याःस्युःश्राद्धादिषुसुयंत्रिताः ॥ तेच—गर्भाधानंपुंसवनंसीमंतोबलिरवच ॥ जातकृत्यंनामकर्मनिष्क्रमोन्नाशनंपरं ॥ चौलकर्मोपनयनंतद्व्रतानांचतुष्टयं ॥ स्नानोद्धाहौचाग्रयणमष्टकाचयथातथं ॥ श्रावण्यामाश्वयुज्यांचमार्गशीर्ष्योचपार्वणं ॥ उत्सर्गश्चाप्युपाकर्ममहायज्ञाश्चनित्यशः ॥ संस्कारानियताह्येतेब्राह्मणस्यविशेषतःइति ॥ एयुनैमित्तिकादिभेदाश्चैवम् ॥ नैमित्तिकाःषोडशोक्ताःसमुद्धाहावसानकाः ॥ सप्तैवाग्रयणाद्याश्चसंस्कारावार्पिकामताः ॥ मासिकंपार्वणंप्रोक्तमशक्तानांतुवार्पिकम् ॥ महायज्ञाश्चनित्याःस्युःसंध्यावच्चाग्निहोत्रवत् ॥ अन्नगर्भाधानाद्याउपनयनांताएवसर्वेषांनियतानतुस्नानाद्यास्तेनब्रह्मचर्योदेवप्रव्रजेदित्यादिनविरुध्यते ॥ ॥ ११ ॥

॥ १२ ॥ अथगणपतिपूजनम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अन्नहेमाद्रौदानकांडेबह्वृचपरिशिष्टत्वेनोक्तःसकलसाधारणशिष्टाचारप्राप्तश्चपुण्याहवाचनप्रयोगोलिख्यते ॥ कृतमंगलस्नानःस्वलंकृतःसंभृतमंगलसंभारोमंगलरंगवल्लीमंडितशुद्धस्थलेप्राङ्मुखोयजमानऊर्णवस्त्राद्याच्छादितेपीठेउ

पविश्यपत्नीस्वदक्षिणतःप्राञ्जुखीमुपवेश्यसंस्कार्यचतथैवोपवेश्य ब्राह्मणैर्यशस्कंरंबलवंतं कनिक्रदज्जनुषमित्यादिमांगल्यमं
त्रयोषपुरःसरंसुवासिन्याकृतमंगलतिलको द्विराचम्यपवित्रपाणिःप्राणानायम्य श्रीमन्महागणाधिपतयेनमःइत्यादिपठ
मप्रधानदेवताभ्योनमः ॥ सुमुखश्चैकदंतश्चेत्यादिदेशकालौसंकीर्त्यश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंअमुकगोत्रःअमुकशर्माहंअमुकफलावा
तासिद्ध्येमहागणपतिपूजनंकरिष्ये ॥ तदंगतयादौपुण्याहवाचनंमातृकापूजनंनदीश्राद्धंचकरिष्येइतिसंकल्पयेत् ॥ एतत्क
नौत्वागुणपतिंहवामहेकविक्वीनामुपमश्रवस्तमं ॥ गणानांत्वाशौनकोगुत्समदोगणपतिर्जगती ॥ गणपत्यावाहनेविनियोगः ॥ ॐ गुणा
स्वःऋद्धिबुद्धिसहितंमहागणपतिंसांगंसपरिवारंसायुधंसशक्तिकमावाहयामि ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्महागणपतयेनमःआसनंसमर्प
यामीत्यादिषोडशोपचारान्समर्प्यनिबुसीदेतिपुष्पांजलिसमर्प्य ॥ वक्रतुंडमहाकायसूर्यकोटिसमप्रभ ॥ निर्विघ्नंक्रुरुमेदेवस
र्वकार्येषुसर्वदा ॥ अथवा-कार्यमेसिद्धिमायातुप्रसन्नेत्वयिधातरि ॥ विघ्नानिनाशमायांतुसर्वाणिपुरनायक ॥ इतिसंप्रार्थ्य ॥
अनयापूजयासकलविघ्नहर्तामहागणपतिःप्रीयतां ॥ ॥ ६३ ॥
? यदातुप्रयोगाद्बहिर्भूतपुण्याहवाचनाद्यंगंतदामुकफलसिद्धयर्थममुककर्मकर्तुमंगभूतमादौपुण्याहवाचनादिकरिष्यइतिप्रत्येकंसंकल्पः ॥ प्रधान
संकल्पस्तुसर्वकृत्वातद्दिनएवश्रोवाकार्यः ॥ शिष्टास्तुप्रयोगाद्यंतर्भूतमेवकारयति ॥ ॥ ६३ ॥

पिपतां ॥ पिपतां ॥ पिपतां ॥ पिपतां ॥ पिपतां ॥

यस्यैकृणातत्रा ॥ यस्यैकृणातत्रा ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति तत्र द्वा कलशं
 उक्थ्यैर्यज्ञेषु वर्धते ॥ इति तत्र द्वा कलशं
 अस्तया जीर्णीकीये शृणु ह्यसुषोमया ॥ ॐ कां
 आनां तामिहोपह्वये श्रियं इति गंधं प्रक्षिप्य ॥ गो
 ॥ ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पूर्णवो वसति कृता ॥ मुं
 ॥ ॐ अपृष्पायाश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुं
 अत्र मीमहे इति रत्नानि ॥ ॐ हिरण्यरूपः सहिरण्यसं
 त्रसमै इति हिरण्यं ॥ ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगा
 वयंतः इति हिरण्यं ॥ ॐ पूर्णा दिवि परापत सुपूर्णा
 पात्राभ्यां कलशयो रानने पिदध्यात् ॥ तत्त्वायामि
 णा वंदमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहं कमा

नोवरुणेहबोध्युरुशंसमानआयुःप्रमोषीः ॥ कलशेवरुणंसांगंसपरिवारंसायुधंसशक्तिकंआवाहयामि ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःवरुणा
 यनमःचंदनंसमर्पयामि इत्यादिपंचोपचारैःसंपूज्य ॥ अनेनपूजनेनवरुणःप्रीयतां ॥ कलशस्यमुखेविष्णुःकंठेरुद्रःसमाश्रि
 तः ॥ मूलेतत्रस्थितोब्रह्मामध्येमातृगणाःस्मृताः ॥ कुक्षौतुसागराःसर्वेससद्रीपावसुंधरा ॥ ऋग्वेदोथयजुर्वेदःसामवेदोह्यथ
 वृणः ॥ अंगैश्चसहिताःसर्वेकलशंतुसमाश्रिताः ॥ अत्रगायत्रीसावित्रीशांतिःपुष्टिकरीतथा ॥ आयांतुममशांत्यर्थंदुरितक्षय
 कारकाः ॥ सर्वेसमुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदानदाः ॥ आयांतुममशांत्यर्थंदुरितक्षयकारकाः ॥ उत्तरकलशेअक्षतान्क्षिपेत् ॥
 मातृदेवोभव ॥ पितृदेवोभव ॥ आचार्यदेवोभव ॥ अतिथिदेवोभव ॥ सर्वेभ्योब्राह्मणेभ्योनमोनमः ॥ ततःअवनिकृतजा
 नुमंडलःकमलमुकुलसहस्रमंजलिशिरस्याधायदक्षिणेनपाणिनासुवर्णं (स्वर्णं) पूर्णकलशंधारयित्वा आशिषःप्रार्थयते ॥
 प्रार्थनामाह ॥ एताःसत्याआशिषःसंतु ॥ दीर्घानागानद्योगिरयस्त्रीणिविष्णुपदानिचतेनायुःप्रमाणेनपुण्याहंदीर्घमायुर
 स्तु ॥ आयुष्यमस्तु ॥ पुष्पाणिपांतु ॥ सौमनस्यमस्तु ॥ अक्षतंचारिष्टंचास्तु ॥ गंधाःपांतु ॥ सौमंगल्यंचास्तु ॥ अक्षताःपां
 तु ॥ आयुष्यमस्तु ॥ पुष्पाणिपांतु ॥ सौश्रियमस्तु ॥ तांबूलानिपांतु ॥ ऐश्वर्यमस्तु ॥ दक्षिणाःपांतु ॥ बहुदेयंचास्तु ॥ दी
 र्घमायुःश्रेयःशांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु ॥ श्रीर्यशोविद्याविनयोवित्तंबहुपुत्रंचायुष्यंचास्तु ॥ यंकृत्वासर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारं
 १ अत्रगंधाःपांत्वित्यादिभिर्मन्त्रपूर्वार्थेभ्युग्मान्ब्राह्मणान्गंधादिनापूजयेत् । तेचसौमंगल्यंचास्त्वितिमंत्रोत्तरार्धानिग्रतिब्रूयुः ॥ २ अत्रसर्वत्रब्राह्मणे
 रस्त्वितिप्रत्युत्तरंदेयम् ॥

पुण्याह.
॥८५॥

भाःशुभाःशोभनाःप्रवर्ततेतमहर्मेकारमादिंकृत्वाऋग्यजुःसामाशीर्वचनंबह्वृषिमतंसंविज्ञातंभवद्भिरनुज्ञातःपुण्यंपुण्याहंवाच
 यिष्ये ॥ विप्राः वाच्यतां ॥ ततोयजमानः ॥ ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनू
 भिर्यज्ञं शेषं देवा हि तं यदायुः ॥ ॐ द्रविणो दाद्रविणसस्तुरस्य द्रविणो दाः सवितानः सुवतु सवता तिसवितानो
 रासते दीर्घमायुः ॥ ॐ सविता पश्चात् सविता पुरस्तात् सवितो त्तरात् सविता धरात्तात् ॥ सवितानः सुवतु सवता तिसवितानो
 रासतां दीर्घमायुः ॥ ॐ नवौ नवो भवति जायमानो ह्यकिं तु रूपसामेत्यग्र ॥ भागं देवेभ्यो विदधात्यायन् प्रचंद्रमास्ति रते दीर्घमायुः ॥
 रासतां दीर्घमायुः ॥ ॐ नवौ नवो भवति जायमानो ह्यकिं तु रूपसामेत्यग्र ॥ भागं देवेभ्यो विदधात्यायन् प्रचंद्रमास्ति रते दीर्घमायुः ॥
 ॐ बुध्वादि विदक्षिणा वंतो अस्थुर्येऽर्धवदाः सह ते सूर्येण ॥ हिरण्यदा अमृतत्वं भजंते वा सो दाः सोमं प्रति रंत आयुः ॥ ॐ आपं
 दंतु जीवसे दीर्घायुत्वाय वर्यसे ॥ यस्त्वा हृदा कीरिणामन्यमानो मर्त्यमर्त्यो जीवतु गोमंतं रथिनं शते स्वस्ति ॥ सं
 ने अमृतत्वमश्न्यां ॥ यस्मै त्वंसकृते जाते वेद उल्लोकमग्ने कृणवस्यो न ॥ अश्विनं सपुत्रिणं वीरवतं गोमंतं रथिनं शते स्वस्ति ॥ विप्राः ॥
 त्वांसि चामि यजुषा प्रजामायुर्धनं च ॥ प्रसीदंतु भवंतः ॥ विप्राः ॥ प्रसन्नाः स्मः ॥ यजमानः ॥ शांतिरस्तु ॥ पुष्टिरस्तु ॥ तुष्टि
 समाहितमनसः स्मः ॥ यजमानः ॥ आयुष्यमस्तु ॥ अविघ्नमस्तु ॥ धनधान्यसमृद्धिरस्तु ॥ इष्टसंपदस्तु ॥ बहिर्देशे सर्वा रिष्टानि रसन
 रस्तु ॥ वृद्धिरस्तु ॥ अविघ्नमस्तु ॥ पुत्रसमृद्धिरस्तु ॥ उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु ॥ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु ॥ उत्तरोत्तराः
 वेदसमृद्धिरस्तु ॥ शास्त्रसमृद्धिरस्तु ॥ यच्छ्रेयस्तदस्तु ॥ उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु ॥ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु ॥ उत्तरोत्तराः
 मस्तु ॥ यत्पापं तत्प्रतिहतमस्तु ॥ यच्छ्रेयस्तदस्तु ॥ उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु ॥ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु ॥ उत्तरोत्तराः

वेदसमृद्धिरस्तु ॥ शास्त्रसमृद्धिरस्तु ॥ यच्छ्रेयस्तदस्तु ॥
मस्तु ॥ यत्पापं तत्प्रतिहतमस्तु ॥

[illegible]

कालान्वाचयिष्ये ॥ वाच्यतामिति विप्राः ॥ ॐ उद्गातेवंशकुने सामगायसि ब्रह्मपुत्र ईव सर्वनेपुशंससि ॥ वृषेव वाजीशि शुभ
 तीरपीत्यासर्वतो नः शकुने भद्रमावद विश्वतो नः शकुने पुण्यमावद ॥ वाज्ययात्र जतिप्रतिर्वेयाज्यापुण्यैवलक्ष्मीः पुण्यामेव तल्ल
 क्ष्मीसंभावयति पुण्यां लक्ष्मीं संस्कुरुते ॥ यत्पुण्यं नक्षत्रं ॥ तद्वद्वर्कुरीतोपव्युपं ॥ यदा वै सूर्य उदेति ॥ अथ नक्षत्रं नैति ॥ यान्येव दै
 सूर्यो गच्छेत् ॥ यत्र जघन्यं पश्येत् ॥ तार्वतिकुर्वीत यत्कारी स्यात् ॥ पुण्याह एव कुरुते ॥ तानि वा एतानि यमनक्षत्राणि ॥ यान्येव दै
 वनक्षत्राणि ॥ तेषु कुर्वीत यत्कारी स्यात् ॥ पुण्याहं भवंतो ब्रुवंति त्रिविदेत् ॥ ॐ पुण्याह एव कुरुते ॥ आदित्य उदयनीयः पथ्यैवेतः स्वस्त्याप्रयं
 याद्य करिष्यमाणायामुक्कर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंति त्रिविदेत् ॥ ॐ पुण्याह एव कुरुते ॥ आदित्य उदयनीयः पथ्यैवेतः स्वस्त्याप्रयं
 मे स्वस्ति भुवं न स्य य सतिः ॥ बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्त्यै स्वस्त्यै आदित्या सो भवंतु नः ॥ आदित्य उदयनीयः पथ्यैवेतः स्वस्त्याप्रयं
 ति पथ्यां स्वस्ति मभ्युद्यंति स्वस्त्यैवेतः प्रयंति स्वस्त्युद्यंति स्वस्त्युद्यंति ॥ ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः ॥ स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ॥ ते य
 स्वस्ति न स्ताश्चर्यो अरिष्टनेमिः ॥ स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ अष्टौ देवावसेवः सोम्यासः ॥ चतस्रो देवी रजराश्रविष्ठाः ॥ ॐ आयुष्म
 ज्ञं पोतुरजसः प्रस्तात् ॥ संवत्सरीणममृतं स्वस्ति ॥ मह्यमित्यादि ख्यायकर्मणे स्वस्ति भवंतो ब्रुवंति त्रिभिः ॥ ॐ आयुष्म
 ते स्वस्तीति प्रतिवचनं त्रिभिः ॥ ॐ ऋध्यामस्तोमं सनुयामवाजमानो मंत्रसुरथे होषयातं ॥ यज्ञो न पुक्कं मधुगोष्वंतरा भूतांशो अश्वि
 नोः काममप्राः ॥ सर्वा मृद्धि मधुया मिति तैवेत जसैव पुरस्तात्पथं भवच्छंदोभिर्मध्यतोक्षैरुपरिष्टा यत्र्यासर्वतो द्वादशाहं परिभू
 य सर्वा मृद्धि माधोत्सर्वा मृद्धि मधोति य एवं वेद ॥ ऋध्यामस्तु हव्यैर्नमसोपसद्यं ॥ मित्रं देवं मित्रं धेयं नो अस्तु ॥ अनुराधान् हवि

षावर्धयतः ॥ शतंजीविमशरदुःसर्वीराः ॥ त्रीणित्रीणिवैदेवानामुद्धानि ॥ त्रीणिच्छंदांसित्रीणिसर्वनानि ॥ त्रयंइमेलोकाः ॥
 ऋध्यामेवतर्ह्येषुलोकेषुप्रतिष्ठति ॥ मध्यमित्यादिअस्यकर्मणःऋद्धिंभवतोब्रुवंत्वितित्रिः ॥ ॐ ऋध्यतामितिप्रतिवचनं
 तद्रौ ॥ अथियेजातःअथऽआनिरियाथअथययोरितृभ्योदधाति ॥ अथयवसानाअमृतत्वमायन्भवतिसत्यासमिथामि
 मेतत् ॥ अमुंचलोकमिदमुचसर्व ॥ तन्नोनक्षत्रमभिजिह्वित्य ॥ अथयदधात्वहणीयमानं ॥ यस्मिन्ब्रह्माभ्यर्जयत्सर्व
 मृषयस्त्रयिविदविदुः ॥ ऋचःसामानियजूंषि ॥ साहिश्रीरमृतासतां ॥ एतैर्मन्त्रैनीराजनंकारयति ॥ मह्यमित्यादिअमुक
 कर्मणःश्रीरस्त्वितिभवतोब्रुवंत्वितित्रिः ॥ ॐ अस्तुश्रीरितित्रिविप्राः ॥ वर्षशतंपूर्णमस्तु ॥ गोत्राभिवृद्धिरस्तु ॥ प्रजापतिः
 प्रीयतां ॥ ॐ शुक्रेभिर्गैरर्जआततन्वान्क्रतुं पुनानःकविभिःपवित्रैः ॥ शोचिर्वसानःपर्यायुरपांश्रियोमिमीतेवृहतीरनूनाः ॥ य
 तदप्येषःश्लोकोभिगीतोमरुतःपरिवेष्टारोमरुतस्यावसनगृहे ॥ आविक्षितस्यकामप्रविश्वेदेवासभासदइति ॥ ततउत्तरकल
 शंदक्षिणहस्तेदक्षिणकलशंवामहस्तेगृहीत्वाताभ्यांधाराद्वयंसंततंपात्रेनिषिंचेदेभिर्मन्त्रैः ॥ (वास्तोष्पतइतिचतसृणांवसिष्ठोवा
 स्तोष्पतिस्त्रिष्टुबंत्यागायत्री उदकसेचनेवि०) ॥ ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्वविशोअनमीवोभवानः ॥ यत्त्वेमहेप्रति
 न्नोजुषस्वशनोभवंद्विपदेदं चतुष्पदे ॥ वास्तोष्पतेप्रतरणोनएधिगयस्फानोगोभिरश्वेभिर्दिदो ॥ अजरासस्तेसख्येस्यामपितेव
 पुत्रान्प्रतिनोजुषस्व ॥ वास्तोष्पतेशुग्मयांसंसदातेसक्षीमहिर्ण्वयागातुमत्या ॥ पाहिक्षेमउतयोगेवरनोययंपातस्वस्तिभिः

सदनः ॥ अमीवहावास्तोष्पतेविश्वारूपाण्याविशन् ॥ सखासुशेवएधिनः ॥ शिवंशिवंशिवं ॥ ततःकर्तुर्वामतःपत्नीमुपवेश्य
 पात्रपातितजलेनपल्लवदूर्वाभिरुदङ्मुखास्तिष्ठतोविप्राअभिपिंचेयुः ॥ (समुद्रज्येष्ठाइतिचतसृणांघसिष्ठआपस्त्रिष्टुप् ॥ त्रायंता
 मितितिसृणांसप्तर्षयआपोनुष्टुप् ॥ इमाआपइतितिसृणामैतरेयअपोनुष्टुजगत्यनुष्टुभः ॥ देवस्यत्वेत्यस्यैतरेयःसविताश्विनौपू
 पाचयजुःअभिषेके) ॐ समुद्रज्येष्ठाःसलिलस्यमध्यात्पुनानायंत्यनिविशमानाः ॥ इंद्रोयावज्रीवृषभोररादृताआपोदेवीरिहमारु
 मंवंतु ॥ याआपोदिव्यावृतवास्रवंतिलुनित्रिमावृतवायाःस्वयंजाः ॥ समुद्रार्थायाःशुचयःपावकास्ताआपोदेवीरिहमामंवंतु ॥ यासुराजावरु
 मंवंतु ॥ याआपोदिव्यावृतवास्रवंतवपश्यंजनानां ॥ मधुश्चुतःशुचयोयाःपावकास्ताआपोदेवीरिहमामंवंतु ॥ त्रायतामिहदेवास्त्रायतांमरुतांग
 यासांराजावरुणोयातिमध्मेसत्यानतेअवपश्यंजनानां ॥ मधुश्चुतःशुचयोयाःपावकास्ताआपोदेवीरिहमामंवंतु ॥ आपःसर्वस्यभेषजीस्तासैकृण्वंतु
 णोयासुसोमोविश्वेदेवायासूर्जमदति ॥ वैश्वानरोयास्वग्निःप्रविष्टस्ताआपोदेवीरिहमामंवंतु ॥ इमाआपःशिवतमा
 जः ॥ त्रायंतांविश्वारूपाभ्यांजिह्वावाचःपुरोगवी ॥ अनामयितुभ्यांत्वाताभ्यांत्वोपस्पृशामसि ॥ इमाआपःशिवतमा
 भेषजं ॥ हस्ताभ्यांदशशाखाभ्यांजिह्वावाचःपुरोगवी ॥ याभिरिंद्रमभ्यर्षिचत्प्रजापतिःसोमंराजानंवर्णयमंमनु ॥
 इमाःसर्वस्यभेषजीः ॥ इमाराष्ट्रस्यवर्धनीरिमाराष्ट्रभृतोमृताः ॥ याभिरिंद्रमभ्यर्षिचत्प्रजापतिःसोमंराजानंवर्णयमंमनु ॥ बलाय
 ताभिरग्निरभिषिचामित्वामहंराजांत्वमधि राजोभवेह ॥ महान्तेत्वामहीनांसम्राजंचर्षणीनांदेवीजनित्र्यजीजनद्भद्राजनित्र्य
 जीजनत् ॥ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्यामग्नेस्तेजसासूर्यस्यवर्चसैन्द्रस्यैन्द्रियेणाभिषिचामि ॥ इतिपुण्याहवाचनं ॥
 ॐ भूर्भुवःस्वःअमृताभिषेकोस्तु ॥ शान्तिःपुष्टिस्तुष्टिश्चातु ॥ द्विराचामेत् ॥ इतिपुण्याहवाचनं ॥
 श्रियैयशसेन्नाद्याय ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःअमृताभिषेकोस्तु ॥

श्रीः ॥ गौरीपद्माशचीमेधासावित्रीविजयाजया ॥ देवसेनास्वधास्वाहामातरोलोकमातरः ॥ वाराहीचतुर्थेद्राणीचामुंडाःसप्तमातरः ॥ (विनायक)गौर्यादि
कुलदेवता ॥ ब्राह्मीमाहेश्वरीचैवकौमारीवैष्णवीतथा ॥ वाराहीचतुर्थेद्राणीचामुंडाःसप्तमातरः ॥ वाराहीचतुर्थेद्राणीचामुंडाःसप्तमातरः ॥ (विनायक)गौर्यादि
षोडशमातृब्राह्म्यादिसप्तमातृश्च (दुर्गाक्षेत्रपालंगणपतिंच) एतेष्वक्षतपुंजेष्वावाहयामि ॥ तदस्तु० ॥ गृहवै० प्रतिष्ठाप्र
तिष्ठा ॥ सुप्रतिष्ठितमस्तु ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःगौर्याद्यावाहितदेवताभ्योनमःइतिषोडशोपचारैःसंपूजयेत् ॥ ॐ गौरीर्ममायस
खिलानितक्षत्येकपदीद्विपदीसाचतुष्पदी ॥ अष्टार्पदीनवपदीबभूवुषीसहस्राक्षरापरमेव्योमन् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःगौर्याद्यावाहि
तदेवताभ्योनमःमंत्रपुष्पंसमर्पयामि ॥ अनेनषोडशोपचारैःपूजननगौर्याद्यावाहितदेवताःप्रीयतां ॥ इतिमातृकापूजनम् ॥

॥ १४ ॥ अथमातृकापूजनम् ॥

श्रीः ॥ सहूर्वाकुरानक्षतान्जलंचादाय ॥ सत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवाःनांदीमुखाःभूर्भुवःस्वःइदंवःपाद्यंस्वाहानमइयंचवृद्धिः ॥
मातृपितामहीप्रपितामहाःनांदीमुखाःभूर्भुवःस्वःइदंवःपाद्यं०॥ पितृपितामहप्रपितामहाःनांदीमुखाःभूर्भुवःस्वःइदंवःपाद्यं०॥
मातामहमातृपितामहमातृप्रपितामहाःपत्नीसहिताःनांदीमुखाःइदंवःपाद्यं० ॥ पुनःसत्यवसु० इदंवःआसनगंधाद्युपचा
रकल्पनंस्वाहानमइयंचवृद्धिः ॥ मातृ०इदंवः० ॥ पितृपितामह०इदंवःआसन० ॥मातामह०पत्नीस०आसन० ॥ ॥ गौर्या

दिषोऽशमातरः ब्राह्म्यादिसप्तमातरः दुर्गाक्षेत्रपालगणपतयश्च भूर्भुवः स्वः इदं वः युग्मब्राह्मणभोजनपर्यासान्ननिष्कर्षाभूतं किं
 चिद्धिरण्यं स्वाहानमइयंच वृद्धिः ॥ सत्यवसु० युग्मवसु० युग्म० द्विरण्यं० ॥ मातामहमातृपितामहमातृप्रपिताम० युग्म०
 द्विरण्यं० ॥ पितृपितामहप्रपितामहाः० ॥ भूर्भुवः स्वः युग्म० द्विरण्यं० ॥ मातामहमातृपितामहमातृप्रपिताम० युग्म०
 द्विरण्यं० ॥ उपोस्मै गायतानरः पर्वमानायें देवे ॥ अभिदेवाँ इयक्षते ॥ अभितेमधुनापयोथर्वाणो अशिश्रयुः ॥ देवं देवाय
 देवयु ॥ सनः पवस्व शंगे वंशं जनाय शमवर्ते ॥ शंरो जन्नोपधीभ्यः ॥ वृत्रवेनुस्वतवसे रूणाय दिविस्पृशे ॥ सोमाय गाथमर्चत ॥
 हस्तं च्युते भिरिद्रिभिः सुतंसोमं पुनीतन ॥ मधावाधावतामधु ॥ ॥ प्रजापते न त्वदेता न्यून्यो विश्वाजाता निपरितावभूव ॥ य
 त्का मास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयोर्यो रयीणां ॥ पितापितामहश्चैव तथैव प्रपितामही ॥ स्यान्नः सुनुस्तनयो विजावा
 दा तुमहमुत्सृज्ये ॥ मातापितामही चैव तथैव प्रपितामही ॥ इळां मग्ने पुरुदं ससुनिंगोः शश्वत्तमंहवमानायसाध ॥ स्यान्नः सुनुस्तनयो विजावा
 कादयः ॥ एते भवंतु सुप्रीताः प्रयच्छंतु चमंगलं ॥ इळां मग्ने पुरुदं ससुनिंगोः शश्वत्तमंहवमानायसाध ॥ स्यान्नः सुनुस्तनयो विजावा
 भेसा तै सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ इळां मुपह्वयते पशवो वा इळां पशून्वत दुपह्वयते पशून्वजमाने दधाति दधाति ॥ यथाचारं हिरण्येन भांड
 वादनं ॥ अनेन नानां दीश्राद्धेन नानां दीमुखदेवताः प्रीयंतां वृद्धिः ॥ ततः उत्तिष्ठन्न ह्यणस्यते० अभ्यारुमिदद्रयो० ॥ यांतु देवगणाः
 सर्वे पूजामादाय पार्थिवात् ॥ इष्टकामप्रसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥ इत्यादि मंत्रैरावाहितदेवता उत्थापयेत् ॥ इति नानां दीश्राद्धं ।

१ वृद्धौ तीर्थे च संन्यस्ते ताते च पतितसति । ए० य० एव पिता दद्यात्ते० यो दद्यात्स्वयमुतः ॥ पित्रन्यकर्तृकसंस्कारादौ संस्कार्ये पित्रादि० य० एव दद्यान्नस्वे० य ।

॥ १६ ॥ अथग्रहयज्ञःपरिशिष्टोक्तः ॥
 श्रीः ॥ यजमानःस्नात्वानित्यकर्मनिर्वर्त्यमौहूर्तिकोक्तेशुभेकालेआचम्यपवित्रपाणिःप्राणानायम्येदशकालौसंकीर्त्यकरिष्यमा
 णेऽमुकस्मिन्नाभ्युदयिकेनिर्विघ्नेनफलसिद्धिकामोबह्वृचगृह्यपरिशिष्टोक्तरीत्याग्रहयज्ञंकरिष्ये ॥ इतरनिमित्तेषुअमुककर्म
 कर्तुमादौग्रहानुकूल्यसिद्धिद्वाराअमुककामनासिद्धिद्वारावाश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थग्रहयज्ञंकरिष्यइतिसंकल्प्य ॥ तदंगणप
 तिपूजनंस्वस्तिवाचनंमातृकापूजनंनदीश्राद्धंआचार्यादिवरणंचकरिष्ये ॥ आचार्यवरणं ॥ ब्राह्मणंसंपूज्यअमुकप्रवरान्वि
 तोऽमुकगोत्रोऽमुकशर्माअहं ॥ अमुकप्रवरान्वितममुकगोत्रोत्पन्नंऋग्वेदांतर्गतशाकलशाखाध्यायिनममुकशर्माणंब्राह्मणंअ
 स्मिन्ग्रहयज्ञेआचार्यत्वांवृणे इतिवृत्वाप्रार्थयेत् ॥ आचार्यस्तुयथास्वर्गेशक्रादीनांबृहस्पतिः ॥ तथात्वंममयज्ञेस्मिन्नाचार्योभ
 वसुव्रत ॥ वृतोस्मियथाज्ञानतःकर्मकरिष्यामि ॥ ॥ ब्रह्मवरणं ॥ यथाचतुर्मुखोब्रह्मास्वर्गेलोकेपितामहः ॥ तथात्वंममयज्ञेस्मि
 न्ब्रह्माद्विजपतेभव ॥ ॥ सदस्यवरणं ॥ त्वंनोगुरुःपितामातात्वंप्रभुस्त्वंपरायणं ॥ त्वत्प्रसादाच्चविप्रर्षेसर्वमेस्यान्मनोगतं ॥
 आपद्विमोक्षणार्थायकुरुयज्ञमतंद्रितः ॥ ऋत्विग्भिःसहितःशुद्धैःसंयतैःसुसमाहितैः ॥ आचार्येणचसंयुक्तःकुरुकर्मयथोदितं ॥
 गाणपत्यवरणं ॥ प्रारिप्सितस्ययज्ञस्यजपस्यहवनस्यच ॥ निर्विघ्नेनसमास्यर्थत्वामहंगणपंवृणे ॥ ॥ उपद्रष्टृवरणं ॥ भगवन्स
 र्वधर्मज्ञसर्वधर्मभृतांवर ॥ विततेममयज्ञेस्मिन्नुपद्रष्टाभवद्विज ॥ ऋत्विजश्चयथापूर्वशक्रादीनांमखेऽभवन् ॥ यूयंतथामेभवत
 ऋत्विजोह्यथसत्तमाः ॥ अस्यागास्यनिष्पत्तौभवंतोभ्यर्थितामया ॥ सुप्रसन्नैश्चकर्तव्यंकर्मदंविधिपूर्वकं ॥ इतिऋत्विजःसंप्रा

र्थं ॥ तेचयथाज्ञानतःकर्मकरिष्यामइत्युक्त्वाआचमेयुः ॥ ततोयजमानस्तान्यथाविभवमर्चयेत् ॥ अथाचार्यःआचम्यप
 चित्रंधृत्वाप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्ययजमानेनप्रेरितोहंग्रहयज्ञार्येकर्मणिआचार्यकर्मकरिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य ॥ पृथिव
 त्वया० ॥ यज्ञकर्मसमारभे ॥ इत्यासनविधिंपुरुषसूक्तन्यासंजपंवाकृत्वा ॥ पङ्गन्यासंविधाय ॥ कलशस्यमुखे० इतिकलश
 पूजांकृत्वा ॥ अपवित्रःपवित्रोवा इतिपूजासंभारान्प्रोक्ष्यआत्मानंचप्रोक्षेत् ॥ ततःयदत्रसंस्थितंभूतंस्थानमाश्रित्यसर्वतः ॥
 स्थानंत्यक्त्वानुतत्सर्वयत्रस्थंतत्रगच्छतु ॥ अपक्रामंतुभूतानिपिशाचाःसर्वतोदिशं ॥ सर्वेषामविरोधेनयज्ञकर्मसमारभे ॥
 इतिगौरसर्धपान्विकीर्य ॥ शुचीवोहव्येतिमैत्रावरुणिर्वसिष्ठोमरुतस्त्रिष्टुप् ॥ अग्निःशुचिब्रततमइतिद्वयोरांगिरसोविरूपोन्नि
 गीयत्री ॥ एतोन्विद्रमिति तिसृणामांगिरसस्तिरश्चींद्रोनुष्टुप् ॥ भूमिप्रोक्षणेविनियोगः ॥ ॐ शुचीवोहव्यामरुतःशुचीनांशु
 चिहिनोम्यध्वरंशुचिभ्यः ॥ ऋतेनसत्यमृतसापआयन्छुचिजन्मानःशुचयःपावकाः ॥ अग्निःशुचिब्रततमःशुचिर्विप्रःशुचिः
 कविः ॥ शुचीरोचतआहुतः ॥ उदग्नेशुचयस्तर्वशुक्लाभ्राजतईरते ॥ तवज्योतींज्यर्चयः ॥ एतोन्विद्रंस्तवामशुद्धंशुद्धेनसाम्ना ॥
 शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसंशुद्धआशीर्वांन्ममतु ॥ इंद्रशुद्धोऽनःआर्गहिशुद्धःशुद्धाभिरुतिभिः ॥ शुद्धोरुयिनिधारयशुद्धोममद्भिसो
 म्यः ॥ इंद्रशुद्धोहिनोरुयिंशुद्धोरत्नानिद्राशुषे ॥ शुद्धोवज्राणिजिघ्रसेशुद्धोवाजंसिपाससि ॥ पंचगव्येनभूमिप्रोक्षणं ॥ आ
 पोहिष्ठेतिवृचस्यांबरीपःसिंधुद्वीपआपोगायत्री भूमिप्रोक्षणेविनियोगः ॥ ॐ आपोहिष्ठा० इतितृचेन कुशोदकेनचप्रोक्षेत् ॥
 अपवित्रःपवित्रोवासर्वावस्थांगतोपिवा ॥ यःस्मरेत्पुंडरीकाक्षंसवाह्याभ्यंतरःशुचिः ॥ ततःकृतांजलिपुटस्तिष्ठन् ॥ ॐ स्व

स्त्यर्चनं तार्क्ष्यसरिष्टनेमिमहभूतं वायुसंदेवतानां ॥ असुरघ्नमिंद्रसखंसमतसुबृहद्यशोनावमिवारुहेम ॥ अंहोमुचमांगिरसंग्रथं
 चस्वस्त्यात्रेयं मनसा च तार्क्ष्य ॥ प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये स्वस्ति संवाधेष्वभयं नो अस्तु ॥ देवा आयांतु ॥ यातु धाना अपयांतु ॥
 त्यतत ईशान्यां वाकृतायां चतुर्दिक्षु हस्तमात्रावरायां चतुस्त्रिद्व्यंगुलप्रमाणत्रिभूमिकायां ग्रहवेद्यां शुक्लतंडुलैः सकर्णिकमष्टदलमंबु
 जमुल्लिख्य कर्णिकायां दलेषु च वर्तुलादितत्तद्ब्रह्मर्षीठा निपीठेन वकुर्यात् ॥ यथा—मध्ये रक्षाक्षतैर्वर्तुलमादित्याय ॥ १ ॥ आग्ने
 यदले शुक्लाक्षतैश्चतुरस्रं सोमाय ॥ २ ॥ दक्षिणदले रक्षाक्षतैस्त्रिकोणं मंगलाय ॥ ३ ॥ ईशानदले हरिताक्षतैर्वाणाकारं बुधाय
 ॥ ४ ॥ उत्तरदले पीताक्षतैर्दोर्ध्वचतुरस्रं गुरवे ॥ ५ ॥ पूर्वदले शुक्लाक्षतैः पंचकोणं शुक्राय ॥ ६ ॥ पश्चिमदले कृष्णाक्षतैश्चापा
 कारं शनैश्चराय ॥ ७ ॥ नैऋत्यदले कृष्णाक्षतैः शूर्पाकारं राहवे ॥ ८ ॥ वायव्यदले चित्राक्षतैर्ध्वजाकारं केतवे ॥ ९ ॥ इति वि
 लिख्य तत उदीच्यां रंगवल्लीपद्मे धान्येन कुंभयोग्यं पीठं प्रकल्प्य तत्र नवमवर्णतैजसंमृण्मयं वानुलिप्तमक्षतपुष्पमालाद्यलंकृतं शुभ
 मभिषेककुंभं स्थापयेत् ॥ यथा—(महीद्यौः काण्वो मे धातिधिर्भूमिर्गार्गी भूमिप्रार्थने विनियोगः ॥ ॐ महीद्यौः पृथिवीर्चन
 इमं यज्ञं मिमिक्षतां ॥ पिपृतां नो भरीमभिः ॥ इति भूमिप्रार्थ ॥ ओषधय इत्यस्याथर्वणो भिषगोषधयो नुष्टुप् धान्यराशिकरणे
 वि० ॥ ॐ ओषधयः सर्वदंते सोमै न सह राज्ञा ॥ यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं राजन्पारयामसि ॥ इति धान्यराशिं कृत्वा) आकलशे

१ सूर्यादीना प्रतिमाद्रव्याणि—ताम्रं स्फाटिकं रक्तचंदनं सुवर्णं तदेव रजतं लोहं सीसं कांस्यं चेति नव ॥ सुवर्णवासर्वेषामिति ॥

[illegible]

त्रोरेणुःपवमानसोमोजगती ॥ त्वक्क्षेपणेवि० ॥ रुवतिभीमोवृषभस्तविष्ययाशृंगेशिशानोहरिणीविचक्षणः ॥ आयोनिंसो
मःसुकृतंनिषीदतिगव्ययीत्वग्भवतिनिर्णिगव्ययी ॥ अनेनन्यग्रोधाश्वत्थस्रक्षजंवचूतवृक्षत्वचः ॥ याःफलिनीरित्यस्याथर्व
णोभिषगोषधयोनुष्टुप् पुष्पफलक्षेपणेवि० ॥ ॐ याःफलिनीर्याअफलाअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुंचत्वं
हंसः ॥ इतिपुष्पफले ॥ सहिरलानीत्यस्यावाश्वःसवितागायत्री रत्नक्षेप० ॥ ॐ सहिरलानिदाशुषेसुवातिसविताभगः ॥
तंभागंचित्रमीमहे ॥ अनेननवरलानिहीरकमौक्तिकपद्मरागनीलमरकतगोमेदपुष्परागवैडूर्यप्रवालाख्यानि ॥ हिरण्यरूप
इत्यस्यशौनकोगुत्समदोषान्नपात्रिष्टुप् ॥ हिरण्यक्षेपेवि० ॥ ॐ हिरण्यरूपःसहिरण्यसंहगपान्नपात्रसेदुहिरण्यवर्णः ॥ हि
रण्ययात्यरियोर्नेनिषद्याहिरण्यदाददुत्यन्नमसै ॥ इतिहिरण्यं ॥ याओषधीरित्यस्याथर्वणोभिषगोषधयोनुष्टुप् ॥ ॐ याऽओष
धीःपूर्वीजातादेवेभ्यस्त्रियुगंपुरा ॥ मनैनुबभ्रूणामंहशतंधामानिसप्तच ॥ अनेनशतौषधानि ॥ तदभावेदशमूलानितदभावे
सुवर्णवा ॥ गंधद्वारामितिगंधंनिक्षिप्य ॥ ॐ गंधद्वारांदुराधर्षानित्यपुष्टांकरीपिणी ॥ ईश्वरीसर्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रि
तौअर्चन्द्यावानमोभिःपृथिवीइपध्यै ॥ येषांब्रह्माण्यसमानिविप्राविज्वग्वियंतित्वनिनोनशाखाः ॥ ॐ प्रवोयज्ञेषुदेवयं
ल्वैमुखमाच्छाद्य ॥ युवंवस्त्राण्यौचथ्योदीर्घतमामित्रावरुणौत्रिष्टुप् ॥ कुंभेवस्त्रयुग्मेवष्टनेवि० ॥ अनेनन्यग्रोधाद्युक्तवृक्षप
साथेयुवोरच्छिद्रामंतवोहसर्गाः ॥ अवातिरतमनृतानिचिश्चक्रुतेनमित्रावरुणासचेथे ॥ इतिवस्त्रयुग्मेनवेष्टयित्वाकुंभेतीर्था

न्यावाहयेत् ॥ सर्वसमुद्राः सरितस्तीर्था निजलदानदाः ॥ आयांतु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ॥ गंगेच यमुने चैव गोदावरि
 सरस्वति ॥ नर्मदे सिंधुकावेरि जले स्मिन्संनिधिकुरु ॥ इमं मे गंग इत्यस्य सिंधु क्षिप्तैयमेधो नद्योजगती ॥ तीर्थो वाहने ॥ ॐ
 इमं मे गंगेयमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं स च तापरुण्या ॥ असिक्न्या मरुद्वेधे वितस्तया जीर्णीकयेत् शृणु ह्यासुषो मया ॥ इत्यावाह्य ॥
 ततः कुंभमभि मृश्य जपेत् ॥ आपो हि छेति तिसृणामांबरीषः सिंधुर्द्वीप आपो गायत्री ॥ न हिते क्षत्रमिति तिसृणामाजीगतिः शुनः
 शोपोवरुणस्त्रिष्टुप् ॥ स्वादिष्टयेति तिसृणामधुच्छंदाः पवमानसोमो गायत्री ॥ सर्वासां जपे विनि ॥ ॐ आपो हिष्ठा ० ऋ ० इ
 ॥ ॐ न हिते भन्नं सहो न मन्युं वयं ॥ नीचीनाः स्थुरुपरिबुध एषामस्मे अंतर्निहिताः केतवः स्युः ॥ वरुं हिराज्जावरुणश्चकार
 जावरुणो वनस्योर्ध्वं स्तूपं ददत् पतदक्षः ॥ ॐ न हिते भन्नं सहो न मन्युं वयं ॥ नीचीनाः स्थुरुपरिबुध एषामस्मे अंतर्निहिताः केतवः स्युः ॥ ॐ स्वादिष्टया ० ऋ ० इ ॥ इति कुंभमभि
 सूर्याय पंथामन्वेत वाऽर्च ॥ अपद्रुपाद्रा प्रतिधातवै करुतापत्रक हृदया विधश्चित् ॥ ॐ ॥ श्रीरस्त्विति ॥ ततो
 त्रयेत् ॥ (अत्र ऋक् त्रयेणैव सिद्धे प्राचां सूक्तोपन्यासश्चित्य इति कौस्तुभे) अथ यजमानः प्राञ्जुखः समाहितचित्त आचार्ये त्विक् सहि
 तः पुण्याहवाचनं कुर्यात् ॥ अस्य नवग्रहकर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंत्विति ॥ एवं स्वस्तीति ॥ ऋद्धिं भ ॥ श्रीरस्त्विति ॥ ततो
 ग्रहपूजां करिष्ये इति संकल्प्य ततः पूर्वनिर्मितपीठेषु यथास्थानमुखीं ग्रहप्रतिमाः स्थापयित्वा तदक्षिणवामपार्श्वयोरधिदेवताप्रत्य
 धिदेवताप्रतिमेतदभिमुख्यौ स्थापयेत् ॥ प्रणवस्य परब्रह्म परमात्मा गायत्री ॥ व्यस्तसमस्तव्याहृतीनामत्रिभृगुभरद्वाजप्रजापतयोभिवायुसूर्य
 ल्यर्पणं ॥ तत्रायं क्रमः ॥

प्रजापतयोगायत्र्युष्णिगनुष्टुप्बृहत्यः ॥ आवाहनेविनियोगः ॥ ॐ भूरादित्यमावाहयामि ॥ ॐ भुवरादित्यमा० ॥ ॐ स्व
 रादित्यमा० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वरादित्यमा० ॥ आकृष्णेनेत्यस्यहिरण्यस्तूपःसवितात्रिष्टुप् सूर्यावाहनेविनियोगः ॥ ॐ आ
 कृष्णेनरजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतंमर्त्यं च ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोचातिभुवनानिपश्यन् ॥ भगवन्नादित्यग्रहाधि
 र्वागाभरणभास्करतेजोनिधेत्रिलोकप्रकाशकत्रिदेवतामयमूर्तेनमस्तेसन्नद्धारुणध्वजपताकोपशोभितेनसप्ताश्वरथवाहनेनमेरुं
 प्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छामिरुद्राभ्यांसहपद्मकर्णिकायांताम्रप्रतिमां प्राञ्जुर्खीवर्तुलपीठेऽधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामि ॥ ॐ आ
 क्षिणपार्श्वे ॥ ॐ भूरादित्याधिदेवमग्निमावाहयामि ॥ ॐ भुवरादित्याधिदेव० ॥ ॐ स्वरादित्याधिदेव० ॥ तद्
 दित्याधिदेव० ॥ अग्निदूतंमेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्न्यावाहनेविनि० ॥ ॐ अग्निदूतंवृणीमहेहोतारंविश्ववेदसं ॥ अस्ययज्ञ
 स्यसुक्तुं ॥ पिंगश्मश्रुकेशंपिंगाक्षित्रितयमरुणवर्णंगङ्गागस्थंसाक्षसूत्रंसप्तार्चिषंशक्तिधरवरदहस्तद्वयमादित्याधिदेवमग्निमा
 वाहयामि॥वामपार्श्वे॥ ॐ भूरादित्यप्रत्यधिदेवंरुद्रमावाहयामि॥ ॐ भुवरादित्य० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वरा
 त्र्यंबकंमैत्रावरुणर्वसिष्ठोरुद्रोनुष्टुप् रुद्रावाहनेविनियोगः ॥ ॐ त्र्यंबकंयजामहेसुगंधिं पुष्टिवर्धनं ॥ उर्वारुकमिवबध्नान्मृत्यो
 र्मुक्षीयमामृतात् ॥ त्रिलोचनोपेतंपंचवक्त्रं वृषारूढं कपालशूलखट्वांगधारिणंचंद्रमौलिसदाशिवमादित्यप्रत्यधिदेवंरुद्रमावा०
 ॥१॥ ॥ तदक्षिणपूर्वदले ॥ ॐ भूःसोममावा० ॥ ॐ भुवःसोम० ॥ ॐ स्वःसोममावाहयामि ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःसोममावाहयामि

आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री सोमावाहने० ॐ आप्यायस्व० ॥ भगवन्सोमद्विजाधिपतेसुधामयशरीरअत्रिगोत्रयामुनदे
 शेश्वरगोक्षीरधवलांगकांते द्विभुजगदावरदानांकितकरशुक्लांवरमाल्यानुलेपनसर्वांगमुक्तमौक्तिकाभरणरमणीयसमस्तलोका
 प्यायकेदेवतास्वाद्यमूर्तेनमस्तेसन्नद्धधवलध्वजपताकोपशोभितनदशश्वेताश्वरथवाहनेनमेरुप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छाञ्जिरुमया
 चसहपद्माग्नेयदलमध्येस्फाटिकप्रतिमांप्रत्यङ्मुखीचतुरस्त्रपीठेऽधितिष्ठपूजार्थत्वामावाहयामि ॥ तदक्षिणपार्श्वे ॥ ॐ भूःसोमा
 धिदेवताअपआवा० ॥ ॐ भुवःसोमा० ॥ ॐ स्वःसोमा० ॥ अप्सुमइत्यस्यांवरीपःसिंधुद्वीपआपोगा
 यत्री ॥ अपावा० ॥ ॐ अप्सुमेसोमोअब्रवीदुतर्विश्वा निभेपुजा ॥ अग्निर्चविश्वशर्भुवं ॥ स्त्रीरूपधारिणीःश्वेतवर्णामकरवाह
 नाःपाशकलशधारिणीर्मुक्ताभरणभूयिताःसोमाधिदेवताअपआवा० ॥ तद्वामपार्श्वे ॥ ॐ भूःसोमप्रत्यधिदेवतामुमामावा० ॥
 ॐ भुवःसोमा० ॥ ॐ स्वःसोमा० ॥ गौरीर्मिमायदीर्घतमाउमाजगती उमावा० ॥ ॐ गौरीर्मिमाय
 सलिलानितक्षत्येकपदीद्विपदीसाचतुष्पदी ॥ अष्टार्पदीनवपदीबभूवुपीसहस्राक्षरापरमेव्योमन् ॥ अक्षसूत्रकमलदर्पणकमं
 डलुधारिणींत्रिदशपूजितांसोमप्रत्यधिदेवतामुमामावाह० ॥ २ ॥ ॥ दक्षिणत्रिकोणमंडले ॥ ॐ भूरंगारकमावाहयामि ॥
 ॐ भूर्वोंगारक० ॥ ॐ स्वरंगारक० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वरंगारक० ॥ अग्निर्मूर्धाविरूपोंगारकोगायत्री अंगारकावाहने० ॥ ॐ अग्नि
 र्मूर्धादिवःकुक्कुत्पतिःपृथिव्याअयं ॥ अपारेतासिजिन्वति ॥ भगवन्नंगारकअग्न्याकृतेभारद्वाजगोत्रअवंतिदेशेश्वरज्वालापुंजोप
 मांगद्युतेचतुर्भुजशक्तिशूलगदाखड्गधारिन् रक्तांबरमाल्यानुलेपनप्रवालभूयिताभरणसर्वांगदुर्धरालोकदीसेनमस्तेरत्नछरक

1108311

॥९६॥
महयज्ञः

1108311

ध्वजपताकोपशोभितेनरक्तेष्वथवाहनेनमेरुप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छभूमिस्कंदाभ्यांसहपद्मदक्षिणदलमध्ये रक्तचंदनप्रतिमां द
क्षिणामुखीत्रिकोणपीठेऽधितिष्ठपूजार्थत्वाभावाहयामि ॥ तद्वक्षिणपार्श्वे ॥ ॐ भूरंगारकाधिदेवतांभूमिमावाहयामि ॥ ॐ भू
वोंगा० ॥ ॐ स्वरंगा० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वरंगा० ॥ स्योनापृथिवीत्यस्येधातिथिर्भूमिर्गायत्री ॥ भूम्यावाहने० ॥ ॐ स्योनापृ
थिविभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानुःशर्मसुप्रथः ॥ शुक्लवर्णीदिव्याभरणभूषितांचतुर्भुजांसौम्यवपुषंचंडांशुसहशांबरारत्न
पात्रसस्यपात्रौषधिपात्रपद्मोपेतकरांचतुर्दिङ्गागपृष्ठगतामंगारकाधिदेवतांभूमिमावा० ॥ तद्धामपार्श्वे ॥ ॐ भूरंगारकप्रत्य
धिदेवंस्कंदमावा० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वरंगा० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वरंगा० ॥ कुमारश्चिदित्यस्यगुत्समदःस्कंदस्त्रिष्टुप्
स्कंदावाहने० ॥ ॐ कुमाराश्चित्पितरंवंदमानंप्रतिनानामरुद्रोपयंतै ॥ भूर्देवतांसर्पतिगुणीषेस्तुतस्त्वभेषजारास्यस्मे ॥
षण्मुखंशिखंडकविभूषणंरक्तांबरधरंमयूरयानंकुक्कुटघंटापताकाशस्युपेतंचतुर्भुजमंगारकप्रत्यधिदेवंस्कंदमावाहयामि ॥ ३ ॥
ततःप्रागुत्तरदले ॥ ॐ भूर्बुधमावाहयामि ॥ भूर्देवतांसर्पतिगुणीषेस्तुतस्त्वभेषजारास्यस्मे ॥
बुधस्त्रिष्टुप् ॥ बुधावाहने० ॥ ॐ उह्नुध्यध्वंसमनसःसखायःसमन्निर्मिध्वंबहवःसर्नीळाः ॥ इधिकामग्निमुषसंचदेवीमित्रो
वतोर्वसेनिह्वयेवः ॥ भगवन्सौम्यसौम्याकृतेसर्वज्ञानमयात्रिगोत्रमगधदेशेश्वरकुंकुमवर्णोपमांगद्युतेचतुर्भुजखड्गखेटकगदाव
रदानांकितपीतांबरमाल्यानुरूपेनमरकताभरणालंकृतसर्वागविविधपते नमस्तेसन्नद्धपीतध्वजपताकोपशोभितेनचतुःसिंहरथ
वाहनेनमेरुप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छविष्णुपुरुषाभ्यांसहैशानदलमध्ये सुवर्णप्रतिमामुदञ्जुर्लीबाणाकारपीठेधितिष्ठपूजार्थत्वाभा

वाहयामि ॥ तदक्षिणपार्श्वे ॥ ॐ भूर्बुधाधिदेवंविष्णुमावा ॥ ॐ भुवर्बुधा ॥ ॐ स्वर्बुधा ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥
 इदंविष्णुर्मेधातिथिविष्णुर्गीयत्री विष्णवावा ॥ ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥
 पद्मशंखचक्रोपेतंचतुर्भुजसौम्याधिदेवंविष्णुमावा ॥ ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥
 ॐ स्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥
 पात् ॥ सभूमिविश्वतोवृत्वात्यतिष्ठदशांगुलं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥
 ततश्चत्तरदले ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥
 दोबृहस्पतिस्त्रिष्टुप् आवाहने ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥
 विष्णोर्मेधातिथिविष्णुर्गीयत्री विष्णवावा ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥
 वरदानांकितपीतांबरमाल्यानुलेपनपुष्परामयाभरणमणीय सर्वविद्याधिपतेनमस्तेसन्नद्धपीतध्वजपताकोपशोभितेनपीता
 श्वरथवाहनेनमेरुप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छेद्रब्रह्मभ्यांसहपद्मोत्तरदलमध्ये सुवर्णप्रतिमामुदञ्जुर्खीदीर्घचतुरस्रपीठेऽधितिष्ठपूजा
 र्थत्वामावाहयामि ॥ तदक्षिणपार्श्वे ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥
 स्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधाधिदेवं ॥
 स्मे ॥ पोषरयीणामरिष्टितनूनास्याद्धानंवाचःसुदिनत्वमहो ॥ चतुर्दशगजारूढं वज्रांकुशधरं शचीपतिनाभरणभूषितं बृह

सत्यधिदेवमिन्द्रमावाहयामि ॥ तद्वामपार्श्वे ॥ ॐ भूर्बृहस्पतिप्रत्यधिदेवं ब्रह्माणमावा ॥ ॐ भुवर्बृह ॥ ॐ स्वर्बृह ॥ भू
 भुवःस्वर्बृह ॥ ब्रह्मणा तइत्यस्य विश्वामित्रो ब्रह्मा त्रिष्टुप् ब्रह्मावाहने विनि ॥ ॐ ब्रह्मणा ते ब्रह्म युजा युनज्मि हरी सखायास
 मंडलुधारिणं कृणानि नवासं संपार्श्वस्थितं हंसं बृहस्पतिप्रत्यधिदेवं ब्रह्माणमावा ॥ ५ ॥ ॥ ततः प्राग्दले ॥ ॐ भूः शुक्रमावा ॥
 ॐ भुवः शुक्र ॥ ॐ स्वः शुक्र ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्रमावा ॥ शुक्रं तइत्यस्य भरद्वाजः शुक्रस्त्रिष्टुप् शुक्रावाहने ॥ ॐ भूः शुक्रं ते अ
 न्यर्धजतं ते अन्यदिक्षुरूपे अहनी धौरिवासि ॥ विश्वा हि माया अर्वसि स्वधा वो भद्रा ते पूषन्निहरा तिरस्तु ॥ भगवन्भार्गवसमस्तदै
 त्यगुरो भार्गवो गोत्रभोजकटदेशे श्वरजतो ज्वलंगकां ते चतुर्भुजदंडकमंडल्वक्षसूत्रवरदानां कितशुक्लं वरमाल्यानुलेपनवज्राभर
 णभूषितसर्वांगसमस्तनीतिशास्त्रनिपुणमतेन मस्तो सन्नद्धशुक्लध्वजपताकोपशोभितेन शुक्लाश्वसहितेन रथेन मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वन्ना
 गच्छेद्राणीं द्राभ्यां सह पूर्वदलमध्ये रजतप्रतिमां प्राञ्जुर्लोपंचकोणपीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वामावा ॥ तदक्षिणपार्श्वे ॥ ॐ भूः शुक्रा
 धिदेवता मिन्द्राणीमावा ॥ ॐ भुवः शुक्र ॥ ॐ स्वः शुक्र ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्र ॥ इन्द्राणीमास्वित्यस्य वृषाकपिरिन्द्राणीपंक्तिः इ
 द्राण्यावा ॥ ॐ इन्द्राणीमा सुनारिषु सभगां मुहर्मश्रवं ॥ नृह्यस्या अपरं च नजुरसार्मरे ते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ संतानमं
 जरीवरदानधरदिभुजां शुक्राधिदेवता मिन्द्राणीमावा ॥ तद्वामपार्श्वे ॥ ॐ भूः शुक्रमत्यधिदेवमिन्द्रमावा ॥ ॐ भुवः शुक्र ॥
 ॐ स्वः शुक्र ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्र ॥ इन्द्रमिद्वेवता तय इत्यस्य मेधातिथिरिन्द्रो बृहती इन्द्रावाहने विनि ॥ ॐ इन्द्रमिद्वेवता तय

[illegible]

॥ ॐ भूर्भुवःस्वोराहुमा० ॥ कथानइत्यस्यवामदेवोराहुर्गायत्री ॥ राह्वावा० ॥ ॐ कथानश्चित्रआर्भुवदूतीसदावृधःसखा ॥
 कयाशचिष्ठयावृता ॥ भगवन्राहोरविसोममर्दनसिंहिकानंदनपैठिनसगोत्रबर्बरदेशेश्वरकालमेघद्युतेव्याघ्रवदनचतुर्भुजखड्ग
 कृष्णसिंहरथवाहनेनमेरुप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छसर्पकालाभ्यांसहपद्मनैर्ऋतदलमध्ये सीसकप्रतिमांदक्षिणामुखीं शूर्पाकारपीठे
 धितिष्ठपूजार्थत्वाभावा० ॥ तदक्षिणपार्श्वे ॥ ॐ भूराह्विदेवान्सर्पानावाहयामि ॥ ॐ भुवोरा० ॥ ॐ स्वोरा० ॥ ॐ भूर्भुवः
 स्वोरा० ॥ आर्यगौःसार्पराज्ञीसर्पागायत्रीसर्पावा० ॥ ॐ आर्यगौःपृश्निक्रमीदर्सदन्मातरंपुरः ॥ पितरंचप्रयन्त्स्वः ॥ अक्षसूत्र
 धरान्कुंडलाकारपुच्छयुक्तानेकभोगांस्त्रिभोगान्भीषणान्नाह्विदेवान्सर्पानावा० ॥ तद्वामपार्श्वे ॥ ॐ भूराहुप्रत्यधिदेवंकाल
 मावा० ॥ ॐ भुवोरा० ॥ ॐ स्वोरा० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वोराहु० ॥ परंमृत्योसंक्षुप्तुकःकालस्त्रिष्टुप् कालावाहने० ॥ ॐ परंमृ
 त्योअनपरेहिंपथांयस्तेस्वइतरोदेवयानात् ॥ चक्षुष्मतेशृण्वतेतेब्रवीमिमानःप्रजांरीरिषोमोतवीरान् ॥ ॐ परंमृ
 भीषणंपाशदंडधरंसर्पवृश्चिकरोमाणंराहुप्रत्यधिदेवंकालमावा० ॥ ८ ॥ ॥ ततःप्रत्यगुत्तरदले ॥ ॐ भूःकेतुमावा० ॥
 ॐ भुवःकेतुमा० ॥ ॐ स्वःकेतु० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःकेतुमा० ॥ केतुकृष्णवन्नित्यस्यमधुच्छंदाःकेतुर्गायत्री केतुमावा० ॥
 ॐ केतुकृष्णवन्नकेतवेपेशोमर्याअपेशसे ॥ समुपार्द्धैरजायथाः ॥ भगवन्केतोकांमरूपजैमिनिगोत्रमध्येदेशेश्वरधूस्रवर्णध्वजाकृ
 तेद्विभुजगदावरदानांकितचित्रांबरमाल्यानुलेपन वैडूर्यमयाभरणभूषितसर्वांगचित्रशक्ते नमस्तेसन्नद्धचित्रध्वजपताकोपशो

भित्तेनचित्रकपोतरथवाहनेनमेरुप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छब्रह्मचित्रगुप्ताभ्यां सहपद्मवायव्यदलमध्ये कांस्यप्रतिमांदक्षिणामुखीं
 ध्वजाकारपीठेधितिष्ठपूजार्थत्वाभावाहयामि ॥ तद्वक्षिणपार्श्वे ॥ ॐ भूःकेत्वधिदेवंब्रह्माणमावा० ॥ ॐ भुवःकेत्वधि० ॥ ॐ
 स्वःकेत्वधि० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःकेत्वधि० ॥ ब्रह्मजज्ञानंवाग्देवोब्रह्मात्रिष्टुप् ब्रह्मावा० ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपुरस्ताद्विसीमृतः
 सुरुचोवेनआवः ॥ सबुध्याउपमाअस्यविष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चविवः ॥ पद्मासनस्थंजटिलंचतुर्मुखमक्षमालासुवपुस्तककर्म
 डलुधरंकृष्णजिनवाससंपार्श्वस्थितहंसकेत्वधिदेवंब्रह्माणमावा० ॥ ॐ भूःकेतुप्रत्यधिदेवंचित्रगुप्तमावा० ॥
 ॐ भुवःके० ॥ ॐ स्वःके० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःके० ॥ सचित्रचित्रमित्यस्यभरद्वाजश्चित्रगुप्तस्त्रिष्टुप् चित्रगुप्तावाहने० ॥ ॐ
 सचित्रचित्रंचित्रयतमस्मेचित्रक्षत्रचित्रतमंवयोधां ॥ चंद्ररविंपुरुषीरवृहंतंचंद्रचंद्राभिर्गुणतेयुवस्व ॥ उदीच्यवेपथरंसौम्यद
 र्शनंलेखनीपत्रोपेतद्विभुजंकेतुप्रत्यधिदेवंचित्रगुप्तमावाहयामि ॥९॥ ॥ अथकर्मसाङ्गुण्यदेवताः ॥ शनेर्वायुप्रदेशे ॥ ॐ भू
 र्विनायकमावाहयामि० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्विना० ॥ आतूनइत्यस्यकाण्वःकुसीदोविनायको
 गायत्री आवाहने० ॥ ॐ आतूनइंद्रक्षुमंतंचित्रंग्राभंसंगृभाय ॥ महाहृस्तीदक्षिणेन ॥ त्रिनेत्रंगजाननंनागयज्ञोपवीतिनंच
 द्रधरंदंताक्षमालापरशुभोदकोपेतंचतुर्भुजंविना० ॥ तद्वक्षिणतः ॥ ॐ भूर्दुर्गामावाह० ॥ ॐ भुवोर्दुर्गा० ॥ ॐ स्वर्दुर्गा० ॥
 ॐ भूर्भुवःस्वर्दुर्गा० ॥ जातवेदसेकश्यपोर्दुर्गात्रिष्टुप् ॥ आवाहने० ॥ ॐ जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिर्दहातिवे
 दः ॥ सनःपर्यदतिर्दुर्गाणिविश्वानावेवसिंधुदुरितात्यग्निः ॥ शक्तिबाणशूलखड्गचक्रचंद्रबिंबखेटकपालपरशुदंकोपेतांदशभुजां

सिंहारूढांदुर्गाख्यदैत्यासुहारिणींदुर्गामा० ॥ तदक्षिणतः ॥ ॐ भूःक्षेत्रपालमावा० ॥ ॐ भुवःक्षेत्रपा० ॥ ॐ स्वःक्षेत्र० ॥
 ॐ भूर्भुवःस्वःक्षेत्रपाल० ॥ क्षेत्रस्यपतिनावामदेवःक्षेत्रपालोनुष्टुप् ॥ आवा० ॥ ॐ क्षेत्रस्यपतिनावयंहितेनैवजयामसि ॥ गाम
 भ्वपोषयित्त्वासनोमृळातीदृशे ॥ इयामवर्णीत्रिलोचनंऊर्ध्वकेशंसुदंष्ट्रभुकुटीकुटिलाननंनूपुरालंकृतांगिसर्पमखलयायुतंसर्पा
 नमतिकुञ्जंभुद्रधंदाबद्धगुल्फावलंबिनृकरोदिमालाधारिणमुरगकौपीनंचंद्रमौलिलिंदक्षिणहस्तैःशूलवेतालखड्गदुंदुभीन्दधानंवा
 ॐ स्वर्वायु० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्वायुमा० ॥ क्राणाशिशुरित्यस्यत्रितोवायुरुष्णिक् आवाहने० ॥ ॐ भूर्वायुमा० ॥ ॐ भुवोवायु० ॥
 स्यदीधितिं ॥ विश्वापरिप्रियाभुवदधद्धिता ॥ धावद्धरिणपृष्ठगतंध्वजवरदानधारिणधूम्रवर्णवायुमावा० ॥ तदक्षि० ॥ ॐ भू
 राकाशमावा० ॥ ॐ भुवआका० ॥ ॐ स्वराकाश० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वराकाश० ॥ आदित्यलस्यवत्सआकाशोगायत्री आवा
 हने० ॥ ॐ आदित्यलस्यरेतसोज्योतिष्पश्यंतिवासुरं ॥ पुरोयद्विध्यतेदिवा ॥ नीलोत्पलाभंनीलांबरधारिणंचंद्राकोपेतंद्विभु
 जंषष्ठमाकाशमा० ॥ तदक्षिणतः ॥ ॐ भूरश्विनावावाहयामि ॥ ॐ भुवोश्विना० ॥ ॐ स्वरश्विना० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वरश्वि
 ना० ॥ अश्विनावतीराहूगणोगोतमोश्विनावुष्णिक् अश्व्यावा० ॥ ॐ अश्विनावतीरस्मदागोमदस्त्राहिरण्यवत् ॥ अर्वाग्रथं
 समनसानिर्यच्छतं ॥ प्रत्येकमौपधिपुस्तकोपेतदक्षिणवामहस्तावन्योन्यसंसक्तदेहावेकस्यदक्षिणपार्श्वेअपरस्वामपार्श्वेरत्नभां
 डवरशुक्लांबरधारिनारीयुग्मोपेतौदेवभिषजावश्विनावावाहयामि ॥६॥ ॥ अथक्रतुसंरक्षकदेवताः ॥ प्राग्दलाग्ने ॥ ॐ भूरि

ॐ इन्द्रो वि
द्रमावा० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वरिंद्र० ॥ इन्द्रो मधुच्छंदा इंद्रगायत्री इंद्रावा० ॥ ॐ इन्द्रो वि
श्वत्स परिहृवामहे जनेभ्यः ॥ अस्मै कर्मस्तु केवलः ॥ स्वर्णवर्ण सहस्राक्षे मे रावत वाहनं वज्रपाणि शची प्रिय मिंद्र मावा० ॥ आग्ने
यदलाग्रे ॥ ॐ भूरग्निमा० ॥ ॐ भुवोग्निमा० ॥ ॐ स्वरग्निमा० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वरग्नि० ॥ अग्निमीळे वैश्वा मित्रो मधुच्छंदा अ
ग्निर्गायत्री अद्यावा हने० ॥ ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमत्विति जै ॥ होतो ररलधा तमे ॥ ॐ भूयसा यु सोम सुनुत य
न्तिर्गायत्री अद्यावा हने० ॥ यमाय सोमं यमोय मोनुष्टुप् यमावा हने० ॥ नैर्कृत्य दला
स्तं शक्त्यन्नस्तुकस्तु वतो मरव्यजनघृत पात्राणि दधानं स्वाहा प्रियं मे पवाहनमग्निमावा० ॥ ॐ यमाय सोमं सुनुत य
ॐ भुवोयम० ॥ ॐ स्वर्यम० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्यममा० ॥ रक्तवर्णं दंडधरं महिपवाहनमिलाप्रियं यममावा० ॥ मोषुणः कण्वो निर्क्र
ॐ भुवोयम० ॥ यमंहयज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः ॥ रक्तवर्णं दंडधरं महिपवाहनमिलाप्रियं यममावा० ॥ मोषुणः कण्वो निर्क्र
मार्य जुहुता हुविः ॥ यमंहयज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः ॥ रक्तवर्णं दंडधरं महिपवाहनमिलाप्रियं यममावा० ॥ मोषुणः कण्वो निर्क्र
अरे ॥ ॐ भूर्निर्क्रतिमावा० ॥ ॐ भुवर्निर्क्रति० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्णवर्णया सह ॥ नीलवर्णखड्गचर्म धरमूर्ध्वके शं
तिर्गायत्री निर्क्रत्यावा० ॥ ॐ मोषुणः परंपरा निर्क्रतिर्दुर्हणावधीत् ॥ पद्भीष्टतृष्ण्या सह ॥ ॐ भुवर्णवर्ण० ॥ ॐ भूर्भुवःस्व
नरवाहनं कालिका प्रियं निर्क्रतिमा० ॥ पश्चिमदलाग्रे ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्णवर्णभूषणं वरणमावाहयामि ॥ वायव्यदलाग्रे ॥ ॐ तर्ववा
र्वरण० ॥ उदुत्तममाजी गतिः शुनः शेपो वरणो गायत्री वरणवर्णभूषणं वरणमावाहयामि ॥ वायव्यदलाग्रे ॥ ॐ तर्ववा
धमानि जीवसे ॥ रक्तवर्णनागपाशधरं मकरवाहनं पद्भिनी प्रियं सुवर्णभूषणं वरणमावाहयामि ॥ वायव्यदलाग्रे ॥ ॐ तर्ववा
युमावा० ॥ ॐ भुवर्वायु० ॥ ॐ स्वर्वायु० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्वायु० ॥

यवृतस्यतेत्वष्टुर्जामातरश्नुत ॥ अवांस्यावृणीमहे ॥ इयामवर्णहेमदंडधरंकृष्णमृगवाहनंजगत्प्राणरूपंमोहिनीप्रियंवायुमा० ॥
 उत्तरदलाग्रे ॥ ॐ भूःकुबेरमावा० ॥ ॐ भुवःकु० ॥ ॐ स्वःकु० ॥ भूर्भुवःस्वःकुबेरमा० ॥ त्वंनःसोमराहूगणोगोतमःकुबे
 णिमश्ववाहनंचित्रिणीप्रियंकुबेरमा० ॥ ऐशानदलाग्रे ॥ ॐ भूरित्यादि ॥ कद्रुद्रायेत्यस्यकण्वरुद्रोगायत्री ईशानावा० ॥
 ॐ कद्रुद्रायप्रचेतसेमीळहुष्टमायुतव्यसे ॥ वोचेमशंतमंहदे ॥ शुद्धस्फटिकवर्णवरदाभयशूलाक्षसूत्रधरंवृषभवाहनंगौरीप्रि
 यमीशानमावाहयामि ॥ ८ ॥ एवमेकचत्वारिंशदेवताआवाह्य ॥ तत्त्वायाम्याजीगर्तिःशुनःशेषःसकृन्निमोवैश्वामित्रोवरु
 णस्त्रिष्टुप् ॥ वरुणावाहनेवि० ॥ ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणावंदमानस्तदाशस्तेयजमानोह्रुविभिः ॥ अहैळमानोवरुणेह्रुबोध्युरु
 शंसमानआयुःप्रमोषीः ॥ इतिकलशेचवरुणमावाह्यपूजयेत् ॥ तत्रचंदनादिषुग्रहभेदेनव्यवस्था ॥ चंदनोमलयजोदेवदा
 रुःकुंकुमंमनःशिलाशंखपिष्टंतिळपिष्टंकेतकीरजःकस्तूरीतिनवानुलेपनानि मलयजमेववा ॥ रक्तपद्मंकुमुदंरक्तकरवीरंपाट
 लंचंपकंकुंदंइंदीवरंकृष्णधत्तूरंतच्चित्रवर्णमितिनवपुष्पाणि सर्वेषांमल्लिकैववा ॥ ग्रहानपिपुष्पांजलिप्रयोगेणावाहनमंत्रैरावा
 ह्यनमोतैर्नामभिःक्रमेणपुष्पांतानुपचारानर्पयेत् ॥ नामभिःआदित्यायनमःइत्येवंरूपैः ॥ एवंग्रहपीठगतसर्वदेवतानांपुष्पां
 तपूजांकृत्वाकुंडेस्थंडिलेवाआचार्योर्निप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् ॥ अथान्वाधानादिप्रयोगः ॥ ऋत्विग्भिरन्वारब्धःसमिद्धयमा
 दायदेशकालौसंकीर्त्यक्रियमाणेग्रहयज्ञहोमेदेवतापरिग्रहार्थमित्यादिचक्षुषीआज्येनेत्यंतमुक्त्वाअन्नप्रधानं ॥ आदित्यंप्रत्ये

कंशतसंख्याभिरकसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः अग्निं रुद्रं च प्रत्येकं दशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः १ सोमं प्रत्येकं शतसंख्याभिः पला
 शसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः अपलमां च प्रत्येकं दशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः २ अंगारकं प्रत्येकं शतसंख्याभिः खादिरसमिच्चर्वाज्या
 हुतिभिः भूमिस्कंदं च प्रत्येकं दशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः ३ बुधं प्रत्येकं शतसंख्याभिरश्वत्थसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः इंद्रं ब्रह्माणं च प्रत्येकं दशसं
 च प्रत्येकं दशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः ४ बृहस्पतिं प्रत्येकं शतसंख्याभिरश्वत्थसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः इंद्राणीमिंद्रं च प्रत्येकं दशसंख्याभिस्तदाहुति
 ख्याभिस्तदाहुतिभिः ५ शुक्रं प्रत्येकं शतसंख्याभिरौदुंबरसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः इंद्राणीमिंद्रं च प्रत्येकं दशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः ७ राहुं प्रत्ये
 भिः ६ शनिं प्रत्येकं शतसंख्याभिः शमीसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः प्रजापतियमं च प्रत्येकं दशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः ८ केतुं प्रत्येकं शतसंख्याभिः कुश
 कंशतसंख्याभिर्दूर्वासमिच्चर्वाज्याहुतिभिः सर्पान्कालं च प्रत्येकं दशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः ९ विनायकं दुर्गाक्षेत्रपालं वायुमाकाशमश्विनौ इं
 समिच्चर्वाज्याहुतिभिः ब्रह्माणं चित्रगुप्तं च प्रत्येकं दशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः ॥ अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं चैकै
 द्रमग्निं यमं निऋतिं वरुणं वायुं कुबेरं इंशानं च प्रत्येकं पंचसंख्याभिः पलाशसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः ॥ अपेणस्विष्टकृतमित्या
 कयात्रीहितिलाहुत्या सूर्यत्रयोदशवारमाज्येन अग्निं चतुस्त्रिंशद्वारमाज्येन रुद्रं द्वात्रिंशद्वारमाज्येन शेषेणस्विष्टकृतमित्या
 दि ॥ पात्रासादनकाले बह्वीनां च रुद्रासनस्थालीनामाज्यस्थालीनां सुवाणां च बहूनामासादनं कार्यं युगपदनेककर्तृकचर्वाज्यहो
 मनिर्वाहाय ॥ आज्यसंस्कारकाले लोकसिद्धान्नतिलव्रीहिभिः सहाज्यस्य त्रिः पर्यग्निं करणं ॥ सुवाणांसं मार्गोतेदव्याः सं मार्गः ॥ त
 तोन्नंपान्नांतरेपृथक्कृत्वाम्नावधिश्रित्य सुवेणाभिघार्योदगुद्रास्याज्याद्दक्षिणतोव्यवहितदेशे बर्हिष्यासाद्य प्रत्यभिघार्यं तदुत्तरतो

ब्रीहितिलानासाद्यत्विगन्वारब्धइधमाधानाद्याज्यभागांतंकुर्यात् ॥ ततोयजमानस्त्यागंकुर्यात् ॥ सयथा ॥ शतसंख्याअर्कादि
 जातीयोःसमिधःशतसंख्याहुतिपर्यासमाज्यं च आदित्यायसोमायांगारकायबुधायबृहस्पतयेशुक्रा
 यशनैश्चरायरोहवेकेतवेचनमम ॥ दशसंख्याअर्कादिजातीयाःसमिधःदशसंख्याहुतिपर्यासमाज्यं च आदित्यायसोमायांगारकायबुधायबृहस्पतयेशुक्रा
 ज्यं च अमयेरुद्रायाज्योगैर्यैपृथिव्यैस्कंदायविष्णवेपुरुषायेंद्रायब्रह्मणेइंद्राण्यैइंद्रायप्रजापतयेयमायसर्पेभ्यःकालायब्रह्मणे
 चित्रगुप्तायचनमम ॥ पंचसंख्याःपलाशसमिधःपंचसंख्याहुतिपर्यासमाज्यं च आदित्यायसोमायांगारकायबुधायबृहस्पतयेशुक्रा
 क्षेत्रपालायवायवेआकाशायअश्विभ्यां इंद्रायामयेयमायनिर्ऋतयेवरुणायवायवेकुबेरायईशानायचनमम ॥ एकैकाहुतिप
 र्यासास्तिलव्रीहयःअमयेवायवेसूर्यायप्रजापतयेचनमम ॥ त्रयोदशाहुतिपर्यासमाज्यं सूर्यायनमम ॥ एकैकाहुतिप
 माज्यममयेनमम ॥ द्वात्रिंशदाहुतिपर्यासमाज्यं रुद्रायनमम ॥ ततोष्टत्विक्सहिताचार्यपक्षेआचार्यआदित्यायजुहुयादित
 रेइतरग्रहेभ्यः ॥ ऋत्विक्कतुष्टयपक्षेद्वाभ्यांद्वाभ्यांद्वाभ्यांद्वाभ्यांएकैकोजुहुयात् ॥ तत्रद्वयं गुलादूर्ध्वमध्यमानामिकांगुष्ठैर्मूलभागेस
 मिधमादायदधिमध्वाज्याक्तांजुहुयात् ॥ पाणिनाग्राससमंचरं ॥ आज्यं सुवेणतदभावेऽश्वत्थादियज्ञियपर्णेनवा ॥ सर्वेप्राज्जु
 खाउदज्जुखावाहृदयनिहितोर्ध्ववामपाणयोजुहुयुः ॥ आचार्यःप्रभूततिलव्रीहीन्यस्तसमस्तव्याहृतिभिर्हुत्वाज्यहोमंकुर्यात् ॥
 तत्रमंत्राःसूक्तानिचलिर्यंते ॥ तत्रप्रत्यंचस्वाहांतैर्होमःकार्यः ॥ सूर्यो न इति पंचर्चस्य सूक्तस्य सौर्यश्चक्षुःसूर्यो गायत्री ॥ उदुत्य
 मिति मंत्रस्य काण्वःप्रस्कण्वःसूर्यो गायत्री ॥ नमो मित्रस्येति मंत्रस्य सौर्यो भितपाःसूर्यो जगती ॥ चित्रं देवानामिति मंत्रस्यांगिर

सःकुत्सःसूर्यस्त्रिष्टुप् ॥ उद्धेतिषुभगइतिपंचस्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठःसूर्यस्त्रिष्टुप् ॥ त्वमग्नेप्रथमइत्यष्टादशर्चस्यसूक्तस्यांगिरसो
 हिरण्यस्तूपोभिर्जगती अंत्याष्टमोषोळश्यस्त्रिष्टुभः ॥ त्वमग्नेद्युभिरितिषोळशर्चस्यसूक्तस्यगृत्समदोग्निर्जगती अंत्येन्नि
 त्रस्यसूक्तस्यघौरःकण्वोरुद्रोगायत्री तृतीयाभैत्रावरुणी ॥ इमारुद्रायतवसइत्येकादशर्चस्यसूक्तस्यकुत्सोरुद्रोजगती अंत्येन्नि
 ष्टुभौ ॥ आतेपितर्मरुतामितिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यगृत्समदोर्गुद्रस्त्रिष्टुप् ॥ सर्वत्रग्रहमखांगाज्यहोमेविनियोगः ॥ ॐ सूर्यो नोदि
 वसातुवातोऽअंतरिक्षात् ॥ अग्निर्नःपाथिवेभ्यःस्वाहा ॥ १॥ ॐ जोषासवितुर्यस्यतेहरःश्रुतंसर्वोऽअहति ॥ पाहिनोदिद्युतःपते
 त्याःस्वाहा ॥ २॥ ॐ चक्षुर्नोदिवःसविताचक्षुर्नऽउतपर्वतः ॥ चक्षुर्धोतादधातुनःस्वाहा ॥ ५॥ ॐ उदुत्यंजातवेदस
 नूभ्यः ॥ संचेदंविचपश्येमस्वाहा ॥ ६॥ ॐ नमोमित्रस्यवरुणस्यचक्षुर्नऽमातुपणां ॥ चक्षुर्मित्रस्यवरुणस्यदेवश्चमैवयः
 देवंवहंतिकेतवः ॥ दृशेविश्वायसूर्यस्वाहा ॥ ७॥ ॐ चित्रं देवानांमुदगादनीकंचक्षुर्मित्रस्यवरुणस्यदेवतेशोवहतिधू
 तवैदिवस्पुत्रायसूर्योयशंसतस्वाहा ॥ ८॥ ॐ उद्धेतिषुभगोविश्वचक्षाःसाधारणःसूर्योमानुपणां ॥ समानंचक्रं पर्योविचृत्सन्न्यदेतशोवहतिधू
 धैआत्माजगत्स्तुषश्चस्वाहा ॥ ९॥ ॐ उद्धेतिप्रसवीताजनानांमहान्केतुरर्णवःसूर्यस्य ॥ समानंचक्रं पर्योविचृत्सन्न्यदेतशोवहतिधू
 समविंध्युक्तमोसिस्वाहा ॥ १०॥ ॐ उद्धेतिप्रसवीताजनानांमहान्केतुरर्णवःसूर्यस्य ॥ समानंचक्रं पर्योविचृत्सन्न्यदेतशोवहतिधू
 तवैदिवस्पुत्रायसूर्योयशंसतस्वाहा ॥ ११॥ ॐ उद्धेतिप्रसवीताजनानांमहान्केतुरर्णवःसूर्यस्य ॥ समानंचक्रं पर्योविचृत्सन्न्यदेतशोवहतिधू

१ बहुत्र उद्धेतीतिसार्धचतसृणामितिदृश्यते सर्वानुक्रमेण्येतामासार्धचतसृणामेवसौर्यैर्वत्वेनग्रहणमस्ति तथासत्येकोनाशीतिमन्त्रपूतेयत्राचक्रुरित्ये
 तत्सूक्तातिमन्त्रगर्भेनहोमापत्तिः स्यादिति कृत्वा उद्धेतिषुभगः पचर्वाभिर्ऋग्भिर्धृताहुतीः इतिकौस्तुभधृतपारिजातवाक्येनपचानामित्येवयुक्तं ॥

ॐ विष्णवे नमः ॥ १० ॥ ॐ विश्वामित्राय नमः ॥ ११ ॥ ॐ विश्वामित्राय नमः ॥ १२ ॥ ॐ विश्वामित्राय नमः ॥ १३ ॥ ॐ विश्वामित्राय नमः ॥ १४ ॥ ॐ विश्वामित्राय नमः ॥ १५ ॥ ॐ विश्वामित्राय नमः ॥ १६ ॥ ॐ विश्वामित्राय नमः ॥ १७ ॥ ॐ विश्वामित्राय नमः ॥ १८ ॥ ॐ विश्वामित्राय नमः ॥ १९ ॥ ॐ विश्वामित्राय नमः ॥ २० ॥ ॐ विश्वामित्राय नमः ॥ २१ ॥ ॐ विश्वामित्राय नमः ॥ २२ ॥ ॐ विश्वामित्राय नमः ॥

॥६६॥
महयज्ञः

1138311

अं ॥ संत्वारार्यःशुतिनःसंसहृस्त्रिणःसुर्वारयंतित्रतुपामदाभ्यस्वाहा ॥ २३ ॥ ॐ त्वामग्नेप्रथममायुमायवेदेवाऽअकृण्वन्नहुप
 स्यविश्रपतिं ॥ इळामकृण्वन्मनुषस्यशासनीपितुर्गत्पुत्रोमर्मकस्यजार्थतेस्वाहा ॥ २४ ॥ ॐ त्वंनोअग्नेतवेदवपायुभिर्मघोनोर
 क्षतन्वश्चयंच ॥ त्रातातोकस्यतनेगेगवामस्यानिमेपंरक्षमाणस्तवव्रतेस्वाहा ॥ २५ ॥ ॐ त्वमग्नेयज्यवपायुरंतरोनिपंगायेचतु
 रक्षइध्यसे ॥ योरातहव्योवृकायुधार्थसेकीरेश्चिन्मंत्रमनसावनोपितंस्वाहा ॥ २६ ॥ ॐ त्वमग्नेऽउरुशंसायवाघतेस्पाह्येयद्रेक्कणः
 परमंवुनोपितत ॥ आग्रस्यचित्रमतिरुच्यसेपिताप्रपाकंशास्सिप्रदिशोविदुष्टरःस्वाहा ॥ २७ ॥ ॐ इमामग्नेशुराणि
 वंमवस्यतंपरिपासिविधतः ॥ स्वादुक्षद्वायोधसतौस्योनकृज्जीवयाजंयजेतेसोपमादिवःस्वाहा ॥ २८ ॥ ॐ मनुष्वदग्नेऽअं
 मीमृपोनइममध्वोनंयमगामदूरात् ॥ आपिःपिताप्रमतिःसोम्यानांभूमिरस्यपिकृन्मत्योनांस्वाहा ॥ २९ ॥ ॐ एतेना
 गिरस्वदेगिरोययातिवत्सर्दनेपूर्ववच्छुचे ॥ अच्छयाह्यावह्वाद्वैव्यंजनमासादयबृहिषियक्षिचप्रियंस्वाहा ॥ ३० ॥ ॐ त्वमग्नेऽअस्मान्तसंनःसृजसुमत्यावाजवत्यास्वाहा ॥ ३१ ॥
 नेत्रह्मेणावावृधस्वशक्तीवायत्तैचकृमाविदावा ॥ उत्तप्रणैज्यभिवस्योऽअस्यस्त्वंनृणांनृपतेजायसेशुचिःस्वाहा ॥ ३२ ॥
 ॐ त्वमग्नेद्युभिस्त्वमाशुशुक्षिस्त्वमन्नहृतायतः ॥ त्वंब्रह्मारेयिविद्वह्मणस्पतेतवविधर्तःसचसेपुरंध्यांस्वाहा ॥ ३४ ॥
 ॐ तवाग्नेहोत्रंतवपोन्नमृत्वियंतवनेष्टृत्वमुनिहृतायतः ॥ त्वंब्रह्मारेयिविद्वह्मणस्पतेतवविधर्तःसचसेपुरंध्यांस्वाहा ॥ ३५ ॥
 ॐ त्वमग्नेऽइंद्रेवृषभःसतामसित्वंविष्णुरुगायोनेमस्यः ॥ त्वंब्रह्मारेयिविद्वह्मणस्पतेतवविधर्तःसचसेपुरंध्यांस्वाहा ॥ ३५ ॥
 ॐ त्वमग्नेराजवरुणोधृतव्रतस्त्वमित्रोभवसिदुस्मईह्यः ॥ त्वमर्थमासत्पतिर्यस्यशंभुजंत्वमंशोविदधेदेवभाजशुःस्वाहा ॥ ३५ ॥

ॐ त्वमग्नेत्वष्टाविधुतेसुवीर्यतवन्नावोमित्रमहःसजात्यं ॥ त्वमाहुहेमाररिषेस्वद्व्यं त्वं नरोशर्धोऽसि पुरुत्रसुःस्वाहा ॥ ३६ ॥
 ॐ त्वमग्नेरुद्रोऽसुरोमहोदिवस्त्वं शर्धोमारुतं पृक्षऽईशिषे ॥ त्वं वा तैरुणैर्योसि शंगयस्त्वं पूषा विधुतः पासिनुत्मना स्वाहा ॥ ३७ ॥
 ॐ त्वमग्नेद्रविणोदाऽअरं कृते त्वं देवः सवितारत्नधाऽअसि ॥ त्वं भगो नृपते वस्व ईशिषे त्वं पायुर्देमयस्ते विधत्स्वाहा ॥ ३८ ॥ ॐ
 त्वमग्नेदमऽआविशपतिं विशस्त्वां राजानं सुविदत्रमृजते ॥ त्वं विश्वानि स्वनीकपत्यसे त्वं सहस्राणि शतादशप्रतिस्वाहा ॥ ३९ ॥
 ॥ ४१ ॥ ॐ त्वमग्नेस्यारस्त्वां आत्रायशम्योतनूरुचं ॥ त्वं पुत्रो भवसियस्ते विधत्स्वं सखा सुशेवः पास्य धृषुः स्वाहा ॥ ४० ॥
 ॥ ४२ ॥ ॐ त्वमग्नेऽदिर्दिदेव द्वाशुषे त्वं होत्राभारती वर्धसे गिरा ॥ त्वमिळाशुतहिमासि दक्षसे त्वं वृत्रहावसुपते सरस्वति स्वा
 स्वाहा ॥ ४३ ॥ ॐ त्वमग्नेसुभृत उत्तमं वयस्त्वर्षा हवर्णऽआसंहशिथ्र्यः ॥ त्वं वार्जः प्रतरणो बृहन्नसित्वं रयिर्बहुलो विश्वतस्पथुः
 रदं त्याहुतं स्वाहा ॥ ४४ ॥ ॐ त्वेऽअग्ने विश्वेऽअमृता सोऽअद्रुहऽआसां देवा हविरदं त्याहुतं ॥ त्वयामतांसिः स्वदंतऽआसूतिं
 त्वंगर्भो वीरुधौ जज्ञिषे शुचिः स्वाहा ॥ ४५ ॥ ॐ त्वं तान्त्संचप्रतिचासिमज्मनाग्ने सुजातप्रचदे वरिच्यसे ॥ पृक्षो यदत्रमहिना
 विते मुवदनुद्यावापृथिवी रोदसी पुभे स्वाहा ॥ ४६ ॥ ॐ ये स्तोतृभ्यो गोअग्रामर्धपेशसमग्नेरातिमुपसृजंति सूर्यः ॥ अस्मान्
 च तौश्च महिनेषिवस्यऽआबृहद्वदेमविदथे सुवीराः स्वाहा ॥ ४७ ॥ ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळुष्टमायतव्यसे ॥ वोचेमशंतमं

हृदेस्वाहा ॥ ४८ ॥ ॐ यथानोऽदितिःकरस्यश्वेनृभ्योयथागवे ॥ यथातोकार्यरुद्रियंस्वाहा ॥ ४९ ॥ ॐ यथानोमित्रोवरु
 णोयथारुद्रश्चिकेतति ॥ यथाविश्वेश्वसजोषसःस्वाहा ॥ ५० ॥ ॐ गाथपतिमेघपतिरुद्रंजलाषभेपजं ॥ तच्छयोःसन्नमीमहेस्वा
 हा ॥ ५१ ॥ ॐ यःशुक्रइवसूर्योहिरण्यमिवरोचते ॥ श्रेष्ठेदिवानांवसुःस्वाहा ॥ ५२ ॥ ॐ शनःकरत्यवतेसुगमेपायमेभ्यं ॥
 नृभ्योनारिभ्योगवेस्वाहा ॥ ५३ ॥ ॐ इमारुद्रायतवसेकपुदिनेक्षयद्वीरायप्रभेरामहेमतीः ॥ यथाशमसद्विपदुचतुष्पदेविश्वे
 पदंग्रामेऽस्मिन्ननातुरंस्वाहा ॥ ५४ ॥ ॐ मळानोरुद्रोतनोमयस्कृधिक्षयद्वीरायनमसाविधेमते ॥ यच्छंचयोश्चमनुरायेजे
 पितातदश्यामतवरुद्रप्रणीतिषुस्वाहा ॥ ५५ ॥ ॐ अश्यामतेसुमतिदेवयज्ययाक्षयद्वीरस्यतवरुद्रमीदुः ॥ आरेऽअस्म
 अस्माकमाचरारिष्टवीराजुहवामतेहविःस्वाहा ॥ ५६ ॥ ॐ द्विवोवराहमरुषंकपुदिनेत्वेपंरूपंनमसानिह्वयामहे ॥ हस्ते
 द्वेव्यंहेळोऽअस्यतुसुमतिमिद्वयमस्यावृणीमहेस्वाहा ॥ ५७ ॥ ॐ इदं पित्रेमरुतामुच्यतेवचःस्वादोःस्वादीयोरुद्रायवर्धनं ॥
 बिभ्रन्नेषजावार्योणिशमवमच्छिर्दिस्मभ्यंयंसत्स्वाहा ॥ ५८ ॥ ॐ मानोमहातमृतमानोऽअभंकमानऽउक्षतमृतमानऽ
 रास्वाचनोऽअमृतमर्तुभोजनंत्मानेतोकायतनयायमृळस्वाहा ॥ ५९ ॥ ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआगौमानो
 उक्षितं ॥ मानोवधीःपितरंमोतमातंमानःप्रियास्तुन्वोरुद्ररीरिषःस्वाहा ॥ ६० ॥ ॐ उपतेस्तोमान्पशुपा
 गोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः ॥ वीरान्मानोरुद्रभामितोवधीहृविष्मतःसदुमित्वाहवामहेस्वाहा ॥ ६१ ॥ ॐ आरेतेगोघ्नमुतपूरु
 इवाकर्ंरास्वापितमरुतांसुन्नमस्मे ॥ भद्राहितेसुमतिमृळयत्तमाथावयमवइत्तेवृणीमहेस्वाहा ॥ ६२ ॥ ॐ

पुमंक्षयद्वीरसुन्नमस्मेतेऽस्तु ॥ मूलाचनोऽअधिचब्रूहिदेवाधाचनःशर्मयच्छद्विबर्हाःस्वाहा ॥ ६३ ॥ ॐ अवोचामुनमोऽ
 अस्माऽअवस्यवःशृणोतुनोहवैरुद्रोमरुत्वान् ॥ तन्नोमित्रोवरुणोमामहतामर्दतिःसिंधुःपृथिवीऽउतद्यौःस्वाहा ॥ ६४ ॥ ॐ
 त्वादत्तेभीरुद्रशतमेभिःशतंहिमाऽअशीयभेषजैभिः ॥ व्यश्मद्वेषोवितुरव्यहोव्यमीवाश्चातयस्वाविपूचीःस्वाहा ॥ ६५ ॥ ॐ
 ॐ श्रेष्ठोजातस्यरुद्रश्रियासितवस्तमस्तवसांवज्रबाहो ॥ पर्षिणःपारमंहसःस्वस्तिविश्वाऽअभीतीरपसोयुयोधिस्वाहा ॥ ६६ ॥ ॐ
 ॥ ६८ ॥ ॐ हवीमभिहवतेयोहविर्भिरवस्तोमैभीरुद्रादिषीय ॥ ऋदूदरःसुहवोमानोऽअस्यैबभ्रुःसुशिप्रोरीरधन्मनायैस्वाहा
 ॥ ६९ ॥ ॐ उन्माममंदवृषभोमरुत्वान्त्वक्षीयसावयसानाधमानं ॥ घृणीवच्छायामरपाऽअशीयावैवासेयरुद्रस्यसुन्नस्वाहा
 ॥ ७० ॥ ॐ कर्ष्यतेरुद्रमृळयाकुहस्तोयोऽअस्तिभेषजोजलाषः ॥ अपभर्तारपसोदैव्यस्याभीनुमावृषभचक्षमीथाः
 स्वाहा ॥ ७१ ॥ ॐ प्रबभ्रवैवृषभार्थश्चितीचेमहोमर्हीसुष्टुतिमीरयामि ॥ नमस्याकल्मलीकिनंनमोभिर्गृणीमासित्वेष
 रुद्रस्यनामस्वाहा ॥ ७२ ॥ ॐ स्थिरेभिरंगैःपुरुषैऽउग्रोबभ्रुःशुक्रैभिःपिपिशेहिरण्यैः ॥ ईशानादस्यभुवनस्यभूरेन
 वाऽउग्रोषद्रुद्रादस्यैस्वाहा ॥ ७३ ॥ ॐ अहन्विभर्षिसार्यकानिधन्वाहन्निष्कंयजतंविश्वरूपं ॥ अहन्निदंदयसेविश्वम
 भ्वंनवाऽओजीयोरुद्रत्वदस्तिस्वाहा ॥ ७४ ॥ ॐ स्तुहिश्रुतंगतंसदुवानंमृगंभीममुपहृनुमुग्रं ॥ मूलाजरित्रेरुद्रस्तवा

नोन्यतैऽअस्मन्निर्वपंतुसेनाःस्वाहा ॥ ७५ ॥ ॐ कुमारश्चित्पितरंवंदमानंप्रतिनानामरुद्रोपयंत ॥ भूरैर्द्रातारंसत्पतिंगृणीपे
 स्तुतस्त्वं भेषजारास्यस्मेस्वाहा ॥ ७६ ॥ ॐ यावो भेषजामरुतः शुचीन्याशंतमावृषणोयामयोभु ॥ यानिमनुरवृणीतापितान्
 स्ताशंचयोश्च रुद्रस्यवद्भिस्वाहा ॥ ७७ ॥ ॐ एवाबभ्रौवृषभचेकितानुयथादेवनहृणीपेनहांसि ॥ हवनश्रुन्नोरुद्रेहबोधिबृहद्व
 ब्बमीढूस्तोकायतनेयायमृळस्वाहा ॥ ७८ ॥ ॐ एतैरेकोनाशीतिमंत्रैः प्रतिमंत्रं स्वाहांतैराज्यं हुत्वाग्रहवेद्यामाराधितैकचत्वारिंशद्देवता
 देमविदधे सुवीराः स्वाहा ॥ ७९ ॥ एतैरेकोनाशीतिमंत्रैः प्रतिमंत्रं स्वार्धपदीपनैवेद्येष्टुसाधारणो वि
 भ्योवरुणाय च घंटाशब्देन धूपदीपनैवेद्यं हुत्वाग्रहवेद्यामाराधितैकचत्वारिंशद्देवता
 धिः ॥ तत्र सूर्याय भद्रमुस्ताख्यकंदधूपः ॥ सोमाय मयूरशिखा ॥ भौमाय दशांगः ॥ बुधाय राखाख्यः सर्जरसः ॥ गुरवे बिल्व
 फलं ॥ शुक्राय चीडाख्यः श्रीवासः ॥ शिष्टेभ्यस्त्रिभ्यः क्रमेण कृष्णागरुजटामांसीमधूकानीति धूपाः ॥ क्षीरमोदनं च पृथ
 लेन वा सर्वेषां ॥ पाष्टिकमादित्याय ॥ सोमाय पायसं ॥ भौमाय पयोमिश्रौदनः ॥ बुधाय गुडमिश्रितः ॥ इति नैवे
 गुरवे ॥ भृगवे दध्योदनः ॥ शनये कृसरः ॥ मांसस्थानीयमापविकारमिश्रितौदनोराहवे ॥ चित्रान्नं केतवे ॥ अद्य पूर्वो ॥
 द्यानि ॥ ततः प्रसीदंतु भवंत इति तान्संप्राथ्य ऋत्विगन्वारब्धश्चर्वोज्यतिलव्रीहिशेषेण स्विष्टकृतं हुत्वा इध्मसन्नहनीरज्जुमग्नौ
 प्रास्य प्रायश्चित्तादिहोमांतं समाप्य सामात्यजमानान्वारब्ध आचार्यो द्वादशगृहीतेनाज्येन पूर्णाहुतिं जुहुयात् ॥ अद्य पूर्वो ॥
 सर्वकर्मप्रपूरिणी भद्रद्रव्यदांपूर्णाहुतिमाज्येन होष्ये इति संकल्प्य सुवेणाज्यं गृहीत्वा सुचंसमबिलांपूरयित्वा तस्यां सुवमूर्ध्वविलं

● 成 ● 果

1158311

निधाय पुनरधो बिलं निक्षिप्य सुवाग्नेकुसुमाक्षतं निधाय सव्यपाणिना सुक्लृप्तमूले धृत्या दक्षिणपाणिना सुक्लृप्तवंशखमुद्रया गृहीत्वा तिष्ठन्समपादकजुकायः सुवाग्रन्यस्तदृष्टिः प्रसन्नात्मा ॥ पुनस्त्वान्निर्वसुरुद्रादित्यास्त्रिष्टुप् ॥ पूर्णादवि वि श्वे देवाः शतक्रतुरनुष्टुप् ॥ मूर्धानामग्ने सप्तवानग्निर्जगती ॥ धाम ते गौतमो वामदेव आपोजगती ॥ पूर्णाहुतौ विनियोगः ॥ ॐ समुद्रादूर्ध्वमधुर्मो उदारदुपां शुनासर्ममृतत्वमानद् ॥ घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानां ममृतस्य नाभिः ॥ व्यं नाम प्रब्रवामाघृतस्यास्मिन्यज्ञेधारयामा न त्रिधा बहुर्द्धेष भोरौ रवीति महो देवो मर्त्यै आविवेश ॥ १ ॥ ॐ मूर्धानदि वो अरतिं पृथिव्या वै श्वानरमत आज्ञातमग्निं ॥ क विस्मन्नाजमतिं थिं जनांना मासन्ना पात्रं जनयंत देवाः ॥ १ ॥ ॐ पुनस्त्वादित्यारुद्रावसंवः समिधतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ युज्ञैः ॥ घृते नृत्वं तु न्वो वर्धय स्वसत्याः संतु यजमानस्य कामाः ॥ १ ॥ ॐ पूर्णादवि परापतु पूर्णा पुनरापत ॥ वस्ते व विक्रीणावहा इषमूर्ज शतक्रतो ॥ १ ॥ ॐ सप्ततै अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त क्रपयः सप्त धार्म प्रियाणि ॥ सप्त होत्राः सप्त धात्वा यजंति सप्त यो नी रापृण स्वाघृतेन ॥ १ ॥ ॐ धार्मते विश्वं भुवन्नममधि श्रितमंतः समुद्रे हृद्यं तरायुषि ॥ अपा अग्ने दं नमम ॥ ॐ पूर्णा हुति मुत्तमां जुहोति ॥ सर्ववै पूर्णा हुतिः ॥ सर्वमेवामोति ॥ अथो इयं वै पूर्णा हुतिः ॥ अ

गृह्यसूत्रः
॥९६॥

1128811

स्यामेवप्रतिष्ठति ॥ विज्योतिषेत्यवृशोजारोग्निस्त्रिष्टुप् ॥ संस्त्रावहोमेविनियोगः ॥ ॐ विज्योतिषाबृहताभात्यग्नि
 राविर्विश्वानिकृणुतेमहित्वा ॥ प्रादेवीर्मायाःसहतेदुरेवाःशिशीतेश्रृंगेरक्षसेविनिक्षेस्वाहा ॥ अग्नयइदंनमम ॥ अथवसो ॥
 धीरा ॥ ततःपूर्णपात्रनिनयनसंस्थानजपेनोपस्थानपरिस्तरणविसर्जनपरिसमूहनपर्युक्षणाग्न्यर्चनपात्रोत्सर्जनंतंकुर्यात् ॥
 अथमंडपईशानेग्रहवेद्याःप्रागुदीच्यांशुचौदेशेसंमृष्टेपंचरंगैः स्वस्तिकंकृत्वाचतुष्पदंदीर्घचतुरस्रंसोत्तरच्छदंपीठंनिधायतत्रोद
 गग्रानमूलान्हरितदर्भानास्तीर्थं तत्रयजमानंपरिहितनववस्त्रंप्राङ्मुखमुपवेश्याचार्यऋत्विग्भिःसहमंगलवाद्यैरभिषेककुंभोदकं
 पात्रांतरेआदाय प्रत्यङ्मुखस्तिष्ठन्सपलाशयौदुंबर्यार्द्रशाखयासहिरण्यपवित्रयासकुशदूर्वापल्लवयाहस्तमंतर्धायोदकपृषङ्गिर
 ङ्गिलगाभिर्वारुणीभिःपावमानीभिरन्याभिश्चशांतिपवित्रालिंगाभिर्ग्रहाभिषेकमंत्रैः(सुरास्त्वामिति) इमाआपःशिवतमाइतितृ
 चेनदेवस्यत्वेतिचयजुषाभूमुत्रःस्वरितिब्रूयाहतिभिरभिषिंचेत् ॥ तेचमंत्राः ॥ आपोहिष्ठेतितिसृणामाजीगतिःशुनःशेषःसकृन्निमोवैश्वामित्रो
 गायत्री ॥ अभिषेकेविनियोगः ॥ ॐ तत्त्वायामीतितिसृणामाजीगतिःशुनःशेषःसकृन्निमोवैश्वामित्रो
 देवरातोवरुणस्त्रिष्टुप् ॥ अभिषेके ॥ ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणावंदमानस्तदाशोस्तेयजमानोहृविर्भिः ॥ अहंमनोवरुणेहवो
 ध्युरुशंसमानआयुःप्रमोषीः ॥ तदिन्नक्तंतदिवामह्यमाहुस्तदुयंकेतोहृदआविंचेत् ॥ शुनःशेषोयमहृद्रुभीतःसोअस्मान्राजावरु
 णोमुमोक्तु ॥ शुनःशेषोह्यहृद्रुभीतस्त्रिष्वोदित्यंहृपेदेषुबुद्धः ॥ अवैनंराजावरुणःससृज्याद्विद्धोअदब्धोविमुमोक्तुपाशान्
 ॥ ३ ॥ स्वादिष्टयेतितिसृणावैश्वामित्रोमधुच्छंदाःपवमानसोमोगायत्री ॥ अभिषेके ॥ ॐ स्वादिष्टया ॥ ३ ॥ शंनइ

द्राग्नीतिस्त्रिणांमैत्रावरुणिविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् ॥ अभियेके० ॥ ॐ शंनइंद्राग्नीभवतामवोभिः शंनइंद्रावरुणारातहव्या ॥
 शमिंद्रासोमासुवितायशंयोः शंनइंद्रापृषणावाजसातौ ॥ शंनोभगः शमुनः शंसो अस्तु शंनः पुरंधिः शमुसंतुरायः ॥ शंनः सत्य
 स्यसुयर्मस्यशंसः शंनो अयमापुरुजातो अस्तु ॥ ३ ॥ पवित्रं तइतितिसृणामांगिरसः पवित्रः पवमानसोमोजगती ॥ अभियेके० ॥ ॐ पवि
 त्रैतेविततं ब्रह्मणस्य तं प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः ॥ अतस्तत नूनं तद्दामो अश्रुते शतास इह हतस्तत्समाशत ॥ ॐ पवि
 द्विचस्पदेशो चैतो अस्य तंतं वोव्यस्थिरन् ॥ अवंत्यस्य पवीतारं माशवो दिवस्पृष्टमधि तिष्ठति चेत्तसा ॥ तपोष्पवित्रं विततं
 ययुक्षा विभर्ति भुवनानि वाजयुः ॥ मायाविनो मभिरे अस्य मायानुचक्षसः पितरो गभमादधुः ॥ अरुरुचदुषसः पृश्निरग्नि
 रादित्यो लोकरक्षणकारकः ॥ विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते रविः ॥ १ ॥ रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः ॥
 विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते विधुः ॥ २ ॥ भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा ॥ दृष्टिक्लृष्टिहतां च पीडां हरतु ते कुजः ॥
 ॥ ३ ॥ उत्पातरूपो जगतां चंद्रपुत्रो महाद्युतिः ॥ सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः ॥ ४ ॥ दैत्यमंत्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः ॥ प्रभुस्ताराग्रहाणां च पी
 डां हरतु ते भृगुः ॥ ५ ॥ सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः ॥ मंदचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु ते शनिः ॥ ७ ॥ महाशिरा
 महावक्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः ॥ अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु ते तमः ॥ ८ ॥ अनेकरूपवर्णश्च शतशोथसहस्रशः ॥ उत्पातरूपो

जगतःपीडांहरतुतेशिखी ॥ ९ ॥ अथदेवमंत्राः ॥ सुरास्त्वामभिषिंचंतुब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ वासुदेवोजगन्नाथस्तथासंकर्ष
 णोविभुः ॥ १ ॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्चभवंतुविजयायते ॥ आखंडलोमिर्भगवान्प्रमोदैर्निर्ऋतिस्तथा ॥ २ ॥ वरुणःपवनश्चै
 वधनायक्षस्तथाशिवः ॥ ब्रह्मणासहिताःसर्वेदिकपालाःपांतुतेसदा ॥ ३ ॥ कीर्तिलक्ष्मीर्धृतिर्मेधापुष्टिश्चाक्रियामतिः ॥
 बुद्धिर्लज्जावपुःशान्तिःकांतिस्तुष्टिश्चमातरः ॥ ४ ॥ एतास्त्वामभिषिंचंतुदेवपत्न्यःसमागताः ॥ आदित्यश्चंद्रमाभौमोबुधजी
 वसितार्कजाः ॥ ५ ॥ ग्रहास्त्वामभिषिंचंतुराहुःकेतुश्चतर्पिताः ॥ देवदानवगंधर्वायक्षराक्षसपन्नगाः ॥ ६ ॥ ऋषयोमुनयोगावो
 देवमातरएवच ॥ देवपत्न्योद्गुमानागादैत्याश्चाप्सरसांगणाः ॥ ७ ॥ अस्त्राणिसर्वशस्त्राणिराजानोवाहनानिच ॥ औषधा
 निचरत्नानिकालस्यावयवाश्च ॥ ८ ॥ सरितःसागराःशैलास्तीर्थानिजलदानदाः ॥ एतेत्वामभिषिंचंतुसर्वकामार्थसिद्धये ॥ ९ ॥
 एतैर्मन्त्रैःप्रतिमंत्रमभिषिच्य ॥ हिरण्यवर्णमितिपंचदशसूक्तस्यआनंदकदमचिह्नैर्तेदिरासुताऋषयः श्रीरग्निश्चेत्युभेदेवते
 आद्यास्तिस्त्रोनुष्टुभःततएकाप्रस्तारपंक्तिःततोद्वित्रिष्टुभौततोष्टावनुष्टुभौत्याप्रस्तारपंक्तिः ॥ ॐ इमाऽआपःशि
 वर्णाहरिणीं० ऋ० १५ ॥ इमाआपइतितिसृणामैतरेयआपोनुष्टुब्जगत्यनुष्टुभः ॥ अभिषेकेविनियोगः ॥ अभिषेकेविनियोगः ॥
 वतंमा० ऋ० ३ ॥ देवस्यत्वेत्यस्यैतरेयःसविताश्विनौपूषाचयजुः॥ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्यामग्नेस्ते
 जसासूर्यस्यवर्चसेंद्रस्येद्रियेणाभिषिंचामि ॥ बलायश्रियैयशसेन्नाद्याय भूर्भुवःस्वः॥ अमृताभिषेकोस्तु शान्तिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु
 इत्यभिषिंचेत् ॥ ततोभिषेकशालायामेवाभिषिक्तयजमानस्यपूर्वादिदिक्षुविदिक्षुचच्चित्रान्नैराचार्योदिग्देवताभ्यःइंद्रायनमः

अग्नयेनमः इत्यादिनाममंत्रैर्बलीनुत्क्षिपेत् ॥ ततोयजमानस्यसुवासिनीभिर्दोषैर्नीराजनंकारयेत् ॥ ततोयजमानोभिषेकव
स्त्रमाचार्यार्थदत्वाश्वेतांबरंश्वेतचंदनंश्वेतपुष्पाणिचघृत्वाभिषेकशालातोऽग्निसमीपमागत्याग्नेर्ग्रहपीठदेवतानांचपंचोपचारपू
आचार्योदेवतोद्वासनंकुर्यात् ॥ ॐ अग्नयेनमः ॐ आदित्यायनमः इतिमंत्रैः प्रणवादिभिः प्रत्येकंपुष्पांजलिसमर्पयेत् ॥ तत
ततआचार्यप्रभृतिभ्योजपहोमफलंगृहीत्वातेभ्योदक्षिणां गौःशंखःरक्तो नङ्गान् हिरण्यंपीतवासःश्वेताश्वःकृष्णागौः काला
यसंहस्तीछागोवेतिग्रहक्रमेणदद्यात् ॥ अत्रन्यूनदक्षिणाबुधदक्षिणयाहिरण्येनसमाकार्याआद्यगवावा ॥ एतदभावेसर्वे
भ्योयथाशक्तिहिरण्यंवादद्यात् ॥ आचार्यार्थद्विगुणं ॥ अन्येभ्यश्चयथाशक्तिभूयसीं ॥ ततःकांस्यपात्रगताज्ये रूपं
रूपंप्रतिरूपोबभूवेतिमंत्रेणसकुंडुंबःस्वप्रतिरूपंप्रेक्ष्य ॥ आज्यंतेजःसमुद्दिष्टमाज्यंपापहरंस्मृतं ॥ आज्यंसुराणामाहारआज्ये
देवाःप्रतिष्ठिताः ॥ इतिमंत्रंपठित्वातदाज्यंसदक्षिणंब्राह्मणायदद्यात् ॥ ततोभूरिदक्षिणांदत्वासंकल्प्यवा ॥ एकस्याआहुते
रेकंशतस्यैकंसहस्रस्यवाएकंयथाशक्तिवाब्राह्मणान्भोजयित्वातेभ्यःशान्तिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्त्वित्याद्याशिषोगृहीत्वातान्संप्रा
थ्यंप्रणिपत्य ॥ यस्यस्मृत्याचनामोत्थ्यातपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनंसंपूर्णतांयातिसद्योवंदेतमच्युतमितिपठित्वा ॥ प्रमादा
त्कुर्वतांकर्मप्रच्यवेताध्वरेपुयत् ॥ सरणादेवतद्विष्णोःसंपूर्णस्यादितिश्रुतिः ॥ इत्युक्त्वान्यूनान्तिरिकाछिद्रत्वार्यथशक्ति
अच्युतानंतगोविंदेतिनाममंत्रजपंकृत्वाग्रहयज्ञफलंश्रीविष्णवेसमर्प्यस्वयंहृष्टमनावंधुभिःसहभुंजीत ॥ अयंचाश्वलायनगृह्य

परिशिष्टानुसारीग्रहमखःस्मार्तोग्रिमतामाश्वलायनानामेव ॥ बह्वर्पंवास्वगृह्योक्तंयथाकर्मप्रचोदितं ॥ तस्यतावतिशास्त्रार्थे
कृतेसर्वःकृतोभवेदितिवचनात् ॥ एवमन्येषामपिदिस्वगृह्यादाबुक्तस्तदासएव ॥ येषांतुस्वगृह्यादौनोक्तसैर्याज्ञवल्क्यादि
स्मृत्युक्तोमत्स्यपुराणाद्युक्तोवानुष्ठेयःस्मृत्यादेःसाधारण्यादितिदिक् ॥ इतिपरिशिष्टोक्तोवनवग्रहमखप्रयोगःसमाप्तः ॥

परिशिष्टानुसारीग्रहमखःस्मार्तोग्रिमतामाश्वलायनानामेव ॥ बह्वर्पंवास्वगृह्योक्तंयथाकर्मप्रचोदितं ॥ तस्यतावतिशास्त्रार्थे
कृतेसर्वःकृतोभवेदितिवचनात् ॥ एवमन्येषामपिदिस्वगृह्यादाबुक्तस्तदासएव ॥ येषांतुस्वगृह्यादौनोक्तसैर्याज्ञवल्क्यादि
स्मृत्युक्तोमत्स्यपुराणाद्युक्तोवानुष्ठेयःस्मृत्यादेःसाधारण्यादितिदिक् ॥ इतिपरिशिष्टोक्तोवनवग्रहमखप्रयोगःसमाप्तः ॥

॥ ९७ ॥ ग्रहयज्ञोपाख्योक्तः (अयुतहोमः) ॥

श्रीः ॥ कर्ताकृतनित्यक्रियोद्विराचम्यपवित्रपाणिःप्राणानायम्यदेवगुरुब्राह्मणाभिवादनपूर्वदेशकालौस्मृत्वा श्रीकामःवृष्ट्या
शुःपुष्ट्यादिकामः ग्रहपीडायामुत्पातेरोगेवातच्छांतिकामोवायुतहोमाख्यनवग्रहयज्ञेनाहंयक्ष्ये ॥ केवलेतुग्रहयज्ञंकरिष्ये इति
संकल्प्य गणपतिपूजनस्वस्तिवाचनमातृकापूजननांदीश्राद्धानिकृत्वाआचार्यामुक्तहोमेग्निप्रतिष्ठांकर्तुमुपले
त्रंकुंडनिर्मायतदैशान्यांग्रहवेदीहस्तविस्तृतावितस्त्युच्चावप्रत्रययुताचतुरस्राकार्या ॥ अथाचार्योमुक्तहोमेग्निप्रतिष्ठांकर्तुमुपले
पनादिकुंडसंस्कारंमेखलायोनिदेवतास्थापनंपूजनंचकरिष्येइतिसंकल्प्यकुंडंसंस्कृत्यकुशोदकेनप्रोक्ष्योर्ध्वमेखलायांकडुद्रायेतिरुद्रं । यो
लंकृतायांइदंविष्णुरिति विष्णुं । रक्तवर्णमध्यमेखलायांब्रह्मजज्ञानमितिब्रह्माणं । कृष्णवर्णाधोमेखलायांकडुद्रायेतिरुद्रं । यो
न्यांगौरीर्मिमायेतिगौरींचसंपूज्याग्निंप्रतिष्ठाप्यग्रहवेद्यांसर्वतोभद्रंकृत्वातत्रब्रह्मादिमंडलदेवताआवाह्यसंपूज्यतत्रग्रहमंडलंवि
लिख्य) ग्रहान्स्थापयेत् ॥ यथा ॥ ग्रहवेद्यां वस्त्रेष्टदलंपद्मंगंधादिनाकृत्वा ॥ प्रणवस्यपरब्रह्मऋषिःपरमात्मादेवतादैर्वागायत्री

छंदः व्याहृतीनां क्रमेण जमदग्निभरद्वाजभृगवऋषयः अग्निवायुसूर्यादेवताः दैवीगायत्रीदेवीउष्णिग्दैवीबृहत्यद्व्यंदांसि सूर्या
 ध्यावाहने विनियोगः ॥ ग्रहपीठस्य मध्ये वर्तुले द्वादशांगुले प्राङ्मुखं सूर्यं रक्तपुष्पाक्षतैः ॥ आकृष्णेन हिरण्यस्तूपः सविता त्रिष्टुप्
 सूर्यावाहने वि० ॥ ॐ आकृष्णे न० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः कलिंगदेशोऽभवत्काश्यपसगोत्रसूर्येहागच्छे हतिष्ठ सूर्याय नमः सूर्यमावाह
 यत्री सोमावाहने वि० ॥ ॐ आग्नेये चतुरस्रे चतुर्विंशांगुले प्रत्यङ्मुखं सोमं श्वेतपुष्पाक्षतैः ॥ आप्याय स्वगोतमः सोमो गा
 २ ॥ ततो दक्षिणे त्रिकोणे त्र्यंगुले मंडले दक्षिणाभिमुखं भौमं रक्तपुष्पाक्षतैः ॥ अग्निर्मूर्धा विरूपो गारको गायत्री अंगारकावा
 हने विनि० ॥ ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककु० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः अवन्ति देशोऽभवत्भारद्वाजसगोत्रभौमेहागच्छे हतिष्ठेति स्थापयेत्
 तत ईशान्ये बाणाकारे चतुरंगुले मंडले उदङ्मुखं बुधं पीतपुष्पाक्षतैः ॥ उह्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुप् बुधावाहने विनियोगः ॥ ॐ
 उह्यध्वं सर्मनसः सखायः ० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः मगधदेशोऽभवत्त्रेयसगोत्रबुधेहागच्छे हति० ४ ॥ तत उत्तरे दीर्घचतुरस्रे मंडले उद
 ङ्मुखं बृहस्पतिं पीतपुष्पाक्षतैः ॥ बृहस्पते गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप् बृहस्पत्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ
 कं शुक्लपुष्पाक्षतैः ॥ शुक्रः पराशरः शुक्रो द्विपदा विराट् शुक्रावाहने विनियोगः ॥ ॐ शुक्रः शुशुक्लौ उषोन० ॐ भूर्भुवःस्वः भो
 जकटदेशोऽभवत्भार्गवसगोत्रशुक्रेहागच्छे हतिष्ठेति स्थापयेत् ६ ॥ ततः पश्चिमे धनुराकारे द्व्यंगुले मंडले प्रत्यङ्मुखं शनिं कृष्णपुष्पाक्ष

[illegible]

शुक्रदक्षिणपार्श्वे इन्द्रं ६ ॥ यमायसोमं यमोयमोनुष्टुप् यमावाहने विनियोगः ॥ ॐ यमायसोमं सुनुत ० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः यमे
 हागच्छेहतिष्ठेति शनैश्चरदक्षिणपार्श्वे यमं ७ ॥ मोषुणः कण्वः कालो गायत्री कालावाहने विनियोगः ॥ ॐ मोषुणः परांपरा ०
 गः ॥ ॐ उषोवाजं हिवं स्वयं ० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्तं हागच्छेहतिष्ठेति केतुदक्षिणपार्श्वे चित्रगुप्तो बृहती चित्रगुप्तावाहने विनियो
 प्रत्यधिदेवताः स्थापयेत् ॥ अग्निदूतं मेधातिथिरग्निर्गायत्री अद्यावाहने वि ० ॥ ॐ अग्निदूतं वृणीमहे ० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहाग
 च्छेहतिष्ठेति सूर्यवामपार्श्वे ऽग्निं १ ॥ अप्सु मे मेधातिथिरापोनुष्टुप् अपावा ० ॥ ॐ अप्सु मे सोमो ० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आप इहागच्छ
 तेहतिष्ठेति सोमवामपार्श्वे अपः २ ॥ स्योना मे धातिथिर्भूमिर्गायत्री भूम्यावाहने ० ॥ ॐ स्योना पृथिवि ० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भूमे इहाग
 गच्छेहतिष्ठेति भौमवामपार्श्वे भूमिं ३ ॥ इदं विष्णु मे धातिथिर्विष्णुर्गायत्री विष्णवावाहने ० ॥ ॐ इदं विष्णुर्वि ० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भूमे इहा
 इहागच्छेहतिष्ठेति बुधवामपार्श्वे विष्णुं ४ ॥ इन्द्राणीं वृषाकपि रीन्द्राणीं पंक्तिः इन्द्राण्यावा ० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणीं हा
 छेति बृहस्पतिवामपार्श्वे इन्द्रं ५ ॥ इन्द्राणीं वृषाकपि रीन्द्राणीं पंक्तिः इन्द्राण्यावा ० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणीं हा
 गच्छेहतिष्ठेति शुक्रवामपार्श्वे इन्द्राणीं ६ ॥ प्रजापते हिरण्यगर्भः प्रजापतिस्त्रिष्टुप् प्रजापत्यावाह ० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणीं हा
 स्वः प्रजापते इहागच्छेहतिष्ठेति शनिवामपार्श्वे प्रजापतिं ७ ॥ आचंगौः सर्पराज्ञी सर्पागायत्री सर्पावाहने ० ॥ ॐ भूर्भुवः
 श्चि ० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पा इहागच्छेहतिष्ठेति रुद्रवामपार्श्वे सर्पां ८ ॥ ब्रह्मजज्ञानं वामदेवो ब्रह्मा त्रिष्टुप् ब्रह्मावाहने

ऋ० ब्र०

॥१५४॥

यमावाहने० ॥ ॐ यमायसोमं० ३ ॥ मोषुणःकण्वोनिर्ऋतिर्गायत्री निर्ऋत्यावाह० ॥ ॐ मोषुणःपरापरा० ४ ॥ तत्त्वा
यामिशुनःशेषोवरुणस्त्रिष्टुप् वरुणावाह० ॥ ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणा० ५ ॥ तववायोव्यश्वोवायुर्गायत्री वाय्वावाह० ॥ ॐ
तर्ववायवृतस्यते० ६ ॥ सोमोधेनुंगोतमःसोमस्त्रिष्टुप् सोमावाहने० ॥ ॐ सोमोधेनुं० ७ ॥ तमीशानांतादेवताआवाह्य ॥ (ततर्इशानीपूर्वयोर्मध्येसहस्रशीर्षेत्यनंतं १
ईशानावाह० ॥ ॐ तमीशानंजगतं० ८ ॥ एवमीशानांतादेवताआवाह्य ॥ इतिप्रतिष्ठाप्योक्ततत्तन्मंत्रैरादित्यायनमइत्येवमादिभिर्नाममंत्रैर्वाषोडशोप
नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्येब्रह्मजज्ञानमितिब्रह्माणं २ ततउत्तरेक्षेत्रस्यपतिनेतिक्षेत्रपालं ३ वास्तोष्पतइतिवास्तोष्पतिं ४ चावा
ह्य) तदस्तुमित्रावरुणा० गृहवैप्रतिष्ठा० इतिप्रतिष्ठाप्योक्ततत्तन्मंत्रैरादित्यायनमइत्येवमादिभिर्नाममंत्रैर्वाषोडशोप
चारैःसंपूज्य (फलपुष्पमालाशोभितंवितानंबृहस्पतिदैवत्यंसूर्यादिभ्यइदंनममेत्युत्सृज्यग्रहवेद्युपरिबध्नीयात्) ॥ ग्रहवेदी
ज्ञानभागेमहीद्यौःपृथिवीचनइत्यादिभिर्विधिनाकलशस्थापनंकृत्वातदुपरितत्त्वायामीतिमंत्रेणवरुणंसंपूज्यतत्रकलशेसमुद्र
नद्यावाहनंकुर्यात् ॥ सर्वेसमुद्राःसरितस्तीर्थांनिजलदानदाः ॥ आयांतुयजमानस्यदुरितक्षयकारकाः ॥ ततःकलशा
भिमंत्रणं कलशस्यमुखेविष्णुरित्यादि० ॥ ततःकलशप्रार्थना ॥ देवदानवसंवादेमथ्यमानेमहोदधौ ॥ उत्पन्नोसितदाकुंभवि
धृतोविष्णुनास्वयं ॥ त्वत्तोयेसर्वतीर्थानिदेवाःसर्वेत्वयिस्थिताः ॥ त्वयितिष्ठंतिभूतानित्वयिप्राणाःप्रतिष्ठिताः ॥ शिवःस्व
यंत्वमेवासिविष्णुस्त्वंचप्रजापतिः ॥ आदित्यावसवोरुद्राविश्वेदेवाःसपैतृकाः ॥ त्वयितिष्ठंतिसर्वेपियतःकामफलप्रदाः ॥
त्वत्प्रसादादिमंयज्ञंकर्तुमीहेजलोद्भव ॥ सान्निध्यंकुरुदेवेशप्रसन्नोभवसर्वदा ॥ ततआचार्योऽन्वाधानंकुर्यात् ॥ तत्रप्रधान

॥१५४॥

मात्स्यग्र-
॥९७॥

कीर्तनेविशेषः ॥ सूर्यसोमभैमंबुधंबृहस्पतिंशुक्रंशनिंराहुंकेतुं एताःप्रधानदेवताः अष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिवासंख्याकाभिः
 अर्कोदिजातीयसमिदाहुतिभिस्तावतीभिश्चर्वाहुतिभिराज्याहुतिभिश्च ॥ ईश्वरंउमांस्कंदंनारायणंब्रह्माणंइंद्रंयमंकालंचित्र
 गुप्तं अग्निंअपःभूमिंविष्णुंइंद्रंइंद्राणींप्रजापतिसर्पान्ब्रह्माणं एतादेवताःअष्टाविंशतिसंख्याष्टसंख्याकाभिर्वातदाहुतिभिः॥वि
 नायकंदुर्गावायुमाकाशंअश्विनौक्षेत्रपालंवास्तोष्पतिं इंद्रमग्निंयमंनिर्ऋतिंवरुणंवायुंसोममीशानं एतादेवताःअष्टचतुर्वासंख्या
 काभिःसमिदाहुतिभिराज्याहुतिभिश्चर्वाहुतिभिश्च(सूर्याद्यादेवतादशसंख्याकतिलाहुतिभिः॥ अग्निवायुसूर्यंप्रजापतिंचप्रत्ये
 कंपंचविंशतिशतमिताभिस्तिलाहुतिभिर्ब्रह्मणेणशेषेणस्विष्टकृतमित्यादि॥आज्यसंस्कारकालेसूर्यायत्वाजुष्टंनिर्वपामीति
 कंपंचविंशतिशतमिताभिस्तिलाहुतिभिश्चर्वाहुतिभिर्ब्रह्मणेणग्रहेभ्यश्चतुरश्वतुरमुष्टीन्निरुज्यइतरासांदेवतानांकृतेदेवेभ्योजुष्टंनिर्वपामीति
 मुष्टीन्निरुज्यैवंसोमायमंगलायत्वेत्यादिप्रकारेणग्रहेभ्यश्चतुरश्वतुरमुष्टीन्निरुज्यइतरासांदेवतानांकृतेदेवेभ्योजुष्टंनिर्वपामीति
 चतुरोमुष्टीन्निर्वपेत्॥ग्रहसिद्धान्नैववाहोमः॥आज्येनसहगृहसिद्धान्नस्यचपर्यग्निकरणम्॥दर्वांबुवसंमार्गंतिगृहसिद्धान्नस्थाल्या
 मादायअग्नावधिश्रित्याभिघारणादिबर्हिष्यासादनांतंकुर्यात् ॥ अर्कोदिततद्ग्रहोक्तयज्ञियतरुजातीयाःसमिधश्चतंत्रैवासाद्य
 अग्न्यर्चनाद्याज्यभागवराहुत्यंत्यजमानोन्वाधानानुसारेणएतत्संख्याहुतिपर्याप्तंअर्कोदिजातीयसमिच्चर्वाज्यात्मकंहविस्त्रयं
 सूर्यायसोमायेत्यादिनममेत्येवंत्यागपूर्वकंतदंगदेवताभ्योपित्यक्त्वा एवंत्यागेकृतेसत्विगाचार्योऽर्कोदिसमिधोदधिमध्वाक्ता
 श्र्वर्वाहुतीराज्याहुतीश्चसंकल्पानुसारिसंख्याकाजुहुयात् ॥ (ततस्तिर्लैर्दशदशाहुतिभिर्ग्रहहोमस्तथाव्याहृतिभिरयुतसंख्याया
 १ होमप्रकारस्तु—नमुक्तकेशोजुहुयान्नानिपातितजानुकः । उत्तानैवहस्तेनअंगुष्ठाग्रेणपीडितं । सहतागुलिपाणिस्तुवाग्यतो जुहुयाद्धविः ॥

ततःस्विष्टकृदादिप्रायश्चित्तहोमांतंकृत्वा दिक्पालादिभ्यःसदीपमाषभक्तबलिसंकल्पंयजमानद्वाराकारयेत् ॥
 श्रीः ॥ सपत्नीकोयजमानःप्रतिबलिसंकल्प्यसाक्षतजलंत्यजेत् ॥ तद्यथा॥अभ्यायतनस्यसमंताद्दिक्षुमाषभक्तबलीन्द्रदिक्पाले
 भ्योदद्यात् ॥ त्रातारमिंद्रगंगेन्द्रस्त्रिष्टुप् इन्द्रप्रीत्यर्थेबलिदानेविनियोगः ॥ ॐ त्रातारमिंद्रं ॥ इन्द्रायसांगायसपरिवाराय
 सायुधायसशक्तिकायएषमाषभक्तबलिर्नमः ॥ भोइन्द्रदिशंरक्षबलिमुक्ष्वमयजमानस्यसकुंडुबस्यायुःकर्ताक्षेमकर्ताशांति
 कर्तापुष्टिकर्तानुष्टिकर्ताभवेतिपुष्पाक्षतजलानिपूर्वाभिमुखस्त्यजेत् १ ॥ अग्निदूतमेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्निप्रीत्यर्थेब
 लिदानेवि० ॥ ॐ अग्निदूतंर्वृणीमहे० अग्नयेसांगाय० २ ॥ यमायसोमंयमोयमोनुष्टुप् यमप्रीत्यर्थेबलिदानेवि० ॥ यमा
 य० ४ ॥ तत्त्वायामिशुनःशेषोवरुणस्त्रिष्टुप् वरुणप्रीत्यर्थे० ॥ ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणा० वरुणायसांगाय० ५ ॥ तववा
 योव्यश्वोवायुर्गायत्री वायुप्रीत्यर्थेबलि० ॥ ॐ तववायवृतसते० वायवेसांगाय० ६ ॥ सोमोधेनुंगोतमःसोमस्त्रिष्टुप् सोम
 प्रीत्यर्थे० ॥ ॐ सोमोधेनुंसोमोअर्वत० ॥ ॐ तववायवृतसते० वायवेसांगाय० ७ ॥ तमीशानंगोतमईशानोजगती ईशानप्रीत्यर्थे० ॥ ॐ तमी
 शानंजगतः० ईशानायसांगाय० ८ ॥ ततोऽग्रहबलयोदेयाः तत्रपूर्वेआकृष्णेनहिरण्यस्तूपःसवितात्रिष्टुप् सूर्यप्रीत्यर्थे० ॥
 ॐ आकृष्णेनरर्जसा० आदित्यायसांगायसपरिवारयईश्वरान्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितायेमंसदीपमाषभक्तबलिस

मप्यामिद्विपुष्पांजलिंक्षिपेत् भोआदित्येमंबलिंगृहाणममयजमानस्य० १ ॥ आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री सोमप्रीत्य
मप्यामिद्विपुष्पांजलिंक्षिपेत् २ ॥ आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री सोमप्रीत्य
मप्यामिद्विपुष्पांजलिंक्षिपेत् ३ ॥ आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री सोमप्रीत्य
मप्यामिद्विपुष्पांजलिंक्षिपेत् ४ ॥ आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री सोमप्रीत्य
मप्यामिद्विपुष्पांजलिंक्षिपेत् ५ ॥ आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री सोमप्रीत्य
मप्यामिद्विपुष्पांजलिंक्षिपेत् ६ ॥ आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री सोमप्रीत्य
मप्यामिद्विपुष्पांजलिंक्षिपेत् ७ ॥ आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री सोमप्रीत्य
मप्यामिद्विपुष्पांजलिंक्षिपेत् ८ ॥ आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री सोमप्रीत्य
मप्यामिद्विपुष्पांजलिंक्षिपेत् ९ ॥ आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री सोमप्रीत्य
मप्यामिद्विपुष्पांजलिंक्षिपेत् १० ॥ आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री सोमप्रीत्य

भोदुर्गेममयजमानस्यायुःकर्त्रीपुष्टिकर्त्रीतुष्टिकर्त्रीऋष्टिकर्त्रीभव २ ॥ तववायोव्यश्वोवायुर्गायत्री वायुप्रीत्यर्थे ॥ ॐ तव
 वायवृत० वायवेसांगायेत्यादि० ३ ॥ आदित्यलस्यवत्सआकाशोगायत्री आकाशप्रीत्यर्थे ॥ ॐ आदित्यलस्यरेत० आका
 शायसांगायेत्यादि० ४ ॥ एषोऽषाःप्रस्कण्वोश्विनौगायत्री अश्विप्रीत्यर्थेबलिदाने ॥ ॐ एषोऽषाअपूर्व्या० अश्विभ्यां
 कर्तारौक्षेमकर्तारौभवतं ५ ॥ वास्तोष्पतेवसिष्ठोवास्तोष्पतिस्त्रिष्टुप् वास्तोष्पतिप्रीत्यर्थे ॥ ॐ वास्तोष्पते० आका
 येसांगायेत्यादि ६ ॥ ततःक्षेत्रपालबलिः ॥ क्षेत्रस्यवामदेवःक्षेत्रपालोऽनुष्टुप् क्षेत्रपालप्रीत्यर्थे ॥ ॐ वास्तोष्पत
 पालायसांगायसपरिवारायभूतप्रेतपिशाचराक्षसडाकिनीशाकिनीवेतालपरिवारयुतायइममित्यादि ॥ ततःशूद्रादिनातद्
 लिनयनेकृतेशांतापृथिवीतिभुवंग्रोक्ष्यसयजमानआचार्यःप्रक्षालितपाणिपादआचांतःसर्वकर्मप्रपूर्णीभद्रद्रव्यदांपूर्णाहुतिहो
 ब्येइतिसंकल्प्य सुचिद्वादशगृहीतमाज्यंफलसंयुतंगृहीत्वातस्यांगंधपुष्पाक्षतालंकृतांग्रं सुवमधोबिलंनिधायसुक्लस्रवंशंखमुद्र
 यागृहीत्वोर्ध्वंस्तिष्ठत् ॥ मूर्धानंभरद्वाजोऽग्निर्वैश्वानरस्त्रिष्टुप् पूर्णाहुतौविनियोगः ॥ ॐ मूर्धानंदिवो० ॥ अनेनपूर्णाहुतिहो
 अग्नयेवैश्वानरायेदंनममेतित्यागः ॥ यद्वा मूर्धानं० ॥ पुनस्त्वग्निर्वसुरुद्रादित्यास्त्रिष्टुप् ॥ पूर्णादर्विविश्वेदेवाःशतक्रतुरनु
 ष्टुप् ॥ सप्ततेअग्नेससवानग्निर्जगती ॥ पूर्णाहुतौवि० ॥ इतिचतुर्भिर्हुत्वा ॥ इदमग्नयेवैश्वानरायवसुरुद्रादित्येभ्यःशतक्रतवे
 सप्तवतेअग्नेचनममेतित्यागःकार्यः ॥ ततःसंस्नावहोमादिकर्मशेषं समापयेत् ॥ ततःसर्वौषधैःसर्वगंधैश्चविलिप्तांगंप्राज्जुलंयजमा

बलिदा-
 ॥९८॥

नंसपरिवारंचत्वारोविप्राउदङ्मुखोऽपेशानीमुखावाग्रहकुंभोदकेन समुद्रज्येष्ठाइत्याद्यैरभिषेकमंत्रैर्ग्रहमंत्रैः सुरास्त्वामभिषिचं
 त्वित्यादिपौराणमंत्रैश्चाभिषिच्युः ॥ ततःस्नात्वाशुक्लांबरांगंधमाल्यधरःप्राङ्मुखोयजमानोग्रहादीनांचोत्तरपूजांविधायान्नि
 संपूज्यविभूतिधारयेत् ॥ ततोवरणक्रमेणत्विजोयजमानहस्तेश्रेयःसंपादनंकुर्युः ॥ यजमानआचार्यादिभ्यःअमुककर्मणःश्रे
 योऽग्रहणंकरिष्ये ॥ आचार्यःशिवा आपःसंवित्वितियजमानहस्तेजलंक्षिपेत् ॥ सौमनस्य० पुष्पं ॥ अक्षतंचारिष्टं० अक्षतान् ॥
 दीर्घमायुः० पुनर्जलं ॥ भवन्नियोगेनमयाअमुककर्मणियत्कृतंजपहोमादितदुत्सन्नंयच्छ्रेयस्तत्तुभ्यमहंसंप्रददे ॥ तेनत्वंश्रेयस्वी
 भव ॥ सचतथास्त्वितिवदेत् ॥ एवंब्रह्मादयः ॥ ततःकर्तन्निःपश्चादाचार्यत्विजउदङ्मुखान्संपूज्यदेशकालौसंकीर्त्य कृतैतद
 युतहोमाख्यग्रहयज्ञस्यप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थंश्रीसूर्यग्रीत्यर्थंइमांकपिलांरुद्रदेवत्याममुकगोत्रायामुकशर्मणेआचार्यायदक्षिणांसंप्रद
 देनममेत्युक्त्वा ॥ कपिलेसर्वदेवानांपूजनीयासिरोहिणी ॥ तीर्थदेवमयीयस्मादतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ इतिपठेत् ॥ एवमग्रे ॥
 पुण्यस्त्वंशंखपुण्यानांमंगलानांचमंगलं ॥ विष्णुनाविधृतोनित्यमतःशांतिं० ॥ इतिसोमायशंखं ॥ पीतवस्त्रयुगंयस्मा
 नंदकारकः ॥ अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतःपाहिसनातनेतिभौमायवृषं ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थमितिबुधायहेम ॥ चंद्रा
 द्वासुदेवस्यवल्लभं ॥ प्रदानात्तस्यैविष्णोअतःशांतिं० ॥ इतिगुरुवेपीतवस्त्रं ॥ विष्णुस्त्वमश्वरूपेणयस्मादमृतसंभवः॥ शांतिं० ॥
 क्वाहनंनित्यमतःशांतिं० ॥ इतिशुक्रायाश्वं ॥ यस्मात्त्वंपृथिवीकृष्णाधेनुःकेशवसंनिभा ॥ सर्वपापहरानित्यमतःशांतिं० ॥ इतिराहवेलोहं ॥
 इतिशनयेकृष्णांगां ॥ यस्मादायसकर्माणित्वदधीनानिसर्वदा ॥ लांगलान्यायुधादीनितस्माच्छांतिं० ॥ इतिराहवेलोहं ॥

यस्मात्त्वंछागयज्ञानामंगत्वेनव्यवस्थितः ॥ यानंविभावसोर्नित्यमतःशांतिं० ॥ इतिकेतवेच्छागं ॥ सर्वेषांवागावः गवामंगेषु
तिष्ठतीतिदेयाः ॥ सर्वेभ्योवासुवर्णं ॥ ततोविभवेसतिशय्यारत्नभूमिवस्त्रकांचनान्यपियथाश्रद्धं दद्यात् ॥ ततोब्रह्मादिऋ
रूपमित्याज्यावलोकनांतेतदाज्यंसदक्षिणंब्राह्मणायदत्वोक्तसंख्ययागुडौदनादिभिर्विप्रान्संभोज्याशिषोगृहीत्वाकर्मेश्वरार्पणं
कुर्यात् ॥ इति (अयुतहोमसंवलितो) मात्स्यानुसारीग्रहयज्ञः ॥ ९९ ॥ अथवसोर्धारानुवाकः ॥

श्रीः॥वसोर्धाराचेत्थं ॥ बह्वैरुपरिस्तंभद्वयविधृतामौदुंबरीमृज्वीमकोटरांबाहुप्रमाणामार्द्रं सुचंपूर्वाग्रानिधायतदुपरिशंखला
बलंबितेननिर्मलंघृतपूरितेनताम्रेणमृन्मयेनवाकुंभेनाधोयवमात्रच्छिद्रेणाज्यमुंचतास्तुवप्रणालिकयाग्रेसुवर्णजिह्वातोधोनिप
तंतीमग्नेरुपरिवसोर्धारांपातयेत् ॥ पतंत्यांचतस्यांचमकानुवाकानामग्निःकांडऋषिःआद्यान्नावैष्णवीगायत्री शिष्टानांवाजादयोन्नादिविशेषादेवताः
द्वादशवारमावर्तनीयः ॥ चमकानुवाकानामग्निःकांडऋषिःआद्यान्नावैष्णवीगायत्री शिष्टानांवाजादयोन्नादिविशेषादेवताः
यजुश्छंदः ॥ अग्निमीळेनवानांमधुच्छंदाअग्निर्गायत्री ॥ विष्णोर्नुकमितिषणांदीर्घतमाविष्णुरनुष्टुप् ॥ आतेपितरितिपंच
दशानांगृत्समदोरुद्रस्त्रिष्टुप् ॥ स्वादिष्ठयेतिदशानांमधुच्छंदाःसोमःपवमानोगायत्री ॥ कायमानइतिमहावैश्वानरसाम्नोवै
श्वानरोमहावैश्वानरःपथ्याबृहती ॥ मूर्धानमितिज्येष्ठसाम्नोभरद्वाजोवैश्वानरस्त्रिष्टुप् ॥ वसोर्धारांचिनियोगः ॥ साम

वसोर्धा-
॥९९॥

॥१५७॥

गानासंभवेऋज्जात्रं पठेत् ॥ ॐ वसोर्धारा जुहोति वसोर्मे धारासदिति वा एपाहूय ते घृतस्य वा एनमेषा धारा मुष्मिन्लोकैः पिबन्वमानो
 पतिष्ठत आज्येन जुहोति ते जोवा आज्यं ते जो वसोर्धारा ते जसै ते जो वरुंधे थो कामा वै वसोर्धारा कामा निवारुंधे यं कामयेत प्रा
 णानस्यान्नाद्यं विच्छिद्यामिति विग्राहृतस्य जुहुयात् प्राणानेवास्यान्नाद्यं विच्छिनत्ति यं कामयेत प्राणानस्यान्नाद्यं संतनुयामिति
 संततां तस्य जुहुयात् प्राणानेवास्यान्नाद्यं संतनोति द्वादश द्वा दशानि जुहोति द्वादश मासाः संवत्सरः संवत्सरेणैवास्माऽअन्नमवरु
 धेन्नच मेक्षुच्चम इत्याहैतद्वाऽअन्नस्य रूपं रूपेणैवान्नमवरुंधे निश्चम आपश्चम इत्याहैपावा अन्नस्य योनिः स योन्येवान्नमवरुंधे धेन्द्रा
 णि जुहोति देवता एवारुंधे यत्सर्वेषामर्धमिन्द्रः प्रतितस्मादिन्द्रो देवतानां भूयिष्ठ भार्कम इन्द्रमुत्तरमाहेंद्रियमेवास्मिन्नपरिष्टाद् दधा
 तियज्ञाय धानि जुहोति यज्ञो वै यज्ञाय धानि यज्ञमेवारुंधे थोऽएतद्वै यज्ञस्य रूपं रूपेणैव यज्ञमवरुंधे व भृथश्च मे स्वगाकारश्चम इ
 त्याह स्वगाकृत्या अग्निश्च मे घर्मश्चम इत्याहैतद्वा ब्रह्मवर्चसस्य रूपं रूपेणैव ब्रह्मवर्चसमवरुंधे ऋक् च मे सामं चम इत्याहैतद्वा छंदसां
 रूपं रूपेणैव छंदां स्यवरुंधे गभीश्च मे वृत्साश्चम इत्याहैतद्वा पशूनां रूपं रूपेणैव पशूनवरुंधे कल्पा जुहोत्य कृत्स्नस्य कृत्स्नै युग्मदयु
 जे जुहोति मिथुनत्वा योत्तरावती भवतो भिक्रोत्या एका च मे तिस्रश्चम इत्याहैतद्वा वृद्धं दुसं वा एका च तिस्रश्चम नुष्य छंदुसं च तस्रश्चाष्टौ
 च देव छंदुसं चैवमनुष्य छंदुसं चारुंधेऽआत्रयस्त्रिंशतो जुहोति त्रयस्त्रिंशद्देवता देवता एवारुंधेऽआष्टा च त्वारिंशतो जु
 होत्यष्टा च त्वारिंशदक्षरा जगती जागताः पशवो जगत्थै मासै पशूनवरुंधे वाजश्च प्रसवश्चेति द्वादशं जुहोति द्वादश मासाः संव
 त्सरः संवत्सर एव प्रति तिष्ठति ॥ इत्यनुवाकः ॥ १ ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४३ ॥

श्रीः ॥ तत्र पूर्वमन्युपधाते प्रायश्चित्तम् ॥ अस्मिन्कर्मणि स्वयं ज्वलनादिना न्युपधातजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं प्रायश्चित्तं करिष्ये ॥ ॐ पुनस्त्वादित्यारुद्रावसंवःसमिधतां पुनर्ब्रह्माणोवसुनीथयज्ञैः ॥ घृतेन त्वं तु नो वोवर्धयस्व सत्याः सैतु यजमानस्य कामाः ॥ इति मंत्रेणाग्नौ समिधमाधायाते नैव मंत्रेण सुवाहुतिं जुहुयात् ॥ आदित्यरुद्रवसुब्रह्मभ्य इदं नमः ॥ ॥ अस्मिन्क० आसादितप्रणीतास्कंदनशोषणप्रसवणादिजनितप्रत्य ० विहितप्राय० ॥ आपो हि षेति तृचेन प्रणीतायामुदकमापूर्य सुवाहुतिं जुहुयात् ॥ ॐ तं स आपस्तदुतायते पुनः स्वादिष्टाधीतिरुचर्थाय शस्यते ॥ अयं संसृजत विश्वभेषजः स्वाहा कृतस्य समुत्पन्नतु भुवः स्वाहा ॥ ॐ त्र्युभ्यामि ॥ ॐ अस्मिन्क० हवनीयद्रव्याणामग्नेश्च केशनखकीटपिपीलिकामक्षिकाद्युपधातजनितप्रत्य ० इदं त्वं रिद्रो बृहस्पतिः ॥ पुनर्मे अभिनायवं चक्षुरार्धत्तमक्ष्योः स्वाहा ॥ मिदवते मय इदं ॥ पुनरग्निश्चक्षुरदात्पुनर्हादिनाशजनितप्रत्यवाय० ॥ ॐ त्वमग्ने अयास्ययासन्मनसाहितः ॥ अयासन्हव्यमूहिषेयानो धेहि भेषजं स्वाहा ॥ अयसे मय इदं ॥ ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वाजातानि परिता बभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयोरथीणां स्वाहा प्रजापतय० ॥ ॥ अस्मिन्क० आयतनाद्बहिरंगारपतनजनितप्रत्यवाय० ॥ ॐ इदं त्वं एकं परं त्वं एकं तृतीये नृज्योतिषा संविशस्व ॥ संवेशने त्वं च श्चार्कुरेधि प्रियो देवानां परमेजनित्रे इति मंत्रेणांगारानायतने प्रक्षिप्य भूर्भुवः स्वः स्वाहा इति सुवाहु

तिजुहुयात् ॥ ॥ अस्मिन्क० स्वराक्षरपदवर्णभ्रेषजनितप्रत्य० आभिर्गीभिरित्येकामाज्याहुतिहोष्यामि ॥ ॐ आभिर्गी
 भिर्यदतोनजूनमाप्याययहरिवोवर्धमानः ॥ यदास्तोतृभ्योमहिगोत्रारुजासिभूयिष्ठभाजोअर्धतस्यामस्वाहा इन्द्रायहरिवत०
 ॥ अस्मिन्क० स्वाहाकारप्रदानासमकालताजनितप्रत्यवाय० मनोज्योतिरित्येकामाज्याहुतिहोष्ये ॥ ॐ मनोज्योतिर्जुषता
 माज्यंविच्छिन्नंयज्ञश्चसमिमंदधातु ॥ याइष्टाउषसोनिम्नुचश्चताःसंदधामिहविषाधृतैरनस्वाहा ॥ मनसेज्योतिपइदं० ॥
 अस्मिन्क० नियमासनवाग्लोपजनितप्रत्यवाय० इदंविष्णुस्त्र्यंबकमितिमंत्राभ्यांस्त्रुवाहुतीहोष्यामि ॥ ॐ इदंविष्णुर्विचक्र
 मेत्रेधानिदधेपुदं ॥ समढमस्यपाशसुरेस्वाहा ॥ विष्णवइदं० ॥ ॐ त्र्यंबकंयजामहेसुगंधिंपुष्टिवर्धनं ॥ उर्वारुकमिवबधनान्म
 त्योर्मुक्षीयमामृतात्स्वाहा ॥ त्र्यंबकायेदं० ॥ अस्मिन्कर्मणिहौम्यद्रव्याणांसमिदादीनांमध्येउक्तसंख्यातोन्यूनानातिरिक्तत्व
 जनितप्रत्यवाय० प्रायश्चित्तंकरिष्ये ॥ ॐ यत्पाकुत्रा० अग्नयइदं० ॥ अस्मिन्कर्मणि० देवतार्थोर्मध्येऋत्विगमिमध्ये
 चपुरुषांतरगमनजनितप्रत्य० पथिकृदग्निदेवताकांपूर्णाहुतिहोष्ये ॥ जुह्वांचतुर्गृहीतमाज्यंगृहीत्वाजुहुयात् ॥ ॐ अग्नयेपथिकृ
 तेस्वाहा अग्नयेपथिकृतइदं० ॥ अस्मिन्क० प्रधानाहुत्युपरिस्विष्टकृदाहुतिप्रक्षेपजनितप्रत्यवाय० ॥ ॐ यत्रवेत्थवनस्पतेदु
 वानांगुह्यानामानि ॥ तत्रहव्यानिगामयस्वाहा ॥ इत्यनेनसमिधंहुत्वासमस्तव्याहृत्याज्यंजुहुयात् ॥ ॥ अस्मिन्क० ऋक्को
 यज्ञभ्रेषप्राय० ॥ ॐ भूःस्वाहाअग्नयइदं ॥ ॥ यजुष्टोयज्ञभ्रेषप्रा० ॥ ॐ भुवःस्वाहावायवइदं० ॥ ॥ अ० सामतोयज्ञ० ॥
 स्वःस्वाहासूर्या० ॥ ॥ अविज्ञातप्रायश्चित्तं० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहा प्रजापतय० ॥ ॥ चरौश्रप्यमाणेतापादुत्सिके चरु

त्सेकजनितम्० यदिपूर्वस्यांतदाइंद्रायस्वाहेतिब्रुवाहुतिः ॥ दक्षिणस्यांचमायस्वा० ॥ पश्चिमायांवरुणाय० ॥ उत्तरस्यांसो
 माय० ॥ विदिक्षुर्भुवःस्वःस्वाहेति ॥ एवंहुत्वा सुवगृहीतेनाज्येनचरुमाप्याययति ॥ आप्यायस्वसंतेपयांसीत्याभ्यां ॥ त
 तोमिंदाहुती ॥ यन्मआत्मनो० पुनरग्निरितिद्वाभ्यां ॥ ततःसर्वप्रायश्चित्तं भूर्भुवःस्वःस्वाहेति ॥ ॥ अस्मिन्क० ह्यमाना
 हुतिस्कंदनजनितप्रत्यवाय० ॥ स्कन्नंहविरभिमृशेत् ॥ देवांजनमग्न्यज्ञस्तस्यमाशिरवतुवर्धतां ॥ भूतिर्घृतेनमुंचतुयशोय
 ततः ॥ द्रप्सश्चस्कंदप्रथमा० अनुद्यनिमंचयोनिमनुयश्चपूर्वः ॥ यज्ञस्यत्वाप्रमयोन्मयाभिमयाप्रतिमया ॥
 तिहुत्वाव्याहृतिभिश्च ॥ ततःस्कन्नमग्नौक्षिपेत् ॥ ॥ समानंयोनिमनुसंचरंतद्रप्संजुहोम्यनुसप्तहोत्राःइत्याज्याहु
 तयेस्वाहा ॥ ॥ अग्नेरुक्स्थानादन्यत्रनासाकर्णादौकृताहुतिप्रक्षेपजनितप्रत्यवाय० ॥ चतुर्गृहीतमाज्यं० अग्नयेव्रतप
 मूलमंत्रेणजुहुयात् ॥ ॥ अस्मिन्क० वेदिकाकुंडकलशप्रतिमादीनामुक्तप्रमाणाद्धीनाधिकाजनितप्रत्यवायपरि० अष्टाविंश
 तिवारंसमस्तव्याहृत्याज्याहुतीर्होष्यामि ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहा प्रजापतयइदंनमम ॥ ॥ सांगतासिद्धयेसर्वप्रायश्चित्तं क
 रिष्ये ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहा प्रजापतयइदंनमम ॥ इतिसर्वसाधारणान्यद्रुपघातकप्रायश्चित्तानि ॥ ॥ ४३ ॥

श्रीः ॥ लौकिकेपावकोह्यग्निःप्रथमःपरिकीर्तितः ॥ अग्नितुमारुतोनामगर्भाधानेप्रकीर्तितः ॥ पुंसवेपवमानस्तुशोभनःशु
 ॥ १०१ ॥ अथाग्निनामानि ॥

रिधिकं फलितमष्टादशांगुलविस्तृतं होमानुसारेण तदधिकं वानतु ततो न्यूनं मध्योन्नतं स्थंडिलं कुर्यात् ॥ तद्गोमयेन प्रदक्षिणमुपलि
प्य दक्षिणे षोडशी च्यां द्वे प्रतीच्यां चतुःप्राच्या मर्धमित्यंगुलानित्यक्त्वा दक्षिणोपक्रमामुदक् संस्थां प्रादेशमात्रा मेकां लेखां तस्या
देशसंमितास्ति स इति षड् लेखाय शिष्यशकलमूलेन दक्षिणहस्तेनो ह्निष्य लेखा सुतच्छकलमुदगं निधाय स्थंडिलमङ्गिरभ्युक्ष्य श
कलं भक्त्वा ग्रेय्यां निरस्य पाणिं प्रक्षाल्य वाग्यतो भवेत् ॥ ततस्तैजसेना संभवे मृन्मयेन वा पात्रयुग्मेन संपुटीकृत्य सुवासिन्या श्रोत्रि
यागारात्स्वगृहाद्वासमृद्धं निर्धूममग्निमाहृतं स्थंडिलादग्रेय्यां निधाय ॥ जुष्टोदमूना आत्रेयो वसुश्रुतो मिस्त्रिष्टुप् ॥ एह्यग्ने राहूग
णोगोतमो मिस्त्रिष्टुप् ॥ अग्न्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ जुष्टोदमूना आत्रेयो वसुश्रुतो मिस्त्रिष्टुप् ॥ एह्यग्ने राहूग
भियुजो विहत्या शत्रयता मा भूरा भोजनानि ॥ एह्यग्ने इह होतानि षीदा दब्धः सुपुर एता भवानः ॥ अवतां त्वारोदसी विश्वमिन्वे
यर्जामहे सौमनसाय देवान् ॥ इत्यक्षतैरावाह्याच्छादनं दूरीकृत्य ॥ समस्तव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती ॥ अग्नि
प्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वरित्यात्मा भिमुखं पाणिभ्यां षड्सुलेखा स्वमुकनामानमग्निं प्रतिष्ठापयामीत्यग्निं प्रतिष्ठा
प्य ॥ प्रोक्षितं धनानि निक्षिप्य वेणुधमन्या प्रबोध्य ध्यायेदवम् ॥ चत्वारि शृंगा गोतमो वामदेवो मिस्त्रिष्टुप् ॥ अग्निमूर्तिं ध्याने
विनियोगः ॥ ॐ चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्ता सो अस्य ॥ त्रिधा बद्धो बृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्योऽआवि
वेश ॥ सप्तहस्तश्चतुःशृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः ॥ त्रिपालसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मितः ॥ स्वाहांतु दक्षिणे पाश्वर्देवी वामे

स्वधांतथा ॥ बिभ्रद्दक्षिणहस्तैस्तुशक्तिमन्नंश्चुचंश्चुवं ॥ तोमरं व्यजनं वामैर्धृतपात्रं च धारयन् ॥ मेषारूढो जटाबद्धो गौरवर्णो म
होजसः ॥ धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः ॥ आत्माभिमुखमासीन एवं रूपो हुताशनः ॥ ततो यदि स मिदादौ समा
रोपितो निस्तर्हि प्रत्यवरोहणं कार्यम् ॥ तच्चैवम् ॥ प्रत्यवरोहेत्यस्य हिरण्यगर्भो निस्त्रिष्टुप् ॥ समारोपितस्याग्नेः प्रत्यवरोहणे वि
नियोगः ॥ ॐ प्रत्यवरोहजातवेदः पुनस्त्वं देवेभ्यो हव्यं हवनः प्रजानन् ॥ प्रजां पुष्टिरयि मस्मा सुधे ह्यथा भवय जमानो यशं योः ॥
इति मंत्रेण समारोपिताग्निमिधं स्थापिते ग्नौ प्रक्षिपेदिति ॥ एतदंतं संस्थापिते ग्नौ होमे कार्यं ॥ नित्यधारित होमे तु नैतावत् ॥
ततः पार्वणस्थालीपाके प्रधानदिनात् पूर्वदिने सद्यस्का लायां पौर्णमास्या मशक्तौ च प्रधानदिन एव वा प्रातरौपासनं हुत्वान्वाधानं कु
र्यात् ॥ तच्चेत्थं ॥ आचम्य प्राणानायम्य स मिद्धं त्रयं वादाय देशकालौ स्मृत्वा ममोपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं द
क्षपूर्णमासाभ्यां स्थालीपाकाभ्यां यक्ष्ये ॥ तत्रेदानी पूर्णमासस्थालीपाके नयक्ष्ये ॥ दशैतुपूर्वं संकल्पितेन दशस्थालीपाके नयक्ष्य
इति विशेषः ॥ तत्र देवतापरिग्रहार्थं मन्वाधानं करिष्ये ॥ अस्मिन्नन्वाहिते ग्नौ जातवेदसमग्निमिधमेन प्रजापतिं प्रजापतिं चैताः प्रा
देवते आज्येनाग्नीषोमौ च क्षुषी आज्येन ॥ अग्निमग्नीषोमौ च प्रधानं देवतैश्च रुद्रव्येण ॥ दशैतुअग्निमिद्राग्नीच प्रधानं देवताः सर्वाः
इति विशेषः ॥ तत्र देवतापरिग्रहार्थं निबर्हणार्थं त्रिवारमग्निं मरुतश्चाज्येन विश्वान् देवान् संस्त्रावेणांगं देवताः प्रधानं देवताः सर्वाः
च रुद्रव्येण इति विशेषः ॥ शेषेण स्विष्टकृतमग्निमिधमसन्नहनेन रुद्रमया समग्निं देवान् विष्णुमग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं चैताः प्रा
यश्चित्ते देवता आज्येन ज्ञाताज्ञातदोषनिबर्हणार्थं त्रिवारमग्निं मरुतश्चाज्येन विश्वान् देवान् संस्त्रावेणांगं देवताः प्रधानं देवताः सर्वाः
सन्निहिताः संतु एवं सांगोपांगेन कर्मणा श्वोयक्ष्ये ॥ सद्यस्काले तु सद्यो यक्ष्ये इति संकल्प्य तूष्णीं समस्तव्याहृतिभिर्वासमिच्छो

मंकुर्यात् ॥ व्याहृतिपक्षे समस्तव्याहृतीनांपरमेष्ठीप्रजापतिः प्रज्ज्वातबृहतीअन्वाधानसमिद्धोमेविनियोगः ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः
स्वाहा ॥ प्रजापतयइदंनमम ॥ (तंचाग्निधारयेत् ॥ संकटेतुतुभ्यंताइत्यृचाज्याहुतिंहुत्वासमारोपयेत् ॥ तद्यथा ॥ तु
भ्याःसुक्षितयःपृथक् ॥ अग्नेकामाययेमिरेस्वाहा ॥ अग्नयइदंनमम) ॥ ब्रतलोपाहुतिंहुत्वा ॥ ॐ तुभ्यंताअंगिरस्तमवि
त्वाग्निंपरिसमुह्यपरिस्तृणीयात् ॥ तच्चेत्थं ॥ अश्यायतनादष्टांगुलपरिमितेदेशेप्राच्यादिषुपूर्वमुपरिनिहितदर्भैःपरिस्तृणीयात् ॥ तत्रप्राच्यांप्रतीच्यांचोदगग्राद
र्भाः अवाच्यामुदीच्यांचप्रागग्राः पूर्वपश्चात्परिस्तरणमूलयोरुपरिदक्षिणपरिस्तरणं उत्तरपरिस्तरणंतुतदग्रयोरधस्तात् ॥ ते
चदर्भाअनियतसंख्याएकैकस्यांदिशिचत्वारश्चत्वारइत्येवंषोडशवा ॥ ततोऽग्नेर्दक्षिणतोब्रह्मासनार्थंउत्तरतश्चपात्रासादनार्थं
कांश्चित्प्रागग्रान्दर्भानास्तृणीयात् ॥ अग्नेरैशानतस्त्रिंभसापरिषिच्य उत्तरास्तीर्णेषुदर्भेषुदक्षिणसव्यपाणिभ्यांक्रमेण चरु
स्थालीप्रोक्षण्यौ दर्वीसुवौ प्रणीताआज्यपात्रे ईध्माबर्हिषी शूर्पकृष्णाजिने उद्धखलमुसले चेतिद्वेद्वेउदगपवर्गप्राक्संस्थंच

१ ब्रतलोपेवात्यैःसहसवेशनेवाउपोज्य त्वमग्नइत्यस्यवत्सोऽग्निर्गीयत्री ब्रतलोपजनितदोषपरिहारार्थमाज्यहोमे० ॐ त्वमग्नेब्रतपाअसिद्धेवऽआमर्त्ये
प्वा ॥ त्वंयज्ञेष्वीज्यःस्वाहा ॥ ब्रतपायाग्नयइदं० ॥ यद्वानिर्वापादिपूर्वकंब्रतपायाग्नयेपार्वणस्थालीपाकेनसमानंत्रं चरुप्रधानात्पूर्वजुहुयात् ॥
२ इध्माबर्हिषोरज्जुनिर्णयः ॥ त्रिभिस्त्रिभिःकुरादलैःसव्यंपाणिमधोदक्षिणंचोपरिकुर्वन् पूर्वदलत्रैरुत्तरदलमूलैश्च त्रिसंधिद्विगुणंरज्जुकृत्वापुनर्दक्षि

न्युञ्जान्यासादयेत् ॥ आज्यमात्रहोमेतु प्रोक्षणीस्रुवौ प्रणीताआज्यपात्रे इध्माबर्हिषी चेत्येतावतामेवासादनं ॥ ततःप्रोक्षणीपात्रमुत्तानंकृत्वातत्रानंतर्गर्भितसाग्रसमस्थूलप्रादेशमात्रकुशद्वयरूपेपवित्रेनिधायशुद्धाभिरद्भिस्तत्पात्रंपूरयित्वागंधपुष्पादिक्षिप्त्वाहस्तयोरंगुष्ठोपकनिष्ठिकाभ्यामुत्तानाभ्यांपाणिभ्यामुदगग्रेपृथक्पवित्रेधृत्वाअपस्त्रिरुत्पूयपात्राण्युत्तानानिकृत्वाइध्मंविस्त्रस्यसर्वाणिपात्राणिप्रोक्षेत् ॥ ताअपःकिंचित्कमंडलौक्षिपेदित्येके ॥ ततोयथोक्तलक्षणमीशानदिगवस्थितं ब्रह्माणमस्मिन्कर्मणिब्रह्माणंत्वामहंवृणइतितत्पाणिंपाणिनागृहीत्वावृणुयात् ॥ ब्रह्मावृतोस्मीत्युक्त्वाप्राङ्मुखोयज्ञोपवीत्याचम्यसमस्तपाण्यंगुष्ठोभूत्वाग्रेणान्निपरीत्यदक्षिणतउदङ्मुखःस्थित्वाआसनार्थदर्भेषुदक्षिणभागस्यमेकंदर्भमंगुष्ठानामिकाभ्यांगुम्यसमस्तपाण्यंगुष्ठोभूत्वाग्रेणान्निपरीत्यदक्षिणतउदङ्मुखःसदनेसीदामिइत्युक्त्वोदङ्मुखएववामोरूपरिदक्षिणहीत्वा ॥ निरस्तःपरावसुःइतिनैर्ऋत्यांनिरस्यापःस्पृष्ट्वा इदमहमर्वावसोःसदनेसीदामिइत्युक्त्वोदङ्मुखएववामोरूपरिदक्षिणहीत्वा ॥ ततस्तस्यामुदगग्रायांप्रादेशमात्रान्मुष्टिपरिमिता

णमध.सव्यंचोपरिकुर्वस्तथैवत्रिगुणयेदंतेप्रदक्षिणग्रथिदद्यात् ॥ एवंषट्त्रिंशद्दर्भैर्दलेरकारज्जुर्भवति ॥ ततस्तस्यामुदगग्रायांप्रादेशमात्रान्मुष्टिपरिमिता
नन्दर्भांनिधायतयाबर्हिरावेष्टचरज्ज्वग्रेणरज्जुमूलंसकृदवेष्टच तदग्रशेषपूर्ववेष्टितरज्ज्वाअधस्तान्निनीयपरिस्तरणाद्यर्धदर्भैःसहाश्यायतनात्पश्चाद्भागोपरिनिदध्यात् ॥ ततोऽन्ययाताहशैवकृतयारज्ज्वाउदगग्रायांपालाशंखादिरमसंभवेशमीवटादियज्ञियवृक्षमयमरत्निमात्रंवितस्तिमात्रंवापंचदशदारुकमिध्मं
प्रागग्रसकृदवेष्टचरज्ज्वग्रेणरज्जुमूलंसकृदवेष्टचपूर्ववन्निदध्यात् ॥ १ उत्तानेनतुहस्तेनकर्तव्यंप्रोक्षणंभवेत् । अवाचीनेनहस्तेनकर्तव्यंस्याद्वोक्षणं ।
मुष्टीकरोतियत्तोयमन्युक्षणमितिस्मृत । तिर्यग्भूतेनहस्तेनकृतंपर्युक्षणंतथा ॥

पादंसंस्थाप्योपविश्यजमानेनगंधाक्षतादिभिरर्चितं ॥ ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्माब्रह्मसदनआशिष्यतेबृहस्पतेयज्ञंगोपायसयज्ञं
 पाहिसयज्ञपतिंपाहिसमांपाहीतिजपित्वासदायज्ञमनाएववर्तेत ॥ ततोयजमानःप्रणीतापात्रमग्नेःप्रत्यङ्निधायतलप्रागग्नेपवि
 त्रेनिधायोत्पूताभिरभ्रिस्तत्पात्रंपूरयित्वागंधपुष्पाक्षतान्निक्षिप्य ब्रह्मन्नपःप्रणेव्यामीतिपृच्छेत् ॥ ततोब्रह्माउपांशुभृशुवःस्वर्बृ
 हस्पतिप्रसूतः॥उच्चैः ॐ प्रणय इत्यनुजानीयात्॥कर्तापूर्णपात्रंमुखसममुद्धृत्याग्नेरुत्तरतोर्ध्वेनिधायतेपवित्रेगृहीत्वान्यैर्दर्भैरा
 च्छादयेत् ॥ (ततःप्रत्यग्नेःकुशेषुशूर्पेनिधायतत्रप्रागग्नेपवित्रेनिधाय अग्नयेत्वाजुष्टंनिर्वपामि इतिमंत्रावृत्याब्रीहीणांयवा
 न्निरग्नयेत्वाजुष्टंप्रोक्षामीतिनिर्वापसंख्ययाप्रोक्षेत् ॥ एवमग्नीषोमाभ्यांत्वाजुष्टंप्रोक्षामीतिनिधायोत्पूताभिर
 स्थानेइंद्राग्निभ्यांत्वेत्यादिनिर्वापेप्रोक्षणेचविशेषः ॥ एवंनाममंत्रकहोमेनिर्वापःप्रोक्षणंचयथाप्रधानदैवतंदेवतानामग्रहणेनका
 र्थम् ॥ समंत्रकहोमेतुश्रवणाकर्मादौतूष्णींचतुरश्वतुरोमुष्टीन्निर्वपेत् प्रोक्षेच्च ॥ ततःपात्राणामुत्तरतःप्राग्नीवमास्तीर्णेऊर्ध्वलो
 न्निकृण्वाजिनेनिहितेउल्लखलेमुखलेनपत्यवहत्यशूर्पेणतुषादीन्संशोध्यन्निःशुक्लीकुर्यात् ॥ तांस्त्रिःप्रक्षालितान्पृथक्पात्रेएक
 पात्रेवाअविदग्धमनवस्त्रावितमंतरुष्मपक्कंसुश्रुतंचरुंपचेत् ॥ ततस्तेपवित्रेआज्यपात्रेनिधायतत्पात्रंपुरतःसंस्थाप्यतस्मिन्ना
 ज्यमासिच्यअग्नेरुत्तरतःस्थितांगारान्भस्मनासहान्नेरुदक्परिस्तरणाद्बहिर्निरुह्य तेष्वाज्यपात्रमधिश्रित्य ज्वलतादर्भोल्मुके
 नावज्वल्यांगुष्ठपर्वमात्रंप्रक्षालितंदर्भाग्रद्वयमाज्येप्रक्षिप्य पुनर्ज्वलतातैर्नैवदर्भोल्मुकेनचरुणासहाज्यन्निःपर्यन्तिकृत्वा तदु

लमुकमपास्यापःस्पृष्ट्वा आज्यस्थालीं भुविकर्षयित्वा उदगुद्धास्य अंगारान् प्रत्यूह्यापः स्पृष्ट्वा तत्र स्थमेवाज्यं ॥ सवितुष्ट्वा हिरण्यस्तूपः
 सविता पुर उष्णिक् ॥ आज्यस्योत्पवने विनियोगः ॥ ॐ सवितुष्ट्वा प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण वसोः सूर्यस्य रश्मिभिरिति मंत्रे
 णैकश्रुत्योच्चारितेनैकवारं द्विस्तूष्णीं उत्तानपाणिद्वयांगुष्ठोपकनिष्ठिकाभ्यामंतयो रसंसृष्टगृहीताभ्यामुदगग्राभ्यां पवित्राभ्यां
 प्रागुत्पूय तेषु पवित्रे अद्भिः प्रोक्ष्याग्नौ प्रहरेत् ॥ तूष्णीं (स्कंदाय स्वाहा स्कंदायेदं नमः ॥ इति मंत्रेणेति केचित्) ॥ अथाग्नेः पश्चात्प
 रिस्तरणाद्द्विहिरात्मनोऽग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बर्हिः सन्नहनीं रज्जुमुदगग्रां प्रसार्य तस्यां बर्हिः प्रागग्रमुदगपवर्गमविरलमास्तीर्य तस्मिन्ना
 ज्यपात्रं निधाय सुवामहस्ते गृहीत्वा दक्षिणेन हस्तेन सुक्स्ववौ गृहीत्वा सव्येन कांश्चिद्द्वर्भानादाय सैहवाग्नौ प्रताप्य सुचं
 निधाय सुवामहस्ते गृहीत्वा दक्षिणेन हस्तेन सुक्स्ववौ गृहीत्वा सव्येन कांश्चिद्द्वर्भानादाय सैहवाग्नौ प्रताप्य सुचं
 त्मं बिलपृष्ठं त्रिःसंमृज्य ततो दर्वभाणां मूलैर्देडस्याधस्ताद्विलपृष्ठादारभ्य यावदुत्तरतो निधाय दर्वभानद्भिः क्षालयित्वा ग्रा
 म्याज्यस्थाल्या उत्तरतः सुगसंसृष्टं निधायोदकं स्पृष्ट्वा तैरेव दर्वैर्जुह्वै चैव मेव संमृज्य सुवामहस्तेन हस्तेन सुक्स्ववौ गृहीत्वा सव्येन कांश्चिद्द्वर्भानादाय सैहवाग्नौ प्रताप्य सुचं
 वनु प्रहरेत् ॥ ततः शृतं चरुं सुवगृहीतेनाज्येनाभिघार्योदगुद्धास्य ग्राज्ययोर्मध्ये न नीत्वा ज्योर्ध्वेन निधायैकादशांगुलिमिते देशे गंधाक्षतपुष्पै रग्निं समंत्रमर्चयेत् ॥
 व्यभिघार्य नवाभिघार्य हविः पृथक्करणा यपात्रांतरं च वर्ज्ययोर्मध्ये निधायैकादशांगुलिमिते देशे गंधाक्षतपुष्पै रग्निं समंत्रमर्चयेत् ॥
 विश्वानि न इति तिसृणामात्रे यो वसुश्रुतो ग्निस्त्रिष्टुप् द्वयोरर्चने अं त्याया उपस्थाने विनियोगः ॥ ॐ विश्वा निनो दुर्गहा जातत्रेदः ॥
 ॐ सिंधु न नाना वा दुर्गहा जातत्रेदः ॥ ॐ अस्माकं बोध्यं वितात नूना ॥ ॐ यस्त्वा हृदा क्रीरिणा मन्यमानः ॥

ॐ अर्मत्युर्मत्योर्जोहवीमि ॥ ॐ जातवेदोयशोऽस्मासुधेहि ॥ ॐ प्रजाभिरेमेअमृतत्वमश्वां ॥ ॐ यस्मैत्वंसुकृतेजातवेदउलो
 कर्ममेकृणवस्योनं ॥ अश्विनंसपुत्रिणवीरवतंगोमंतर्यिंनशतेस्वस्ति ॥ ततआत्मानंचालंकृत्यहस्तंप्रक्षाल्यइधमंबंधनरज्जुमिध्म
 स्थानेनिधायपाणिनेधमादायमूलमध्याग्नेषुस्रुवेणत्रिरभिघार्यमूलमध्ययोर्मध्यभागेगृहीत्वा ॥ अयंतेवामदेवोजातवेदाअग्नि
 धेनसमेधयस्वाहा ॥ जातवेदसेग्नयइदंनमम ॥ ततःस्रुवेणाज्यमादायाग्नेरायतनस्यवायव्यकोणमारभ्याग्नेयकोणपर्यंतंप्रजापत
 यइतिमनसास्मरन्स्वाहेत्युच्चार्यनैरंतर्येणाज्यधारामग्नाविधमदारूपरिहुत्वा ॥ पुनराज्यमादायाग्नेरायतनस्यनैर्ऋत्यकोणतईशा
 नीपर्यंतंतथैवहुत्वात्यक्त्वाच॥स्रुवेणाज्यमादायअग्नयेस्वाहेत्यग्नेरुत्तरपार्श्वपूर्वभागेहुत्वा पुनराज्यंसोमायस्वाहेत्यग्निदक्षिणपा
 र्श्वतत्समप्रदेशेहुत्वा ॥ पूर्वनिहितपात्रेचरुधृत्यपृथक्कृत्य इदमग्नयेइदमग्नीषोमाभ्यामितिचरुभागद्वयमुत्तरसंस्थमभिमृश्याव
 दानधर्मः ॥ एवंनाममंत्रकहोमेयथादैवतंविभक्तस्यचरोरभिमर्शः ॥ समंत्रकहोमेतुनविभागोनाभिमर्शश्च ॥ अथाव
 गत्राभिर्नखस्पर्शमकुर्वन्नवदायदर्व्यमोप्यततश्चरुपूर्वभागंप्रागग्राभिस्ताभिस्तथैवावदायदर्व्यमोप्यपात्रस्थंहविरभिघार्य दर्वी
 स्थमवत्तंचाभिघार्यविधूमज्वालाग्नौ ॥ ॐ अग्नयेस्वाहेत्याज्यभागयोर्मध्यदेशेतत्प्रत्यग्देशेवाआच्छादयन्निवदर्व्यापार्श्वेनहुत्वा
 अग्नयइदंनममेतित्यक्त्वा ॥ पुनःपूर्ववदुत्तरहविर्भागादवदाय ॥ ॐ अग्नीषोमाभ्यांस्वाहेतिपूर्वाहुतेःप्रागभागेहुत्वाअग्नीषोमा

भ्यामिदं नममेतित्यजेत् ॥ पंचावत्तीतुदव्यामुपस्तीर्य मध्यात्पूर्वार्धात्पश्चार्धं त्रिहर्विविषोवदायाभिघार्य जुहुयात् ॥ दर्शेतु अ
 ग्नीषोमस्थाने इंद्राग्निभ्यां स्वाहा इंद्राग्निभ्यामिदं नममेतितिविशेषः ॥ पुनर्दव्यामुपस्तीर्य प्रथमहविर्भागस्योत्तरार्धतः पूर्वावदानतो
 भूयो नूचीनाभिरेवांगुलिभिरवदाय दव्यामोप्यद्वितीयहविर्भागस्य तथैवावदाय पंचावत्तीतुहविर्भागद्वये पिउत्तरार्धात्पूर्वा
 र्धाच्च द्विर्द्विरवदाय पात्रस्थमनभिघार्य वत्तंतु द्विरभिघार्य ॥ यदस्येति हिरण्यगर्भेऽग्निः स्विष्टकृदतिधृतिः स्विष्टकृद्धोमेवि
 नयोगः ॥ ॐ यदस्य कर्मणो त्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरं ॥ अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्वान्त्सर्वस्विष्टं सुहुतं करोतु मे ॥ अग्नये स्विष्टकृ
 ते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्धय स्वाहा इति एकश्रुत्योच्चार्य अग्नौ वैशानदेशे जुहुया
 त् ॥ स्विष्टकृते अग्नये इदं नमः ॥ इध्मं बंधनरज्जुं विस्त्रस्य रुद्राय स्वाहारुद्रायैदं नमः ॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्य नभिः शुक्तींश्च सत्याभि
 तीः सप्त जुहुयात् ॥ अयाश्चेति विमदोया अग्निः पंक्तिः ॥ प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः ॥ ॐ अतो देवाः काण्वो
 त्वमया असि ॥ अयासावयसाकृतोयासं न्हव्यमूहिषेयानो धेहि भेषजं स्वाहा ॥ अयसे अग्नये इदं नमः ॥ १ ॥ अतो देवाः काण्वो
 मेधातिथिर्देवागायत्री ॥ सर्वत्र प्रागवत् विनियोगः ॥ ॐ अतो देवा अवंतु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे ॥ पृथिव्याः सप्त धामभिः स्वा
 हा ॥ देवेभ्य इदं नमः ॥ २ ॥ इदं विष्णुः काण्वो मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री ॥ प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे
 रुद्रायैदं नमः

१ पंचावत्तिनस्तु—जामदग्न्यावत्सविदावाष्टिषेणास्तथैव च ॥ भार्गवच्यावना और्वोः पंचावत्तिन ईरिताः ॥ २ रुद्राय पशुपतये स्वाहा रुद्रायैदं नमः
 मइतिकौस्तुभे ॥ अत्र केचन पशुपतये रुद्रायैदमिति विपर्ययं सेनपठन्ति ॥

मेत्रेधानिदधेपदं ॥ समूळमस्यपांसुरेस्वाहा ॥ विष्णवइदंनमम ॥ ३ ॥ व्यस्तसमस्तव्याहतीनांविश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजप्रजा
पतयऋषयः ॥ अग्निवायुसूर्यप्रजापतयोदेवताः ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बहृत्यऋदांसि ॥ प्रायश्चित्ताज्यहोमेविनियोगः ॥ ॐ भूः
पतयइदंनमम ॥ ७ ॥ ततोब्रह्माकर्तारंपरीत्याग्नेर्वायव्यदेशेतिष्ठन्नेताएवससाज्याहुतीर्जुहुयात् ॥ त्यागंयजमानोऽन्नकुर्यात् ॥ प्रजा
बर्हणार्थंप्रायश्चित्ताज्यहोमेविनियोगः ॥ अनाज्ञातमितिमंत्रद्वयस्यहिरण्यगर्भोऽन्निकुर्यात् ॥ प्रजा
स्वाहा ॥ यजमानः ॥ अग्नयइदंनमम ॥ ॐ अनाज्ञातंयदाज्ञातंयज्ञस्यक्रियतेमिथु ॥ अग्नेतदस्यकल्पयत्व२हिवेत्यथतथ२
स्वाहा ॥ अग्नयइदंनमम ॥ यत्पाकत्रेत्याह्यस्त्रितोऽग्निस्त्रिष्टुप् ॥ प्रायश्चित्ताज्यहोमेविनियोगः ॥ ॐ यत्पाकत्रामनसादीन
दक्षानयज्ञस्यमन्वतेमर्तासः ॥ अग्निष्टद्धोताक्रतुर्विद्विजानन्यजिष्ठोदेवाः२ऋतुशोयजातिस्वाहा ॥ अग्नयइदंनमम ॥ यद्धोदे
वाअभितपामरुतस्त्रिष्टुप् ॥ मंत्रतंत्रविपर्यासादिनिमित्तकप्रायश्चित्ताज्यहोमेविनियोगः ॥ ॐ यद्धोदेवाअतिपातयानिवाचा
चप्रयुतीदेवहेळनं ॥ अराचोअस्मौअभिदुच्छुनायतेन्यत्रासन्मरुतस्तन्निधेतनस्वाहा ॥ मरुद्भ्यइदंनमम ॥ ततः स्कन्नभि
न्नाद्यनियतनिमित्तेसतिवक्ष्यमाणप्रकारेणतत्प्रतिपदोक्तजपहोमान्कुर्याद्ब्रह्मा ब्रह्मणोऽभावेयजमानएवैतान्प्रायश्चित्तादी
॥ कौस्तुभेप्रयोगरेवैवेयमाहुतिर्मंत्रविपर्यासादिहानायज्ञाताज्ञातनिमित्ताहुतित्रयत० पूर्वलिखितासीत्परंत्वन्वाधानक्रमेणशिष्टाचाराच्चानैवविहितेतिभाति ।

न्कृवाऽन्यस्मैवरंदद्यात् ॥ ततोयजमानः ॥ सर्वकर्मप्रपूर्णीभद्रद्रव्यदांपूर्णाहुतिमाज्येनहोष्येद्रतिसंकल्प्य ॥ सुवेणाज्यंगृही
 त्वासुचंसमबिलांपूरयित्वातस्यांसुवमूर्ध्वबिलंनिधायपुनरधोबिलंनिक्षिप्यसुवाग्रेकुसुमाक्षतंनिधाय सव्यपाणिनासुक्कुसुवमू
 लेधृत्वादक्षिणपाणिनासुक्कुसुवंशंखमुद्रयागृहीत्वातिष्ठन्समपादऋजुकायःसुवाग्रन्यस्तदृष्टिःप्रसन्नात्मा ॥ समुद्रादूर्मिरित्येका
 दशार्चस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवआपस्त्रिष्टुप् अंत्याजगतीपूर्णाहुतौविनियोगः ॐ समुद्रादूर्मिं ० ऋक् ११ ॥ मधुमंतं तज्जुर्मिस्वाहा
 ॥ इति पठन्यवपरिमितांधारांसंततांसुगन्धेणसशेषंहुत्वाअन्धइदंनममेत्युद्विश्यत्यक्त्वा ॥ विज्योतिषेत्यस्यजारोवृशोग्निस्त्रिष्टुप् ॥
 पूर्णाहुतिशेषाज्यहोमेविनियोगः ॥ ॐ विज्योतिषाबृहताभात्यग्निराविविंशानिकृणुतेमहित्वा ॥ प्रादेवीर्मायाःसहतेदुरे
 वाःक्षितीतेशृंगेरक्षसेविनिक्षेस्वाहा ॥ इत्यनेनचतथैवावशेषंहुत्वाअयइदंनममेतित्यक्त्वाविश्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहेतिसंस्त्रावं
 हुत्वा विश्वेभ्योदेवेभ्यइदंनममेतित्यजेत् ॥ ततस्तंडुलकणान्समिद्धभक्षकलान्यद्भिःप्रोक्ष्याग्नौप्रहरेत् ॥ पूर्णाहुत्याद्येतदंतंसमूलं
 प्रयोगपारिजातकारेणलिखितमपिइदानींशिष्टानकुर्वेति ॥ अथावभृथस्थानीयंपूर्णपात्रजलेनमार्जनंकुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ पूर्वा
 सादितंपूर्णपात्रमास्तीर्णंबहिपिदक्षिणपाणिनानिधायतत्रगंगादिपुण्यनदीःस्मरन्दक्षिणपाणिनास्पृशन् ॥ पूर्णमसिपूर्णमेभू
 याःसुपूर्णमसिसुपूर्णमेभूयाःसदसिसन्मेभूयाःसर्वमसिसर्वमेभूयाः अक्षितिरसिमांमेक्षेष्टाःइतिजपित्वाकुशाग्रैःप्रागादिपंचदि
 क्षुजलंमंत्रैर्यथालिंगंसंचेत् ॥ तेचमंत्राः ॥ प्राच्यांदिशिदेवाऋत्विजोमार्जयंतां ॥ दक्षिणस्यांदिशिमासाःपितरोमार्जयंतां ॥ अपष्य
 स्पृश्य ॥ प्रतीच्यांदिशिग्रहाःपशवोमार्जयंतां ॥ उदीच्यांदिश्यापओषधयोवनस्पतयोमार्जयंतां ॥ ऊर्ध्वायांदिशियज्ञःसंवत्सरः

प्रजापतिमार्जयतां ॥ इत्येकश्रुत्यापठन्प्रतिदिशं सिक्त्वा कुशाग्रैः
 मार्जनेविनियोगः ॥ ॐ आपो अस्मान्मातरः शुं धयंतु घृतेन नो घृतं च पुनंतु ॥ विश्वं हिरिं प्रवर्हति देवी रुदिदाभ्यः शुचिरापूत
 यद्देशे पशुता नृतं ॥ सुमित्र्यान आप ओषधयः संतु ॥ ॐ इदमापः प्रवर्हत्य किंच दुरितं मयि ॥ यद्वाहमभिदुद्रोह
 भ्रमस्तंहन्मि ॥ इति निर्ऋतिदेशे कुशाग्रैः पः सिंचेत् ॥ ततो ब्रह्मा यजमानवामपार्श्वस्थितपत्न्यं जलौ पूर्णपात्रस्यंजलं ॥ ॐ मा
 हं प्रजापरासिंचयानः सयावरीस्थन ॥ समुद्रे वो निनयानि स्वं पाथो अपीथेति मंत्रमेकश्रुत्यापत्न्यावाचयन् स्वयं वापठन्प्रत्यङ्मुखं
 निषिच्यांजलिस्थजलैः पापापनोदार्थमात्मानं यजमानं पत्नीं च प्रोक्षेत् ॥ पत्नी तज्जलं बर्हिषि निषिंचेत् ॥ अथ वायजमान एव स्ववा
 मपाणावुत्ताने बर्हिर्निधाय तत्र दक्षिणपाणिना पूर्णपात्रमादाय माहं प्रजामित्यनेन तज्जलं प्रत्यङ्मुखं निषिच्यता आपः समुद्रं गच्छं
 तीति ध्यात्वा पाणिस्थजलैरात्मानं पत्नीं च प्रोक्षेत् ॥ ततः कर्ता मेर्वायव्ये स्थितः संस्थाजपेनोपतिष्ठेत् ॥ तद्यथा ॥ अमेत्वन्न इति
 च तसृणां गौपायनालौ पायनावाबंधुः सुबंधुः श्रुतबंधुर्विप्रबंधुश्चैकच्चाक्रषयः ॥ अग्निदेवता ॥ द्विपदा विराड्छंदः ॥ अग्न्युप
 स्थाने विनियोगः ॥ ॐ अमेत्वं नो अंतम उत तत्राता शिवो भवावरूढ्यः ॥ वसुरग्निर्वसुश्रवा आच्छानि क्षिद्युमत्तं मरिचिदाः ॥ सनो
 बोधिश्च धीहर्वसु रुष्याणो अघायतः समस्मात् ॥ तं त्वाशोचिष्ठदीदिवः सुन्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः ॥ ॐ चमेस्वरश्च मे यज्ञोपचते
 नमश्च ॥ यत्तेन्यूनं तस्मै त उपयत्तेति रिक्तस्मेतेनमः ॥ अग्नये नमः ॥ ॐ स्वस्ति ॥ श्रद्धां मे धाय शः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलं ॥

आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन ॥ मानस्तोक इति कुत्सोरुद्रो जगती ॥ विभूतिग्रहणे विनियोगः ॥ ॐ मानस्तोके तनये
 माने आयौ मानो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः ॥ वीरान्मानो रुद्रभा मि तो वधीर्हृविष्मतुः सदृमिन्त्वा हवामहे ॥ इति सुवविलपृष्ठे नैशानी
 गतां विभूतिं गृहीत्वा ॥ ॐ न्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे ॥ कश्यपस्य न्यायुषमिति कंठे ॥ अगस्त्यस्य न्यायुषमिति दक्षिणस्कंधे ॥
 तन्मे अस्तु न्यायुषमिति वामस्कंधे ॥ सर्वमस्तु शतायुषमिति शिरसि धारयेत् ॥ केचित्तूपास्थानात्पूर्वविभूतिधारणमाहुरिति ॥ ततः प
 रिस्तरणानि विसृज्याग्निपरिसमुह्य परिषिच्य विश्वानि न इत्यर्चयित्वानत्वा च पुष्पादिभिरलंकृत्य नैवेद्यं तांबूलं च निवेद्य ब्रह्मणेय
 धोक्त दक्षिणां दक्षिणाभावे हुतशेषं धृतादिसहिरण्यं दत्त्वा ब्रह्माभावे न्यस्यै ब्राह्मणाय दत्त्वा पात्राणि प्रक्षाल्य पूर्वक्रमेण द्वादश उत्सृ
 ज्य यस्य स्मृत्येति श्रीविष्णुनत्वा च मयधृतपवित्त्रग्रंथं विस्त्रस्य यस्य स्मृत्येति विष्णुनत्वा कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा चा मेत ॥ इति स्थाली ० ॥

॥ १०३ ॥ अथ गृह्याग्नेः पुनः संधानम् ॥

श्रीः ॥ पत्न्या सह कृतस्नानादिः कृतनित्यक्रियो देशकालौ संकीर्त्येतावंतं कालं गृह्याग्निं विच्छेदज नितप्रत्यवायपरिहारार्थमेतावत्प्रा
 यश्चित्तममुकप्रत्यान्नायेन करिष्ये इति संकल्प्य ॥ अग्निं विच्छेदकालगणनया स्मृत्युक्तं प्रागुक्तं प्रायश्चित्तं दंपती सह कुर्यातां न पृथ
 क् ॥ समासेतस्मिन्नग्निं विच्छेदेन लुप्तानां सायं प्रातर्होमानां तथा दर्शपूर्णमासस्थालीपाकानां च संपत्तिपर्याप्तमिदं ब्रीह्यादिद्रव्यमा
 ल्यं च ब्राह्मणाय संप्रददे ॥ इति लुप्तसायं प्रातर्होमस्थालीपाकगणनया तत्पर्याप्तं ब्रीह्याद्याज्यं च ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ ततः शुभे काले
 शुचिराचांतः प्राणानां यम्य देशकालौ स्मृत्वा विच्छिन्नस्य गृह्याग्नेः पुनः संधानं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य ॥ स्थंडिलोपलेपनो ह्येव ना

भ्युक्षणयोजकनामाग्निप्रतिष्ठापनानिकृत्वान्वाधानकुयोत् ॥ तद्यथा ॥ द्वेसमिधौगृहीत्वादेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरि
 ज्ये ॥ अस्मिन्नन्वाहितेगौजातवेदसमग्निमिधमेनप्रजापतिप्रजापतिचलाजद्रव्येणचतुर्वारंसूर्यासावित्रीमाज्यद्रव्येण शेषेणस्विष्टकृतमित्या
 दिपरिसमूहनादि ॥ पात्रासादनेविशेषः ॥ प्रोक्षणीसुवंप्रणीतामाज्यपात्रंलाजशूर्पेद्वध्मंबर्हिश्चदधिप्राशनपक्षेदधिचासादये
 मार्जनादि ॥ पत्न्यान्वारब्धइध्माधानाद्याघारांतंकुर्यान्नचक्षुषी ॥ अग्नआयूपीतितिसृणांशतैवखानसाऋषयः ॥ अग्निःपवमा
 नोदेवता ॥ गायत्रीछंदः ॥ पुनःसंधानप्रधानाज्यहोमेविनियोगः ॥ ॐ अग्नआयूषिपवसआसुवोर्जमिपंचनः ॥ अग्निःपवमा
 नेपर्वस्वस्वपाअस्मेवर्चःसुवीर्यं ॥ दधद्रयिमयिपोषंस्वाहा ॥ अग्न ॥ त्वमर्यमावसुश्रुतोन्निस्त्रिष्टुप् ॥ अग्न ॥ ॐ अ
 मर्यमाभमवसियत्कर्त्तृनांनामस्वधावन्गुह्यंविभर्षि ॥ अंजंतेमित्रंसुधितंनगोभिर्धदंपतीसर्मनसाकुणोषिस्वाहा ॥ अग्न ॥ ॐ अ
 प्रजापतेहिरण्यगर्भःप्रजापतिस्त्रिष्टुप् ॥ विनियोगःप्राग्वत् ॥ ॐ प्रजापतेन०स्वाहा ॥ प्रजापतयइ० ॥ अथपत्न्याःप्रक्षालितै
 जलौपतिराज्येनोपस्तीर्यद्विर्लजानोप्यपंचावत्तीतुत्रिरोप्यशूर्पस्थानभिर्धार्यअंजलिस्थानप्यभिधार्य स्वयमुपविष्टएवतिष्ठत्या
 अंजलिंस्वकराभ्यांधृत्वा अर्यमणंवरुणंपूपणमितितिसृणांवामदेवोर्यमानिर्वरुणाग्निःपूषान्निरनुष्टुप् ॥ अग्निपुनःसंधानलाज

होमेविनियोगः ॥ ॐ अर्यमणंनु० सइमांदेवोअर्यमा० स्वाहेतिपठितमंत्रांतेअंजलिमविच्छिंदती अंगुल्यग्रैरंगुलिवामपार्श्वेन
वापत्नीजुहुयात् ॥ एवमग्नेपि ॥ अर्यग्नेग्नेयइदं० ॥ ॐ वरुणंनु० सइमांदेवोवरुणः० वरुणायाग्रयइदं० ॥ ॐ पूषणंनु०
सइमांदेवःपूषा० पूषणेग्रयं० ॥ ततःशूर्पकोणेनशिष्टान्सर्वान् लाजान्पतिःपत्नीवाभ्यात्संप्रजापतिं ध्यायन्जुहुयात् ॥ प्रजाप
तयइदंनमम ॥ लाजानांस्विष्टकृन्नास्ति ॥ तिष्ठन्होमेकृतेउपविश्याज्यंपतिर्जुहुयात् ॥ आनःप्रजामितिचतसृणांसूर्यासावि
त्रीसूर्यासावित्रीआद्याजगतीद्वितीयात्रिष्टुबंत्येद्वेअनुष्टुभौ ॥ अग्निपुनःसंधानाज्यहोमे० ॥ ॐ आनःप्रजां० स्वाहा ॥ सू
र्यासावित्र्याइदं० ॥ एवमग्नेपित्यागः ॥ ॐ अधोर० हा ॥ ॐ इमांत्व० ॥ ॐ सम्राज्ञी० हा ॥ समंजंत्वित्यस्यसूर्यासावित्री
सूर्यासावित्र्यनुष्टुप् ॥ दधिप्राशनेआज्यशेषेणहृदयांजनेवावि० ॥ ॐ समंजंतुवि० ॥ एतेनस्वयंदधिप्राश्रीयात् ॥ आज्यशे
षेणहृदयांजनंवाकुर्यात् ॥ पत्न्यैचदधिप्रयच्छेत् ॥ साचतूष्णींप्राश्रीयात् ॥ स्वहृदयांजनपक्षेपत्न्याअपितूष्णींहृदयांजनं ॥
अथाज्येन यदस्यकर्मणइतिस्विष्टकृतंहुत्वाइध्मसंसंहनादिकर्मशेषंसमापयेत् ॥ अन्नकारिका ॥ उपलेपादिकंकुर्यादाधारांतं
विवाहवत् ॥ विवाहाज्याहुतीर्हुत्वालाजहोमोभवेदिह ॥ गृहप्रवेशनीयाश्चहुत्वास्याद्धृदयांजनं ॥ परिणीत्यादिनास्त्यत्रला
जानावपतिस्वयं ॥ इतिविच्छिन्नस्यगृह्याग्नेः पुनःसंधानं ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३१ ॥

॥ १०४ ॥ अथभुवनेश्वरीशांतिः ॥

श्रीः ॥ रजोदर्शनानंतरंपंचमादिदिनेचंद्रताराद्यानुकूल्येशुचिदेशेसुक्तातयापत्न्यायुतःपतिःप्राञ्जुखलपविश्याचम्यप्राणाना

यम्यदेशकालौस्मृत्वा ममपत्न्याःप्रथमरजोदशनेऽमुकदुष्टमासादिसूचितसकलारिष्टनिरसनकाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थसग्रहम
खांशौनकोक्तांशान्तिकरिव्यइतिसंकल्प्यगणेशपूजनपुण्याहवाचनमातृकापूजननांदीश्राद्धानिकृत्वा शांतंदांतकुडुंबिनमंत्रतं
त्रज्ञमाचार्यं ब्रह्माणंजपहोमार्थमष्टौषट्चतुरोवाक्त्वजोवृत्वांगधादिनापूजयेत् ॥ ततआचार्यआचम्यप्राणानायम्यदेशा
द्युच्चार्यजमानानुज्ञयाआचार्यकर्मकरिव्यइतिसंकल्प्ययदन्नेतिगौरसर्षपविकिरणाद्याचार्यकर्मकृत्वा ॥ भुवनेश्वर्यादिप्रति
संवदंतइतिद्रोणप्रमाणत्रीहिभिर्मध्येतदक्षिणोत्तरतश्चस्पृष्टदेशेमंत्रावृत्त्याराशित्रयंकृत्वा तेनैवक्रमेणराशित्रयेनवमकालकम
भमंकुंभत्रयमाकलशेष्वितिमंत्रावृत्त्यास्थापयेत् ॥ ततःप्रसुवआपइतिनवर्चस्यसूक्तस्यसिंधुक्षितत्रैयमेधोनद्योजगती ॥ कल
शेषूदकपूरणेविनियोगः ॥ ॐ प्रसुवआपोमहिमानमुत्तमंकारुर्वोचातिसदनेविवस्वतः ॥ प्रसससंस्तत्रेधाहिचक्रमुःप्रसृत्वरी
णामतिसिंधुरोजसा ॥ प्रतैरदृद्धरुणोयातवेपथुःसिंधोयद्वाजोऽअभ्यद्रवस्त्वं ॥ भूम्याअधिप्रवतायासिसानुनायदेशामग्रजग
तामिरज्यासि ॥ द्विविस्वनोर्यततेभूम्योपर्यनंतंशुष्ममुदियतिभानुना ॥ अत्रादिवप्रस्तनयंतिवृष्टयःसिंधुर्यदेतिवृषभोनरोरु
वत्॥अभित्वासिंधोशिशुमिन्नमातरोवाश्राअर्धतिपयसेवधेनवः॥ राजैवयुध्वानयसित्वमितिसचौयदासामग्रप्रवतामिनक्षसि॥
इमंमंगेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोमंसचतापरुण्या ॥ असिक्न्यामरुद्धधेवितस्तयाजीकीयेशृणुह्यासुषोमया ॥ १ ॥ तुष्टामं
चाप्रथमंयातवेसजूःसुसत्त्वारसर्वाश्वेत्यात्या ॥ त्वंसिंधोःकुभयागोमतीकुर्मेहुत्वासरथंयाभिरीयसे ॥ ऋजीत्येनीरुशतीमहि

भुवनेश्व.
॥१०४॥

त्वापरिज्रयांसिभरतेरजांसि ॥ अदब्धासिंधुरपसामपस्तमाश्वानचित्रावपुपीवदर्शता ॥ स्वश्वासिंधुःसुरथाःसुवासाहिरण्य
 यीसुकृतावाजिनीवती ॥ ऊर्णावतीयुवतिःसीलमावत्युताधिवस्तेसुभगामधुवृधं ॥ सुखंरथैयुजैसिंधुरश्विनंतेनवाजसनिषद
 स्मिन्नाजौ ॥ महान्ह्यस्यमहिमापेनस्यतेदब्धस्यस्वयंशसोविरप्शिनः ॥ २ ॥ याःप्रवतइत्यस्यवसिष्ठोनद्यःशक्करी ॥ विनियो
 गःप्रागवत् ॥ अंभ्याःप्रवतौ० इत्युदकेनापूर्य ॥ गंधद्वारामितित्रिज्वपिगंधप्रक्षिप्य याओपधीरितिसर्वोपधीः ओपधयःसमिति
 यवानक्षिपेत् ॥ ततोमध्यकुंभेयवत्रीहितिलमाषकंगुश्यामाकमुद्गानक्षिह्वागायत्र्योदुंबरकुशदूर्वारक्तोत्पलचंपकबिल्वविष्णु
 क्रांतातुलसीबहिः शंखपुष्पीशतावर्यश्वगंधानिगुंडीरक्तपीतसर्षपापामार्गपलाशपनसजीवकप्रियंगुधूमव्रीह्यश्वत्थदधिदुग्ध
 घृतपद्मपत्रनीलोत्पलसितरक्तपीतकुरंदकगुंजावचाभद्रमुस्तकाख्यानिद्रान्निशदौपधानिसर्वाणि यथासंभवंवाक्षिपेत् ॥ तत
 स्त्रिषुकलशेषुकांडाकांडादितिदूर्वाः ॥ अश्वत्थेवइतिअश्वत्थोदुंबरसुक्ष्मचूतन्यग्रोधपंचपल्लवान् ॥ स्योनापृथिवीतिगजाश्व
 स्थानरथ्यावल्मीकसंगमद्रदगोष्ठस्थामृदःक्षिह्वा ॥ याःफलिनिरितिपूगीफलानि ॥ सहिरल्लानीतिकनककुलिशनीलपद्मरा
 गमौक्तिकानिपंचरत्नानि ॥ हिरण्यरूपइतिहिरण्यंचक्षिपेत् ॥ युवासुवासाइतिसूत्रेणवाससाचकलशकंठान्वेष्टयित्वागंधा
 क्षतपुष्पमालाभिःकलशान्भूषयेत् ॥ ततःकलशत्रयोपरितेनैवक्रमेणसौवर्णराजतंकांस्यमयंताम्रमयंवैणवंमृन्मयंवायवादिपू
 रितंपालत्रयंपूर्णादवीतिनिधायतदुपरिश्वेतंवस्त्रत्रयंन्यस्यतत्रचंदनादिनाष्टदलानिकुर्यात् ॥ तत्रमध्यमे ॥ गायत्र्याविश्वामि
 त्वाभुवनेश्वरीगायत्री ॥ भुवनेश्वर्यावाहनादौविनियोगः ॥ ॐ तत्सवितु० ॥ भुवनेश्वरीमावाहयामीतिथथाशक्तिसुवर्णनि

मितांभुवनेश्वरीप्रतिमामभ्युत्तारणपूर्वकंस्थापयेत् ॥ तदक्षिणकुंभोपरिवस्त्रे ॥ इन्द्राणीमास्वित्यवृषाकपिरिन्द्राणीपंक्तिः ॥
इन्द्राण्यावाहनादौविनि० ॥ ॐ इन्द्राणीमासुनारिषु० ॥ इन्द्राणीमावाहयामीतितथैवसौवर्णमिन्द्राणीप्रतिमांसंस्थापयेत् ॥
तत उत्तरकलशोपरि ॥ इन्द्रत्वाविश्वामित्रइन्द्रोगायत्री ॥ इन्द्रावाहनेविनियोगः ॥ ॐ इन्द्रत्वावृषभंवयं० ॥ इन्द्रमावाहयामीति
सौवर्णमिन्द्रप्रतिमांसंस्थापयेत् ॥ तत उत्तरमंत्रैरुक्तक्रमेणदेवतान्नयस्यकांडानुसमयेनपदार्थानुसमयेनवापोडशोपचारैः पूजांकु
र्यात् ॥ ततोमध्यकुंभेआचार्योष्टसहस्रमष्टशतंवागायत्रीजप्त्वाश्रीसूक्तंजपेत् ॥ हिरण्यवर्णमितिपंचदशचर्चस्यसूक्तस्यानंदक
र्ममचिह्नीतेंदिरासुताऋषयः श्रीरग्निश्चदेवता ॥ आद्यास्तिस्त्रोनुष्टुभः ॥ तत एकाप्रस्तारपंक्तिः ॥ ततोद्वेत्रिष्टुभौ ॥ ततोष्टावनुष्टुभौ
त्याप्रस्तारपंक्तिः ॥ जपेविनियोगः ॥ ॐ हिरण्यवर्णमित्यादिसूक्तं ॥ तत एकऋत्विग्दक्षिणकुंभेरुद्रसूक्तानिजपेत् ॥ यथा ॥
कद्रुद्रायेतिनवचर्चस्यसूक्तस्यधौरःकण्वोरुद्रोगायत्री ॥ अंत्यानुष्टुप् ॥ तृतीयामैत्रावरुणीजपेविनियोगः ॥ ॐ कद्रुद्रायप्रचेत
सेमीळ्हुष्टमायतव्यसे ॥ वोचेमशंतमहृदे ॥ यथानोअदितिःकरस्यधेनृभ्योयथागवे ॥ यथातोकायरुद्रियं ॥ यथानोमित्रो
वरुणोयथारुद्रश्चिकेतति ॥ यथाविश्वेसजोर्षसः ॥ गाथर्पतिमेधर्पतिरुद्रंजलोपभेपजं ॥ तच्छंयोःसुन्नमीमहे ॥ यःशक्राईव
सूर्योहिरण्यमिवरोचते ॥ श्रेष्ठोदिवानांवसुः ॥ १ ॥ शनःकरत्यर्वेतेसगंमेपायमेज्ये ॥ नृभ्योनारिभ्योगवे ॥ अस्मेसोमश्रिय
मधिनिधेहिशुतस्यनृणां ॥ महिश्रवस्तुविनृगं ॥ मानःसोमपरिवाधोमारतयोजुहुरंत ॥ आनइदोवाजेभज ॥ यास्तैप्रजा
अमृतस्यपरस्मिन्धामन्नतस्य ॥ मूर्धानाभासोमवेनआभूर्पतीःसोमवेदः ॥ २ ॥ इमारुद्रायतवसइत्येकादशचर्चस्यसूक्तस्यकु

॥१०४॥
भुवनेश्व-

1132

त्सोरुद्रआद्यानवजगत्त्रयोत्येद्वेत्रिष्टुभौ ॥ जपेविनियोगः ॥ ॐ इमारुद्रार्थः ॥ आतेपितरितिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यगृत्समदोरुद्र
 स्त्रिष्टुप् ॥ जपेविनियोगः ॥ ॐ आतेपि ० ॥ इमारुद्रायस्थिरधन्वनइतिचतसृणांवसिष्ठोरुद्रस्तिष्ठोजगत्त्रयोत्यात्रिष्टुप् ॥ जपे
 विनियोगः ॥ ॐ इमारुद्रार्थस्थिरधन्वनेगिरःक्षिप्रैष्वेदेवार्यस्वधानै ॥ अर्षाळहायसहमानायवेधसेतिग्मायुधायभरताशणो
 तुनः ॥ सहिक्षयेणक्षम्यस्यजन्मनःसाम्राज्येनद्विव्यस्यचेतति ॥ अवन्वतीरुपनोदुरश्चरानमीवोरुद्रजासुनोभव ॥ यातेद्विद्युद
 वंसष्टादिवसरिक्षमयाचरतिपरिसावृणक्तुनः ॥ सहस्रैस्तेस्वपिवातभेषजामानस्तोकैषुतनयेषुरीरिषः ॥ मानोवधीरुद्रमापरादामा
 तेभूमप्रसितौहीळितस्य ॥ आनोभजबहिषिजीवशंसेययंपातस्वस्तिभिःसदानः ॥ १ ॥ आवोराजानंवामदेवोरुद्रस्त्रिष्टुप् ॥ जपे
 विनियोगः ॥ ॐ आवोराजानमध्वरस्यरुद्रंहोतारंसत्ययजरोदस्योः ॥ अग्निपुरातनयित्वोरचित्ताच्चिरण्यरूपमवसेकृणुध्वं ॥
 तमुष्टुहिभौमोत्रीरुद्रस्त्रिष्टुप् ॥ जपेविनियोगः ॥ ॐ तमुष्टुहियःस्त्रिष्टुःसुधन्वायोविश्वस्यक्षयतिभेषजस्य ॥ यक्ष्वामहेसौम
 नसायरुद्रंनमोभिर्दुवमसुरंदुवस्य ॥ भुवनस्यपितरमृजिश्वारुद्रस्त्रिष्टुप् ॥ जपेविनियोगः ॥ ॐ भुवनस्यपितरंगीभिरा
 भीरुद्रंदिवावर्धयारुद्रमक्तौ ॥ बृहंतमृष्वमजरसुषुम्नमृधग्धुवेमकविनेषितासः ॥ त्र्यंबकंमैत्रावरुणिर्वसिष्ठोरुद्रोनुष्टुप् ॥
 जपेविनियोगः ॥ ॐ त्र्यंबकंयजामहेसुगंधिपुष्टिवर्धनं ॥ उर्वारुक्मिववर्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ अथान्यऋत्विगुत्तर
 कुंभेएकादशावृत्तिभीरुद्रन्यासार्थादिस्मरणपूर्वकंजप्त्वा ॥ नमकानुवाकानामग्नीरुद्रोमहाविराट् ॥ जपेविनियोगः ॥ शंन
 इंद्राग्नीइतिसूक्तंजपेत् ॥ शंनइंद्राग्नीइतिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यवसिष्ठोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् ॥ जपेविनियोगः ॥ ततःकुंभपश्चिमदे

शेस्थंडिलेवरदनामानंअग्निंप्रतिष्ठाप्य तदीशान्यावेद्यादौनवग्रहादौस्तत्तन्मंत्रैरावाह्यषोडशोपचारैःसपूज्य तदीशान्यांप्राग्व
तकुंभंसंस्थाप्यतत्रवरुणमावाह्याग्निसमीपमेत्यान्वाधानंकुर्यात् ॥ अस्मिन्नन्वाहितेनावित्यादिचक्षुषीआज्येनेत्यंतमुक्त्वा नवग्रहान्प्रत्येकममुकसंख्याभिःसमि
त्तिलाज्याहुतिभिः ॥ अधिदेवताप्रत्यधिदेवताश्चप्रत्येकममुकसंख्याभिःसमि० ॥ क्रियमाणेसग्रहमखदुष्टरजोदर्शनशांतिहोमेदेवताप
मुकसंख्याकाभिःसमि० ॥ भुवनेश्वरीप्रतिद्रव्यमष्टसहस्राष्टशताद्यन्यतमसंख्याभिर्दूर्वातिलमिश्रगोधूमपायसाज्याहुतिभिः ॥ क्रतुसाद्रुण्यदेवताःक्रतुसंरक्षकदेवताश्चअ
रिंद्राणीमिंद्रंचप्रत्येकमष्टशताष्टाविंशत्यन्यतमसंख्याभिर्दूर्वातिलमिश्रगोधूमपायसाज्याहुतिभिः ॥ ततःस्विष्टकृतंहुत्वेतिशौनकेनद्राणींद्रयोर्होमानभिधानात्त
द्योयक्ष्यइत्युक्त्वा ॥ अन्येतु गायत्रैवतुहोतव्यंहविरत्रचतुष्टयं ॥ ततःस्विष्टकृतंहुत्वेतिशौनकेनद्राणींद्रयोर्होमानभिधानात्त
योर्होमोनास्तीत्याहुस्तन्मतेऽन्वाधानादौतर्कतर्तनाभावः ॥ ततःस्विष्टकृतंहुत्वेतिशौनकेनद्राणींद्रयोर्होमानभिधानात्त
रींद्राणींद्रेभ्योसुभैत्वेतिमनसाध्यायन् ॥ तूष्णींचतुरश्वतुरोमुष्टीन्निरुप्याहुतिवहुत्वाच्चातिरुप्यगोदुग्धेपायसंश्रपयित्वाज्य
संस्काराद्याज्यभागांतंकुर्यात् ॥ ततोयजमानोदक्षिणतउपविश्यअंगप्रधानदेवताउद्दिश्यएताभ्यइदंनममेतित्यजेत् ॥ ततः
सत्विगाचार्यःनवग्रहेभ्योऽष्टशताष्टाविंशत्यष्टान्यतमसंख्याकाघृताक्ताअर्कादिसमिधस्तिलाज्याहुतीश्चहुत्वाधिदेवताप्रत्यधि
देवताविनायकादिपंचलोकपालेभ्यस्तन्मनसंख्याजुहुयात् ॥ ग्रहाणांयदाष्टौतदान्येभ्यश्चतस्रश्चितिसंप्रदायः ॥ ततोभुवने
श्वरैर्गायत्र्यादधिमधुघृताक्ताभिस्तिसृभिर्दूर्वाभिरकाहुतिरित्येवमष्टसहस्रमष्टशतंवा दूर्वाहुतीर्घृताक्ततिलमिश्रगोधूमाहुतीः

पायसाहुतीर्घृताहुतीश्च जुहुयात् ॥ एवमिन्द्राणीन्द्रयोः प्रागुक्तमंत्राभ्यां क्रमेण तदेव हविश्च तुष्टयं प्रत्येकमष्टशतसंख्यं भुवनेश्वर्या
 अष्टसहस्रपक्षे जुहुयात् ॥ तस्या अष्टशतपक्षेतुतयोरष्टाविंशतिरिति संप्रदायः ॥ पक्षेतयोर्न होमः ॥ ततः स्विष्टकृदादिप्रायश्चित्त
 होमांतं कृत्वा यजमानः इन्द्रादिदिक्पालेभ्यो नवग्रहेभ्यो भुवनेश्वरीन्द्राणींद्रेभ्यः क्षेत्रपालाय च सदीपान्माषभक्तबलीस्तत्तन्मंत्रैर्द
 त्वा पूर्णाहुतिं समुद्रादूर्ध्विरिति तृचस्य गोतमो वामदेवो म्निस्त्रिष्टुप् ॥ पूर्णाहुतिर्होमे विनियोगः ॥
 असमद्रादूर्ध्विः ० ॥ स्वाहा ॥ अग्नय इदं ० ॥ ततः प्रणीता विमो कं कृत्वा भुवनेश्वर्यादिकलशोदकं ग्रहकलशोदकं च पात्रांतरे गृही
 त्वा तेन तत्स्थपंचपल्लवैः सकुशदूर्ध्वधृतनववस्त्रं यजमानं धृतनववस्त्रं कुक्कुचतद्ग्रामस्थां ऋतुमतीं पत्नीं सत्विगुदञ्जुख आचार्योभि
 पिंचदेभिर्मंत्रैः ॥ आपो हि ष्ठेति नवर्चस्यांबरीषः सिंधुद्वीप आपो गायत्री पंचमीवर्धमाना ससमीप्रतिष्ठा अंत्ये द्वे अनुष्टुभौ ॥ अभिषे
 के विनियोगः ॥ आपो हि ष्ठा ० ऋ ० ९ ॥ यै एक इद्विदयत इति गोतमोरहूगण इन्द्र उष्णिक् ॥ य एक इद्विदयते वसुमती यदा शुभे ॥ ईशा
 नो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अंग ॥ त्रिभिष्टुदेवेति सप्तर्चस्य वसिष्ठ आद्यानां त्रयाणामग्निस्ततश्चतुर्णां विश्वेदेवा आद्या गायत्री द्वितीयानुष्टुप्
 ततस्त्रिंशो गायत्र्यः अंत्ये द्वे अनुष्टुभौ ॥ त्रिभिष्टुदेव सवितुः ० ऋ ० ७ ॥ उभयं शृणवच्च नेति प्रगाथो भर्ग इन्द्रो बृहती ॥ उभयं शृण
 वच्च न इन्द्रो अर्वा गिदं वचः ॥ सत्राचर्यामघवा सोमपीतये धियाश विष्टु आर्गमत् ॥ स्वस्तिदा विशो भरद्वाजः शास इन्द्रो नुष्टुप् ॥ स्व

१ नलिदानप्रकार सविस्तरोग्रहयज्ञे द्रष्टव्यः ॥ २ कौस्तुभेशातिरत्नादौ च समुद्रादूर्ध्विरिति सूक्तेन पूर्णाहुतिविधानमस्ति ॥ ३ एतन्मंत्रस्थाने
 इन्द्रो अगतुचेनेति मूलवाक्यानुसारेण कौस्तुभे इन्द्रो अगेति तृचस्य गृत्समद इन्द्रो गायत्री ॥ अभि ० इन्द्रो अगमह ० इत्यृक् त्रय गृहीतमस्ति ॥

119011

स्तिदाविशसतिर्वृत्रहाविमधोवशी ॥ वृषेद्रः परत्तुनः सोमपाअभयंकरः ॥ त्र्यंबकं वसिष्ठो रुद्रो नुष्टुप् ॥ त्र्यंबकं ॥ जा
 तवेदसे कश्यपो जातवेदा अग्निस्त्रिष्टुप् ॥ ॐ जातवेदसे ॥ समुद्रज्येष्ठा इति च तसृणां वसिष्ठ आपस्त्रिष्टुप् ॥ ॐ समुद्रज्येष्ठाः ० ४ ॥
 त्रायंतामिति तिसृणां सप्तर्ष्य आपो नुष्टुप् ॥ त्रायंतामिह ० ३ ॥ इमा आप इति तिसृणामैतरेय आपो नुष्टुप् जगत्यनुष्टुभः ॥ जा
 इमा आपः ० ॥ देवस्य त्वेत्यस्यैतरेयः सविताश्विनौ पूपाचयजुः ॥ अभि ० ॥ देवस्य त्वासवितुः प्रसवे श्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ता
 भ्यामग्नेस्तेजसासूर्यस्य चर्वसेन्द्रस्यैन्द्रियेणाभिषिंचामि ॥ तमीशानं गोतम ईशानो जगती ॥ तमीशानं जगतः ० ॥ त्वमग्ने रुद्रो
 गुत्समदो निजगती ॥ त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्वं शर्धो मारुतं पक्ष ईशिये ॥ त्वं वा तैरुणैर्यासि शंगयस्त्वं पूपाविधतः पांसिनु
 त्मना ॥ तमुष्टुहि भौमात्री रुद्रस्त्रिष्टुप् ॥ तमुष्टुहि ० ॥ भुवनस्य पितरमृजिश्चारुद्रस्त्रिष्टुप् ॥ भुवनस्य पितरं गीर्भिराभीरुद्रं दि
 वातनूरधोरापां पकाशिनी ॥ तयानस्तनुवाशं तमयागिरिशं ताभिचाकशीहि ॥ यज्जाग्रत इति पण्णां शिवसंकल्पमंत्राणां प्रजाप
 तिर्मनस्त्रिष्टुप् ॥ यज्जाग्रतो दूरमदैतुद्वैतं दुससस्य तथैवति ॥ दुरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ येन क
 माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कण्वाति विदथे पृथीराः ॥ यदपर्वयक्ष्ममृतः प्रजानां तन्मे ० ॥ यत्प्रज्ञानं मृतचेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरंतर
 मृतं प्रजासु ॥ यस्मान्न क्रुते किंच न कर्म क्रियते तन्मे ० ॥ येन दंभुतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतं न सर्व ॥ येन यज्ञस्त्रायते सप्तहो
 ता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ यस्मिन्नचः सामयजूंश्च पियस्मिन्प्रतिष्ठितारथनाभा विचाराः ॥ यस्मिंश्चित्तत्सर्वमोतं प्रजा

भुवनेश्व.
॥१०५॥

1106811

नांतन्मेमनःशिवसंकल्पमस्तु ॥ सुषारथिरश्वानिवयंमनुष्यान्नेनीयतेभीशुभिर्वोजिनइव ॥ हृत्प्रतिष्ठयदजिरंयविष्ठंतन्मेम ॥
इंद्रत्वावृषभंवयमितिपंचानांविश्वामित्रइंद्रोगायत्री ॥ इंद्रत्वावृषभंवयंसुतेसोमैहवामहे ॥ सपाहिमध्वोअंधसः ॥ इंद्रक्रतु
विदसुतंसोमैहयपुरुष्टुत ॥ पिबावृषस्यतार्तृपिं ॥ इंद्रप्रणोधितावानयज्ञंविश्वेभिर्देवेभिः ॥ तिरस्तवानविश्यते ॥ इंद्रसोमाः
सुताइमेतवप्रयंतिसत्यते ॥ ततःकलशोदकेनान्येनचोदकेनसुस्नातौदंपतीशुक्लवासोगंधमाल्यादिधृतवोपविशेतां तत्र
धिचंत्वितिपौराणैर्भैरभिपिंचेत् ॥ ततोयजमानोग्निसंपूज्यविभूतिं धृत्वाचार्यादीनगंधपुष्पवस्त्रालंकारादिभिर्यथाश
पत्नीदक्षिणतः ॥ त्यक्त्वासांस्याचार्यस्य ॥ ततोऽन्येभ्यःकृत्वाक्षमाप्ययांतुदेवगणाइतिविसृज्यआचार्यहस्तेप्रतिपाद्याग्निसंपूज्य
क्तिपूजयित्वाचार्यायधेनुंदक्षिणांचदद्यात् ॥ ततोऽन्येभ्यःकृत्वाक्षमाप्ययांतुदेवगणाइतिविसृज्यआचार्यहस्तेप्रतिपाद्याग्निसंपूज्य
हृषीठदेवतानांभुवनेश्वर्यादीनांचोत्तरपूजांपंचोपचारैःकृत्वाक्षमाप्ययांतुदेवगणाइतिविसृज्यआचार्यहस्तेप्रतिपाद्याग्निसंपूज्य
गच्छगच्छसुरश्रेष्ठेतिविसर्जयेत् ॥ ततोब्राह्मणामहाशांतिपठेयुः ॥ सायथा ॥ आनोभद्राइतिदशानांगोतमोराहृगणो
विश्वेदेवाआद्याःपंचजगत्यः षष्ठीविराट्स्थाना सप्तमीजगतीततस्तिस्त्रस्त्रिष्टुभः ॥ स्वस्तिनोमिमीतामितिपंचानांस्वस्त्यात्रे
योविश्वेदेवाआद्यास्तिस्रस्त्रिष्टुभस्ततोद्वेअनुष्टुभौ ॥ शनइंद्राग्नीतिपंचदशानांवसिष्ठोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् ॥ शंवतीरितिपंचानां
वसिष्ठोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् ॥ त्यमूष्वितितिसृणांताक्ष्योरिष्टनेमिस्ताक्ष्यस्त्रिष्टुप् ॥ तच्छंयोःशंयुर्विश्वेदेवाःशकरी ॥ सर्वेषांशां
तिपाठेविनियोगः ॥ ॐ आनोभद्राः १० ॥ ॐ स्वस्तिनो ५ ॥ ॐ शन्नइंद्राग्नी १५ ॥ ॐ त्यमूष्वजिनं ३ ॥ तच्छंयो

॥३९३॥

113624

॥ १०५ ॥ अथगर्भाद-
लौस्मन्तः ॥ ॥ ६९ ॥

॥ १०५ ॥ अथगर्भाद-
लौस्मन्तः ॥ ॥ ६९ ॥

11 53 11

11 53 11

11 53 11

11 53 11

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

1190311

118611

118611

वेस्वाहा ॥ विष्णवइदंनमम ॥ नेजमेपेतितिसुणांत्वष्टाविष्णुरनुष्टुप् ॥ गर्भाधानप्रधानाज्यहोमेविनियोगः ॥ ॐ नेजमेपपरा
 पतसुपुत्रःपुनरापत ॥ अस्यैमेपुत्रकांमायैगर्भमाधेहियःपुमान्त्स्वाहा ॥ विष्णवइदंनमम ॥ ॐ यथेयंपृथिवीमह्युत्तानागर्भ
 मादुधे ॥ एवंतंगर्भमाधेहिदशमेमासिसूतवेस्वाहा ॥ विष्णवइदंनमम ॥ ॐ विष्णोःश्रेष्ठेनरूपेणास्यांनार्यागवीन्यां ॥ पुमा
 संपन्नानाधेहिदशमेमासिसूतवेस्वाहा ॥ विष्णवइदंनमम ॥ यत्कर्मास्तेजुहुमस्तन्नोअस्तुवयंस्यामपतयोरर्या
 मेविनियोगः ॥ ॐ प्रजापतेनत्वदुतान्यन्योविश्वजातानिपरिताबभूव ॥ यत्कर्मास्तेजुहुमस्तन्नोअस्तुवयंस्यामपतयोरर्या
 णांस्वाहा ॥ प्रजापतयइदं ॥ एवंसप्ताज्याहुतीहुत्वा ॥ अपनःशोशुचदधमित्यष्टर्चस्यसूक्तस्यकुत्सोग्निर्गायत्री ॥ पत्न्यामू
 र्धाभिमर्शनेविनियोगः ॥ ॐ अपनःशोशुचदधमगैशुशुगध्यारयि ॥ अपनःशोशुचदधं ॥ सुक्षेत्रियासुगातुयार्चसुयार्चयजा
 महे ॥ अपनःशो ॥ प्रयद्भंदिष्टएपांप्रास्माकांसश्चसूर्यः ॥ अपनःशो ॥ प्रयत्तैअग्नेसूरयोजायैमहिप्रतैवयं ॥ अपनःशो ॥ द्वि
 प्रयदुग्नेःसहस्वतोविश्वतोयंतिभानवः ॥ अपनःशो ॥ त्वंहिविश्वतोमुखविश्वतःपरिभूरसि ॥ अपनःशो ॥ सूक्तांतेप्रागं
 पो नोविश्वतो मुखानि नोवेवपारय ॥ अपनःशो ॥ सनःसिंधुमिवनावयातिपर्पास्वस्तये ॥ अपनःशोशुचदधं ॥ जपेविनियोगः ॥ ॐ
 गुलिनान्यङ्मुखेनहस्तेनपत्न्यामूर्धानमभिमृश्य ॥ याःफलिनीरित्यस्याथर्वणोभिषगोपधयोनुष्टुप् ॥ वधेनदस्युमितिपण्णांवसु
 याःफलिनीर्याअंफलाअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुंचंत्वंहसः ॥ एतांजपित्वा ॥ वधेनदस्युमितिपण्णांवसु
 श्रुतोन्निस्त्रिष्टुप् ॥ अग्न्युपस्थानेविनियोगः ॥ ॐ वधेनदस्युप्रहिचातयस्ववयःकृष्णानस्तन्वेहस्वाये ॥ पिपिपियत्सहसस्पुत्रेड्

वान्सोअग्नेपाहिनृतमवाजैअस्मान् ॥ वयंतेअग्नउक्थैर्विधेमवयंहव्यैःपावकभद्रशोचे ॥ अस्मेरयिविश्ववारंसमिन्वास्मेविश्वा
निद्रविणानिधेहि ॥ अस्माकमग्नेअध्वरंजुषस्वसहसःसूनोत्रिषधस्थहव्यं ॥ वयंदेवेषुसुकृतःस्यामशर्मणानस्त्रिवरूथेनपाहि ॥
विश्वानिनोदुर्गहाजातवेदुःसिंधुननावादुरितातिपर्वि ॥ अग्नेअत्रिवन्नर्मसागृणानोइस्माकंबोध्यवितातनूनां ॥ यस्त्वाहदाक्री
रिणामन्यमानोमर्त्यमर्त्योजोहवीमि ॥ जातवेदोयशोअस्मासुधेहिप्रजाभिरग्नेअमृतत्वर्मइयां ॥ यस्मैत्वंसुकृतंजातवेद
उलोकमग्नेकृणवस्योनं ॥ अभिनंसपुत्रिणंवीरवतंगोमंतरयिनंशतेस्वास्ति ॥ अग्निस्तुविश्रवस्तममितिद्वयोवसूवयोभिरनुष्टुप् ॥
अद्व्युपस्थानेविनियोगः ॥ ॐ अग्निस्तुविश्रवस्तमंतुविब्रह्माणमुत्तमम् ॥ अतूर्तेश्रावयत्यतिपुत्रंददातिदुशुषे ॥ अग्निर्देदा
तिसत्यतिसासाह्वोयुधानृभिः ॥ अग्निरत्यंरघुष्यदुंजतारमपरजितं ॥ इत्यष्टाभिरग्निमुपस्थाय ॥ उदीर्ष्वेतिद्वयोःसूर्यासा
वित्रीसूर्यासावित्रीआद्यात्रिष्टुबंत्यानुष्टुप् ॥ भार्यायादक्षिणनासापुटेध्वगंधाया(दूर्वायावा)रससेचनेवियोगः ॥ ॐ उदीर्ष्वी
तःपतिवतीह्येष्टाविश्वारवंसुनर्मसागीभिरीळे ॥ अन्यामिच्छपितृषद्व्यंक्तांसतेभागोजनुषातस्यविद्धि ॥ उदीर्ष्वीतोविश्वार
सोनर्मसेळामहेत्वा ॥ अन्यामिच्छप्रफुर्व्यंष्टंजायांपत्यासृजस्वाहा ॥ इतिवामभागोपविष्टायाभार्यायादक्षिणनासाबिलेश्व
गंधादिरसंसिक्त्वातद्रसेउदंगतेतामाचमय्योपेयात् ॥ ततःस्विष्टकृदादिहोमशेषसमाप्य ॥ सूर्योनोदिवस्यात्वितिपंचर्वस्य
सूक्तस्यचक्षुःसूर्योगायत्री ॥ सूर्योपस्थानेविनियोगः ॥ ॐ सूर्योनोदिवस्यात्तु० ॥ ऋ० ५ ॥ इदानींशिष्टानस्यंदत्वैवस्विष्टकृ

१ अत्रैवसूर्योपस्थानंनारायणभट्टसमतंपरंतुतैरेवइदानींशिष्टाअंतैकुर्वतीत्युक्तत्वादंताएवोपन्यस्तमस्ति ॥

दादिहोमशेषंसमापयति ॥ (ततोरान्नौविहितःसमंत्रकोविधिग्रेल्लिखितस्तान्मंत्रान्केवलमत्रपठंतिशिष्टाः ॥ उपगमने
 चायंक्रमः ॥ ॐगंधर्वस्यविश्वावसोर्मुखमसीतिमंत्रेणहोमोक्तऋष्यादिभिर्विष्णुर्योनिमित्तिसुभिर्नेजमेपेतितिसुभित्सुभिस्तिसुभिरं
 गुलीभिर्योनिमभिमृश्य ॥ तांपूषन्नित्यस्यसूर्यासावित्रीसूर्यासावित्रीत्रिष्टुप् ॥ जपेवि० ॥ ॐ तांपूषंच्छिवर्तमामेरेयस्वयस्यां
 बीजमनुष्यावपति ॥ यानेऊरुर्बुशतीविश्रयातेयस्यामुशंतःप्रहरामशेषे ॥ योगर्भमित्यस्यवसिष्ठःपर्जन्योगायत्री ॥ जपेवि० ॥
 ॐ योगर्भमोषधीनांगवोकृणोत्यवतां ॥ पर्जन्यःपुरुषीणां ॥ अहंगर्भप्रजावान्प्राजापत्योभर्गइंद्रोवात्रिष्टुप् ॥ जपेविनि० ॥
 ॐ अहंगर्भमदधामोषधीष्वहंविश्वेषुभुवनेष्वंतः ॥ अहंप्रजाअजनयंपृथिव्यामहंजनिभ्योअपरीधुपुत्रान् ॥ इतित्रीन्मंत्रान्ज
 पित्वासकृदुपगच्छेत् ॥ ततःप्राणैरेतौदधाम्यसावित्यनुप्राण्य ॥ यथाभूमिरग्निगर्भायथाद्यौरिंद्रेणगर्भिणी ॥ वायुर्यथादि
 शांगर्भएवंतेगर्भदधाम्यसावितिल्लीहृदयमभिमृश्याचामेत् ॥ मंत्रद्वयेपिअसावित्यस्यस्थानेप्रथमैकवचनांतंस्वनामवदेत् ॥ ॥ ६३ ॥

॥ १०६ ॥ अथनारायणबलिः ॥
 अस्मिन्कर्मणिशतंदशवाब्राह्मणाभोज्याः ॥ इतिगर्भाधानप्रयोगः ॥

श्रीः ॥ शुक्लैकादश्यांनदीतीरादिशुचिदेशेस्नानादिनित्यक्रियातेप्राणायामादितिथ्यादिसंकीर्तनांते मदीयकुलाभिवृद्धिप्र
 तिवंधकप्रेतस्यप्रेतत्वनिवृत्तिद्वाराश्रीपर० नारायणबलिकरिष्यइतिसंकल्प्य ॥ महीद्यौरित्यादिविधिनास्थापितकलशद्वये
 सुवर्णादिजातीयप्रतिमयोर्विष्णुमावाहयामिवाह्यामीत्यावाह्य पुरुषसूक्तेनयमायसोममितिपोडशोपचारैःपूज

येत् ॥ (अत्रकेचित्तुंभंपंचकेब्रह्मविष्णुशिवयमप्रेतान्पूजयंति) ततस्तत्पूर्वतोदर्भेणतूष्णीलेखामुल्लिख्यतत्रदक्षिणाग्राङ्कुशानास्तीर्यतेषुशुंघतांविष्णुरूपीप्रेतइतिदशस्थानेषुदक्षिणसंस्थमपोनिनीय मधुघृतप्लुतान्दशपिंडान्सतिलान्काश्यपगोत्रचैत्रप्रेतविष्णुदैवतायतेपिंडइतिदक्षिणामुखःप्राचीनार्वातीदक्षिणाग्नेषुकुशेषुपराचीनपाणिनासव्यंजान्वाच्य विष्णुरूपप्रेतं ध्यायन्दद्यात् ॥ गंगादिभिस्तान्भ्यर्च्यप्रवाहणांतंकृत्वानद्यादौक्षिपेत् ॥ तस्यामेवरात्रौ श्वःकरिष्यमाणश्राद्धेक्षणःक्रियतामित्येवमेकंत्रीन्पंचवेत्येवमयुग्मान्ब्राह्मणान्श्राद्धोद्देशेननिमंज्योपोषणंकुर्यात् ॥ श्वोभूतेमध्याह्नेविष्णुमभ्यर्च्यविष्णुरूपिणंप्रेतमुद्दिश्य (विष्णुब्रह्मशिवयमप्रेतान्वोद्दिश्य) एकोद्दिष्टविधिनापादप्रक्षालनादितृप्तिप्रश्नांतंकृत्वा ॥ ब्राह्मणसमीपेउल्लेखनाद्यवनेजानांतंतूष्णींकृत्वा विष्णवे ब्रह्मणे शिवाय सपरिवाराययमाय नाममंत्रैःविष्णोअयंतेपिंडइतिचतुरःपिंडान्दत्त्वा विष्णुरूपप्रेतं ध्यायन्काश्यपगोत्रदेवदत्तविष्णुरूपप्रेतअयंतेपिंडइतिपंचमंपिंडंचदत्त्वाचर्चनादिप्रवाहणांतंकृत्वा आचांतान्दक्षिणादिभिःसंतोष्य तेभ्येकस्मैगुणवतेप्रेतबुद्ध्यावस्त्राभरणगोहिरण्यादीनिदत्त्वा भवंतःप्रेतायतिलोदकांजलिदानंकुर्वत्वितिदद्युः ॥ ततःअनेननारायणवलिकर्मणाभगवान्विष्णुरिमंदेवदत्तंप्रेतंशुद्धमपापंकर्मोहकरोत्वितितान्वाचयित्वाविसृज्य ततःस्नात्वाभुंजीतेति ॥ निर्णयसिंधौतुंभंपंचकेविष्णुब्रह्मशिवयमप्रेतेतिपंचकंपूजयेत् ॥ स्वर्णरूप्यताम्रलोहमयाश्चत्वारःप्रेतोदर्भमयः ॥ अग्निप्रतिष्ठाप्यश्रपितचरुंनारायणायपुरुषसूक्तेनषोडशाहुतिभिर्हुत्वादशपिंडांतेपुरुषसूक्ताभिर्मंत्रितशंखोद

श्रोभूतेएकोद्विष्टविधिनाश्राद्धपंचकंकरिष्यइतिसंकल्प्यविप्रपंच
॥ ७३ ॥

॥ ७३ ॥

॥ ७३ ॥

केनप्रेतंप्रत्युचंतर्पयेत् ॥ विष्ण्वादिचतुर्भ्योबलिंदद्यात् ॥ शेषपूर्ववत् ॥ शेषपूर्ववत् ॥ ७३ ॥

केपाद्यादिपिंडदानांतेतर्पणादीतिविशेषउक्तः ॥ ७३ ॥

॥ १०७ ॥ अथनागत्रालिः ॥

परिशिष्टोक्तनारायणबलेःस्मृत्यर्थसारानुसारीप्रयोगः ॥ ७३ ॥

श्रीः ॥ सतुसिनीवाल्यांपौर्णमास्यांपंचम्यामाश्लेषायुक्तनवम्यांवाकार्यः ॥ कर्तापर्पदंप्रदक्षिणीकृत्यनत्वातदग्रेगोचूपनिष्क्रयं

निष्कतदर्धवानिधाय सभार्यस्यममेहजन्मनिजन्मातेरेवाज्ञानादज्ञानाद्वाजातसर्पवधदोषपरिहारार्थंप्रायश्चित्तमुपदिशंतुभवं

तः ॥ सर्वेधर्मविवेक्तारइतिश्लोकान्पठित्वामामनुगृह्णंतुभवंतइतिप्रणमेत् ॥ तैश्चतुर्दशकृच्छ्रप्रायश्चित्तंयथोक्तप्रत्या

पूर्वोत्तरांगसहितेनाचरितेनतवशुद्धिर्भविष्यतीत्युपदिष्टोदेशकालौसंकीर्त्य पर्पदुपदिष्टंचतुर्दशकृच्छ्रप्रायश्चित्तंयथोक्तप्रत्या

स्नायेनाचरिष्येइतिसंकल्पपूर्वकंवपनादिविधिनातदाचरेत् ॥ वपनासंभवेद्विगुणःकृच्छ्रप्रत्याम्नायः ॥ पूर्वोच्चरितएवंगुणवि

शिष्टायांपुण्यतिथौममसर्पवधदोषपरिहारार्थंब्राह्मणायलोहदंडदानं (तन्मूल्यदानंवा) करिष्यइतिसंकल्प्यब्राह्मणंसंपूज्य

स्वस्त्यस्त० इमंलोहदंडंसर्पवधदोषहंसंप्रददे प्रतिगृह्यतां देवस्त्यत्वास

वितुः० प्रतिगृह्णामीतिविप्रः ॥ ततोर्गुर्वाज्ञालब्ध्वाप्रियंगुर्ग्रीहिगोधूमतिलपिष्टेब्वेकतमपिष्टेनसर्पाकृतिकृत्वाशूर्पेनिधायसर्प

प्रार्थयेत् ॥ एहिपूर्वमृतसर्पअस्मिन्पिष्टेसमाविश ॥ संस्कारार्थमहंभक्त्यार्थंप्रायश्चित्तमिसमाहितः ॥ ततः ॥ भुजंगेशायविद्महे

सर्पजातायधीमहि ॥ तन्नोनागःप्रचोदयादितिआवाहनादि ॥ १७४ ॥
 लिंगगुहाणममाभ्युदयंकुरु इतिपायसादिनावलिंसमर्च्य हस्तौपादौप्रक्षाल्याचामेत् ॥ ततःशुद्धभूमौस्थित्वाप्राणानायम्यसंक
 कल्प्यस्थंडिलेऽलौकिकाग्निप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् ॥ अस्मिन्सर्पसंस्कारहोमकर्मणिदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्ये इतिसं
 स्मिन्नन्वाहितेमावित्याद्याधारचक्षुष्यंतमुक्त्वात्रप्रधानं अग्निं वायुं सूर्यं एताःप्रधानदेवताआज्येन भूर्भुवःस्वरितिसर्पमुखे
 प्रजापतिमाज्येन आज्यशेषेणसर्पसद्योयक्ष्ये ॥ समिधावन्मावाधाय ततोऽग्नेरग्निदिशिभूमौजलेनप्रोक्ष्यचितिकृत्वाअग्निचितिं
 चपरिसमुह्यआग्नेय्याग्रकैर्दग्धैःपरिस्तीर्यपरिपिच्यपद्मपात्राप्यासाद्येध्माधानाद्याधारचक्षुष्यंतंकुर्यात् ॥ ततःसर्पगृहीत्वाचित्या
 मारोप्यापःश्रोत्रंचस्पृष्ट्वाअग्निसमीपमेत्य ॥ ततःप्रधानहोमः ॥ व्यस्तसमस्तव्याहृतीनांविश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजप्रजापतय
 ऋषयःअग्निवायुसूर्यप्रजापतयोदेवताःगायत्र्युष्णिगनुष्टुप्बृहत्यश्छंदांसिसर्पसंस्थापनप्रधानाज्यहोमेवि० ॥ ॐ भूःस्वाहाअ
 भ्यर्चय इदंनममेत्यादिव्यस्तव्याहृतित्रयेणाज्याहुतीरमौहुत्वा ॥ सुवंतत्रैवनिधाययज्ञपात्राणिबर्हिषिनिदध्यात् ॥ आज्यशेषंस्त्रवेणैव
 सर्पदेहेनिषिंचेत् ॥ नात्रस्विष्टकृदादि ॥ अग्नेरक्षाणोअंहसःप्रतिष्मदेवरीपतः ॥ प्रपिष्टैरुजरोदह ॥ ततउपस्थानं ॥ ॐ नमोअस्तुसर्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु ॥ ये
 क्षमाप्यहस्तगृहीतैश्चमसजलैःसहस्तव्याहृत्यासर्पपाणिनाभ्युक्ष्य ॥ अग्नेरक्षाणोवसिष्ठोऽग्निर्गायत्रीसर्पायामिप्रदानेविनि० ॥

अंतरिक्षेयेद्विवितेभ्यःसर्पेभ्योनमः ॥ येदोरोचनेद्विवोयेवासूर्ध्वस्यरश्मिषु ॥ येषामप्सुषदःकृतंतेभ्यःसर्पे ॥ याइर्षवोयातु
 अंतरिक्षेयेद्विवितेभ्यःसर्पेभ्योनमः ॥ अथपौराणमंत्राः ॥ कर्कोटकनमस्तेस्तुशंखपालनमोस्तुते ॥ त्वया
 धानानांयेवावनसतीश्रनु ॥ येवावटेपुशेरतेतेभ्यःसर्पेभ्यो ॥ सर्वेवटेशयाःसर्पाःपुण्यमूर्तेनमोस्तुते ॥ त्वयैक
 नागराजमहादेवादिव्यरूपायतेनमः ॥ अफणाःफणिनोयेचसविपानिर्विपाश्चये ॥ सर्वेवटेशयाःसर्पाःपुण्यमूर्तेनमोस्तुते ॥ धृतैक
 भगवतेश्रीमद्वासुदेवायनिर्मितं ॥ स्वभोगैर्नैवपर्यंकमायतंभोगिनांवर ॥ त्वयेयंजगतीस्वामिन्स्वफणामंडलोपरि ॥ जन्मांतरेतथै
 देशेह्यणुवत्तस्मैतुभ्यंनमोनमः ॥ इतिदह्यमानंसर्पमुपस्थाय ॥ त्राहिन्त्राहिमहाभोगिन्सर्पोपद्रवदुःखतः ॥ संततिंदेहिमेपुण्यां
 निर्दुष्टांदीर्घदेहिनीम् ॥ प्रपन्नंपाहिमांभक्त्याकृपालोदीनवत्सल ॥ ज्ञानतोऽज्ञानतोवापिकृतःसर्पवधोमया ॥ जन्मांतरेतथै
 तस्मिन्मत्पूर्वैरथवाविभो ॥ तत्पापंनाशयक्षिप्रमपराधंक्षमस्वमे ॥ इतिप्रार्थ्यस्नात्वागत्य व्याहृतिभिःक्षीराज्येनाग्निंसंप्रोक्ष्य
 हुतेसर्पजलेनाग्निसिंचेत् ॥ नात्रास्थिसंचयनं ॥ इदंसर्वसव्येनैवकार्यं ॥ ततःस्नात्वाचम्यगृहंगच्छेत् ॥ कर्तासभार्थस्त्रिरात्र
 माशौचंब्रह्मचर्यंचकुर्यात् ॥ बौधायनमतेत्वेकरात्राशौचं ॥ ततश्चतुर्थेहनिसचैलंस्नात्वाष्टौविप्रान्निमंत्र्य आचम्यप्राणानाय
 म्यदेशकालौसंकीर्त्य नागबल्यंगविहितंब्राह्मणभोजनंकरिष्ये इतिसंकल्प्य ॥ सर्पस्वरूपिणेब्राह्मणायइदंतेपाद्यं एवंअनंतस्व ॥
 शेषस्व ० कपिलस्व ० नागस्व ० कालिकस्व ० शंखपालस्व ० भूधरस्वरूपिणे ० इतिक्रमेणतेषांपादौप्रक्षाल्यतानाचमय्यस्वयंचा
 चम्य विप्रान्प्राङ्मुखानुदङ्मुखान्वोपवेदय ॥ सर्पस्वरूप ० भूर्भुवःस्वरिदमासनंआस्यतां ॥ एवमनंतादिभ्यः ॥ सर्पस्थानेक्षणः
 क्रियतां ॥ प्रामोतुभवान् ॥ एवमनंतस्थानेइत्यादि ॥ भोःसर्पस्वरूप अयंतेगंधः ॥ ततःपुष्पधूपदीपवस्त्रादि ॥ एवमन्येषाम

1196311

॥३७४॥

पिपूजनांतेचतुरस्त्रमंडलेषुपात्राणिनिधायपायसभक्ष्यादीन्परिविण्यसावित्र्याप्रोक्ष्यपरिविच्य सर्पायेदमन्नममृतरूपंपरिविष्टं
परिवेक्ष्यमाणंचातुसेःस्वाहासंपद्यतांनमः ॥ एवंसर्वेषां ॥ आचांतेषु प्रागग्रदर्भेषु भोःसर्पअयंतेबलिर्नममेत्यादिनाममंत्रैःपिं
डरूपान्पायसवलीन्दत्वावत्त्वादिभिरभ्यर्च्यविम्रेभ्यस्तांबूलंदक्षिणांचदत्वाविसर्जयेत् ॥ इदमपिसर्वसर्वसर्वेनैवकार्यं ॥ ततोमहीद्यौ
भ्यःसुप्रीताःप्रसन्नाःसंतुमेसदा ॥ विष्णुलोकेचयेसर्पावासुकिप्रमुखाश्चये ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥
चयेसर्पास्तक्षकप्रमुखास्तथा ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥
आस्तिकेनाभिरक्षिताः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥
समाश्रिताः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥
हि ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥ नमोस्तुतेभ्यः ॥
स्तु ॥ ॥ एवंस्तुत्वाचार्यसंपूज्य कृतस्यसर्पसंस्कारकर्मणःसांगतासिद्ध्यर्थमहेमयंनगंसकलशंसवस्त्रंसदक्षिणंतुभ्यमहंसंप्रददे ॥
अनेनस्वर्णनागदानेनअनंतादयोनागदेवताःप्रीयतां ॥ ततस्तस्मैसवृषभांकृष्णांगतन्निष्कयंवादद्यात् ॥ ततोदंपतीवत्त्वा
लंकारादिभिर्न्याविभवमन्यान्ब्राह्मणांश्चसंपूज्ययस्यस्मृत्याचनामोक्षयेति ॥ मयायत्कृतंसर्पसंस्काराख्यंकर्मतद्भवतांब्रा
ह्मणानांवचनात् श्रीपरमेश्वरप्रसादात्सर्वपरिपूर्णमस्तु ॥ तथास्त्वितितेब्रूयुः ॥ ततःकर्मणःसांगतायैयथाशक्तिब्राह्मणान्संभो
ज्यभूयसीदत्वाकर्मसमापयेत् ॥ कृत्वासर्पस्यसंस्कारमनेनविधिनानरः ॥ विरोगोजायतेक्षिप्रंसंततिलभतेशुभां ॥ इतिनागवलिः ॥

॥ १०८ ॥ अथदत्तपुत्रविधानम् ॥

श्रीः ॥ अथबह्वृचाधिकारिकःशौनकोक्तरीत्यापुत्रप्रतिग्रहप्रयोगः ॥ पूर्वद्व्युःकृतोपवासः ॥ वाससीकुंडलेछत्रमुष्णीपंचांगुलीयक
म् ॥ आचार्यधर्मसंयुक्तवैष्णववेदपारगम् ॥ बर्हिःकुशमयंचैवमिधमंपालाशमेवच ॥ एतान्याहुत्यबंधूंश्चशतीनाहुत्ययत्नतः ॥
यवित्रपाणिःप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यममाप्रजत्वप्रयुक्तपैतृकऋणापाकरणपुंनामनरकत्राणद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थशौ
नकोक्तविधिनापुत्रप्रतिग्रहंकरिष्ये ॥ तदंगत्वेनस्वस्तिपुण्याहवाचनमाचार्यवरणमाचार्यस्यमधुपर्कणार्हणंविष्णुपूजनंब्राह्मणे
भ्योबंधुवर्गेभ्यश्चान्नदानंचकरिष्ये ॥ तत्रादौनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थगणपतिपूजनंकरिष्येइतिसंकल्प्य आचार्यवरणांतंकृतवामधु
पर्कोतेविष्णुसंपूज्य पितृणांकुलदेवतानांगुरूणांचप्रीत्यर्थंब्राह्मणान्वंधूंश्चभोजयेत्संकल्पयेद्वा ॥ ततआचार्यःदेशकालौसंकी
र्त्ययजमानानुज्ञयापुत्रप्रतिग्रहांगत्वेनविहितहोमंकरिष्येइतिसंकल्प्य अग्निप्रतिष्ठापनांतंकृतवान्वाधानंकुर्यात् ॥ चक्षुषीआ
ज्येनेत्यंते अन्नप्रधानंसकृदग्निषड्वारंसूर्यासावित्रीचरुणाअग्निवायुसूर्यप्रजापतिंचाज्येन शेषेणस्विष्टकृतमित्यादिअन्वाधाया
ष्टाविंशतिमुष्टींस्तूष्णीनिरुप्यतावत्कृत्वःप्रोक्ष्यआज्योत्पवनांतंकृत्वा ब्राह्मणैःसहदातुःसमक्षंगत्वातंप्रत्यस्मैपुत्रंदेहीतिब्राह्मण
द्वारायाच्चांकारयेत् ॥ ततोदाताआचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंपुत्रदानंकरिष्येइतिसंकल्प्य ग
णपतिसंपूज्ययथाशक्तिचंदनादिनाप्रतिग्रहीतारंसंपूज्य ॥ येयज्ञेनेतिपंचानानाभावेदिष्टोमानवऋषिःविश्वेदेवादेवताआद्या
श्चतस्रस्त्रिष्टुभःपंचम्यनुष्टुप् पुत्रदानेचिनियोगः ॥ ॐ येयज्ञेनदक्षिणयासमक्ता० ऋचः ५ ॥ इत्यंतेइमंपुत्रंतवपैतृकऋणापा

करणपुंनामनरकत्राणसिद्ध्यर्थं आत्मनश्च श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं तुभ्यमहंसंप्रदेनमम प्रतिगृह्णतु पुत्रं भवानित्येते प्रतिग्रहीतृहस्ते
साक्षतं जलं क्षिपेत् ॥ ततः प्रतिग्रहीता देवस्य त्वेति मंत्रेण हस्तद्वयेन प्रतिगृह्य स्वाके उपवेक्ष्य ॥ अंगादंगात्संभवसिंहदयादधिजा
यसे ॥ आत्मा वै पुत्रनामासि स जीवशरदः शतमिति शिशुमूर्धनि आजिघ्रेत् ॥ ततो युवं वस्त्राणीति वस्त्रं परिधात्य तूष्णीमुष्णीपं
वद्धा कुंकुमादिना तिलकं कृत्वा हिरण्यरूप इत्यादिना कुंडलाभ्यामलंकृत्य छत्रेणाच्छादितं वालं नृत्यगीतवाद्यैः स्वस्तिनो मिमीता
स्वयमुपविशेत् ॥ तत आचार्यो वहिं रास्तरणाद्याज्यभागांते च रुमवदानविधिनावदाय ॥ यस्त्वाहदाकीरिणा० स्वस्ति स्वाहा इति ऋक् इयं क्रमेण पठित्वा
सुश्रुतऋपिः अग्निदेवता त्रिष्टुप् छंदः पुत्रप्रतिग्रहांगहोमेचि० ॥ ॐ यस्त्वाहदाकीरिणा० स्वस्ति स्वाहा इति ऋक् इयं क्रमेण पठित्वा
स्वाहेति एकमेवावदानं जुहुयात् ॥ यजमानः अग्नय इदं० ॥ पुनरवदाय० ॥ तुभ्यमग्नेऽर्पयन्नहन्० स्वाहा सूर्यासावित्री सूर्यासावित्र्योव
दं धूर्वाय० ऋचः ५ ॥ पुनः पुनरवदाय पंचभिर्जुहुयात् ॥ सर्वत्र सूर्यासावित्र्या इदं० इति त्यागः ॥ ततो व्यस्तसमस्तव्याहृति
भिराज्यं हुत्वा स्विष्टकृदादि होमशेषं समाग्य आचार्याय धेनुं दत्वा दशत्रीन्वात्रा ह्मणान् भोजयेत् ॥ कर्मणः संपूर्णतां वाचयित्वा
विप्राशिपो गृहीत्वा ईश्वरार्पणं कुर्वीत ॥ इति संस्कारकौस्तुभसंगृहीतः शौनकोक्तपुत्रप्रतिग्रहप्रयोगः ॥

॥३॥

लोभनसीमंतोन्नयनानि ॥ १०॥ जिकगाभिंकदोषपरिहा

॥ १०६ ॥ सुसज्जनाया मुल्यत्स्यमाणाय विपिपिशितरुधिरात्र
अस्यां मम भायाया मुल्यत्स्यमाणाय विपिपिशितरुधिरात्र

मितं (समानरूपवत्सायागोरन्यस्यावाक्षीरेणनिमित्तं) दधिनिक्षिप्य तदुपरिलिङ्गवद्यवंप्रागग्रंतसार्धयोरंडद्वयवन्माषद्वयंच
निधाय किंपिबसीतितिःपतिःपत्नीपृच्छेत् ॥ साचपुंसवनमितित्रिरुक्त्वासयवमापंतदधिनिःशेषपीत्वावहिराचामेत् ॥ पु
नरेवंद्विःप्रश्नप्रतिवचनपूर्वकंप्राश्याचामेत् ॥ एतत्पुंसवनम् ॥ ॥ ११० ॥ अथानवलोभनम् ॥ ॥ ३ ॥

श्रीः ॥ दूर्वाःकन्ययाहपद्युपलेनपेषयित्वापिंडीकृत्यशुद्धवसनांचलेसंगृह्यप्रजावदारुणंजीवपुत्रसंज्ञकंसूक्तंजपित्वामंडलागा
रच्छायायामुपविष्टायाःप्राञ्ज्मुख्याःपत्न्याःपश्चिमतस्तिष्ठन्पतिस्तदाननमुन्नमय्यदक्षिणेनासाविलेखांगुष्ठाग्रेणदूर्वारसमासिं
चेत् ॥ तत्रप्रजावदारुणंसूक्तंयथा ॥ ॐ आतेगर्भोयोनैमैतुते ॥ अनूनःपूर्णोजायतामश्लोणोपिशाचधीतः ॥ पुमांस्तेपुत्रोनारीतंपुमाननुजायतां ॥ करो
मिमेप्राजापत्यमागर्भोयोनैमैतुते ॥ यानिभद्राणिवीजान्युपभाजनयंतुते ॥ तैस्त्वंपुत्रान्विदस्वसाप्रसूधेनुकाभव ॥ कामः
निभद्राणिवीजान्युपभाजनयंतुते ॥ यंकामंकामयेदेवतंमेवायोसमर्धय ॥ अथजीवपुत्रारुणंसूक्तं ॥ अग्निरैतुप्रथमोदेवतानांसो
समृध्यतांमह्यमपराजितमेवमे ॥ तदयंराजावरुणोनुमन्यतांयथेयंस्त्रीपौत्रमधंनरोदात् ॥ इमामग्निस्त्रायतांगार्हपत्यःप्रजामस्यैन
स्यैप्रजांसुंचतुमृत्युपाशात् ॥ तदयंराजावरुणोनुमन्यतांयथेयंस्त्रीपौत्रमधंनरोदात् ॥ इमामग्निस्त्रायतांगार्हपत्यःप्रजामस्यैन
यतुदीर्घमायुः ॥ अश्विन्योपस्थाजीवतुमातापौत्रमानंदमभिप्रबुध्यतामियं ॥ मातेगृहेनिशिधोपउत्थादन्यत्रत्वद्भुदत्यः
संचिरंशतु ॥ मात्वंविकेदशुरवआवधिष्ठाजीवपत्नीपतिलोकेविराजपश्यंतीप्रजांसुमनस्यमाना ॥ अप्रजास्त्वांपुत्रंमृत्युंपाप्मान

॥

देवकृतं ब्राह्मणं कल्पमानं तेन हन्मि यो निषदः पिशाचान् ॥
प्रतिमुञ्चामि पाशं ॥ देवकृतं ब्राह्मणं कल्पमानं तेन हन्मि यो निषदः पिशाचान् ॥
प्रतिमुञ्चामि पाशं ॥ देवकृतं ब्राह्मणं कल्पमानं तेन हन्मि यो निषदः पिशाचान् ॥
प्रतिमुञ्चामि पाशं ॥ देवकृतं ब्राह्मणं कल्पमानं तेन हन्मि यो निषदः पिशाचान् ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

ॐ नेजमेषपरापत० ॥ विष्णवइदंनम ॥ ॐ यथेयंपृथिवी० ॥ विनियोगःप्राग्वत् ॥ ॐ विष्णोःश्रेष्ठेन० ॥ विष्णवइदंनम
मम ॥ प्रजापतेहिरण्यगर्भःप्रजापतिस्त्रिष्टुप् ॥ विनियोगःप्राग्वत् ॥ ॐ प्रजापतेनत्वदेता० स्वाहा ॥ प्रजापतयइदंनम
॥ ८ ॥ एवमष्टाज्याहुतीःसुवेणहुत्वा पत्न्याःपश्चिमतःप्राङ्मुखस्तिष्ठन्नपक्वफलयुग्मान्वितमौदुंबरस्तबकद्वयंत्रिशुक्लांशलही
कुशांकुरत्रयंचैकीकृतंपाणिनागृहीत्वातन्मूलेनपत्न्याःकेशललाटयोःसंधिसारभ्यामूर्धप्रदेशात् ॐ भूर्भुवःस्वरोमितिमंत्रेण
त्रिश्चतुर्वाप्रत्युन्नयनंमंत्रमावर्तयन्त्सीमंतमुन्नयेत् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वरितिमंत्रत्रयस्यप्रजापतिर्बृहती ॥ सीमतव्यूहनेविनियो
गः ॥ ततोयथाचारंसगोधूमामौदुंबरफलमालांतत्कंठेनिधायवीणागायिनौद्विजौसोमंराजानंसंगायेतामितिप्रेषयेत् ॥ तौ
च ॥ ॐ सोमोनोराजावतुमानुषीःप्रजानिविष्टचक्रासावितिमंत्रंअसावितिस्थानेगंगेइत्यादिसमीपस्थनद्याःसंबुद्धंतंनामनि
दिशंतौवीणयागायेताम् ॥ सामगानापरिज्ञानेमंत्रमात्रंत्रिःपठेताम् ॥ ततःस्विष्टकृदादिहोमशेषसमाप्यब्रह्मणेऋषभंदक्षिणां
तदभावेऽन्यस्मैविदुषेब्राह्मणायदत्वापतिपुत्रवतीभिर्बृह्दाभिरुपदिष्टंमंगलाचारंकारयेत् ॥ प्रतिसंस्कारंदशदशत्रींस्त्रीन्वाब्रा
ह्मणान्भोजयेत् ॥ शकौशतं ॥ इतिपुंसवनानवलोभनसीमंतोन्नयनप्रयोगः ॥ अथविष्णुबलिः ॥ गर्भाष्टमेमासेपूर्वेद्युर्दपतीस्त्रा
तौधृताहतवाससावलंकृतौप्राङ्मुखानुपविश्य ॥ ततःपतिःप्रागुक्तवदाम्युदयिकंपुण्याहवाचनंचकृत्वातदहरेववाइदंकृत्वाय
थावद्विष्णुबलिकुर्याताम् ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥

१ विष्णुबलिप्रयोगःसविस्तरःप्रयोगरत्नेद्रष्टव्यःसंप्रतिबहुत्रालस्यादिनेमनाचरंतीतितत्रैवशिष्टानादरदर्शनात्तत्रविन्यस्तोत्रंयविस्तरभिया ॥

॥ ११२ ॥ अर्थजातकर्मप्रयोगः ॥

श्रीः ॥ जातमात्रेपुत्रेपितातस्यमुखं निरीक्ष्य नद्यादाबुद्धुः सत्त्वात्वाचम्य सितचंदनमाल्यादिभिरलंकृतोनालच्छेदनात्पूर्वसू
तिकादिव्यतिरिक्तैरस्पृष्टमकृतस्तनपानं प्रक्षालितमलंकुमारं सातुरत्संगे प्राङ्मुखमवस्थाप्य देशकालौ स्मृत्वा ममास्यकुमारस्य ग
र्भोबुपानजनितसकलदोषनिबर्हणायुर्मेधाभिवृद्धिबीजगर्भसमुद्भवैर्नो निबर्हणद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं जातकर्म करिष्ये ॥ त
दंगणपतिपूजनपूर्वकं स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नां दीश्रौं च करिष्ये इति संकल्प्य तानि कृत्वा ॥ ततो विपममानेन म
धुसर्पिर्षामिश्रीकृत्य शिलातले निक्षिप्य तत्र सुवर्णरजोविमोक्त्या वदवधृष्य रजतकांस्यादिभाजने निधाय ॥ प्रतेददामीति हिर
ण्यगर्भः सविता त्रिष्टुप् ॥ कुमारेण मधुसर्पिः प्राशने वि० ॥ ॐ प्रतेददामि मधुनो घृतस्य वेदं सवित्रा प्रसूतं मघोनां ॥ आयुष्मान्
गुप्तो देवताभिः शतं जीवशरदो लोके अस्मिन् ॥ इति मंत्रेण तेनैव हिरण्येन कुमारं पाययित्वा तच्चिरण्यं प्रक्षाल्य कुमारस्य दक्षिणकर्णे
र्णे निधाय तन्मुखसमीपे स्वमुखमानीय ॥ मेधांत इति मंत्रस्य हिरण्यगर्भः सविता सरस्वत्यश्चिनावनुष्टुप् ॥ कुमारदक्षिणकर्णे
जपे विनियोगः ॥ ॐ मेधांतैर्देवः सविता मेधां देवी सरस्वती ॥ मेधांतैर्अश्विनौ देवा वाधत्तां पुष्करस्वजौ ॥ इत्युचंजयित्वा ॥
पुनस्तच्चिरण्यं सव्यकर्णे निधायैतामेव ऋचं जपेत् ॥ ततः ॥ ॐ अश्माभव परशुर्भव हिरण्यमस्तु तं भव ॥ वेदो वै पुत्रनामासि स
पितरि ग्रामांतरं गते पितृव्यादिर्गोत्रजो वाज्येष्ठक्रमेणेदु कुर्यात् ॥ २ जातकर्मणि नां दीश्राङ्गं रात्रावपि कार्यम् ॥

१ कुमार्याश्चैतज्जातकर्म मंत्रककार्यम् ॥ रात्रौ संध्यायां ग्रहणे जाता शौचांतरमध्ये पीदकार्यम् ॥ मृताशौचमध्ये जातश्चेत्तदेवाशौचातेवाकार्यम् ॥

जीवशरदःशतं ॥ इतिमंत्रेणशिशोरंसौयुगपदभिमृशेत् ॥ इंद्रश्रेष्ठानिगृत्समदइंद्रस्त्रिष्टुप् ॥ शिशोरंसाभिमर्शनेविनियोगः ॥ ॐ इंद्रश्रेष्ठानिद्रविणानिधेहिचित्तिंदक्षस्यसुभगत्वमुस्मे ॥ पोषरयीणामरिष्टितनूनांस्वाज्ञानंवाचःसुदिनत्वमहो ॥ अस्मेप्रयंधिविश्वामित्रइंद्रस्त्रिष्टुप् ॥ विनियोगःप्राग्वत् ॥ ॐ अस्मेप्रयंधिमघवन्नृजीपिन्निंद्रायोविश्ववारस्यभूरैः ॥ अस्मे शतंशरदोजीवसेधाअस्मेवीरान्छश्वतइंद्रशिप्रिन् ॥ इतिमंत्रत्रयांतेअभिमर्शः ॥ ततोरक्षायुषोरभिवृद्ध्यर्थं ॥ ॐ अंगादंगात्संभवसिहृदयादधिजायसे ॥ आत्मावैपुत्रनामासिसजीवशरदःशतं ॥ इतिमंत्रमुच्चार्यमूर्धानंत्रिराजिघ्रेत् ॥ ततःशिशोःकरिष्यमाणंनामतदैवस्मरेत् ॥ मातुर्दक्षिणस्तनंप्रक्षाल्य ॥ ॐ इमांकुमारोजरांधयतुदीर्घमायुःप्रजीवसे ॥ अस्यैस्तनौप्रयुजानाआयुर्वचोचशोबलमितिमंत्रेणमात्राकुमारंपाययित्वाब्राह्मणेभ्योदक्षिणांदत्वाआशिषोगृहीयात् ॥ होमकरणपक्षेप्रबलनामानज्येनशेषेणस्त्रिष्टुक्तमित्यादिसद्योयक्ष्यइत्यंतमुक्त्वाज्यंहुत्वा अधिमिंद्रप्रजापतिंविश्वान्देवान्ब्रह्माणसानपानंदद्यात् ॥ तमर्वतमितिपंचभिराशीर्वादः ॥ इतिजातकर्मप्रयोगः ॥ ॐ ॥ ११३ ॥ अथषष्ठीपूजा ॥

श्रीः ॥ पंचमेपष्ठेचदिनेपष्ठएववापूर्वरात्रेपित्रादिराचम्यदेशकालौस्मृत्वाअस्यशिशोःसमातृकस्यआयुरारोग्यावासिद्वारासकलारिष्टशांतयेश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंविघ्नेशस्यजन्मदानांपष्ठीदेव्याजीवंतिकायाश्चयथामिलितोपचारैःपूजनमहंकरिष्ये तथाच

छिद्वाराश्रीपरमेश्वरमीत्यर्थनामकरणं करिष्ये ॥ तदंगतया गणपतिपूजनपूर्वकं स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नंदीश्राद्धं च करिष्ये इति संकल्प्य ॥ स्वस्तिवाचने पुण्याहत्रयमुक्त्वा करिष्यमाणं नाम चतुर्थं तमुक्त्वा त्रिरेतन्नाम्ने स्वस्तिभवंतो ब्रुवंत्विति तैर्विधीयतामित्यनुमोदितः स न तं डुलान्कां स्य पात्रे प्रसार्य तदुपरि सुवर्णशलाकया अमुककुलदेवताभक्त इति नाम लेख्यं ॥ जन्मकालीनमासनाम ॥ कृष्णो नंतो च्युतश्च क्रीवैकुण्ठो धनार्दनः ॥ उपद्रोचश्च पुरुषो वासुदेवस्तथा हरिः ॥ ततो न्मातापितरावेव जानीयात् ॥ अत्र चैत्रादि मार्गशीर्षादिर्वाक्रमः ॥ ततो भिवादनीयं नाम उपांशुकुर्यात् ॥ योगीशः पुंडरी नामस्वेष्टं वायुगमाक्षरं द्व्यक्षरं प्रतिष्ठाकामश्च तुरक्षरं ब्रह्मवर्चसकामो विप्रादिवर्णक्रमेण शर्मवर्मगुप्तदासान्यतमपदांतं कुर्यात् ॥ ततो वकहडाचक्राख्यज्योतिःशास्त्रोक्तचक्रानुसारेण जन्मनक्षत्रपादप्रयुक्ताक्षरादिनाम ॥ ततस्त्रिपुरुषवाचिदेवतावाचिवा

१ केवलनामचिकीर्षया स्वस्तिवाचने पुण्याहत्रयमुक्त्वा अमुकनाम्ने स्वस्तिभवंतो ब्रुवंत्विति त्रिविदेत् ॥ ब्राह्मणाश्चैतन्नाम्ने स्वस्तीति ब्रूयुः ॥ जातक भसहितनामकरणपक्षे अस्य जातकर्मनामकर्मणोः पुण्याहं तथा स्य जातकर्मण एतन्नाम्नेऽस्यैव स्वस्तिभवंतो ब्रुवंतु तथैव प्रतिवचनमिति कौस्तुभे ॥ २ कौस्तु भेनाक्षत्रनामव्यवस्थेत् ॥ ररेमसृज्येचिपुष्टिद्विरादौ ठात्पेचवांत्यश्रवशाश्च युक्षु ॥ शेषेषु नाम्नीः कपरः स्वरोत्यः स्वाप्ज्वोरदीर्घः सविसर्गइष्टः ॥ इति ॥ अस्यार्थः । रौहिणः रैवतः माघः मार्गशीर्षः ज्यैष्ठः चैत्रः इत्यादि वृद्धियुं निषट् । प्रोष्ठपादः इति मध्यवृद्धिकमेकं । अपभरणः आपभरणः श्रवणः श्रावणः

तुष्टयं लिखित्वा ॥ नामदेवताभ्योनमइतिसंपूज्यामुकनान्नात्वमुकोसिइतिस्वदक्षिणस्थमातुरुत्संगस्थस्यशिशोर्दक्षिणकर्णेक
 थयित्वा ॥ तदस्तुमित्रावरुणा०गृहवैप्रतिष्ठा०इत्यादिमंत्रपाठांतैविप्रैर्नामसुप्रतिष्ठितमस्त्वित्युक्तेअमुकनान्नाअमुकनामायं
 भवतोऽभिवादयतेइत्युक्त्वाविप्रानभिवादयेत् ॥ तेचायुष्मान्भवत्वमुकशर्माइइतिवदेयुः ॥ ततःकर्तादेवताभ्योब्राह्मणे
 भ्यःपित्रादिभ्यश्चनत्वायथाविभवंविप्रान्भोजयेद्दक्षिणांचदद्यात् ॥ (कुमार्याअपिनामकरणममंत्रकंकार्यं ॥ विपमाक्षरंतु
 तन्नाम)॥होमकरणपक्षेतुपार्थिवाग्नौजातकर्मवदेवप्रधानाहुर्ताहुत्वानामयथोक्तंकृत्वास्विष्टकृदादिहोमशेषंतंत्रंकुर्यात् ॥ इति॥

॥ ११५ ॥ अथसूगार्चलोकनम् ॥

श्रीः ॥ जननात्तृतीयेमासिजन्मदिनेजन्मनक्षत्रेवाष्टदेवतापूजनपूर्वकमलंकृतेनशिशुनासोत्सवंसूर्यदर्शनंकारयित्वाचतुर्थमा
 सेशुभकालेग्निचंद्रंघेनुंचदर्शयेत् ॥ स्वस्तिनआत्रेयोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् ॥ शिशोरंकारोपणेविनियोगः ॥ ॐ स्वस्तिनोमिमी
 ता० ॥ अनेनपित्रादिःशिशुसंकमारोप्य ॥ आशुःशिशानइतित्रयोदशर्चस्याप्रतिरथस्यसूक्तस्यएंद्रोऽप्रतिरथइंद्रस्त्रिष्टुप् ॥
 चतुर्थीबृहस्पतिदेवत्या ॥ त्रयोदश्यनुष्टुप्॥शिशोरायुष्याभिवृद्ध्यर्थजपेविनियोगः ॥ ॐ आशुःशिशानोवृषभोनभीमोघना०॥
 शतभिष. शतभिष. अश्वयुक् आश्वयुज इतिचतुर्णामादिवृद्धिविकल्प ॥ श्रविष्ठः फल्गुन अनुराध तिष्य आश्लेषः हस्तः विशाखः अपाढः
 कृत्तिकः इतिनवनामसिद्धिः ॥ आर्द्रकः मूलकः स्वातिः पुनर्वसु एवचतुष्टय ॥ इत्येवनाक्षत्रनामानीतिसूपपादितम् ॥ अन्येप्रकाराग्रेष्वालोचनीयाः॥
 १ स्त्रीणाभक्तेत्यावंतदेवतानाम । मासनाममुचक्रिणीवैकुठीवासुदेवीतिडीवंतानिहरित्यविकृतं अवशिष्टान्यष्टावाचंतानि । नाक्षत्रंनैव । यज्ञ०

ऋ०ब०

॥१८१॥

ऋ० १३ ॥ ॐ असौयासेना० ऋक् २ ॥ तच्चक्षुर्वसिष्ठःसूर्यःपुरज्णिक् ॥ कुमारस्यादित्यावेक्षणेविनियोगः ॥ ॐ तच्चक्षुर्देव
हितं० ॥ इतिसूर्यनिरीक्षयेत् ॥ इतिसूर्यावलोकनसंस्कारः ॥ ॥ इदंअग्रेतनंनिष्क्रमणंचसहंतंत्रेणैवकुर्वति ॥

श्रीः ॥ (सूर्यालोकनंतंत्रेण) ततश्चतुर्थेमासिषष्ठेवायुह्रस्वपक्षेभूमतिथ्यादौपितासभार्यःसशिशुरभ्यंगस्नातः ॥ ममशिशोःआयुः
श्रीवृद्धिबीजगर्भसमुद्भवैर्नोनिबर्हणद्वाराश्रीपरमेश्वरपक्षेभूमतिथ्यादौपितासभार्यःसशिशुरभ्यंगस्नातः ॥ इतिसंकल्प्यतदंगतयास्वस्तिवाच
नाभ्युदयिकग्रहयज्ञान्कृत्वाइन्द्राग्निमनिर्ऋतिवरुणवायुकुबेरेशानानांप्राच्यादिदिशां चंद्रार्कवासुदेवगगनानांचयथाक्रमंतं
डुलपुंजेषुपूर्जांकृत्वाब्राह्मणान्भोजयित्वातैःस्वस्त्यनंवाचयित्वासायंसंध्यादिकंकृत्वा शिशुंसौवर्णैःकृत्रिमैर्वाभरणैर्यथाशक्ति
अलंकृत्य पूर्वनेकृतंचेदिदानींशिशुनाग्निचंद्रधेनूनांदर्शनंकारयित्वाऽश्वादिवाहनस्थंशिशुंमातुलेनधात्र्यावावाहयित्वा भा
र्वापुत्रविद्वद्ब्राह्मणज्ञातिबांधवपुरंध्री गणदपणपूर्णकलशायुककन्यागणपुष्पहरिद्राक्षतदीपमालाध्वजलाजमंगलवाद्यघोषयु
क्तः ॥ ॐ कर्तिकदज्जनुषं० ॥ ऋ० ३ ॥ ॐ मृदुक्षिणिदुभि० ॥ ऋक् २ ॥ ॐ आवदुंस्त्वं० ॥ ऋक् १ ॥ इत्यादिशकुंता
दिसुमंगलसूक्तंपठन्गृहाह्नहिर्गत्वामंत्रमेतमुदीरयेत् ॥ चंद्रार्कयोर्दिगीशानांदिशांचगगनस्यच ॥ निक्षेपार्थमिमंदक्षितेत्वां
(ऽमुं)रक्षंतुसर्वदा ॥ अप्रमत्तंप्रमत्तंवादिवारान्नावथापिवा ॥ रक्षंतुसततंसर्वदेवाःशक्रपुरोगमाः ॥ एवंशिशुरक्षणार्थंदेवा गोमयाद्यनुलिसचतुर
न्तसंप्रार्थयिष्णुशिवाल्ययोरन्यतरंद्धुगृहंवागत्वातत्रदेवंसुमंगलवाद्यघोषपुष्पोपहारादिभिःप्रपूज्य

निष्क्रम.
॥११६॥

॥१८१॥

स्रदेशेधान्यादिनिधायतत्रशिशुमासयित्वा मंत्रेण रक्षांकुर्यात् ॥ मंत्रश्च ॥ त्र्यंबकमित्यस्य वसिष्ठो मृत्युंजयस्य वक्रकोनुष्टुप् ॥ शि
शोरक्षायां विनियोगः ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगं ० तत ॥ ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ इत्येवं रूपं
मृतसंजीवनी मंत्रं जपन् विभूत्या क्षतैर्वा मूर्ध्नि ललाटे च रक्षां कृत्वा अपूप्यादिभिर्भूतेशानं गणेशमभ्यर्च्य शिशुं भक्ष्यादिभिस्तोषजि
त्वा शिशो वाचयित्वा देवता प्रणामं प्रदक्षिणत्रयं च शिशुना कारयित्वा मातुलाद्या सन्न बंधुगृहे पूर्ववन्नोत्वा तत्र दानोपहारादिभिः
शिशुं तोषयित्वा स्वगृहं गत्वा ब्राह्मणैराशिषो वाचयित्वा तेभ्यः सुवासिनीभ्यश्च यथाशक्ति दक्षिणां दत्वा बंधुभिः सह भुंजीत ॥ कु
मार्या अप्येतत्समानं ॥ होमोऽत्र कृताकृतः ॥ होमपक्षे शिशोरलंकरणानंतरं लौकिकामिं प्रतिष्ठाप्य जातकर्म वदनादेश देवताभ्यो
हुत्वा अग्निचंद्रदर्शनादिस्वगृहगमनांतं कृत्वा स्विष्टकृदादिहोमशेषं समाप्य ब्राह्मणाशीर्वादादिकारयेदितिक्रमः ॥ इति सूर्याव ०

॥ ११७ ॥ अथोपवेशनविधिः ॥

श्रीः ॥ पंचमेमासिशुक्लपक्षे ज्योतिःशास्त्रोक्तशुभतिथ्यादौ पूर्वाह्ने स्वस्ति वाचनं कृत्वा वराहपृथिवीगुरुदेवद्विजान् पूजयित्वा भू
भागमुपलिप्य तत्र मंडलं कृत्वा शंखतूर्यादिमांगलिकध्वनौ क्रियमाणे भूमौ शिशुमुपवेशयेदेतैर्मन्त्रैः ॥ रक्षेन्न वसुधेदे विसदा सर्वग
तं शुभे ॥ आयुः प्रमाणं निखिलं निक्षिपस्व हरिप्रिये ॥ अचिरादायुषस्त्वस्य ये केचिल्यरिपंथिनः ॥ जीवितारोग्यवित्तेषु निर्दह
स्वाचिरेण तान् ॥ धारिण्यशेषभूतानां मातस्त्वमधिकाह्यसि ॥ कुमारं पाहि मातस्त्वं ब्रह्मा तदनुमन्यताम् ॥ इति ॥ ततो ब्रा
ह्मणान् पूजयित्वा शिशो वाचयित्वा राजनाद्युत्सवं कुर्यात् ॥ एवं कुमार्या अपि ॥ इति उपवेशनम् ॥ ॥ ४९ ॥

श्रीः ॥ यजमानः आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा ममास्य शिशोर्मातृगर्भमलप्राशनशुद्ध्यन्नाद्यब्रह्मवर्चसंन्द्रियाचुलक्षण
 फलसिद्धिबीजगर्भसमुद्भवैर्नोनिबर्हणद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं अन्नप्राशनाख्यं कर्म करिष्ये इति संकल्प्य तदंगणपतिपूजनस्व
 स्तिवाचनाभ्युदयिके कृत्वा शिशुमलंकृत्य पूजोपहारादिभिरिष्टदेवतामभ्यर्च्य तत्पुरतः स्वदक्षिणेशु भवस्त्रोपरि मात्रुत्संगे प्राङ्मु
 खोपविष्टस्य शिशोः प्रथमान्नप्राशनं कारयेत् ॥ दधिमधुघृतमिश्रमन्नं कांचने कांस्ये वा भाजने प्रक्षिप्य ॥ अन्नपतइत्यस्य नलकूबरो
 न्नपतिरुपरि द्वाहूहती ॥ शिशोरन्नप्राशने वि० ॥ ॐ अन्नपतेन्नस्य नो देहानमीवस्य शुष्मिणः ॥ मप्रदातारं तारिष ऊर्जन्नो धेहि द्वि
 पदे चतुष्पदे ॥ इति मंत्रेण ससुवर्णहस्तोन्नमादाय प्रथमकवलं प्राशयित्वा च येष्टं भोजयित्वा मुखं प्रक्षाल्य बालं भूमावुपवेश्य तदग्रे
 पुस्तकं शस्त्रवस्त्रादिशिल्पानि विन्यस्य जीविकापरीक्षां कुर्यात् ॥ शिशुः स्वेच्छया यत्प्रथमं स्पृशेत् सास्य जीविकेति विद्यात् ॥ होम
 करणपक्षे जातकर्मवत् शुचिनामानमग्निं प्रतिष्ठाप्य प्रधानहोमांते अन्नप्राशनजीविकापरीक्षा ॥ ततः स्विष्टकृदादिहोमशेषं समाप्य य
 धाराक्तिब्राह्मणान् भोजयित्वा दक्षिणां दत्वा शिषो वाचयित्वा बंधुभिः सह स्वयं भुंजीत ॥ इति अन्नप्राशनप्रयोगः ॥ ॥ ४३ ॥
 सूर्यावलोकनादीन्यन्नप्राशनां तानि अन्नप्राशनकाले शिष्टाः सहैवानुतिष्ठंति तेषां च सहप्रयोगः कौस्तुभेश्वरः ॥ तत्र सूर्यावलोक
 कनसंकल्पं निष्क्रमणसंकल्पं च कृत्वोपरि निर्दिष्टवदन्नप्राशनसंकल्पं च कृत्वा क्रमेण प्रयोगत्रयं कार्यमिति विशेषः ॥ ४३ ॥
 ? तस्मिन्काले स्थापयेत् तत्पुरस्ताद्वल्लंशखं पुस्तकं लेखनीच ॥ स्वर्णरौप्यं च गुह्यातिबालस्तैराजीवंतस्य वृत्तिः प्रादिष्टा ॥ इति मुहूर्तचिंतामणिः ॥

अन्नप्राश.
॥११८॥

॥१८२॥

॥ ११९ ॥ अथवर्धापन्नविधिः ॥

श्रीः ॥ यजमानः आचम्य प्राणानाथम्य देशकालौ स्मृत्या ममा (सूनोर्वा) ब्दपूर्तिं जन्मदिवसे आयुरभिवृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वर
प्रीत्यर्थं दूर्वाहोमं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य विधिवदग्निं (बलवर्धननामकं) प्रतिष्ठाप्य पुनर्देशकालौ संकीर्त्य समिधा वा दायाऽ
स्मिन् दूर्वाहोमे देवतापरिग्रहेत्यादि चक्षुषी आज्येनेत्यंतमुक्त्वा प्रधानं देवतां मृत्युं जयमष्टोत्तरशतं दूर्वाद्रव्येण शेषेण स्विष्टकृतमि
त्याद्याज्यभागांतं कृत्वा दधिमधुघृताक्तं केवलं आज्याक्तं वा दूर्वात्रयं त्रयं ॥ त्र्यंबकमित्यस्य वसिष्ठो मृत्युं जयस्यंबको नुष्टुप् ॥ दूर्वा
होमे विनि० ॥ ॐ हौं जंसः ॐ भूर्भुवः स्वः ॥ ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनं ॥ उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृ
तोत् ॥ ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ ॥ इत्यनेन मंत्रेणाष्टोत्तरशतं हुत्वा स्विष्टकृदादि होमशेषं समापयेत् ॥ ततो विधिवद्ब्रह्म
ज्ञं कृत्वा आयुष्यचरुहोमं संकल्पपूर्वकं कुर्यात् ॥ तत्रायं क्रमः ॥ देशकालौ संकीर्त्य आयुरभिवृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं मित्रादि चक्षु
ष्यचरुहोमं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य स्थंडिले बलवर्धननामानमग्निं प्रतिष्ठाप्य ॥ आयुष्यचरुहोमे देवतापरिग्रहार्थं मित्रादि चक्षु
षी आज्येनेत्यंतमुक्त्वा विश्वान् देवान् दशवारमग्निं षोडशवारं जातवेदसमग्निमेकवारं चरुद्रव्येण शेषेण त्याद्याज्यभागांतं कृत्वा ॥ इ
आनो भद्रा इति दशर्चस्य सूक्तस्य गौतमो विश्वे देवा आद्याः पंचसप्तमी च जगत्यः षष्ठी विराट् स्थाना अष्टम्याद्या स्तिस्त्रिष्टुभः ॥ इ
मंस्तोममित्यस्य षोडशर्चस्यांगिरसः कुत्सो गिरादितश्चतुर्दश जगत्यः अंत्ये द्वे त्रिष्टुभौ ॥ पूर्वो देवा भवत्वित्यादि त्रयः पादा देवदेव
त्याः ॥ तन्नो मित्रोर्ध्वोर्लिङ्गोक्तदेवतो मिदेवतश्च ॥ जातवेदस इत्यस्य मारीचः कश्यपो जातवेदा अग्निस्त्रिष्टुप् ॥ सर्वेषां चरुहो

मेविनियोगः ॥ ॐ आनोभद्राः कर्तव्यो० द्विवेदेवेस्वाहा ॥ विश्वेभ्यो देवेभ्य इदं नमः ॥ एवं ऋक् १० प्रत्युचं त्यागः ॥ ॐ
 इमं स्तोममर्हते० वयं तव स्वाहा ॥ अग्नय इदं नमः ॥ एवं १६ ऋ० हुत्वा ॥ ॐ जातवेदसे सुनवाम० मिः स्वाहा ॥ जातवेद
 से अग्नय इदं नमः ॥ एतैः सप्तविंशतिभिः त्रैरवदानधर्मेण हुत्वा स्विष्टकृदादिहोमशेषं समाप्य ॥ वासुदेवं नक्षत्रदेवतां चंद्रं स्व
 भूहिरण्यादिदत्वा देवगुरुब्राह्मणसुहृद्वंधुजनपूजां स्ववाहनायुधपीठछत्रपूजां कृत्वा विधिवन्नादीश्राद्धं च कृत्वा ब्राह्मणान्भोजयि
 त्वा शुभमुहूर्तगंधादिभिरलंकृत्य सगभूषणधारणपूर्वकं सुवर्णमयकटिसूत्रं नूतन वस्त्रं च धृत्वा पतिपुत्रवतीभिः स्त्रीभिर्नोराजितो
 ब्राह्मणादिषोडशीतिभिः लंकृत्य सगभूषणधारणपूर्वकं सुवर्णमयकटिसूत्रं नूतन वस्त्रं च धृत्वा पतिपुत्रवतीभिः स्त्रीभिर्नोराजितो
 ति ॥ इति अब्दपूर्तिविधिः ॥ अन्यत्र तु ॥ इदं सर्वं यावद्बाल्यं पित्रादिभिः स्त्रीभिर्नोराजितो
 किंब्राह्मणभोजनं दक्षिणां च दत्वा सुवासिनीभिर्नोराजितो धृतनूतन वस्त्रो ब्राह्मणेभ्यः शिशुभ्यश्चापूप पूरिकाः साज्याः कुमुदादि
 प्रीत्ये आयुर्वृद्धये च वायनानि दद्यात् ॥ जन्मर्क्षदेवता प्रीत्यै च दद्यात् ॥ वर्षांते तु सुहृद्वदशवंशपेटिका सुमोदकादि द्वाद्यं
 निधाय नूतन वस्त्राच्छादिताः पेटिका जीवत्यतिपुत्राभ्यो दत्वा तदा शिषो गृहीयात् ॥ इदं सर्वं जीवती मातैवापत्यायुषे कुर्यात् ॥
 ग्रंथांतरे तु ॥ गणेशं ग्रहानिष्टदेवतां मार्कण्डेयं च प्रपूज्य प्रार्थयेत् ॥ चिरजीवीयथा त्वं भो भविष्यामि तथा मुने ॥ रूपवान्वित्तवां
 श्रैवश्रियायुक्तश्च सर्वदा ॥ मार्कण्डेय नमस्तेस्तु सप्तकल्पांतं जीवन ॥ आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थं प्रसीद भगवन् मुने ॥ चिरजीवीयथा त्वं

तुमुनीनांप्रवरद्विज ॥ कुरुत्वंमुनिशार्दूलतथामांचिरजीविनं ॥ मार्कण्डेयमहाभागसप्तकल्पांतजीवन ॥ आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थं
मस्माकंवरदोभव ॥ ततः सतिलंगुडसंमिश्रमंजल्यर्धमितंपयः ॥ मार्कण्डेयाद्वरंलब्ध्वापिबाम्यायुर्विवृद्धये ॥ इतिसतिलंगुड
मंजल्यर्धमितंदुग्धंपिबेत् ॥ अश्वत्थामाबलिव्याधिविवर्जितः ॥ इतिवचनादश्वत्थामादीन्मार्कण्डेयांतानष्टौस्मरेदिति ॥ इति
स्मरेन्नित्यंमार्कण्डेयमथाष्टमं ॥ जीवेद्वर्षशतंसाग्रं सर्वव्याधिविवर्जितः ॥ विशेषशास्त्रार्थः कौस्तुभाद्याकरेभ्योवंगंतव्यः ॥ इति
इदंचवर्धापनंयदिजन्ममासोऽसंक्रांतस्तदाशुद्धमासएवकार्यनत्वधिके ॥ विशेषशास्त्रार्थः कौस्तुभाद्याकरेभ्योवंगंतव्यः ॥ इति
॥ १२० ॥ अथचूडाकर्मप्रयोगः ॥
यजमानः कृतमंगलस्नानंकुमारमलंकृत्यस्वदक्षिणस्थितमात्रंकेलपवेश्यदेशकालौस्मृत्वा अस्यकुमारस्यबीजगर्भसमुद्भू
तौनोनिबर्हणेनबलायुर्वचोभिवृद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंचौलाख्यंकर्मकरिष्ये ॥ तदंगतयागणपतिपूजनपुण्याहवाचनमा
तृकापूजननां दीश्राद्धानिकरिष्ये इतिसंकल्प्यतानि कृत्वा ॥ चोलहोमंकर्तुं स्थंडिलादिकर्मकरिष्ये इत्यादिसभ्यनामाग्निप्रतिष्ठां
कृत्वा पुनर्देशकालौ निदिश्यक्रियमाणे चोलकर्महोमे देवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकर्तिष्ये ॥ अस्मिन्नन्वाहिते ग्रावित्याद्याधारा
वाज्येनेत्यंतमुक्त्वा ॥ त्रिरग्निपवमानंप्रजापतिंचैताः प्रधानदेवता आज्येन शेषेण स्विष्टकृतमित्याद्युक्त्वासामिद्वयमग्नावाधाय पू
र्णपात्रनिधानांतं षड्पात्रप्रयोगादितंत्रं कृत्वाग्नेरुदगास्तीर्णे षुदर्भेषु ब्रीहियवमाषतिलैः पृथक्पृथक् पूरितानि नवशरावाणि चत्वार
रिक्त्रमेणैकैकशः प्राक् संस्थान्यासादयेत् ॥ माताप्रत्यगग्नेरासीनस्य कर्तुर्दक्षिणतः कुमारमुत्संगे कृत्वा सीत ॥ ततः कर्ता मातुः पुर

श्रीः ॥ यजमानः कृतान्तं भवति ॥ अस्मिन्नन्वाहते ॥ असिन्नन्वाहते ॥
चैनो निबर्हणेन बलायुर्वचो भिवृद्धिद्वारा श्रोत्रपरमन्वराणां चोलहोमं कृतुं स्थिता ॥
तुका पूजननां दीश्राद्धानिकारिष्ये इति संकल्प्य तानि कृत्वा ॥ चोलहोमं कृतुं स्थिता ॥
कृत्वा पुनर्देशकालौ निर्दिश्य क्रियमाणे चोलकर्म्महोमे देवता परिग्रहार्थमन्वाधानं करिष्ये ॥
वाज्येनेत्यंतमुक्त्वा ॥ त्रिरग्निपवमानं प्रजापतिं चैताः प्रधानदेवता आज्येन शेषेण स्विष्टकृतमित्याद्युक्त्वासामिद्वयमग्नवाधाय पू
र्यपात्रनिधानांतं षड्पात्रप्रयोगादितंत्रंकृत्वान्नेरुदगास्तीर्णे षुदर्भेषु दर्भेषु व्रीहियवमाषतिलैः पृथक् पृथक् पूरितानि नवशरावाणि चत्वा
रिक्रमेणैकैकशः प्राक्संस्थान्यासादयेत् ॥ माता प्रत्यगन्नेरासीनस्य कर्तुं दक्षिणतः कुमारमुत्संगे कृत्वा सीत ॥ ततः कर्ता मातुः पुर

स्तात्पश्चाच्चाग्नेरानुहगोमययुतंशरावंशमीपर्णयुतंशरावंचनिदध्यात् ॥ ततोब्रह्माएकविंशतिकुशपिंजलान्यादायमातुर्दक्षि
णतस्तिष्ठेत् ॥ पितावातथातिष्ठेत् ॥ अस्मिन्पक्षेऽन्यएवचौलकर्ता ॥ अग्निःपवमानोदेवता ॥ गायत्रीछंदः ॥ चूडाकर्मप्रधानाज्यहोमेविनियोगः ॥ अ
ॐ अग्नआर्चूषिपवसआसुवोर्जमिर्बचनः ॥ आरेबांधस्वदुच्छुनांस्वाहा ॥ तमीमहेमहागयंस्वाहा ॥ अग्नयेपवमानायेदंनममेतित्यागः ॥ एवमग्नेपि ॥
ॐ अग्निर्ऋषिःपवमानुःपांचजन्यःपुरोहितः ॥ तमीमहेमहागयंस्वाहा ॥ अग्नयेपवमानायेदंनमम ॥ ३ ॥ प्रजापतेहिरण्यगर्भःप्रजापतिस्त्रिष्टुप् ॥ चूडा
स्मेवर्चःसुवीर्य ॥ दधंद्रयिमयिपोषस्वाहा ॥ अग्नयेपवमानायेदंनमम ॥ ४ ॥ ततःशीतमुष्णंचोभेजलेदक्षिणवामकराभ्यांक्रमे
कर्मप्रधानाज्यहोमेविनियोगः ॥ ॐ प्रजापतेनमः ॥ प्रजापतयइदं ॥ ४ ॥ ततःशीतमुष्णंचोभेजलेदक्षिणवामकराभ्यांक्रमे
गपन्निनीय तदेकदेशंगृहीत्वानवनीतेनदधिद्रप्सेनवामिश्रयित्वाकुमारस्यवामकर्णमारभ्यप्रदक्षिणं ॥ ॐ अदितिःकेशान्व
पत्वापउदंतुवर्चसे इतिमंत्रावृत्त्याशिरस्त्रिवारंक्लृदयेत् ॥ ततोब्रह्माहस्तस्थितैकविंशतिकुशपिंजलमध्येत्रीणिकुशपिंजलान्या
दाय ॥ ॐ ओषधेन्नायस्वैनं इतिकुमाराभिमुखंपश्चिमाग्राणितस्यदक्षिणेकेशभागेनिधाय ॥ ॐ स्वधितैमनांहंसीःइतितेषु
ताम्रमयंधुरंनिधाय ॥ ॐ येनावपत्सविताधुरेणसोमस्यराशोवरुणस्यचिद्वान् ॥ तेनब्रह्माणोवपतेदमस्यायुष्मान्जरदष्टिर्य
थासत् इतिमंत्रेणसकेशानिकुशपिंजलानिछित्वाप्रागग्राणि कृत्वाशरावस्थशमीपर्णेरेकीकृत्यमातुःकरेदद्यात् ॥ साचतानिस

केशान्यानडुहेगोमयेप्रागग्राणिनिदध्यात् ॥ एवंद्वितीयादिछेदनेपुकुशापिंजलनिधानादिसमंत्रकंकार्यम् ॥ छेदनमंत्रेतुविशे
 पः ॥ ॐ येनधाताबृहस्पतेरग्निरिन्द्रस्यचायुषेवपत् ॥ तेनतआयुषेवपामिसुक्लोक्मायस्वस्तये ॥ इतिद्वितीये ॥ ॐ येनभूयश्चेतित्रयोपिमंत्राः ॥ ए
 त्र्यांज्योक्कपश्यातिसूर्ध ॥ तेनतआयुषे० यद्वितृतीये ॥ चतुर्थेतु येनावपत्० येनधाता० येनभूयश्चेतित्रयोपिमंत्राः ॥ शीतोष्णाभिर
 वमेवोत्तरेभागेपिआद्यानित्रीणिछेदनानिकुर्यात् ॥ नतुसर्वमंत्रैश्चतुर्थे ॥ ततः ॥ ॐ यत्क्षुरेणमर्चयतासुपेशसावप्तावपसिके
 शान् ॥ शुंघिशिरोमुखंमास्यायुःप्रमोषीः ॥ इतिमंत्रेणाग्रतआरभ्यामूलंक्षुरधारांनिमृज्यनापितमाह्वय ॥ शीतोष्णाभिर
 न्धिरबर्थकुर्वाणोऽक्षपवन्कुशलीकुरु इतिप्रैपेणानुशास्यतंप्रैपार्थचावबोध्यनापितेनपूर्वावशेषितशीतोष्णांबुभिराद्रीकृतंकुमार
 शिरोयथाकुलाचारंकल्पितशिवंवापयित्वाकुमारंस्नापयित्वाभूपयित्वापूर्वचन्मतोरुत्संगेऽवस्थाप्यस्विष्टकृदादिहोमशेषं समा
 प्य त्रीह्यादिपूर्णशरावचतुष्टयंनापितायदद्यात् ॥ भूयसीदक्षिणांदत्वाब्राह्मणेभ्योदशसंख्याकेभ्योभोजनंचसंकल्प्यकर्म
 संपूर्णतांचयित्वायस्यस्मृत्येत्युक्त्वाविष्णुंनमस्कृत्याशिषोब्राह्मणोक्ताःस्वयंकुमारश्चगृहीयात् ॥ एतत्सर्वंकुमार्याअप्य
 मंत्रकं ॥ होमस्तुसमंत्रकः ॥ इतिचूडाकर्मप्रयोगः ॥ ॥ ३१ ॥

अथक्षरंभविधिः ॥

श्रीः ॥ पंचमेवर्षेवालःसुस्नातोधृतनूतनवस्त्राभरणमंगलतिलकःआचम्य इष्टदेवतांपित्रादींश्चनमस्कृत्यदेशकालौसंकीर्त्यम
 मसुमतिवर्धनपूर्वकंविद्यावाप्तयेऽक्षरंभंकरिष्ये ॥ आदौनिर्विघ्नतासिद्धयेगणपतिपूजनंप्रत्यक्षधानदेवतापूजनंचकरिष्ये इति

संकल्प्य गणपतिसंपूज्यप्रार्थयेत् ॥ ततः स्वस्तिकासने गणेशं हरिं लक्ष्मीं सरस्वतीं सूत्रकारान् स्वविद्यां च पूर्णफलैश्चक्षतपुंजे
ब्रुवात तन्नाममंत्रैरावाह्यपूजयेत् ॥ सरस्वतीपूजने तु विशेषः ॥ शुचौ समे देशे गोचर्ममात्रमुपलिप्य सैकतं स्थलं कृत्वा पलाशशालया
व्याक्षतधूपदीपपायसगुडौदनैर्वेद्यसमर्पणनमस्कारान्कृत्वा चार्चय शक्तितो वस्त्रालंकारादिभिः पूजयित्वा सरस्वतीविघ्नेशचा-
र्यां स्त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य प्रणवपूर्वकमक्षरमारभेत् ॥ तत्र गुरुणा दर्शितक्रमेण ॐ नमः सिद्धं इति मातृकावर्णाल्लिखित्वासंपूज्य आचा-
र्याभिवंदनं कृत्वा सरस्वत्यादीनावाहनक्रमेणोद्वासयेत् ॥ विष्णुधर्मोत्तरे धात्रीपूजनमन्त्राधिकं ॥ इति प्रथमाक्षरारंभविधिः ॥

श्रीः ॥ उक्तकालेऽपि वित्रपाणिरधिकारी प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्या स्य कुमारस्योपनयनकर्मणो निर्विघ्नफलसिद्धयर्थं अमुक
कामनासिद्ध्यर्थं वा विनायकशान्तिकरिभ्य इति संकल्प्य ॥ तदंगत्वेन गणेशपूजनादिनां दीश्राद्धांतं कृत्वा चार्चय कृत्वा चतुरोष्टौ वा ऋ-
त्विजो वृत्वा यथाविभवं संपूज्य प्रार्थयेत् ॥ तत आचार्योऽपि वित्रपाणिः प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्या चार्चय कर्मकरिभ्य इति संक-
ल्प्य यदत्र संस्थितमिति सर्षपान्विकीर्य शुची व इत्यग्निर्भुवं प्रोक्ष्य स्वस्त्ययनं तार्क्ष्यमिति मंत्रद्वयेन प्रार्थय प्रतिमाद्वयस्याशुत्तारणं
कृत्वामध्यदेशे शुचौ सुलिप्ते स्थंडिले पंचवर्णैः पिष्टैः स्वस्तिकं कृत्वा तस्मिन् प्राचीं व मुत्तरलोमानडुहरं कर्मरक्त्वा चर्मांस्तीर्थं तत्र
श्रीपर्णीपीठं निधाय तच्छ्रुतवाससाच्छाद्य पूर्वोदिक्रमेण च तत्सृष्टिदिक्षु स्वस्तिकानि कृत्वा तेऽपि पदान्कांडानुसमये

[illegible]

दपुत्राय० ॥ कोणाय० ॥ लक्ष्मवते० ॥ विधुंतुदाय० ॥ केतवे० ॥ बाहुलेयाय० ॥ नंदकस्यधारिणे० इति ॥ १५ ॥ ततो
होमार्थस्थंडिलेयजमानगृह्योक्तविधिनाऽग्निप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् ॥ तत्रचक्षुषीआज्येनेत्यंतेऽत्रप्रधानं ॥ मितंसमितंशलंकटं
कटकूष्मांडंराजपुत्रंव्योमकेशंपार्वतींभीमजंकृष्णस्यपितरंअर्कआरंसितंधिषणंकुदपुत्रकोणंलक्ष्मवंतंविधुंतुदंकेतुंबाहुलेयंनंदक
स्यधारिणंपुताःएकैकयाचर्वाहुत्याशेषेणेत्यादि ॥ निर्वापकालेमितायत्वेत्यादिभिरैकविंशतिमंत्रैःप्रत्येकंचतुरावृतैश्चतुरशीति
रसोयजमानस्य मंगलवेदघोषेणवस्त्राच्छादितोक्तपीठात्मकभद्रासनोपर्याचार्येणोपवेशनंकार्यं ॥ तत्रजीवत्यतिपुत्राभिःसुवेषाभिःस्त्रीभिर्नीराजितस्ताभ्यःसंकंचुकानिव
ऋत्विग्भिर्गृह्योक्तविधिनास्वस्तिवाचनंकुर्यात् ॥ तत्रजीवत्यतिपुत्राभिःसुवेषाभिःस्त्रीभिर्नीराजितस्ताभ्यःसंकंचुकानिव
स्त्राणिदद्यात्शिष्टाचारात् ॥ ततआचार्योयजमानंदक्षिणतउदङ्मुखस्तिष्ठन्ऋत्विग्दत्तपूर्वादिंकुंभत्रयेणक्रमेणैकैकमंत्रेणस्त्रा
पयेत् ॥ सहस्राक्षंशतधारमृषिभिःपावनंकृतं ॥ तेनत्वामभिषिंचामिपावमन्यःपुनंतुते ॥ भगंतेवरुणोराजाभगंसूर्योबृहस्पतिः॥
भगमिंद्रश्चवायुश्चभगंसप्तर्षयोददुः ॥ यत्तेकेशेषुदौर्भाग्यंसीमंतेयच्चमूर्धनि ॥ ललाटेकर्णयोरेक्ष्णोरापस्तदघ्नंतुसर्वदा ॥ तत

१ व्योमकेशादिपंचदशनामस्थाने व्योमकेशंपार्वतींभीमजंवसुदेवंसूर्यंभीमंशुक्रंगुरुंशुभंशनिचंद्रंराहुंकेतुंस्कंदंश्रीकृष्णमितितत्तन्नाम्नाप्रयोगःशांति
रत्ने कृतोस्ति ॥ २ सर्वोपधानिच्छंदोगपरिशिष्टे॥कुष्ठमांसीहरिद्रेद्वेमुराशैलेयचंदने ॥ वचांचंपकमुस्ताचसर्वोषध्योदशस्मृताः ॥ सर्वगधामदनरत्नेकुंकुमाग-
रुक्पूरकस्तूरीचंदनंतथा ॥ जातीफलमितिप्रोक्ताःसर्वगंधाःसदाबुधैः ॥ इति ॥

श्रुतुर्भिर्मिलितैः कलशैर्ऋत्विग्धृतैर्बृहत्पराशरैर्मन्त्रैरभिषेकं कारयेत् ॥ मन्त्रान्स्वयंपठेदाचार्यः ॥ एतद्वैपावनं स्नानं सहस्राक्ष
 मृषिस्मृतम् ॥ तेन त्वाशतधारेण पावमान्यः पुनं त्विमाः ॥ शक्रादिदशदिक्पाला ब्रह्मेशाः केशवादयः ॥ आपस्ते घ्नंतु दौर्भाग्यं
 शांतिं ददतु सर्वदा ॥ सुमित्र्या न आप ओषधयः संतु दुर्मित्र्यास्तस्मै संतु योऽस्मान् द्वेष्टि यंच वयं द्विष्मः ॥ समुद्रागिरयो नद्यो मुनय
 श्रपतिव्रताः ॥ दौर्भाग्यं घ्नंतु ते सर्वे शांतिं यच्छंतु सर्वदा ॥ पादगुल्फोरुजं घास्य नितंबोदरनाभिषु ॥ स्तनोरोबाहुहस्ताग्र्यीवास्कंधां
 गसंधिषु ॥ नासाललाटकर्णभ्रूकेशां तेषु च यत्स्थितम् ॥ तदा पोघ्नंतु दौर्भाग्यं शांतिं यच्छंतु सर्वदेति ॥ तत आचार्यः प्राञ्जु खोज
 मानस्य पश्चात्तिष्ठन् स्वपाणिना गृहीत कुशत्रयां तर्हिते यजमानमूर्धनि औदुंबरेण सुवेणसा पित्तं लंजुहयात् ॥ ॐ मिताय स्वाहा ॥
 ॐ संमिताय स्वाहा ॥ ॐ शालाय ॥ ॐ कटंकटाय ॥ ॐ कूष्मांडाय ॥ ॐ राजपुत्राय स्वाहेति ॥ यथा मन्त्रलिंगं त्यागं यज
 मानः ॥ शालकटंकटकूष्मांडराजपुत्रायेति समासां गीकारेण आहुतिचतुष्टयमित्यपराकः ॥ तत इध्माधानादिकृत्वा पूर्वोक्तैः
 षड्भिर्मन्त्रैरग्नावदानधर्मेण च रुहोमः व्योमकेशाय स्वाहेत्येवं पंचदशाहुतयश्च ॥ ततः स्विष्टकृदादिप्रायश्चित्तहोमांतं कृत्वा च रु
 क्षेषेणाभिषेकशालायां लोकपालेभ्यो बलीन् दद्यात् ॥ इंद्राय नम इत्यादि ईशानांतमित्यष्टदिक्षु ॥ ब्रह्मणे नमः अनंताय नमः इति
 ईशानपूर्वयोर्मध्ये बलिद्वयं ॥ अथ यजमानः सुस्नातः शुक्लगंधानुलेपनमाल्यांबरधर आचार्यसहित आस्तीर्णकुशेषु शूर्पे निहितमुप
 हारं विनायक गायत्र्या विनायकयैतमुपहारं निवेदयामीत्यंतया विनायकाय निवेदयेत् ॥ सकृदवहतांस्तुलाः, तिलपिष्टमिश्रौद
 नः, पक्कमत्स्याः इ अपक्वाः इ माषविकारास्तदाकारावा, पक्कमपक्कंचमांसं तादृशमाषविकारौवा, चित्रं सुगंधिपुष्पं, चंदनादिसुगं

धिद्रव्यं, त्रिविधासुरा गुडमधुपिष्टमिश्राणिससैधवानिपात्रत्रयस्थितानिक्षीराणिवा, मूलकं ३, पूरिकाः ३, अपूपः ३, उंडेरक
 स्रजः (उंडेरकाः क्षुद्रापूपाः) ३, दध्योदनः, पायसं, गुडमिश्रितंतंडुलादिपिष्टं, लड्डुकाः ३, इत्युपहाराः ॥ ईदृशमेवोपहारमंबिका
 गायत्र्यांबिकायै एतमुपहारं निवेदयामीत्यंतयांबिकायै निवेदयेत् ॥ तत आचमनफलतांबूलदक्षिणानीराजनपुष्पांजलिभिर
 भ्यर्च्य शिरसाभूमिं गत्वोक्तगायत्रीभ्यां विनायकमंबिकां च नमस्कुर्यात् ॥ गंधपुष्पदूर्वासर्षपयुतेन कुसुममात्रयुतेन चोदकेनांजलि
 मापूर्य पूर्वोक्तगायत्रीभ्यां प्रत्येकं पृथगर्घ्यं दत्वा दूर्वासर्षपपुष्पपूर्णांजलीताभ्यां दत्वा विनायकमुपतिष्ठेत् ॥ रूपंदेहियशोदेहिभगं
 भगवन्देहिमे ॥ पुत्रान्देहिधनं देहिसर्वान्कामांश्च देहिमे इति ॥ ततोरूपंदेहियशोदेहिभगं भगवति देहिमे ० इति यथापाठमंत्रे
 णांबिकामुपतिष्ठेतेति महार्णवः ॥ बृहत्साराशरेणोपस्थाने मंत्रांतरमुक्तम् ॥ सौभाग्यमंबिके देहिभगं रूपं यशोपि च ॥ स्त्रियं
 पुत्रांश्च कामांश्च तथा शौर्यं च देहिमे ॥ गणेशमातरं बालेयत्किंचिन्मदभीप्सितम् ॥ एकनाम्नैव तद्देवि देहि गौरिव रान्ममेति ॥
 तत आस्तीर्णकुशेषु शूर्पसर्वप्रकारमुपहारशेषं निधाय चतुष्पथभुवमुपलिप्य तत्र गुरुः शूर्पं निदध्यात् ॥ यजमानः प्रक्षालितपाद
 आचांतो मंत्रोक्तदेवताभ्यो बलिंदद्यात् ॥ मंत्राः ॥ बलिं गृह्णंस्त्विमं देवा आदित्यावसवस्तथा ॥ मरुतश्चाश्विनौरुद्राः सुपर्णाः प
 त्नगाग्रहाः ॥ असुराया तु धानाश्च पिशाचामातरो रगाः ॥ शकिन्यो यक्षवेताला यो गिन्यः पूतनाः शिवाः ॥ जंभकाः सिद्धगंध
 र्वानागा विद्याधरा नगाः ॥ दिक्पाला लोकपालाश्चैव विष्णविनायकाः ॥ जगतां शांतिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ॥ माविघ्नं
 माचमेपापं मासंतु परिपंथिनः ॥ सौम्या भवंतु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः इति ॥ ततो यजमानो गृहमागत्य क्षालितपाद आच

म्यपूर्णाहुतिं हुत्वा आचार्यसंपूज्य सदक्षिणं वस्त्रयुग्मतस्मै दद्याद्दक्षिणं दत्त्वाऽन्येभ्यश्च भूयसीं दद्यात् ॥
 स्थापितदेवतानामुत्तरपूजाविसर्जनपूर्वकमाचार्याय समर्पणं विधाय परित्तरणविसर्जनादि विभूतिधारणांतं कृत्वा गच्छेत्
 न्निसृज्य दशावरान्ब्राह्मणान्भोजयेद्दीश्वरार्पणं कुर्यात् ॥ विवाहाद्यारंभे विवाहकर्मणो निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थमिति ॥ उपसर्गनिवृ
 त्तिकामः श्रीकाम इति वा तत्तत्प्रसंगानुरोधेन संकल्पवाक्यो हः ॥ इति वैनायकीशांतिः ॥ ४३ ॥

॥ १२३ ॥ अथ कूर्ष्मांडहोमः ॥

श्रीः ॥ यजमानः आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य ममास्य कुमारस्य करिष्यमाण उपनयने कन्याया विवाहे वामंगलारंभात् पू
 र्वमध्ये वा उपस्थितसूतकनिवृत्तिपूर्वकं शरीरशुद्ध्या प्राप्तकर्मण्यधिकारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं जमदग्निप्रोक्तं कूर्ष्मांडहोमं
 करिष्ये ॥ तदंगं गणपतिपूजनादिकरिष्ये ॥ इति संकल्प्य कृत्वा चार्चयन् वृत्वा आचार्यस्तु यथा स्वर्गे इत्यादिसंप्रार्थयेत् ॥ अथाचार्य आ
 चम्य प्राणानायम्य देशकालादि निर्दिश्य यजमानेन कूर्ष्मांडहोमकर्मणि वृतो हमाचार्यकर्मकरिष्ये इति संकल्प्य आसनस्थलशुद्धिं
 सर्पपविकिरणांतं कृत्वा ॥ तदंगहोमं कर्तुं स्थंडिलादिसंकलं कर्मकरिष्ये इति संकल्प्य ॥ स्थंडिलसंस्कारं कृत्वा पावकनामानमग्निं
 प्रतिष्ठाप्य चत्वारिंशृंगेत्यादिभिर्ध्यात्वान्वादध्यात् ॥ समिद्धयमादाय क्रियमाणे कूर्ष्मांडहोमे देवतापरिग्रहार्थमित्यादि चक्षुषी
 आज्येनेत्यंतमुक्त्वान्नप्रधानं 'चरुपक्षे सवितारं चरुणा यक्ष्ये अग्निं' स्वष्टकृतं चरुणा यक्ष्ये' देवानादित्यान् । विश्वान् देवान् । द्या

प्रायश्चित्तीयसिन्नेव होमे पूर्वक्षौरादि ।

१ आरब्धमागलिककर्मण्याशौचादिसंपाते सस्कार्यमातूरज आद्यन्योपघातकप्रामौवाप्रसगानुरोधेन संकल्पे तत्तदह प्रायश्चित्तीयसिन्नेव होमे पूर्वक्षौरादि ।

112211

॥१२३॥
कूष्मांडः-

112211

कृतइदं॥ अथप्रधानहोमः॥ यद्देवा इत्यनुवाकत्रयस्य त्रह्मास्वयं भूर्भुवः॥ देवादयो देवताः॥ पत्न्यादीनि छंदांसि॥ होमे विनियोगः॥ ॐ यद्देवा देवहेळं न देवा सश्च कृमावयं॥ आदित्यास्तस्मान्मा मुंचतर्तस्य तर्तन मामितस्वाहा॥ देवेभ्य आदित्येभ्य इदं०॥ ॐ देवा जीवनकाम्या यद्वा चानृतमूद्रिम॥ तस्मान्न इह मुंचत विभ्वे देवाः सजोर्पसः स्वाहा॥ विश्वेभ्यो देवेभ्य इदं०॥ ॐ ऋतेन द्यावापृथिवी ऋतेन त्वं सरस्वति॥ कृतान्नः पाद्येन सोयत्किंचानृतमूद्रिमस्वाहा॥ द्यावापृथिवीभ्यां सरस्वत्यै चेदं०॥ ॐ इंद्राग्नी मित्रावरुणौ सोमो धाता दृहसतिः॥ तेनो मुंचत्वेन सोयद्रन्यकृतमारिमस्वाहा॥ इंद्राग्नी मित्रावरुणसोमधातृ दृहसतिभ्य इदं०॥ ॐ सजातशं सादुतजां मिश्रं साज्ज्यार्यसः शं सोऽदुतवाकनीयसः॥ अनाधृष्टं देवकृतं यदेनस्तस्मात्त्वमस्मान्जातवेदो मुमुग्धिस्वाहा॥ जातवेदस इदं०॥ ॐ यद्वा चायन्मनसा बाहुभ्यां मरुभ्यां मघीवद्वा शिशैर्यददृतं च कृमावयं॥ अग्निर्मातस्मादेन सो गार्हपत्यः प्रमुंचतुच कृमयानि दुष्कृतास्वाहा॥ अग्नये गार्हपत्यायेदं०॥ ॐ येन त्रितो अर्णवा निर्वभूव येन सूर्ये तर्मसो निर्मुमोच॥ येनैन्द्रो विश्वा अजहा दराती स्तेनाहं ज्योतिं पाज्योतिरानशान आक्षिस्वाहा॥ ज्योतिप इदं०॥ ॐ यत्कुसीदुमप्रतीतं मये ह्येनयमस्य निधिना चरामि॥ एतत्तदग्ने अनुणो भवामि जीवन्नेव प्रति तत्तैदधामिस्वाहा॥ अग्नय इदं०॥ ॐ यन्मर्धमाता गर्भं सत्येनश्चकार यत्पिता॥ अग्निर्मातस्मादेन सो गार्हपत्यः प्रमुंचतुदुरितायानि च कृमकरोतु मामनेन सस्वाहा॥ अग्नये गार्हपत्यायेदं०॥ ॐ यदापि पेपमातरं पितरं पुत्रः प्रमुदितो धर्यन्॥ अहिं सितौ पितरौ मया तत्तदग्ने अनुणो भवामिस्वाहा॥ अग्नय०॥ ॐ यदुतरिक्षं पृथिवी मुत द्यां यन्मातरं पितरं वा जिहि सिम॥ अग्निर्मातस्मादेन सो गार्हपत्यः प्रमुंचतुदुरितायानि च कृमकरोतु मामनेन सस्वाहा॥ अग्नये गार्हपत्यायेदं०॥ ॐ अय

डाशसा निशसायत्पराशमायदेनश्चकमानूतनयत्पुराणं ॥ अग्निर्मा० नेनस० स्वाहा ॥ अग्नयेगार्हपत्या० ॥ ॐ अतिक्रामामिदुरि
तंयदेनोजहामिरिग्रं परमेसधस्थे ॥ यत्रयं तिसुकृतोनापिदुष्कृतस्तमारौहामिसुकृतांनुलोक० स्वाहा ॥ अग्नय० ॥ ॐ त्रितेदेवामिदुरि
मनेनस० स्वाहा ॥ अग्नयेगार्हपत्यायेदं० ॥ ॐ ततोमायदि किंचिदानशेन्निर्मातस्मादेनसो गार्हपत्यः प्रमुंचतुदुरितायानिचकमकरोतुमा
शुंधनीः स्वाहा ॥ अग्नयः शुंधनीभ्यइदं० ॥ ॐ द्विविजाताअप्सुजातायाजाताओषधीभ्यः ॥ अथोयाअग्निजाआपस्तानः शुंधंतु
तनुस्वाहा ॥ अग्न्योहिरण्यवर्णाभ्यइदं० ॥ ॐ यदापोनकंदुरितंचरामयद्वा दिवानूतनयत्पुराणं ॥ हिरण्यवर्णास्ततउत्पुनी
ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणावंदमानस्तदाशस्तेयजमानोहविभिः ॥ अहेडमानोवरुणेहबोधुरशःसमानआयुःप्रमोषीः स्वाहा ॥
वरुणायेदं० ॥ ॐ त्वनोअग्नेवरुणस्यविद्वान्देवस्यहेडोर्वयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठोवाहितमःशोशुचानोविश्वाद्देवाःसिप्रमुमु
ग्ध्यस्तस्वाहा ॥ अग्नीवरुणाभ्यामिदं० ॥ ॐ सत्वंनोअग्नेवमोभवोतीनेदिष्ठोअस्याउषसोव्युष्टौ ॥ अर्वयक्ष्वनोवरुणः
राणोवीहिमृडीकःसुहवोनएधिस्वाहा ॥ अग्नीवरुणाभ्यामिदं० ॥ १॥ ॐ यददीव्यं नृणमंहवभूवादि तसन्वासंजगरजनेभ्यः ॥ अयासंनहव्यमूहि
षेयानोधेहिभेषजस्वाहा ॥ अयसेग्नय० ॥ १॥ ॐ यददीव्यं नृणमंहवभूवादि तसन्वासंजगरजनेभ्यः ॥ अग्निर्मातस्मादिंद्रश्च
संविदुनौप्रमुंचतास्वाहा ॥ अग्नीद्राभ्यामिदं० ॥ ॐ यददीव्यं नृणमंहवभूवादि तसन्वासंजगरजनेभ्यः ॥ अग्निर्मातस्मादिंद्रश्च
इयाचराष्ट्रभृच्चतान्यप्सरसावनुदत्तामृणानिस्वाहा ॥ उग्रंपश्यैराष्ट्रभृतेप्सरोभ्यइदं० ॥ ॐ उग्रंपश्यैराष्ट्रभृत्किंलिबषा

णियदुक्षवृत्तमनुदत्तमेतत् ॥ नेत्रक्रुणानुणवृत्तसमानोयमस्यलोकेअधिष्ठायास्वाहा ॥ उग्रंपश्यायिराष्टभृतेयमायचेदं ॥
 ॐ अर्चतेहेडोवरुणनमोभिरवयज्ञेभिरामहेहविभिः ॥ क्षयन्नस्मभ्यमसुरप्रचेतोराजन्नेनाऽसिशिश्रथःकृतानिस्वाहा ॥ वरु
 णायेदं ॥ ॐ उदुत्तमंवरुणपाशंमस्मदवाधमंविमंध्यमऽश्रथाय ॥ अथावयमोदित्यत्रतेतवानागसोअदितयेस्यामस्वाहा ॥
 वरुणायेदं ॥ ॐ इमंमेवरुणश्रुधीं ॥ वरुणायेदं ॥ ॐ तत्त्वायामि ॥ अथावयमोदित्यत्रतेतवानागसोअदितयेस्यामस्वाहा ॥
 अग्नीवरुणाभ्यामिदं ॥ ॐ सत्वंनोअग्ने ॥ अग्नीवरुणभ्यामिदं ॥ ॐ संकुसुकोविकुसुकोनिर्ऋत्योयश्चनिःस्वनः ॥ ते
 अस्मद्यक्षमनागसोदूराहूरमचीचतुःस्वाहा ॥ संकुसुकविकुसुकनिर्ऋथनिःस्वनेभ्यइदं ॥ ॐ निर्यक्षममर्चाचतेकृत्यानिर्ऋति
 च॥ तेनयोऽस्मत्समृच्छतैतमस्मैप्रसुवामसिस्वाहा ॥ दुःशऽसानुशऽसघणानुघणेभ्यइ ॥ ॐ आयुष्टेविश्वतौदधद्वयमग्नि
 न्योऽस्मत्समृच्छतैतमस्मैप्रसुवामसिस्वाहा ॥ ॐ आयुर्दाअग्नेहविषेजुपाणोघृतप्रतीकोघृत
 सासऽशिवेन ॥ त्वष्टानोअन्नविदधातुरायोनोमाष्टुतन्वोऽयद्विलिष्टऽस्वाहा ॥ त्वष्टइदं ॥ २॥ ॐ आयुष्टेविश्वतौदधद्वयमग्नि
 ररेण्यः ॥ पुनस्तेप्राणआयातिपरायक्ष्मऽसुवामितेस्वाहा ॥ आयुर्देमयइ ॥ ॐ इममग्नायुषेवर्चसकृधितिगमो
 योनिरेधि ॥ घृतंपीत्वामधुरागव्यपितेवपुत्रमभिरक्षताद्रिमऽस्वाहा ॥ अग्नयेवरुणायादितयेविश्वेभ्योदेवे
 जोवरुणसऽशिशिधाधि ॥ मातेवास्माअदितेशर्मयच्छविश्वेदेवाजरदष्टिर्यथासत्स्वाहा ॥ अग्नयेपवमानायेदं ॥ ॐ अग्नेप
 भ्यइदं ॥ ॐ अग्नआयूऽपिपवसआसुवोर्जमिपचनः ॥ ओरेवाधस्वदुच्छुनाऽस्वाहा ॥ अग्नयेपवमानायेदं ॥ ॐ अग्नेप

वे॒स्व॒स्व॒पा॒अ॒स्मे॒व॒र्चः॒सु॒वी॒र्यं ॥ द॒र्ध॒द्र॒यि॒म॒यि॒पोष॑स्व॒हा ॥ अ॒ग्नये॑प॒व॒मा॒नाये॑दं ॥ अ॒ग्नये॑प॒व॒मा॒नाये॑दं ॥ ॐ अ॒ग्नि॒र्ऋ॒षिः॒प॒र्व॒मा॒नः॒पा॒ञ्च॒ज॒न्यः॒पु॒रोहि॑
 तः ॥ त॒मी॒म॒हे॒म॒हा॒ग॒य॑स्व॒हा ॥ अ॒ग्नये॑प॒व॒मा॒नाये॑दं ॥ ॐ अ॒ग्ने॒जा॒ता॒न्प्र॒णु॒दानः॒स॒प॒त्ना॒न्प्र॒त्य॒जा॒ता॒न्जा॒त॒वे॒दो॒नु॒द॒स्व ॥ अ॒
 स्मे॒दी॒द्रि॒हि॒सु॒म॒ना॒अ॒हे॒ळ॒न्ध॒र्म॒न्ते॒स्याम॑त्रि॒व॒रू॒थ॒उ॒भौ॒स्वा॒हा ॥ अ॒ग्नये॑जा॒त॒वे॒द॒स॒इ॒दं ॥ ॐ स॒ह॒सा॒जा॒ता॒न्प्र॒णु॒दानः॒स॒प॒त्ना॒न्प्र॒त्य॒
 जा॒ता॒न्जा॒त॒वे॒दो॒नु॒द॒स्व ॥ अ॒ग्नि॒नो॒ब्र॒हि॒सु॒म॒न॒स्य॒मा॒नो॒व॒य॑स्स्या॒म॒प्र॒णु॒दानः॒स॒प॒त्ना॒न्प्र॒त्य॒जा॒ता॒न्प्र॒णु॒दानः॒स॒प॒त्ना॒न्प्र॒त्य॒
 तो॒ज॒नो॒वृ॒को॒वा॒रो॒जि॒घा॑स्स॒ति ॥ ता॑स्त्वं॒वृ॒त्र॒ह॒न्ज॒हि॒व॒स्व॒स्म॒भ्य॒मा॒भ॒र॒स्वा॒हा ॥ अ॒ग्नये॑वृ॒त्र॒घ्न॒इ॒दं ॥ ॐ अ॒ग्ने॒यो॒नो॒भि॒
 मा॒नो॒य॒श्च॒नि॒ष्ट्यः॑॥तं॒व॒य॑स्स॒मि॒धं॒कृ॒त्वा॒तु॒भ्य॒म॒ग्ने॒पि॒द॒ध॒म॒सि॒स्वा॒हा ॥ अ॒ग्नय॑इ॒दं ॥ ॐ अ॒ग्ने॒यो॒नो॒भि॒दा॒स॒ति॒स॒
 उ॒षा॒श्च॒त॒सै॒नि॒न्नु॒क्ते॒स॒र्व॒पा॒प॑स्स॒मू॒ह॒ता॑स्व॒हा ॥ उ॒ष॒से॒नि॒सु॒च॒इ॒दं ॥ ॐ यो॒नः॒श॒पा॒द॒श॒प॒तो॒य॒श्च॒नः॒श॒प॒तः॒श॒पा॒त् ॥
 व॒प्र॒क्षाय॑तो॒मा॒त॒स्यो॒च्छि॑षि॒किं॒च॒न॒स्वा॒हा ॥ ॐ यो॒नः॒श॒पा॒द॒श॒प॒तो॒य॒श्च॒नः॒श॒प॒तः॒श॒पा॒त् ॥
 या॑श्च॒ा॒हं॒दे॒भि॒ये॒च॒मा॑स्व॒हा ॥ दे॒वे॒भ्य॑इ॒दं ॥ ॐ यो॒नः॒श॒पा॒द॒श॒प॒तो॒य॒श्च॒नः॒श॒प॒तः॒श॒पा॒त् ॥
 च॒स॒र्वा॑स्त्ता॒न्म॒ष्म॒षा॒कु॒रु॒स्वा॒हा ॥ अ॒ग्नय॑इ॒दं ॥ ॐ यो॒नः॒श॒पा॒द॒श॒प॒तो॒य॒श्च॒नः॒श॒प॒तः॒श॒पा॒त् ॥
 हि॒तः॒स्वा॒हा ॥ ब्र॒ह्म॒ण॑इ॒दं ॥ ॐ उ॒दे॒षां॒बा॒ह॒अ॒ति॒र॒मु॒द्ध॒र्चो॑ऽअथो॒बलं ॥ स॒श॒न॒ि॒तं॒क्ष॒त्रं॒मे॒जि॒ष्णु॒य॒स्या॒ह॒म॒सि॒पु॒रो
 ब्र॒ह्म॒ण॑इ॒दं ॥ ॐ पु॒न॒र्म॒नः॒पु॒न॒रा॒यु॒र्म॒आ॒गा॒त्पु॒न॒श्च॒क्षुः॒पु॒नः॒श्रो॒त्रं॒म॒आ॒गा॒त्पु॒नः॒प्रा॒णः॒पु॒न॒रा॒कू॒तं॒म॒आ॒गा॒त्पु॒न॒श्चि॒तं॒पु॒न॒रा॒धी॒तं॒म॒आ॒गा॒
 त् ॥ वै॒श्व॒ान॒रो॒मे॒दं॒ब्ध॒स्त॒नू॒पा॒अ॒व॒वा॒ध॒तां॒दु॒रि॒ता॒नि॒वि॒श्व॒ा॒स्वा॒हा ॥ वै॒श्व॒ान॒रा॒ये॑दं॒न॒म॒म ॥५१॥ इति॑प्रधानहोमः ॥ ॐ सि॒ंहे

व्याघ्रतयापृदाकौ ॥ त्विषिरग्नौ ब्राह्मणे सूर्येया ॥ इंद्रया देवी सुभगा जजान ॥ सान आगन्वर्चसा संविदना स्वाहा ॥ त्विष्यै
 देव्या इदं ॥ ॐ यारो जन्त्ये दुंदुभा वार्यतायां ॥ अश्वस्य क्रंदो पुरुषस्य मायौ ॥ इंद्रया ० ॥ सान आगन्व ० दाना स्वाहा ॥ त्विष्यै
 देव्या ० ॥ ॐ या हस्तिनि द्वापि निया हिरण्ये ॥ त्विषिरश्वेषु पुरुषे पुगोषु ॥ इंद्रं ० सान ० ॥ त्विष्यै ० ॥ ॐ रथे अक्षे षुषभस्य वाजे ॥ वा
 ते पजन्ये वरुणस्य शुभे ॥ इंद्रया देवी सुभगा जजान ॥ सान आगन्वर्चसा संविदना स्वाहा ॥ त्विष्यै देव्या इ ० ॥ ॐ अग्ने भ्यावति न्नभि
 देव्या ० ॥ ॐ या हस्तिनि द्वापि निया हिरण्ये ॥ त्विषिरश्वेषु पुरुषे पुगोषु ॥ इंद्रं ० सान ० ॥ त्विष्यै देव्या इ ० ॥ ॐ अग्ने भ्यावति न्नभि
 देव्या ० ॥ ॐ या हस्तिनि द्वापि निया हिरण्ये ॥ त्विषिरश्वेषु पुरुषे पुगोषु ॥ इंद्रं ० सान ० ॥ त्विष्यै देव्या इ ० ॥ ॐ अग्ने अंगिरः शतं ते संत्वानृतः सहस्रं त उपावृ
 तं पुजन्ये वरुणस्य शुभे ॥ इंद्रया देवी सुभगा जजान ॥ सान आगन्वर्चसा संविदना स्वाहा ॥ त्विष्यै देव्या इ ० ॥ ॐ पुनरुजा निवर्तस्व पुनरग्न इहा युषा ॥ पुनर्नः
 न आवर्तस्वायुषा वर्चसा सन्यामेधया प्रजया धनेन स्वाहा ॥ अभ्या ० ॥ ॐ विश्वेऽस्त्रिया विश्वतस्परि स्वाहा ॥ अभ्यावति
 तैः ॥ तासां पोषस्य पोषेण पुनर्नो नष्टमाकृधि पुनर्नोरयिमाकृधि स्वाहा ॥ विश्वेऽस्त्रिया विश्वतस्परि स्वाहा ॥ स एतान्पाशान्प्रमुचन् प्रवेदुसनो मुचा
 पाहि विश्वतः स्वाहा ॥ अभ्या ० ॥ ॐ वैश्वानराय प्रतिवेदयामो यदी नृणां सगरोद्वतासु ॥ ॥ स एतान्पाशान्प्रमुचन् प्रवेदुसनो मुचासि
 नेग्रथ ० ॥ ततः उपस्थानं ॥ ॐ वैश्वानराय प्रवित्रैर्यत्सगरमभिधावाभ्याशां ॥ अनाजान नमनसाया च मानो यदत्रैनो अवतत्सुवा
 तुदुरितादवद्यात् ॥ वैश्वानरः पर्वयान्नः पवित्रैर्यत्सगरमभिधावाभ्याशां ॥ विजिहीष्व लोकान्कृधि बंधान्मुचासि
 मि ॥ अमी ये सुभगे दिवि विचृतौ नाम तारके ॥ प्रेहामृतस्य च्छतामेतद्वृक्षकमोचनं ॥ विजिहीष्व लोकान्कृधि बंधान्मुचासि
 बर्द्धकं ॥ यो नैरिव प्रच्युतो गर्भः सर्वान्पथो अनुष्व ॥ स प्रजान्प्रतिगृणीत विद्वान्प्रजापतिः प्रथमजाऋतस्य ॥ अबंध्वेके ददतः प्रयच्छादा तु ने
 जारसः पुरस्तादच्छिन्नं तु मनुसंचरेम ॥ ततं तु मन्वेके अनसंचरं त्रियेषां द्रुतं पित्रियमार्यनवत् ॥ अबंध्वेके ददतः प्रयच्छादा तु ने
 च्छकृन्वांश्चः स्वर्गेषां ॥ आरभेथामनुसर्भेथांश्च समानं पंथां मवथो धृतेन ॥ यद्वापुर्तपरि विष्टं यदुग्नौ तस्मै गोत्रायि हजायापती सश्न

भेथां॥यदुंतरिक्षं पृथिवीमुत द्वां यन्मातरं पितरं वा जिहिः सिम ॥ अग्निमातस्मादेनसो गार्हपत्य उन्नोनेषदुरितायानिचकम ॥ भूमि
मातादितिनोजनित्रं आतां तरिक्षमभिशस्त एनः ॥ द्यौर्नः पितापितृयाच्छंभवासिजामित्वामाविवित्सिलोकात् ॥ यत्र सुहा
स्यन्नतर्वाकरिष्यन् ॥ यहेवानांचक्षुष्यागो अस्ति यदेव किंच प्रजिज्जाहमग्निमातस्मादनुणं कृणोतु ॥ यदन्नमद्वयनृतेन देवादास्यन्नदा
सो हिरण्यमतगामजामवि ॥ यहेवानां० कृणोतु ॥ ३ ॥ इत्युपस्था ॥ त्रयोदश्यासमिधमादध्यात् ॥ ॐ यन्मर्यामनसा
वाचाकृतमेनः कदाचन ॥ सर्वस्मात्तस्मान्मेळितो मोग्धित्वं हिवेत्थ यथा तथ स्वाहा ॥ अग्नये वैश्वानरायेदं ॥ इतिसमिधं हु
त्वा प्रधानहोमात्पूर्वस्विष्टकृद्धो माकरणपक्षे पूर्वावत्तेन हविषास्विष्टकृतं जुहोति ॥ पूर्वोक्तमंत्रौ ग्राह्यौ ॥ कर्मसमृद्धर्थे जया हि होमः
कार्यः ॥ ततः स्वगृह्योक्ते विधिनास्विष्टकृदादि होमशेष समापनाद्व्यर्चनाचार्यपूजनदक्षिणादानसमंत्रपंचगव्यप्राशन कर्मेश्वरार्प
णाद्यंतं कर्मशेषं समापयेत् ॥ अयं होमो बौधायनमतेन पक्कचरुसहितो गुरुः जमदग्निप्रोक्तस्तद्रहितो लघुरिति इति कूष्मांडहोमः ॥

श्रीः ॥ आचम्य पवित्रपाणिः प्राणानाचम्य देशकालौ संकीर्त्य ॥ अथ बृहस्पतिं शंतिः ॥
हसत्यानुकूल्यसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं बृहस्पतिं शंतिं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य गणेशपूजनाद्याचार्यवरणांतं कुर्यात् ॥ त
त आचार्यः यथाशक्ति निर्मितप्रतिमायामशुत्तारणांतं कृत्वा ॥ यदन्नसंस्थितं भूतमित्यादि देशसंस्कारांते होमदेशस्येशानदेशे म

हीद्यौरितिस्पृष्टभुविओपधयइतिधान्यंप्रक्षिप्याकलशेव्वितिधवलकुंभंस्थाप्येमंगेइति तीर्थोदकेनापूर्याश्वत्थेवोनिपदनमि
 तिअश्वत्थपल्लवान् गायत्र्यादिमंत्रैःपंचगव्यंदेवस्यत्वा० भिषिचामीतिकुशोदकंनिक्षिप्य युवासुवासाइतिपीतवस्त्रेणसंवैष्टस
 हिरलानीतिपंचरत्नानिप्रक्षिप्ययाऽओषधीरितिबक्ष्यमाणान्सर्वान्निक्षिपेत् ॥ यूथिकांदमनंमधुपुष्पाणिपत्रं (भाषायांपत्रज
 मितिप्रसिद्धं) पलाशंसर्पपान्जडामांसीगुडूचींअपामार्गविडंगंशंखिनीवचांसहदेवींविष्णुक्रांतांशतावरींकुष्टंमांसींहरिद्रेष्ठेमु
 राशैलेयचंदनंवचांकचोरंमुस्तांचेतिनिक्षिप्यपीतवस्त्रेणावेष्ट्य ॥ततश्चंदनादिनाकुंभमभ्यर्च्यपूर्णार्दवींतिथथाविभवंसौवर्णादि
 पूर्णपात्रंनिधायतत्राष्टदलोत्तरदलेहरिताक्षतनिर्मितदीर्घचतुरस्त्रपीठे हैर्माबृहस्पतिप्रतिमांस्थाप्यतिभिस्तावतीभिःसर्पि
 नादिअन्वाधानेचक्षुपीआज्येनेत्यंते बृहस्पतिमष्टोत्तरशतसंख्याभिरश्वत्थसमिद्धिस्तावतीभिराज्याहुतिभिस्तावतीभिःसर्पि
 मिश्रपायसाहुतिभिःतावतीभिःसाज्ययवव्रीहिसहितैर्बृहस्पतिं पूजयेत् ॥ दध्योदनंनैवेद्यं ॥ दक्षिणायांपुष्परागोमाणिक्यंयथा
 कुंभोपरिस्थापितप्रतिमायामावाहनादिपोडशोपचारैर्बृहस्पतिं पूजयेत् ॥ तत्रविशेषः ॥ पीतवस्त्रयुग्मंपीतंयज्ञोपवीतंपीतंच
 दनंपीताक्षतान् ॥ चंपकादिर्पातपुष्पं ॥ बिल्वमज्जाधूपं ॥ घृतदीपं ॥ ततोयजमानोयथान्वधानंबृह
 शक्तिहेमवा ॥ पूजांतेऽब्जिगाभिर्वारुणीभिःपावमानीभिश्चग्रहमखोक्ताभिःकुंभानुमंत्रणं ॥ ततोयजमानोयथाक्ताअष्टोत्तरशतमश्वत्थ
 सतयइंदनममेतित्यागंकुर्यात् ॥ अथाचार्योबृहस्पतिमंत्रेणप्रणवादिनाऋष्यादिस्मरणपूर्वकंदधिमध्वाक्ताअष्टोत्तरशतमश्वत्थो
 समिधोजुहुयात् ॥ तावतीराज्याहुतीःसाज्ययवव्रीहितिलाहुतीश्च ॥ ततःस्विष्टकृदादिहो

मशेषपरिस्तरणविसर्जनान्यर्चनांतंकुर्यात् ॥ ततोबृहस्पतेःगंधादिभिःपूर्वोक्तैःफलतांबूलानैःपूजनंकृत्वासयजमानोनमस्कुर्यात् ॥ ततस्ताम्रपात्रेशुद्धोदकंप्रक्षिप्यतत्रपीतानिगंधाक्षतपुष्पाणिफलंचप्रक्षिप्याध्यदद्यात् ॥ गंभीरहठरूपांगदेवैज्यसुमते प्रभो ॥ नमस्तेवाक्पतेशांतगृहाणार्घ्यंबृहस्पतेइति ॥ ततोयजमानोबृहस्पतयेकृतकर्मापणंकुर्यात् ॥ भक्त्यायतेसुराचार्यहो मपूजादियत्कृतं ॥ तत्त्वंगृहाणशांत्यर्थंबृहस्पतेनमो नमइति ॥ ततोविसर्जनंकृत्वाचार्यप्रणम्यसर्वोपचारसंयुक्तांगोयुक्तमिमां प्रतिमांतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ इतितादृशप्रतिमांदद्यादभिषेकोत्तरंवाप्रतिमादानं ॥ कुंभोदकेनाचार्यःपुत्रदारसमेतंयजमानमभिषिचेत् ॥ आपोहिष्ठे तितिसृणामांबरीषःसिंधुद्वीपआपोगायत्री ॥ समुद्रज्येष्ठाइतिचतसृणांवसिष्ठआपस्त्रिष्टुप् ॥ इदमापइत्यस्यसिंधुद्वीपआपोनुष्टुप् ॥ तामन्निवर्णमित्यस्यहिरण्यगर्भोदुर्गान्निष्टुप् ॥ याओषधीरित्यस्यार्धवर्णोभिषगोषधयोनुष्टुप् ॥ अश्ववतीर्गोमतीरित्यस्यवसिष्ठउषसस्त्रिष्टुप् ॥ यद्देवादेवहेडनंयददीव्यमायुष्टेविश्वतोदधदित्यापस्तंबशाखौफेरनुवाकैश्चतच्छंयोरारवृणीमहइति ॥ ततोब्राह्मणांश्चसंपूज्यतेभ्योभूयसींदक्षिणांदत्वाशिषोवाचयित्वाकर्मेश्वरेसमर्प्ययथाशक्तिब्राह्मणान्भोजयेत् ॥ इतिबृहस्प० ॥

॥ १२५ ॥ अथोपनयनम् ॥

कृच्छ्रत्रयप्रायश्चित्तंद्वादशसहस्रगायत्रीजपंचकरिष्ये ॥ कुमारःममकामचारकामवादकामभक्षणादिदोषापनोदार्थंकृच्छ्रत्रय

पशुवर्धिनीं भगवतीं चावाह्य तंडुलपूर्णे हरिद्राखंडपूर्गीफलयुते न्युजशरावपिहितेशरावेण सहसूत्रवेष्टिते हरिद्रादिरंजिते कलशे
 अविघ्नसंज्ञे गणपतिं चावाह्य तदस्तु गृहवैप्रतिष्ठा इति प्रतिष्ठाप्य नीराज्य आसनाद्याचमनांतं कृत्वा तैलोद्धतनोष्णोदकैरभ्यंग
 दिनीं तदस्तु गृहवैप्रतिष्ठा इति प्रतिष्ठाप्य नीराज्य आसनाद्याचमनांतं कृत्वा तैलोद्धतनोष्णोदकैरभ्यंग
 कांडात्कांडादिति दूर्वाः पुष्पाणि च समर्पयेत् ॥ ततो नैर्ऋत्यवायव्यै शानस्तं भेषु मंडपमध्योपरि भागे कोष्ठे चक्रमेण नलिनीमैत्रो
 मापशुवर्धिनीनामकेष्टितानि उक्तवत्स्थापयित्वा पूजयेत् ॥ या अपो दिव्या इति नलिन्याः प्रोक्षणे मंत्रः ॥ यासां राजेति मैत्रो
 याः ॥ यासुरा जेत्युमायाः ॥ समुद्रज्येष्ठा इत्यादि चत्वारोऽपि पशुवर्धिन्याः ॥ अन्यत्सर्वसमानं ॥ ततो वंशपात्रेण सह भगवतीं
 गौर्यादिमातृकास्थापनं वंशपात्रं स्वयंगृहीत्वा अविघ्नकलशं च पत्न्या ग्राहयित्वा सह ब्राह्मणः कनिक्रदज्जनुषमिति सूक्तं पठन्मंगल
 वाद्यघोषेण गृहांतर्गत्वा ईशानदेशे तंडुलादिपुंजत्रयोपरि त्रीण्यपि तदस्तु गृहवैप्रतिष्ठापयित्वा चंदनादिना संपूज्य स्थापितदेव
 ताम्रीत्यर्थं ब्राह्मणसुवासिनीभोजनं संकल्प्य भूयसीं दद्यात् ॥ ततो नीराजिताभ्यां दंपतीभ्यां सुहृदो वस्त्राणि युवं वस्त्राणि ० अभि
 वस्त्रा ० भद्रा वस्त्रा ० वसिष्ठा हि ० स तु वस्त्रा ० उभा उनूनं इत्यादि मंत्रैर्दद्यात् ॥ ततो तिक्रान्तजातकर्मादि संस्कारानुष्ठानं ॥ इति ॥

श्रीः ॥ तच्च दशपलमित ताच्च घटितं षडंगुलं न्नतं द्वादशांगुलं विस्तृतं घटीयंत्रं संपाद्य आचम्य प्राणानाचम्य देशकालकीर्तनां ते ममा
 ॥ १२७ अथ घटीस्थापनम् ॥

स्यकुमारस्याद्यकरिष्यमाणोपनयनेकन्यायाउद्धाहेवासुमुहूर्तकालज्ञानार्थघटीयंत्रस्थापनंकरिष्येइतिसंकल्प्यगणपतिसंपूज्यम
 हीद्यौरित्यादिमंत्रैर्धान्यराश्यापुपरिताम्बपात्रंसंस्थाप्य इमंमेइत्युदकेनापूर्यमंत्रैर्गंधद्रव्यपल्लवफलहिरण्यानिक्षिप्त्वावरुणमावाह्य
 गंधाद्युपचारैःसंपूज्यतत्रघटीयंत्रंनिक्षिपेत् ॥ तत्रमंत्रः ॥ यंत्राणांमुख्ययंत्रत्वमितिधात्रापुःपुः ॥ सौभाग्यमायुरारोग्य
 सुपुत्रधनहेतवे ॥ जलयंत्रकमेतस्मादिष्टसिद्धिप्रदंभवेत् ॥ विवाहेतु ॥ मुख्यंत्वमसियंत्राणांब्रह्मणानिर्मितंपुरा ॥ भवभा
 वायदंपत्योःकालसाधनकारणं ॥ धर्मसिंधाविदंविवाहएवलिखितंशिष्टाउपनयनेपिकुर्वेतीत्यत्रोपन्यस्तं॥इतिघटीस्थापनं ॥
 ॥ १२८ ॥ अथयेयज्ञेनसूक्तम् ॥
 श्रीः ॥ हरिः॥ येयज्ञेनदक्षिणयासमंक्ताइंद्रस्यसख्यममृतत्वमानुश ॥ तेभ्योभद्रमगिरसोवोऽस्तुप्रतिगृभ्णीतमानुवंसुमेध
 सः ॥ यषुदाजन्पितरोगोमयंवस्वतेनाभिदन्परिवत्सरेवलं ॥ दीर्घायुत्वमगिरसोवोअस्तुप्रतिगृ ॥ यऽऽकृतेनसूर्यमारोह्य
 न्दिव्यप्रथयन्पृथिवीमातरंवि ॥ सुप्रजास्त्वमगिरसोवोअस्तुप्र ॥ अयंनाभावदतिवल्गुवोगहेदेवपुत्राऽयस्तच्छृणोतन ॥
 सन्नह्मण्यमगिरसोवोअस्तुप्र ॥ विरूपासइहर्षयस्तइद्रभीरवैपसः ॥ तेअंगिरसःसुनवस्तेअग्नेःपरिजज्ञिरे ॥ १॥ येअग्नेःपरिजज्ञिरे
 ददतोअष्टकण्यं॥श्रवोद्वेवेष्वकृत ॥ प्रननंजायतामयंमनुस्तोक्मेवरोहतु ॥ यःसहस्रंशुताश्वसद्योदुानायमंहते ॥ नतमंश्रोति
 कश्चनद्विवइवसान्वारंभै ॥ सावर्ण्यस्यदक्षिणाविसिंधुरिवप्रथे ॥ नुतदुसापरिविपेसदिष्टीगोपरीणसा ॥ यदुस्तुर्वेश्रमाम

हे ॥ सहस्रदात्रामणीमोरिषन्मनुःसूर्येणास्ययतमानैतुदक्षिणा ॥ सार्वर्णेदेवाःप्रतिरत्वायुर्थस्मिन्नश्रौताअसनामवाजै ॥ २ ॥
 पुरावतोयेदिधिषंतआप्यंमनुप्रीतासोजनिमाविवस्वतः ॥ ययातेर्चेनहुष्यस्यबहिषिदेवाआसतेतेअधिब्रवंतुनः ॥ विश्वाहिवो
 नमस्यानिवंधानामानिदेवाउतयज्ञियानिवः ॥ येस्थजाताअदितेरन्नस्यरियेपृथिव्यास्तेमहृहश्रुताहवै ॥ येभ्योमातामधुम
 त्यिन्वतेपयःपीयूषंद्यौरदितिराद्रिबर्हाः ॥ उक्थशुष्मान्वृषभरान्त्वमसस्ताँऽआदित्योऽअनुमदास्वस्तये ॥ नृचक्षसोअनिमिषं
 तोऽअहृणाबृहदेवासोऽअमृतत्वमानशुः ॥ ज्योतीरथाऽअहिमायाअनागसोदिवोवर्ष्माणंवसतेस्वस्तये ॥ सन्वाजोयेसुवृधोय
 ज्ञमाययुरपरिहृतादधिरेदिविषयै ॥ तौऽआविवासनमसासुवक्तिभिर्महोऽआदित्योऽअदितिस्व ॥ ३ ॥ कोवःस्तोमैराध
 तियंजुजौषथविश्वेदेवासोमनुषोयतिष्ठन ॥ कोवोर्ध्वरंतुविजाताअंकरद्योनःपर्षदत्यंहःस्व ॥ येभ्योहोत्रांप्रथमामयेजेमनुः
 समिद्धाग्निर्मनसाससहोतृभिः ॥ तर्आदित्याऽअभयंशर्मयच्छतसुगानःकर्तसुपथास्वस्तये ॥ यईशेरेभुवनस्यप्रचेतसोविश्वे
 स्वस्थानुर्जगत्श्चमंतवः ॥ तेनःकृतादकृतादेनसस्यर्यद्यादेवासःपिपृतास्व ॥ भरेष्विद्रंसुहवंहवामहेहोमुचंसुकृतंदैव्यंजनं ॥
 अग्निमित्रवरुणंसातयेभगंद्यावापृथिवीमरुतःस्व ॥ सुत्रामाणंपृथिवीद्यामनेहंसंसुशर्माणमदितिसुप्रणीतिं ॥ दैवीनावस्वरि
 त्याहुवेमशृण्वतोदेवाऽअवसेस्व ॥ अपामीवामपविश्वामनाहुतिमपारातिदुर्विदत्रामघायतः ॥ सत्ययोवोदुवह
 नोरुणःशर्मयच्छतास्व ॥ अरिष्टःसमर्तोविश्वएधतेप्रप्रजाभिर्जायतेधर्मणस्पति ॥ यमादित्यासोनयथासुनीतिभिरतिवि

श्वानिदुरितास्व० ॥ यदेवासोर्वथवाजसातैयंशूरसातामरुतोहितेधनै ॥ प्रातर्यावाणंरथमिन्द्रसानसिमरिष्यंतमारुहेमास्व० ॥
 स्वस्तिनःपुत्रासुधन्वसुस्वस्त्यं१प्सुवृजनेस्वर्वति ॥ स्वस्तिनःपुत्रकथेषुयोनिषुस्वस्तिरायेमरुतोदधातन ॥ स्वस्तिरिद्धिप्रप
 ध्रेश्रेष्ठारेक्वणस्वत्यभियावाममेति ॥ सानोअमासोअरेणेनिपातुस्वावशाभवतुदेवगौपा ॥ एवाप्लतेःसुनुरवीवृधद्वोविश्वआदि
 त्याऽअदितेमनीषी ॥ इशानासोनरोअमर्त्येनास्ताविजनोदिव्योगयेन ॥ बृहस्पतेप्रथमसूक्ततदस्तुगृहवैइत्यादिपठनीयं ॥

॥ १२९ ॥ उपनयनप्रयोगः ॥

श्रीः ॥ अथापरेद्युःकृतनित्यक्रियःकृतमंगलस्नानमलंकृतंकुमारंमात्रुत्संगेभोजयित्वा कर्तोदेशकालौसंकीर्त्य अस्यकुमारस्यो
 पनयनंकर्तुतत्प्राच्यांगभूतंवापनादिकरिष्येइतिसंकल्प्यकृतवापनंस्नापितंबद्धशिखंकुमारंमंगलतिलकंकुर्युः ॥ मौहूर्तिकंसंपू
 ज्यतदुक्तेशुभमुहूर्तेआचार्योवेद्यांप्राङ्मुखउपविष्टस्तं (मंगलाष्टकपाठपुरःसरं) स्वसमीपमानीयतन्मुखंसम्यगीक्षेत ॥ कृतनम
 स्कारंतंस्वांकैकुर्वीत ॥ अथाचारतःयेयज्ञेनेतिसूक्तेनबृहस्पतेप्रथममित्येनेनतदस्तुगृहवैइतिमंत्रैर्ब्राह्मणाउभयोःशिरस्यक्षता
 न्निक्षेपेयुः ॥ ततस्तंस्वदक्षिणतलपवेक्ष्यस्थंडिलोपलेपनादिसमुद्भवनामाग्निप्रतिष्ठांतंकृत्वा ॥ समिद्धयमादायक्रियमाणेउपन
 यनहोमेदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्ये ॥ अस्मिन्नन्वाहितेमावित्याद्याघारावाज्येनेत्यंतमुक्त्वा ॥ त्रिरग्निपवमानंप्रजापतिं
 चाज्येन शेषेणस्विष्टकृतमित्याद्याज्यंसंस्कारांतंकृत्वा कौपीनार्थंत्रिवृतंकार्पाससूत्रंकटावाबध्यकौपीनंपरिधाप्य ॥ युवंवस्त्रा

२ अत्रादावतिक्रातचौलकुर्यात् । ३ अत्रास्यद्विजत्वसिद्ध्यागायत्र्युपदेशकर्तुमिति विशेषः कौस्तुभे ।

२ अत्रादावतिक्रातचौलकुर्यात् । ३ अत्रास्यद्विजत्वसिद्ध्यागायत्र्युपदेशकर्तुमिति विशेषः कौस्तुभे ।

णीत्यसौ च श्वो दीर्घतमामित्रावरुणौ त्रिष्टुप् ॥ वासो धारणे विनियोगः ॥ ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे यवो रच्छिद्रामंतवो ह
सर्गोः ॥ अवातिरतमर्तुतानि विश्वं ऽकृतेन मित्रावरुणासचे ॥ इति मंत्रेण शुक्लं वासः परिधाप्या न्येन काषायवाससातेनैव मंत्रेण
यशस्वी स्थविरं समिद्धं ॥ अनाहनस्यं वसनं जरिष्णुपरीदं वाज्यजिनंदधे ॥ इत्यजिनं धारयित्वा ततो गायत्र्या दशकृत्वो मंत्रिताग्नि
रुपवीतं प्रोक्ष्य धारयेत् ॥ यज्ञोपवीतमिति मंत्रस्य परब्रह्म परमात्मा त्रिष्टुप् ॥ श्रौतस्मार्तकर्मनुष्ठानसिद्ध्यर्थं यज्ञोपवीतधारणे विनि
यिता तद्दक्षिणबाहुमुच्चार्य उपवीतं धारयित्वा कुमारमात्मनो मे श्च मध्येन यज्ञपात्रोत्तरभागं मयित्वा ॥ तत्र विधिर्वदाचमय्य ॥

उपनयन-
॥१२९॥

१ केशवनारायणमाधवेति नामभिराचमनम्, गोविदनाम्ना दक्षिणकरमार्जनम्, विष्णुना अधरं मृजेत्, मधुसूदनेन ओष्ठं मृजेत्, त्रिविक्र
मेण ओष्ठानुन्मार्जयेत्, वामनेन उदकाभिमंत्रणं कृत्वा, श्रीधरेण वामहस्तप्रक्षालनम्, हृषीकेशेन दक्षिणपादस्पर्शनम्, पद्मनाभेन वामपादं,
दामोदरेण मस्तकप्रोक्षणम्, संकर्षणेन ऊर्ध्वोष्ठस्पर्शं अंगुल्यग्रेः, वासुदेवेन दक्षिणनासामंगुष्ठतर्जनीभ्यां स्पृशेत्, प्रद्युम्नेन वामनासामंगुष्ठतर्ज
नीभ्या, अनिरुद्धेन दक्षिणनेत्रं अंगुष्ठानामिकाभ्यां स्पृशेत्, पुरुषोत्तमेन वामनेत्रं तथा, अधोक्षजेन दक्षिणकर्णस्पर्शः अंगुष्ठकनिष्ठिकाभ्यां,
नारसिंहेन वामकर्णस्पर्शस्तथा, अच्युतेन नाभिस्पर्शः अंगुष्ठकनिष्ठिकाभ्या, जनार्दनेन हृदयस्पर्शः तलेन, उपेद्रेण मूर्धनं पाणिना स्पृशेत्,
हरिणा दक्षिणभुजस्पर्शः अंगुल्यग्रेः, श्रीकृष्णेन वामभुजस्पर्शस्तथा ॥ इति विधिवद्व्याचमनम् ॥

॥१९५॥

पुनस्तथैवानीयस्वदक्षिणतउपवेदयवर्हिं रास्तरणाद्याधारहोमांतंकृत्वा ॥ अग्न्यायूषीतितिसृणांशतंवैखानसाऋषयः ॥ अग्निः पा
वमानो देवता ॥ गायत्री छंदः ॥ उपनयनप्रधानाज्यहोमे विनियोगः ॥ ॐ अग्न्यायूषिपवसु ० स्वाहा ॥ अग्नयेपवमानायेदं ० ॥
ॐ अग्निर्ऋषिः ० स्वाहा ॥ ॐ अग्नयेपवमानायेदं ० ॥ प्रजापते हिरण्यगर्भः प्रजाप
वमानो देवता ॥ गायत्री छंदः ॥ उपनयनप्रधानाज्यहोमे विनियोगः ॥ ॐ अग्नेपर्व ० स्वाहा ॥ अग्न्याचार्य उत्तरतोमेः प्राञ्जुल
ॐ अग्निर्ऋषिः ० स्वाहा ॥ ॐ अग्नयेपवमानायेदं ० ॥ अथाचार्य उत्तरतोमेः प्राञ्जुल
तिस्त्रिष्टुप् ॥ उपनयनप्रधानाज्यहोमे विनियोगः ॥ अथाचार्यः कुमारस्य शुचित्वसिद्धये सवितृदेवता तृप्तये चा
स्तिष्ठेत् ॥ कुमारोऽप्यग्न्याचार्ययोर्मध्ये न गत्वा चार्याभिमुखोऽस्तिष्ठेत् ॥ तत्सवितुरित्यस्य ग्न्यावाश्वः सवितानुष्टुप् ॥
जलिधारणं करिष्ये ॥ शुद्धोदकेन शिष्यांजलिमापूर्य स्वस्यांजलिमन्येन पूरयित्वा ॥ तत्सवितुरित्यस्य ग्न्यावाश्वः सवितानुष्टुप् ॥ ॐ देवस्य
अवक्षारणे विनियोगः ॥ ॐ तत्सवितुर्वृणीमहे वयं देवस्य भोजनं ॥ श्रेष्ठसर्वधातं मंतुरं भर्गस्य धीमहि ॥ अनेन स्वांज्यल्युदकं
शिष्यांजलाववक्षार्य तज्जलं कुमारं जलिनैवावक्षारयेत् ॥ पुनः पूर्ववदुदकपूरणाद्यवक्षारयेत् ॥ द्वितीये हस्तप्र
त्वा सवितुः प्रसवे श्विनोर्बाहुभ्यां पुष्णो हस्ताभ्यां हस्तं गृह्णामि अमुकशर्मन् ॥ पुनरपि पूर्ववत् पूरयित्वा वक्षारयेत् ॥ संरक्षणार्थं त्रतप
हणे मंत्रविशेषः ॥ ॐ सवितो ते हस्तं मग्रभीत् अमुकशर्मन् ॥ पुनरपि पूर्ववत् पूरयित्वा वक्षारयेत् ॥ अथाचार्यः कस्य ब्र
इति तृतीये ॥ अथाचार्यो ब्रह्मचारिणमादित्यमीक्षयेत् ॥ ततो न्योन्याभिमुखौ तिष्ठेतां ॥ अथाचार्यः कस्य ब्र
तये आदित्याय बटुंददामीति मनसा स्मरन् ब्रह्मचारिणमादित्यमीक्षयेत् ॥ ततो न्योन्याभिमुखौ तिष्ठेतां ॥ अथाचार्यः कस्य ब्र

2

ऋ० ब्र०

॥१९६॥

ह्यचार्यसिप्राणस्य ब्रह्मचार्यसि कस्त्वाकमुपनयते कायत्वापरिददामि इति मंत्रं जपन् कुमारं प्रजापतये मनसा समर्प्य ॥ युवासुवा
सा इत्यस्य कौशिको विश्वामित्रो यूपस्त्रिष्टुप् ॥ पूर्वार्धं च स्य प्रदक्षिणा वर्तने उत्तरार्धं च स्य पाणिभ्यां बडुहदयालं भने विनियोगः ॥
ॐ युवासुवासाः परिवीत आगात्स उश्रेयान् भवति जायमानः ॥ इति बडुप्रदक्षिणमावर्तने न प्राञ्जुखमवस्थाप्य ॥ तदंसयोरुप
रिखपाणी गमयित्वा ॥ ॐ तं धीरासः कवय उन्नयंति स्वाध्यायं मनसा देवयंतः ॥ इति पाणिभ्यां बडुहदयं स्पृशेत् ॥ तत आत्मानम
मग्नये समिधमिदं त्वस्य हिरण्यगर्भो निर्वृहती ॥ समिदाधाने विनियोगः ॥ ॐ अग्नये समिधमा हार्षं बृहते जातवेदसे ॥ तया त्वमग्ने
वर्धस्व समिधा ब्रह्मणा वयं स्वाहा ॥ अग्नय इदं नममः ॥ दक्षिणं पाणिं प्रक्षाल्याग्नौ प्रताप्य ॥ ॐ तेजसामासमनज्मि इति मुखमवाङ्
निमृज्य पाणिं प्रक्षाल्यैव पुनर्द्विः ॥ ततस्तिष्ठन् प्रणतिमुद्रां कृत्वा ॥ मयि मेधा मितिषणां हिरण्यगर्भं ऋषिः ॥ पूर्वेषां त्रयाणामग्नीं
द्रसूर्या देवताः ॥ उत्तरत्रयाणामग्निर्देवता ॥ गायत्री छंदः ॥ अद्युपस्थाने विनियोगः ॥ ॐ मयि मेधां मयि प्रजां मयि सूर्यो भ्राजो दधातु ॥ यत्ते अग्ने ते जस्ते ना हते ज
जो दधातु ॥ मयि मेधां मयि प्रजां मयीं द्रष्टुं द्रिदं दधातु ॥ मयि मेधां मयि प्रजां मयि सूर्यो भ्राजो दधातु ॥ यत्ते अग्ने ते जस्ते ना हते ज
स्वीभूयासं ॥ यत्ते अग्ने वर्चस्ते ना हं वर्चस्वीभूयासं ॥ मयि मेधां मयि प्रजां मयि सूर्यो भ्राजो दधातु ॥ यत्ते अग्ने ते जस्ते ना हते ज
तिकुत्सो रुद्रो जगती ॥ विभृतिग्रहणे विनियोगः ॥ ॐ मानस्तोके तनये मान आयौ मानो गोषु मानो अश्वेषुरीरिषः ॥ वीरान्मानो रु
द्रभामितोर्वधीर्हविर्भतुः सदुमित्वा हवामहे ॥ इत्यनेन भस्मादायथाचारं त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे ॥ कश्यपस्य त्र्यायुष

उपनयन-
॥१२९॥

॥१९६॥

मितिकंठे ॥ अगस्त्यस्य त्र्यायुषमिति नाभौ ॥ यद्देवानां त्र्यायुषमिति दक्षिणस्कंधे ॥ तन्मे अस्तु त्र्यायुषमिति वामस्कंधे ॥ सर्वमस्तु
 शतायुषमिति शिरसि धृत्वा पुनः परिसमूहन पर्युक्षणे कृत्वा कृतांजलिं स्तिष्ठन् ॥ ॐ चमेस्वरश्च मे यज्ञोपचते नमश्च ॥ यत्सेन्यूनं त
 स्मै तत्तु पयस्तेति रिक्तस्मै तेनमः ॥ अग्नये नमः ॥ ॐ स्वस्ति ॥ श्रद्धां मे धाय शः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलम् ॥ आयुष्यं तेज आ
 रोग्यं देहि मे हव्यवाहन ॥ इत्यग्निमुपस्थाय ॥ अग्ने रुत्तरतो गत्वा प्रत्यङ्मुखी भूयाचार्या भिमुखो भूत्वा दक्षिणं जानुभूतले निधाय पा
 णिभ्यां यथासव्य दक्षिणं श्रोत्रे संस्पृश्य व्यस्तपाणि राचार्यस्य दक्षिणपादं स्वदक्षिणहस्तेन सव्यं च सव्यहस्तेन जानुप्रभृतिपादपर्यंतं
 स्पृष्ट्वा ऽमुकगोत्रो मुकशर्माहं भो अभिवादये इत्यभिवादयेत् ॥ आचार्येण आयुष्मान्भवसौम्यदेव दत्ता ३ इति प्रत्युक्ता शीर्वादः
 सावित्र्युपदेशं वाञ्छन् अधीहि भोः सावित्री भो अनुब्रूहि इत्याचार्यमुक्त्वा स्ववामपाणिमुत्तानीकृत्य दक्षिणपाणिं न्यङ्मुखी
 कृत्य संधाय पाणिपृष्ठमंगुलीं श्चांगुष्ठौ च हृदी कृत्य कृतं ब्रह्मांजलिं दक्षिणं के निधाय आचार्यो तिकमासीत् ॥ अथाचार्यस्तदंजलिं तत्प
 रिधानीयवाससाच्छाद्य स्वपाणिभ्यां तदंजलिं परिगृह्या ॥ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः ॥ व्याहृतीनां प
 रमेष्ठी प्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती ॥ गायत्र्या विश्वामित्रः सविता गायत्री ॥ उपनयनोपदेशे विनियोगः ॥ प्रणवव्याहृतिपूर्वि
 कां गायत्रीं पच्छोर्ध्वं च शः सर्वो अशक्तौ यथाशक्ति वा त्रिवारं स्वयमुक्त्वा वाचयेत् ॥ ततः मम ब्रत इत्यस्य प्रजापतिर्बृहस्पतिस्त्रिष्टुप् ॥
 बटोर्हृदये ऊर्ध्वो गुलिपाणिनिधाने विनियोगः ॥ ॐ मम ब्रते हृदयं ते दधामि मम चित्तमनुचितं ते अस्तु ॥ मम वाचमेकव्रतो जुष
 स्वबृहस्पतिष्ठा नित्युनकुमह्यं ॥ इति स्वपाणिमूर्ध्वो गुलिं बहुदहये निधाय ॥ तस्य रक्षार्थं शुद्ध्यर्थं च मे खलामाबधीयात् ॥ इयं दु

रुकादिति द्वयोर्वा मदेवो मेखला त्रिष्टुप् ॥ मेखला बंधने विनियोगः ॥ ॐ इयं दुरुक्ता त्रिबाधमाना च्छर्मवरूथं पुनर्तीन आगात् ॥
 प्राणापानाभ्यां बलमाभरंती प्रिया देवानां सुभगामेखलेयं ॥ ऋतस्य गोप्ती तपसः परस्मी सती रक्षः सहमाना अरातीः ॥ सानः स
 मंतमनुपरे हि भद्रया भर्तारस्ते मेखले मारिषाम् ॥ इति मंत्रं वाचयित्वा मेखलां त्रिरावर्त्य नाभिप्रदेशे ग्रंथि त्रयं कुर्यात् ॥ सानः स
 स्वांगसहितवेदत्रयेणावृतो ह मिति मन्येत ॥ तत आचार्यः ॥ स्वस्ति न इत्यस्य स्वस्त्या त्रेयो विश्वे देवास्त्रिष्टुप् ॥ दंडदाने विनि
 ना ॥ इति मंत्रेण दंडं दद्यात् ॥ ततो बटोस्तद्ग्रहणे मंत्रः ॥ अदांतं दमयित्वा मां मार्गं संस्थापयन् स्वयं ॥ दंडः करे स्थितो यस्मात्तस्मा
 द्रक्ष्यतो भयं ॥ इति वाचयेत् ॥ ततो बटोस्तद्ग्रहणे मंत्रः ॥ अदांतं दमयित्वा मां मार्गं संस्थापयन् स्वयं ॥ दंडः करे स्थितो यस्मात्तस्मा
 दौ शुद्ध्यर्थमित्यर्थः ॥ कर्मकुरु ॥ संध्योपासनादीत्यर्थः ॥ दिवामास्वाप्सीः ॥ आचमनं कुरु ॥ मूत्रपुरीषा
 थाः ॥ सायं प्रातः समिधमाधेहि ॥ द्वादशवर्षाणि वेदग्रहणांतं वा ब्रह्मचर्यं चर ॥ अत्रार्थाधीनो वेदमधीष्व ॥ सायं प्रातर्भिक्षे
 ख्यायिनी वा ॥ ततः स्विष्टकृदादि होमशेषं समाप्याग्निमेधाजननांतरं कृत्वा ॥ तत्रैव सायं प्रातरग्नि कार्यं कुर्यात् ॥ अप्रत्या
 नीय होमब्राह्मणभोजनपर्याप्तांतं दुलरूपां भिक्षां याचयेत् ॥ तलक्रमः ॥ भिक्षापात्रमादाया दौ मातरं भवती भिक्षां ददात्विति
 भिक्षां भवती ददात्विति वा ॥ पितरं भवान् भिक्षां ददात्विति भिक्षां भवान् ददात्विति वा ॥ एवं मातुः स्वसारं स्वभगिनी मन्यान
 पिबांधवानप्रत्याख्यायिनोऽप्रत्याख्यायिनीश्च याचित्वा भैक्षमाचार्याय निवेदयेत् ॥ अस्मिन्कर्मणि शतं ब्राह्मणाभोज्याः ॥ इति

उपनयन-
॥१२९॥

॥१९७॥

॥ १३० ॥ अथानुप्रवचनीयहोमः ॥

श्रीः॥सायंसंध्योत्तरंकृतोपनयनहोमान्नैःपश्चिमतोब्रह्मचारिणासहोपविश्याचम्यप्राणानाम्यदेशकालौसंकीर्त्य उपनयनांग
भूतमनुप्रवचनीयहोमंकरिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य॥अग्निं ध्यात्वासमिद्धयमादायक्रियमाणेऽनुप्रवचनीयहोमेदेवतापरिग्रहार्थमित्या
द्याधारावाज्येनेत्यंतमुक्त्वा ॥ अत्रप्रधानंसदसस्यतिसवितारंऋषींश्चचरुद्रव्येण ॥शेषेणस्विष्टकृतमित्यादिपूर्णपात्रनिधानांतंकृ
त्वाभिक्षान्नस्यदेवतान्नयार्थंतूष्णींचतुरश्चतुरोमुष्टीन्निरुप्यतथैवप्रोक्ष्य हविःश्रपणाद्याधारहोमांतंकृत्वा अवदानधर्मेणचरु
मवदाय ॥ सदसस्यतिसवितारंऋषींश्चचरुद्रव्येण ॥ अत्रप्रवचनीयप्रधानचरुहोमेविनियोगः ॥ ॐ सदसस्य
तिमभुतंप्रियमिंद्रस्यकाम्यं ॥ सन्निमेधामयासिपुंस्वाहा ॥ सदसस्यतयइदंनमम ॥ तत्सवितुरित्यस्यगाधिनोविश्वामित्रःसवि
तागायत्री ॥ अनुप्रव० ॥ ॐ तत्सवितु०स्वाहा ॥ सवित्रइदंनमम ॥ ऋषिभ्यःस्वाहा ॥ ऋषिभ्यइदंन०॥इतिचर्वाहुतित्रयं
हुत्वास्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्यहविःशेषेणान्येनवानेनत्रीन्त्र्यवरान्वाब्राह्मणान्भोजयेत् ॥ इत्यनुप्रवचनीयहोमः ॥

॥ १३१ ॥ अथप्रदोषगर्जितादिशांतिः ॥

श्रीः ॥ कर्तोआचमनादिदेशकालकीर्तनांते ब्रह्मोदनपाकात्पूर्वप्रदोषकालिकगर्जितेनसूचितस्यब्रह्मचारिकर्तृकाध्ययनविघ्नस्य
निरसनद्वाराश्रीपर० शांतिकरिष्ये॥तदंगणपतिपूजनपुण्याहवाचनाचार्यवरणांतेआचार्यःप्रादेशकरणांतेस्थंडिलेग्निंप्रतिष्ठा
प्यान्वादध्यात्॥तत्रचक्षुषीआज्येनेत्यंतसवितारंप्रधानंधृताक्कपायसेनाष्टोत्तरशतसंख्याभिराहुतिभिः शेषेणस्विष्टकृतमित्या

दिमरुतश्चाज्येनेत्यंते सवितारमाज्येनविश्वान्देवानाज्यसंस्त्रावेणेत्यादिगृहसिद्धपायसाधिश्रयणाद्याज्यभागहोमांतेगायत्र्या
१०८ संख्ययापायसंहुत्वा ॥ इमांधियमितिद्वादशर्चस्यसूक्तस्यायास्योबृहस्पतिस्त्रिष्टुप् ॥ जपे० ॥ ततःस्विष्टकृदादियद्भो
देवाइत्याहुत्यंतेगायत्र्याज्याहुतिंहुत्वाकर्मशेषसमापयेत् ॥ यजमानआचार्यसंपूज्यगांदत्वाब्राह्मणभोजनंसंकल्प्यभूयसींद
त्वाशांतिवाचयित्वाकर्मसमापयेत् ॥ बृष्ट्युत्पातयोरपीयमेवशांतिःकार्या ॥ तत्रसंकल्पेअकालवृष्ट्याअमुकोत्पातेनेतिवाय
थायथमूढ्यं ॥ गर्जितवृष्ट्यादिसंभावनायांदिवैवचरुंश्रपयित्वास्तोत्तरंहोमःकार्यः ॥ इतिप्रदोषगर्जितादिशांतिः ॥ ४३ ॥

॥ १३२ ॥ उपनयनाग्निनाशेषप्रापश्चितम् ॥

श्रीः ॥ ध. सिं. ॥ नष्टस्याग्नेःपुनरुत्पत्तिकरिष्येइतिसंकल्पः ॥ नष्टस्योपनयनाग्नेःपुनरुत्पत्तिहोमेविनियोगः ॥ उपनयनाहु
तिभिरग्निमुत्पाद्यतत्रमेधाजननपूर्वभाव्यग्निकार्यणिक्त्वामेधाजननंकार्यं ॥ अनुप्रवचनपूर्वभाव्यग्निकार्यमनुप्रवचनीयहोम
श्चनकार्यः ॥ कौस्तुभेतुगायत्र्युपदेशवर्जकटिसूत्रधारणाद्याःसर्वमाणवकसंस्काराअनुप्रवचनहोमश्चकार्यइतिसूपपादितमस्ति ॥
आचतुर्थोद्विवाहान्निर्देश्येद्ब्रह्मोदनावधि ॥ कायांतंदशभिर्हुत्वाप्रत्यृचंजुहुयाद्धृतं ॥ कायांताऋचस्तु-हिरण्यगर्भःसर्म०
यर्आत्मदा०यःप्राणतो०यस्येमे०येनद्यौरुद्रा०यंकंदसी०आपोह्य०यश्चिदापो०मानोहिंसी०प्रजापतेन० १० इति ॥ ब्रह्मोद
नात्मागुपनीतवह्नौनष्टेसमाधायपुनश्चवर्हि ॥ कृत्वाज्यसंस्कारकर्पूर्वहोमंनब्रह्मयज्ञोऽजिनदंडमेखलाः ॥ इति ॥ अथाश्रुपया
तनिमित्तानि । श्वशूकररासभकाकसृगालमर्कटशूद्रांत्यजपतितकुणपसूतिकारजखलापुरीषादिजुगुप्सितस्पर्शादिभिःस्युः ॥

॥ अथमेधाजननप्रयोगः ॥

॥ १३३ ॥ अथ न नाः । अथ न नाः । अथ न नाः ।

राकालासकाल्यमना२:७ मिश्रमन्त्रमादकाश्च।मनज७

कर्मकरिण्य ॥ द्वापरायुष्यान्मंत्रं वाचयेत् ॥ अमुञ्च
विमंत्रेणावाहनाद्युपचारान्कृत्वामृतं च भोजयेत् ॥

अथ तलमे धायनम इति । तत्र प्रपञ्चः ।
 तलमे धायनम इति । तत्र प्रपञ्चः ।

मय्यशुद्धजलपानाप्रदं ॥ यथात्वदवानापवकृत्तं ॥ पुनः
अथैश्वरसंकुरु ॥ नान्वात्यज्ञोपवीताजिनमेखलादडाभुम्भाः पण्या

स्येवंमांसुश्रवःसाक्षात्प्राप्तौल्लावाभ्यामपिपाठयित्वास्थकमजातु
ततोब्रह्मचारोद्धात्वान्वितैर्विप्रैः पाठयित्वास्थकमजातु

वृत्तिप्रणामचक्र। १५२९॥
 ध्यातुं प्रणम्य ससीगुरवे दत्वा मेधां मह्यमाप्नुयान् ।
 मेधा मित्रश्चाग्निश्च मेधाया ताददातुः ॥

निधौ विसृज्य पूषधुः ॥ नमोऽस्य रसुगंधर्वेषु च यन्मनः ॥ इत्युवाच ॥

[illegible]

मेधांमैश्वनापुत्रं ॥ निशामश्वनापुत्रं ॥ मेधापुत्रं ॥
 मेधांमैश्वनापुत्रं ॥ निशामश्वनापुत्रं ॥ मेधापुत्रं ॥

यन्मेनाक्तप्रमसू॥ — यन्मेनाक्तप्रमसू॥ नास्तु॥ स०का०॥
 यन्मेनाक्तप्रमसू॥ — यन्मेनाक्तप्रमसू॥ नास्तु॥ स०का०॥

इमेमधुमद्वहा ॥ तत्रपलशशस्त्राणां ॥ १० ॥
त्रिमेखलाकार्यो । तत्रपलशशस्त्राणां ॥ १० ॥

नवेद्यावात्सर्वतोद्भादशागुल॥त्रमस्यशः॥

नांगंधर्वजुष्टांप्रतिनोजुषस्व ॥ मह्यमेधांवदुमह्यं श्रियंवदमेधावीभूयासमजराजरिष्णु ॥ सदैवसस्पतिमर्द्धुतंप्रियमिंद्रस्यकाम्यं ॥
सन्निमेधार्मयासिपं ॥ यामेधांदेवर्गणाः पितरंश्चोपासते ॥ तयामामेधयामेमेधाविनकुरु ॥ मेधाव्यहंसुमनाः सुप्रतीकः श्रद्धा
मनाः सत्यमतिः सुशेवः ॥ महायशाधारयिष्णुः प्रवक्ता भूयासमस्येस्वधयाप्रयोगे ॥ इति मेधाजननांत उपनयनप्रयोगः ॥ ४३ ॥

॥ १३४ ॥ अथ महानाम्नीव्रतम् ॥
ह्यचारिणं महानाम्नीरध्यापयिष्यमाणो महानाम्नीव्रतसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं होमं करिष्ये इति संकल्प्य गणपतिपूजना
दिनां दीश्राद्धांतं कृत्वा परेद्युः कारितवपनस्तानंबद्धशिखंब्रह्मचारिणं सुमुहूर्तं स्वदक्षिणत उपवेश्य विधिवदग्निं प्रतिष्ठाप्य महा

च महानाम्नीव्रतप्रधानाज्यहोमे विनियोग इति विशेषः । परिददामीति प्रजापतये मनसा बडुंसमर्ग्य आसने उपविश्योपनयनोक्त
विधिनामेखलादंडदानं कारयित्वा पुराणयज्ञोपवीतादीनि जले निक्षिप्य स्विष्टकृदादि होमशेषं समाप्य ब्रह्मचारिणं प्रतिवेदत् म
हानाम्नीव्रतं संवत्सरं चरेत् । स च रिष्यामीत्युक्त्वा संवत्सरं केशादिधारणं भिक्षाचरणादिव्रतं चरेत् ॥ पूर्णेब्दे उदगयने शुक्लपक्षे
बडुसहितो गुरुर्विचित्रदेशं गत्वा तिथ्यादिसंकीर्त्या स्वबटोर्महानाम्नीश्रवणांगभूतव्रतपरिपूर्तिद्वारा श्रीप० होमं करिष्ये ॥ उपले
पाद्यमग्निप्रतिष्ठांते च धूपी आज्येनेत्यंते तत्र प्रधानं अग्निं संराधनीं अग्निं असूयंतीमनुमतिं प्रदातारं अग्निं वायुं सूर्यं चैतादेवताः

ल्यानुसारैणैकरात्रमित्यादिचरेत् नकालमित्यस्यलोपः ॥ ब्रह्मचारीउक्तकालेवश्यकर्तव्यसंध्यावंदनादेरितरत्नानभोजनस्या
 पगमनादिकुर्यात् ॥ आचार्यःप्रेषातेस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमापयेत्संकल्पांतेआचार्योनुवक्ष्यतीतिनिश्चयोत्तरंबहिर्गामादी
 भीयात् यथान्निसमीपउच्चार्यमाणःशब्दोवत्सतर्यानसम्यक्श्रूयते ॥ ततोऽग्नेःपश्चात्साग्रेषुदर्भेषुआचार्यऐशानीदिगभिमुखउ
 दाचार्यस्यतदासनप्रागग्रदर्भेष्वेवमूलदेशेस्वपृष्ठमाचार्यपृष्ठेनसंधायप्रत्यग्दक्षिणांदिशमभिसमीक्षमाणोऽङ्गुलीकृत्याचार्यविधिवत्संगृह्यपश्चा
 ततोमनसागुरुंवदेत् ॐ महानाम्नीर्भोअनुब्रूहीति गुरुरियताकालेनैनैतदुक्तमितिज्ञात्वातदहव्रतलोपान्पृष्टानुतापिनेश्रद्
 धानायब्रह्मचारिणेस्वयंनिमीलिताक्षोमहानाम्नीविदामधवन्विदेत्याद्यानवर्चः एवाहोवैवाह्यमाइत्यादीनिनवपुरीषपदानिच
 प्रणवादीनित्रिरुपदिशेत् । शिष्योपिन्निःपठेत् ॥ ततोऽगुरुःशिरोवेष्टनंशिष्यस्योन्मुख्यब्रूयात्आदित्यमीक्षस्वेति ॥ बडुर्भिन्न
 स्यत्वाचक्षुषाप्रतीक्षेइतिमंत्रद्वयेनादित्यमवेक्षेत ॥ ततोमित्रस्यत्वाचक्षुषाप्रतिपद्यामियोऽस्मान्द्वेष्टिचंचवयंद्विष्मस्तंचक्षुषोर्हेतुर्कच्छत्विति ॥ ततोऽष्टाभिर्मन्त्रैर्भुवम
 त्तिउक्तस्तमीक्षेत ॥ मित्रस्यत्वाचक्षुषाप्रतिपद्यामियोऽस्मान्द्वेष्टिचंचवयंद्विष्मस्तंचक्षुषोर्हेतुर्कच्छत्विति ॥ ततोऽष्टाभिर्मन्त्रैर्भुवम
 भिमृशेत् ॥ अग्नइळा० संहशि ॥ भद्रंकर्णेभीराहगणोगोतमोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् भूमिस्पर्शनेत्रि० ॥ भद्रंकर्णे० १ शंनइंद्रा
 ग्रीवसिष्ठोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् १ स्तुषेजनंभारद्वाजऋजिश्चोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् १ कयानइतितिसृणांवामदेवइंद्रोगायत्री ३

स्योनापृथिवीमेधातिथिर्भूमिर्गायत्री १ ॥ ततोवत्सतराँगुरवेदत्वा ईश्वरार्पणंकृत्वा तंडुलभिक्षापूर्वकमुपनयनवर्द्धिवैवब्रह्मोद
नहोमंकुर्यात् ॥ तत्रमहानाढ्यध्ययनांगभूतमनुप्रवचनीयहोमंकरिष्यइतिसंकल्प्याघारावाज्येनेत्यंतसदसस्पतिमहानाग्नीऋ
षींश्चरुणाशेषेणेत्यादिपूर्णपात्रनिधानंतेकृतेभैक्षतंडुलानांतूष्णींनिर्वापादिश्रपणांतेशृतोब्रह्मोदनइतिनिवेदयेत् ॥ ततोऽगु
रुःशिष्येणान्वारब्धआज्यसंस्काराद्याघारांतंकृत्वा ॥ सदसस्पतिमित्यस्यकाण्वोमेधातिथिःसदसस्पतिर्गायत्री महाना० हो
मेवि० सदसस्पति० १ महानाग्नीभ्यःस्वाहामहानाग्नीभ्य० २ ॥ ऋषिभ्यः स्वाहा ऋषिभ्य० ३ ॥ इतितिस्रआहुतीहु
त्वाकर्मशेषसमाप्यचरुशेषेणब्राह्मणान्भोजयित्वादक्षिणांदत्वावेदसमाप्तिरस्त्वितिवदेत् तेचवेदसमाप्तिरस्त्वितिवदेयुःईश्व
॥ ४३ ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४३ ॥

रार्पणंकृत्वाततोभुंजीतेतिमहानाग्नीव्रतं ॥

॥ १३५ ॥ अथमहाव्रतम् ॥

श्रीः ॥ उदगयनादिकालेप्रथमहोमांतेपूर्ववज्जातेसंवत्सरंमहाव्रतमाचरेतिप्रेषितबटुनासंवत्सरंव्रतेकृतेग्रामाद्वहिःशुचिदेशेग्रा
मग्रदर्भेषुप्राङ्मुखउपविशेत् । शिष्योविधिवदभिवादनपूर्वकंमहाव्रतंभोअनुब्रूहीतिवाचावदेत् ॥ अथतंप्राङ्मुखमुपवेश्यअथ
महाव्रतमित्याद्यारण्यकंत्रिब्रूयात् ॥ शिष्योपित्रिःपठित्वापूर्ववन्मंत्रद्वयेनादित्यमीक्षेत ॥ ततःपूर्ववदग्रइकेत्यादिभिर्भूमि
स्पर्शनं ततःशिष्यकर्तृकंनिवेदनांतमाचार्यकर्तृकश्चहोमःपूर्ववत् ॥ महानाग्नीस्थानेमहाव्रतायस्वाहेत्याहुतिः इतिमहाव्रतम्

॥ १३६ ॥ अथोपनिषद्भूतम् ॥

श्रीः ॥ तच्चजन्मतःषोडशेवर्षेचौलार्हतिश्चादिकालेतद्वदेवकार्यं ॥ अथगोदानव्रतम् ॥
पूजादिनां दीश्राद्धांतेन्निप्रतिष्ठापनादिनां केसंस्काराणि ॥ इत्युपनिषद्ब्रतम् ॥

॥ १३७ ॥ अथगोदानव्रतम् ॥ इत्युपनिषद्भ्रतम् ॥
पूजादिनां दीश्राद्धांते निप्रतिष्ठापनादिनां कैसंस्कार्यस्योपवेशनं मान्तरा-
त्वाशीतोष्णजलानयनादिकुर्यात् ॥ अस्य ब्रह्मचारिणोऽप्ये-
नंदक्षिणोत्तरग- ॥ ६३ ॥

त्रैवष्टावपसिद्धमश्रूणिशुद्धिशिरोमुखंमास्यायुरित्यूहः ॥ नापितस्ताभिरग्निः इमश्रूणामुदकं संस्थवापनं कृत्वा तथैव शिरसि केशानामुपपक्षमादिलोम्नां वपनं न खनिष्कृतं
निकुरु इति ॥ ततः स्नातं बण्डुदक्षिणतलपवेद्यहोमशेषं समाप्य पात्रदानां ते गुरुणा कृते हः शेषं वाग्यतो बडुस्तिष्ठन्नेवनयेत् संस्थावंदनां
च कुर्यात् ॥ ततः स्नातं बण्डुदक्षिणतलपवेद्यहोमशेषं समाप्य पात्रदानां ते गुरुणा कृते हः शेषं वाग्यतो बडुस्तिष्ठन्नेवनयेत् संस्थावंदनां
ते गुरोरंति के वरं ददामीति वाचं विसृज्य गोमिथुनं दक्षिणां दद्यात् ॥ ततः परे ह्यगुरुणा गोदानव्रतमाचरेत्युक्तः केशपञ्चिका
न संवत्सरं ब्रह्मचारी व्रतं कुर्यात् ॥ इति गोदानव्रतं ॥ ६३ ॥

॥ ६ ॥

॥ १३८ ॥ अथब्रह्मचारिव्रतलोपप्रायश्चित्तम् ॥

श्रीः ॥ ब्रह्मचारीद्विराचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यममशौचाचमनसंध्यावंदनदर्भभिक्षाग्निकार्यराहित्यशूद्रादिस्पर्शन
कौपीन कटिसूत्रयज्ञोपवीत मेखलादंडाजिनत्यागदिवास्वापछत्रधारणपादुकाध्यारोहणमालाधारणोद्धर्तनानुलेपनांजनजल
क्रीडाद्यतनृत्यगीतवाद्याद्यभिरतिपाखंडादिसंभाषणपर्युपितभोजनादिब्रह्मचारिव्रतलोपजनितसकलदोषपरिहारार्थ आ
ज्यहोमपूर्वकंकृच्छ्रत्रयंअमुकप्रत्याम्नायेनाहमाचरिष्ये ॥ अथवाशौचाचमनादिसर्वब्रह्मचर्यनियमव्रतलोपप्रायश्चित्तद्वाराश्री
परमेश्वरप्रीत्यर्थेहोमपूर्वकंकृच्छ्रत्रयमाचरिष्ये इतिवासंकल्प्य स्थंडिलकरणादिलौकिकाग्निप्रतिष्ठांतंकृत्वान्वाधानंकुर्या
त् ॥ क्रियमाणेब्रह्मचर्यव्रतलोपप्रायश्चित्तहोमेदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्यइत्यादिचक्षुषीआज्येनेत्यंतमुक्त्वा अन्नप्रधानं
अग्निंवायुं सूर्यं प्रजापतिं अग्निं पृथिवीमहांतं वायुमंतरिक्षमहांतं आदित्यं दिवंमहांतं चंद्रमसंनक्षत्राणिदिशोमहांतं अग्निं
विश्वेदेदसं विभावसुं शतक्रतुं अग्निं अग्निं अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं चैकैकयाज्याहुत्याशेषेणस्विष्टकृतमित्याद्याज्यभागांतंकृ
त्वा ॥ ॐ भूःस्वाहा अग्नयइदं ॥ ॐ भुवःस्वाहा वायवइदं ॥ ॐ भुवःस्वाहा सूर्यायइदं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहा प्रजा
पतयइदं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहा अग्नयइदं ॥ ॐ भुवःस्वाहा वायवइदं ॥ ॐ भुवोवायवेचांतरिक्षायचमहुतेचस्वाहा
पतयइदं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहा अग्नयइदं ॥ ॐ भुवःस्वाहा वायवइदं ॥ ॐ भुवोवायवेचांतरिक्षायचमहुतेचस्वाहा
वायवेतरिक्षायमहुतेचदेदं ॥ ॐ सुवरादित्यार्थचदिवेचमहुतेचस्वाहा आदित्यायदिवेमहुतेचदेदं ॥ ॐ भूर्भुवःसुवश्चंद्रमसे
चनक्षत्रेभ्यश्चदिग्भ्यश्चमहुतेचस्वाहा चंद्रमसेनक्षत्रेभ्योदिग्भ्योमहुतेचदेदं ॥ ॐ पाहिनोअग्नएनेसेस्वाहा अग्नयइदं ॥ ॐ

पाहिनोविश्ववेदसेस्वाहा विश्ववेदसइदं० ॥ ॐ यज्ञंपाहिविभावसोस्वाहा विभावसवइदं० ॥ ॐ सर्वपाहिशतक्रतोस्वाहा
शतक्रतवइदं० ॥ ॐ पुनरूर्जानिर्वतस्वपुनरग्नइहायुषा ॥ पुनर्नःपाहिविश्वतःस्वाहा अग्नयइदं० ॥ ॐ सहस्रयानिर्वतस्वा
ॐ स्वःस्वाहा ॥ विश्वप्लित्वाविश्वतस्यस्वाहा अग्नयइदं० ॥ ॐ भूःस्वाहा अग्नयइदं० ॥ ॐ भुवःस्वाहा वायवइदं० ॥
गोदानसहस्रतिलहोमायुतगायत्रीजपादिब्वन्यतमंचरित्वास्विष्टकृदादिहोमशेषंसमापयेत् ॥ एवमष्टादशाज्याहुतीहुत्वाकृच्छ्रप्रत्यान्नायत्वेनकल्पित
बहुधर्मलोपेतुप्रायश्चित्तविशेषोऽग्नियानेनैकनोक्तः ॥ तंवोधियाजपेन्मन्त्रं लक्षं चैव शिवा लये ॥ ब्रह्मचारीस्वधर्मचन्यूनं
चेरपूर्णमेवतदिति ॥ महानाम्यादिव्रतलोपपक्षेप्रत्येकं गायत्र्याशतमष्टाविंशतिरष्टौवाज्याहुतीहुत्वा ॥ एकैकं कृच्छ्रं चरित्वा
शुभदिनेमहानाम्नीव्रतंकृत्वातथैवमहाव्रतादित्रयंकृत्वागुरवेदक्षिणांदत्वातदनुशतःसमावर्तनंकुर्यात् ॥ महानाम्यादिव्रते
बुधसेषुतारतम्येनत्रीन्षड्द्वादशावाकृच्छ्रान्कृत्वापुनर्व्रतं प्रारभेतेतिस्मृत्यर्थसारे ॥ इतिब्रह्मचारिव्रतलोपप्रायश्चित्तं ॥

श्रीः ॥ ब्रह्मचारीकृतनित्यक्रियःकृतप्रातरग्निकार्यश्चाचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यमगृहस्थाद्याश्रमांतरप्राप्तिद्वारा
श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थसमावर्तनं करिष्ये ॥ तदंगभूतंगणपतिपूजनंपुण्याहवाचनंमातृकापूजनंनादीश्राङ्गंचकरिष्येइतिसंकल्प्य
नांदीश्राङ्गांतंकृत्वासमिधमुपरिनिधाय स्थंडिलोल्लेखनाद्यग्निप्रतिष्ठापनांतंकृत्वापुनर्देशकालौनिर्दिश्य क्रियमाणेसमावर्तन

समावर्त-
॥१३९॥

॥२०२॥

आयुष्मान्जरदष्टिर्थासंइतिजपेत् ॥ ततोब्रह्मासहस्रश्रुकांस्तान्कुशांश्छित्वाप्रागग्रान्शमीपर्णैःसहैकीकृत्यमातुःकरेदद्यात्
 ॥ साचतानानडुहेगोमयेनिदध्यात् ॥ एवंपुनस्त्रिः ॥ छेदनमंत्रेविशेषः ॥ ॐ येनभूयश्चरात्र्यांज्योक्चपश्यामिसूर्य ॥ तेनमआयुषेवपत् ॥
 श्लोक्यायस्वस्तये ॥ इतितृतीये ॥ इतद्वितीये ॥ ॐ येनावपत्सविता० ॥ ॐ येनधाता० ॥ ॐ येनभूयश्चइतित्रयोपिमंत्राः ॥
 एवमेवोत्तरहमश्रुभागेप्यनयारीत्याद्यानित्रीणिछेदनानिकुर्यात् ॥ नतुसर्वैर्मंत्रैश्चतुर्थं ॥ ततः ॐयत्क्षुरेणमर्चयतासुपेशसाव
 सावपसिहमश्रूणि ॥ शुंघिशिरोमुखंमामआयुःप्रमोषीरित्यग्रतआरभ्यामूलंक्षुरधारांनिमृज्यनापितमाहूय ॥ शीतोष्णाभि
 रद्भिरबर्थकुर्वाणोक्षपवन्कुशलीकेशहमश्रुलोमनखान्युदकसंस्थानिकुर्वित्प्रेषणानुशास्य तंप्रेषार्थंचावबोध्य नापितेनपूर्वा
 वशेषितशीतोष्णांबुभिरार्द्रांकृत्यकेशहमश्रुलोमनखान्युदकसंस्थानिकुर्वित्प्रेषणानुशास्य तंप्रेषार्थंचावबोध्य नापितेनपूर्वा
 कैःस्नात्वा ॥ द्विराचम्यपुनर्वहेरंतिकंगत्वाप्रतिवस्त्रंमंत्रावृत्तिःतत्रमंत्रः ॥ युवंवस्त्राणीत्यस्यौचथ्योदीर्घतमामित्रावरुणौत्रिष्टुप्
 ॥ वासोधारेणेवि० ॐ युवंवस्त्राणिर्षीवसावसाथेयुवोर्च्छिद्रामंतवोहसर्गाः ॥ अवातिरतमनृतानिनिर्वधकृतेर्नमित्रावरुणा
 सचेथे ॥ इतिएकंवस्त्रंसमंत्रंपरिधायमंत्रावृत्यान्यद्वस्त्रंप्रावृणुयात् ॥ ततोद्विराचम्यपाणिनांजनमादाय ॥ ॐ अहमनस्ते
 जोसिचक्षुर्मोपाहि इतिमंत्रावृत्यासव्यदक्षिणेचक्षुषीक्रमेणांक्त्वा ॥ ॐअहमनस्तेजोसिश्रोत्रंमेपाहि अत्रदक्षिणंपूर्वपश्चात्सव्यं
 मंत्रावृत्तिमुक्त्वाकुंडलेधृत्वाकुंकुमाद्यनुलिसपाणिभ्यांमुखादिसर्वांगान्यनुलिप्यकरोप्रक्षाल्य ॥ ॐ अनातास्यनातोहंभूयासं

इत्यनेन शिरसि स्रजं बद्ध्वा ॥ ॐ देवानां प्रतिष्ठेऽस्यः सर्वतो मापातं इत्युपानहावारुह्य ॥ ॐ दिवश्छद्मासि इति मंत्रेण छत्रं धृतवा ॥
 ॐ वेणुरसिवानसपत्योसि सर्वतो मापाहि इति वैष्णवं दंडं गृहीत्वा ॥ आयुष्यमिति सूक्तेन सुवर्णमणिं कंठे बध्नीयात् ॥ आयुष्यमि
 तिसूक्तस्य सनकसनंदनसनातनादयः ऋषयः ॥ हिरण्यं देवता ॥ आद्याश्च तस्योनुष्टुभः पंचमी त्रिष्टुप् पष्ठचतुष्टुप् सप्तम्यतिशक्क
 री अष्टमी नवम्यौ त्रिष्टुभौ दशम्यनुष्टुबेकादशी पंक्तिः ॥ कंठे मणिधारणे विनियोगः ॥ ॐ आयुष्यं च सर्वस्य रायस्योपमौ हिंदं ॥
 इदं हिरण्यं च सर्वस्वजैत्राया विशतादिमाम् ॥ उच्चैर्वाजिपृतनापाट्सभासाहं धनं जयं ॥ सर्वाः समग्राः क्रद्ध्यो हिरण्येऽस्मिन्समा
 हिताः ॥ शुनमहं हिरण्यस्य पितुर्मानेव जग्रभ ॥ तेन मांसूर्यं त्वचमकरं परुषु प्रियं ॥ सम्राजं च विराजं चाभिष्टिर्याच मे ध्रुवा ॥
 लक्ष्मीराष्टस्य यामुखे तयामाभिद्रसं सृज ॥ अग्नेः प्रजातं परि यच्चिरं ण्यममृतं जज्ञे अधिमर्त्येषु ॥ य एनं द्वेदुस इदं न दहति जराम्
 त्युर्भन्नतियो विभर्ति ॥ यद्वेदुराजावरुणो यदुदेवी सरस्वती ॥ इन्द्रो यद्धृत्रहावेदुतन्मेव च स आयुषे ॥ न तद्रक्षासि न पिशाचाश्च
 रंति द्वा नामो जः प्रथमं जं ह्येह तत् ॥ यो विभर्ति दाक्षायणा हिरण्यं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः समनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ यदा ब
 ध्नन् दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमाना ॥ तन्न आर्बन्धा मिश्रतशारदूयायुष्मान् जरदष्टिर्यथा सत् ॥ धृता दुल्लुप्तं मधुमत्सु
 वर्णं धनं जयं धरुणै धारयिष्णु ॥ ऋणक् सपत्ना दधरांश्च कृण्वदारो ह मां महते सौ भगाय ॥ प्रियं मां कुरु देवेषु प्रियं राजसुमाकुरु ॥
 प्रियं विश्वेषु गोप्त्रेषु मयि धेहि रुचारु च ॥ अग्निर्धेनो विराजति सूर्यो धेनो विराजति ॥ विराज्येन विराजति तेनास्मान् ब्रह्मणस्पते
 विराजसमिधं कुरु ॥ ततः प्रादक्षिण्ये नोष्णीपेण शिरः संवेष्ट्य उपानहौ संत्यज्य उपरि निहितां प्रागुक्तां समिधं गृहीत्वा तिष्ठन्नेव ॥

स्मृतं च मइत्यादि मंत्राणां प्रजापतिर्ऋषिः अग्निर्देवता अष्टी छंदः ॥ समिदाधाने वि० ॥ ॐ स्मृतं च मे अस्मृतं च मे तन्मउ भयव्रतं ॥
 निंदा च मे अनिंदा च मे तन्मउ भयव्रतं ॥ विद्या च मे अविद्या च मे तन्मउ भयव्रतं ॥ श्रद्धा च मे अश्रद्धा च मे तन्मउ भयव्रतं ॥
 कृतं च मे अकृतं च मे त० ॥ इष्टं च मे अनिष्टं च मे तन्मउ ॥ दत्तं च मे अदत्तं च मे तन्मउ ॥ अधीतं च मे अनधीतं च मे तन्म० ॥ प्रज्ञा
 प्रजापतिकस्य स ऋषिकस्य स ऋषिराजन्यस्य स पितृकस्य स पितृराजन्यस्य स मनुष्यस्य स मनुष्यराजन्यस्य साकाशस्य सातीकाशस्य
 सानूकाशस्य स प्रतीकाशस्य स देवमनुष्यस्य स गंधर्वाप्सरस्कस्य स हारण्यैश्च पशुभिर्गान्यैश्च यन्मआत्मन आत्मनि व्रतं तन्मे सर्वव्रत
 मिदमहमग्ने सर्वव्रतो भवामि स्वाहा अग्नय इदं नमम ॥ इति हुत्वा ॥ उपविश्या न्याः दशसमिधो ममाग्ने इति सूक्तेन प्रत्युचमृगंते
 गावा दध्यात्पशून् त्वाहाकारमुच्चारयेत् ॥ समिदाधाने विनियोगः ॥ ॐ ममाग्ने वचो विहुवेष्वस्तु वयं त्वेधा नास्तु न्वेषु मम ॥ १ ॥ एवमग्नेऽपि सर्वत्र ॥ ॐ मम देवा विहुवे संतु सर्व इंद्रवंतो
 गती ॥ समिदाधाने विनियोगः ॥ ॐ ममाग्ने वचो विहुवेष्वस्तु वयं त्वेधा नास्तु न्वेषु मम ॥ १ ॥ एवमग्नेऽपि सर्वत्र ॥ ॐ मम देवा विहुवे संतु सर्व इंद्रवंतो
 याध्यक्षेण पृतनाजयेम स्वाहा ॥ विश्वेभ्यो देवेभ्य इदं नमम ॥ १ ॥ एवमग्नेऽपि सर्वत्र ॥ ॐ मम देवा विहुवे संतु सर्व इंद्रवंतो

१ ममान्न इत्यादि दशमंत्रैः स्वाहाकारसमकालं दशसमिधोजुहुयात् ॥ एवं च 'ममाग्ने दशभिर्हुत्वा स्वाहाकारमृगंततः' इत्यस्याः कारिकायाः 'पूर्वम
 ग्नौ समिधं हुत्वा पश्चात् स्वाहाकारमुच्चारयेत्' इत्यर्थकल्पनमसंभवं । सर्वत्र ऋगंत स्वाहाकारयोरविच्छेदादिति कौस्तुभकाराशयः ॥

मरुतोविष्णुरग्निः ॥ ममांतरिक्षमुरुलोकमस्तुमह्यंवातःपवतां कामेअस्मिन्स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ मयिदेवाद्रविणमायजंतांमय्या
 मर्ह्ययजंतुममयानिहव्याकूतिः ॥ ३ ॥ ॐ मर्ह्ययजंतुममयानिहव्याकूतिः
 ॐ देवीःषळुवीरुरुनःकृणोतचि ॥ ४ ॥ ॐ अग्नेमन्युप्रतिनुदन्परैषामदब्धो
 ॐ अग्नेमन्युप्रतिनुदन्परैषामदब्धो ॥ ५ ॥ ॐ धाताधातृणांभुवनस्ययस्पतिर्दु
 सत्यामनसोमेअस्तु ॥ एनोमानिगांक्तमच्चनाहंविश्वेदेवासोअधिवोचतानःस्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ धाताधातृणांभुवनस्ययस्पतिर्दु
 ॐ धाताधातृणांभुवनस्ययस्पतिर्दु ॥ ७ ॥ ॐ उरुव्यचानोमहिषःशर्मयंसदु
 ॐ उरुव्यचानोमहिषःशर्मयंसदु ॥ ८ ॥ ॐ येनःसपलाअपतेभवंत्विद्राग्नि
 गोपाःपरिपाहिन्स्त्वं ॥ प्रत्यंचोयंतुनिगुतःपुनस्तेइमेषांचित्तंप्रबुधांविनेशत्स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ अर्वाचमिंद्रममुतोह
 बंत्रातारमभिमातिषाहं ॥ इमंयज्ञमश्विनोभाबृहस्पतिर्देवाःपांतुयजमानंन्यथात्स्वाहा ॥ १० ॥ इति ॥ ततःस्विष्टकृदादि
 स्मिन्हवैपुरुहूतःपुरुक्षु ॥ सनःप्रजायैहयश्वमृल्येद्रमानोरीरिषोमापरांदाःस्वाहा ॥ ११ ॥ इति ॥ ततःस्विष्टकृदादि
 भ्यामवबाधामहेतान् ॥ वसवोरुद्राआदित्याइपरिस्पृशंमोग्रंचेतोरमधिराजमक्रन्स्वाहा ॥ १२ ॥ इति ॥ ततःस्विष्टकृदादि
 वामहेयोगोजिद्धंनजिदश्वजिद्यः ॥ इमंनोयज्ञंविह्वेषस्वास्यकुलमोहरिवोमेदिनैत्वास्वाहा ॥ १३ ॥ इति ॥ ततःस्विष्टकृदादि
 होमशेषंसमापयेत् ॥ ततःस्नातकोनैमित्तिकंविनानकंनग्नश्चनस्नास्यामिनग्नांस्त्रियंनेक्षिष्ये अन्यत्रमैथुनात् वर्षतिनधाविष्या
 मिवृक्षेनारोक्ष्यामि कूपंनावरोक्ष्यामि नबाहुभ्यांनदीतरिष्यामि प्राणसंशयंनाभ्यापत्स्ये इत्येवंसंकल्पयेत् ततःकौपीनमे
 खलांचविसृजेत् ॥ (समावर्तनानंतरंपूर्वमृतानांत्रिरात्रमाशौचं) ॥ इतिसमावर्तनं ॥ ॥ १३ ॥

==

॥ १४० ॥ अथ श्रीपूजनादिशांतिः ॥
 कल्प्यप्रादेशकरणांतंकृत्वा रंगवल्लयाद्यलंकृतेऽंशानप्रदेशे महीद्यौः ० इत्यादिभिर्मन्त्रैर्विधिवत्कलशं संस्थाप्य तदुपरि पूर्णादर्वीति
 हेने विनियोगः ॥ ॐ हिरण्यवर्णां ० ऋ० १ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रियै नमः श्रियमावाहयामि इत्यावाह्यं श्रीसूक्तेन षोडशोपचारैः पूज
 आज्येनेत्यंतमुक्त्वा त्रप्रधानं ॥ श्रियं श्रीसूक्तेन प्रत्यृचं पायसाहुतिभिः शेषेण स्विष्टकृतमित्याद्याज्यभागं तंकृत्वा ॥ प्रधानहोमः
 हिरण्यवर्णां मिति पंचदशर्चस्य सूक्तस्य आनंदकर्मचिह्नी तेंदिरासुताः श्रीरनुष्टुप् श्यावा
 रंपंक्तिः ततो द्वे त्रिष्टुभौ ततोष्टावनुष्टुभः अंत्याप्रस्तारंपंक्तिः श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थे पायसहोमे विनियोगः ॥ ॐ हिरण्यवर्णां ०
 १ चैले च व्रतबंधे च विवाहे यज्ञकर्मणि ॥ भार्यारजस्वलाय स्य प्रायस्तस्य न शोभनं ॥ आपदि ॥ श्रियं संपूज्य विधिवत्ततो मंगलमारभेत् ॥ अला मे सुमुहूर्तं
 स्य रजोदोषे च संगते ॥ श्रियं संपूज्य तत्कुर्यात्पाणिग्रहणमंगलं ॥ वधूवरमात्रोर्देवतोत्थापनात्प्राग्रजसि शुद्ध्यंते ऽसंभवे पूर्ववा ऐरिणी दानदेवतोत्थापने कार्ये ॥

इत्यादिपंचदशर्भिः प्रत्यृचमेकैकांपायसाहुतिं हुत्वा स्विष्टकृदादिहोमशेषं समाप्य स्थापितकलशोदकेन श्रीसूक्तेन यजमानमभि
पिच्य आवाहितदेवताः पंचोपचारैः संपूज्य आचार्याय गांधक्षिणां पीठदानादिचकृत्वा यस्य स्मृत्येत्येति विष्णुस्मरणपूर्वकं कर्मेश्वरा
र्पणं कृत्वा यथाशक्ति भूयसींदक्षिणां दत्वा शिषोऽग्राह्याः ॥ अस्मिन्कर्मणि दशत्रयोवाब्राह्मणाभोज्याः ॥ इति श्रीपूजनादिशांतिः ॥

॥ १४१ ॥ अथ प्रतिक्कूलदोषशांतिः ॥

पसूचिसकलारिष्टपरिहारपूर्वकं दीर्घायुः पुत्रपौत्रादिसुखैश्वर्यप्राप्तिसिद्धारश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं गौत्कांशांतिकरिष्ये ॥ तदंगगण
पतिपूजनपुण्याहवाचनाचार्यवरणानि कृत्वा आचार्यः प्रादेशकारणांते पीठादौ प्रतिमासुमध्ये ॥ हिरण्यवर्णामिति पंचदशार्च
स्यानंदकर्मचिह्नीं तदिरासुताः श्रीरनुष्टुप् पंचमीपष्ठयौ त्रिष्टुभौ चतुर्थेत्ये प्रस्तारपंक्ती श्रीपूजने वि० इति श्रीसूक्तेन श्रियं ॥ इदं
त्र्यंबकं मन्त्रावरुणिर्वसिष्ठोरुद्रोऽनुष्टुप् ॥ विष्णवावाहने ॥ गौरीर्मिमायौ च थ्यो दीर्घतमा उमाजगती ॥ उमावाहने वि० ॥
ह्यपोडशोपचारैः संपूज्य तत्पश्चिमतः स्थंडिले निमिषा प्यध्यात्वा न्वाधाने च क्षुपी आज्येनेत्यंते अग्निं प्रधानदेवं दूर्वी तिलाज्यचरु
भिः प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याहुतिभिः अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं चाज्येन शेषेणेत्याज्यभागहोमांते ॐ भूः स्वाहा मृत्युर्नश्यतु सु
खाय च र्धतां स्वाहा इति मंत्रेणोक्तद्रव्यैरुक्तसंख्यया होमं कृत्वा समस्तव्याहुतिभिराज्यं हुत्वा स्विष्टकृद्धो मादिशेषं समाप्य देवतोत्त

तन्नाममुकप्रपौत्रीममुकपौत्रीममुकस्यममपुत्रीममुकनाम्नीमिमांकन्यांज्योतिर्विदादिष्टेसुमुहूर्तेदास्ये इतिवाचासंप्रददइति
 चोक्त्वा ॥ अव्यंगेऽपतितेऽह्नीवेदशदोषविवर्जिते ॥ इमांकन्यांप्रदास्यामिदेवाग्निद्विजसन्निधावितिवरपित्रादिवस्त्रप्रांतेतानि
 पूगफलानिप्रक्षिप्यप्रतिष्ठामंत्रेणतदस्त्वित्यादिनावस्त्रेबद्धाग्रंथिचंदनेनचर्चयेदित्याचारप्राप्तं ॥ ततोहरिद्राखंडंपंचपूगफला
 नितथैववरपित्रादिर्गृहीत्वामुकगोत्रामुकवरविषयेभवंतोनिश्चिताभवंत्वितिदातृवस्त्रप्रांतेप्रक्षेपादिकुर्यात् ॥ ततोदाता ॥
 वाचादत्तामयाकन्यापुत्रार्थस्वीकृतात्वया ॥ कन्यावलोकनविधौनिश्चितस्त्वंसुखीभवेतिवरपितरंप्रतिपठेत् ॥ सच ॥ वाचा
 दत्तात्वयाकन्यापुत्रार्थस्वीकृतामया ॥ वरावलोकनविधौनिश्चितस्त्वंसुखीभवेतिदातारंप्रतिपठेत् ॥ आत्रादौस्वीकर्तरिआ
 त्रार्थमित्रार्थमित्याद्यहःकार्यः ॥ ततोब्राह्मणाः ॥ शिवाआपःसंतु ॥ सौमनस्यमस्तु ॥ अक्षतंचारिष्टंचास्तु ॥ दीर्घमायुःश्रे
 यःशांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु ॥ एतद्वःसत्यमस्त्वित्युक्त्वा ॥ ॐ समानीवआकूतिःसमानाहृदयानिवः ॥ समानमस्तुवोमनोय
 धावःसुसहासति ॥ ॐ प्रसुगमंताधियसानस्यंसक्षणिर्वैरिर्भैर्वैरौअभिषुप्रसीदतः ॥ अस्माकमिंद्रजुभयंजुजोपतियत्सोम्यस्यांध
 सोबुबोधति ॥ इतिमंत्रौपठेयुः ॥ ततोदातापात्रस्थसिततंदुलपुंजेशचीमावाह्यधोडशोपचारैःपूजयेत्ताचकन्यैवंप्रार्थयेत् ॥ दे
 वेन्द्राग्निनमस्तुभ्यंदेवेंद्रप्रियभामिनि ॥ विवाहंभाग्यमारोग्यंपुत्रलाभंचदेहिमेइति ॥ ततःपुरंध्रीभिर्नोराजनादिमांगलिकंका
 र्यं ॥ विप्राश्चगंधतांबूलादिनापूजिताआशीर्मन्त्रान्पठेयुः ॥ तेच ॥ ॐ ह्रिकण्वतीचसुपत्नीवसूनांवत्समिच्छंतीमनसाभ्यागा
 त् ॥ दुहामश्विभ्यांपयोअह्नयेयंसार्वधतामहृतेसौभगाय ॥ ॐ समिद्धस्यश्रयमाणःपुरस्ताद्रह्यवन्वानोअजरंसुवीर ॥ आरेअ

स्मदमतिं बार्धमान उच्छ्रयस्वमहते सौभगाय ॥ ॐ वर्नस्येशतर्वल्लोविरोहसहस्रवल्शाविवयंरुहेम ॥ यंत्वामयंस्वधितिले
जमानःप्रणिनायमहते सौभगाय ॥ ॐ इंदुदेवानामुपसख्यमायन्तसहस्रधारःपवतेमदाय ॥ नृभिस्तवानोअनुधामपूर्वमगन्नि
द्रमहते सौभगाय ॥ ॐ अस्यपिबक्षमतःप्रस्थितस्यैद्रसोमस्यवरमासुतस्य ॥ स्वस्तिदामनसामादयस्वार्वाचीनोरेवते सौभगा
गायपदान्ताःषट् ॥ ॐ तदस्तुमित्रावरुणा० ॥ इत्याशीर्वादमंत्रातेकर्मसमाप्यआचारादुभौसमील्यगृहान्गच्छेयुः ॥ इतिवा०

विवाहपूः
॥१४३॥

॥ १४३ ॥ अथविवाहपूर्वदिनकृत्यम् ॥

श्रीः ॥ वधूपितावरपिताचविवाहदिनात्पूर्वेद्युःविवाहदिनएववासंस्कार्येणसहकृताभ्यंगस्नानोऽहतवासाःप्राङ्मुख उपविश्य
स्वदक्षिणेपत्नीतदक्षिणेसंस्कार्यमुपवेश्य आचम्यप्राणानायम्येष्टदेवतांगुवादींश्चनमस्कृत्यदेशकालौसंकीर्त्यममास्यअमुकशर्म
णःपुत्रस्यदैवपित्र्यऋणापाकरणहेतुभूतधर्मप्रजोत्पादनसिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंविवाहसंस्कारंख्यंकर्मकरिष्ये ॥ क
न्याविवाहेपूर्वसंस्कारलोपेतुममास्याःकन्यकायाःजातकर्मनामकर्मसूर्यावलोकननिष्क्रमणोपवेशनान्नप्राशनचौलसंस्काराणां
लोपजन्यप्रत्यवायपरिहारार्थंप्रतिसंस्कारंपादकृच्छ्रंप्रायश्चित्तंचूडाकर्मणि अर्धकृच्छ्रंतत्प्रत्यस्नायगोनिष्कयीभूतयथाशक्तिर
जतदानेनाहमाचरिष्ये ॥ गर्भाधानसीमंतयोर्लोपेतयोरप्यूहः ॥ ततोममास्याःकन्यकायाःभर्त्रासहधर्मप्रजोत्पादनगृह्यपरि
१ पुत्रोद्धाहेपिसमावर्तनादुद्धाहांताब्दगणनयाप्रत्यब्दमेककृच्छ्रादितारतम्येनानाश्रमिन्ना

॥२०७॥

॥२०७॥

॥२०७॥

ग्रहधर्माचरणेष्वधिकारसिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विवाहसंस्काराख्यं कर्म करिष्ये ॥ अथवा अस्यामुकशर्मणः पुत्रस्य अमु
कनाम्न्याः कन्यायावाश्वः करिष्यमाणविवाहांगभूतंगणपतिपूजनपूर्वकं स्वस्तिवाचनं मातृकापूजनं नां दीश्राद्धं ग्रहयज्ञं मंडपदेव
ताकुलदेवतादिप्रतिष्ठांच करिष्ये इति संकल्प्य उपनयनोक्तरीत्या स्वस्तिवाचनादीं नि कु र्यात् ॥ १४७ ॥ ॥ ४३ ॥

॥ १४४ ॥ अथ कर्मांगदेवताः ॥

श्रीः ॥ विवाहस्याग्निर्देवता तेन विवाहांगभूतस्वस्तिवचनाद्यंते कर्मांगदेवताग्निः प्रीयतामिति वदेत् । औपासनेऽग्निं सूयं प्रजापत
यः । स्थालीपाकेऽग्निः गर्भाधाने ब्रह्मा पुंसवने प्रजापतिः सीमंते धाता जातकर्मणि मृत्युः नाम कर्म निष्क्रमणान्नप्राशने पुसवि
ता चोलेकेशिनः उपनयने इन्द्रश्रद्धामेधाः अंते सुश्रवाः पुनरुपनयनेऽग्निः समावर्तनस्यैन्द्रः उपाकर्मणि व्रते पुचसविता वास्तुहो
मेवास्तोपतिरंते प्रजापतिः आग्रयणे आग्रयणदेवताः सर्पबलेः सर्पाः तडागादीनां वरुणः ग्रहयज्ञेन वग्रहाः कूर्बमांडहोमे चांद्रा
यणे अग्न्याधाने चाग्न्यादयः अग्निष्टोमस्याग्निः अन्येष्विष्टकर्मसु प्रजापतिरिति ॥ १४५ ॥ ॥ ४३ ॥

॥ १४५ ॥ अथ सीमांतपूजनम् ॥

श्रीः ॥ अथ कन्यादातावरगृहमागतः आचम्य प्राणानायायम्य देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाणकन्याविवाहांगत्वेन वरस्य सीमांतपू
जनं करिष्ये इति संकल्प्य गणेशवरुणपूजने कृत्वा अस्मिन्नाष्टैश्च यमिति पत्नीप्रक्षिप्तजलेन तदीयदक्षिणवामपादौ प्रक्षाल्याचमय्य
गंधपुष्पनीराजनवस्त्रैर्यथासंभवं संपूज्य यथाचारं दुग्धादिप्राशनं कारयेत् ॥ इति सीमांतपूजा ॥ १४६ ॥ ॥ ४३ ॥

श्रीः॥ वरःकृतनित्यक्रियोविधिवत्कृतस्वस्तिवाचनःब्राह्मणैःसहसात्विकाहारमुक्त्वाअमुक्त्वावाइषज्ज्ञौतनवंश्वेतंसदशंपरेणा
धृतं वस्त्रयुगुलं धृत्वालंकृतः सग्वीष्टदेवतां पित्रादींश्च नमस्कृत्य तैरनुमोदितो यथा विभवमश्वादिद्यानमारुह्य धृतसितच्छत्रः स्वर्चि
तैर्ज्ञातिबांधवैः ॥ ॐ कर्त्तिके दक्षिणतः सग्वीष्टदेवतां पित्रादींश्च नमस्कृत्य तैरनुमोदितो यथा विभवमश्वादिद्यानमारुह्य धृतसितच्छत्रः स्वर्चि
विदत् ॥ मात्वा इयेन उर्द्ध्वं धीन्मासुपणोमात्वा विदुर्दिषुमान्वीरोऽस्ता ॥ सुमंगलं च शकुने भवा सिमात्वा काचिदभिभाविरव्या
अर्चकं दक्षिणतः सग्वीष्टदेवतां पित्रादींश्च नमस्कृत्य तैरनुमोदितो यथा विभवमश्वादिद्यानमारुह्य धृतसितच्छत्रः स्वर्चि
गुणं तिकारवोवयोवदं तत्तुथा शुकुंतयः ॥ उभेवाचौ वदतिसामगाऽईवगायत्रं च त्रैष्टुभं चानुराजसि ॥ १ ॥ प्रदक्षिणिदुभि
यसि ब्रह्मपुत्रं इव सर्वनेषु शंससि ॥ वृषेव वाजी शिशुमती रपीत्या सर्वतो नः शकुने भद्रमावद विश्वतो नः शकुने पुण्यमावद ॥ आव
दंस्त्वं शकुने भद्रमावद तत्तुथा शुकुंतयः ॥ उभेवाचौ वदतिसामगाऽईवगायत्रं च त्रैष्टुभं चानुराजसि ॥ १ ॥ प्रदक्षिणिदुभि
दक्षिणतो भद्रमुत्तरतो वद ॥ भद्रं पुरस्तान्नो वद भद्रं पश्चात्कपिंजर ॥ भद्रं वद पुत्रैर्भद्रं वद पुत्रैर्भद्रं वद पुत्रैर्भद्रं वद पुत्रैर्भद्रं वद ॥ आव
भयंकृधि ॥ भद्रमधस्तान्नो वद भद्रमपरिष्टान्नो वद ॥ भद्रं भद्रं नऽआभर भद्रं नः सर्वतो वद ॥ भद्रमस्माकं नो वद भद्रं नोऽअ
धि ॥ अभयं सततं पश्चाद्भद्रमुत्तरतो गृहे ॥ यौवनानि मह्यसि जिग्युषां भिवदं दुभिः ॥ असुपुलं पुरस्तात्तः शिवं दक्षिणतस्कृ
इत्यादि सुमंगलसूक्तपठनपरैर्ब्राह्मणैः पुरंध्रीभिः पूर्णकलशदर्पणकन्यापुष्पाक्षतदीपमालाध्वजलार्जैर्मंगलगीततूर्यैश्च सह वधूगृहं

गत्वातद्द्वारदेशेप्राङ्मुखःस्थितोनीराजनपूर्णकुंभयुतैःपुरंध्रीजनैःप्रत्युद्यातोनीराजितोतर्गुहंप्रविश्यतदंगणेमंडपाधःसोत्तरच्छदे
हरितदर्भास्तीर्णेचतुष्पादभद्रपीठेप्राङ्मुखोपविशेत् ॥ तत्रैवचमधुपर्काहणंकन्यादानाविधेयं ॥ इतिवरस्यवधूगृहगमनं ॥ ॥

॥ १४७ ॥ अथमधुपर्कः ॥

श्रीः ॥ पाद्यार्थमध्वर्यार्थमंत्रवत्रिराचमनीयार्थशुद्धाष्टाचमनीयार्थचजलपात्रचतुष्टयमधुपर्ककांस्यपात्रांगांविष्टरंचसंपाद्य कर्ता
आचम्यप्राणानायम्यदेशकालौस्मृत्वाकन्यार्थिनेगृहागतायास्मैस्नातकायवरायकन्यादानांगभूतमधुपर्ककरिष्ये ॥ कन्यार्थिने
मित्यादिद्वितीयांतमुक्त्वामधुपर्कणार्हचिष्ये इतिवा ॥ विष्टरोविष्टरोविष्टरइतिविष्टरंवरहस्तेदद्यात् ॥ वरस्तु ॥ अहंवर्भेत्य
स्यचामदेवोविष्टरोनुष्टुप् ॥ विष्टरोपवेशनेविनियोगः ॥ ॐ अहंवर्भसजातानांविद्युतामिवसूर्यः ॥ इदंतमधितिष्ठामियोमा
कश्चाभिदासति ॥ इत्युदगग्रेविष्टरउपविशेत् ॥ ततोर्चकेनपाद्यंपाद्यमितित्रिनिवेदितंपाद्यंवरोगृह्णीयात् ॥ ततोर्चकस्तेनोद
केनपत्नीप्रक्षिप्तेनास्मिन्नाष्टइतिवरस्यदक्षिणसव्यपादैर्प्रक्षालयेत् ॥ ततोवरोलौकिकोदकेनाचम्यअर्घ्यमर्घ्यमितिपूर्ववत्त्रि

१ सर्वत्रप्राङ्मुखोदाताप्रतिग्राहीह्युदङ्मुखः ॥ कन्यादानेविपर्यासोमधुपर्कस्तुपश्चिमः ॥ परिशिष्टे—वरस्ययामवेच्छास्नातच्छाखागृह्यचोदितः ॥
मधुपर्कप्रदातव्योह्यन्यशास्त्रेपिदातरीति ॥ दृश्यलाभेपयोजलवा ॥ मध्वलाभेसर्षिर्गुडोवाप्रतिनिधिः ॥ २ वरस्यद्वितीयोद्वाहेतुस्नातकपदलोपः ॥ ३ पंच
विशतिदर्भाणावेग्यग्रेग्रथिभूषित ॥ विष्टरेसर्वयज्ञेषुलक्षणंपरिकीर्तित ॥ पंचाशताभवेद्ब्रह्मातदर्धेनतुविष्टरः ॥ ऊर्ध्वकेशोभवेद्ब्रह्मालंक्त्रकेशस्तुविष्टरः ॥
नक्षिणावर्तकोन्नस्यात्रामावर्तन्तुविष्टरः ॥ इतिविष्टरलक्षणं ॥ ४ प्रत्युपचारप्रतिगृह्यताप्रतिगृह्यामीतिकौस्तुभे ॥

निर्वेदितंगंधमाल्यफलयुतमर्घ्यमंजलिनाप्रतिगृह्य आचमनीयमाचमनीयमिति त्रिनिवेदितपात्रं प्रतिगृह्य भूमौ नि
धाय तस्यैकदेशं गृहीत्वा ॐ अमृतोपस्तरणमसीति पीत्वा लौकिकोदकेनाचम्य ॥ आनीयमानं मधुपर्कं चरः ॐ मित्रस्य त्वाचक्षुषा
प्रतीक्षे इत्यवेक्ष्य दात्रामधुपर्को मधुपर्को मधुपर्क इति त्रिनिवेदितं मधुपर्कं ॐ देवस्य त्वासवितुः प्रसवे श्विनो बृहस्पतौ हस्ता
विनियोगः ॥ ॐ मधुवाता ऋताय ते मधुर्धरति सिंधवः ॥ माध्वीर्नः संत्वोर्बधीः ॥ मधुन क्तं मुतो बसो मधुमत्यार्ध्वं वरजः ॥ मधुपर्कवेक्षणे
रस्तुनः पिता ॥ मधुमान्नो वनस्यतिर्मधुमो अस्तु सूर्यः ॥ माध्वीर्गवो भवंतुनः ॥ इत्यवेक्ष्य तत्पात्रं सव्यहस्ते गृहीत्वांगुष्ठोपकनि
रुद्रास्त्वान्नैष्टुभेन छंदसा भक्षयंतु इति दक्षिणतः ॥ ॐ आदित्यास्त्वागायत्रेण छंदसा भक्षयंतु इति पुरस्तात्त्रिमृजेत् ॥ ॐ
मधुपर्कपात्रं भूमौ निधाय मधुपर्कं कदेशं गृहीत्वा ॥ ॐ विराजो दोहो सीति प्राश्य लौकिकोदकेनाचम्य पुनर्गृहीत्वा ॥ ॐ विरा
जो दोहमशीय इति प्राश्य पूर्ववदाचम्य पुनर्गृहीत्वा ॥ ॐ मयि दोहः पद्यायै विराजः इति प्राश्य पूर्ववदाचम्य ॥ मधुपर्कशेषमु
१ आलोडनसंज्ञाता गुल्लिपस्यैव दिक्कतुष्टयेऽप्यपनयनं तु पुनः पुनर्ग्रहणं । ताम्यमेव मध्यात् पुनः पुनर्ग्रहणं गृहीत्वा भूतेभ्यस्त्वेति विमृश्यते ॥

१ आलोडनसंजातागुल्लिखेपस्यैवद्विक्कुट्टयेप्यपनयनं नुपुनः पुनर्ग्रहणं । ताम्यामेवमध्यात्पुनः पुनस्त्रिगृहीत्वाभूतेभ्यस्त्वेति त्रिरावृत्तेरुर्ध्वक्षिपेत् ।
 २ स्वयंगृहीतस्य परेण वा हस्ते प्रक्षिप्तस्य प्राशनत्रयमेतत् ।

दगुपविष्टायब्राह्मणायदद्याल्लोकविद्विष्टत्वादप्सुवाक्षिपेत् ॥ ततःपूर्वनिवेदिताचमनीयैकदेशं ॐ अमृतापिधानमसीतिपीत्वा
 लौकिकोदकेनाचम्यआचमनीयजलशेषं सर्वगृहीत्वा ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां इति प्राश्य लौकिकोदकेन द्विराचामेत् ॥
 ततोदात्वागौर्गौरिति त्रिनिवेदितांगां निष्क्रयं वा ॥ मातारुद्राणामित्यस्य भार्गवोजमदग्निर्गौस्त्रिष्टुप् ॥ गोरुत्सर्जने विनि
 योगः ॥ ॐ मातारुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसां द्वित्यानां ममृतं स्युनाभिः ॥ प्रनुवो चंचिकितुषे जनाय मागमनां गामादैति वधिष्ट ॥
 ॐ उत्सृजत इति विसृजेत् ॥ ततो दाता गंधमाख्य वस्त्रयुगोपवीत युगाभरणादिभिर्यथा विभवं वरं पूजयेत् ॥ ततो वरेण सहागतां स्तब्धं
 ॐ उत्सृजत इति विसृजेत् ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 धूनपि पूजयेत् ॥ इति मधुपर्कः ॥

॥ १४८ ॥ अथ गौरीहरं पूजां ॥

श्रीः ॥ अथ कन्यास्नातापरिहिताहतवस्त्रागृहांतः सूत्रवेष्टितोपलसहितहृदपुपरिहरिद्रानिर्मितौ गौरीहरौ सौभाग्यादिकामन
 यापूजयित्वा ॥ (अविच्छिन्नसौभाग्यशुभसंततिधनधान्यादिसिद्ध्ये गौरीहरौ पूजयिष्ये ॥ तत्र कोणचतुष्टयस्थापितकलश
 श्रेणीनां मध्ये उक्तहृदपद्यन्योन्यालिंगित गौरीहरप्रतिमां सौवर्णां काल्यायनीं महालक्ष्मीशचीभिः सह पूजयेत् ॥ ध्यानमंत्रः ॥ सिंहा
 सनस्थां देवेशीं सर्वालंकारसंयुतां ॥ पीतांबरधरं देवं चंद्रार्धकृतशेखरं ॥ करेणाधः सुधापूर्णकलशं दक्षिणेन तु ॥ वरदं चाभयं वा
 मेनाश्लिष्यत दनुप्रियां ॥ पूजामंत्रः ॥ गौरीहरमहेशानसर्वमंगलदायक ॥ पूजांगुहाण देवेश सर्वदामंगलंकुरु ॥ इति ॥ क
 न्यादेहप्रमाणेन सप्तविंशतितनुभिः कृतयावतिकयादीपं प्रज्वालयेत् धर्म०) इंद्राणीं च तत्रैवाक्षतपुंजपूजयित्वा प्रार्थयेत् ॥ देवै

द्राणिनमस्तुभ्यं देवद्रप्रियभामिति ॥ विवाहं भाग्यमारोग्यं पुत्रलाभं च देहि मे इति ॥ ततो गौरी सौभाग्यादिप्रार्थयमाना तत्रैव तिष्ठेत् ॥ अथ कन्यादानादि ॥ गृहांतः पूर्वापरभागयोर्हस्तांतरालं विहाय प्रस्थमिति सिततंडुलैर्द्वौ राशीकृत्वामध्ये कुंकुमादिकृ तस्थाप्य द्विजाः सत्येनोत्तभि ते तिसूक्तं पठेयुः पुरंध्यो मंगलगीतीः कुर्युः ॥

सत्ये.सू.
॥१४९॥

श्रीः ॥ ॐ सत्येनोत्तभि ताभूमिः सूर्येणोत्तभि ताद्यौ ॥ अथ सत्येनोत्तभि तासूक्तम् ॥
बलिनः सोमै न पृथिवी मही ॥ अथोनक्षत्राणामेषामपस्ये सोम आहितः ॥ ऋतेनादित्यास्तिस्रं तद्विद्वि सोमो अधि श्रितः ॥ सोमैनादित्या
यत्त्वा देवप्रपिबतितत आप्यायसे पुनः ॥ आच्छाद्विधानैर्गुपितो बह्वैः सोमरक्षितः ॥ प्राणामिच्छन्वां तेषां सिनतै अश्राति पार्थिवः ॥ सोमं यं
न्योचनी ॥ सूर्याया भद्रमिदं सोगाथैति पारैकृतं ॥ चित्तिरा उपबर्हणं च क्षुरा अभ्यर्जनं ॥ सूर्याया अश्विना वरा मिरासी तपुरोगवः ॥ सोमो वधूयुरभवदुश्विना
त्सूर्यापति ॥ स्तोमा आसन्नप्रतिधयः कुरीरं छंदोपशः ॥ सूर्याया अश्विना वरा मिरासी तपुरोगवः ॥ सोमो वधूयुरभवदुश्विना
स्तामभावरा ॥ सूर्याय तपत्ये शं संती मनसा सविता ददात् ॥ २ ॥ ऋक्सामाभ्यामभिहितौ गावौ ते साम नार्चितः ॥ श्रौत्रे ते च क्रेतां दिवि पंथा श्रराचरः ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४३ ॥

॥२१०॥

शुचीतेचक्रेयात्याव्यानोअक्षआहतः ॥ अनोमनुस्मयंसूर्यारोहत्प्रयतीपति ॥ सूर्यायावहतुःप्रागात्सवितायमवासृजत् ॥
 अघासुहन्त्यतेगावोऽन्योऽप्युह्यते ॥ यदध्विनापच्छमानावयातंत्रिचक्रेणवहतुंसूर्यायाः ॥ विश्वेदेवाअनुतद्धामजानन्पु
 त्रःपितराववृणीतपूषा ॥ यदयातंशुभसतीवरेयसूर्यामुप ॥ कैकचक्रंवामासीत्कदेष्ट्रायतस्थथुः ॥ ३ ॥ द्वेतैचक्रसू
 र्येन्नृणाणंऋतुथाविदुः ॥ अथैकचक्रंयदुहातदद्धातयइद्विदुः ॥ सूर्याथैदेवेभ्योमित्रायवरुणायच ॥ येभूतस्यप्रचेतसइदंते
 भ्योकरंनमः ॥ पूर्वापरंचरतोमाययैतौशिशूक्रीळतौपरियातोअध्वरं ॥ विश्वान्यन्योभुवनाभिचष्टऋतूरन्योविदर्धजायतेपु
 नः ॥ नवोनवोभवतिजायमानोहोकिंतुरुषसोमेत्यग्रं ॥ भागदेवेभ्योविदर्धात्यायन्प्रचंद्रमास्तिरतेदूर्धमायुः ॥ सुकिंशकंश
 ल्मलिंविश्वरूपंहिरण्यवर्णसंवृतंसुचक्रं ॥ आरोहसूर्येअमृतस्यलोकंस्योनंपत्येवहतुंकुणुष्व ॥ ४ ॥ उदीर्ष्वोतःपतिवतीह्येऽषा
 विश्वावसंनमसागीभिरीळे ॥ अन्यामिच्छपितृषद्व्यक्तांसतेभागोजनुपातस्यविद्धि ॥ उदीर्ष्वोतोविश्वावसोनमसेळामहेत्वा ॥
 अन्यामिच्छप्रफुर्व्यं'संजायांपत्यासुज ॥ अनुक्षराऋजवःसंतुपंथायेभिःसखायोयांतिनोवरेयं ॥ समर्थमासंभगोनोनिनीयात्सं
 जोस्पत्यंसुयममस्तुदेवाः ॥ प्रत्वामुंचामिवरुणस्यपाशाद्येनत्वाबन्धात्सवितासुशेवः ॥ ऋतस्ययोनौसुकृतस्यलोकेरेष्टांत्वासह
 पत्यादधामि ॥ प्रेतोमुंचामिनामुतःसुबद्धाममुतस्करं ॥ यथेयमिद्रमीढुःसुपुत्रासुभगासति ॥ ५ ॥ पूषात्वेतोर्नयतुहस्तगृह्णा
 ध्विनात्वाप्रवहतांरथेन ॥ गृहानर्गच्छगृहपत्नीयथासौवशिनीत्वंविदथमावदासि ॥ इहप्रियंप्रजयातिसमृध्यतामस्मिन्गृहेगा
 र्हेपत्यायजागृहि ॥ एनापत्यातन्वं'संसृजस्वाधाजिब्रीविदथमावदाथः ॥ नीललोहितंभवतिकृत्यासक्तिर्व्यज्यते ॥ एधंतेअस्या

ज्ञातयः पतिर्बन्धेषु बध्यते ॥ परादेहिशामुल्यं ब्रह्मभ्यो विभजावसु ॥ कल्येषापद्वती भूत्वा जाया विशतेपतिं ॥ अश्रीरातनू भव
तिरुशतीपापयामुया ॥ पतिर्यद्वध्वो ह्वासास्वमंगमभिधित्सते ॥ ६ ॥ येवध्वश्चंद्रवहंतु यक्षमायं तिजनादनु ॥ पुनस्तान्य
यंवधूरिमांसमेतुयत आगताः ॥ माविदन्परिपुंथिनो यआसीदंतिदंपती ॥ सुगेभिर्दुर्गमतीतामपद्रां त्वरांतयः ॥ सुमंगलीरि
विद्यात्सइद्वार्धयमर्हति ॥ आशसन्नं विशसन्नमथो अधिविकर्तनं ॥ सुसूर्याः पश्यरूपाणि तानि ब्रह्मा तु शुधति ॥ ७ ॥
गुग्गुणाभिते सौ भगत्वाय हस्तं मया पत्या जुरदष्टिर्थासः ॥ भगो अर्यमास वितापुरं धिर्मह्यत्वा दुर्गा हि पत्या यदेवाः ॥ तां पूषं छिवत्
मामेरयस्व स्यां बीजं मनुष्या इवपति ॥ यानं ऊरुशती विश्रया ते यस्यामिशंतः प्रहरामशेषं ॥ तुभ्यमग्रे पर्यवहन्त्सूर्या विहृतुना
सह ॥ पुनः पतिभ्यो जायां दाअमे प्रजया सह ॥ पुनः पत्नीमग्निरदायुषा सह वर्चसा ॥ दीर्घायुरस्यायः पतिर्जीवातिशरदः शतं ॥
सोमः प्रथमो विविदे गंधर्वो विविदु उत्तरः ॥ तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः ॥ ८ ॥ सोमो ददङ्गधर्वाय गंधर्वो दददुमयै ॥
रयिं च पुत्रांश्चादादु मिर्मह्यमथो इमां ॥ इहैव स्तं मावि यो हं विश्वमायुर्व्यश्रुतं ॥ क्रीळंतौ पुत्रैर्न सृष्टुमि मोदमानौ स्वगृहे ॥ आनः प्रजां ज
नयतु प्रजापतिराजरसाय समनक्त्वयमा ॥ अर्दुर्भगलीः पतिर्लोकमाविश शनो भवहि पदे शं चतुष्पदे ॥ अर्दोरचक्षुरपतिर्भ्येधि
शिवापशुभ्यः समनाः सुवर्चाः ॥ वीरसूदूवर्कामास्यो नाशनो भवहि पदे शं चतुष्पदे ॥ इमां त्वमिद्रमीदुः सुपुत्रां सुभगां कृणु ॥ दशा
स्यां पुत्रानाधेहि पतिमेकादशं कृधि ॥ सम्राज्ञीः श्वशुरे भवसम्राज्ञी श्वश्रवां भव ॥ ननोदरिसम्राज्ञी भवसम्राज्ञी अधिदेवेषु ॥ समं

जंतुविश्वेदेवाःसमापोहृदयानिनौ ॥ संमातरिश्वासंधातासमुद्देष्ट्रीदधातुनौ ॥९॥ इतिसूक्तंपठेयुःपुरंध्रयोमंगलगीतीःकुर्युः ॥ ॥
 कन्यावरयोःपित्रादिज्योतिर्विदंवस्त्रादिनापूजयेत् तद्वत्ताःसपुगीफलकुंकुमाक्षताःकन्यावरयोरेजलौदद्यात् ॥ वधूवरीचमनसे
 एदेवतांध्यायंतौसमाहितौतिष्ठेतां ॥ अथज्योतिपिकेणमंगलपद्यपाठपूर्वकस्वोक्तकालेतदेवलग्नमितिपठित्वासुमुहूर्तमस्तु ॐ
 प्रतिष्ठेत्युक्तेसद्योतःपटमुदगपसार्यकन्यावराभ्यांपरस्परशिरसोरंजलिस्थतंडुलाद्यवकिरणंपरस्परनिरीक्षणंचकारणीयं ॥ त
 दावरः ॥ ॐअभ्रातृघ्नीवरुणापतिघ्नीबृहस्पते ॥ इंद्रापुत्रघ्नीलक्ष्म्यंतामस्येसवितुःसुवइतिजपन्कन्यांवीक्षेत् ॥ ॐ अघोरचक्षुरप
 तिद्वयेधिशिवापशुभ्यःसुमनाःसुवर्चाः ॥ वीरसूर्देवर्कामास्योनाशनौभवद्विपदेशंचतुष्पदे ॥ इतिजपित्वादभिर्ग्रेणतस्याभ्रुवो
 र्मध्यं ॐभूर्भुवःस्वरितिपरिमृज्यदर्भेनिरस्यापउपस्पृशेत् ॥ ततस्त्रिवारंपंचवारंपरस्परंशिरसिऋक्चवाइत्यादिखंडवाक्यां
 ॥ ७ ॥

तेवधूर्पूर्वकमक्षतारोपणंकारणीयमाचारात् ॥

॥ १५० ॥ अथऋक्चवेखंडवाग्न्यानि ॥
 श्रीः ॥ ऋक्चवाइदमग्रेसामचास्तांसैवनामऋगासीदमोनामसामसावाऋक्सामोपावदन्मिथुनंसंभवावप्रजात्याइतिनेत्यब्रवी
 त्सामज्यायान्वाअतोमममहिमेतितेद्वेभूत्वोपावदतांतेनप्रतिचनसमवदततास्तिस्त्रोभूत्वोपावदंस्तत्तिसृभिःसमभवद्यत्तिसृभिः
 समभवत्तस्मात्तिसृभिःस्तुवंतितिसृभिरुद्गायंतितिसृभिर्हिसामसंमितं तस्मादेकस्यबन्धोजायाभवति नैकस्यैवहवःसहपतयोय
 द्वैतत्साचामश्चसमभवतांतत्सामाभवत्तत्सान्नःसामत्वंसामन्भवतियएवंवेदयोवैभवतियःश्रेष्ठतामभ्रुतेससामन्भवत्यसामन्यइ

तिहिनिंदंतिवैपंचान्यभूत्वापंचान्यभूत्वाकल्पेतामाहावश्च हिंकारश्चप्रस्तावश्चप्रथमाचऋगुक्तीथश्च मध्यमाचप्रतिहारश्चोत्त
माचनिधनंचवषट्कारश्चतेयत्पंचान्यभूत्वापंचान्यभूत्वाकल्पेतांतस्मादाहुः पांक्तोयज्ञःपांक्ताःपशवइति यदुविराजंदशिनीम
भिसमपद्येतांतस्मादाहुर्विराजियज्ञोदशिन्यांप्रतिष्ठित इत्यात्मावैस्तोत्रियःप्रजानुरूपः पत्नीधाय्यापशवःप्रगाथोगृहाःसूक्तंस
त्मानमेवतत्संस्फुरतेनुरूपंशंसतिप्रजावाअनुरूपःसउच्चैस्तरामिवानुरूपः शंस्तव्यः प्रजामेवतच्छेयसीमात्मनःकुरुतेधायांशंस
तिपत्नीवैधायासानीचैस्तरामिवधायाशंस्तव्याप्रतिवादिनीहास्यगृहेषुपत्नीभवति यत्रैवंविद्वान्नीचैस्तरांधायांशंसतिप्रगाथं
शंसतिसस्वरवत्यावाचाशंस्तव्यःपशवोवैस्वरःपशवःप्रगाथःपशूनामवरुध्या इंद्रस्यनुवीर्याणिप्रवोचमितिःसूक्तंशंसति तद्वाएत
स्त्रियमिंद्रस्यसूक्तंनिष्केवल्यंहैरण्यस्तूपमेतेनवैसूक्तेनहिरण्यस्तूपआंगिरसइंद्रस्यप्रियंधामोपागच्छत्सपरमंलोकमजय दुर्पेद्रस्य
प्रियंधामगच्छतिजयतिपरमंलोकंयएवंवेदगृहावैप्रतिष्ठासूक्तंत्वतिष्ठितमयावाचाशंस्तव्यंतस्माद्यद्यपिदूरइवपशूह्रभतेगृहा
नेवैनानाजिगमिषतिगृहाहिपशूनांप्रतिष्ठाप्रतिष्ठा ॥२॥ उत्तमाप्रतिष्ठातद्वैवंक्षत्रंसाश्रीस्तदाधिपत्यंतद्भक्ष्यविष्टपंतत्प्रजापतेरा
यतनंतत्स्वाराज्यमृधोत्येतमेवैताभिरेकविंशत्यैकविंशत्या ॥३॥ याज्ययायजतिप्रतिवैयाज्यापुण्यैवलक्ष्मीःपुण्यामेवतल्लक्ष्मींसं
भावयतिपुण्यांलक्ष्मींसंस्फुरते ॥४॥ यच्चावांचोद्यावापृथिवीयंशंसतिद्यावापृथिवीवैप्रतिष्ठेइयमेवेहप्रतिष्ठासावमुत्रतद्यद्यावापृ
थिवीयंशंसतिप्रतिष्ठयोरेवैतत्प्रतिष्ठापयति॥५॥ इंद्रमिंद्रेणदेवताःशस्यंतेंद्रंइवैमिथुनंतस्मादंन्द्रान्मिथुनंप्रजायतेप्रजात्यैप्रजा

यतेप्रजयापशुभिर्यएवंवेदाथहेतेपोन्नीयाश्चनेष्ट्रीयाश्चचत्वारऋतुयाजाःषळचःसाविराड्दशिनी तद्विराजियज्ञंदशिन्यांप्रतिष्ठा
 पयंतिप्रतिष्ठापयंति ॥६॥ महीद्यौःपृथिवीचनस्तेहिद्यावापृथिवीविश्वशंभुवेतिद्यावापृथिवीयेशंसतिद्यावापृथिवीवैप्रतिष्ठेइय
 भेवेहप्रतिष्ठासावमुन्नतद्यद्वावापृथिवीयेशंसतिप्रतिष्ठयोरैवन्तत्प्रतिष्ठापयति ॥७॥ धारयन्धारयन्नितिशंसतिप्रस्रंसद्वाअंत
 स्यबिभायतद्यथापुनराग्रंथंपुनर्निग्रंथमंतंबधीयान्मयूखंवां ततोधारणायनिहन्यात्तादृक्कद्यद्धारयन्धारयन्नितिशंसतिसंतत्यैसं
 ततैस्त्रयैहरव्यवच्छिन्नैर्येतियएवंविद्धांसोयंतियंति ॥ ८ ॥ दक्षिणाअनुसुब्रह्मण्यासंतिष्ठते वाग्वैसुब्रह्मण्यान्नंदक्षिणान्नाद्य
 एवतद्वाचियज्ञमंततःप्रतिष्ठापयंतिप्रतिष्ठापयंति ॥ ९ ॥ हिरण्यकशिपावासीनआचष्टेहिरण्यकशिपावासीनःप्रतिगृणाति
 यशोवैहिरण्यंयशसैवन्तत्समर्धयत्योमित्यृचःप्रतिगरएवंतथेतिगाथायाऽओमितिवैदैवंतथेति मानुषदैवेनचैवैन्तन्मानुषेणच
 पापादेनसःप्रमुंचति तस्माद्योराजाविजितीस्यादप्ययजमान आख्यापयेतैवैतच्छौनःशेषमाख्यानंनहास्मिन्नल्पंचनैनःपरिशि
 ल्यते सहस्रमाख्यान्नेदद्याच्छतंप्रतिगरिन्त्रएतेचैवासनेश्वेतश्चाश्वतरीरथोहोतुः पुत्रकामाहाप्याख्यापयंरहभेतहपुत्रान्लभेतैह
 पुत्रान् ॥ १० ॥ देवसवितर्देवयजनंमेदेहिदेवयज्यायाऽइतिदेवयजनंयाचति सयत्तत्रयाचितउत्तरांसर्पत्योतथाददामीतिह
 वतदाहृतस्यहनकाचनरिष्टिर्भवतिदेवेनसवित्राप्रसूतस्योत्तरोत्तरिणींहश्रियमश्रुतेश्रुतेहप्रजानामैश्वर्यमाधिपत्यं ॥ ११ ॥ ते
 एतेअभ्यनूच्येतेअग्नेर्गायत्र्यभवत्सयुगेतिकल्पतेहवाअस्मैयोगक्षेमउत्तरोत्तरिणींहश्रियमश्रुतेश्रुतेहप्रजानामैश्वर्यमाधिपत्यम्
 ॥ १२ ॥ साम्राज्यंभौज्यंस्वाराज्यंवैराज्यंपारमेष्ठयंराज्यंमाहाराज्यमाधिपत्यमयंसमंतपर्यायीस्यात्सार्वभौमःसार्वायुषआंता

दापराधात्पृथिव्यैसमुद्रपर्यंतायाएकराळिति ॥ १३ ॥ ध्रुवाद्यौर्ध्रुवापृथिवीध्रुवासःपर्वताइमे ॥ ध्रुवंविश्वमिदंजगद्भुवोराजा
विशामयं ॥ ध्रुवंतेराजावरुणो ध्रुवंदेवोबृहस्पतिः ॥ ध्रुवंतुंद्रश्चाग्निश्चराष्ट्रधारयतां ध्रुवं ॥ तदस्तु मित्रावरुणा तदग्नेशं योरस्मभ्य
मिदमस्तुशस्तं ॥ अशीमहिगाधमुतप्रतिष्ठानमोदिवेबृहतेसादनाय ॥ इत्यादिखंडवाक्यानिपठेयुः ॥ इति ब्राह्मणखंडानि ॥

॥ १५१ ॥ अध्वर्यावादिभ्यः ॥

श्रीः ॥ ततः ॐ अनुक्षराऋजर्वःसंतपथायेभिःसखायोयंतिनोवरेचं ॥ समर्थमासंभगोनोनिनीयात्संजास्पत्यंसुयमस्तुदेवाः
॥ इतिवरंप्राज्नुखंवधूचप्रत्यज्नुखीकृत्वातदक्षिणतःसपत्नीकउदज्नुखउपविश्यआचम्यप्राणानायम्य देशकालौसंकीर्त्यअमुक
प्रवरान्वितोमुकगोत्रोमुकशर्माहंमसमस्तपितृणांनिरतिशयसानंदब्रह्मलोकावास्यादि कन्यादानकल्पोत्कफलावासये अनेन
वरेणास्यांकन्यायामुत्पादयिष्यमाणसंतत्याद्वादशावरान् द्वादशपरांश्च पुरुषान्पवित्रीकर्तुमात्मनश्चश्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये
ब्राह्मविवाहविधिनाकन्यादानमहंकरिष्येइतिकुशाक्षतयुतजलेनसंकल्प्य ॥ तत्रजलशुद्ध्यर्थवरुणपूजांउदकाभिमंत्रणंचकरि
ष्ये ॥ प्रागग्रानुदगग्रान्वादभानास्तीर्यतेषुजलपूर्णकलशंनिधायत्रीहियवानोप्यगंधपुष्पादिभिरलंकृत्यदूर्वापल्लवैर्मुखमवस्ती
र्यांलिंगाभिर्ऋग्भिरभिमंत्रयेत् ॥ तत्रवरुणंपूजयेदितिशिष्टाचारः ॥ ततःसपत्नीकउत्थायोदज्नुखएवकन्यांसंप्रगृह्य ॥ कन्यां
कनकसंपन्नांकनकाभरणैर्युतां ॥ दास्यामिविष्णवेतुभ्यंब्रह्मलोकजिगीषया ॥ विश्वंभरःसर्वभूतःसाक्षिण्यःसर्वदेवताः ॥ इमांक
न्यांप्रदास्यामि पितृणांतारणायचइत्युक्त्वास्वदक्षिणस्थभार्यादत्तपूर्वकल्पितजलधारामविच्छिन्नांनवकांस्योपरिधृतकन्यांज

कन्यादा-
॥१५१॥

ल्युपरिस्थवरांजलिदक्षिणहस्तेक्षिपन्वदेत्॥कन्यातारयतु॥पुण्यंवर्धतां॥शिवाआपःसंतु॥सौमनस्यमस्तु॥अक्षतंचारिष्टंचास्तु॥
 दीर्घमायुःश्रेयःशांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु॥यच्छ्रेयस्तदस्तु॥यत्पापंतत्प्रतिहतमस्तु॥पुण्याहंभवंतोब्रुवंतु॥स्वस्तिभवंतोब्रुवंतु॥
 ऋद्धिंभवंतोब्रुवंतु॥श्रीरस्त्वितिभवंतोब्रुवंतु॥अमुकप्रवरान्वितामुकगोत्रोमुकशर्माहंममसमस्तेत्यादिप्रीतयेइत्यंतमुक्त्वा॥
 अमुकप्रवरान्वितामुकगोत्रोत्पन्नायामुकप्रपौत्रायामुकपौत्रायामुकशर्मणेश्रीधररूपिणेकन्यार्थिनेवराय॥अमुकप्र
 वरोपेतामुकगोत्रोत्पन्नाममुकप्रपौत्रीममुकपौत्रीममुकशर्मणोममपुत्रीममुकनान्नीकन्यांश्रीरूपिणींप्रजापतिदैवत्यांप्रजोत्पाद
 नार्थेतुभ्यमहंसंप्रददेनमम॥कन्यांप्रतिगृह्णतुभवान्इतिवरहस्तेसकुशाक्षतजलंक्षिपन्प्रजापतिःप्रीयतामितिमनसास्मरेत्॥
 एवंपुनःकन्यातारयत्वित्यादिद्विः॥ततोवरःॐस्वस्तीत्युक्त्वाकन्यायादक्षिणांसमभिमृश्य॥ॐकहूदंकस्माअद्रा
 त्कामःकामायाद्रात्कामोद्राताकामःप्रतिग्रहीताकामंसमद्रुमाविशुकामेनत्वाप्रतिगृह्णामिकामैतत्तेवृष्टिरसिद्यौस्त्वाददातुष्ट
 थिर्वीप्रतिगृह्णतु॥धर्मप्रजासिद्ध्यर्थंकन्यांप्रतिगृह्णामीतिवदेत्॥ततोदाता॥गौरींकन्यामिमांविप्रयथाशक्तिविभूषितां॥

१ कन्यादानेनममेतिनवाच्यमितिकेचित्इतिदानचद्रिका॥पितामहोदानकर्तृचित्पौत्रीमित्यतःपूर्वममेतिवदेन्नपुत्रीमित्यतःपूर्वंप्रपितामहःप्रपौत्रीमि
 त्यत्रममेतिवदेत्।आत्रादिपुरुषत्रयकीर्तनमेवकुर्यात्क्यापिममेतिनवदेत्।मातुलादिरन्योवादातास्वगोत्रंविशेषणत्वेनोक्त्वामुकशर्मणःसमस्तपितृणा
 मितिकन्यापितृनामपष्ठ्यंतमुक्त्वाकन्याविशेषणत्वेनतद्गोत्रादिवदेत्।ममवंशकुलेजातेत्यत्रममेतिस्थानेकन्यापितृनामवदेत्।दत्तकन्यादानेनममवंशकुले
 दत्तेतीवश्लोकोहः।इतिधर्मसिधुकौस्तुभौ।कन्यादानांगत्वेनगवादिदानमंत्रास्तत्रैवालोचनीयाः।

गोत्रायशर्मणेतुभ्यंदत्तांविप्रसमाश्रय ॥ कन्येममाग्रतोभूयाःकन्येमेदेविपार्श्वयोः॥ कन्येमेपृष्ठतोभूयास्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुया
 म् ॥ ममवंशकुलेजातापालितावत्सराष्टकम् ॥ तुभ्यंविप्रमयादत्तापुत्रपौत्रप्रवर्धिनी ॥ (न्यूनवयस्कायांपालितासप्तवर्षकमि
 त्याद्यनूःकार्यः) धर्मेचार्थेचकामेचनान्तिचरितव्यात्वयेयम् ॥ वरःनातिचरामीतिवदेत् ॥ ततोदाताउपविश्यदेशकालौस्मृत्वा
 कृतस्यकन्यादानस्यप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थमिदंसुवर्णमग्निदैवतंदक्षिणात्वेनतुभ्यमहंसंप्रददे इतिसजलंसुवर्णवरहस्तेदत्वानममेति
 वदेत् ॥ वरः ॐ स्वस्ति ॥ ततोदाताजलभाजनभोजनगोमहिष्यश्वगजदासीदासभूवाहनालंकारादियथाविभवंसंकल्पपूर्व
 कं वरायदद्यात् ॥ अथवरः ॥ यत्कक्षीवांसंवन्नंविश्वेदेवाअनुष्टुप् ॥ वधूकुक्ष्यभिमर्शनेविनियोगः ॥ ॐ यत्कक्षीवांसंवन्नं
 पुत्रोअंगिरसाभवेत् ॥ तेननोद्यविश्वेदेवाःसप्रियांसमजीनन् ॥ इत्यनेनकन्यायादक्षिणकुक्षिमभिमृशेत् ॥ अथपुरोधाःपू
 र्वाभिमंत्रितकलशजलंकांस्यपात्रेआसिच्य ॥ अनाधृष्टमित्यस्यवामदेवआपोबृहती ॥ उदकाभिमंत्रणेविनियोगः ॥ ॐ
 अनाधृष्टमस्यनाधृष्यंदेवानामोजोअभिशस्तिपाः ॥ अनभिशस्त्यंजसासत्यमुपगेषांस्वितेमाधाः ॥ इत्युदकमभिमंत्र्यसहिर
 ण्यपवित्रयासकुशदूर्वापल्लवयौदुंबयार्द्रयाशाखयावधूवरावभिर्षिचेत् ॥ तत्रमंत्राः ॥ आनःप्रजामितिचतसृणांसूर्यासा
 वित्रीसूर्यासावित्रीआद्याजगतीद्वितीयात्रिष्टुप्अंत्येद्रेअनुष्टुभौ ॥ अभिषेकेविनियोगः ॥ ॐ आनःप्रजांजनयतुप्रजापतिरा
 जरसायसर्मनक्त्वयमा ॥ अर्दुर्मगलीःपतिलोकमाविशशन्नोभवद्विपदंशंचतुष्पदे ॥ अर्धोरचक्षुरर्पतिह्येधिशिवापशुभ्यःसम
 नाःसुवर्चाः ॥ वीरुसूर्देवकामास्योनारंशन्नोभवद्विपदंशंचतुष्पदे ॥ इमांत्वमिद्रमीद्वःसुपुत्रांसुभगौकृणु ॥ दशास्यांपुत्रानार्धेहि

कन्यादा-
॥१५१॥

॥२१४॥

पतिमेकादशंकृधि ॥ सम्राज्ञीश्वशुरेभवसम्राज्ञीश्वश्रवांभव ॥ ननादरिसम्राज्ञीभवसम्राज्ञीअधिदेवृषु ॥ समुद्रज्येष्ठा
 इतिचतसृणांवसिष्ठआपस्त्रिष्टुप् ॥ अभिषेकेविनियोगः ॥ ॐ समुद्रज्येष्ठाः० ऋ ४ ॥ आपोहिष्ठेति तिसृणामांरीषःसिंधुद्वी
 पआपोगायत्री ॥ अभिषेकेविनियोगः ॥ ॐ आपोहिष्ठामयो० ऋ० ३ ॥ देवस्यत्वासवितुः० भूर्भुवःस्वःअमृताभिषेकोस्तु ॥
 ततोदुग्धात्केनद्विगुणेशुक्लसूत्रेणदंपतीकंठदेशेकटिदेशेचैशानीमारभ्यपंचवारंचतुर्वारंप्रदक्षिणवेष्टयेत्पुरोधाएतैर्मन्त्रैः ॥ ॐ
 परित्वागिर्वणोगिरिइमाभवंतुविश्वतः ॥ वृद्धायमनुवृद्धयोजुष्टाभवंतुजुष्टयः ॥ तान्वौमहोमरुतएवयान्नोविष्णोरिषस्यप्रभृथे
 हवामहे ॥ हिरण्यवर्णान्ककुहान्यतस्तुचोब्रह्मण्यतःशंस्यरार्धइमहे ॥ दशावनिभ्योदशकक्ष्येभ्योदशयोक्त्रेभ्योदशयोजने
 भ्यः ॥ दशाभीशुभ्योअर्चताजरेभ्योदशधुरोदशयुक्तावहन्त्र्यः ॥ तेअद्रयोदशयंत्रासआशवस्तेषामाधानंपर्येतिहर्यतं ॥ तर्क
 सुतस्यसोम्यस्यांधसोशोःपीयूषप्रथमस्यभेजिरे ॥ तेसोमादोहरीइंद्रस्यनिंसतेशुंदुहंतोअध्यासतेगवि ॥ तेभिर्दुग्धंपिपिवान्तसो
 म्यमाध्विद्रोवर्धतेप्रथतेवृषायतै ॥ वृषावोअंशुर्नकिलोरिषाथेनळावंतुःसदुमित्स्थनाशिताः ॥ रैवत्येवमहसाचारवस्थनयस्य
 ग्रावाणोअजुषध्वमध्वरं ॥ ततःकंठदेशस्थंसूत्रमधोनिष्काश्यकुंकुमाकमूर्णायुकंचकृत्वातेनहरिद्राखंडंबध्वातद्वधूवामहस्तप्र
 कोष्ठेवरोबध्नीयात् ॥ ॐ नीललोहितंभवतिकृत्यासक्तिक्विष्यते ॥ एधंतेअस्याज्ञातयुःपतिर्बोधेषुबध्यते ॥ इतिमंत्रेण ॥ ततः
 कटिदेशस्थंसूत्रमुपरिनिष्काश्यतादृशंकृत्वावरदक्षिणहस्तप्रकोष्ठेवधूर्बध्नीयात्तैनेवमंत्रेण ॥ ततःतैजसपात्रेगव्यक्षीरेघृतमासि
 च्यपात्रांतरेणार्द्रशुक्लतंडुलानादायवरःप्रक्षालितपाणिःप्रक्षालितवध्वंजलौक्षीरघृतंहस्तद्वयांगुलिभिर्द्विरुपस्तीर्थद्विवारंतंडुला



नोप्यतेनतथैवद्विरभिधारयेत् ॥ ततोवरांजलावप्येवमेवदात्रान्येनवापूरितेदातातदंजल्योःसुवर्णनिधायवरांजलिकन्यांज
 ल्युपरिनिधाय ॥ कन्यातारयतु ॥ दक्षिणाःपांतु ॥ बहुदेयंचास्तु ॥ पुण्यंवर्धतां ॥ शांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु ॥ तिथिकरण
 मुहूर्तनक्षत्रसंपदस्त्वित्युच्चार्यकन्यामुद्धृत्यतयांजलिस्थानक्षतान् भगोमेकामःसमृध्यतामितिकन्याशिरसिक्षिपेत् ॥ एवंपुनर्द्विः ॥ तत्रद्वितीयेश्रियोमेकामइतिवधूः ॥ धर्मो
 रभिधारयेत् ॥ तृतीयेप्रजामेकामइतिवधूः ॥ यशोमेकामइतिवरः ॥ ततःकन्यावरांजलिंद्विरुपस्तीर्यद्विस्तंडुलानोप्यद्वि
 तारयत्वित्यादिवाक्यषट्पदेत् ॥ ततोवरःयशोमेकामःसमृध्यतां ॥ कन्यातुभगोमेकामःइति ॥ एवंपुनर्द्विः ॥ तत्रद्वितीये
 धर्मोमेइतिवरः ॥ श्रियोमेइतिवधूः ॥ तृतीयेयशोमेइतिवरः ॥ प्रजामेइतिवधूः ॥ अथवरोवध्वंजलिंपूर्ववदापूर्यस्वांजलिम
 न्येनपूरयित्वोभौवधूपूर्वकंतूष्णीमक्षतानारोपयेतां ॥ अथवरःस्वशिरःस्थपुष्पमेकंक्षीरेणाप्लाव्यतेनकन्याललाटेतिलंकंकुर्या
 त् ॥ सापिस्वशिरःपुष्पेणतथैववरललाटेतिलंकंकृत्वापुष्पमालांवरकंठेनिदध्यात् वरोपिकन्याकंठे ॥ ततोवरपक्षसुवासिनी
 वधूवरौप्राङ्मुखानुपवेश्याचारप्रासंअष्टपुत्रीसंज्ञकंवस्त्रद्वयंसंकंचुकंकृष्णमणिसूत्रयुतंवध्वैसम्यर्प्य तामेकंपरिधाप्यापरमुत्तरी
 चंकुर्यात् ॥ ततोवरस्तत्पूत्रं ॥ मांगल्यंतनुनानेनभर्तृजीवनहेतुना ॥ कंठेबध्नामिसुभगेसाजीवशरदःशंतं ॥ इतिमंत्रेणेष्टदेव
 ? ब्रह्मविष्ण्वीशरूपंतुरंध्रवच्चित्रितुकं ॥ त्रिरत्नंरुक्मजंस्त्रीणांमांगल्याभरणंविदुः ॥ वामहस्तेएकसरंकंठेतुन्निसरंस्तमिति ।

तांस्मरन्वधूंकंठेबध्नीयात् भूषणैश्चायुष्यं चर्चस्यमितिसूक्तं पठन् भूषयेत् ॥ (ततो विवाहव्रतनिर्विघ्नतार्थगणानां त्वा आतून इंद्रे
 तिमंत्राभ्यां हरिद्राखंडपूर्गीफललड्डुकादिनिधाय षोडशोपचारैः संपूज्य पुनः पूर्वोक्तमंत्राभ्यां दंपत्योरुत्तरीयांतयोः पृथग्बध्नीया
 त् ॥ प्र० र०) ततः पुरोधानीललोहितमिति मंत्रेण तयो रुत्तरीयांतौ मिथो बध्नीयात् ॥ ततः सभार्यो दाता वृद्धाः पुरंध्रयो ज्ञातिबां
 धवाश्च क्रमादाशीर्भिरार्द्राक्षतारोपणं कुर्युः ॥ (अत्र कौस्तुभे प्रयोगरत्ने च महालक्ष्म्यादिपूजनपूर्ववायनदानाद्युक्तमस्ति ततो व
 धूवरौ परस्परहस्तधारणेनोक्तलक्षणां वेदिं मंत्रघोषेण गच्छेतां) ॥ इति कन्यादानप्रयोगः ॥ ४३ ॥

॥ १५२ ॥ अधविवाहहोमः ॥

श्रीः ॥ वरोवेद्यां प्राञ्जुखडपविश्य स्वदक्षिणतो नियमितवाचं वधूं चोपवेश्य द्विराचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य प्रतिगृही
 तायामस्यां वध्वां भार्यात्वसिद्धये गृह्याग्निं सिद्धये च विवाहहोमं करिष्ये ॥ तदंगस्थं डिलोहोपनादियोजकनामाग्निं प्रतिष्ठापनांतं कृ
 त्वाग्नेः प्रत्यग्दृषदंसोपलां प्रतिष्ठाप्य प्रागुदीच्यां धान्यराशेरुपर्युदकपूर्णं कुंभं निधाय तं पल्लवैरपि धाय गंधपुष्पैरलंकृत्योदगग्नेः प्रा
 कसंस्थं सप्ततंडुलराशीनुपकल्प्य समिद्धयमादाय देशकालौ संकीर्त्य क्रियमाणे विवाहहोमे देवतापरिग्रहार्थं मित्याद्या धारावाज्ये
 न ॥ अत्र प्रधानं त्रिरग्निं पवमानं सकृदग्निं प्रजापतिं चाज्येन अर्चय माग्निं च रुणाग्निं पूषाग्निं प्रजापतिं च लाजद्रव्येण शेषेण स्विष्टकृतमि
 त्यादिषट्पात्रासादनांतं कृत्वा पात्रपश्चिमतो लाजशूर्पमासाद्य आज्याधि श्रपणांतं कृत्वा ज्यं लज्जैः सह त्रिः पर्यग्निं कृत्वा ज्योत्पवने
 कृते लाजांस्त्रिः प्रोक्ष्य बर्हिं रास्तरणाद्याधारहोमांतं कृत्वा ॥ आज्यभागौ नस्तः ॥ अथ प्रधानहोमः ॥ अग्न आयूंषीति तिसृणां श

तं वै खानसाऋषयः अग्निः पवमानो देवता गायत्री छंदः विवाहप्रधाना ज्यहोमे ॥ ॐ अन्नआर्यं पि ० नां स्वाहा अग्नये पवमानाये
 दं ० ॥ एवं प्रत्येकं त्यागः ॥ ॐ अग्निर्ऋषिः प ० स्वाहा ० ॥ ॐ अग्नये पर्वस्व ० स्वाहा ॥ त्वमयमावसुं श्रुतो मिक्षिष्टुप् ॥ विवाहप्र
 हा ॥ अग्नय इदं ० ॥ प्रजापते हिरण्यगर्भः प्रजापतिस्त्रिष्टुप् ॥ विवाहप्रधा ० ॥ ॐ प्रजापते न ० स्वाहा ० ॥ प्रजापतय इदं ० ॥
 एवं पंचाज्या हुती हुत्वा प्राञ्जुखोपविष्टायाः पुरतः प्रत्यङ्मुखं स्तिष्ठन् ॥ गृभ्णामीति सूर्यासावित्री सूर्यासावित्री त्रिष्टुप् वधूपाणि
 ग्रहणे विनियोगः ॥ ॐ गृभ्णामिते सौ भगत्वाच हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्धार्सः ॥ भगो अर्यमासं चिता पुरंधिर्मह्यं त्वा दुर्गा हपत्या
 यदुवाः ॥ इति मंत्रेण भार्या या उत्तानं सांगुष्ठं दक्षिणपाणिमुत्तानेन दक्षिणहस्तेन गृह्णीयात् ॥ ततो वधूमुत्थाप्य तया करौ क्षालयि
 त्वा तस्या अंजलावाज्यमुपस्तीर्य वधून्नात्रा तत्स्थानीयेन वा तिष्ठता शूपस्थला जान्मुष्ट्या द्विरोप्य स्वयंपंचावती चेत्त्रिवारमोप्यशूर्प
 स्थानभिर्घार्यां जलिस्थानपि सकृदभिघार्य ॥ अर्यमणं नुवाम देवो र्यमाग्निनुष्टुप् विवाहप्रधानलाजहोमे विनियोगः ॥ ॐ अ
 र्यमणं नु देवं कन्या अग्निमयक्षत ॥ स इमां देवो अर्यमा प्रेतो मुंचा तुना मुत स्वाहेति मंत्रं पठित्वा तिष्ठन् तिष्ठं त्याधृतां जलिरंजल्यवि
 च्छेदेनां गुल्यग्रैरंजलिपार्श्वेन हावयेत् ॥ वरः अर्यग्ने अग्नय इदं ० ॥ ततो हृषदुपलवर्जमग्निमुदकुंभं पात्राणि च वधूं प्रदक्षिणं परिण
 यावहंसं प्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ जीवेव शरदः शतं ॥ ततो वधूं प्राञ्जुखीं द्वाभ्यामपि पादाभ्यां हृषदं ॥ इममश्मानं वामदेवो

विवा-हो-
॥२५१॥

॥२१६॥

वधूरनुष्टुप् अश्मारोहणेविनियोगः ॥ ॐ इममश्मानमारोहाश्मेवत्वंस्थिराभव ॥ सहस्वपृतनायतोभितिष्ठपृतन्यतः ॥ इति
 मंत्रेणारोहयेत् ॥ पुनःपूर्ववदंजल्युपस्तरणादिकृत्वा ॥ वरुणंनुवामदेवोवरुणाग्निरनुष्टुप् विवाहप्रधानलाजहो ॥ ॐ वरुणं
 नुदेवंकन्याअग्निमयक्षत ॥ सइमांदेवोवरुणःप्रेतोमुंचातुनामुतस्वाहा ॥ वरुणायाग्नयइदं ॥ पुनरमोहमस्मीतिपूर्ववत्परिणी
 यइममश्मानमित्यश्मानमारोहयेत् ॥ पुनःपूर्ववदंजल्युपस्तरणादि ॥ पूषणंनुवामदेवःपूषाग्निरनुष्टुप् ॥ विवाहप्रधानलाज
 हो ॥ ॐ पूषणंनुदेवंकन्याअग्निमयक्षत ॥ सइमांदेवःपूषाप्रेतोमुंचातुनामुतस्वाहा ॥ पूषेग्नयइदं ॥ पूर्ववदमोहमस्मीत्या
 द्यश्माहारोहणंच ॥ ततोवरोऽवशिष्टांछाजानात्माभिमुखंशूर्पकोणेनजुहुयात्प्रजापतयइतिस्मृत्वास्वाहेत्युच्चार्यप्रजापतयइदं
 नममेत्युक्त्वा ॥ अत्रपरिणयनाश्मारोहणेनस्तः ॥ अथाग्नेरुदीच्यांसप्ततंडुलराशीन्पश्चितोवध्वादक्षिणपादेनवरःक्रमेणाभ्यु
 त्क्रामयेन्मंत्रैः ॥ ॐ इषएकपदीभवसामामनुव्रताभव ॥ पुत्रान्विदावहैबहूस्तेसंतुजरदष्टयः ॥ इतिप्रथमं ॥ ऊर्जद्विपदीभवे
 त्यादिद्वितीयं ॥ रायसोषायत्रिपदीभवेत्यादितृतीयं ॥ मायोभव्यायचतुष्पदीभवेत्यादिचतुर्थं ॥ प्रजाभ्यःपंचपदीभवेत्या
 दिपंचमं ॥ ऋतुभ्यःषट्पदीभवेत्यादिषष्ठं ॥ सखासप्तपदीभवेत्यादिसप्तमंराशिं ॥ ततःपूर्वस्थापितकुंभंकेनचिदानाद्यतत्र
 स्थएववरःस्वशिरसावधूशिरःसंयोज्यकलशस्थमुदक्रमादायात्मशिरः वधूशिरश्चशांतिरस्त्वित्यादिपंचदशमंत्रैरभिषिच्यस्वा
 सनेउपविश्याज्येनस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्यपूर्वबद्धोत्तरीयांतौविस्त्रस्यध्रुवारुंधतीसप्तर्षिप्रभृतीन्वध्वासहदृष्ट्वा जीवपत्नी
 प्रजांविंदेयेतिवध्वावाचयेत् ॥ ततोवधूर्वाङ्घ्रियमंसविसृजेत् ॥ दिनविवाहेसायंसंध्यामुपास्यरात्रिविवाहेसायंसंध्यामनुपास्यै

वधुवादिदर्शनं ॥ एतदादिविवाहाग्निंरक्षेत् । रक्षितोऽग्निश्चतुर्थीकर्मपर्यंतं गृहप्रवेशनीयहोमात्पूर्वमनुगश्चेद्विवाहहोमः पुनः कार्यः । गृहप्रवेशनीयोत्तरंगतौहोमद्वयमपि पुनः कार्यं । केचित्तु द्वादशरात्रपर्यंतं वृत्तुकायाश्चेत्याज्याहुतिमेवाहुः । इति वि०

श्रीः ॥ वरः देशकालौ संकीर्त्य मम विवाहाग्नेर्गृह्यत्वसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं गृहप्रवेशनीयहोमं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ स्वं डिलकरणाद्यग्निप्रतिष्ठां तं कृत्वा प्रत्यग्नेः स्वदक्षिणदेशे प्राग्नीवमुपरिलोमकमानहुं च मार्त्तार्यं तस्मिन्वधुमुपवेशय तयान्वारब्धः क्रियमाणे गृहप्रवेशनीयहोमे देवतापरिग्रहार्थमित्यादि चक्षुषी आज्येनेत्यंतमुक्त्वा ॥ सूर्यासावित्रीचतुर्वारमाज्येन शेषेण

स्विष्टकृतमित्यादि पत्न्यान्वारब्ध आज्यभागां तं कृत्वा ॥ आनः प्रजामिति चतसृणां सूर्यासावित्रीसूर्यासावित्री ॥ आद्याजगती द्वितीया त्रिष्टुप् अंत्ये द्वे अनुष्टुभौ ॥ गृहप्रवेशनीयप्रधानाज्यहोमे विनियोगः ॥ ॐ आनः प्रजां जनयतु ॥ १ ॥ सर्वत्र सूर्यासावित्र्या इदं नमम ॥ ॐ अघोरचक्षुरं ॥ २ ॥ सूर्यासावि० ॥ ३ ॥ सूर्यासावि० ॥ ३ ॥ सूर्यासावि० ॥ ३ ॥ सर्वत्र सूर्यासावित्री ॥ इति च तैत्तिरीयस्य सूर्यासावित्रीसूर्यासावित्र्यनुष्टुप् ॥ दधिप्राशने आज्यशेषेण हृदयां जनेवा विनियोगः ॥ ॐ समं जंतु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ ॥ संमतरिश्वासं धाता समुदेष्टी दधातु नौ ॥ इत्यनेन द

१ अयमर्धरात्रोत्तरविवाहहोमे परेद्युः प्रातः कार्यः । अर्धरात्रात्पूर्वविवाहहोमे तु तदैव विवाहहोमोत्तरं पृथगेव कार्यः । औपासनं त्वे तस्मात्पूर्वमेव ॥
२ अत्र ऋगंते स्वाहाकारं पठन्नाज्याहुतीर्जुह्यादिति प्र० र० तत्र ऋगंताब्दः पूर्वसमावर्तने ममाग्ने इत्यत्र स्फुटीकृतो द्रष्टव्यः ।

धिप्राश्यपत्नीमपिप्राशयेत् हुतशिष्टाज्येनस्वस्यपत्न्याश्चहृदयांजनंवाकार्यम् ॥ ततोहस्तंभक्षाल्यस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्य
पतिपुत्रवतीभिःकृतनीराजनौदंपतीद्विजाशिषोगृहीयातां ॥ इतिगृहप्रवेशनीयहोमः ॥ ६३ ॥

॥ १५४ ॥ अथविवाहचतुर्थदिनकृत्यम् ॥

श्रीः ॥ ततोवरस्त्रिरात्रत्रताचरणांतेविवाहकालेवध्वापरिहितंवस्त्रं परिणीतायाअस्यावध्वाःसोमाद्युपभुक्तदोषनिबर्हणार्थं व
धूवस्त्रदानं करिष्यइतिसंकल्प्यसत्येनोत्तभितेतिसूकेनतदर्थविदेब्राह्मणायदद्यात् ॥ ततोव्रतसंपूर्त्यर्थयथाशक्तिक्रान्नाह्मणभोज
नंसंकल्प्यामान्नादिनावाकुर्यात् ॥ ततोविवाहचतुर्थदिनेभद्रादिरहितेऽभुक्तःकन्यादातासभार्योदेशकालौसंकीर्त्यविवाहस्य
संपूर्णफलावासयेवरस्यतत्प्रितृमात्रादीनांतत्पक्षीयाणांचयथाविभवंवस्त्रादिभिः पूजनमहंकरिष्ये ॥ तथाचउमामहेश्वरप्रीतिद्वारा
राकन्यादानफलसंपूर्णतावासयेवंशाभिवृद्धयेचऐरिणीपूजनंवरमात्रेऐरिणीदानंचकरिष्ये ॥ (वेसंतपूजनंचकरिष्ये ॥ इतिसं
कल्प्यविधिवद्गणपतिपूजनंकृत्वा रंगवह्यादियुतभूमौमध्येपंचरंगनिर्मितंस्वस्तिकंचतुर्विदिक्षुचत्वारिस्वस्तिकानिचविलिख्य
तेषुतंडुलराशीन्कृत्वातदुपरिमध्येईशानादिक्रमेणचतुर्विदिक्षुचाक्षतयुतंपंचकलशान्निधायकौसुंभसूत्रेणकलशान्ग्रथयित्वा मुखे
ष्वाम्नपल्वान्निधाय तदुपरिघृतपाचितपोलिकाःसंस्थाप्यतदुपरिपिष्टदीपपंचकंद्वयंवाप्रतिकलशंनिधायतत्रवसंतंपूजयेत् ॥

१ गृह्याग्निमतःसायप्रातरौपासनहोमोत्रापेक्षितःपरतुसपूर्वनित्यविधौगतएव ॥ नष्टाग्नेःपुन सधानप्रयोगोपिप्रसगमनुसृत्यगर्भाधानप्रयोगारंभेसंगृ

हीतोस्ति । २ अन्नप्रयोगेघनुश्चिन्हातर्गतंवसंतपूजनंचक्वचिद्देशेकुर्वतिपारपर्यागतशिष्टाचारान्नसर्वत्र ॥ आकरेषुनेददृश्यते ॥

तांसुतइतिषळर्चस्यसूक्तस्यवामदेवोबृहदुक्थऋषिः ॥ वसंतरूपीन्द्रोदेवता ॥ त्रिष्टुप्छंदः ॥ वसंतपूजनेविनियोगः ॥ ॐ तांसुते
 कीर्तिमघवन्महिम्नायत्त्वाभीतेरोदसीअह्वयेताम् ॥ प्रावोदेवोआतिरोदासमोजःप्रजायैत्वस्यैयदशिक्षइंद्र ॥ यदचरस्तन्वावावृ
 धानोबलानींद्रप्रब्रुवाणोजनेषु ॥ मायेत्सातेयानियुद्धान्याहुर्नाद्यशत्रुननुपुराविवित्से ॥ कउनुतेमहिमनःसमस्यास्मत्पूर्वऋष
 योर्तमायुः ॥ यन्मातरंचपितरंचसाकर्मजनयथास्तन्व१ःस्वायाः ॥ चत्वारितेअसुर्योणिनामादाभ्यानिमहिषस्यसंति ॥ त्व
 मंगतानिविश्वा निवित्सेयेभिःकर्माणिमघवन्चकर्थ ॥ त्वंविश्वादधिषेकेवलानियान्याविर्याचगुहावसूनि ॥ काममिन्मेमघव
 न्मावितागीस्त्वमाज्ञातात्वमिंद्रासिद्राता ॥ योअर्द्धाज्योतिषिज्योतिरंतर्योअसृजन्मधुनासंमधूनि ॥ अर्धप्रियंशूषमिंद्राय
 मन्मब्रह्मकृतोबृहदुक्थादवाचि ॥ इतिसूक्तेनवसंतसंपूज्य ॥ इन्द्रादिदेवतानांचप्रीतिदोनंदवर्धनः ॥ कालरूपीसविश्वात्मा
 वसंतःकामदोस्तुमे ॥ प्रसूनदेहरूपायअनंगत्रासकारिणे ॥ कालरूपायदेवायवसंतायनमोनमः ॥ इतिमंत्राभ्यांनमस्कृत्यपु
 ष्पांजलिंदद्यात् ॥ ततोवरपिताकन्यांपूजयेत् ॥ अभिवस्त्रेतिपट्टकूलादिदत्त्वाआयुष्यमितिसूक्तेनसुवर्णालंकारादियाःफलि
 नीरितिपुष्पमालादिदत्त्वाधुमंगलीरियंवधूरितिसीमंतेसिंदूरंनिक्षिप्य ॥ मांगल्यतंतुनानेनभर्तृजीवनहेतुना ॥ कंठेबभ्रामिसु
 भगेसार्जीवशरदःशतं ॥ इतिकंठेमंगलसूत्रंबधीयात् ॥) ततःकन्यापिताऐरिणीपूजनंकुर्यात् ॥ सवस्त्रफलतांबूलंदंपत्यो
 वंशवर्धनं ॥ ऐरिण्याख्यंवंशपात्रंपक्वान्नैःपरिपूरितं ॥ करकैरुद्रसंख्याकैःसुवर्णपरिपूरितैः ॥ एतावदैरिणीरूपंकर्तव्यंकिलसूरि
 भिः ॥ एवंसंपाद्य ॥ ऐरिणित्वमुमादेवीमहेशोगिरिजापतिः ॥ अतस्त्वांपूजयिष्यामिऐरिणींसर्वकामदां ॥ सवस्त्रांचसदी

पांचशूरैः षोडशभिर्युतां ॥ वरमात्रेप्रदास्यामि कन्यादानस्य सिद्ध्ये ॥ इतिसंकल्प्य तत्र उमामहेश्वरौ षोडशोपचारैः पूजयित्वा
 इदं ऐरिण्याख्यं वंशपात्रं षोडशशूर्पयुतं वरमात्रे संप्रददेन मे मृत्युक्त्वा वरमात्रे वंशपात्रं दत्वा मंत्रान् पठेत् ॥ वंशो वंशकरः श्रेष्ठो वं
 शो वंशसमुद्भवः ॥ अनेन वंशदानेन तुष्टः क्षिप्रं करोतु मे ॥ वंशपात्रमिदं पुण्यं वंशजातसमुद्भवम् ॥ वंशानामुत्तमं दानमतः शां
 तिं प्रयच्छ मे ॥ वंशपात्राणि सर्वाणि मया संपादितानि वै ॥ उमाकांताय दत्ता निमम गोत्राभिवृद्धये ॥ वंशवृद्धि करं दानं सौभा
 ग्यादिसमन्वितं ॥ वस्त्रेणाच्छादितं पूगफलहेमसमन्वितम् ॥ सर्वपापक्षय करं नानाद्रव्यैस्तु पूरितं ॥ दानानामुत्तमं दानमतः
 शांतिं प्रयच्छ मे ॥ इति ॥ ततः कन्यां वरपितृमात्रुत्संगयोः पृथगुपवेश्य पृथक् तौ प्रार्थयेत् ॥ अष्टवर्षा त्वयं कन्या पुत्रवत्या लिता म
 या ॥ इदानीं तव पुत्राय दत्ता स्नेहेन पाल्यतां ॥ इति ॥ ततः स्वस्तिनो मिमीतामिति सूक्तेन कंचुकी सहितं ऐरिणीपात्रं वरपक्षीयाणां
 शिरसि दिवे दिवे सदृशी रिति सूक्तेन निधाय शिरस उच्चार्य भूमौ निधाय पुनः शिरसि भूमौ चेति पंचवारं त्रिवारं वा प्रत्येकं कार्यं एवं
 वरस्यापि ॥ (ततो दिग्गजौ पूजयेत् ॥ देशकालौ स्मृत्वा वधूवरयोः सौभाग्यादिविवृद्धये गजपूजां करिष्ये ॥ आतून इंद्रेति नवच
 स्य काणवः कुसीदं इंद्रो गायत्री ॥ गजपूजने विनियोगः ॥ ॐ आतून इंद्र क्षुभं तं ० ऋक् ० ९ ॥ गोधूमनिर्मितं प्राक् शिरसमुत्तरा
 भिमुखं मत्तमातंगं संज्ञकं गजं यथा विभवं वस्त्रादिभिः संपूज्य ॥ नागानामिह नागेश मत्तमातंगं संज्ञक ॥ वरवध्वोः सुखप्राप्त्यै प्रस
 न्नो भव सर्वदा ॥ इति मंत्रेण प्रार्थ्य ॥ लवणनिर्मितं प्राक् शिरस उत्तराभिमुखं दक्षिणभागस्थं भद्रमातंगं तथैव संपूज्य ॥ ऐरावतमहा
 भागभद्रमातंगं संज्ञक ॥ वरवध्वोः सुखप्राप्त्यै प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ इति प्रार्थयेत् ॥ ततो वरो मत्तमातंगे प्राङ्मुखं स्थिषेत् ॥ क

न्यापिभद्रमातंगेउत्तराभिमुखीतिष्ठेत् ॥ ततोवधूंवामहस्तेधृत्वापश्चाद्भागेनआनीयमत्तमातंगेअवस्थाप्यस्वयंचप्राग्भागेनग
त्वाभद्रमातंगेस्थित्वा) सौभाग्यादिवृद्धयेब्राह्मणसुवासिनीभ्योवायनानिदत्वाब्राह्मणेभ्योयथाशक्तिभूयसींदक्षिणांचदत्वा
कर्मउमामहेश्वरार्पणंकुर्यात् ॥ इतिविवाहचतुर्थदिनकृत्यं ॥

श्रीः ॥ ज्योतिःशास्त्रोक्तेप्रतिशुक्रादिवर्जितेशुभकालेनवोढयावध्वामंगलतूर्यैःसह ॥ १५५ ॥ अथवधूगृहप्रवेशः ॥

हेगार्हपत्यायजागृहि ॥ एनापत्यातन्वं१संसृजस्वाधाजित्रीविदथमावदाथः ॥ इति सूक्तेन कनिक्कदित्यादिमांगलिकमंत्र
घोषकैर्द्विजैःसहवधूंपाणौगृहीत्वागृहंप्रविश्य सवधूकोवरःआचम्यप्राणानायम्यदेशकालौनिर्दिश्यअनयानवोढयावध्वासह
कृतगृहप्रवेशांगभूतंगणपतिपूजनपूर्वकंस्वस्तिपुण्याहवाचनंश्रीमहालक्ष्मीपूजनंचकरिष्ये इतिसंकल्प्य गणपतिपूजनंपुण्याह
वाचनंचकृत्वाकांस्यपात्रेसिततंदुलान्प्रसार्यतत्रस्वर्णशलाक्याकुलदेवतानामस्वेष्टंपत्न्याःस्थापनीयंनामचविलिख्यतदस्तु०गृ
हार्चै०इत्यादिभिःप्रतिष्ठाप्य ॐनामानितेशतक्रतोविश्वाभिर्गीर्भोरीमहे ॥ इंद्राभिमातिषाह्ये ॥ भूर्भुवःस्वःनामाधिष्ठात्र्यैमहा
लक्ष्म्यैनमइतिमहालक्ष्मींपोडशोपचारैर्यथाचारंसंपूज्यलिखितक्रमेणनामवाचयित्वाविप्राशिषोगृहीत्वातेभ्योदक्षिणांदद्यात्
॥ वधूगृहप्रवेशनांगलक्ष्मीपूजनं ॥

॥ ६९ ॥

॥ ६९ ॥

॥ ६९ ॥

वधूगृ-प्र-
॥१५५॥

॥२१९॥

॥१५६॥ अथेदेवकोत्थापनमंडपोद्धारने ॥

श्रीः ॥ उक्तकालेमंडपांतःसपत्नीकउपविश्याचभ्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्य ॥ विवाहांगत्वेनस्थापितदेवतानामुत्थापनमंडपोद्धारसनंतदंगणपतिपूजनंपुण्याहवाचनंचकरिष्येइतिसंकल्प्यसर्वादिवताःप्रत्येकंप्रत्यहवत्पूजयित्वा॥ॐ उततिष्ठब्रह्मणस्पतेदेवयंतस्त्वेमहे ॥ उपप्रयंतुमरुतःसुदानंवृद्धद्राशूभवासचा ॥ ॐअभ्यारमिदद्रयोनिपिक्तंपुष्करेमधु ॥ अवतस्यविसर्जने ॥ इतिविसृज्यभगवत्यादीनामंडपांतस्तैलाभ्यंगोद्धर्तनोष्णोदकस्नानपूर्वकंपूजनंविधाय॥वेष्टनसूत्रमुन्मुच्यस्वस्तिवाचनंकुर्यात् ॥ तत्राभिषेकांतेपुरोधास्तच्छाखादिवंशपात्रेनिधायतदुपरिप्रक्षिप्ताभिषेकजलंसकुटुंबयजमानशिरसिकिंचित्स्त्रावयन् ॥ ॐप्रेतित्चेत्येतद्वैसर्वस्वस्त्ययनंयत्नेतित्चेतितद्योस्यप्रियस्यात्तमेतेनानुमंत्रयेतप्रेतित्चेतित्चेतिस्वस्त्येवगच्छतिस्वस्ति पुनरागच्छतीतिब्राह्मणंपठेत् ॥ एवंविःकुर्यात् ॥ ततःकर्तास्वशिरसिबद्धांजलिरस्मत्गोत्रेषद्रुषद्रुषुमासेषुशोभनमस्त्वितिभवंतोब्रुवंतुइतिद्विजान्प्रार्थयेत् ॥ तेचतथास्त्वितिब्रूयुः ॥ ततोद्विजान्संपूज्यतदाशिषोगृहीत्वासकुटुंबोभुंजीत ॥ इति ॥

॥ १५७ ॥ अथानिद्रयसंसर्गप्रयोगः ॥

श्रीः ॥ द्वितीयादिविवाहव्रतांतेशुभदिनेप्राणायामदेशकालस्मरणदिक्कृत्याममविवाहद्वयेनजातयोर्द्वयोर्गृह्याग्नयोःसंसर्गमहं करिष्ये ॥ इतिसंकल्प्योदकसंस्थयोर्द्वयोःस्थंडिलयोरुपलेपादिपूर्वकंक्रमेणगृह्याग्नीप्रतिष्ठाप्यप्रथमाग्नावन्वादध्यात् ॥ तत्रक्र

१ समेचदिवसेकुर्याद्विवकोत्थापनंबुध. ॥ पष्ठंचविषमनेष्टमुक्त्वापचमसप्तमौ ॥ समेपुपष्ठविषमेपुपचमसप्तमातिरिक्तदिनंनत्रेष्टमित्यर्थः ॥

112011

अग्नि-प्र-
॥१५७॥

1122011

तितिसृणां विश्वामित्रोन्निरनुष्टुप् ॥ अत्येद्वेत्रिष्टुभौ ॥ वि० प्राग्वत् ॥ ॐ अस्तीदमधिमन्थनमास्तिप्रजननं कृतं ॥ एतां विश्वपत्नी
माभराग्निमंथामपर्वथा स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ अरण्योर्निहितोजातवेदागर्भे इव सुधितो गभिर्गोषु ॥ दिवो दिव इच्छ्यो जागवन्निर्भृवि
ष्मद्भिर्मनुष्यैर्भिरग्निः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ उत्तानायामवभराचिकित्वान्तसद्यः प्रवीता वृषणं जजान ॥ अरुषस्तूपोरुशदस्य पा
जइळायास्पुत्रो वयुने जनिष्ट स्वाहा ॥ ५ ॥ पाहिनो अग्न एकयेति प्रगाथो भर्गोन्निर्बृहती ॥ विनियोगः प्राग्वत् ॥ ॐ पाहिनो
अग्न एकं यापाह्युतद्वितीयया ॥ पाहिगीभिस्ति सृभिरुजोपते पाहि च तसृभिर्वसो स्वाहा ॥ ६ ॥ गृह्यपरिशिष्टमते सुवेणैव अ
ष्टाहुतयः ॥ ताश्च ॥ अग्निनाग्निः समिध्यत इत्युक्तयैका ॥ १ ॥ त्वंह्यग्ने अग्निनेत्यस्य विरूपोन्निर्गोयत्री ॥ विनियोगः प्राग्वत् ॥
ॐ त्वंह्यग्ने अग्निना विप्रो विप्रेण सन्तसता ॥ सखा सख्या समिध्यसे स्वाहा ॥ २ ॥ पाहिनो अग्न इति तृचस्य प्रगाथो भर्गोन्निर्बृहती ॥
विनियोगः प्राग्वत् ॥ ॐ पाहिनो अग्न इत्युक्ता ॥ ॐ पाहिविश्वस्माद्रक्षसो अरावणः प्रस्मवाजैषु नोव ॥ त्वामिद्धिनेदिष्ठं देवता
तय आपिनक्षामहेवुधे स्वाहा ॥ ॐ आनो अग्ने वयो वृधरयि पावकं शंस्यं ॥ रास्वाचन उपमाते पुरुस्पृहं सुनीती स्वयं शस्तरं स्वाहा ॥
अस्तीदमितितृच उक्तः ॥ सर्वत्राग्नय इदं नममेतित्यागः ॥ एवं हुत्वा स्विष्टकृदादि होमशेषं समाप्य आयतनेग्निं निधाय यथा पूर्वं
परिचरेत् ॥ इति अग्निद्वयसंसर्गप्रयोगः ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥

॥ १५८ ॥ अथाशौचहोमविधिः ॥

श्रीः ॥ जननशावाशौचयोऽऽत्विगादिनासायंप्रातर्हौमौकारयेत् ॥ स्वयंचद्रव्यत्यागंकुर्यात् ॥ ऋत्विगाद्यन्याभावेतुआशौ

चपातात्पूर्वहोमांतेवक्ष्यमाणप्रकारेणामिसमारोपणंकृत्वासूतकनिवृत्तौ स्नात्वाकृतनित्यक्रियोऽग्निप्रतिष्ठाप्यप्राणानायम्यदेश
कालौसंकीर्त्यममनित्यहोमातिक्रमजन्यदोषपरिहारार्थं प्रायश्चित्तपूर्वकंअतिक्रान्तहोमान्करिष्यइतिसंकल्प्यपरिसमूहनादि
कृत्वाअग्नेःपश्चिमतःसपवित्रेपात्रेआज्यमासिच्यअंगारानायतनादुत्तरतोबहिःकृत्यतेष्वाज्यपात्रंनिधायतृणेनावज्वल्यदर्भाग्र
इयंक्षिप्वातेनैवाज्यंत्रिःपर्यग्निकृत्वोल्मुकंनिरस्यकर्षन्निवोदगुद्वास्य अंगारानग्नावतिसृज्यसवितुष्टेतिमंत्रेणसकृद्विस्तूणीमेवं
त्रिरूपयपवित्रेप्रोक्ष्यामौग्रहत्याज्यंपश्चिमतोदर्भेष्वासाद्यसुकुसुवयोःसंमार्जनंकृत्वाज्यंस्त्रुवेणस्त्रुचिचतुर्गृहीत्वा ॥ ॐ मनो
ज्योतिर्जुपतामाज्यंविच्छिन्नंयज्ञं२समिमंदधातु ॥ याइष्टाउषसोयाअनिष्टास्ताःसंतनोमिहविषाद्यतेनस्वाहा ॥ मनसेज्योति
षइदंनममेतिहुत्वानित्यहोमार्थपूर्ववत्तंडुलान्संस्कृत्यहोमवत्परिसमूहनादिसमित्यक्षेपणांततत्रपूर्वकं अतीतकालादारभ्यक्रमे
णद्वेदेआहुतीहुत्वातत्कालहोमंचकृत्वा अग्निसूर्यप्रजापतिचोपस्थायपरिसमूहनादिसमित्यक्षेपणांततत्रपूर्वकं ॥ मनसेज्योति
॥ १५९ ॥ अथापत्कालेकर्तव्योहोमद्वयसमासप्रयोगः ॥

श्रीः ॥ पूर्ववत्सायंकालीनमाहुतिद्वयंहुत्वापरिसमूहनादिसमित्यक्षेपणांततत्रपूर्वकं अतीतकालादारभ्यक्रमे
पणांतकृत्वाश्वःकर्तव्यमातराहुतिद्वयमपकृष्यहुत्वोपस्थानंकुर्यात् ॥ एकैवचेत्समित्सायंहोमादावेव ॥ उपस्थानेमंत्राः ॥ ह
विष्पांतमितिपंचर्वस्यवामदेव्यःसूर्यवैश्वानरौत्रिष्टुप् ॥ उपस्थानेविनियोगः ॥ ॐ इविष्पांतंमजरस्वविदिदिविस्पृश्याहुतंजु
ष्टमग्नौ ॥ तस्यभर्मणेभुर्वनायेदेवाधर्मणेकस्वधर्मापप्रथंत ॥ गीर्णंभुर्वनंतमसापगूळहमाविःस्वरभवज्जातेअग्नौ ॥ तस्यदेवाःपृ

थिवीद्यौरुतापोरणयन्नोषधीःसख्येअस्य ॥ देवेभिन्विपितोयज्ञियेभिरग्निस्तोपाण्यजरंबृहत् ॥ योभानुनापृथिवीद्यामतेमा
मातृतानुरोदसीअंतरिक्षं ॥ योहोतासीत्यथमोदेवजुष्टोयंसमांजनज्येनावृणानाः ॥ सर्पतृतीत्वरंस्थाजगद्यच्छात्रमग्निरकृणो
जातवैदाः ॥ यज्जातवेदोभुर्वनस्यमूर्धन्नतिष्ठोअग्नेसहरोचनेन ॥ तंत्वाहेममतिभिर्गीभिर्बुधैःसयज्ञियोअभवोरोदसिप्राः ॥ ए
तैर्मत्रैःप्राजापत्यैश्चोपस्थायपरिसमूहनाद्यंगजातंसकृत्कुर्यात् ॥ इत्यापत्कालेकर्तव्यहोमद्वयसमासप्रयोगः ॥ ४१ ॥

॥ १६० ॥ अथगुर्वादिपक्षहोमः-॥

श्रीः ॥ तत्रप्रतिपदिसायंकालेसमित्सक्षेपणांतंकृत्वाहुतिप्रमाणेनतंडुलान्पातद्वयेप्रतिपानंचतुर्दशवारंगृहीत्वाप्रथमपात्रस्था
नग्नयेस्वाहेतिसर्वान्जुहुयात् ॥ ततःप्रजापत्यर्थंगृहीतान्प्रजापतिपदंचतुर्थंतमनसाध्यायन्स्वाहेतिहुत्वोपस्थानादिसकृत्कु
र्यात् ॥ एवंद्वितीयायांप्रातःसमित्सक्षेपणादिपूर्ववत्कृत्वा सूर्यायस्वाहेतिपूर्ववद्धृत्वासायंकालीनोत्तराहुतिवद्वितीयाहुतिं
चहुत्वोपस्थानाद्यंगजातंसकृत्कुर्यात् ॥ पक्षमध्येवापत्तावागामिचतुर्दशीसायंकालीनहोमांतान्शेषहोमान्सायंसमस्येत् ॥ प
र्वप्रातर्होमांतांश्चप्रातःशेषहोमान्समस्येत् ॥ सर्वथापर्वसायंहोमःप्रतिपत्प्रातर्होमश्चपृथगेवहोतव्यौ ॥ अत्रपूर्ववदग्निरक्षेत्र ॥
आपन्निवृत्तौतुतदारभ्यसायंप्रातर्होमान्यथाकालंकुर्यात् ॥ इतिगुर्वादिपक्षहोमविचारः ॥ ४२ ॥

॥ १६१ ॥ अथानिसमारोपविधिः ॥

श्रीः ॥ कालहोमानंतरं ॥ अयंतेगाथिनोविश्वामित्रोन्निरनुष्टुप् ॥ अग्निसमारोपणेविनियोगः ॥ ॐ अयंतेयोनिर्ऋत्वियोय

तौ जातो अरोचथाः ॥ तं जानन्नग्र आसीदार्थानो वर्धया गिरः ॥ इति मंत्रेणाश्वत्थसमिधं प्रताप्य तत्राग्निं समारोपयेत् ॥ यद्वा ॥
 यातै अग्नेयुश्चियात् नूस्तये ह्यारोह्यात्मात्मानं ॥ अच्छावसूँ निकृष्वन्नस्मेन र्याँ पुरुणि ॥ यज्ञो भूत्वा युज्ञमासीदुस्वाँ योनिं ॥ जा
 तवेदो भुव आजार्यमानः सक्षय एहि ॥ इति मंत्रेण पाणी प्रताप्य आत्मनि समारोपयेत् ॥ तत्र प्रादुष्करणकाले अरणि समारोपे अ
 रणी निर्मथ्य ॥ ॐ प्रत्यवरोह जातवेदः पुनस्त्वं देवेभ्यो हुव्यं वहनः प्रजानन् ॥ प्रजां पृष्टि रयिमस्मासु धेह्यथा भवयजमाना युशं
 योः ॥ इत्यनेन स्थंडिले नि प्रतिष्ठापयेत् ॥ अश्वत्थसमित्समारोपणपक्षे पुनर्होमकाले विधिवदग्निं प्रतिष्ठाप्य प्रत्यवरोहेति मंत्रेण
 तां समिधमग्नौ जुहुयात् ॥ एवमग्निः सिद्धो भवति ॥ ततो होमः कार्यः ॥ आत्मसमारोपपक्षे सर्वदाऽस्पृश्यस्पर्शनं जले निमज्ज्य
 स्नानं स्त्रीगमनं चाकुर्वन्मूत्रपुरीषोत्सर्गेशौचमकृत्वा चिरकालमतिष्ठेत्तत्र होमकाले आत्मसमारूढमग्निमुच्छ्वास रूपेण प्रत्यवरोहेति
 मंत्रेण लौकिकाग्नौ निदध्यात् ॥ एवं यथाधिकारमग्निं प्रतिष्ठाप्य कालद्वये एककाले त्रापूर्ववज्जुहुयात् ॥ इदं समारोपणं द्वादश
 रात्रपर्यंतमेव कुर्यात् ॥ पुरुषस्यैव प्रवासकाले कर्तव्यम् ॥ प्रवासश्च सान्निकेन द्रव्यार्जनादि दृष्टकार्यार्थमेव केवलेन पुरुषेण कार्यः
 न तु तीर्थयात्राद्यदृष्टार्थकार्यार्थं ॥ तत्र होमांते पूर्वोक्तमंत्रैरुपस्थाप्य पुनः प्रवासासार्थं अभयं वोभयं मेस्त्विति मंत्रेणाग्निमुपस्थाप्य द्विमा
 समध्यवर्तिकाले ष्वन्यतमकालपर्यंतं प्रोष्य पुनः स्वगृहसमीपमेत्य ॐ गृहामाबिभीतो पवः स्वस्त्ये वोस्मासु च प्रजायध्वं माचवो गोप
 तीरिषदिति मंत्रेण गृहं निरीक्ष्य ॐ गृहानहं सुमनसः प्रपद्ये वीरमो वीरवतः सुवीरान् ॥ इरावहंतो घृतमुक्षमाणास्ते ष्वहं सुमनाः संवि
 शानि ॥ इति मंत्रेण गृहं प्रविश्य ॐ शिवं शर्मशं योः शं योरिति पुनस्त्रिरनुवीक्ष्य होमकाले उपस्थानां तं कृत्वा ॐ अभयं वोभयं मेस्त्विति

तिपुनरग्निमुपतिष्ठेत् ॥ ततोऽज्येष्ठपुत्रशिरःषड्भाभ्यां पाणिभ्यां परिगृह्य ॥ ॐ अंगादंगात्संभवसिहृदयादधिजायसे ॥ आत्मावै पुत्रनामासिसजीवशरदःशतमितिमंत्रं जपित्वामूर्धनि त्रिराजिघ्रेत् ॥ प्रत्याघ्राणं मंत्रावृत्तिः ॥ एवमितरेषां च पुत्राणां क्रमेण कृत्वा प्रत्तदुहितृणां तूष्णीमेव शिरोजिघ्रेत् ॥ एतत्पुत्रेऽपि प्रोभ्यागते भवति ॥ अवगतमप्यग्रिं प्रवासादागतं प्रतितदहर्न निवेदयेद्युः ॥

॥ १६२ ॥ अथान्निसंसर्गदोषे प्रागृथितम् ॥

श्रीः ॥ स्वगृह्याग्निरन्यगृह्याग्निना संसृष्टश्चेदग्नीविभज्योभौ स मित्समारोपणं कुर्यात् ॥ ततः पूर्वहोता समिधोऽग्निमवरोप्य देशकालौ संकीर्त्य समिद्वयमादायास्मिन्नन्वाहिते ग्रावित्यादि चक्षुषी आज्येनेत्यंतमुक्त्वा अग्निं विचिं प्रधानदेवतां च रुद्रव्येण शेषेण स्विष्टकृतमिति सद्यो यक्ष्ये इत्यंतमुक्त्वा समिद्वयमग्नावाधाय परिसमूहनादि पूर्णपान्त्रनिधानांतं कृत्वा अग्नये विविचये त्वाजुष्टं निर्वपामीति चतुरोमुष्टीं निरुप्य प्रोक्षणाद्याज्यभागांतं कृत्वा अग्नये विविचये स्वाहेति हुत्वा स्विष्टकृदादि होमशेषं समापयेत् ॥ अनुपक्रांतदर्शपूर्णमासश्चेत्पूर्ववदाज्यं संस्कृत्य सुवेणद्वादशवारं स्तुचि गृहीत्वा अग्नये विविचये स्वाहेति स्तुचा पूर्णाहुतिं हुत्वा कालहोमं चरेत् ॥ पश्चाद्धोता तु अग्नये पथिकृते जुहुयात् ॥ शवाग्निना संसृष्टश्चेदग्नये शुचये स्वाहेति जुहुयात् ॥ पचनाग्निना संसृष्टश्चेदग्नये संवर्गाय स्वाहेति जुहुयात् ॥ वैद्युतेन संसृष्टश्चेदग्नये प्सुमते जुहुयात् ॥ इति अग्नेः संसर्गदोषप्रागृथितम् ॥ ॥ ४३ ॥

ये संवर्गाय स्वाहेति जुहुयात् ॥ अथार्कविवाहः ॥

॥ १६३ ॥ अथान्नानंतमदृकृतः प्रयोगः ॥ वरः कृतनित्यक्रियोरविशनिवारयोर्हस्तनक्षत्रेऽन्यस्मिन्वाशुभेऽहिग्रामात्प्राच्यामुदी

च्यांवाअर्कगत्वादेशकालौसंकीर्त्य ॥ ममतृतीयमानुषीविवाहस्यशुभतासिद्ध्यर्थअर्कविवाहंकरिष्ये ॥ तदंगतयागणेशपूजनंस्व
 स्तिवाचनंमातृकापूजनंनांदीश्राद्धंचकरिष्ये ॥ इतिसंकल्प्यनांदीश्राद्धांतंसमाप्य आचार्यवृणुयात् ॥ अमुकगोत्रोमुकशर्मा
 हंअमुकगोत्रममुकशर्माणंअस्मिन्नर्कविवाहकर्मणिआचार्यत्वेनत्वांवृणेइतिवृत्वाततआचार्योवरोवा आकृष्णेनेतिमंत्रेणाकैछा
 यासहितसूर्यमावाह्यषोडशोपचारैःसंपूज्यगुडौदनंनैवेद्यंसमर्प्यवस्त्रेणतंतुभिश्चावेष्ट्यपूजोत्तरंप्रार्थयेत् ॥ त्रिलोकवासिन्ससाश्व
 छाचयासहितोरवे ॥ तृतीयोद्वाहजंदोषंनिवारयसुखंकुरु ॥ अर्कजात्रह्यणासृष्टाअस्माकंप्रतिरक्षतु ॥ नमस्तेमंगलेदेविनमःसवितुरात्मजे ॥ ममप्रीति
 करायेयंममस्पृष्टापुरातनी ॥ अर्कत्वंब्रह्मणासृष्टःसर्वप्राणिहितायच ॥ वृक्षाणामादिभूतस्त्वदेवानांप्रीतिवर्धनः ॥ त्राहिमांकृपया
 देविपत्नीत्वंमइहागता ॥ अर्कत्वंब्रह्मणासृष्टःसर्वप्राणिहितायच ॥ ततःकन्यांप्रयच्छेत्याचार्यंप्रार्थयेत् ॥ ततआचार्योवाग्दानंकुर्यात् ॥ तृतीयोद्वाह
 जंपापंसृत्तुंचाशुविनाशय ॥ ततःकन्यांप्रयच्छेत्याचार्यंप्रार्थयेत् ॥ ततआचार्योवाग्दानंकुर्यात् ॥ तच्चेत्थं ॥ काश्यपावत्सा
 रनैध्रुवेतित्रिप्रवरान्वितकाश्यपगोत्रोत्पन्नाआदित्यस्यप्रपौत्रीसवितुःपौत्रीममामुकशर्मणःपुत्रीमर्कनाम्नीकन्यां अमुकप्रवरा
 न्वितायामुकगोत्रायअमुकप्रपौत्रायामुकपौत्रायामुकनाम्नेवरायदास्ये इतित्रिर्वाग्दानंकृत्वावरस्यमधुपर्कपूजांकुर्यात् ॥ ततो
 वरःसुमुहूर्तंसंगलपाठपूर्वकमर्कंनिरीक्ष्यस्तिनोमिमीतामितिसूक्तंपठेत् ॥ ततआचार्येणार्ककन्यादानंकारयेत् ॥ ततो
 मः ॥ वाग्दानवद्गोत्राद्युच्चार्य आत्मनश्छायासहितसवितृप्रीतयेइमामर्ककन्यांतुभ्यमहंसंप्रदेनममेत्युक्त्वावरहस्तेसाक्षतंज
 लंक्षिह्वामंत्रंपठेत् ॥ अर्ककन्यामिमांविप्रयथाशक्तिविभूषितां ॥ गोत्रायशर्मणेतुभ्यंदत्तंविप्रसमाश्रयइति ॥ वरःस्वस्तीत्यु

अथा.वि
 ॥१६३॥

क्त्वा स्वशाखोक्तां कामस्तुतिं पठेत् ॥ आचार्यः कृतस्यैतदकन्यादानकर्मणः संपूर्णता सिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां तुभ्यमहंसंप्रददेइति
 हिरण्यं दद्यात् ॥ ततः तत्र कन्याप्रतिनिधिराचार्यः कर्मणि ॥ वरः कंकणबंधनमक्षतारोपणं चार्कैरेव कुर्यात् ॥ ततो वरः परित्वे
 त्यादिभिर्गायत्र्यान्निरावृत्यापंचकृत्वोर्कवरंचसूत्रेणावेष्ट्य तत्सूत्रे द्वेधा कृत्वा एकं गायत्र्या कंस्यस्कंधे वरो बध्वा अपरं वरहस्ते आचा-
 र्यो बध्नीयाद्बृहत्सामेति मंत्रेण ॥ बृहत्सामक्षत्रभृदृष्ट्यं त्रिष्टुभौजः शुभितमुग्रवीरं ॥ इन्द्रस्तोमेन पंचदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण
 रक्ष ॥ ततो वर आचार्यो वार्कस्याष्टदिक्षु महीद्यौरित्यादि मंत्रावृत्या कलशान्संस्थाप्य कलशकंठान्सूत्रेणावेष्ट्य हरिद्रागंधयुक्तज-
 लेनापूर्य्य प्रतिकुम्भं इदं विष्णुरिति मंत्रेण विष्णुप्रतिमाः संस्थाप्य षोडशोपचारैः संपूज्याऽर्कोत्तरतः स्थंडिले योजकसंज्ञमग्निं प्रतिष्ठा-
 प्यान्वाधानं कुर्यात् ॥ अस्मिन्नन्वाहिते ग्रावित्याद्याधारदेवते आज्येनेत्यंतमुक्त्वा अत्र प्रधानं बृहस्पतिमग्निं वायुं सूयं प्रजापतिं
 चाज्येन शेषेण स्विष्टकृतमित्याद्याधारं ते संगोभिरित्यस्यांगिरा बृहस्पतिं स्त्रिष्टुप् ॥ अर्कविवाहप्रधानाज्यहोमे विनियोगः ॥ ॐ
 संगोभिरांगिरसो नक्षसाणो भर्ग इवेदं र्यमणं निनाय ॥ जने मित्रो न दंपती अनक्ति बृहस्पते वाजयाशूरे वाजौ स्वाहा बृहस्पतय इदं ॥
 यस्मै त्वावामे देवः कामः संन्नाडनुष्टुप् ॥ यस्मै त्वाकामकामाय वयं संन्नाड्यजामहे ॥ तमस्मभ्यं कामं दत्वा थेदं त्वं धृतं पिब स्वाहा ॥
 अग्नय इदं ० ॥ ततो व्यस्तसमस्तव्याहृतिभिराज्यं हुत्वा कर्मशेषं समापयेत् ॥ ततः आचार्यः संपूज्य तस्मै गोगंगयथाशक्तिभूयसीद
 क्षिणां च दत्वा ॥ मम प्रीतिकरायेयमिति मंत्रेणार्कं पुनस्त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य प्रार्थयेत् ॥ मया कृतमिदं कर्म स्याद्वरेषु जरायुणा ॥ अ-
 र्कापत्यानि नो देहित तत्सर्वं क्षंतुमर्हसि ॥ ततो महाशांतिं पठित्वा कलशप्रतिमाद्याचार्या यदत्वा पुण्याहवाचनं कुर्यात् ॥ अस्मिन्क

चार्थः पितृहस्तेन मात्रेदापयेत् ॥ नवेवस्त्रेशिशुं स्थाप्याच्छादनमपसार्य पुत्रमुखेक्षणं कुर्यात् ॥ ततः पंचगव्येनाचार्यः शिशुं प्रोक्षेत् ॥
 आपोहिष्ठेति तृचस्य सिंधुद्वीप आंबरीष आपो गायत्री अभिषेके वि० ३ ॥ ततः पिता हस्तद्वयेन परिग्रहणपूर्वकं अंगादंगात्संभवसिंहद
 यादधिजायसे ॥ आत्मवैपुत्रनामा सिसजीवशरदः शतं इति मंत्रेण शिशोर्मूर्धनि त्रिरवघ्राय (मंत्रे स इति पुनिर्देशात् कन्यायास्तूष्णी
 घ्राणं) यथास्थाने शिशुस्थापनं कृत्वा शाखाध्यायिभिः स्वशाखोक्तविधिना पुण्याहं वाचयेत् (कमलाकरमतेऽस्य कर्मणः पुण्याहं भव
 तो ब्रुवंत्वित्येव त्रिः) तांगां दरिद्रब्राह्मणाय विधिना दद्यात् ॥ ततो यजमानो वस्त्रस्वर्णधान्या नियथाशक्त्या कार्कादिप्रीत्यर्थं आचार्या
 यदत्वान्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां दद्यात् ॥ तत आचार्यः गोमुखप्रसवशांतिहोमं करिष्ये इति संकल्प्य स्थंडिले वरदनामा
 ग्निप्रतिष्ठापनांतेऽधिप्रत्यधिदेवतारहितान्ग्रहानावाह्यान्वादध्यात् ॥ चक्षुषी आज्येनेत्यंतेऽन्नप्रधानं अपः द्वादशोत्तरशतसंख्या
 भिः संयुक्तदधिमध्वाज्याहुतिभिर्द्वात्रिंशत्संख्याभिर्वा विष्णुं अष्टाविंशतिसंख्याभिर्दधिमध्वाज्याहुतिभिः प्रत्येकमष्टाभिर्वा
 यक्ष्महणं अष्टचत्वारिंशत्संख्याभिः दधिम० ॥ आदित्यादिनवग्रहान्प्रत्येकमष्टसंख्याभिः दधि० ॥ शेषेणेत्याद्याज्यभागो
 ते स्थंडिलस्यैशानदिशि ग्रहपीठोत्तरतो महीद्यौरित्यादिविधिना धान्योपरि घटस्थापनं कृत्वा तस्मिन् पंचगव्यं तिलान्क्षीरद्रुमक
 षायान्पंचरत्नानि क्रमेण निक्षिप्य वस्त्रयुग्मं न संछाद्य गंधपुष्पादिभिः कलशमभ्यर्च्य कृताग्र्युत्तारणप्रतिमयोर्विष्णुवरुणौ पूजये
 त् ॥ तद्विष्णोरित्यस्य मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री ॥ तत्त्वायामिशुनः शेषो वरुणस्त्रिष्टुप् गोप्रसवप्रधानपूजने वि० ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचं०
 ऋक् ॥ ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणा० ॥ ऋक् ॥ पूजांते कुंभं स्पृष्ट्वा भिमंत्रयेत् ॥ यत इदं त्रैतिषणं भर्ग इंद्रो बृहती ॥ कुंभाभिमंत्रणे वि० ॥

ॐ यत्तद्वद्रभ्यामहेततो नो अभयंकुधि ॥ मघवन्छुग्धितवतन्नकुतिभिर्विद्विपोविमृधोजहि ॥ त्वंहिराधस्यतेराधसोमहःक्षय
 स्यासि विधृतः ॥ तंत्वावयंमघवन्निद्रगिर्वणःसुतावतोहवामहे ॥ इन्द्रस्यलुतवृत्रहाप रस्यानोवरेण्यः ॥ सनोरक्षिषच्चरमं
 समध्यमंसपश्चात्सुतुनःपुरः ॥ त्वंनःपश्चादधरादुत्तरात्पुरइन्द्रनिपाहि विविवृतः ॥ आरेअस्मत्कृणुहि देव्यैभयमारेहेती
 रदेवीः ॥ अद्याद्याःश्वश्वइन्द्रत्रास्वपरेचनः ॥ विश्वाचनोजरितृन्सत्यतेअह्नादिवानक्तचरक्षिषः ॥ प्रभंगीशूरोमघवातुवी
 मघःसंमिश्रोवीर्यीयकं ॥ उभातेबाहूवृषणाशतक्रतो नियावज्रमिमिक्षतुः ॥ ऋचः ६ ॥ एतैर्मत्रैरभिमन्त्र्य ॥ ततः
 आचार्यःसुवेण मिलितदधिमध्वाज्यहोमंकुर्यात् ॥ आपोहिष्ठेतितिसृणांसिधुर्द्रीप आपो गायत्री ॥ गोप्रसवप्रधानहोमे०॥ स
 त्यपिवरुणहोमस्यवारुणत्वेऽद्भ्यइत्येवत्यागःपार्वणहोमेपूर्णमासायेदमितिवत् ॥ अप्सुमे० ऋष्यादिपूर्ववत् ॥ अतएवानुष्टुभो
 ग्रहणं ॥ तद्विष्णोरिति मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री ॥ गोप्रसवप्रधानहोमे० ॥ ॐ तद्विष्णोः० विष्णवइदं० ॥ अक्षी
 भ्यांतइतिषण्णांविबृहायक्षमहानुष्टुप् ॥ गोप्रसवप्रधानहोमे० ॥ ॐअक्षीभ्यातेनासिकाभ्यांकर्णीभ्यांछुबुकादधि ॥ यक्षमंशीर्ष
 ण्यंमस्तिष्काजिह्वायाविबृहामितेस्वाहा ॥ यक्षमहण इदं० ॥ ॐ ग्रीवाभ्यस्तउत्पिण्हाभ्यःकीकसाभ्योअनूक्यात् ॥ यक्षमंदोष
 ण्यांमंसाभ्यांवाहुभ्यांविबृहामितेस्वाहा ॥ यक्षमहण इदं० ॥ ॐ आत्रेभ्यस्तेगुदाभ्योवनिष्ठोर्हृदयादधि ॥ यक्षमंतस्त्रा
 भ्यांयकःप्लाशिभ्योविबृहामितेस्वाहा ॥ यक्षमहण इदं० ॥ ॐ ऊरुभ्यांतेअष्टीवज्यांपार्णिभ्यांप्रपदाभ्यां ॥ यक्षमंश्रोणिभ्यांभा
 सदाभ्रंसोविबृहामितेस्वाहा ॥ यक्षमहण० ॥ ॐ मेहृनाद्धनंकरणाहोमभ्यस्तेनखेभ्यः ॥ यक्षमंसर्वस्मादात्मनस्तमिदंविबृ

हामितेस्वाहा ॥ यक्षमहण० ॥ ॐ अंगादंगाल्लोमोलोमोज्ञातंपर्वणिपर्वणि ॥ यक्षमंसर्वस्माद्रात्मनस्तमिदंविचृहामितेस्वाहा ॥
यक्षमहणइदं० ॥ ततःआकृष्णेनेत्यादिभिर्दध्यादिहोमः ॥ सवित्रेसोमायेदमितित्यागः ॥ सर्वत्रप्रत्यृचंअष्टाविंशतिरष्टौवा
हुतयः ॥ प्रणीताप्रणयनसंस्थाजपतेपरिस्तरणविसर्जनादिआचार्याययथाशक्तिदक्षिणांदत्वास्थापितदेवतानामुत्तरपूजावि
सर्जनांतेतत्प्रतिमांआचार्यहस्तेप्रतिपाद्याग्निंसंपूज्य विभूतिधारणांतेगच्छगच्छेतितंवि सृज्यदशत्रौनवाब्राह्मणान्भोजयेत्कर्म
णःसंपूर्णतांवाचयित्वेश्वरार्पणंकुर्यात् ॥ इतिगोप्रसवशांतिप्रयोगः ॥ ६३ ॥ ६३ ॥ ६३ ॥

॥ १६५ ॥ अथभूलजनेनशांतिः ॥

श्रीः ॥ मूलोत्पत्तौतुद्वादशाहेअव्यवहितागामिमूलनक्षत्रयुतेशुभदिनेवागोप्रसवशांतिमुक्तविधिनाकृत्वादेशकालकीर्तनांतस्य
कुमारस्यमूलप्रथमचरणजन्मसूचितसकलारिष्टपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थेशौनकोक्तप्रकारांसग्रहमखांशांतिकरिष्ये इ
तिसंकल्प्य गणपतिपूजादिऋत्विग्वरणांतंकुर्यात् ॥ द्वितीयादिचरणोत्पत्तौसंकल्पेतथोहोबोद्धव्यः ॥ ब्रह्मसदस्यौकृताकृतौ ॥ ऋ
त्विजोष्टौचत्वारोवावृत्वायथाविभवंपूजयेत् ॥ ततआचार्यःपवित्रपाणिःप्राणानायम्ययथाचारंसंकल्प्यसुसमीकृतपुण्यदेशेय
दत्रसंस्थितमितिरार्पणान्विकीर्ष्य एतोन्विद्रंस्तवामेतितिसृभिर्ऋग्भिर्जलमभिमन्त्र्यतेनापोहिष्ठेतितृचेनतांभूमिंप्रोक्ष्यप्रतिमाशु
त्तारणंकृत्वामंडपाभावेप्रोक्षितभूमौऐशान्यांस्वस्तिकंविरच्य महीद्यौरितिभुवंस्पृष्ट्वाओषधयःसमितिद्रोणपरिमितब्रीहीनप्र
क्षिपेत् ॥ अथोक्तलक्षणंकलशंयुवासुवासइतिप्रक्षालितवस्त्रावगुंठितंकृत्वातीर्थवारिणेमंमेगंगेइत्यापूर्य शरासःकुशरासइति

हिरण्यरूपइतिकूर्चेहेमसमायुक्तंविधाय चूतपल्लवैःसंयुक्तंस्वस्तिकेव्रीहिषुविन्यस्य सपल्लवाःक्षीरद्रुमशाखाअश्वत्थेवइतिनि
 क्षिप्य सहिरत्नानीतिपंचरत्नानि याओषधीरितिसर्वौषधीः गंधद्वारामितिगंधं याःफलिनिरितिपुष्पफले ओषधयइतियवान्
 महीद्यौरित्यादिमंत्रावृत्याचतुर्णांकलशानांपूर्णपात्रनिधानांतंकृत्वा मध्यकलशेस्थितसाष्टदलवाससिहेमप्रतिमायां ॥ यातेरु
 द्रेतिमंत्रस्यकश्यपोरुद्रःस्वराडनुष्टुप् रुद्रावाहनेविनियोगः ॥ एतेनमंत्रेणरुद्रमावाह्यतेनैवसंपूज्य ॥ यजुर्वेदीयजमानश्चेद्रुद्रसूक्तजपेकंचिद्योजयेत् ॥ छंदोगश्चेद्रुद्रसामजपेसामगांस्त्रीनयोजयेत् ॥ सचरुद्र
 तमयागिरिशंताभिचाकशीहि ॥ एतेनमंत्रेणरुद्रमावाह्यतेनैवसंपूज्य ॥ यजुर्वेदीयजमानश्चेद्रुद्रसूक्तजपेकंचिद्योजयेत् ॥ छंदोगश्चेद्रुद्रसामजपेसामगांस्त्रीनयोजयेत् ॥ सचरुद्र
 क्रणेमवरुणमावाह्यपंचोपचारैःसंपूज्य ॥ यजुर्वेदीयजमानश्चेद्रुद्रसूक्तजपेकंचिद्योजयेत् ॥ छंदोगश्चेद्रुद्रसामजपेसामगांस्त्रीनयोजयेत् ॥ सचरुद्र
 कलशंस्पृशन्जपेत् ॥ बहुचोयजमानश्चेद्रुद्रसूक्तजपेकंचिद्योजयेत् ॥ छंदोगश्चेद्रुद्रसामजपेसामगांस्त्रीनयोजयेत् ॥ सचरुद्र
 लशंस्पृशंतोजपेयुः ॥ सूक्तसामजपयोरेकादशाष्टद्वित्र्येकसंख्यानांविकल्पः ॥ कद्रुद्रायेतिनवर्चस्यधौरःकण्वोरुद्रोगायत्रीअं
 त्यानुष्टुप् ॥ इमारुद्रायेत्येकादशार्चस्यसूक्तस्यकुत्सोरुद्रोजगतीअंत्येत्रिष्टुभौ ॥ आतेपितरितिपंचदशार्चस्यसूक्तस्यगृत्समदोरु
 द्रस्त्रिष्टुप् ॥ सर्वेषांजपेविनियोगः ॥ ॐ कद्रुद्रायप्रचेतसे० ऋचः ९ ॥ ॐ इमारुद्रार्चतुवर्सेकपर्दिने० ऋचः ११ ॥ ॐ
 आतेपितर्मरुतांसुन्नमेतु० ऋचः १५ ॥ (सूक्तांतरसत्वेपिनतजपःबहुवचनस्यत्रिष्टुपपत्तेः) ॥ आवोराराजानमितित्रयाणांसा
 न्नांवामदेवोरुद्राद्यस्यत्रिष्टुपद्वयोर्गायत्री जपेवि० ॥ ॐ आवोराराजानमध्वरस्यरुद्रं० ऋचः ३ ॥ ततआशुःशिशानइत्या

दिचतुर्णामन्येषामपितत्रैवजपःकार्यः तत्रत्यजपसंदंशपाठात् ॥ आशुःशिशानइतित्रयोदशचर्चसूक्तस्याप्रतिरथइंद्रश्चतु
 र्ध्याबृहस्पतिर्द्वादश्याअप्वांत्यायामरुतस्त्रिष्टुप्अंत्यानुष्टुप् ॥ त्वमग्नेरुद्रइत्यनुवाकस्यहव्यवाडश्यात्मारुद्राद्याजगतीशिष्टा
 न्ययजूंषि ॥ रक्षाणोअग्नेइत्यस्यवामदेवोन्निस्त्रिष्टुप् ॥ रक्षोहणमितिपंचविंशचर्चसूक्तस्यपायुरन्निस्त्रिष्टुप् चतस्रोत्याअनुष्टु
 भः सर्वेषांजपेविनियोगः ॥ अत्राऽपिशत्तयापूर्वोक्तसंख्यास्वीकारः ॥ ततस्त्रैयंवकमंत्रस्याऽष्टोत्तरसहस्रंजपंतत्रैवकश्चित्कु
 र्यात्पावमानीनांतिसृणामृचांच ॥ आसांमधुच्छंदाःपवमानसोमोगायत्री ॥ अन्येपुकलशेगुशांतिजपमृत्विजःकुर्युः ॥ यद्वा
 कुंभपंचकस्थानेकुंभद्वयंसंस्थाप्यतत्रैकादिमरुद्रकुंभेरुद्रादिसर्वजपः ॥ अन्यकुंभेतदुत्तरस्थेवरुणमावाह्यशांतिजपः ॥ यद्वा
 चतुःप्रस्रवणएकवक्रःकुंभःपंचकुंभस्थानेस्थापनीयः ॥ तत्रमुखेमध्यमकुंभकार्यचतुर्गुप्रस्रवणेपुंभचतुष्टयकार्यकर्तव्यमिति
 व्यवस्था ॥ ततःस्थापितकुंभोत्तरतोरक्तवर्णैःशुक्लैर्वाग्रीहितंहुलैश्चतुर्विंशतिदलोपेतंसकर्णिकंपंकजंविधाय तत्कर्णिकायां म
 हीद्यौरितिभूमिस्पृष्टाओपधयःसमितिग्रीहीन्निक्षिप्य सौवर्णराजतंमृन्मयंवाकुंभंपूर्वोक्तमंत्रेणशुद्धवस्त्रवेष्टितंकृत्वा तत्रेममे
 गंगेइति तीर्थजलमानीयवर्हिशिखादीनिशतमूलानितदभावे विष्णुक्रांतासहदेवीतुलसीशतावरीनिक्षिप्योक्तमंत्रैर्यवादिप्रक्षे
 पंकृत्वागंधाद्यलंकृतंकूर्चहोपेतंकुंभसर्वौषधिसंयुतंविधाय आकलशेष्वितिकर्णिकायांस्थापयेत् ॥ ततःपूर्ववत् याओपधी
 रित्यादिमंत्रैर्यवादिप्रक्षेपंकृत्वा पूर्णादर्वीतिनिहितपूर्णपात्रेसाष्टदलंवस्त्रंविधाय निष्कतदर्धतदर्धान्यतरमानहेमनिर्मितानि
 ऋतिप्रतिमांप्रतिमांतराणिपंचामृतेनप्रक्षाल्य तत्रवस्त्रेनिर्ऋतिप्रतिमांतदक्षिणतउत्तरतश्चंद्रप्रतिमामपांप्रतिमां पूर्वादिदलेषु

विश्वेदेवप्रतिमास्तदभावेफलानितंडुलपुंजान्वानिधाय प्राच्यादिस्थानेषुलोकपालप्रतिमाःफलादिवानिधाय प्रतिमासुदेव
ताआवाहयेत् यथा॥मोषुणोघौरःकण्वोनिर्ऋतिर्गायत्री निर्ऋत्यावा०॥तद्वक्षिणे इंद्रवोमधुच्छंदाइंद्रोगायत्री इंद्रावा०॥उत्तरे
यमं अग्निं प्रजापतिं सोमं रुद्रं अदितिं बृहस्पतिं सर्पान् पितृन् भगं अर्यमणं सवितारं त्वष्टारं वायुं इंद्राग्नी मित्रं इत्या
वाहनांतेग्रहमखरीत्यालोकपालानावाह्यनैर्ऋतिप्रदेशेस्थंडिलाद्यग्निस्थापनांतंकृत्वा स्यापितकुंभेशनदेशेग्रहानावाह्यसंपूज्य
तदैशान्यांकलशप्रार्थनांतंकुर्यात् ॥ ततोऽन्वाधानम् ॥ चक्षुषीआज्येनेत्यंतेआदित्यादिनवग्रहान्प्रत्येकं अर्कादिजातीयस
मिच्चर्वाज्याहुतिभिरेतत्संख्याभिःअधिदेवताप्रत्यधिदेवताविनायकादिक्षेत्रपालांताःलोकपालांश्च पूर्वोक्ताहुतिभिरेतत्संख्या
भिः॥ निर्ऋतिप्रत्येकंअष्टोत्तरशतसंख्याभिर्घृतसंमिश्रपायससमिदाज्यचर्वाहुतिभिः॥ (समिदाद्याहुतीनांशक्तितोन्यूनसंख्या
करणपक्षेतथैवनिर्देशः)॥ इंद्रमपश्चप्रतिद्रव्यमष्टाविंशतिसंख्याभिरुक्ताहुतिभिर्विश्वेदेवाद्याश्चतुर्विंशतितोन्यूनसंख्या
धिपतिमित्रावरुणौअग्निंचएतादेवताःप्रत्येकमष्टाष्टसंख्याभिःकृसराहु० सवितारंदुर्गात्र्यंबकंकवीन्द्रुर्गावास्तोष्पतिंअग्निंक्षेत्रा
दाज्यचर्वाहुतिभिःसोमंत्रयोदशवारंपायसाहुतिभिः रुद्रंस्वरांजंचतुर्गृहीताज्येन अग्निंपृथिवीमहांतं वायुमंतरिक्षमहांतं आदि
त्यंदिवमहांतंचंद्रमसनक्षत्राणिदिशोमहांतंचाज्येन शेषेणेत्यादिपात्रासादनेपायसचरुकृसरार्थस्थालीनांस्रुवाणामाज्यस्थाली

नांशूर्पाणांचासादनादिप्रणीतास्थापनांतंकृत्वा निःकृत्यादीनांवक्ष्यमाणतत्तन्मंत्रैः पूजांकुर्यात् ॥ निःकृतयेवस्त्रयुग्मंरक्तचंदनंकृ
ष्णसितादिपुष्पाणिमेषशृंगधूपःआज्यदीपःपोलिकौदनसुरामांसात्मकंपुरुषाहारपर्यासंनैवेद्यं॥तत्रब्राह्मणेनसुरास्थानेसंधवमि
श्रंक्षीरंमांसस्थानेलवणमिश्रंपायसंदेयम् ॥ अन्यैःसंभवेमुख्यमेवोभयम् ॥ पुष्पांजल्यंतपूजनेकृतेनिःकृतिमिद्रमपश्चोद्दिश्यशूर्प
योःपायसार्थंचर्वथचद्वादशमुष्टीन्तूष्णींनिरुध्य पायसार्थेनिरुसेषणनवतिमुष्टीन्तूष्णींनिरुप्य पुनःशूर्पांतरेकृत्सराथंचतुश्चत्वा
रिशत्संख्यान्मुष्टीन्निरुप्य चर्वथपुनश्चतुरःपायसार्थेद्विपंचाशान्मुष्टीन्निरुप्य तत्तत्संख्ययाप्रोक्ष्य क्रमेणाचहत्यपात्रत्रयेहविस्त्र
यंश्रपयेत्॥ततोयथान्वान्त्यागः ॥ यथा एतत्संख्याहुतिपर्यासंसमिद्रव्यंचरुराज्यंच आदित्यायसोमायेत्यादि एवमधिदेव
तादिभ्यस्त्यागः ॥ ततअष्टोत्तरशतसंख्याहुतिपर्यासंसमिश्रपायसंनिःकृतयेसमिदादिपुसैवसंख्यान्यूनसंख्यावायापूर्वसंक
ल्पितातदनुसारित्यागः ॥ इयदाहुतिपर्यासंसमिदाज्यचर्वात्मकंद्रव्यत्रयंनिःकृतये, अष्टाविंशत्याहुतिपर्यासंसुक्तद्रव्यचतुष्टयंइ
द्राय,एवमद्भ्यः, अष्टाष्टसंख्याहुतिपर्यासंपायसंविश्वेभ्योदेवेभ्यः विष्णवे वसुभ्यो वरुणाय अजायैकपदे अहयेबुभ्रियाय पूष्णे
अश्विभ्यां यमाय अग्नये प्रजापतये सोमाय रुद्राय अदितये बृहस्पतये सर्पेभ्यो भगाय अर्यम्णे सवित्रे त्वष्ट्रे वायवे इंद्राग्नि
भ्यां मित्राय, विंशत्यधिकशताहुतिपर्यासंकृत्संरहविःरक्षोघ्नेग्नये, अष्टाष्टसंख्याहुतिपर्यासंकृत्सरद्रव्यं सवित्रे दुर्गायै त्र्यंबकाय
कविभ्यो दुर्गायै वास्तोष्पतये अग्नये क्षेत्राधिपतये मित्रावरुणाभ्यां अग्नयेच, विंशत्यधिकशतसंख्याहुतिपर्यासाः समिधःता
वदाज्यंतावांश्चरुःश्रियै,त्रयोदशाहुतिपर्यासंपायसंसोमाय,चतुर्गृहीताज्यंरुद्रायस्वराजे,एकैकाहुतिपर्यासमाज्यं अग्नयेपृथिव्यै

महते वायवैतरिक्षायमहते आदित्यायदिवेमहते चंद्रमसेनक्षत्रेभ्योदिग्भ्योमहतेच एवंत्यागेकृतेसाचार्याऋत्विजस्तथैवजुहुयुः
तत्रादावुक्तसंख्ययाग्रहहोमंकृत्वा॥ मोषुणोघौरःकण्वोनिर्ऋतिर्गायत्रीहोमेविनि०॥ॐ मोषुणःपरापरा०॥इंद्रवोमधुच्छंदाइंद्रो
कादधिमधुघृताक्ताहोतव्याःपायसचरून्चतुरवत्ताद्यवदानविधिनाहविर्गृहीत्वानुसारासंख्या
समासेसमिदादिहोमारंभः)ततः ॐ विश्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहेत्येवंउक्तचतुर्विंशतिनाममंत्रैःप्रत्येकमष्टाष्टसंख्ययापायसहोमे
कृणुष्वेतिपंचदशर्चस्यवामदेवोरक्षोहामिस्त्रिष्टुप् कृसरहोमेवि० ॥ ॐ कृणुष्वपाजःप्रसिति० ऋचः १५ ॥ प्रत्यृचमष्टाष्टसं
ख्ययाहोमः ॥ गायत्र्याप्यष्टौतदाहुतयः ८ ॥ जातवेदसेकश्यपोदुर्गात्रिष्टुप् कृसरहोमे० ॥ ॐ जातवेदसे० ८ ॥ त्र्यंबकं
सिष्टोरुद्रोनुष्टुप् कृसरहोमे० ८ ॥ सीरायुंजतीत्यस्यबुधःकवयोगायत्री कृसरहोमे० ॥ ॐ सीरायुंजति० ८ ॥ तामग्निवर्णा
सौभरिर्दुर्गात्रिष्टुप् कृसरहो० ॥ ॐ तामग्निवर्णातपसाज्वलंती० ८ ॥ वातोष्पतेवसिष्ठोवास्तोष्पतिस्त्रिष्टुप् कृसरहो० ॥
ॐ वास्तोष्पतेप्राप्ते० ८ ॥ अग्निदूतंमेधातिथिरग्निर्गायत्री कृसरहोमे० ॥ ॐ अग्निदूतं० ८ ॥ अग्निदूतं० ८ ॥ अग्निदूतं० ८ ॥
धिपतिरनुष्टुप् कृसर० ॥ ॐ क्षेत्रस्यपतिनावयं० ८ ॥ गुणानाजमदग्निर्मित्रावरुणौगायत्री कृसरहोमे० ॥ ॐ गुणानाजमद
ग्निना० ८ ॥ अग्निदूतंपुरोदधइत्यस्यविरूपोऽग्निर्गायत्री कृसरहोमे० ॥ ॐ अग्निदूतंपुरोदधे० ८ ॥ ततःहिरण्यवर्णामिति
पंचदशर्चस्यसूक्तस्यआनंदकर्मचिह्नीतेदिरासुताऋषयः श्रीदेवताआद्यास्त्रिस्तोनुष्टुभःचतुर्थीप्रस्तारपंक्तिःपंचमीषष्ठ्यौत्रिष्टु

भौततोष्टावनुष्टुभः अं त्या प्रस्तारपंक्तिः होमे विनियोगः ॥ ॐ हिरण्यवर्णा हरिणीं ० ऋचः १५ ॥ प्रत्युचंसमिदाज्यचरुन् अष्ट
 संख्याया जुहुयात् ॥ त्वनः सोम विश्वत इत्यस्य प्रगाथः सोमस्त्रिष्टुप् पायसहोमे ॥ ॐ त्वनः सोम विश्वतो ० १३ ॥ याते रुद्रेत्य
 स्य कश्यपो रुद्रः स्वराडनुष्टुप् आज्यहोमे ॥ ॐ याते रुद्र शिवा ० ॥ अनेन चतुर्गृहीतं हुत्वा सुवेण च तस्र आज्या हुती जुहुयात् ॥ भूर्भुवः
 सुर्वश्चंद्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च द्विगभ्यश्च महते च स्वाहा ॥ ततः स्विष्टकृत्वा यसाज्यचरुणां सकृत्सकृदवदायाज्यं द्विगृहीत्वा ॥ यद
 ॐ भूर्भुवः च पृथिव्यै च महते च स्वाहा ॥ ततः स्विष्टकृत्वा यसाज्यचरुणां सकृत्सकृदवदायाज्यं द्विगृहीत्वा ॥ अं त्याजगती
 सुर्वश्चंद्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च द्विगभ्यश्च महते च स्वाहा ॥ ततः स्विष्टकृत्वा यसाज्यचरुणां सकृत्सकृदवदायाज्यं द्विगृहीत्वा ॥ ॐ
 स्येति ॥ ततः प्रायश्चित्तहोमांते कृते दिक्पालग्रहविनायकादिभ्यो रुद्राय निऋतये इन्द्रायान्धः क्षेत्रपालाय च सदीपमापभक्तबलि
 दानं कार्यं ॥ आचार्यो यजमानो वा पूर्णाहुतिं जुहुयात् ॥ समुद्रादूर्ध्वं त्रिरत्येकादश च स्यूक्तस्य वामदेवो ग्निस्त्रिष्टुप् पूर्णाहुतिहोमे ॥ सप्तते
 पूर्णाहुतिहोमे वि ॥ ॐ समुद्रादूर्ध्वं त्रिंशत् क्रतुरनुष्टुप् पूर्णाहुति ॥ ॐ पूर्णाद्विंशत् ॥ ततः प्रणी
 ॐ प्रजापते न ० ऋक् १ ॥ पूर्णादूर्ध्वं त्रिंशत् क्रतुः शत क्रतुरनुष्टुप् १ ॥ अग्नये प्रजापतये शत क्रतवे सप्तवते ग्नय इदं ॥ ततोरुद्रक
 अग्ने सप्तवानग्निर्जगती पूर्णाहुतिहोमे ॥ ॐ सप्ततै अग्ने ० १ ॥ अग्नये प्रजापतये शत क्रतवे सप्तवते सप्तमारोपः ॥ ततोरुद्रक
 तानि नयनं संस्थाजपपरिस्तरणविसर्जनपरिसमूहनपर्युक्षणानि कृत्वा गृह्याग्नौ एतच्छांतिकरणपक्षे तत्समारोपः ॥ ततोरुद्रक
 लशं दक्षिणतः स्पृशन् त्र्यंबकमिति मंत्रं शतकृत्वो जपेत् ॥ यजमानस्य याजुपत्वादिनिमित्तकं च पूर्ववद्गुद्रेकादशिन्यादिजपमपि
 जपेत् अत्राप्येकादशादि संख्या विकल्पः पूर्ववत् ॥ अथ रुद्रकुंभनिर्ऋतिकुंभगतदेवताः पंचोपचारैः संपूज्य भवत्प्रसादेन यज

मानाभिषेकं करिष्यइतिताः प्रार्थयेत् ॥ अस्मिन्समयेभूतिमिच्छताग्रहपूजनंकार्यम् ॥ सर्वकलशोदकंक्वचित्यात्रेआदाय
 विनायकशान्तिवत्स्वस्तिकचर्मपीठनिर्मितेभद्रासनेउपविष्टं धृतनववस्त्रं सर्वौषध्यनुलिप्तगंयजमानं तद्वामभागोपविष्टांताह
 शींसापत्यांपत्नींचसर्त्विगाचार्योभिपिचेत् ॥ कस्यपोक्तशतच्छिद्रांतर्धारणंकृताकृतम् ॥ अभिषेकमंत्राः ॥ अक्षीभ्यामि
 ऋषिः आद्यानां त्रयाणामग्निश्चतुर्णां विश्वेदेवाः आद्यागायत्री द्वितीयानुष्टुप् तिस्रो गायत्र्योत्येद्वेऽनुष्टुभौ अभिषेके ॥ अक्षीभ्यामि
 भिष्टुं देवसवितुः ० ऋचः ७ ॥ आपोहिष्ठेति नवर्चस्य सूक्तस्यांबरीषः सिधुद्रीप आपो गायत्री पंचमीवर्धमाना सप्तमी प्रतिष्ठा
 अंत्येद्वेऽनुष्टुभौ अभिषेके ॥ ॐ आपोहिष्ठेति नवर्चस्य सूक्तस्यांबरीषः सिधुद्रीप आपो गायत्री पंचमीवर्धमाना सप्तमी प्रतिष्ठा
 ॐ आपइद्वार्षभेपृजी ० ऋचौ २ ॥ सहस्राक्षेणेति तृचस्य यक्षमनाशनो यक्षमात्रिष्टुवंत्यानुष्टुप् अभिषेके ॥ ॐ त्रि
 शतशारदेन ० ऋचः ३ ॥ देवस्य त्वेति त्रिभिर्याजुषैः ॥ यज्जाग्रत इति षण्णां प्रजापतिर्मनस्विष्टुप् अभिषेके ॥ ॐ सहस्राक्षेण
 धरो देवो हुतमुज्जेषवाहनः ॥ सप्तजिह्वश्च देवोऽग्निर्मूलदोषं व्यपोहतु ॥ मूलजात शिशोर्दोषं मातापित्रोर्व्यपोहतु ॥ योसौ शक्ति
 शोर्दोषं व्यपोहतु यमोमम ॥ योसौ खड्गधरो देवो निऋतीराक्षसाधिपः ॥ प्रशामय तु मूलोत्थं दोषं गंडांतं संभवम् ॥ योसौ पा
 शधरो देवो वरुणश्च जलेश्वरः ॥ नक्रवाहः प्रचेतानो मूलोत्थांधं व्यपोहतु ॥ योसौ देवो जगत्प्राणो मारुतो मृगवाहनः ॥ प्र

शमयतुमूलोत्थदोषं बालस्य शांतिदः ॥ यो सौ निधिपतिर्देवः खड्गभृद्वाजिवाहनः ॥ मातापित्रोः शिशोश्चैव मूलदोषं व्यपोह
 तु ॥ यो सौ पशुपतिर्देवः पिनाकीवृषवाहनः ॥ आश्लेषामूलगंडांतदोषमाशुव्यपोहतु ॥ विघ्नेशः क्षेत्रपोदुर्गालोकपालान्वग्र
 हाः ॥ सर्वदोषप्रशमनं सर्वकुर्वतु शांतिदाः इति मंत्रैः सुरास्त्वामित्यादिभिश्चाभिपिंचेत् ॥ तच्छंयोः शंयुर्विश्वेदेवाः शक्करी अभिषे
 के ॥ तच्छंयोरावृणीमहे ॥ ततस्तूष्णीवस्त्ववेष्टितमुखाभ्यां रुद्रनिर्ऋतिकुंभाभ्यां अभिपिक्तो यजमानः शुक्लवस्त्रगंधमाल्यध
 रः स पत्नीकः सापत्यो विभूतिधारणं कृत्वा निर्ऋतिरुद्रकलशस्य देवताः संपूज्य विसृज्य ग्रहाणामुत्तरपूजां विसर्जनं च कृत्वा आचा
 र्यादींश्चंदनादिना संपूज्य आचार्याय सवत्सां पयस्विनीं गां दद्यात् ॥ निर्ऋतिप्रतिमां सोपस्करांतत्कलशं तथा ग्रहप्रतिमां ग्रहीत्य
 र्थं दक्षिणाश्च ॥ ततोरुद्रजापिने कृष्णो नडूनां देयः रुद्रप्रतिमाः सोपस्करास्तत्कुंभांश्च इतरेभ्योऽपि यथाशक्ति दक्षिणां दद्यात् ॥
 धेन्वनडुहोरसं भवेतु दशकार्षापणाधेनावष्टावनडुहिस्मृताः इति मूल्यं देयम् ॥ तदसंभवे यथाशक्ति दद्यात् ॥ तत्राचार्यं दत्तार्धं
 ब्रह्मणे तदत्तार्धं सदस्याय तदत्तार्धं प्रत्येकमृत्विग्भ्यो देयम् ॥ ततस्तेभ्यो मूलजननसूचितसर्वारिष्टनिवृत्तिरस्त्वित्याशिषंगृही
 त्वा प्रणम्य क्षमापयेत् ॥ ततः पायसादिना शतंतदर्थं दशवा ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥ तैश्च ब्राह्मणैः सर्वशांतिपाठपूर्वकं भुक्त्वा शिषो
 देयाः ॥ यजमानो निर्ऋतिः प्रीयतामिति तान् क्षमापयेत् ॥ ततर्द्धं चरार्पणं कुर्यादिति मूलजननशांतिः ॥ ७ ॥

॥ १६६ ॥ अथाश्लेषाज्जननशांतिः ॥

श्रीः ॥ यजमानः आचम्य प्राणानाचम्य देशकालाद्युच्चार्य गोमुखप्रसवं कृत्वा ऽस्य शिशोराश्लेषाजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वा

राश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमनूक्तविधिनासग्रहमखामाश्लेषाशांतिकरिष्येइतिसंकल्प्य ॥ गणेशपूजनादिऋत्विग्वरणांतंकुर्यात् ॥
 अग्न्युत्तारणसर्षपविकिरणाद्यंते मूलशांत्युक्तप्रकारेणकुंभपंचकेचतुःप्रस्रवणपंचवक्त्रैककुंभेवारुद्रवरुणयोरावाहनादि पूजनंवि
 धायरुद्रैकादशिनीजपरक्षोहणमितिसूक्तजपांते रुद्रकुंभोत्तरभागेगोमयेनोपलिप्तेधात्वादिभिःपरितःशोभितेशुद्धतंडुलैरक्त
 पीतसितकृष्णपिष्टकैर्वाचतुर्विंशतिदलान्वितंपंकजंविधाय तत्कर्णिकायांभूमिमहीद्यौरित्यभिमृश्य ओषधयइतिब्रीहोन्नि
 क्षिप्याकलशेष्वितिस्यापितकलशमिमंगंगइतितीर्थोदकेनापूर्य गंधद्वारामितिगंधपुष्पाभ्यां युवासुवासाइतिवस्त्रवेष्टनेनच
 संपूज्य कांडात्कांडादितिदूर्वाभिश्च अश्वत्थेवइतिपंचपल्लवैः स्योनेतिसप्तमृद्भिः आपोहिष्ठेतिपंचगव्येनचसंयोज्य याःफलं
 नीरितिफलानिपंचरलानियवान्सर्वौषधीश्चप्रक्षिप्यपूर्णादर्वीतिनिहितपूर्णपात्रेसाष्टदलवस्त्रेआश्लेषादेवताप्रतिमायां ॥ न
 मोअस्तुवामदेवःसर्पाअनुष्टुप् सर्पावाहनेवि० ॥ ॐ नमोअस्तुसर्पेभ्यइतिसर्पानावाह्यध्यायेत् ॥ सर्पोरक्तस्त्रिनेत्रश्चद्विभुजः
 पीतवस्त्रकः ॥ फलकासिधरस्तीक्ष्णोदिव्याभरणभूषितःइति ॥ तद्वक्षिणोत्तरदेशयोःपुण्यमघेअधिप्रत्यधिदेवतेआवाह्य च
 तुर्विंशतिदलेषुपूर्वदलमारभ्यप्रादक्षिण्येनपूर्वाफल्युनीमारभ्यपुनर्वसुपर्थतानिनक्षत्राणिआवाहयेत् ॥ तत्रपुष्यावाहने ॥ ॐ
 बृहस्पतिःप्रथमंजार्यमानः ॥ तिष्यंनक्षत्रमभिसंबभूव ॥ श्रेष्ठोद्वानांपुर्तनासुजिष्णुः ॥ दिशोनूवासर्वाअर्भयंनोअस्तु ॥ ति
 ष्यःपुरस्तादुतमध्यतोर्नः ॥ बृहस्पतिर्नःपरिपातुपश्चात् ॥ बार्धेतांद्वेषोअर्भयंकृणुतां ॥ सुवीर्यस्यपतयःस्यामेतितैत्तिरीयशा
 खोक्तोमंत्रः ॥ तथामघावाहने ॥ ॐ उपहृताःपितरोयेमघासु ॥ मनोजवसःसुकृतःसुकृत्याः ॥ तेनोनक्षत्रेहवमार्गमिष्टाः ॥

स्वधाभिर्यज्ञं प्रयत्नं जुषताम् ॥ ये अग्निदुग्धायेन मिदग्धाः ॥ ये मुं लोकं पितरः क्षियंति ॥ याश्च विद्वयाश्च नमः प्रविद्ध ॥ म-
 घा सुयज्ञं सुकृतं जुषतामिति ॥ तथा पूर्वाफलगुन्याद्यावाहना नितत्रत्यैरेव ॥ गवां पतिः फल्गुनीनामसित्वमित्यादिवाक्याष्ट
 कैः कर्तव्यानि ॥ यद्दानाममन्त्रैः पूर्वाफलगुनीभ्यां नमः ॥ पूर्वाफलगुन्यावावाहयामि ॥ उत्तराफलगुनीभ्यां ० हस्ताय नमः ०
 चिन्नायै ० निष्ठयायै ० विशाखाभ्यां ० अनूराधेभ्यो ० ज्येष्ठायै ० मूलाय ० पूर्वाषाढाभ्यां ० उत्तराषाढाभ्यां ० श्रोणायै ० श्र-
 विष्ठाभ्यो ० शतभिषजे ० पूर्वाप्रोष्ठपदाभ्यो ० उत्तराप्रोष्ठपदाभ्यो ० रेवत्यै ० अश्वयुग्भ्यां ० अपभरणीभ्यो ० कृत्तिकाभ्यो ०
 रोहिण्यै ० मृगशीर्षाय ० आर्द्रायै ० पुनर्वसुभ्यां ० इत्येतैः ॥ तत आवाहितदेवता उक्तमन्त्रैः षोडशोपचारैः संपूज्य आचार्यो
 यजमानशाखोक्तनविधिना स्वाखोक्तविधिना वाऽग्निप्रतिष्ठाप्य ग्रहपूजां वरुणपूजां तां कृत्वाऽन्वादध्यात् ॥ तत्र ग्रहपीठस्थे दे-
 वतानां मूलशांतिवन्निर्देशं कृत्वा ॥ सर्पान् प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याभिर्घृतसंमिश्रपायससमिदाज्यचर्वाहुतिभिः तिष्यं
 मघाश्च प्रतिद्रव्यमष्टाविंशतिभिस्तदाहुतिभिः (सर्पाणामष्टाविंशतिश्चेदितरयोरष्टावष्टौ) पूर्वाफलगुन्यादिचतुर्विंशतिदेवताः प्र-
 त्येकमष्टाष्टसंख्याभिः पायसाहुतिभिः रक्षोहप्रभृतिदेवतानिर्देशो मूलशांतिवत् ॥ शेषेणेत्यादिपायसकृसरचरूणां श्रपणं आ-
 ज्यभागां ते यथान्वान्त्यागं यजमानः तत्तन्मन्त्रैर्होमं च सत्विगाचार्यः कुर्यात् ॥ आज्यहोमेषु प्रत्याहुति उत्तरतः स्थापितजल-
 कुंभे संपाताख्यशेषं प्रक्षिपेत् ॥ सर्पेभ्यो होमस्तु इदं सर्पेभ्यो हुविंस्तु जुष्टं ॥ आश्रेपायेषामनुयंति चेत्तः ॥ ये अंतरिक्षं पृथिवीं
 क्षियंति ॥ तेनः सर्पा सोहवमार्गमिष्टाः ॥ ये रौचने सूर्यस्यापि सर्पाः ॥ ये दिवदेवीमनुसंचरति ॥ येषामाश्रेपाअनुयंति कामं ॥

तेभ्यः सर्पेभ्यो मधुमज्जुहोमीति तैत्तिरीयोक्तवाक्याष्टकेन कार्याः ॥ इदं सर्पेभ्यो जुहुयादिति मानवोक्तेः सदनरलोदाहृतसंहिता
 यामस्यामेवशांतौ होमाधिकारे इदं सर्पेभ्य इति च वाक्यान्यष्टौ तु सर्पभे इत्युक्ता संवादलाभाच्च ॥ अतएवेदं हविरितियोजनयेद
 तेविनायकादिभ्यो बलिदानांतं कृत्वा रुद्राय सर्पेभ्य स्तिभ्याय मघाभ्यः क्षेत्रपालाय च सदीपबलीन् दद्यात् ॥ ततः प्रणीतानिनयनादितत्पर्युक्षणांतम् ॥ प्रायश्चित्तहोमां
 गृहीतादिविधिना मूलशांतिवत्पूर्णाहुतिं हुत्वा संपातं कुंभे क्षिपेत् ॥ ततः पालाय च सदीपबलीन् दद्यात् ॥ ततः आचार्यो द्वादश
 दक्षिणतः स्पृष्ट्वा त्र्यंबकजपादिमूलशांतिवत् ॥ ततोरुद्रसर्पादिदेवतानां पंचोपचारैरुत्तरपूजां कृत्वा ऽभिषेकानुशांतद्वेवादाय सं
 पातोदकमितरकुंभजलानि चादाया ऽभिषिचेत् ॥ सत्विगाचार्यः अक्षीभ्यामित्यादियजाग्रत इत्यंतं मूलशांतिवत् ॥ योसौ दंडधरो देवो धर्मो महिषवाहनः ॥ योसौ शक्तिधरो देवो हुतमुज्ज्वेषवा
 शेषः ॥ योसौ वज्रधरो देवो महेंद्रो गजवाहनः ॥ सर्पजातशिशोर्दोषमातापित्रोर्व्यपोहतु ॥ योसौ दंडधरो देवो धर्मो महिषवाहनः ॥ योसौ शक्तिधरो देवो हुतमुज्ज्वेषवा
 हनः ॥ सप्तजिह्वश्च देवो मिः सर्पदोषं व्यपोहतु ॥ योसौ खड्गधरो देवो निर्ऋतीराक्षसाधिपः ॥ प्रशामयतु सर्पोत्थं दोषं गंडांतं संभवम् ॥ सर्पजातशिशोर्दोषं व्यपोहतु यमो
 मम ॥ योसौ खड्गधरो देवो निर्ऋतीराक्षसाधिपः ॥ प्रशामयतु सर्पोत्थं दोषं गंडांतं संभवम् ॥ योसौ पाशधरो देवो वरुणश्च जले
 श्वरः ॥ नक्रवाहः प्रचेतानः सर्पोत्थां व्यपोहतु ॥ योसौ निधिपतिर्देवः खड्गभृद्वाजिवाहनः ॥ प्रशामयतु सर्पोत्थं दोषं बालस्यशांतिदः ॥ योसौ पशुपतिर्देवः पिना
 व्यपोहतु ॥ योसौ निधिपतिर्देवः खड्गभृद्वाजिवाहनः ॥ योसौ देवो जगत्पाणो मारुतो मृगवाहनः ॥ योसौ पाशधरो देवो वरुणश्च जले
 कीवृषवाहनः ॥ आश्लेषामूलगंडांतं दोषमाशु व्यपोहतु ॥ विघ्नेशः क्षेत्रपो दुर्गालोकपालः नवग्रहाः ॥ सर्वदोषप्रशमनं सर्वकुर्वं

तुशांतिदाः ॥ आश्लेषाक्षजातस्यमातापित्रोर्धनस्यच ॥ भ्रातृर्ज्ञातिकुलस्थानांदोषसर्वव्यपोहतु ॥ योसौवागीश्वरोनामअ
 धिदेवोबृहस्पतिः ॥ मातापित्रोःशिशोश्चैवगंडांतंसव्यपोहतु ॥ पितरःसर्वभूतानारक्षंतुपितरःसदा ॥ सार्पनक्षत्रजातस्यवि
 त्चज्ञातिबांधवान् ॥ सुरास्त्वामभिषिंचंतु ॥ तच्छंयोरा० शतच्छिद्रांतर्धानेनमूलवदभिपेकांतेआचार्यरुद्रजापिभ्यांधेनुकृ
 ष्णानडुहावन्येभ्योदक्षिणायादानंमूलवत्कृत्वाग्रहाणामुत्तरपूजांविधायसर्पेभ्योऽक्षतफलपुष्पयुतमर्घ्यदद्यात् ॥ मंत्रः ॥
 सर्पाधीशनमस्तुभ्यंनागानांचगणाधिप ॥ गृहाणार्घ्यमयादत्तंसर्वारिष्टप्रशांतये इति ॥ ततोब्राह्मणभोजनसंकल्पादिआशी
 र्ग्रहणांतंमूलवदिति ॥ इत्याश्लेषाजननशांतिः ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥

॥ १६७ ॥ अथज्येष्ठाजननशांतिः ॥

श्रीः ॥ कर्ताआचम्यप्राणानायम्यदेशकालौनिर्दिश्यअस्यशिशोर्ज्येष्ठाजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं
 सग्रहमखांगोक्तांज्येष्ठाजननशांतिकरिष्येइतिसंकल्प्य ॥ गणेशपूजनादिऋत्विग्वरणांतंकुर्यात् ॥ आचार्यःसर्पपविकिरणभू
 प्रोक्षणप्रतिमाद्युत्तारणानिकृत्वा ॥ महीद्यौरित्यादिविधिनास्थापितकलशंशालितंडुलैःपूरयित्वा तत्रपूर्णार्दवीतिनिहितप्
 र्णपात्रेसाष्टदलवस्त्रैर्कर्पतर्धतर्धान्यतरमानहेमनिर्मितांशच्यासहैरावतारोहणवज्रांकुशद्विभुजां इंद्रप्रतिमांनिधायेंद्रमावा
 हनाद्युपचारैःपूजयेत् ॥ इंद्रार्थेदोमरुत्वतइतिमंत्रस्यकश्यपइंद्रोगायत्री पूजनेविनि० ॥ ॐ इंद्रार्थेदोमरुत्वतेपर्वस्वमधुमत्त
 मः ॥ ऋतस्ययोनिसमासदे ॥ भूर्भुवःस्वःइंद्रायनमःइंद्रमावाह्यामिइतिइंद्रमावाह्यलोकपालांश्चावाह्यतत्समन्वितमिंद्रमुक्तमं

त्रेणपूजयन्नासमाप्तिमौनीभवेत् ॥ वस्त्रार्पणकालेरक्तवस्त्रद्वयंनैवेद्यकालेशकुल्यादिनानाभक्ष्यनिवेदनंकुर्यात् ॥ पूजांते
तस्यचतुर्दिक्षुकुंभचतुष्टयंतत्पूर्वमध्यभागेचशतच्छिद्रंमहीद्यौरित्याद्यावृत्त्यानिधायेमंगंगइतिचतुरज्जकेनापूर्य तेषुगायत्र्या
तिपंचपलवान्तत्कषायसहितान् हिरण्यरूपइतिहेम शरासइतिकुशान् कांडात्कांडादितिदूर्वाः याओषधीरितिसर्वौषधीः
प्रादक्षिण्येनमंत्रावृत्त्यानिक्षिप्य युवासुवासाइतिवस्त्रयुग्मवेष्टितेषुतेषुपूर्णपात्राणिनिधाय तेषुक्रमेणवरुणपूजांकुर्यात् ॥ प्रथ
मकलशे ॥ त्वंनोअन्नइत्यस्यवामदेवोवरुणस्त्रिष्टुप् वरुणावाहनेवि० ॥ ॐ त्वंनोअग्नेवरुणस्यविद्वान्देवस्यहेलोवयासिसी
सत्वंनइत्यस्यवामदेवोवरुणस्त्रिष्टुप् वरुणावाहनेवि० ॥ ॐ सत्वंनोअग्नेवमोभवोतीनेदिष्ठोअस्याउषसोव्युष्टौ ॥ द्वितीये ॥
वरुणंराराणोवीहिमृळीकंसुहवोनएधि ॥ तृतीये ॥ समुद्रज्येष्ठावसिष्ठोवरुणस्त्रिष्टुप् वरुणावाहने० ॥ ॐ समुद्रज्येष्ठाः० १
चतुर्थे ॥ इमंमंगंगइत्यस्यसिंधुक्षित्रैयमेधोवरुणोजगती वरुणावाहनेवि० ॥ ॐ इमंमंगंगे० १ ॥ प्रतिकुंभंवल्लयुग्मंवल्लार्प
णसमयेऽर्पयेत् ॥ ततश्चतुर्षुकुंभेषुऋत्विजश्चत्वारिसूक्तानिजपेयुः ॥ आनोभद्राइतिदशर्चस्यसूक्तस्यगोतमोविश्वेदेवाःआद्या
पंचमीसप्तमीचजगत्यः षष्ठीविराट् शेषास्त्रिष्टुभः प्रथमकलशेजपेविनियोगः ॥ ॐ आनोभुद्राःऋतवो० सूक्तम् ऋ० १०॥
भद्राअग्नेरितिद्वादशर्चस्यसुमित्रोमिः आद्येद्वेजगत्यौ अंत्यास्त्रिष्टुभः द्वितीयकलशेजपे०॥ ॐ भुद्राअग्नेर्वध्यश्चस्यसंहशोवा

मीप्रणीतिः सुरणाउपेतयः ॥ यदीसुमित्राविशोअग्रहंघतेघतेनाहुतोजरतेदविद्युतत् ॥ घृतमग्नेर्वध्यश्वस्यवर्धनंघृतमन्नघृत
 म्वस्यमेदनं ॥ घृतेनाहुतउर्वियाविप्रथेसूर्यइवरोचतेसर्पिरासुतिः ॥ यत्तेमनुर्यदनीकंसुमित्रःसमीधेअग्नेतद्विदनवीयः ॥
 सेरेवच्छौचसगिरौजुषस्वसवाजदर्पिसइहश्रवौधाः ॥ यत्वापूर्वमीळितोर्वध्यश्वःसमीधेअग्नेसइदंजुपस्व ॥ सनस्तिपाउतभवा
 तनपादात्रंरक्षस्वयद्विदंतेअस्मे ॥ भवाद्यन्मीवाध्यश्वोतगोपामात्वोतारीदुभिमातिर्जनानां ॥ शूरइवधृणुश्ववर्नःसुमित्रःप्र
 नुवौचंवाध्यश्वस्यनाम ॥ समज्यापर्वत्याइवसूनिदासोवत्रापयार्थोजिगेथ ॥ शूरइवधृणुश्ववर्नोजनानांत्वमग्नेपुतनायूरभि
 ब्याः ॥ १ ॥ दीर्घतंतुर्बृहदुक्षायमग्निःसहस्रस्तरीःशतनीथऋभवा ॥ द्युमान्द्युमत्सुनृभिर्मज्यमानःसुमित्रेषुदीदयोदेवयत्सु ॥
 त्वेधेनुःसुदुधांजातवेदोसश्चतैवसमनासंबधुक् ॥ त्वंनृभिर्दक्षिणावह्निरग्नेसुमित्रोभिरिध्यसेदेवयद्भिः ॥ देवाश्चित्तेअमृताजा
 तवेदोमहिमानवाध्यश्वप्रवोचन् ॥ यत्संपृच्छमानुपीविशुआयन्त्वंनृभिरजयत्स्वावृधेभिः ॥ पितेवपुत्रमविभरुपस्थेत्वामग्ने
 वध्यश्वःसंपर्यन् ॥ जुषाणोअस्यसमिधयविष्टोतपूर्वावनोब्राधंतश्चित् ॥ शश्वदुग्निर्वध्यश्वस्यशत्रन्नाभिर्जिगायसुतसोमव
 द्भिः ॥ समनंचिददहश्चित्रभानोवब्राधंतमभिनद्धधश्चित् ॥ अयमग्निर्वध्यश्वस्यवृत्रहासनकालेच्छोनमसोपवाक्यः ॥ सनो
 अजामीरुतवाविजामीनृभितिष्ठशर्धेतोवाध्यश्व ॥ २ ॥ पुरुषसूक्तस्यपुरुषोनारायणोनुष्टुप् अंत्यात्रिष्टुप् तृतीयकलशेजपे ॥
 ॐ सहस्रशीर्षा ० ऋचः १६ ॥ ततःकद्रुद्रायैतिनवर्चस्यसूक्तस्यधौरःकण्वोरुद्रोगायत्री अंत्यानुष्टुप् चतुर्थकलशेजपे ॥
 ॐ कद्रुद्रायप्र ० ऋचः ९ ॥ आचार्यैर्ऋकलशे ॥ इंद्रायैदोमरुत्वतइत्येतमष्टोत्तरशतादिसंख्ययाजपित्वा ॥ इंद्रंविश्वाइत्य

हृचस्यसूक्तस्यजेतेद्रोनुष्टुप् जपे० ॥ ॐ इंद्रं विश्वा अवीवृधन्समद्रव्यं च संगिरः ॥ रथीतमं रथीनां वाजानां सत्यं तिपति ॥ सख्ये
 ते इंद्रवाजिनो माभेमशवसस्यते ॥ त्वामभिप्रणोनुमोजेता रमपराजितं ॥ पूर्वांभिर्द्रस्यरातयोनविदस्यंत्यतयः ॥ यदीवाजस्य
 गोमतोपावरद्विवोबिलं ॥ त्वां देवा अबिभ्युषस्तुज्यमाना स आविषुः ॥ त्वां हं शूररातिभिः प्रत्यायं सिंधुमावदन् ॥ त्वं वलस्य
 गिर्वणो विदुष्टे तस्य कारवः ॥ मायाभिर्द्रमायिनं त्वं शुष्णमवातिरः ॥ विदुष्टे तस्य मे धिरास्तेषां श्रवांस्युत्तिर ॥ उपातिष्ठत
 जसाभिस्तोमा अनूषत ॥ सहस्रं यस्य रातयं उत वासंति भूयसीः ॥ इत्यहर्चमिन्द्रसूक्तं जपित्वा कद्रुद्रायेति रुद्रसूक्तं जपं ब्रूयन्
 तिमृत्युं जयजपंचाष्टोत्तराष्टाविंशत्यादि संख्यया कुर्यात् ॥ ततः स्थंडिले ऽग्निं वेद्यां ग्रहांश्च प्रतिष्ठाप्या ऽन्वा दध्यात् ॥ अत्र प्रधा
 नं ग्रहानेतत्संख्याभिः समिच्चर्वाज्याहुतिभिः ॥ ततः स्थंडिले ऽग्निं वेद्यां ग्रहांश्च प्रतिष्ठाप्या ऽन्वा दध्यात् ॥ अत्र प्रधा
 योऽद्रव्यत्रयेणोक्तं संख्यं होमं कुर्यात् ॥ एतच्छोमांते इंद्रार्थे दोकश्य पइंद्रो गायत्री ॥ यत इंद्र भर्ग इंद्रो बृहती जपे० ॥ इति मंत्रद्वयज
 पांते समस्तव्याहुतिभिः तिलानष्टोत्तरशतं जुहुयात् ॥ आज्यतिलचरुशेषैः स्विष्टकृतं हुत्वा प्रायश्चित्तहोमं तं कुर्यात् ॥ ततो ब
 लिदानं लोकपालादिभ्यो ते इंद्राय क्षेत्रपालाय च ततः पूर्णाहुतिः प्रणीता विमोकः संस्थाजपश्च परित्तरणविसर्जनादिपयुक्षणां

तं ॥ ततो भार्या शिशु सहितं यजमानमासेन समुपवेश्याऽभिषेकः ॥ न हिते क्षत्रमिति दशर्चस्य सूक्तस्य शुनः शोपो वरुणस्त्रिष्टुप् ॥
 अभिषेके ॥ ॐ न हिते क्षत्रं न सहो न ० ऋचः १ ० ॥ यच्चिद्धीत्येकविंशर्चस्य सूक्तस्य आर्जगतिः शुनः शोपो वरुणो गायत्री अभिषेके ० ॥
 ॐ इदं कवेरादि ॐ इदं कवेरित्येकादशर्चस्य सूक्तस्य गृत्समदो वरुणस्त्रिष्टुप् अभिषेके ० ॥ ॐ इदं कवेरादि ॐ इदं कवेरित्येकादशर्चस्य सूक्तस्य गृत्समदो वरुणस्य भूरैः ॥ तव व्रते सुभगासः स्याम स्वा
 ॐ यच्चिद्धिते विशोय ० ऋचः २१ ॥ इदं कवेरित्येकादशर्चस्य सूक्तस्य गृत्समदो वरुणस्य भूरैः ॥ तव स्याम पुरुवीरस्य शर्मन्नु रुशंसस्य वरुणप्रणेतः ॥
 त्वस्य स्वराजो विश्वो निसांत्यभ्यस्तुमहा ॥ अतियोमंद्रो यजथायेदुवः सुकीर्तिभिर्क्षेवरुणस्य भूरैः ॥ तव स्याम पुरुवीरस्य शर्मन्नु रुशंसस्य वरुणप्रणेतः ॥
 ध्यो वरुणतुष्टुवांसः ॥ उपाय न लुषसांगो मतीनामग्नयो न जरमाणा अनुद्यन् ॥ तव स्याम पुरुवीरस्य शर्मन्नु रुशंसस्य वरुणस्य भूरैः ॥ तव स्याम पुरुवीरस्य शर्मन्नु रुशंसस्य वरुणप्रणेतः ॥
 ययनः पुत्रा अदितेरदब्धा अभिक्षमध्वं युज्याये देवाः ॥ प्रसीमादित्यो असृजद्विधत्तं क्रतुं सिंधवो वरुणस्य यति ॥ न श्राम्यंति न
 विमुचंत्येते वयो न पसू रघुया परिजमन् ॥ विमच्छंथाय रशना मिवागं क्रुध्यामते वरुणस्वामतस्य ॥ मातं तु इच्छेद्विवयं तो धियं मे मा
 मात्रा शार्यपसः पुरऋतोः ॥ १ ॥ अपो सुगम्यं क्षवरुणभियं संमत्संम्राळतावो नुमा गृभाय ॥ दामेव वत्सा द्विमुग्धं ह्येन हित्व द्वा
 रे निमिषश्चनेशे ॥ मानो वधैर्वरुणयेते इष्टावेनः कृण्वंतं मसुरभ्रीणंति ॥ माज्योतिषः प्रवसथानि गन्म विपूमृधः शिश्रथो जीवसे
 नः ॥ नमः पुरातै वरुणो तन नमता पुरंतु विजात ब्रवाम ॥ त्वेहि कं पर्वते न श्रितान्य प्रच्युतानि दूळ भव्रतानि ॥ परं ऋणासावीरध
 मत्कृतानि माहं रजन्नन्य कृतेन भोजं ॥ अब्युष्टा इक्षुभूर्यसीरुषास आनो जीवान्वरुणता सुशधि ॥ यो मे राजन्युज्यो वास स्वावा
 स्वमेभ्यं भीरवे मह्यमाहं ॥ स्तेनो वायो दिप्सति नो वृको वा त्वं तस्माद्वरुण पाह्यस्मान् ॥ माहं मघो नो वरुण प्रियस्य भूरि दान्ना आ
 विदं शूनं मापेः ॥ मारा यो राजन्सुयमादवस्थां बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ २ ॥ ऋचः ११ ॥ समुद्रज्येष्ठा इति च तसृणां वसिष्ठ

आपस्त्रिष्टुप् अभिषेके० ॥ ॐ समुद्रज्येष्ठाःसलिलस्य० ऋचः ४ ॥ इमंमेवरुणेत्यस्यशुनःशेषोवरुणोगायत्री अभिषेके० ॥
 ॐ इमंमेवरुण० ऋक् ॥ द्यौःशांतासादित्येनशांतेति० पृथिवीशांतिरंतरिक्षंशांतिरिति० तथाहंशांत्येतियाजुषमंत्रैश्च
 त्रिभिरभिषिक्तोयजमानःपत्न्यासहस्रकृत्वस्त्रचंदनकुसुमानिधृतत्वारूपंरूपमितिचित्रंदेवानामितितच्चक्षुरितिमंत्रैरवलोकितमा
 ज्यंसदक्षिणंब्राह्मणायदत्वाइंद्रपुरोभागेस्थित्वागंधादिपंचोपचारैःसंपूज्य आचमनतांवूलेनिवेद्यगंधपुष्पफलयुक्तमर्घ्यंनिवेद
 येत् ॥ मंत्रः ॥ नमस्तेसुरनाथायनमस्तुभ्यंशचीपते ॥ गृहाणार्घ्यमयादत्तंगंडदोषप्रशांतयेइति ॥ ततआचार्यायिसुशीलांप
 यस्विनीरक्वर्णासवत्सांहेमश्रृंगादिसर्वालंकारभूषितांगांगोदानविधिनादद्यात् ॥ मंत्रेविशेषः ॥ यक्षगंधर्वसिद्धैश्चपूजितो
 सिशचीपते ॥ दानेनानेनदेवेशगंडदोषंप्रशामयेति ॥ अस्यागोर्दक्षिणत्वान्नदक्षिणांतरम् ॥ ततोष्टोत्तरशतब्राह्मणान्भोज
 येत् ॥ तेभ्योयथाशक्तिदक्षिणांदत्वाप्रणिपत्यक्षमध्वममापराधानितिक्षमार्घ्येद्रंप्रार्थयेत् ॥ अज्ञानादथवाज्ञानाद्भैकल्याद्वा
 धनस्यच ॥ यन्नयूनमतिरिक्तंवातत्सर्वंक्षंतुमर्हसिइति ॥ आचार्यहस्तेसोपस्करांप्रतिमांदत्वाऽग्निंसंपूज्यविभू
 तिंधृत्वागच्छगच्छेतितंविसृज्यज्येष्ठाशांतिसुकृतंयन्मयालब्धंतेनदेवेंद्रनामेश्वरःप्रीयतामिति ॥ इतिज्येष्ठाशांतिविधिः ॥

॥ १६८ ॥ अथकृष्णचतुर्दशीजननशांतिः ॥

श्रीः ॥ कर्ताआचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यअस्यशिशोःकृष्णचतुर्दश्याअमुकांशजननसूचितसर्वारिष्टनिरसनद्वारा
 श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थसग्रहमखांगर्गोक्तांकृष्णचतुर्दशीजननशांतिकरिज्ये ॥ तदंगत्वेनगणपतिपूजनंस्वस्तिपुण्याहवाचनंआचा

धीं त्विग्वरणं च करिष्ये ॥ वृतानां पूजनं ॥ अद्भ्युत्तारणं ॥ आचार्यः कर्मकरिष्ये इति संकल्प्य ॥ यदत्र संस्थितमित्यादि स्व
 स्त्ययनं ताक्षर्यमित्येतं स्थंडिलपूर्वभागे महीद्वौरित्यादि मंत्रावृत्त्या पदार्थानुसमयेन मध्ये शतच्छिद्रं तस्य आग्नेय्यादिविद्विचतु
 रः कलशांश्च स्थाप्य शतच्छिद्रे स्योनापृथिवी तिसप्तमृदः अश्वत्थे वइति पंचपल्लवान् सहिरलानीति पंचरत्नानि रुवतिभीमेति पं
 चत्वचः ओषधयः समितिपंचधान्यानि हिरण्यरूपइति सुवर्णं या औषधीरिति सर्वा षधीः शतावरी निक्षिप्य युवासुवासा इति
 श्वेतवस्त्रैः श्वेतपुष्पैश्च संवेष्ट्य पूर्णादर्वीति पूर्णपात्रनिधानं ते रुद्रप्रतिमां कर्षतर्धतर्धान्यतरपरिमितहेमनिर्मितां वराभयां कित
 हस्तद्वयां वृषभारूढां स्थापयित्वा त्र्यंबकं वसिष्ठो रुद्रो नुष्टुप् रुद्रावाहने विनि० ॥ ॐ त्र्यंबकं यजामहे० ऋक् १ ॥ शुद्धस्फटि
 कं संकाशं श्वेतमाल्यांबरावृतं तंध्यात्वा एकादशिन्यभिषेकघटितो पचारैरुद्रं संपूज्य आग्नेय्यादिचतुर्षुकलशेषु इमं मे गंगे इत्यपः
 गंधद्वारामिति गंधमोषधयइति यवान् अश्वत्थे वइति पंचपल्लवान् कांडात्कांडादिति दूर्वाः सहिरलानीति पंचरत्नानि हिरण्य
 रूपइति हिरण्यं याः फलिनीरिति फलम् युवासुवासा इति वस्त्रवेष्टनं पूर्णादर्वीति पूर्णपात्रनिधानं एतावत्कांडानुसमयेन कृत्वा
 आग्नेयंकुंभे इमं मे वरुणइति सर्वसमुद्रा इति च समुद्रादिसहितं वरुणमावाहयेत् ॥ इमं मे वरुणशुनः शेषो वरुणो गायत्री वरुणावाह
 ने वि० ॥ ॐ इमं मे वरुणश्रुधीहवमद्या च मृळ्य ॥ त्वामवस्युराचके ॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्वरुणाय नमः वरुणमावाहयामीति समु
 द्रादिसहितं वरुणं संपूज्य उत्तरकलशेष्वपि समुद्रानावाह्यनदीसहितं वरुणपूजने क्रमेण तत्त्वायामित्वं नो अग्ने सत्वं नो अग्ने इत्याद
 यो मंत्राः ॥ नैर्ऋते तत्त्वायामिशुनः शेषो वरुणस्त्रिष्टुप् ॥ ॐ तत्त्वायामि० ॥ वायव्ये ॥ त्वं नो अग्ने इत्यस्य वामदेवो वरुणस्त्रिष्टुप् ॥

॥२३५॥

॥१६८॥
कु.स.सं.

112311

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

त्वाकृतं कर्म रुद्रार्पणं कृत्वा आचार्याथ वस्त्रमु
नां पूजनविसर्जने आचार्यहस्ते प्रतिपादनं च अग्नेः पूजनविसर्जनयथाशक्तिः ॥
॥ १६९ ॥ अथ सिनीवाली छुहूजननशांतिः ॥ वे
नां पूजनविसर्जने सिनीवालीजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्री

॥ १६९ ॥ अथासौ गतः ॥ कुहूजननेकुहूजननसूचितत्यूहः ॥
पूजनविसर्जन आचार्यः ॥ कुहूजननेकुहूजननसूचितत्यूहः ॥
श्रीः ॥ कर्ता आचम्य प्राणाना यम्य देशकालौ निर्दिश्य अस्य शिशोः सिनीवाली जननसूचि तत्यूहः ॥ कुहूजननेकुहूजननसूचितत्यूहः ॥
त्यर्थं सिनीवाली जननशांतिं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य गणेशपूजनाद्याचार्यवरणांतं कुर्यात् ॥ स्थंडिलपूर्वभागे विद्विषु आ
ध्वज्यरहितो दर्शः ॥ तत आचार्यः सर्षपविकिरणादिप्रार्थनांतं कृत्वोक्तप्रतिमानामभ्युत्तारणं कृत्वा स्थंडिलपूर्वभागे विद्विषु आ
ग्नेयीमारभ्य महीद्वौरित्यादि मंत्रैः पदार्थानुसमयेन चतुरः कुंभानासाद्य मध्ये शतच्छिद्रं संस्थाप्य चतुर्षु जलसेचनगंधक्षेपांते तत्स
वितुरित्यादिभिः पंचगव्यानि स्योनापृथिवीतिसप्तमृदः सहिरत्वानीति पंचरत्नानि रुवतिभीमेति पंचत्वचः ओषधयः संवदंत इ
तिसप्तधान्यानि हिरण्यरूप इति हिरण्यं प्रक्षिप्य ॥ पंचस्वपिपूर्णादवीति पूर्णपात्रनिधानां ते मध्यमे यथाशक्ति निर्मिता मुक्कल
क्षणं रुद्रप्रतिमां निधाय ॥ त्र्यंबकं वसिष्ठो रुद्रो नुष्टुप् रुद्रावाहने वि० ॥ ॐ त्र्यंबकं यजा० ॥ इति मंत्रेण रुद्रं श्वेतगंधपुष्पादि
भिः संपूज्य तद्दक्षिणतो ॥ यत इंद्रेति भर्ग इंद्रो बृहती इन्द्रावा० ॥ ॐ यत इंद्रभया महूततो नो अभयं कृधि ॥ मघवन् छग्धि तव त
ऊतिभिर्विद्विषो विमृधोजहि ॥ ॐ भूर्भुवः ॥ इति इंद्रं संपूज्य ॥ ये चेहेति शंखः पितरस्त्रिष्टुप् पित्रावा० ॥ ॐ ये चेह पितरो ये च
हवांश्च विद्मर्योऽबुचनप्रविद्म ॥ त्वं वै त्वयति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञं सुकृतं जुषस्व ॥ ॐ भूर्भुवः ॥ इत्युत्तरतः पितृनावाह्यं संपूज्य

चतुर्भुक्तुंभेषुवरुणंसंपूज्य आनोभद्राइतिपठेद्वेदी ॥ यजुर्वेदीनमोवाचइति ॥ गवामंगेष्वितिगांदद्यात् ॥ शरण्यंसर्वलोका
नांलज्जायारक्षणंपरं ॥ सुवेषधारिवस्त्रत्वमतःशांतिंप्रयच्छमेइतिवस्त्रम् ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थमितिसुवर्णम् ॥ सर्वभूताश्रया
भूमिर्वराहेणसमुद्धृता ॥ अनंतसस्यफलदाअतःशांतिंप्रयच्छमेइतिभूमिं ॥ ततोदशदानानि गोभूतिलहिरण्याज्यवासोधा
न्यंगुडानिच ॥ रौप्यंलवणमित्याहुर्दशदानानिपंडिताः ॥ गांभुवंचोक्तमंत्राभ्यांपुनर्दत्वातिलान्दद्यात् ॥ महर्षेर्गोत्रसंभूताः
कश्यपस्यतिलाःस्मृताः ॥ तस्मादेषांप्रदानेनममपापंव्यपोहत्विति ॥ उक्तमंत्रेणपुनर्हिरण्यंदत्वाज्यंदद्यात् ॥ कामधेनुषुसंभू
तंसर्वक्रतुषुसंस्थितम् ॥ देवानामाज्यमाहारमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ उक्तमंत्रेणवासःपुनर्दत्वाधान्यंदद्यात् ॥ सर्वदेवमयंधान्यं
सर्वोत्पत्तिकरंमहत् ॥ प्राणिनांजीवनोपायमतःशांतिंप्रयच्छमेइति ॥ यथादेवेषुविश्वात्माप्रवरश्चजनार्दनः॥सामवेदस्तुवेदानां
महादेवस्तुयोगिनाम् ॥ प्रणवःसर्वमंत्राणांनारीणांपार्वतीयथा ॥ तथारसानांप्रवरःसदैवेक्षुरसोमतः ॥ ममतस्मात्परांशातिं
ददस्वगुडसर्वदेतिगुडम् ॥ प्रीतिर्यतःपितृणांचविष्णुशंकरयोःसदा ॥ शिवनेत्रोद्भवंरूप्यमतःशांतिंप्रयच्छमेइतिरूप्यम् ॥
यस्मादन्नरसाःसर्वेनोत्कृष्टालवणंविना ॥ शंभोःप्रीतिकरंनित्यमतःशांतिंप्रयच्छमेइतिलवणम् ॥ इतिदशदानानि ॥ ततः
क्षीरंदद्यात् ॥ क्षीरजातास्तथाशंखाःक्षीरादमृतसंभवः ॥ क्षीरात्क्षीरोदवत्कीर्तिःक्षीरेप्राणस्यसंभवः ॥ तस्मात्क्षीरप्रदा
नेनअतःशांतिंप्रयच्छमेइति ॥ आज्यगुडावुक्तमंत्राभ्यांपुनर्दत्वाज्यपूर्णैकांस्यपात्रेरूपंरूपमितिसहकुडुंबःप्रतिरूपंवीक्ष्यदद्या
त् ॥ आज्यंतेजःसमुद्दिष्टमाज्यंपापहरंस्मृतम् ॥ आज्यंसुराणामाहारआज्येदेवाःप्रतिष्ठिताइति ॥ आचार्योग्निंप्रतिष्ठाप्यग्र

हानावाह्यसंपूज्यान्वाधानंकुर्यात् ॥ चक्षुषीआज्येनेत्यंतेऽन्नप्रधानम् ॥ ग्रहानर्कादिसमिदाज्याहुतिभिःविवक्षितसंख्याभिः ॥
 त्र्यंबकंअश्वत्थप्लक्षपलाशखदिरसमिदाहुतिभिः प्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्याभिराज्याहुतिभिश्चर्वाहुतिभिः सर्षपतिलमाषाहु
 तिभिश्चप्रत्येकंतावतीभिः इंद्रंपितृंश्चप्रत्येकमष्टाविंशतिसंख्याभिरष्टसंख्याभिवोक्तद्रव्याहुतिभिः रुद्रंत्र्यंबकमितिमंत्रेण२८
 वा ८ तिलाहुतिभिः प्रजापतिं२८ वा ८ तिलैः शषेणेत्यादियथान्वाधानंत्यागेकृतेप्रायश्चित्तहोमंतेबलिदानम् ॥ मूर्धानमि
 तिपूर्णाहुतिश्च ॥ ततोग्रहकुंभसहितचतुःकुंभजलयुतशतच्छिद्रेणमातृपितृशिश्नुनामभिषेकःतत्त्वायामीतित्रिभिरेषांशुनःशे
 पोवरुणस्त्रिष्टुप् अभिषेके० ॥ ॐ तत्त्वायामि० ॥ तदिन्नक्तंतद्विवाह्यमाहुस्तद्वयंकेतोहृदआविचष्टे ॥ शुनःशेपोयमहृद्भृ
 भीतःसोअस्मान् राजावरुणोमुमोक्तु ॥ शुनःशेपोह्यहृद्भृभीतस्त्रिष्वोदित्यंष्टुपदेष्टुबद्धः ॥ अवैनंराजावरुणःससृज्याद्विद्धोअद
 ब्धोविमुमोक्तुपाशान् ॥ इत्यादिभिरभिषिच्य ॥ ततोविभूतिधारणांतेषोडशोपचारैरुद्रस्यतरेषांपंचोपचारैःपूजनम् विसृज्य
 ताःप्रतिमाआचार्यहस्तेप्रतिपाद्याऽग्निंसंपूज्यविसृज्ययथाशक्तिद्विजानुज्ञयाब्राह्मणानन्यांश्चांधपंगवादीन्भोजयेदिति ॥ इति

॥ १७० ॥ अथदर्शनजज्ञनशांतिः ॥

श्रीः ॥ कर्ताकृतनित्यक्रियःपवित्रपाणिःसपत्नीकःस्वासनेउपविश्यदेशकालसंकीर्तनांते अस्यबालस्यदर्शनजनसूचितसर्वारि
 ण्निरसनद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंदर्शनजनशांतिकरिष्ये ॥ अखंडाऽमाजननेइत्थंसंकल्पः ॥ अमायाःखंडतिथित्वेउत्तरवि
 द्धामाजननेकुहूजननशांतिकरिष्येइतिसंकल्पेविशेषः ॥ ततोगणेशपूजनपुण्याहवाचनाचार्यत्विग्वरणाचार्यादिपूजनानिकु

र्यात् ॥ ततआचार्योयदत्रसंस्थितमित्यादिस्वस्त्यनन्ताक्षर्यमितिप्रार्थनान्तंकुर्यात् ॥ ततःकुंडात्स्थंडिलाद्वापूर्वसर्वतोभद्रपार्थासंस्थलमतिक्रम्यमहीर्घौरित्यादिनाकुंभस्थापनादिजलसेचनान्तंकृत्वा तत्रआप्यायस्वेत्यादिमंत्रैःक्षीरदधिघृतानिप्रक्षित्वेवइति पंचरत्नानिसहिरत्नानीतिनिक्षिप्य युवासुवासाइतिवस्त्रयुग्मेनावेष्ट्य ॥ सर्वसमुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदानश्वआयांतुयजमानस्यदुरितक्षयकारकाः ॥ इतिसमुद्रादिदेवतासहितंवरुणमावाह्यसंपूज्यकलशोदकं आपोहिष्ठेतिवृत्तेनकयानश्चित्रइत्युच्चार्यत्किंचेदमितिसमुद्रज्येष्ठाइतिचक्रभ्यांअभिमन्त्र्य ॥ तत्पश्चिमेअग्नेःपूर्वभागेकृष्णनीलरक्तादिवर्णतंडुलैःयथोचितंपूरितंशृंखलावल्लीभद्रादिगर्भसर्वतोभद्रंसंवत्सरकृत्यांतर्गतानंतव्रतोद्यापनोक्तीत्याकृत्वा तत्रब्रह्मादिप्रसिद्धदेवतापूजांयस्व० ऋक् १ ॥ सवितापश्चातादितिनाभागःसवितात्रिष्टुप् सूर्यावाह० ॥ ॐ सवितापश्चातात् ॥ ॐ आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री सोमावाहने० ॥ ॐ येचेहपितरो० १ दक्षिणतः रजतत्रयंसंपूज्याऽग्निंप्रतिष्ठाप्यसर्वतोभद्रस्यैशान्यांग्रहप्रतिष्ठापनादिवरुणपूजांतंकृत्वाऽन्वादध्यात् ॥ ऋक् १ ॥ ततोदेवतात्यादिग्रहान्चिकीर्षितसंख्याभिःसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः पितृनष्टाविंशतिसंख्याकाभिःसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः सोमंसूर्यचम्रत्येकंअष्टोत्तरशतसंख्याकाभिस्तदाहुतिभिः शेषेणस्विष्टकृतमित्यादि ततःआज्येनसहचरोःपर्यग्निकरणादिकालेकुर्यात् ॥

आज्यभागांते आयुरारोग्यमिति मंत्राभ्यां यजमानेन होमसंकल्पपूर्वकं त्यागे कृते सत्विगाचार्यः प्रधानहोमं कुर्यात् ॥ तदंते स्विष्ट
 कृतः पूर्वं हिरण्यवर्णं मिति आयुष्यं चर्चस्यमि (त्येकादश चर्चस्यसनकादयो हिरण्यमनुष्टुपं च म्यष्टमी नवमी च त्रिष्टुभः सप्तमी शक्र
 र्थत्याजगती) तिसूक्ताभ्यां समुद्रज्येष्ठा इत्युच्चा च सवालौ पितरावभिषिच्य स्विष्टकृदादि कुर्यात् ॥ ततो बलिदानपूर्णाहुती कृ
 त्वा होमशेषं समापयेत् ॥ ततो यजमानः हिरण्यरजते सदक्षिणां कृष्णां धेनुं च आचार्याय दत्वा त्रः त्विगम्य श्रयथा शक्तिदक्षिणां द
 त्वा स्थापिते देवतोत्तरपूजा विसर्जने कृत्वा प्रतिमां आचार्याय प्रतिपाद्य अग्निं संपूज्य विसृज्य शांतीः पाठयित्वा ब्राह्मणान् भोजयि
 त्वा तेभ्यो दक्षिणादानां तस्वस्ति भवंतो ब्रुवंत्विति वाचयेत् ॥ ते च स्वस्तीति वदेयुः ॥ इति दशजननशांतिः ॥ ४३ ॥

त्वा स्थापिते देवतोत्तरपूजा विसर्जने कृत्वा प्रतिमां आचार्याय प्रतिपाद्य अग्निं संपूज्य विसृज्य शांतीः पाठयित्वा ब्राह्मणान् भोजयि
 त्वा तेभ्यो दक्षिणादानां तस्वस्ति भवंतो ब्रुवंत्विति वाचयेत् ॥ ते च स्वस्तीति वदेयुः ॥ इति दशजननशांतिः ॥

॥ १७१ ॥ अथ व्यतीपातसंक्रमणजननशांतिः ॥

श्रीः ॥ गोमुखप्रसवमुक्तविधिना कृत्वा देशकालौ संकीर्त्याऽस्य शिशोर्व्यतीपातजनमसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वर
 प्रीत्यर्थं व्यतीपातशांतिकरिष्ये इति संकल्प्य ॥ गणेशपूजनाद्युक्तलक्षणाचार्यवरणं कुर्यात् ॥ वृताय तस्मै पट्टवस्त्रयुगं कुंडलयुगं
 गुलीयकं च दद्यात् ॥ आचार्यो यदत्र संस्थितमिति सर्षपविकिरणं शुचीव इति पंचगव्येन आपो हिष्ठेत्यग्निश्च गृहपूर्वदिग्भागं प्रोक्ष्य
 स्वस्त्ययनं तार्क्ष्यमिति मंत्राभ्यां प्रार्थ्य तत्रैव गोमयलिष्टेरंगवल्ल्या द्यलं कृते समदेशे महीद्यौरिति भुवमभि मृश्य ओषधयः समिति
 पंचद्रोणपरिमितत्रीहिराशिं कृत्वा तदुपरि सार्धद्रोणमितं तुलराशितदुपरि सपादद्रोणमितं तिलराशिं च कृत्वोपरि भागं समं या
 कृत्वा तत्राऽष्टदलं कृत्वा आकलशेष्विति तत्राऽब्रणं कुंभं प्रतिष्ठाप्य इमं मे गे इति तीर्थोदकेनापूर्यस्योनापृथिवीति सप्तमृदः या

ओषधीरितिसर्वौषधीरश्वत्थेवइतिपंचपल्लवान् गायत्र्यागंधद्वारामाप्यायस्वदधिक्राव्यः शुक्रमसीतिपंचगव्यानि गंधद्वारा
 मितिगंधंसहिरत्वानीतिपंचरत्नानितत्रनिक्षिप्य वस्त्रयुग्मेनावेष्ट्यतदुपरिसूक्ष्मवस्त्रयुतंपूर्णपात्रंपूर्णाद्वोतिनिधायतदुपरिनि
 ष्कतदर्धतदर्धान्यतरमानेनहेमनिर्मितांसूर्यप्रतिमांनिधायतत्रसूर्यमावाहनाद्युपचारैः पूजयेत् ॥ व्याहृतीनांपरमेष्ठीप्रजापतिः
 प्रजापतिर्बृहतीउत्सूर्यइतिमंत्रस्यमैत्रावरुणिवसिष्ठःसूर्यस्त्रिष्टुप् पूजनेवि० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः उत्सूर्योबृहदूर्चो० ऋक् १ ॥ त
 दक्षिणतोन्निमावाहयेत् ॥ अग्निदूतंकाण्वोमेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्निपूज० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः अग्निदूतं० ऋक् १ ॥ त
 रतोरुद्रमावाहयेत् ॥ त्र्यंबकंवसिष्ठोरुद्रोनुष्टुप् रुद्रपू० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः त्र्यंबकंयजामहे० ऋक् १ ॥ उत्त
 संक्रांतिशांतिकरिष्यइतिसंकल्पेविशेषः ॥ व्यतीपातसंक्रमणयोजन्मनितुव्यतीपातसंक्रांतिशांतीतंत्रेणकरिष्येइतिसंकल्पः ॥
 तिस्रोदेवताः षोडशोपचारैः वस्त्रयुग्मसहितैः पंचोपचारैर्वसंपूज्यगंधपुष्पाद्यर्चितेफलेनैवेद्यंसमर्प्यप्रधानप्रतिमांस्पृशन्सर्वसौर
 मंत्रान्जपेत् ॥ उदुत्यमितित्रयोदशर्चस्यसूक्तस्यकाण्वः प्रस्कण्वोनवाद्यागायत्र्योत्याश्चतस्रोनुष्टुभः ॥ चित्रं देवानामितिषळ्व
 स्वसूक्तस्यआंगिरसः कुत्सस्त्रिष्टुप् ॥ इद्रं मित्रमितिद्वयोरौचथ्योदीर्घतमास्त्रिष्टुप् ॥ हंसः शुचिषदित्यस्यगौतमोवामदेवोजगती ॥
 यत्त्वासूर्येत्यस्यात्रिरनुष्टुप् ॥ यदद्यसूर्येत्येकस्याउत्सूर्यइतिसृणांउद्धेतीतिसार्धचतसृणां उदुत्यदर्शतमितितिसृणांमैत्रावरु
 णिर्वसिष्ठः उदुत्यदर्शतमितिबृहतीशीर्णः शीर्णः सतोबृहतीतच्चक्षुरितिपुरउष्णिक् ॥ वण्महोअसीतिद्वयोर्भागवोजमदग्निः
 पूर्वार्बृहतीउत्तरासतोबृहती ॥ नमोमित्रस्येतिद्वादशर्चस्यसूक्तस्याभितपाः सूर्योजगतीदशमीत्रिष्टुप् ॥ सूर्योनोदिवइतिपंच

र्चस्यसूक्तस्यसौर्धश्चक्षुर्गायत्री ॥ विभ्राड्बृहदितिचतसृणांसौर्धोविभ्राड्जगती विभ्राजमितिप्रस्तारपंक्तिः ॥ आयंगौरिति
 तृचस्यसर्पराज्ञीगायत्री ॥ सर्वेषांसूयोदेवता जपेवि० ॥ ततोरुद्रप्रतिमांस्पृशन्मृत्युंजयमंत्रमष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतमष्टा
 विंशतिवारंवाजपेत् ॥ ततश्चत्वारऋत्विजश्चतुर्दिक्षुकुंभंस्पृष्ट्वाक्रमेणसूक्तानिजपेयुः ॥ पूर्वस्याम् आनोभद्राइटिसूक्तस्वराहूग
 णोगोतमऋषिः विश्वेदेवादेवताआद्याःपंचसप्तमीचजगत्यःषष्ठीविराट्स्थानाशेषास्त्रिष्टुभः जपेवि० ॥ ॐ आनोभद्राः०
 ऋचः १० दक्षिणस्याम् भद्राअग्नेरितिद्वादशर्चस्यवाइयश्चःसुमित्रऋषिः अग्निदेवताआद्येद्वेजगत्यौअंत्यास्त्रिष्टुभः जपे
 वि० ॥ ॐ भद्राअग्नेर्वैद्यश्चस्य० ऋचः १२ ॥ प्रतीच्यांसहस्रशीर्षेतिषोडशर्चस्यसूक्तस्य नारायणऋषिःपुरुषोदेवताजपे
 वि० ॥ ॐ सहस्रशीर्षा० ऋचः १६ ॥ उत्तरस्याम् त्र्यंबकंवसिष्ठोरुद्रोनुष्टुप् जपेवि० ॥ ॐ त्र्यंबकंयजा० ॥ अथकुंभप
 श्चिमदेशेस्थंडिलेऽग्निंस्वगृह्योक्तविधिनाप्रतिष्ठाप्यकुंभस्योत्तरतोऽग्रहाणामावाहनादिपूजांकृत्वा तदीशान्यांकलशस्थापनंकृ
 त्वाऽग्नेःपश्चिमतउपविश्यान्वादध्यात् ॥ चक्षुर्षीआज्येनेत्यंतेऽत्रप्रधानम् ॥ आदित्यादिग्रहांश्चिकोषितसंख्याकाभिःअर्का
 दिजातीयसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः ॥ ग्रहपीठदेवताअमुकसंख्याभिःसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः ॥ सूर्यप्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्या
 भिःसमिदाज्यचर्वाहुतिभिः ॥ अग्निरुद्रंचप्रत्येकमष्टाविंशतिसंख्याभिस्तदाहुतिभिः ॥ मृत्युंजयअष्टोत्तरशतसंख्याभिस्ति
 लाहुतिभिः ॥ शंषेणेत्यादि०प्रायश्चित्ताहुत्यंतेबलिदानंततःपूर्णहुतिःप्रणीताविमोकःसंस्थाजपेनोपस्थानंचततोद्धृतनूतनव
 स्त्रयोर्दपत्योःसवालयोरभिषेकः ॥ समुद्रज्येष्ठाइतिचतसृणांवसिष्ठआपस्त्रिष्टुप् अभिषेके० ॥ आपोहिष्ठेति०सिंधुद्वी
 पआपोगायत्री अभिषेके० ॥ अक्षीभ्यांतइतिषण्णांविवृहायक्ष्महानुष्टुप् अभिषेके० ॥ स्वादिष्ठयेतिदशानांमधुच्छंदाःपव

मानसोमोगायत्री अभिषेके० ॥ ॐ उत्सूर्यो० अग्निदूतं० त्र्यंबकं० पूजाकाले लक्ष्मणमृष्यादि ॥ सुरास्त्वामभिषिंचन्ति
त्यादिपौराणमंत्रैश्चाभिषेकांतेऽभिषेकवासआचार्याय समर्पयेत् सपत्नीकः श्वेतवस्त्रचंदनादि धृतवाभूषणमालादिनालंकृत्य
आज्यमवेक्ष्य तस्यांत्रं सक्षिणं ब्राह्मणाय दत्वा वस्त्रहेमांगुलीयकैः आचार्यं संपूज्य व्यतीपातजननदोषशांत्यर्थं गोवस्त्रस्वर्णानि तु
भ्यं संप्रददेइति आचार्याय तानि दत्वा तदर्थं प्रच्छादनपटं तथैव दद्यात् ॥ ऋत्विग्भ्यो यथाशक्ति दक्षिणां दत्वा दीनांधकृपणेभ्यो भू-
यसीं दत्वा शतं ब्राह्मणान् ऋत्विग्भिः सह मिष्टान्नैर्भोजयित्वा कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा बंधुभिः सह भुंजीते तिव्यतीपातसंक्रांतिं शांतिः ॥

॥ १७२ ॥ अथ वैष्टुतिजननशांतिः ॥

श्रीः ॥ वैष्टुतिशांतौ तु संकल्पे वैष्टुते रुद्धे स्वः ॥ आवाहने मध्ये सव्याहुतिके न त्र्यंबकमिति मंत्रेण रुद्रमावाह्य दक्षिणे उत्सूर्यो बृहद्
चीर्षीति सूर्यं उत्तरतश्चाप्यायस्वेति सोममावाह्य पूजनम् ॥ रुद्रप्रतिमां स्पृष्ट्वा मृत्युं जयमंत्रमष्टोत्तरशतमष्टाविंशति
वारं वाजपः ॥ सूर्यप्रतिमां स्पृष्ट्वा सवर्षसौरजपः ॥ सोमप्रतिमां स्पृष्ट्वा आप्यायस्वेति जपः ॥ अन्वाधाने रुद्रं समिच्चर्वाज्यैः प्रत्येक
मष्टोत्तरशतसंख्याहुतिभिः ॥ सूर्यसोमौ प्रत्येकमष्टाविंशतिसंख्याभिस्तदाहुतिभिः ॥ मृत्युं जयमष्टोत्तरसहस्रशतविंशत्यन्य
तरसंख्याभिस्तिलाहुतिभिः ॥ शेषेणेत्यादितथैव होमः कार्य इति विशेषः ॥ अंते कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् ॥ इति वैष्टुतिशांतिः ॥

॥ १७३ ॥ अथ भद्राजननशांतिः ॥

श्रीः ॥ कर्ता उक्तकाले गोमुखप्रसवं कृत्वा देशकालौ संकीर्त्य अस्य शिशोः भद्राजननसूचितसकलारिष्टपरिहारद्वारा० सग्रहमखां

गर्गोक्तांशांतिक० इतिसंकल्प्यगणेशपूजनादिनांदीश्राद्धांतेआचार्यादीन्वृणुयात् ॥ ततअचार्यःप्रादेशकरणांतेगृहस्यपूर्वभा
 मेस्थंडिलात्माच्यांमहीद्यौरित्यादिमंत्रावृत्त्यामध्येएकंपूर्वादितिद्विचतुरइत्येवंपंचकुंभान्संस्थाप्य तत्रजलपूर्णादिपूर्णपात्रानि
 धानांतेप्रतिमासुदेवताआवाहयेत् ॥ मध्यकुंभे भद्राअग्नेःसुमित्रोभद्राजगती ॥ भद्रावा० ॥ इतिभद्रां ॥ पूर्वेआकृष्णेन
 रजसा० इतिसूर्ये ॥ दक्षिणे कद्रुद्रायकण्वोरुद्रोगा० इतिरुद्रं ॥ पश्चिमे गणानांत्वागृत्समदो० इतिगणपतिं ॥ उत्तरे ऋ
 षभंमाऋषभऋषभोनुष्टुप् इतिऋषभंचावाह्यसर्वान्संपूज्यपुष्पमालादिभिःकलशान्भूषयित्वाग्निग्रहांश्चप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात्
 ग्रहोत्कीर्तनांते भद्रां सूर्यं रुद्रं गणपतिं ऋषभंचैताःप्रधानदेवताःसमिच्चर्वाज्यतिलैःप्रत्येकंप्रतिद्रव्यंअष्टोत्तरसहस्राष्टोत्तरश
 ताष्टाविंशतिसंख्याकाभिर्वाहुतिभिः शेषेणेत्यादिप्रायश्चित्तहोमांतेबलिदानंपूर्णहुतिंचकृत्वासंस्नावहोमादिशेषंसमाप्य धृ
 तनववस्त्रंपत्नीशिशुसहितंयजमानं समुद्रज्येष्ठाइत्यादिवारुणैर्ग्रहादिमंत्रैश्चाभिर्धिचेत् ॥ ततोयजमानोधृतनवशुक्लांवरोभिषे
 कवस्त्रमाचार्यायदत्त्वाविभूतिंघृत्वोत्तरपूजांकृत्वाचार्यंसंपूज्यतस्मैगांपीठंचदत्वानिरीक्षिताज्यंदत्वा ब्राह्मणभोजनंसंकल्प्यभू
 यसींदत्वाशिषोगृहीत्वाकर्मसमापयेत् ॥ इतिभद्राजननशांतिः ॥ १७४ ॥

॥ १७४ ॥ अथाधोमुखजननशांतिः ॥
 असींदत्वाशिषोगृहीत्वाकर्मसमापयेत् ॥ इतिभद्राजननशांतिः ॥

श्रीः ॥ जन्मतोद्वादशाहेजन्मनक्षत्रेन्यसिन्वाशुभदिनेकर्तागोमुखप्रसंवंकृत्वादेशकालौसंकीर्त्य अस्यशिशोःअधोमुखजनन
 सूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वारा श्रीप० सग्रहांबृहच्छौनकोक्तांशांतिकरिष्यइतिसंकल्प्यगणेशपूजादिऋत्विग्वरणांतंकुर्यात् ॥

अत्रऋत्विजश्चत्वारः ॥ ततो गृहस्यैशानभागे स्थंडिलं कृत्वा आचार्यः प्रादेशांते तत्पूर्वभागे महीधौरित्यादि स्थापित कलशे पूर्णपात्रे सुवर्णप्रतिमायां त्र्यंबकं वसिष्ठो० इति रुद्रमावाह्यवस्त्रादिभिः संपूज्याग्निग्रहांश्च प्रतिष्ठापयेत् ॥ तत एकऋत्विक् रुद्रकुंभं स्पृष्ट्वा चत्वारिरुद्रसूक्तानि मंत्रचतुष्टयसहिता निष्कादशवारं रुद्रं वा जपेत् ॥ तत आचार्यो न्वाधाने ग्रहोत्कर्तनांते रुद्रं प्रधानं समिदाज्यतिलचरुभिः प्रतिद्रव्यं अष्टोत्तरसहस्राहुतिभिः १०८।२८ वाशेषेणेत्यादि प्रणीता प्रणयनांते तूष्णीं निर्वाप्य प्रोक्षणे कृत्वा च रुद्रं प्रयचित्वाज्यसंस्कारादिग्रहहोमांते उक्तमंत्रेण प्रधानहोमं कृत्वा स्वष्टकृदादि बलिपूर्णाहुति संस्त्रावादि शेषं समापयेत् ॥ अथ मातुष्मद्वत्तः प्रगृह्य च ॥ दीर्घायुरपि बालोऽयं पूर्ववत्कुलवर्धनः ॥ ततो यजमानं पत्नी शिशुसहितं कलशोदकेन समुद्रज्येष्ठा इत्यादिभि रभिषिंचेत् ॥ ततो यजमानोऽग्निं संपूज्य विभूतिं धृत्योत्तरपूजां विधाया आचार्यादिभ्यो यथाशक्ति दक्षिणां दत्वा पीठं दत्वा ब्राह्मणभोजनं संकल्प्य भूयसीं दत्वा शिषो गृहीत्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् ॥ इत्यधोमुखजननशांतिः ॥ १७५ ॥ अथैकनक्षत्रजननशांतिः ॥

श्रीः ॥ जनकनक्षत्रोत्पत्तौ उक्तसमये गोमुखप्रसवं कृत्वा एकोदरनक्षत्रोत्पत्तौ तमकृत्वा देशकालौ संकीर्त्य ॥ अस्य शिशोः पित्रेक नक्षत्रोत्पत्तिस्तूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शांतिमभिषेकं पूजितनक्षत्रप्रतिमां यथाशक्ति दानं च करिष्ये इति संकल्प्य ॥ गणपतिसंपूज्य आचार्यचतुरऋत्विजश्च वृत्वा पुण्याहं वाचयति ॥ मात्रेकनक्षत्रेत्याद्यूहेनान्यत्र संकल्पः ॥ तत आ

चार्योयदत्रसंस्थितमितिसर्षपविकिरणप्रोक्षणप्रार्थनादिकृत्वास्थंडिलदैशान्यांकलशंमहीद्यौरित्यादिनास्थाप्य ॥ तत्ररक्तव
 स्त्राच्छादितेनक्षत्रतद्देवतान्यतरप्रतिमांकृत्वाभ्युत्तारणांतंमंत्रेणावाहानाद्युपचारैःपूजयेत् ॥ वस्त्रार्पणेतद्युग्ममर्पयेत् ॥ पूजांते
 ऽग्निव्याहृतिभिःप्रतिष्ठाप्यान्वाधानेचक्षुषीआज्येनेत्यंतेअदोनक्षत्रमिमामादेवतांवा प्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्याभिःसमिच्चवर्ज्या
 हुतिभिःशेषेणेत्यादिप्रायश्चित्तहोमांतंप्रणीतोविमोकादि ॥ आचार्यःकलशोदकेनतयोरभिषेकंकुर्यात् ययोरैकनक्षत्रजन्म ॥ वि
 ततःपूजितप्रतिमाग्रेआचार्यायवस्त्रालंकारगाःदद्यात् ॥ ज्योतिर्निबन्धोत्स्यास्वर्णरूप्यमयौहरिहरौसंपूज्यतौवादद्यात् उत्तरपू
 विधस्यास्यविश्वस्यपितरौविश्वतोमुखौ ॥ प्रीयेतांमूर्तिदानेनदेवौहरिहराबुभाविति ॥ मापलयसुवर्णमृत्विग्भयोदत्वाउत्तरपू
 जाविसर्जने आचार्यहस्तेप्रतिमाप्रतिपादनंधान्यवस्त्रादिभिःसहयानशय्यासनादीनाब्राह्मणांतरेभ्योदानंकृत्वातैःसहाचार्य
 ऋत्विजोभोजयित्वापूर्णतांवाचयित्वातेभ्यःशुभाआशिषःप्रतिगृह्यकर्मेश्वरार्पणंकुर्यादिति ॥ इत्येकनक्षत्रजननशांतिः ॥

॥ १७६ ॥ अथग्रहणजननशांतिः ॥

श्रीः ॥ सूर्यग्रहणेप्रसूतौतत्कालस्थितनक्षत्रस्ययाधिष्ठात्र्यग्न्यादिदेवतातस्याःसूर्यस्यचयथाशक्तिहेम्नाप्रतिमेविधायराहोःसी
 सेननागाकृतिंकृत्वाशौचांतैगोमुखप्रसवंकृत्वा ममभार्यायाःसूर्यग्रहणकालीनप्रसूतिसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वर
 प्रीत्यर्थंसग्रहमखांशान्तिकरिब्येइतिसंकल्प्य ॥ गणेशपूजनाद्याचार्यवरणपूजांतंकुर्यात् ॥ चंद्रग्रहेतुसूर्यस्थानेराजतंचंद्रबिंबंकु
 र्यात् ॥ अन्यद्वयंपूर्ववत् ॥ संकल्पेसूर्यस्थानेचंद्रपदप्रयोगः ॥ ततआचार्योयदत्रेत्याद्यंतेशुचिदेशंगोमयेनोपलिप्य तत्रनवंसदश

क्षालितं श्वेतवस्त्रं प्रसार्य तत्रोक्ते देवतानां रूपत्रयं निधाय आकृष्णेनांगिरसो हिरण्यस्तूपः सविता त्रिष्टुप् ॥ पूजने वि० ॥ ॐ आकृष्णे
 नरजं ० ॥ मध्ये सूर्यं रक्तवर्णं वस्त्रं गंधाक्षतपुष्पैर्धूपदीपादिभिश्च पूजयेत् ॥ तद्दक्षिणतो राहुं कृष्णवर्णं गंधादिभिर्धूपादिभिश्च पूजये
 त् ॥ स्वर्भानोरित्यस्यात्रिः स्वर्भानुस्त्रिष्टुप् राहुपूजने ० ॥ ॐ स्वर्भानोरध्वयदिंद्रमाया अवोदिवो वर्तमानाऽअवाहन् ॥ गळहंसू
 र्यतमसार्पव्रतेन तुरीयेण ब्रह्मणा चिन्दुदन्त्रिः ॥ नक्षत्रदेवतामग्निर्ः पातुकृत्तिका इति तैत्तिरीयपठिततत्तद्वाक्याष्टकेन पूजयेत् सूर्य
 ण श्वेतगंधादिभिर्धूपादिभिश्चैति विशेषः ॥ आप्याय स्वर्गौ तमः सोमो गायत्री चंद्रपूजने वि० ॥ ॐ आप्यायस्व ० ॥ इति मंत्रे
 धानं कुर्यात् ॥ चक्षुषी आज्येनेत्येतद्ग्रहान्वाधानं कृत्वा सवितारं अर्कसमिदाज्यचरुतिलैः प्रत्येकमष्टोत्तरशताहुतिभिः ॥ स्वर्भा
 नुंदूर्वासहिताज्यादीनां तावती भिराहुतिभिः ॥ नक्षत्रदेवतयोः पूजनं पूर्ववत् ॥ ततोऽग्निस्थापनं ग्रहपूजा कलशस्थापनां तं कृत्वाऽन्वा
 णेत्यादि ॥ चंद्रग्रहे अर्कस्थाने चंद्रस्यार्कसमित्स्थाने पालाशसमिधां निर्देशः ॥ गृहसिद्धान्नस्य पर्यन्तिकरणादि ॥ यथान्वाधानं त्या
 गः ॥ प्रायश्चित्तांते वलिपूर्णाहुतीं संस्थाजपांते पंचगव्यपंचरत्नपंचत्वक्पंचपल्लवैरोषधिकल्कैश्च मिश्रितलौकिकजलैर्ग्रहकलशो
 दकैश्च सहितैरभिषेकः ॥ आपो हिष्ठेति तृचस्य सिंधुद्वीप आपो गायत्री अभिषेके ० ॥ इमं मे गंगे इति सिंधुक्षित्यै मे धोनद्योजग
 ती ॥ पितरः पितामहाः परे वरे इति याजुषमंत्रेण ॥ तत्त्वायामि शुनः शेषो वरुणस्त्रिष्टुप् ॥ अभिषेके ० ॥ अभिषेकांते आचार्य
 संपूज्य तस्मै प्रतिमात्रयं दक्षिणां च दद्यात् ॥ ततोऽग्रहाणां पूजनं विसर्जने प्रतिमाप्रतिपादनं ब्राह्मणभोजनं संकल्पश्चेति ॥ इति ॥

॥ १७७ ॥ अथनक्षत्रगण्डांतरांतिः ॥

श्रीः ॥ षण्मासोत्तरंद्वादशेवाहनिप्रथमतोगोप्रसवंकृत्वा ॥ देशकालौसंकीर्त्यममाऽस्यशिशोःरेवत्यश्विनीसंध्यात्मकगंडांतज
ननसूचितसर्वारिष्टनिरसनद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंनक्षत्रगंडांतरांतिकरिष्येइतिसंकल्प्य ॥ गणेशपूजनादियजुर्वेदविद्वेव
ज्ञाचार्यत्विगवरणांतंकुर्यात् ॥ ततस्तांश्चंदनशुक्लमाल्यैःक्षौमशुक्लवासोभ्यांपूजयेत् ॥ ततआचार्योनिर्मितस्यापिनिमित्तानु
सारिपरिमाणकांस्यपात्रस्यपुनर्निर्माणमाप्यायस्वेतिमंत्रेणकुर्याच्चंद्रप्रतिमाग्न्युत्तारणंच ॥ ततोयदन्नेतिसर्वपविकिरणादिना
भूसंस्कारंकृत्वाउपलिप्तेदेशेकांस्यपात्रेपायसंपयोनिक्षिप्य तन्नवनतीतपूर्णशंखनिधायतत्रराजंतंचंद्रविंवस्थापयित्वा सोमोह
मितिध्यानपूर्वकंसमाहितचेताआप्यायस्वेतिमंत्रेणावाहनादिषोडशोपचारैस्तत्रचंद्रपूजनंकुर्यात् ॥ तत्रश्वेतंसदशंवल्लद्वयंसम
र्पणीयं पुष्पाणिश्वेतानिसहस्रमर्पणीयानि मौक्तिकंदक्षिणातदसंभवेइष्टमन्यत् ॥ पूजांतैतमेवमंत्रंसविश्वासंचंद्रंध्यायन् सह
संसंप्रणवमृभ्यादिस्मरणपूर्वकंजपेत् ॥ तदुत्तरतस्ताम्रकलशंमहीद्यौरित्यादिविधिनास्थापयित्वा तत्ररजतप्रतिमायांच्चहस्यति
मंत्रेणवागीश्वरंसंपूज्य तदुत्तरतःक्रमेणतैनेवविधिनानिहितकुंभचतुष्टये अश्वत्थेवोनिषदनमित्याम्रपल्लवप्रक्षेपांतंकृत्वाचतु
र्भुक्रमेणद्रवीभूतानिकुंकुमंचंदनकुष्ठगोरोचनानिसिंचेत् ॥ तेषुवरुणंपूजयेत् ॥ ततःपश्चिमदेशेस्थंडिलाद्यग्निप्रतिष्ठापनांतंकृ
त्वा स्थापितकलशोत्तरभागेग्रहावाहनादिवरुणपूजांतंकृत्वाऽन्वाधानादिग्रहमखंपूर्णाहुत्यंतंकुर्यात् ॥ अभिषेककालेवारुणक
लशचतुष्टयस्थोदकनदिवागंडांतजातंबालंपित्रासहरात्रिजातंमात्रासहसंध्ययोजांतमुभाभ्यांसहाभिषिंचेत् ॥ सहस्राक्षेणेति

मंत्रस्य यक्षमनाशनः प्राजापत्यं द्रष्टुं अभिषेके वि० ॥ ॐ सहस्राक्षेण० ऋक् १ ॥ ततः सर्वकलशोदकैः समुद्रज्येष्ठा इत्यादिभिः सुरास्त्वामित्यादिभिर्मन्त्रैश्चाभिषेकांते सुस्नातः सपत्नीकः कर्ता धृतश्चेतचंदनादिर्विभूतिधारणं कृत्वा आचार्याय शंखदानं कुर्यात् ॥ इमं सचंद्रं शंखं सवस्त्रयुगं समौ चिकं नवनीताद्युपस्करसहितं गंडदोषापनुत्तये देवज्ञाय च जुर्वेदविदे तुभ्यमहं संप्रतिमादानं तदंगत्वेन यथाशक्ति दक्षिणादानं च ॥ ततो वागीश्वरं तान्नपात्रसहितं तुभ्यं गंडदोषां त्यर्थं संप्रददइति बृहस्पतिस्ततः सहस्राक्षेणेति मंत्रस्यायुर्वृक्ष्यर्थं यथाशक्ति जपो दशावरब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् ॥ इति नक्षत्रगंडातशांतिः ॥

श्रीः ॥ तिथिगंडपूर्वार्धजन्मनिकर्ता स्नातः पुत्रमनालोक्याऽस्य शिशोस्तिथिगंडपूर्वार्धजन्मसूचितसर्वारिष्टनिरसनद्वारा श्रीपरेश्वरप्रीत्यर्थं अनडुद्दानं करिष्ये इति संकल्प्य नालच्छेदनात् पूर्वगंडदोषे ब्राह्मणपूजनपूर्वकं अनडाहं दद्यात् ॥ असंभवे कार्षापणादकं वा ॥ सूतकांते शुभदिने वा स्नातोऽनडुद्दानमित्यस्य स्थाने गौं कांशांतिमित्यूहेन संकल्प्य गणेशपूजादि आचार्यवरणांते ततोऽग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहान्संपूज्यान्वा दद्यात् ॥ चक्षुषी आज्येनेत्यादि ग्रहोत्कीर्तनांतेऽन्नप्रधानम् ॥ वरुणं प्रति द्रव्यमष्टोत्तर

ति. गं. शां.
॥१७८॥

शतसंख्याभिःसमिधांचरोराज्यतिलयवानांचाहुतिभिः शेषेणेत्यादिवलिदानपूर्णाहुतिप्रणीताविसर्गते कलशद्वयोदकेनस
मुद्रज्येष्ठेत्यादिभिःपित्रादित्रयाणामभिषेकोयवव्रीहिमाषतिलमुद्गानांदक्षिणात्वेनदानंविसर्जनादि यथाशक्तिब्राह्मणभोजनं
वेति ॥ तिथिगंडोत्तरार्धजन्मनिनतुतात्कालिकदानं ॥ शांतौमातुःशिशोश्चाभिषेकइतिविशेषः ॥ लग्नगंडपूर्वार्धजन्मनि
कांचनमितिविशेषः ॥ नक्षत्रगंडस्योत्तरादिनिषिद्धभागस्यचपूर्वार्धजन्मनिधेनोस्तिलपात्रादेश्चदानम् ॥ शांतौनक्षत्रप्रतिमा
यास्तत्तद्वाक्याष्टकेनपूजनम् ॥ उत्तरार्धेजन्मनिनदानं ॥ दक्षिणाकालेउत्तरादौतिलपात्रादेर्दानं ॥ इतरत्रयवव्रीह्यादेरभि
षेकव्यवस्थाचपूर्ववत् ॥ इतितिथ्यादिगंडांतशांतयः ॥ ३७ ॥

अथविषनाडीजननशांतिः ॥

॥ ३७९ ॥ अथविषनाडीजननशांतिः ॥
श्रीः ॥ कर्ताशौचांतेदेशकालौसंकीर्त्यविषनाड्यांप्रतिपक्षिणनसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंवृद्धगर्भोक्तां
सग्रहमखांशांतिकरिब्यइतिसंकल्प्य ॥ गणेशपूजनाद्याचार्यऋत्विग्वरणांतंकुर्यात् ॥ आचार्योयदत्रसंस्थितमितिस्थलशुद्धिं
कृत्वा यथाशक्तियथालक्षणंनिर्मितानांहैमीनारुद्रादिप्रतिमानांचतसृणामग्न्युत्तारणंकृत्वा पूर्वभागेमहीद्यौरितिभुवंस्पृष्ट्वा
त्रओषधयःसंवदंतइतिचतुःप्रस्थपरिमितान्ग्रीहीन्प्रक्षिप्य तैःस्थंडिलंपरिकल्प्यतत्रकलशस्थापनोदकपूरणेसमंत्रकेकृत्वाया
ओषधीरितिसर्वौषधीःप्रक्षिप्य स्योनेतिसप्तमृदःअश्वत्थेवइतिपंचपल्लवान् कांडात्कांडादितिदूर्वाः हिरण्यरूपइतिहिरण्यंयाः
फलिनीरितिफलं युवासुवासाइतिवस्त्रद्वयेनावेष्ट्य सहिरलानीतिपंचरत्नानिनिक्षिप्य गंधद्वारामितिगंधादिनाकलशंसंपूज्य

पूर्णाद्वीतिपूर्णपात्रनिधाय तत्रप्रतिमाचतुष्टयंनिधायतास्वावाहनादिषोडशोपचारैर्देवताः पूजयेत् ॥ कद्रुद्रायेत्यस्य कण्वो
रुद्रो गायत्री ॥ यमाय सोमं यमो यमो नुष्टुप् ॥ अग्निर्मूर्धा विरूपोन्निर्गायत्री ॥ परं मृत्योरित्यस्य संकुशिको मृत्युस्त्रिष्टुप् ॥ पूजां
हपीठदेवतान्वाधानं प्रसिद्धरीत्याकृत्वा रुद्रं प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याभिः समिच्चरुघृताहुतिभिः ॥ चक्षुषी आज्येनेत्यंते
भिस्तद्रव्याहुतिभिः ॥ एता एव देवतास्तिलाहुतिभिश्च तत्संख्याभिः ॥ शेषेणेत्यादिप्रणीता प्रणयनांते आज्यनिर्वापः आज्येन
सहगृहसिद्धान्नस्य पर्यन्तिकरणं संमार्गं ते च रोरन्नावधि श्रपणमभिघारणं च कृत्वा दगुद्रासनादि आज्यभागांतं ग्रहपीठदेवतानां य
थान्वाधानं त्यागेकृते प्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्याहुतिपर्याप्तं समिच्चरुघृतात्मकद्रव्यत्रयं रुद्राय एवं यमाय अग्नये मृत्यवे एवं तत्सं
ख्याहुतिपर्याप्तं तिलद्रव्यं रुद्रादिभ्यो नममेतित्यागेकृते ऋत्विक्सहित आचार्यस्तत्तन्मंत्रैर्नुह्यात् ॥ प्रायश्चित्तहोमांते लोकपा
लेभ्यो ग्रहपीठदेवताभ्यश्च बलिदानं रुद्रयमाग्निमृत्युभ्यश्चांते क्षेत्रपालाय च ॥ पूर्णाहुत्यंते प्रणीता विमोकः ॥ कलशद्वयोदकेना
भिषेकः ॥ समुद्रज्येष्ठेत्यादिभिर्मन्त्रैः ॥ प्रीयतां भगवानीशः पिनाकी सर्वतो मुखः ॥ तव मूर्तिप्रदानेन सर्वाभीष्टप्रदो भव ॥ इष
त्पीनो यमः कालो दंडहस्तः प्रसन्नधीः ॥ रक्तदृङ्नीलकायश्च महिषस्थः शिवंकुरु ॥ पिंगभ्रूश्चमश्रुकेशांतः साक्षसूत्रकमंडलुः ॥
सप्तार्चिः शक्तिधारी चममपापं व्यपोहतु ॥ दंष्ट्राकरालवदनो नीलांजनसमाकृतिः ॥ रक्ताक्षो सिगदापाणि मृत्युर्मापातु सर्वदा ॥
इत्यादिभिश्चतुर्भिः श्लोकैश्च ॥ तत एतैरेव श्लोकैः समाहित एकं देवतामाचार्याय दद्यात् ॥ ततस्तस्मै गोभूहिरण्यवस्त्रादितन्नि

एवमृत्विग्भ्योपियथाशक्तिदक्षिणादानंततोऽग्र
॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

कृत्यंवादद्यात् ॥ कृतस्यकर्मणःसांगतायैश्मांदक्षिणांतुभ्यमहंसंप्रददेइति ॥
हृषीठदेवतानांपूजनविसर्जने ॥ आचार्यहस्तेप्रतिपादनंब्राह्मणभोजनंचेतिविषनाडीशांतिः ॥

॥ १८० ॥ अथपुनर्मूलजननशांतिः ॥

श्रीः ॥ ममभार्यायायमलजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थइष्ट्यायक्ष्येइतिश्रौताग्निमतोगृह्याग्निमतस्तुमा
रुतस्थालीपाकेनयक्ष्यइतिसंकल्पः ॥ अकृतप्रत्यारंभस्यतत्स्थानेपूर्णाहुतिहोष्यामीति ॥ अग्निशून्यस्तुसग्रहमखंकात्यायनो
क्तंप्रायश्चित्तंकरिष्येइतिसंकल्प्यगणेशपूजनाद्याचार्यवरणांतंकुर्यात् ॥ आचार्योयदत्रेत्यादिनाभूशुद्धिंविधायप्रागादिक्रमेण
ईशान्यंतासुदिक्षुमहीद्यौरित्यादिविधिनकलशाष्टकपूर्णांतंकृत्वाहिरण्यरूपइतिहिरण्यंकपायादिसहितंप्रक्षिप्य कांडात्कां
डादितिदूर्वायाओषधीरितिसर्वौषधीश्चप्रक्षिप्य गंधादिप्रक्षेपादिवरुणपूजांतंकुर्यात् ॥ अथकलशोदकैराचार्योदंपत्योरभि
षेकंकुर्यात् ॥ आपोहिष्ठेतितिसृणामांबरीषःसिंधुद्वीपआपोगायत्री ॥ कयानइतिद्वयोर्वामदेवइंद्रोगायत्री ॥ आनस्तुतइति
पंचानांवामदेवइंद्रस्त्रिष्टुप् ॥ मोष्वितिपंचानांवसिष्ठोवरुणोगायत्रीअंत्याजगती ॥ इदमापइत्यस्यसिंधुद्वीपआपोऽनुष्टुप् ॥
अपनःशोशुचदघमित्यष्टचस्यसूक्तस्यकुत्सोन्निर्गायत्री ॥ अभिषेके ॥ एवमभिषिक्तौदंपतीश्वेतैर्वस्त्रचंदनपुष्पैःसौवर्णभूषणै
श्चाऽलंकृत्यदर्भेषूपवेशयति ॥ तौतत्रोदञ्जुखौतिष्ठतः ॥ तत्समीपेप्राङ्मुखआचार्यःस्थंडिलेऽग्निंप्रतिष्ठाप्यैशान्यांग्रहपूजाक
लशस्थापनांतंकृत्वाऽन्वाधानंकुर्यात् ॥ चक्षुषीआज्येनेत्यादिग्रहोत्कीर्तनांते ॥ अपस्तिसृभिः इंद्रंसप्तभिः वरुणंपंचभिः अ

पएकया अग्निमष्टाभिराज्याहुतिभिः अग्निंसोमंपवमानंपावकंमारुतंमरुतःयमंअंतकंमृत्युंचएकैकयाचर्वाहुत्या शेषेणेत्यादि ॥ तूष्णींषट्त्रिंशद्वारंनिर्वापप्रोक्षणे ॥ यथान्वाधानमाज्याहुतिषुत्यागः ॥ अग्नयेस्वाहेत्यवदानसंपदानवाहुतयः ॥ यथालिंगं त्यजतापिअद्रयाद्यात्मनामरुतोध्येयाः ॥ प्रयाजेषुसमिन्ध्यइतित्यागेपिसमिदाद्यात्मनानिरुक्तोकाग्निध्यानवत् ॥ ततःस्विष्टकृदादिबलिदानांतेपूर्णाहुतिः पूर्णपात्रनिनयनंग्रहकलशेनाभिषेकःआचार्यायदक्षिणादानंस्थापितदेवतानांपूजनानादिआचार्यहस्तेप्रतिपादनांतंचकृत्वा ब्राह्मणान्भोजयित्वास्वस्तिभवंतोब्रुवंत्वितिवाचयीत आशिषोगृहीत्वेश्वरार्पणंकुर्यादिति ॥ ॥

॥ १८१ ॥ अथत्रिकग्रसवशांतिः ॥

श्रीः ॥ एकादशेद्वेददेशेअन्यस्मिन्वाशुभेऽहनिसभार्योदेशकालौसंकीर्त्यममसुतत्रयजन्मानंतरंसुताजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरग्रीत्यर्थसग्रहमखांशांतिकरिष्ये ॥ सुतात्रयजननोत्तरंसुतजननेतथोहःकार्यः ॥ ततो गणेशपूजनाद्याचार्यत्विग्वरणतत्पूजांतेआचार्योयदन्नेत्याद्यग्न्युत्तारणंच ॥ ततःस्थंडिलपूर्वभागेग्रहपूजाकलशस्थापनवरुणपूजनांतंकृत्वा तदुत्तरतउदकंसंस्थानापंचकलशानांमहीद्यौरित्यादिविधिनायथाशक्तिधान्योपरिस्थापितानामुपरियथाशक्तिहेमनिर्मिताःब्रह्मविष्णुमहेशैरुद्रप्रतिमाःस्थापयित्वातासुदेवताःपूजयेत् ॥ ब्रह्मजज्ञानंवाग्मदेवोब्रह्मात्रिष्टुप् ॥ इदंविष्णुरित्यस्यमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री ॥ तत्पुरुषोयेत्यस्यहिरण्यगर्भोमहेशोगायत्री ॥ यतइंद्रेत्यस्यभर्गइंद्रोबृहती ॥ कद्रुद्रायेत्यस्यघोरैःकण्वोरुद्रोगायत्री ॥ पूजांतरुद्रकलशंसृष्ट्वाचत्वारिरुद्रसूक्तानिकश्चिद्वत्विजयेत् ॥ कद्रुद्रायेतिनवर्चस्यकण्वोरुद्रोगायत्र्यंत्यानुष्टुप् ॥ इमा

रुद्राय तव स इत्येकादशर्चस्य सूक्तस्य कुत्सोरुद्रः आद्यानवजगत्यः अंत्ये द्वे त्रिष्टुभौ ॥ आते पितरिति पंचदशर्चस्य सूक्तस्य गृत्समदो
 रुद्रस्त्रिष्टुप् ॥ इमारुद्राय स्थिरधन्वन इति चतसृणां वसिष्ठ आद्यास्तिन्नो जगत्यः अंत्या त्रिष्टुप् ॥ जपे वि० ॥ प्रत्येकमेकादशवारं
 सूक्तानां जपः ॥ तदंते आनो भद्रा इत्यादिशां तिसूक्तानि जपेत् ॥ ततोऽग्निप्रतिष्ठापनादि अन्वाधाने च क्षुपी आज्येनेत्यंते प्रसि
 ङ्गग्रहपीठगतदेवतान्वाधानं कृत्वा ब्रह्माणं विष्णुं महेशं इंद्रं च प्रत्येकं समिदाज्यतिलचरूणां प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरसहस्राहुतिभिः
 १०८।२८ वाशेषेणेत्यादि ॥ आज्यभागां ते यथान्वाधानं त्यागः ॥ ततः प्रधानहोममुक्तमंत्रैराचार्यैर्विष्कृत्य कर्त्तुं महोमपुरःसरं कु
 र्यात् ॥ प्रायश्चित्तहोमांते बलिः पूर्णाहुतिश्च ॥ ततः प्रणीता विमोक्तं संस्थाजपपरिस्तरणविमोक्तं पदकलशोदकेन समुद्रज्येष्ठा
 इत्यादिमंत्रैः सह कुटुंबयजमानाभिषेकः ॥ तत आचार्याय सहिरण्यधेनुं दत्वा ऋत्विग्भ्यो यथाशक्ति दानं च कृत्वा स्थापितदेवता
 नामुत्तरपूजनविसर्जनां ते तत्प्रतिमा आचार्यहस्ते प्रतिपाद्यकां स्य पात्ररूपं मित्याज्यमवेक्ष्य सदक्षिणं तद्वानं कृत्वा ब्राह्मणभोज
 नं यथाशक्तिसंकल्प्य शांतिपाठं कारयित्वा परमेश्वरार्पणं कुर्यात् ॥ इति त्रिकप्रसवशांतिः ॥ ४३ ॥

॥ १८२ ॥ अथ स दंतजननशांतिः ॥

श्रीः ॥ अस्य शिशोः प्रथममूर्ध्वदंतजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शांतिं करिष्ये ॥ निमित्तांतरे स दंतज
 ननसूचितेत्यूहः ॥ द्वितीयमासदंतजननसूचितेत्येवमूहश्च कल्प्यः ॥ गणेशपूजनाद्याचार्यवरणांते आचार्यो यदत्रेत्यादिप्रति
 मानामन्युत्तारणं च कृत्वा होमदेशोत्तरभागे गजपृष्ठे नौकायां सौवर्णपीठे वा स्वस्तिकचर्मयोगे भद्रासनत्वेन कल्पिते बालमुपवेश्य

सर्वौषधिसर्वगंधादियुक्तजलैः स्नापयित्वा होमदेशपूर्वभागे स्थापितकलशोपरि धातारं वह्निं सोमं वायुं पर्वतान् के शवं च षट्प्रतिमा
सुसंपूज्याऽग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहान् संपूज्याऽन्वा दध्यात् ॥ अत्र प्रधानं ग्रहान्वाधानांते धातारं सकृच्चरुणा वह्न्याद्यादेव ता एकैक
याज्याहुत्याशेषेणेत्यादि ॥ धात्रे त्वाजुष्टं निर्वपामीति प्रोक्षामीति समन्त्रे निर्वपप्रोक्षणे ॥ ग्रहानुद्दिश्य त्यागहोमांते धात्रे स्वाहेत्यत्र
दानधर्मेण सकृदाहुतिः ॥ ॐ वह्नये स्वाहा ॥ ॐ सोमाय ० ॥ ॐ समीरणाय ० ॥ ॐ पर्वतेभ्यः ० ॥ ॐ केशवाय ० ॥ इ
ति स्त्रुवेणाज्याहुतयः ॥ यथालिंगंत्यागः ॥ चर्वाज्याभ्यां स्विष्टकृद्धलिपूर्णाहुत्यंते कलशद्वयोदकेनाभिषेकः ॥ यथाशक्त्याचा
र्याय दक्षिणादानं तद्धस्ते प्रतिमाप्रतिपादनांते भूयसीं दक्षिणामन्येभ्यो यथाशक्ति दत्त्वा सप्ताहं ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥ अष्टमेहनि
शक्त्यनुसारेण कांचनादिदानंतेभ्यः कार्यं ॥ दिनाष्टकं ब्रह्मचर्यादि व्रतचर्यांते परमेश्वरार्पणं कुर्यादिति सदंतजननादिशांतिः ॥
षष्ठेऽष्टमेवामासे दंतोत्पत्तौ तु तदनुसारि संकल्पपूर्वकं बृहस्पतेरेव मंत्रेण तत्पूजनविधिना पूजनं दधिमधुघृताक्तानां अश्वत्थसमिधा
मष्टोत्तरशतं तन्मंत्रेण होमः आज्येन स्विष्टकृदादितत्कलशोदकेनाभिषेकः ब्राह्मणभोजनांते ईश्वरार्पणं सदंतोत्पत्तिशांतिः ॥

॥ १८३ ॥ अथ सिंहादौ गोमसचशांतिः ॥

श्रीः ॥ कर्ता दशाहोत्तरं शुभदिने स्नात्वा आचमनादिदेशकालस्मरणांते मम पत्न्याः पौषे प्रथमप्रसूति—(मम गृहे सिंहस्थे रवौ गोप्र
सूतिसूचित—माघे महिषी प्रसूतिसूचित—श्रावणे दिवा वडवा प्रसूति) सूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वारा सप्तहांशौ नकोक्तां शांतिकरि
व्यइति संकल्प्य गणेशपूजनस्वस्तिवाचनादि ऋत्विग्वरणांतं कुर्यात् ॥ तत आचार्यः कर्मसंकल्प्य प्रादेशकरणांते गृहस्यैशानभा

गेमहीद्यौरित्यादिविधिनाकलशं संस्थाप्य वस्त्रयुग्मेनावेष्ट्य पूर्णपात्रे सौवर्णराजतताम्रान्यतमप्रतिमयोः कद्रुद्राय कण्वोरुद्रो०
इति रुद्रं ॥ आकृष्णेन हिरण्य० इति सूर्यं चावाह्य पूजयेत् ॥ तत एकऋत्विक् होमसमाप्त्यंतरुद्रसूक्तान्यपरश्च सौरमंत्रान्जपेत् ॥
एषामृष्यादिव्यतीपातशांतौ द्रष्टव्यं ॥ यद्वा तत्तन्मूलमंत्रजपः कार्यः ॥ ततोऽग्निग्रहांश्च प्रतिष्ठाप्यान्वा दध्यात् ॥ ग्रहादिकीर्त
नां तेन प्रधानं रुद्रं सूर्यं च तिलाज्य च रुभिः प्रत्येकं प्रतिद्रव्यं १०८।२८ वा संख्या का हुतिभिः शेषेणेत्यादि ग्रहादि होमांते पूजा
मंत्राभ्यां प्रधान होमं कुर्यात् ॥ ततः स्विष्टकृदादि प्रायश्चित्त होमांते बलिदानं पूर्णाहुतिं च कृत्वा संस्नाव होमादि शेषं समाप्य स्थापि
त कलशोदकेन सकुटुंबं यजमानं समुद्रज्येष्ठादि मंत्रैरभिषिंचेत् ॥ ततो यजमानो विभूतिं धृत्योत्तरपूजां विधायाचार्यं संपूज्य तस्मै
प्रसूतांगां महिषीं वा दत्वा ऋत्विग्भ्यां दक्षिणामाचार्यं यिसजिते देवतापीठं च दत्वा यथाशक्ति ब्राह्मणान्संभोज्य भूयसीं दद्यात् ॥

॥ १८४ ॥ अथ प्रसववैकृतशान्तिः ॥

श्रीः ॥ वृद्धगर्गः ॥ यत्र गर्भे विपर्यासो मानुषाणां गवामपि ॥ अश्रुतानि प्रसूयंते तत्र देशस्य विप्लवः ॥ अत्राऽपि दिव्यजाशान्तिः
कार्या पंचदशी बुधैः ॥ पंचदशी प्राप्येति शेषः ॥ पर्वणीत्यर्थः ॥ मानुषामानुषाणां च गोजाश्वमृगपक्षिणाम् ॥ जायंते जातिभेदा
श्च सदां ता विकृतास्तथा ॥ बहुशीर्षा अशीर्षा वा बहुकर्णा अकर्णकाः ॥ एकशृंगा द्वित्रिशृंगास्तथैव त्रिचतुर्भुजाः ॥ दीर्घकर्णाम
हाकर्णा गजकर्णाश्च मानवाः ॥ वानरश्वापदव्याघ्रमार्जारतनुधारिणः ॥ जायंते पुरुषा यत्र तत्र संग्राममादिशेत् ॥ राजश्रेष्ठकुले
नाशोधनस्य च कुलस्य च ॥ यमलायत्र जायंते नारीणां गजवाजिनाम् ॥ ब्रह्मशांतिततः कुर्याद्यत्र ब्रह्माप्रशासिता ॥ अष्टोत्तरस

1128211

॥ अथ ब्रह्मोद्यापनादिमिश्रप्रकरणम् ॥ ३ ॥

॥ १८५ ॥ अथसर्वतो भद्रमंडलम् ॥

॥ १८५ ॥ अथसवतामभ्रमलम् ॥
 ॥ हेमाद्रौस्कांदे ॥ प्रागुदीच्यांगतारेखाःकुर्वादेकोनविंशतिः ॥ खंडदुस्त्रिपदःकोणेशृंखलाःपंचभिःपदैः ॥ एकादशप
 श्रीः ॥ हेमाद्रौस्कांदे ॥ प्रागुदीच्यांगतारेखाःकुर्वादेकोनविंशतिः ॥ खंडदुस्त्रिपदःकोणेशृंखलाःपंचभिःपदैः ॥ एकादशप
 दावल्लीभद्रंतुनवभिःपदैः ॥ चतुर्विंशत्यदावापीपरिधिर्विंशतिःपदैः ॥ मध्येषोडशभिःकोष्ठैःपद्ममष्टदलंस्मृतम् ॥ श्वेतेंदुः
 शृंखलाकृष्णावल्लीनीलेनपूरयेत् ॥ भद्रारुणासितावापीपरिधिःपीतवर्णकः ॥ बाह्यांतरदलश्वेताकर्णिकापीतवर्णका ॥ परि
 ध्यावेष्टितंपद्मबाह्येसत्वंरजस्तमः ॥ तन्मध्येस्थापयेद्देवान्ब्रह्माद्यांश्चसुरासुरान् ॥ इतिसर्वतोभद्ररेखाकोवर्णपूरणादिशास्त्रार्थः
 ॥ १८६ ॥ अथालिंगतोभद्राणि ॥

॥ १८६ ॥ अथालिंगतोमद्राणि ॥

॥ १८६ ॥ अथालिंगगताभिद्राणि ॥
 अथद्वादशलिंगगताभिद्राणि ॥ पदानिद्वादशशतंपंचविंशतिरेव
 श्रीः ॥ अथद्वादशलिंगगताभिद्राणि ॥ पदानिद्वादशशतंपंचविंशतिरेव
 च ॥ खंडेदुस्त्रिपदःकोणेशृंखलाषट्पदैःस्मृता ॥ त्रयोदशपदावल्लीभद्रंतुनवभिःपदैः ॥ त्रयोदशपदावापीलिंगमष्टादशैःस्मृ
 तम् ॥ लिंगत्रयस्यंपंकौतुशोभाकोष्ठाश्चतुर्दश ॥ तेषामुपरिंपंकौतुकोष्ठाःसप्तदशैवतु ॥ पूजापंक्तिस्तुविज्ञेयापरितःपरिकल्पि

तम् ॥ लिंगत्रयस्य पंक्तौ तु शोभा काष्ठाश्च तु दश ॥ ११ ॥

ता ॥ पूजापंत्यंतरापंत्यौकोष्ठाद्व्यशीतिसंख्यया ॥ परिधिःसतुविज्ञेयोऽतरामंडलयोर्द्वयोः ॥ परिध्यंतरकोष्ठेषुसर्वतोभद्र
मालिखेत् ॥ विशेषश्चात्रविज्ञेयःशृंखलाषट्पदाभवेत् ॥ त्रयोदशपदावह्नीभद्रंतुनवभिःपदैः ॥ पंचविंशत्पदावापीपरिधिः
षोडशात्मकः ॥ मध्येनवपदंपद्मंकर्णिकाकेसरान्वितम् ॥ सत्वरजस्तमोवर्णाःपरितोमंडलस्यतु ॥ त्रयःपरिध्यःकार्यास्तत्रद्वा
राणिकारयेत् ॥ सितेंदुःशृंखलाकृष्णवह्नीनीलाप्रकीर्तिता ॥ भद्रंचैवारुणंज्ञेयवापीस्याच्छेतवर्णिका ॥ लिंगानिकृष्णवर्णा
निपार्थतोद्वादशैवतु ॥ परिधिःपीतवर्णःस्यात्कमलंपंचवर्णकम् ॥ ॥ अथाष्टलिंगतोभद्रमाग्नेये ॥ चतुर्विंशतिरालेख्यारे
खाःप्राक्दक्षिणायताः ॥ कोणेषुशृंखलाःपंचपदावह्यस्तुपार्श्वतः ॥ पदैर्नवभिरालेख्याश्चतुर्भिलघुशृंखलाः ॥ लघुवह्नयःप
दैःषड्भिस्ततोष्टादशभिःपदैः ॥ कृत्वालिंगानिवाप्यःस्युस्त्रयोदशभिरंतरा ॥ ततोवीथिद्वयेनवपीठंकुर्याद्विचक्षणः ॥ तस्यपा
दाःपंचपदैर्द्वाराण्यपितथैवच ॥ एकाशीतिपदमध्येपद्मंस्वस्तिकमुच्यते ॥ कोणेषुशृंखलाःकार्याःपदैस्त्रिभिरतःपरम् ॥ पदै
श्चतुर्भिर्दिक्षुस्युर्भद्राण्येषांसमंततः ॥ एकादशपदावह्योमध्येष्टदलमालिखेत् ॥ पद्मंनवपदंह्येवंलिंगतोभद्रमुच्यते ॥ शृंखलाः
कृष्णवर्णेनवह्नीनीलेनपूरयेत् ॥ रक्तेनशृंखलालध्वीर्वह्नीःपीतेनपूरयेत् ॥ लिंगानिकृष्णवर्णानिश्चेतेनाप्यथवापिकाः ॥ पीठं
सपादंश्चेतेनपीतेनद्वारपूरणम् ॥ मध्येस्युःशृंखलारकावह्नीनीलेनपूरयेत् ॥ भद्राणिपीतवर्णानिपीतापंकजकर्णिका ॥ दला
निश्चेतवर्णानियद्वाचित्राणिकल्पयेत् ॥ तिस्रोरेखावहिःकार्याःसितरक्तासिताःक्रमादिति ॥ ॥ अथचतुर्लिंगतोभद्रम्
॥ ॥ लैंगे ॥ रेखास्त्वष्टादशप्रोक्ताश्चतुर्लिंगसमुद्भवे ॥ कोणेंदुस्त्रिपदःश्चेतस्त्रिपदैःकृष्णशृंखला ॥ वह्नीसप्तपदानीलाभद्रंर

[illegible]

॥ ज्ञानाप्तविधिः ॥

॥ १८७ ॥ अथ ब्रताध्यायः ॥ अमुकप्रतारणं नृणां दी
र्षी परमेश्वरप्रीत्यर्थं मया कृतस्य अमुकप्रतारणं नृणां दी

[illegible]

रीरशुद्ध्यर्थपवनपावनभूशुद्ध्यादिपुरुषसूक्तन्यासंचकृत्वायदन्नेतिसर्षपान्विकीर्यशुचीवैत्यादिभिः पंचगव्येनाद्भिश्चभुवंप्रोक्ष्य
स्वस्त्ययनमित्यादिप्रादेशातंकुर्यात् ॥ ततोविष्णुव्रतेसर्वतोभद्रैश्चेचलिंगतोभद्रेब्रह्मादिमंडलदेवताःस्थापयेत् ॥ ४३ ॥

॥ १८८ ॥ अथब्रह्मादिमंडलदेवताः ॥

श्रीः ॥ मध्येब्रह्माणं ॥ ब्रह्मजज्ञानंवामदेवोब्रह्मात्रिष्टुप् ब्रह्मावाहनेविनियोगः ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपरस्ताद्विसीमतःसु
रुचोवेनआवः ॥ सुबुधियाचपमाअस्यविष्ठाःसतश्चयोनिमसंतश्चविवः ॥ भूर्भुवःस्वर्ब्रह्मणेनमःब्रह्माणमावाहयामि ॥ भोब्र
ह्मन्इहागच्छेहतिष्ठपूजांगुहाणवरदोभव ॥ १ ॥ उत्तरेसोमं ॥ आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री ॥ सोमावाहने० ॥ ॐ आ
प्यायस्वसमेतुतेविश्वतःसोमवृण्यं ॥ भवावार्जस्यसंगथे ॥ भूर्भु० सोमाय० सोमं० ॥ भोसोमइहाग० ॥ २ ॥ ईशान्या
मीशानं ॥ अभित्वाशुनःशेषईशानोगायत्री ॥ ईशानावाहने० ॥ ॐ अभित्वादेवसवितराराशानंवार्याणां ॥ सदावन्भागमीम
हे ॥ भूर्भु० ईशानाय० ईशानंआ० ॥ भोईशानइहा० ॥ ३ ॥ पूर्वैइंद्रं ॥ इंद्रंवोमधुच्छंदाइंद्रोगायत्री ॥ इंद्रावाहने० ॥ ॐ इंद्रंवो
विश्वतस्परिहवांसहेजनैभ्यः ॥ अस्माकमस्तुकेवलः ॥ भूर्भु० इंद्रायन० इंद्रंआवाह० ॥ ४ ॥ आग्नेयामग्निं ॥
अग्निदूतंमेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्न्यावाहनेवि० ॥ ॐ अग्निदूतंवृणीमहेहोतारंविश्ववेदसं ॥ अस्ययज्ञस्यसक्रतुं ॥ भूर्भु० अ
ग्नेयन० अग्निमावाह० ॥ भोअग्नेइहा० ॥ ५ ॥ दक्षिणेयमं ॥ यमायसोमंयमोयमोनुष्टुप् ॥ यमावाहने० ॥ ॐ यमायसोमंसुनु
तयमार्यजुहुताहुविः ॥ यमंहयज्ञोर्गच्छत्यग्निदूतोअरंकृतः ॥ भूर्भु० यमायन० यमंआ० ॥ भोयमइहागच्छ० ॥ ६ ॥ नैऋत्यानि

ॐ मोषुणः कण्वो निर्र्क्तिर्गयत्री ॥ निर्र्क्त्या वाहने वि० ॥ ॐ मोषुणः परापरा निर्र्क्तिर्दुर्हणावधीत् ॥ पृदीष्टतृष्ण्यासह ॥
निर्र्क्तिं ॥ निर्र्क्तये० निर्र्क्तिं आ० ॥ भो निर्र्क्ते इहा गच्छ० ॥ ७ ॥ पश्चिमेवरुणं ॥ तत्त्वायामिशुनः शेषो वरुणस्त्रिष्टुप् ॥ वरु
भूर्मु० निर्र्क्तये० निर्र्क्तिं आ० ॥ भो निर्र्क्ते इहा गच्छ० ॥ अहेलमानो वरुणे हवोधुरशंसमान आयुः प्रमोपीः ॥ ॐ
पावा० ॥ ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणावंदमानस्तदाशस्ते यजमानो हुविभिः ॥ अहेलमानो वरुणे हवोधुरशंसमान आयुः प्रमोपीः ॥ ॐ
भूर्मु० वरुणाय० वरुणं आ० भो वरुण इ० ॥ ८ ॥ वायव्यां वायुं ॥ वायो शतं वामदेवो वायुरनुष्टुप् ॥ वायव्यो इहा
वायो शतं हरीणां युवस्वपो न्याणां ॥ उत वा तिसहस्रिणोरथ आयान्तु पाजसा ॥ ॐ जमया अन्नवसुभ्यो० अष्टवसून् आ
गच्छ० ॥ ९ ॥ वायु सोममध्ये अष्टवसून् ॥ जमया अन्नवसिष्ठे वसवस्त्रिष्टुप् ॥ वस्वावाहने० ॥ ॐ भूर्मुव० अष्टवसुभ्यो० आरुद्रासः
रावंतरिक्षेमर्जयंत शुभ्राः ॥ अर्वाक्पथउरुज्रयः कृणुध्वं श्रोता दूतस्य जग्मुषो नो अस्य ॥ भूर्मुव० अष्टवसुभ्यो० आरुद्रासः
वा० ॥ भो अष्टौ वसवः इहा गच्छत इति षटपूजां गृहीतवरदाभवत ॥ १० ॥ सोमेशानमध्ये एकादश रुद्रान् ॥ आरुद्रासः
इथावाश्च एकादश रुद्राजगती ॥ एकादश रुद्रेभ्यो नमः एकादश रुद्रान् आ० ॥ भो एकादश रुद्राः इ
अस्मात्तिह र्यते मतिस्तु न जेन द्विवत्सा उदन्यवे ॥ भूर्मु० एकादश रुद्रेभ्यो नमः ॥ त्यांनुमत्स्यो मान्यो वाद्वादशादित्या
हा गच्छत इति षटपूजां गृहीतवरदाभवत ॥ ११ ॥ ईशानेन्द्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यान् ॥ त्यांनुमत्स्यो मान्यो वाद्वादशादित्या
गायत्री ॥ द्वादशादित्या वाहने वि० ॥ ॐ त्यांनुक्षत्रियोऽवर्वादित्यान्या चिषामहे ॥ सुमळीको अभिष्टये ॥ भूर्मु० द्वादशा
दित्येभ्यो न० द्वादशादित्यानावा० ॥ भो द्वादशादित्याः इहा गच्छत इति षटपूजां गृहीतवरदाभवत ॥ १२ ॥ इंद्राग्निमध्ये

श्विनौ ॥ अश्विनावर्तिगोतमोश्विनावुष्णिक् अश्व्यावाह० ॥ ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमदस्नाहिरण्यवत् ॥ अर्वाग्रथंसम
 नसानिर्यच्छतं ॥ भूर्भुव० अश्विभ्यांनमः अश्विनौआवा० ॥ भोअश्विनौइहागच्छतंहतिष्ठतंपूजांगृहीतंवरदौभवतं ॥१३॥
 अग्निममध्येविश्वेदेवान्सपैतृकान् ॥ ओमासोमधुच्छंदाविश्वेदेवागायत्री ॥ विश्वेदेवावाहने० ॥ ॐ ओमांसश्चर्षणीधृतोवि
 श्वेदेवासआगतं ॥ द्वाश्वंसोदाशुषःसुतं ॥ भूर्भुव० विश्वेभ्योदेवेभ्योनमःविश्वान्देवान्आवाह० ॥ भोविश्वेदेवाःइहागच्छ
 तंहतिष्ठतंपूजांगृहीतवरदाभवत ॥१४॥ यमनिर्ऋतिमध्येसप्तयक्षान् ॥ अभित्यंवामदेवःसप्तयक्षाअष्टी ॥ सप्तयक्षावा० ॥
 ॐ अभित्यंदेवंसवितारंमोष्योःकविक्रतुमर्चामिसत्यसंवर्लुधामभिप्रियंमतिक्रविं ॥ ऊर्ध्वायस्यामतिर्भादिद्युतत्सवीमनि
 हिरण्यपाणिरमिमीतसुक्रतुःकृपास्वः ॥ भूर्भुव० सप्तयक्षेभ्यो० सप्तयक्षाःइहागच्छतंहतिष्ठतंपूजांगृ
 हीतवरदाभवत ॥१५॥ निर्ऋतिवरुणमध्येभूतनागान् ॥ आयंगौःसार्पराज्ञीसर्पागायत्री ॥ सर्पावाहने० ॥ ॐ आयंगौः
 पृश्निरकर्मदसदन्मातरंरूपुरः ॥ पितरंचप्रयन्त्स्वः ॥ भूर्भुव० सर्पेभ्योनमःसर्पान्आवा० ॥ भोसर्पाःइहागच्छतंहतिष्ठतपू
 जांगृहीतवरदाभवत ॥१६॥ वरुणवायुमध्येगंधर्वाप्सरसः ॥ अप्सरसामृष्यशृंगोगंधर्वाप्सरोनुष्टुप् ॥ गंधर्वाप्सरावाहने० ॥
 ॐ अप्सरसांगंधर्वाणामृगाणांचरणेचरन् ॥ केशीकेतस्यविद्वान्त्सखास्वादुर्मदिन्तमः ॥ भूर्भुव० गंधर्वाप्सरोभ्योनमःगंध
 र्वाप्सरसःआवा० ॥ भोगंधर्वाप्सरसःइहागच्छतंहतिष्ठतंपूजांगृहीतवरदाभवत ॥१७॥ ब्रह्मसोममध्येस्कंदंनदीश्वरंशूलंम
 हाकालंच ॥ यदक्रंदोदीर्घतमास्कंदस्त्रिष्टुप् ॥ स्कंदावाहने० ॥ ॐ यदक्रंदःप्रथमंजायमानउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात् ॥ इये

नस्यपक्षाहरिणस्यबाह्वपस्तुत्यंमहिजातंतेअर्वन् ॥ भूर्मु० स्कंदाय० स्कंदआवा० ॥ भोस्कंदइहागच्छइह० ॥ १८ ॥ ऋ
 षभमृषभोनंदीश्वरोनुष्टुप् ॥ नंदीश्वरआवा० ॥ भूर्मु० स्कंदाय० स्कंदआवा० ॥ भोस्कंदइहागच्छइह० ॥ १९ ॥ कद्रुद्रायघोरःकण्वःशूलोगायत्री शू
 त्रिगवां ॥ भूर्मु० नंदीश्वराय० नंदीश्वरंआवा० ॥ भोर्मु० शूलायन० शूलंआवा० ॥ भोशूलइहाग
 लावाह० ॥ २० ॥ कुमारंमाताकुमारोमहाकालस्त्रिष्टुप् ॥ महाकालावाह० ॥ २१ ॥ कुमारंमातायुवतिःसमुब्धगुहोविभर्तिन
 च्छइह० ॥ २० ॥ कुमारंमाताकुमारोमहाकालस्त्रिष्टुप् ॥ महाकाला० महाकाला० महाकाला० हितातव ॥
 देदातिपित्रे ॥ अनीकमस्यनमिनज्जनांसःपुरःपश्यंतिनिहितमरुतौ ॥ भूर्मु० महाकाला० महाकाला० हितातव ॥
 हा० ॥ २१ ॥ ब्रह्मेशानमध्येदक्षं ॥ अदितिर्बृहस्पतिर्दक्षोनुष्टुप् ॥ भूर्मु० दक्षाय० दक्षंआ० ॥ भोदक्षइहागच्छ० ॥ २२ ॥ ब्रह्मद्रमध्येदुर्गाविष्णुंच ॥
 तांदेवाअन्वजायंतभद्राअमृतबंधवः ॥ भूर्मु० दक्षाय० दक्षंआ० ॥ भोदक्षइहागच्छइहतिष्ठपूजांगृहाणवरदाभव ॥ २३ ॥ इदंवि
 तामग्निवर्णासौभरिर्दुर्गात्रिष्टुप् ॥ भूर्मु० दुर्गायै० दुर्गायै० दुर्गायै० निधेपुदं ॥ समूळमस्यपांसुरे ॥ भूर्मु० विष्ण
 प्रपद्येसुतरसितरसेनमः ॥ भूर्मु० दुर्गायै० दुर्गायै० दुर्गायै० निधेपुदं ॥ समूळमस्यपांसुरे ॥ भूर्मु० विष्ण
 णुर्मैधातिथिर्विष्णुर्गायत्री ॥ विष्णवावाहने० ॥ २४ ॥ ब्रह्माग्निमध्येस्वधां ॥ उदीरतांशखःस्वधात्रिष्टुप् ॥ स्वधावाहनेवि० ॥
 वेन० विष्णुंआवाह० ॥ भोविष्णोइहा० ॥ २४ ॥ असंयइयुरेवकाऽऽकृतज्ञास्तेनोवंपितरोहवेषु ॥ भूर्मु० स्वधायेन
 ॐ उदीरतामवरुत्तरासुउन्मध्यमाःपितरःसोम्यासः ॥

मःस्वधांआवा० ॥ भोस्वधेइहाग० ॥ २५ ॥ ब्रह्मयममध्येमृत्युरोगान् ॥ परंमृत्योसंकुसुकोमृत्युरोगास्त्रिष्टुप् मृत्युरोगा
 वाह० ॥ ॐ परंमृत्योअनुपरेहिपंध्यांयस्तेस्वइतरोदेवयानात् ॥ चक्षुष्मतेऽण्वतेतैर्ब्रवीमिमानःप्रजांरिषोमोतवीरान् ॥ भू
 र्मु० मृत्युरोगेभ्योनमः मृत्युरोगान्आ० ॥ भोमृत्युरोगाःइहागच्छतइहतिष्ठतपूजांगृहीतवरदाभवत ॥ २६ ॥ ब्रह्मनिर्ऋ
 तिमध्येगणपतिं ॥ गणानांत्वाशौनकोगृत्समदोगणपतिर्जगती ॥ गणपत्यावाहने० ॥ ॐ गुणानांत्वागणपतिंहवामहेकविकं
 वीनामुपमश्रवस्तमं ॥ ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पतुर्आनःशृण्वन्नृतिभिःसीदुसादनं ॥ भूर्भुवःस्वःगणपतये० गणपतिंआवा० ॥ भू
 भोगणपतेइहागच्छ० ॥ २७ ॥ ब्रह्मवरुणमध्येअपः ॥ शंनोदेवीःसिधुर्द्वीपआपोगायत्री ॥ अपावाहने० ॥ ॐ शंनोदेवीरभि
 ष्येयुर्भवंतुपीतये ॥ शंयोरभिस्रवंतुनः ॥ भूर्भु० अश्विनमःअपःआवा० भोआपःइहागच्छतइहतिष्ठत० ॥ २८ ॥ ब्रह्मवायु
 मध्येमरुतः ॥ मरुतोयस्यगोतमोमरुतोगायत्री ॥ मरुदावाहने० ॥ ॐ मरुतोयस्यहिक्षयेपाथादिवोविमहसः ॥ ससुगोपातं
 मोर्जनः ॥ भूर्भु० मरुद्भ्योन० मरुतःआवा० ॥ भोमरुतःइहागच्छत० ॥ २९ ॥ ब्रह्मणःपादमूलेकर्णिकाधःपृथिवीं ॥ स्योना
 पृथिविमेधातिथिर्भूमिर्गायत्री ॥ भूम्यावा० ॥ ॐ स्योनापृथिविभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानःशर्मसप्रथः ॥ भूर्भु० भू
 म्यैन० भूमिंआवा० ॥ भोभूमैइहागच्छ० ॥ ३० ॥ तत्रैवगंगादिसर्वनद्यः ॥ इमंमेगंगेसिधुक्षित्यैयमेधानद्योजगती ॥ गंगा
 दिनद्यावाहनेवि० ॥ ॐ इमंमेगंगेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोमंसचतापरुषण्या ॥ असिक्त्यामरुद्धेवितस्तयार्जीकीयेऽणुह्या
 सुषोमया ॥ भूर्भु० गंगादिनदीभ्योन० गंगादिनदीभावाह० ॥ भोगंगादिनद्यःइहागच्छतइहतिष्ठतपूजांगृहीतवरदाभव

त ॥ ३१ ॥ तत्रैवसप्तसागराः ॥ धाम्नो धाम्नो वामदेवः सप्तसागरा अष्टी ॥ सप्तसागरावाहने विनियोगः ॥ ॐ धाम्नो धाम्नो
राजन्नि तो वरुण नो मुंच ॥ यदापो अह्या इति वरुणे ति शपो महेत तो वरुण नो मुंच ॥ मयि वापो मोषधी हंसी रतो विश्वव्यचा भूस्त्वे
तो वरुण नो मुंच ॥ भूर्भुवः सप्तसागरेभ्यो ० सप्तसागरानावा ० ॥ भो सप्तसागराः इहा गच्छत ० ॥ ३२ ॥ तदुपरि मेरवे नमः मेरुं
आवा ० ॥ सोमसमीपे गदायै नमः गदां आवा ० ॥ ईशानसमीपे त्रिशूलाय नमः त्रिशूलमावा ० ॥ इंद्रसमीपे वज्राय ० वज्रं आवा ० ॥
अग्निसमीपे शक्तये ० शक्तिमावा ० ॥ यमसमीपे दंडाय नमः दंडमावा ० ॥ निर्ऋतिसमीपे खड्गाय ० खड्गं आवा ० ॥ वरुण
समीपे पाशाय ० पाशं आवा ० ॥ वायुसमीपे अंकुशाय ० अंकुशं आवा ० ॥ तद्वाह्ये उत्तरादिक्रमेण ॥ गौतमाय नमः गौतमं
आवा ० ॥ भरद्वाजाय ० भरद्वाजं आवा ० ॥ विश्वामित्रा ० विश्वामित्रं आवा ० ॥ कश्यपाय नमः कश्यपं आवा ० ॥ जमदग्नये नमः
जमदग्निं आवा ० ॥ वसिष्ठाय ० वसिष्ठं आवा ० ॥ अत्रये नमः अत्रिं आवा ० ॥ अरुंधत्यै ० अरुंधतीं आवा ० ॥ ततः पूर्वोदिक्रमेण मातृः ॥
ऐन्द्वेन ० ऐन्द्रीं आवा ० ॥ कौमार्येन ० कौमारीं आवा ० ॥ ब्राह्म्येन ० ब्राह्मीं आवा ० ॥ वाराह्येन ० वाराहीं आवा ० ॥ चामुंडायै ० चामुं
डां आवा ० ॥ वैष्णव्येन ० वैष्णवीं आवा ० ॥ माहेश्वर्ये ० माहेश्वरीं आवा ० ॥ वैनायक्येन ० वैनायकीं आवा ० ॥ इतिसर्वतो भद्रदेव
ताः ॥ ॥ लिंगतो भद्रे ज्येता एव देवताः स्थापयेत् ॥ केचि लिंगतो भद्रे पुनरन्या देवताः स्थापयंति ताश्चोच्यंते ॥ पूर्वोदिदिक्षु ॥
असितांग भैरवाय नमः असितांग भैरवं आवा ० ॥ रुद्र भैरवाय नमः रुद्र भैरवं आवा ० ॥ चंड भैरवाय ० चंड भैरवं आवा ० ॥ क्रोध भै
रवाय नमः क्रोध भैरवं आवा ० ॥ उन्मत्त भैरवा ० उन्मत्त भैरवं आवा ० ॥ कपाल भैरवाय ० कपाल भैरवं आवा ० ॥ भीषण भैरवा ० भी

षणभैरवंआ० ॥ संहारभैरवा० संहारभैरवंआवाहयामि ॥ (पुनःपूर्वादिषु ॥ भवाय-शर्वाय-ईशानाय-पशुपतये-रुद्राय-उग्राय-भीमाय-महते ॥ पुनःपूर्वादिषु ॥ अनंताय-वासुकये-तक्षकाय-कुलिशाय-कर्कोटकाय-शंखपालाय-कंबलाय-ये) इत्यावाह्य ॐ तदस्तुभिन्नावरुणातदग्नेशंयोरुस्मभ्यमिदमस्तुशस्तं ॥ अशीमहिगाधमुतप्रतिष्ठानमोदिवेबृहुतेसादेनाय ॥ गृहवैप्रतिष्ठासूक्तं तत्प्रतिष्ठिततमयावाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूरइवपशून्लभतेगृहानेवेनानाजिगमिषतिगृहाहिपशूनां प्रतिष्ठाप्रतिष्ठा ॥ ॐ नयं प्रजाभैगोपाय ॥ अमृतत्वार्थजीवसे ॥ जातार्जनिन्यमाणांच ॥ अमृतैस्त्येप्रतिष्ठितां ॥ एताब्रह्मादिदेवताः सुप्रतिष्ठिताः संतु ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विहीतः सुरुचोवेन आच ॥ ॐ तैत्तिरीयसंस्तुताः ॥ ॐ त्वं वै चतुर्मुखो ब्रह्मा स्वर्गलोकपितामहः ॥ १८९ ॥ अथ पौरुषं गुणं मंडले देवताः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ मध्ये ब्रह्माणं आवाहयामि ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ उत्तरस्यां सोमं ॥ ईशानीपालकं श्रेष्ठं सर्वलोकभयंकरं ॥ मंडले स्थापयामीह ईशान्यां सर्वसिद्धये ॥ ३ ॥ ईशान्यामीशानं ॥ सर्वलोकधिपं श्रेष्ठं देवर्षीणां च पालकं ॥ पूर्वदिक्पालकं देवराजं वै स्थापयाम्यहं ॥ ४ ॥ पू

श्रीः ॥ त्वं वै चतुर्मुखो ब्रह्मा स्वर्गलोकपितामहः ॥ १८९ ॥ अथ पौरुषं गुणं मंडले देवताः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ मध्ये ब्रह्माणं आवाहयामि ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ उत्तरस्यां सोमं ॥ ईशानीपालकं श्रेष्ठं सर्वलोकभयंकरं ॥ मंडले स्थापयामीह ईशान्यां सर्वसिद्धये ॥ ३ ॥ ईशान्यामीशानं ॥ सर्वलोकधिपं श्रेष्ठं देवर्षीणां च पालकं ॥ पूर्वदिक्पालकं देवराजं वै स्थापयाम्यहं ॥ ४ ॥ पू

वेङ्द्रं ॥ त्रिपादं मे पवाहं च त्रिशिखं च त्रिलोचनं ॥ आग्नेय्यांस्थापयाम्यत्र अग्निं पुरुषमुत्तमं ॥ ५ ॥ आग्नेय्यामग्निं ॥ अंत
 कः सर्वलोकानां धर्मराज इति श्रुतः ॥ अतस्त्वांस्थापयाम्यत्र दक्षिणस्यां स्थिरो भव ॥ ६ ॥ दक्षिणस्यां यमं ॥ नैऋत्यां वसतिर्य
 स्य घोररूपी सदाहियः ॥ निर्ऋतिं स्थापयाम्यत्र नैऋत्यां मंडले शुभे ॥ ७ ॥ नैऋत्यां नैऋतिं ॥ अपां पतिं पाशधरं यादसां पतिकं शु
 भं ॥ वरुणं स्थापयाम्यत्र वारुण्यां मंडले शुभे ॥ ८ ॥ पश्चिमायां वरुणं ॥ आशुगं सर्वबोधं च गंधवाहं सुशीतलं ॥ मंडले स्थापयामी
 ह वायव्यां वायुमुत्तमं ॥ ९ ॥ वायव्यां वायुं ॥ ध्रुवो ध्वरश्च सोमश्च आशुगश्चानिलो नलः ॥ प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वस्वष्टकमिह स्थिरं
 ॥ १० ॥ वायुसोमयोर्मध्ये वसून् ॥ त्रिनेत्ररुद्ररूपाय त्रिजटाय महात्मने ॥ नमस्कृत्वा स्थापयामि मंडलोपरिमध्यतः ॥ ११ ॥
 सोमेशानयोर्मध्ये रुद्रं ॥ 'आदित्यं भास्करं चैव प्रभाकरं दिवाकरं ॥ सूर्यग्रहपतिं ब्रह्मतेजो रूपधरं हरिं ॥ सप्ताश्वं देवमूर्तिं च
 त्रिदैवत्यं क्रमेण च ॥ इत्यादि द्वादशादित्यान् मंडले स्थापयाम्यहं ॥ १२ ॥ ईशानं द्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यान् ॥ १२ ॥ अ
 श्विनौ देववैद्यौ च सर्गस्थित्यंतकारिणौ ॥ मंडले स्थापयित्वा तौ पूजयामि सुसिद्धये ॥ १३ ॥ इंद्राग्नयोर्मध्ये अश्विनौ ॥ देवे
 कर्मणि पैत्र्ये च यौ मुख्यौ सर्वदा शुभौ ॥ मंडले स्थापयामीह सुखानुष्ठानसिद्धये ॥ १४ ॥ अग्निमयोर्मध्ये विश्वान् देवान् सपैतृ
 कान् ॥ यदृच्छया पर्यटंतो यक्षराजामहीतले ॥ कौतुकं प्रेक्षितुं घोरामंडले संतु सुस्थिराः ॥ १५ ॥ यमनिर्ऋत्योर्मध्ये यक्षान् ॥
 'अवंतीवासुकिश्चैव कालियो मणिभद्रकः ॥ शंखश्च शंखपालश्च कालकोटिधनंजयौ ॥ १ ॥ धृतराष्ट्रश्च नागेशः स्वीकुर्वतुम
 मार्चनं ॥ मंडले पूजयाम्यत्र सर्वारिष्टप्रशांतये ॥ १६ ॥ निर्ऋतिं च रुणयोर्मध्ये नागान् १ ॥' उर्वशी प्रमुखाः सर्वाः सर्वेशाः शक्र

पूजिताः ॥ गंधर्वैश्चसदायांतुमंडलेसिन्नुशोभनाः ॥ १७ ॥ वरुणवाय्वोर्मध्येगंधर्वाप्सरसः ॥ त्र्यंबकंचत्रिपुरुषंनीलकंठं
 दाशिवं ॥ मंडलेस्थापयामीहसुखानुष्ठानसिद्धये ॥ १८ ॥ ब्रह्मसोमयोर्मध्येरुद्रं ॥ षडाननंचतुर्हस्तस्कंदंशैलसुतात्मजं ॥ इहै
 वपूजयिष्यामिसर्वकामार्थसिद्धये ॥ १९ ॥ तत्रैवस्कंदं ॥ शिवद्वारगतस्त्वंचशिववाहनमुत्तमं ॥ पार्वत्याःप्रीतिकृन्नि
 त्यमिहागच्छस्थिरोभव ॥ २० ॥ तत्रैवनंदीश्वरं ॥ अदितिर्देवमातस्त्वंदक्षपुत्रिसुशोभने ॥ मंडलेसिन्समागच्छयावत्पूजां
 स्थिराभव ॥ २१ ॥ ब्रह्मेशानयोर्मध्येअदितिं ॥ दक्षोसिसर्वकार्येषुमहान्यज्ञकरप्रियः ॥ ऋषीणांसर्वदादक्षमंडलेसिं
 स्थिरोभव ॥ २२ ॥ तत्रैवदक्षं ॥ तामग्निवर्णोज्ज्वलंतीतपसासर्वदाशुभां ॥ भक्तानांवरदानित्यंदुर्गामावाहयाम्यहं ॥ २३ ॥
 तत्रैवब्रह्मेशानयोर्मध्येनवदुर्गां ॥ कृष्णायगोपिनाथायचक्रिणेशुरवैरिणे ॥ नमस्तुभ्यंजगद्धात्रेमंडलेसिंस्थिरोभव ॥ २४ ॥
 ब्रह्मेशानयोर्मध्येविष्णवेनमः ॥ त्वंस्वाहात्वंस्वधात्वंहिवपद्कारस्वरात्मिका ॥ अतस्त्वांपूजयिष्यामिमंडलेसिंस्थिराभव
 ॥ २५ ॥ ब्रह्माश्वोर्मध्येस्वधां ॥ मृत्युरोगानंतकस्यप्रेष्यान्प्राणहरान्क्षणात् ॥ मंडलेस्थापयामीहपूजार्थंलोकनाशकान् ॥ २६ ॥
 ब्रह्मयमयोर्मध्येमृत्युरोगान् ॥ १ ॥ कुंकुमाभंसदानंदंभक्तसंकटनाशनं ॥ चतुर्भुजंत्रिनेत्रंचमंडलेस्थापयाम्यहं ॥ २७ ॥
 ब्रह्मनिर्ऋतिमध्येगणपतिं ॥ पावनाःसर्वलोकानानिमग्नाःशुद्धिकारकाः ॥ सर्वपापहराःश्रेष्ठामंडलेस्थापयाम्यहं ॥ २८ ॥
 ब्रह्मवरुणयोर्मध्येअपः ॥ सुगंधिनश्चशैत्याढ्यामंदमंदवहाःसदा ॥ तानहंस्थापयामीहमरुतोमंडलेशुभे ॥ २९ ॥ ब्रह्मवा
 य्वोर्मध्येमरुतः ॥ पृथिव्याधार्यतेविश्वंदुर्वाहंसागरैर्नगैः ॥ अतस्त्वांस्थापयामीहमंडलेब्रह्मणःपदे ॥ ३० ॥ ब्रह्मणःपादमू

लेपृथ्वी० ॥ गंगासिंधुसरस्वतीचयमुनागोदावरीनर्मदाकावेरीशरयूमहेन्द्रतनयाचर्मण्वतीवेदिका ॥ गिप्रावेन्नवतीमहासुरन
 दीख्याताचयागंडकीपूर्णःपूर्णजलैःसमुद्रसहिताआयांतुमेमंडले ॥३१॥ तत्रैवगंगदिसप्तनदीभ्योनमः ॥ समुद्रःसर्वतोयेषुश्रे
 ष्ठैवैहरिवह्नभः ॥ मंडलेस्थापयामीहृतंनदीशंसुखासये ॥३२॥ तत्रैवसप्तसमुद्राः ॥ ततोद्वारपालान्चतुर्दिक्षुस्थापयेत् ॥ तदुप
 रिमेरुंनाममंत्रेणावाहयेत् ॥ (मेरवेनमः मांदारायनमः सह्याद्रिप० विंध्याद्रिप० द्रोणागिरि० हिमाचल० ब्रह्मागि
 रि०) ॥ बाह्यपरिधौ ॥ सोमसमीपेगदायैनमःगदांआवाहया० ईशानसमीपेत्रिशूलायन० त्रिशूलं० इंद्रसमीपेवज्रा
 य० वज्रं० अग्निसमीपेशक्तये० शक्तिं० यमसमीपेदंडाय० दंडं० निर्ऋतिसमीपेखड्गाय० खड्गं० वरुणसमीपेपाशाय० पाशं०
 वायुसमीपेअंकुशाय० अंकुशं० ॥ तद्बाह्ये ॥ उत्तरेगौतमाय० ईशान्येभरद्वाजाय० पूर्वेविश्वामित्राय० आग्नेय्यांकश्यपाय०
 दक्षिणेजमदग्नये० नैऋत्यांवसिष्ठाय० पश्चिमायांअत्रये० वायव्यांअरुंधत्यै० तद्बाह्येपूर्वादिदिक्षु ॥ पूर्वेऽष्टौ० आग्नेय्यांकौ
 मार्यै० दक्षिणेब्राह्म्यै० नैऋत्यांवाराह्यै० पश्चिमायांचामुंडार्यै० वायव्यांवैष्णव्यै० उत्तरेमाहेश्वर्यै० ईशान्यांवैनायक्यै० ॥
 असितांगभैरवायनमः रुरुभैरवाय० चंडभैरवाय० क्रोधभैरवाय० उन्मत्तभैरवाय० कपालभैरवाय० भीषणभैरवाय०
 संहारभैरवाय० संहारभैरवमावाहयामि ॥ इत्यावाह्य ॥ त्वंवैचतुर्मुखोब्रह्मास्वर्गेलोकपितामहः ॥ आगच्छमंडलेचास्मि
 त्ममसर्वार्थसिद्धये ॥ इतिसर्वान्भोडशोपचारैःपूजयेत् ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६५ ॥

॥ १९० ॥ अथमुख्यदेवतापूजनम् ॥

श्रीः ॥ देशकालौनिर्दिश्यश्रुति०अमुकब्रतोद्यापनांगत्वेनविहितंमुख्यदेवतास्थापनंपूजनंचकरिष्ये ॥ ततोमंडलमध्ये मही
द्यौरितिभूमिंस्पृष्ट्वा ओषधयइतिधान्यराशिकृत्वा आकलशेष्वितिकलशंसंस्थाप्यइममेइत्युदकेनापूर्य तत्रगंधद्वाराभितिगंध
कांडात्कांडादितिदूर्वाः अश्वत्थेवइतिपल्लवान् याःफलिनिरितिफलं सहिरत्नानीतिपंचरत्नानि हिरण्यरूपइतिहिरण्यंचप्रक्षि
प्ययुवासुवासाइतिवस्त्रेणसूत्रेणवावेष्टयतत्रपूर्णदर्वीतिपूर्णपात्रंनिधाय तत्त्वायामीतिकलशेवरुणमावाह्यगंधाद्युपचारैरभ्य
र्च्यकलशस्यमुखे० देवदानवसंवादे० इत्यादिभिःप्रार्थयेत्॥ततस्तत्रसुवर्णप्रतिमायांअभ्युत्तारणपूर्वकंब्रतोक्तदेवतायाःप्राणप्र
तिष्ठांकृत्वातस्यांब्रतोक्तमंत्रेणदेवतामावाह्यपुरुषसूक्तेनषोडशोपचारैःपूजयेत् अनंतरंतरांत्रिततद्भक्तकथापुराणगीतादिना०

॥ १९१ ॥ अथब्रतोद्यापनहोमः ॥

श्रीः ॥ आचार्यःप्रातर्नित्यविधिंनिर्वर्त्यस्थापितदेवताःपूजयेत् ॥ देवतास्थापनास्यश्चिमतोहोमानुसारेण स्थंडिलंनिर्मयतत्र
स्वशाखोक्तविधिनास्थंडिलसंस्कारपूर्वकंबलवर्धननामकमग्निप्रतिष्ठाप्यध्यात्वान्वादध्यात् ॥ क्रियमाणेअमुकब्रतोद्यापनहो
मेदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्येअस्मिन्नन्वाहितेनावित्यादिचक्षुषीआज्येनेत्यंतमुक्त्वा ॥ अत्रप्रधानं ॥ अमुकदेवतांअ
मुकमंत्रेणअमुकद्रव्येणअमुकसंख्याकाहुतिभिः ॥ आवरणदेवताइंद्राद्यष्टौलोकपालांश्चएकैकयाहुत्यातैरेवद्रव्यैर्यक्ष्ये ॥ ब्रह्मा

१ अनेकब्रतानासमुच्चयेनकरणपक्षेशिवब्रतार्थविष्णुब्रतार्थचपृथक्पृथक्स्यडिलंकृत्वातत्रतत्तद्धोम.कार्यः ।

दिमंडलदेवताश्च एकैकयाहुत्याआज्येनयक्ष्ये ॥ शेषेणस्विष्टकृतमित्यादिचक्षुष्यंतेकृतयजमानःइदमुपकल्पितहवनीयद्रव्यंया
 यायक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यःपरित्यक्तंनममेत्युद्देशत्यागौकुर्यात् ॥ ततःसर्विगाचार्यःप्रधानहोमंकृत्वान्नह्मादिमंडलदेवतानांत
 तन्मंत्रैर्नाममंत्रैर्वाज्यहोमंकुर्यात् ॥ तत्रक्रमः ॥ आदौप्रणवःसर्वत्र ॥ ॐ ब्रह्मणेनमःस्वाहा ॥ सोमायनमः० ॥ ईशानायन
 मः० ॥ इंद्रायन० ॥ अग्नयेन० ॥ यमायन० ॥ निर्ऋतयेन० ॥ वरुणायन० ॥ वायवेन० ॥ अष्टवसुभ्योन० ॥ एकाद
 शरुद्रेभ्योनमः० ॥ द्वादशादित्येभ्योन० ॥ अश्विभ्योदेवेभ्योन० ॥ सप्तयक्षेभ्योन० ॥ सर्पेभ्योनमःस्वा० ॥
 अप्सरोभ्योन० ॥ स्कंदायनमः० ॥ नंदीश्वरायनमः० ॥ शूलायनमः० ॥ दक्षायन० ॥ दुर्गायैनमःस्वा० ॥
 विष्णवेन० ॥ स्वधायैन० ॥ मृत्युरोगेभ्योन० ॥ गणपतयेन० ॥ अन्नोन्न० ॥ मरुद्भ्योन० ॥ भूम्यैन० ॥ गंगादिसर्व
 नदीभ्योन० ॥ सप्तसागरेभ्योन० ॥ मेरवेन० ॥ गदायैन० ॥ त्रिशूलायन० ॥ वज्रायन० ॥ शक्तयेन० ॥ दंडायनमः० ॥
 खड्गायन० ॥ पाशायन० ॥ अंकुशायन० ॥ गौतमायन० ॥ भरद्वाजायन० ॥ विश्वामित्रायनमः० ॥ कश्यपायन० ॥ जमद
 ग्नयेन० ॥ वसिष्ठायन० ॥ अत्रयेन० ॥ अरुंधत्यैन० ॥ ऐन्द्रेन० ॥ कौमार्यैन० ॥ ब्राह्म्यैनमःस्वा० ॥ वाराह्यैन० ॥ चामुंडा
 यैन० ॥ वैष्णव्यैन० ॥ माहेश्वर्यैनमः० ॥ वैनायक्यैनमःस्वाहा ॥ इतोर्लिंगतोभद्रदेवताः ॥ असितांगभैरवायनमःस्वाहा॥
 रुरुभैरवायनमः० ॥ चंडभैरवायन० ॥ क्रोधभैरवायनमः० ॥ उन्मत्तभैरवायन० ॥ कपालभैरवायन० ॥ भीषणभै
 रवायन० ॥ संहारभैरवायनमःस्वाहा ॥ स्विष्टकृदादिप्रायश्चित्तहोमांतयजमानान्वारब्धआचार्योधिधामंतइतिपूर्णहुतिहु

त्वाअद्भ्यइदं० ॥ ततोहोमशेवंसमाप्यस्थापितकलशोदकेनसकुटुंबंयजमानंसमुद्रज्येष्ठाइत्यादिभिर्ब्रतदेवताकर्मत्रैश्चाभिषिंचे
त् ॥ ततोयजमानःआचार्यसंपूज्यतस्मैसवत्सांगांदत्वाऋत्विग्भ्यश्चयथाशक्तिदक्षिणांदत्वाश्रेयःस्वीकृत्यस्थापितदेवतानामु
त्तरपूजांकृत्वाग्निंसंपूज्य देवतापीठंसदक्षिणमाचार्यायदत्वायथाशक्तिब्राह्मणान्भोजयित्वातेभ्योभूयसीदक्षिणांदत्वाब्राह्मणै
र्ब्रतसंपूर्णतांवाचयित्वाविष्णुंस्मृत्वाकर्मेश्वरार्पणंकृत्वासुहृद्यतोभुंजीत ॥ १९२ ॥ अथशुक्लैकादशीव्रतोद्योपनम् ॥

श्रीः ॥ देशकालौसंकीर्त्यममखिलपापक्षयपूर्वकंधर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वाराश्रीपरमे० अमुककामनयावा
मयाचरितशुक्लैकादशीव्रतोद्योपनंकरिष्ये ॥ तदंगविहितंगणेशपूजनाद्याचार्यवरणांतंकृत्वाआचार्यःपूर्वोक्तप्रकारेणसर्वतोभद्रे
ब्रह्मादिदेवताःआवाह्यसंपूज्यतदुपरिअक्षतपुंजेकेशवादिद्वादशनामांकितं अक्षतपूर्णताम्रमयंतंडुलपूर्णराजतपूर्णपात्रसहितं
कलशंप्रतिष्ठाप्यतत्रअष्टदलपद्मेदेवताआवाहयेत् ॥ प्रणवस्यपरब्रह्मऋषिः परमात्मादेवता दैवीगायत्रीछंदः व्याहृतीनांक्रमे
णजमदग्निभरद्वाजभृगवऋषयः अग्निवायुसूर्यादेवताः दैवीगायत्रीदैव्युष्णिगकैद्वीबृहत्पदछंदांसि पुरुषावाहनेविनियोगः ॥

तत्रकर्णिकायाम् भूःपुरुषंआवाहयामि ॥ भुवःपुरुषंआ० ॥ भूर्भुवःस्वःपुरुषंआवाहयामि ॥ ततःसुवर्णप्रति
मायां सहस्रशीर्षानारायणःपुरुषोनुष्टुप् ॥ पुरुषावाहने० ॥ सहस्रशीर्षा० ऋक् १ ॥ लक्ष्मीयुतंपुरुषंमध्येआवाहयामिस्था
पयामिपूजयामिनमः ॥ परितःअग्निं इंद्रं प्रजापतिं विश्वान्देवान् ब्रह्माणं वसुदेवं रामं श्रियं नाममंत्रेणआवाह्य ॥ ततः

पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरदलाभ्यंतरेषु स्त्रीचतुःसहस्रसहितांरुक्मिणी १ स्त्रीचतुःसहस्रसहितांसत्यभामां २ स्त्रीचतुःसहस्रस
 हितांजांबवतीं ३ स्त्रीचतुःसहस्रसहितांकालिंदीं ४ चावाह्य ॥ ततआग्नेयादिकोणेषु ॥ शंखं चक्रं गदां पद्मं आवाह्य ॥ पुरतः ॥
 सामध्वनिशरीरस्त्वंवाहनंपरमेष्ठिनः ॥ विषपापहरोनित्यमतःशांतिप्रयच्छमे ॥ इतिगरुडंआवाह्य ॥ परितः पूर्वोदिक्रमेणइंद्रा
 द्यष्टौलोकपालान्तत्तन्मंत्रैर्नाममंत्रैर्वावाह्य तदस्तुमित्रा ० गृहवै ० इतिप्रतिष्ठाप्यपूर्वोक्तप्रकारेणपूजयेत् ॥ पुष्पानंतरंअंगपूजां
 कुर्यात् ॥ दामोदरायनमः पादौपूजयामि माधवाय ० जानुनीपू ० कामपतये ० गुह्यंपू ० वामनाय ० कटिपू ० पद्मनाभाय ०
 नाभिपू ० विश्वमूर्तये ० उदरंपू ० ज्ञानगम्याय ० हृदयंपू ० श्रीकंठाय ० कंठपू ० सहस्रबाहवे ० बाहूपू ० योगिने ० चक्षुषीपू ०
 उरगाय ० ललाटं ० नाकसुरेश्वराय ० नासांपू ० श्रवणेपू ० सर्वकामदाय ० शिखांपू ० सहस्रशीर्ष्णे ० शिरःपू ० सर्व
 रूपिणे ० सर्वांगपूजयामि ॥ धूपं ० दीपं ० नमस्कारोत्तरंविशेषार्घ्यंदद्यात् ॥ नारायणजगन्नाथलक्ष्मीकांतदयानिधे ॥ गृहाणा
 ह्यमयादत्तंव्रतसंपूर्तिहेतवेइति ॥ ततःपरेहनिप्रातर्चार्यआवाहितदेवताःसंपूज्यकर्मसंकल्पयान्वादध्यात् ॥ चक्षुषीआज्ये
 नेत्यंतेत्रप्रधानं पुरुषंपुरुषसूक्तेनप्रत्यूचंआज्येनअमुकावृत्तिसंख्यया अग्निंइंद्रंप्रजापतिंविश्वान्देवान्ब्रह्माणंआज्येनएकवारं
 वसुदेवंरामंश्रियंविष्णुंनाममंत्रेणघृताक्तपायसद्रव्येणएकवारं पुनःविष्णुंविष्णोर्नुकमितिषण्मंत्रैःप्रत्यूचंघृताक्तपायसद्रव्येण
 अग्निंवायुंसूर्यंप्रजापतिंचएकवारंघृताक्तपायसद्रव्येण केशवादिदामोदरांतद्वादशदेवताःनाममंत्रैःएकवारंपायसद्रव्येण स्त्री
 चतुःसहस्रसहितांरुक्मिणी स्त्रीचतुःसहस्रसहितांसत्यभामां स्त्रीचतुःसहस्रसहितांजांबवती स्त्रीचतुःसहस्रसहितांकालिंदी

शंखं चक्रं गदां पद्मं गण्डं इंद्राद्यष्टौ लोकपालान् ब्रह्मादिमंडलदेवताश्च एकैकया ज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ शेषेण स्विष्टकृतमित्यादि आ-
 ज्यभागांतं कृत्वा प्रधानदेवता होमयेत् ॥ ॐ सहस्रशीर्षा० ऋक् १६ ॥ अग्नये० इंद्राय० प्रजापतये० विश्वेभ्यो देवेभ्यः०
 सृणां दीर्घतमा विष्णुस्त्रिष्टुप् हवने वि० ॥ ॐ विष्णोर्नुकं० तदस्य प्रियं० प्रतद्विष्णुं० ॥ परोमात्रया विचक्रमे त्रिदेव इति
 स्वः स्वाहा ॥ अथ केवलं पायसेन ॥ ॐ केशवाय नमः स्वाहा ॥ प्रणवः स्वाहाकारः सर्वत्र ॥ नारायणाय० माधवाय० गोविंदाय०
 विष्णवे० मधुसूदनाय० त्रिविक्रमाय० वामनाय० श्रीधराय० हृषीकेशाय० पद्मनाभाय० दामोदराय० ॥ अथ केवलज्येन
 स्त्रीचतुः सहस्रसहितायै रुक्मिण्यै० स्त्रीचतुःस० सत्यभामायै० स्त्रीचतुःस० जांबवत्यै न० स्त्रीचतुःसहस्रसहितायै कालिंद्यै०
 शंखाय० चक्राय० गदायै० पद्माय० गरुडाय० ॥ रुद्राय० अग्नये० यमाय० निर्ऋतये० वरुणाय० वायवे० सोमाय० ईशा-
 नाय० तत्तन्मंत्रैर्वाहुत्वा ततो ब्रह्मादिमंडलदेवतास्तत्तन्मंत्रैर्नाममंत्रैर्वाकेवलज्येन होमयेत् ॥ ततः स्विष्टकृतं ॥ ततो यजमानो दे-
 वाय प्रापणं निवेदयेत् प्रापणशब्देन हविः पदार्थाः पक्वान्नादयश्च ॥ त्वामेकमाद्यं पुरुषं पुराणं नारायणं विश्वसृजं यजामः ॥ त्वयैष भा-
 गो विहितो विधेयो गृहाण हव्यं जगतामधीश इति निवेद्य तिष्ठेत् ॥ ततः अग्निं त्रिवारं चतुर्वारं वा प्रदक्षिणीकृत्या भिधिं विश्वा अपदि-
 ष इति धरण्यां जानुनी निपात्य ध्रुवसूक्तं पुरुषसूक्तं च जप्त्वा अष्टौ पदानि प्रतिदिशं गच्छेत् एभिर्मंत्रैः ॥ कृष्णाय वासुदेराय हरये

परमात्मने ॥ शरण्यायाप्रमेयायगोविंदायनमोनमः ॥ नमःस्थूलायसूक्ष्मायव्यापकाव्यापकायच ॥ अनंतायजगद्धात्रे
 ह्यणेनंतमूर्तये ॥ अव्यक्तायाऽखिलेशायचिद्रूपायगुणात्मने ॥ नमोमूर्तायसिद्धायपरायपरमात्मने ॥ देवदेवायवंद्यायपरा
 यपरमेष्ठिने ॥ कर्त्रेविश्वस्यगोप्त्रेचतत्संहर्त्रेचतेनमः ॥ अथदेवायनिवेदितप्रापणमानीयमूर्ध्नि कृत्वा ॥ कैवर्णवाःकैवर्णवाः
 कैवर्णवाःइतिउच्चैर्वेदेत् ॥ ततःसमानाःप्रतिवेदयुः ॥ वयंवैर्णवाः वयंवैर्णवाःइतित्रिः ॥ ततस्तेभ्यःसमानेभ्योहविर्वेत्वा
 स्वयं ॐ नमोभगवतेवासुदेवायेतिमंत्रेणइदममृतमहंप्राश्नामिइतिप्राश्य ॥ आचम्यप्राणानायम्ययजमानःआचार्योवासि
 ङ्गयेस्वाहेतिअग्नौआज्यंजुहुयात् ॥ ततःयतइंद्रभयामहेइत्यनेनआत्मानमभिमंत्रयेत् ॥ ततआचार्यःशुल्बहरणंकृत्वाप्रायश्चि
 त्तादिहोमशेषंसमापयेत् ॥ ततःयजमानःसांगतासिद्ध्यर्थआचार्यादीन्विधुक्तप्रकारेणसंपूज्यदक्षिणादिभिःप्रतोष्यआचा
 र्यायश्वेतांसवत्सांसांकारांगंदद्यात् ॥ ततःयजमानःद्वादशसंख्याकान्ब्राह्मणान्केशवादिद्वादशकलशान् केशवादिद्वा
 केशवादिद्वादशनामभिःयथाविभवंसंपूज्यतेभ्यःपक्वान्नपूरितान्वस्त्रतांबूलदक्षिणादिसहितान्द्वादशकलशान् केशवादिद्वा
 दशनामांकितान्दद्यात्तत्रमंत्रः ॥ पक्वान्नपूरितंकुंभंदक्षिणावस्त्रसंयुतं ॥ ददामिद्विजवर्यायदेवोनःप्रीयतामिति ॥ देवपद
 स्थानेकेशवादिनाम्नांऊहःकार्यः ॥ ततःपीठदानम् ॥ ततआचार्यःपात्रांतरेउच्छृतकलशोदकेनसपत्नीकंयजमानंसमुद्रज्येष्ठा
 त्यादिवैदिकैर्मंत्रैः सुरास्त्वामित्यादिपौराणिकैर्मंत्रैर्वैर्णवसूक्तैश्चाभिषिचेत् ॥ ततःस्नातोयजमानःअग्निसंपूज्य यस्यस्मृत्या
 मंत्रहीनमितिक्षमाप्य अभ्यारमिदद्रयो० यांतुदेवगणाःसर्वेइतिविसर्जयेत् ॥ कृतस्यकर्मणःसांगतासिद्ध्यर्थसदन्नेनदक्षिणा

दिनाब्राह्मणान्प्रतोष्यआशिषोगृहीत्वाव्रतसंपूर्णतांवाचयेत् ॥ जपच्छिद्रंतपच्छिद्रंयच्छिद्रंयच्छिद्रंव्रतकर्मणि ॥ सर्वंभवतुमेच्छिद्रं
ब्राह्मणानांप्रसादतः ॥ इतिसंप्रार्थ्य ॥ तेऽच्छिद्रंभवत्विति वदेयुः ॥ ततस्तान्नमस्कृत्यइष्टजनैःसोत्सवोभुंजीत ॥ इति ॥

॥ १९३ ॥ अथकृष्णैर्कादशयुध्यापनम् ॥
वराणांतं कर्मकुर्यात् ॥ ततआचार्यःपूर्वोक्तप्रकारेणसर्वतोभद्रब्रह्मादिदेवताआवाह्यसंपूज्यतदुपरिसंकर्षणादिद्वादशनामांकितं
तिलपूर्णराजतपूर्णपात्रयुतंकलशंप्रतिष्ठाप्यतत्रअष्टदलं विलिख्यकर्णिकायां ॥ भूःपुरुषमित्याद्यावाह्यमध्येसहस्रशीर्षेति सौ

कृष्णैका-
॥१९३॥

ह्य ॥ ततःआग्नेयादिविदिक्षुगणपतिदुर्गाक्षेत्राधिपतिवास्तोष्पतिं चावाह्य ॥ पुनःपूर्वादिदिक्षुब्रह्मजज्ञानमिति ब्रह्माणं वि
ष्णोर्नुकमिति विष्णुं बलभद्रम् प्रद्युम्नं त्र्यंबकमिति त्र्यंबकम् वसुदेवं रामं अनिरुद्धं वामभागे श्रियं पुरतःराजतंगरुडं ॥
पुनःआग्नेयादिकोणेषु शंखं चक्रं गदां पद्मं ॥ पुनःपूर्वादिक्रमेण विमलां उत्कर्षिणीं ज्ञानां क्रियां योगां प्रह्लां सत्यां इ
चारैःसंपूज्य अनुग्रहाम् ॥ पुनःपूर्वादिक्रमेण इंद्राद्यष्टौलोकपालान् तत्तन्मन्त्रैर्नाममन्त्रैर्वाआवाह्यपूर्वोक्तप्रकारेण षोडशोप
पुराणश्रवणादिनारात्रिं निनयेत् ॥ प्रातःपुनःपीठदेवताःसंपूज्य पूर्वोक्तप्रकारेण अग्निं प्रतिष्ठाप्य अन्वादध्यात् ॥

॥२५६॥

अत्रप्रधानम् ॥ संकर्षणादिकृष्णांतद्वादशदेवताः घृताक्तपायसेन एकैकया हुत्वा पुरुषं विष्णुं अष्टोत्तरसहस्रसंख्याकघृताकृति
 लाहुतिभिः अष्टोत्तरशतसंख्याभिर्वा अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं प्रत्येकं स्त्रीचतुः सहस्रसंहितारुक्मिणीं सत्यभामां जांबवतीका
 लिंदीं एकवारंपायसेन वसुदेवं रामं श्रियं विष्णुं विष्णोर्नुकमिति षण्मंत्रैः प्रत्यृचंपायसेन गणपतिं दुर्गाक्षेत्राधिपतिं वास्तोष्पतिं ब्र
 ह्माणंबलभद्रं प्रद्युम्नं त्र्यंबकं अनिरुद्धं गरुडं शंखं चक्रं गदां विमलाद्या अनुग्रहांता देवताः इंद्राद्यष्टलोकपालान् ब्रह्मादिमंडल
 देवताश्चैकैकया ज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ शेषेण स्विष्टकृतमित्यादि आज्यभागांतं कृत्वा प्रधानदेवताहोमयेत् ॥ ॐ संकर्षणाय नमः
 स्वाहा वासुदेवाय ० प्रद्युम्नाय ० अनिरुद्धाय ० पुरुषोत्तमाय ० अधोक्षजाय ० नारसिंहाय ० अच्युताय ० जनार्दनाय ०
 उपेन्द्राय ० हरये ० श्रीकृष्णाय ० घृताक्तपायसेन एकवारं ॥ सहस्रशीर्षा ० घृताक्ततिलैः ॐ भूः स्वाहा भुवः स्वाहा स्वः स्वाहा
 भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॥ प्रत्येकं स्त्रीचतुः सहस्रसंहितायै रुक्मिण्यै ० सत्यभामायै ० जांबवत्यै ० कालिंद्यै ० वसुदेवाय ० रामाय ०
 श्रियै ० विष्णोर्नुकं ० तदस्य प्रि ० प्रतद्विष्णु ० परोमात्रया ० विचक्रमे ० त्रिदेवः ० केवलपायसेन ० ॥ अथाज्येन गणपतये ०
 दुर्गायै ० क्षेत्राधिपतये ० वास्तोष्पतये ० तत्तन्मंत्रैर्वा ब्रह्मणे ० बलभद्राय ० प्रद्युम्नाय ० त्र्यंबकाय ० अनिरुद्धाय ० गरुडा
 य ० शंखाय ० चक्राय ० गदायै ० पद्माय ० विमलायै ० उत्कर्षिण्यै ० ज्ञानायै ० क्रियायै ० योगायै ० प्रह्वायै ० सत्यायै ०
 ईशानायै ० अनुग्रहायै ० इंद्रायेत्यादिलोकपालेभ्यः ब्रह्मादिमंडलदेवताभ्यश्च ० हुत्वा ततः स्विष्टकृतं हुत्वा प्रायश्चित्तहो
 मांतं कर्मनिर्वर्त्य ॥ आचार्याय कृष्णां गां दत्त्वा द्वादशब्राह्मणान् संकर्षणादिकृष्णांतद्वादशनामभिः संपूज्य तेभ्यः दक्षिणादियुता

नृतिलपूर्णान्संकर्षणादिद्वादशनामांकितान्कलशान्दद्यात् पीठं दत्वासदन्नेन ब्राह्मणान्यथाविभवं संभोज्य दक्षिणादिभिः प्र-
तोष्य व्रतसंपूर्णतां वाचयित्वा आशिषो गृहीत्वा इष्टजनैः सह भुंजीत ॥ इति कृष्णैकादशी व्रतोद्यापनं समाप्तं ॥
ताचार्यः उक्तविधिना लिंगतो भद्रद्रोणपरिमितव्रीहस्थकलशैरौप्यप्रतिमायां त्र्यंबकं यज्जन्मसौभाग्यादिविविधभोगप्राप्तद्वारा उभामहेश्व-
मायेति गौरी पुरतश्च रौप्यमय्यां ऋषभं मा इति वृषभं संस्थाप्य षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ मंदारमालाकुलितालकायै
कपालमालांकितशेखराय ॥ दिव्यांबरायै च दिगंबराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ तन्मंत्रैर्वा ॥ ततः प्रार्थयेत् ॥ नमः शि-
वायै जगद्धात्र्यै नमो नमः ॥ नंदिभृंगिमहाकालगणयुक्ताय शंभवे ॥ शिवायै हरकांतायै प्रकृत्यै सृष्टिहेतवे ॥ नमस्ते ब्रह्मरू-
सुवासिनीः संपूज्य रात्रिं निनयेत् ॥ येन कामेन देवित्वं पूजिता सिमहेश्वरि ॥ तं पूर्णं कुरु मे कामं सौभाग्यं च प्रयच्छ मे ॥ इति प्रार्थय ततः
मंत्रैः प्रत्येकं प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशत ॥ प्रातरावाहिते देवताः संपूज्या मिंप्रतिष्ठाप्या न्वादध्यात् ॥ अन्नप्रधानं उभामहेश्वरं चावाहन-
तां त्रैलोक्यज्याहुत्या यक्ष्ये शेषेणेति आवाहनोक्तमंत्रैर्होमांते त्विष्टकृदादिहोमशेषं समाप्य संपूजिताचार्या यगां दत्वा षोडशाष्टौ

वायुगमानियथाविभवंसंपूज्यसौभाग्यद्रव्यवत्त्रदक्षिणायुतानिपोडशशूर्पवायनानि॥सौभाग्यारोग्यकामाहंसर्वसंपत्समृद्धये॥
गौरागिरीशतुष्ट्यर्थवायनंतददाम्यहं॥ इतिदत्त्वाद्विजान्संपूज्यतेयामाशिपोर्गृहीत्वाकर्मेश्वरार्पणंकुर्यात्॥ इतिहरितालि०॥

॥ १९५ ॥ अथपरशुरामजयंतीव्रतम् ॥

श्रीः॥ वैशाखशुक्लतृतीयायांनिशाद्ययामव्यापिन्यांतिथ्यादिसंकीर्त्यअखिलपापक्षयपूर्वकंचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वाराश्रीपर
मेश्वरप्रीत्यर्थआचरितपरशुरामजयंतीव्रतोद्यापनंकरिष्येइतिसंकल्प्य॥ वृताचार्यःसर्वतोभद्रस्थकलशैहंमपरशुरामंविष्णोनु
कमितिमंत्रेणसंपूज्यरात्रौजागरणंकृत्वा॥ प्रातरग्निप्रतिष्ठाप्यपरशुरामंधृताक्तपायसद्रव्येणअष्टोत्तरशतसंख्याकाहुतिभिः
ब्रह्मादिदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्यायक्ष्ये॥ ततःपीठंगांचदत्वान्नाह्मणान्भोजयेत्॥ इतिपरशुरामजयंती॥ ४३ ॥

॥ १९६ ॥ अथसंकष्टक्षुर्थीव्रतम् ॥

श्रीः॥ मासपक्षाद्युल्लिख्यविद्याधनपुत्रारोग्यमुक्तिसंकटनाशकामेनस्त्रीभर्त्रादिकामनयाचरितसंकष्टीव्रतोद्यापनंकरिष्ये॥
वृताचार्यःउक्तप्रकारेणसर्वतोभद्रस्थकलशैहंमंगणेशंप्रतिष्ठाप्यपूजयेत्॥ अथध्यानम्॥ लंबोदरंचतुर्बाहुंत्रिनेत्रंरक्तवर्णकम्॥
नानारत्नैःसुवेषाढ्यंप्रसन्नास्यंविचिंतये॥ आवाहनंगणेशायआसनंविघ्ननाशिने॥ पाद्यंलंबोदरायेतिअर्घ्यंचंद्रार्धधारिणे॥
विश्वप्रियायाचमनंस्नानंचब्रह्मचारिणे॥ वस्त्रंचशूर्पकर्णाय॥ उपवीतंकुजायच॥ चंदनंरुद्रपुत्रायपुष्पंचगुणशालिने॥
विकटार्थेतिधूपंचदीपंरुद्रप्रियायच॥ नैवेद्यंविघ्ननाशायतांबूलंसिद्धिदायच॥ फलंसंकटनाशायएकदंतायदक्षिणाम्॥

नीराजनं वामनाथप्रदक्षिणांहरसूत्रवे ॥ पुष्पांजलिं कुमाराय नमो विद्याधराय च ॥ ततः शूर्पपायससंपूर्णैरक्तवस्त्रेण वेष्टितम् ॥
गणेशाय निवेदयेत् ॥ ततश्चंद्रायाह्वयं ॥ तदानीं पंचम्यां वा होमं कुर्यात् ॥ प्रधानं गणपतिं गणानां त्वेति मंत्रेण तद्गायत्र्या वा
दूर्वा १ रक्ताक्षता २ आज्य ३ मोदक ४ पायस ५ द्रव्यैः केवलमोदकैर्वा ॥ प्रतिद्रव्यं अष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतमष्टा
विंशतिर्वा तत्संख्याकाहुतिभिर्ब्रक्ष्ये ॥ ब्रह्मादिदेवताश्चैकैकया ज्याहुत्या एवं होमं समाप्य ॥ एकविंशति ब्राह्मणानेकविंशति
नामभिः वस्त्रादिना पूज्यपक्वानैः संतर्पयेत् ॥ गणं जयः गणपतिः हेरंबः धरणीधरः महागणपतिः यक्षेश्वरः क्षिप्रप्रसादनः
अमोघसिद्धिः अमृतः मंत्रः चिंतामणिः निधिः सुमंगलः बीजं आशापूरकः वरदः शिवः काश्यपः नंदनः वाचांसिद्धिः
ढौढीनायकः ॥ ततः आचार्याय शूर्पस्थैकविंशतिमोदकवाचनं रक्तवस्त्रवेष्टितं दद्यात् ॥ मंत्रः ॥ विप्रवर्यनमस्तुभ्यं मोदकान्वै
ददाम्यहं ॥ आपदुद्धरणार्थाय गृहाण द्विजसत्तम ॥ गणेशं प्रार्थयेत् ॥ अबुद्धमतिरिक्तं वाद्रव्यहीनं मया कृतं ॥ तत्सर्वपूर्णं
तां यातु विघ्नराजनमोस्तुते ॥ ततो गांसोपस्करं पीठं च आचार्याय दत्वा आशिषो गृहीत्वा इष्टजनैः सह भुंजीत ॥ ॥ ६३ ॥

॥ १९७ ॥ अथ शुक्लचतुर्थ्यां विनायकव्रतम् ॥

श्रीः ॥ गणपतिर्देवता ॥ सुवर्णप्रतिमा ॥ गणानां त्वेति मंत्रः ॥ ॐ विनायकाय नमः इति नाममंत्रोवा ॥ दूर्वा १ पायस २
लड्डुका ३ हवनद्रव्याणि ॥ होमांते एकविंशति ब्राह्मणपूजनं ॥ इति शुक्लचतुर्थ्यां विनायकव्रतविधिः ॥ ६३ ॥

॥ १९८ ॥ अथ ऋषिपंचमीव्रतम् ॥

श्रीः ॥ भाद्रपदशुक्लपंचम्यां ऋषिपंचमीव्रतम् ॥ मध्याह्नव्यापिन्यां दिनद्वये तद्व्यासावव्यासावपूर्वविद्धायां कार्यम् ॥ नद्या
दौ प्रातः दंतधावनपूर्वकं स्नात्वा ॥ मम ज्ञानतो ज्ञानतो वारजस्वलावस्थायां कृतसंपर्कजनितदुयो नित्वदोषपरिहारद्वारा शुभफ
लप्राप्त्यर्थं आचारित ऋषिपंचमीव्रतो द्यापनं करिष्ये ॥ वृताचार्यः सर्वतो भद्रे सप्तकलशेषु एकस्मिन्वाहमीः अरुंधती सहिताः सप्त
र्षिप्रतिमाः पूजयेत् ॥ ॐ ऋषे मंत्रकृतां स्तोमैः कश्यपो हूधयन् गिरः ॥ सोमं नमस्य राजानं योजज्ञे वीरुधां पतिरिंद्रायै दोषा रिस्र
व ॥ कश्यपाय नमः कश्यपं आवाहयामि ॥ ॐ अत्रिर्यद्वा मवरो हन्नु बीसमजो हवीन्ना धर्माने वयोषा ॥ इत्येनस्य चिज्जर्वसानू
तेने नार्गच्छतमश्चिनाशं तमेन ॥ अत्रये नमः अत्रि आवाहयामि ॥ ॐ एवानुः स्पृधः समजा समस्त्विन्द्रारं धिमिथ तीरदेवीः ॥
विद्यामवस्तोरवसागुणं तो भ्रद्वा जाउत त इन्द्रनूनं ॥ भरद्वाजाय नमः भरद्वाजं आवाहयामि ॥ ॐ प्रसूतो भक्षमकरं चरावपि
स्तोमं च मे प्रथमः सूरिरुन्मृजे । सुते सा ते नयद्यागं मंवां प्रति विश्वामित्रजमदग्नीदमे ॥ विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रं आवाहया
मि ॥ ॐ अभित्वा गोतमा गिरा जातवेदो विचर्षणे । द्युन्नैरभिप्रणोनुमः ॥ गौतमाय नमः गौतमं आवाहयामि ॥ ॐ गुणाना
जमदग्निना यो नो वृतस्य सीदतं । प्रातं सोमं मृतावृधा ॥ जमदग्ने नमः जमदग्निं आवाहयामि ॥ ॐ उतासि मे त्रावरुणो वसि
ष्ठोर्वदया ब्रह्मन्मनसोधिजातः । द्रप्सं स्कन्नं ब्रह्मणा दैव्येन विश्वे देवाः पुष्करे त्वा ददंत ॥ वसिष्ठाय नमः वसिष्ठं आवाहयामि ॥
ॐ अत्रैर्यथानुसूया स्याद्दुसिष्ठस्याप्यरुंधती । कौशिकस्य यथासती तथा त्वमपि भर्तारि ॥ अरुंधत्यै नमः अरुंधती आवाहया

मि ॥ तदस्तुमित्रा० गृहवै० सुप्रतिष्ठितमस्तु ॥ आवाहनादिप्रत्युपचारं देवाएतस्यामवदंतपूर्वसप्तऋषयस्तपसेयेनिषेदुः ।
 भीमाजायाब्राह्मणस्योर्पनीतादुर्धादधातिपरमेव्योमन् ॥ सहस्तोमाःसहच्छंदस० इति नाममंत्रैर्वापूजयेत् ॥ ततःवायनंद
 त्वाक्षमापयेत् ॥ न्यूनातिरिक्तकर्माणिमयायानिकृतानिच ॥ क्षमध्वंतानिसर्वाणिचूयंसर्वेतपोधनाः ॥ ततःकथाश्रवणादि
 नारात्रिंनिनयेत् ॥ प्रातःअग्निप्रतिष्ठाप्यअन्वादध्यात् ॥ प्रधानंअरुंधतीसहितकश्यपादिसप्तर्षीन्पूजामंत्रेण तिल १ ब्रीहि २
 यव ३ सर्पिर्द्रव्यैः ४ तिलपायसाभ्यांवाप्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशत १०८ मष्टाविंशतिर्वा २८ तत्संख्याकाहुतिभिः ब्रह्मादिदेवता
 श्रएकैकयाज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ शेषेणस्विष्टकृतं ॥ ततःपुनःप्रतिमापूजांकृत्वासपत्नीकान्सप्तब्राह्मणान्वस्त्रादिनासंपूज्यतेभ्यः
 क्रमेणदक्षिणाप्रतिमायुतकलशान्दद्यात् ॥ मंत्रः ॥ प्रतिगृहद्विजश्रेष्ठप्रतिमादिसमन्वितम् ॥ कलशंऋषिसंप्रीत्यैव्रतसंपूर्ति
 हेतवे ॥ यदैककुंभेसर्वप्रतिमापूजनंतदासर्वप्रतिमायुतंकलशमाचार्यायदद्यात् ॥ अन्येभ्यःदक्षिणावस्त्रयुतान्पक्वान्नपूरिता
 न्कलशान्दद्यात् ॥ ततःसप्तभ्यःसप्तगाआचार्यायएकांगंदत्वाप्रार्थयेत् ससर्पयःशुभाःश्रेष्ठाःसर्वेषांचशुभप्रदाः ॥ सर्वपापंच
 मेघंतुशान्तोज्ञानतःकृतम् ॥ एतेससर्पयःसर्वेभक्त्यासंपूजितामया ॥ यथोक्तफलदाःसंतुव्रतस्यफलदायकाःइति ॥ ततः
 आशिषोगृहीत्वाब्राह्मणान्संतर्प्यस्वयंभुजीत ॥ इतिऋषिपंचमीव्रतोद्यापनं ॥ १९९ ॥ अथोपांगलितव्रतम् ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४३ ॥

श्रीः ॥ प्रातःदंतधावनपूर्वकंनद्यादौस्नात्वाशुक्लंवासःपरिधायमंडपिकादिकंकृत्वातिथ्यादिसंकीर्त्य ॥ मयापुत्रपौत्रविद्यारो

ग्यसुखविजयपुष्ट्यादिकामेन स्त्रीत्ववैधव्यकामनयाउपांगललिताप्रीत्यर्थंअष्टवर्षात्मकाचरितउपांगललिताव्रतोद्यापनंकरि
 व्यइतिसंकल्प्य ॥ वृताचार्यः एकलिंगोद्भवेकलशोपरिसौवर्णोललिताप्रतिमांपौराणमंत्रैःश्रीसूक्तेनचपूजयेत् ॥ ध्यानम् ॥
 नीलकौशेयवसनांहेमाभांकमलासनाम् ॥ भक्तानांवरदांनित्यंललितांचितयाम्यहं ॥ पुष्पांजल्यंतेसाग्राअष्टचत्वारिंशत्परि
 मितादूर्वाहस्तेनादाय ॥ बहुप्ररोहासततममृताहरितालता ॥ यथेयंललितेमातस्तथामेस्युर्मनोरथाः ॥ इतिमंत्रेणाष्टाच
 त्वारिंशद्वारंसमर्पयेत् ॥ ततःप्रदक्षिणानमस्कारः ॥ प्रातःपुनःसंपूज्यदेव्यैअष्टौवटकान्समर्प्यअग्निंप्रतिष्ठाप्यअन्वादध्या
 त् ॥ प्रधानंउपांगललितांगौरीर्मिमायेतिमंत्रेणअष्टोत्तरशत १०८ दूर्वाहुतिभिः नमोदेव्यैमहादेव्यैइतिमंत्रेणअष्टोत्तरशत
 तिल १ सर्पिः २ पंचखाद्युतपायसा ३ हुतिभिर्यक्ष्ये ब्रह्मादिमंडलेदेवताश्चैककयाहुत्यायक्ष्ये ॥ एवंहोमंसंपाद्यअष्टौब्रा
 ह्मणान्वस्त्रादिभिःसंपूज्य तेभ्यःपक्वान्नपूरितान्दक्षिणासहितानष्टौकलशान्दद्यात् ॥ ततआचार्यवस्त्रालंकारादिभिःसंपू
 ज्यसदक्षिणांविंशतिवटकसहितंवायनंदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ पक्वान्नफलसंयुक्तंसघृतंदक्षिणान्वितम् ॥ उपांगललिताप्रीत्यैब्रा
 ह्मणायददाम्यहम् ॥ ततःदेवी ॥ सवाहनाशक्तियुतावरदापूजितामया ॥ मातर्मामनुगृह्याथगम्यतांनिजमंदिरम् ॥ इति
 विसृज्यसोपस्कंरपीठंगांचआचार्यायदत्त्वाब्राह्मणान्सदन्नेनभोजयित्वाआशिषोगृहीत्वास्वयंविंशतिवटकान्भुंजीत ॥ इति ॥

॥ २०० ॥ अथसुक्ताभरणसप्तमीव्रतम् ॥

श्रीः ॥ देशकालौसंकीर्त्यममसकलपापक्षयपूर्वकपुत्रपौत्रधनधान्यसौख्यातिशयप्राप्तिद्वाराश्रीसदाशिवप्रीत्यर्थमुक्ताभरणस

समीव्रतंकरिष्येइतिसंकल्प्यपूजांसमाप्यप्रार्थयेत् ॥ महादेवमहाराजप्रीत्यापापप्रणाशन ॥ अस्माकंकुर्वतांपूजांसाधुवासाधु
योजितां ॥ ज्ञानतोज्ञानतोवापिभवतीविहिताचया ॥ संपूर्णयतुविश्वेशोविमलाकोमलास्तुतां ॥ ततःदेवस्यपुरतः ॥ याव
देवदेवजगन्नाथसर्वसौभाग्यदायक ॥ इत्येवंसमयंकृत्वासौवर्णराजतंसौत्रवादोरकंदेवाग्रतःसंपूज्यमंत्रेणदोरकंगृहीयात् ॥ याव
यामिजगद्गुरो ॥ सूत्रग्रंथिस्थितंनित्यंधारयामिस्थिरोभवेत्यनेनमंत्रेणहस्तेबद्धा ॥ ततःहस्तेबंधनमंत्रः ॥ सप्तसामोपगीतंत्वांधार
निधे ॥ प्रसन्नःसन्नुमाकांतदीर्घायुःपुत्रदोभव ॥ इतिजीर्णदोरकोत्तारणंकृत्वाब्राह्मणायेकादशशतसंख्याकान्मंडकान्ब्रत
दक्षिणायुतान्कृत्वावायनंदत्वा तदेवद्रव्यंस्वयंभुंजीत ॥ एवंप्रतिमासंशुक्लसप्तम्यांकार्यम् ॥ वर्षीतेहमींराजतींवामुद्रिकांता
स्वपात्रोपरिसंस्थाप्यब्राह्मणेभ्योदद्यात् ॥ आचार्यायविशेषेणसौवर्णमंगुलीयंकंपुष्पकुंडकुमतांबूलांजनसूत्रयुतंसदक्षिणांश्च
दद्यात् ॥ ब्राह्मणान्भोजयित्वास्वयंभुंजीत ॥ संतानवृद्धिंलब्ध्वातुशिवलोकेमहीयते ॥ इतिमुक्ताभरणसप्तमी ॥

श्रीः ॥ प्रातःदंतधावनपूर्वकंस्नात्वादेशकालौसंकीर्त्यममअखिलपापक्षयपूर्वकधर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा
अमुककामनयावाआचरितजन्माष्टमीव्रतोद्यापनंकरिष्ये ॥ वृताचार्यःवेद्यांसर्वतोभद्रेप्रस्थतिलोपरिस्थकलशोपरिपूर्णपात्रे
रौप्यमयेपर्यंके सौवर्णोदेवकीं तदुत्संगेवामनंस्तनपायिनंसौवर्णश्रीकृष्णं इदंविष्णुरिति विष्णोर्नुकमिति वामंत्रेण परितः व

सुदेवं बलदेवं नन्दं यशोदां सुभद्रां रोहिणीं विधुं मत्स्यादिदशरूपाणि आदित्यादिग्रहान् अश्विन्यादिसप्तविंशतिनक्ष
 त्राणि देवान् नागान् यक्षान् विद्याधरान् उरगान् यमुनां कालियं कंसं गाः योगनिद्रां सात्यकिं उद्धवं अक्रूरं उग्रसेना
 दियादवान् शंखं चक्रं गदां पद्मं त्रुटिं कालात्मानं अहोरात्रं मासं संवत्सरं सर्वात्मानं द्वारपालान् पुण्यशीलं सुशीलं
 जयं विजयं पुरतःगरुडं एवं नाम मन्त्रैरावाह्यपुरुषसूक्तेन पूजयेत् ॥ ध्यानं ॥ कृष्णं चतुर्भुजं देवं शंखचक्रगदाधरम् ॥ पीतांबर
 युगोपेतं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम् ॥ लसत्कौस्तुभशोभाढ्यं मेघश्यामं सुलोचनम् ॥ ध्यायामि पुंडरीकाक्षं जगदानंदकारकम् ॥ अं
 गपूजा ॥ कृष्णाय नमः पादौ० संकर्षणाय गुल्फौ कालात्मने जानुनी विश्वकर्मणे जंघे विश्वनेत्राय कटिं पद्मनाभाय ना
 भिं परमात्मने हृदयं श्रीकंठाय कंठं सर्वास्त्रधारिणे बाहू वाचसतये मुखं केशवाय ललाटं सर्वात्मने शिरः ॥ पूजांसमा
 प्यस्तोत्रं पठेत् ॥ देवस्य जातकर्मपष्ठी पूजादिकृत्वा ॥ पुरतः अभयावचाशुंठी गुडूची पिप्पली शस्त्राणि निक्षिप्यार्घ्यं दद्यात् ॥
 चंद्रोदये ॥ जातः कंसवधार्थाय भूभारोत्तारणाय च ॥ कौरवाणां विनाशायै देत्यानां निधनाय च ॥ पांडवानां हितार्थाय धर्मसं
 स्थापनाय च ॥ गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देवकीसहितो हरे ॥ इति कृष्णायार्घ्यं ० ॥ अंगणे भूमौ राजतं चंद्रबिंबं संपूज्य तस्यार्घ्यं जानुभ्याम
 बनीगत्वा ॥ क्षीरोदार्यं वसंभूतलक्ष्मीबंधो निशाकर ॥ गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रोहिण्यासहितः शशिन् ॥ रोहिण्यर्घ्यं ॥ दक्षस्य
 दुहितासाध्वीरोहिणीनामनामतः ॥ सोमेन सहिते देवि गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ॥ ततः प्रार्थना ॥ त्राहि मां सर्वग श्रीशहरे संसार
 सागरात् ॥ त्राहि मां सर्वपापघ्न दुःखशोकार्णवात्सभो ॥ यद्वा ल्येयच्च कौमारे यौवने यच्च वार्धके ॥ तत्पुण्यं वृद्धिमा मोतु पापं हर

हलायुधेति ॥ रात्रौ जागरणं कुर्यात् ॥ प्रातः स्नात्वा देवं संपूज्य ॥ अग्निं प्रतिष्ठाप्य अन्वा दध्यात् ॥ प्रधानं विष्णुं इदं विष्णुरि
ति मंत्रेण पायस १ तिल २ व्रीहि ३ यव ४ द्रव्यैः प्रति द्रव्यं अष्टोत्तरशत १०८ संख्याका हुतिभिः पुनः पंचखाद्येन विष्णो
ख्याज्या हुतिभिः परिवारदेवता ब्रह्मादिदेवताश्च एकैकया ज्याहुत्या शेषेण स्विष्टकृतं ॥ तत आचार्यं संपूज्य विभवे सति भूश
ध्यायनमो नमः ॥ कृष्णायानंतरूपाय दास्यामि प्रतिमामिमां ॥ द्रव्यं विष्णुसमुद्भूतमतः शांतिं प्रयच्छमे ॥ व्रतपूर्तये गांच दद्यात् ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्य आत्मनः अखिलपापक्षयपूर्वकचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा मम आचरितस्य रामनवमीव्रतस्य सांगता
सिद्धये तदुद्यापनं करिष्ये ॥ ततः पूर्ववत् वृताचार्यः सर्वतोभद्रस्थकलशे साक्षतपूर्णपात्रेषु द्वाकोणं पद्मं विलिख्य तत्र मध्ये हैमं रामं
षडक्षरेण त्रयोदशाक्षरेण वाममूलमंत्रेण मूलमंत्रस्तु ॥ श्रीरामरामरामेति षडक्षरमंत्रः १ ॥ श्रीरामजयरामजयजयरामेति त्रयो

दशाक्षरः २ ॥ अपरो वैदिकस्तु ॥ ॐ भद्रो भद्रया स च मानु आगात्स्व सारं जारोऽअभ्येति पश्चात् ॥ सुप्रकैतैर्द्युभिरुग्निर्वितिष्ठ
नरुशंभ्विर्वर्णैरुभिराममस्थात् ॥ इति मंत्रेण रामं तद्दामतः हैमीसीतां ॐ जनकात्मजायै नम इति नाम मंत्रेण च प्रतिष्ठाप्य ॥ परि
तः षट्कोणेषु क्रमेण दशरथं कौसल्यां लक्ष्मणं भरतं शत्रुघ्नं मारुतिं च नाम मंत्रैः प्रतिष्ठाप्य पुरुषसूक्तेन पूजयेत् ॥ पुष्पो

त्तरंअंगपूजा ॥ श्रीरामचंद्रायनमः पादौपूजयामि ॥ राजीवलोचनाय० गुल्फौ० रावणांतकाय० जानुनी० विश्वामित्र
 प्रियाय० नाभिं० परमात्मने० हृदयं० श्रीकंठाय० कंठं० सर्वास्त्रधारिणे० बाहू० विश्वमूर्तये० मुखं० पद्मनाभाय० जि
 ह्वां० दामोदराय० दंतान्० सीतापतये० ललाटं० ज्ञानगम्याय० शिरः० सर्वात्मने० सर्वांगं० ॥ नमस्कारमंत्रः ॥ न
 मोदेवाधिदेवायरघुनाथायशार्ङ्गिणे ॥ चिन्मयानंदरूपायसीतायाःपतयेनमइति ॥ अर्घ्यमंत्रः ॥ दशाननवधार्यायधर्मसं
 स्थापनायच ॥ राक्षसानांविनाशायदैत्यानांनिधनायच ॥ परित्राणायसाधूनांजातोरामःस्वयंहरिः ॥ गृहाणार्घ्यमयादत्ते
 मात्रादिसहितो नघ ॥ इति ॥ ततःपुराणपठनादिनारात्रिर्नयेत् ॥ प्रातःअग्निप्रतिष्ठाप्यअन्वाद्दधात् ॥ अन्नप्रधानं ॥ रामं
 आज्य १ पायस २ द्रव्याभ्यां प्रत्येकं अष्टोत्तरशत १०८ संख्याहुतिभिःमूलमंत्रेण जानक्यादिसप्तदेवताः उक्तद्रव्येणअष्टा
 विंशति २८ संख्याहुतिभिः ॥ ब्रह्मादिदेवताश्चएकैकयाज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ एवंहोमसंपाद्य ॥ आचार्यसंपूज्यप्रतिमांदद्यात् ॥
 तन्नमंत्रः ॥ इमांस्वर्णमयींरामप्रतिमांसमलंकृताम् ॥ श्रीरामप्रीतयेदास्येप्रीतोभवतुराधवइति ॥ ततःव्रतपूर्तयेगांचदत्वास
 दन्नेनब्राह्मणान्संतर्प्यदक्षिणादिभिःप्रतोष्यआशिषोग्राह्याः ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥

॥ २०३ ॥ अथरामनामलेखनव्रतम् ॥

श्रीः॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यआत्मनःअनेकपातकक्षयपूर्वकसकलमनोरथावासिद्वाराश्रीरामचंद्रप्रीत्यर्थमयालिखितंयत्कोटिलक्षा
 मुकावधिरामनामतत्संपूर्णतासिद्ध्येतदुद्यापनार्थ्यंकर्मकरिष्येइतिसंकल्प्य ॥ पूर्ववत्तद्वृताचार्यः सर्वतोभद्रस्यकलशेसाक्षत

पूर्णपात्रेषोडशमाषात्मकराजतसिंहासनेसुवर्णस्यपलेनतदर्धेनवानिर्मितंरामं वामतःसीतां दक्षिणतः लक्ष्मणं पुरतः हनूमंतंच
सौवर्णप्रतिमासुमूलमंत्रेणनाममंत्रेणचआवाह्य पुरुषसूक्तेनचपूजयेत् ॥ परितःससधान्योपरिवारिपूर्णनटौकलशान्पूर्वादि
क्रमेणसंस्थाप्यतेषुलोकेशांस्तत्तन्मंत्रैरावाह्यपूजयेत् ॥ प्रातःअग्निप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् ॥ अत्रलेखनदशशेनशतशेनवाहो
मः ॥ अत्रप्रधानं ॥ रामंआज्यद्रव्येणलेखनदशशेनशतशेनवामूलमंत्रेण परिवारदेवताःब्रह्मादिदेवताश्चएकैकयाज्याहु
त्यायक्ष्ये ॥ एवंहोमंसंपाद्यआचार्यसंपूज्यपीठंदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ सीतासौमित्रिहनुमद्युतरामंसदक्षिणं ॥ ददामिद्विजवर्था
यरामोमेप्रीयतामिति ॥ ततःव्रतसंपूर्तयेगांचदत्वाघृतपूरितकांस्यपात्रंतिलपात्रंचयथाशक्तिदशदानानिदत्वायोगिराजंबडुक
त्रयंचअन्यानपिसिद्धिजान्सदन्नेनसंतर्प्यदक्षिणादिनाप्रतोष्यआशिषोगृहीत्वाइष्टजनैःसहभुंजीत ॥ इतिरामनामलेखनव्रतं ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यआत्मनःसकलदुःखनाशपूर्वकमभीष्टकामनासिद्धिद्वाराश्रीगौरीप्रीत्यर्थंअदुःखनवमीव्रतंकरिष्ये ॥
इतिसंकल्प्य ॥ गोमयेनोपलिप्यभूमौवेदीगुडेनलिसांइक्षुच्छादितांअपूपपायसादियुतांउपरिमंडपिकायुतांकृत्वातत्रपीठेगौ
रीगौरीर्ममायेतिनमोदेव्याइतिवामंत्रेणसंपूज्यरात्रिजागरणादिनानयेत् ॥ तद्दिनेहिंसादिरहितंउपोषणंकार्यम् ॥ अशक्त
श्चेद्गुग्धफलादिभक्ष्यंअत्यंताराकश्चेद्भविष्यान्नं ॥ प्रातःदेवींसंपूज्यसपत्नीकंब्राह्मणंसंपूज्यपंचफलान्वितंवायनंसोपस्करंदद्या
त्तत्रमंत्रः ॥ गौर्यादुःखविनाशिन्याव्रतसंपूर्तिहेतवे ॥ वायनंद्विजवर्थायसहिरण्यंददाम्यहं ॥ इतिअदुःखनवमीव्रतं ॥ ४३ ॥

॥ २०५ ॥ अथगोपन्नान्तम् ॥

॥ २०५ ॥ अथगोपामृतं नमस्तुभ्यं गोपाल इदं वि
तिष्ठ्यादिसंकर्त्य आत्मनोयमदंडानिरसनपूर्वमुत्तुङ्गोपा लंइदवि
श्रीः ॥ कार्तिक शुक्लैकादश्यां द्वादश्यां वाकार्यम् ॥ वृताचार्यः सर्वतो भद्रस्थकलशे हैमंचतुर्भुजंगोपालं प्रदिष्टा
द्धि द्वारा श्रीगोपालप्रतीत्यर्थं पञ्च वर्षा चरितगोपद्मव्रतोद्यापनं करिष्ये ॥ नमस्ते विष्णवे तुभ्यं व्रतस्य फलदायक ॥ प्रातरग्निप्रतिष्ठा
न्पुरिति मंत्रेण संपूज्य प्रार्थयेत् ॥ नमस्ते देवदेवेश नमस्ते गरुडध्वज ॥ नमस्ते विष्णवे तुभ्यं व्रतस्य फलदायक १०८ संख्या काहु
प्यअन्वा दध्यात् ॥ गोपालं समित् १ तिल २ पायसा ३ ज्य ४ यव ५ द्रव्यैः प्रतिद्रव्यमष्टौत्तरशत ९०८ संख्या काहु
तिभिः ॥ ब्रह्मादिदेवताश्चैकैकया ज्याहुत्यायश्ये ॥ ततः क्रमेण द्रव्याणां होममंत्राः ॥ ओं त्रीणि पदा ० अतो देवा ० इदं विष्णु ०
विष्णोर्नुक्तं ० तत्सर्वितुर्वे ॥ ततो वायनं प्रतिवर्षक्रमेण सहैव वात्रयस्त्रिंशत्संख्या कंदद्यात् ॥ प्रथमे पायसं द्वितीये मंडकान् तृ
तीये माषवटकान् चतुर्थे अपूपान् पंचमे लडुकान् ॥ वायनमंत्रः ॥ वायने ते द्विज श्रेष्ठ दा मि व्रत पूर्तये ॥ दक्षिणादिसमायुक्तं
गोपालः प्रीयतामिति ॥ ततः पंचमिथुना निबल्या दिनांस पूज्य आचार्यो गायगां च दत्वा ॥ अन्यत्समानं ॥ इति गोपद्मव्रतम् ॥
इशां शेनशतां शेनवा पूर्वोक्तं पंच द्रव्यैर्मिलित्वा कार्यम् ॥ वायनं च पूर्वोक्तमंत्रेणैव दद्यात् ॥

॥ २०६ ॥ अथ श्रवण ऋषिर्वाचा दिदुर्योधनी निरसन द्वारा श्रीवि

॥ २०६ ॥ अथ श्रवणविन्नमां करोतु भगवान्हारः ॥
द्विंशं शेषं शतं शेषं वापूषा ॥
श्रीः ॥ प्रातर्नद्यादौ वरोवरेण्यो वरो वराहो धरणीधरः ॥ अपवित्रं पवित्रं मां करोतु भगवान्हारः ॥
स्नात्वा नित्यकर्म निर्वृत्य संकल्पयेत् ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्य आत्मनः अखिलपापक्षयपूर्वकपिशाचादिदुर्गो निरसनद्वारा श्रीं व

णुलोकप्राप्त्यर्थं आचरितश्रवणद्वादशीव्रतोद्यापनं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ वृताचार्यः चतुर्दशीरोपशोभितमंडपांतर्वेदिकायां पी
 ठदेवताः पूजयेत् ॥ आधारशक्त्यै नमः विमलायै० उत्कर्षिण्यै० ज्ञानशक्त्यै० क्रियाशक्त्यै० प्रह्वायै० सत्यायै० मायायै०
 मध्ये परमदेवतायै० परितः इंद्रादिलोकपालांस्तदुपरितः पूर्णपात्रयुते कलशे गणपतिं० दुर्गां० क्षेत्रपालं० वास्तोष्पतिं० परि
 त आदित्यादि नवग्रहदेवताश्च संपूज्य ॥ तदुपरि सर्वतोभद्रं प्रसार्य तत्र ब्रह्मादिदेवताः संपूज्य तदुपरि कुशकृष्णाजिनं प्रसार्य तत्र
 संपूज्यांगपूजां कुर्यात् ॥ मत्स्याय नमः पादौ पू० कूर्माय० जानुनी० वराहाय० गुह्यं० नृसिंहाय० नाभिं० वामनाय० उ
 दरं० परशुरामाय० दक्षिणभुजं० दाशरथिरामाय० वामभुजं० कृष्णाय० मुखं० बौद्धाय० कर्णौ० कल्किनेशिरः० ॐ
 नमो भगवते वासुदेवाय सर्वांगपूज० दधिभक्त्यै वैद्यं दत्वा प्रार्थयेत् ॥ नमस्ते दिति पुत्राय नमस्ते कश्यपात्मज ॥ त्रिविक्रमाय दे
 वाय वामनाय नमो नमः ॥ ततो न्यग्रोधं कद्रुद्राये त्रिमंत्रेण संपूज्य ॥ शिष्यदध्यन्तेन युतं जलपूरितं करकं च संपूजयेत् ॥ तत्र क्रमे
 ण मंत्रौ ॥ शिष्यो सिद्धिभक्तो सिलंबितो समयोपरि ॥ सूत्रेणैवाश्रितो सित्वं वामनः प्रीयतामिति ॥ करकं पूजयिष्यामि सरि
 तांसंगमेजलैः ॥ पंचरत्नसमायुक्तं तेन तुष्यतु वामनः ॥ ततः सर्वान् प्रार्थयेत् ॥ पर्जन्यो वरुणः सूर्यः केशवः सखिलं शिवः ॥ त्व
 ह्ययमैवैश्रवणः सदा पापं हरंतु मे ॥ कथाश्रवणादि नारात्रिं निनयेत् ॥ प्रातरग्निं प्रतिष्ठाप्य अन्वा दध्यात् ॥ अन्नप्रधानं ॥ वा
 मनं पायस १ घृत २ समित् ३ तिलैः ४ प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशत १०८ संख्या काहुतिभिः पीठदेवताः ब्रह्मादिदेवताश्चैकैकया

ज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ होममंत्राश्च इरावतीतिमंत्रेणपायसं त्रीणिपदेत्याज्यं इदंविष्णुरितिसमिदं विष्णोःकर्माणीतितिलाः ॥
ततोद्वादशसंख्याकान्विप्रान्ब्रह्मादिनासंपूज्यदध्यन्नोपवीतगोपीचंदनयुतान्सुगंधजलपूरितान्द्वादशकरकांस्तेभ्योदद्यात्त
त्रमंत्रः॥सुगंधिजलसंपूर्णदधिभक्तयुतंद्विज ॥ करकंतेप्रदास्यामिवामनःप्रीयतामिति ॥ ततःवामनःप्रतिगृह्णातिवामनोवैददा
तिच ॥ वामनस्तारकोभाभ्यांवामनायनमोनमः॥इत्यनेनसोपस्करपीठमाचार्यायदद्यात्॥व्रतपूर्तयेगांचदत्वाविप्रान्भोजयेत्॥

॥ २०७ ॥ अथपदोषव्रतम् ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यआत्मनःअखिलपापक्षयशत्रुपराजयपूर्वकायुरारोग्यैश्वर्यपुत्रपौत्राद्यभिवृद्धिद्वाराश्रीउमामहेश्वरप्री
त्यर्थआचरितप्रदोषव्रतोद्यापनंकरिष्ये ॥ वृताचार्यःउक्तप्रकारेणलिंगतोभद्रस्थताम्रकलशेरौप्यपूर्णपात्रयुतेसौवर्णसांबसदा ४
शिवंपुरतोर्राजतंवृषभंतत्तन्मंत्रैःप्रतिष्ठाप्य ॥ परितःअसितांगभैरवाय १ रुद्रभैरवाय २ चंडभैरवाय ३ क्रोधभैरवाय ४
उन्मत्तभैरवाय ५ भीषणभैरवाय ६ संहारभैरवाय ७ कपालभैरवाय ८ कालभैरवाय ९ ॥ इतिप्रतिष्ठाप्यपूजयेत् ॥ मूर्
लमंत्रेणन्यासंकृत्वापंचब्रह्ममंत्रैःपूजयेत् ॥ प्रकारांतरेणपूजनं विष्णुं० ब्रह्माणं० भास्करं० सोमं० पूर्वा
दिक्रमतःप्रथमावरणे ॥ जयं १ विजयं २ गणपतिं ३ दुर्गां ४ द्वितीये ॥ नंदीश्वरं १ क्षेत्रपालं २ वास्तोष्पतिं ३ वायुं
४ तृतीये ॥ सप्तर्षीन् चतुर्थे ॥ भूतनाथं पंचमे ॥ इंद्रादीन्षष्ठे ॥ कपालिनंसप्तमे ॥ गंधर्वान्अष्टमे ॥ सद्योजातेत्यासनं
वामदेवायेतिपाद्यं अधोरायेत्यर्घ्यं तत्पुरुषायेत्याचमनीयं ईशानायेतिस्नानं त्र्यंबिकमितिवस्त्रं यज्ञोपवीतंतत्तरीयंच नमः

सोमायेतिगंधं नमःशंभवेइत्यक्षतान् इमारुद्रायेतिपुष्पाणि एवापित्रेइतिबिल्वदलानि मानस्तोकेइतिधूपं आतेपितरितिदीप
त्वादत्तेतिनैवेद्यं कद्रुद्रायेतितांबूलं इमारुद्रायस्थिरधन्वनेइतिदक्षिणाम् ॥ महिक्षयेणक्षम्येतिमंत्रपुष्पम् यातेदिद्युतेतिनम
स्कारः पुनर्नाममंत्रेणअष्टौप्रदक्षिणानमस्कारांश्चकुर्यात् ॥ भवाय १ महादेवाय २ रुद्राय ३ नीलकंठाय ४ शशिमौलि
ने ५ उग्राय ६ भीमाय ७ ईशानाय ८ ॥ ततोर्ध्वरजतादिपात्रेक्षीरकुशघृतदधितंडुलसिद्धार्थगंधपुष्पादिदक्षिस्वासजलं
दद्यात् ॥ भयरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः ॥ ऋणशोकमनस्तापानश्यंतुममसर्वदा ॥ ततःप्रार्थयेत् ॥ प्रसीददेवदेवेशप्रसी
दपरमेश्वर ॥ प्रसीदसोमसर्वज्ञप्रसीदकरुणाकर ॥ प्रातरग्निप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् ॥ प्रधानं उमामहेश्वरंपलाशसमित् १
बिल्वपत्र २ पायस ३ आज्य ४ द्रव्यैः प्रत्येकमष्टोत्तरशत १०८ संख्याकाहुतिभिः (पक्षे शिवगौरीच त्र्यंबकगौरीर्मिमायेतिमं
त्राभ्यांप्रत्येकं पायसाज्याभ्यांवा) पीठदेवताःब्रह्मादिदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ ततःपीठंगांचदत्वाब्राह्मणान्भो
जयेत् ॥ भूयसींदक्षिणांदत्वाशिषोग्राह्याः ॥ इतिप्रदोषव्रतम् ॥ ॥ २०८ ॥ अध्यान्तं चतुर्दशीव्रतम् ॥ ॥ ४३ ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यआत्मनोनिखिलपापक्षयनिर्मुक्तिपूर्वकोत्तमसिद्धिपुत्रपौत्रसहितविविधभोगधनधान्यपरमगतिप्रा
प्तिकामनयाचतुर्दशवर्षाचरितानंतव्रतोद्यापनंकरिष्ये इतिसंकल्प्य ॥ नित्यव्रत्स्वयंदेवंसंपूजयेत् ॥ ततोवृताचार्यःसर्वतोभ
देब्रह्मादिदेवताआवाह्यतदुपरिकलशंप्रतिष्ठाप्यतत्रयमुनामावाह्यश्रीसूक्तेननाममंत्रेणवासंपूज्य ॥ तदुपरिअक्षतपूरितपूर्ण

पात्रं निधाय तत्राष्टदलं विरच्य तत्र सुवर्णनिर्मितं चतुर्दशग्रंथियुतं अनंतं सहस्रशीर्षेति मंत्रेण स्थापयेत् ॥ तदुत्तरतः सप्तधा
 न्योपरि विस्तृतशय्यायां स्वर्णनिर्मितं लक्ष्मीसहितं हेमहलमुसलयुतं अनंतं देवं इदं विष्णुरिति मंत्रेण स्थापयेत् ॥ स्वर्णदोरकप्र
 तिमयोः पुरुषसूक्तेन श्रीमदनंताय नम इति नाम मंत्रेण पूजावार्षिकवत्कार्या ॥ अथ ग्रंथिदेवताः पूजयेत्क्रमेण ॥ विष्णुः १
 अग्निः २ आदित्यः ३ सहस्राक्षः ४ पितामहः ५ इंद्रः ६ पिनाकी ७ विघ्नेशः ८ स्कंदः ९ सोमः १० वरुणः ११ प
 वनः १२ पृथ्वी १३ वसवः १४ ॥ ततः शय्यायां प्रतिमायाः परितः शंखं १ चक्रं २ गर्दां ३ पद्मं ४ ॥ तद्वहिः नाम मंत्रेण
 अनंतं १ कपिलं २ दक्षं ३ मनुं ४ प्रजापतिं ५ संकर्षणं ६ कालं ७ वनमालिनं ८ त्रिविक्रमं ९ अहोरात्रं १० अर्ध
 मासं ११ मासं १२ ऋतून् १३ अयने १४ संवत्सरं १५ इंदुवत्सरं १६ अनुवत्सरं १७ वत्सरं १८ प्रजाध्यक्षं १९ अ
 जितं २० सर्वभूतं २१ प्रद्युम्नं २२ अनिरुद्धं २३ श्रीधरं २४ पुरुषोत्तमं २५ वामनं २६ पद्मनाभं २७ विश्वरूपम् २८
 त्रिविक्रमम् २९ विष्णुम् ३० अच्युतम् ३१ ॥ तद्वहिः अष्टवसून् ८ ॥ तद्वहिः एकादशरुद्रान् ११ तद्वहिः द्वादशादि
 त्यान् १२ ॥ तद्वहिः नवग्रहान् ९ तद्वहिः अष्टभैरवान् ८ तद्वहिः भेषादिद्वादशराशीन् १२ तद्वहिः अश्विन्यादि नक्षत्रा
 णि २८ तद्वहिः ब्राह्म्यादिसप्तमातृः ७ तद्वहिः चैत्रादिद्वादशमासान् १२ तद्वहिर्दीप्त्यादिशक्तीः तद्वहिर्विष्कंभादियोगा
 न् २७ आवाह्य ॥ पीठपरितः फलपक्वान्नपूरितान् चतुर्दशकुंभांश्च स्थापयेत्पूजयेच्च ॥ तेचमंत्राः अनंताय न
 मः १ संकर्षणाय २ कमलाय ३ शेषाय ४ वासुदेवाय ५ विश्वनाथाय ६ विश्वरूपाय ७ पद्मनाभाय ८ दामोदराय ९

जगन्नाथाय १० चतुर्भुजाय ११ श्रीकंठाय १२ केशवाय १३ सर्वात्मने १४ ॥ नमस्तेदेवदेवेशनमस्तेधणीधर ॥ नमस्ते सर्वनागैर्द्रअनंतायनमोनमइति ॥ ॥ अत्रप्रधानं ॥ श्रीमदनंतमश्वत्थसमित् १ तिल २ ब्रीहि ३ यव ४ घृत ५ पायस ६ देवताश्चैकैकयाज्याहुत्याचक्ष्ये ॥ स्थापनमंत्रैर्होमः ॥ केचिद्वैवहोममिच्छंतिप्रातर्ब्राह्मणभोजनमात्रं दिवैवसर्वेवा ॥ ततः पीठसंपूज्यवस्त्रादिनाआचार्यसंपूज्यपीठं दद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ प्रतिगृह्णद्विजश्रेष्ठसमस्तफलदायक ॥ त्वत्प्रसादादहंविप्रविमुच्येभवबंधनात् ॥ अनंतःप्रतिगृह्णातिअनंतोवैददातिच ॥ अनंतस्तारकोभाभ्यामनंतायनमोनमः ॥ ततःचतुर्दशब्राह्मणान्वस्त्रादिनासंपूज्यपक्वान्नादिनाभोजयेत् ॥ इत्यनंतचतुर्दशीव्रतम् ॥ ॥ २०९ ॥ अथवैकुण्ठचतुर्दशीव्रतम् ॥ ॥ २१० ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यआत्मनःसर्वपापक्षयपूर्वकशिवपदप्राप्तिकामनयाऽचरितवैकुण्ठचतुर्दशीव्रतोद्यापनंकरिष्ये ॥ वृताचार्यःलिंगतोभद्रस्थकलशैर्हमंविश्वेश्वरंपूजयेत् ॥ प्रातरग्निप्रतिष्ठाप्यघृताक्ततिलैःअष्टोत्तरशतं ॐ नमःशिवायेतिमंत्रेणहुत्वा व्रतपूर्तयेगापीठदानंआचार्यपूजनंब्राह्मणेभ्योदक्षिणावायनादिदत्वासंभोज्याशिपोगृहीयात् ॥ इतिवैकुण्ठचतुर्दशीव्रतम् ॥ ॥ २१० ॥ अथशिवरात्रिव्रतम् ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यआत्मनःसर्वपापक्षयपूर्वकमक्षयभोगमोक्षप्राप्त्यर्थंआचरितशिवरात्रिव्रतोद्यापनंकरिष्ये ॥ वृताचा

र्यः अन्यैर्द्वादशब्राह्मणैः सह पूजामारभेत् ॥ द्वादशलिंगोद्भवे पीठे उक्तविधिना ब्रह्मादिदेवताः संपूज्य ॥ तत्र मध्यमकुंभे उमामहेश्वरं त्र्यंबकमिति मंत्रेण प्रतिष्ठाप्य पुरतो राजतं वृषभं च प्रतिष्ठापयेत् ॥ द्वादशब्राह्मणाः द्वादशलिंगस्थकलशेषु द्वादशप्रतिमाः पूजयेयुः ॥ तत्र प्राच्यां महेशं अघोरं पशुपतिं ॥ दक्षिणस्यां पंचवक्त्रं उग्रं रुद्रं ॥ पश्चिमायां भवं शर्वं शंभुं ॥ उत्तरे शिवं भीमं भीमपराक्रमं प्रतिकलशं परितो लोकपालान् ॥ अत्र प्रधानं ॥ उमामहेश्वरं पायस १ चिल्वपत्र २ तिल ३ दूर्वा ४ घृत ५ द्रव्यैः प्रत्येकं अष्टोत्तरशत १०८ संख्याकाहुतिभिः ॥ द्वादशकलशस्थदेवताः अष्टाष्टसंख्याकाहुतिभिः तैरेव द्रव्यैः ॥ परिवारदेवताः ब्रह्मादिदेवताश्चैकैकया ज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ एवं होमं संपाद्य पीठदेवतां पूजयेत् ॥ शंभो प्रसीद देवेश सर्वलोकेश्वर प्रभो ॥ तवरूपप्रदानेन मम संतु मनोरथाः ॥ चतुर्दशनामानि ॥ अजैकपादहिबुद्ध्यो भवः शर्व उमापतिः ॥ रुद्रः पशुपतिः शंभुर्वरदः शिव ईश्वरः ॥ महादेवो हरो भीमो नामान्ये वंचतुर्दश ॥ एतैर्होमः प्रकर्तव्यः कुंभदाने पितान्समेत् ॥ (पक्षे उमायुक्तशिवोदेवता त्र्यंबकं गौरीर्मिमायेति मंत्रौ तिलव्रीहिपायसयवद्रव्याणि ॥ अजैकपादादिनामभिश्चतुर्दशाहुतिसंख्याको बिल्वपत्रैर्होमः) ॥ अन्यत्समानं ॥ इति शिवरात्रिव्रतम् ॥ ॥ ६३ ॥

॥ २११ ॥ अथ वटसावित्रीव्रतम् ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यममभर्तुः पुत्रादीनां च आयुरारोग्यैश्चर्यादिप्राप्तिपूर्वकमिह जन्मनि जन्मन्तरे च आत्मनः अवैधव्यप्राप्तये आचरितवटसावित्रीव्रतो द्वापनं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ वृताचार्यो वटमूले गृहे वामद्वारे दीविधाय तत्र सर्वतो भद्रं विरच्य तत्र ब्र

ह्यादिदेवताःसंपूज्यतत्रकलशद्वयंप्रतिष्ठाप्यतत्रैकस्मिन्कलशे हैमंब्रह्मजज्ञानमितिमंत्रेणब्रह्माणं गायत्रीमंत्रेणहैमीसावित्रींच प्रतिष्ठाप्य तदुत्तरद्वितीयकुंभेपलादधिकरजतस्यराजतपर्यंकैहमीः सत्यवत्सावित्री यम नारद प्रतिमाःनाममंत्रैरावाह्य पुर तःकाष्ठभारंकुठारंचहैमंराजलंबानिधायपूजयेत् ॥ अशक्तावेकस्मिन्कलशेसर्वेषांपूजनं ॥ अर्घ्यंदद्यात् ॥ ॐकारपूर्वकेदेविवी त्वंममसुव्रते ॥ पुत्रान्पौत्रांश्चसौख्यंचगृहाणार्घ्यंनमोस्तुते ॥ पतिव्रतेमहाभागेभर्तुश्चप्रियवादिनि ॥ अवैधव्यंचसौभाग्यंदेहि स १ घृत २ दूर्वा ३ तिल ४ व्रीहि ५ द्रव्यैःप्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्याकाहुतिभिः ॥ सावित्रीगायत्रीमंत्रेणपाय त्रः ॥ सोपस्करंद्विजश्रेष्ठव्रतसंपूर्तिकारकम् ॥ वायनंतेप्रयच्छामिसावित्रीप्रीयतामिति ॥ ब्रह्माणं धर्मराजं नारदंचव्याहुतिमंत्रेण अरुंधतिनमस्तेस्तुवसिष्ठस्यप्रियेशुभे ॥ पुत्रान्देहिसुखंदेहिगृहाणार्घ्यंनमोस्तुते ॥ रात्रावरुंधतींहृष्टासंपूज्यार्घ्यंदद्यात् ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यआत्मनःस्वकुलस्यचाखंडलक्ष्मीप्रासिपूर्वकसुखादिप्रासयेलक्ष्मीप्रीत्यर्थंकोजागरव्रतंकरिष्ये ॥ रात्रौ मंडलेसंक्तुमिवतितउनेतिमंत्रेणलक्ष्मीं० इंद्रंनरोनेमर्धिताहवंतेयत्सार्योयुनजतेधिचस्ताः ॥ शूरोनृणांताशर्वसश्चकानआगोमे तिब्रजेभजात्वंनः ॥ इतिमंत्रेणमत्तैरावतस्थमिंद्रमावाह्यपूजयेत् ॥ परितोदीपान्घृतेनतैलेनवालक्षंतदर्धतदर्धवायथाशक्ति

प्रातर्धृतशर्करापायसादिनाब्राह्मणा
॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

वादत्वावीथीचतुष्पथेवादत्वानारिकेलोदकमान्त्रप्राश्याक्षैर्दीव्यश्रुत्सवेनरात्रिनिनयेत् ॥ प्रातर्धृतशर्करापायसादिनाब्राह्मणा
नसंतप्यर्धदक्षिणांदत्वाऽशिषोगृहीत्वाइष्टजनैःसहभुंजीत ॥ इतिकोजागरव्रतम् ॥

॥ २१३ ॥ अथसोमवत्यमायाश्चाब्रतम् ॥

तिथ्यादिसंकीर्त्यआत्मनःअवैधव्यपुत्रपौत्रप्राप्तिपूर्वकमतुलसौभाग्यसिद्धिद्वाराश्वत्थरूपीनारायणप्रीत्यर्थआचरि
श्रीः ॥ तिस्र्यादिसंकीर्त्यआत्मनःअवैधव्यपुत्रपौत्रप्राप्तिपूर्वकमतुलसौभाग्यसिद्धिद्वाराश्वत्थरूपीनारायणप्रीत्यर्थआचरि
तस्यसोमवत्यमायाश्चाब्रतस्यसांगतासिद्ध्येतदुद्यापनाख्यकर्मकरिष्ये इतिसंकल्प्य ॥ वृताचार्यःसर्वतोभद्रस्थकलशेरौप्यमय
पीठेसौवर्णाश्वत्थाधौहैमंलक्ष्मीनारायणंइदंविष्णुरितिमंत्रेणप्रतिष्ठाप्यपूजयेत् ॥ मूलतोब्रह्मरूपायेतिपुरुषसूक्तेनवापूजयेत् ॥
प्रातरग्निप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् ॥ अन्नप्रधानं ॥ लक्ष्मीनारायणमश्वत्थसमित् १ पायस २ तिल ३ द्रव्येणप्रत्येकमष्टोत्तरशत १०८
संख्याकाहुतिभिःब्रह्मादिमंडलदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ आचार्यपूजनंपीठदानंवायनदानंब्राह्मणभोजनंचकुर्यात् ॥

॥ २१४ ॥ अथपिठोरीब्रतम् ॥

तिथ्यादिसंकीर्त्यआत्मनःस्वकुलस्यचसंततिविच्छेदाभावपूर्वकपुत्रपौत्रलक्ष्मीसुखाद्यभिवृद्धयेसप्तवर्षावध्याचरितपि
श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यआत्मनःस्वकुलस्यचसंततिविच्छेदाभावपूर्वकपुत्रपौत्रलक्ष्मीसुखाद्यभिवृद्धयेसप्तवर्षावध्याचरितपि
ठोरीव्रतस्यसंपूर्णतासिद्ध्यर्थंचतुःषष्टियोगिनीस्वरूपासप्तमातृकाप्रीत्यर्थतदुद्यापनाख्यकर्मकरिष्ये ॥ वृताचार्यःसर्वतोभद्रेसप्त
कलशेषु ब्राह्म्यादिसप्तमातरः ॐ ज्ञानंसप्तमातरोवेधामगासतश्रिये ॥ अयंभ्रुवोर्युगीणांचिकेतयत् ॥ इत्यनेनआवाह्यपूजयेत् ॥

तदुत्तरेकलशेचतुःषष्टियोगिनीःआवाहयेत् ॥ प्रधानं ॥ सप्तमावृःअष्टोत्तरशतमाज्याहुतिभिःयोगिनीब्रह्मादयश्चैकैकयाज्याहुत्या ॥ पीठदानमंत्रः ॥ सोपस्करंचकलशंगृहाणद्विजसत्तम ॥ प्रीयतांमातरोमह्यंलोकानांस्थितिहेतवः ॥ इतिपिठोरीव्रतम् ॥

॥ २१५ ॥ अथसूर्यव्रतम् ॥

सूर्यव्रतं.
॥२१५॥

१ चतुःषष्टियोगिन्यस्तु—दिव्ययोगिनी १ महायोगिनी २ सिद्धयोगिनी ३ गणेश्वरी ४ प्रेताक्षी ५ डाकिनी ६ काली ७ कालरात्रि ८ निशाचरी ९ उँकारी १० रुद्रवेताली ११ ह्रींकारी १२ भूतडांबरी १३ ऊर्ध्वकेशी १४ विरूपाक्षी १५ शुष्कांगी १६ नरभोजना १७ भराडी १८ वीरभद्रां १९ धूम्राक्षी २० कलहप्रियां २१ राक्षसी २२ घोररक्ताक्षी २३ विरूपा २४ भयंकरी २५ भासुरी २६ रौद्रवेताली २७ श्रीपर्णी २८ त्रिपुरांतकां २९ भैरवी ३० ध्वंसिनी ३१ क्रोधिनी ३२ दुर्मुखी ३३ प्रेतवाहिनी ३४ कंटकी ३५ जाटकी ३६ यमदूती ३७ कराळी ३८ खटांगी ३९ दीर्घलबोष्ठी ४० मालिनी ४१ मंत्रयोगिनी ४२ कालाग्निगृहिणी ४३ चक्री ४४ कंकाली ४५ भुवनेश्वरी ४६ स्फाराक्षी ४७ कार्मुकी ४८ लौकिकी ४९ काकदृष्टि ५० भक्षणी ५१ अधोमुखी ५२ प्रेरणी ५३ व्याघ्री ५४ कंकणी ५५ प्रेतभक्षणी ५६ वीरकौमारिकां ५७ चंडां ५८ वाराही ५९ मुंडधारिणी ६० कामाक्षी ६१ उड्डाणी ६२ जालंधरा ६३ महालक्ष्मी ६४ ॥

॥२६७॥

णं ३ सूर्यं ४ भानुं ५ तपनं ६ इंद्रं ७ रविं ८ गभस्ति ९ यमं १० हिरण्यरेतसं ११ दिवाकरं १२ ॥ अर्घ्यमंत्रः ॥ नमःसहस्रकिर
 णसर्वव्याधिविनाशन ॥ गृहाणार्घ्यमयादत्तंसंज्ञयासहितोरेवे ॥ अन्वादध्यात् ॥ संज्ञासहितंसहस्रकिरणंपायसद्रव्येणाष्टोत्तर
 शतसंख्याकाहुतिभिःद्वादशपरिवारदेवताःब्रह्मादिदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ ततोद्वादशब्राह्मणान्संतर्पयेत् ॥ इति ॥

॥ २१६ ॥ अथाशादित्यव्रतम् ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यआत्मनःसकलरोगनिरसनपूर्वकपुत्रपौत्रसकलाभीष्टसिद्धिद्वारासवितृप्रीत्यर्थआशादित्यव्रतंकरि
 ब्ये ॥ तत्रमंत्रः ॥ यथाशाविमलाःसर्वास्तवभास्करभानुभिः ॥ तथाशाविमलामह्यंकुरुनित्यंममार्घ्यतः ॥ नमोस्तुतेपापवि
 नाशनायविश्वात्मनेसप्ततुरंगमाय ॥ सामर्ग्यजुर्धामनिधेविधात्रेभवाब्धिपोतायनमःसवित्रे ॥ अनेनमंत्रेणमासाधिपनाममं
 त्रेणचपूजाकार्या ॥ मासाधिपनामानि सूर्यः १ धाता २ वरुणः ३ माधवः ४ हरिः ५ रविः ६ रुद्रः ७ भर्गः ८ स्वर्ण
 रेताः ९ अर्यमा १० भानुः ११ भास्करः १२ ॥ वृताचार्यःसर्वतोभद्रैरक्तवस्त्रवेष्टितंताम्रकलशंतत्रपूर्णपात्रेद्वादशारकमलंविर
 ज्यतन्मध्येरौप्यरथैर्मंसवितारं आकृष्णेनेतिमंत्रेणसंस्थाप्यपरितोद्वादशदलेषुपूर्वोक्तान्द्वादशमासाधिपान्प्रतिष्ठाप्यउक्त
 प्रकारेणपूजयेत् ॥ ततोऽग्निप्रतिष्ठाप्यहोमयेत् ॥ प्रधानंसवितारंपायस १ द्रव्येणाष्टोत्तरशत १०८ संख्याकाहुतिभिः ॥
 मासाधिपद्वादशदेवताःब्रह्मादिदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ अत्रपायसपूरितताम्रपात्रदानमुक्तं ॥ होमःकृताकृतः ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यआत्मनःअशेषपापक्षयपूर्वकसत्पुत्रप्राप्तिधनधान्यैश्वर्यादिवृद्धिद्वाराऽमुककामनयावाचरितस्यसोम
वारव्रतस्यसांगतासिद्धयेतदुद्यापनंकरिष्ये ॥ वृताचार्यःलिंगतोभद्रंविरच्यतत्रब्रह्मादिदेवताआवाह्य तदुपरिकलशंपूर्णपात्रे
हैमंशिवंत्र्यंबकमितिमंत्रेण हैमीगौरींचगौरीर्मिमायेतिमंत्रेणपुरतोर्राजंतवृषभंऋषभंमाइतिमंत्रेणप्रतिष्ठाप्यपुरतः पूर्वोदिक्र
मेण अनंतं १ सूक्ष्मं २ शिवं ३ उत्तमं ४ त्रिमूर्तिं ५ रुद्रं ६ श्रीकंठं ७ शिखंडिनं ८ पुनराग्नेयादिविदिक्षु गणेशं १ मातृः २
दुर्गां ३ क्षेत्रपालं ४ पुनःपूर्वादिविदिक्षु लोकेशंस्तत्तन्मंत्रैःप्रतिष्ठाप्यपूजयेत् ॥ प्रातरग्निंप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् १ सोमंशिवं
त्र्यंबकमितिमंत्रेणपलाशसमिद्धिः ॥ आप्यायस्वेतिमंत्रेणपृषदाज्येन त्वंसोमासीतिमंत्रेण यव १ ब्रीहि २ पायस ३ तिल ४
आज्य ५ द्रव्यैःप्रत्येकमष्टोत्तरशत १०८ संख्याकाहुतिभिः ॥ गौरींचत्रिमध्वाक्तदूर्वाभिस्तावतीभिःपरिवारदेवताब्रह्मादिदे
वताश्चैकैकयाज्याहुत्याचक्ष्ये ॥ ततःपीठंव्रतपूर्तयेधवलंगांचआचार्यायदत्वाआशिषोर्गृहीत्वास्वयंभुंजीत ॥ इतिसोमवारव्रतं ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यममेहजन्मनिअखिलपापक्षयपूर्वकदुःखदारिद्र्यनाशविपुलसुखसौभाग्यैश्वर्यपुत्रपौत्रादिप्राप्त्यर्थंश्री
शिवप्रीत्यर्थंपंचवर्षात्मकंपंचधान्येनशिवमुष्टिव्रतंकरिष्ये ॥ मंत्रपुष्पांतेधान्यंसमर्प्य ॥ वृताचार्यः एकलिंगोद्भवपीठेकलशं
१ प्रथमंशालितंदुलं १ द्वितीयंयवं २ तृतीयंगोधूम ३ चतुर्थचणकं ४ पंचममुद्गं ५ एकैकंपंचप्रस्थंप्रस्थंवा अशक्तौनिष्ठिकचनेतुन्यूनं ॥

संस्थाप्यराजतंपूर्णपात्रनिधायतत्रह्रमीउमेशप्रतिमांराजतंवृषभंसंस्थाप्यलोकेशानावाह्यपूर्ववत्पूजयेत् ॥ सुवर्णनिर्मितंधान्यंकृत्वापंचसंख्ययात्रीणि एकैकं वा समर्पयेत् ॥ धान्यंसमर्चयेत् ॥ सुवर्णबिल्वदलानि अथवारौप्यमयानिकृत्वा धान्यसंख्यया समर्पयेत् ॥ अग्निप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् ॥ अन्नप्रधानम् ॥ उमेशंसमित् १ तिल २ आज्य ३ द्रव्यैः गायत्रीमन्त्रेण अष्टोत्तरशत संख्याहुतिभिः लोकपालान्ब्रह्मादिदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ ततः शिवाय पंचरत्नादिसमर्पयेत् ॥ इति शिवामुष्टिन्नतम् ॥

॥ २१९ ॥ अथमंगलगौरीव्रतम् ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्य आत्मनोऽवैधव्यपुत्रपौत्राद्यै हिकनानाविधभोगप्राप्तिपूर्वकगौरीलोकप्राप्त्यर्थं आचरितं यत्तं च वर्षात्मकं मंगलगौरीव्रतं तत्संपूर्णफलावाप्तये तदुद्यापनं करिष्ये ॥ वृताचार्यः एकलिंगोद्भवे ब्रह्मादिदेवतास्थापनपूर्वकं दृष्टुपरिकलशं प्रतिष्ठाप्य तत्रैहमीगौरीगौरीमिमायेति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य पूजयेत् ॥ परितः पिष्टजान्दमर्वाकारान् षोडशतं तु वर्तयुतान् दीपान् प्रज्वाल्य प्रातरग्निप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् ॥ गौरीं घृत १ तिल २ अक्षता ३ बिल्वदल ४ द्रव्यैः प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशत १०८ संख्याकाहुतिभिः ब्रह्मादिदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ दंपतीसंपूज्यसौभाग्यद्रव्यवस्त्रदक्षिणाफलतांबूलादिसहितं पक्वान्नपूरितं वंशपात्रं उपायनमिदं द्रव्यमिति मन्त्रं पठंस्तद्दत्त्वा तत आचार्यसंपूज्यरौप्यपात्रे सुवर्णवर्तिसंयुतं दीपं कृत्वा चार्चाय दत्त्वा सोपस्करं पीठं व्रतपूर्तये गांच दत्त्वा ताम्रपात्रं पक्वान्नपूरितं वस्त्रादियुतं मात्रे दत्त्वा परमाग्नेन भूदेवान्संतर्पयेत् ॥ इति मंगलगौरीव्रतम् ॥

॥ २२० ॥ अथभौमवारव्रतम् ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यअभीष्टकामनासिद्ध्यर्थंआचरितंयज्ञौमवासरव्रतंतत्संपूर्णफलावाप्तयेतदुद्यापनंकरिष्येइतिसंकल्प्यवृ
ताचार्यउक्तविधिनासर्वतोभद्रेकलशप्रतिष्ठांतकृत्वा तत्रहैमंगलमुक्तपूजाविधिना (ॐ ह्रीं श्रीमंगलाय नमः अयं मूलमंत्रः ॥ अं
गारकाय विद्महे भूमिपुत्रा यधीमहि ॥ तन्नो भौमः प्रचोदयात् इयं गायत्री ॥ अग्निर्मूर्धेति वैदिको मंत्रः) संपूज्य सुवर्णपुष्पैर्विशेषपूजां
कृत्वा ॥ मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः ॥ स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्माविरोधकः ॥ लोहितोलोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः ॥
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमि नंदनः ॥ अंगारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः ॥ वृष्टिकर्ता पहर्ता च सर्वकामफलप्रदः ॥ अन्नप्रधा
नं ॥ मंगलं गुडाज्यमिश्रिततिलद्रव्येणाष्टोत्तरसहस्रसंख्याका हुतिभिः मूलमंत्रेण गायत्र्या वा वैदिकेन वा एकविंशतिपरिवारदेव
ताः तेनैव द्रव्येणाष्टाष्टसंख्याका हुतिभिः ब्रह्मादिदेवताश्चैकैयाज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ मंगलो भूमिपुत्रश्चेत्याद्या एकविंशतिदेवतास्ता
सां नाम मंत्रेण होमः ॥ मंगलः प्रतिगृह्णाति मंगलो वै ददाति च ॥ मंगलस्तारको भाभ्यां मंगलाय नमो नमः ॥ इति भौमवारव्रतं ॥

॥ २२१ ॥ अथशनैश्चरव्रतम् ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्य आत्मनः अखिलदुःखदौर्भाग्यनिरसनपूर्वकं इह जन्मनि जन्मांतरे च अतुलसुखपुत्रपौत्रधनधान्याद्यभि
वृद्ध्यर्थं शनैश्चरव्रतं करिष्ये ॥ शनैश्चरं दीर्घदेहं दंडपाशधरं तथा ॥ पिंगाक्षं स्थूलदेहं च ध्यायामिरविनंदनम् ॥ इति ध्यात्वा ॥ शमन्नि
रग्निरिति वैदिकेन शनैश्चराय नम इति नाम मंत्रेण वा पूजयेत् ॥ अन्नप्रधानं शनैश्चरं शमीसमित् १ तिल २ आज्य ३ द्रव्यैः प्रत्येकम

द्वेत्तरशतसंख्याहुतिभिः ब्रह्मादिदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्या ॥ ततोविप्रसंपूज्यप्रस्थतिलानांवायनंसदक्षिणंदत्वादेवंविसृजेत् ॥

॥ २२२ ॥ अथशिवलक्ष्मणसूत्रतन्म ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यममअनेकजन्माजितदुरितानिनिवृत्तिपूर्वकऐहिकपुत्रपौत्रादिविविधसुखप्राप्त्यनंतरगिवलोकनिवासकामनयाकृतंयल्लक्षपूजाविधानंतत्संपूर्णफलावासयेतदुद्यापनाख्यंकर्मकरिष्ये ॥ ततोवृताचार्यःवेदिकालिंगतोभद्रस्थकलशेधान्यपूरितपूर्णपात्रेमध्येसौवर्णमहेशंनमःशंभवेचमयोभवेचेतिमंत्रेणसंस्थाप्यतद्वामभागेसौवर्णागौरींच गौरीर्मिमायेतिमंत्रेणसंस्थाप्यपुरतोर्राजतंवृषभंऋषभंमेतिमंत्रेणसंस्थाप्यपरिवारदेवताःस्थापयेत् ॥ पूर्वादिदिक्षु अधर्मं अवैराग्यं ० अनैश्वर्यं ० मणसंस्थाप्यपुरतोर्राजतंवृषभंऋषभंमेतिमंत्रेणसंस्थाप्यपुनर्वक्त्राय ० दक्षिणेअधोरवक्त्राय ० उत्तरेवामदेववक्त्राय ॥ तद्वहिःऐशान्याईशानवक्त्राय ० पूर्वतत्पुरुषाय ० दक्षिणेअधोरवक्त्राय ० अजैकपदे ० अहिर्बुध्याय ० भवाय ० य ॥ पूर्वादिषु वामायै ० श्रेष्ठायै ० काल्यै ० उन्मन्यै ० ॥ पुनःपूर्वामारभ्यैशानीपर्यंतं अजैकपदे ० अहिर्बुध्याय ० भवाय ० शर्वाय ० उमापतये ० रुद्राय ० पशुपतये ० शंभवे ० वरदाय ० शिवाय ० ईश्वराय ० ॥ पुनःपूर्वं नंदिकालौ ० दक्षिणेभृंगिचंडौ ० पश्चिमेवृषस्कंदौ ० उत्तरे देशकालौ ० ततइंद्रादिलोकेशान् एवंसंस्थाप्यपूजयेत् ॥ प्रधानम् ॥ सोमंमहेशं तिलद्रव्येणायुतसंख्याकाहुतिभिःसहस्रपरिमिताभिर्वापरिवारदेवतामंडलदेवताश्चएकैकयातिलाहुत्याज्याहुत्यावायये ॥ शेषेणेत्यादिसमानं ॥

॥ २२३ ॥ अथविष्णुलक्ष्मणसूत्रतन्म ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यअखिलनानाविधपातकशमनपूर्वकमैहिकामुष्मिकनिरतिशयानंदप्राप्तिद्वारालक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थं

तुलस्यादिलक्षत्रतोद्यापनं करिष्ये ॥ वृताचार्यो वेदिकायां सर्वतोभद्रं ब्रह्मादिदेवतास्थापनपूर्वकं कलशं प्रतिष्ठाप्य तत्र सौवर्णं चतुर्भुजं लक्ष्म्यालिंगितवामांगं नारायणं सहस्रशीर्षं तिमंत्रेण संस्थाप्य पुरतः सौवर्णं राजतं वागरुडं ॥ सामध्वनिशरीरस्त्वं वाहनं परमेजयेत् ॥ प्रातरग्निं प्रतिष्ठाप्यान्वा दध्यात् ॥ अत्र प्रधानं लक्ष्मीनारायणं ॐ नमो नारायणायेति मंत्रेण मधुलाजमिश्रिततिल १ पायस २ घृत ३ चरु ४ द्रव्यं चतुष्टयेन प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरसहस्राहुतिभिर्वा तथा चतुष्टयेन अयुताहुतिभिः सहस्राहुतिभिर्वासहस्रनाममंत्रैर्यक्ष्यपरिवारदेवतामंडलदेवताश्चैकैकया ज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ वाचनमंत्रः ॥ जलशायी ब्रह्मा पिता यज्ञर्भे स चराचरं ॥ अनंतभोगशयनः प्रीयतां मे जनार्दनः ॥ इति दत्वा गांपयस्विनीं च दत्वा धिकफलप्राप्तये सोपस्करां शय्यां च दत्वा पंचाधिकां न्द्विजान्सदन्नेन भोजयेदिति ॥ एवमेव विधानेन गणेशां बिकयोर्नृप ॥ तत्तन्मंत्रेण पूजा तु तत्तन्नामसहस्रैः ॥ गणेशे लड्डुकैर्होमं पंचखाद्यैरथापि वा ॥ पायसेन तु देव्याश्चातिलैर्विकैवलैरपि ॥ एवं कृत्वा विधानेन स्वर्गलोके महीयते ॥ इति विष्णुलक्षपूजाविधानम् ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्य आत्मनोऽखिलपापरोगपीडानिरसनपूर्वकाभीष्टसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विष्णोरमुकदेवस्येति वा अमुककामनया कृताः प्रदक्षिणास्तत्साहुप्यार्थं तदुद्यापनं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ वृताचार्यः सर्वतोभद्रं कलशोपरि हं मं कृतप्रदक्षिणं देवं तत्तन्मंत्रेण संपूज्य साष्टांगं प्रणमेत् ॥ ततोऽग्निं प्रतिष्ठाप्यान्वा दध्यात् ॥ प्रधानं विष्णुं विष्णुगायत्र्याष्टोत्तरशतसं

ख्ययाचर्चा १ ज्या २ हुतिभिःब्रह्मादिदेवताःएकैकयाज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ इतिलक्षप्रदक्षिणाविधानं ॥ पिप्पलोवृक्षराजेंद्रोह्यग्नि
गर्भस्त्वमेवच ॥ प्रभुर्वनसतीनांचपूर्वजन्मनिचत्कृतं ॥ अघौघंनाशयक्षिप्रंतवरूपप्रदानतः ॥ ततोद्विजंप्रार्थयेत् ॥ अमुंतरुं
हाणत्वंविष्णुरूपंद्विजोत्तम ॥ स्वीकृत्यदुष्कृतंघोरंक्षिप्रंशान्तिंप्रयच्छमे ॥ व्रतपूर्तयेशुक्लांगांचदद्यादिति ॥ इत्यश्वत्थप्रदक्षिणा ॥

॥ २२५ ॥ अथलक्षवर्तिव्रतम् ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यात्मनोरजःसंपर्कादिविविधपातकक्षयागम्यगमनकोटिनाशविविधैहिकपुत्रपौत्रादिसुखप्राप्तिपूर्वक
विष्णुलोकप्राप्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरग्रीत्यर्थमाचरितंयल्लक्षवर्तिव्रतंतत्संपूर्णफलावासयेतदुद्यापनाख्यकर्मकरिष्येइतिसंकल्प्यवृ
ताचार्यःसर्वतोभद्रेकलशंप्रतिष्ठाप्य तन्मध्यदेशेइदंविष्णुरितिमंत्रेणहैमंश्रियासहितंविष्णुतद्वक्षिणेसावित्र्यासहितंब्रह्माणंब्र
ह्मजज्ञानमितिमंत्रेण विष्णोरुत्तरेउमासहितंशंभुनमःशंभवेचमयोभवेचेतिमंत्रेणइतिदेवतान्नयंसंस्थाप्यपुरतोर्राजतंगरुडंप्रति
ष्ठाप्यपूजयेत् ॥ प्रधानं लक्ष्मीसहितंविष्णुधृतान्वितपायस १ पलाशसमित् २ घृत ३ द्रव्यैः सहस्रसंख्याकाहुतिभिः तथाब्र
ह्मशंभूअष्टाविंशतितिलाहुतिभिः मंडलदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ अत्रक्रमः अग्नेनयज्ञचापायसं इदंविष्णुरितिमंत्रेण
पलाशसमिधः विष्णुगायत्र्याघृतंचहुनेत् ॥ रौप्यपात्रस्थितंदीपंहैमवर्तिसमन्वितं ॥ कांस्यपात्रेणसहितंददामिब्रतपूर्तये ॥
इतिमंत्रेणदत्त्वाआचार्यंसंपूजयथाशक्तिदक्षिणांगांचदत्त्वाब्राह्मणभोजनंसंकल्पयेत् ॥ इत्येकसूत्रवर्तिमाणिक्यलक्षवर्तिव्रतं ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यममाखिलदुरितनाशाभीष्टसिद्धिपूर्वकशिवलोकप्राप्तिं सांबसदाशिवप्रीत्यर्थं आचरितरुद्रलक्षवर्तिव्रत
संपूज्यं प्रधानं देवं सांबं कडुद्रायेति मंत्रेण ॐ नमः शिवायेति मंत्रेण वा घृत १ पायस २ बिल्व ३ द्रव्यैः सह साहुतिभिः मंडलदेव
ताश्चैकैकया ज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ होमदशांशतः साधारणं तर्पणं कांस्यपात्रसहितं दीपदानं च ॥ इति रुद्रबिल्वलक्षवर्तिव्रतोद्यापनम् ॥

॥ २२६ ॥ अथ रुद्रलक्षवर्तिव्रतम् ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यात्मन इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सौभाग्यारोग्यपुत्रपौत्रलक्ष्मीवृद्धि सर्वदुःखनाशन पूर्वकं उमामहेश्वरप्रा
प्तिकामः कदलीव्रतोद्यापनं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ २२७ ॥ अथ कदलीव्रतोद्यापनम् ॥

कदलीव्र-
॥२२७॥

लक्ष्मीमूलदेशे मृदावेदीं विधाय तत्र लिंगतोभद्रे उक्त्वा विधिना ब्रह्मादिदेवता आवाह्यत दुपरिकलशस्थपूर्णपात्रैर्हर्मं शिवं त्र्यंबकमिति
कडुद्रायेति मंत्रेण वा गौरीं च गौरीर्मिमायेति गायत्र्या वा प्रतिष्ठाप्य पूजयेत् ॥ पुरतोवृषभं राजतं च ॥ ततः कदलीं पूजयेत् ॥ कद-
ल्यैकामदायिन्यैमेधायैचनमो नमः ॥ रंभायैभूतसारायै सर्वसौख्यप्रदे नमः ॥ इत्यनेन ॥ कदलीपरितो लोकपालानावाह्यतत
स्तैलहरिद्रादिनामंगलस्नपनं कृत्वा स्त्रीभूषणैर्भूषयित्वा ऽवाहनाद्युपचारैः संपूजयेत् ॥ अत्र प्रधानं शिवं गौरीं कदलीं च पलाशस-
मित् १ मधु २ सर्पिः ३ तिल ४ ज्रीहि ५ द्रव्यैः तिलाज्याभ्यां वा प्रत्येकमष्टोत्तरशतमष्टाविंशति वा संख्याकाहुतिभिः ब्रह्मादि

॥२७१॥

देवताश्चैकक्याज्याहुत्या ॥ क्रमेण होममंत्राः कद्रुद्राय ० गौरीमिमायेति ० ॥ ॐ आं ह्रीं क्लीं कामिन्यै विद्महे त्रैलोक्यक्षोभिण्यै धीम
हि ॥ तन्नः कदलीप्रचोदयात् ॥ उमे गौरिनमस्तुभ्यं नमस्ते विश्वधारिणि ॥ परमानंदरूपिण्यै कदल्यै ते नमो नमः ॥ वायनंद
द्यात् ॥ तत आचार्याय संपूज्य पीठं कदलीं च दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ कदलीं कामदानीं च सर्वसौख्यप्रदायिनीम् ॥ गिरिजाहररू
पां वै ब्राह्मणाय ददाम्यहम् ॥ प्रतिगृह्णु द्विजश्रेष्ठ समस्तफलदायक ॥ कदल्याश्च प्रदानेन पूर्णाः संतु मनोरथाः ॥ कदलीप्रतिगृह्णा
तिकदलीं वै ददाति च ॥ कदलीतारकोभाभ्यां कदल्यै ते नमो नमः ॥ कदलीदानसांगता सिद्ध्यर्थं हिरण्यदं ॥ इति कदलीव्रतं ॥

॥ २२८ ॥ अथ कर्कटीव्रतम् ॥

श्रीः ॥ देशकालौ निर्दिश्य मम सकलसौभाग्यपुत्रपौत्रप्राप्त्यर्थं श्रीउमामहेश्वरप्रीत्यर्थं कर्कटीव्रतं करिष्ये ॥ वृताचार्यः लिंगतो भ
द्रे कद्रुद्रायैति रुद्रं गौरीमिमायेति उमां च प्रतिष्ठाप्य ध्यानं ॥ सूर्यकोटिप्रतीकाशं त्रिनेत्रं चंद्रभूषणम् ॥ शूलवज्रगदाकुंभपाशांकु
शधरं विभुं ॥ वरदाभयपाणिं च सर्वाभरणभूषितं ॥ उमालिङ्गितसर्वांगशांतं ध्यायेत्सदाशिवं ॥ पौडशोपचारैः संपूज्य ॥ कर्कटी
वल्लीं च संपूज्य ॥ प्रार्थना ॥ कल्पवल्लि महाभागे सौभाग्यारोग्यदायिनि ॥ प्रार्थयामि व्रतादौ त्वां भर्तुः श्रेयोऽभिवृद्धये ॥ अन्नप्रधा
नं उमां महेश्वरं च पायस १ आज्य २ तिल ३ द्रव्यैः आवाहनोक्तमंत्रेण प्रत्येकं प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिवासंख्यादुति
भिः ब्रह्मादिदेवता एकैकया हुत्वा एवं हुत्वा ॥ दानमंत्रः ॥ कर्कटीनामया वल्लीविधाना निर्मितापुरा ॥ तस्याः फलप्रदानेन पूर्णाः संतु
मनोरथाः ॥ गृहाणे मां महावल्लीं सफलां वस्त्रसंयुतां ॥ कल्पितं मे फलं चास्तु व्रतेन मम शंकर ॥ पीठंगां चाचार्याय दद्यात् ॥ इति ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यआत्मनःसत्पुत्रप्राप्तिपूर्वकअतुलक्ष्मीसुखाभिवृद्धिद्वाराब्रह्मसावित्रीप्रीत्यर्थकूष्मांडीव्रतोद्यापनंकरिष्ये ॥ ततोवृताचार्यःसर्वतोभद्रेहेमप्रतिमयोःब्रह्मसावित्र्यौब्रह्मज्ञानंप्रणोदेवीतिमंत्राभ्यांप्रतिष्ठाप्यपूजयेत् ॥ कूष्माण्डमंत्रः ॥ कूष्माण्डैकामदायिन्यैब्रह्माण्यैतेनमोनमः ॥ नमोस्तुसुखदात्र्यैचसावित्र्यैतेनमोनमः ॥ ब्रह्माणंसावित्रीचवृत्त १ तिल २ द्रव्येणप्रत्येकमष्टोत्तरशत १०८ संख्याकाहुतिभिः ब्रह्मादिदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ कूष्मांडीबहुवीजाढ्यांवस्त्रालंकारभूषितां ॥ दक्षिणाकलशोपेताहेमकूष्माण्डसंयुताम् ॥ सावित्रीब्रह्मसंप्रीत्यैगृहाणद्विजसत्तम ॥ सौभाग्यद्रव्ययुतवायनानिउपायनमितिमंत्रेणयथाशक्तिदद्यात् ॥ ततःपीठव्रतपूर्तयेगांचदत्वाब्राह्मणान्संतर्पयेदिति ॥ ॥

श्रीः ॥ भविष्ये ॥ ब्रह्महत्यादिपापघ्नकूष्माण्डंशुभसौख्यदं ॥ अथकूष्माण्डाष्टकफलदानम् ॥ ब्रह्महननादिसमस्तपापक्षयपूर्वकबहुपुत्रपौत्रसौभाग्यादिसकलमनोरथावासिकूष्माण्डबीजसमसहस्रसंख्याकाब्दब्रह्मलोकनिवासकामोहंकूष्माण्डाष्टकफलदानंकेवलैककूष्माण्डदानंवाकरिष्ये ॥ गणपतिपूजनंकूष्माण्डपूजनंब्राह्मणपूजनंचकरिष्ये ॥ प्रथमितत्रीहिगोधूमराशुपरिकूष्माण्डान्संस्थाप्य ॥ ब्रह्मसावित्रीदेवत्याचरुद्रदेवत्यायवाकूष्माण्डायनमइतिषोडशोपचारैःसंपूज्य ॥ दानमंत्रः ॥ ब्रह्महत्यादिपापघ्नब्रह्मणानिर्मितंपुरा ॥ कूष्माण्डंबहुवीजाढ्यपुत्रपौत्रादिवृद्धिदं ॥ ब्रीहीक्षुदंडचुक्रादि

धात्रीफलसमन्वितं ॥ फलतांवूलसंयुक्तं घृताक्तं दीपसंयुतं ॥ मुक्ताप्रवालहेमादि युक्तं दत्तं तव द्विज ॥ अनंतपुण्यफलदमतः शां
तिं प्रयच्छ मे ॥ गोत्राय शर्मणे सुपूजिताय इदं कूष्माण्डदानं धृताक्तं तिललिप्तं मुक्ताप्रवालहेमरत्नफलतांवूलवस्त्रदीपाद्यन्यतमय
थाशक्तिसोपस्करादियुतं स्वर्णदक्षिणादियुतं तुभ्यमहंसं प्रददेन मम इति द्विजहस्ते दद्यात् ॥ इति कूष्माण्डदानविधिः ॥

॥ २३१ ॥ अथ दशहराव्रतविधिः ॥

श्रीः ॥ देशकालौ संकीर्त्य ० ममैतज्जन्मजन्मांतरसमुद्भूतत्रिविधकायिकचतुर्विधवाचिकत्रिविधमानसे तिस्रकांदोक्तदशविध
पापनिरासत्रयस्त्रिंशच्छतपित्रुद्धारब्रह्मलोकावाप्त्यादिफलप्राप्त्यर्थं ज्येष्ठमासादिदशयोगपर्वणि अस्यां महानद्यां स्नानं तीर्थपूज
नं प्रतिमायां जाह्नवीपूजां तिलादिदानं मूलमंत्रजपमाज्यहोमंच यथाशक्तिकरिष्ये ॥ यथाविधिस्नानं दशवारंकृत्वा ॥ जले स्थि
तो दशवारंसकृद्वावक्ष्यमाणं स्तोत्रं पठित्वा वासः परिधानादि पितृतर्पणांतं नित्यं विधाय तीर्थपूजां विधाय सर्पिर्भिश्रान् दशप्रसृति
कृष्णतिलान् तीर्थजलिना प्रक्षिप्य गुडमिश्रान् सक्तुपिंडान् दशप्रक्षिपेत् ॥ ततो गंगा तटे ॥ ताम्रे मृन्मये वा स्थापितकलशे सौव
र्णादिप्रतिमायां चतुर्भुजां गंगामावाहयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ नमो भगवत्यै दशपापहरायै गंगायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै स्वाहे
तायै विश्वरूपिण्यैनं दिव्यै तेन मोनमः ॥ द्विजमात्रविषयो विशालक्षरो यथा ॥ ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै श्रीगंगा
ति ॥ एवं गंगामावाह्य ॥ नारायणं रुद्रं ब्रह्माणं सूर्यं भगीरथं हिमाचलंच नाम मंत्रेण तत्रैव आवाह्य ॥ उक्तमूलमंत्रमुच्चार्य श्रीगंगा
यै नारायण रुद्रं ब्रह्मसूर्यं भगीरथं हिमवत्सहितायै आसनं समर्पयामीत्येवमासनाद्युपचारैः पूजयेत् ॥ दशविधपुष्पैः संपूज्य दशांगं

धूपयित्वा दशविधैवेद्यांतेतांबूलदक्षिणां दत्त्वा दशफलान्यर्पयेत् ॥ दशदीपान्दत्त्वा पूजां समापयेत् ॥ दशविप्रेभ्यः प्रत्येकं षोडशमुष्टितिलान्स दक्षिणान् दद्यात् ॥ एवं यवानामपि ॥ ततो दशगाएकां वागां दद्यात् ॥ मत्स्यकच्छपमंडूकान्सौवर्णा दशांशहोमः ॥ यथाशक्ति वाजपहोमौ ॥ तत्र दशहरात्रतां गत्वेन होमं करिष्ये इति संकल्प्य स्थंडिले निप्रतिष्ठाप्य अन्वाधाने च दिषद्पात्राण्यासद्य आज्यं संस्कृत्यथान्वाधानं जुहुयात् ॥ दशब्रह्माणान्सुवासिनींश्च भोजयेत् ॥ प्रतिपदि नमारभ्य स्नानादिपूजांतो विधिः कार्य इति केचित् ॥ ॥ १ ॥

श्रीः ॥ ब्रह्मोवाच ॥ नमः शिवायै गंगायै शिवदायै नमो नमः ॥ २३२ ॥ दशहरास्तोत्रं स्कांदे ॥
 ण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमो नमः ॥ सर्वदेवस्वरूपिण्यै नमो भेषजमूर्त्यै ॥ २ ॥ सर्वस्य सर्वव्याधीनां भिषक् श्रेष्ठ्यै नमोस्तुते ॥ स्थाणुजंग
 मसंभूतविषहं नमो नमः ॥ ३ ॥ भोगोपभोगदायिन्यै भोगवत्यै नमो नमः ॥ मंदाकिन्यै नमस्तेस्तु स्वर्गदायै नमो नमः ॥ ४ ॥
 नमस्त्रैलोक्यभूषायै जगद्धात्र्यै नमो नमः ॥ नमस्त्रिशुक्लसंस्थायै तेजोवत्यै नमो नमः ॥ ५ ॥ नंदायै लिंगधारिण्यै नारायण्यै नमो
 नमः ॥ नमस्ते विश्वमुखायै रेवत्यै तेनमो नमः ॥ ६ ॥ बृहत्यै तेनमस्तेस्तु लोकधात्र्यै नमो नमः ॥ नमस्ते विश्वामित्रायै नंदिन्यै

तेनमोनमः ॥ ७ ॥ पृथ्व्यै शिवामृतायै च सुवृषायै नमोनमः ॥ शांतायै च वसिष्ठायै वरदायै नमोनमः ॥ ८ ॥ उस्मायै शिवदो
 त्र्यै च संजीविन्यै नमोनमः ॥ ब्रह्मिष्ठायै ब्रह्मदायै दुरितहृदयै नमोनमः ॥ ९ ॥ प्रणतार्तिप्रभं जिन्यै जगन्मात्रे नमोस्तुते ॥ सर्वा
 ग्यै च संजीविन्यै नमोनमः ॥ १० ॥ शरणागतदीनार्तिपरित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यातिहरेदे विनारायणि नमोस्तुते ॥ ११ ॥ गं
 पत्यतिभक्षायै मंगलायै नमोनमः ॥ १२ ॥ गंगेमाग्रतो भूया गंगे मे देवि पृष्ठतः ॥ गं
 निर्लेपायै दुर्गहं त्रैदक्षायै तेनमोनमः ॥ १३ ॥ आदौ मध्ये तथा चांते सर्वतो गंगं ते शिवे ॥ त्वमेव मूलप्रकृतिस्त्वं हि नारायणः
 गेमे पार्श्वयोरे हि त्वयि गंगे स्तुमे स्थितिः ॥ १४ ॥ यद्दं पठते स्तोत्रं भक्त्या नित्यं नरोपियः ॥ १५ ॥ शृणुयाच्छ्रद्धया
 परः ॥ १६ ॥ गंगेत्वं परमात्मा च शिवस्तु भ्यं नमः शिवे ॥ सर्वाङ्कमानवामोति प्रेत्य ब्रह्मणि लीयते ॥ ज्ये
 शुक्तः कायवाक्चित्तसंभवैः ॥ १७ ॥ तस्यां दशम्यामेतच्च स्तोत्रं गंगजले स्थितः ॥ यः पठेद्दशकृत्वस्तुदरिद्रो वापि चाक्ष
 छेमासि सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता ॥ १८ ॥ अदत्तानामुपादानं हि सा चैव विधानतः ॥ १९ ॥ परदारोपसेवा च का
 मः ॥ १९ ॥ सोपितफलमामोति गंगां संपूज्य यत्नतः ॥ २० ॥ असंबद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधं ॥ परद्रव्येष्वाभि
 यिकं त्रिविधं स्मृतं ॥ पारुष्यमनृतं चैव पैशून्यं चापि सर्वशः ॥ २१ ॥ एतानि दशपापानि हरत्वं मज्जाह्वि ॥ दशपा
 ध्यानं मनसानिष्टचिंतनं ॥ २२ ॥ त्रयस्त्रिंशच्छतान्पूर्वांन्पितृनथपितामहान् ॥ उद्धरत्येव संसारान्मंत्रेणानेन पूजि
 पहरायस्मात्तस्माद्दशहरास्मृता ॥ २३ ॥ नमो भगवत्यै दशपापहरायै गंगायै नारायण्यै रेवत्यै शिवायै दक्षायै अमृतायै विश्वरूपिण्यै नंदिन्यै तेनमोनमः ॥ सि
 ता ॥ २३ ॥ नमो भगवत्यै दशपापहरायै गंगायै नारायण्यै रेवत्यै शिवायै दक्षायै अमृतायै विश्वरूपिण्यै नंदिन्यै तेनमोनमः ॥ सि

तमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रांकरधृतकलशोद्यत्सोललामत्यभीष्टं ॥ विधिहरिहरमौलौ सेंदुकोटीरजुष्टांकलितसितदुकूलां
जाह्नवतीं नत्तः ॥ २४ ॥ आदावादिपितामहस्य निगमव्यापारपात्रे जलपश्चात्पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनं ॥ भूयः शंभु
जटाविभूषणमणिर्जहोर्महर्षेरियंकन्याकल्मषनाशिनी भगवती भार्गीरथी हृदयते ॥ २५ ॥ गंगागंगेतियो ब्रूयाद्यो जनानां शतैरपि ॥
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं सगच्छति ॥ इति स्तोत्रेण स्तुत्वा होमांते प्रतिमोत्तरपूजां कृत्वा विसृज्य आचार्याय मूलमंत्रेण दद्या
त् ॥ इति दशहराविधिः ॥ २६ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥

श्रीः ॥ देशकालौ निर्दिश्य मम सकलदुःखदारिद्र्यनाशपुत्रपौत्रैश्वर्यधर्मार्थकाममोक्षप्राप्तिद्वारा श्रीजनार्दनप्रीत्यर्थं कृतस्याचर
णीयस्य च मलमासत्रतस्य सांगतार्थं व्रतोद्यापनं करिष्ये ॥ गण० स्वस्ति० वृताचार्यः सर्वतोभद्रोपरिपरितोद्वादशमध्ये एकं एवं
त्रयोदशकलशान्महीद्यौरित्याद्यावाहिते मध्यकलशे सुवर्णमयं लक्ष्मीयुतजनार्दनं अतो देवा इत्यावाह्यपूजयेत् ॥ प्रातरग्निं प्रति
ष्ठाप्य अन्नप्रधानं लक्ष्मीजनार्दनं अतो देवेति ऋक् ऋषदेन समित्ति लाज्यचरुपायसैः प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरसहस्राहुतिभिः ब्रह्मादीनैकै
कया ज्याहुत्या ॥ ततो वायनं कांस्यपात्रे निधाय दद्यात् ॥ विप्रसंपूज्य ॥ अधिमासे तु संप्राप्ते श्रीजनार्दनप्रीतये ॥ नरकोत्तार
णार्थाय मयादानं प्रदीयते ॥ त्रयस्त्रिंशदपूपांश्च शर्कराघृतसंयुतान् ॥ सदक्षिणानहंतुभ्यं कांस्यपात्रे निधाय च ॥ दास्ये जनार्दन
प्रीत्यै गृहाण त्वं द्विजोत्तम ॥ मलमासस्तु मासानां मलिनः पापसंभवः ॥ तत्पापस्य विशुद्ध्यर्थं वायनं प्रदाम्यहं ॥ इदं त्रयस्त्रिंश

त्संख्याकापूपवायनदानंसकांस्यपात्रंतुभ्यंसंप्रददे ॥ ततोयथाविभवमाचार्याथान्येभ्यश्चतिलपात्रंधृतपात्रंडपानहौशय्यांच
दत्वापीठंगांचदत्वाब्राह्मणभोजनंसंकल्प्यकर्मेश्वरार्पणंकुर्यात् ॥ इतिमलमासव्रतोद्यापनम् ॥ १४ ॥ ॥ १४ ॥

॥ २३४ ॥ अथकोकिलाव्रतम् ॥

श्रीः ॥ ममेहजन्मनिजन्मांतरेचसर्वपापक्षयपूर्वकंपुत्रपौत्रावैधव्यनिःसापल्यलक्ष्मीसौभाग्यरूपलावण्याद्यभिवृद्धिद्वारागौरी
रूपाकोकिलाप्रीत्यर्थकोकिलाव्रतंकरिष्यइतिसंकल्प्यकोकिलांपूजयेत् ॥ चूतचंपकवृक्षस्थांस्वर्णपक्षादिसंयुताम् ॥ चिंतयेत्
पार्वतीदेवीकोकिलारूपधारिणीम् ॥ अर्घ्यगृहाणदेवेशिवांछितार्थप्रदायिनि ॥ आषाढस्याऽसितेपक्षेमेघवर्णेहरप्रिये ॥ को
किलेत्वंजगन्मातर्गृहाणार्घ्यनमोस्तुते ॥ वृताचार्यःएकलिंगोद्भवेभद्रेब्रह्मादिदेवताःसंस्थाप्य ॥ कलशंप्रतिष्ठाप्यतदुपरिहैमां
कोकिलांगौरीर्मिमायेतिमंत्रेणप्रतिष्ठाप्य ॥ अन्नप्रधानं कोकिलारूपिणींगौरीर्मिमायेतिमंत्रेणतिल १ चंपकपुष्प २ तंडुल
३ पायस ४ आज्य ५ द्रव्यैःप्रत्येकमष्टोत्तरशत १०८ संख्याकाहुतिभिः ॥ तथाव्याहृतिमंत्रेणबिल्वपत्रैःशतत्रय ३००
परिमिताहुतिभिः ॥ ब्रह्मादिदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ वायनंदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ सोपस्करंद्विजश्रेष्ठवायनंव्रतपूर्तये ॥
ददामितेगृहाणेदंकोकिलाप्रीयतामिति ॥ आचार्यायपीठंव्रतपूर्तयेगांचदत्वादक्षिणाभोजनादिभिस्तोषयेत् ॥ कोकिलाव्रतम् ॥

॥ २३५ ॥ अथार्धोदयव्रतम् ॥

श्रीः ॥ अमार्कश्रवणेपातेयुक्ताचेत्यौषमाघयोः ॥ अर्धोदयःसविज्ञेयःकोटिसूर्यग्रहैःसमः(किंचिन्मूनंमहोदयः) ॥ दिवैव

योगःशस्तोयंनतुरात्रौकदाचन ॥ इति ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्य आत्मनःअखिलपापक्षयपूर्वकधर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसि
द्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थ (ब्रह्मविष्णुशिवप्रीत्यर्थ) अर्धोदयव्रतंकरिष्ये ॥ दर्भोस्तुतशुद्धभूमौशतत्रयद्रोणपरिमितति
लानांपर्वतंकृत्वायथाशक्तिवातत्रपलाधिकंसुवर्णस्य ब्रह्मविष्णुशिवानांप्रतिमात्रयंकृत्वा ब्रह्मजज्ञानं इदंविष्णुः त्र्यंबकं० इति
मंत्रैःप्रतिष्ठाप्यपूजयेत् ॥ परितोलोकेशांस्तत्तन्मंत्रैरावाहयेत् ॥ नारायणजगन्नाथनमस्तेगुरुध्वज ॥ पीतांबरनमस्तुभ्यंसत्यायपरमात्मने ॥ देवायदेवप
तयेयज्ञानापतयेनमः ॥ जीमूतकेशायनमोनमस्तेवृषभध्वज ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानाःकर्मणांफलहेतवः ॥ महेश्वरमहेशाननमस्ते
त्रिपुरांतक ॥ जीमूतकेशायनमोनमस्तेवृषभध्वज ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानाःकर्मणांफलहेतवः ॥ महेश्वरमहेशाननमस्ते
गदीश्वराः ॥ इतिसंप्रार्थ्य वृताचार्योमिंप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानघृताकतिलद्रव्येणप्रतिदेवतं सहस्रमष्टौ
त्तरंवासंख्याकाहुतिभिःलोकपालानैकैकयाज्याहुत्याचक्ष्ये ॥ एवंहुत्वातिलपर्वतंब्राह्मणायदद्यात् ॥ तिलपर्वतमध्यस्थान्ब्रह्म
विष्णुमहेश्वराः ॥ दहंतुपातकंसर्वयच्छंतुममसङ्गतिम् ॥ ततो गोप्रदानं ॥ भविष्येतुब्रह्मणःपलाशसमिच्चरुतिलाज्यानिवि
ष्णोःअश्वत्थसमित्तिलपायसान् शंभोःचर्वाज्यव्रीहयः ॥ कांस्यपात्रदानंकेवलंद्रव्यद्वारावागोप्रदानं ॥ इत्यर्धोदयव्रतम् ॥

श्रीः ॥ आचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यममकायिकवाचिकमानसिकज्ञाताज्ञातादिसकलपातकनिरासार्थंअद्यामुकप
र्वनिमित्तंसमुद्रस्नानंकरिष्ये इतिसंकल्प्य पापाणंसिक्तापिंडंवाहस्तेगृहीत्वा ॥ पिप्पलादसमुत्सन्नेकृत्येलोकभयंकरे ॥ पाषा

णस्तेमयादत्तआहारार्थेप्रकल्प्यतां॥इतिसमुद्रेप्रक्षिप्यप्रार्थयेत् ॥ विश्वाचीचघृताचीचविश्वयोनेविशांपते ॥ सांनिध्यंकुरुमे
 देवसागरेलवणांभसि ॥ नमस्तेविश्वगुप्तायनमोविष्णोआपांपते ॥ नमोजलधिरूपायनदीनांपतयेनमः ॥ समस्तजगदाधार
 शंखचक्रगदाधर ॥ देवदेहिममानुज्ञांतवतीर्थनियेवणे ॥ त्रितत्वात्मकमीशानंनमोविष्णुमुमापतिं ॥ सांनिध्यंकुरुदेवेशसमु
 द्रेलवणांभसि ॥ अग्निश्चयोनिरनिलश्चदेहोरेतोधाविष्णुरमृतस्यनाभिः ॥ एतद्ब्रुवन्पांडवसत्यवाक्यंततोऽवगाहेतपतिंनदीनां॥
 इतिपठित्वानित्यस्नानविधिवत्स्नात्वाअघमर्षणस्नानांगतर्पणेकृत्वासमुद्रायाध्य ॥ सर्वदोभगवान्श्रीमान्सर्वरत्नाकरोयतः ॥
 सर्वरत्नप्रधानस्त्वंगृहाणाध्यमहोदधेइत्यर्घ्यंदद्यात् ॥ तर्पयेत् ॥ यथा ॥ पिप्पलादंतर्पयामि विकण्वं कृतांतं जीवकेश्वरं
 वसिष्ठं वामदेवं पराशरं उमापतिं वाल्मीकिं नारदं बालखिल्यान् नलं नीलं गवाक्षं गवयं गंधमादनं जांबवंतं हनूमंतं
 सुग्रीवं अंगदं मैदं द्विविदं वृषभं शरभं रामं लक्ष्मणं यशस्विनीं सीतांतर्पयामि ॥ इतिसमुद्रस्नानविधिः ॥ ॥ ४३ ॥
 पर्यंतंयत्किंचित्सचराचरं ॥ मयादत्तेनतोयेनतृप्तिमेवाभिगच्छतु॥इत्यंजलिंदद्यात् ॥

॥ २३७ ॥ अथपार्थिवलिङ्गोद्यापनम् ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्याऽमुककामनामुद्दिश्यकृतानांपार्थिवलिङ्गानांसंपूर्णफलावाप्तयेतदुद्यापनंकरिष्येइतिसंकल्प्य ॥ वृता
 चार्यःसर्षपादिनाभूतान्युत्सार्यद्वारपूजांकुर्यात् ॥ सदाशिवमंडपायनमः प्राग्द्वारपार्श्वयोः गणेशाय० वृषभाय० चिच्छत्स्यादिपूर्ववत् ॥
 चिच्छत्तयै० मायाशक्त्यै० द्वारश्रियै० वास्तुपुरुषाय० ॥ दक्षिणपार्श्वयोः गणेशाय० वृषभाय० चिच्छत्स्यादिपूर्ववत् ॥

पश्चिमद्वारपार्थ्वयोः भृंगिणे० स्कंदायन० शक्त्यादिपूर्ववत् ॥ उत्तरद्वारपार्थ्वयोः रटिने० चंडीश्वराय० शक्त्यादिपूर्ववत् ॥ ततः लिंगतोभद्रेब्रह्मादिदेवतास्थापनपूर्वकंकलशंप्रतिष्ठाप्यतदुपरिशिवंतत्पार्थ्वतःगौरीषण्मुखंगणेशंचावाह्यपूजयेत् ॥ अत्रप्रधानं सोमंशिवंकृतलिंगद्वादशांशेनशतांशेनवा पायसः १ मधु २ शर्करा ३ आज्य ४ तिल ५ अक्षत ६ बिल्वपत्र ७ शतशाहुतिभिःवृषभंलोकेशान् ब्रह्मादिदेवताश्चदशदशतिलाहुतिभिः ॥ २३८ ॥ अथपार्थिवशिवपूजाविधिः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अथलिंगार्चनचंद्रिकायांशिवपार्थिवपूजाविधिः ॥ तत्रादौकृतावश्यकक्रियःस्नानादिनाशुचिर्भूत्वाधृतत्रिपुंड्रद्राक्षमालःप्रयतःशुक्लवस्त्रंपरिधायउदीर्चादिशंगत्वाशुचौदेशे पाषाणकीटकेशास्थिवालुकादिदोषरहितामृदं दद्यात्तत्र गंधाद्युपचारैःभूमिसंपूजनत्वाईशानकोणगतामृदंशस्त्रेणोत्कीर्यअष्टांगुलमृदमपाकृत्यभूमिंप्राथयेत् ॥ उद्धृतासिवराहेणकृणोनशतबाहुना ॥ मृत्तिकेत्वांचगृह्णामिप्रजयाचधनेनच ॥ इतिमंत्रेणशुद्धांमृदमादायअंत्यजादिस्पर्शरहितोमौनीगृहमागत्यशुचिस्थलेतांस्थापयेत् ॥ ततःचैलाजिनकुशोत्तरेआसनेउदङ्मुखोपविश्यआचम्यपवित्रपाणिःप्राणानायम्यआसनविधिं कृत्वागौरसर्षपान्चतुर्दिक्षुविकीर्य ॥ देशकालाद्युच्चार्यममसकलमनोरथसिद्ध्यर्थंदुरितक्षयद्वाराश्रीभवानीशंकरप्रीत्यर्थंशि

वपार्थिवपूजनंकरिष्ये ॥ त० क० घं० पू० क० ॥ कलशोदकेनपूजासंभारानात्मानंचप्रोक्ष्य हरायनमःइतिमृच्चूर्णंकुर्यात्

वामदेवाय जलसेचनं० महेश्वराय संघट्टनं० तत्पुरुषाय पिंडीकरणं० समस्ताधनाशिनेइत्यद्भिःपूतेवामपाणौवेदिकायां
 ताम्रपात्रेवाबिल्वपत्रनिधायतदुपरिसाक्षतपुष्पलिंगंस्थाप्यप्राणप्रतिष्ठांकुर्यात् ॥ अस्यश्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्यब्रह्मविष्णुरुद्रा
 ऋषयःप्राणाख्यादेवतापार्थिवलिंगप्राणप्रतिष्ठापनेविनियोगः ॥ शिवस्यप्राणाःवाक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणत्वक्पाणिपादपादू
 पस्थादिसर्वद्रियाणिइहागत्यसुखंचरंस्तिष्ठंतुशिवेहागच्छेहतिष्ठममपूजांगृहाण ॥ स्वामिन्सर्वजगन्नाथयावत्पूजावसानकं ॥
 तावत्स्वंप्रीतिभावेनलिंगेस्मिन्सन्निधोभव ॥ इतिसंप्रार्थ्य ॥ ॐ नमःशिवायेतिमूलमंत्रेणपङ्गन्यासंकुर्यात् ॥ ध्यानं ॥ द
 क्षोत्संगनिषण्णकुंजरमुखंप्रग्णाकरेणस्पृशन्वामांकेस्थितवल्लभांकललितंस्कंदंकरेणस्पृशन् ॥ इष्टाभीतिमनोहरंकरयुगंविभ्र
 त्ससन्नाननोभूयान्नःशरदिंदुसुंदरतनुःश्रेयस्करःशंकरः ॥ आत्मानंरुद्ररूपंध्यात्वा ॥ निर्दिष्टनामभिःपूजयेत् ॥ शूलपाणयेन
 मःआवाहनं० पिनाकधृपे० आसनं० भवोद्भवाय० अर्घ्यं० वामदेवाय० आचमनीयं० ज्येष्ठाय० मधुपर्कस्ना० ईश्वराय० प
 यःस्ना० शिवाय० दधिस्ना० गिरीशा० घृतस्ना० उमाधवाय० मधुस्ना० शिवाय० शंकरास्ना० महेश्वराय० अभिषेकं०
 ज्येष्ठाय० वस्त्रं० रुद्राय० उपवीतं० कालाय० चंदनं० कलविकरणाय० अक्षतान्० बलविकरणाय० पुष्पं० विल्वंच० बलाय०
 धूपं० बलप्रमथनाय० दीपं० सर्वभूतदमनाय० नैवेद्यं० मनोन्मनाय० आचमनीयं० मध्येपानी० उत्तरापोशनं० शंभवे०
 तांबूलदक्षि० शंकराय० फलं० प्रदक्षिणां० उत्तरनीराजनं० भवानीशंकराय० मंत्रपुष्पांजलिं० शंभवे० नमस्कारान्०
 यस्यस्मृत्येति० ॥ अनेनकृतपार्थिवलिंगपूजनेनश्रीभवानीशंकरःप्रीयताम् ॥ द्विराचामेत् ॥ इतिशिवपार्थिवपूजासमाप्ता ॥

॥ २३९ ॥ अथप्रबोधोत्सवतुलसीविवाहौ ॥

श्रीः ॥ देशकालौसंकीर्त्यश्रीदामोदश्रीत्यर्थप्रबोधोत्सवंसंक्षेपतस्तुलसीविवाहविधिंचतंत्रेणकरिष्ये ॥ तदंगतयापुरुषसूक्तेन विधिनाषोडशोपचारैस्तंत्रेणश्रीमहाविष्णुपूजांतुलसीपूजांचकरिष्ये ॥ न्यासादिविधाय श्रीविष्णुंतुलसींचध्यात्वासहस्रशीर्षेतिश्रीमहाविष्णुंतुलसींचावाह्य पुरुषएवेत्यादिभिःश्रीमहाविष्णवेदामोदरायश्रीदेव्यैतुलस्यैचनमआसनमित्यादिस्नानांतेमंगलवाद्यैःसुगंधितैलहरिद्राभ्यांनागवल्लीदलगृहीताभ्यांकनिक्रददित्युष्णोदकेनच मंगलस्नानंविष्णवेतुलस्यैचसुवासिनीभिःकारयित्वास्वयंचवादत्वापंचामृतस्नानंसमर्प्यशुद्धोदकेनाभिषिच्य वस्त्रयज्ञोपवीतचंदनंदत्वातुलस्यैहरिद्राकुंकुमकंठसूत्रमंगलालंकारान्दत्त्वामंत्रपुष्पांतपूजांसमाप्यघंटादिवाद्यघोषेणदेवंप्रबोधयेत् ॥ तत्रमंत्राः ॥ इदंविष्णु० ॥ योजागारेतितुआचा रप्राप्तः ॥ ब्रह्मैद्रुद्राग्निःकुबेरसूर्यसोमादिभिर्विदितवंदनीय ॥ बुध्यस्वदेवेशजगन्निवासमंत्रप्रभावेणसुखेनदेव ॥ इयंचद्वादशीदेवप्रबोधार्थतुनिर्मिता ॥ त्वयैवसर्वलोकानांहितार्थशेषशायिना ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठगोविंदत्यजनिद्रांजगसते ॥ त्वयिसुसेज गत्सुप्तमुत्थितेचोत्थितंजगत् ॥ एवमुत्थाप्य ॥ चरणंपवित्रं० ॥ गतामेघावियच्चैवनिर्मलंनिर्मलादिशः ॥ शारदानिचपुष्पा णिगृहाणममकेशवेत्यादिमंत्राभ्यांपुष्पांजलिंदद्यात् ॥ अथाचारातुलसीसंमुखांश्रीकृष्णप्रतिमांकृत्वामर्घ्यैतःपटंधृत्वामंगलाष्टकपद्यानिपठित्वाअंतःपटंचिसृज्याक्षताप्रक्षेपंकृत्वादामोदरहस्तेतुलसीदानंकुर्यात् ॥ देवींकिनकसंपन्नांकनकाभरणैर्युताम् ॥ दास्यामिविष्णवेतुभ्यंब्रह्मलोकजिगीषया ॥ मयासंवर्धितांचथाशक्त्यलंकृतामिमांतुलसींदेवींदामोदरायश्रीधरायवरायतुभ्य

महंसप्रददे ॥ देवपुरतःसाक्षतजलंक्षिपेत् ॥ श्रीमहाविष्णुःप्रीयतामित्युक्त्वाइमांदेवींप्रतिगृह्णानुभवान्नइतिवदेत् ॥ ततो देवहस्तस्पर्शेतुलस्याःकृत्वा ॥ कइदंकस्माअदात्कामोदाताकामःप्रतिग्रहीताकामंसमुद्रमाविशकामेनत्वाप्र तिगृह्णामिकामैतत्तेवृष्टिरसिद्यौस्त्वाददानुष्टुधिवीप्रतिगृह्णानु ॥ इतिमंत्रमन्येनवाचयेत् ॥ यजमानः ॥ त्वंदेविमेग्रतोभूया स्तुलसीदेविपार्श्वतः ॥ देवित्वंपृष्ठतोभूयास्त्वदानान्मोक्षमामुयाम् ॥ दानस्यप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिमांदक्षिणांसंप्रददे ॥ देवपुर तोदक्षिणामर्पयेत् ॥ ततःस्वस्तिनोमिमीतांशनइंद्राग्नीइत्यादिस्वस्वशाखोक्तानिशांतिसूक्तानिविष्णुसूक्तानिचपठेयुः ॥ तुल सीयुतायविष्णवेमहानीराजनंकृत्वामंत्रपुष्पंदत्वासपत्नीकःसगोत्रजःसामात्योयजमानश्चतस्रःप्रदक्षिणाःकुर्वीत ॥ ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणांदत्वायथाशक्तिब्राह्मणभोजनंसंकल्प्यकर्मेभ्यरार्पणंकुर्यात् ॥ इतिसंक्षेपतःप्रबोधोत्सवतुलसीविवाहौ ॥ ४३ ॥

॥ २४० ॥ अथतुलसीविवाहः ॥

श्रीः ॥ चातुर्मास्यव्रतपक्षेआषाढ्यांतुलसीरोपणं तत्प्रभृतिकालत्रयेपूजनं ॥ तुलसिश्रीसखिशुभेपापहारिणिपुण्यदे ॥ नम स्तेनारदनुतेनारायणिनमोस्तुते ॥ इतिसंप्रार्थ ॥ श्रीतुलस्यैनमःइतिमंत्रेणपयोधैःसेचनं ॥ एवंप्रत्यहंप्रबोधद्वादशीपर्यंतं कार्यं ॥ द्वादश्यांविवाहः ॥ गुरुशुक्रास्तादिदोषोनास्तीतिनिर्णयसिंधौ ॥ मंडपवेदिकांहरिद्रादिविवाहसामग्रींसंपाद्यकृतनि त्यक्रियोयजमानःप्रबोधद्वादश्यामुक्तापराक्लृमांगलिकस्नानंविधायपीठेउपविष्टःइष्टदेवतांगुरुंश्चनमस्कृत्य देशकालौसंकी र्त्यममदशपूर्वान्दशपरानात्मनासहैकविंशतिपुरुषानुद्धर्तुंब्रह्मलोकसायुज्यार्थंश्रीपरमात्मनासहतुलसीविवाहंकरिष्ये इतिसंक

लप्य ॥ तदंगभूतंगणपतिपूजनपूर्वकंपुण्याहवाचनंमातृकापूजनंनंदीश्राद्धंग्रहयज्ञंमंडपप्रतिष्ठांकुलदेवतास्थापनंचकरिष्ये ॥
 पुण्याहे अद्यपरमात्मनासहतुलस्याःविवाहाख्यस्यकर्मणःपुण्याहंभवंतोब्रुवन्तु ॥ अद्यपरमात्मनासहश्रीतुलस्याःविवाहाख्या
 यकर्मणोस्वस्ति०ब्रुवन्तु० एवंऋद्धिं श्रीरस्त्विति प्रयोगोज्ञेयः॥तानिकृत्वा आचार्यादिचतुर्णोवरणंतेषांमधुपर्कादिपूजनं॥आचा
 येत् ॥ तत्रमहीद्यौरित्यादिपूर्णपात्रनिधानांतेसुवर्णप्रतिमायामभ्युत्तारणादिपरमात्मनःतुलस्याश्चप्राणप्रतिष्ठांषोडशोपचारैः
 पूजांचक्रुर्यात् ॥ तुलस्याःअग्नेमंडपादीशान्यांसर्वतोभद्रंविरच्यतत्रदेवताआवाह्यपूज
 स्मृत्यजनार्दननाम्नेसकलप्रवरगोत्रजनकायपार्वतीबीजसंभूतायबृंदाभस्मनिसंस्थितायअनादिमध्यनिधनाय श्रीकृष्णपरमा
 त्मनेवराय ॥ दातुःअमुकप्रवरान्वितामुकगोत्रोत्पन्नांअमुकशर्मणःपालितप्रपौत्रींअमुकशर्मणःपालितपौत्रींअमुकशर्मणःपा
 लितपुत्रींपयोधैःसेचितकन्यावद्धर्धितभावनीयतुलसीनार्त्तांकन्यांभार्यात्वायवृणीमहेइतित्रिः ॥ ततोदातावृणीध्वंप्रदास्या
 मीतित्रिर्वदेत् ॥ गंधाक्षतफलपुष्पादिभिस्तुलसींसंपूज्य ॥ दातादेशकालौस्मृत्वातुलसीविवाहांगभूतंवाग्दानमहंकरिष्ये ॥
 गणपतिंवरुणंचसंपूज्य स्वस्थानेतुलसीपूजयितारमुपवेश्यगंधतांबूलादिनासंपूज्यसचदातारंपूजयेत् ॥ हरिद्राखंडपंचदहपू
 गीफलानिहस्तेगृहीत्वाजनार्दननाम्नेसकलप्रवरगोत्रजनकायपार्वतीबीजसंभूताय बृंदाभस्मनिसंस्थितायानादिमध्यनिधनाय
 श्रीकृष्णपरमात्मनेवराय ॥ अमुकगोत्रोत्पन्नांअमुकशर्मणःपालितप्रपौत्रीं अमु०पालितपौत्रींअमु०पालितपुत्रींपयोधैःसेचि

तकन्यावद्धर्धितभावनीयतुलसीनाम्नीकन्यांज्योतिर्विदादिष्टेमुहूर्तेदास्ये ॥ वाचासंप्रददे ॥ आचार्यवस्त्रप्रांतेतानिदत्वागंधा
दिनासंपूज्य ॥ अव्यंगेप० ते ॥ इमांदेवींप्रदा० धौ ॥ आचार्यःपंचदहपूगीफलानिहरिद्राखंडानिचगृहीत्वासकलकुलगोत्ररूपि
णिकृष्णपरमात्मनिवरविषयेभवंतोनिश्चिताभवंतु इतिदातुर्वस्त्रप्रांतेवङ्गांगंधाद्यैःसंपूज्य तदस्तु० गृहावै० वाचादनामयादे
वीकृष्णार्थस्वीकृतात्वया॥पद्मावलोकनविधौनिश्चितस्त्वंसुखीभव ॥ आचार्यः॥ वाचादत्तात्वयादेवीकृष्णार्थस्वीकृतामया ॥
कृष्णावलोकनविधौ० ॥ शिवा० सौम० अक्षतं० दीर्घं० एतद्द्वःसत्यमस्तु ॥ ॐ समानीव० १ प्रसुगमंता० १ ॥ इंद्राणींसंपू
ज्य ॥ देवेद्राणि० सुवासिनीभिरुभयोनींराजनंकार्य ॥ ब्राह्मणान्संपूज्य हिंकृण्वती० १ वनस्यतेशतवल्शो० २ समिद्ध
स्य ३ इंदुर्देवा० ४ घृतादु० ५ अस्यपिव० ६ ॥ ततोस्तमितेआचार्यःस्वशाखोक्तंमधुपर्ककुर्यात् ॥ ततस्तुलसीसंमुखांश्री
कृष्णप्रतिसांकृत्वामध्येअंतःपटंधृत्वामंगलाष्टकपद्यानिपठेयुः ॥ ततःअभ्रातृघ्नी० अघोर० भूर्भुवःस्वः ऋक्चवेत्यादिवधू
पूर्वकंअक्षतारोपणं ॥ अनृक्षरा०॥ततोदातातुलसीदानसंकल्पंकुर्यात् ॥ ममसमस्तेत्यादितुलसीदानकल्पोक्तफलावाप्तयेअने
नजनार्दनेनास्यांतुलस्यांवीजोत्पादनेनज्ञानावासिद्वाराश्रीप्रीतयेतुलसीदानमहंकरिष्ये ॥ ॥ सपत्नीकरत्थाय ॥ देवींकनक
संपन्नां० षया ॥ विश्वंभरः० ॥ इमांदेवींप्र० तारणायच ॥ ततःकांस्यपात्रेजनार्दनहस्तेनतुलसीपल्लवंधृत्वाअक्षतोदकेनक्षि
पन्वदेत् ॥ तुलसीतारयतु पुण्यं० शिवा० सौ० अक्ष० दीर्घं० यत्त्रे० यस्या० पुण्या० स्वस्ति० ऋद्धिं० श्रीर० अमुकगोत्रः
अमुकशर्माहंममसमस्तेत्यादितुलसीदानकल्पोक्तफलावाप्तये अनेनजनार्दनेनास्यांतुलस्यांवीजोत्पादनेनज्ञानावासिद्वाराश्री

प्रीतयेजनार्दननाम्ने सकलगोत्रप्रवरायपार्वतीबीजसंभूताय वृंदाभस्मनिसंस्थिताय अनादिमध्यनिधनाय तुलस्यर्थिने श्रीकृष्णप
रमात्मनेवराय ॥ अमुकप्रवरान्वितामुकगोत्रोत्पन्नां अमुकशर्मणः पालितप्रपौत्रीं अमु० णः पालितपौत्रीं अमु० णः पालितपुत्रीं
ददेनमम ॥ तुलसीप्रतिगृह्णातुभवान् ॥ इमांचतुलसीकन्यां श्रीकृष्णार्थिनीं श्रीरूपिणीवनस्पतिदेवत्यां ज्ञानोत्पादनार्थं तुभ्यम
तुभ्यंकृष्णमया दत्तामममोक्षप्रदायिनी ॥ धर्मेच ॥ मोक्षेच ॥ चत्वारिमासपर्यंतं तुलस्याः पालनं कृतं ॥
मांदक्षिणां तुभ्यमहंसंप्रददे ॥ गोदासीमहिष्यादिभोजनजलपात्रादिदानं ॥ ततो देवहस्तस्यर्शं तुलस्याः कृत्वा कइदं कस्मा अदा
दिति मंत्रमन्येन वाचयेत् ॥ यत्कक्षी० ॥ उभयोरभिपेकः ॥ अनाधृ० १ समुद्र० ४ आपोहि० ३ आनः प्रजां० ४ ॥ सू
त्रवेष्टनं युवासुवा० उक्तप्रकारेण कृत्वा ॥ तुलस्याः पल्लवे कृष्णहस्ते च बधीयात् यदा बध्नां० इति मंत्रेण ॥ उभयोः तिलकं कृत्वा ॥
भगोमेकामः समृध्यतां यज्ञो० श्रियो० धर्मो० प्रजा० यशोमे० भगोमे इत्यादि मंत्रैः अक्षतारोपणं सकृत्कुर्यात् ॥ ततो मंगल
सूत्रादि ॥ मांगल्य० कृष्णजीवनहेतुना ॥ कंठे० तं ॥ शच्यादिपूजनां तैर्ब्राह्मणेभ्यो वायनदानानि दत्वा ॥ भद्रं क० द्रविणो० सवि
तायां तुलस्यां श्रीकृष्णपरमात्मना भार्यात्वसिद्ध्ये विवाहो मंकरिष्ये इति संकल्प्य स्थंडिलकरणादिअग्निध्यानं तेऽन्वाध्या

त ॥ तुलसीविवाहहोमेदेवतापरिग्रहार्थमन्वा० अस्मिन्नित्यादिआधारावाज्येनेत्यंतमुक्त्वा ॥ अत्रप्रधानं ॥ केशवादिचतुर्विंश
 तिनामभिरैकैकयाज्याहुत्या अग्निपृथिवीमहांतं वायुमंतरिक्षमहांतं आदित्यं दिवंमहांतं चंद्रमसनक्षत्राणिदिशोमहांतंप्र
 धानदेवताःप्रत्येकंप्रत्येकयाहुत्यालाजद्रव्येण पुनरत्रप्रधानंसर्वतोभद्रदेवताःएकैकयाज्याहुत्याशेषेणेत्यादियजमानान्वारब्ध
 आधारान्तंकुर्यात् ॥ प्रधानहोमःकेशवादिचतुर्विंशतिनामभिर्जुहुयात् ॥ तुलस्याःपल्लवस्पर्शनंगृभ्णामितेइतिमंत्रेणकुर्यात् ॥
 ततोलाजहोमंकुर्यात् ॥ ॐ भूर्भुवःचपृथिव्यैचमहुतेचस्वाहा ॥ अग्नयेपृथिव्यैमहतइदं ॥ ॐ भुवोवायवेचांतरिक्षायचम
 हु० वायवेतरिक्षायम० ॥ ॐ सुर्वरादित्यार्यचदिवेचमहु० आदित्यायदिवेमहत० ॥ ॐ भूर्भुवःसुर्वश्चंद्रमसेचनक्षत्रेभ्यश्च
 दिग्भ्यश्चम० चंद्रमसेनक्षत्रेभ्योदिग्भ्योम० ॥ सर्वतोभद्रदेवताश्चहुत्वास्विष्टकृदादिहोमशेषंसमापयेत् ॥ आयुष्यमितिमं
 त्रेणसौभाग्यालंकारादिदद्यात् ॥ ततऐरिणीदानं ॥ पूर्वोच्चरितेत्यादितुलसीदानफलसंपूर्णतायैश्रीपरमात्मानंवरंतद्यत्कआचा
 र्यादीन्पूजयिष्ये ॥ वस्त्राद्यैःपूज्यविवाहोक्तप्रकारेणऐरिणीसंपाद्य ॥ तुलसीदानस्यसंपूर्णतासिद्ध्यर्थंआचार्यपत्न्यैऐरिणीदानं
 ऐरिणीपूजांचकरिष्ये ॥ ऐरिणीत्वमुमादेवीत्यादिश्लोकान्पठेत् ॥ ऐरिणीदानं ॥ याःफलिनी० अर्वाची० इतिमंत्रैःदानं ॥
 चत्वारिमासपर्यंतंतुलस्याःपालनंकृतं ॥ इदानींतुमयातुभ्यंदत्तास्त्रेहेनपाल्यतां ॥ ततोऽगृहप्रवेशः ॥ इहप्रियं० इतिमंत्रेण ॥
 सप्तुमिवेतिमंत्रेणलक्ष्मीसंपूज्य गच्छगच्छेत्यग्निविसृज्य इमांसोपस्करपीठप्रतिमायुतांआचार्यायसंप्रददेइतिदद्यात् ॥ आ
 चार्यायशय्यांपदंगांचदद्यात् ॥ कर्मणःसांगतासिद्ध्यर्थंब्राह्मणान्क्षीरशर्कराज्यैःयथाशक्तिभोजयेत् ॥ दीनानाथेभ्योन्नंदत्वा

भूयसीदक्षिणांदत्वाकर्मेश्वरार्पणंकुर्यात् ॥ इति स्मृतिकौस्तुभे विष्णुपंचरात्रागमोक्तमूलवाक्यानुसारीतुलसीविवाहप्रयोगः ॥
 श्रीः ॥ तदुक्तं शौनकीये ॥ स्थापनादष्टमे वर्षे द्वादशैकादशे पिवा उत्तरायणे गुरुशुक्रोदये माघफाल्गुनचैत्रवैशाखे षष्ठशुक्लपक्षे शुभे
 ऋक्षे सुवारतिथि लम्बे कस्कंधपर्णां कुरान्विते विद्युतादावाग्निनावानभिहतेऽश्वत्थस्य चतुरस्रां वेदिकां विधाया श्वत्थमूले वर्तुलं चतुरस्रं वाऽलवा
 ने कनकमौजीहोमद्रव्याणिसर्वसंभारान्यथासंभवं संभृत्य अश्वत्थस्य चतुरस्रां वेदिकां विधाया श्वत्थमूले वर्तुलं चतुरस्रं वाऽलवा
 लंकृत्वा तत्र तुलसीं लक्षशाखां शमीं च रोपयित्वा श्वत्थवेदिकायां चतुरस्रं समं ताच्छतुर्द्वारं चतुर्हस्तं अधिकं वामं डपं अश्वत्थात् पूर्वपश्चि
 मे उत्तरे वोक्तलक्षणमंडपं अन्यं वा कृत्वा स्वगृहे ज्योतिर्विदादिष्टे मुहूर्ते प्रधानसंकल्पं कुर्यात् ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यं ममात्मनः पु
 ण्यातिशयायुष्ययशः पुत्रपौत्रपशुवित्तधनधान्य विद्याकुलाभिवृद्धि कुलकोटिसहितस्वर्लोकाप्राप्त्या द्यौर्हि कामुष्मिकफलप्राप्त्य
 र्थं दशपूर्वा न्दशपरानात्मना सहैकविंशति पुरुषानुद्धर्तुं विष्णुपदप्राप्त्यर्थं तथा चाश्वत्थस्य ब्रह्मत्वशां त्यभीष्टफलदातृत्वाद्यनेकगुण
 संपत्त्यर्थं यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैर्देशकालानुसारतः एकाहाद्यधिवासप्रकारेणाश्वत्थोद्यापनाख्यं कर्म करिष्ये ॥ पु
 त्रकामश्चेत् ममेह जन्मनि जन्मान्तरे वानानिमित्तोपाजितं संप्रति बंधकादृष्टनिरसनपूर्वकं सत्पुत्रावाप्तये इति ॥ पु
 हितं गणेशपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नांदीश्राद्धमाचार्यादिवरणं च करिष्ये इति संकल्प्य ॥ स्वगृह्यविधिना तानि कृत्वा
 आचार्यादीन् वृणुयात् ॥ अस्मिन्कर्मणि आचार्यत्वा महं वृणे स च वृतोऽस्मीति वेदेत् ॥ एवं ब्रह्माणं सदस्यं उपद्रष्टारं वृत्वा सर्वान्म

धुपकीदिनासंपूज्यप्रार्थयेत् ॥ (ऋत्विग्वरणमंडपप्रतिष्ठावास्तुपूजनप्रकारश्चाग्नेदेवप्रतिष्ठायांद्रष्टव्यः) ॥ ततःस्वगृहेएवग्रहमखादिविधाय ॥ ततःसर्त्तिक्रसपत्नीकोयजमानःपूर्णकलशहस्तःभद्रंकर्णेभिरितिमंत्रेणमंगलतूर्यघोषेणसहाश्वत्थप्रादक्षिण्येनमंडपपश्चिमद्वारमागत्यतत्रधरांसंपूज्यमंडपंप्रविश्यकलशमश्वत्थसमीपेनिधायनिर्ऋतिवरुणयोर्मध्येउपविशेत् ॥ तत आचार्यःअश्वत्थोद्यापनकर्मणिबृतोहंआचार्यकर्मकरिष्येइतिसंकल्प्य ॥ शरीरशुद्ध्यर्थंभूतशुद्ध्यादिरौषजपन्थासांश्चकृत्वा यदन्नसंस्थितमितिसर्षपलाजान्विकीर्य साधितपंचगव्येनकुशैःसर्वत्रप्रोक्षणंशुचीवोहव्येति आपोहिष्ठेति उत्तरनारायणेनच कार्यं ॥ स्वस्त्ययनंताक्षर्यमितिपठेत् देवाआयांतुयातुधानाअपयांतुविष्णोदेवयजनंरक्षस्व भूमौप्रादेशंकुर्यात् ॥ यथोक्तमंडपाकरणेसाधारणमंडपेप्राङ्द्वारेअमंत्रकंचूतपल्लवतोरणंदक्षिणेषुपल्लवतोरणंपश्चिमेवटपल्लवतोरणंउत्तरेअशोकपल्लवतोरणंबध्वातथैवप्रागादिद्वारेषुश्वेतकृष्णहरितरक्तपताकाःअश्वत्थशिरसिमहांतंचित्रध्वजंचबध्वा तथैवप्रागादिद्वारचतुष्टयेवेदादिक्रमेणद्वौद्रावेकमेकंवाब्राह्मणंजपार्थवृणुयात् ॥ ततआचार्योश्वत्थस्यहरिद्रातैलोपणादिलौकिकंविधायअश्वत्थवेदिकायां ईशानप्रदेशेशर्वतोभद्रंविरच्यब्रह्मादिदेवतास्थापनंकरिष्यइतिसंकल्प्यउक्तप्रकारेणसंस्थाप्यसंपूज्यतदुपरिअक्षतपुंजेमध्यप्रदेशेकृताऽऽद्युत्तारणप्राणप्रतिष्ठापनसौवर्णप्रतिमायां (वनस्पतेशतवल्ल इतिमंत्रेणाश्वत्थनारायणमावाहयेत् ।) ततइदंविष्णुरितिवासुदेवं ॥ तद्वामतः अधस्यायोषणामहीप्रतीचीवशमभ्यं ॥ अधिरुक्साविनीयते ॥ इतिरुक्मिणी ॥ तद्वक्षिणतः सत्यासत्येभिर्महुतीमहर्हिर्दुवीदेवेभिर्भयजतायजत्रैः ॥ रुजद्वृळ्हानिदददुस्त्रियाणांप्रतिगार्वपसंवावशंत ॥ इतिसत्यभामां ॥

प्रक्षोदसाधायसासप्तपुषासंस्वतीधरुणमायसीपूः ॥ प्रबार्धानारथैवयातिविधाअपोमहिनासिंधुरन्याः ॥ इतिसरस्व
 ती ॥ आतूनइंद्रक्षुमंतैचित्रंग्राभंसंगृभाय ॥ महाहस्तीदक्षिणेन ॥ इतिगणपतिचावाह्यपौरुषेणश्रीवासुदेवादिभ्योनमइति
 संपूज्यततोश्वत्थपरितःपीठसमंततोवाअष्टौकलशान्स्थापनप्रकारेणसंस्थाप्य तत्रपूर्वकलशेशुद्धोदकमापोहिष्ठेतिनवर्चेनसूक्ते
 नद्वितीयेगंधोदकं आनोभद्राइतिदर्शर्चेनतृतीयेक्षीरोदकंस्वस्तिनोमिमीतेतिपंचर्चेनचतुर्थेपंचगव्यंशन्नइंद्रानीइतिपंचदर्शर्चे
 अष्टमेकुशोदकंप्रसुवआपइतिनवर्चेन उक्तप्रकारेणपूर्णपात्रांतंकृत्वातत्रवरुणमावाह्यसंपूज्य तत्रपूर्वादिक्रमेणइंद्रादीनूततन्मं
 त्रैरावाह्यसंपूजयेत् ॥ ततोश्वत्थंपुरुषसूक्तेनार्थविधायतेषुहोमार्थंचतुरआचार्यान्वृत्वातेस्वगृह्यविधिनानीनस्थापयेयुः ॥ ततः
 पूर्वादिदिक्षुचत्वारिस्थंडिलानिनिधायतेषुहोमार्थंचतुरआचार्यान्वृत्वातेस्वगृह्यविधिनानीनस्थापयेयुः ॥ ततः
 नपूर्वयोर्मध्येग्रहहोमादिकर्तुंपंचमंस्थंडिलमिच्छंति ॥ तदेवमुख्यंकुंडंतत्रविधिवदग्निप्रतिष्ठाप्यतस्मादग्निनाग्निःसमिध्यतइ
 त्यग्निमुद्धृत्यस्वेत्वेकुंडेस्थापयेयुः ॥ बहवःपूर्वकुंडेएवग्रहप्रधानहोमादिकंकुर्वन्ति ॥ पूर्वमकृतेग्रहयज्ञेइदानींईशान्यावेदिका
 यांमहानावाह्यसंपूज्य ॥ अन्वादध्यात् ॥ तत्रमुख्यंकुंडेपूर्वमकृतेग्रहयज्ञेनप्रधानंआदित्यादिनवग्रहान् २८।८ अर्कादिसमि
 च्चर्वाज्यद्रव्यैःअधिदेवताप्रत्यधिदेवताश्च ८।४ क्रतुसंरक्षकदेवताःऋतुसाङ्गुण्यदेवताश्च २।१ ॥ (अश्वत्थनारायणंअश्वत्थे
 वइतिमंत्रेणपलाशसमित्तिराज्यैःप्रतिद्रव्यं १०८ वा २८ ॥ तथाआनोभद्रेतिमंत्रेणविधान्देवान्चरुद्रव्येण १०८ वा २८ ॥

तथावासुदेवादिपीठदेवताःपलाशसमित्तिलाज्यैः प्रति १०८ वा २८ (अश्वत्थसमिच्चर्वाज्यैरित्यन्यत्र) ब्रह्मादिदेवताः
 इंद्रादिलोकपालांश्च २८ वा ८ यक्ष्ये ॥ ॥ पंचकुंडपक्षेप्रतिकुंडमादावश्वत्थनारायणंपलाशसमित्तिलाज्यैः १०८ इत्युक्त्वा
 पूर्वकुंडेब्रह्मादिमंडलेदेवताहोमः ॥ दक्षिणकुंडेगणपतितिलाज्याभ्यांस्थापनमंत्रेणप्रतिद्रव्यं १०८ वा २८ ॥ पश्चिमेइंद्राद्य
 द्दल्लोकपालान्तत्तत्स्थापनमंत्रैः २८।८वास्तुं ॐ वासोऽपतेध्रुवास्थूणांसत्रंसोम्यानां ॥ द्रुप्सोभेत्तापुरांशश्वतीनामिंद्रोमुनी
 नांसखा ॥ इतिमंत्रेणशमीसमिच्चर्वाज्यद्रव्यैःप्रतिद्रव्यं २८।८ ॥ उत्तरेश्रीवासुदेवंरुक्मिणीसत्यांसरस्वतींचतत्तत्स्थापनमंत्रेण
 प्रतिदेवतंप्रतिद्रव्यं १०८वा२८ पायसाज्याभ्यांशेषेण० ॥ एवंतत्तन्मंत्रैर्होमंसंपाद्यस्विष्टकृदादिबल्यंतंकृत्वाधिवसेत् ॥ अ
 त्रबलिदानात्पूर्वयूपाधिवासोन्यत्रोक्तः॥पुराणादिनारात्रिनिनयेत् ॥ केचनकाषायवस्त्रदानांतंकृत्वापरेद्युरेवहोमादिकमिच्छं
 ति ॥ प्रातर्घटिकांप्रतिष्ठाप्यपीठदेवताःसंपूज्यअष्टकलशदेवताविसृज्यब्राह्मणैस्तान्ग्राहयित्वातैःसहआचार्यःपवमानःसुवर्ज
 नइत्यनुवाकेनाष्टकलशोदकैरश्वत्थंत्रिःपरिषिच्यकिंचिदवशिष्टोदकान्कलशान्पूर्वस्थानेषुस्थापयेत् ॥ ॥ ४१ ॥

॥ २४२ ॥ अश्वत्थोपनयनम् ॥

ततोयजमानआचार्योवाऽश्वत्थपश्चिमेस्थंडिलेसंस्कारहोमंकुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ अश्वत्थस्यपुंसवनाद्युपनयनांतान्संस्कारान्
 व्याहृतिद्वाराकरिष्येइतिसंकल्प्य ॥ अग्निपवमानंप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् ॥ अन्नप्रधानं ॥ अग्निवायुंसूर्यंप्रजापतिंआज्यद्रव्ये
 णप्रतिसंस्कारं ८ वा ४ संख्याकाहुतिभिर्यक्ष्ये ॥ प्रतिसंस्कारहोमांते ॥ ॐ वनस्पतेशुतवल्शोचिरोहसहस्रवल्शुविवृयंरुहेम ॥

यंतवा॒मयं॒स्वर्धिति॒स्तेज॒मानः॒प्रणि॒नाय॒महु॒तेसौ॒भगा॒य ॥ इति॒मंत्रेण॒अश्व॒त्थंस्पृ॒शेत् ॥ ए॒वमु॒पन॒यन॒पर्यंतं॒कृत्वा॒यज॒माना॒श्वत्थां
 तरा॒लेप॒टं धृ॒त्वा सु॒मुहूर्ते॒मंग॒लाष्ट॒कपा॒ठपुरः॒सरं॒तदे॒वल॒ग्नमि॒तिप॒ठिते॒अंतः॒पटं॒निःसार्य॑ दे॒वानां॒नुव॒यमि॒तिध्रु॒वसू॒क्तं प॒ठित्वा ॥ दे॒वानां॑
 नु॒वय॒मिनि॒षूयः॒पश्या॒दुत्तरे॒युगे ॥ ब्रह्म॑ण॒स्यति॒रेता॒सं क॒र्मा र॒इवा॒धम॒त् ॥ दे॒वानां॒नुव॒यं जा॒नान्प्र॒वोचा॒मवि॒प॒न्यया ॥ उ॒क्थे
 तःस॒दजा॒यत ॥ अ॒दि॒तिःप॒रि ॥ अ॒दि॒तिर्ह्य॒जनि॒ष्टद॒क्षया॒दुहि॒ता त॒व ॥ भूर्ज॒ज्ञउ॒त्तान॒पदो॒भुव॒आशा॑ अजा॒यत ॥ अ॒दि॒तेर्दे॒क्षो अजा॒यत॒दक्षा॒इ
 अति॑ष्ठत ॥ अ॒त्रावो॒नृत्य॑ता॒मिव॒तीव्रो॒रेणु॒रपा॒यत ॥ यद्दे॒वाय॒तयो॒यथा॒भुव॒नान्य॑पि॒न्वत ॥ अ॒त्रास॒मद्र॒आग॒ळ॒हमा॒सूर्य॑म॒जभ॒त
 न ॥ अ॒ष्टौप॒त्रासो॒अदि॒तेर्ये॒जाता॒स्तन्व॑र॒स्रि ॥ दे॒वो॒उप॒प्रेत॒सस॒भिःप॒रा॒माता॑ड॒मास्य॒त् ॥ स॒साभिः॒पुत्रै॒रदि॒तिरु॒पप्रे॒तप॒व्ययु॒गं ॥
 प्र॒जायै॒मृत्य॒वैत्व॒पुन॒र्मात॑ड॒माभ॒रम् ॥ २ ॥ इति॒ध्रु॒वसू॒क्तम् ॥ ये॒यज्ञे॒नेति॒वर्ग॑पंच॒कंशा॒खान्तर॑स्य॒मंत्रांश्च॑ प॒ठित्वा॒युव॑व॒स्त्राणी॒ति
 जि॒नंच॒तत्तन्म॑न्त्रैर्द॒त्वा स॒प्रण॒वांस॒व्याह॑ति॒कांसि॒शिर॒स्कां गा॒यत्रीं अश्व॒त्थंस्पृ॒ष्ट्वा उप॒देश॒वत्ये॒त् ॥ इत्यु॒पन॒यन॒म् ॥ ततो॑म॒हाना॒श्व्या
 दि॒समा॒वर्त॑नांतं कृत्वा क॒नक॑कुंड॒लेलं॒कारांश्च॑ द॒त्वा आ॒युष्यं॒वर्च॑स्यमि॒तिसू॒क्तं प॒ठित्वा॒मौजी॑वि॒सर्ज॑नांतं कृत्वा म॒माग्ने॒इति॒सू॒क्तं प॒ठेत् ॥
 ततः॒स्विष्ट॑कृ॒दादि॒होम॑शेषं समापयेत् ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

॥ २४३ ॥ अथाश्वत्थनिवाहः ॥

श्रीः ॥ तत्रादावश्वत्थालवालेशतकुंभमितं शुद्धजलं क्षिप्वा दुग्धमधुघृतकुंभैश्च सिक्त्वा वस्त्रयुग्मेन अश्वत्थतुलस्यादिशाखावेष्टयित्वा अश्वत्थायोष्णीषं वस्त्रयुग्मं तुलस्यैकं चुर्का वस्त्रं कंठभूषणं मंगलसूत्रं मौक्तिकं कर्णपादभूषणानि च दत्वा अश्वत्थस्य विवाहविधिं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ पूर्वसंस्कारहोमस्थंडिलोत्तरप्रदेशे स्थंडिलं निर्माय योजकनामानमग्निं प्रतिष्ठाप्या न्वादध्यात् ॥ अन्नप्रधानं ॥ ब्रह्माणं द्वा सुपर्णेति मंत्रेण १०८ तिलाज्यद्रव्येण तथामहाव्याहृतिभिः तिलाज्यद्रव्येण १०८ यक्ष्ये ॥ एवं होमं कृत्वा तुलस्यश्वत्थयोरंतराले पटं धृत्वा मंगलाष्टकानि पठित्वा तः पटं निःसार्य तयोश्चतुरः शाखामयान् हस्तान् गृभ्णामीति मंत्रेण योजयेत् ॥ ततः स्विष्टकृदादिहोमशेषं समाप्याश्वत्थं तुलसीचपुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः संपूज्य प्रार्थयेत् ॥ अश्वत्थत्वं जगन्नाथः पुरा देवैर्विनिर्मितः ॥ पापात्संन्नाहि नो देव पुण्यं देहि महाफलं ॥ क्षीरोदधिसमुद्भूते तुलसि हरि वल्लभे ॥ अश्वत्थो द्याप न फलं देहि मह्यं सदाशिवे ॥ तत आचार्यः ग्रहयज्ञोक्तविधिना वलीनं दत्वा क्षेत्रपालं बलिं दत्वा सर्वे आचार्याः स्वस्वकुंडे पूर्णाहुतिं हुत्वा कर्मशेषं समापयेयुः ॥ ततो यजमानः पीठपूजां विधाय कृतस्याश्वत्थो द्याप नस्य सांगता सिद्धये आचार्यादिभ्यः पूजापूर्वकं दक्षिणां दत्वा आचार्यादयः पूर्वस्थापिताष्टकलशोदकेन दूर्वापल्लवैः सपत्नीकं यजमानमभिषिंचेयुः ॥ तत्र मंत्राः ॥ आनो भद्रेति दशर्चसूक्तं अस्य वामस्येति द्विपंचाशद्वचंसूक्तं परोमात्रयेति दशर्चसूक्तं मुंचामित्वेति पंचर्चसूक्तं समुद्रज्येष्ठा इत्यादयः सुरास्त्वामभिषिंचंत्वित्याद्याः ॥ एवमभिषिक्तो यजमानः तिलकादिधृत्वा अग्निपीठे देवताश्च संपूज्य उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्य तद् इत्युत्थाप्य सोपस्करं पी

1127311

अ. उद्याप.
॥२४५॥

12311

श्रीः॥ अत्रसंक्षिप्त.क्रमः ॥ संकल्पादिमण्डपप्रतिष्ठातेतत्रसार्त्विग्यजमानःप्रविश्यआचार्योमुख्यकुंडपाश्चिमेसनवग्रहंवास्तुहोमंसंकल्प्यप्रादेशकरणातेकुंडसं
॥ २४५ ॥ अथतथोद्याध्वजंबौधायनीयं (पंचकुंडी) ॥

स्फुत्याग्निप्रतिष्ठाप्यग्रहवेद्यामात्स्यानुसारेणग्रहान्संपूज्यतदुत्तरे वास्तुवेद्यामष्टाष्टतिर्यगूर्ध्वरेखीकरणेनैकोनपचाशत्पदवास्तुमडलसपाद्यतत्कोणेपार्श्वेना
 धूपदानिकृत्वाग्नेप्रतिष्ठोक्तवच्छिद्यदिदेवता संपूज्यग्रहवास्तुहोमातेष्टयग्नौकूपमाडहोमंकृत्वा तत पृथग्व्यवाहसन्नकेद्वावग्नेःषोडशसंस्कारसिद्धयेप्र
 त्येकचतुश्चतुर्व्यहृतिभिराज्यहुत्वातस्मात्कुडादग्निनाग्निरित्यग्निमुद्धृत्यव्याहृत्यास्वेस्वेकुडैक्षिपेयुः ॥ मुख्याचार्यःस्वर्णसूच्याश्चत्येक्ष्मीनारायणौलिखेत्
 पिप्पलोपरिचित्रध्वजपताकाचत्रद्वौविधिवत्सर्वौपधिकलशप्रतिष्ठाप्यतेनयाओषधीरितिस्त्रापयित्वापिष्टकेनभूपयित्वा वनस्पतेशतवल्शइतिगधादिभिःसं
 पूज्यगुगुलुधूपदत्वामहानैवेद्यमग्रतोनिधायसुवर्णशलाकयानेत्रोन्मीलनंकृत्वादधिमधुनाजेनाड्त्वास्वर्णसूच्याकर्णेवेधंकृत्वाहिरण्मयेकुडलेवधीयात् ॥
 वेद्यासर्वतोभेद्रेब्रह्मादिमडलेदेवताआवाह्यसंपूज्य तत्पूर्वतःपीठेवल्वादावक्षतपुंजेसुवर्णप्रतिमायावनस्पतेशतवल्शइतिलक्ष्मीनारायणमावाह्यपूजयेत्तदुत्त
 रेशातिकलशमहीद्यौरित्यादिविधिनाप्रतिष्ठाप्यतत्रगगादिनदीरावाह्यपूर्णपात्रंनिधायतत्रवरुणसंपूजयेत् ॥ सर्वेआचार्योःस्वकुंडादीशान्याकलशान्स्यापये
 युः ॥ सुवर्णशलाकासूचीचताम्रपात्र्याकृत्वावेद्यामधिवासयेत् ॥ ततोयूपवेदिकोपर्युत्तरतःश्वभ्रुकृत्वाऊर्ध्वऊणइतितस्मिन्प्रतिष्ठाप्यकुंकुमधूपदीपादिदत्वा
 वस्त्रयुग्मेनाच्छाद्यनैवेद्यसमर्प्यऊर्ध्वऊणइत्यधिवासयेत् ॥ प्रदोषसमयेरौद्रबलिदत्वामुख्यकुडपश्चिमतःआचार्योन्वाध्यात् ॥ चक्षुपीआज्येनेत्येतेत्र
 प्रधानलक्ष्मीनारायणं न्यग्रोधोदुबराश्चत्थपलाशापामार्गसमित्तिलपायसैःप्रतिद्रव्य शताहुतिभिः १०० वनस्पतेशतवल्शोविरोहसहस्रवल्शाविवृयःरुहे
 मतत्वामयःस्वाधितिस्रोतिजानःप्रणिनार्यमहतेसौभगायइतियजुषा परोमात्रयेतिसूक्तेनप्रत्युचंवरुणा पुरुषसूक्तेनप्रत्युचमाज्येन लोकपालमीशानंपूर्वो
 क्तन्यग्रोधादिभिः २८ अभित्वादेवसवितरितिमन्त्रेण ब्रह्मादिमंडलेदेवतास्तैरेवद्रव्यैःगक्ष्येशेषेणेत्याज्यभागांतुकर्यात् ॥ पूर्वकुडेलक्ष्मीनारायणन्यग्रो
 धादितैरेवद्रव्यैः १०० इंद्रमग्निचत्रातारमग्निदूतमितिमन्त्राभ्यातैरेवद्रव्यै २८ ॥ दक्षिणेक्ष्मीनारायणंपूर्ववत् १०० यमनिर्ऋतिचयमायसो

ममसुन्वंतमिति मन्त्राभ्यातैरेवद्रव्यै. २८ ॥ पश्चिमेलक्ष्मीनारायणपूर्ववत् १०० वरुणवायुंचइममेवरुणानोनियुद्धिरिति मन्त्राभ्यातैरेवद्रव्यैः २८ ॥
उत्तरेलक्ष्मीनारायणपूर्ववत् १०० कुबेरं अभित्य देवमिति तैरेवद्रव्यैः २८ एवहोम. कार्यः होमकाले द्वारजापकैरेतनदेवप्रतिष्ठापचकुण्ड्युक्तकमेणसू
इत्यधिवासनं ॥ प्रातर्घटीस्थापनं आचार्यो मंडपदेवता. संपूज्याश्च तथं पंचासु तैरभिषिच्य तैलहरिद्रारोपणाष्टपहारतलैकिकमेव कुर्यात् ॥ ततः पूर्वोक्ताश्च तथो
द्यापनविधिनास्थापिताष्टकलशैः पवमानः सुवर्जन इति त्रिरभिषिच्य वस्त्रदक्षिणातोपचारैः संपूज्य स्थंडिले श्वत्थस्य ब्रह्मत्वप्रसन्नतां शान्त्यभीष्टदातृत्वादिसि
द्धये नामकरणं निष्क्रमणा न्नप्राशनचौलोपनयनमहानाम्नीमहाव्रतगोदानसमावर्तनविवाहेऽपु प्रति संस्कारव्याहृत्याचतुराज्यं हुत्वा श्वत्थं करेण स्पृशेत् ॥ अधि
वासितसूच्याकर्णवेधं कृत्वा आयुष्यमिति सूक्तेन कुण्डले बध्नीयात् शलाक्यानेत्राजनं कार्यं ॥ ततोऽश्वत्थमूले तुलसीरोपयित्वा यजमानकरे मालतीं दत्त्वा मध्येतः
पठं धृत्वा मंगलाष्टकानि पठित्वा पटमुन्नमय मालतीमश्वत्थमूले रोपयित्वा सर्वे ये ज्ञेन बृहस्पते प्रथमे वदन् भद्रकर्णे इत्यादि पठेयुः ततः कौपीनं युवं वस्त्राणीति व
ह्मिन्त्रस्य चक्षुरित्यजिनं यज्ञोपवीतमित्युपवीतं आचमनं च इयंदुरुक्तादिति द्वाभ्यां मेखलाभावध्वस्त्विति न इति दंडततो भिक्षां दत्त्वा ततो विवाहाशिषः ऋक्वाइद
मग्रे गृहवैप्रतिष्ठेति पठित्वा ते लाजहोमं कृत्वा ऽकृत्वा वास्विष्टकृदादि होमशेषं समाप्य ॥ अश्वत्थोत्तरत ऊर्ध्व ऊपुण इति यूपरोपयित्वा तुलसीसहाश्वत्थस्य सु
वासिनीमित्तैलहरिद्रारोपणमंगलस्नानचकृत्वा ततः कर्मसाद्रुण्यावाप्तये लक्ष्मीनारायणप्रीतये च दुकूलवस्त्रादिना नाद्रव्यपूरितं वंशपात्रदानं कार्यं ॥ तत्रादौ पू
जनम् ॥ ब्रह्मविष्णुशिवादीनां स्थानं त्वं वृक्षराट् स्वयं ॥ अंगैः सर्वैरहोस्वामिं स्थातव्यं नुत्त्वया विभो ॥ इत्यावाहनं ॥ मूलानि ब्राह्मणाय स्य ऋगाद्याश्चांगपल्ल
वाः ॥ फलानि यज्ञराखाश्च वाङ्मयो मे दयां कुरु ॥ आसनं ॥ सर्वतीर्थमयो यस्मात्सर्वदेवमयो यतः ॥ सर्वतीर्थानि बुभुक्षुस्मात्पाद्यमाधत्स्व वृक्षराट् ॥ पाद्यं ॥
आपो धर्मस्य यद्बीजमापो धर्मः सनातनः ॥ अश्वः पवित्रं नास्त्यन्यदपामर्ध्यं गृहाण मे ॥ अर्घ्यं ॥ शुद्धं तिद्रव्यमात्राणि गंगातोयेन नित्यशः ॥ अतः सर्वाणि

गात्राणि स्नापयेयज्ञवृक्षराट् ॥ स्नानं ॥ सर्वभूताधिवासाय सर्वदेवमयाय च ॥ सर्वलज्जानिरासार्थं वाससी कल्पयाम्यहं ॥ वस्त्र ॥ यतो गधवती भूमिर्भू
मिरूपाहिपादपा. ॥ राजात्वपादपानाच चंदनं प्रतिगृह्यता ॥ गंधं ॥ वृक्षराजनमस्तु म्ययज्ञराजनमोस्तुते ॥ यज्ञांगरूपयज्ञेश वृक्षाश्च तथ नमोस्तुते ॥
पुष्पं ॥ निर्यासो वृक्षराजानां धूपार्थं कल्पयाम्यहं ॥ धर्मरूपेण वर्तते वृक्षाश्च तथ ये तेनमः ॥ धूपं ॥ चक्षुर्दसर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणं ॥ आर्तिक्यक
ल्पये भक्त्या परिगृह्णीष्व वृक्षराट् ॥ दीप ॥ अन्नाद्भवंति भूतानि यज्ञश्चान्नात्प्रवर्तते ॥ अश्च तथ यज्ञरूपोऽसि नैवेद्यं तेर्पयाम्यहं ॥ नैवेद्यं ॥ पायसं लड्डुकां
श्चार्पयेत् ॥ फलताबूलदक्षिणा समर्प्य नमस्कारप्रदक्षिणा पुष्पांजल्यते प्रार्थयेत् ॥ अश्च तयोऽसि जगन्नाथ पुरादेवैर्विनिर्मितः ॥ पापात्स त्राहि नो देव पुण्यदेहि महा
फलं ॥ क्षीरोदधि समुद्भूते तुलसी हरि वल्लभे ॥ अश्च तथोद्यापन फलदेहि मह्यं सदा शिवे ॥ इति ॥ ततः पूर्णोद्भुतिवसोर्धारा चहुत्वा चार्थादीन् पूजादक्षिणादि
भिस्तोषयेत् ॥ ततो भिषेकः ॥ मंडपाद्युपस्करजातमाचार्यहस्ते प्रतिपाद्य स भवेदशधान्यानि दद्यादिति संक्षेपः ॥

॥ २४६ ॥ अथ वटोद्यापनम् ॥

श्रीः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्य आत्मनः सकल पापक्षयकुलकोटिसमुद्धरणे ऐहिकामुष्मिक निरवधिसुखप्राप्तिपूर्वक ब्रह्मपदप्राप्तिकामो
वटोद्यापनं तथाभीष्टदातृत्वसिद्ध्यर्थं सर्वप्राणिसुखनिवासार्थं च वटसंस्कारं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ तदंगविहितं गणपतिपूजनं पु
ण्याहवाचनं मातृकापूजनं नांदीश्राद्धमाचार्यादिवरणं च करिष्ये ॥ स्वगृह्यविधिना तानि कृत्वा चार्थादीन् वृणुयात् ॥ ततः स
त्विग्यजमानः पूर्णकलशहस्तः मंगलवाद्यतूर्यघोषेण सह शकुनसूक्तं पठन् वटमंडपप्रादक्षिण्येन पश्चिमद्वारमागत्य तत्र स्थोना० म
हीद्यौरिति मंत्रेण धरासंपूज्य अर्घ्यं दत्वा प्रविश्य वटसमीपे कलशं निधाय वरुणनिर्ऋतिमध्ये उपविशेत् ॥ ततः आचार्यः कर्मसंक

लप्य भूतशुद्ध्यादिविधायमंडपांतगौरसर्षपलाजानयदत्रसंस्थितमितिविकीर्य साधितपंचगव्येनकुशैःआपोहिष्ठाइत्यादिमं
 नैःसर्वत्रप्रोक्षणंकृत्वा स्वस्त्ययनमितिमंत्रद्वयंपठित्वादेवाआयांतुयातुधानाअपयांतुविष्णोदेवयजनंरक्षस्व भूमौप्रादेशंकुर्या
 त् ॥ यथोक्तमंडपेउक्तोरणपताकाध्वजान्वङ्काशांतिसूक्तजपार्थवेदादिक्रमेणद्वावेकंवाब्राह्मणंप्रागादिक्रमेणप्रतिद्वारंवृणुया
 त् ॥ ततआचार्योवटपश्चिमेचनुरसांवेदिकांनिर्मायतत्रसर्वतोभद्रेउक्तप्रकारेणब्रह्मानमितिब्रह्माणं तदक्षिणेवषट्तेइतिविष्णुं उत्तरेत्र्यंवकमितिरुद्रंएकए
 शत्रयंएकंवाकलशंप्रतिष्ठाप्य ॥ तत्रमध्यमकुंभेब्रह्मजज्ञानमितिब्रह्माणं तदक्षिणेवषट्तेइतिविष्णुं उत्तरेत्र्यंवकमितिरुद्रंएकए
 वकलशश्चेत्तत्रैवआग्नेय्यादिकोणेषुगणानांत्वेतिगणपतिं जातवेदसइतिदुर्गां जज्ञानमितिमातृः क्षेत्रस्यपतीतिक्षेत्रपालं ततः
 परितोलोकेशांस्तत्तन्मन्त्रैरावाह्यसंपूज्य वेदीपरितोष्टौकलशान्स्थापनप्रकारेणसंस्थाप्य तत्रपूर्वादिकलशेषुपंचगव्यंसप्तमृ
 दःपंचपल्वान्चंदनंपंचरत्नानिक्षीरंसर्वौषध्योंगोदकंचक्षिह्वाशुद्धजलेनापूर्यपूर्णपात्रंनिधाय तेषुइंद्रादीनावाह्यसंपूजयेत् ॥
 ततस्तैलहरिद्रारोपणादिवटस्यकृत्वावस्त्रेणावेष्टयेत् ॥ इत्यधिवासनम् ॥ परेद्युःप्रातर्नित्यकर्मनिर्वर्त्यपीठदेवताःसंपूज्यप्रागा
 दिद्वारचतुष्टयेचतुरःकुंभान्संस्थाप्यतेषुउदकंपंचरत्नपल्लवादिविधायइंद्रयमवरुणसोमांस्तत्तन्मन्त्रैरावाह्यसंपूज्य चतुर्द्वारे
 शुचतुर्वेदविदोद्विजाःशांतिसूक्तानिपठेयुः ॥ ततईशान्यांकुंडेस्थंडिलेवाग्निंप्रतिष्ठाप्य तदुत्तरेवेदिकायामुक्तप्रकारेणग्रहा
 नावाह्यसंपूज्यतदीशान्यांकलशंप्रतिष्ठाप्यजपार्थंब्राह्मणंवृणुयात् ॥ ततःप्रागाद्याचार्याश्चत्वारःस्वस्वकुंडेस्वगृह्यविधिनाआ
 चार्यकुंडात्त्रोत्रियागाराद्वाऽग्नीन्प्रणीयध्यायेयुः ॥ कुंडचतुष्टयपक्षेप्राककुंडादग्निप्रणयनंतत्रैवमुख्यहोमः ॥ अन्वाधानम् ॥ त

त्रेशानकुंडे ब्रह्मविष्णुरुद्रान्घृताक्तदूर्वाज्यद्रव्येणाष्टोत्तरशतमिताहुतिभिर्यक्ष्ये ॥ इन्द्राद्यष्टौ लोकपालान्पलाशासमिच्चूर्वाज्य
 द्रव्यैः अष्टाविंशतिसंख्ययाचक्ष्ये ॥ दक्षिणे गणपतिं दुर्गासप्तमातृः क्षेत्रपालं घृताक्ततिलद्रव्येणाष्टाविंशत्याहुतिभिर्यक्ष्ये ॥ प
 श्चिमे साधिप्रत्यधिदेवतानादित्यादि नवग्रहानर्कादिसमिच्चूर्वाज्यतिलव्रीहिद्रव्यैः अष्टाविंशतिसंख्ययाकाहुतिभिर्यक्ष्ये ॥ उत्त
 रे सोमसोमोधेनुमितिमंत्रेण घृताक्तचरुलक्षसंमिद्रव्येण अष्टोत्तरशताहुतिभिः ब्रह्मादिदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्याचक्ष्ये ॥ एवंत
 त्तन्मंत्रैः होमं संपाद्य ॥ ततः आचार्यो वटस्य हरिद्रातैलादिदत्वा पंचोपचारैः संपूज्य पूर्वस्थापिताष्टकलशान्ब्राह्मणैर्ग्राहयित्वा
 च आपोहिष्ठा समुद्रज्येष्ठा इमा आपः एतो न्विद्रमिति प्रत्येकं जपन् वटस्याभिषेकं कुर्यात् ॥ तत आचार्यः प्रतीच्यां वटसंस्कारा
 र्थं स्थंडिलं निर्माय वटस्य पुंसवनं आदि विवाहांतान् संस्कारान् व्याहृतिद्वारा करिष्ये ॥ अग्निं प्रतिष्ठाप्य अन्वा दध्यात् ॥ अग्निं वायुं सू
 र्यं प्रजापतिं आज्यद्रव्येण प्रतिसंस्कारं चतुःसंख्ययाहुतिभिर्यक्ष्ये ॥ प्रतिसंस्कारहोमांते वनस्पते शतवल्श इति मंत्रेण वटं स्पृशेत् ॥
 एवमुपनयनपर्यंतं हुत्वा ॥ यजमानवटांतराले पटं धृत्वा सुमुहूर्ते तदेवलक्ष्ममिति पठिते अंतःपटं निःसार्य ध्रुवसूक्तं ये यज्ञेनेति पठि
 त्वा कौपीनं यज्ञोपवीतं मेखलां दंडं च तत्तन्मंत्रैर्दत्त्वा उपदेशवद्वायत्रीं श्रावयित्वा नमेत् ॥ ततो महानामयादिसमावर्तनांतं कर्म कृ
 त्वा लंकारान्दत्त्वा आयुष्यं वचस्यमिति पठित्वा मौर्जीं विसर्जयेत् ॥ ततो वटं दूर्वाचदुग्धादिना सिक्त्वा वटं दूर्वावस्त्रयुग्मेन संबध्वा
 वस्त्रं कंचुकीमाभरणादिदत्वा पूर्ववद्धृत्वा गृभ्णामीति मंत्रेण वटं दूर्वयोः पल्लवमयान् हस्तान्योजयेत् ॥ ततः संस्कारसंबंधिं स्विष्टकृ
 दादिहोमशेषं समाप्य वटं पुरुषसूक्तेन संपूज्य प्रार्थयेत् ॥ मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे ॥ अग्रतो रुद्ररूपाय वटवृक्षाय ते

नमः ॥ अकारमूलरूपाय उकारस्कंधशाखिने ॥ मकारफलपुष्पाय वटवृक्षाय ते नमः ॥ तत आचार्याः स्वस्वकुंडे स्विष्टकृदादि
हुत्वा बलिं पूर्णाहुतिं च कृत्वा ॥ यजमानो वटोद्यापनसांगता सिद्धये दक्षिणां गांच दास्ये इति संकल्प्य क्रमेण दत्त्वा ततः ऋत्विजः क
त इति उत्थाप्य यांतु देवगणाः सर्वे इति विसृज्य पीठादि आचार्याय दत्त्वा मंडपं सदस्याय दत्त्वा भूयसीं दत्त्वा शताधिकान्यथाश
क्तिवा ब्राह्मणान् भोजयिष्ये ॥ आशिषो गृहीत्वा वटोद्यापनपूर्णतां वाचयित्वा इष्टजनैः सह भुंजीत ॥ इति वटोद्यापनमौजीवि ॥

श्रीः ॥ कर्ता शुभदिने आचम्य प्राणानाचम्य देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणो मम सपरिवारस्यास्मिन्वास्तौ चिरकाल
सुखनिवासपूर्वमखिलरोगविम्लादिशांतिं संपदारोग्यपुत्रपौत्रधनधान्यादिसमृद्धिं चिरजीवनस्वर्निवाससिद्धिद्वारा अस्य वास्तोः
शुभतासिद्ध्यर्थं सग्रहमखां वास्तुशांतिकरिष्ये ॥ २४७ ॥ अथ वास्तुशांतिप्रयोगः ॥

साः ॥ स्थानादस्माद्भ्रजं त्वन्यत्स्वीकरोमि भुवं त्वमामित्यनेन सर्षपान्विकीर्य पंचगव्येन शुचीवो हव्या इत्युच्यते पुनं तु मां देवजना इ
त्युच्यते न गृहमाविभीत एतो न्विद्रमित्युच्यते न गृहं संप्रोक्ष्य ॥ स्वस्त्ययनमित्यादि प्रादेशकरणांतं कुर्यात् ॥ ततो गृहादौ यजमानैकह
स्तमितं चतुरस्रं सयोनित्रिमेखलं कुंडं चतुरंगुलोत्सेधं स्थंडिलं वा विधाय तत्पूर्वतश्चतुरंगुलोन्नतं हस्तमितं वेदिद्वयं मृदा विधाय उत्तर

वेदैरशानादिकोणचतुष्टयेचतुरोरोहकीलानरोपयेत् ॥ विशंतुभूतलेनागालोकपालाश्चसर्वतः ॥ अस्मिन्नगृहेवतिष्ठंतुआयुर्ब
 लकराःसदा ॥ इतिमंत्रेण ॥ प्रतिकीलंमंत्रावृत्तिः ॥ ततःईशानकोणादिक्रमेणचतुर्भुकोणेषु ॥ अग्निभ्योप्यथसर्पेभ्योयेचा
 न्येतत्समाश्रिताः ॥ तेभ्योबलिंप्रयच्छामिपुण्यमोदनमुत्तममितिमंत्रावृत्त्यामाषभक्तबलीन्दत्वा ॥ वेद्युपरिकुंकुमादिनाहेम
 रूप्यशलाकयावापश्चादारभ्यप्रागंताउदक्संस्थाद्व्यंगुलांतराःप्रणवादिनमोतैदशभिर्नामभिर्देशरेखाःकुर्यात् ॥ ॐ शांतायै
 नमः यशोवत्यै० कांतायै० विशालायै० प्राणवाहिन्यै० सत्यै० सुमत्यै० नंदायै० सुभद्रायै० सुरथायै० १० इतिदशरे
 खाःकृत्वा ॥ तथा हिरण्यायै० सुव्रतायै० लक्ष्म्यै० विभूत्यै० विमलायै० प्रियायै० जयायै० ज्वालायै० विशोकायै०
 इडायै० १० इतिदक्षिणारंभाउदगंताःप्राक्संस्थादशरेखाःकुर्यात् ॥ एवमेकाशीतिपदंमंडलंसंपद्यते ॥ तत्रमध्यस्थनवकोष्टा
 निरेखामार्जनेनैकीकुर्यात् ॥ एतन्नवपदंब्रह्मस्थानं तस्यचतुर्दिक्षुचत्वारिपदानिविदिक्षुशृंखलाकाराणिद्वादशकोणचतुष्टयो
 भयतश्चाष्टावितिर्विशलेकपदानि ॥ शिष्टानिप्रतिदिशंपंचपंचेतिर्विंशतिद्विपदानि ॥ ॥ ६१ ॥

॥ २४८ ॥ अथवास्तुमंडलेद्वेवताः ॥

तत्रमंडलेप्रणवाद्यैश्चतुर्थ्यैर्नमोतैर्वक्ष्यमाणानामभिर्देवताआवाह्यस्थापयेत् ॥ तत्रैशानकोणपदेवास्तोःशिरसि ॐ शिखिनेन
 मः शिखिनंआवाहयामीत्येवंसर्वत्र १ तदक्षिणैकपदेदक्षिणनेत्रेपर्जन्यायन० २ तदक्षिणेततोपिपश्चिमतइतिपदद्वयेदक्षिण
 श्रोत्रे जयंतायन० ३ तदक्षिणपदद्वयेदक्षिणांसे कुलिशायुधाय० ४ तदक्षिणपदद्वयेदक्षिणबाहौ सूर्याय० ५ तदक्षिण

पदद्वयेदक्षिणबाहौ सत्याय० ६ तद्वक्षिणपदद्वयेदक्षिणकर्पूरे भृशाय० ७ तद्वक्षिणेअंसपंक्तिगतैकपदेदक्षिणप्रबाहौ आ
 काशायन० ८ आग्नेयकोणपदेदक्षिणप्रबाहौ वायवेन० ९ तस्यश्चिन्मैकपदेदक्षिणमणिबंधे पूष्णेन० १० तस्यश्चिमेततोप्यु
 यमाय० १३ तस्यश्चिमपदद्वयेदक्षिणजनौ गंधर्वाय० १४ तस्यश्चिमपदद्वयेदक्षिणजंघायां भृंगराजाय० १५ तस्यश्चिमे
 बाह्यपंक्तिगतैकपदेदक्षिणस्फिचि मृगाय० १६ नैर्ऋतकोणपदैकपदेपादयोः पितृभ्यो० १७ तदुत्तरैकपदेवामस्फिचि दौ
 वारिकाय० १८ तदुत्तरैकपदेततोपिप्रागितिपदद्वयेवामजंघायां सुग्रीवाय० १९ तदुत्तरपदद्वयेवामजनौ पुष्पदंताय० २०
 तदुत्तरपदद्वयेवामोरौ जलाधिपाय० २१ तदुत्तरपदद्वयेवामपार्श्वे असुराय० २२ तदुत्तरपदद्वयेवामपार्श्वे एव शोषाय०
 २३ तदुत्तरेबाह्यपंक्तिगतैकपदेवाममणिबंधे० पापाय० २४ वायव्यकोणपदेवामप्रबाहौ रोगाय० २५ तस्मादेकपदेवाम
 प्रबाहौ अहये० २६ तस्माक्ततोपिदक्षिणेचेतिपदद्वयेवामकर्पूरे मुख्याय० २७ तस्माक्पदद्वयेवामबाहौ भ्रूटायाय० २८
 त्माक्बाह्यपंक्तिगतैकपदेवामनेत्रे दितयेन० २९ तस्माक्पदद्वयेवामांसे सर्पाय० ३० तस्माक्पदद्वयेवामबाहौ अदितयेन० ३१ त
 दधःकोणपदेदक्षिणहस्ते सावित्राय० ३२ तद्वक्षिणेईशानकोणपदाधःकोणपदेमुखे आपाय० ३३ आग्नेयकोणपदा
 द्राय० ३६ मध्यगतनवकोष्टकब्रह्मपदसंलग्नप्रागादिपदत्रयेदक्षिणहस्ते अर्यम्णे० ३७ तद्वक्षिणैकपदेदक्षिणहस्ते सवित्रेन०

३८ तस्यश्चिमेब्रह्मसंलग्नपदत्रयेजठरदक्षिणभागे विवस्वतेन० ३९ तस्यश्चिमेकपदेवृषणयोः विबुधाधिपाय० ४० तदुत्तर
 ब्रह्मसंलग्नपदत्रयेजठरवामभागे मित्राय० ४१ तदुत्तरैकपदेवामहस्ते राजयक्षमणे० ४२ तत्प्राक्पदत्रयेवामस्तने पृथ्वीधरा
 यन० ४३ तत्प्रागेकपदेउरसि आपवत्साय० ४४ ततोमध्यनवपदेपुहन्नाभ्योः ब्रह्मणेन० ४५ ॥ तदुत्तरेवास्तोष्पतेवसिष्ठो
 वास्तोष्पतिस्त्रिष्टुप् वृषवास्तुप्रतिष्ठापनेविनियोगः ॥ ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानी० इतिसुवर्णादिप्रतिमामभ्युत्तारणपूर्वकंसंस्था
 प्य ४६ मंडलाद्द्वहिरीशानादिकोणचतुष्टये चरक्यै० ४७ विदार्यै० ४८ पूतनार्यै० ४९ पापराक्षस्यै० ५० ततःपूर्वा
 दिचतुर्दिक्षु स्कंदायन० ५१ अर्यम्णेनमः ५२ जंभकायन० ५३ पिलिपिच्छायन० ५४ ततःपूर्वाद्यष्टदिक्षुतत्तन्मंत्रैर्नाम
 भिर्वा इंद्रायन० ५५ अग्नेयेन० ५६ यमायन० ५७ निर्ऋतेयेन० ५८ वरुणायन० ५९ वायवेन० ६० कुबेरायन० ६१
 ईशानाय० ६२ इत्यावाह्य वास्तुपीठदेवताभ्योनमइतिसंपूज्यमंडलादीशान्यांकलशंसंस्थाप्यतत्रवरुणायनमइतिवरुणंसंपू
 ज्यततः पश्चिमायांकुंडेस्थंडिलेवावरदनामानमग्निप्रतिष्ठाप्याग्नेरीशान्यांहस्तमितग्रहवेद्यांग्रहान्ग्रहकलशंचसंस्थाप्यतत्रवरुणं
 संपूज्यदेवदानवसंवादइत्याद्यैःसंप्राथम्येनिसमीपमेत्यान्वादध्यात् ॥ अस्मिन्वास्तुशान्तिकर्मण्यन्वाधानंकरिष्ये ॥ अस्मिन्नन्वा
 हितेत्यादिचक्षुष्यंतमुक्त्वान्नप्रधानं ॥ आदित्यादिनवग्रहान् अष्टाविंशत्यष्टाविंशतिसंख्याकाभिःसमित्तिलाज्याहुतिभिः ॥
 अधिदेवताःप्रत्यधिदेवताश्चअष्टाष्टसंख्याकाभिः॥ क्रतुसंरक्षकदेवताश्चतुश्चतुःसंख्याकाभिःतैरेवद्रव्यैः ॥
 शिख्यादिपंचचत्वारिंशद्देवताःप्रत्येकंप्रतिद्रव्यंअष्टोत्तरशताष्टाविंशत्यष्टाभिर्वासंख्याकाभिःऔदुंबरसमित् १ तिल २ (यव)

五

112211

पायस ३ आज्या ४ हुतिभिः ॥ वास्तुं वास्तोष्पत इति चतसृभिर्ऋग्भिः प्रतिद्रव्यं प्रत्युचं १०८ वा २८ वा ८ संख्या हुतिभिः
पूर्वोक्तद्रव्यैः ॥ पुनर्वास्तुं वास्तोष्पत इति चतसृभिः वास्तोष्पते ध्रुवास्थूणामित्यनया चक्रमेण प्रत्युचं पंचैकान्यतरसंख्याकाभिः पं
चबिल्वफला हुतिभिस्तद्वीजा हुतिभिर्वा ॥ चरक्यादीन् प्रत्येकं अष्टाभिः चतसृभिर्वा प्रत्येकं समित्तिलपायसाज्या हुतिभिर्यक्ष्ये ॥
शेषेणेत्यादि प्रणीता प्रणयनां तैश्चिख्यादिदेवताभ्यः प्रत्येकममुष्मैत्वेति निर्वापप्रोक्षणपूर्वकमाज्यभागां ते यजमानः इदं उपकल्पि
तं हवनीयद्रव्यमन्वाधानोक्तदेवताभ्य उत्सृज्येन ममेत्युक्त्वोत्सृजेत् ॥ तत आचार्यादयो ग्रहो मंकृत्वा तिल १ समित् २ आ
ज्य ३ पायसैः ४ शिख्यादिपंच चत्वारिंश देवताभ्यो नाम मंत्रैः प्रत्येकमष्टाविंशत्यष्टाष्टसंख्याकाभिरा हुतिभिर्वा हुत्वा वास्त
वे वास्तोष्पत इति चतसृभिः क्रमेण समित्तिलपायसाज्या निजुहुयात् ॥ पुनर्वास्तवे वास्तोष्पत इति चतसृभिर्वा हुतिभिर्वा हुत्वा वास्त
या च प्रत्येकं पंच एकैकं वा घृताक्तं बिल्वं जुहुयात् ॥ वास्तोष्पत इति चतसृणां वसिष्ठो वास्तोष्पतिस्त्रिष्टुवं त्यागायत्री ॥ वास्तोष्पते
ध्रुवास्थूणा मितीरिं विठिर्वास्तोष्पतिर्बृहती ॥ होमे विनियोगः ॥ ततश्चरक्यादिभ्यो न्वाधानोक्तमुख्यन्यूनसंख्यया समिदादि
द्रव्याणि जुहुयात् ॥ ततः स्विष्टकृदादिप्रायश्चित्तहोमांते लोकपालेभ्यो ग्रहपीठदेवताभ्यः क्षेत्रपालाय च बलिं दत्त्वा पूर्णा हुतिं जु
हुयात् ॥ मूर्धानं भरद्वाजो वैश्वानरस्त्रिष्टुप् पूर्णा हुतौ वि० ॥ ॐ मूर्धानं देवाः स्वाहा वैश्वानरा ये दं० ॥ ततः प्रणीतानि नयनादि
कर्मशेषं समाप्य वास्तुमंडलपश्चिमदेशे ॐ शिखिने नमः एषपायसबलिर्नममेति प्रत्येकं पायसबली न्दत्वा चरक्यादिभ्यस्तथैव माष
भक्तबली न्दद्यात् ॥ तत आचार्यादयः समुद्रज्येष्ठा इत्यादि मंत्रैः सुरास्त्वामित्यादिभिश्च मंत्रैः सपत्नीकं यजमानं शांतिकलशोदके

1.
 2.
 3.
 4.
 5.
 6.
 7.
 8.
 9.
 10.
 11.
 12.
 13.
 14.
 15.
 16.
 17.
 18.
 19.
 20.
 21.
 22.
 23.
 24.
 25.
 26.
 27.
 28.
 29.
 30.
 31.
 32.
 33.
 34.
 35.
 36.
 37.
 38.
 39.
 40.
 41.
 42.
 43.
 44.
 45.
 46.
 47.
 48.
 49.
 50.
 51.
 52.
 53.
 54.
 55.
 56.
 57.
 58.
 59.
 60.
 61.
 62.
 63.
 64.
 65.
 66.
 67.
 68.
 69.
 70.
 71.
 72.
 73.
 74.
 75.
 76.
 77.
 78.
 79.
 80.
 81.
 82.
 83.
 84.
 85.
 86.
 87.
 88.
 89.
 90.
 91.
 92.
 93.
 94.
 95.
 96.
 97.
 98.
 99.
 100.

वा.मंडल.
॥२४८॥

112611

नाभिषिच्यसर्वौषधीभिरनुलिप्यत्तापयेयुः ॥ ततःयजमानआचार्योवागृहंप्रागादितस्त्रिसूत्र्याराक्षोमपावमानमंत्रैः सतूर्यमं
गलघोषंवेष्टयित्वा समंताहुग्धपूर्णयाजलपूर्णयाचसस्तनकुंभ्यातथैवसूक्तद्वयेनधाराद्वयमविच्छिन्नंकुर्यात् ॥ ततोमध्यमवप
नेयकोणेआकाशपदे यजमानपदेनजानुमात्रंगतखात्वामध्येगोमयेनोपलिप्यशुभ्रचंदनपुष्पाक्षतैरलंकृत्यसर्वधान्यवीजानिद
ध्योदनंचक्षिह्वानवंजलपूर्णकलशंशुक्लैकपुष्पयुतंगंधाद्यर्चितमादायजानुभ्यामवनिंगत्वातज्जलगते ॐ नमोवरुणायेतिमंत्रेण
क्षिपेत् ॥ जलेप्रदक्षिणावर्तेपुष्पेचोर्ध्वमुखेशुभम् ॥ ततःपक्वमृत्पेटिकायांशाल्यादिसप्तधान्यवीजानिदध्योदनंशैवालंफलपु
ष्पाणिचक्षिह्वानूर्ध्वोपेणपूर्वस्थापितवृषवास्तुप्रतिमामानीयपेटिकायांसंस्थाप्यगंधादिभिःसंपूज्यप्रार्थयेत् ॥ पूजितोसिमया
वास्तोहोमाद्यैरर्चनैःशुभैः ॥ प्रसीदपाहिविश्वेशदेहिमेगृहजंसुखं ॥ वास्तुमूर्तेनमस्तेस्तुभूशय्याभिरतप्रभो ॥ मद्गृहंधनधान्या
दिसमृद्धंक्रुरुसर्वदेति ॥ ततोमृत्पेटिकांपिधायशनैर्नर्गतेस्थाप्य ॥ सशैलसागरापृथ्वीयथावहसिमूर्धनि ॥ तथामांवहकल्याण
संपत्संततिभिःसह ॥ इतिसंप्रार्थयैतथैवमृदागर्तंपूरयेत् ॥ मृदआधिक्येउत्तमंसाम्येमध्यमंन्यूनत्वेत्वधमंफलंविद्यात् ॥ गतो
परिभूमिगोमयेनोपलिप्यशुक्लंगंधपुष्पाक्षतैर्भूपयेत् ॥ ततोऽग्नेःपश्चिमतआचार्यसंपूज्यतस्मैवासोयुगंगंचदत्वाब्रह्मऋत्विग्भ्योय
थाशक्तिदक्षिणांदत्वा ग्रहाणांशिख्यादीनांचपूजांकृत्वाक्षमाप्य उत्तिष्ठन्न०यांतुदेवेतिचविसर्जनेकृतेतत्प्रतिमाद्याचार्यहस्तेप्र

तिपाद्याग्निसंपूज्यगच्छगच्छेति विसृज्य ब्राह्मणैः शांतिपाठयित्वा ग्रहशिख्यादिप्रीत्यर्थं प्रत्येकं त्रींस्त्रीनैकैकं यथाशक्ति वा ब्राह्मणा
न्संभोज्या शिषोगृहीत्वासुहृद्युतो भुंजीत ॥ इति श्रीमन्नारायणभट्टसूरिसूनुभट्टरामकृष्णविरचितः पौराणवास्तुशांतिप्रयोगः ॥

॥ २४९ ॥ अथ गृहप्रवेशः ॥

एवं प्रथमे हि वास्तुशांतिविधाय द्वितीये हि सुमुहूर्ते तदहरे ववागृहप्रवेशं कुर्यात् ॥ सचेत्थं ॥ नवं जलपूर्णं पल्लवोपेतं दूर्वायुतं गंधा
क्षतसुधालिप्तं वस्त्रवेष्टितं सपूर्णपात्रं सफलं कलशमंजलिना गृहीत्वा यजमानो ब्राह्मणान्वितः सदारपुत्रस्तूर्यघोषेण स्वस्ति सूक्तेन क
निक्रददिति च गृहं प्रविश्य प्रधानगृहमध्ये धान्योपरितं कलशं स्थापयेत् ॥ ततो गृहस्थैर्यार्थं ब्राह्मणैः पुण्याहं वाचयित्वा तान्संपू
ज्य तैस्त्रिः शिवं वा स्तुति वाचयित्वा ब्राह्मणान्संभोजयित्वा शिषोगृहीत्वासुहृद्युतो भुंजीत ॥ इति गृहप्रवेशः ॥ ॥ ४९ ॥

॥ २५० ॥ अथ पंचकुंडीमंडपप्रकारः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ देवप्रतिष्ठां अथ तथोद्यापनं वा कर्तुं तत्तत्स्थानादुत्तरतः पूर्वतो वा उत्तममंडपे षडहस्तं मध्यममंडपे चतुर्दश
हस्तं दशहस्तमष्टहस्तं वा चतुर्द्वारं मंडपं कुर्यात् ॥ तत्र मध्यस्तं भवतुष्टयमध्ये वेदी हस्तोच्छ्रितां कुर्यात् ॥ तस्याः समंततश्चतुर्दिक्षु त्र
योदशांगुलांतरं हस्तमात्रांतरं वात्यक्त्वा कुंडानि हस्तमात्राणि कुर्यात् ॥ तत्र प्राच्यां चतुरस्रं दक्षिणयोनि ॥ दक्षिणेर्ध्वं चंद्रदक्षिण
योनि ॥ पश्चिमे वर्तुलं पश्चिमयोनि ॥ उत्तरे पद्मकुंडं पश्चिमयोनि ॥ ईशान्यां चतुरस्रं वृत्तं वा आचार्यकुंडं दक्षिणयोनि पश्चिमे
वा कुर्यात् ॥ मंडपस्येशान्यामुत्तरस्यां वादिशि चतुर्हस्तांतरेण मंडपार्धमानेन त्रिभागेन वा चतुर्थभागेन वा प्रासादमानेन वा चतुष्को

णंकोणध्वजस्तंभयुतंचतुर्द्वारंपूर्वमुखमुदङ्मुखंवास्नानमंडपंकुर्यात् ॥ तन्मध्यप्रदेशेवेदिकाद्वयंद्विहस्तंचतुर्थीशोच्छ्रायंद्विमेखलंकुर्यात् ॥ अथवामहावेद्यधर्विस्तीर्णतदुच्छ्रायोच्छ्रायंतदर्थोच्छ्रायंचाकुर्यात् ॥ महामंडपस्यपश्चिमतश्चतुर्हस्तंपट्टस्तंवाजलाधिवासमंडपंकुर्यात् ॥ एवंमंडपादिसंपाद्यपूर्वदिनेपूर्वतनचतुर्थदिनेवायथाविभवंसंभृतसंभारःसंकल्पादिकुर्यात् ॥ ४३ ॥

॥ २५३ ॥ अथसंकल्पोक्तित्विग्वरणंच ॥

श्रीः ॥ तत्रादौयजमानःकूष्मांडहोमब्रह्मकूर्चादिभिरात्मतनुंपावयित्वामुहूर्तात्पूर्वदिनेकृतमंगलस्नानःशुक्लमाल्यानुलेपनःसर्भार्यःस्वासनेउपविश्याचम्यपवित्रपाणिःप्राणानायम्यदेशकालौस्मृत्वाआत्मनःपापक्षयपूर्वकं दशपूर्वान्दशपरानात्मनासहैकविंशतिपुरुषान्पितृतोमातृततश्चोद्धर्तुकामोहंश्रीपरमेश्वरप्राद्व्यर्थं यथाज्ञानेनयथामिलितोपचारद्रव्यैर्देशकालाद्यनुसारतःएकाहाद्यधिवासप्रकारेणआचार्यब्रह्मसदस्यादिद्वाराविष्णुप्रतिष्ठांशिवप्रतिष्ठांवाकरिष्ये ॥ तथाचपत्नीपुत्रादिसहितस्यममप्रतिमापिंडिकाकुंडतोरणस्तंभादिषुप्रधानांगकर्मसुचहीनाधिकांगतादिकर्मण्यथथाकरणादिविविधसूचित सर्वांनिष्टनिवर्हणार्थं अस्यकर्मणःसाद्रुण्यार्थंचग्रहमखंतिलैःशांतिहोमंचकरिष्ये ॥ आदौनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थगणपतिपूजनंस्वस्तिवाचनंमातृकापूजनंनंदादीश्राद्धंआचार्यवरणंचकरिष्ये ॥ तानिकृत्वाआचार्यादीन्वृणुयात् ॥ यथा ॥ अमुकप्रवरान्वितोऽमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशखाध्यायीअमुकशर्माअहं ॥ अमुकप्रवरोपेतममुकगोत्रोत्पन्नममुकशखाध्यायिनममुकशर्माणंअमुकदेवप्रतिष्ठाख्येकर्मणिमुख्यकुंडेविहितहोमंकर्तुमाचार्यत्वामहंवृणे ॥ आचार्योवृतोस्मियथान्नानतःकर्मकरिष्यामीतिवदेत् ॥ एवंब्रह्माणंसदस्यंप्रति

कुंडमाचार्यं ब्रह्माणं च ॥ एकोवा ब्रह्मा ॥ प्रतिकुंडं ऋत्विजो जापकादींश्च वृत्वा सर्वान्मधुपर्कादिनार्हयित्वा प्रार्थयेत् ॥ आचार्यप्रार्थना ॥ यथाशक्रस्य वागीश आचार्यः सर्वकर्मसु ॥ तथामया त्वमाचार्यो वृतोऽस्मिन्सर्वकर्मणि ॥ मंत्रमूर्तिर्भवान्नाथः ॥ वयज्ञः प्रकारितः ॥ प्रारब्धस्त्वत्ससादेन निर्विघ्नमेभवत्विति ॥ ॥ ब्रह्माणं—यथाचतुर्मुखो ब्रह्माशक्रादीनां मुखे प्रभुः ॥ संसारभयभीतेन ह्येवं त्वंमम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मत्वेन वृतो ह्यसि ॥ ॥ सदस्यं—त्वं नो गुरुः पिता माता त्वं प्रभुस्त्वं परायणं ॥ त्वत्सादाच्च विप्रैः सर्वमेस्यान्मनो गतं ॥ आपद्भिर्मोक्षणार्थाय कुरु यज्ञमंतर्द्रितः ॥ ऋत्विग्भिः सहितः शुद्धैः संयतैः सुसमाहितैः ॥ आचार्येण च संयुक्तः कुरु कर्म यथोदितं ॥ ॥ गणपं—प्रारिप्सितस्य यज्ञस्य जपस्य हवनस्य च ॥ निर्विघ्नेन समाह्वयर्थत्वा महंगणपंचणे ॥ ॥ उपद्रष्टारं—भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृतां वर ॥ वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नुपद्रष्टा भवद्विज ॥ सर्वेषां समुच्चयेन प्रार्थना ॥ अस्यागस्य निष्पत्तौ भवंतो भ्यर्थिता मया ॥ सुप्रसन्नाः प्रकुर्वंतु कर्मदं विधिपूर्वकं ॥ अस्मिन्कर्मणि ये ये तु वृत्ता गुरुमुखामया ॥ सावधानाः प्रकुर्वंतु स्वं स्वं कर्म यथोदितं ॥ इति सर्वान्संपूज्य संप्राथ्य साष्टांगं प्रणमेत् ॥ ॥ २५२ ॥ अथ पंडपपूजा चंदेश्वरोक्ता ॥

श्रीः ॥ अथाचार्यः सयजमानः सत्त्विक्पूर्णकुंभदध्यक्षतफलपुष्पसुवासिनीभिः सहितो मंगलघोषैः भद्रं कर्णेभिः कनिष्ठदित्यादि शाकुनसूक्तं पठन् मंडपंगच्छेत् ॥ आचार्यो मंडपप्रादक्षिण्येन पश्चिमद्वारिजानुभ्यामवनिंगत्वा स्योना पृथिवीति भूमिं ध्यायन् अ

ध्वं दद्यात् ॥ तत्रादौ ॥ उद्धृतासिवराहेण कृष्णेन शतबाहुना ॥ दंष्ट्राग्रैर्लीलया देवियज्ञार्थं प्रणमाम्यहं ॥ इति नमस्कारः ॥
 ब्रह्मणानिर्मिते देवि विष्णुना शंकरेण हि ॥ पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कंदवैश्रवणेन च ॥ यमेन पूजिते देवि धर्मेण विजिगीषुणा ॥
 सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च धनं रूपं च देहि मे ॥ गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सौभाग्यं च प्रयच्छ मे ॥ इत्यर्घ्यं दत्वा पश्चिमद्वारेण मंडपं प्रादक्षिण्ये
 न प्रविश्य नैर्ऋत्य वारुण्योर्मध्ये पूर्वोत्तराभिमुखोऽपविशेयुः ॥ आचार्यो विद्याः पश्चिमतः उपविश्य आचम्य प्राणानायायम्य देशका
 लौ स्मृत्वा अमुककर्मणि यजमानेन वृतो हं मंडपपूजादिविहितं कर्म करिष्ये ॥ गणेशं पूजयित्वा शरीरशुद्ध्या कर्माधिकारार्थं आस
 नादिन्यासं भूशुद्ध्यादिपवनपावनन्यासादिनात्मानं पावयित्वा प्रतिष्ठा मंडपांतः यदत्र संस्थितं भूतं ॥ जितं ते पुंडरीकाक्ष नमस्ते
 विश्वभावन ॥ सुब्रह्मण्य नमस्ते स्तुमहापुरुष पूर्वज ॥ भूतानि राक्षसावापियेत्र तिष्ठंति केचन ॥ ते सर्वेऽप्यपगच्छंतु यज्ञमत्र करो
 म्यहं ॥ अपसर्पंतु ते भूता ० ब्रह्मकर्मसमारभे ॥ इति लाजगौरसर्पपान्सर्वतो विकिरेत् ॥ ततः शुची वो हव्ये तितृचेन कुशैः पंचग
 व्येन आपो हि ष्ठे तितृचेन अद्भ्यः संभूत इत्युत्तरनारायणेन चाद्भिः प्रोक्षणं कार्यं ॥ ततः कृतांजलिः स्वस्त्ययनं तार्क्ष्यं मिति मंत्रद्वयं प
 पठेत् ॥ देवा आयांतु यातु धाना अपयांतु विष्णो देवयजनं रक्षस्व भूमौ प्रादेशं कुर्यात् ॥ ततो वेदिकाग्नेयकोणे स्थूणां च सुदामावाह्य
 पूजयेत् ॥ नैर्ऋत्यकोणे भद्रां ॥ वायव्यकोणे अदितिं ॥ ईशानकोणे नंदां च पूजयेत् ॥ ततः पश्चिमद्वारेण बहिर्निर्गत्य मंडपं प्रा
 दक्षिण्येन मंडपद्वाराद्बहिर्हस्तांति पूर्वैश्च तथोत्तरं सुदृढनामकं शंखचिह्नितं अग्निमीले सधुच्छंदा अग्निर्गायत्री ॥ अग्निमीळे इति
 मंत्रेण निधाय ॥ सुदृढतो रणाय नम इति नाममंत्रेण गंगादिभिः संपूज्य पुष्पमालादिशोभितं कुर्यात् ॥ राहुबृहस्पती तत्र न्यसेत् ॥

तत्रैकःकलशःस्थाप्यः ॥ यथा ॥ महीद्यौरितिभूमिस्पृष्ट्वा ओषधयःसमितिधान्यराशिंकृत्वा तदुपरिआकलशेव्वितिकलशं
 संस्थाप्य इमंमेगंगेइतिजलेनापूर्य गंधद्वारामितिगंधप्रक्षिप्य याओषधीरितिसर्वौषधीः ओषधयःसमितियवान् कांडात्कां
 डादितिदूर्वाः अश्वत्थेवइतिपंचपल्लवान् स्योनापृथिवीतिसप्तमृदः याःफलिनीरितिफलं सहिरल्लानीतिपंचरत्नानि हिरण्य
 वाहनंपूजनंच ॥ ततोदक्षिणेऔदुंबरंसुभद्रनामकंचक्रचिहितंतोरणं ॥ तत्रधरामावाहयेत्पूजयेच्च ॥ तस्मिन्कलशेध्रुवा
 तुश्रेष्ठतमायुर्मणे ॥ इतिनिधायसुभद्रतोरणायनमःइतिपूर्ववत्संपूज्यपूर्ववच्चंदनादिचर्चितंकृत्वासूर्यमंगारकंचतत्रन्यसेत् ॥
 तत्रैकःकलशःपूर्ववत्स्थाप्यः ॥ इतिनिधायसुभद्रतोरणायनमःइतिपूर्ववत्संपूज्यपूर्ववच्चंदनादिचर्चितंकृत्वासूर्यमंगारकंचतत्रन्यसेत् ॥
 यांहिवीतयेगुणानोह्व्यदातये ॥ तत्रपूर्ववत्कलशंसंस्थाप्यतत्रवाक्पतिमावाह्यपूजयेत् ॥ ॐ इष्टेर्वोर्जित्तदुपरिपूर्णपात्रंन्यसेत् ॥ तस्मिन्कलशेध्रुवा
 मकंपद्मचिहितं ॥ तत्रपूर्ववत्कलशंसंस्थाप्यतत्रवाक्पतिमावाह्यपूजयेच्च ॥ ततोदक्षिणेऔदुंबरंसुभद्रनामकंचक्रचिहितंतोरणं ॥ तत्रधरामावाहयेत्पूजयेच्च ॥ तस्मिन्कलशेध्रुवा
 नीस्तत्रन्यसेत् ॥ ॐ शंनोदेवी० ॥ इतिमंत्रेणनिधायसुहोत्रतोरणायनम इतिपूर्ववत्संपूज्यचंदनादिचर्चितं ॥ ततःपूर्वद्वारेकलशद्वयंप्रतिद्वारशाखंप्रतिष्ठाप्य
 चंदनोदकफलपंचपल्लवसप्तमृत्तिकासुवर्णपंचरत्नादियुतंदध्यक्षतविभूषितंवस्त्रपुष्पमालादिचंदनचर्चितं रक्तसूत्रवेष्टिताननंपू
 र्ववन्मंत्रैःस्थापयेत् ॥ प्रतिकलशंमंत्रावृत्तिः ॥ ऐरावतंकलशद्वयेन्यसेत्पूजयेच्च ॥ ऋग्वेदिनावृत्तिजौपूर्वद्वारेशांतिसूक्तज

पार्थत्वेनत्वांवृणे ॥ ऋग्वेदःपद्मपत्राक्षोगायत्रःसोमदैवतः ॥ अत्रिगोत्रस्तुविमंद्रऋत्विक्त्वंमेमखेभवेतिप्रत्येकंवृत्वा ॥ अग्निमीळेमधुच्छंदाअग्निर्गीयत्री ॥ ॐ अग्निमीळे ॥ इतिमंत्रेणगंगाधुपचारैःपूजयेत् ॥ ततःसहस्राक्षंमत्तैरावतस्थितंपीतकिरीटकुंडलधरंदक्षिणवामकरस्थवज्रोत्पलमिंद्रं ध्यात्वा ॥ एह्येहिसर्वोमरसिद्धसाधैरभिष्टुतोवज्रधरामरेश ॥ संवीज्यमानोप्सरसांगेनरक्षाध्वरंनोभगवन्नमस्ते ॥ भोइंद्रइहागच्छेहतिष्ठ ॥ इंद्रंसांगंसप ॥ चिकंद्वारकलशेआ ॥ आशुःशिशानइतींद्रोप्रतिरथइंद्रस्त्रिष्टुप् ॥ ॐ आशुःशिशानोवृष ॥ इतिपीतांपताकांपीतध्वजंचोच्छ्रयेत् ॥ त्रातारमिंद्रंगंइंद्रस्त्रिष्टुप् ॥ इंद्रपूजनेवि ॥ ॐ त्रातारमिंद्र ॥ इतिइंद्रंपूजयित्वा ॥ इंद्रःसुरपतिःश्रेष्ठोवज्रहस्तोमहाबलः ॥ शतयज्वाचयोदेवस्तस्मैनित्यंनमोनमः ॥ इतिइंद्रंमिंद्रं ॥ इतिइंद्रंपूजयित्वा ॥ हस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्य ॥ इतिनत्वाइंद्रायसांगायसायुधायसशक्तिकायअमुंसर्दीपमाषभक्तबलिसमर्पयामीतिसमर्पयेत् ॥ हस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्य ॥ ततआग्नेयेगत्वापूर्ववत्कलशंस्थापयित्वापुंडरीकंअमृतंचतत्रन्यसेत्पूजयेच्च ॥ छागस्थंरक्तंदक्षिणवामकरद्वयधृतशक्तिकमंडलुयज्ञोपवीतिनमग्निं ध्यात्वा ॥ एह्येहिसर्वोमरहव्यवाहमुनिप्रवीरैरभितोभिजुष्ट ॥ तेजस्वतालोकगणेनसार्धममाध्वरंपाहिकवेनमस्ते ॥ भोअग्नेइत्यादिअग्निंसांगमावाह्यरक्तांपताकांरक्तध्वजंच ॥ अग्निंदूतंमेधातिथिरग्निर्गीयत्री ॥ पताकोच्छ्रयणेवि ॥ ॐ अग्निंदूतंवृणीमहे ॥ इतिउच्छ्रयेत् ॥ त्वंनोअग्नेनाभागःकाण्वोन्निर्महापंक्तिः ॥ ॐ त्वंनोअग्नायुषुष्वदेवेपुष्यवस्वएक इरज्यसि ॥ त्वामापःपरिष्पुतःपरियंतिस्वसेतवोनभतामन्यकेसमे ॥ इतिमंत्रेणाग्निंगंधादिभिःपूजयित्वा ॥ आग्नेयःपुरुषोरक्तःसर्वदेवमयोव्ययः ॥ धूम्रकेतुरजोअक्षस्तस्मैनित्यंनमोनमः ॥ इतिनत्वाअग्नेयेसांगायेतिबलिंदद्यात् ॥ ततआचम्य

दक्षिणेगत्वाप्रतिहारशाखंचंदनोदकादियुतंपूर्ववत्कलशद्वयंस्थापयित्वावामननामकंदिगजंतत्रन्यसेत्पूजयेच्च ॥ ततोयजुर्वे
दिनावृत्विजौशांतिसूक्तजपार्थत्वेनत्वांवृणे ॥ कातराक्षोयजुर्वेदत्रैष्टुभोविष्णुदैवतः ॥ काश्यपेयस्तुविम्रद्रक्तविक्रवंमेमखेभ
व ॥ इतिप्रत्येकंवृत्वा ॥ इषेत्वोर्जेत्वावा० ॥ इतिमंत्रेणगंधाद्युपचारैःपूजयेत् ॥ ततोमहिषारूढंघृतदंडपाशदक्षिणवामकर
द्वयंकृष्णांजनचयोपममग्निसमलोचनंयमंध्यात्वा ॥ एह्येहिवैवस्वतधमराजसर्वामरैरर्चितधर्ममूर्ते ॥ शुभाशुभानंदशुचामधी
राशिवाचनःपाहिमखंनमस्ते ॥ भोयमइत्यादियमंसांगमित्याद्यावाह्य ॥ कृष्णांपताकांकृष्णध्वजंच ॥ आचंगौःसार्पराज्ञीस
र्पागायत्री ॥ ॐ आचंगौःपृश्निरक्रीद० ॥ इतिमंत्रेणोच्छयेत् ॥ ततःयमायसोमंयमोयमोनुहुप् ॥ ॐ यमायसोमं० ॥ इति
मंगंधादिभिःपूजयित्वा ॥ महामहिषमारूढंदंडहस्तंमहाबलं ॥ ततआचम्यनैर्ऋत्यांगत्वापूर्ववत्कलशंस्थापयित्वा ॥ कुमुदंदुर्जयंचतत्रपूजयित्वा ॥ य
मायसांगायेत्यादिवलिंदद्यात् ॥ ॥ ततोमहिषारूढंदंडहस्तंमहाबलं ॥ आवाहयामियशेस्मिन्पूजेयंप्रतिगृह्यतां ॥ इति
ततोमंत्रेणमोषुणइतिवानिर्ऋतिंगंधादिभिःपूजयित्वा ॥ ॐ मोषुणःपरांपरा० ॥ इतिनीलपताकांनीलध्वजंचोच्छयेत् ॥ असुन्वं
प्रतिगृह्यतां ॥ इतिनत्वासांगायेत्यादिवलिंदद्यात् ॥ ॥ ततआचम्यपश्चिमेगत्वापूर्ववत्कलशद्वयंस्थापयित्वाअंजनाख्यंदि

गजंतत्रन्यसेत् ॥ सामवेदिनावृत्विजौपश्चिमद्वारेशांतिसूक्तजपार्थत्वामहंवृणे ॥ सामवेदस्तुपिंगक्षोजागतःशक्तिकैवतः ॥
 भारद्वाजस्तुविप्रेन्द्रऋत्विक्त्वमेमुखेभवेतिप्रत्येकंवृत्वाअग्नआयाहीतिगंधाद्युपचारैःपूजयेत् ॥ ततःमकरस्थंपाशहस्तंशुक्लवर्णं
 किरीटिनंवरुणंध्यात्वा ॥ एह्येहियादोगणवारिधीनांगणेनपर्जन्यमहाप्सरोभिः ॥ विद्याधरैर्द्रामरगीयमानपाहित्वमस्मान्भ
 गवन्नमस्ते ॥ भोवरुणेत्यादिद्वारकलशेआवाह्य ॥ श्वेतांपताकांश्चेतध्वजं च ॥ इमंमेवरुणेतिशुनःशेषोवरुणोगायत्री ॥ वरु०
 ॐ इमंमेवरुणश्रुधीहर्वमद्याचमृळ्य ॥ त्वामवस्युराचके ॥ इतिउच्छ्रयेत् ॥ तत्त्वायामिशुनःशेषोवरुणस्त्रिष्टुप् ॥ ॐ तत्त्वायामि०
 इतिवरुणंगंधादिभिःपूजयेत् ॥ पाशहस्तंचवरुणमर्णसांपतिमीश्वरं ॥ आवाहयामियज्ञेस्मिन्वरुणायनमोनमः ॥ इतिनत्वावरु
 णायेत्यादिमाषभक्तबलिंदत्वा ॥ ततआचम्यवायव्यांगत्वातत्रपूर्वत्कलशंस्थापयित्वातत्रपुष्पदंतंसिद्धार्थंचसंपूज्यमृगाधि
 रुढंधूम्रवर्णंचित्रांबरधरंयुवानंध्वजवरददक्षिणवामकरद्वयंवायुंध्यात्वा ॥ एह्येहियज्ञेममरक्षणायमृगामृगाधिरुढःसहसिद्धसंघैः ॥
 प्राणाधिपःकालकवेःसहायगृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ भोवायोइहागच्छेत्यावाह्य ॥ धूम्रांपताकांधूम्रध्वजं च ॥ वायोशतंवामदे
 वोवायुरनुष्टुप् ॥ ॐ वायोशतंहरीणां० ॥ इतिमंत्रेणोच्छ्रयेत् ॥ तववायोव्यश्वांगिरसोवायुर्गायत्री ॥ ॐ तववायवृतस्पते० इति
 वायुंगंधादिभिरभ्यर्च्य ॥ वायुमाकाशगंचैवपवनंवेगवद्भतिं ॥ आवाहयामियज्ञेस्मिन्पूजेयंप्रतिगृह्यतां ॥ अनाकारोमहौ
 जाश्चयश्चादृष्टगतिर्दिवि ॥ तस्मैपूज्यायजगतोवायवेहंनमामिच ॥ इतिनत्वासांगायेत्यादिमाषभक्तबलिंदद्यात् ॥ तत
 आचम्यउत्तरेगत्वापूर्ववत्कलशद्वयंसंस्थाप्यसार्वभौमंदिग्गजंतत्रन्यसेत् ॥ अथर्ववेदिनावृत्विजौशांतिसूक्तजपार्थत्वेनत्वांवृ

णे ॥ बृहन्नेत्रोत्थर्ववेदोऽनुष्टुभोरुद्रदैवतः ॥ वैशंपायनविप्रेन्द्रऋत्विक्त्वंमेमखेभवेतिप्रत्येकंवृत्वा ॥ ततःशंनोदेवीरितिमंत्रेणं
धाद्युपचारैःपूजयेत् ॥ ततोऽनुरयुतविमानस्थंकुंडलमहाकेयूररुचिरंगदावरददक्षिणवामभुजद्वयंमुकुटिनंमहोदरंमहाकायंह
रितवर्णकुबेरंध्यात्वा ॥ एह्योहियक्षेश्वरयज्ञरक्षांविधत्स्वनक्षत्रगणेनसार्धं ॥ सर्वौषधीभिःपितृभिःसहैवगृहाणपूजांभगवन्नम
स्ते ॥ भोसोमेत्यादिद्धारकलशेआवाह्य ॥ हरितांपताकांहरितध्वजंच ॥ आप्यायस्वराहूगणोऽगोतमःसोमोऽगायत्री ॥ ॐ आ
प्यायस्व० इत्युच्छयेत् ॥ सोमोऽधेनुं० इतिमंत्रेणसोमंगंधादिभिःपूजयेत् ॥ स
र्वनक्षत्रमध्येतुसोमोराजाव्यवस्थितः ॥ तस्मैसोमायदेवायनक्षत्रपतयेनमः ॥ इतिनत्वासांगायेत्यादिसोमायेममाषभक्तबलिं
समर्पयामीतिदद्यात् ॥ ततआचम्यईशान्यांगत्वापूर्ववत्कलशंसंस्थाप्य ॥ सुप्रतीकंदिग्गजंमंगलंचतत्रसंपूज्य वृषारूढंदक्षि
णवामहस्तयोर्वरत्रिशूलधरंत्रिनेत्रंशुक्लमीशानंध्यात्वा ॥ एह्योहिविश्वेश्वरनस्त्रिशूलकपालखट्वांगधरेणसार्धं ॥ लोकेनयज्ञेश्वरय
ज्ञसिद्ध्यैगृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ भोईशानेत्यादिईशानंकलशेआवाह्य ॥ श्वेतांपताकांश्वेतध्वजंच ॥ अभित्वादेवसवित
रित्याजीगर्तिःशुनःशेषःसवितागायत्री ॥ ॐ अभित्वादेवसवित० इत्युच्छयेत् ॥ तमीशानमितिगंधादिभिरभ्यर्च्य ॥ वृष
स्कंधसमारूढशूलहस्तत्रिलोचन ॥ आवाहयामियज्ञेस्मिन्पूजेयंप्रतिगृह्यतां ॥ सर्वाधिपोमहादेवईशानःशुक्लईश्वरः ॥ शूल
पाणिर्विरूपाक्षस्तस्मैनित्यंनमोनमः ॥ इतिध्यात्वा ॥ ईशानायसांगायेत्यादिबलिंदद्यात् ॥ ॥ ततआचम्यईशानपूर्वयो
र्मध्येअधउद्दिश्यअनंतशयनासीनंफणासहस्रमंडितंपद्मशंखधरोर्ध्वाधोदक्षिणकरद्वयं चक्रगदाधरोर्ध्वाधोवामकरद्वयमनंतं

ध्यात्वा ॥ एहोहिपातालधरामरंद्रनागागनाकिन्नरगीयमान ॥ यक्षोरंगेद्रामरलोकसंघेरनंतरक्षाध्वरमस्मदीयं ॥ भोअनंतइ
 हागच्छेत्यादिअनंतमावाह्यश्वेतांपताकांश्वेतध्वजंच ॥ आयंगौःसार्पराक्षीसर्पागायत्री ॥ ॐ आयंगौःपृथ्नि० इत्युच्छयेत् ॥
 तेनैवमंत्रेणशेषंगंधादिभिरभ्यर्च्य ॥ योसावनंतरूपेणब्रह्मांडंसचराचरं ॥ पुष्पवद्भारयेन्मूर्ध्नि तस्मै नित्यं नमो नम इति नत्वा सां
 गायेत्यादिमाषभक्तबलिंदद्यात् ॥ ॥ तत आचम्य पश्चिमनिर्ऋतिमध्ये ऊर्ध्वमुद्विश्य अक्षसूत्रकुशमुष्टिधरोर्ध्वो धोदक्षिणकर
 इयं सुवर्णकमंडलुधरोर्ध्वो धो वामकर इयं चतुर्मुखं श्रुजटिलं वोदं सुवर्णवर्णब्रह्माणं ध्यात्वा ॥ एहो हिसर्वोधिपते सुरेंद्रलो
 केन सार्धं पितृदेवताभिः ॥ सर्वस्य धाता स्वमितप्रभावो विशाध्वरनः सततं शिवाय ॥ भो ब्रह्मन् इहा गच्छेत्यादि ब्रह्माणं सांगमि
 त्याद्यावाह्यरक्तांपताकां रक्तध्वजंच ॥ ब्रह्मजज्ञानं गोतमो वामदेवो ब्रह्मा त्रिष्टुप् ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथ० अनेनोच्छयेत् ॥ तेनै
 व ब्रह्माणंगंधादिभिरभ्यर्च्य ॥ पद्मयोनिश्चतुर्भुवि वेदावासः पितामहः ॥ यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्त्रस्तस्मै नित्यं नमो नम इति नत्वा सां
 गायेत्यादिबलिंदद्यात् ॥ अन्येतुस्योनापृथिवीति पृथ्वीं संपूज्य तेनैव ध्वजपताकां स्थापनं कुर्वति ॥ रूपनारायणमते ईशानपूर्वयोर्म
 ध्ये ब्रह्मपूजनं ॥ तत आचम्य मंडपमध्ये अत्युच्चदंडोदशहस्तदीर्घस्त्रिहस्ताय तोमहाध्वजो विचित्रवर्णः ॥ इंद्रस्य वृष्ण इत्यस्येद्रो
 प्रतिरथ इंद्रस्त्रिष्टुप् ॥ ॐ इंद्रस्य वृष्णो० इति संस्थाप्य ॥ ब्रह्मजज्ञानमिति मंत्रेण तत्रैव ब्रह्मपूजनं कार्यं ॥ ततो मंडपस्य षोडश
 स्तंभेषु सार्धं भ्योदेवेभ्यो नमः । वंशेषु किन्नरेभ्यो नमः । पुष्टपद्मगेभ्यो नम इति पूजयेत् ॥ ॥ ततो मंडपाद्बहिः पूर्वस्यां दिशि किं
 चिद्भूमिमुल्लिख्य तत्रोपविश्य ॥ त्रैलोक्येयानि भूतानि स्थावराणि चराणि च ॥ ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्धं रक्षां कुर्वतु तानि मे ॥ देव

दानवगंधर्वायक्षराक्षसपन्नगाः ॥ ऋषयोमनवोगावोदेवमातरएवच ॥ सर्वममाध्वरेरक्षांप्रकुवतुमुदान्विताः ॥ ब्रह्माविष्णु
श्चरुद्रश्चक्षेत्रपालगणैःसह ॥ रक्षंतुमंडपंसर्वेद्यंतुरक्षांसिसर्वतः ॥ त्रैलोक्यस्थथावरेभ्योभूतेभ्योनमः ॥ त्रैलोक्यस्थचरेभ्योभू
तेभ्योनमः ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ विष्णवेनमः ॥ शिवायनमः ॥ देवेभ्योनमः ॥ दानवेभ्योनमः ॥ गंधर्वेभ्योनमः ॥ यक्षेभ्यो
नमः ॥ रक्षोभ्योनमः ॥ पन्नगेभ्योनमः ॥ ऋषिभ्योनमः ॥ मनुष्येभ्योनमः ॥ गोभ्योनमः ॥ देवमातृभ्योनमः ॥ इतिप्र
त्येकंसंपूज्यपूर्वमंत्रैरेभ्योभूमौमाषभक्तबलिंदद्यात् ॥ २५३ ॥ अथशांतिहोमः ॥ ॥ ६३ ॥

श्रीः ॥ ततोदेशकालौस्मृत्वाप्रतिमापिंडिकादिषुन्यूनाधिकपाषाणप्राणिवधादिदोषपरिहारार्थंशांतिहोमंकरिष्येइतिसंक्
ल्याग्निस्थापनादिविधायान्वाधानंकुर्यात् ॥ २५३ ॥ अथशांतिहोमः ॥
ताःस्थाप्यदेवंच ५ एताःपंचदेवताःप्रत्येकंअष्टाधिकशतसंख्याकाभिर्घृताक्ततिलाहुतिभिर्घृतेशेषेणस्विष्टकृतमित्यादि ॥ क्र
मेणहोममंत्राः ॥ परंमृत्योःसंकुसुकोमृत्युरोगास्त्रिष्टुप् ॥ घृताक्ततिलहोमेवि० ॥ त्र्यंबकं० ॥ चरणंपवित्रं ॥ स्याप्यदेवमंत्रःइदंविष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री ॥
सिष्ठस्त्र्यंबकोनुष्टुप् ॥ घृताक्ततिलहोमेवि० ॥ इदंविष्णु० ॥ विष्णोर्नुकं० इतिनारायणस्य ॥ शिवपक्षे ॥
घृताक्ततिल० ॥ इदंविष्णु० ॥ विष्णोर्नुकं० इतिनारायणस्य ॥ शिवपक्षे ॥ ॥ ६३ ॥

तत्पुरुषायविद्महेइतिशिवस्य० ॥ स्विष्टकृदादिहोमशेषसमापयेत् ॥ इतिशांतिहोमः ॥ ॥ ६३ ॥

॥ २५४ ॥ देवहस्तेकंकणबंधनेजलाधिवसेचवासुदेवीप्रतिष्ठाप्रयोगेविशेषः ॥

आचार्ये.कौतुकबंधनकरिष्येइतिसंकल्प्यदर्भेकुचैउदकुंभनिधायदशतंतुमितंपंचागुलमष्टांगुलंवा कार्पाससूत्रहरिद्राक्तंसाक्षतकास्यपात्रेनिधायकुं
भोदकेनसूत्रमभिपिचेत्एभिर्मन्त्रैः ॥ अभिमीळइतिनवर्चससूक्तस्यमधुच्छंदाअग्निर्गायत्री ॥ सूत्रप्रोक्षणेविनियोगः ॥ ॐ अग्निमीळे ॥ आ
पोहिष्टेतिस्त्रिंशत्पञ्चःसिधुद्वीपआपोगायत्री ॥ एतोन्विद्रभितितिसृणामांगिरसस्तिरश्वीद्रोनुष्टुप् ॥ स्वादिष्टयेतिदशर्चससूक्तस्यमधुच्छंदाः
पवमानःसोमोगायत्री ॥ रक्षोहणमितिपंचविशर्चससूक्तस्यभारद्वाजःपाथूरक्षोहामिस्त्रिष्टुप् ॥ रात्रीव्यख्यदित्यष्टर्चससूक्तस्यकुशिकःसौभरिपुत्रो
रात्रिर्गायत्री ॥ कृणुष्वपाजइतिपंचदशर्चससूक्तस्यगौतमोवामदेवोरक्षोहामिस्त्रिष्टुप् ॥ तरत्समंदीतिचतसृणामवत्सार.पवमानसोमोगायत्री ॥
सहस्रशीर्षेतिपोळशर्चससूक्तस्यनारायणःपुरुषोनुष्टुप्अंलान्त्रिष्टुप् ॥ विष्णोर्नुकमितिपणामौचथ्योदीर्घतमाविष्णुस्त्रिष्टुप् ॥ परोमात्रयेतिसप्ता
नामैत्रावरुणिर्वसिष्ठोविष्णुस्त्रिष्टुप् ॥ हिरण्यवर्णाभितिपंचदशर्चससूक्तस्यआनंदकर्दमचिकलीतिदिरासुतात्रपयःश्रीर्देवताआद्यास्त्रिंशोनुष्टुभ त
तएकाप्रस्तारपंक्तिःततोद्वित्रिष्टुभौततोष्टावनुष्टुभ अंल्यप्रस्तारपंक्तिः ॥ यज्जाग्रतइतिपण्णांशिवसंकल्पमन्त्राणांप्रजापतिर्मनास्त्रिष्टुप् ॥ विहिहोत्रेति
पंचानांवामदेवोवायुरनुष्टुप् ॥ मुंचामित्वेतिपंचानांप्राजापत्योयक्ष्मनाशनइद्रस्त्रिष्टुवंलानुष्टुप् ॥ स्योनापृथिवीमेधातिथिःपृथिवीगायत्री ॥ द्र
विणोदाइत्यस्यांगिरसःकुत्सोद्रविणोदाअभिस्त्रिष्टुप् ॥ सवितापश्चातादित्यस्यनाभागःसवितात्रिष्टुप् ॥ नवोनवइतिसूर्यासावित्रीसूर्यासावित्री
त्रिष्टुप् ॥ उल्लूकयातुमितिवसिष्ठइद्रस्त्रिष्टुप् ॥ पिशंगभृष्टिमित्यस्यदैवोदासिःपुरुषरूपइंद्रोगायत्री ॥ एभिर्मन्त्रैःसूत्रमभिपिच्य ॥ जातवेदसइ
त्यस्यजातवेदाअभिस्त्रिष्टुप् ॥ इत्यनयासूत्रंगंधेनानुलिप्य ॥ विश्वेत्तातइत्यस्यभार्गवोनुमेधइंद्रोजगती सूत्रबंधनेवि० ॥ इतिमंत्रेणभगवतोदक्षि
णहस्तेबध्नीयात् ॥ ततोधान्यराशौजलद्रोणिकटाहंवाजलभांडंनिधायएतेपामभावेजलधारार्थंशिक्यादिसंपाद्यद्रोण्यादिकंगंधोदकेनापूर्यतन्मध्ये

अष्टाविंशतिदर्भनिर्मितकूर्चनिधाय यदत्रसंस्थितमिति भूतशुद्धिविधायतस्मिन्कूर्चेमूलमंत्रेणहरिहरंवाभावयित्वाचक्रमुद्रांप्रदर्श्य जलद्रोणीतोद
क्षिणादिशिधान्यपुंजोपरिवत्खद्वयवेष्टितंकलशंएकवत्खवेष्टितंकरंकंकलशस्थापनमंत्रैःस्थापयेत् ॥ तत्रकलशेब्रह्मजज्ञानंगौतमोवामदेवोब्रह्मात्रि
ष्टुपंकलशेब्रह्मावाहनेवि० ॥ ॐ ब्रह्मणेनमःब्रह्माणमावाहयामिइत्यावाह्यकरकेनाममंत्रेणसुदर्शनमावाहयेत् ॥ ॐ सुदर्शनायनमःसुदर्शनमावा
हयेत् ॥ अग्रतःसुवर्चसंदीपंदद्यात् ॥ जलांतःशमीपीठस्थापयित्वातदुपरिवत्समास्तीर्यप्रतिमांवत्सेणाच्छाद्यकुशैरावेष्टयप्राञ्जुखीमुदञ्जुखीवाज
लेधिवासयेत् ॥ अयंकमलावासइत्यागमप्रसिद्धिः ॥ अयमेवसरोजसंघातनामकाधिवासः ॥ जलद्रोण्यभावेसंततधारांकुर्यात् ॥ जलाधिवासंएक
रात्रंयामवागोदोहनमात्रंवाकुर्यात् ॥ ॥ जलाधिवाससूक्तानिनु ॥ अतोदेवाइतिपणांमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री ॥ विष्णोर्नुकमितिसप्तदशर्च
स्यसूक्तस्यदीर्घतमाविष्णुर्जगतीसप्तम्यादितिसृणामिद्राविष्णूआद्याःपट्त्रिष्टुभः ॥ अस्यवामस्येतिद्विपंचाशद्वचस्यसू० दीर्घतमाविश्वेदेवास्त्रिष्टुपत्
तीयापंचमीसप्तमीनारुतोत्यानांतिमृणामिद्राविष्णूआद्याःपट्त्रिष्टुभः ॥ अतोदेवाइतिपणांमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री ॥ जलाधिवासंएक
धूमसोमौपंचत्रिश्वाअग्निवायुसूर्याःपट्त्रिश्वावाक्सप्तत्रिश्पट्त्रिश्वाःसूर्यएकोनचत्वारिश्वाः कालचक्रंचत्वारिश्वाः सरस्वतीएकचत्वारिश्वाःशक्र
स्तारपंक्तिःएकपंचाशद्यनुष्टुप् ॥ जलाधिवासनेवि० ऋ० ५२ ॥ ममाग्नेवर्चइत्येकविंशानामाद्यानांविहव्यःततःसप्तानांपरमेष्ठीप्रजापतिः
ततोत्यानांयज्ञोनामप्रजापतिःआद्यानांनवानांविश्वेदेवाःअपाणांभाववृत्तमनुष्टुप्नवमीजगती ॥ ऋ० २१ ॥ आशुःशिशानइतित्रयोदशर्चस्यसू
क्तस्यइंद्रोप्रतिरथऋषिःइंद्रोदेवताचतुर्थ्याबृहस्पतिस्त्रिष्टुवंत्यानुष्टुप् १३ ॥ शंनइद्राग्नीइतिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिर्विसष्टोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप्

१५ ॥ रक्षोहणमितिपंचविशर्चस्यसूक्तस्यभारद्वाजःपायूरक्षोहामिस्त्रिष्टुप् २५ ॥ आनोभद्राइतिदशर्चस्यसूक्तस्यराहूगणोगोतमोविश्वेदेवाःआद्याः
 पंचजगत्यःपष्ठीविराट्स्थानान्त्रिष्टुप्सप्तमीजगतीअष्टम्याद्यास्त्रिस्त्रिष्टुभः १० ॥ स्वस्त्ययनमितिद्वयोःस्वस्त्यात्रेयोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् २ ॥ इमारुद्रा
 येत्येकादशर्चस्यसूक्तस्यकुत्सोरुद्रोजगती ११ ॥ मुंचामित्वेतिपंचर्चस्यसूक्तस्ययक्ष्मनाशनोनामप्रजापतिपुत्रोराजयक्ष्मनाशनइंद्रस्त्रिष्टुवंत्यानुष्टुप्
 ५ ॥ रात्रीव्यख्यदित्यष्टर्चस्यसूक्तस्यकुशिक.सौभरिपुत्रोरान्त्रिर्गायत्री ८ ॥ एतानिसूक्तानिजपेयुः ॥ तत'अथर्वशीर्षयथाशक्त्वावर्तयेत् ॥ एवंज
 लाधिवासंसंपाद्यसाक्षतहस्ताचार्योदिसहितःसपत्नीकोयजमान. मंगलतूर्यनिनादेनसुवासिनीमंगलगीतसहितःभद्रंकर्णेभिरितिमंत्रधोपणमहामं
 डपप्रादक्षिण्येनपश्चिमद्वारेणमंडपप्रविश्यवेद्याःपश्चिमतउपविश्याचम्यप्राणानायम्यदेशकालौस्मृत्वामंडपप्रतिष्ठांकरिष्येइतिसंकल्प्य ॥ गणेशं
 पूज्यअथवास्तुयजननवग्रहमस्वार्थवृत्तैराचार्योदिभिर्भयथावकाशप्रदेशेकुंडातरेस्थंडिलेवाएकतंत्रेणपृथग्वावास्तुयांगग्रहमखंचकारयेत्इतिविशेषः॥

॥ २५५ ॥ पंचकुंडीपक्षेन्वाधानादि ॥

श्री ॥ पूर्वईशानकुंडस्थमुख्याचार्य.उपरिमेखलायांइदंविष्णुरितिविष्णुं मध्यमेखलायांब्रह्मजज्ञानमितिब्रह्माणं अधोमेखलायांकद्रुद्रायेतिरुद्रं
 योन्यांगौरीर्मिमायेतिगौरीचावाह्यपूजयेत् ॥ स्वगृह्यविधिनाकुंडसंस्कारपूर्वमग्निप्रतिष्ठाप्यअग्नेर्गर्भाधानादिसंस्कारार्थव्याहृत्याहुतीःप्रतिसंस्कार
 मष्टाष्टसख्याकाहुत्वा ॥ ततःप्रागाद्याचार्योःप्रागादिकुंडहोमंकरिष्येइतिसंकल्प्य ॥ उपरिवत्स्वकुंडसंस्कारंकृत्वामुख्याचार्यकुंडात्संस्कृतमग्नि
 अभिनाग्नि.समिध्यतइतिमंत्रेणस्वेस्वेकुंडेप्रतिष्ठापयेथुरग्नेर्ध्यानोदिचक्षुर्युः ॥ मुख्यकुंडाचार्य.स्वकुंडस्यैशान्यांशांतिकलशंविधिवत्स्थापयेत् ॥ प्रा
 गाद्याचार्यो.स्वस्वकुंडस्यैशान्यांसंपातोदकार्थशांतिकलशचस्थापयेयुः ॥ तत्रैक.कलशःसंपातोदकार्थ ॥ द्वितीयकलशेसाक्षतपात्रेमूर्तिमूर्त्यधिप

तिलोकपालं चावाहयेत् ॥ तत्प्रकारः ॥ पूर्वकुण्डसेशानकलशे पृथिवीमूर्तिआवाहयामि १ पृथिवीमूर्त्यधिपतिशर्व २ लोकपालमिदं ३ अग्नि
मूर्ति ४ अग्निमूर्त्यधिपतिपशुपति ५ लोकपालं अग्नि ६ इति पूर्वकुण्डे पट् ॥ दक्षिणकुण्डैककलशे यजमानमूर्ति १ यजमानमूर्त्यधिपतिउग्रं २ लो
कपालं चरुणं ३ सूर्यमूर्ति ४ सूर्यमूर्त्यधिपतिरुद्रं ५ लोकपालं निर्रति ६ इति पट् ॥ पश्चिमकुण्डैककलशे जलमूर्ति १ जलमूर्त्यधिपतिभवं २ लो
पालं कुवेरं ३ आकाशमूर्ति ४ वायुमूर्ति ५ वायुमूर्त्यधिपतिईशानं ६ लोकपालं ईशानं ७ इत्युत्तरकुण्डे पट् आवाह्यपूजयित्वा अन्वाधानं कुर्यात् ॥ तत्रादौ
मुख्यकुण्डे आचार्यः समिद्धयमादाय विष्णुप्रतिष्ठांगतया विहितहोमं कर्तुं तत्र देवतापरिग्रहार्थमन्वाधानं करिष्ये अस्मिन्नन्वाहिते माविद्याद्याज्यभागांत
मुक्त्वा (मुख्यकुण्डे मूर्तिपानसंति) ॥ प्रधानं स्थाप्य देवं विष्णुं पलाशोद्वराश्च तथशस्यपामार्गं समित्तिलचर्वाज्यैः प्रतिद्रव्यं १०८ तिलद्रव्येण ॥ तत्रादौ
संख्यया चायक्ष्ये ॥ पिंडिकां २८ संख्यया तिलद्रव्येण लक्ष्मीगरुडं च प्रत्येकं २८ तिलद्रव्येण ब्रह्मादिमंडले देवताः प्रत्येकं १० संख्यया २८
प्रणवादिन्यासांतर्गततत्त्वानामाप्यायनार्थं प्रति तत्त्वं १० संख्यया लिङ्गोक्ते देवतास्तिलद्रव्येण यक्ष्ये ॥ (अथवा प्रणवादिन्यासमंत्राणामाप्यायना
र्थं विष्णुं १०८ तिलैश्चैव इति त्रिविक्रमः) ॥ प्रतिमायाः गर्भाधानादिपोडशसंस्कारसिद्धयर्थं प्रजापतिअष्टा ८ हुतिसंख्यया तिलद्रव्येण व्याहृतिमं
त्रेण यक्ष्ये ॥ तथा च शांत्यर्थं प्रजापति १०८ तिलद्रव्येण यक्ष्ये ॥ शेषेण स्विष्टकृतमित्यादि ॥ ॥ अथ पूर्वकुण्डे आज्यभागांत मुक्त्वा अत्र प्रधानं पृ
थिवीमूर्तिपृथिवीमूर्त्यधिपतिशर्वलोकपालं अग्निचप्रत्येकं पलाशोद्वराश्च तथशस्यपामार्गं समित्तिल
चर्वाज्यैः प्रतिद्रव्यं ८ यक्ष्ये ॥ स्थाप्य देवं विष्णुं तैरेव द्रव्यैः प्रत्येकं १०८ पिंडिकां २८ तिलद्रव्येण ॥ लक्ष्मीगरुडं प्रत्येकं २८ तिलद्रव्येण ॥
प्रजापतिं १०८ तिलद्रव्येण शेषेण स्विष्टकृतमित्यादि ० ॥ ॥ दक्षिणकुण्डे प्रधानं ॥ यजमानमूर्ति यजमानमूर्त्यधिपतिउग्रं यमसूर्यमूर्ति सूर्य

मूर्त्याधेपतिरुद्रं लोकपालं निर्वर्त्तित्वा प्रत्येकं पलाशोदुवराश्वत्थशम्यपामार्गसमितिलचर्वाज्यैः प्रतिद्रव्यं ८ स्थाप्य देवं विष्णुं तैरेव द्रव्यैः प्रत्येकं १०८ पिडिकां २८ तिलद्रव्येण लक्ष्मीगरुडं च प्रत्येकं २८ तिलद्रव्येण प्रजापतिं १०८ तिलद्रव्येण ॥ शेषेणेत्यादि ॥ अथपिष्टमकुडप्रदानं ॥ प्रतिद्रव्यं १०८ पिडिकां २८ तिलद्रव्येण लक्ष्मीगरुडं च प्रत्येकं २८ तिलद्रव्येण प्रजापतिं १०८ तिलद्रव्येण शेषेणेत्यादि ० ॥ अथोत्तरकुडप्रदानं सोममूर्तिं सोममूर्त्याधिपतिमहादेवं लोकपालं कुवेरं आकाशमूर्तिं आकाशमूर्त्याधिपतिं भीमं लोकपालं ईशानं प्रत्येकपूर्वोक्तद्रव्यैः ८ स्थाप्य देवं विष्णुं तैरेव द्रव्यैः प्रतिद्रव्यं १०८ तिलद्रव्येण लक्ष्मीगरुडं च प्रत्येकं २८ तिलद्रव्येण प्रजापतिं १०८ तिलद्रव्येण शेषेणेत्यादि ॥ इति पंचकुंडीपक्षेन्वाधानं ॥

॥

॥

॥ २५६ ॥ अथ पंचकुंडी होममंत्रद्वारा पालजपक्रमः ॥

सकृद्विरितिसामान्येन क्रव्याद्युक्त्वासमिदादिहोमं कुर्यात् ॥ ईशानकुंडे मुख्य आचार्य आज्यभागांतं कृत्वा ॥ अस्य वाक्यं आज्यहोमे सुवेणाज्यशेषं प्रति कुंडं स्थापितशान्तिकलशे पुनरेयुः ॥ तत्र होममन्त्राः ॥ विष्णु स्थाप्यश्चेत्तद्विष्णुरिति मूलमंत्रः तैर्नैव होमः ॥ ना रायणश्चेत् विष्णोर्नुकमिति मन्त्रेण होमः ॥ ह्रींश्च तैलक्ष्मीश्च पत्न्यौ अहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरूपं अश्विनौ व्यात्तं इष्टमनिपाण अमुं मनिपाण सर्वलोकमनिपाण स्वाहा इति पिडिकामंत्रेण होमः ॥ त्यागस्तु यजमानेन प्रति कुंडं आदावेव कर्तव्यः ॥ हिरण्यवर्णाभितिलक्ष्म्याः ॥ तत्पुरुपायवि

अहेसुवर्णपक्षायधीमहि ॥ तन्नोगरुड.प्रचोदयात् (त्यम्बुवाजिनमितिवा इंद्रमित्रमितिवा) गरुडस्यहोममंत्रः ॥ ब्रह्मादिसर्वतोभद्रमंडलदेवता
 नांस्थापनोक्तमत्रैर्नामभिर्वाहोम.॥अथन्यासहोमःसचन्याससमयएवान्येनऋत्विजाकर्तव्य. ॥ सचत्रिविक्रममतेयदिसमुदायेनक्रियतेतदापराय
 विष्णवेस्वाहेतितैरष्टोत्तरशतंकर्तव्य.विष्णवइदंनममेतित्यागः ॥ प्रतिष्ठामयूखेतुपरायशिवात्मनेइतिशैवे ॥ एवंसूर्यादिपुत्रिशेषः ॥ विष्णुप्र
 तिमाया.गर्भाधानादिपोडशसंस्कारसिद्धयर्थप्रतिसंस्कारंअष्टाहुतिसंख्ययासमस्तव्याहृतिभिर्होमः ॥ तत्रपूर्वकुंडेआचार्यःआज्यभागातं कृत्वा ॥ शान्त्यर्थव्या
 हृतिहोम. ॥ सोपिदेवस्थापनानंतरंकर्तव्यः ॥ अथप्राच्यादिकुंडेहोममंत्राः ॥ तत्रपूर्वकुंडेआचार्यःआज्यभागातं कृत्वा ॥ शान्त्यर्थव्या
 त्यादिक्रज्याद्युक्त्वायजमानेनत्यागेकृतेप्रधानहोमंकुर्यात् ॥ प्रतिद्रव्यंहोमांतेदेवंपादनाभिधिरःसुस्पृशेत् ॥ आज्यहोमकृत्तुआज्यशेषंप्लुवेणकिं
 चिदुत्तरकलशेनिनयेत् ॥ प्रधानहोममंत्राः ॥ सोनापृथिवीतिपृथिवीमूर्ते. ॥ ॐ सोनापृथिवी ॥ अज्यहोमकृत्तुआज्यशेषंप्लुवेणकिं
 त्रंहोतव्या. ॥ अघोरेभ्यइतिपृथिवीमूर्त्यधिपतेःशर्वस्य ॥ त्रानारमिद्रमितिलोकपालस्य ॥ अग्निदूतमित्यग्निमूर्तेः ॥ तेजःपशूनामित्यग्निमूर्त्यधि
 पतेःपशुपतेः ॥ अन्नआयाहीतिलोकपालस्याग्नेः ॥ त्रानारमिद्रमितिलोकपालस्य ॥ अग्निदूतमित्यग्निमूर्तेः ॥ तेजःपशूनामित्यग्निमूर्त्यधि
 रायणश्चेत्तदाविष्णोर्नुकमितिहोमः ॥ ह्रीश्चतेलक्ष्मीश्चेतिपिण्डिकामंत्रः ॥ विष्णुःस्थाप्यश्चेत्तदाइदंविष्णुरितिहोमः १०८ ना
 रुडस्य ॥ समस्तव्याहृतीः १०८ ततःस्विष्टकृत्तृकादशप्रधानाहुतिमंत्राः ॥ पूर्वद्वारेजपः ॥ श्रीसूक्तं पवमानं सोमोर्धेनुं पदं ऋचः कनिकददिति
 सूक्तं शनइंद्राग्नीसूक्तं रक्षोहणंसूक्तं रात्रीसूक्तं इमारुद्रायेतिसूक्तं पुरुषसूक्तं च ॥ ॥ दक्षिणकुंडेहोममंत्राः ॥ यस्यवाक्यमितिऋज्याद्युक्तेय
 जमानेनद्रव्यत्यागेकृतेहोमंकुर्यात् ॥ प्रतिद्रव्यंदेवंस्पृशेत् ॥ आज्यशेषंपकिचिदुत्तरकलशेनिनयेत् ॥ ततोहोममंत्राः ॥ असिहिवी इतियजमानमू
 र्तेः ॥ त्वमिद्रसजोपसइतियजमानमूर्त्यधिपतेरुद्रस्य ॥ यमायसोममितिलोकपालस्यमस्य ॥ उदुत्यमितिसूर्यमूर्तेः ॥ आवोराजानमितिसूर्य

मूर्त्यधिपतेरुद्रस्य ॥ असुन्वंतमितिलोकपालस्यनिर्ऋतेः ॥ स्थाप्यदेवस्येदंविष्णुरिति १०८ ह्रींश्चतेइतिपिण्डिकामंत्रः २८ ॥ हिरण्यवर्णोमितिल
 क्ष्म्याः २८॥तत्पुरुपायेतिगरुडस्य २८ ॥ व्याहृतिभिःप्रजापतेः१०८ इति ॥ दक्षिणद्वारेजपः ॥ पुरुषसूक्तं आशुःशिशानसूक्तं इमारुद्रायस्थिरिति
 ४ ऋच सोमोधेनुमिति ६ ऋचः कौष्मांड्यः ॥ अथपश्चिमकुंडेहोममंत्राः ॥ यस्यवाक्यमित्युक्त्वा आपोहिष्ठेतिजलमूर्तेः ॥ नमोभवाय
 चरुद्रायचस्वाहाइतिजलमूर्त्यधिपतेर्भवस्य ॥ इममेवरुणइतिलोकपालस्य ॥ वातआवातुइतिवायुमूर्तेः ॥ तमीशानमितिवायुमूर्त्यधिपतेरीशानस्य ॥
 आनोनिथुद्विरितिलोकपालस्यवायोः ॥ स्थाप्यदेवस्येदंविष्णुरिति १०८ ह्रींश्चतेइतिपिण्डिकामंत्रः २८॥ हिरण्यवर्णोमितिलक्ष्म्याः २८॥ तत्पुरु
 पायेतिगरुडस्य २८॥ व्याहृतिभिःप्रजापतेः १०८ स्विष्टकृत् ॥ इतिपश्चिमकुंडेहोमः ॥ पश्चिमद्वारेजपः ॥ रुद्रसाम नतमंहोष्टौ पुरुषसूक्तं कद्रुद्रा
 येतिरुद्रसूक्तं रक्षोहणंसूक्तं ॥ अथोत्तरकुंडेहोममंत्राः ॥ यस्यवाक्यमित्युक्त्वा ॥ वयंसोमव्रतेइतिसोममूर्तेः ॥ तत्पुरुपायविच्चहेइतिरुद्रगाय
 त्र्यासोममूर्त्यधिपतेर्महादेवस्य ॥ अभित्यंदेवमितिकुबेरस्य ॥ आदिप्रत्नस्येत्याकाशमूर्तेः ॥ भृगोर्नभीमइत्याकाशमूर्त्यधिपतेर्भमस्य ॥ अभित्वादेव
 सवितरितिलोकपालस्य ॥ इदविष्णुरितिविष्णो. १०८ ॥ ह्रींश्चतेइतिपिण्डिकायाः २८ ॥ हिरण्यवर्णोमितिलक्ष्म्याः २८॥तत्पुरुपायेतिगरुडस्य
 २८॥ व्याहृतिभिःप्रजापतेः१०८स्विष्टकृत् ॥ उत्तरद्वारस्थौ नारायणार्थवर्षीर्षे शिवाथर्वशीर्षे नीलरुद्रं मधुवातादे ऋचः शंनंद्रामीइतिसूक्तंच

॥ २५७ ॥ अथरागासादस्थिरप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥

श्रीः॥ अथप्रतिष्ठेदौवाधायनत्रिविक्रमानुसारेणनिर्णयसिंधूक्तःसप्रासादसर्वदेवस्थिरप्रतिष्ठाप्रयोगोलिख्यते ॥ कर्ताशुभेद्विपो
 डशहस्तंद्वादशहस्तंवामंडपंकृतवामध्येवेदिमंडपनवांशविस्तृतांहस्तोच्चांतत्पूर्वतोहस्तमात्रांत्रिवप्रांग्रहवेदिर्नैऋत्येवास्तुवेदिहस्त

मात्रां आग्नेये हस्तमात्रं कुण्डं स्थंडिलं वा विरच्य मध्ये वेद्यां सर्वतो भद्रं च कृत्वा तदुपरिवितानकदलीस्तं भादिना भूषयित्वा प्रतिष्ठादि
 नात्पूर्वदिने सद्यो वासं कल्पं कुर्यात् ॥ तत्र यजमानः कूर्ष्मांडहोमादिनाऽऽत्मतनुं पावयित्वासमार्यः स्वासने उपविश्य चाम्यग्राणा
 नायम्यदेशकालौ स्मृत्वा अस्मिन्लिङ्गे मूर्तौ वा देवकलासान्निध्यार्थं दीर्घायुर्लक्ष्मीसर्वकामसमृद्ध्यक्षय्यसुखकामोऽहं वास्तुग्रहस
 हितां प्रासादपिंडिकापरिवारयुतां शिवप्रतिष्ठां विष्णुप्रतिष्ठां वा करिष्ये ॥ तदंगतया विहितं स्वस्तिवाचनं मातृकापूजनं नां दीश्राद्धं
 आचार्यादिवरणं करिष्ये आदौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं महागणपतिपूजनं च करिष्ये इति संकल्प्य आचार्यवरणांतं कृत्वा वृतानृत्विजो
 मधुपर्केणार्हयित्वा वस्त्रालंकारादिभिः संपूज्य यजमानः सत्त्विक्पूर्णकुंभदध्यक्षतफलपुष्पसुवासिनीभिः सहितो मंगलधोषेण शा
 कुनसूक्तं पठन् मंडपप्रादक्षिण्येन गत्वा पश्चिमद्वारेण मंडपं प्रविश्य वेद्यानैर्ऋत्ये उपविशेत् ॥ अथाचार्यो वेद्याः पश्चिमत उपविश्य
 देशकालौ स्मृत्वा अमुकदेवप्रतिष्ठांगत्वेन यजमानेन वृतो हं विहितकर्म करिष्ये ॥ शरीरशुद्ध्यार्थं धिकारार्थं आसनादिन्यासा
 न्पवनं पावनं च करिष्ये इति संकल्प्य यदत्रेति सर्पपान्विकीर्य ॥ शुचीं वो हव्या ० ॥ अंसेष्वा मरुतः स्वादयो वो वक्षः सुरुक्मा उं पशिश्नि
 याणाः ॥ विविद्युतो न वृष्टिर्भीरु चाना अनुस्वधामा युधैर्यच्छमानाः ॥ प्रबुध्या वर्तते महौ सिप्रनामानि प्रयज्य वस्तिरध्वं ॥ सह
 सिधुं दम्यं भागमेतं गृहमेधीर्यं मरुतो जुषध्वं ॥ इति पंचगव्येन आपो हिष्ठेति कुशोदकेन च भूमिं प्रोक्ष्य स्वस्त्ययनं तार्क्ष्यं ० अंहो
 मुच० देवा आयांतु यातु धाना अपयांतु विष्णो देवयजनं रक्षस्वेति भूमौ प्रादेशं कुर्यात् ॥ देशकालौ स्मृत्वा अमुकप्रतिष्ठांगत्वेन मं
 डपप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ मंडपसंभवे तत्पूजादिकं निर्वर्त्य प्राग्द्वारेण मंडपं प्रविश्य वेद्युत्तरतो जलाधिवासं कुर्यात् ॥ ४९ ॥

॥ २५८ ॥ अथाभ्युत्तारणसूक्तम् ॥

देशकालौ स्मृत्वा अस्याः प्रतिमायाः अंगप्रत्यंगसंधिसमुत्पन्नास्यान्निद्रांशकाश्यातपनिरासार्थं
संकल्प्य अग्निः सप्तमिति वर्गेण अग्निपदसहितेन पुनः अग्निपदसहितेन एकमावर्तनं भवति
विंशतिवारं वा पठित्वा सततजलधारां कुर्यात् ॥ अग्निः सप्तमिति सप्तसूक्तस्य सोचिको वैश्वानरस्त्रिष्टुप् ॥ अष्टशतवारमष्टा
ॐ सप्तैवाजं भरुं ददाति वीरं श्रुत्य कर्मनिष्ठां ॥ रोदसी विचरत्समं जन्तारो वीरकुक्षिं पुरंधिं ॥ अर्मसः समिदं स्तुभद्रामहीरोदसी आ
विवेश ॥ एकं चोदयत्समत्सु वृत्राणि दयते पुरुषि ॥ हृत्यंजरतः कर्णमावाह्यो निरदहृज्जरुथं ॥ अत्रिघर्म उरुष्यदंतर्न मे धं प्रजया
सृजत्सं ॥ द्वाद्विंशं वीरपेशां ऋषियः सहस्रासनोति ॥ दिवि हव्यमातं तानधामानि विभृता पुरुत्रा ॥ उक्थैर्ऋषयो विह्वयंतं नरो
यामनिबाधितासः ॥ वयो अंतर्निक्षेपतः सहस्रापरियातिगोनां ॥ विशं इळते मानुषीर्यामनुषो नहुपो विजाताः ॥ गांधर्वो पथ्याम
तस्य गव्यूतिर्धृत आनिषत्ता ॥ ब्रह्मं ऋभवं स्ततश्छुर्महामवो चामासुवृत्तिं ॥ प्रावजरितारं यविष्ठमहिद्रविणमायजस्व ॥ अग्निपदस
हितं सूक्तं ॥ ॐ अग्निः सप्तैवाजं भरुं ददात्यग्निर्वीरं श्रुत्य कर्मनिष्ठां ॥ अग्नीरोदसी विचरत्समं जन्तुमिनीरो वीरकुक्षिं पुरंधिं ॥ अग्नेर
भ्यो निरदहृज्जरुथं ॥ अग्निरात्रिघर्म उरुष्यदंतर्न मे धं प्रजयां सृजत्सं ॥ अग्निर्द्वाद्विंशं वीरपेशां ऋषियः सहस्रासनोति ॥
अग्निर्दिवि हव्यमातं तानाग्नेर्धामानि विभृता पुरुत्रा ॥ अग्निमुक्थैर्ऋषयो विह्वयंतं नरो यामनिबाधितासः ॥ अग्निं वयो अंत

रिक्षेपतंतोमिःसहस्रापरिचातिगोनां ॥ अग्निविशईळतेमानुषीर्याअग्निमनुषेनहुषोविजाताः ॥ अग्निर्गोधवीपृथ्यामतस्याग्नेर्ग
व्यूतिर्घृतआनिर्षत्ता ॥ अग्नयेब्रह्मऋभर्वस्ततश्चुरग्निमहामवोचामासुवृत्किं ॥ अग्नेप्रावजरितारंयविष्ठाग्नेमहिद्रविणमायजस्व ॥

॥ २५९ ॥ अथजलाधिवासः ॥

श्रीः ॥ हिरण्योपधानंदेवंपंचगव्यहिरण्यवदूर्वाश्वत्थपलाशपर्णान्युदकुंभेप्रक्षिप्यताभिरद्भिरापोहिष्ठेतिस्मृभिःहिरण्यव
र्णाःशुचयइतिचतसृभिःपवमानःसुवर्जनइत्यनुवाकेनचाभिषिच्य व्याहृतिभिरिदंविष्णुरितिचपुष्पफलयवदूर्वाःसमर्प्य नमस्ते
रुद्रमन्यवेइतिरुद्रेसमर्प्य रक्षोहणमित्यनेनदेवहस्तेकंकणंबद्ध्वावाससाच्छाद्य अवतेहेळोउदुत्तममितिजलेधिवासयेदितिबौधा
यनः ॥ ततोगोदोहनमात्रंस्थित्वादेवंनत्वा ॥ स्वागतंदेवदेवेशविश्वरूपनमोस्तुते ॥ शुद्धेपित्वदधिष्ठानेशुद्धिकुर्मःसहस्वतां ॥
इतिसंप्राथ्य उत्तिष्ठब्रह्मणस्पतइतिसत्त्विगुत्थाप्यअश्रुत्तारणंकुर्यात् ॥ ततोर्चामृदाद्वादशवारंजलेनचप्रक्षाल्यमंत्रवत्संगव्यंकृ
त्वा ॐ पर्यःपृथिव्यांपयओषधीषुपयोद्विष्यंतरिक्षेपयोधां ॥ पर्यस्वतीःप्रदिशःसंतुमह्यं ॥ आवोराजानमितिचसंस्नाप्य आप्या

१ अत्रविशेषः ॥ साचार्योयजमानोवेदनिनादतूर्यछत्रचामरादिरथादियानसहित.शिल्पशालांगत्वातत्रप्रतिमावस्त्रचंदनपुष्पादिनासंपूज्यशिल्पिनःप्र
तिमानिर्मायकान्वस्त्रगंधादिनासंतोष्यकुद्दालादिशिल्पिशस्त्राणिचहरिद्रादिनाभूषयित्वाविश्वकर्मणेनमइतिनत्वायानेप्रतिमामारोप्यशाकुंतसूक्तंपठेत् ॥
अथसाचार्योयजमानःदेवस्यसंमुखंस्थित्वादेराकालौसंकीर्त्यअस्यामूर्तौजलाधिवासाख्यकर्मकरिष्येइतिसंकल्प्यपुण्याहंवाचयित्वा ॥ यदत्रसंस्थितं०अर्चा
कर्मसमारभे ॥ इतिमंत्राभ्यांसर्षपान्विकीर्य ॥ शुचीवोहव्येतिजलाधिवासमंडपंपंचगव्येनप्रोक्ष्य ॥ आपोहिष्ठेतिशुद्धोदेकेनचप्रोक्ष्यअश्रुत्तारणंकुर्यात् ॥

यस्व० दधिक्राव्णो० तेजोसि० मधुवाता० आयंगौः० इतिपंचामृतैःसंस्नाप्य ॥ लिंगंचेत् नमस्तेरुद्र० इत्यष्टाभिःसंस्नाप्य
 घृतेनाभ्यज्योद्वर्तनेनोद्धृत्य उष्णोदकेनप्रक्षाल्य गंधदत्वासपल्लवैश्चतुर्भिःकुंभरापोहिष्ठेतिस्मिराकलशेव्वित्तिचम्रत्येकंसमु
 दूर्वाःप्रक्षिप्य ॥ आद्येसप्तमृदः द्वितीयेपुष्करपर्णशमीविकंकताश्मंतकत्वचःपल्लवांश्च तृतीयादिपुससधान्यानि पंचरत्नानि
 फलपुष्पाणि कुशदूर्वागोरोचनाः संपातोदकं सर्वौषधीः क्षिप्वा क्रमेण आपोहिष्ठा० ३ हिरण्यवर्णाः० ४ पवमानःसुवर्जनइत्य
 नुवाकेनचाभिपिच्यएककुंभेशमीपलाशवटखदिरबिल्वाश्वत्थविकंकतपनसाम्नशिरोधोद्वराणांपल्लवान्कपायांश्चक्षिप्वाअश्व
 त्थेवइत्यभिपिच्यपंचरलोदकेनहिरण्यवर्णाःशुचयः ४ इतिसंस्नाप्यआचमनंदत्वावस्त्रोपवीतादिदीपपर्यतपूजांते यवपिष्टदी
 पानष्टौदद्यात् ॥ मंत्राः ॐ हिरण्यगर्भःसमवर्तताग्नेभूतस्यजातःपतिरेकआसीत् ॥ सदाधारपृथिवीद्यामृतेमांकस्मैदेवायहविषा
 विधेम ॥ १ ॥ यआत्सदाबलदायस्यविश्वंउपासतेप्रशिष्यस्यदेवाः ॥ यस्यह्यायामृतंयस्यमृत्युःकस्मै० ॥ २ ॥ यःप्राणतोनिमि
 पतोमहित्वैकइद्राजजगतोबभूव ॥ यइशेअस्यद्विपदश्चतुष्पदःकस्मै० ॥ ३ ॥ यस्येमेहिमवन्तामहित्वायस्यसमद्रंसयसुहाहुः ॥
 यस्येमाःप्रदिशोयस्यबाहूकस्मै० ॥ ४ ॥ येनद्यौरुग्रापृथिवीचहृळ्हायेनस्वस्तभित्तयेननाकः ॥ योऽअंतरिक्षेरजसोविमानःक
 स्मै० ॥ ५ ॥ यंकंदसीअवसातस्तभानेअभ्यैक्षेतामनसारेजमाने ॥ यत्राधिसूरुर्उदितोविभातिकस्मै० ॥ ६ ॥ आपोह्यहृहृतीर्वि
 श्वमायनगर्भंदधानाजनयतीरुग्निं ॥ ततोदेवानांसमवर्ततासुरेकःकस्मै० ॥ ७ ॥ यश्चिदापौमहिनापृथपश्यदक्षंदधानाजनयती

जलाधिः
॥२५६॥

1100311

००॥

यज्ञे ॥ यो देवेष्वधि देव एक आसीत्कस्मै ॥ ८ ॥ इति ॥ ततः सुवर्णशलाकया तैजसपात्रस्थं मधुघृतं च गृहीत्वा चित्रं देवानां ० ते
जोसि शुक्रमस्य मृतमसि धामनामासि प्रियं देवानां मनां घृष्टं देवयजनमसि इति मंत्राभ्यां ॐ नमो भगवते तुभ्यं शिवाय हरये नमः ॥
हिरण्यरतसेविणो विश्वरूपाय ते नमः ॥ इति प्रत्येकमावृत्त्या दक्षिणसव्यनेत्रे लिखेत् ॥ अजंति त्वा ० इति मध्वक्तां जनेनेत्रे अङ्-
त्वा देवस्य त्वासवितुः प्रसवे ० इन्द्रस्येन्द्रियेणानज्मीति मध्वाज्यशर्कराभिरङ्त्वा तेनैवां जनेन पुनरंजयेत् तहस्ताभ्यां अनज्मीति ॥
लिङ्गे तु स्वर्णसूच्या गंधेन ॐ नमो भगवते रुद्राय हिरण्यरतसे पराय परमात्मने विश्वरूपायो मा प्रियाय नमः इत्यङ्त्वा अंजना
दिना देवस्य त्वेत्यंजयेत् ॥ नेदं वाणसरिः ऋवलो हजलिङ्गे ॥ तत आदर्शभक्ष्यादि दर्शयेत् ॥ ततः कर्ता चार्याय गामृत्विगभ्यश्च दक्षि-
णां दद्यात् ॥ अथाचार्यः प्रत्यृचमादौ प्रणवं वदन् पुरुषसूक्तेन देवं स्तुत्वा वंशपात्रे पंचवर्णौदनेन देवस्य नीराजनं कृत्वा चतुष्पथे
ॐ नमो रुद्राय सर्वभूताधिपतये दीप्तशूलधरायो मादयिताय विश्वाधिपतये रुद्रायै नमो नमः शिवमगर्हितं कर्मास्तु स्वाहेति ॥
अश्वत्थपर्णे भूतेभ्यो नम इति बलिं क्षिपेत् ॥ ततो वेद्यां सर्वतोभद्रं देवानां वाहयेत् ॥ यथा मध्ये ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि एवं
सर्वत्र १ पूर्वादिदिक्षु इन्द्राय नमः २ अग्नये ३ यमाय ४ निर्ऋतये ५ वरुणाय ६ वायवे ७ सोमाय ८ ईशानाय ९ ईशानेन्द्राद्यं
तरालेष्वष्टवसुभ्यो १० रुद्रेभ्यो ११ आदित्येभ्यो १२ अश्विभ्यां १३ विश्वेभ्यो देवेभ्यो १४ पितृभ्यो १५ नागेभ्यो
१६ स्कंदवृषाभ्यां १७ ॥ ब्रह्मेशानाद्यंतरालेष्वष्टसु दक्षाय १८ विष्णवे १९ दुर्गायै २० स्वधायै २१ मृत्युरोगेभ्यो २२ समुद्रेभ्यो
२३ सरिभ्यो २४ गणपतये २५ मध्ये ब्रह्माधः पृथिव्यै २६ मेरवे २७ तत्रैव स्थाप्य देवप्रतिमामावाह्य प्रागादिषु वज्राय २८ हा

क० अ०

1130011

कये २९ दंडाय ३० खड्गाय ३१ पाशाय ३२ अंकुशाय ३३ गदायै ३४ तद्वाह्ये गौतमं ३६ भरद्वाजं ३७ विश्वामित्रं
 ३८ कश्यपं ३९ जमदग्निं ४० वसिष्ठं ४१ अत्रिं ४२ अरुंधतीं ४३ तद्वाह्ये सूर्यं ४४ सोमं ४५ भौमं ४६ बुधं ४७ गुरुं ४८ शुक्रं ४९
 शनिं ५० राहुकेतू ५१ तद्वाह्ये ऐंद्रिं ५२ कौमारी ५३ ब्राह्मीं ५४ वाराहीं ५५ चामुंडां ५६ वैष्णवीं ५७ माहेश्वरीं ५८ वैनायकीं
 ५९ इति देवतानाम्नावाह्यसंपूज्य मंडलमध्ये अर्च्य सुप्रतिष्ठो भवेति निवेक्ष्य संपूज्य बहुपरिपुरोभागे वेद्या उत्तरतो वायथा सोप
 स्करां शय्यामुपकल्प्य तस्यां देवमारोप्य पुरुषसूक्तोत्तरनारायणाभ्यां स्तुत्वा देवे तत्त्वन्यासं कुर्यात् ॥ सयथा— पुरुषात्मने नमः
 प्राणात्मने प्रकृतितत्त्वाय बुद्धितत्त्वाय अहंकारतत्त्वाय मनस्तत्त्वाय इति सर्वांगेषु प्रकृतितत्त्वाय बुद्धितत्त्वाय हृदि शब्दत
 त्वाय शिरसि स्पर्शतत्त्वाय त्वचि रूपतत्त्वाय हृदि रसतत्त्वाय मुखे गंधतत्त्वाय नासायां श्रोत्रतत्त्वाय श्रोत्रयोः त्वक्तत्त्वाय त्वचि
 चक्षुस्तत्त्वाय चक्षुषोः जिह्वातत्त्वाय जिह्वायां घ्राणतत्त्वाय घ्राणे वाक्तत्त्वाय वाचि पाणितत्त्वाय हस्तयोः पादतत्त्वाय पादयोः
 पायुतत्त्वाय पायौ उपस्थतत्त्वाय उपस्थे पृथ्वीतत्त्वाय पादादिजानुपर्यंतं अपृतत्त्वाय जान्वादिनाभिप ० तेजस्तत्त्वाय नाभ्या
 दिहृदयांतं वायुतत्त्वाय हृदयादिभ्रूमध्यांतं आकाशतत्त्वाय भ्रूमध्यादिशिरोतं सत्त्वतत्त्वा ० रजस्तत्त्वा ० तमस्तत्त्वा ० सर्वांगे ॥
 ततः पुरुषसूक्तेन षोडशंगन्यासः ॥ ततः सुखशाची भवेति शय्यायां देवं स्त्रापयित्वा वस्त्रद्वयेनाच्छाद्य देवस्य शिरोभागे कलशं संस्था
 प्य तत्र निद्रामावाहयेत् ॥ वासुदेवं नमस्कृत्य निद्रामावाहयाम्यहं ॥ मोहिनीं सर्वभूतानां मनोविभ्रमकारिणीं ॥ एहि सा विन्नि

मूर्तिस्त्वंचक्षुर्भ्यांज्ञानगोचरे ॥ विशनासापुटेदेविकंठेचोत्कंठिताभवेति ॥ ततस्तांसंपूज्यमंडलशय्ययोरंतरानंगंतव्यमितिप्रैषंद
त्वामंडलदेवताभ्योनाम्नापायसेनबलिदानं ॥ ततःकुंडसंस्कारादिकुर्यात् ॥ प्रसंगान्मध्येप्रासादवास्त्वाद्यावाहनक्रमोलिख्यते ॥
श्रीः ॥ देशकालौसंकीर्त्यसप्रासादामुक्तप्रतिष्ठांगत्वेनवास्तुदेवतापूजांकरिष्ये ॥ तत्रादौवास्तुवेद्याईशानादिचतुष्कोणेषु ॥ वि
शंभुभूतलेनागालोकपालाश्चसर्वशः ॥ प्रासादादिवास्तुप्रकारः ॥

॥ २६० ॥

भक्तबलीन्दद्यात् ॥ ततोवेद्युपरिकुंकुमादिनासुवर्णादिशलाकया लक्ष्मीः यशोवती कांता सुप्रिया विमला शिवा सुभगा
सुमतिः इला ९ इतिनवरेखाःप्रागायताउदकसंस्थाःकृत्वा धन्या प्राणा विशाला स्थिरा भद्रा जया निशा विरजा विभ
वा ९ इतिनामभिरुदगायताःप्राक्संस्थानवरेखाःकृत्वामध्यपदचतुष्टयमेकीकृत्यकोणेषुरेखादत्वातत्रदेवताआवाहयेत् ॥ य
था ॥ ईशानपददक्षिणार्धेशिरसिशिखिनं १ तदक्षिणपदद्वयेसत्यं ६ तदक्षिणसार्धपदेभृशं ७ तदक्षिणपदद्वयेजयंतं ३ तदक्षिणपदद्वयेकुलिशा
युधं ४ तदक्षिणपदद्वयेसूर्यं ५ तदक्षिणपदद्वयेसत्यं ६ तदक्षिणसार्धपदेपर्जन्यं २ तदक्षिणपदद्वयेजयंतं ३ तदक्षिणपदद्वयेकुलिशा
वायुं ९ तस्यश्चिमसार्धपदेपूषणं १० तस्यश्चिमपदद्वयेवितथं ११ तस्यश्चिमपदद्वयेगृहक्षतं १२ तस्यश्चिमपदद्वयेयमं १३
तस्यश्चिमपदद्वयेगंधर्वं १४ तस्यश्चिमसार्धपदेभृंगराजं १५ तस्यश्चिमसार्धपदेमृगं १६ तदुत्तरार्धेपितृन् १७ तदुत्तरसार्धपदे

दौवारिकं १८ तदुत्तरपदद्वयेसुग्रीवं १९ तदुत्तरपदद्वयेपुष्पदंतं २० तदुत्तरपदद्वयेवरुणं २१ तदुत्तरपदद्वयेअसुरं २२
 तदुत्तरसार्धपदेशोपं २३ तदुत्तरार्धपदेपापं २४ तत्प्रागर्थेरागं २५ तत्प्राक्सार्धपदेअहिं २६ तत्प्राक्पदद्वयेमुख्यं २७ त
 मध्यपदेषुईशानपदोत्तरार्धेआपं ३३ आग्नेयपदोत्तरार्धेसावित्रं ३४ नैऋतपदोत्तरार्धेजयं ३५ वायव्यपदोत्तरार्धेरुद्रं ३६ त
 मध्येप्राक्पदद्वयेअर्यमणं ३७ आग्नेयपददक्षिणार्धेसवितारं ३८ तत्पश्चिमपदद्वयेविवस्वंतं ३९ नैऋतपदपूर्वार्धेविबुधाधि
 पं ४० तदुत्तरपदद्वयेमित्रं ४१ वायव्यपदपश्चिमार्धेराजयक्ष्माणं ४२ तत्प्राक्पदद्वयेपृथ्वीधरं ४३ ईशानपददक्षिणार्धेआ
 पवत्सं ४४ मध्यपदचतुर्भुजद्वयेब्रह्माणं ४५ तत्तत्तरेवास्तोष्पतइतिवृषवास्तुप्रतिमां ४६ ऐशान्यादिविदिक्षुचरकीं ४७
 विदारीं ४८ पूतनां ४९ पापराक्षसीं ५० प्रागादिविद्विष्कंदं ५१ अर्यमणं ५२ जंभकं ५३ पिलिपिच्छं ५४ एवंक्रमेणवास्तु
 देवताआवाह्यषोडशोपचारैःसंपूज्यमंडलादीशान्यामुत्तरतोवामहीद्यौरित्यादिकलशसंस्थाप्य तत्रवरुणंसंपूज्यावाहितदेवता
 भ्योनान्नापायसबलीन्दद्यात् ॥ मंडपजलाशयांगवास्तावप्येवमेव ॥ अत्रब्रह्मादिःशिख्यादिर्वाक्रमः ॥ शक्तौहोमस्तत्रप्रत्येकं
 समित्तिल(यव)पायसाज्यानि, समिदाज्यचरवः, समिदाज्ये, यवाः, केवलंतिलावा ॥ प्रत्येकं १०।८।१ वाआहुतयः ॥
 शारदातिलकेपायसाज्यैर्बलिंहरेदित्येवोक्तत्वात्केवलंपूजनपूर्वकंबलिदानमेवकार्येनहोमस्यावश्यकतेतिवास्तुविषयेबहवोविक
 ल्याःसन्ति ॥ पक्षेहोमाभावोपिक्वचिदुक्तस्तत्रसदसत्सम्भिरूहनीयं इति ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४३ ॥

श्रीः ॥ ततःकुंडांतिकमेत्यदेशाद्युच्चार्यअमुकप्रतिष्ठांगत्वेनहवनंकर्तुंकुंडोपलेपनाद्यग्निप्रतिष्ठांकरिष्ये ॥ तद्गोमयेनोपलिप्योल्लिख्य उपरिमेखलायांइदंविष्णुरिति विष्णुं मध्यमेखलायांब्रह्मजज्ञानमितिब्रह्माणं अधोमेखलायांकडुद्रायेतिरुद्रं गोन्यांगौरीभिमायेतिगौरींआवाह्यसंपूज्यस्वगृह्योक्तविधिनाग्निप्रतिष्ठाप्य नैऋत्यवेद्यांवास्तुपूजामुपरिनिर्दिष्टवत्कुर्यात् ॥ ततोग्रहवेद्याख्यादिपंचचत्वारिंशदेवताःप्रतिदैवतं उदुंबरसमित्तिल(यव)पायसाज्यद्रव्यैः प्रतिद्रव्यमष्ट ८ संख्याकाभिः वास्तुहोमेशिवास्तोष्पतइतिचतसृभिःपूर्वोक्तद्रव्यैःप्रतिद्रव्यंप्रत्यृचं २७ पुनः वास्तोष्पतइतिचतसृभिःवास्तोष्पतेभ्रुवास्थूणामित्यनयाचप्रत्यृचंबिल्वफलेनखंडेनवा चरक्याद्यवशिष्टदेवताःपूर्वोक्तचतुर्द्रव्यैःप्रतिदैवतंप्रतिद्रव्यं २८ वा ८ ॥ अधिदेवताःप्रत्यधिदेवताश्च ८।४भिर्वा विनायकादीनिद्रादींश्चप्रत्येकंप्रतिद्रव्यं ४।२ संख्याकाभिःपूर्वोक्तद्रव्यत्रयाहुतिभिः ॥ प्रधानहोमे लोकपालमूर्तिमूर्तिपतीन् पलाशोदुंबराश्वत्थशम्यपामार्गसमिदाज्यतिलद्रव्यैःप्रत्येकंप्रतिद्रव्यं २८ वा ८ संख्याहुतिभिः स्थाप्यदेवंपूर्वोक्तद्रव्यैःप्रतिद्रव्यं १००८।२८ वासंख्यया ॥ अग्निर्यजुर्भिरित्यनुवाकेनविश्वान्देवांतिलाज्याभ्यांदशदशाहुतिभिः ॥ पिंडिकांतिरेवद्रव्यैःअष्टसंख्याहुतिभिःपरिवारदेवताःप्रत्येकं ८ एवंपंचपर्यायैःपर्यायत्रयेणवायक्ष्ये ॥ (विष्णुःस्थाप्यश्चेत्विष्णुपुरुषसूक्तेनचतुरावृत्तिभिःप्र

तृचमाज्येन ॥ रुद्रश्चेत्शिवंयातइषुरित्यनुवाकांतद्रापेसहस्राणीत्यनुवाकाभ्यांप्रतिमंत्रमाज्येन ॥ प्रासादाधिवासनहोमेपि
 डिंकावाहनादिपरिवारेदेवताः प्रत्येकमष्टाविंशत्याहुतिभिस्तिलद्रव्येण ॥ स्थाप्यदेवं १०८ संख्ययामूलमंत्रेणचर्वाहुतिभिः ॥
 प्रासादोत्सर्गागहोमे वास्तोष्पतइतिमंत्रेणअष्टोत्तरशतसंख्ययाघृतेन स्थाप्यदेवं अष्टोत्तरशतसंख्ययाज्येन ब्रह्मादिमंडलदे
 वताःप्रत्येकंदशदशाहुतिभिःघृताक्ततिलद्रव्येण) शेषेणेत्याज्यभागंतेअग्नेरुत्तरतःसंपातकलशंसंस्थाप्यतस्मिन्नाज्यहोमेसंपा
 तान्नयेत् ॥ अथयजमानेनद्रव्यत्यागेकृतेन्वाधानक्रमेणसत्विगाचार्योजुहुयात् ॥ वास्तुहोमंग्रहहोमंचकृत्वाप्रधानहोमंकुर्यात्
 तन्नमंत्राः ॥ इंद्रायेंदो० स्योनापृथिवि० अघोरैभ्यो० अन्नआयाहि० अग्निद्रुतंवृ० नमःशर्वायचपशुपतयेच० यमायसोमं० अ
 सिंही० स्तुहिश्रुतं० असुन्वंत० आकृष्णेन० योरुद्रोअग्नौ० इमंमेवरुण० शन्नोदेवी० नमोभवायचरुद्रायच० आनो
 नियुद्भिः० वातआवातु० तमीशानं० आप्यायस्व० वयंसोम० तत्पुरुषायविद्महे० अभित्वादेवस० आदित्यल० नमउ
 ग्रायचभीमायच० २४ इतिलोकपालादिहोमः ॥ ततःपलाशसमिदादिसप्तद्रव्यैःस्थाप्यदेवमंत्रेणउक्तसंख्ययाहोमः ॥ प्रति
 द्रव्यहोमांतेदेवंपादनाभिशिरस्सुस्पृशेत् ॥ अग्निर्यजुर्भिरित्यनुवाकेनप्रतिद्रव्यं १० ॥ अग्निर्यजुर्भिः । सवितास्तोमैः । इंद्र
 उक्थामदैः । मित्रावरुणावाशिषा । अंगिरसोधिष्णिचैरग्निभिः । मरुतःसदोहविर्धानाभ्या । आपःप्रोक्षणीभिः । ओषध
 योबर्हिषा । अदितिर्वेद्या । सोमोदीक्षया ॥ १ ॥ त्वष्टेधमेन । विष्णुर्यज्ञेन । वसवआज्येन । आदित्यादक्षिणाभिः । वि
 श्वेदेवाऊर्जा । पूषास्वंगाकारेण । बृहस्पतिःपुरोधया । प्रजापतिरुह्मीधेन । अंतरिक्षंपवित्रेण । वायुःपान्नैः । अहश्श्रद्धया

स्वाहा ॥ २ ॥ पिंडिकांहीश्चतेलक्ष्मीश्च ॥ लिंगार्चायांगौरीर्ममायेतिमंत्रेणतैरेवद्रव्यैः प्रतिद्रव्यं ८ ॥ ततःपरिवारस्थाप्या
नामंत्रैःप्रतिद्रव्यं ८ इतिप्रथमपर्यायंहुत्वादेवपादौस्पृशेत् ॥ एवंद्वितीयंपर्यायंहुत्वानाभिं ॥ तृतीयंमध्यं ॥ चतुर्थंउरः ॥ पं
पादौस्पृशेत् पुनस्तथाहुत्वाविष्णोर्नुकमितिनाभिंस्पृशेत् पुनस्तथाहुत्वाअतोदेवेतिशिरः पुनस्तथाहुत्वापुरुषसूक्तेनसर्वांगंस्पृ
शेत् ॥ रुद्रेतु यातइषु०अनुवाकांतं द्रापे०सहस्राणि०इत्यनुवाकाभ्यांप्रत्यृचमाज्यंहुत्वापुरुषसूक्तेनप्रत्यृचमाज्यंहुत्वाइदंविष्णुरिति
अथप्रासादोत्सर्गाधिवासनांगहोमः ॥ पुनस्तथाहुत्वानमोहिरण्यबाहवइत्यग्रस्पृशेत् ॥ पुनस्तथाहुत्वासर्वोवैरुद्रइतिमंत्रेणमूलंस्पृशेत्॥पुनस्त
प्पतइतिमंत्रेण १०८ आज्यंहुत्वा देवमंत्रेण १०८ आज्यंचहुत्वा ब्रह्मादिमंडलदेवताःप्रत्येकं १० तिलहोमः ॥ मूलेनचरुं १०८ हुत्वा ततोवास्तो
पूर्णाहुतिंजुहुयात् ॥ ततःस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्य पिंडिकांपरिवारदेवांश्चवेद्यांप्रतिमासमीपेवेदीसन्निधौवावस्त्राच्छादि
तपीठेनिधाय मधुघृतेनाभ्यज्य शुद्धवारिणाप्रक्षाल्य पूर्वस्नानावशिष्टकलशवारिणातत्तन्मंत्रैःस्नापयित्वागंधादिभिरभ्यर्च्य
वस्त्रेणाच्छाद्यन्यासान्कुर्यात् ॥ तत्रपिंडिकायांन्यासः ॥ धनमःहृदये ॥ पंनमःशिरसि ॥ भनमःशिखायां ॥ फनमःकवचाय
हुं ॥ लंनमःनेत्रत्रयायवौषट् ॥ क्षंनमःअस्त्रायफट्महीमूषुमंत्रेणावाह्यअदितिद्यौरितिस्तुत्वा ॐ ह्रीं नमइतिमंत्रेणसंपूज्य तेनै
वपूर्णाहुतिंहुत्वा ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्षः परब्रह्मणे सर्वाधाराय नमः ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं दिव्यतेजोधारिणि सुभगे नमइति मंत्राभ्यां तथाप

रिवारत्वेनस्थाप्येतरदेवेषुचतत्तन्मन्त्रेणषडंगन्यासादिकृत्वातत्तन्मन्त्रेणसर्वाःपरिवारदेवताःपूजनपूर्वकंमुख्यदेवतावामपार्श्वेऽ
 धिवासयेत् ॥ अथप्रासादाधिवासनं ॥ तत्रराक्षोघ्नपावमानसूक्ताभ्यांत्रिसूत्र्याप्रासादंवेष्ट्यपरितोजलदुग्धयोःपृथगविच्छि
 नेधारेदत्वापूर्वस्थापितवास्तुप्रतिमांमृत्पेटिकायांनिधायप्रासादाग्नेयकोणेवास्तुविध्युक्तप्रकारेणगतेनिवेशयेत् ॥ ततःप्रासाद
 स्याग्नेएकाशीतिपदमंडलंअक्षतैःकृत्वातेषुपदेषुसप्तधान्यपुजान्कृत्वातत्रजलपूर्णान् ८१ कलशानाहुत्यनवनवकानिस्थापयि
 त्वा तेषुमध्यमपूर्वादिक्रमेण आजिघ्नकलशंमह्युरुधारापयस्वत्यात्वाविशंत्विंदवःसमुद्रमिवसिंधवः सामासहस्रआभजप्रजया
 पशुभिःसहपुनर्माविशताद्रयिः ॥ इतिमन्त्रेणनवकुंभाद्वयसेत् ॥ तत्रमध्यनवकमध्यकुंभेशम्युदुंबराश्वत्थचंपकाशोकपलाशजल
 क्षन्यग्रीधकंदबाम्नाबिल्वार्जुनपल्लवान् सोमायवनसत्यंतर्गतायनमइतित्यसेत् १ पूर्वनवकमध्यकुंभेपद्मकरोचनदूर्वादभैश्वेत
 पीतसर्षपसितरक्तचंदनजातीपुष्पकुंदनंद्यावर्तदशकंक्षिपेत् २ आग्नेयनवकमध्यकुंभेयवत्रीहितिलस्वर्णरजतसमुद्रगानदीज
 लकूलमृदंतारिक्षगोमयंक्षिपेत् ३ दक्षिणनवकमध्यकुंभेसहदेवीविष्णुक्रांताभृंगराजमहौषधीशमीशतावरीगुहूचीश्यामाकान
 द्यौक्षिपेत् ४ नैऋत्यनवकमध्यकुंभेकदलनारिकेलबिल्वनारिंगमातुलिंगबदरामलकचूतफलाष्टकं ५ पश्चिमेमंत्रवत्यंचगव्यं ६
 वायव्येशम्युदुंबराश्वत्थन्यग्रीधफलानांकपायं ७ उत्तरेशंखपुष्पीसहदेवीबलाशतावरीगुहूचीवचाव्याघ्रीमूलाष्टकं ८ ऐशा
 नेसप्तमृदः ९ इतिक्षिप्त्वाश्रीसूक्तेनाभिमन्त्र्यशेषेषुकुंभेषुगंधंक्षिप्त्वामूलेनाभिमन्त्र्यांतर्बहिरधूर्ध्वचप्रासादंपंचगव्येनाभ्युक्ष्य
 मूर्धानंदिवइतिवल्मीकमृदाविलिप्यवक्ष्यमाणमंत्रैःकुंभोदकैःप्रासादमभिषिचेत् ॥ ॐ समुद्रज्येष्ठा० इत्यैशानमृत्कुंभेन १ ॥

ॐ शुक्तायज्ञावःसमनातुतुर्वणिधियं धियवो देवया उदधिध्वे ॥ आवोर्वाचःसुवितायरोदस्योर्महेमवृत्यामवसेसुवृत्तिभिः ॥ इति वायव्यकषायकुंभेन २ ॥ पर्यःपृथिव्यां पयु ओषधीषु पयो दिव्यं तरिक्षे पयोधां ॥ पर्यस्वतीः प्रदिशः संतुमह्यं ॥ इति वारुणं पृष्ठमसि विष्णोः श्रज्जस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवमसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा इति पूर्वकुंभेन ५ ॥ विष्णो रराटमसि विष्णोः वामहे ॥ आदित्यान्विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिं इति वह्नि कुंभेन ७ ॥ विश्वतश्चक्षुरिति याम्यकुंभेन ८ ॥ नमो अस्तु सर्वेभ्यो ये केच इति मध्यकुंभेन ९ ॥ इदमापः प्रवहत इत्यष्टाभिरवशिष्टैः पूर्वादिदिक्क्रमेण प्रासादशिखरं स्नापयेत् ॥ एकाशीतिकुंभासं भवेतु एककुंभेन गंधोदकपूरितेन ॐ देव्याय कर्मणे शुं धत्वं इति प्रासादं प्रोक्ष्य क्षालयित्वा गंधादिभिरभ्यर्च्य तस्याधस्ताद्देवं संचि चरं श्रपयित्वा देवाय निवेद्य द्वादश ब्राह्मणान् भोजयित्वा ॐ ह्रीं सर्वदेवमया चित्य सर्वरत्नोज्ज्वलाकृते ॥ त्रैजागरं कुर्यादिति प्रासादाधिवासनं ॥

॥ ४३ ॥

स्थापनदिवसे प्रातराचार्यो यागमंडपमागत्या वाहितदेवताः संपूज्या धिवासितां पिंडिकां ॥ २६२ ॥ अथ देवस्थापनदिनकृत्यं ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४३ ॥

त्रातारमिंद्रमिति मंत्रेण गृहीत्वा शांतिं

देवस्था-
॥२६२॥

॥२०४॥

घोषेणप्रासादप्रादक्षिण्येनप्रासादमानीय शंतातीयेनविघ्नोद्धरणायपुष्पोदकधारयाप्रदक्षिणंप्रासादमभ्युक्ष्यमहौंडद्रोवज्जाबा
हुरितिमंत्रेणसमुल्लिख्यपुनरस्त्रपूतवारिणासर्वतःप्रोक्ष्यपिंडिकास्थापनदेशनिश्चित्य द्वारदेशेदेवस्यदृष्टिपातंचनिर्णीयतत्रपंच
रत्नोपरिसौवर्णेकूर्मेद्वारसंमुखंनिधायतदुपरिरत्नानिन्यस्य तदुपरिकूर्मशिलाब्रह्माशिलापिंडिकात्मिकांत्रिवक्त्रांसिंहासनापरप
र्यायांशिलानिदध्यात् ॥ ततःशिलामध्यदेशंस्पृष्ट्वाप्रार्थयेत् ॥ त्वमेवपरमाशक्तिस्त्वमेवासनधारिका ॥ शिवान्नयात्वयादेवि
स्थातव्यमिहसर्वदा ॥ ॐ तत्त्वाद्वनेनमः ॥ ॐ मंत्राद्वनेनमः ॥ ॐ आत्मतत्त्वाधिपतये ॥ ॐ क्रिया
तिसूक्तेनपिंडिकायाऊर्ध्वभागंस्पृष्ट्वास्वमंत्रंपिंडिकायान्यस्य ॥ ॐ आत्मतत्त्वाय ॥ ॐ विद्यातत्त्वा
शक्त्यै ॥ ॐ शिवतत्त्वाय ॥ ॐ शिवतत्त्वाय ॥ ॐ इच्छाशक्त्यै ॥ ॐ विद्यातत्त्वाय ॥ ॐ त्वांप्रतिष्ठापयाम्य
धिपतयेआधारशक्त्यै ॥ इतिविन्यस्य पिंडिकांप्रार्थयेत् ॥ सर्वदेवमयीशानित्रैलोक्याह्लादकारिणि ॥ पुत्रानायुष्मतोलक्ष्मी
त्रमंदिरेशिवपूजिते ॥ यावच्चंद्रश्चसूर्यश्चावदेपावसुंधरा ॥ तावत्वंदेवदेवेशिमंदिरेस्मिंस्थिराभव ॥ सुभिक्षंक्षेममारोग्यंकुरुदे
मचलामजरामृते ॥ अभयंसर्वभूतेभ्यःकर्तुंनित्यंचदेहिमे ॥ विजयंभूपतेःसर्वलोकानांसुखमेवच ॥ तद्वाह्येइन्द्रादिनामभिरष्टर
विनमोनमः ॥ ततःप्रणवंश्वन्नेविन्यस्य ॥ तद्वाह्येस्वरान् ॥ तद्वाह्येकादक्षांतानिव्यंजनानि ॥ तद्वाह्येइन्द्रादिनामभिरष्टर
त्वानिपूर्वादिक्रमेणवज्रमौक्तिकवैडूर्यशंखस्फटिकपुष्परागेंद्रनीलमहानीलाइतिन्यस्यसप्तधान्यरूप्यवृषभमनःशिलाःक्षिपेत् ॥
त्रिणुश्चेद्रूप्यवृषस्थानेरूप्यगरुडः ॥ ततःपायसेनसंलिप्यशुकवस्त्रेणाच्छाद्य ॐ नमःसुदर्शनोयतिरक्षांकृत्वागृहवैप्रतिष्ठेति

प्रासादमभिषिच्य दिक्पालेभ्यो बलीन्दत्वा आचम्य प्रासादं पंचगव्येनाभ्युक्ष्य कुशैः संमार्जयेत् ॥ ततः संपातोदकमापादं मूलेनाष्टवारमभिमन्त्र्य तेन देवस्य शिरोभिषिच्य शंखतूर्यनिनादेन ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्य ते इति स्थाप्य देवमुत्थाप्य प्रासादप्रादक्षिण्येन कनिष्ठाङ्गुलीनां कृत्वा सुलभे पुण्याहमस्तु ॐ प्रतितिष्ठ परमेश्वर इत्युक्त्वा अतो देवा इति विष्णुं रुद्रेणालिङ्गं सुवर्णशरैः परिकल्पय ॥ प्रधानपुरुषौ यावद्यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ लोकानुग्रहे हत्वर्थस्थिरो भव सुखाय नः ॥ सा न्निध्दं हि सदा देव प्रत्यक्षं

प्राणप्र-
॥२६३॥

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः ऋग्यजुः सामानिच्छंदांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्यादेवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं प्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः ॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि ऋग्यजुः सामच्छंदोभ्यो मुखे प्राणाख्यदेवतायै हृदि आं बीजाय गुह्ये क्रौं शक्त्यै पादयोः ॥ ॐ अंकं खंगंधं पृथिव्यसेजो वाय्वाकाशात्मने आंह दयाय नमः ॥ ॐ इंचं छंजं जं अंशं ब्रह्मरूपरसगंधात्मने ईं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ उंटं ठं डं ढं श्रोत्रत्वक्कक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊं शिखायै वषट् ॥ ॐ एतं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायपस्थात्मने ऐं कवचाय हुं ॥ ॐ ओं पं फं बं भं मं वचनादानविहरणोत्सर्गानं दात्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं मनो बुद्ध्यहंकारचित्तविज्ञानात्मने अः अस्त्राय फट् ॥ एवमात्मनि देवचन्या संकृत्वा देवं हृदि स्पृष्ट्वा जपेत् ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं

॥३०५॥

लुंवशंषसंहंसः देवस्य प्राणा इह प्राणाः ॥ ॐ आं ह्रीं ० हंसः देवस्य जीव इह स्थितः ॥ आं ह्रीं ० हंसः देवस्य सर्वद्रियाणि ॥ ॐ आं ह्रीं ०
हंसः देवस्य वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रं जिह्वा घ्राण प्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखेन चिरं तिष्ठं तु स्वाहा ॥ अर्चा हृद्यं गुणं दत्त्वा जपेत् ॥ अस्य प्राणाः
प्रतिष्ठं तु अस्य प्राणाः क्षरं तु च ॥ अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कथन ॥ इति ॥ ततः प्रणवेन संरुध्य सजीवं ध्यात्वा ध्रुवाद्यौरिति तृ
चंजह्वा देवकर्णे गायत्रीं देवमंत्रं च जह्वा पुरुषसूक्तेनोपस्थाय पादनाभिश्चिरः सुस्पृष्टा ॥ ॐ इहैवैधिमापच्योष्टाः पर्वत इवाविचाच
लिः ॥ इंद्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठेह राष्ट्रमुधारय ॥ इति त्रिजपेत् ॥ ततो यजमानः ॥ स्वागतं देवदेवेशमद्भाग्यात्त्वमिहागतः ॥ प्राकृ
तं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ धर्मार्थकामसिद्ध्यर्थं स्थिरो भव शुभायनः ॥ सान्निध्यं तु सदा देवस्वार्चायां परिकल्पय ॥ या
वच्चंद्रावनीसूर्यास्तिष्ठंत्यप्रतिधातिनः ॥ तावत्त्वया त्रदेवेश स्थेयं भक्तानुकंपया ॥ भगवन्देवदेवेश त्वं पिता सर्वदेहिनां ॥ येन रू
पेण भगवंस्त्वया व्यासंचराचरं ॥ तेन रूपेण देवेश स्वार्चायां सन्निधो भव ॥ तत आचार्यो देवस्य वाहनपरिवारादिदे
वांस्तत्तन्मंत्रेणानीय स्वस्वस्थाने प्रतिष्ठाप्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ अथाचार्यः कर्ता च अर्चा ॐ भूः पुरुषमावाहयामि भुवः पुरु
ष ० स्वः पुरुष ० भूर्भुवः स्वः पुरुष ० इत्यावाह्यप्रणवेनासनं दत्वा तैनेव दूर्वाद्यामा कविष्णुक्रांतापद्ममिश्रं पाद्यं ॐ इमा आपः शिव
तमाः पूताः पूततमामेध्यामंध्यतमा अमृता अमृतरसाः पाद्यास्ता जुषतां प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्णातु भगवान्महाविष्णुः विष्णवे नमः पा
द्यं ॥ लिंगे तु भगवान्महोदेवो रुद्राय नमः पाद्यं ० ॥ इमा आपः शिवतमा ० अर्घ्या इत्यर्घ्यं ॥ इमा ० आचमनीया इत्याचमनं ॥ मू
लेन मधुपर्कं ॥ आप्यायस्वेत्यादिभिः पंचामृतं ॥ कनिक्रददितितैलाभ्यंगं ॥ देवोक्तमंत्रैरभिषेकः ॥ ततः प्रतिसर विसर्जनं इदं वि

ष्णुरिति विष्णोः ॥ नमो अस्तु नीलग्रीवायेति लिंगस्य ॥ ततो मूलेन वस्त्रोपवस्त्रे दत्त्वा ॥ इमे गंधाः शुभा दिव्याः सर्वगंधैरलंकृताः ॥
 पूता ब्रह्मपवित्रेण पूताः सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ गंधं ॥ इमे माल्याः शुभा दिव्याः सर्वमाल्यैरलंकृताः पूता इत्यादि ॥ मालाः ॥ इमे
 पुष्पाः ॥ पुष्पाणि ॥ वनस्पतिरिति धूपं ॥ आज्यं चेति दीपं ॥ पवित्रं ते इति नैवेद्यं दत्त्वा कृसरं जुहुयात् ॥ अद्य पूर्वो ० पूजांगहवनं करिष्ये ॥ कुंडसमीपमेत्याग्निं
 ध्यात्वा परिसमुह्य पर्युक्ष्य प्रोक्षणीपात्रं हविश्चासाद्य प्रोक्ष्याभिघार्या ज्यादक्षिणतो निधायान्निमभ्यर्च्य संकर्षणादिनामभिः कृसरं
 हुत्वा तेनैव शार्ङ्गिणे श्रियै सरस्वत्यै पुष्ट्यै विष्णवे इति हुत्वा ॥ विष्णोर्नुकं ० प्रतद्वि ० तदस्य प्रियं ० परोमात्रया ० विचक्र
 मे ० त्रिदेवः ० इति मंत्रैर्हुत्वा पुनः संकर्षणादिभिः प्राग्वद्धुत्वा ॥ लिंगे तु दीपांतं कृत्वा भवाय देवाय नमः शर्वाय देवा ० ईशाना
 य ० पशुपतये ० रुद्राय ० उग्राय ० भीमाय ० महते ० इति पुष्पाणि दत्त्वा तैरेव तर्पणं पवित्रं ते इति पायसगुडौदन नैवेद्यः ॥ ॐ भवाय दे
 वाय स्वाहेति अष्टनामभिः कृसरं हुत्वा भवस्य देवस्य पत्न्यै स्वाहेत्याद्यष्टभिर्गुडौदनं हुत्वा भवस्य देवस्य सुताय स्वाहेत्याद्यष्टभिः ह
 रिरदौदनं हुत्वा ॐ त्र्यंबकं ० मानोमहांतं ० मानस्तोके ० आरात्ते ० विकिरिदं ० सहस्राणिसहस्रशो ० इति द्वादशऋचः एतैः
 कृसरौदनं हुत्वा ॥ शिवाय ० शंकराय ० सहमानाय ० शितिकंठाय ० कपर्दिने ० ताम्राय ० अरुणाय ० अपगुरमाणाय ०
 हिरण्यबाहवे ० ससिंजराय ० बभ्रुशाय ० हिरण्याय ० इति च हरिद्रौदनं हुत्वा ॥ अग्नयेऽस्विष्टकृते स्वाहेतिः स्विष्टकृतं पूर्णाहु
 तिवसोर्धारांचसंपाद्य होमशेषं समाप्य पूर्वोक्तसर्वहविर्भिर्बलिं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ त्वामेकमाद्यं पुरुषं पुरातनं नारायणं विश्वसु

ततोऽश्वत्थपर्णे

ज्ञानतोऽज्ञानतोऽपि

॥ इति ॥ लिंगे तु नारायणपदेशिवं रुद्रं पदोच्चारः ॥
॥ विश्वभुजे नमः सर्वभुजे ० आत्मने ० परमात्मने ० इति नत्वा ॥
नमंत्रपुष्पंचदत्वा छत्रादिपरिकल्प्य क्षमाप्य पूजां समाप्य कर्तृनामयुतं देवस्य नाम कुर्यात् ॥ आचार्यः स्थापितदेवान्पंचधोपचर्य
सर्वैः ऋत्विजः कलशोदकेन सपरिवारं यजमानमभिषिच्युः ॥ (ततः स्नानोत्तरं प्रासादां गेयूपे धिवासिते पूर्वोक्तविधिना तं निखनेत् ॥
ततो मासपक्षाद्युल्लिख्य इमं शिलेष्टकादावादिनिमित्तं वलभीजगती प्राकारगोपुरपरिवारदेवतालयसंयुतं धंटावितानध्वजपताका
द्यलंकृतं प्रासादं तत्तद्देवतालोककामः कुलद्वयोद्धारार्थममुकदेवप्रीतये ह मुत्सृजामीति कुशयवजलं क्षिपेत्) ॥ यजमान आचार्य
संपूज्य तस्मै गोयुगं एकां वा गां दत्वा ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दत्वा भूयसी च दत्वा ब्राह्मणादिभोजनं संकल्प्य स्थापितदेवता विसृज्य पीठं
दत्वा यस्य स्मृत्येति ० वषट्ते ० प्रायश्चित्तान्यशेषाणि ० प्रमादात्कुर्वतां कर्म ० इति विष्णुं स्मृत्वा कर्मैश्वरार्पणं कुर्यात् ॥ इति निर्ण
यसिं धुमयूखानुसारी प्रतिष्ठेदौ सप्रासादपरिवारदेवस्थिरार्चाप्रयोगः संपूर्णः ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

अथ हेमाद्र्युक्तप्रतितत्वन्यासहोमः ॥ सयथा ॥ ॐ अकाराय नमः स्वाहा उकाराय नमः स्वाहा ॐकारः सर्वत्र ॥ इति प्र
णवन्यासहोमः ॥ १ ॥ भूर्नमः स्वाहा भुवर्नमः स्वाहा स्वर्नमः स्वाहा ॥ इति व्याहृतिन्यासहोमः ॥ २ ॥ अथ मातृकान्यासहोमः ॥ अका

रायनमःस्वाहा आकाराय० इकाराय० ईकाराय० उकाराय० ऊकाराय० ऋकाराय० लृकाराय० एकाराय०
 ऐकाराय० औकाराय० औकाराय० अंकाराय० अंकाराय० अःकाराय० यकाराय० यकाराय० रकाराय० शकाराय० षकाराय० सकाराय०
 राय० हकाराय० ळकाराय० पफबभमेभ्योनमःस्वाहा तथदधनेभ्योनमः दठडढणेभ्योनमः लृकाराय० वकाराय० शकाराय० षकाराय० सकाराय०
 मातृकान्यासहोमः ॥ ३ ॥ सूर्याय० चंद्राय० अंगारकाय० बुधाय० बृहस्पतये० शुक्राय० शनैश्चराय० राहवे० केतवे० रोहिण्युक्षाय०
 मृगशीर्षेभ्यो० आर्द्राये० पुनर्वसुभ्यां० पुष्याय० आर्क्षेपाभ्यो० मघाभ्यो० पूर्वाफल्गुनीभ्यो० उत्तराफल्गुनीभ्यो० उत्तरापादाभ्यो० श्रवणाय० धनिष्ठाभ्यो० शतभिषजाय० चित्राये०
 स्वात्यै० विशाखाभ्यः० अनूराधाभ्यां० ज्येष्ठायै० मूलाय० पूर्वाषाढाभ्यो० अश्लेषाभ्यो० मघाभ्यो० पूर्वाफल्गुनीभ्यो० उत्तराफल्गुनीभ्यो० उत्तरापादाभ्यो० श्रवणाय० धनिष्ठाभ्यो० शतभिषजाय० चित्राये०
 द्रपदाभ्यो० उत्तराभाद्रपदाभ्यो० रेवत्यै० अश्लेषाभ्यो० मघाभ्यो० पूर्वाफल्गुनीभ्यो० उत्तराफल्गुनीभ्यो० उत्तरापादाभ्यो० श्रवणाय० धनिष्ठाभ्यो० शतभिषजाय० चित्राये०
 नागवीथ्यै० अंगवीथ्यै० ताराभ्यो० अगस्त्याय० ॥ इतिग्रहनक्षत्रष्टुवादिहोमः ॥ ३ ॥ एवं ॥ ६ ॥ चैत्रायनमःस्वाहा वैशाखाय० ज्ये
 ष्ठाय आपाढाय० श्रवणाय० भाद्रपदाय० आश्विनाय० कार्तिकाय० मार्गशीर्षाय० पौषाय० माघाय० फाल्गुनाय० इदुवत्सरानुवत्स
 रपरिवत्सरसंवत्सरेभ्योनमः० ऋतुभ्योनमः० अहोरात्रेभ्यो० क्षणाय० लवाय० कलायै० कृताय० त्रेताय० द्वापराय० कलियुगाय० च
 तुर्दशमन्वन्तरेभ्यो० पराय० महाकल्पाय० उद्गयनदक्षिणायनाभ्यां० विपुवते० ॥ इतिकालन्यासहोमः ॥ ७ ॥ ब्राह्मणाय० क्षत्रियाय०
 वैश्याय० शूद्राय० संकरजेभ्यो० अनुलोमेभ्यो० गोभ्यो० अजाभ्यो० अविक्काभ्यो० ग्रामपशुभ्यो० अरण्यपशुभ्यो० यजुर्वेदाय० सामवेदाय० अथर्ववेदाय० सर्वोपनिषद्भ्यो०
 ॥८॥ मेघेभ्यो० नदीभ्यो० समुद्रेभ्यो० ॥ इतितोयन्यासहोमः ॥ ९ ॥ ऋग्वेदाय० यजुर्वेदाय० सामवेदाय० अथर्ववेदाय० सर्वोपनिषद्भ्यो०
 इतिहासपुराणेभ्यो० अथर्वागिरसेभ्यो० कल्पसूत्रेभ्यो० व्याकरणेभ्यो० तर्केभ्यो० मीमांसायै० निरुक्ताय० छंदःशास्त्रेभ्यो० ज्योतिः

षो.त.हो.
 ॥२६४॥

॥३०७॥

शास्त्रेभ्यो० गीतशास्त्रेभ्यो० भूतशास्त्रेभ्यो० आयुर्वेदाय० धनुर्वेदाय० योगशास्त्रेभ्यो० नीतिशास्त्रेभ्यो० वश्यतंत्राय० ॥ इतिविद्यान्या
 सहोमः ॥ दिवेनमःस्वाहा सूर्यलोकाय० चंद्रलोकाय० अनिललोकाय० व्योम्नेन० समुद्रेभ्यो० पृथिव्यै० ॥ इतिवैराजन्यासहोमः ॥ ११ ॥
 हिरण्यगर्भाय० कृष्णाय० रुद्राय० यमाय० अग्निभ्यां० वैश्वानराय० मरुद्भ्यो० वसुभ्यो० रुद्रेभ्यो० आदित्येभ्यो० सरस्वत्यै० इंद्राय०
 बल्ये० प्रह्लादाय० विश्वकर्मेणे० नारदाय० अनंताय० दिग्भ्यो० वरुणाय० मित्राय० विश्वेभ्योदेवेभ्यो० पितृभ्यो० यक्षेभ्यो० राक्षसे
 भ्यो० पिशाचेभ्यो० असुरेभ्यो० विद्याधरेभ्यो० ग्रहेभ्यो० गुह्यकेभ्यो० पूतनादिभ्यो० गर्ध्वेभ्यो० कार्तिकेयाय० गणेशायन० ॥ इति
 देवयोनिन्यासहोमः ॥ १२ ॥ मत्स्याय० कूर्माय० वराहाय० नारसिंहाय० वामनाय० परशुरामाय० रामाय० कृष्णाय० बौद्धाय०
 कलकिने० केशवाय० नारायणाय० माधवाय० गोविदाय० विष्णवे० मधुसूदनाय० त्रिविक्रमाय० वामनाय० श्रीधराय० हृषीकेशाय०
 पद्मनाभाय० दामोदराय० ॥ इतिमूर्तिन्यासहोमः ॥ १३ ॥ अश्वमेधाय० नरमेधाय० राजसूयाय० गोसवाय० द्वादशाहाय० अहीने
 भ्यो० सर्वजिन्धो० सर्वमेधाय० अग्निष्टोमाय० अतिरात्राय० आप्तोर्यामाय० पौळशिने० उक्थ्याय० वाजपेयाय० अत्यग्निष्टोमाय० चा
 तुर्मास्त्रेभ्यो० सौत्रामण्यै० पश्चिष्टिभ्यो० दर्शाय० पौर्णमासाय० सर्वेष्टिभ्यो० स्वाहाकाराय० वपट्काराय० पचमहायज्ञेभ्यो० आहवनी
 याय० दक्षिणाम्नये० गार्हपत्याग्नये० वेद्यै० प्रवर्ग्याय० सवनेभ्यो० इध्मेभ्यो० दर्भेभ्यो० ॥ इतिक्रतुन्यासहोमः ॥ १४ ॥ ततोमूलमं
 त्रेणदशाहुतयः ॥ इतिमूलमंत्रन्यासहोमः ॥ १५ ॥ धर्माय० ज्ञानाय० वैराग्याय० ऐश्वर्याय० ॥ इतिगुणन्यासहोमः ॥ १६ ॥ खड्गा
 य० मुसलाय० शार्ङ्गाय० हलाय० चक्राय० शंखाय० गदायै० पद्माय० ॥ शैवे वज्राय० दंडाय० शक्त्यै० शूलाय० खड्गाय० पाशा
 य० अंकुशाय० ध्वजाय० चक्राय० पद्माय० ॥ इत्यायुधन्यासहोमः ॥ लक्ष्म्यै० सरस्वत्यै० रत्यै० प्रीत्यै० कीर्त्यै० शाल्यै० पुष्ट्यै०

तुष्ट्यै० ॥ इतिशक्तिन्यासहोमः ॥ देवमंत्रस्थहृदयायनमःस्वाहा शिरसेनमः० शिखायै० कवचाय० नेत्रत्रयाय० अस्त्रायफट्० श्रीवत्साय०
 कौस्तुभाय० वनमालायै० ॥ इत्यंगन्यासहोमः ॥ विष्णुपक्षेघोडशान्यासातिरिक्तोक्तद्वादशाक्षरमंत्रन्यासहोमः ॥ सचैवं ॥ ॐ ओकाराय
 नमःस्वाहा नकारायन० मकारायन० भकारायन० गकारायन० वकारायन० तकारायन० वाकारायन० सुकारायन० देकारायन०
 वाकारायन० यकारायन० ॥ इतिद्वादशाक्षरमंत्रन्यासहोमः ॥ प्राणाय० अपानाय० व्यानाय० उदानाय० समानाय० पुरुषाय० ॐ का
 रायपुरुषात्मनेनमःस्वाहा मकाराय० जीवात्मने० भकारायप्राणतत्त्वायजीवोपाधयेनमःस्वाहा वकारायबुद्ध्यात्मने० फकारायअहंकारा
 त्मने० पकारायमनआत्मने० नकारायशब्दतन्मात्रात्मने० धकारायस्पर्शतन्मात्रात्मने० दकारायरूपतन्मात्रात्मने० थकारायरसतन्मात्रात्म
 ने० तकारायगंधतन्मात्रात्मने० णकारायश्रोत्रात्मने० ढकारायत्वगात्मने० ढकारायजिह्वात्मने० टकारायघ्राणात्म
 ने० व्यकारायवागात्मने० झकारायपाण्यात्मने० छकारायपादात्मने० चकारायउपस्थात्मने० ङकारायपृथिव्यात्मने०
 घकारायअवात्मने० गकारायतेजआत्मने० खकारायवाय्वात्मने० शकारायपुंडरीकात्मने० षकारायसूर्यात्मने०
 सकारायसोमात्मने० रकारायबृहद्यात्मने० यकारायसर्वात्मने० रकारायसर्वात्मने० वकारायअनुग्रहात्मने० संसर्व
 भूतात्मनेन० ङकारायहंसात्मने० क्षकारायकोपात्मने० आत्मतत्त्वाय० आत्मतत्त्वाधिपतयेब्रह्मणेन० विद्यातत्त्वाधिपतये
 विष्णवेन० शिवतत्त्वाय० शिवतत्त्वाधिपतयेगिवाय० अमत्त्वाय० तेजस्तत्त्वाय० वायुतत्त्वाय० आकाशतत्त्वाय० गंधतत्त्वाय० रसतत्त्वाय०
 रूपतत्त्वाय० स्पर्शतत्त्वाय० शब्दतत्त्वाय० घ्राणतत्त्वाय० जिह्वातत्त्वाय० वाक्तत्त्वाय० पायुतत्त्वाय० उपस्थ
 तत्त्वाय० हस्ततत्त्वाय० पादतत्त्वाय० वाक्तत्त्वाय० मनस्तत्त्वाय० बुद्धितत्त्वाय० अहंकारतत्त्वाय० सत्त्वाय० रजसेन० तमसेन० पुरुषत

त्वाय० रागतत्वायनमः विज्ञानतत्वाय० नीतितत्वाय० तर्ककलातत्वाय० मायातत्वाय० ईश्वरतत्वाय० सदाशिवतत्वाय० शक्तितत्वाय०
 शिवतत्वाय० ॥ इतिजीवन्यासहोमः ॥ इत्येतोऽष्टशान्यासाः सर्वदेवसाधारणाः ॥ विष्णुश्चेद्विशेषन्यासहोमः ॥ सचयथा ॥ ॐ केशवायनमः
 स्वाहा नंनारायणाय० मोमाधवाय० भंगोविंदायनमः गंविष्णवे० तेत्रिविक्रमाय० वांवाग्मनाय० सुंश्रीधराय० देहृषीके
 शाय० वांपद्मनाभाय० यंदाभोदराय० ॥ इतिद्वादशाक्षरमूर्तिन्यासहोमः ॥ ॐ हृदयाय० विष्णवेन० ब्रह्मणे० ध्रुवाय० चक्रिणे० शंभवे०
 विज्ञानाय० सावित्राय० चक्ररूपाय० पिंगलास्त्रायनमः स्वाहा ॥ इत्यष्टांगविष्णुमूर्तिन्यासहोमः ॥ अथपुरुषसूक्तन्यासहोमः ॥ प्रत्यूचं
 स्वाहाकारः ॥ ॐ सहस्रशीर्षो० गुलंस्वाहा पुरुषएवेदं० एतावानस्यमहिमा० त्रिपादूर्ध्वं० तस्माद्विराळजायत० यत्पुरुषेण० तंयज्ञबर्हिषि०
 तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःसंभूतं० तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःऋचः० तस्मादध्वा० यत्पुरुषं० ब्राह्मणोऽस्य० चंद्रमामनसो० नाभ्याआसी० सप्तास्या० यज्ञे
 नयज्ञ० ॥ अथोत्तरनारायणन्यासहोमः ॥ अद्भ्यःसंभूतः० वेदाहमे० प्रजापति० योदेवेभ्य० रुचंब्राह्मं० ह्रीश्चतेलक्ष्मी० ६ ॥ अथाधि
 वासितपिडिकायांन्यासस्तस्येदानींहोमः ॥ ॐ यंथंभंफट्लक्ष्म्यैनमःस्वाहा हृदयायनमः शिरसेस्वाहा शिखायै० कवचाय० नेत्रत्रयाय०
 अस्त्राय० पृथिवीमूर्तये० पृथिवीमूर्त्यधिपतयेशर्वाय० अग्निमूर्तये० अग्निमूर्त्यधिपतयेपशुपतये० यजमानमूर्त्यधिपतयेउग्राय०
 अर्कमूर्तये० अर्कमूर्त्यधिपतयेरुद्राय० जलमूर्तये० जलमूर्त्यधिपतयेभवाय० वायुमूर्तये० वायुमूर्त्यधिपतयेईशानाय० सोममूर्तये० सोममू
 र्त्यधिपतयेमहादेवाय० आकाशमूर्तये० आकाशमूर्त्यधिपतयेभीमाय० ॥ इत्यधिवासितपिडिकान्यासमंत्रहोमः ॥ अथगर्भागरेस्थापितपि
 डिकायांतत्वन्यासस्तस्यहोमः ॥ आत्मतत्वायनमःस्वाहा आत्मतत्वाधिपतयेक्रियाशक्त्यै० शिवतत्वाधिपतयेइच्छाशक्त्यै०
 विद्यातत्वाय० विद्यातत्वाधिपतयेआधारशक्त्यै० ॥ देवजीवन्यासानंतरंपंचोपनिषन्मंत्रन्यासस्तस्येदानींहोमः ॥ ॐ पांपरायपरमेष्ठ्यात्मनेन

मःस्वाहा वांपरायपुरुषात्मने० रांपरायविद्यात्मने० लांपरायनिवृत्त्यात्मने० वांपरायसर्वात्मने० ॥ ५ ॥ अथपृथिव्यादिपंचमहाभूतन्या
सहोमः ॥ ॐस्योनापृथिवि० स्वाहेतिपृथिव्याः १ ॐ अप्सुमेसोमो० पृजीःस्वाहाइत्यपां २ शुक्रमसीतितेजसः ३ वायोशतमितिवायोः ४
नासदासीदित्याकाशस्य आदित्पत्नस्येतिवा ५ ॥ इतिषोडशन्यासमंत्रहोमः ॥ एतेन्यासहोमाःईशानमुख्याचार्यकुंडएवकर्तव्याः ॥

श्रीः ॥ अथबौधायनसूत्रेत्रिविक्रमानुसारेणसिंधूक्तःसर्वदेवचलप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥ २६५ ॥ अथचलार्चाप्रयोगः ॥
नेय्यांहस्तमात्रंचतुरस्रंकुंडस्थंडिलंवाकृत्वापूर्वतोहस्तमात्रांद्वादशांगुलोच्चांत्रिवप्रांग्रहवेदिं नैऋत्यांचतुरंगुलोन्नतांहस्तमात्रांचा
स्तुवेदिं मध्येमंडपनवांशांहस्तोच्चांप्रधानवेदिंकृत्वातदुपरिसर्वतोभद्रंचिरच्यप्रतिष्ठादिनात्पूर्वेद्युःयजमानःआचम्यप्राणानाय

म्यदेशकालौसंकीर्त्य अस्यांमूर्तौलिंगेवादेवतासान्निध्यार्थदीर्घायुर्लक्ष्मीसर्वकामसमृद्ध्यक्ष्यसुखकामोहंग्रहयज्ञसहितांअमुक
मूर्तिंचलप्रतिष्ठांकरिष्ये ॥ (वास्तुदेवतापिंडिकापरिवारदेवतासत्त्वेतत्तदूहःकार्यः) ॥ तदंगभूतंमहागणपतिपूजनपूर्वकंस्वस्ति
वाचनंमातृकापूजनंनंदीश्राद्धंआचार्यादिवरणंचकरिष्ये ॥ तानिकृत्वा ॥ वृताचार्यःद्विराचम्यपवित्रपाणिःप्राणानायम्यदेश
कालाद्युच्चार्यअमुकमूर्तिंचलप्रतिष्ठाख्येकर्मणिजमानेनवृत्तोहमाचार्यकर्मकरिष्ये ॥ शरीरशुद्ध्यर्थपुरुषसूक्तजपंकलशाद्वाराध
नंचकरिष्ये ॥ तानिकृत्वायदन्नेतिगौरसर्षपान्विकीर्यशुचीवइतितृचेनपंचगव्येनआपोहिष्ठेतिवृचेनकुशोदकेनचदेवयजनंसंप्रो
क्ष्य स्वस्त्ययनं०अंहोमुच०देवाआयांतुइत्यादिभूमौप्रादेशंकुर्यात् ॥ ततउक्कविधिनामंडपप्रतिष्ठांकृत्वावापूर्वरान्नौसुव

चलार्चा-
॥२६५॥

॥३०९॥

स्वाच्छादितांमूर्तिपंचगव्यहिरण्ययवदुर्वाश्वत्थपर्णपलाशपर्णक्षिसोदकेनआपोहिष्ठेतिस्त्रिभिः हिरण्यवर्णाः शुचयइतिस्त्रि
 भिः पवमानः सुवर्जनइत्यनुवाकेनचाभिपिच्य व्याहृतिभिः इदं विष्णुरितिचपुष्पफलयवदूर्वाः समप्यरक्षोहणमितिदेवहस्तेकंक
 णंबद्धावाससाच्छाद्य अवतेहेळो० उदुत्तमं० मंत्राभ्यांगंधोदकपूरितजलद्रोण्यांप्राङ्मुखीमुदङ्मुखीचामूर्तिमधिवासयेत्॥ पात्रा
 भावेसंततधारांकुर्यात् ॥ ततः पूर्वोक्तकुंडसमीपमेत्यअमुकप्रतिष्ठांगत्वेनहोमंकर्तुंकुंडोपलेपनाद्यग्निप्रतिष्ठांकरिष्ये तद्गोमयेनोप
 लिप्यउल्लिख्य उपरिमेखलायांइदंविष्णुरिति विष्णुं मध्यमेखलायांब्रह्मजज्ञानमितिब्रह्माणं अधोमेखलायांकद्रुद्रायेतिरुद्रं यो
 न्यांगौरीर्मिमायेतिगौरींआवाह्यसंपूज्यतांकौशेयवाससाच्छाद्यबलवर्धननामानमग्निप्रतिष्ठाप्यध्यात्वा ॥ मंडपपक्षेनैर्ऋत्यवेद्यां
 वास्तुमंडलंवल्लिख्यतत्रशिख्यादिवास्तुदेवताआवाह्यसंपूज्य ईशान्यांकलशेविधिनावरुणंसंपूज्यवास्तुदेवताभ्यःपायसवल्लि
 दद्यात्॥ ततोऽग्रहवेद्यांग्रहान्संस्थाप्यसंपूज्याग्निसमीपमेत्यान्वाधानंकुर्यात् ॥ देशाद्युच्चार्यामुकमूर्तिचलप्रतिष्ठाहोमेदेवतापरिभ्र
 हार्थमित्यादिचक्षुषीआज्येनेत्यंतमुक्त्वा॥ गणपतिंउपकल्पितसर्वद्रव्यैः प्रतिद्रव्यमैकैकयावराहुत्या शिख्यादिवास्तुदेवताः प्रत्ये
 कंप्रतिद्रव्यंअष्टाष्टसंख्याकाभिःसमितिलपायसाज्याहुतिभिः वास्तोष्पतिंवास्तोष्पतइतिचतसृभिः प्रत्युचंप्रतिद्रव्यंअष्टाविंश
 तिसंख्याकाभिः पूर्वोक्तद्रव्यचतुष्टयाहुतिभिः वास्तोष्पतइतिचतसृभिर्वास्तोष्पतेध्रुवास्थूणामितिपंचर्भिः प्रत्युचंबिल्वफलैः च
 रक्ष्यादिदेवताः प्रतिदेवतंप्रतिद्रव्यंचतुःसंख्याकाभिः पूर्वोक्तद्रव्याहुतिभिः ॥ ग्रहहोमेआदित्यादिनवग्रहान्अष्टाष्टसंख्या
 काभिरर्कादिसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः अधिदेवताः प्रत्यधिदेवताश्चप्रत्येकंप्रतिद्रव्यंचतुश्चतुःसंख्याकाभिः पूर्वो० क्तुसाङ्गुण्यदे

वताः क्रतुसं० प्रत्येकं द्विद्विसं० पूर्वोक्तद्रव्यैर्यक्ष्ये ॥ अत्र प्रधानं ॥ इन्द्रं पृथिवीं पृथिवीमूर्तिं शर्वअग्निमूर्तिं पशुपतियमं यजमानमूर्तिं उग्रं निऋतिसूर्यमूर्तिं रुद्रं वरुणं जलमूर्तिं भववायुं वायुमूर्तिं ईशानं कुबेरं सोममूर्तिं महादेवं ईशानं आकाशमूर्तिं भीमं एता लोकपालमूर्तिं पतिदेवताः पलाशो दुंबराश्च त्र्यशम्यपामार्गसमित्ति लाज्यद्रव्यैः प्रतिदेवतं प्रतिद्रव्यं २८ वा ८ आहुतिभिः तत्तन्मंत्रैः ॥ स्थाप्य देवं अमुकं तन्मंत्रेण पूर्वोक्तसमित्यं च कतिलनैवारपायसाज्यैः प्रतिद्रव्यं १०८ वा २८ वा ८ संख्याहुतिभिः ॥ विश्वान् देवान् अग्निर्यजुर्भिरित्यनुवाकेन (तिलाज्याभ्यां) प्रतिद्रव्यं दशाहुतिभिः ॥ पिंडिकां प्रतिद्रव्यमष्टसं० ८ पूर्वोक्तसप्तद्रव्याहुतिभिः तत्तन्मंत्रेण ॥ परिवारदेवताश्चेत्तन्मंत्रैः अमुकदेवताः प्रत्येकं प्रतिद्रव्यं अष्टसंख्याकाभिः पूर्वो० ॥ एवं पंचपर्यायैः त्रिभिः पर्यायैर्वीर्यक्ष्ये ॥ ब्रह्मादिमंडलदेवताः प्रत्येकं दशभिर्घृताक्ततिलाहुतिभिर्यक्ष्ये ॥ शेषेणेत्याज्यभागांते यजमानस्त्यागं कुर्यात् ॥ ततो गणपतये वराहुतिं जुहुयात् ॥ ततो मेरुत्तरतः सजलं कलशं संस्थाप्य आज्यहोमेतस्मिन्संपातान्नयेत् ॥ सर्त्विगाचार्योऽन्वाधानक्रमेण होमं कुर्यात् ॥ प्रतिद्रव्यहोमांते देवं पादनाभिः शिरः सुस्पृशेत् ॥ तत्रादौ वास्तुदेवताहोमः ततोऽग्रहहोमः ततो लोकपालमूर्तिमूर्त्यधिपतीनां होमः ततः स्थाप्य देवताहोमः ॥ मंत्रास्तु—इदं विष्णुरिति विष्णोः त्र्यंबकमिति शिवस्य गणानां त्वेति गणपतेः उदुत्यमिति सूर्यस्य जाते वेदसे इति दुर्गायाः विष्णोर्नुकमिति नारायणस्य हिरण्यवर्णां मिलिक्ष्म्याः अथ वा विष्णवे नमः स्वाहा इत्यादिनामभिर्वाहोमः ॥ ततो विश्वेदेवोद्देशेन अग्निर्यजुर्भिरित्यनुवाकांते स्वाहेति १० आहुतयः ॥ ततः पिंडिकाहोमः द्वीश्चते० इति विष्णुपिंडिकायाः गौरीभिर्मायेति शिवपिंडिकायाः चित्रं देवानामिति सूर्यपिंडिकायाः गणेश

क्तिपिंडिकानांगौरीमिमायेति हनुमदादीनांशिवपिंडिकामंत्राःशिष्टैर्गृह्यते ॥ ततःपरिवारदेवताहोमःतत्तल्लिंगनिर्दिष्टवेदमं
 त्रैःनाममंत्रैर्वाकार्यः ॥ एवंप्रथमपर्यायहोमांतेदेवस्यपादौस्पृशेत् द्वितीयांतेनाभिं तृतीयांतेमध्यं चतुर्थीतेउरः पंचमांतेशिर
 इति ॥ पर्यायत्रयपक्षेतु प्रथमांतेपादौ द्वितीयांतेनाभिं तृतीयांतेशिरः ॥ ततोर्चांशोधयेत् ॥ देवंनत्वा ॥ स्वागतंदेवदेवेश
 विश्वरूपनमोस्तुते ॥ शुद्धेपित्वदधिष्ठानेशुद्धिकुर्मःसहस्वतां ॥ इतिसंप्रार्थ्य ॥ ॐ उत्तिष्ठब्रह्मण० इतिदेवमुत्थाप्य अद्र्युत्तार
 णंकुर्यात् ॥ यथाअग्निःसप्तिसितिसूक्तमग्निपदरहितंपुनस्तत्सहितमिति १०८ वा २८ संख्ययापठन्जलंपातयेत् ॥ ततो
 र्चाद्वादशवारंमृदाजलेनचप्रक्षाल्यमंत्रवत्कृतपंचगव्येनस्नापयेत् ॥ तत्रमंत्रौ ॥ ॐ पर्यःपृथिव्यांपयओर्षधीषपयोद्विव्यतरि
 क्षेपयोधां ॥ पर्यस्वतीःप्रदिशःसंतुमह्यं ॥ ॐ आवोराजान० ॥ ततःपंचामृतस्नानं आप्याय० दधिक्राव्णो० शुक्रमसि० म
 धुवाता० आयंगौः० ॥ लिंगंचेन्नमस्तेरुद्रमन्यवइत्यारभ्यमृडयातिनइत्यंताष्टमंत्रैःसंस्नाप्यघृतेनाभ्यंगंचदनोद्धर्तनंउष्णोदके
 नक्षालनंचकृत्वागंधंदत्वासंपातोदकैरभिषिच्यसपल्लवदलैश्चतुर्भिःकुंभैःक्रमेण आपोहिष्ठा० योवःशिवत० तस्माअरंग० आ
 कलशेषु० इति मंत्रैःसंस्नाप्यतैरेवकीकृतकुंभोदकैः समुद्रज्येष्ठाः० ४ आकलशेषु० इतिसंस्नाप्य ॥ पूर्ववेदिकायांऔदुंबरादिपी
 ठेर्चासुपवेक्ष्यपरितोष्टदिक्षुसजलकुंभेषुगंधपुष्पदूर्वाःक्षिप्वा ॥ आद्यकुंभेसप्तमृदः ॥ द्वितीयेपुष्करपर्णशमीविकंकताश्मंतक
 त्वचःपल्लवांश्च ॥ तृतीयेसप्तधान्यं ॥ चतुर्थेपंचरत्नानि ॥ पंचमेफलपुष्पाणि ॥ षष्ठेदूर्वारोचनाः ॥ सप्तमेसंपातोदकं ॥ अ
 ष्टमेसर्वौषधीःक्षिप्वा क्रमेण आपोहिष्ठेति तिसृभिःहिरण्यवर्णाःशुचयःपावकाइतिचतुर्भिःपवमानःसुवर्जनइत्यनुवाकेनप्रागा

दिकलशेनाभिषिच्य ॥ एककुंभेशमीपलाशवदखदिरबिल्वाश्वत्थविकंकतपनसाम्नशिरीषोदुंबराणांपलवान्कषायांश्चक्षिष्ट्वा तेनअश्वत्थेवइतिमंत्रेणाभिषिच्य पंचरत्नोदकेनहिरण्यवर्णाःशुचयःपावकाइतिसंस्नाप्य अहतेवाससीदत्वाउपरिवितानंबद्धायज्ञोपवीतादिदीपांतोपचारान्समर्प्य ॥ ॐ हिरण्यगर्भःसम० यआत्मदा० यःप्राणतो० यस्येमे० येनद्यौ० यंक्रंदसी० आपोहय० यश्चिदापो० इत्यष्टमंत्रैरष्टौपिष्टदीपान्दत्वासुवर्णशलाकयातैजसपात्रस्थंमधुघृतंचगृहीत्वा ॐ चित्रदेवाना० ॥ ॐ तेजोसिशुक्रमस्यमृतमसिधामनामासिप्रियेद्ववानामनाधृष्टंदेवयर्जनमसि ॥ इतिमंत्राभ्यां ॥ ॐ नमोभगवतेतुभ्यंशिवा यहरयेनमः ॥ हिरण्यरेतसेविष्णोविश्वरूपायतेनमः ॥ इतिचदक्षिणसव्येदेवनेत्रेमंत्रावृत्त्यालिखेत् ॥ ततः ॐअंजंतित्वा० इतिअंजनेनमधुनाचाङ्गत्वा ॐ देवस्यत्वा० द्वित्रेणानज्मि इतिमध्वाज्यशर्कराभिश्चाङ्गत्वा तेनैवमंत्रेणांजनेनपुनरंजयेत् ॥ ततआदर्शभक्ष्यादिदर्शयेत् ॥ ततःकर्ताचार्यायगामृत्विग्भ्यश्चदक्षिणांदद्यात् ॥ अथाचार्यःप्रत्यूचमादौप्रणवंवदन् पुरुषसूक्तेनदेवंस्तुत्वा वंशपात्रस्थपंचवर्णोदनेनदेवस्यनीराजनंकारयित्वा रुद्रायचतुष्पथादौदद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ ॐ नमोरुद्रायसर्वभूताधिपतयेदीप्तशूलधरायोमादयितायविश्वाधिपतयेरुद्रायैवैनमोनमः शिवमगर्हितंकर्मास्तुस्वाहेतिअश्वत्थपर्णेभूतेभ्योन मइतिभूतेभ्यश्चबलिंदद्यात् ॥ अथाचार्योमध्यवेद्युपरिकृतसर्वतोभद्रदेवानावाहयेत् ॥ मध्येब्रह्माणमित्यादिवैनायक्यंतादेवतानामभिरावाह्यसंपूज्याचार्योदेवंतत्रतन्मंत्रेणावाह्यमंडलमध्येस्थाप्यदेवतां ॥ ॐ सुप्रतिष्ठोभवेतिनिवेश्यसंपूज्यप्रतिदेव तंदशदशतिलाहुतीर्जुहुयात् ॥ ततोदेवेपुष्पांजलिसमर्प्य ॐ नमोमहद्भ्योनमइतिनत्वावेद्युपरिपूर्वभागेस्वस्तिकेउत्तरतोवासो

पस्करांशय्यांकृत्वा उत्तिष्ठेति देवमुत्थाप्य मंगलघोषैः शय्यायां देवमारोप्य पुरुषसूक्तोत्तरनारायणाभ्यां स्तुत्वाऽनंतरं देवेन्या
 सान्कुर्वात् ॥ पुरुषात्मने नमः प्राणात्मने ० प्रकृति तत्त्वाय ० बुद्धि तत्त्वाय ० अहंकार तत्त्वाय ० मनस्तत्त्वाय ० इति सर्वांगे ॥
 प्रकृति ० बुद्धि तत्त्वा ० हृदये ॥ शब्द तत्त्वाय ० शिरसि ॥ स्पर्श तत्त्वाय ० त्वचि ॥ रूप तत्त्वाय ० हृदि ॥ रस तत्त्वाय ० मुखे ॥
 गंध तत्त्वाय ० नासिकायां ॥ श्रोत्र तत्त्वाय ० श्रोत्रयोः ॥ त्वक् तत्त्वाय ० त्वचि ॥ चक्षुस्तत्त्वाय ० चक्षुषोः ॥ जिह्वा तत्त्वाय ०
 जिह्वायां ॥ घ्राण तत्त्वाय ० घ्राणे ॥ वाक् तत्त्वाय ० वाचि ॥ पाणि तत्त्वाय ० हस्तयोः ॥ पाद तत्त्वाय ० पादयोः ॥ पायुत ० पा
 यौ ॥ उपस्थ त ० उपस्थे ॥ पृथ्वी त ० पादादिजानुपर्यंतं ॥ अपृत ० जान्वादिनाभिपर्यंतं ॥ तेजस्त ० नाभ्यादिहृदयांतं ॥
 वायुत ० हृदयादिभ्रूमध्यांतं ॥ आकाशत ० भ्रूमध्यादिशिरोतं ॥ सत्त्व तत्त्वाय रजस्त ० तमस्त ० सर्वांगे ॥ ततः पुरुषसूक्तन्या
 सो नित्यपूजावत् ॥ ततः सुखशायी भवेति शय्यायां देवं स्थापयित्वा मंडलगय्ययोरंतरानंगंतव्यं इति प्रपदत्वास्विष्टकृदादिहो
 मशेषं समाप्य मंडले देवताभ्यो नामभिः पायसेन वलीन्दद्यात् ॥ नीवारचरुशेषेण दिग्बलीन् अग्नेः परितो दत्वा धामंत इति पूर्णाहु
 तिं हुत्वा ततः पिंडिकां परिवार देवांश्च प्रतिमासमीपे यथावकागदेशे वा वत्वाच्छादितपीठे निधाय मधुघृतेनाभ्यज्य शुद्धचारिणा प्र
 क्षाल्य पूर्वस्नानावशिष्टकलशवारिणा तत्तन्मंत्रैः स्नापयित्वा गंधादिभिरभ्यर्च्य वस्त्रैराच्छाद्य न्यासान्कुर्वात् ॥ तत्र पिंडिकायां
 ॐ धनमः हृदयाय नमः ॥ पंनमः शिरसे स्वाहा ॥ भंनमः शिखायै ॥ फंनमः कवचाय हुं ॥ कंनमो नेत्र ॥ क्षंनम अस्त्राय फट् ॥
 ततः महीमूषु ० इति मंत्रेणावाह्य अदितिर्द्यौरजनिष्ट ० इति स्तुत्वा ह्रीनम इति संपूज्य ॥ ॐ ह्रीनमः स्वाहेति पूर्णाहुतिं हुत्वा ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्षः परब्रह्मणे सर्वाधाराय नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं दिव्यतेजो धारिणि सुभगे नम इति मंत्राभ्यामधिवासयेत् ॥ ततः परिवारदेवेषु तत्तन्मंत्रेण षडंगन्यासं कृत्वा तत्तन्मंत्रेणाधिवासयेत् ॥ ततो देवस्य शिरोभागे विधिवत्कलशं संस्थाप्य तत्र ॥ वासुदेवं नमस्कृत्य निद्रामावाहयाम्यहं ॥ मोहिनीं सर्वभूतानां मनोविभ्रमकारिणीं ॥ एहि सा वित्रिमूर्तिस्त्वं चक्षुभ्यो ज्ञानगोचरे ॥ विशनासापुटे देविकंठे चोत्कंठिता भव इति निद्रामावाह्यसंपूज्य यजमानः अधिवासनांगत्वेनाचार्याय गामृत्विग्भ्यश्च दक्षिणां दद्यात् ॥ इत्यधिवासनं ॥ ततः परेद्युः सद्यो वा उत्तिष्ठ ब्रह्म ० इति देवमुत्थाप्य पुरुषसूक्तोत्तरनारायणाभ्यां स्तुत्वा ततः कुंडांतिकमागत्य देशकालौ स्मृत्वा प्रतिष्ठांगहोमं करिष्ये इति संकल्प्यान्वाधानं कुर्यात् ॥ चक्षुषी आज्येनेत्यंते स्थाप्य देवं तन्मंत्रेण घृतपक्वचरुणा दशाहुतिभिः अग्निं सोमं धन्वंतारिं कुहूं अनुमतिं प्रजापतिं परमेष्ठिनं ब्रह्माणं अग्निं सोमं अग्निमन्नापतिं प्रजापतिं विश्वान् देवान् सर्वान् देवान् प्रजापतिं अग्निं स्विष्टकृतं ॥ पूजांगहोमे विष्णुः स्थाप्यश्चेत्संकर्षणादि स्थाप्य देवताः शार्ङ्गिणं श्रियं सरस्वतीं पुष्टिं विष्णुं च कृसरेणैकैकया हुत्वा नाममंत्रेण ॥ पुनर्विष्णुं विष्णोर्नुकमिति षण्मंत्रैः कृसरेण ॥ पुनः संकर्षणादि १२ देवताः कृसरेण ॥ स्थाप्यः शिवश्चेत् भवं देवं शर्वेशानं पशुपतिं रुद्रं उग्रं भीमं महान्तं देवं प्रत्येकं कृसरेण ॥ भवस्य देवस्य पत्न्या द्यष्टदेवताः गुडौदनेन ॥ भवस्य देवस्य सुतमित्याद्यष्टौ देवताः हरिद्रौदनेन ॥ रुद्रं सप्तदशवारं मानोमहान्तमित्यादिसप्तदशमंत्रैः प्रतिमंत्रं कृसरेण ॥ शिवं शंकरं सहमानं शितिकंठं कपर्दिनं ताम्रं अरुणं अपगुरमाणं हिरण्यबाहुं ससिं जरंबभ्रुशं हिरण्यं प्रत्येकं कृसरेण ॥ शेषेणेत्यादि चक्षुष्यं ते स्थाप्य देवं मूलेन कृसराहुतीः १० अग्नये स्वाहेत्यादिना म्नासर्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहेति १५ ॥ अंते ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा १६

अग्नयेस्विष्टकृते १७ ॥ विष्णुश्चेत्संकर्षणादिदेवताःशिवश्चेद्भवादिदेवताः ॥ ततःपूर्णहुतिससर्तेअ० पुनस्त्वादित्या०
 मंत्राभ्यांहुत्वा आचार्यः याओषधीःपूर्वा० इतिदेवायपुष्पफलसर्वौषधीःसमर्घ्यसंपातोदकंताम्रपात्रेआदायदेवमंत्रेणशतवार
 मभिमन्त्र्यतेनदेवाशिरसिसिंचेत् ॥ ततउत्तिष्ठन्न० इतिदेवमुत्थाप्य विश्वतश्चक्षुः० इत्युपतिष्ठेत् ॥ ततोदेवंध्यात्वाजपेत् ॥
 ॐ ब्रह्मणेनमः विष्णवे० रुद्राय० इंद्राय० अग्नये० यमाय० वरुणाय० वायवे० सोमाय० ईशानाय० वसुभ्यः० रुद्रे
 भ्यः० अश्विभ्यां० मरुद्भ्यः० कुबेराय० गंगादिनदीभ्यो० अग्नीपोमाभ्यां० इंद्राग्निभ्यां० द्यावापृथिवीभ्यां० धन्वंतरये०
 सर्वेशाय० विश्वेभ्योदेवेभ्यः ब्रह्मणेनमःइति ॥ ततःसंपातवास्तुकलशजलेनसामात्यंजमानमभिमन्त्रेत्सर्व्विगाचार्यः ॥ त
 तोदेवंध्यात्वा ॥ ॐ प्रतितिष्ठपरमेश्वरेतिपुष्पांजलिंनिवेद्य ॥ सच्चिदानंदंब्रह्मैवभक्तानुग्रहायगृहीतविग्रहंकरचरणाद्यवयविनं
 शंखचक्राद्यायुधवंतंनिजवाहनाद्युपेतंनिजहृत्कमलेवस्थितंसर्वलोकसाक्षिणमणीयांसं परमेष्ठयसिपरमांश्रियंगमयेतिमंत्रेणपु
 ष्पांजलावागतंविभाव्यअर्चायांविन्यस्यप्राणप्रतिष्ठांकुर्यात्॥अस्यश्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्यब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयःऋग्यजुःसामानि
 छंदंसि क्रियामयवपुःप्राणाख्यादेवता आंबीजं क्रौंशक्तिः प्राणप्रतिष्ठायांविनियोगः॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्योनमःशिरसि ॥
 ऋग्यजुःसामछंदोभ्योनमोमुखे ॥ प्राणाख्यदेवतायैनमोहृदि ॥ आंबीजायनमोगुह्ये ॥ क्रौंशक्त्यैनमःपादयोः ॥ ॐ कंखंगं
 घंडंअंपृथिव्यसेजोवाय्वाकाशात्मनेआंहृदयायनमः ॥ ॐ चंछंजंझंजंइंशब्दस्पर्शरूपरसगंधात्मनेईंशिरसेस्वाहा ॥ ॐ दंठंडंढं
 णंउंश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मनेऊंशिखायैवपद् ॥ ॐ तंथंदंधनंपंवाक्पाणिपादपायूपस्थात्मनेऐंकवचायहुं ॥ ॐ पंपंवंभं

मंओंवचनादानविहरणोत्सर्गानंदात्मनेओंनेत्रत्रयायवौषट् ॥ ॐ यंरंलंवंशंपंसंहळंक्षंअंमनोबुद्ध्यहंकारचित्तविज्ञानात्मनेअःअ
स्त्रायफट् ॥ एवमात्मनिदेवेचकृत्वादेवंस्पृष्ट्वाजपेत् ॥ ॐ आंहींक्रोंयंरंलंवंशंपंसंहसःदेवस्यप्राणाइहप्राणाः ॥ ॐ आंहीं० हं
सःदेवस्यजीवइहस्थितः ॥ ॐ आंहींक्रो० हंसःदेवस्यसर्वेन्द्रियाणि ॥ ॐ आंहीं० हंसःदेवस्यवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्रा
णाइहागत्यस्वस्तयेसुखेनचिरंतिष्ठंतुस्वाहा ॥ ततअर्चाहृद्यंगुष्ठंदत्वा ॥ ॐ अस्यैप्राणाःप्रतिष्ठंतुअस्यैप्राणाःक्षरंतुच ॥ अस्यैदे
वत्वमर्चायैमामहेतिचकञ्चन ॥ इतिजपेत् ॥ ततः ॐ इतिसंरुध्यसजीवंध्यात्वाध्रुवाद्यौरितितृचंजह्वादेवकर्णेदेवगायत्रीदेव
मंत्रंचजह्वापुरुषसूक्तेनोपस्थायदेवस्यपादनाभिशिरःसुस्पृष्ट्वा इहैवैधिमा० इतिमंत्रंत्रिजपेत् ॥ ततःकर्ता ॥ स्वागतंदेवदेवेश
मन्नाग्यास्त्वमिहागतः ॥ प्राकृतंत्वमहद्द्वामांमातृवत्यरिपालय ॥ धर्मार्थकामसिद्ध्यर्थेस्थिरोभवशिवायनः ॥ सान्निध्यंतुसदा
देवस्वार्चायांपरिकल्पय ॥ यावच्चंद्रावनीसूर्यास्तिष्ठंत्यप्रतिधातिनः ॥ तावत्त्वयात्रदेवेशस्येयंभक्तानुकंपया ॥ भगवन्देवदेवे
शत्वंपितासर्वदेहिनां ॥ येनरूपेणभगवन्त्वयाव्यासंचराचरं ॥ तेनरूपेणदेवेशस्वार्चायांसन्निधोभव ॥ इतिनमेत् ॥ अथा
चार्यःकर्तावालिङ्गंअर्चावा ॐ भूःपुरुषमावाहयामि ॥ ॐ भुवःपुरुषमावाहयामि ॥ ॐ स्वःपुरुषमावाहयामि ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वःपुरुषमावाहयामि ॥ ॐ मित्यासनंदत्वा तेनैवदूर्वाश्यामाकविष्णुक्रांतापद्ममिश्रंपाद्यं ॥ ॐ इमाआपःशिवतमाःपूताःपू
ततमामेध्यामेध्यतमाअमृताअमृतरसाःपाद्यास्ताजुषतांप्रतिगृह्यतांप्रतिगृह्णातुभगवान्महाविष्णुर्विष्णवेनमइतिपाद्यं ॥ भग
वान्महादेवोरुद्रायनमइतिरुद्रे ॥ एवंदेवतांतरेषूह्यं ॥ इमाआपःशिवतमा० आचमनीयास्ताजुषतांप्रति० ॥ इमाआपः० अ

ध्यास्ताजुषतांप्रति० पंचामृतैःस्नानं ॥ देवमंत्रैःसंस्नाप्य ॥ इदंविष्णुरिति विष्णौ नमोअस्तुनीलग्रीवायेतिलिंगेकंकणंविसृज्य
 वस्त्रंयज्ञोपवीतंचदत्वा ॥ इमेगंधाःशुभादिव्याःसर्वगंधैरलंकृताः ॥ पूताब्रह्मपवित्रेणपूताःसूर्यस्वरश्चिमभिः ॥ इतिगंधाः ॥ इ
 मेमाल्याःशुभादिव्याःसर्वमाल्यैरलंकृताः ॥ पूता० ॥ इतिमालाः ॥ इमेपुष्पाः ॥ इतिपुष्पं ॥ वनस्पतिरितिधूपं ॥ ज्योतिः
 शुक्रंचतेजश्चदेवानांसततंप्रियं ॥ प्रभाकरंतुभूतानांदीपोयंप्रतिगृह्यतां ॥ इतिदीपं ॥ विष्णौसंकर्पणादिद्वादशनामभिःपुष्पा
 णिसमर्प्य तैरेवतर्पणंकृत्वापायसगुडौदनचित्रौदनानि पवित्रंतेविततमितिनियेद्यसंकर्पणादिद्वादशनामभिर्गृहसिद्धान्नकृ
 सराहुतीहुत्वा ॥ कृसरेणैव शार्ङ्गिणेऽश्रियैसरस्वत्यैपुष्ट्यैविष्णवेविष्णोर्नुकं० तदस्यप्रि० प्रतद्विष्णु० परोमान्त्रया० विचक्रमे०
 त्रिर्देव० इतिजुहुयात् ॥ लिंगेतुदीपांतकृत्वा भवायदेवाय० शर्वायदे० ईशानायदे० पशुपतयेदे० रुद्रायदे० उग्रायदे० भी
 मायदे० महतेदे० इतिपुष्पाणिदत्वातैरेवतर्पणंकृत्वा पवित्रंतेइतिपायसंगुडौदनंचनिवेद्यतैरेवनामभिःकृसरंजुहुयात् ॥ त
 तोभवस्यदेवस्यपत्न्यैइत्याद्याष्टभिर्गुडौदनंहुत्वा भवस्यदेवस्यसुतायइत्याद्याष्टभिर्हरिद्रौदनंहुत्वा त्र्यंबकं० मानोम० मानस्तोके
 आरात्तेगोघ्न० विकिरिद० सहस्राणिसहस्रशो० इत्यादिद्वादशभिःकृसरंहुत्वा शिवायशंकरायसहमानायशितिकंठायक
 पर्दिनेताम्रायअरुणायअपगुरमाणायहिरण्यबाहवेससिंपजरायबभ्रुशायहिरण्यायइतिचकृसरंहुत्वा स्विष्टकृदादिहोमशेषं
 माप्यपूर्वोक्तसर्वहविर्भिविष्णवेलिंगायवाबलिंदद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ त्वामेकमाद्यंपुरुषंपुरातनंनारायणंविश्वसृजंयजामहे ॥ त्व
 मेवयज्ञोविहितोविधेयस्त्वमात्मनात्मन्प्रतिगृह्णीष्वहव्यं ॥ लिंगेतुनारायणपदेरुद्रंशिवमित्यूहः ॥ ततोऽथत्थपर्णे ॥ ॐ भूर्भु

वःस्वरोमितिहुतशेषंनिधाय अग्निसहितंदेवंचतुर्वारंप्रदक्षिणीकृत्य विश्वभुजेनमः सर्वभुजे० आत्मने० इतिनत्वास्थापितदे
वतानामुत्तरपूजांविधायाचार्यायगांदत्वाऋत्विग्भ्योदक्षिणांदत्वा स्थापितदेवतापीठमाचार्यहस्तेप्रतिपाद्यशतंद्वादशयथाश
क्तिवाविप्रान्परमाग्नेनभोजयेदिति ॥ इतिप्रतिष्ठेदौनिर्णयसिंधूक्तःसर्वदेवचलार्चाप्रयोगः ॥ २६६ ॥ अथएकाद्व्यंरचलप्रतिष्ठा ॥ २६७ ॥

श्रीः ॥ यजमानःआचम्यप्राणानायम्यदेशकालाद्युच्चार्यपूर्वोक्तचलार्चावत्संकल्पादिनांदीश्राद्धांतंप्राग्वत्कृत्वा एकमाचार्यवृ
णुयात् ॥ आचार्योमुकेदेवप्रतिष्ठाकर्मकरिष्येत्यादिसर्षपविकिरणांतंकृत्वा ॥ आज्यभागांतेस्थाप्यदेवतांसहस्रमष्टोत्तरशतंवासमिदाज्यचरुति
वताआवाह्यसंपूज्य यथागृह्यमग्निप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् ॥ आज्यभागांतेस्थाप्यदेवतांसहस्रमष्टोत्तरशतंवासमिदाज्यचरुति
लद्रव्यैर्ब्रह्मादिमंडलदेवताःप्रत्येकंदशदशधृताक्तिलाहुतिभिःशेषेणेत्यादि ॥ तूष्णींनिर्वापप्रोक्षणे ॥ आज्यभागांते तडागन
दीतीरगोष्ठचत्वरपर्वतगजाश्वह्रदवल्मीकसंगमेतिदशमृद्भिरष्टवारंदेवंसंस्नाप्याग्न्युत्तारणंकुर्यात् ॥ सर्वतोभद्रस्थपीठेदेवमुप
वेश्यनाम्नावस्त्रगंधधूपदिदत्वाष्टदिक्षुपल्लवादियुतोदकुंभानष्टौदीपांश्च संस्थाप्यप्राग्वन्नेत्रोन्मीलनंचित्राग्नेनबलिंदत्वापुरुष
सूक्तेनस्तुत्वोक्तद्रव्यचतुष्टयंस्थाप्यदेवमंत्रेणहुत्वाएकैकद्रव्यहोमांतेदेवंस्पृशेत् ॥ आज्यहोमेकुंभेसंपातान्निक्षेपेत् ॥ मंडलदेवता
भ्योहुत्वाहोमशेषंसमाप्यपूर्णहुतिंजुहुयात् ॥ ततःपूर्वोक्तरीत्यासूक्तन्यासावाहनप्राणप्रतिष्ठांतंकृत्वा इहैवैधीत्युचंपुरुषसूक्तं
चजप्त्वा ॥ मूलमंत्रादिनावाहनादिपंचामृतस्नानांतंसंपातोत्तैरिमाआपःशिवतमाइत्यादिनाभिषेकः ॥ वस्त्रादिनैवेद्यांतंप्रा

ग्वत् ॥ तांबूलफलदक्षिणानीराजननमस्कारप्रदक्षिणादिविधाय पुष्पांजलिदत्वा ॥ साचार्यःकर्तादेवंनत्वाक्षमाप्याचार्यदक्षिणांतेऽष्टकुंभोदकैर्यजमानाभिषेकः ॥ विष्णुस्मृत्वाकर्मेश्वरैर्पथेदितिसंक्षेपः ॥ इतिएकाध्वरचलप्रतिष्ठा ॥ ॥ ४३ ॥

श्रीः ॥ कर्ताअमुकदेवस्यजीर्णोद्धारंकरिष्ये इतिसंकल्प्यगणपतिसंपूज्यपुण्याहंवाचयित्वा लिंगाद्युद्धारार्थंआचार्यादीनष्टौ

चतुरोवावृणुयात् ॥ (नांदीश्राद्धंकर्तव्यमितित्रिविक्रमः) ॥ ततआचार्यःअघोरेभ्यइत्यघोरमंत्रंअष्टोत्तरशतंजह्वाअग्निंप्रतिष्ठाप्यसर्वतोभद्रंनिर्मायवास्तुब्रह्मादिदेवताआवाह्यअघोरेणसर्षपैः सहस्रंहुत्वाइंद्रादिभ्योनाम्नामाषभक्तबलीन्दत्वाजीर्णदेवं प्रणवेनसंपूज्यब्रह्मादिसर्वतोभद्रमंडलदेवतानांहोमंकृत्वास्विष्टकृदादिहोमसमासिकृत्वादेवंप्रार्थयेत् ॥ जीर्णभग्नमिदंचैवसर्वदोषावहंनृणां ॥ अस्योद्धारैकृतेशांतिःशास्त्रेस्मिन्कथितात्वया ॥ जीर्णोद्धारविधानंचपुराष्टसुखावहं ॥ अधितिष्ठाथमांदेवप्रोद्गरामितवाज्ञयेति ॥ ततःस्थंडिलान्तरेअग्निंप्रतिष्ठाप्यक्षीराज्यमधुदूर्वाभिःऔदुंबरीभिःसमिद्भिश्चप्रत्येकमष्टोत्तरशतसंपूज्यप्रार्थयेत् ॥ लिंगरूपंसमागत्ययेनेदंसमधिष्ठितं ॥ यायात्समाहितंस्थानंसंत्यज्यैवशिवाज्ञया ॥ अत्रस्थानेचयाविद्यासर्वविघ्नेश्वरैर्युता ॥ शिवेनसहसंतिष्ठेतिमंत्रितजलेनाभिषिच्यसर्षपैःसंताड्यअर्घ्यदानेनविसर्जयेत् ॥ अघोरेणमंत्रेणयजमानहस्तेहममयंकंकणंबद्धा ॐ व्यापकेश्वरायनमः अस्त्रायफट् ॥ अस्त्रमंत्रितेनैहमखनित्रेणईशानदिशिसमंतात्त्रमन् अपसव्ये

नखनित्वा हेमपाशयुक्तया गोवालरज्ज्वा शिवादिकं ॐ व्यापकेश्वरशिखायै वषट्क इति शिखामंत्रेण बद्ध्वा आचार्य ऋत्विग्भिः सह
हउद्धरेत् ॥ ततः लिंगांगशिलान्वितां प्रतिमां पिंडिकां तत्स्थं निर्मात्य मादाय चंडाय निवेद्य रथमारोप्य तरुच्छायायां पर्वतदेशे वा
ग्रामादुत्तरतो मनोरमेस्थाने नीत्वा मधुनाभ्यज्याघोरेण मंत्रेण दहेत् ॥ ततः शांत्यै अघोरेण मंत्रेण तिलैः सह संहुत्वा फलपुष्पाक्षतहस्तः नूतनं देवं प्रार्थयेत् ॥ अ
नैव विधिना ध्वजादिकं विसर्जयेत् ॥ ततः शांत्यै अघोरेण मंत्रेण तिलैः सह संहुत्वा फलपुष्पाक्षतहस्तः नूतनं देवं प्रार्थयेत् ॥ अ
गवन्भूतभैरवश्लोकनाथजगत्पते ॥ जीर्णलिंगसमुद्धारः कृतस्तवाज्ञायामया ॥ अग्निना दारुजं दग्धं क्षिप्तं शैलादिकं जले ॥ प्रा
यश्चित्ताय देवेश अघोरास्त्रेण तपितं ॥ ज्ञानतो ज्ञानतो वापि यथोक्तं न कृतं च यत् ॥ तत्सर्वपूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ त्व
गोविप्रशिल्पिभूतानामाचार्यस्य च त्वनः ॥ शांतिर्भवतु देवेश अच्छिद्रं जायतामिदं ॥ मूर्तौ तु विशेषः ॥ त्वत्प्रसादेन निर्विघ्नं
देहं निर्मापयत्यसौ ॥ वासं कुरु सुरश्रेष्ठ तावत्त्वं चाल्पके गृहे ॥ वसं कुरु शंसहि त्वैव मूर्तैव तव पूर्ववत् ॥ यावत्कारयते भक्तः कुरुत
स्य च वाञ्छितमिति ॥ ततो होमशेषं सामाज्याचार्यादीन् विशेषतो चयेत् ॥ यजमानमभिषिच्य शिपो दद्यात् ॥ ततो नवां मूर्तिं
लिंगं वा कृत्वा प्रतिष्ठारंभपूर्वपंचरात्रमध्ये उक्तविधिना स्थापयेत् ॥ असुरैर्मूर्तिभिर्देवैस्तत्त्वविद्भिः प्रतिष्ठितं ॥ जीर्णवात्वयवाभ
मं विधिनापि न चालयेत् ॥ इति त्रिविक्रमः ॥ इति देवपिंडिकाप्रासादध्वजवाहनानां जीर्णोद्धारप्रयोगः ॥

॥ २६८ ॥ अथप्रासादप्रतिमयोर्जीर्णोद्धारः ॥

श्रीः ॥ यजमानःदेशकालौस्मृत्वाश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थप्रासादस्यपिंडिकायाचागर्भागारस्यवाभूमेर्वाजीर्णोद्धारणंकरिष्ये ॥ त
थाचान्नस्थितानांदेवतानांसंकोचत्वादुद्धृत्यस्थलांतरनयनार्थंचालनविधिकरिष्ये ॥ इतिप्रासादादन्यतमसंकल्पः ॥ निर्विघ्ना
र्धगणपतिपूजनंपुण्याहवाचनंआचार्यादिवरणंचकरिष्ये ॥ इतिसंकल्प्यगणेशपूजनादिकृत्वाआचार्यादीन्वृणुयात् ॥ अ
स्मिन्कर्मणिआचार्यत्वामहंवृणुइत्याचार्यवृत्वा ॥ ब्रह्माद्यृत्वजःपंचब्राह्मणान्वृणुयात् ॥ आचार्यःपूर्वकल्पितगृहंपंचगव्येना
भ्युक्ष्यतोरणादिनाअलंकृत्ययथास्थानंपादशिलांविन्यस्यउत्तरीत्यारत्नान्याधायासनंपरिकल्प्य गर्भगृहंप्रविश्यबहुभिरुदकैः
प्रक्षाल्यप्रतिमामभ्यर्च्यहोमंकुर्यात् ॥ तत्प्रकारः ॥ आचार्यःस्थंडिलादिविरच्यदेशकालौस्मृत्वाप्रासादस्यवागर्भगृहस्यवाजी
र्णोद्दारेविहितहोमंकरिष्ये ॥ अथवापिंडिकाप्रतिमयोश्चालनविधौविहितहोमंकरिष्ये ॥ अग्निस्थापनादिकृत्वासमिद्धयमादाया
स्मिन्नन्वाहितेग्रावित्यादि० ॥ अन्नप्रधानं ॥ देवेआवाहितप्रणवादिषोडशन्यासांतर्गततत्त्वानिप्रत्येकंदशदशसंख्ययातिलद्र
व्येणयक्ष्ये ॥ तथाचपिंडिकातत्त्वानि ॐयंथंभंड्रत्यादीनिप्रत्येकंदशदशसंख्ययातिलद्रव्येणयक्ष्ये ॥ शेषेणस्विष्टकृतमित्यादि
सद्योयक्ष्येइत्यन्वाधायप्रधानहोमंकुर्यात् ॥ प्रासादेतुप्रधानहोमेविशेषः ॥ प्रासादेपृथिव्यादितत्त्वानिप्रत्येकंदशदशसंख्यया
तिलद्रव्येणयक्ष्येशेषेणस्विष्टकृतमित्यादिपूर्ववत् ॥ प्रधानहोमस्तुपूर्वदेवाधिवासनोत्तरंषोडशन्यासहोमउक्तःसएवात्रग्राह्यः ॥
सचैवं ॐ अकारायनमः स्वाहा ॥ ॐ उकारायनमः स्वाहा ॥ इत्यादिप्रणवन्यासहोमः ॥ एवंप्रकारेणषोडशन्यासांतर्गततत्त्वे

भ्यःषोडशन्यासहोमविधिनाप्रतितत्वंदशाहुतीस्तिलैर्जुहुयात् ॥ प्रासादेतुजीर्णप्रासादेआवाहितपृथिव्यादितत्वेभ्योजुहुयात् ॥ तानितुप्रासादतत्त्वानिप्रासादोद्यापनप्रयोगेमयोक्तानित्रिविक्रमेणहेमाद्राबुक्तानिग्राह्याणि ॥ तत्प्रकारः ॥ ॐ पृथिवीतत्त्वानिपृथिव्यादितत्त्वानिखड्गेष्टूरिकायांवाविन्यस्यतंखड्गं देवपार्श्वेनिधायप्रासादनिष्पत्तिपर्यंतंखड्गं देववत्पूजयेत् ॥ खड्गेन्यासप्रकारस्तथैजं ॥ ध्यानेनप्रासादस्थितं पृथिवीतत्वंखड्गेन्यसामीति ॥ एवंप्रतितत्त्वमूहःकार्यः ॥ निष्पन्नेप्रासादेप्रासादप्रतिष्ठाविधिसर्वहोमादिविधाय तत्त्वन्याससमयेदेवनिकटस्थंपूर्वस्थापितंखड्गमानीयखड्गस्थितानितत्त्वानिमनसिध्यानेनप्रासादेयथास्थानंविन्यसेत् ॥ खड्गस्थितं पृथिवीतत्वंप्रासादेयथास्थानंन्यसामीत्यूहःकार्यः ॥ तंखड्गंआचार्यायदद्यात् ॥ इति ॥

॥ २६९ ॥ अथजीर्णप्रतिमापिण्डिकाप्रतिष्ठाविधिः ॥

श्रीः ॥ गर्भगारस्यजीर्णोद्धारोर्गर्भगारभूमौर्वापिण्डिकायावाजीर्णोद्धारोत्क्रियमाणेतत्रसंकोचत्वात्पूर्वस्थितदेवानांतत्रावस्थानं नसंभवतितदापूर्वकल्पितमंदिरांतरेनेतुंदेवानुद्धरेत् ॥ तत्प्रकारस्तथैव ॥ सुवर्णरजतताम्रान्यतमपात्रंगंधवारिणापूर्यगंधादिनाभ्यर्च्यमनोध्यानेन देवैर्पिण्डिकायांचपूर्वआवाहितप्रणवादिषोडशन्यासतत्त्वानितानिसर्वाणिजलपूरितताम्रादिपात्रेविन्यसेत् ॥ तत्रप्रयोगः ॥ देवस्थंअकारंपात्रजलेन्यसामि उकारंपात्रजले० मकारंपात्रजलेन्यसामि ॥ इतिप्रणवन्यासःप्रथमः ॥ अनेनप्रकारेणपूर्वोक्तषोडशन्यासप्रकारेणपूर्वोक्तषोडशन्यासतत्त्वानिपात्रेआवाहयेत् ॥ ततःपिण्डिकातत्त्वानि ॐ तथंमंभंइत्या

दीनिपात्रजलेन्यसामि ॥ एवंप्रकारेणदेवतत्वानिपिंडिकातत्वानिचपात्रजलेआवाहयेत् ॥ ततःसमस्तैर्द्रियसंयुक्तंसूक्ष्मदेहा
 न्वितंमूलसंज्ञकजीवंनियोज्यफलपुष्पाक्षतयुक्तहस्तःदेवंविज्ञापयेत् ॥ तद्यथा ॥ त्वत्प्रसादेननिर्विघ्नेहंनिर्माययत्यसौ ॥ वासं
 कुरुसुरश्रेष्ठतावत्त्वंचाल्पकेगृहे ॥ वसक्लेशंसहित्वैवमूर्तिवातवपूर्ववत् ॥ यावत्कारयतेभक्तःकुरुतस्यचवांछितं ॥ अनेनमंत्रेण
 देवंप्रार्थयेत् ॥ ततःकुदालादिशस्त्राणिपीठादौनिधायतत्र ॥ ॐ विश्वकर्मन्हुविपावावृधानःस्वयंयजस्वपृथिवीमृतद्यां ॥ मुहूर्तं
 त्वन्येअभितोजनासहस्रास्माकंमधवासूरिरस्तु ॥ इतिमंत्रेणशस्त्रेविश्वकर्माणंसंपूज्यशस्त्रेणपिंडिकांखनित्वादेवमुद्धृत्यमंगल
 वाद्यघोषेणपूर्वकल्पितंमंदिरंनीत्वायथास्थानावस्थितपीठादौदेवंस्थापयित्वाताम्रादिपात्रस्थितंजलंदेवशिरसिनिषिंचेत् ॥
 तस्यांत्रंप्रासादनिष्पत्तिपर्यंतंदेवनिकटेरक्षेत् अथवामुकुटवत्देवशिरसिनिदध्यात् ॥ ततःदिग्बलिदत्वादेवंसंपूज्य अग्निब्राह्म
 णांश्चसंपूज्यदक्षिणांदत्वाऽशिषोगृहीत्वानूतनंगर्भगृहादिकुर्यात् ॥ गर्भगृहादौनिष्पन्नेगर्भागारमध्येयथास्थानंजीर्णानूतनां
 वापिंडिकास्थापयेत् ॥ नूतनाचेत्पिंडिकाक्रियेततदाजीर्णोद्धारविधिनाजीर्णपिंडिकांविसर्जयित्वाजलादौतस्याःप्रतिपत्तिं
 कृत्वानूतनांपिंडिकांपूर्वोक्तपिंडिकास्थापनप्रकारेणस्थापयित्वा तत्ररत्नन्यासादिकृत्वा तत्रदेवंशलाकांतरितवज्रलेपादिना
 दृढीकृत्यवाससामूर्त्याच्छादनप्रकारेणपुनरर्चाशुद्धिकुर्यात् ॥ जीर्णवचेत्पिंडिकास्थाप्यतेतर्हितत्रदेवंस्थापयित्वाचाशुद्धिकु
 र्यात् ॥ वास्तुयागग्रहमखादिकृत्वामंगलवाद्यघोषेणसुमुहूर्तेशलाकांनिष्काश्यदेवंस्थिरीकृत्यमहापूजांकुर्यात् ॥ ततःदेवाभिषेक
 जलपूरितांपूर्वोक्तांताम्रादिपात्रीमादाय तत्रमनोध्यानप्रणवादिषोडशन्यासमनोगतानिअकारादितत्वानिआदायस्वस्था

नस्थितदेवेनियोजयेत् ॥ तत्प्रकारस्तु ॥ पात्रजलस्यमकारं देवस्य यथा स्थानं न्यसामि इति प्रणवादिषोडशान्यासांतर्गतानि त्वानि देवस्य यथा स्थानं विन्यस्य पिंडिकातत्त्वानि पिंडिकायां विन्यस्य तज्जलं देवस्य चरणयोर्निषिच्य पुनर्महापूजां महानैवेद्यादि महोत्साहं बलिप्रदानं कृत्वा ब्राह्मणान्संपूज्याभिषेकाद्याशिषो गृहीत्वा ब्राह्मणान्भोजयेत् ॥ इति जीर्णप्रतिमादिप्रतिष्ठा ॥

श्रीः ॥ कर्ता आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य अस्य देवस्य प्रासादस्य वा अमुकास्पृश्यस्पर्श-बहुकालपर्यंतं पूजालोप-अमेध्यवस्तुस्पर्श-चोरहरणादिजनिताशुचित्वनिवृत्त्यर्थं पुनः पूर्ववच्छुचित्वेन व्यवहारसिद्ध्ये प्रोक्षणविधिकरिष्ये ॥ इति संकल्प्य ॥ देवमुद्रास्य पंचवारं मृजलैः प्रक्षाल्य ब्रह्मकूर्चं संस्कृतं पंचगव्यैर्देवं स्नापयित्वा कुशैर्विशोध्य पंचगव्यादिभिः प्रासादं च संप्रोक्ष्य मूलेनाष्टोत्तरशतवारं देवं प्रोक्ष्य पुनर्मूलेन देवमूर्धादिपीठांतं स्पृश्य तत्त्वन्यासलिपिन्यासमंत्रन्यासपूर्वकं स्थिरप्रतिष्ठोक्तविधिना प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा ॥ महापूजां कुर्यात् ॥ महद्दोषादौ तदनुगुणमहापूजाविधिः ॥ रजस्वलादिसर्शेतु पुनः प्रतिष्ठा ॥

श्रीः ॥ कर्ता सपत्नीको वस्त्राभरणगंधमाल्याद्यलंकृतो देशकालौ संकीर्त्य अमुकशर्मणो मम सर्वपापक्षयपूर्वकरुद्रालयगमनानेकक १ तत्र पूर्वदिने सौवर्णौ कूर्ममकरौ राजतौ मत्स्यदुंदुभौ ॥ ताम्रौ कुक्षीरमंजूकावायसंशिशुमारकं ॥ वासोनवघटं सकुन्लाजादधिपयोधृतं एवमुपकल्प्यं ॥

डलवास्तु पूजाग्रहयज्ञपक्षेतदुपयोगिसामग्रीमुपकल्पयेत् द्वयोर्वह्नावाप्रतिष्ठानां युगपच्चिकीर्षया कूपारामप्रतिष्ठां गत्वेन वा पीकूपप्रतिष्ठां गत्वेनेति संकल्पः ॥

ल्पव्यापिस्वर्गलोकाहर्षपरार्धद्वयकालव्यापिमहस्तपःप्रभृतिलोकांगनासहितनागपूर्वकांगनासहितपरमविष्णुपदप्राप्तिकामश्चा
 मुकजलाशयोत्सर्गकरिष्ये वा स्वकृततडागस्यसर्वभोगार्हत्वसिद्धिद्वाराश्रोपरमेश्वरप्रीत्यर्थशौनकोक्तविधिनोत्सर्गकरिष्येइति
 संकल्पयेत् ॥ कूपस्यारामस्यचकूपारामयोरितिवासंकल्पऊह्यः ॥ तदंगत्वेनगणपतिपूजनंपुण्याहवाचनंमातृकापूजनंनानादी
 आर्द्धमाचार्यवरणंचकरिष्येइतिसंकल्प्यक्रमेणतानिकृत्वा गंधाद्यलंकृतमुदकुंभंपुरस्कृत्यसपत्नीकःसवांधवःस्वस्तिनोमिमीता
 मितिवेदघोषेणभेयादिनादेनचतडागदेशंगत्वातंप्रदक्षिणीकृत्यपश्चिमद्वोरणमंडपंप्रविशेत् ॥ तत्राचार्यःयदत्र
 प्राच्यैशान्युदीच्यन्यतरदिक्प्रवणांमार्जनोपलेपनवितानबंधनकदलीस्तंभाम्नपल्लवाद्यलंकृतांभुवंप्रविशेत् ॥ तत्राचार्यःयदत्र
 संस्थितमितिसर्षपान्विकीर्यशुचीवइतिपंचगव्येनभुवंप्रोक्ष्यापोहिष्ठेतिवृत्तेनाद्भिःप्रोक्ष्यस्वस्त्ययनंताक्ष्यमितिप्राथम्यं संस्कृतमु
 बोमध्यैकुंडंस्थंडिलंवाहस्तमात्रंकृत्वा तत्पूर्वभागेहस्तोच्छ्रायांचतुरस्रांकूर्मपृष्ठोन्नतावेदिकृत्वाकुंडंस्थंडिलान्यतरैशानभागेग्रह
 वेदिनैर्ऋत्यांवास्तुवेदिकृत्वामंडपपक्षेऽग्निमीळइत्यादितोरणाभिमंत्रणपूर्वकंपर्जन्यादिदेवतापूजनप्रभृतिप्रागादिशाखामूलेषु
 कुंभस्थापनांतंकुर्यात्॥ततोवास्तुपूजनपक्षेपूर्वकृतनैर्ऋतवेद्यांचतुःषष्टिसंख्यपदंकंवास्तुमंडलंकृत्वातत्रदेवताआवाह्यपूजयेत् ॥
 अत्रवास्तुमंडलंपणवत्यधिकशतसंख्यपदंककार्यमित्युक्तंकौस्तुभे केचित्तुतडागादौसैकविंशच्छतपदंकूपेषुचतुश्चत्वारिंशच्छ
 तपदमित्याहुः॥प्राग्वेद्यांसर्वतोभद्रेब्रह्मादिमंडलेदेवताश्चावाह्यसंपूज्य ततःमंडपाद्यभावपक्षेतुप्राथम्येनानंतरमेवोपविश्यमंडूका
 दीनामभ्युत्तारणंकृत्वातेष्वावाहनादिपूजांमंडूकादिदेवताभ्योनमइतिकुर्यात् ॥ स्थंडिलोपलेपनादिपूर्वकमग्निप्रतिष्ठाप्यच

त्वारिशृंगेत्यादिध्यानांते ग्रहयज्ञपक्षेत्रहाणामावाहनादिपूजांतंकृत्वातदीशान्यांकलशस्थापनादिवरुणपूजांतंकृत्वाग्नेःपश्चि
मत उपविश्य ॥ समिद्धयमादायान्वाधानंकुर्यात् ॥ चक्षुषी आज्येनेत्येतेग्रहयज्ञवास्तुपक्षेतद्देवतान्वाधानपूर्वकंतदभावेवक्ष्य
व्येण वरुणं त्रिशद्वारमाज्येन पुनर्वरुणमष्टवारं चरुणा तथा भद्रदेवताः प्रत्येकं दशदशदृता कृतिलाहुतिभिरेकैकज्याहुत्यावा ॥
शेषेण स्वष्टकृतमित्यादिपात्रासादने चरुस्थाल्यासहसकुलाजस्थाल्योरप्यासादनं ॥ प्रणीताप्रणयनांते अग्नेरीशानदेशेमहीद्यौ
रिति भूमिं स्पृष्ट्वा ओषधयः समितिधान्यं प्रक्षिप्य तत्र प्राग्ग्रांशान्कुशान्निधाय कलशं इमं मे गंगेति गंगादिमहानदीजलेनापूर्ययुवं
स्त्राणीति वा सो वेष्टितं गंधद्वारामिति गंधपुष्पांचितं चकृत्वा पंचपल्लवदूर्वायवंपंचरत्नहिरण्यफलानि अश्वत्येव इत्यादितत्तन्मंत्रैः
प्रक्षिप्य मंडूकादिरूपाणि तूष्णीं प्रक्षिपेत् ॥ ततः पूर्णादवीति पूर्णपात्रपिहिताननंतं कलशमाकलशेषु धावतीति मंत्रेण तेषु कुशेषु नि
धाय तस्मिन्कलशे निहितप्रतिमायां वरुणं संपूज्य कलशस्य मुखे विष्णुरित्यभिमंत्र्य देवदानवसंवादइति प्रार्थय पवित्रांतर्हितेशू
र्षेतूष्णीं द्वात्रिंशद्वारं निरूप्य तावद्वारं प्रोक्ष्य पयसि श्रपयेत् ॥ ततः पयोदधिभ्यामालोडितसक्तूने कस्यां स्थाल्यामन्यस्थाल्यामा
ज्यमिश्रितलाजांश्च प्रक्षिप्याज्यनिर्वापादिकाले आज्येन सह चरुसकुलाजानां पर्यग्निकरणं संमार्गं ते सक्तून् लाजांश्चास्मावधिश्चि

१ ततो वेद्युपरिमहीद्यौरित्यादिविधानां कुंभं संस्थाप्य तीर्थेनापूर्य वाससावेष्ट्य गंधादिभिरभ्यर्च्य तस्मिन् कुमादीनि क्षिपेदित्यन्यत्र विशेषः ॥

त्याभिधारणादिबर्हिरासादनमाज्यदक्षिणतःसांतरमुदकसंस्थंकृत्वाचरुमभिधार्यतिर्बर्हिपिसादयेत् ॥ ततआज्यभागांतेकृते
 ग्रहवास्त्वादिपक्षेत्तद्धोमांतेप्रधानाहुतीर्जुहुयात् ॥ आपोहिष्ठेतिनवानामांवरीपःसिंधुद्वीपआपोगायत्रीपंचमीवर्धमानासप्तमी
 प्रतिष्ठाअंत्येद्वेअनुष्टुभौअमुकजलाशयोत्सर्गप्रधानाज्यहोमेविनियोगः॥एवंकूपादाबूह्यं ॥ आपोहि० चक्षसेस्वाहा१ योवः० २
 तस्माअ० ३ शंनोदेवी० ४ ईशानावा० ५ अप्सुमेसोमो० ६ आपःपृणीत० ७ इदमपः० ८ आपोअद्या० वर्चसास्वाहा९ ॥ आपोअस्मा
 नितिपंचानांदेवश्रवाऋषिःआपोदेवताआद्यास्त्रिष्टुभःअंत्येद्वेअनुष्टुभौ० आपोअस्मान्मा० एमिस्वाहा १ द्रप्सश्चस्कंदप्र
 थमोअनद्यनिमंचयोनिमनयश्चपूर्वः॥ समानंयोनिमनुसंचरंतंद्रप्संजुहोर्गयनुसप्तहोत्राःस्वाहा २ यस्तैद्रप्सःस्कंदतियस्तैअंशुर्वा
 हुच्युतोधिषणायाउपस्थात् ॥ अध्वर्योर्वोपरिवायःपवित्रात्तैजुहोमिमनसात्रषद्रुकृतंस्वा० ३ यस्तैद्रप्सःस्कन्नोयस्तैअंशुरवश्च
 यःपरस्तुचा ॥ अयंदेवोबृहस्पतिःसंतसिंचतुराधसेस्वा० ४ पर्यस्वतीरोपधयःपर्यस्वान्मामकंवचः ॥ अपांपर्यस्वदित्ययस्तेनमास
 हर्षुधतस्वाहा ५ समुद्रादूर्मिरित्येकादशर्चस्यसूक्तस्यवामदेवऋषिःआपोदेवतात्रिष्टुपृच्छंदःअंत्याजगती० समुद्रादूर्मि० १ वयं
 नाम० २ चत्वारिशृंगा० ३ त्रिधाहितं० ४ एताअर्षेति० ५ सम्यक्स्रवंति० ६ सिंधोरिव० ७ अभिप्रवंत० ८ कन्याइव० ९ अभ्य
 र्भत० १० धामंतेविश्वं० ११ ततोदर्व्यामाज्येनोपस्तीर्यसक्तुभ्योद्विरवदायहविरभिघार्यावत्तमभिधारयेत् एवंपुनःपुनरवदाय
 नवाहुतीर्जुहुयात् ॥ प्रसुवइतिनवर्चस्यसूक्तस्यसिंधुक्षित्यैयमेधऋषिःआपोदेवताजगतीछंदःअमुकजलाशयोत्सर्गप्रधानसक्तुहो
 मेवि० ॥ प्रसुवआपो० १ प्रतेरद० २ दिविस्वनो० ३ अभित्वासिंधो० ४ इमंमेगंगे० ५ तृष्टामया० ६ ऋजीत्येनी० ७

स्वश्वसिंधुः० ८ सुखं० ९ ॥ ततोदक्षिणेनतडागंसयजमानआचार्योलाजानादायप्राग्भागेगत्वातत्रोपविश्यभुवंप्रक्षाल्य
 तस्यांहस्तेनादायलाजानानवाहुतीर्जुहुयात् ॥ अंबयोयंतीतिनवानामेधातिथिर्ऋषिःआपोदेवताआद्यास्तिस्रोगायत्र्यःचतुर्थी
 इ अपस्वां१तर० ४ अप्सुमे० ५ आपःपृणी० ६ इदमापः० ७ आपोअद्या० ८ संमार्गे० ९ अमूर्या० २ आपोदेवी०
 जाहुतीर्जुहुयात् ॥ क्रमेणउक्तेष्वज्यसक्तुलाजहोमेषुसर्वत्रअर्घ्यइदंनममेतित्यागः ॥ (अयंलाजहोमोनवर्गिभःसकृदग्नावेवोक्तो
 बालकृष्णपद्मतौ) अथान्नैःपश्चिमतउपविश्यत्रिंशदाज्याहुतीर्जुहुयात् ॥ नहितइतित्रिंशद्वचस्याजीगर्तिःशुनःशेषऋषिःवरुणो
 देवताआद्यादशत्रिष्टुभःततोविंशतिर्गायत्र्यःआज्यहोमेवि० ॥ नहितेक्षत्रं० १ अबुधे० २ उरंहिराजा० ३ शतंतैरा० ४ अमी
 चऋक्षा० ५ तत्त्वायामि० ६ तदिन्नक्तं० ७ शुनःशेषोह्य० ८ अवतेहेळो० ९ उदुत्तमं० १० यच्चिद्धिते० ११ मानोवधा० १२
 विमृळीका० १३ पराहिमे० १४ कदाक्षत्र० १५ तदित्समा० १६ वेदायो० १७ वेदमासो० १८ वेदवातस्य० १९ निषसाद०
 २० अतोविश्वा० २१ सनोविश्वाहा० २२ बिभ्रद्रापिं० २३ नयंदिप्संति० २४ उत्तयोमा० २५ परामेयं० २६ संनुवोचा०
 २७ दर्शनु० २८ इममेवरुण० २९ त्वंविश्वस्य० ३० ॥ सर्वत्रवरुणायेदंनममेतित्यागः ॥ ततश्चरोरवदानसंपदाष्टावाहुतीर्जुहु
 यात् ॥ प्रसन्नाजइत्यष्ट्यसूक्तस्यात्रिऋषिःवरुणोदेवतात्रिष्टुपृच्छदः ॥ अमुकजलाशयोत्सर्गप्रधानचरुहोमेवि० ॥ प्रसन्नाजे०
 १ वनेषुर्व्यं० २ नीचीनवारं० ३ उनत्तिभू० ४ इमामूष्वा० ५ इमामूनु० ६ अर्यम्यंवरुण० ७ कितवासो० ८ ॥ सर्वत्रवरुणायेदंन० ॥

मंडलदेवतानामन्वाधानानुसारेण जुहुयात् ॥ ततो दर्व्यामुपस्तीर्च्य सुवेणाज्यमादाय सकुलाजचरूणामुत्तरार्धात्सकृद्विर्वायथा
ल्यादिदत्वा पूर्णाहुत्यंतं कृत्वा ततः प्रणीतानिनयनसंस्थाजपपरिस्तरणविसर्जनपरिसमूहनादि ॥ ततः स्थापितकलशोदकैकदेशे
नाचार्योदूर्वापलवैरुदङ्मुखस्तिष्ठन्सबांधवस्य प्राञ्जुलस्य यजमानस्याभिषेकं कुर्यात्समुद्रज्येष्ठासुरास्त्वेत्यादिभिरभिषेकमंत्रैः ॥
तत्र पत्नीवामत उपविशेत् ॥ ततो धृतश्वेतवस्त्राणां सर्वेषां श्वेतचंदनपुष्पमालाभिराचार्यार्चनं कुर्यात् ॥ तत आचार्यः सयजमा
त्कूर्मादिरूपाण्युद्धृत्य तडागमध्ये साचार्यो यजमानः कुंभं निदध्यात् ॥ तथा कूपादावपि ॥ ततोऽस्मै तडागाय स्वस्तीति वदेयुः ॥ ततः स्थापितकुंभा
तौ ब्रुवंत्विति ब्राह्मणान्वाचयेत् ॥ ते चास्मै तडागाय स्वस्तीति वदेयुः कूपादावप्येवमूह्यं ॥ ततः पश्चिमतीर एव सर्वतीरेषु वा शतं यथा
शक्तिब्रह्माणान्भोजयित्वा यथाशक्तितेभ्यो दक्षिणां दत्त्वोभयमपि संकल्प्य वा वाहित ब्रह्मादीनामन्येषां ग्रहादीनां चोत्तरपूजनपू
र्वकं विसृष्टानामाचार्याय निवेदनं कृत्वा जलमध्ये पश्चिमतीरमारभ्यैशानदिक्पर्यंतं पुच्छाग्नान्वारब्धोगां नयेत् ॥ इमां धियमि
ति मंत्रस्य नाभाकऋषिः वरुणो देवता जलाशये गोरुत्तारणे विनियोगः ॥ इमां धियं शिक्षमाणस्य देवाक्रतुं दक्षं वरुणं संशिक्षाधि ॥
यथातिविश्वार्दुरितातरे मसुतर्माणमधिनावरुहेम इति मंत्रेण (इरावतीति मंत्रेणेत्यन्यत्र) अवतीर्य माणां तां गामनुमंत्रयीत ॥ इ
दं सलिलं पवित्रं कुरुष्व शुद्धाः पूता अमृताः संतु नित्यं ॥ मां तारयंती कुरुती र्थाभिषेकलोका लोकां तरेतीर्यते चेति ॥ गोरुत्तरणं वा

पीकूपयोर्नेतिकेचित् ॥ ततईशान्यांपरपारेगत्वाजानुदघ्नजलेउदङ्मुख्यागोःपुच्छमादायगुरुणान्वितोयजमानःसकुशैर्यवति
लैःस्वशाखोत्तरीत्यादेवर्षिपितृणांतर्पणंकुर्यात् ॥ तत्रप्राङ्मुखोदेवानुदङ्मुखऋषीन्दक्षिणामुखःपितृंस्तर्पयेत् ॥ ततआपोअस्मा
न्मातरइत्युत्तीर्थं सूयवसाङ्गवतीहिभूयाइतिगामैशान्यांदिशिस्थापयेत् ॥ यदिगौर्हिंकुर्याद्धिंकृण्वतीवसूपत्नीत्यनुमंत्रयेत् ॥
ततोवस्त्रवेष्टितकंठांहेमश्रुगीरौप्यखुरांताम्रपृष्ठांकांस्यदोहांवृषप्रजांतांगामाचार्यायदद्यात् ॥ यज्ञसाधनभूतायाविश्वस्याघप्र

१ अन्नपौराणमत्रैरपितर्पणकेचिदाहुयथा ॥ पितापितामहश्चैवतथैवप्रपितामहः । स्वस्वपत्नीसमेतास्तेप्रीयंतांजलतर्पणात् ॥ अजातदंतायेकेचिद्धे
चगर्भेव्यवस्थिताः । तेषामुद्धरणार्थयकूपस्योदकतर्पणं ॥ पितृव्यकाश्चयेस्माकंभ्रातरश्चसहोदराः । गुरवोमातुलाःपुत्राआचार्याःसखिबांधवाः ॥ एते
षांप्रीणनार्थायतडागोदकतर्पणं ॥ बधुवर्गाश्चयेकेचिद्धोत्रनामविवर्जिताः । स्वगोत्राःपरगोत्रावातेभ्यश्चेदंतिलोदकं ॥ अग्निदग्धाश्चयेकेचिन्नाग्निदग्धा
स्तथापरे । विद्युत्पातहतायेचतेभ्योपीदंतिलोदकं ॥ अप्सरादेवपत्न्यश्चमातरश्चंडिकास्तथा । दिक्पालालोकपालाश्चग्रहदेवाधिदेवताः । तेषांवैप्रीणना
र्थायतडागोदकतर्पणं ॥ रौरवेचांधतामिलेकुंभीपाकेचयेगताः । अनेकयातनासंस्थाःप्रेतलोकेचयेगताः । पच्यंतेसंयमिन्यायेयेनीतायमकिंकैरः । अ
सिपन्नवनेघोरेतेभ्योदद्यांतिलोदकं ॥ विश्वेदेवास्तथासाध्याआदित्याश्चमरुद्गणाः । क्षेत्रपीठोपपीठानिनद्यश्चैवससागराः । पातालेनागपत्न्यश्चनागाश्चैव
सर्पवताः । पिशाचागुह्यकाःप्रेतागणगंधर्वराक्षसाः । पृथिव्यापश्चतेजश्चवायुराकाशमेवच । तेसर्वेतृप्तिमायांतुतडागोदकतर्पणात् ॥ पितृवंशेश्मृतांते
भ्योदत्तंतडागस्यजलेमेतत्सुतृप्तये ॥ आब्रह्मणोयेतेभ्यश्चकूपोदकमेतदस्तु ॥ अतीतकुलकोटीनांसप्तद्वीपनिवासिनां । आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु
तिलोदकं ॥ वापीकूपादौतत्तदूहःकार्यः । नीलकंठस्त्वस्यनिर्मूलतामाह ॥

णाशिनी ॥ विश्वरूपधरोदेवः प्रीयतामनयागवा ॥ यदिगोरुत्तारणकालेच्छदोगद्वाराप्लवाख्यसामगानं कार्यते तदा सामगायैतद्गो
दानमाचार्यायान्यापयस्विनीदेया ॥ ततोयजमानः सकुशतिलोदकं अंजलावादायोत्सर्गकुर्यात् ॥ एतत्तडागस्थितं जलममुकगो
त्रोऽमुष्यप्रपौत्रोऽमुष्यपौत्रोऽमुष्यपुत्रो मुकशर्महंपरमेश्वरप्रीतिकामो नानाभूतेभ्यः साधारणमुत्सृजामि देवपितृमनुष्याः प्रीयं
तामिति ॥ आचार्योपि देवपितृमनुष्याः प्रीयंतामिति वदेत् ॥ ततोयजमानः ॥ सर्वसत्वेभ्य उत्सृष्टं मयैतज्जलमूर्जितं ॥ सेवंतां सर्व
भूतानि दानपानावगाहनैः ॥ सामान्यं सर्वभूतेभ्यो मया दत्तमिदं जलं ॥ धर्मार्थकाममोक्षेषु साधनं स्यादहर्निशमिति ॥ ततो जलां
तिकदेशादग्नेः पश्चिमदेशमागत्य तत्रोपविश्य रजतरूपामन्यां वाभूयसो दक्षिणां ब्राह्मणेभ्यो दत्त्वा शिल्पिनो वस्त्रादिनां संपूज्य वि
ष्णुं स्मृत्वा भगवदर्पणं कुर्यात् ॥ इत्यनंतदेवीये शौनकोक्तस्तडागकूपारामाद्युत्सर्गविधिः ॥ २७२ ॥ ॥ ६३ ॥

श्रीः ॥ तत्रादौ सूतकोत्तरं मृतदुष्टजलाशयात्सहस्रशतादिकलशान्विप्रादिवर्णगवादिपशुतारतम्येन बहिरिष्काश्याचमनादि
देशकालकीर्तनां तेऽस्मिन्कूपेनृगवादिमरणजन्यदोषनिबर्हणद्वारास्य सर्वेषां जलपानावगाहादौ जलशुद्धये शांतिकरिष्यइतिसं
कल्प्यगणेशपूजनाद्याचार्यवरणांतं कुर्यात् ॥ आचार्यः प्रादेशकरणांतं स्थंडिलात्पूर्वतः सर्वतोभद्रं महीधौरित्यादिविधिवत्स्था
पितकलशे सुवर्णप्रतिमायांतत्त्वायामीति वरुणमावाह्यसंपूज्याग्निप्रतिष्ठाप्य ग्रहान्संपूज्यान्वा दध्यात् ॥ चक्षुषी आज्येनेत्यंतेऽत्र
हानुत्कीर्त्य प्रधानं वरुणं तिलसर्पिर्भ्यो प्रतिद्रव्यं १००८ वा १०८ आहुतिभिः शेषेणेत्यादिद्रव्यत्यागांतं कर्मणि कृते न्वाधानानुसारे

पुहुत्वा जलशुद्धिं कुर्यात् ॥ ब्रह्मकूर्चविधिना साधितं पंचगव्यं सप्तमृदः गंगादिपुण्यनदीजलानि जीर्णकूपप्रस्रवणोदकानि वा तत्तन्मंत्रैः कूपे प्रक्षिप्य कुंडभस्मतिलामलकशंखोदकविष्णुपादोदकानि च क्षिप्त्वा प्रायश्चित्तसूक्तानि पुरुषसूक्तपवमाननतमं होइति वा इति अस्य वामीयंकस्य नूनमित्यादीनि वारुणसूक्तानि जह्वावगाह्यशान्तिं पठेत् ॥ अस्य कर्मणः पुण्याहं भवतो ब्रूवंत्वित्यादिपुण्याहं वाचयित्वा स्वष्टकृदादिहोमशेषं समाप्य यजमानाभिषेक आचार्यपूजनादि कृत्वा तस्मै गामन्येभ्यो दक्षिणां दत्वा ब्राह्मणभोजनं संकल्प्य कर्मैश्वरार्पणं कुर्यात् ॥ इतिकूपतडागादौ मृतदोषशान्तिः समाप्ता ॥ ॥ ४३ ॥

॥ २७३ ॥ अथ काम्यवृषोत्सर्गः ॥

श्रीः ॥ अथ शौनकोक्तमार्गेण वृषोत्सर्गो लिख्यते ॥ वृषलक्षणं ॥ लोहितो यस्तु वर्णं न मुखे पुच्छे च पांडुरः ॥ श्वेतः खुरविषाणाभ्यां स नीलो वृष उच्यते ॥ यद्वा ॥ चरणास्तु मुखं पुच्छं यस्य श्वेतानि गोपतेः ॥ लाक्षया समवर्णश्च स नीलो वृष उच्यते ॥ एवं लक्षणो मुख्यः तदभावे यथा संभवं वा ग्राह्यः ॥ वृषोत्सर्गादाद्ये हि गृहे गोष्ठे तीर्थे शिवालये पुण्यक्षेत्रे वा यथा शास्त्रं पताका ध्वजशोभितं षोडशहस्तं द्वादशहस्तं वामं डपं छाया मामंत्रं वा कृत्वा तन्मध्ये ईशानभागे वा वेदीमष्टहस्तां चतुर्हस्तां वा सुशोभितां कृत्वा कृतार्हिकः पूर्वाह्णकृताभ्यंगः कृतमंगलश्च देशकालादिस्मृत्वा मम समस्तपितृणामुच्चार्य ममुककामनासिद्ध्यर्थं वा वृषोत्सर्गं ख्यं कर्म श्वः सद्यो वा करिष्ये ॥ तदंगणेशपूजनादिकरिष्य इति संकल्प्य षोडशोपचारैर्गणपतिं कुलदेवतां च पूजयित्वा स्वशाखानुसारेण पुण्याहं वाचनं मातृकापूजनं नादीश्राद्धं च कृत्वा आचार्यं वृणुयात् ॥ आचार्यो मंडपदेवताः प्रतिष्ठाप्य पताकादितत्तन्मंत्रैः स्थापयेत् ॥ ए

तस्मिन्नहनिनवग्रहमखमपिकेचिदिच्छंति ॥ ततोवृषस्यचतसृणांवत्सतरीणांचद्वयोरैकस्यावायथालाभंमांगलिकस्नानादिका
 रयित्वाब्राह्मणान्भोजयित्वाहविष्यंयजमानोभुंजीत ॥ ततःश्वोभूतेकृतनित्यक्रियःत्रेद्युपरिहस्तमात्रंस्थंडिलंविधायदेशकालौ
 स्मृत्वाउपक्रांतंवृषोत्सर्गमहंकरिष्ये तदर्थमग्निस्थापनादिकरिष्यइतिसंकल्प्यपंचभूसंस्कारपूर्वकमध्वरनामानमग्निस्थापयेत् ॥ ॐ आनंदो
 स्वयंवृतोवाआचार्यःसद्योऽधिवासनंवाकार्ये ॥ अग्निस्थापनदेशादीशान्यांपंचगोमातरःपीठेवस्त्रोपरिपूज्याः ॥ ॐ आनंदो
 स्थापयामि ॐ सुमनसां० ॐ सुभद्रां० ॐ सुभद्रशीलां० ॐ सुरभिं० एताःसंपूज्यतासामग्रेआग्नेय्यांवाधान्योपरिनवमव्र
 णंरुद्रकलशंवस्त्रवेष्टितंपंचरत्नंपंचपल्लवहिरण्यादियुतंआकलशेष्वितिस्थापयित्वा इमंमेगंगेइतिजलेनापूर्यतदुपरिताम्रवंशादि
 मयेभाजनेयथाशक्तिसुवर्णनिर्मितारुद्रप्रतिमांस्थापयित्वासंपूज्यचएकब्राह्मणेनरुद्रमंत्रेणानुमंत्रणंकारयेत् ॥ ततोवत्सतरी
 भिःसहवृषंशुद्धोदकेन आपोहिष्ठाकयानइतिसूक्ताभ्यामभिपिंचेत् ॥ आपोहिष्ठेतिनवर्चस्यसूक्तस्यांबरीपःसिंधुद्वीपआपोगा
 यत्रीपंचमीवर्धमानासप्तमीप्रतिष्ठाअंत्येद्वेअनुष्टुभौवृषवत्सतर्धभिपेकेविनियोगः ॥ कयानइतिसृणांवामदेवइंद्रोगायत्रीतृ
 तीयापादनिचृत् ॥ वृषवत्सतर्धभि० कयानश्चित्र० ३ ॥ ततोवस्त्राक्षतंगंधमाल्यैरलंकृत्य अन्वाधानंकरिष्यइतिसंकल्प्यच
 धुपीआज्येनेत्यंतमुक्त्वा अन्नप्रधानं रुद्रंचरुद्रव्येण सोमंपायसेन इंद्रंयावकेनशेषेणस्विष्टकृतमितिसद्योयक्ष्यइत्युक्त्वापरिस
 मूहनादिपूर्णपात्रनिधानांतंकृत्वा रुद्रायत्वाजुष्टंनिर्वपामीत्यादिनिर्वापप्रोक्षणादिक्रमेणचर्वादिश्रपणंकृत्वाऽवदानधर्मेणजुहु
 यात् ॥ ॐ रुद्रायस्वाहा रुद्रायेंदनमम इतिचरुं ॥ सोमायस्वाहा सोमायेदं० इतिपायसं ॥ इंद्रायस्वाहा इंद्रायेंदं० इति

यावकं ॥ ततःस्विष्टकृदादिपरिसमूहनांतंकृत्वाऽकृत्वावा ॥ ततःस्त्रीभिर्विवाहवत्कृतमांगलिकंवृषंप्रादक्षिण्येनवेद्यालत्तरतो
नीत्वाप्राङ्मुखंवृषंस्वयमुदङ्मुखोमधुपर्कणयथागृह्यंपूजयेत् ॥ ततोलंकरणैर्वृषंभूषयित्वावस्त्रछत्रोपानत्कांस्यभाजनाचमनपा
त्रादियथाशक्तिसमर्प्यहरिद्राकुंकुमादिनालंकृत्यततोदक्षिणोरौतसेनराजतन्निशूलेनांकयित्वावामोरौरौवमेणचक्रेणांकयेत् ॥
अभावेआयसाभ्यां ॥ उत्सर्गकालेवांकनं ॥ अस्मिन्पक्षेअंकनार्थंचिह्नमात्रंकार्यमस्मिन्काले ॥ ततोवृषेन्यासः ॥ इषेत्वितिमू
र्ध्नि ॥ इमारुद्रायेतिशूलंके ॥ नमस्तेरुद्रइतिचक्रांके ॥ सहस्राणीतिललाटे ॥ विभ्राडितिभ्रुवोः ॥ त्र्यंबकमितिनेत्रयोः ॥
मानस्तोकेइतिनासिकायां ॥ अवतत्येतिमुखे ॥ नीलग्रीवौद्वौकंठे ॥ मर्माणितइतिबाहुमध्यतः ॥ समिधान्निमितिबाहुभ्यां ॥
नमोवःकिरिकेभ्यइतिहृदि ॥ हिरण्यगर्भइतिनाभौ ॥ मीढुष्टमेतिकट्यां ॥ मानोमहांतमित्यूर्वोः ॥ उडुत्यमितिजंघयोः ॥
इमारुद्रायेतिजान्वोः ॥ रक्षोहणमितिगुदे ॥ वृष्णस्तइतिलिंगे ॥ ऋषभंमेतिपुच्छे ॥ त्रिपादूर्ध्वइतिखुरेषु ॥ एवंन्यासंकृत्वावेद्याः
समीपमानीयअग्नेःपश्चिमभागेस्वगृह्योक्तविधिनार्धविवाहंचतुर्भिर्वत्सतरीभिःसहकुर्यात् ॥ तत्रप्रयोगः ॥ देशकालौस्मृत्वा
ममसर्वेषांपूर्वजानांनिरतिशयसानंदब्रह्मलोकावाह्यर्थं अमुककामनयाश्रीरुद्रस्वरूपिणेषुषायवत्सतरीकन्यादानमहंकरिष्ये
इतिसंकल्प्यदीर्घमायुरस्त्वित्यादिसर्ववृषखुरेकार्थं ॥ ततःपूर्ववत्संकल्प्यरुद्रस्वरूपायवृषायगौरीस्वरूपाइमाःयथाशक्त्यलंकृ
ताःवत्सतरीस्तुभ्यमहंसंप्रददे ॥ (एकद्वयादिवत्सतरीपक्षेगौरीस्वरूपासिमांयथाशक्त्यलंकृतांवत्सतरीं-इमेवत्सतयौवैतियोज्यं)
अनेनवत्सतरीदानेनभगवान्वृषस्वरूपीश्रीरुद्रःप्रीयतामित्युक्त्वा ॥ अस्यनीलोद्वाहस्यप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थइदंहिरण्यंदक्षिणात्वेन

संप्रददे ॥ एवंकन्यादानंयथास्वगृह्यंकार्यं ॥ ततोवृषवत्सतरीणामभिषेकोरुद्रकलशस्थोदकेनैभिर्मन्त्रैःकार्यः ॥ आपोहिष्ठेति नवभिः ॥ समुद्रज्येष्ठाइतिचतसृभिः ॥ इमंमेगंगेइत्येकया ॥ कयानइत्येकया ॥ सहस्राक्षंशतधारमृपिभिःपावनंकृतं ॥ तेनत्वामभिपिंचामिपावमान्यःपुनंतुमां ॥ भगंतेवरुणोराजाभगंसूर्योबृहस्पतिः ॥ भगमिंद्रश्चायुश्चभगंसप्तर्षयोददुः ॥ यत्ते केशेषुदौर्भाग्यंसीमंतेयच्चमूर्धनि ॥ ललाटेकर्णयोरेक्ष्णोरापस्तद्भंतुसर्वदा ॥ सुरास्त्वामभिपिंचंतु० एतैर्मन्त्रैरभिषिच्यवृषक णेमन्त्रंजपेत् ॥ धर्मस्त्वंवृषरूपेणजगदानंदकारक॥ अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतःपाहिसनातन ॥ ततः तीक्ष्णशृंगायाविज्जहेवदपादायधी महि ॥ तन्नोवृषःप्रचोदयात् ॥ इतिवृषगायत्र्यापूजयेत्प्रार्थयेच्च ॥ ततोऋषभंमासमानानामितिप्रार्थयेत् ॥ ततोगवांप्रार्थ ना ॥ गावोमेअग्रतःसंतुगावोमेसंतुपृष्ठतः ॥ गावोमेहृदयेसंतुगवांमध्येवसाम्ग्रहं ॥ पंचगावःसमुत्सन्नामथ्यमानेमहोदधौ ॥ ता सांमध्येतुयानंदातस्यैधेन्वेनमोनमः ॥ यालक्ष्मीःसर्वभूतानांयाचदेवेष्ववस्थिता ॥ धेनुरूपेणसादेवीममपापंव्यपोहतु ॥ अयं हिवोमयादत्तःसर्वासांपतिरुन्नमः ॥ तुभ्यंचैतामथादत्ताःपत्न्यःसर्वामनोरमाः ॥ इत्युक्त्वासर्वमपिविवाहहोमंलाजादिनाआ चार्योवृषान्वारब्धःकुर्यात् ॥ ततोन्नेःपूर्वतःउदङ्मुखंवृषंकृत्वाताम्रपात्रेप्राङ्मुखोयत्रैस्तिलैश्चतत्पुच्छेतर्पणंकुर्यात् ॥ वत्सतरीपु च्छमपिवृषपुच्छेमेलयेत् ॥ तद्यथा ॥ पूर्वोक्तएवंगुणविशेषणविशिष्टायांशुभपुण्यतिथौदेवर्षिपितृणांदुर्गतिगतानांचतृप्तयेआ त्मनआकल्पंसंतानाविच्छेदार्थंवृषपुच्छेतर्पणमहंकरिष्यइतिसंकल्प्य ॥ ब्रह्मादयोयेदेवास्तान्देवांस्तर्पयामीत्यादियथागृह्यंत

१ एकवत्सतरीपक्षे—अयंहितेमयादत्त सुखायपतिरुत्तम ॥ तुभ्यंचैपामयादत्तापत्नीसर्वमनोरमा ॥ एवमेवाग्रेप्येकवचनविज्ञैरूहनीयम् ॥

र्पणंकृत्वा ॥ ततःप्राचीनावीतीदक्षिणामुखःपित्रादित्रयीमात्रादित्रयीमातामह्यादित्रयीत्यादिसर्वास्तर्पये
 त् ॥ यावंतःस्मर्येतेतांश्चसर्वान् ॥ ततःपुराणश्लोकैस्तर्पयेत् ॥ तद्यथा ॥ ब्रह्माद्यादेवताःसर्वाऋषयोमुनयस्तथा ॥ असुराया
 तुधानाश्चमातरश्चंडिकास्तथा ॥ दिक्पालालोकपालाश्चग्रहदेवाधिदेवताः ॥ तेसर्वेतृप्तिमायांतुनीलपुच्छेसुतर्पिताः ॥ विश्वे
 देवास्तथादित्याःसाध्याश्चैवमरुद्गणाः ॥ क्षेत्रपीठोपपीठांनिनदानद्यश्चसागराः ॥ पातालेनागपत्न्यश्चनागाश्चैवसपर्वताः ॥ पि
 शाचागुह्यकाःप्रेतांगंधर्वागुह्यराक्षसाः ॥ पृथिव्यापश्चतेजश्चवायुराकाशमेवच ॥ दिविभुव्यंतरेचैवयेचपातालवासिनः ॥ शि
 वःशिवातथाविष्णुःसिद्धिलक्ष्मीःसरस्वती ॥ तपोधनाश्चभगवानव्यक्तःपरमेश्वरः ॥ क्षेत्रौपधिलतावृक्षावनस्पत्याधिदेवताः ॥
 कपिलःशेषनागश्चतक्षकोनंतएवच ॥ अन्येजलचराजीवाअसंख्यातास्त्वनेकशः ॥ चतुर्दशयमाश्चैवयेचान्येयमकिंकराः ॥
 सर्वेपियक्षराजानःपक्षिणःपशवस्तथा ॥ स्वेदजोद्भिज्जजाजीवाअंजजाश्चजरायुजाः ॥ अन्येपिवनजीवायेदिवानिशिविहारि
 णः ॥ अजागोमहिषीरूपायेचान्येपशवस्तथा ॥ शांतिदाःशुभदास्तेस्युनीलपुच्छेसुतर्पिताः ॥ आब्रह्मस्तंबपर्यंतयेचान्येगोत्रि
 णस्तथा ॥ तेसर्वेतृप्तिमायांतुनीलपुच्छेसुतर्पिताः ॥ सर्पव्याघ्रहतायेचशृंगिदंष्ट्रचनिलाग्निभिः ॥ अपुत्राअक्रियायेचअदारा
 धर्मवर्जिताः ॥ आमगर्भमृतायेचशस्त्रपातमृताश्चये ॥ संस्काररहितायेचरौरवादिपुगाभिनः ॥ आब्रह्मस्तंबपर्यंतदेवर्षिपितृमा
 नवाः ॥ तृप्यंतुपितरःसर्वेमातृमातामहादयः ॥ अतीतकुलकोटीनांसप्तर्द्धीपनिवासिनां ॥ आब्रह्मभुवनाह्लोकादिदमस्तुति
 लोदकं ॥ पितृवंशेमृतायेचमातृवंशेचयेमृताः ॥ गुरुश्वशुरवंधूनांयेचान्येबांधवामृताः ॥ येमेकुलेलुप्तपिंडाःपुत्रदारविवर्जि

ताः ॥ क्रियालोपगतायेचजात्यंधाःपंगवस्तथा ॥ विरूपाआमगर्भाश्चज्ञाताज्ञाताःकुलेमम ॥ तेपिबंतुमयादसंवृपपुच्छेतिलो
 दकं ॥ येबांधवाबांधवावाअन्यजन्मनिबांधवाः ॥ तेसर्वेतृप्तिमायांतुवृपपुच्छेतिलोदैकैः ॥ वृक्षत्वंचगताःकेचित्तृणगुल्मल
 तास्थिताः ॥ यातनासुचघोरासुज्ञातीषुविविधासुच ॥ नरकेषुचघोरेषुपतितायेस्वकर्मणा ॥ देवत्वंमानुषत्वंवातिर्यक्प्रेतपि
 शाचतां ॥ कुमिकीटपतंगत्वंगतायेचस्वकर्मभिः ॥ तेषामुद्धरणार्थायजलमेतद्दाम्यहं ॥ आब्रह्मसंबपर्यंतजगत्तृप्यत्वितिब्रु
 वन् ॥ तर्पणांतेपुत्रकामश्चेद्यजमानस्ताहिंदंपतीउपविश्य अद्येत्यादिसत्पुत्रावाह्यर्थस्नानमहंकरिष्यइतिसंकल्पपूर्वकंसप्तधा
 न्यफलान्वितवंशपात्रेषुच्छान्येकीकृत्यतदुपर्युदकदानेनवारुणमंत्रैः समुद्रज्येष्ठाइत्यादिभिश्चस्नापयेद्वंशपात्रगलितोदकेनतद
 धस्तादुपविष्टौदंपतीआचार्यः ॥ ततस्तानिवस्त्राणिपरित्यज्यनवस्त्राणिपरिधायपिंडदानमित्यपिशिष्टसंप्रदायः ॥ एवंतर्प
 णंकृत्वावेधांवृषस्यदक्षिणेशुरेपायसेनचरुणाज्येनहविष्येणवापित्रादिभ्यःसर्वेभ्योदक्षिणाभिमुखेनपिंडदानंकार्यं ॥ येयेस्मर्य
 तेतेभ्यश्च ॥ अत्रमात्रादित्रयेमातामह्यादित्रयेचपृथक्कृद्द्यात् ॥ पिंडदानेहोमचरुशेषंग्राह्यं ॥ श्राद्धमपिकार्यमितिकेचित् ॥
 पिंडदानसंकल्पस्तुपूर्वोक्तविशिष्टदेशकालेचपितृतृह्यर्थआकल्पंतेषांब्रह्मलोकनिवासार्थं दुर्गतिगतानांस्मर्यमाणानामस्मर्यमा
 णानांचोद्धारार्थं आत्मनश्चाकल्पंसंतानाविच्छेदार्थंवृषस्यधर्मरूपस्यदक्षिणेशुरेपिंडदानमहंकरिष्य इति ॥ एवंसर्वेभ्यःपिंडा
 न्दत्त्वापुराणश्लोकैः ॥ पितृवंशेशेमृतायेचमातृवंशेशेचयेमृताः ॥ गुरुश्वशुरबंधूनांयेचान्येबांधवामृताः ॥ येमेकुलेषुसपिंडाःपु
 त्रदारविवर्जिताः ॥ क्रियालोपगतायेचजात्यंधाःपंगवस्तथा ॥ विरूपाआमगर्भाश्चज्ञाताज्ञाताःकुलेमम ॥ शुरेदत्तेनपिंडेनत

प्रायांतु परंगतिं ॥ वृक्षयोनिंगताये च तिर्यग्योनिंगताश्चये ॥ पंगुत्वं च गताये वै ये च मूकत्वमागताः ॥ आब्रह्मणो ये मम वंशजा
तामा तु स्तथा वंशभवामदीयाः ॥ वंशद्वये ये मम दासभूताभृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ॥ मित्राणिसख्यः पशवश्च वृक्षा इष्टाश्च ह
ष्टाश्च कृतोपकाराः ॥ जन्मांतरे ये मम संगताश्च तेभ्यः स्वधापिंडमहं ददामि ॥ अजातदंताये केचिद्ये च गभे प्रपीडिताः ॥ उद्धंघनमृ
ष्टारणार्थाय इमं पिंडं ददाम्यहं ॥ बंधुवर्गे च ये केचिन्नामगोत्रविवर्जिताः ॥ स्वगोत्रे परगोत्रे वा तेभ्यः पिंडं ददाम्यहं ॥ उद्धंघनमृ
ताये च विषशस्त्रहताश्च ये ॥ शृंगिभिर्दिष्टिभिर्वीपितेभ्यः पिंडं ददाम्यहं ॥ अग्निदाहे मृताये च सिंहव्याघ्रहताश्च ये ॥ रौरवे
तिनो ये च तेभ्यः पिंडं ददाम्यहं ॥ अग्निदग्धाश्च ये केचिन्नाग्निदग्धास्तथापरे ॥ विद्युच्चोरहताये च तेभ्यः पिंडं ददाम्यहं ॥ अ
चांधतामिस्त्रेकालसूत्रे च ये गताः ॥ तेषां ॥ असंख्यया तना संस्थायै नीताय मर्किकरैः ॥ तेषां ॥ पशुत्वं च गताये च पक्षि
ने कया तना संस्थामृताः प्रतेषु ये गताः ॥ तेषां ॥ अन्यैर्दुर्मरणैर्नैव क्षुधया तृषयामृताः ॥ भूतप्रेतपिशाचाश्च तेभ्यः पिंडं ॥ मा
कीटसरीसृपाः ॥ अथ वा वृक्षयोनिस्थास्तेभ्यः पिंडं ॥ एवं पिंडदानं कृत्वा शेषं सर्वसमापयेत् ॥ पिंड
दिव्यं तरिक्षभूमिष्ठाः पितरो बांधवादयः ॥ ते सर्वे तु तृप्तिमायां तु पिंडेनानेन सर्वदा ॥ जालं तरसहस्रेषु भ्रमंतः स्वेन कर्मणा ॥ मा
नुष्यं दुर्लभं येषां तेभ्यः पिंडं ॥ अथ केचित्प्रेतरूपेण वर्तते पितरो मम ॥ ते सर्वे तु तृप्तिमायां तु पिंडेनानेन सर्वदा ॥ देशकालौ स्मृ
दक्षिणां दत्त्वा ब्राह्मणैर्वृषपुरे पिंडदानं संपूर्णमस्त्विति वाचयित्वा पिंडोच्चारणादिसर्वकृत्वा वृषवत्सतरीरग्निदक्षिणत आनीयाग्नेः
पूर्वतो दक्षिणामुखस्त्रिशूलेन दक्षिणोरौ वामे च क्रेणचां कयित्वा विसर्जयेत् ॥ प्रांचः केचिन्निशूलमात्रमिच्छंति ॥ देशकालौ स्मृ

त्वाङ्मं वृषं चतुर्विधमुक्तिरूपं वत्सतरी चतुष्टययुतं यथाशक्त्यलंकृतं पितृणा मुद्गारपूर्वकमाकल्पं ब्रह्मलोकप्राप्तये आकल्पं संताना
 विच्छेदाय च वृषमुत्सृजामीति संकल्प्य प्राञ्चमुत्सृजेत् ॥ ब्रजंतं पृष्ठे हस्तं दत्त्वानुमंत्रयीत ॥ एतं युवानमित्यस्य याज्ञवल्क्यो वृषभ
 स्त्रिष्टुप् वृषानुमंत्रणे विनियोगः ॥ ॐ एतं युवानं परिवाददामि ते नृक्रीडतींश्चरत प्रियेण ॥ मानः शासजनुर्वासुभागा रायसो
 भेषसमिपामदेमिति ॥ शांताते पृथिवी शिवमंतरिक्षं द्यौस्ते देव्यभयं कृणोतु ॥ शिवादिशः प्रदिश उद्दिशस्त आपो विद्युतः परिपां
 नुसर्वतः शांतिः शांतिः इति त्रिः ॥ सर्वतो ब्रजस्वेति ब्रूयात् ॥ ऋषभं मेति पंचर्चस्य सूक्तस्य ऋषभो नंदी श्वरो नुष्टुप् अंत्या महापं
 क्तिः ऋषभोपस्थाने विनियोगः ॥ ऋषभं मां समानां ० ऋचः ५ ॥ ततो वृषं पूर्वदिगभिमुखं कृत्वा ॥ कद्रुद्रायै तिनवर्चस्य सू
 क्तस्य धौरः कण्वोरुद्रो गायत्री तृतीयामैत्रावरुणी अंत्यस्तृचः सौम्योत्पानुष्टुप् पूर्वदिगुपस्थाने ० ॥ कद्रुद्राय प्रचेतसे ० ९ ॥ सू
 क्तजपांते हे वृषगोभिः सह तृणानि भक्षयथेष्टं पर्यटेति वदेत् ॥ अथ दक्षिणाभिमुखं कृत्वा ॥ इमारुद्रायै त्र्येकादशर्चस्य सूक्तस्य कु
 त्सोरुद्रो जगती अंत्ये त्रिष्टुभौ ॥ दक्षिणादिगुपस्थाने ० ॥ इमारुद्रायै त्र्येकादशर्चस्य सूक्तस्य गृत्समदोरुद्रस्त्रिष्टुप् ॥ पश्चिमदिगुपस्थाने विनि ० ॥
 र्ववद्वेत् ॥ ततः प्रत्यङ्मुखं कृत्वा ॥ आते पितरिति पंचदशर्चस्य सूक्तस्य गृत्समदोरुद्रस्त्रिष्टुप् ॥ अथोदङ्मुखं कृत्वा ॥ इमारुद्रायै स्थिरधन्वन इति
 आते पितर्मरुतां सुम्रमेतु ० १५ ॥ सूक्तजपांते गोभिः सहेत्यादि पूर्ववद्वेत् ॥ अथोदङ्मुखं कृत्वा ॥ इमारुद्रायै स्थिरधन्वने गिरः ऋ ० ४ ॥ सूक्तजपांते गोभिः सह
 चतसृणां वसिष्ठोरुद्रो जगती अंत्या त्रिष्टुप् ॥ उत्तरदिगुपस्थाने ० ॥ इमारुद्रायै स्थिरधन्वने गिरः ऋ ० ४ ॥ सूक्तजपांते गोभिः सह
 ति पूर्ववद्वेत् ॥ ततो गच्छति वृषेऽनुगच्छन्स्तुवीत ॥ वृषो हि भगवान्धर्मो मुक्तयो वत्सिका इमाः ॥ सारूप्यं चैव सान्निध्यं सायु

ज्यं च स लो क तां ॥ इ माः स रू पाः प ल् व य स्तु च त स्र स्त व गो प ते ॥ क ल्पि ताः क्री ड ना र्थं च त्व या सा र्धं ब्र जं त्वि माः ॥ ध र्मो सि त्वं च तु ष्पा
दः स्मृ तो व त्स त री स्ति व माः ॥ च तु र्णो पो ष णा र्थं य म यो त्सृ टा स्त व या स ह ॥ दे वा नां च पि तृ णां च म नु ष्या णां च यो ग तः ॥ भू ता नां तु
सि ज न ना स्त व या सा र्धं ब्र जं त्वि माः ॥ न मो ब्र ह्म ण्य दे वा य दे व र्षि पि तृ पो ष क ॥ त्व यि मु क्ते ऽ क्ष या लो का म म सं तु नि रा म याः ॥ वृ षो
हि भ ग वा न्ध र्मं च तु ष्पा दः प्र की र्ति तः ॥ वृ णो मि त म हं भ त्त या स मां र क्ष तु सर्व दा ॥ ध र्म त स्त व सं भू तिः स्वा हा त्वं च वि भा व सोः ॥ गा वो मे अ
ष रू पे ण सा दे वी सर्व का म प्र दा स्तु मे ॥ अ दि ति दे व मा ता त्वं दे व मा ता त थै श्व री ॥ धे नु रू पे ण सा दे वी म म पा पं व्य पो ह तु ॥ धे नु रू पे ण सा
ग्र तः सं तु गा वो मे सं तु पृ ष तः ॥ गा वो मे ह द ये नि त्यं ग वां म ध्ये व सा म्भ हं ॥ या ल क्ष्मीः सर्व दे वा नां या च दे वे ष्व व स्थि ता ॥ ध र्मे दे हि य शो दे
दे वी म म पा पं व्य पो ह तु ॥ पंच गा वः स मु ल्य न्ना म थ्य मा ने म हो द धौ ॥ ता सां म ध्ये तु या नं दा त थ्ये धे न्वै न मो न मः ॥ पि त्र णो त्ता र णा र्थं य
हि पु त्रान् दे हि सु सं प दः ॥ ए को त्तर श तं चै व कु ला नां ता र य स्व मे ॥ रु द्र मा या म या द त्ताः प ल य स्त व वृ षो त्त म ॥ ये त्वां हिं सं ति पा प्मा नो न र
प र्य ट स्व म ही मि मां ॥ खुरा ग्र क्षे प नैः सर्व म म पा पं व्य पो ह तु ॥ पि त र स्तु ति मा यां तु खुरा ग्र ज ल सी क रैः ॥ ये त्वां हिं सं ति पा प्मा नो न र
कं यां तु ते ऽ क्ष यं ॥ ये त्वां र क्षं ति ध मि ष्ठाः सु ख भा जो भ वं तु ते ॥ त व द र्प कृ तो त्रा टै र्न दी कू ल वि हा र णैः ॥ अ क्ष य्याः सं तु मे लो काः पू र्ण
जा नां च सी र भ ॥ ध न सं ता न मा रो ग्यं बां ध वा नां वि शो क तां ॥ त तः प्र द क्षि णी कृत्य वृ षं त म भि वा द ये त् ॥ धा र णा च्छ र्म इ त्या हु र्ध मे
ण वि धृ ताः प्र जाः ॥ च र त्वं ध र्म रू पे ण वृ ष व त्स त री यु तः ॥ ध र्म स्त्वं वृ ष रू पे ण ब्र ह्म णा नि र्मि तः पु रा ॥ त वो त्स र्ग प्र भा वे ण उ च्छ र स्व म
हार् ण वा त् ॥ ए वं न म स्कु ल्य मं त्र वा द्य धो पे ण सी मां तं नी त्वो त्सृ जे त् ॥ स न वा ह्यो गा वः प ल य श्र न दो ह्याः ॥ त त आ ग ल्य च र ण क्षा ल ना

चमनादिविधायस्थापितदेवतानामुत्तरपूजांविधायविसृज्यसर्वदेवप्रतिमादिआचार्यायदद्यात् ॥ रुद्रकलशःसोपस्करोरुद्रजा
 पकायदेयः ॥ ततःप्रायश्चित्तादिहोमशेषंसमापयेत् ॥ केचित्स्विष्टकृदाद्यत्रैवेच्छन्ति ॥ कर्मणःसांगतासिद्ध्यर्थशतब्राह्मणा
 न्पंचविंशतिःयथाशक्तिवाभोजयिष्ये ॥ यथाशक्तितिलानुदकुंभंवासोहिरण्यंगांचदद्यात् ॥ सूत्रांतरेतुसवत्सागौर्दक्षिणा ॥
 सर्वांनृत्विजःसंपूज्यतेभ्योदक्षिणांनिरीक्षिताज्यदानंचकृत्वाभूयसोदत्वाशिषोग्राह्याः ॥ एवंयथोक्तविधिनायस्तुनीलंसमुत्सृ
 जेत् ॥ सर्वसिद्धिमवामोतिथथातेब्रह्मचारिणइत्यादिफलकथनंविस्तरभयान्नकथितंहेमाद्र्यादेरवगंतव्यं ॥ इतिभट्टरामेश्वरसु
 तनारायणभट्टकृतःकाम्यवृथोत्सर्गआश्वलायनीयानाम् ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥
 ॥ २७४ ॥ अथरुद्रपद्धतिः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ भट्टरामेश्वरसुतोभट्टनारायणःसुधीः ॥ प्रणम्यरामंतनुतेरुद्रानुष्ठानपद्धतिं ॥ तत्रतावद्यद्यप्यनेकासुयजुः
 शाखासुरुद्रःपठ्यतेतथापितैत्तिरीयशाखानुसारेणरुद्रप्रयोगलुच्यते ॥ स्मार्तरुद्रप्रयोगस्यबौधायनसूत्रमूलकत्वेनबह्वृचादीनां
 च तत्रबौधायनंग्राह्यंबह्वृचादिभिरादरादितिवाक्यानुसारेणबौधायनीयानुरोधित्वादिति ॥ इहचरुद्रानुष्ठानेनैवार्णिकानामे
 वाधिकारोन्नीक्षीशूद्रानुपनीतानां तेषांवैदिकमंत्रयुक्तकर्मण्यध्ययनाद्यभावेनसाक्षाद्भचनाभावेनानधिकारादिति ॥ अन्यत्र
 चैतद्विस्तरेणनिर्णीतं ॥ तत्ररुद्रःपंचधा ॥ रूपंरुद्रीलघुरुद्रोमहारुद्रोतिरुद्रश्चेत्येकादशगुणवृद्ध्या ॥ सर्वश्चत्रेधा ॥ जपरुद्रोहोम
 रुद्रोभिषेकरुद्रश्चेति ॥ जपरुद्रोपिद्वेधा ॥ केवलजपात्मकोहोमांगश्चेति ॥ होमाभिषेकयोस्तुकेवलतदात्मकत्वमेव ॥ तत्रता

वयापक्षयकामः श्रीरुद्रप्रीतिकामोवा उत्तरायणादौ गुरुशुक्रास्तबाल्यवार्धकादिरहितेशुभेकालेशुक्लपक्षादौ रिक्ताभौमव्यतीपा
तविष्ट्यादिदोषरहितायां द्वितीयादिस्वाध्यायशुभतिथौ चंद्रानुकूल्ये कृतमांगलिकस्नानः शुचिः शुक्लवासाः सपत्नीकोयजमा
नः पूजितेष्टदेवतो गोमयलिप्ते शुचौ देशे प्राञ्जु खडपविश्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य मम कायिकादिसर्वपापक्षयार्थं श्रीरुद्र
प्रीत्यर्थं वा अमुकरुद्रमहंकरिष्यइतिसंकल्पयेत् ॥ पुत्रकामस्तु दीर्घायुः सुपुत्रसिद्ध्यर्थं महारुद्रमहंकरिष्यइति महारुद्रमेव संकल्पये
त् ॥ सनवग्रहरुद्रकरणेतु सनवग्रहमखरुद्रं करिष्यइति विशेषः ॥ एवं प्रधानसंकल्पं विधाय अस्मिन्कर्मणि निर्विघ्नसमाप्तिं सिद्ध
र्थगणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नादीश्राद्धमाचार्यादिवरणं च करिष्यइतिसंकल्पयेत् ॥ प्रत्येकं वा संकल्पः ॥ ततः
षोडशभिः पंचभिर्वोपचारैर्गणेशं पूजयित्वा कलशपूजापूर्वकमवनि कृतजानुमंडलइत्याद्या श्वलायनगृह्यपरिशिष्टोक्तविधिना पु
ण्याहं वाचयित्वा गौर्यादिषोडशब्राह्म्यादिसप्तमातृश्च पदार्थानुसमये न पूजयेत् ॥ सर्वत्र चाक्षतपुंजादौ पूजनमावाहनादिविस
र्जनांतं कुर्यात् ॥ प्रतिमापूजने त्वावाहनविसर्जने नस्तः ॥ ततो नादीश्राद्धं कुर्यात् ॥ ततः शांतं सुव्रतं वेदविदं कुटुंबिनमाचार्यम
मुकप्रवरोपेतो मुकगोत्रो मुकशर्माहं अमुकप्रवरोपेतममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमाचार्यत्वां वृणइति वृणुयात् ॥ क्षत्रिये त्वमु
कवर्मेति वैश्ये त्वमुकगुप्तेति ॥ ततः प्रार्थयेत् ॥ आचार्यस्तु यथा ॥ एवमेव ब्रह्माणं वृत्वा यथा चतुर्मुखइति प्रार्थयेत् ॥ जपहो
मादिकं तु स्वयमेव कुर्यात् ॥ स्वस्याशक्तौ स्वप्रतिनिधित्वेन जपाद्यर्थं ब्राह्मणान् वृणुयात् ॥ पुत्रकामस्तु ऋत्विजो वृत्वा प्रत्येकं प्रा
र्थयेत् ॥ भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृतांवर ॥ वितते मम यज्ञे सिद्धं त्विक्त्वं भवसुव्रतेति ॥ ततः सदस्यं वृणुयात् ॥ सर्वकर्मणा

मुपद्रष्टा भवेति प्रार्थयेच्च ॥ तत्र रूपे एक एव ॥ रुद्री लघुरुद्रमहारुद्रेष्वेक एकादशवा ॥ अतिरुद्रे एकादश एकविंशत्युत्तरं शतं वे
 तिकृत्विक संख्या ॥ प्रतिनिधिपक्षे त्वनियम इति सांप्रदायिकाः ॥ सग्रहपक्षे ग्रहरुद्रजपार्थत्वेनैषां वर्णं कार्यं ॥ यद्धारुद्रजपा
 तिकृत्विक संख्या ॥ प्रतिनिधिपक्षे त्वनियम इति सांप्रदायिकाः ॥ सग्रहपक्षे ग्रहरुद्रजपार्थत्वेनैषां वर्णं कार्यं ॥ यद्धारुद्रजपा
 तिकृत्विक संख्या ॥ प्रतिनिधिपक्षे त्वनियम इति सांप्रदायिकाः ॥ सग्रहपक्षे ग्रहरुद्रजपार्थत्वेनैषां वर्णं कार्यं ॥ यद्धारुद्रजपा
 तिकृत्विक संख्या ॥ प्रतिनिधिपक्षे त्वनियम इति सांप्रदायिकाः ॥ सग्रहपक्षे ग्रहरुद्रजपार्थत्वेनैषां वर्णं कार्यं ॥ यद्धारुद्रजपा

॥ २७५ ॥ अथ रुद्रजपादौ न्यासविधिः ॥
 दौ पुण्यनद्यादितीर्थतीरे गोष्ठादिपुण्यदेशे ब्राह्मणगृहे यजमानगृहे तदीशानदिगभागे वा शुचौ देशे न्यासपुरःसरं जपादि कुर्युः ॥ स
 ग्राह्यवर्णवर्णात्पूर्वग्रहजपार्थमनियमैर्नैकैर्द्वौ त्रीन्वा विप्रान्वृणुयात् ॥ तत आचार्यादीन् मधुपर्कं ॥ अथाचार्यादयः शिवायतना
 ध्यात्वा ह्यवर्णात्पूर्वग्रहजपार्थमनियमैर्नैकैर्द्वौ त्रीन्वा विप्रान्वृणुयात् ॥ तत आचार्यादीन् मधुपर्कं ॥ अथाचार्यादयः शिवायतना

श्रीः ॥ तत्र बौधायनमते पंचांगन्यासाः ॥ तत्र शिखाद्यस्त्रांतमेकत्रिंशदंगन्यासः प्रथमः ॥ मूर्धादिपादांतं दशांगन्यासो द्वितीयः ॥
 पादादिमूर्धांतं पंचांगन्यासस्तृतीयः ॥ गुह्यादिमस्तकांतं पंचांगन्यासश्चतुर्थः ॥ हृदयाद्यस्त्रांतं पंचांगन्यासः पंचमः ॥ शातात
 पमते तु प्रजननादिसर्वो गपर्थं तं षोडशांगन्यासः षष्ठः सर्वत्र जपादौ ॥ अभिषेक एवायं षष्ठो नान्यत्रेति बौधायनः ॥ तेषां प्रकारः ॥ या
 ते रुद्रेति शिखायां अस्मिन्महतीति शिरसि सहस्राणी तिललाटे ह्रस्वः शुचिषदिति श्रुत्वोर्मध्ये त्र्यंबकमिति नेत्रयोः नमः स्तुत्या
 ते रुद्रेति शिखायां अस्मिन्महतीति शिरसि सहस्राणी तिललाटे ह्रस्वः शुचिषदिति श्रुत्वोर्मध्ये त्र्यंबकमिति नेत्रयोः नमः स्तुत्या

हिरण्यबाहवइतिपार्श्वयोः विज्यं धनुरितिजठरे हिरण्यगर्भइतिनाभौ मीढुष्टमेतिकट्यां येभूतानामधिपतयइतिगुह्ये स
 शिराजातवेदाइत्यपाने मानोमहांतमित्यूर्वोः एषतइतिजान्वोः सःसृष्टजिदितिजंघयोः विश्वंभूतमितिगुल्फयोः येषथामि
 तिपादयोः अध्यवोचदितिकवचं नमोबिलिमनइत्युपकवचं नमोअस्तुनीलग्रीवायेतितृतीयनेत्रं प्रमुंचेत्यस्त्रं यएतावंतइति
 दिग्बंधंकुर्यात् ॥ इतिप्रथमः ॥ ॐकारंमूर्ध्निविन्यस्यनकारंनासिकाग्रतः ॥ मोकारंतुललाटैवैभकारंमुखमध्यतः ॥ गकारं
 ठदेशेतुवकारंहृदिविन्यसेत् ॥ तकारंदक्षिणेहस्तेरुकारंवामतोन्न्यसेत् ॥ द्राकारंनाभिदेशेतुयकारंपादयोन्यसेत् ॥ ॐ मूर्ध्ने
 नमइत्येतान्यक्षराणिनमोतानिन्यसेदितिद्वितीयः ॥ सद्यंतुपादयोन्यस्यवामंन्यस्योरुमध्यतः ॥ अघोरंहृदिविन्यस्यमु
 खेतत्पुरुषंन्यसेत् ॥ ईशानंमूर्ध्निविन्यस्येतिसदाशिवात्मतांभावयित्वाकरसंपुटंकृत्वा त्रातारमिंद्रत्वंनोअग्नेसुगंगनःपंथाअसुन्वं
 तंतत्वायाम्यानोनियुद्भिर्वयं सोमतमीशानमस्मेरुद्रास्योनापृथिवीतींद्रादीन्नमस्कृत्वात्मरक्षाकार्थेति ॥ अस्मेरुद्रास्योनापृ
 थिवीत्येताभ्यांत्रातारमिंद्रमित्याद्यष्टौमंत्रान्प्रत्येकंसंपुटीकृत्यपठेदितिवासंपुटइतिकेचित् ॥ इतितृतीयः ॥ मनोज्योति
 रबोध्यग्निर्मूर्धानंमर्माणितेजातवेदाइतिगुह्यजठरहृदयमुखशिरःसुविन्यस्यात्मरक्षाकर्तव्येतिचतुर्थः ॥ शिवसंकल्पंहृदयंपु
 रुषसूक्तंशिरःउत्तरनारायणंशिखाअग्रतिरथंकवचंशतरुद्रियमस्त्रं इतिपंचमः ॥ प्रजननेब्रह्मातिष्ठतु पादयोर्विष्णुस्तिष्ठतु
 हस्तयोर्हरस्तिष्ठतु बाह्वोरिंद्रस्ति० जठरेअग्निस्ति० हृदयेशिवस्ति० कंठेवसवस्तिष्ठतु वक्रैसरस्वतीति० नासिकयोर्वायुस्ति०
 नयनयोःसूर्याचंद्रमसौतिष्ठतां कर्णयोरश्विनौदेवौतिष्ठतां ललाटेरुद्रास्तिष्ठतु मूर्ध्न्यादित्यास्ति० शिरसिमहादेवस्ति० शि

खायांचामुंडाति० पृष्ठेपिनाकीति० पुरतःशूलीति० पार्श्वयोःशिवाशंकरौतिष्ठतां सर्वतोवायुस्ति० ततोबहिःसर्वतोऽग्निर्ज्वाला
मालापरिवृतस्ति० सर्वेष्वंगेषुसर्वाद्वतायथास्थानंति० माऽरक्षंतु इतिपष्ठः ॥ ॥ एवंसर्वत्रशातातपमते ॥ अभिषेके
एवबौधायनमतइत्युक्तं ॥ एषुन्यासेषुशाखांतरेविशेषउक्तः ॥ यथा ॥ प्रथमन्यासेहृदयानंतरंनमोगणेभ्यइतिपृष्ठेइतिपार्श्वानं
तरंविज्यंधनुरितिजठरइतिजान्वंतरंसंस्पृष्टजिदितिजंघयोर्विश्वंभूतमितिगुल्फयोरिति ॥ प्रजननादिन्यासेचमूर्ध्यादित्या
स्तिष्ठंत्वित्यनंतरंशिरसिमहापुरुषस्तिष्ठतु शिखायांचामुंडातिष्ठत्वितिन्यासानंतरंहरिण्यगर्भोयःप्राणतोब्रह्मजज्ञानंमहीद्वौरु
पश्वासयाग्नेनययातेअग्नइमंयमेत्यष्टौमंत्रान्जपेत् ॥ अथात्मानमित्यादिभिर्ध्यायेत् ॥ ततःकृषिदैवतच्छंदांसिस्मरेत् ॥ तद
भावेजपादैर्वैयर्थ्यस्मरणात् ॥ तत्रसग्रहपक्षेमंत्राणामृष्यादीनिमात्स्यग्रहस्थापनप्रकरणेज्ञेयानि ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४३ ॥

॥ २७६ ॥ अथरुद्रस्यछंदर्ष्यादि ॥

श्रीः॥ ततोरुद्रस्यर्ष्यादिस्मरेत् ॥ अथनमकानांप्रथमानुवाकेआद्यायाःकश्यपोद्वितीयायाःकश्यपस्तृतीयायाःकश्यपस्ततोद्वयो
गौतमस्ततएकस्याःकण्वस्ततोद्वयोर्मरुत्वांस्ततएकस्याभगवांस्ततस्तिस्मृणांनारदस्ततस्तिस्मृणांभगवान् द्वितीयानुवाकस्यमंडूक
स्तृतीयानुवाकस्यभगवांश्चतुर्थानुवाकस्यदुर्वासाः पंचमषष्ठानुवाकयोर्भगवान्सप्तमानुवाकस्यहेमकोशोष्टमानुवाकस्यनवमानु
वाकेचनमोवःकिरिकांतंभगवानवशिष्टस्याग्निर्दशमानुवाकेप्रथमस्यपुलहोद्वितीयस्यस्कंदस्ततोद्वयोर्मांडव्यस्ततएकस्यदेवराट्
ततएकस्यभगवांस्ततएकस्यात्रिस्ततएकस्यवैयाघ्रस्ततएकस्यभगवांस्ततएकस्यपुलहस्ततएकस्यनारद स्ततएका

दशानुवाके आद्यानांचतुर्णां दुर्वासास्तत आसमासि देवल इत्युषयः ॥ प्रथमानुवाके आद्यस्य रुद्रस्तत एकस्य शंभुस्तत एकस्य स्कंददा
त्मारुद्रस्ततो द्वयो रुद्रस्तत एकस्य शंभुस्ततो द्वयो रादित्यात्मारुद्रस्तत एकस्य शंभुस्तत स्तिसृणां रुद्रस्तत स्तिसृणां भगवांस्ततो द्वि
तीयतृतीयानुवाकयो रुद्रश्चतुर्थपंचमषष्ठानुवाकानां शंभुः सप्तमानुवाकस्य रुद्रोष्टमानुवाकस्य नमोवः किरिकेभ्य इत्यंतस्य नवम
स्तत एकस्य भगवांस्ततो द्वयोः शंभुस्ततो वशिष्ठानां रुद्र इति देवताः ॥ प्रथमानुवाके आद्ये अनुष्टुभौ तत एकास्वराडनुष्टुप्तत एका
निचृदनुष्टुप्तत एका नुष्टुप्तत एका बृहदनुष्टुप्तत एका स्तारपंक्तिस्तत एका षट्पदा जगती ततः सप्तानुष्टुभस्ततोष्टानुवाकयजूषित
त एका प्रस्तारपंक्तिः पंचपदा पंक्तिर्वा तत एका नुष्टुप्तत एका बृहदनुष्टुप्तत एका स्तारपंक्तिस्तत एका षट्पदा जगती ततः सप्तानुष्टुभस्ततोष्टानुवाकयजूषित
तोष्टानुष्टुभस्तत स्त्रीणियजूषितत स्तिस्रोनुष्टुभस्तत एकस्य यजुरिति च्छंदांसि ॥ अथ चमकानामग्निः कांडऋषिः आद्यान्ना
वैष्णवी गायत्री शिष्टानां वाजादयो न्नादि विशेषा देवता यजुश्छंदः जपे विनियोग इति ॥ एतदंतं विधाय यजमानाचार्य ब्रह्मसन्नि
धावृत्तिग्भिः सावधानैः संलापांतरमकुर्वद्भिः श्रीरुद्रं ध्यायद्भिर् यजमानस्य कामः सिध्यतामिति चिंतयद्भिश्च स्वरवर्णविवेकपूर्वकं
जपः कार्यः ॥ होमरुद्रेष्येवमेव होमः कार्यः ॥ अभिषेकरुद्रे तु पृष्ठन्यासानंतरं अग्निर्मेवाचि श्रित इत्यादि यथा लिंगमंगानि संस्पृ
श्यात्मानं महेश्वररूपं गंधपुष्पाक्षतधूपदीपैः प्रत्यक्षैर्मानैः सर्वा आराध्य आराधितो मनुर्यैस्त्वमिति त्र्यंबकं यजामह इति आत्वा वहं
तु हरयः सचेतस इति सद्योजातं प्रपद्यामीति च शिवमावाह्य सद्योजातायै नमो नम इत्यासनं दत्वा भवे भवेनाति भवे भवस्व मामि

तिपाद्यं दत्त्वा भवोद्भवाय नम इत्यापो हिष्ठेति तिसृभिश्च स्नानं दत्त्वा भवेद्वेदं तर्पयामि शर्वदेवं ईशानं देवं पशुपतिं देवं रुद्रं देवं उग्रं देवं
भीमं देवं महातं देवं तर्पयामीति तर्पयित्वा ज्येष्ठाय नम इत्याचमनीयं दत्त्वा श्रेष्ठाय नम इति मधुपर्ककालाय नम इति गंधंकलविकरणा
य नम इति पुष्पं सर्वभूतदमनाय नम इति धूपं मनोन्मनाय नम इति दीपं भवोद्भवाय नम इति नैवेद्यं दत्त्वा तूष्णीमाचमनीयं दत्त्वा अष्टौ
पुष्पाणि भवादिनामभिर्भवाय देवाय नम इत्येवमादिप्रयोगेण समर्प्य अघोरेभ्यो थघोरेभ्य इति मंत्रेणोपस्थाय हिरण्यरजततान्ना
दिपात्रेण संततधारया दुग्धादिनोदकेन वाभिषिच्य पुनः पूजयेदिति ॥ इति रुद्रजपादौ च सर्वसाधारण एष विधिः ॥ रुद्रस्य नम
काध्यायात्मकस्य रूपमात्रजपादौ चमकाध्यायोपि सकृदावर्तनीयः ॥ रुद्रीजपादौ तु प्रत्यावृत्त्यैकैकश्चमकानुवाको योजनीयः ॥
एतादृश्याश्च रुद्रा एकादशा वृत्तौ लघुरुद्रः ॥ तदेकादशा वृत्तौ महारुद्रः ॥ तदेकादशा वृत्तौ अतिरुद्रः संपद्यते ॥ तत्र जपेभि
पेके च नमो वः किरिकेभ्य इति सहस्राणिसहस्रश इति नमोरुद्रेभ्यो ये पृथिव्यामिति चैतयथाध्ययने मेव पठनीयाः ॥ होमे तु विशे
षो वक्ष्यते ॥ रुद्रस्य संकल्पादिब्राह्मणभोजनपर्यंतं यजमानाचार्यब्रह्मर्त्विजां नियमाः हविष्यभोजनं ब्रह्मचर्यं भूशय्यापतिताद्य
संभाषणमक्रोधः शुचितेत्यादयो द्रष्टव्याः ॥ एवं जपं समाप्य हृदयादिप्रागुक्तं पंचांगन्यासं कृत्वा रुद्राय जपं निवेदयेत् ॥ ४३ ॥

॥ २७७ ॥ अथ मंडपकुंडस्थं डिलादिप्रमाणं ॥

श्रीः ॥ तदंगहोमार्थं होमरुद्रे च प्रधानहोमार्थं मंडपं कुंडं च कुर्यात् ॥ इदं च द्वयं होमांगमेव अनावश्यकं च ॥ करणे फलाधिक्यं ॥
तत्र मंडपोष्टहस्तोदशहस्तश्च कनिष्ठः द्वादशहस्तश्च तुर्दशहस्तश्च मध्यमः पौंडशहस्तोष्टादशहस्तश्चोत्तमः ॥ सर्वे चतुरस्राश्च तुर्द्धा

राःकार्याः ॥ तत्राष्टहस्तादिमंडपांस्तावन्मानसूत्रेणप्राच्यादिसाधनपुरःसरं समचतुरस्त्रान्साधयित्वा तत्सूत्रत्रेधाविभागेनपा
तयित्वाबाह्येषुद्वादशसूत्रसंपातेषुद्वादशस्तंभान्निखनेत् ॥ चतसृषुदिक्षुद्विहस्तचतुरंगुलाधिकद्विहस्ताष्टांगुलाधिकद्विहस्तवि
स्तृतानिद्वाराणिकर्तुंद्वारशाखाख्यंस्तंभद्वयंनिखेयं ॥ एतेचविंशतिसंभाःपंचहस्ताःकार्याः ॥ तेषामुपरिचूडासुसंभ्रकाष्ठानि
तिर्यग्देयानि ॥ द्वारसंमुखतयाचहस्तमात्राद्वहिःपूर्वादिप्रादक्षिण्यक्रमेणाश्वत्थोदुंबरप्लक्षवटशाखाकृतानिपंचषट्सहस्तो
च्छायाणिअधममध्यमोत्तममंडपेषुहस्तद्वयसपादहस्तद्वयसार्धहस्तद्वयविस्तृतानितोरणानिकार्याणि ॥ तोरणानांचोपरिति
र्गकफलकेषुशैवकर्मत्वात्रिशूलाकाराःपंचसप्तनवांगुलाःकनिष्ठमध्यमोत्तममंडपेषुमध्येकीलानिखेयाः ॥ मध्यत्रिभागेचसौंदर्यार्थेउच्छ्रितंसृजेत् ॥ सर्वचस्तंभाः
ष्टयेचाष्टहस्ताश्चत्वारःस्तंभाश्चूडासुतिर्यक्संभ्रकाष्ठसहितानिखेयाः ॥ मंडपश्चोपरिपरितश्चद्वारवर्जयज्ञियतृणादिनिर्मितकटादिभिरुद्धादनीयइति ॥ मं
पंचमांशेनसूत्रसंपातस्थानाद्वह्निनिखेयाः ॥ मंडपश्चोपरिपरितश्चद्वारवर्जयज्ञियतृणादिनिर्मितकटादिभिरुद्धादनीयइति ॥ मं
डपेचमध्यमभागेकुंडकुर्चात् ॥ मध्यभागएवकुंडमितिसाधितमन्यत्र ॥ तत्रएकोनपंचाशदाहुतिपर्यंतस्थंडिलमेव ॥ तच्चअष्टादशांगुलादिपरिमाणंतत्रैकोनपंचाशदंगुलादा
रिमाणविशेषाउच्यते ॥ तत्रएकोनपंचाशदाहुतिपर्यंतस्थंडिलमेव ॥ पंचाशदादिनवनवत्याहुतिपर्यंतमुष्टिमात्रं ॥ कुंडंशताद्येकोनसहस्रपर्यंतंअर
हस्तांतंचतुरस्रमंगुलोत्सेधंचतुरंगुलोत्सेधंवा ॥

१ सिद्धा२४वेदाग्रयो३४भूचतुर४१इभयुगा४८रामवाणा५३गजाक्षाः५८त्र्यंगा६३शैलर्तवो६७द्व्यद्रय७२इपुगिरयो७५हस्ततोमानमत्र । अंगु
ल्योऽथोयवाःस्युःख०ख०शर५ख०शरां५गा६ब्धि४शैला७अ०शैला७अब्ध्यस्त्रेकुंडमिद्धचैहरिपदविधु१०हस्तातेमंवंधुधोक्ताःइतिकुंडदीपैगुलमानं ॥

[illegible]

कुर्यात् ॥ तत्रचदक्षिणतोऽग्रहवेदिकाउत्तरतोरुद्रवेदिका ॥ ग्रहाणांपूर्वोर्गत्वेनप्राक्पूजनीयत्वेनपश्चात्पूजायाउदक्संस्थ
त्वापेक्षणात् ॥ वेदिश्चद्व्यंगुलत्र्यंगुलोच्छ्रायद्व्यंगुलविस्तारवद्वययुता वप्रोपरिसप्तांगुलोत्सेधहस्तविस्तृताचसुश्लक्षणाकार्या
सर्वशांतिकर्पोष्टिकानांग्रहमखविकृतित्वात् ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥

॥ २७८ ॥ अथप्रयोगः ॥

श्रीः ॥ एवंमंडपकुंडादिनिर्मायजपरुद्रेजपांतेष्टुभेहनिहोमरुद्रेतुआचार्यादिपूजांतेष्टुभेकालेमंडपपूजाद्युपयुक्तसंभारान्संभृत्य
ततःशुक्लांबरधरःशुक्लमाल्यानुलेपनःसपत्नीकःसाचार्यत्विक्कोयजमानोमंगलघोषेण संपूर्णकलशहस्तोभद्रंकरणेभिरितिमंत्रघोषे
णमंडपंप्रदक्षिणीकृत्यपश्चिमद्वारेणप्रविशेत् ॥ ततोमंडपांतःपश्चिमदेशेउपविश्याचम्यदेशकालौस्मृत्वास्वयंब्राह्मणद्वारावा
कृतस्यामुकरुद्रस्यजपांगत्वेन समग्रपक्षेणदशांशेनशतांशेनवाक्क्ष्यमाणद्रव्येष्वमुकद्रव्येणाहंब्राह्मणद्वारावायथाशक्तिहोमंकरिष्य
इतिजपरुद्रेसंकल्पयेत् ॥ ततोजपरुद्रेहोमरुद्रेचरणेशपूजनंमंडपदेवतास्थापनादिचकरिष्यइतिसंकल्प्यषोडशोपचारैर्ग
णपतिसंपूज्यततोर्गौरसर्षपैःसर्वतोमंडपांतरवकिरेत् ॥ तन्नमंत्राः ॥ यदन्नसंस्थितंभूतंस्थानमाश्रित्यसर्वदा ॥ स्थानंत्यक्त्वा
तुतत्सर्वयन्नस्थंतन्नगच्छतु ॥ अपक्रामंतुभूतानिपिशाचाःसर्वतोदिशं ॥ सर्वेषामविरोधेनब्रह्मकर्मसमारभे ॥ इति ॥ ततःपंच
गव्येनकुशैःसर्वत्रप्रोक्षणंकार्यं ॥ शुचीवोहव्याइतितृचेनआपोहिष्ठेतितृचेनच ॥ ततःकृतांजलिःस्वस्त्ययनंताक्ष्यमितिमंत्रद्व
यंजपेत् ॥ ततोवास्तुपूजनं ॥ आचार्योवास्तुहोमार्थंमंडपनैर्ऋत्येथंडिलंविधायतदीशानभागेहस्तमात्रांमृदावेदिविधायईशा

नादिकोणचतुष्के ॥ विशंतुभूतलेनागा० इत्यादिशंकुरोपणबलिदानवास्तुदेवतावाहनादिदेवप्रतिष्ठायामुक्तवत्कुर्यात् ॥ त
तआचार्योऽग्निस्थापनाद्याज्यभागांतंकृत्वोदुंबरादियज्ञिसमितिलज्यचरुप्रत्येकमष्टशतमष्टाविंशतिमष्टौवा प्रणवादिनमो
ततत्तन्नाममंत्रैर्जुहुयात् ॥ द्रव्याणां विकल्पइतिपदार्थादर्शे ॥ ततोवास्तुवास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मानितिचतुर्भिस्तैरेवद्रव्यैःप्र
तिद्रव्यं २८ पुनस्तैरेवचतुर्भिर्मंत्रैर्वास्तोष्पतेध्रुवास्थूणामितिच ॐ वास्तोष्पतयेनमइतिवापंचविल्वफलानितद्धीजानिवाजुहुया
त् ॥ ततःस्विष्टकृदादिपूर्णहुत्यंतंकृत्वाब्रह्मादिभ्यःपायसेननाममंत्रैर्वलिंदत्वापावमानेनराक्षोघेनचसूकेनमंडपं त्रिसूत्र्यावेष्ट
यित्वाशांतिकलशोदकेनयजमानमभिषिच्यस्नापयेत् ॥ ततोयजमानउत्तरपूजांविधायदेवताविसृज्यब्राह्मणान्भोजयेदिति ॥
एतावत्यशकौबलिमात्रंदद्यात् ॥ अतएवशारदातिलकेपायसान्नैर्वलिंहरेदित्येवोक्तंनहोमादीतिसांप्रदायिकाः ॥ तस्मिन्पक्षे
मंडलदेवतापूजनंबलिदानंसूत्रवेष्टनंचेत्यनुष्ठानमिति ॥ (मंडपप्रतिष्ठापूर्वंपंचकुंडीदेवप्रतिष्ठाप्रयोगेयथावदुक्तेतिनात्रपुनःसंगृ
हीता) ॥ ततोयजमानोऽग्न्यायतनादक्षिणतउपविशेत् ॥ आचार्यस्तुमंडपेकुंडपश्चिमतउपविश्याचग्न्यप्राणानायम्यामुक
कर्मण्यग्निप्रतिष्ठांकरिष्ये ॥ तदंगतयाकुंडसंमार्जनमेखलायोनिदेवतास्थापनपूजनादिकरिष्येइतिसंकल्प्याग्न्यायतनंसंमृज्य
कुशोदकेनसंप्रोक्ष्यइदंविष्णुरितिमंत्रेणोपरिमेखलायांश्वेतवर्णालंकृतायांविष्णुमावाह्यपूजयेत् मध्यमेखलायांरक्वर्णालंकृता
यांब्रह्मजज्ञानमितिब्रह्माणंअधोमेखलायांकृष्णवर्णालंकृतायांकडुद्रायेतिरुद्रयोन्यांरक्वर्णालंकृतायांगौरीभिमायेतिगौरी ॥
ततःस्वशाखोक्तमार्गेणाग्निप्रतिष्ठाप्यग्रहवेदिकायांसर्वतोभद्रंविरच्यब्रह्मादींस्थापयेत् ॥ तत्तन्मंत्रैरेवक्रमेणपूजयित्वातत्तन्मं

त्रैर्वानाममंत्रैर्वाप्रत्येकं दशदशांज्याहुतीहुत्वा उपहारं निवेदयेत् ॥ क्षीरोदनं ब्रह्मणे घृतान्नमुदकाभिमंत्रितमिन्द्राय आज्यौदन
मग्नये माषान्नयमाय कृष्णव्रीह्यन्नं पुराणघृताक्तं निऋतये नवनीतौदनं वरुणाय यवौदनं वायवे प्रैयंगवौदनं सोमाय गावोधुक
विधाय तत्र ग्रहमंडलानि विलिख्य नवग्रहदेवतास्थापनं मात्स्यग्रहयज्ञक्रमेण कृत्वा इंद्रादिलोकपालावाहनां तेषां विशेषः ॥ रवेः
पूर्वेशेषं सोमस्याग्नेवासुकिं भौमस्याग्नेतक्षकं बुधोत्तरेकर्कोटकं बृहस्पतेरग्रेपद्मं शुक्रोत्तरे महापद्मं शनिपश्चिमेशं खपालं राहोः
पुरःकंबलं केतोः पुरःकुलिकं च नाममंत्रेण स्थापयेत् ॥ ततो बहिर्भूगृहे अश्विन्यादिसप्तनक्षत्राणि चिष्कं भादिसप्तयोगाः बववा
लवकरणे सप्तद्वीपानि ऋग्वेदश्च ॥ दक्षिणे पुष्यादिसप्तनक्षत्राणि धृत्यादिसप्तयोगाः कौलवतैतिलकरणे सप्तसागराः यजुर्वेदश्च ॥
पश्चिमे स्वात्यादिसप्तनक्षत्राणि वज्रादिसप्तयोगाः गरवणिजकरणे सप्तपातालानि सामवेदश्च ॥ उत्तरे अभिजिदादिसप्तनक्षत्रा
णिसाध्यादिषड्योगाः विष्टिकरणं भूराद्याः सप्तलोकाः अथर्ववेदश्च ॥ वायव्ये ध्रुवः सप्तर्षयश्च ॥ ततो यथावकाशं गंगाद्याः सप्तस
रितः सप्तकुलाचलाः अष्टौ वसवः एकादश रुद्राः द्वादशादित्याः एकोनपंचाशन्मरुतः षोडशमातरः षडृतवः द्वादशमासाः द्वे
अयने पंचदशतिथयः षष्टिसंवत्सराः सुपर्णाः नागाः सर्पाः यक्षाः गंधर्वाः विद्याधराः अप्सरसः रक्षांसि भूतानि मनुष्याः इत्येते
स्थाप्याः ॥ अत्र केवलनवग्रहाः स्थाप्या इत्येकः पक्षः ॥ विनायकादिपंचलोकपालांताद्वा त्रिंशद्देवता इत्यन्यः ॥ अष्टौ दिक्पाल
सहिता इत्यन्यः ॥ शेषादिमनुष्यांतैः सहिता इति वा एतेषु पक्षेषु बहुत्वाल्पत्वेन तारतम्यं द्रष्टव्यं ॥ ततः पौरुषसूक्तन्यासपंचांगन्या

दोमाचंडसंज्ञकाः ॥ षोडशारेततःपद्मेद्वितीयावरणेयजेत् ॥ अनंतंचतथासूक्ष्मंशिवंचैकपदंतथा ॥ एकरुद्रंत्रिमूर्तिचश्रीकंठं
वामदेवकं ॥ ज्येष्ठंश्रेष्ठंतथारुद्रंकलंकलविकरणं ॥ बलंबलविकरणंचबलप्रमथनंतथा ॥ तृतीयावरणेपद्मेचतुर्विंशदलेतथा ॥
अणिमामहिमाचैवगरिमालधिमातथा ॥ प्राप्तिःप्राकाम्यमीशित्वंशित्वंचाष्टसिद्धयः ॥ ततःपरंक्रमेणैव न्यसेद्ब्राह्म्यादिदे
वान्विन्यसेत्पुनः ॥ असितांगोरुरुश्चंडःक्रोधउन्मत्तभैरवः ॥ वाराहैंद्रीचचामुंडाचंडिकाचेतिताःक्रमात् ॥ ततोष्टस्वसितांगादीन्भैर
वाष्टकमुदाहृतं ॥ भवःशर्वश्चैशानस्ततःपशुपतिःपरं ॥ कालभीषणसंहारभैरवाश्चाष्टकीर्तिताः ॥ इतित्रिंशत्त्रयकेपूर्वभ
लीरकः ॥ कर्कोटकःशंखपालःकंबलाश्वतरस्तथा ॥ रुद्रश्चोग्रश्चभीमश्चमहांश्चैवततःपरं ॥ शेषोनंतोवासुकिश्चतक्षकश्चकु
त् ॥ ततःकुलाचलानष्टौदलेष्वष्टसुविन्यसेत् ॥ ततोष्टसुन्यसेद्दैन्यंपृथुहैहयमर्जुनं ॥ शाकुंतलेयंभरतंनलंराममतिक्रमा
ज्ञकः ॥ चत्वार्यावरणान्येवंपंचमावरणंततः ॥ हिमवान्निषधोविंध्योमाल्यवान्पारियात्रकः ॥ मलयोहेमकूटश्चगंधमादनसं
खेत् ॥ इंद्रमग्निंयमंचैवनिर्ऋतिंवरोरुणंततः ॥ चत्वारिंशदलेष्वष्टसुविन्यसेत् ॥ इंद्राद्यष्टौलोकपालानष्टसुक्रमतोलि
न्यसेत् ॥ शचीस्वाहाचवाराहीखड्गिनीवारुणीतथा ॥ वायुंकुबेरमीशानंदलेष्वष्टसुविन्यसेत् ॥ इंद्राद्यष्टौलोकपालानष्टसुक्रमतोलि
दीन्यष्टसुन्यसेत् ॥ वज्रंशक्तिर्दंडखड्गौपाशांकुशगदाअपि ॥ त्रिशूलंलोकपालानामष्टौशक्तीस्ततो
न्येषामष्टसुक्रमतो न्यसेत् ॥ ऐरावतंतथामेवंमहिषंश्वेतसंज्ञकं ॥ मकरंचमृगंचैव नरंचवृषभंतथा ॥ ऐरावतादयोप्यष्टदिग्गजा

स्तदनंतरं ॥ ऐरावतःपुंडरीकोवामनःकुमुदोजनः ॥ पुष्पदंतःसार्वभौमःसुप्रतीकश्चदिग्गजाः ॥ भृगुहांतःपुनर्लेख्यापंचपद्मा
 त्मकाद्बहिः ॥ इंद्रविन्यस्यपूर्वस्यामाग्नेय्यामग्निमेवच ॥ दक्षिणस्यांयमंचैव नैऋत्यांनिऋतितथा ॥ प्रतीच्यांवरुणंवायुंवाय
 व्यांविन्यसेत्ततः ॥ कुबेरंचैवकौबेर्यामीशान्यामीशमालिखेत् ॥ विरूपाक्षंतुविन्यस्येदामग्नेय्यामग्नियोगतः ॥ नैऋत्यांनिऋते
 योंगेविश्वरूपंचविन्यसेत् ॥ वायव्यांवायुयोगेचलिखेत्पशुपतितथा ॥ ईशान्यामूर्ध्वलिङ्गंचविन्यसेदीशयोगतः ॥ प्रागादिक्र
 मतोलेख्याःशेषाद्याभृगुहाद्बहिः ॥ विप्रवर्णश्चेतरूपंसहस्रफणमंडितं ॥ शेषंविन्यस्यपूर्वस्यांपूजयेदुपचारैकैः ॥ तक्षकंवैश्य
 वर्णंचनीलंपंचशतैःफणैः ॥ युक्तमुत्तुंगकायंचआग्नेय्यांदिशि विन्यसेत् ॥ अनंतंविप्रवर्णंचतथाकुंकुमवर्णकं ॥ सहस्रफणसंयु
 क्तंदक्षिणस्यांप्रपूजयेत् ॥ वासुकिंक्षत्रियपीतवर्णंसप्तशतैःफणैः ॥ युक्तमुत्तुंगकायंचनैऋत्यांदिशि विन्यसेत् ॥ शंखपालंक्ष
 त्रियंचपीतंसप्तशतैःफणैः ॥ युक्तमावाह्यवारुण्यांपूजयेद्दधधूपकैः ॥ महापद्मंवैश्यवर्णंयुक्तंपंचशतैःफणैः ॥ युक्तमुत्तुंगकायं
 चवायव्यांदिशिपूजयेत् ॥ कंबलंशूद्रवर्णंचकृष्णंत्रिंशत्फणैर्युतं ॥ कौबेर्यांदिशि विन्यस्यपूजयेच्चविधानतः ॥ कर्कोटकंशूद्र
 वर्णंश्वेतंत्रिंशत्फणैर्युतं ॥ ईशान्यांदिशि विन्यस्यपूजयेद्विधिवत्ततः ॥ रुद्रपीठमिदंसर्वरुद्रकल्पेषुविश्रुतं ॥ शंभुनास्वयमा
 ख्यातंभक्तानुग्रहकाम्यया ॥ कुंकुमागरुकर्पूरैर्भूर्जपत्रैथवापटे ॥ लिखितंपूजयेद्भक्त्यासर्वकामार्थसिद्धये ॥ यंत्रमंत्रमयंप्रोक्त
 माख्यातादेवतेतिच ॥ पूजनीयंप्रयत्नेनतेनंदेवतामयं ॥ अग्निचोरभयंतत्रनचराजभयंक्वचित् ॥ यन्त्रेदंलिखितंयंत्रंपूज्यते
 विधिवत्सदा ॥ इतिस्कंदपुराणेरुद्रयंत्रं ॥ तद्यथा ॥ कर्णिकायां ॐ नमो भगवते रुद्रायैति दशाक्षरः ॥ ततः प्रथमकोष्ठ एव प्रा

गादिक्रमेणमध्येच ॐ सद्योजातायनमः वामदेवाय अधोराय तत्पुरुषाय ईशानाय ८ ॥ ततःप्रागादिक्रमेणनंदी महाकालः
 गणेश्वरः वृषभः भृंगिरिटिः स्कंदः उमा चंडीश्वरः ८ इतिप्रथमावरणं ॥ अनंतः सूक्ष्मः शिवः एकपात् एकरुद्रः त्रिमूर्तिः
 श्रीकंठः वामदेवः ज्येष्ठः श्रेष्ठः कालः कलविकरणः बलः बलप्रमथनः १६ इतिद्वितीयं ॥ अणिमा
 महिमा लघिमा गरिमा प्राप्तिः प्राकाम्यं ईशिता वशिता ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही ऐद्री चामुंडा चंडि
 का असितांगभैरवः रुद्रभैरवः चंडभैरवः क्रोधभैरवः उन्मत्तभैरवः कपालभैरवः भीषणभैरवः संहारभैरवः २४ इति तृती
 यावरणं ॥ भवः शर्वः ईशानः पशुपतिः रुद्रः उग्रः भीमः महान् शेषः अनंतः वासुकिः तक्षकः कुलीरः कर्कोटकः शंखपा
 लः कंबलाश्वतरः वैन्यः पृथुः हैहयः अर्जुनः शाकुंतलेयः भरतः नलः रामः हिमवान् निषधः विंध्यः माल्यवान् पारि
 यात्रकः मलयः हेमकूटः गंधमादनः ३२ इतिचतुर्थं ॥ इंद्रः अग्निः यमः निर्ऋतिः वरुणः वायुः कुबेरः ईशानः शची स्वा
 हा वाराही खड्गिनी वारुणी वायवी कौबेरी ईशानी वज्रं शक्तिः दंडः खड्गः पाशः अंकुशः गदा त्रिशूलः ऐरावतः मे
 षः महिषः प्रेतः मकरः हरिणः नरः वृषभः ऐरावतः पुंडरीकः वामनः कुमुदः अंजनः पुष्पदंतः सार्वभौमः सुप्रतीकः ४०
 इतिपंचमं ॥ एवंपंचपद्मानिकृत्वा बहिश्चतुष्कोणंभूगृहं ॥ तत्रपूर्वेइंद्रः आग्नेय्यामग्निः विरूपाक्षश्च दक्षिणेयमः नैऋत्यांनै
 र्ऋतिः विश्वरूपश्च पश्चिमेवरुणः वायव्यांवायुः पशुपतिश्च उत्तरेकुबेरः ईशान्यामीशानः ऊर्ध्वलिंगं च ॥ ततोभूगृहाद्वहिः पू
 र्वेविप्रवर्णेश्वेतंसहस्रफणंशेषंपूजयेत् ॥ वैश्यवर्णनीलंपंचशतफणभूपितंतक्षकंआग्नेय्यां ॥ विप्रवर्णंकुंकुमाभंसहस्रफणमनंतं द

क्षिणे ॥ क्षत्रियवर्णेपीतंससशतफणयुतंवासुकिंनिर्ऋत्यां ॥ क्षत्रियवर्णेपीतंससशतफणयुतंशंखपालंपश्चिमे ॥ वैश्यवर्णेनीलं
 पंचशतफणयुतंमहापद्मंवायव्यां ॥ शूद्रवर्णेकृष्णंत्रिंशत्फणयुतंकंबलमुत्तरे ॥ शूद्रवर्णभ्वेतंत्रिंशत्फणयुतंकर्कोटकमीशान्यां ॥
 एताःदेवताःप्रणवादिनमोतैर्नामभिरावाह्यपूज्याः ॥ इतिस्कांदानुसारेणरुद्रपीठदेवताः ॥ ततोरुद्रपीठादीशानदिग्भा
 गेपूर्ववत्कलशंसंस्थाप्यरुद्रजपार्थत्वेनब्राह्मणंवृणुयात् ॥ ततआचार्योऽग्निसमीपमेत्याग्नेःपश्चिमतउपविश्यद्वेतिस्त्रोवासमिधआ
 दयान्वाधानंकुर्यात् ॥ तत्रासिन्नरुद्रहोमेदेवतापरिग्रहार्थमित्यादिचक्षुषीआज्येनेत्यंतमुक्त्वा सग्रहपक्षेत्रग्रहानमुकसंख्याभि
 रर्कादिसमिद्भिःचरुपक्षेऽमुकसंख्याभिश्चर्चाहुतिभिःकृतस्यजपस्यदशंशेनामुकद्रव्येणेत्युक्त्वा अधिदेवताद्यंगकत्वपक्षेअधि
 देवतादीनमुकद्रव्येणामुकसंख्ययेत्युक्त्वा रुद्रममुकहोमपक्षेणामुकमंत्रविभागपक्षेणामुकद्रव्येणेत्युक्त्वारुद्रपीठदेवताएकैका
 ज्याहुत्याशेषेणस्विष्टकृतमित्यादियक्ष्यइत्यंतमुक्त्वा व्याहुतिभिःसमिधौसमिधोवाजुहुयात् ॥ द्रव्याण्याहुतिसंख्यामंत्रविभा
 गाश्चवक्ष्यंते ॥ ततःपरिसमुह्यपरिस्तरणंकुर्यात् ॥ तच्चद्वितीयमेखलायांपश्चिमेचयोनिर्ऋकार्थं ॥ शाखांतरीयाणांपरिधिनिधा
 नमप्यत्रैव ॥ ततःपर्युक्षणादिप्रणीतापूरणांतेकृतेआचार्योऽब्रह्माणंपूर्ववृत्तमेवासनेदक्षिणतउपवेशयेत् पूर्वयजमानवृत्तस्यैवब्र
 ह्माणःपुनर्वरणस्यैवैथर्यात् ॥ ततःप्रणीताप्रणयनांतेकृतेग्रहाणांचरुपक्षेतूष्णींनिर्वापादिचरुश्रपणेकृतेआज्यसंस्कारेचरुणाति
 लादिद्रव्येणचसहाज्यंपर्यग्निकृत्वाज्यासादनाद्याज्यभागांतंकुर्यात् ॥ ततोयजमानोऽग्नेर्दक्षिणतोऽब्रह्मणःपश्चिमतउपविश्यसा
 वधानउद्देशत्यागौकुर्यात् ॥ तत्रस्वयमेवचेद्धोमंकरोतितदाम्रत्याहुतिसूर्यायेदंनममेत्यादितत्तद्देवताभ्यस्त्यागंकुर्यात् ॥ नो

त्सृजइति (?) श्रद्धावत्कर्तृत्वात् यदाऋत्विजःप्रतिनिधयोवाहोमंकुर्युस्तदायजमानआज्यभागानंतरंयक्ष्यमाणाःसर्वादिवता
उद्दिश्यहोष्यमाणानिचसर्वाणिद्रव्याणिनिर्दिश्यएताभ्योदेवताभ्यइंद्रव्यमहमुत्सृज्येइतित्यजेत् बहुत्वगादिकर्तृकेहोमेप्र
त्याहुतित्यागस्यकर्तुमशक्यत्वात् त्यागपूर्वकत्वाच्चहोमस्य सर्वहोमानंतरंत्यागस्यायुक्तत्वादिदानीमेवत्यागःकार्यइतिशिष्टाः ॥
तत्तथाचार्यादयःसावधानायजमानाभीष्टसिद्धिप्रार्थयंतोहोमंकुर्युः ॥ २८० ॥ अथहविर्द्रव्याणांनियमः ॥

श्रीः ॥ तत्रसग्रहपक्षेग्रहाणांसमिधः ॥ अर्कःपलाशःखदिरअपमार्गोऽथपिप्पलः ॥ औदुंबरःशमीदूर्वाकुशाश्चसमिधःक्रमादि
ति ॥ तत्संख्याचाष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिरष्टौवैकैकस्य समिधश्चमधुसर्पिर्दधिरूपन्निमध्वक्ताःकार्याः दधित्यानेदुग्धंवा चरु
स्तुक्कृताकृतः करणपक्षेपिप्रत्येकमेकाष्टाविंशत्यष्टोत्तरशताहुतिपक्षाः तत्रएकाहुतिपक्षेसुचावदानधर्मेणाचार्योऽग्नौजुहुयात् ॥ २८१ ॥

अष्टाद्याहुतिपक्षेचतुर्मुष्टिनिर्वापानंतरमनिर्वापेनवाचंरुंबहुनिर्मायाचार्यादयःसर्वेहस्तेनैवजुहुयुः । ततऋत्विजःकृतस्यग्रहज
पस्यदशानेनतिलैर्वैभिर्भ्रितैर्ब्रौहिभिर्वाजुहुयुः । स्वतंत्रब्राह्मणपक्षेसएववाजुहुयात् । तत्रसमिधःपालाशःनिर्वापेचैतेभ्योनिर्वापः अधिदेवतादीनांचसमिच्च
देवतानांसमिच्चरुतिलादिनासमानसंख्येनजुहुयात् । तत्रसमिधःपालाशःनिर्वापेचैतेभ्योनिर्वापः अधिदेवतादीनांचसमिच्च
रुहोमसंख्याग्रहसंख्यातोन्यूनाकार्येतिशिष्टाः । चर्वेकाहुतिपक्षस्त्वत्रापिसाधारणः एषांसमिधःकनिष्ठपक्षेप्रत्येकंचतस्रश्चत
स्रइतिशिष्टाः । समिच्चरुसंख्यासमानैवचैषांतिलादिद्रव्याहुतिसंख्याबोद्धव्या । इंद्राद्यष्टाधिकांगत्वेपिअधिदेवतादिदेवता

हविर्द्र-
॥२८०॥

॥३३४॥

भ्योपिहोमःकार्यः । ग्रहादीनांचमंत्रास्तच्छंदोदेवतादिचग्रहपीठपूजायामुक्तं । तत्रसर्वाःसमिधःप्रादेशमात्राः ऋज्व्योनातिशुष्कार्द्राः तत्रदूर्वाणांतिसृणांमैकैकाहुतिः कुशस्यतुत्र्यादिबहुपत्रस्यैव अर्काद्यभावेपालाश्रयःप्रतिनिधयः । चरोस्त्वेकाहुतिपक्षेगुष्ठपर्वमात्रमवदानं अन्यपक्षेषुग्रासमात्रत्वं । तिलादीनांतुप्रसृतिमात्राद्वादशपर्वपूरिकाचेतिप्रमाणेउत्तमे अष्टसहस्रमष्टशतंवेतिमध्यमे चतुरशीतिश्चतुःषष्टिर्वैतिकनिष्ठे ॥ अत्राहुतिसंख्या । तत्रनवग्रहसमिधानवशतीद्विसप्ततिश्च यद्वाद्विशतंद्विपंचाशच्च अथवाद्विसप्ततिरेव । तेषामेवचरुपक्षेएकाहुतिपक्षेनव अन्यपक्षत्रयेसमित्समानैवसंख्यातिलादीनां जपदशांशस्तुसहस्राणिनवनवशतानिनवतिर्वेति । अधिदेवतादिपक्षेतत्समिधांषड्शतीचतुश्चत्वारिंशच्च एकशतंचतुरशीतिश्चवाद्धानवतिर्वा । चरुपक्षेतस्यषड्शतीचतुश्चत्वारिंशच्चशतंचतुरशीतिश्चवात्रयोविंशतिर्वा । तिलादेस्तुविकल्पेनसमिच्चरुसमैवसंख्येति । इंद्रादिपक्षेतत्समिधांद्विशतीचतुर्विंशतिश्चचतुःषष्टिर्वाद्वात्रिंशद्वा । चरुपक्षेतस्यद्विशतीचतुर्विंशतिश्चचतुःषष्टिर्वाअष्टौवा । तिलादेस्तुसमिच्चरुसंख्यैवेति तत्तत्पक्षेसर्वाःसंख्याएकीकृत्यमहासंख्याबोद्धव्या । अत्रचकनिष्ठपक्षाश्रयणेपिसांगतैव मध्यमोत्तमपक्षाश्रयेणतुतत्तत्फलेतारतम्यंद्रष्टव्यं ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥

॥ २८१ ॥ अथरुद्रहोमंमंत्रविभागः ॥

श्रीः ॥ एवंग्रहहोमंविधाय ततःप्रागुक्तन्यासपूर्वकंप्रागुक्तांषेयादिस्मरणपूर्वकंचश्रीरुद्रंध्यायन्स्वयंजुहुयात् । अशक्तावेवंप्रतिनिधयोजुहुयुः । पुत्राद्यर्थेमहारुद्रेत्वेवमृत्विजोजुहुयुः । तत्रद्रव्याणिकृष्णतिलाःयवाः मिश्रिताउभये ब्रीहयः आज्यंचे

●●●●●

117311

ति । पुत्रार्थमहारुद्रेत्वाज्यपरिपुतादूर्वाः । अयंचहोमःप्रधानभूतेहोमरुद्रेजपरुद्रांगहोमेवारूपादिपंचस्वपिहोमेषु ॥ अथ जपरुद्रस्यांगभूतोहोमस्त्रेधासमग्रहोमोदशांशहोमःशतांशहोमश्चेति । होमरुद्रेतुपंचस्वपिसमग्रहोमएव । तत्रैतेषुत्रिष्वपिपक्षे मकविभागएव । चमकेषुतुएतत्तक्षप्रदर्शनएवविशेषःस्पष्टीभविष्यति । एतत्तक्षप्रदर्शनएवचमकानांसंख्याप्युच्यते । अयंचन आहुतिरिति यद्वाअग्नाविष्णूइत्येकाएकादशचमकानुवाकैरेकादशेति ततश्चरूपेसमग्रहोमेएकधाविभागपक्षेतिस्त्रस्त्रयोदश वाहुतयोभवन्ति १ ॥ त्रेधाविभागेपिरूपेआद्यैश्चतुर्भिर्नुवाकैरेकाहुतिः अपरैश्चतुर्भिर्द्वितीया शेषैस्त्रिभिरुत्तरीया दश रभ्यसमाप्तिपर्यन्तेनतृतीयेति चमकेपक्षद्वयंप्राग्वत् । ततश्चरूपेसमग्रहोमेत्रेधाविभागपक्षेपंचपंचदशवाआहुतयः २ ॥ षोडश विभागेरूपेत्रेधाविभागवदेवाद्याविभागाभ्यामाहुतिद्वयं तृतीयविभागेयएतावंतइत्यगंतेनतृतीयाआहुतिः नमोरुद्रेभ्योयेषु भागेरूपेनमस्तइत्यारभ्यनमस्तक्षभ्यइत्यन्तेनप्रथमाहुतिः रथकारेभ्यश्चवइत्यन्तेनमःस्वायुधायचेत्यन्तेनद्वितीया सुधन्वनेचेत्य

॥२८१॥
सुप्रहोमे-

॥३३५॥

तःसहस्राणिसहस्रधेत्येतदन्तर्गतं तृतीया सहस्राणिसहस्रशइत्यतःतेषां सहस्रयोजनेइत्यर्धं प्रत्येकसंबन्धेन दशमंत्रैर्दशाहुतयः
नमोरुद्रेभ्यइतिचप्रागवन्निभिर्यजुर्भिस्तिस्त्रइति चमकेपक्षद्वयमुक्तं । ततश्चरूपेसमग्रहोमेपोदशधाविभागपक्षेअष्टादशाष्टाविं
शतिर्वाआहुतयः४॥ अष्टचत्वारिंशद्वाविभागेपिरूपे नमस्तइतिप्रथमानुवाकःत्रिभिःपंचदशाहुतयः तत्राष्टमोमंत्रःषट्पादःत
तोष्टभिरनुवाकैरष्टौ दशमेनुवाकेद्वादशःत्रिभिर्द्वादश एकादशानुवाकेप्रागवद्दशभिर्दश नमोरुद्रेभ्यइतिपूर्ववन्निभिर्यजुर्भिस्ति
स्त्रइति चमकेप्राचीनपक्षद्वयं । ततश्चरूपेसमग्रहोमेपंचाशत्षष्टिर्वाहुतयः ५ ॥ एकोनसप्तत्युत्तरशतधाविभागेपिरूपे तत्रप्रथ
मानुवाकेपंचदशभिःपंचदशाहुतयः द्वितीयतृतीयचतुर्थानुवाकेषुभयतो नमस्कारैःसप्तचत्वारिंशद्भिर्दशभिःसप्तचत्वारिंशत्
पंचमषष्ठसप्तमाष्टमनवमानुवाकेषुपुरस्तात्त्रमस्कारैर्द्व्यंशतीतिभिर्दशभिर्द्व्यंशतीतिः । एष्वपियजुःषुभयतो नमस्कारत्वंकेचिदि
च्छंति तत्रनमोभवायचरुद्रायचनमइतिपठित्वातमेवनमःशब्दं पुनरावर्त्यनमःशर्वायचपशुपतयेचनमइतिपठेदित्यादिज्ञेयं । त
त्रपक्षद्वयेपिनमोवःकिरिकेभ्यइत्यादिमंत्रचतुष्टयेदेवानां हृदयेभ्यइतिप्रत्येकमावर्तनीयं । अयंचनमोवःकिरिकेभ्यइत्यत्रसह
स्राणिसहस्रशइत्यत्रनमोरुद्रेभ्योयेपृथिव्यामित्यत्रचयोनुषंगउक्तःसयदाएतैर्मंत्रैःप्रत्येकंहोमस्तदैव । यदातुनैभिःप्रत्येकंहोमस्त
दाजपेएकधाहोमादावभिषेकेपारायणेचयथाध्ययनमेवपाठः । ततोदशमानुवाकेद्वादशभिर्द्वादशाहुतयः एकादशानुवाके
प्रागवद्दशभिर्दश नमोरुद्रेभ्यइतिचन्निभिर्यजुर्भिस्तिस्त्रइति चमकेपक्षद्वयंप्रागुक्तं । ततश्चरूपेसमग्रहोमेएकोनसप्तत्युत्तरशत
धाविभागपक्षेएकोनसप्तत्युत्तरंशतंप्रकाशीत्यधिकशतंवा ६ ॥ रूपेदशांशशतांशहोमो न भवति । एवंवक्ष्यमाणदशांशशतांशहो

मेऽवशिष्टदशांशशतांशहोमोनेतिकेचित् । सर्वत्ररूपेआद्यविभागत्रयेदशांशाद्यसंभवेपिउत्तरविभागत्रयेदशांशादिप्राप्तिरस्तीत्यन्ये । अयमेवचशिष्टैराहतःपक्षः । तत्ररूपेदशांशहोमेषोऽशधाविभागपक्षेआहुतिद्वयंदशांशः । अर्धाधिकेअल्पांतरत्वेनसमस्ताहुतिग्रहणात् । तच्चाद्याभ्यांमंत्राभ्यां । यद्वाआद्येनांत्येनचमंत्रेणेतियाज्ञिकाः । तत्रैवाष्टाचत्वारिंशत्यक्षेपंचाहुतयोदशांशः । तत्राद्यैरेवंपंचभिर्चद्वाद्याभ्यांद्वाभ्यांअंत्यैस्त्रिभिरितिपक्षद्वयं । तत्रैवैकोनसप्तत्युत्तरशतमंत्रपक्षेसप्तदशाहुतयोदशांशः । तत्रैवैकोनसप्तत्युत्तरशतमंत्रपक्षेसप्तदशाहुतयोदशांशः । रूपेएवषष्ठेपक्षेदशांशाहुतिद्वयंप्राग्वन्मंत्राभ्यांज्ञेयं । यत्रसमग्रेदर्शनमकाहुतयः चमकेतुअग्नाविष्णूइत्येका एकादशभिश्चमकानुवाकैर्नमकप्रतिरूपकयोजितैरेकैकरूपांतेएकैकेतिद्वादशसर्वास्त्रयोविंशतिराहुतयः । तत्रैवत्रेधाविभागेनमकानांत्रयस्त्रिंशत् चमकानांप्राग्वद्वादशेतिसर्वाःपंचचत्वारिंशत् । तत्रैवैकोनसप्तत्युत्तरशतधाविभागेनमकानांपद्मसप्तत्युत्तरंशतं च रूपेसमग्रहोमेएकधाविभागादिषट्पक्षेषुयांसंख्योक्तसैवात्रबोद्धव्या ॥ तत्रषोडशधाविभागदिपक्षेअवशिष्टरूपसप्तदशांशरूपाद्विःपंचसप्तदशसहिताक्रमेणप्रागुक्तैवसंख्याबोद्धव्या ॥ तद्यथा । विंशतिस्त्रिंशद्वा पंचपंचाशसंचषष्टिर्वा एकोननवति

रुद्रहोमे.
॥२८१॥

॥३३६॥

नवनवतिर्वति रुद्रांशतांशहोमःषोडशधाविभागादिपक्षत्रयएवसंभाव्यते । तत्रनमकेप्राग्वदाहुतिद्वयं चमकेचोक्तंपक्षद्वय
 मितिचतस्रश्चतुर्दशवाषोडशधाविभागेआहुतयः । अष्टचत्वारिंशद्भ्राविभागेतुनमकेप्राग्वत्सं चमकेद्वौपक्षावितिसप्तसप्त
 दशवाहुतयोभवन्ति । एकोनसप्तत्युत्तरशतधाविभागेतुनमकेसप्तदश चमकेचपक्षद्वयमिति विंशतिस्त्रिंशद्वेति ॥ ॥ लघुरु
 द्रेऽमग्रहोमेएकधापक्षेएकविंशत्युत्तरशतनमकानांतावत्यआहुतयः चमकानांद्वात्रिंशदुत्तरंशतमितिचमकैःसहत्रिपंचाशद
 धिकंशतद्वयमाहुतयः । तत्रैवत्रेधाविभागेनमकानांत्रिपष्ट्यधिकंशतत्रयं चमकानामनंतरोक्ताएवेतिचतुःशतानिपंचनवति
 श्च । तत्रैवषोढाविभागपक्षेनमकानांसप्तशतानिषड्विंशतिश्च चमकानांतावत्यएवेतिसर्वाअष्टशतानिअष्टपंचाशच्च । तत्रैवयो
 डशधाविभागपक्षेनमकानांसहस्रमेकंनवशतानिषट्विंशतिश्च चमकानांतावत्यएवेतिसर्वाःसहस्रद्वयमष्टपष्टिश्च । तत्रैवाष्टाच
 त्वारिंशत्यक्षेनमकानापंचसहस्राणिअष्टशतान्यष्टौच चमकानामुक्ताएवेति चमकैःसहसर्वाःपंचसहस्राणिनवशतानिचत्वारिं
 शच्च । तत्रैकोनसप्तत्युत्तरशतधाविभागपक्षेनमकानांविंशतिसहस्राणिचत्वारिंशतान्येकोनपंचाशच्च चमकानांतावत्यएवेति
 सर्वाविंशतिसहस्राणिपंचशतानिएकाशीतिश्चेति । लघुरुद्रएवदशांशहोमेएकधापक्षेद्वादशरूपकाणिदशांशइतिनमकानां
 द्वादशाहुतयः चमकानांचरूपकेषुक्रमेणद्वादशेतिसर्वाश्चतुर्विंशतिः । तत्रैवत्रेधाविभागेनमकानापट्विंशत् चमकाहुतिभिः
 सहाष्टाचत्वारिंशत् । तत्रैवषोढाविभागेनमकानांद्विसप्ततिः चमकाहुतिभिःसहचतुरशीतिः । तत्रैवषोडशधाविभागेनमका
 नामेकंशतंत्रिनवतिःअवशिष्टरूपस्यचप्राग्वद् चमकैःसहद्वेशतेषट्च । तत्रैवाष्टाचत्वारिंशद्भ्राविभागेनमकानापंचशतानिषट्

सप्ततिः अवशिष्टरूपस्यग्रावत्सं चमकैःसहपंचशतानि त्रिनवतिश्च । तत्रैवैकोनसप्तत्युत्तरशतधाविभागेनमकानांद्विसहस्रेअष्टाविंशतिः अवशिष्टरूपस्यग्रावत्सप्तदश चमकैःसहद्वेसहस्रेसप्तपंचाशदाहुतयइति ॥ ॥ लघुरुद्रएवशतांशहोमेएकधापरूपकस्यतिस्रःअवशिष्टैकविंशतिरूपाणामेकाचमकैःसहषड्दशवा ॥ तत्रैवषोडशान्यस्तिस्रः चमकैःसहएकविंशतिरेकत्रिंशद्वा । तत्रैवाष्टाचत्वारिंशद्वापक्षेनमकानांसहस्रमेकत्रीणिशतानिएकत्रिंशच्चाहुतयः चमकानामेकंसहस्रंचतुःशतंद्विपंचाशच्चेतिसर्वाःद्विसहस्रेसप्तशतानिअष्टाचत्वारिंशच्च । तत्रैवषोडशधाविभागेनमकानांसप्तसहस्राणिनवशतानिषडशीतिश्च चमकैःसहपंचसहस्राणिचत्वारिंशतानिषष्टिसहस्राणित्रिंशतानिचत्वारिंशच्च । तत्रैवाष्टाचत्वारिंशद्वाविभागेनमकानांत्रिषष्टिसहस्राणिअष्टौशतानिअष्टाशीतिश्च चमकैःसहपंचषष्टिसहस्राणित्रिंशतानिचत्वारिंशच्च । तत्रैवैकोनसप्तत्युत्तरशतधाविभागेनमकानांद्विलक्षेचतुर्विंशतिसहस्राणिनवशतानि

एकोनचत्वारिंशच्च चमकैःसहद्वेदश्लक्षेणद्विंशतिसहस्राणित्रिशतान्येकनवतिश्च ॥ ॥ महारुद्रेदशांशहोमेएकधाविभागेनम
 कानामेकंशतंत्रयस्त्रिंशच्चरूपाणीतितावत्यआहुतयः चमकानांद्वादश रुद्रियावृत्त्यात्रयस्त्रिंशच्छतंचमकरूपयोजनेद्वेद्वादश
 वेतिसर्वाद्देशतेएकोनाशीतिरेकोननवतिर्वा । तत्रैवत्रेधाविभागेनमकानांत्रीणिशतानिनवनवतिश्च चमकैःसहपंचशतानिपं
 चचत्वारिंशत्पंचपंचाशद्वा । तत्रैवषोढाविभागेनमकानांसप्तशतानिअष्टनवतिश्च चमकैःसहनवशतानिचतुश्चत्वारिंश
 चतुःपंचाशद्वा । एधुत्रिष्वपिपक्षेष्ववशिष्टरूपाणांदशांशोनास्ति । तत्रैवषोडशधाविभागेनमकानंद्वेसहस्रेएकंशतंअष्टा
 विंशतिश्च अवशिष्टरूपस्यद्वे चमकैःसहद्वेसहस्रेदशतेषट्सप्ततिःषडशीतिर्वा । तत्रैवाष्टाचत्वारिंशद्वाविभागेनमका
 नांषट्सहस्राणित्रीणिशतानिचतुरशीतिश्च अवशिष्टरूपेपंच चमकैःसहषट्सहस्राणिपंचशतानिपंचत्रिंशत्पंचचत्वारिं
 शद्वा । तत्रैवैकोनसप्तत्युत्तरशतधाविभागेनमकानांद्वाविंशतिसहस्राणिचत्वारिंशतानिसप्तसप्ततिश्च अवशिष्टरूपेसप्तद
 श चमकैःसहद्वाविंशतिसहस्राणिषट्सतानिचत्वारिंशत्पंचाशद्वेति ॥ ॥ महारुद्रेदशांशहोमेएकधाविभागेत्रयोदशरूपा
 णिशतांशइतितावत्यआहुतयः चमकानांत्वेकादशिन्यांद्वादशरूपद्वयेच चमकानांप्रत्येकंद्वेद्वादशवेतिचतस्रश्चतुर्विंशतिर्वा
 सर्वाएकोनत्रिंशदेकोनपंचाशद्वा । अत्रास्मिन्नेवपक्षेअवशिष्टरूपाणांशतांशोनास्ति । तत्रैवत्रेधाविभागेनमकानामेकोनचत्वा
 रिंशत्अवशिष्टैकत्रिंशद्रूपाणांचैका चमकैःसहषट्पंचाशत्षट्सप्ततिर्वा । तत्रैवषोढाविभागेनमकानामष्टसप्ततिःअवशिष्टरू
 पाणांद्वे चमकैःसहषण्णवतिःषोडशाधिकंशतंवा । तत्रैवषोडशधाविभागेद्वेदशतेअष्टौचअवशिष्टरूपाणांपंच चमकैःसहद्वेदश

तेएकोनत्रिंशदेकोनपंचाशद्वा । तत्रैवाष्टाचत्वारिंशद्वा विभागेनमकानां षट्शतानिचतुर्विंशतिश्च अवशिष्टरूपाणां पंचदश च
 कैः सह षट्शतानिपंचपंचाशत्पंचससतिर्वा । तत्रैवैकोनससत्युत्तरशतधा विभागेनमकानां द्वे सहस्रे एकं शतं ससनवतिश्च अवशि-
 रूपाणां द्विपंचाशत् चमकैः सह द्वे सहस्रे द्वे शतं पंचषष्टिः पंचाशीतिर्वेति ॥ ॥ अतिरुद्रे समग्रहो मे एकधा पक्षे चतुर्दश सहस्राणि षट्-
 शतानि एकचत्वारिंशच्च रूपका इति तेषां तावत्य आहुतयः चमकानां तु प्रत्येकं रुद्रां द्वादशेति पंचदश सहस्राणि नवशतानि द्वा सस-
 तिश्च चमकैः सह एकोनषष्टि सहस्राणि अष्टौ शतानि पंचनवतिश्च । तत्रैव त्रैधा विभागे रूपाणां त्रिचत्वारिंशत् सहस्राणि नवशतानि द्वा सस-
 निषट्चत्वारिंशच्च चमकैः सह लक्षमेकं त्रीणिसहस्राणि अष्टौ शतान्यष्टादश च । तत्रैव षोडशधा पक्षे रूपाणां सप्ताशीतिसहस्राणि अष्टौ शता-
 स्त्राणि द्वे शते षट्पंचाशच्च चमकैः सह द्वे लक्षे पंचाशत् सहस्राणि द्वे शते अष्टाविंशतिश्च । तत्रैव षोडशधा पक्षे रूपाणां द्वे लक्षे चतुस्त्रिंशत् सह-
 रशतधा विभागे चतुर्विंशतिलक्षाणि चतुःसप्ततिसहस्राणि अष्टादश सहस्राणि सप्तशतानि चत्वारिंशच्च । तत्रैव एकोनससत्युत्त-
 स्त्राणि त्रीणि शतान्येकाचेति ॥ ॥ अतिरुद्रे दशांशहो मे एकधा पक्षे नमकानां मेकं सहस्रं चत्वारिंशतानि चतुःषष्टिश्चाहुतयः
 चमकानुवाकानां प्रतिरूपयोजने एकं सहस्रं पंचशतानि षण्णवतिः अवशिष्टरूपे च द्वे द्वादशवेतिसर्वास्त्रीणिसहस्राणि द्विषष्टिर्द्वा-
 ससतिर्वा । तत्रैव त्रैधा पक्षे नमकानां चत्वारि सहस्राणि त्रीणि शतानि द्वा नवतिश्च चमकैः सह पंचसहस्राणि नवशतानि नवतिः श-

तंवा । तत्रैवषोढापक्षेनमकानामष्टौसहस्राणिसप्तशतानिचतुरशीतिश्च चमकैःसहदशसहस्राणित्रिशतानिद्व्यशीतिर्द्वानवति
 र्वा । एषुत्रिष्वपिपक्षेषुमूलावशिष्टरूपदशांशाभावः । तत्रैवषोडशधापक्षेनमकानांत्रयोविंशतिसहस्राणिचत्वारिशतानिचतुर्विं
 शतिश्च मूलावशिष्टरूपस्यद्वे चमकैःसहपंचविंशतिसहस्राणिचतुर्विंशतिश्चतुस्त्रिंशद्वा । तत्रैवाष्टाचत्वारिंशद्वापक्षेनमकानांस
 सतिसहस्राणिद्वेदशतेद्विसप्ततिश्च मूलावशिष्टरूपस्यचपंच चमकैःसहएकसप्ततिसहस्राणिअष्टौशतानिपंचसप्ततिःपंचाशीति
 र्वा । तत्रैवैकोनसप्तत्युत्तरशतधापक्षेनमकानांद्वेलक्षेसप्तचत्वारिंशत्सहस्राणिचत्वारिशतानिषोडशच मूलावशिष्टरूपस्यचसप्त
 दश चमकैःसहद्वेलक्षेएकोनपंचाशत्सहस्राणिएकत्रिंशदेकचत्वारिंशद्वा ॥ अतिरुद्रेशतांशहोमेएकधाविभागेनमकानांए
 कशतंपट्टचत्वारिंशच्चेतितेषांतावत्यआहुतयः अवशिष्टैकचत्वारिंशद्रूपाणांशतांशोनसंभवति । चमकानांत्रयोदशरुद्रीष्वेकंश
 तंपट्टपंचाशच्च रूपकत्रयेद्वेद्वादशवेतिषट्त्रिंशद्वा सर्वास्त्रीणिशतानिअष्टावष्टत्रिंशद्वा । तत्रैवत्रेधाविभागेनमकानांचत्वारि
 शतान्यष्टत्रिंशच्च अवशिष्टरूपाणामेकाचमकैःसहषट्शतानिएकएकत्रिंशद्वा । तत्रैवषोढाविभागेनमकानांअष्टौशतानिषट्सप्त
 तिश्चअवशिष्टरूपाणांद्वे चमकैःसहएकंसहस्रंचत्वारिंशत्सप्ततिर्वा । तत्रैवषोडशधाविभागेनमकानांद्वेसहस्रेत्रीणिशतानिषट्
 त्रिंशच्चअवशिष्टरूपाणांसप्त चमकैःसहद्वेसहस्रेपंचशतानिपंचपंचत्रिंशद्वा । तत्रैवाष्टाचत्वारिंशद्वाविभागेनमकानांसप्तसहस्रा
 णिअष्टौचअवशिष्टरूपाणांविंशतिः चमकैःसहसप्तसहस्राणिएकंशतंनवतिश्च शतद्वयंविंशतिश्चवा । तत्रैवैकोनसप्तत्युत्तरश
 तधाविभागेनमकानांचतुर्विंशतिसहस्राणिषट्शतानिचतुःसप्ततिश्चअवशिष्टरूपाणामेकोनसप्ततिः चमकैःसहचतुर्विंशतिसह

स्त्राणिनवशतानिपंचपंचत्रिंशद्वेति ॥ एवंकैश्चिद्रुद्रहोमसंख्याभिहिता । अन्यैस्तुयत्रप्रागुक्तसंख्यातोधिकंरूपकमवशिष्यते
तत्रसमग्ररूपकेणहोमः । यत्रत्वाहुतयोवशिष्यतेतत्रषडाहुतिपर्यंतमाद्यैस्त्रिभिर्मंत्रैस्त्रिस्तिस्रआहुतयःअत्यैस्त्रिभिस्त्रिस्तिस्रः । यत्ररू
पक्षवत्पदानभूतकिञ्चोमलोपोभवतीत्युक्तं । अस्मिंश्चपक्षेप्रागुक्तसंख्येयैषांसंख्याएकीकृत्ययोज्या । इहचरुद्रहोमेउक्तेष्वनेक
प्रकारेषुयत्रत्राहुतिसंख्याधिक्यमाहुतिपरिमाणोधिक्यंवातत्रतत्रफलतारतम्यंद्रष्टव्यं ॥ एवंरुद्रहोमंविधाचहृदयाद्यस्त्रांतप्रा
गुक्तं पंचांगन्यासंकुर्यात् ॥ ऋत्विगादिपक्षेतुसर्वेष्वेवमेवकुर्युः ॥ ततआचार्योयजमानोवाप्रागुक्तद्रुद्रपीठदेवताभ्यस्तत्तन्नाम
मंत्रैराज्यंस्त्रुवेणजुहुयात् ॥ इहचहौम्यद्रव्यमधोमेखलायांभूमौवापतितमग्नौनक्षिपेत् मध्यमोपरिमेखलयोःपतितस्यपरिधिप
रिस्तरणांतर्गतत्वेनाग्निप्रक्षेपाहृत्वात्तद्वह्निर्गतस्यांतःप्रक्षेपनिषेधाच्चेतिहोमप्रकारसंक्षेपः ॥ एवंहोमंपरिसमाप्यचंदनाद्युपचारै
रग्नेनयेतिमंत्रेणसंकल्पपूर्वकंस्वाहास्वधायुतमग्निपूजयेत् । अग्नयेगंधादिबहिरेवदद्यात् । ततोऽग्रहपीठदेवतानारुद्रपीठदेवता
नांचोत्तरपूजांकंचिदाहुः ॥ पूजासंपूर्णतांवाचयित्वायस्यस्मृत्याआवाहनंनजानामीत्युक्त्वास्विष्टकृदादिनवाहुतीश्चहुत्वाव
लिदानंइंद्रादिलोकपालेभ्योऽग्रेभ्यश्चकृत्वारुद्रपीठस्याग्नेकद्रुद्रायेतिरुद्रायबलिंदत्वापूर्णहुतिंवसोर्धारांचजुहुयात् (बलिदा
नपूर्णहुतिंवसोर्धारादिमात्स्येग्रहयज्ञेद्रष्टव्यं) एवंवसोर्धारांविधाययथाशाखंपूर्णपात्रविमोकादिकर्मशेषंसमापयेदाचार्यः । त
दनंतरंवरणक्रमेणऋत्विजःप्रतिनिधयश्चोदुज्जुखाःप्राज्जुखयजमानहस्तेश्रेयःसंपादनंकुर्वति ॥ तच्चैवं ॥ शिवा आपःसंवित्पितृयज

मानहस्तेजलक्षिपेत् सौमनस्यमस्त्वितिपुष्पं अक्षतंचारिष्टंचास्त्वित्यक्षतान् दीर्घमायुःशांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्त्वितिपुनर्जलं ।
मयाभवन्नियोगेन महारुद्रमध्येयथाशेनयःकृतोजपस्तद्दशांशेनामुकपक्षेणचयःकृतोहोमस्तस्माज्जपाद्धोमाच्चयदुत्पन्नंश्रेयस्तत्तु
भ्यमहंसंप्रददइति ॥ इदंनिर्मूलत्वाद्यजमानप्रतारणामान्नमेव । तदनंतरमग्नेःपश्चिमभागेप्राङ्मुखोपविष्टोयजमानउदङ्मुखाना
चार्यादीन्पूजयिष्यइतिसंकल्प्य श्रीमहारुद्रस्वरूपिणेआचार्यायेदंपाद्यंइदंबाह्वसत्यंवासोयुगुलमित्यादिगंधपुष्पधूपदीपतां
बूलानिदत्वा पूर्वोक्तविशेषणवतिकालेदेशेचकृतस्यमहारुद्रादिकर्मणःप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थममुकगोत्रायामुकवेदांतर्गतामुकशाखा
ध्यायिनेमुकशर्मणेआचार्याययथाशक्त्यलंकृतमिमांसवत्सांगारुद्रदैवत्यांइदंच हिरण्यमग्निदैवतंतुभ्यमहंसंप्रददइतिकुशाक्ष
तसहितजलंचिप्रहस्तेनिक्षिप्य नममेतिवदेत् विप्रःस्वस्तीत्युक्त्वाकामस्तुतिकइदंकस्माअदादित्यादिकांस्वशाखास्थांपठेत् ए
वमेवब्रह्मपूजांविधायदक्षिणांदत्वा अनंतरंग्रहजापकेभ्यःपूजापूर्वकंग्रहदक्षिणादेया अनंतरमृत्विजोपिपूजयित्वासंकल्पपूर्व
कंदक्षिणांदद्यात् प्रतिनिधिपक्षेपारितोषिकंदद्यात् यथाशक्त्याऽचार्यादिभ्योऽलंकारमुद्रिकोदकपात्रोपानद्भ्यजनछत्रचाम
रादीन्युपकरणानिदद्यात् गोरभावेतन्निष्क्रयत्वेननिष्कतदर्धवासुवर्णशक्त्यादद्यात् ततोद्धारजापकेभ्योदक्षिणादेया ततो
नानावेदांतर्गतनानाशाखाध्यायिभ्योनानागोत्रेभ्योनानाशर्मभ्योब्राह्मणेभ्योदीनानाथेभ्यश्च यथाशक्तिभूयसींदक्षिणांदातु
मुत्सृजेत् नममेतिसकुशाक्षतजलंक्षिप्वाञ्जलंक्षिप्वाऽनंतसदितिवदेत् तदनंतरंग्रहवेदिसमीपस्थकलशोदकेनरुद्रकलशोदकेनद्वारकल
शोदकेनचदूर्वापंचपल्लवैरुदङ्मुखाआचार्यत्विजस्तिष्ठतःप्राङ्मुखंसकुटुंबमुपविष्टंयजमानमभिषिंचेयुः अभिषेकेपत्नीवामभागे

अभिषेकसमयेगीतवाद्यादिमंगलघोषःकार्यः समुद्रज्येष्ठाइतिचतसृणां वसिष्ठआपत्त्रिष्टुप् अभिषेकेविनियोगः ॐ समुद्रज्ये
ष्ठाः० ४ त्रायंतामिहदेवाइत्यादि अक्षीभ्यामित्यादिचअन्येपिस्वशाखोक्तामंत्राग्राह्याः पौराणास्तुसुरास्त्वामभिषिंचंत्वि
त्यादयः एवमभिषेकानंतरं सर्वौषधीभिरनुलिप्यशुद्धोदकेन स्नात्वा शुक्लमाल्यांबरां नुलेपनः सपत्नीकोयजमानो ग्रहरुद्रपीठदेव
तानां गंधाद्युपचारैरुत्तरपूजां दक्षिणाप्रदक्षिणानमस्कारांतां निर्वर्त्य पुष्पांजलिं दत्वा आवाहनं न जानामीति अपराधसहस्रा
णि यस्य स्मृत्या मंत्रहीनं इति पीठद्वये क्षमाप्य उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्य ते अभ्यारमिदद्रयः यांतु देवगणा इति पुष्पाक्षतप्रक्षेपेण ग्रहपी
ठदेवता विसर्ज्य एवमेवरुद्रपीठदेवता विसर्जयेत् ग्रहपीठं पूजोपस्करयुतं रुद्रपीठमपि सोपस्करं रुद्रप्रतिमां चाचार्याय दद्यात् ।
तत्र प्रतिमादानमंत्राः ॥ श्रीरुद्रप्रतिमां स्वर्णमयीं वस्त्रयुगान्वितां ॥ श्रीरुद्रप्रीतये चापि प्राप्ता निष्ठ निवृत्तये ॥ प्रार्थिताभीष्ट
संसिद्ध्यै तुभ्यं श्रीरुद्ररूपिणे ॥ संप्रदद्यां विधानेन यथोक्तफलमस्तु मे ॥ यदा तु मारकतं लिंगं तदादानमंत्रः ॥ इदं मारकतं लिंगं रौ
प्यपीठान्वितं शुभं ॥ नंदिनाराजतेनापिश्वेत वस्त्रयुगान्वितम् ॥ धान्यैर्द्वादशभिर्युक्तमेकादशफलान्वितं ॥ संप्रदद्यां वि
धानेन यथोक्तफलमस्तु मे ॥ काश्मीरलिंगपक्षेतु इदं मारकतमित्यत्र इदं काश्मीरजमिति प्रयोज्यं ॥ द्वादशधान्यानि तु ग्रीहियव
माषतिलमुद्गखल्वगोधूममसूरप्रियंग्वणुश्यामाकनीवाराः ॥ तेषां मानं तु ग्रस्थाधिकं द्रोणावधियथाशक्तिग्राह्यं उक्तधान्याभा
वेयथासंभवं ग्राह्याणि । ततो गिसंपूज्य गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठेति अग्निं विसृज्य सर्वा मंडपदेवता द्वारदेवताश्च यांतु देवगणा इति वि
सृज्य ध्वजपताकाद्युपस्करयुतं मंडपमाचार्याय दद्यात् । अमुं मंडपं ध्वजपताकाद्युपस्करयुतं तुभ्यमहं संप्रददेनममेति । स्वस्ती

तिसप्रतिब्रूयात् । ततःकृतस्यमहारुद्रादिकर्मणःसंपूर्णतासिद्ध्येयथोपपन्नेनान्नेनयथाकालंनानागोत्रान्नानाशर्मणोमुकसंख्या
 न्ब्राह्मणान्भोजयिष्येइतिसंकल्पयथाकालंब्राह्मणान्भोजयेत् भूरिदक्षिणासंकल्पानंतरंवाब्राह्मणभोजनसंकल्पः । रूपेएकः
 रुद्रान्नयः लघुरुद्रेएकादश महारुद्रेएकविंशत्युत्तरशतं अतिरुद्रेत्रयोदशशतान्येकत्रिंशच्चेति ततोब्रह्मार्पणंब्रह्महविः चतुर्भि
 श्चतुर्भिश्चेत्युक्त्वा मयायत्कृतंयथाकालंयथादेशंयथाशक्तिचमहारुद्रादिकर्मतेनश्रीपरमेश्वरःप्रीयतां ॐतत्सद्ब्रह्मा
 र्पणमस्त्वितिसकुशजलंक्षिपेत् । ततःसदस्यंचंदनाक्षतपुष्पवस्त्रतांबूलदक्षिणादिभिःपूजयित्वाजलिंबद्धामयायत्कृतंमहारुद्रा
 दिकर्मतत्कालहीनंभक्तिहीनंशक्तिहीनंश्रद्धाहीनंभवतांब्राह्मणानांवचनात्सर्वसंपूर्णमच्छिद्रंचास्तुइतिप्रार्थयेत् ततःसंपूर्णम
 च्छिद्रमस्त्वितिसर्वेवदेयुः । ततस्तेषांमंत्राशिषोगृहीत्वातान्सानुनयंविमृज्यदीनानाथादीनन्नादिभिःसंतोष्यस्वयंसुहृन्मित्रादि
 युतःसोत्साहःसंतुष्टोहविष्यंभुंजीतेति ॥ रामेश्वरभट्टात्मजनारायणसूरिणाकाश्यां ॥ कर्मणसज्जनतुष्टैरुद्रानुष्ठानपद्धतीर
 चिता ॥ ग्रंथाननेकानालोड्यविचार्यसहसज्जनैः ॥ कृतःश्रमोनेनविभुःशंकरःप्रीयतांमम ॥ इतिश्रीभट्टरामेश्वरसुतनाराय
 णभट्टकृतारुद्रानुष्ठानपद्धतिःसमाप्ता ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥

॥ १८२ ॥ अथतृचाकल्पपद्धतिः ॥

श्रीः ॥ सूतउवाच ॥ भक्त्याकृष्णंनमस्कृत्यपांडवःपर्यंपृच्छत॥तृचामंत्रस्यमाहात्म्यंश्रोतुमिच्छाम्यहंप्रभो॥१॥ श्रीकृष्णउवाच॥
 परंब्रतंप्रवक्ष्यामिशृणुपार्थह्यनन्यधीः ॥ सौरवैदिकमंत्रस्यविधिसर्वरुजापहं ॥ २ ॥ प्रत्यहंपूजनंतस्यमंत्रस्यसकलार्थदं ॥ अर्घ्यं

ऋ० ब्र०

॥३४१॥

चैवनमस्कारं सर्वयद्यच्छृणुष्वतत् ॥३॥ तव प्रीत्या प्रवक्ष्यामि सर्वलोकहिताय वै ॥ सौरमंत्रस्य माहात्म्यं प्रवक्ष्यामि समासतः ॥४॥
उद्यन्नद्योतिमंत्रोयं सौरः पापप्रणाशनः ॥ रोगघ्नश्च द्विषघ्नश्च भुक्तिमुक्तिप्रदायकः ॥ ५ ॥ कण्वेन तु पुरा हृष्टं गुह्यं परमसिद्धिदं ॥
पुत्रस्य रोगनाशाय ख्यातं लोकहिताय च ॥ ६ ॥ तेन चाराधितो देवः स्तुत्वामंत्रेण भास्करः ॥ तत्प्रवक्ष्यामि ते सर्वं न्यासपूजा
विधिक्रमात् ॥ ७ ॥ उद्यन्नद्येत्यूचादित्यमुपतिष्ठेद्दिने दिने ॥ हृद्रोगं नाशयेत्तस्य परमारोग्यदायकं ॥ ८ ॥ रोगी च जपते रौ
गैर्मुक्तो भास्करतुष्टितः ॥ आरोग्यमेतत्सरमंजयेन्नित्यमंतर्द्रितः ॥ ९ ॥ द्विषंतमिति चार्धचंद्रिषि द्वेष इति श्रुतं ॥ अष्टावृ
त्त्या जपेन्नित्यं द्विषं नाशयेत्तुभुवं ॥ १० ॥ उत्तमस्तस्य सार्धचंद्रिषि द्वेष इति श्रुतं ॥ हृद्रोगो नाशमाप्नोति मंत्रस्यास्य प्रभावतः
॥ ११ ॥ साधको विधिनानित्यं स्नात्वा ह्यनुदिते रवौ ॥ धौतशुक्लांबरधरः कृत्वा संध्यादिकाः क्रियाः ॥ १२ ॥ गोमयेनोपलि
खेत् ॥ १५ ॥ ताम्रपात्रस्थितं यंत्रं विधाय पंकजोपरि ॥ सकृत्सराणि पद्मानि करवीराणि चार्जु
र्यकलशं स्थापयेत्ततः ॥ गंगां चावाहयेत्तत्र मुद्रां कुशयाजपन् ॥ १७ ॥ घृणीति मूलमंत्रेण प्रणवाष्टकमंत्रितं ॥ गंधाद्यै रर्चितं
तच्च अर्घ्यतोयेन पूरयेत् ॥ १८ ॥ अर्चयेत्पूर्ववत्तेन अभिमंत्र्य ततो जलं ॥ प्रोक्षणीकरणैस्त्वेवमात्मानं सेचयेत्ततः ॥ १९ ॥
न्यासं कृत्वा ततः पश्चाद्द्विधरेष उदाहृतः ॥ उद्यन्नद्येत्यूचां तासां ऋषिः प्रस्कण्वईरितः ॥ २० ॥ छंदो नुष्टुप तथा देवः सूर्य नारायणः

तृचाक.
॥२८२॥

॥३४१॥

स्मृतः ॥ विनियोगस्तथाकार्योन्यासकर्मत्विदं शृणु ॥ २१ ॥ अनेनैवविधानेनन्यासंकृत्वायथाविधि ॥ उद्येत्यर्धचर्चप्रणवमायादी
 र्धस्वरैर्युतं ॥ २२ ॥ अंगुष्ठादिकरन्यासंदेहांगंचततःपरं ॥ हस्तयोर्हृदयेमूर्ध्निपादेनाभौमुखेतथा ॥ २३ ॥ चक्षुषोःकवचंशस्त्रंपा
 दशःक्रमतोन्नयेत् ॥ अनेनैवविधानेनन्यासंकुर्याद्यथाविधि ॥ २४ ॥ षडंगकवचंकृत्वासौरमंत्रविधिक्रमात् ॥ एवंयःकुरुतेन्या
 संद्वादशांगेपदानिच ॥ २५ ॥ ससर्वरोगनिर्मुक्तःसर्वोपद्रववर्जितः ॥ एवंन्यस्तमुनिर्विप्रःकर्णिकायामधःक्रमात् ॥ २६ ॥ आ
 धारपीठपूजांचक्रमेणैवसमर्चयेत् ॥ कर्णिकायान्यसेत्सूर्यसांगावरणभूषितं ॥ २७ ॥ पत्रसंधिस्थिताष्टारदैवतैःसहपूजयेत् ॥ पा
 द्याह्व्यांचमनंचैवंमधुपर्कनिवेदयेत् ॥ २८ ॥ ततस्त्वाचमनंस्नानंवल्लमाचमनंतथा ॥ गंधपुष्पंतथाधूपंदीपनैवेद्यमेवच ॥ २९ ॥ त
 तश्चफलतांबूलंदक्षिणांचसमर्पयेत् ॥ अथाह्व्यपात्रमादायपूरयेत्तीर्थवारिणा ॥ ३० ॥ सकेसराणिपद्मानिकरवीराणिचार्जुन ॥ ति
 लतंडुलसंयुक्तंकुशैर्गंधोदकेनच ॥ ३१ ॥ रक्तचंदनमिश्राणिकृत्वावैताम्रभाजने ॥ धृत्वाशिरसितत्सान्रजानुभ्यांधरणीतले ॥ ३२ ॥
 मंत्रपूतंगुडांकेशअह्व्यंदद्याद्भस्त्रये ॥ पादार्धचर्चतृचैवत्रिधावृत्तंत्रिधापुनः ॥ ३३ ॥ दद्यादह्व्यंसमंत्रेणअनुलोम्यैःपुनःपुनः ॥
 नित्यात्तुद्विगुणंकुर्याद्रविचारेप्रयत्नतः ॥ ३४ ॥ दंडवत्प्रणमेद्भूमावह्व्यदानक्रमेणतु ॥ पुनश्चगंधपुष्पादीनुपचारान्प्रकल्पयेत्
 ॥ ३५ ॥ मित्रादिदेवताःसर्वास्तर्पयेन्मार्जयेत्ततः ॥ तीर्थस्यग्रहणंकुर्यान्मंत्रेणानेनवापुनः ॥ ३६ ॥ विप्रान्द्वादशशक्त्यावाभो
 जयेद्रविवासरे ॥ नमस्कृतिशतांशेनततोब्राह्मणभोजनं ॥ ३७ ॥ इतिश्रीभविष्योत्तरपुराणेतृचाकल्पविधानं ॥ अथप्रयोगः ॥
 आचम्यप्राणानायम्य ॥ तदादौशुभेमुहूर्तेनदीतीरेशुद्धभूमौषोडशद्वादशहस्तान्यतमहस्तंमंडपंचतुद्धारंकृत्वातन्मध्येहस्तमा

त्रावेदीकृत्वासूर्योदयात्पूर्वस्नात्वा परिहितशुक्लशुचिवासाः पूजासंभारान्संभृत्य मंडपमेत्यवेद्याः पश्चिमतः प्राङ्मुख उपविश्य
 प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य ममामुक्त्वा धिनिरसनेन शरीरपुष्टिद्वारा श्रीसवितृसूर्यनारायणदेवताप्रीत्यर्थं अमुकसंख्यया तु
 चाकल्पविधिना ध्येदानानि नमस्कारांश्च करिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य ॥ गणेशपूजनं स्वस्तिवाचनं च कृत्वा आचार्य ऋत्विजश्च यथा
 निर्माय अर्घ्यपात्रासादनार्थं पुरतः अष्टदलं चतुरस्रं च निर्माय अर्घ्यपात्रे अष्टदलं च निर्माय संकल्पपूर्वकं भूतशुद्धादिकं कुर्यात् ॥ नि
 र्मितं च त्रैकेवलवेद्यांताम्रपात्रे वा स्थापयेत् ॥ रविचक्रलक्षणं ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि रवेश्चक्रमनुत्तमं ॥ बिंदुस्त्रिकोणवृत्तं च षड्
 कोणं वृत्तयुग्मकं ॥ पश्चादष्टदलं त्रैकोणं द्वादशारं सकर्णिकं ॥ भूपुरत्रितयं पश्चाच्चतुर्द्वारं रवेः क्रमात् ॥ इति रविचक्रलक्षणं ॥ रवेर्म
 तांतरेण चक्रं ॥ आद्यं तृतीये तृतीयादिभूतं भूताद्वितीया.... द्वितीया (?) ॥ चतुर्थमाद्यं हि पुनः क्रमेण एवं लिखेदष्टदलेषु पद्मं ॥
 ततः न्यासं कुर्यात् ॥ तत्र मंडपदेवताभ्यो नम इति मंडपं संपूज्य वास्तोष्पतये ब्रह्मणे नम इति वास्तोष्पतिं पूजयित्वा ॥ उद्यन्नद्येत्युच्यते
 स्य काण्वः प्रस्कण्व ऋषिः ॥ सूर्यो देवता ॥ अनुष्टुप् छंदः ॥ अंगशुद्धौ विनियोगः ॥ ॐ उद्यन्नद्य ० इति तु चेन सूक्तेनोदकेन पा
 णिनांगान्यभिमृश्य ॥ गुरुभ्यो नमः ॥ परमगुरुभ्यो नमः ॥ परात्परगुरुभ्यो नमः ॥ कण्वपुत्रप्रस्कण्व ऋषये नमः शिरसि ॥ अनु
 ष्टुप् छंदसे नमः मुखे ॥ सर्वरोगापहर्ता जगदात्मा श्रीसूर्यो देवता हृदयाय नमः ॥ ज्ञाननेत्रे श्रीबीजं नाभ्यै नमः ॥ ह्रीं कीलकं आधा
 राय नमः ॥ द्वादशांगन्यासे विनियोगः ॥ ॐ उद्यन्नद्य मित्रमहः ॐ ह्रंदक्षिणहस्ताय नमः कुंकुताग्निमित्रो रक्षतु मां ॥ ॐ आरो

हनुत्तरादिवं ॐ ह्रीवामहस्ताय० विहिताकरणाद्रवीरक्ष० ॥ ॐ हृद्रोगंमसूर्य ॐ ह्रूहृदयाय० सूर्योऽज्ञानाद्रक्षत्वनामयंकरोतु
 मां ॥ ॐ हरिमाणंचनाशाय ॐ ह्रूमूर्धेनमः शिरोवनमनाम्नानूरक्षतु० ॥ ॐ शुर्केषुमेहरिमाणं ॐ ह्रांदक्षिणपादा० प्रतिपिङ्गम
 नात्खगोरक्ष० ॥ ॐ रोपणाकासुद्धमसि ॐ ह्रःवामपादा० विहितागमनात्पूपारक्ष० ॥ ॐ अथोहारिद्रवेपुमे ॐ ह्रांनाभ्यै०
 तमोजाड्याद्धिरण्यगर्भोरक्ष० ॥ ॐ हरिमाणंनिद्धमसि ॐ ह्रींमुखाय० प्रतिपिङ्गजिह्वाव्यापारात्सर्वतोमरीचीरक्ष० ॥ ॐ उद
 गादयमादित्यः ॐ ह्रूंदक्षणियनेत्राय० आंध्याद्विहितादर्शनाच्चादित्योरक्ष० ॥ ॐ विश्वेनसहसासह ॐ ह्रैचामनेत्राय० प्रति
 पिङ्गदर्शनात्सवितारक्षतुमां ॥ ॐ द्विषंतंमह्यंरंधयन् ॐ ह्रौंकवचाय० सर्वरोगेभ्योरिष्टेभ्यश्चाऽर्कोरक्ष० ॥ ॐ मोअहंद्विषतेर
 धं ॐ ह्रःअस्त्राय० सर्वशत्रुकृत्याभ्योऽनिष्टेभ्यश्चभास्करोरक्ष० ॥ अथपङ्गन्यासः ॥ ॐ उद्यन्नद्यमित्रमह० ह्रांमित्ररविभ्यामंगु
 ष्ठाभ्यांनमः ॥ ॐ हृद्रोगंमसूर्यहरिमाणंचनाशाय ह्रींसूर्यभानुभ्यां तर्जनीभ्यां ॥ ॐ शुर्केषुमे० धमसि ह्रूं खगपूपभ्यां मध्यमा
 भ्यां ॥ ॐ अथोहारिद्र० धमसि ह्रैहिरण्यगर्भमरीचिभ्यां अनामिकाभ्यां ॥ ॐ उदगादय० सह ह्रौंआदित्यसवितृभ्यां कनिष्ठि
 काभ्यां ॥ ॐ द्विषंतंमह्यं० रधं ह्रःअर्कभास्कराभ्यां करतलकरपृष्ठाभ्यां ॐ एवंहृदयादि० ॥ ॐ उद्यन्नद्यमित्रमह आरोहन् ३ ऋ
 चः कवचत्वेनसर्वांगेविन्यसामि इतिव्यापकं ॥ अथपीठपूजा ॥ यंत्राधःकल्पितपीठे ॐ मंडूकाय० एवंसर्वत्रादौप्रणवः ॐ
 कालाग्निरुद्राय० कच्छपाय० आधारशक्त्यै० महासागराय० सूर्यलोकाय० सूर्यलोकस्थसुरेशेभ्यो० रत्नमंडपाय० रत्नद्वी
 पाय० कल्पवृक्षेभ्यो० रत्नवेदिकायै० रत्नसिंहासनाय० धर्माय० वैराग्याय० ऐश्वर्या० अधर्माय० अज्ञानाय०

○
15
○
25

==
m
20
m
==

अवैराग्याय० अनैश्वर्याय० अनंताय० आनंदमयकंदाय० संविन्नालाय० कालसरोजाय० प्रकृतिपत्रेभ्यो० विकारमयकेसरे
भ्यो० पंचाशद्वर्णकर्णिकायै० अर्कमंडलाय० चंद्रमंडलाय० वह्निमंडलाय० सत्त्वाय० रजसे० तमसे० आत्मने० अंत
रात्मने० परमात्मने० ज्ञानात्मने० ज्ञानतत्त्वाय० मायातत्त्वाय० कालतत्त्वाय० विद्यातत्त्वाय० परतत्त्वाय० विमलायै०
उत्कर्षिण्यै० ज्ञानायै० क्रियायै० योगायै० योगायै० प्रह्लादयै० सत्यायै० ईशान्यै० अनुग्रहायै० नमः ॐ ह्रीं सर्वादिशक्ति
कमलायनमः इतिपीठमंत्राः ॥ एताःपीठदेवताआवाह्यपंचोपचारैःसंपूज्यअंतर्यागंकुर्यात् ॥ अथांतर्यागः ॥ उदात्तस्वरज्ञा
ति ॥ अथात्मपूजा ॥ गंधद्वारामानंदकर्मःश्रीरनुष्टुप् ॥ आत्मपूजनेवि० ॥ गंधद्वारामितिललाटेगंधाक्षतादिन्यस्य ॥ मा
ल्यादीनीतिपुष्पाणिस्वशिरसिन्यस्य ॥ नमोस्त्वनंतायेत्युक्त्वा सूर्यात्मनेनमइतिकरपुटेनहृद्यात्मानंनमस्कुर्वात् ॥ अथाष्टा
वरणदेवतापूजा तत्राष्टदलमध्येप्रागादिक्रमेणपूज्याः ॥ मार्तंडायनमः भानवेनमः आदित्याय० हंसाय० सूर्याय० दिवाक
राय० तपनाय० भास्कराय० मध्येमंडलाधिपतिर्वर्तमानमासाधिपतिःपूज्यः ॥ मासाधिपाश्चैत्रादिषु ॥ अरुणाय० वेदां
गाय० भानवे० इंद्राय० रवये० गभस्तये० यमाय० सुवर्णरेतसे० दिवाकराय० मित्राय० विष्णवे० सूर्याय० ॥ इतिप्रथ
मावरणं ॥ दीप्तायै० सूक्ष्मायै० जयायै० भद्रायै० विभूतयै० अमोघायै० विद्युतायै० मध्येसर्वतोमुख्यैश्रियै० ॥

तृचाक.
॥२८२॥

三三三

इतिद्वितीयं ॥ ततोष्टौमातरः ॥ ब्राह्म्यै० माहेश्वर्यै० कौमार्यै० वैष्णव्यै० वाराह्यै० इंद्राण्यै० चामुंडार्यै० महालक्ष्म्यै० ॥
 इतितृतीयं ॥ आराध्याय० कपिलाय० साराय० प्रभूताय० दंडिने० पिंगलाय० धात्रे० विधात्रे० ॥ इतिचतुर्थं ॥ ऐरावता
 य० पुंडरीकाय० वामनाय० कुमुदाय० अंजनाय० पुष्पदंताय० सार्वभौमाय० सुप्रतीकाय० ॥ इतिपंचमावरणं ॥ त
 तोष्टदलाग्नेषुसायुधान्लोकपालान् ॥ इंद्राय० अग्नये० यमाय० निर्ऋतये० वरुणाय० वायवे० कुबेराय० ईशानाय० प
 द्मस्याधःशेषाय० ऊर्ध्वहिरण्यगर्भाय० ॥ इतिपष्ठं ॥ वज्राय० शक्तये० दंडाय० खड्गाय० पाशाय० अंकुशाय० गदायै०
 त्रिशूलाय० चक्राय० पद्माय० इतिदशायुधानि ॥ इतिसप्तमं ॥ सोमाय० भौमाय० बुधाय० बृहस्पतये० शुक्राय० श
 नैश्चराय० राहवे० केतवे० ॥ दलांतरेषुरविमध्येप्रकल्पयेत् ॥ इत्यष्टमं ॥ असितांगभैरवाय० रुरुभैरवाय० चंडभैरवाय०
 क्रोधभैरवाय० उन्मत्तभैरवाय० कपालभैरवाय० भीषणभैरवाय० संहारभैरवाय० ॥ इतिनवमं ॥ ततोमासाधिपान्पञ्चि
 मतः ॥ गणपतये० दुर्गायै० क्षेत्रपालाय० सारथ्ये० अरुणाय० स्वप्नाय० इच्छायै० पिंगलाय० हराय० साराय० आ
 राध्याय० सप्ततुरंगा० इतिदशमं ॥ चतुर्द्वारेषु ॥ दंडिने० पिंगलाय० मासाधिपाय० श्रियोर्मध्येपरमसुखाय० ॥ इत्येकाद
 शं ॥ अथद्वादशदलेषु ॥ मित्राय० रव्ये० सूर्याय० भानवे० खगाय० पूष्णे० हिरण्यगर्भाय० मरीच्ये० आदित्याय०
 सचित्रे० अर्काय० भास्कराय० ॥ ततोरुणादि ॥ अरुणाय० सूर्याय० वेदांगाय० भानवे० इंद्राय० रव्येन० गभस्तये०
 यमाय० सुवर्णरेतसेन० दिवाकराय० मित्राय० विष्णवे० ॥ ॐ नमोभगवतेसर्वावरणसंपन्नायत्रिगुणात्मधारिणेश्रीसूर्याय

सांगायसपरिवारायनमइतिनमस्तुर्वीत ॥ एहिसूर्येतिपठित्वा ॥ सर्वाविरणपीठदेवतासहितश्रीसूर्यइहागच्छइहतिष्ठभूर्भुवः
स्वरोम् ॥ सूर्यमंडलादागत्यहृदयस्थत्वेनभावितंसूर्यआवाहनीमुद्रयापीठमध्येपुष्पांजलिन्यासेनावाहयेत् ॥ ततोदेवस्यदेहस्व
देहेचपुरुषसूक्तन्यासंकुर्यात् ॥ अथध्यानं ॥ ध्येयःसदेतिध्यानं ॥ आवाहनीमुद्रयावाहयामि ॥ स्थापनी ॥ संनिधापनी ॥
संरोधिनी ॥ संमुखीकरणी ॥ प्रार्थनीमुद्रयाप्रार्थयामि ॥ इतिषण्मुद्राःप्रदर्शयेत् ॥ अथपुरुषसूक्तेनषोडशोपचारैःपूजांकु
र्यात् ॥ षोडशोपचारपूजनेनभगवान्श्रीसूर्यनारायणःप्रीयतांनममप्रीतोभवतु ॥ यथाशक्तिसूर्यगायत्रीजपेत् ॥ ॐ भास्करा
यविष्णुहेमहृदयुतिकरायधीमहि ॥ तन्नआदित्यःप्रचोदयात् ॥ अथाध्यदानं ॥ तान्नमयमष्टदलान्वितमर्घ्यपात्रमादायजानु
भ्यामवनिंगत्वारक्तचंदनरक्तपुष्परक्ततुलदूर्वायवान्अर्घ्यपात्रेनिक्षिप्यनासिकाग्रमवलोकयन् ॥ ॐ ह्रांउद्यन्नद्यमित्रमहः
ह्रां ॐ मित्रायनमः ॥ ॐ ह्रींआरोहन्नुत्तरांदिवंहीं ॐ रवयेनमः ॐ ह्रूंद्रोगंममसूर्यहूं ॐ सूर्यायनमः ॥ ॐ ह्रैंहरिमाणंच
नाशयैह ॐ भानवेनमः ॥ ॐ ह्रौंशुकेषुमेहरिमाणंह्रौं ॐ खगायनमः ॥ ॐ ह्रःरोपणाकासुदधमसिह्रः ॐ पूष्णेनमः ॥ ॐ
ह्रांअथोहारिद्रवेषुमेहां ॐ हिरण्यगर्भायनमः ॥ ॐ ह्रींहरिमाणंनिदधमसिहीं ॐ मरीचयेनमः ॥ ॐ ह्रूंउदगादयमादित्यःहूं
ॐ आदित्यायनमः ॥ ॐ ह्रैविश्वेनसहसासह्रै ॐ सवित्रेनमः ॥ ॐ ह्रौंद्विषंतंमह्यंरंधयन्ह्रौं ॐ अर्कायनमः ॥ ॐ ह्रःमोअहं
द्विषतेरधंह्रः ॐ भास्करायनमः ॥ ॐ ह्रांहीं उद्यन् ० दिवं ह्रांहीं ॐ मित्ररविभ्यांनमः ॥ ॐ ह्रैंहृद्रोगं शयह्रूं ॐ सूर्य
भानुभ्यांन० ॥ ॐ ह्रौंह्रः शुकेषुमे० धमसिह्रौंह्रःखगपूषभ्यांन० ॥ ॐ ह्रांहीं अथोहारि० निदधमसि ह्रांहीं ॐ हिरण्यगर्भ

मरिचिभ्यां० ॥ ॐ ह्रूं उदगाद० सहह्रूं ॐ आदित्यसवितृभ्यां० ॥ ॐ ह्रौं द्विषंतं० रधं ह्रौं ह्रः अर्कभास्कराभ्यां० ॥
 ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं उद्यन्नद्यऋक् ह्रां ह्रीं ह्रूं ॐ मित्ररविसूर्यभानुभ्यो० ॥ ह्रौं ह्रां ह्रीं शुकेषु मेऋक् ह्रौं ह्रां ह्रीं ॐ खगपूषहिरण्यग
 र्भमरीचिभ्यो० ॥ ॐ ह्रूं ह्रौं ह्रः उदगा० ऋक् ह्रूं ह्रौं ह्रः ॐ आदित्यसवित्रर्कभास्करेभ्यो नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं
 ह्रौं ह्रः उद्यन्नद्य० शुकेषु० उदगा० ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ॐ मित्ररविसूर्यभानुखगपूषहिरण्यगर्भमरीच्यादित्यसवि
 त्रर्कभास्करेभ्यो नमः ॥ ३ ॥ विनतातनयो देवः सर्वसाक्षी जगत्यतिः ॥ सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च अरुणो मे प्रसीदतु ॥ इति मंत्रेणारु
 णायार्घ्यं दद्यात् ॥ एवं प्रत्यहं द्वादशावृत्तय उत्तमः पक्षः ॥ षण्मध्यमः ॥ चतस्रः अधमः ॥ यथाशक्तिवा ॥ प्रत्यहा द्विगुणं रवि
 वारे ॥ एवमर्घ्यक्रमेणानमस्काराः ॥ नमस्कारांते पुनः पंचोपचारैः पूजयेत् ॥ ततस्तृचेन षडंगन्यासं कुर्यात् ॥ नमो मित्रस्य द्वा
 दशार्चस्य सूक्तस्य ॥ सूर्यो भितपाऋषिः ॥ सूर्यो देवता ॥ जगती छंदः ॥ प्रत्यंचं मित्रादीनां नमस्कारप्रदक्षिणां
 कुर्यात् ॥ ततः आवाहन्यादिमुद्राः प्रदर्श्य ॥ नमः सवित्र इति पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ आकृष्णेनेति स्तुत्वा ॥ सविता पश्चात्तादिति
 प्रार्थ्य ॥ उद्यन्नद्येति तृचेन श्रीसूर्यसांगं विसर्जयामीति पुष्पांजल्यर्पणेन विसर्जयेत् ॥ अभ्यारमित्यनेनेति केचित् ॥ यन्मंडलं दी
 प्तिकं विशालं रत्नप्रभं तीव्रजनादिरूपं ॥ दारिद्र्यदुःखक्षयकारणं च पुनानुमां तत्सवितुर्वरेण्यं ॥ इत्यर्घ्योदकप्रार्थना ॥ अकाल
 मृत्युशमनं सर्वव्याधिविनाशनं ॥ सूर्यस्यार्घ्योदकं तीर्थजठरे धारयाम्यहं ॥ ततो महासौरैरुपतिष्ठेत् ॥ अथ सौराणां मंत्राणां ऋक्सं
 ख्यामृषिदैवतछंदांसिपुनर्वक्ष्यामो महाव्याधिदुष्टापस्मारादि हृद्रोगोन्मादोदरगुल्मशूलशांतये गुदापशोणिताशो भगंदरजलो

दरपांडुरोगादिविस्फोटकाजीर्णरोगप्रमेहादिसर्वव्याधिनाशायमसमस्तपापक्षयार्थं सवितृसूर्यनारायणप्रीत्यर्थं महासौरजपे विनियोगः ॥ षष्टिऋचार्धचर्चएतासांसूर्योदेवताकेचिदंतिमाभिः स्तवंमन्यंते सोहमिति ध्यातव्यं येन सूर्येणाहरहरुयासितेन धनधान्यवंतो बहुरत्नवंत आदित्यवंत आयुष्यवंत आरोग्यवंतोरयिमंतो धनवंतो बलवंतो बहुपुत्रांतो भवंति श्रीकामः शांतिकामः श्रद्धाकामो मेधाकामः प्रज्ञाकाम एवं भास्करस्याराधनं कुर्यात्सदा गृहीपापक्षयार्थं व्याधिनाशार्थं नमः शौनकाय नमः परमऋषिभ्यो नमः परमऋषिभ्यो नमः परमऋषिभ्य इति सौरशांतिः ॥ अथ महार्घ्यसंख्या ॥ चतुर्विंशत्यर्घ्यदानैरेकावर्तनकं स्मृतं ॥ आवर्तनैश्चतुर्विंशर्धिणीचप्रकीर्तिता ॥ चतुर्विंशत्यर्धिणीभिर्लघ्वर्घ्यश्च प्रकीर्तितः ॥ चतुर्विंशतिलघ्वर्घ्यैर्महार्घ्यश्च प्रकीर्तितः ॥ लक्षत्रयेण विधिवदेक ३३ १७७ द्विंशत्सहस्रकैः ॥ षट्ससत्यधिकैः सप्तशतैरर्घ्यप्रदानतः ॥ सुप्रसन्नो भवेत्सूर्यः शश्वद्रोगप्रशांतये ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन महार्घ्यं च समाचरेत् ॥ एवमर्घ्यविधिं कृत्वा ततो होमं समाचरेत् ॥ शतं वाथ सहस्रं वा अयुतं लक्षं मेव वा ॥ जुहुयात्पायसाज्ये नखाद्यैर्नानाविधैरपि ॥ अर्कपुष्पैः समिद्धिश्च करवीरैस्तथापरे ॥ रक्तचंदनमिश्राभिरक्षताभिस्तथापुनः ॥ सागैर्दूर्वाकुरैश्चेति तिलैरपियैः शुभैः ॥ गायत्र्या सौरमंत्रैर्वीतृचामंत्रैर्विशेषतः ॥ व्याहृत्या वाथ होतव्यं सूर्यस्य प्रीतये पुनः ॥ ब्राह्मणेभ्यः प्रदातव्यं वस्त्रधेनुहिरण्यकं ॥ एवमाराधितः सूर्यः सर्वान्कामान्विधास्यति ॥ इतितृचार्घ्यपद्धतिः ॥ अथ यणमुद्रालक्षणं ॥ हस्ताभ्यामं जलिकृत्वानामिका मूलपर्वणोः ॥ अंगुष्ठौ निक्षिपेत्सेयं मुद्रात्वावाहनी स्मृता ॥ १ ॥ अधोमुखी त्वियं चेत्स्यात्स्थापनी मुद्रिका स्मृता ॥ उत्थितांगुष्ठमुष्ट्योस्तु संयोगात्संनिधापनी ॥ २ ॥ अंतःप्रवेशितांगुष्ठासैव संरोधिनीमता ॥ मुष्टिद्वयस्थितांगुष्ठौ सु

मुखोच्चौपरस्परं ॥ ३ ॥ संश्लिष्टांगुलिकौकुर्यात्सेयंसमुखमुद्रिका ॥ प्रसृतांगुलिकौहस्तौमिथःश्लिष्टौचसंमुखौ ॥ ४ ॥ कुर्यात्स्वहृदयेसेयमुद्राप्रार्थनसंज्ञिका ॥ ५ ॥ इतिपणमुद्राः ॥ इतिसंक्षेपः ॥ विशेषविस्तरस्तृचाभास्करादयंगंतव्यः ॥ ७ ॥

॥ २८३ ॥ अथोदकशांतिप्रयोगः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ गोमयेनगोचर्ममात्रंचतुरस्रमुपलिप्यकर्ताशुचिःसुप्रक्षालितपाणिपादआचांतोदर्भपूषविश्यदूर्वादर्भाश्चधारयमाणःप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यअस्माकमित्यादि० श्रीपङ्गसहितवेदपुरुषब्रह्मप्रीत्यर्थममगृहेनानाविधोत्पन्नोत्पत्त्यमानज्वररोगादिपीडापरिहारार्थं आदित्यादिनवग्रहदेवतानुकूलतासिद्ध्यर्थब्राह्मणद्वाराएकाहपक्षमाश्रित्यवौधायनोक्तांउदकशांतिकरिज्ये ॥ तत्रादौनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थमहागणपतिपूजनंपंचवाक्यैःपुण्याहवाचनंआचार्योदिवरणंचकरिज्ये ॥ गणपतिसंपूज्यआचार्यवरणंकुर्यात् अस्मिन्कर्मणिपूर्वस्यांदिशिजपकर्तृत्वेनत्वांवृणे एवंदक्षिणस्यांपश्चिमायांउत्तरस्यांचेति ॥ ततःपंचप्रस्थसिक्ताभिःशुद्धाभिररत्निमात्रंचतुरस्रंस्थंडिलंकृत्वासुवर्णव्रीहिदर्भानंगुष्ठोपकनिष्ठिकाभ्यांगृहीत्वास्थंडिलमध्येप्रतीचीमारभ्यप्राक्संस्थारेखां ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपुरस्ताद्विसीमतःसूरुचौविनआवः ॥ सबुध्याउपमाअस्यविष्ठाःसतश्चयोनिमसंतश्चविवः ॥ इतिलिखेत् ॥ तस्यादक्षिणतः ॐ नाकैसुपुर्णमुपयत्यततश्हृदावेनतोअभ्यर्चक्षतत्वा ॥ हिरण्यपक्षंवर्णस्यदूतंयमस्ययोनौशकुनंभुरण्युं ॥ इतिप्रादेशमात्रांतथैवलेखांविलिख्यतस्याउत्तरतः ॐ आप्यायस्वसमेतुतेविश्वतःसोमवृष्णि जं ॥ भवावाजस्यसंगुथे ॥ इतितथैवलेखांविलिख्यस्थंडिलमध्येदक्षिणामारभ्योदगपवर्गालेखां ॐ योरुद्रोअग्नौयोअप्सुयओ

षधीषुयोरुद्रोविश्वभुवनाविवेशतस्मैरुद्रायनमोअस्तु ॥ इतिविलिख्यतस्याःपश्चिमतः ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदेधेपदं ॥
 समूढमस्यपांसुरे ॥ इतितथैवलेखांवलिलिख्यमध्यायाःपूर्वतः ॐ इंद्रंविश्वंअवीवृधन्त्समुद्रव्यचसंगिरः ॥ रथीतमश्रथी
 स्थंडिलादुत्तरतःप्रागग्रान्दभानास्तीर्थं तेषुप्रोक्षणींसूत्रवेष्टितमुदकुंभंचासाद्यदर्भैःप्रच्छाद्यप्रोक्षणीमुत्तानांकृत्वातस्यामुदगग्रं
 पवित्रंनिधायोदकमासिच्यतूष्णींत्रिरुपूयउदकुंभमुत्तानंकृत्वा पवित्रेणप्रोक्ष्यधूपयित्वापुणैःफलैश्चावकीर्यब्रह्मजज्ञानमिति
 मंत्रेणस्थंडिलेनिधायस्थंडिलंपरिस्तृणीयात् ॥ ॐ भूर्भुवःसुवरित्तिदक्षिणतःप्रागग्रैःसप्तदशभिः ॥ ॐ उक्थंतमसस्यरिपश्यंतोज्योतिरुत्त
 शदर्भैरुदगग्रैःपुरस्तात्परिस्तृणीयात् ॥ ॐ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्वहुभ्यांपूणोहस्ताभ्यांपरिस्तृणामीतिषोड
 रं ॥ देवंदेवत्रासूर्यमग्नमज्योतिरुत्तममितिपश्चादुदगग्रैःअष्टादशभिः ॥ ॐ अग्नआचार्यहिर्वीतये ॥ गुणानोहव्यदांतये ॥
 निहोतासत्सिवाहिंषे ॥ उत्तरतःप्रागग्रैःसप्तदशभिःपरिस्तीर्थं कुंभेतिरःपवित्रंनिधायअपआनयन्जपतितत्सवितुर्वरेण्यमि
 ति ॐअपःप्रणयति ॥ अद्भवाआर्पः ॥ अद्भामेवारभ्यप्रणीयप्रचरति ॥ अपःप्रणयति ॥ यज्ञोवाआर्पः ॥ यज्ञमेवारभ्यप्रणी
 यप्रचरति ॥ अपःप्रणयति ॥ वज्रोवाआर्पः ॥ वज्रमेवभ्रातृव्येभ्यःप्रहृत्यप्रणीयप्रचरति ॥ अपःप्रणयति ॥ आपोवैरक्षोष्णी
 ॥ रक्षसामपहृत्यै ॥ अपःप्रणयति ॥ वज्रोवाआर्पः ॥ वज्रमेवभ्रातृव्येभ्यःप्रहृत्यप्रणीयप्रचरति ॥ अपःप्रणयति ॥ आपोवैरक्षोष्णी
 देवताएवारभ्यप्रणीयप्रचरति ॥ आपोवैशान्ताःशान्ताभिरेवास्यशुचंशमयति ॥ ॐ आपोवाइदं सर्वंविश्वंभूतान्यार्पःप्राणा

उदकशोः
॥२८३॥

॥३४६॥

वा॒आ॒र्पः॒प॒श॒व॒आ॒पो॒न्न॒मा॒पो॒मृ॒त॒मा॒पः॒स॒न्ना॒डा॒पो॒वि॒रा॒डा॒पः॒स्व॒रा॒डा॒प॒श्छं॒द्रा॒स्या॒पो॒य॒ज॒श्च॒पा॒पः॒स॒त्य॒मा॒पः॒स॒र्वी॒द्वि॒च॒ता॒आ॒पो॒भू॒भु॒
 वः॒सु॒व॒रा॒प॒ओ॒म् ॥ त॒तः॒कुं॒भे॒भू॒भु॒वः॒सु॒व॒रि॒ति॒य॒वा॒क्ष॒त॒तं॒डु॒ला॒नो॒प्य॒प॒ङ्ग॒स॒हि॒त॒वे॒द॒ब्र॒ह्म॒णे॒न॒म॒इ॒ति॒पो॒ड॒शो॒प॒च॒रैः॒सं॒पू॒ज्य॒पि॒ता॒चि॒रा॒
 जे॒ति॒मं॒त्र॒पु॒ष्पं॒स॒म॒प्य॒ दू॒र्वा॒द॒भैः॒प्र॒च्छा॒द्य ॥ च॒तु॒रो॒ब्रा॒ह्म॒णा॒न्प्र॒ति॒दि॒श॒मा॒स॒ने॒पू॒ष॒वे॒श॒नो॒दे॒वी॒र॒भि॒ष्ट॒य॒इ॒ति॒ब्र॒ह्म॒पा॒त्र॒म॒भि॒मृ॒श्ये
 त ॥ ब्रा॒ह्म॒णाः॒ब्र॒ह्म॒पा॒त्र॒म॒न्वा॒र॒भ्य॒ज॒पं॒ति ॥ ॐ त॒त्स॒वि॒तु॒र्वरे॒ण्य॒मि॒त्ये॒तां॒प॒च्छो॒र्ध॒र्च॒शः॒स॒र्वा॒गा॒य॒त्री॒ज॒प॒ति ॥ ॐ अ॒ग्नि॒मी॒ळे॒प॒रो
 हि॒तं॒य॒ज्ञ॒स्य॒दे॒व॒म॒त्वि॒जै ॥ हो॒ता॒रं॒र॒त्न॒धा॒त॒मं ॥ इ॒पे॒त्वो॒र्जे॒त्वा॒वा॒य॒व॒स्यो॒पा॒य॒व॒स्य॒दे॒वो॒वः॒स॒वि॒ता॒प्रा॒प॒य॒तु॒श्रे॒ष्ठ॒त॒मा॒य॒क॒र्म॒णे ॥ अ॒ग्न
 आ॒या॒हि॒र्वा॒त॒ये॒गृ॒णा॒नो॒हृ॒व्य॒दा॒त॒ये ॥ नि॒हो॒ता॒स॒ति॒स्वा॒हि॒र्षि ॥ शं॒नो॒द्वि॒वी॒र॒भि॒ष्ट॒य॒आ॒पो॒भ॒वं॒तु॒पी॒त॒ये ॥ शं॒यो॒र॒भि॒स्र॒वं॒तु॒नः ॥ इ
 ति॒ज॒पि॒त्वा॒व॒क्ष्य॒मा॒णा॒न्मं॒त्रा॒न्ज॒पे॒युः ॥ रा॒क्षो॒घ्नं ॥ कृ॒णु॒ष्व॒पा॒जः॒प्र॒सि॒ति॒न॒प॒थ्वी॒या॒हि॒रा॒जे॒वा॒म॒वा॒श्इ॒भे॒न ॥ त॒व्वी॒म॒न॒प्र॒सि॒ति॒द्रू
 णा॒नो॒स्ता॒सि॒वि॒ध्य॒र॒क्ष॒स॒स्त॒पि॒ष्ठैः ॥ त॒व॒भ्र॒मा॒स॒आ॒शु॒या॒प॒तं॒त्य॒नु॒स्पृ॒श॒धृ॒प॒ता॒शो॒शु॒चानः ॥ त॒पू॒श्च्य॒मे॒जु॒हो॒प॒त॒गान॒सं॒दि॒तो॒वि॒सु
 ज॒वि॒ष्व॒ग॒ल्काः ॥ प्र॒ति॒स्र॒शो॒वि॒सृ॒ज॒तू॒र्णि॒त॒मो॒भ॒वा॒पा॒यु॒र्वि॒शो॒अ॒स्या॒अ॒द॒ब्धः ॥ यो॒नो॒दूरे॒अ॒घ॒शो॒सो॒यो॒अं॒त्य॒मे॒मा॒कि॒ष्टे॒व्य॒थि॒रा॒द
 ध॒र्षी॒त् ॥ उ॒द॒मे॒ति॒ष्ठ॒प्र॒त्या॒त॒नु॒ष्व॒न्य॒मि॒त्रो॒ओ॒ष॒ता॒त्ति॒ग्म॒हे॒ते ॥ यो॒नो॒अ॒रा॒ति॒स॒मि॒धान॒च॒क्रे॒नी॒चा॒तं॒ध॒क्ष्य॒त॒सं॒न॒शु॒क्कं ॥ ऊ॒र्ध्वो
 भ॒व॒प्र॒ति॒वि॒ध्या॒ध्य॒स॒दा॒वि॒ष्कृ॒णु॒ष्व॒दै॒व्या॒न्य॒मे ॥ अ॒व॒स्थि॒रा॒त॒नु॒हि॒या॒तु॒जू॒नां॒जा॒मि॒म॒जा॒मि॒प्र॒मृ॒णी॒हि॒श॒न्नून् ॥ १ ॥ स॒त॒ै॒जा॒ना
 ति॒सु॒म॒ति॒य॒वि॒ष्ट॒य॒इ॒व॒ते॒ब्र॒ह्म॒णे॒गा॒तु॒मै॒रत् ॥ वि॒श्वो॒न्य॒सै॒सु॒दि॒ना॒यो॒द्यु॒न्ना॒न्य॒यो॒वि॒दु॒रो॒अ॒भि॒द्यौ॒त् ॥ से॒द॒मे॒अ॒स्तु॒सु॒भगः॒सु॒दा
 न॒र्थ॒स्त्वा॒नि॒त्ये॒न॒हृ॒वि॒षा॒य॒उ॒क्थैः ॥ पि॒प्री॒ष॒ति॒स्व॒आ॒यु॒षि॒दु॒रो॒णे॒वि॒श्वे॒द॒सै॒सु॒दि॒ना॒सा॒स॒दि॒ष्टिः ॥ अ॒र्चो॒मि॒ते॒सु॒म॒ति॒घो॒ष्य॒वा॒क्स॒ते

वावाताजरतामियंगीः ॥ स्वर्वास्त्वासुरार्थमर्जयेमास्मेयत्राणिधारयेरनुद्यन् ॥ इहत्वाभूयार्चरेदुपत्तमन्दोषवस्तर्दीद्विवा-
 समनुद्यन् ॥ क्रीडतस्त्वासुमनसःसपेमाभिद्युन्नातस्थिवाऽसोजनानां ॥ यस्त्वास्वर्धःसुहिरण्योअन्नउपयातिवसुमतारथेन ॥
 तस्यत्राताभवसितस्यसखायस्तआतिथ्यमानुषगजुजोषत् ॥ २ ॥ महोरुजामिबधुतावचोभिस्तन्मापितुर्गोतमादन्विचाय ॥
 त्वनोअस्यवचसश्चिह्निहोतर्यविष्ठसुक्रतोदमूनाः ॥ अस्वमजस्तरण्यःसुशेवाअतद्रासोचूकाअश्रमिष्ठाः ॥ तेपायवःस-
 द्विपवोनाहदेभुः ॥ त्वयावियऽसधन्यस्त्वोतास्तवप्रणीत्यक्ष्यामवाजान् ॥ उभाशऽसासूदयसत्यतातेनुष्ठुयाकृणुह्यहयाण ॥
 अयातेअग्नेसमिधाविधेमप्रतिस्तोमऽशस्यमानंगृभाय ॥ दहाशसोरक्षसःपाह्यसान्द्रुहोनिदोभिन्नमहोअवद्यात् ॥ ३ ॥ १ ॥
 रक्षोहणवाजिनमाजिघर्षिमित्रप्रथिष्ठमुपयामिशर्म ॥ शिशानोअग्निःक्रतुभिःसमिद्धःसनोदिवासरिषःपातुनक्तं ॥ विज्यो
 त्पाबृहताभत्यग्निराविर्विश्वाःनिकृणुतेमहित्वा ॥ प्रादेवीर्मायाःसंहतेदुरेवाःशिशीतेशृंगेरक्षसेविनिक्षे ॥ उत्स्वानासोदि-
 त्पायानुनर्जतेधियस्ताः ॥ शूरोनृपाताशवसश्चकानआगोमेतिव्रजेभजात्वनः ॥ इन्द्रोवोविश्वतस्परिहवामहेजनैभ्यः ॥ अस्माकमस्तुकेवलः ॥ इन्द्रनरोनेमार्धिताहवतेय
 तानितुआवृणे ॥ अनुतेदायिमहईन्द्रियायसत्रातेविश्वमनुवृत्रहत्ये ॥ अनुक्षत्रमनुसहोयजत्रैदेवेभिरनुतेनपह्ये ॥ आयस्मि
 न्तसर्वासवास्तिष्ठतिस्वारुहोयथा ॥ ऋषिर्हदीर्घश्रुत्तमइन्द्रस्यधर्मोअतिथिः ॥ आमासुपुक्कर्मरयआसूर्यऽरोहयोदिवि ॥ धर्म

नसामन्तपतासुवक्त्रिभिर्जुष्टं गिर्वणसेगिरः ॥ इन्द्रमिह्राथिनो बृहदिन्द्रमर्कभिरर्किणः ॥ इन्द्रवाणीरनूपत ॥ गायंति त्वागायत्रि
णोर्चत्यर्कमर्किणः ॥ ब्रह्माणस्त्वाशतक्रतुबुद्धं शर्मिवयेमिरे ॥ अहोमुचे प्रभरे सामनी पामो पिष्ठदाम्ने सुमतिर्गणानाः ॥ इद
मिन्द्रप्रतिहृव्यंगुभाय सत्याः संतु यजमानस्य कामाः ॥ विवेषयन्माधिपणाजानुस्तवै पुरापायादिन्द्रमहः ॥ अहसो यत्र पीपर
द्यथानोनावेवयांतमभयै हवन्ते ॥ प्रसन्ना जै प्रथममध्वराणामहोमुच वृषभं यज्ञियानां ॥ अपानपातमश्विना हयंतमस्मिन्नरइ
द्रियं धत्तमोर्जः ॥ विन इन्द्रमृधो जहिनीचार्यच्छपुतन्यतः ॥ अधस्पदंतमीकृधियो अस्मा अभिदासति ॥ इन्द्रयत्रमभिवाम
मोजो जायथा वृषभचर्षणीनां ॥ अपानुदोजनममित्रयंतमुरुदेवभ्यो अकृणोरुलोकं ॥ मगोनभीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ
जगामापरस्याः ॥ सुकसं शार्यपविमिन्द्रतिगमं विशत्रून्ताडि विमृधो नुदस्व ॥ विशत्रून्विमृधो नुद विवृत्रस्य हनूरुज ॥ विम
न्युमिन्द्रभामितो मित्रस्याभिदासंतः ॥ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रहवै हवै सुहवः शूरमिन्द्र ॥ हवेनुशक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो म
घवाधा त्विन्द्रः ॥ माते अस्यासहसावन्परिष्टावघायभूमहरिवः परादै ॥ त्रायस्वनोवके भिर्वरुथैस्तव प्रियासः सरिषुस्याम ॥
अनवस्तेरथमश्वायतक्षन्त्वष्टावज्रं पुरुहूतद्युमंतं ॥ ब्रह्माण इन्द्रमहयंतो अर्कैरवर्धयन्नहयं हंतवाडे ॥ वृष्णेयस्ते वृषणो अर्कमर्चानि
द्रावाणो अदितिः सजोषाः ॥ अनश्वासो येष वयो रथा इन्द्रैः पिता अभ्यवर्तत दस्यून् ॥ २ ॥ यत इन्द्रभया महत तो नो अभयं कृधि ॥
मघवञ्छगिधतवतन्नक्रतये विद्विषो विमृधो जहि ॥ स्वस्ति दा विशस्यति वृत्रहा विमृधो वशी ॥ वृषेन्द्रः पुरएतुनः स्वस्ति दा अभयं क
रः ॥ महा इन्द्रो वज्रबाहुः पौडशीशमयच्छतु ॥ स्वस्ति नो मघवाकरो तु हंतु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि ॥ सजोषा इन्द्रसगणो मरुद्भिः सोमं

पिबवृत्रहन्धूरविद्वान् ॥ जहिशत्रुरपमृधोनुदस्वाथाभयंकृणुहिविश्वतो नः ॥ ३ ॥ ये देवाः पुरः सदोग्निनेत्रारक्षो हणस्ते नः पांतु ते
 नो वंतु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा ॥ ये देवा दक्षिणसदोयमनेत्रारक्षो हणस्ते नः पांतु ते नो वंतु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा ॥ ये देवाः पश्चात्स
 मस्तेभ्यः स्वाहा ॥ ये देवा उषदो बृहस्पतिनेत्रारक्षो हणस्ते नः पांतु ते नो वंतु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा ॥ ये देवा उत्तरसदोवरुणेनेत्रारक्षो हणस्ते नः पांतु ते नो वंतु तेभ्यो न
 मार्यरक्षो मे स्वाहा ॥ सवित्रेरक्षो मे स्वाहा ॥ वरुणा यरक्षो मे स्वाहा ॥ अग्नये रक्षो मे स्वाहा ॥ अग्नये रक्षो मे स्वाहा ॥ य
 भिरायुष्मान्ते नत्वा युषायुष्मंतं करोमि ॥ सोम आयुष्मान्ते नत्वा युषायुष्मंतं करोमि ॥ अग्निरायुष्मान्ते नत्वा युषायुष्मंतं करोमि ॥ य
 दक्षिणा भिरायुष्मान्ते नत्वा युषायुष्मंतं करोमि ॥ ब्रह्मा युष्मत्तदब्रह्मैरायुष्मत्ते नत्वा युषायुष्मंतं करोमि ॥ यज्ञ आयुष्मान्ते न
 मृतेनायुष्मंतं करोमि ॥ ४ ॥ यावामिन्द्रावरुणा यतुर्व्यात नूतये मम हंसो मुंचतं ॥ देवा आयुष्मंतं
 नूतये मम हंसो मुंचतं ॥ यावामिन्द्रावरुणा यतुर्व्यात नूतये मम हंसो मुंचतं ॥ देवा आयुष्मंतं
 चतं ॥ योवामिन्द्रावरुणा वमौ स्यामस्तं वामेतेनावयजे ॥ योवामिन्द्रावरुणा तेजस्यात नूतये मम हंसो मुंचतं ॥ योवामिन्द्रा
 वरुणा चतुष्पात्सु पशुषु स्यामस्तं वामेतेनावयजे ॥ योवामिन्द्रावरुणा द्विपात्सु पशुषु स्यामस्तं वामेतेनावयजे ॥ योवामिन्द्रा
 मेतेनावयजे ॥ योवामिन्द्रावरुणा त्रिपात्सु पशुषु स्यामस्तं वामेतेनावयजे ॥ योवामिन्द्रावरुणा चतुष्पात्सु पशुषु स्यामस्तं वामेतेनावयजे ॥ योवामिन्द्रा
 रुणा वनस्पतिषु स्यामस्तं वामेतेनावयजे ॥ अग्नेयशस्विन्यशसि मर्पये द्रवती मर्पचिती मिहावह ॥ अयं मर्धा परमेष्ठी सुवर्चाः समा

नाना॒मु॒त्त॒म॒श्लो॒को॒अ॒स्तु ॥ भ॒द्रं॒प॒द्मं॒त॒त॒प॒से॒दु॒र॒ग्रे॒त॒पो॒दी॒क्षा॒मृ॒ष॒यः॒सु॒व॒र्चि॒दः ॥ त॒तः॒क्ष॒त्रं॒ब॒ल॒मो॒ज॒श्च॒जा॒तं॒त॒द॒स्मै॒दे॒वा॒अ॒भि॒स॒न॒मं॒तु ॥
 धा॒ता॒वि॒धा॒ता॒प॒र॒मो॒त॒सं॒ह॒कृ॒प्र॒जा॒प॒तिः॒प॒र॒मे॒ष्ठी॒वि॒रा॒जा ॥ स्तो॒मा॒न॒छं॒दा॒सि॒नि॒वि॒दो॒म॒आ॒हु॒रे॒त॒स्मै॒रा॒ष्ट्र॒म॒भि॒स॒न्न॒मा॒म ॥ अ॒भ्या॒व॒
 त॒ध्व॒मु॒प॒मे॒त॒सा॒क॒म॒य॒श॒ा॒स्ता॒धि॒प॒ति॒वो॒अ॒स्तु ॥ अ॒स्य॒वि॒ज्ञा॒न॒म॒नु॒स॒र॒भ॒ध्व॒मि॒मं॒प॒श्चा॒द॒नु॒र्जा॒वा॒थ॒स॒र्वे ॥ ५ ॥ ऋ॒ता॒पा॒ङ्क॒त॒धा॒मा
 नि॒र्ग॒ध॒र्व॒स्त॒स्यो॒र्ष॒ध॒यो॒प्सर॒स॒ऊ॒र्जो॒ना॒म॒स॒इ॒दं॒ब्र॒ह्म॒क्ष॒त्रं॒पा॒तु ता॒इ॒दं॒ब्र॒ह्म॒क्ष॒त्रं॒पा॒तु ता॒इ॒दं॒ब्र॒ह्म॒क्ष॒त्रं॒पा॒तु ता॒इ॒तो॒वि॒श्व॒सा॒मा॒सू॒यो
 गं॒ध॒र्व॒स्त॒स्य॒म॒री॒च॒यो॒प्सर॒स॒आ॒यु॒वः॒सु॒प॒न्नः॒सूर्य॑र॒श्मि॒श्च॒द्र॒मा॒गं॒ध॒र्व॒स्त॒स्य॒न॒क्ष॒त्रा॒ण्य॒प्सर॒सो॒वे॒कु॒र॒यो॒भ॒ज्युः॒सु॒प॒णो॒य॒ज्ञो॒गं॒ध॒र्व॒स्त॒स्य
 द॒क्षि॒गा॒अ॒प्सर॒सः॒स्त॒वाः॒प्र॒जा॒प॒ति॒वि॒श्व॒क॒र्म॒म॒नो॒गं॒ध॒र्व॒स्त॒स्य॒क्व॒सो॒मा॒न्य॒प्सर॒सो॒व॒ह्म॒य॒इ॒पि॒रो॒वि॒श्व॒व्य॒चा॒वा॒तो॒गं॒ध॒र्व॒स्त॒स्या॒पो॒प्सर
 सो॒म॒दा॒भु॒व॒न॒स्य॒प॒ते॒य॒स्य॒त॒उ॒परि॑ग॒हा॒इ॒ह॒च ॥ स॒नो॒रा॒स्वा॒ज्या॒नि॒रा॒थ॒स्यो॒प॒सु॒वी॒र्य॑सं॒व॒त्स॒री॒णा॑सु॒व॒स्ति ॥ प॒र॒मे॒ष्ठ॒य॒धि॒प॒ति॒र्म
 त्यु॒गं॒ध॒र्व॒स्त॒स्य॒वि॒श्व॒म॒प्सर॒सो॒भु॒वः॒सु॒क्षि॒तिः॒सु॒भू॒ति॒र्भ॒द्र॒कृ॒त्सु॒व॒र्वा॒न॒प॒र्जन्यो॑गं॒ध॒र्व॒स्त॒स्य॒वि॒द्यु॒तो॒प्सर॒सो॒रु॒चो॒दू॒रे॒ह॒ति॒र॒मृ॒ड्यो॒म॒त्यु
 गं॒ध॒र्व॒स्त॒स्य॒प्र॒जा॒अ॒प्सर॒सो॒भी॒रु॒व॒श्चा॒रुः॒कृ॒प॒ण॒का॒ङ्गी॒का॒मो॒गं॒ध॒र्व॒स्त॒स्या॒ध॒यो॒प्सर॒सः॒शो॒च॒यं॒ती॒ना॒म॒स॒इ॒दं॒ब्र॒ह्म॒क्ष॒त्रं॒पा॒तु ता॒इ॒दं॒ब्र॒ह्म
 क्ष॒त्रं॒पा॒तु॒त॒स्मै॒स्वा॒हा॒ता॒भ्यः॒स्वा॒हा॒स॒नो॒भु॒व॒न॒स्य॒प॒ते॒य॒स्य॒त॒उ॒परि॑ग॒हा॒इ॒ह॒च ॥ उ॒रु॒ब्र॒ह्म॒णे॒स्मै॒क्ष॒त्रा॒य॒म॒हि॒म॒य॒च्छ ॥ न॒मो॒अ॒स्तु॒स
 र्षे॒भ्यो॒ये॒के॒च॒पृ॒थि॒वी॒म॒नु ॥ ये॒अ॒न्तरि॑क्षे॒ये॒द्वि॒वि॒ते॒भ्यः॒स॒र्षे॒भ्यो॒न॒मः ॥ ये॒दो॒रो॒च॒ने॒द्वि॒वो॒ये॒वा॒सू॒र्य॑स्य॒र॒श्मि॒म॒नु ॥ ये॒षा॒म॒प्सु॒स॒दः॒कृ॒तं॒ते॒भ्यः॒
 स॒र्षे॒भ्यो॒न॒मः ॥ या॒इ॒प॒वो॒या॒तु॒धा॒ना॒ना॒ये॒वा॒व॒न॒स्प॒ती॒र॒नु ॥ अ॒यं॒पु॒रो॒ह॒रि॑केशः॒सू॒र्य॑र॒श्मि॒स्त

स्वरथगृत्सश्चरथौजाश्चसेनानिग्रामण्यौपुंजिकस्थलाचकृतस्थलाचाप्सरसौयातुधानोहृतीरक्षांसिप्रहेति स्तेभ्योनमस्तेनोमृ
 डयंतुतेयं द्विभ्योयश्चनोद्वेष्टितं वोजं भेदधामि ॥ अयं दक्षिणाविश्वकर्मतस्वरथस्वनश्चरथेचित्रश्चसेनानिग्रामण्यौमेनकाचसह
 जन्याचाप्सरसौदंक्षण्वः पुरावोहेतिः पौरुषेयोवृधः प्रहेतिस्तेभ्योनमस्तेनोमृडयंतुतेयं द्विभ्योयश्चनोद्वेष्टितं वोजं भेदधामि ॥
 भ्योनमस्तेनोमृडयंतुतेयं द्विभ्योयश्चसेनासमरथश्चसेनानिग्रामण्यौप्रम्लोचंतीचा नुम्लोचंतीचाप्सरसौसर्पाहेतिव्याघ्राः प्रहेतिस्ते
 श्वाचीचघृताचीचाप्सरसावापोहेतिवार्तः प्रहेतिस्तेभ्योनमस्तेनोमृडयंतुतेयं द्विभ्योयश्चनोद्वेष्टितं वोजं भेदधामि ॥
 ग्वसुस्तस्युताक्ष्यश्चारिष्टनेमिश्चसेनानिग्रामण्यावुर्वशीचपर्वीचित्तिश्चाप्सरसौविद्युच्छेतिरवस्फूर्जन्प्रहेति स्तेभ्योनमस्तेनोमृड
 यंतुतेयं द्विभ्योयश्चनोद्वेष्टितं वोजं भेदधामि ॥ आशुः शिशानोवृषभोनयुधमोर्धनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनां ॥ संक्रंदनोनिमिषएकवी
 रः शतश्रसेनाअजयत्साकमिंद्रः ॥ संक्रंदनेनानिमिषेणजिष्णुनायुत्कारेणदुश्चवनेनधृष्णुना ॥ तदिंद्रेणजयतत्सहध्वंयुधोनरइषु
 हस्तेनवृष्णा ॥ सइषुहस्तैः सनिषंगिभिर्वशीसंस्त्रष्टासयुधइंद्रोऽगणेन ॥ संस्त्रष्टजित्सोमपावाहुशर्धूध्वन्वाप्रतिहिताभिरस्ता ॥
 बृहस्पतेपरिदीयारथेनरक्षोहामित्राअपवार्धमानः ॥ प्रभंजन्त्सेनाः प्रमणोयुधाजयन्नस्माकमेध्यवितारथानां ॥ गोत्रभिर्दंगोवि
 दुं वज्रबाहुं जयंतु मज्जमप्रमृणंतु मोर्जसा ॥ इमं संजाता अनुवीरयध्वमिंद्रं सखायोनुसंभध्वं ॥ बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सह

स्वान्वाजीसहमानुग्रः ॥ अभिवीरोअभिसत्वासहोजैत्रमिद्रथमातिष्ठगोवित् ॥ अभिगोत्राणिसहसागाहमानोदायोवीरः
 शतमन्युरिद्रः ॥ दुश्चयवनःपृतनापाड्युध्योस्माकुसेनाअवतुप्रयुत्सु ॥ इद्रासानेताबृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञःपुरएतुसोमः ॥
 देवसेनानामभिमंजतीनांजयतीनांमरुतोयंत्वग्ने ॥ इद्रस्यवृष्णोवरुणस्यराज्ञादित्यानांमरुताशर्धुग्रं ॥ महामनसांभुवन
 च्यवानांघोषोदेवानांजयतामुदस्थात् ॥ अस्माकुमिद्रःसमृतेषुध्वजेष्वस्माकंयाइषवस्ताजयंतु ॥ अस्माकंवीराउत्तरेभवंत्वस्मानु
 देवाअवताहवेषु ॥ उद्धर्षयमघवन्नायुधान्युत्सत्वंनांमामकानांमहोसि ॥ उद्धृत्रहन्वाजिनांवाजिनान्युद्रथानांजयतामेतुघो
 र्पः ॥ उपप्रेतजयतानरःस्थिरावःसंतुबाहवः ॥ इद्रोवःशर्मयच्छत्वनाधृष्यायथासंध ॥ अवसृष्टापरापतशरव्येब्रह्मसशिता ॥
 गच्छामित्रान्प्रविशुमैषांकंचनोच्छिषः ॥ मर्मोणितेवर्मभिरछादयामिसोमस्त्वाराजामृतेनाभिवस्तां ॥ उरोर्वरीयोवरिवस्तेअ
 स्तुजयंतंत्वामनुमदंतुदेवाः ॥ यत्रबाणाःसंपततिकुमाराविशिखाइव ॥ इद्रोनस्तत्रवृत्रहाविश्वाहाशर्मयच्छतु ॥ शंचमेमयश्च
 मेप्रियंचमेनुकामश्चमेकामश्चमेसौमनसश्चमेभद्रंचमेश्रेयश्चमेवस्यश्चमेयशश्चमेभगश्चमेद्रविणंचमे यंताचमेधर्ताचमेक्षेमश्चमेघृ
 तिश्चमेविश्वंचमेमहश्चमेसंविच्चमेज्ञात्रंचमेसूश्चमेप्रसूश्चमेसीरंचमेलयश्चमक्रतंचमेमृतंचमेयक्षमंचमेनामयच्चमे जीवातुश्चमेदी
 र्घीयुत्वंचमेनमित्रंचमेभयंचमेसुगंचमेशयनंचमेसुषाचमेसुदिनंचमे ॥ ममानेवचोविह्वेष्वस्तुवयंत्वंधानास्तनुवपुषेम ॥ मह्य
 नमंतांप्रदिशश्चतस्त्रस्त्वयाध्यक्षेणपृतनाजयेम ॥ ममदेवाविह्वेसंतुसर्वइद्रावंतोमरुतोविष्णुरग्निः ॥ ममांतरिक्षमुरुगोपमस्तु

मह्यं वार्तः पवतां कामे अस्मिन् ॥ मयि देवाद्रविणमायजंतां मय्याशीरस्तु मयि देव हतिः ॥ दैव्या होतारावनिषंतपूर्वो रेषाः स्याम तु
 नुवांसुवीराः ॥ मह्यं यजंतु ममयानि हव्याकूतिः सत्यामनसो मे अस्तु ॥ एनोमानिगां कतमच्चनाहं विश्वे देवासो अधिवोचतामे ॥
 देवीः षडुर्वीरुणः कृणोत विश्वे देवास इहवीरयध्वं ॥ माहास्महि प्रजया मातनूभिर्मारधामद्विषते सोमराजन् ॥ अग्निर्मन्युं प्रति
 नुदन् पुरस्ताददब्धो गोपाः परिपाहिनस्त्वं ॥ प्रत्यंचोयंतु निगुतः पुनस्ते मैषां चित्तं प्रबुधाविनेशत् ॥ धाता धातुणां भुवनस्य यस्य
 स्मिन्हवै पुरुहूतः पुरुक्षु ॥ इमं यज्ञमश्विनो भावुहस्यति देवाः पांतु यजमानं न्यथात् ॥ उरुव्यर्चानो महिषः शर्मयस्सदु
 तान् ॥ वसवोरुद्रा आदित्या उरुपरिस्पृशं मोग्रं चेतारमधिराजमक्रन् ॥ अर्वाचमिंद्रमुतो हवामहे योगोजिह्वनजिदश्वजिह्वः ॥
 इमं नो यज्ञं विहवे जुष स्वास्य कुर्मो हरिवो मे दिनं त्वा ॥ अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसो यपांच जन्यं ब्रह्मवः समिधते ॥ विश्वस्यां विशिप्र
 विविशिवाः समीमहे सनो मुंचत्वः हंसः ॥ यस्येदं प्राणं निमिषद्य देजति यस्य जातं जनमानं च केवलं ॥ स्तौम्यग्निना धितो जोहवी
 मिसनो मुंचत्वः हंसः ॥ इन्द्रस्य मन्ये प्रथमस्य प्रचेतसो वृत्रस्तो मा उपमामपागुः ॥ यो द्वा शुषः सुकृतो हवमुपगंता सनो मुंचत्वः ह
 सः ॥ यः संप्राप्तं नयति संवशी युधेयः पुष्टानि सः सुजति त्रयाणि ॥ स्तौमींद्रना धितो जोहवी मिसनो मुंचत्वः हंसः ॥ मन्वे वा मित्राव
 रुणा तस्य वित्तं सत्यौजसा हः हणाय न देधे ॥ याराजानः स रथं याध उग्रातानो मुंचत मार्गसः ॥ यो वाः रथं कजुरदिमः सत्यधर्मा

मिथुश्चरतमुपयातिदूषयन् ॥ स्तौमिमित्रावरुणानाथितोजोहवीमितोनोमुंचतमार्गसः ॥ वायोःसंचितुर्विदधानिमन्महेयावात्स-
न्वाद्धिभूतोयौचुरक्षतः ॥ यौविश्वस्यपरिभूवंभवतुस्तोनोमुंचतमार्गसः ॥ उपश्रेष्ठानआशिपोदेवयोर्धर्मअस्थिरन् ॥ स्तौमिवा-
युस्संवितारनाथितोजोहवीमितोनोमुंचतमार्गसः ॥ रथीतमौरथीनामह्वृतयेथुभंगमिष्ठौसुयमेभिरश्वैः ॥ ययौवादेवौदेवे
ज्वानिशितमोजस्तोनोमुंचतमार्गसः ॥ यदयातंवहुतुस्सूर्यायास्त्रिचक्रेणस्सदमिच्छमानौ ॥ स्तौमिदेवावश्विनौनाथितोजो-
हवीमितोनोमुंचतमार्गसः ॥ मरुतामन्वेअधिनोब्रुवंतुप्रेमावाचंविश्वामवंतुविश्वे ॥ आश्रन्हुवेसुयमानूतयेतेनोमुंचत्वेनसः ॥
तिग्ममायुधंवीडितस्सहस्वद्विव्यश्रार्धःपृतनासुजिष्णु ॥ स्तौमिदेवान्मरुतोनोनाथितोजोहवीमितोनोमुंचत्वेनसः ॥ देवानामन्वे
अधिनोब्रुवंतुप्रेमावाचंविश्वामवंतुविश्वे ॥ आश्रन्हुवेसुयमानूतयेतेनोमुंचत्वेनसः ॥ यद्विदंमाभिशोचतिपौरुषेयेणदैव्येन ॥
स्तौमिविश्वोन्देवान्नाथितोजोहवीमितोनोमुंचत्वेनसः ॥ अनुनोद्यानुमतिर्यज्ञंदेवेषुमन्यतां ॥ अग्निश्चहव्यवाह्नोभवतांदाद्युपे-
मयः ॥ अन्विदनुमेतत्वंमन्यासैशंचनःकृधि ॥ क्रत्वेदक्षायनोहिनुग्रणआयूःपितारिपः ॥ वैश्वानरोनकुत्याप्रयातुपरावतः ॥
अग्निरुक्थेनवाहसा ॥ पृष्टोद्विपृष्टोअग्निःपृथिव्यांपृष्टोविश्वओषधीराविवेश ॥ वैश्वानरःसहसापृष्टोअग्निःसनोदिवासरिपः
पातुनक्त ॥ येअप्रथेताममिमेभिरोजोभिर्येप्रतिष्ठेअभवतांवसूनां ॥ स्तौमिद्यावापृथिवीनाथितोजोहवीमितोनोमुंचतमहंसः ॥
उर्वारोदसीवरिवःकृणोतंक्षेत्रस्यपल्लीअधिनोब्रूयातं ॥ स्तौमिद्यावापृथिवीनाथितोजोहवीमितोनोमुंचतमहंसः ॥ यत्तैवयंपुरुरुप-

— ३० —

1134211

त्रायविष्ठाविद्धाऽसश्चकृमाकच्चनार्गः ॥ कृधीस्वस्माऽअदितेरनागाव्येनाऽसिशिश्रथोविष्वगन्ने ॥ यथाहुतद्वसवोगौर्यचित्पदि
षिताममुंचतायजत्राः ॥ एवात्वमस्मत्समुंचाव्यऽहःप्रातार्यमेप्रतुरान्नआयुः ॥ समीचीनामासिप्राचीदिकस्यास्तेग्निरधिपतिर
क्षिणादिकस्यास्तइंद्रोधिपतिःपृदाकूरक्षितायश्चाधिपतिर्यश्चगोसाताभ्यांनमस्तौनोमृडयतांतेयंहिष्मोयश्चनोद्वेष्टितंवांजंभेदधामि ॥ ओजस्विनीनामासिद
धामि ॥ प्राचीनामासिमृतीचीदिकस्यास्तेसोमोधिपतिःस्वजोरक्षितायश्चाधिपतिर्यश्चगोसाताभ्यांनमस्तौनोमृडयतांतेयंहिष्मोयश्चनोद्वेष्टितंवांजंभेद
ष्मोयश्चनोद्वेष्टितंवांजंभेदधामि ॥ अवस्थावानामास्युदीचीदिकस्यास्तेवरुणोधिपतिस्तिरश्चराजीरक्षितायश्चाधिपतिर्यश्चगो
साताभ्यांनमस्तौनोमृडयतांतेयंहिष्मोयश्चनोद्वेष्टितंवांजंभेदधामि ॥ अधिपत्नीनामासिबृहतीदिकस्यास्तेबृहस्पतिरधिपतिः
श्चित्रोरक्षितायश्चाधिपतिर्यश्चगोसाताभ्यांनमस्तौनोमृडयतांतेयंहिष्मोयश्चनोद्वेष्टितंवांजंभेदधामि ॥ वृश्चिनीनामासीयंदि
कस्यास्तेयमोधिपतिःकल्मार्षग्रीवोरक्षितायश्चाधिपतिर्यश्चगोसाताभ्यांनमस्तौनोमृडयतांतेयंहिष्मोयश्चनोद्वेष्टितंवांजंभेदधामि ॥
मि ॥ हुतयोनामस्थतेषां वः पुरोगृहाअग्निर्वइषवः सलिलोवातनामंतेभ्योवोनमस्तेनोमृडयततेयंहिष्मोयश्चनोद्वेष्टितंवांजंभेदधा
धामि ॥ निलिपानामस्थतेषां वोदक्षिणागृहाः पितरोवइषवः सर्गरोवातनामंतेभ्योवोनमस्तेनोमृडयततेयंहिष्मोयश्चनोद्वेष्टितंवांजंभेदधा
वो जंभेदधामि ॥ वज्रिणोनामस्थतेषां वः पश्चाद्गृहाः स्वमोवइषवो गृहरोवातनामंतेभ्योवोनमस्तेनोमृडयततेयंहिष्मोयश्चनोद्वेष्टितं

उदकशां-
॥२८३॥

1134211

त ॥ इन्द्रइन्द्रयोःसर्चा ॥ संमिश्रआवचोयुजा ॥ इन्द्रोवृज्रीहिरण्यः ॥ इन्द्रोदीर्घायचक्षसे ॥ आसूर्यश्रोहयद्वि ॥ विगो
भिराद्रिमैरयत् ॥ इन्द्रवाजैषुनोअव ॥ सहस्रप्रधनेषुच ॥ उग्रएग्राभिरूतिभिः ॥ तमिन्द्रवाजयामसि ॥ महेवृत्रायहंतवे ॥ स
वृषावृषभोभुवत् ॥ इन्द्रःसदामनेकृतः ॥ ओजिष्ठःसबलैहितः ॥ द्युम्नीश्लोकीससौम्यः ॥ गिरावज्जोनसंभृतः ॥ स
पच्युतः ॥ ववधुरुग्रोअस्तृतः ॥ चक्षुषोहेतेमनसोहेते ॥ वाचोहेतेब्रह्मणोहेते ॥ योवाचाब्रह्मणाघायुरभिदासति ॥ तमग्नेमेन्यामेनि
कृणु ॥ योमाचक्षुषायोमनसा ॥ योवाचाब्रह्मणाघायुरभिदासति ॥ तमग्नेमेन्यामेनि ॥ तमग्नेमेन्यामेनि
सायच्चवाचा ॥ यज्ञैर्जुहोतिचजुषाहविभिः ॥ तन्मृत्युर्निर्ऋत्यासंविदानः ॥ पुरादिष्टादाहुतीरस्यहतु ॥ यातुधानानिर्ऋति
रादुरक्षः ॥ तेअस्यमृत्वनृतेनसत्यं ॥ इन्द्रेपिताआज्यमस्यमथ्नतु ॥ मातत्समृद्धियदुसौकरोति ॥ हन्मिमेतंहंकृतहविः ॥ योभे
घोरमर्चीकृतः ॥ अपांचौतउभौबाह ॥ अर्पनह्याम्यास्यं ॥ मातत्समृद्धियदुसौकरोति ॥ हन्मिमेतंहंकृतहविः ॥ योभे
वैतेवधिषंकृतं ॥ पुरामुर्ज्यवषट्कारात् ॥ अर्पनह्याम्यास्यं ॥ अर्पनह्यामिमेबाह ॥ अर्पनह्याम्यास्यं ॥ अग्नेदेवस्यब्रह्मणा ॥ स
अग्ने ॥ आर्तव्यस्याभिदासतः ॥ वषट्कारेणवज्रेण ॥ कृत्याहन्मिकृतामहं ॥ योमानक्तुंदिवासायं ॥ अतिदूरेसतो
ति ॥ अद्यातमिन्द्रवज्रेण ॥ आर्तव्यपादयामसि ॥ प्राणोरक्षतिविश्वमेजत् ॥ इयोभूत्वाब्रह्मधाबुहनि ॥ प्रातश्चाहोनिपीय
योदेवोदेवेषुविभूरंतः ॥ आर्तव्यपादयामसि ॥ प्राणोरक्षतिविश्वमेजत् ॥ इयोभूत्वाब्रह्मधाबुहनि ॥ प्रातश्चाहोनिपीय
ति ॥ अद्यातमिन्द्रवज्रेण ॥ आर्तव्यपादयामसि ॥ प्राणोरक्षतिविश्वमेजत् ॥ इयोभूत्वाब्रह्मधाबुहनि ॥ प्रातश्चाहोनिपीय

अ॒त्रि॒से॒दं ॥ भू॒तं भ॒व्यं च॒गु॒प्यते ॥ त॒द्वि॒दे॒वे च॒त्रि॒यं ॥ आ॒न॒ए॒तु॒पु॒र॒श्च॒रं ॥ स॒ह॒दे॒वैरि॒म॒ह॒त् ॥ म॒न॒श्रे॒य॒सि॒श्रे॒य॒सि ॥ क॒र्म॒न्य॒ज्ञ॒प॒तिं
 द॒ध॒त् ॥ जु॒प॒ता॒मे॒वा॒ग्नि॒द॒ह॒विः ॥ वि॒रा॒द्दे॒वा॒पु॒रो॒हि॒ता ॥ ह॒व्य॒वा॒ड॒न॒पा॒यि॒नी ॥ य॒था॒रू॒पा॒णि॒व॒हृ॒धा॒य॒द॒ति ॥ पे॒गा॒श॒सि
 दे॒वाः पर॒मे॒ज॒नि॒त्रे ॥ सा॒नो॒ वि॒रा॒ड॒न॒प॒स्फु॒र॒न्ती ॥ वा॒ग्दे॒वी जु॒प॒ता॒मि॒द॒ह॒विः ॥ च॒क्षु॒र्दे॒वा॒नां॒ज्योति॑र॒मृ॒ते॒न्य॒कं ॥ अ॒स्य॒वि॒ज्ञा॒ना
 य॒व॒हृ॒धा॒नि॒धी॒य॒ते ॥ त॒स्य॒सु॒न्न॒मं॒शी॒म॒हि ॥ मा॒नो॒हा॒सी॒द्वि॒च॒क्ष॒णं ॥ आ॒यु॒रि॒नः प्र॒ती॒र्य॒तां ॥ अ॒न॒घा॒श्च॒क्षु॒पा॒त्र॒यं ॥ जी॒वा॒ज्यो॒ति
 र॒शी॒म॒हि ॥ सु॒व॒ज्यो॒ति॑रु॒ता॒मृ॒तं ॥ श्रो॒त्रे॒ण॒भ॒द्र॒मृ॒त॒शृ॒ण्वं॒ति॒स॒त्यं ॥ श्रो॒त्रे॒ण॒वा॒च॒व॒हृ॒धो॒द्य॒मा॒नां ॥ श्रो॒त्रे॒ण॒मो॒द॒श्च॒म॒ह॒श्च॒श्रू॒य॒ते ॥
 श्रो॒त्रे॒ण॒स॒र्वा॒दि॒शु॒आ॒शृ॒णो॒मि ॥ ये॒न॒प्रा॒च्या॒उ॒त॒द॒क्षि॒णा ॥ प्र॒ती॒च्यै॒दि॒शः शृ॒ण्वं॒त्यु॒त्त॒रा॒त् ॥ त॒दि॒च्छे॒त्र॒व॒हृ॒धो॒द्य॒मा॒नं ॥ अ॒रा॒नं
 ने॒मिः प॒रि॒स॒र्व॒व॒भू॒व ॥ सि॒ह॒व्या॒घ्र॒उ॒त॒या॒पृ॒दा॒कौ ॥ त्वि॒षि॒र॒ग्नौ॒ब्रा॒ह्म॒णे॒सू॒र्य॒या ॥ इ॒न्द्र॒या॒दे॒वी॒सु॒भ॒गा॒ज॒जाने ॥ सा॒न॒आ॒ग॒न्व॒च॒
 सा॒सं॒वि॒द्वा॒ना ॥ या॒रा॒ज॒न्धे॒दु॒दु॒भा॒वा॒य॒ता॒यां ॥ अ॒श्व॒स्य॒क्र॒द्ये॒पु॒रु॒प॒स्य॒मा॒यौ ॥ इ॒न्द्र॒या॒दे॒वी॒सु॒भ॒गा॒ज॒जाने ॥ सा॒न॒आ॒ग॒न्व॒च॒सा॒सं॒वि॒द्वा॒ना
 ॥ या॒हृ॒स्ति॒नि॒ह्नी॒पि॒नि॒या॒हि॒र॒ण्ये ॥ त्वि॒षि॒र॒श्वे॒पु॒रु॒पे॒पु॒गो॒षु ॥ इ॒न्द्र॒या॒दे॒वी॒सु॒भ॒गा॒ज॒जाने ॥ सा॒न॒आ॒ग॒न्व॒च॒सा॒सं॒वि॒द्वा॒ना
 ॥ रा॒थे॒अ॒क्षे॒पु॒वृ॒ष॒भ॒स्य॒वा॒जे ॥ वा॒ते॒प॒र्ज॒न्ये॒व॒रु॒ण॒स्य॒शु॒भे ॥ इ॒न्द्र॒या॒दे॒वी॒सु॒भ॒गा॒ज॒जाने ॥ सा॒न॒आ॒ग॒न्व॒च॒सा॒सं॒वि॒द्वा॒ना ॥ रा॒
 ड॒सि॒वि॒रा॒ड॒सि ॥ स॒म्रा॒ड॒सि॒स्व॒रा॒ड॒सि ॥ इ॒न्द्रा॒य॒त्वा॒ते॒ज॒स्व॒ते॒ते॒ज॒स्व॒त॒ओ॒ज॒स्व॒त॒ओ॒ज॒स्व॒त॒श्री॒णामि ॥
 इ॒न्द्रा॒य॒त्वा॒प॒र्य॒स्व॒ते॒प॒र्य॒स्व॒त॒श्री॒णामि ॥ इ॒न्द्रा॒य॒त्वा॒यु॒ष्म॒त॒आ॒यु॒ष्म॒त॒श्री॒णामि ॥ ते॒जो॑सि ॥ त॒त्ते॒प्र॒य॒च्छा॒मि ॥ ते॒ज॒स्व॒द॒स्तु॒मे

मुखं ॥ तेजस्वच्छिरोऽस्तुमे ॥ तेजस्वान्विश्वतःप्रत्यङ् ॥ तेजसासंपिपृग्धिमा ॥ ओजोसि ॥ तत्तेप्रयच्छामि ॥ ओजस्व
 दस्तुमेमुखं ॥ ओजस्वच्छिरोऽस्तुमे ॥ ओजस्वान्विश्वतःप्रत्यङ् ॥ ओजसासंपिपृग्धिमा ॥ पयोसि ॥ तत्तेप्रयच्छामि ॥ प
 यस्वदस्तुमेमुखं ॥ आयुष्मच्छिरोऽस्तुमे ॥ आयुष्मान्विश्वतःप्रत्यङ् ॥ पर्यसासंपिपृग्धिमा ॥ आयुरसि ॥ तत्तेप्रयच्छामि ॥ प
 धि ॥ प्रियश्रेतौवरुणसोमराजन् ॥ मातेवास्मादितेशर्मयच्छ ॥ विश्वेदेवाजरदष्टिथ्यासत् ॥ आयुरसि विश्वायुरसि ॥
 सर्वायुरसिसर्वमायुरसि ॥ यतोवातोमनोजवाः ॥ यतःक्षरतिसिंधवः ॥ तासां त्वा सर्वासां सारुचा ॥ अभिषिचामिवर्चसा ॥
 समुद्रइवासिगुह्यना ॥ सोमइवास्यदाभ्यः ॥ अग्निरिव विश्वतःप्रत्यङ् ॥ सूर्यइव ज्योतिषा विभूः ॥ अपां यो द्रवणे रसः ॥ तम
 हमस्मा आमुष्यायणार्थ ॥ तेजसे ब्रह्मवर्चसाय गृह्णामि ॥ अपां यजुर्मोरसः ॥ तमहमस्मा आमुष्यायणार्थ ॥ तम
 ह्णामि ॥ अपां योर्मध्यतोरसः ॥ तमहमस्मा आमुष्यायणार्थ ॥ पुष्ट्यै प्रजननाय गृह्णामि ॥ ओजसे वीर्याय गृ
 णामि ॥ अपां योर्मध्यतोरसः ॥ तमहमस्मा आमुष्यायणार्थ ॥ अहमस्मि प्रथमजाऋतस्य ॥ पूर्वमेतरेषु ॥ यत्तौ हां साते अहमुत्तरेषु ॥ व्यातं मस्य पशवः सुजंभं ॥ पश्यं
 स इदेव मार्वाः ॥ अहमन्नमन्नमदंतमग्नि ॥ पूर्वमेतरेषु ॥ यत्तौ हां साते अहमुत्तरेषु ॥ व्यातं मस्य पशवः सुजंभं ॥ पश्यं
 ति धीराः प्रचरंति पाकाः ॥ जहाम्यन्यं न जहाम्यन्यं ॥ अहमन्नं वशुमिच्छामि ॥ समानमर्थं पर्येमि भुजत् ॥ कोमामन्नं मनुष्यो

दयेत ॥ पराकेअन्ननिहितंलोकएतत् ॥ विश्वेद्वैःपितृभिर्गुप्तमन्न ॥ यदुच्यतेलुप्यतेयत्परोच्यते ॥ शततमीसातनूमेवभूव ॥
 महांतौचरुसकृद्गुग्धेनपप्रौ ॥ दिवचपृथ्निपृथिर्वाचसाकं ॥ तत्संपिचंतोनमिनंतिवेधसः ॥ नैतद्भूयोभवतिनोकर्त्तीयः ॥ अन्न
 प्राणमन्नमपानमाहुः ॥ अन्नमृत्युंतमुजीचातुमाहुः ॥ अन्नब्रह्माणोजरसंवदंति ॥ अन्नमाहुःप्रजननंप्रजानां ॥ मोघमन्नविंद
 तेअप्रचेताः ॥ सत्यंब्रवीमिवधइत्सतस्य ॥ नार्यमणंपुष्यतिनोसखायं ॥ केवलघोभवतिकेवलदादी ॥ अहमेधस्तनयन्वपैन्न
 स्मि ॥ मामेदंत्यहमइयन्यान् ॥ अहंसदुमृतोभवामि ॥ मदोदित्याअधिसर्वतपंति ॥ देवीवाचमजनयंतदेवाः ॥ तांवि
 श्वरूपाःपशवोवदंति ॥ सानोमंद्रेपमूर्जेदुहाना ॥ धेनुर्वागसानुपसुष्टुतनु ॥ यद्वागवदत्यविचेतनानि ॥ राष्ट्रीद्विद्यानानिपुसा
 दंसंद्रा ॥ चतस्रऊर्जेदुहुहपयांसि ॥ कस्विदस्याःपरमंजगाम ॥ अनंतामंतादधिनिर्मितामर्हा ॥ यस्याद्विवाअदधुर्भोजना
 नि ॥ एकाक्षरांष्ट्रिपदांष्ट्रघट्टपदांच ॥ वाचदेवाउपजीवंतिविश्वे ॥ वाचंगंधर्वाःपशवोमनुष्याः ॥ वा
 चीमाविश्वाभुवनान्यर्पिता ॥ सानोहर्वजुपतामिंद्रपत्नी ॥ वागक्षरप्रथमजानृत्तस्य ॥ वेदानांमातामृतस्यनाभिः ॥ सानोजुषा
 णोर्पयज्ञमागात् ॥ अवतीदेवीसुहर्वामेअस्तु ॥ यामृषयोमंत्रकृतोमनीपिणः ॥ अन्वैच्छेदेवास्तपसाश्रमेण ॥ तांदेवीवाचंश्रुवि
 षायजामहे ॥ सानोदधातुसुकुतस्यलोके ॥ चत्वारिवाक्परिमितापदानि ॥ तानि विदुर्ब्राह्मणाथेमनीपिणः ॥ गुह्यात्रीणिनिहि
 तानेगयंति ॥ तुरीयवाचोमनुष्यावदंति ॥ श्रद्धयाग्निःसमिध्यते ॥ श्रद्धयाविंदतेहविः ॥ श्रद्धांभर्गस्यमूर्धनि ॥ वचसावैदयाम

सि ॥ प्रिय॒श्श्रद्धे॒दद॑तः ॥ प्रि॒श्श्रद्धे॒दि॒दा॑सतः ॥ प्रियं॒भोजे॑षु॒यज्व॑सु ॥ इदं॒मउ॑दितं॒कृधि ॥ यथा॑दे॒वाअ॑सुरे॒षु ॥ श्रद्धा॑मु॒ग्रेषु॑च
 क्रि॒रे ॥ ए॒वंभोजे॑षु॒यज्व॑सु ॥ अ॒स्माक॑मु॒दितं॒कृधि ॥ श्रद्धां॑दे॒वाय॑ज॒मानाः ॥ वा॒युगो॑पा॒उपा॑सते ॥ श्रद्धा॑हृ॒दय्य॑याकू॒त्या ॥ श्रद्ध
 स्ते ॥ श्रद्धा॑वि॒श्वमि॒दंज॑गत् ॥ श्रद्धां॑मु॒ध्यादि॑नं॒परि॑ ॥ श्रद्धा॑सू॒र्यस्य॑नि॒म्नुचि॑ ॥ श्रद्धे॒श्रद्धा॑पये॒हमा ॥ श्रद्धा॑दे॒वानधि॑व
 न॒आवः ॥ सबु॑धिया॒उप॑मा॒अस्य॑वि॒ष्ठाः ॥ स॒तश्च॒योनि॑म॒सतश्च॒विवः ॥ पि॒तावि॒राजामृ॑षभो॒रयी॑णां ॥ अ॒न्तरि॑क्षंवि॒श्वरूप॑आ॒वि
 ब्रह्म॑ब्राह्म॒णआ॒त्मना॑ ॥ अ॒न्तरि॑स्मि॒न्निमे॒लोकाः ॥ अ॒न्तर्वि॒श्वमि॒दंज॑गत् ॥ ब्रह्म॑वि॒श्वमि॒दंज॑गत् ॥ ब्रह्म॑णःक्ष॒त्रंनि॑र्मितं ॥
 वा॒स्त्वयि॑स्त्रि॒ंशत् ॥ ब्रह्म॑न्नि॒न्द्रप्र॑जाप॒ती ॥ ब्रह्म॑न्हुवि॒श्वोभू॑तानि ॥ ब्रह्मै॒वभू॑तानां॒ज्येष्ठं ॥ तेन॑को॒र्हति॑स्पा॒र्धितुं ॥ ब्रह्म॑न्द्
 य॒ज्ञंन॑यतुप्र॒जान॑न् ॥ दृ॒तं पि॒न्वन्न॒जरं॑सु॒वीरं ॥ ब्रह्म॑स॒मिद्ध॑व॒त्याहु॑तीनां ॥ आ॒गावो॑अ॒गम॑न्नुत॒भद्र॑म॒क्रन् ॥ सी॒दंतु॑गो॒ष्ठे र॒ण्य
 न्त्व॒स्मे ॥ प्र॒जाव॑तीःपु॒रुरूपा॑इ॒हस्युः ॥ इ॒न्द्राय॑पूर्वीरु॒षसो॑दु॒हानाः ॥ इ॒न्द्रोय॑ज्व॒नेपृ॑णते॒चशि॑क्षति ॥ उ॒पेद॑दाति॒नस्व॑मु॒पाय॑ति ॥
 भूयो॑भूयो॒रयि॑मि॒दस्य॑व॒र्धय॑न् ॥ अ॒भिन्ने॑खि॒ल्लेनि॑द॒धाति॑दे॒व्युं ॥ न॒तान॑शंति॒नद॑भाति॒तस्करः ॥ नैना॑अ॒मित्रो॑व्यथि॒राद॑ध॒र्ष
 ति ॥ दे॒वाश्च॒याभि॑र्ध॒जते॑द॒दाति॑च ॥ ज्यो॒गिता॑भिःस॒चते॑गो॒पतिः॑स॒ह ॥ न॒ताअ॒र्वारि॑णुक॒काटो॑अ॒श्रुते ॥ न॒सस्त्व॑त॒त्रमु॑र्पयं

उदकशां
॥२८३॥

॥३५४॥

तिताअभि ॥ उरुगायमभयंतस्यताअनु ॥ गावोमर्त्यस्यविचरंतियज्वनः ॥ गावोभगोगावुद्रोमेअच्छात् ॥ गावःसोमस्यप्र
 थमस्यभक्षः ॥ इमायागावःसजनासुइंद्रः ॥ इच्छामीक्षुदामनेसाचिदिंद्र ॥ ययंगवोमेदयथाकशंचित् ॥ अश्लीलंचित्कृणु
 धासुप्रतीकं ॥ भद्रंगृहकृणुथभद्रवाचः ॥ बृहद्वोवयउच्यतेसभासु ॥ प्रजावतीःसूयवसश्चरिशतीः ॥ शुद्धाअपःसुप्रपाणेपिबं
 तीः ॥ मावस्तेनईशतमाघशश्चः ॥ परिवोहृतीरुद्रस्यबृज्यात् ॥ उपेदमुपपर्चनं ॥ आसुगोपूपपृच्यतां ॥ उपर्पभस्यरेतसि ॥
 उपेद्रतववीर्यं ॥ तासूर्याचंद्रमसाविश्वभृत्तमामहत् ॥ तेजोवसुमद्राजतोदिवि ॥ सामात्मानाचरतःसामचारिणां ॥ ययौव्र
 तंनममेजातुदेवयोः ॥ उभावंतौपरियातअस्यौ ॥ दिवोनरुद्रमीशस्तनूतोव्यर्णवे ॥ उभामुवंतीभुवनाकविक्रतू ॥ सूर्यानचं
 द्राचरतोहृतामती ॥ पतीद्युमहिश्चविदोउभादिवः ॥ सूर्याउभाचंद्रमसाविचक्षणा ॥ विश्ववारावरिवोभावरेण्या ॥ तानो
 वतंमतिमंतामहिज्रता ॥ विश्ववपरीप्रतरणातरंता ॥ सुवर्विदाहृशयेभूरिरदमी ॥ सूर्याहिवंद्रावसुत्येषदर्शता ॥ मनस्विनोभा
 नुचरतोनूसंदिवं ॥ अस्यश्रवोनृद्यःसप्तबिभ्रति ॥ द्यावाक्षामापृथिवीदर्शतंवपुः ॥ अस्मेसूर्याचंद्रमसाभिचक्षे ॥ श्रद्धेकस्मि
 द्रचरतोविचर्तुरं ॥ पूर्वापरंचरतोसाययैतौ ॥ शिशूक्रीडतौपरियातोअध्वरं ॥ विश्वान्यन्धोभुवनाभिचष्टे ॥ ऋतूनन्योविद
 धंज्जायतेपुनः ॥ हिरण्यवर्णाःशुचयःपावकायासुजातःकश्यपोयास्विद्रः ॥ अग्नियागर्भेदधिरविरुपास्तानआपःशशस्योना
 भवंतु ॥ यासांराजावरुणोयातिमध्येसत्यानतेअवपश्यंजनानां ॥ मधुश्चतुःशुचयोयाःपावकास्तानआपःशशस्योनाभवंतु ॥

यासीद्देवादिविकृण्वंतिभक्ष्याअंतरिक्षेबहुधाभवति ॥ याःपृथिवीपयसोदंतिशुक्रास्तानापःशस्योनाभवंतु ॥ शिवेनमा
चक्षुषापश्यतापःशिवयातनुवोपस्पृशतत्वचमे ॥ सर्वोअमीररप्सवदोहुवेवोमयिवर्चोबलमोजोनिधत्त ॥ आपोभद्राघृतमि
दार्पआसुरग्रीषोमौबिभ्रत्यापइत्ताः ॥ तीव्रोसोमधुपृचामरंगमआर्माप्राणेनसहवर्चसागन् ॥ आदित्यश्याम्युतवारुणोभ्या
माधोषोगच्छतिवाङ्मासाम् ॥ मन्थेभेजानोअमृतस्यतर्हिहिरण्यवर्णाअर्तुपयदावः ॥ नासदासीन्नोसदासीत्तदानीं ॥ ना
सीद्रजोनोव्योमापरोयत् ॥ किमार्चरीवःकुहकस्यशर्मन् ॥ अंभःकिमासीद्गहनंगभीरं ॥ नमत्युरमृतंतर्हि ॥ रात्रियाअह
आसीत्प्रकेतः ॥ आनीदवातस्वधयातदेकं ॥ तस्माद्भ्रान्यनपरःकिंचनासं ॥ तमआसीत्तर्मसागढमग्नेप्रकेतं ॥ सलिलस्सर्व
माइदं ॥ तुच्छेनाभ्वपिहितंयदासीत् ॥ तमसस्तन्महिनाजायतैकं ॥ कामस्तदग्नेसमवर्तताधि ॥ मनसोरेतःप्रथमंयदासी
त् ॥ सतोबधुमसतिनिरिविदन् ॥ हृदिमृतीष्याकवयोमनीषा ॥ तिरश्चीनोविततोरश्मिरेषां ॥ अधस्विदासीद्दुपरिस्विदा
सीत् ॥ रेतोधाआसन्महिमानंआसन् ॥ स्वधाअवस्तात्यतिःपरस्तात् ॥ कोअद्भवेदुहप्रवोचत् ॥ कुतआजाताकुत
इयंविसृष्टिः ॥ अर्वाग्देवाअस्यविसर्जनाय ॥ अथाकोवेदयतआबभूव ॥ इयंविसृष्टिर्यतआबभूव ॥ यदिवादुधेयदिवान ॥
योअस्यार्धक्षःपरमेव्योमन् ॥ सोअंगवेदयादिवानवेद ॥ किस्विद्वनंकउसवृक्षआसीत् ॥ यतोद्यावापृथिवीनिष्टतुक्षुः ॥ म
नीषिणोमनसापृच्छतेदुतत् ॥ यदुध्यतिष्ठुर्वनानिधारयन् ॥ यतोद्यावापृथिवीनिष्टतुक्षुः ॥

[illegible]

पाच॒हृता॒च॒त्र॒ना॒ ॥ प्र॒जा॒प॒ति॒ह्वा॒व॒पा॒न॒ ॥
रू॒पा॒णि॒प्र॒ति॒मा॒द॒मा॒ना ॥ आ॒ध्या॒य॒मा॒नो॒ब॒हु॒धा॒ज॒ने॒षु ॥
क्ष॒त्रं॒प्रि॒य॒म॒स्य॒धा॒म॒ ॥

निप्रयतमंप्रियाणां ॥ तस्मैतेसोमहविषाविधेम ॥ शनैरधिद्विपदेशंचतुष्पदे ॥ आर्द्रयोरुद्रःप्रथमानएति ॥ श्रेष्ठोदेवानांपाति
 रघ्नियानां ॥ नक्षत्रमस्यहविषाविधेम ॥ मानःप्रजाःशरीरिपुन्सोतवीरान् ॥ हेतीरुद्रस्यपरिणोवृणक्तु ॥ आर्द्रानिक्षत्रंजुषतां
 हविर्नः ॥ ३ ॥ प्रमंचमानौदुरितानिविश्वां ॥ अपाघशःसंनुदतामरातिं ॥ पुनर्नोदेव्यादितिस्पृणोतु ॥ पुनर्वसून्ःपुनरेतां
 वसूहविषावर्धयती ॥ प्रियदेवानामप्येतुपाथः ॥ ४ ॥ बृहस्पतिःप्रथमंजार्यमानः ॥ विश्वस्यभर्त्रोजगतःप्रतिष्ठा ॥ पुन
 नांपुर्तनासुजिष्णुः ॥ दिशोनसर्वाअभयनोअस्तु ॥ तिष्यःपुरस्तादुतमध्यतोर्नः ॥ तिष्यन्नक्षत्रमभिसंबभूव ॥ श्रेष्ठोदेवा
 षोअभयंकृणुतां ॥ सुवीर्यस्यपतयःस्याम ॥ इदंसर्पेभ्योहविरस्तुजुष्टं ॥ आश्रेषायेषामनुयंतिचेतः ॥ ५ ॥ येअंतरिक्षंपृथि
 वीक्षियंति ॥ तेनःसर्पासोहवमार्गमिष्टाः ॥ येरोचनेसूर्यस्यापिसर्पाः ॥ येदिर्वदेवीमनुसंचरंति ॥ येषामाश्रेषाअनुयंतिका
 मं ॥ तेभ्यःसर्पेभ्योमधुमज्जुहोमि ॥ उपहृताःपितरोयेमघासु ॥ मनोजवसःसुकृतःसुकृत्याः ॥ तेनोन्नक्षत्रेहवमार्गमिष्टाः ॥
 स्वधाभिर्यज्ञंप्रयंतंजुषतां ॥ ६ ॥ येअग्निदग्धायेनग्निदग्धाः ॥ येमुंलोकंपितरःक्षियंति ॥ याश्चविज्ञयाःऽवचनप्रविज्ञाः ॥
 मघासुयज्ञंसुकृतंजुषतां ॥ गवांपतिःफल्गुनीनामसित्वं ॥ तर्दयमन्वरुणमित्रचारु ॥ तंत्वावयःसंनितारःसनीनां ॥ जी
 वाजीवैतमुपसंविशेम ॥ येनेमाविश्वाभुवनानिसंजिता ॥ यस्यदेवाअनुसंयंतिचेतः ॥ ७ ॥ अर्यमाराजाजस्तुर्विष्मान् ॥

फल्गुनीनामृषभोरोरवीति ॥ श्रेष्ठोद्भवानां भगवो भगवति ॥ तत्त्वाविदुः फल्गुनीस्तस्य वित्तात् ॥ अस्मभ्यं क्षत्रमजरं सुवी
 क्ष ॥ गोमदं ध्वजं वदुः प्रसंनुदुह ॥ भगो हृदाता भग इत्यं द्राता ॥ भगो देवीः फल्गुनी राविवेश ॥ भगस्येत्तं प्रसवंगमेम ॥ यत्र देवैः से
 धमादं मेम ॥ ८ ॥ आयातु देवः सवितो पयातु ॥ दक्षिणेन प्रतिगृणीम एनत् ॥ द्रातारं मद्यं सविता विदेय ॥ योनो हस्ताय प्रसुवाति
 पुण्यमच्छं ॥ हस्तः प्रयच्छत्प्रमृतं वसीयः ॥ दक्षिणेन प्रतिगृणीम एनत् ॥ निवेशयन् प्रमृतान् मर्त्योश्च ॥ रूपाणि पिशुनभुव
 यज्ञं ॥ त्वष्टानक्षत्रमभ्येति चित्रां ॥ तन्नक्षत्रं भूरिदा अस्तु मह्यं ॥ तन्नः प्रजां वीरवतीं सनोतु ॥ गोभिर्नो अश्वैः समै
 नानि विभ्वा ॥ तन्नस्त्वष्टातदु चित्रा विचष्टां ॥ तन्नक्षत्रं भूरिदा अस्तु मह्यं ॥ समीरयन् भुवनं नामातुरिभ्वा ॥ यथातरे मदुरि
 नक्तुयज्ञं ॥ वायुर्नक्षत्रमभ्येति निष्ठां ॥ तन्नक्षत्रं भूरिदा अस्तु मह्यं ॥ तन्नो देवासो अनुजानंतु कामं ॥ पश्चात्पुस्तदभ्यं नो
 रीतीः ॥ १० ॥ तन्नो वायुस्तदु निष्ठां शृणोतु ॥ तन्नक्षत्रं भूरिदा अस्तु मह्यं ॥ तन्नो देवासो अनुमदंतु यज्ञं ॥ पश्चात्पुस्तदभ्यं नो
 तानि विभ्वा ॥ दूरमस्मच्छत्रं वोयंतु भीताः ॥ तदिद्राग्नीकृणुतां तद्विशाले ॥ तन्नो देवासो अनुमदंतु यज्ञं ॥ अपभुधं नुदतामरातिं ॥ पृथ्वी सुवची
 अस्तु ॥ नक्षत्राणामधिपत्नी विशाले ॥ श्रेष्ठो विद्राग्नीभुवनस्य गोपौ ॥ ११ ॥ विषूचः शत्रून् पवाधमानौ ॥ अपभुधं नुदतामरातिं ॥ पृथ्वी सुवची
 पूर्णा पश्चादुत पूर्णा ॥ पौर्णमास्युदंगाच्छोभमाना ॥ अप्याययंती दुरितानि विभ्वा ॥ उरुं दुह्यं जमानाय यज्ञं ॥ १२ ॥ ऋध्यास्मह
 युवतिः सजोषाः ॥ पौर्णमास्युदंगाच्छोभमाना ॥ अप्याययंती दुरितानि विभ्वा ॥ उरुं दुह्यं जमानाय यज्ञं ॥ १२ ॥ ऋध्यास्मह

व्यैर्नर्मसोपसद्य ॥ मित्रं देवं मित्रधेयं नो अस्तु ॥ अनुराधान् हविषां वर्धयतः ॥ शतं जीविमशरदुःसवीराः ॥ चित्रं नक्षत्रमुदगात्पुर
स्तात् ॥ अनुराधास इति यद्वदति ॥ तन्मित्र एति पृथिभिर्देवयानैः ॥ हिरण्ययैर्विततैरंतरिक्षे ॥ इन्द्रो ज्येष्ठामनुनक्षत्रमेति ॥ य
नायमीदृषे ॥ इन्द्रो ज्येष्ठामधुमहुहानाः ॥ क्षुधंतरे मरुतिरिति दुर्दिष्टि ॥ पुरंदराय वृषभाय धृष्णवे ॥ अषाढाय सहमा
गोभिर्नक्षत्रं पशुभिः समक्तं ॥ अहर्भूयाद्यजमानाय मह्यं ॥ १३ ॥ अहर्नो अद्य सुविते दधातु ॥ मूलं नक्षत्रमिति यद्वदति ॥ पराचीं
वाचानिर्ऋतिं नुदामि ॥ शिवं प्रजायै शिवमस्तु मह्यं ॥ यादिव्या आपः पर्यसा संबभूवुः ॥ या अंतरिक्ष उत पार्थिवीर्याः ॥ यासां
मषाढा अनुयंतिकामं ॥ तान आपः शस्यो ना भवंतु ॥ याश्च कूप्या याश्च नाद्याः समुद्रियाः ॥ याश्च वै शंतीरुत प्रासचीर्याः ॥ या
प्रथतां पशुभ्यः ॥ कृषिर्वृष्टिर्जमानाय कल्पतां ॥ शुभ्राः कन्या युवतयः सुपेशसः ॥ कर्मकृतः सुकृतो वीर्यावतीः ॥ तन्नक्षत्रं
वान् हविषा वर्धयंती ॥ अषाढाः काममुपयां तु यज्ञं ॥ यस्मिन् ब्रह्माभ्यजयत् सर्वमेतत् ॥ अमुं च लोकमिदमुच सर्वं ॥ विश्वान्दे
मभिजिह्वित्य ॥ श्रियं दधात्वहणीयमानं ॥ उभौ लोकौ ब्रह्मणा संजितौ ॥ तन्नो नक्षत्रमभिजिह्वि चष्टां ॥ तन्नो नक्षत्र
संजयेम ॥ तन्नो देवासो अनुजानंतु कामं ॥ शृण्वंति श्रोणाममृतस्य गोपां ॥ पुण्यामस्या उपशृणोमि वाचं ॥ महीं देवीं विष्णुप

लीमजूर्या ॥ प्रतीचीमेनाऽहुविषायजामः ॥ त्रेधाविष्णुरुगायोविचक्रमे ॥ मूर्हादिवपृथिवीमंतरिक्षं ॥ तच्छूर्णेतिश्रवह
 च्छर्माना ॥ पुण्यऽश्लोकंयजमानायकृण्वती ॥ अष्टौदेवावसंवःसोम्यासः ॥ चतस्रोदेवीरजराःश्रविष्ठाः ॥ तेयज्ञपांतुरजसः
 पुरस्तात् ॥ संवत्सरीणममृतऽस्वस्ति ॥ यज्ञनःपांतुवसंवःपुरस्तात् ॥ दक्षिणतोभियंतुश्रविष्ठाः ॥ पुण्यनक्षत्रमभिसंविशाम ॥
 मानोअरातिरघशऽसार्गन् ॥ क्षत्रस्यराजावरुणोधिराजः ॥ नक्षत्राणाऽशतभिपुग्वसिष्ठः ॥ तौदेवेभ्यःकृणुतोदीर्घमायुः ॥
 शतऽसहस्राभेषजानिधत्तः ॥ यज्ञनोराजावरुणउपयातु ॥ तन्नोविश्वेअभिसंयंतुदेवाः ॥ तन्नोनक्षत्रऽशतभिषगजुषाणं ॥
 शतऽसहस्राभेषजानिधत्तः ॥ अजएकपादुदंगात्पुरस्तात् ॥ विश्वाभूतानिप्रतिमोदमानः ॥ तस्यदेवाःप्रसवंयंतिसर्वे ॥ प्रोष्ठप
 दीर्घमायुःप्रतिरंघ्रेषजानि ॥ अजएकपादुदंगात्पुरस्तात् ॥ तऽसूर्यदेवमजमेकपादं ॥ प्रोष्ठपदासोअ
 दासोअमृतस्यगोपाः ॥ विभ्राजमानःसमिधानुग्रः ॥ आंतरिक्षमरुदगंधां ॥ तऽसूर्यदेवमजमेकपादं ॥ प्रोष्ठपदासोअभि
 नुयंतिसर्वे ॥ अहिर्बुध्नियःप्रथमानएति ॥ श्रेष्ठोदेवानामुतमानुषाणां ॥ तंब्राह्मणाःसोमपाःसोम्यासः ॥ प्रोष्ठपदासोअभि
 रक्षंतिसर्वे ॥ अहिर्बुध्नियःप्रथमानएति ॥ तेबुध्नियंपरिषद्यऽस्तुवंतः ॥ अहिऽरक्षंतिनमसोपस
 रक्षंतिसर्वे ॥ चत्वारएकमभिकर्मदेवाः ॥ प्रोष्ठपदासइतियान्वदति ॥ तेबुध्नियंपरिषद्यऽस्तुवंतः ॥ अहिऽरक्षंतिनमसोपस
 रक्षंतिसर्वे ॥ पृषारेवत्यन्वेतिपंथां ॥ पृष्टिपतीपशुपावाजबस्त्यौ ॥ इमानिहव्याप्रयताजुषाणा ॥ सुगैर्नोयानैरुपयातायज्ञं ॥ क्षुद्रा
 न्पशून्रक्षतुरेवतीनः ॥ गावो नोअश्वाऽअन्वेतुपूषा ॥ अन्नऽरक्षतौबहुधाविरूपं ॥ वाजऽसनुतांयजमानाययज्ञं ॥ तदृश्वि
 नावश्वयुजोपयातां ॥ शुभंगमिष्ठौसुयमेभिरश्वैः ॥ स्वनक्षत्रऽहुविषायजैतौ ॥ मध्वासंपृक्तौयजुषासमंक्तौ ॥ यौदेवानांभि

पजौहव्यवाहौ ॥ विश्वस्यदूतावृत्तस्यगोपौ ॥ तौनक्षत्रंजुजुषाणोपयातां ॥ नमोऽश्विभ्यौकृणुमोऽश्वयुग्भ्यां ॥ अर्पपाप्मानंभ
 रणीभरंतु ॥ तद्यमोराजाभगवान्विचर्षां ॥ लोकस्यराजामहतोमहान्हि ॥ सुगंनःपंथामभयंकृणोतु ॥ यस्मिन्नक्षत्रेयमएति
 राजा ॥ यस्मिन्नेनमभ्यर्षिचंचतेदेवाः ॥ तदस्यचित्रंहुविषायजाम ॥ अर्पपाप्मानंभरणीभरंतु ॥ निवेशनीसंगमनीचसूनां
 विश्वारूपाणिवसून्यावेशयंती ॥ सहस्रपोषस्सभगारणासानुआगन्वर्चसासंविदाना ॥ नवो नवोभवतिजायमानोऽहोकेतुरुषसमित्यग्ने ॥ भागं
 संवसंतोमहित्वा ॥ सानोयज्ञंपिपृहिविश्ववारेरयिनोधेहि सुभगेसुवीरं ॥ यत्तेदेवा अर्धुर्भागधेयमर्मावास्ये
 देवेभ्योविदधात्यायन्प्रचंद्रमास्तिरतिदूर्धमायुः ॥ यमादित्याअशुमप्याययंतियमक्षितमक्षितयःपिबति ॥ तेननोराजाव
 रूणोबृहस्पतिराप्याययंतुभुवनस्यगोपाः ॥ यमोदित्याअशुमप्याययंतियमक्षितमक्षितयःपिबति ॥ तेननोराजाव
 हुवे ॥ तेनो नक्षत्रेहवमार्गमेतं ॥ वयंदेवर्वाब्रह्मणासंविदानाः ॥ समानंतंतुपरितातुनाते ॥ विभ्रप्रभूअनुभूविश्वतो
 तिपाप्मानमतिमुक्त्यागमेम ॥ प्रत्युवदश्यायती ॥ व्युच्छंतीदुहितादिवः ॥ अपोमर्हीवृणुतेचक्षुषा ॥ तमोज्योतिष्कृणोति
 सूनरी ॥ उदुस्त्रियाःसचतेसूर्यः ॥ सचावृष्टंनक्षत्रमर्चिमत् ॥ तवेदुषोव्युषिसूर्यस्यच ॥ संभक्तेनगमेमहि ॥ तन्नो नक्षत्रमर्चि
 मत् ॥ भानुमत्तेजउच्चरत् ॥ उर्पयज्ञमिहार्गमत् ॥ प्रनक्षत्रायदेवाय ॥ इन्द्रायैदुहवामहे ॥ सनःसवितासुवत्सनिं ॥ पृष्टि
 दांवीरवत्तमं ॥ उदुत्यंजातवेदसंदेवंवहंतिकेतवः ॥ इशेविश्वायसूर्य ॥ चित्रंदेवानामुदगादनीकंचक्षुर्मित्रस्यवरुणस्याग्नेः ॥

आप्राद्यावापृथिवीअंतरिक्षसूर्यआत्माजगतस्तस्थुषश्च ॥ अदितिर्नरुष्यत्वादितिःशर्मयच्छतु ॥ अदितिःपात्वहंसः ॥
 महीमषुमातरसुव्रतानामतस्यपत्नीमवसेहुवेम ॥ तुविक्षत्रामजरतीमुखीसुशर्माणमदितिसुप्रणीति ॥ इदंविष्णुर्विचक्र
 मेत्रेधानिदधेपदं ॥ समूढमस्यपासुरे ॥ प्रतद्विष्णुःस्ववतेवीर्यीय ॥ मृगोनभीमःकुचरोगिरिष्ठाः ॥ यस्योरुषुत्रिषुविक्रमणे
 पु ॥ अधिक्षियंतिभुवनानिविश्वा ॥ अग्निर्मूर्ध्नादिवःककुत्सतिःपृथिव्याअयं ॥ अपाःरेतांसिजिन्वति ॥ भुवोयज्ञस्यरज
 सश्चनेतायत्रानियुद्भिःसचसेशिवभिः ॥ द्विविमूर्धानदधिषुवृषीजिह्वामग्नेचकृषेहव्यवाहं ॥ अनुनोद्यानुमतिर्यज्ञदेवेषुम
 न्यतां ॥ अग्निश्चहव्यवाहनोभवतांदाशुषेमर्यः ॥ अन्विदनुमेतत्त्वमन्यासैशंचनःकृधि ॥ ऋत्वेदक्षायनोहिनप्रणआर्यूषि
 तारिपः ॥ हव्यवाहमभिमातिषाहं ॥ रक्षोहणंपृतनासुजिष्णुं ॥ ज्योतिष्मंतुदीद्यतंपुरंधिं ॥ अग्निस्त्विष्टकृतमाहुवेम ॥ स्वि
 टमग्नेअभितत्पृणाहि ॥ विश्वादेवपृतनाअभिष्य ॥ उरुनःपंथांप्रदिशन्विभाहि ॥ ज्योतिष्मद्धेह्यजरैनआरुः ॥ अग्नये
 स्वाहाकृत्तिकाभ्यःस्वाहा ॥ अंबायैस्वाहादुलायैस्वाहा ॥ नितुल्यैस्वाहाअग्रयंत्यैस्वाहा ॥ मेघयंत्यैस्वाहावर्षयंत्यैस्वाहा ॥ च
 पूर्णीकायैस्वाहा ॥ प्रजापतयेस्वाहारोहिण्यैस्वाहा ॥ रोचमानायैस्वाहाप्रजाभ्यःस्वाहा ॥ सोमायस्वाहामृगशीर्षायस्वाहा ॥
 इन्वकाभ्यःस्वाहोपधीभ्यःस्वाहा ॥ राज्यायस्वाहाभिजित्यैस्वाहा ॥ रुद्रायस्वाहाद्रात्र्यैस्वाहा ॥ पिन्वमानायैस्वाहापशुभ्यः
 स्वाहा ॥ अदित्यैस्वाहापुनर्वसुभ्यां ॥ स्वाहाभूत्यैस्वाहाप्रजात्यैस्वाहा ॥ बृहस्पतयेस्वाहातिष्यायस्वाहा ॥ ब्रह्मवर्चसायस्वा

हा ॥ स॒र्वेभ्यःस्वाहा॒श्रे॒षाभ्यःस्वाहा ॥ दुंदु॒शूकेभ्यःस्वाहा ॥ पि॒त॒रभ्यःस्वाहा॒म॒घाभ्यः ॥ स्वाहा॒नि॒घाभ्यःस्वाहा॒ग॒दाभ्यः ॥
 स्वाहा॒रु॒ध॒तीभ्यःस्वाहा ॥ अ॒र्य॒ग्नेस्वाहा॒फ॒ल्गुनीभ्या॑स्वाहा ॥ प॒शुभ्यःस्वाहा ॥ भ॒र्गाय॒स्वाहा॒फ॒ल्गुनीभ्या॑स्वाहा ॥ श्रै
 ष्ठ्याय॒स्वाहा ॥ चै॒त्राय॒स्वाहा॒प्र॒जायै॒स्वाहा ॥ वा॒यवे॒स्वाहा॒नि॒ष्ट्यायै॒स्वाहा ॥ का॒म॒चा॒राय॒स्वाहा॒भि॒जित्यै॒स्वाहा ॥ त्वष्ट्रे॒स्वाहा
 य॒स्वाहा॒न॒रा॒धेभ्यःस्वाहा ॥ मि॒त्र॒धे॒राय॒स्वाहा॒भि॒जित्यै॒स्वाहा ॥ पौ॒र्ण॒मा॒स्यै॒स्वाहा॒का॒माय॒स्वाहा॒ग॒त्यै॒स्वाहा ॥ इ॒न्द्रा॒ग्नि
 स्वाहा ॥ प्र॒जाप॑तये॒स्वाहा॒मू॒लाय॒स्वाहा ॥ इ॒न्द्राय॒स्वाहा॒ज्यै॒ष्ट्यायै॒स्वाहा ॥ ज्यै॒ष्ठ्याय॒स्वाहा॒भि॒जित्यै॒
 जित्यै॒स्वाहा ॥ वि॒श्वेभ्यो॒दे॒वेभ्यःस्वाहा॒षा॒ढाभ्यःस्वाहा ॥ अ॒ग्न्याय॒स्वाहा॒भि॒जित्यै॒स्वाहा ॥ अ॒भि
 लो॒काय॒स्वाहा॒भि॒जित्यै॒स्वाहा ॥ वि॒ष्णवे॒स्वाहा॒श्रो॒णायै॒स्वाहा ॥ ब्र॒ह्म॒णे॒स्वाहा॒भि॒जित्यै॒स्वाहा ॥ ब्र॒ह्म
 अ॒ग्राय॒स्वाहा॒प॒रीत्यै॒स्वाहा ॥ व॒रु॒णाय॒स्वाहा॒शु॒त॒भि॒ष॒जे॒स्वाहा ॥ भे॒प॒जेभ्यःस्वाहा ॥ अ॒जा॒र्यै॒क॒प॒दे॒स्वाहा॒प्रो॒ष्ठ॒प॒देभ्यःस्वाहा ॥
 ते॒ज॒से॒स्वाहा॒ब्र॒ह्म॒व॒र्च॒साय॒स्वाहा ॥ अ॒ह॒ये॒बु॒ध्न्याय॒स्वाहा॒प्रो॒ष्ठ॒प॒देभ्यःस्वाहा ॥ प्र॒ति॒ष्ठायै॒स्वाहा ॥ पु॒ष्णे॒स्वाहा॒रे॒व॒त्यै॒स्वाहा ॥
 प॒शुभ्यःस्वाहा ॥ अ॒श्विभ्या॑स्वाहा॒श्व॒युग्भ्या॑स्वाहा ॥ श्रो॒त्राय॒स्वाहा॒श्रु॒त्यै॒स्वाहा ॥ य॒माय॒स्वाहा॒पु॒म॒रणीभ्यःस्वाहा ॥ रा

ज्यायस्वाहाभिजित्यैस्वाहा ॥ अमावास्यायैस्वाहाकामायस्वाहागत्यैस्वाहा ॥ चंद्रमसेस्वाहाप्रतीदृश्ययैस्वाहा ॥ अहोरात्रे
 भ्यःस्वाहाहर्धमासेभ्यःस्वाहा ॥ मासेभ्यःस्वाहाहर्तुभ्यःस्वाहा ॥ संवत्सरायस्वाहा ॥ अह्नेस्वाहारान्नित्यैस्वाहा ॥ अतिमुक्त्यै
 स्वाहा ॥ उषसेस्वाहाव्युष्ट्यैस्वाहा ॥ व्युष्ट्यैस्वाहा ॥ नक्षत्रायस्वाहादेव्यतेस्वाहा ॥ उ
 द्यतेस्वाहादितायस्वाहा ॥ हरसेस्वाहाभरसेस्वाहा ॥ आजसेस्वाहातेजसेस्वाहा ॥ तपसेस्वाहाब्रह्मवर्चसायस्वाहा ॥ सूर्या
 यस्वाहानक्षत्रेभ्यःस्वाहा ॥ प्रतिष्ठायैस्वाहा ॥ अदित्यैस्वाहाप्रतिष्ठायैस्वाहा ॥ विष्णवेस्वाहायज्ञायस्वाहा ॥ प्रतिष्ठायैस्वा
 हा ॥ ॥ दधिक्राव्णोअकारिपंजिष्णोरश्वस्यवाजिनः ॥ सुरभिर्नोमुखांकरत्स्रणआयुःपितारिपत् ॥ आपोहिष्ठांमयोभुवस्ता
 ने०३ ॥ यच्चिद्धितेविशोयथा० (अत्र यत्किंचेदं० कितवासो० इममेवरुण० तत्वायामि० उदुत्तमं० अस्तंभाद्व्यामृपभोअंत
 रिक्षममिमीतवरिमाणंपृथिव्याआसीदुद्धिश्वाभुवर्नानिसस्वाद्विश्वेत्तानिवरुणस्यव्रतानि । अवतेहेळो० इत्यादिमंत्रान्पठंति)
 हिरण्यवर्णाःशुचयःपावका० यासांराजा० यासांदेवा० शिवेनमाचक्षुषापश्यतापःशिवयातनुवोपस्पृशतत्वचमे ॥ सर्वो
 अग्नींरस्सुषदोहवेवोमयित्रचोबलमोजोनिर्धत्त ॥ पर्वमानःसुवर्जनः० ॥ जातवैदामोर्जयत्यापुनातु ॥ भूर्भुवःसुवः ॥ तच्छं
 योरावृणीमहे ॥ गातुंयज्ञाय ॥ गातुंयज्ञपतये ॥ दैवीस्वस्तिरस्तुनः ॥ स्वस्तिर्मानुषेभ्यः ॥ ऊर्ध्वजिगतुभेपुजं ॥ शंनोअ
 स्तुद्धिपदे ॥ शंचतुष्पदे ॥ नमोब्रह्मणेनमोअस्त्वग्नयेनमःपृथिव्यैनमओषधीभ्यः ॥ नमोवाचेनमोवाचस्पतयेनमोविष्णवेबृ

हृतेकरोमि ॥ इति त्रिः ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ततः ऋत्विजः पंचोपचारैः संपूज्य प्रणवेनोदकुंभमुत्थाप्य तत्रैव स्थाप्य तज्जलैर्व्याहृतिभिरापोहिष्ठेत्यादिभिः सपत्नीकं यजमानमभिषिंचेयुः यजमानस्तेभ्यो दक्षिणां पूर्वस्थिताय हिरण्यं दक्षिणस्थाय रजतं प्रत्यक् स्थाय कांस्यं उदक् स्थाय वस्त्रमिति तन्निष्क्रयं वा दद्यात् ब्राह्मणान् भोजयेत् इति ॥ ६३ ॥

॥ २८४ ॥ अथ अपामार्जनम् ॥

श्रीः ॥ दालभ्य उवाच ॥ भगवन् प्राणिनः सर्वे विषरोगाद्युपद्रवैः ॥ दुष्टग्रहोपधातैश्च सर्वकालमुपद्रुताः ॥ १ ॥ आभिचारिक कृत्याभिः स्पर्शरोगैश्च दारुणैः ॥ सदा संपीड्यमानास्ते तिष्ठन्ति मुनिसत्तम ॥ २ ॥ येन कर्मविपाकेन ग्रहरोगाद्युपद्रवाः ॥ न भवंति नृणां तन्मे यथा वदतु मर्हसि ॥ ३ ॥ पुलस्त्य उवाच ॥ जनार्दनं भूतपतिं जगद्गुरुं स्मरन्मनुष्यः स ततं महा मुने ॥ दुष्टान्यशेषाण्यपहंति सद्यो निःशेषकार्याणि च साधुसाधयेत् ॥ ४ ॥ व्रतोपवासैर्यैर्विष्णुर्नान्यजन्मनि तोषितः ॥ तेन रामुनि शार्दूलग्रहरोगादिभागिनः ॥ ५ ॥ यैर्न तत्प्रवर्णं चित्तं सर्वदैव नरैः कृतं ॥ विषग्रहज्वराणां ते मनुष्या दालभ्य भागिनः ॥ ६ ॥ आरोग्यं परमामृद्धिं मनसा यद्यदिच्छति ॥ तत्तदामोत्य संदिग्धं परत्राच्युत तोषकृत् ॥ ७ ॥ नाधीन्प्राप्नोति न व्याधीन्न विषग्रहबंधनं ॥ कृत्यास्पर्शभयं वा पितोषिते मधुसूदने ॥ ८ ॥ सर्वदुष्टशमस्तस्य सौम्यास्तस्य सदा ग्रहाः ॥ देवानामप्यधृष्यो सौ तुष्टो यस्य जनार्दनः ॥ ९ ॥ यः समः सर्वभूतेषु यथात्मनि तथापरे ॥ उपवासादिना येन तोषितो मधुसूदनः ॥ १० ॥ तोषिते तत्र जायंते नराः पूर्णमनोरथाः ॥ अरोगाः सुखिनो भोगान् भोक्तारो मुनिसत्तम ॥ ११ ॥ न तेषां शत्रवो नैव स्पर्शरोगाभिचारिकं ॥ ग्रहरोगादिकं वापि पापकार्यं न वि

तःपातुर्केशवः ॥ एवंकृत्वातुदिग्बंधंविष्णुं सर्वत्रसंस्मरेत् ॥ ३० ॥ अव्यग्रचित्तःकुर्वीतन्यासकर्मयथाविधि ॥ अंगुष्ठाग्रेतुगो
विंदंतर्जन्यांतुमहीधरं ॥ ३१ ॥ मध्यमायांहृषीकेशमनामिक्यांत्रिविक्रमं ॥ कनिष्ठिक्यान्यसेद्विष्णुंकरमध्येतुमाधवं ॥ ३२ ॥
हृन्मध्येचिंतयेद्देवंपरमात्मानमीश्वरं ॥ नृसिंहमणिबंधेचकरपृष्ठेजनार्दनं ॥ ३३ ॥ कृतेचवैष्णवेन्यासेसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ए
वश्रीधरंकल्पयेद्बुधः ॥ उत्तरोष्ठेहृषीकेशंपद्मनाभंतथाधरे ॥ ३४ ॥ शिखायांकेशंवन्वस्यमूर्धिनारायणंन्यसेत् ॥ ललाटेमाधवंन्यस्यगोविंदंतुभ्रु
वंचतालोतुगरुडध्वजं ॥ ३५ ॥ चक्षुर्मध्येन्यसेद्विष्णुंश्रवणेमधुसूदनं ॥ त्रिविक्रमंकपोलेतुवामनंकर्णमूलयोः ॥ ३६ ॥ नासारंघ्रद्वयेचै
तु ॥ करेतुदक्षिणेविप्रततःसंकर्षणंन्यसेत् ॥ हरिनाभौतुविन्यस्यस्तनयोःपीतवाससं ॥ ३७ ॥ दामोदरंदंतपत्तौवाराहंचुबुकेतथा ॥ जिह्वायांवासुदे
धयोर्द्वयोः ॥ ३८ ॥ वैकुण्ठकंठमध्येतुह्यानंतनासिकोपरि ॥ दक्षिणेतुभुजेविप्रविन्यसेत्पुरुषोत्तमं ॥ ३९ ॥ वामे
देवंचगुदमध्येऽव्ययंन्यसेत् ॥ ४० ॥ वामेरिपुहरंविद्यात्कटिमध्येऽपराजितं ॥ पृष्ठेक्षितिधरंविद्यादच्युतंस्कं
पुष्कराक्षंचसर्वतोविश्वरूपिणं ॥ ४१ ॥ स्वयंभुवंभूदमध्येह्रूवोश्चैवगदाधरं ॥ ४२ ॥ जानुमध्येचक्रधरंजंघयोरच्युतंन्यसेत् ॥ पादयोः
नखेषुमाधवंन्यस्यन्यसेत्पादतलेऽच्युतं ॥ ४३ ॥ गुल्फयोर्नारिसिंहचपादपृष्ठेमितौजसं ॥ अंगुल्यांश्रीधरंन्यस्यपद्माक्षंसर्वसंधिषु ॥ ४४ ॥
रोमकूपेगुडाकेशंकृष्णंरक्तास्थिमज्जसु ॥ ४५ ॥ मनोबुद्धिरहंकारचित्तेन्यस्यजना

॥ होमारंभेचकर्तव्यं त्रिसंध्यासुच
 ॥ ५० ॥ एवंन्यास
 ॥ तनुर्विष्णुमयीतस्ययावत्किञ्चिन्नभापते ॥ ५१ ॥ वनमालाहृदिन्यस्यसर्वदेवाभिपूजितां ॥ ग
 ॥ ५२ ॥ वनमालाहृदिन्यस्यसर्वदेवाभिपूजितां ॥ ग
 ॥ ५३ ॥ वनमालाहृदिन्यस्यसर्वदेवाभिपूजितां ॥ ग
 ॥ ५४ ॥ वनमालाहृदिन्यस्यसर्वदेवाभिपूजितां ॥ ग
 ॥ ५५ ॥ वनमालाहृदिन्यस्यसर्वदेवाभिपूजितां ॥ ग
 ॥ ५६ ॥ वनमालाहृदिन्यस्यसर्वदेवाभिपूजितां ॥ ग
 ॥ ५७ ॥ वनमालाहृदिन्यस्यसर्वदेवाभिपूजितां ॥ ग
 ॥ ५८ ॥ वनमालाहृदिन्यस्यसर्वदेवाभिपूजितां ॥ ग
 ॥ ५९ ॥ वनमालाहृदिन्यस्यसर्वदेवाभिपूजितां ॥ ग
 ॥ ६० ॥ वनमालाहृदिन्यस्यसर्वदेवाभिपूजितां ॥ ग

॥ ५९ ॥ बृहत्तनुं बृहद्गन्धं बृहदंष्ट्रसुशोभनं ॥ समस्तवेदे वेदांगयुक्तैर्भूषणैर्युतं ॥ ६० ॥ उद्धृत्य भूमिपातालाच्छस्ताभ्यामुपगृह्य च ॥ आलिंग्य भूमिं शिरसामूर्ध्नि जिघ्रंतमच्युतं ॥ ६१ ॥ रत्नवैडूर्यमुक्ताभिर्भूषणैरुपशोभितं ॥ पीतांबरधरं देवं शुक्लमाल्यानुलेपनं ॥ ६२ ॥ त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवैः स्तूयमानं मुदान्वितं ॥ ऋषिभिः सनकाद्यैश्च स्तूयमानं दिवानिशं ॥ ६३ ॥ नृत्याङ्गिरप्सरोभिर्कैर्दलैश्चैव ह्यष्टाभिः परिशोभितं ॥ ६४ ॥ कलंकरहितं देवं पूर्णचंद्राबुदप्रभं ॥ तडित्समानशोभावत्कंठनालेन शोभितं ॥ ६५ ॥ पीतवस्त्रपरीधानं शुक्लवस्त्रोत्तरीयकं ॥ ६६ ॥ सुवर्णमंडपांतः स्थपद्मं ध्यायेत्स केसरं ॥ सकर्णं शोभितं ॥ ६७ ॥ संपंकजं चतुर्हस्तं तत्राय तलोचनं ॥ ६८ ॥ कटिसूत्रेण हेमननूरेण विराजितं ॥ ६९ ॥ पद्मासनसमारूढं योगपद्मसमन्वितं ॥ ७० ॥ शंखचक्रगृहीताभ्यामुद्धातुं भ्यामथान्ययोः ॥ ७१ ॥ केयूरकांतिसंस्पृधिमुद्रिकारत्नशोभितं ॥ ७२ ॥ अनेकसूर्यसंकापं ॥ वामांकस्थश्रियायुक्तं शांतिदांतुंगरोहिणीं ॥ ७३ ॥ चतुर्थीचंद्रसंकाशं सुदंष्ट्रमुखपंकजं ॥ ७४ ॥ अतिरक्तोष्ठवदं गव्यात्तास्यमतिभीषणं ॥ ७५ ॥ जंघाभरणसंस्पृधिविस्फूर्जत्कंकणत्विषं ॥ ७६ ॥ कटिसूत्रेण हेमननूरेण विराजितं ॥ ७७ ॥ अर्हणीचक्रपादां च सुनासां शुभलक्षणां ॥ सुभ्रंसुकेरीं सुश्रोणीं सुभुजां द्विभुजाननां ॥ ७८ ॥ चंपकाकुसुमाभं च सुनासां मुखपंकजं ॥ ७९ ॥ अर्हणीचक्रपादां च सुनासां शुभलक्षणां ॥ सुभ्रंसुकेरीं सुश्रोणीं सुभुजां द्विभुजाननां ॥ ८० ॥ सुमतिष्ठां शुभ्रदंतीं चतुर्हस्तां विचिंतयेत् ॥ ८१ ॥ दुक्कलांचैव चार्वर्गीं हरिणीं सर्वकामदां ॥ ८२ ॥ तप्तकां

चनसंकाशांसर्वाभरणभूषितां ॥ सुवर्णकलशप्रख्यपीनोन्नतपयोधरां ॥ ७८ ॥ गृहीतमातुलिंगाभ्यामुद्धाहुभ्यामथान्ययोः ॥
 गृहीतपद्मयुगुलजांबूनदकरान्वितां ॥ ७९ ॥ एवंदेवीनृसिंहस्यवामांकोपरिसंस्मरेत् ॥ देवचकर्णिकामध्येकाम्येनित्येचकर्म
 णि ॥ ८० ॥ आत्मानंचनृसिंहस्यशरीरंसंस्मरेदपि ॥ हेमाद्रिशिखराकारंशुद्धस्फटिकसन्निभं ॥ ८१ ॥ पूर्णचंद्रनिभंदेवंद्वि
 भुजंवामनंस्मरेत् ॥ सूर्यकोटिप्रतीकाशंचंद्रकोटिसुशीतलं ॥ ८२ ॥ ज्वलत्कालानलप्रख्यंतडित्कोटिसमप्रभं ॥ सुंदरंपुंडरी
 काक्षंकिरीटेनविराजितं ॥ ८३ ॥ षोडशस्त्रीसहस्रैश्चगंधर्वाप्सरसांगणैः ॥ चतुर्मुखाद्यैर्देवेशैःस्तोत्राराधनतोषितैः ॥ ८४ ॥
 त्र्यंबकैर्विमहोदेवोनृत्यतेसन्निधौहरेः ॥ ८५ ॥ अजिनदंडकमंडलुमेखलारुचिरपावनवामनमूर्तये ॥ मितजगत्त्रितयायजिता
 रयेनिगमवाक्पटवेबटवेनमः ॥ ८६ ॥ शांतपद्मासनस्थंसकलशशिनिभंश्रीपतिकोमलांगंहस्तेपीयूषकुंभंदधियुतकवलंहस्तपद्मे
 दधानं ॥ पीतवस्त्रंदधानंकटकमुकुटयोर्हारकेयूरमालानालंकारयुक्तंस्फटिकमणिनिभंवामननौमिनित्यं ॥ ८७ ॥ अभ्र
 श्यामःशुभ्रयज्ञोपवीतीसत्कौपीनःपीतकृष्णाजिनश्रीः ॥ छत्रीदंडीपुंडरीकायताक्षःपायाद्देवोवामनोब्रह्मचारी ॥ ८८ ॥ अ
 तिसुविमलगान्ररुक्मपात्रस्थमन्नंसुललितदधिखंडपाणिनादक्षिणेन ॥ कलशममृतपूर्णवामहस्तेदधानंतरतिसकलदुःखंवामनं
 भावयेद्यः ॥ ८९ ॥ क्षीरसागरकल्लोलसितरक्ततनुंशुभं ॥ मणिमुक्तामयेरम्येसकांतंसंस्थितंशुभं ॥ ९० ॥ शुभ्रमेघविनिर्मुक्तं
 सुधासिक्तंसुसुंदरं ॥ एकनामानमात्मानंकृत्वापामार्जनंजपेत् ॥ ९१ ॥ ॐ नमःपरमार्थायपुरुषायमहात्मने ॥ नमस्कृत्वाप्र
 वक्ष्यामियत्तत्सिध्यतुमेवचः ॥ ९२ ॥ अरूपबहुरूपायव्यापिनेपरमात्मने ॥ नमस्कृत्वाप्रवक्ष्यामि ॥ ९३ ॥ निष्कल्मषाय

शुद्धाय ध्यातु पापहराय च ॥ नमः ॥ ९४ ॥ नारायणाय देवाय विश्वेशायेश्वराय च ॥ नमः ॥ ९५ ॥ सच्चिदानंदरूपाय योगिने प
 रमात्मने ॥ नमः ॥ ९६ ॥ वराहाय नृसिंहाय वामनाय महात्मने ॥ नमः ॥ ९७ ॥ गोविंदपद्मनाभाय वासुदेवाय विष्णवे ॥ नमः ॥
 क्रमाय रामाय वैकुण्ठाय नाराय च ॥ नमः ॥ ९८ ॥ जगद्नाथ कृष्णाय उर्षेद्रश्रीधराय च ॥ नमः ॥ ९९ ॥ सच्चिदानंदरूपाय योगिने प
 रमात्मने ॥ नमः ॥ १०० ॥ हिरण्यगर्भपतये हिरण्यकशिपुच्छिदे ॥ नमः ॥ १०१ ॥ अधोक्षजाय दक्षाय मत्स्याय मधुसूदिने ॥ नमः ॥
 ॥ ५ ॥ दैत्यारय उर्षेद्राय भूतानां जीवनाय च ॥ नमः ॥ १०२ ॥ विष्टरश्रवसे तस्मै क्षीरांभो निधिशायिने ॥ नमः ॥ १०३ ॥ त्रिवि
 त्सिध्यतु मे वचः ॥ ७ ॥ नारसिंह महोद्देश तस्मै तुभ्यं नमो नमः ॥ ८ ॥ वराहेश नृसिंहे शवामने शत्रुविनाशाय ॥ नमः ॥ ९ ॥ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ॥ १० ॥ प्रणतक्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः ॥ ११ ॥ महायज्ञवराहाय शेषभोगोरुशायिने ॥ तस्य हाटकेशांतज्वलत्पावकलोचना ॥ १२ ॥ अपारनरसिंहे शदिव्यसिंहे नमोस्तु
 ॥ १३ ॥ नमः पुष्करनेत्राय केशवायादिचक्रिणे ॥ नमः कमलकिंजल्कपीतनिर्मलवाससे ॥ १४ ॥ महाहवरिपुस्कंधधृष्टरूपाय चक्रिणे ॥
 दंष्ट्रोद्धतक्षितिधृते त्रिमूर्तिपतये नमः ॥ १५ ॥ वज्रायुधनखस्पर्शदिव्यसिंहे नमोस्तुते ॥ आधिव्याधि महाभीतिमहादुःखनिवारण ॥ १६ ॥

[illegible]

॥ ३३ ॥ होमं चाथप्रकुर्वीत क्षीराज्येनाम्रपल्लवैः ॥ आद्यंतमंत्रैः स्वाहा तैर्दशमंत्रैश्चमंत्रवित् ॥ ३४ ॥ एवं कृते ज्वराः सर्वे प्रशमं
 यांत्यशेषतः ॥ न बाधंते पुनस्तानि दुष्टादीनां परिग्रहात् ॥ ३५ ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं ज्ञानं वित्तं फलं लभेत् ॥ चातुर्थिकं तथात्युग्रं तथैव सततज्वरं ॥ यद्यच्छुभरतं लो
 तिकासमतिश्चासमतितापं सवेपथुं ॥ ३६ ॥ ऐकाहिकं द्व्याहिकं च तथा त्रिदिवसज्वरं ॥ चतुर्थिकं तथात्युग्रं तथैव सततज्वरं ॥ ३७ ॥ दोषोत्थं
 रूपात् ॥ ३८ ॥ भगंदरा तिसारांश्च मुखरोगांश्च कुष्ठरोगं तथा क्षयं ॥ कामलादींस्तथारोगान् प्रमेहांश्चातिदा
 रीं मूत्रकुच्छंश्च रोगानन्यांश्च दारुणान् ॥ चित्रादीन्निखरोगांश्च त्वगस्थं तर्बहिः स्थितान् ॥ ४१ ॥ अरुम
 पातिकाः ॥ आगंतुकाश्च ये रोगा लूता विस्फोटकादयः ॥ ४२ ॥ कफोद्भवाश्च ये रोगा ये चान्ये सान्नि
 ष्णोरुच्चारणे न तु ॥ ४३ ॥ क्षयं गच्छंस्त्वशेषास्ते च क्रेणाभिहता हरेः ॥ अच्युतानंतगोविंदनामोच्चारणभेषजात् ॥ ४५ ॥ नश्यंति
 सकलारोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहं ॥ ४६ ॥ अच्युतेति मनःपूतमनंतेति वचस्तथा ॥ गोविंदेति तनुःपूता त्वज्ञाताज्ञानपातकैः ॥ ४७ ॥
 अच्युतानंतगोविंदपरमानंदमाधव ॥ ४८ ॥ सत्यं सत्यं पुनः सत्यमुत्क्षिप्य भुजमुच्यते ॥
 वेदशास्त्रात्परं नास्ति न देवः केशवात्परः ॥ ४९ ॥ स्याचंरंजं गंवापि कृत्रिमं चापि यद्विषं ॥ दंतोद्भूतं न खोद्भूतमाकाशप्रभवं विषं
 ॥ ५० ॥ लूतादिप्रभवं यच्च विषमत्यंतदुःखदं ॥ शमं न याशु तत्सर्वं कीर्तितोसि जनार्दन ॥ ५१ ॥ ग्रहान्प्रेतग्रहांश्चैव तथा वैडाकिनी

ग्रहान् ॥ मुखमंडलिकान्धोरान्रेवतींवृद्धरेवतीं ॥ ५२ ॥ वृद्धारुयांश्चग्रहांश्चोग्रांस्तथामातृग्रहानपि ॥ बालस्यविष्णोश्चरितं
 हंतुबालग्रहानिमान् ॥ ५३ ॥ नारसिंहस्यतेहृष्ट्यादग्धायेचापियौवने ॥ सटाकरालवदनोनारसिंहोमहाबलः ॥ ५४ ॥ ग्रहान
 शेषान्तत्सर्वेषांखादखादाम्निलोचन ॥ वृद्धानांयेग्रहाःकेचिद्येचबालग्रहाःक्वचित् ॥ ५५ ॥ नारसिंहमहासिंहज्ज्वालामालोज्ज्वला
 नन ॥ असीपांदेवदेवेशधनुर्ग्रहणमोक्षणात् ॥ ५६ ॥ येरोगायेमहोत्पातायद्विपयेमहाग्रहाः ॥ अत्यंतपातसंभूतायेकौटिल्यस
 मुद्भवाः ॥ ५७ ॥ यानिचक्रभूतानिग्रहपीडाश्चदारुणाः ॥ शस्त्रक्षतेषुयेदोपाज्वालागर्दभकादयः ॥ ५८ ॥ यानिचान्यानिभू
 तानिप्राणिपीडाकराणिवै ॥ तानिसर्वाणिसर्वात्मन्परमात्मन्जनार्दन ॥ ५९ ॥ किंचिद्रूपसमास्थायवासुदेवाशुनाशय ॥ क्षि
 प्वासुदर्शनंचक्रंज्वालामालातिभीषणं ॥ ६० ॥ सर्वदुःखोपशमनंकुरुदेववराच्युत ॥ सुदर्शनमहाज्वालछिंधिछिंध्याशुवेदनां
 ॥ ६१ ॥ सुदर्शनमहाचक्रगोविंदस्यवरायुध ॥ सुदर्शनमहावेगकोटिसूर्यसमप्रभ ॥ ६२ ॥ त्रैलोक्यरक्षाकर्तात्वंदुष्टदानवमर्दन ॥
 तीक्ष्णधारमहावेगछिंधिछिंधिमहाज्वरं ॥ ६३ ॥ छिंधिछिंधिमहाव्याधिंछिंधिछिंधिमहाज्वरं ॥ छिंधिवातंचलूतांचछिंधि
 घोरंमहद्विषं ॥ ६४ ॥ रुजंदाहंचशूलंचनिमिपज्वालगर्दभं ॥ सुदर्शनस्यमंत्रेणग्रहायांतुदिशोदश ॥ ६५ ॥ ॐ नमोभगवतेभो
 भोसुदर्शनदुष्टंदारयदारयदुरितंहनहनपापंमथमारोग्यंकुरुकुरुहांहांहुंहुंफट्ठःठःहननोद्विषः ॥ त्रैलोक्यरक्षाकर्तात्वमाज्ञा
 पयजनार्दन ॥ ॐ नमोभगवतेभोभोसुदर्शनचक्रायुधायमहाशस्त्रास्त्रराजायभूतेभ्योभयंनाशयनाशयछिंधिछिंधिपरमंत्रान्प
 रयंत्रान्परतंत्रान्जारणमारणादिछेदयछेदयहुंफट्स्वाहा ॥ ॐ नमोभगवतेगरुडध्वजायएह्येहिसर्वज्वरभयंचक्रेणाछिंधिछिंधि

भिंधिभिंधिमुत्तरंखचक्रगदापद्मखड्गैः सर्वज्वरभयंहरहरनाशयनाशयमामरणमचिरेणरक्षरक्षाकर्तात्वं आज्ञापयजनार्द
 नहुंफट्स्वाहा ॥ ॐ त्रौहौसुदर्शनमहायंत्रराजधगवतांतभयंकरांछिंधिभिंधिभिंधिविदारयविदारयपरमंत्रान्परतं
 त्रान्अभिचारान्त्रासयत्रासयपरमंत्राणिदुष्टचेटककरणमारीमहामारी ग्रहवेतालपिशाचभूतप्रेतादीन्भक्षयभक्षयसर्वभूता
 इस्वाहा ॥ इतिसुदर्शनविद्या ॥ सर्वदुष्टानिरक्षांसिक्षयंयांतुविभीषया ॥ प्राच्यांरक्षप्रतीच्यांचदक्षिणोत्तरयोस्तथा ॥ ६६ ॥
 ईशान्येचतथाग्नेय्यांनैऋत्यांचमहादिशं ॥ वायव्यांसर्वभूतेभ्यःसदारक्षांकरोत्वसौ ॥ ६७ ॥ रक्षांकरोतुसर्वत्रश्रीनृसिंहःस्वर्ग
 जितैः ॥ भुविदिव्यंतरिक्षेचपार्श्वतःपृष्ठतोऽग्रतः ॥ ६८ ॥ व्याघ्रसिंहवराहेषुअग्निचोरभयेषुच ॥ रक्षांकरोतुभगवान्बहुरूपी
 जनार्दनः ॥ ६९ ॥ यथाविष्णुर्जगत्सर्वदेवासुरमानुषं ॥ तेनसत्येनसकलंदुष्टमस्यप्रशाम्यतु ॥ १७० ॥ यथाविष्णौस्मृतेसद्यः
 क्षयंयातीहपातकं ॥ तेनसत्येन० ॥ ७१ ॥ यथायज्ञेश्वरोविष्णुर्वेदांतेष्वपिगीयते ॥ तेनसत्ये० ॥ ७२ ॥ परमात्मायथावि
 णुर्वेदांतेष्वपिगीयते ॥ तेनसत्ये० ॥ ७३ ॥ यथायोगेश्वरोविष्णुर्वेदांतेष्वपिगीयते ॥ तेनसत्ये० ॥ ७४ ॥ शांतिरस्तुशुभं
 चास्तुप्रणश्यत्वसुखंचयत् ॥ वासुदेवशरीरोत्थैःकुशैःसंमार्जितोमया ॥ ७५ ॥ अपामार्जनगोविंदोनरनारायणःसदा ॥ ममा
 स्तुसर्वदुःखानांप्रशमोवचनाद्धरेः ॥ ७६ ॥ शांताःसमस्तरोगास्तेग्रहाःसर्वेविषाणिच ॥ भूतानिप्रशमंयांतुसंस्मृतेमधुसूदने
 ॥ ७७ ॥ एतत्समस्तरोगेषुभूतग्रहभयेषुच ॥ अपामार्जनकंशस्त्रंविष्णोर्नामाभिमंत्रितं ॥ ७८ ॥ यथाचक्रायुधंविष्णोर्यथाशूलं

अपामा-
 ॥२८४॥

॥३६५॥

हरस्यच ॥ यथावज्रंसुरेद्रस्यतथाविप्रकरेकुशाः ॥ ७९ ॥ एतेकुशाविष्णुशरीरसंभवाजनार्दनानग्रेस्वयमेवचागताः ॥ हतंमयादु
 ष्टमशेषमस्यस्वस्थोभवत्वेष्वचोयथाहरेः ॥ १८० ॥ शांतिरस्तुशिवंचास्तुदुष्टमस्यप्रशाम्यतु ॥ यदस्यदुरितंकिंचित्तत्क्षिसंलव
 णार्णवे ॥ ८१ ॥ स्वास्थ्यमस्यसदैवास्तुहृषीकेशस्यकीर्तनात् ॥ यतएवागतंपातंत्रैवप्रतिगच्छतु ॥ ८२ ॥ एतद्रोगादिपीडासु
 जंतूनांहितकाम्यया ॥ त्रिसंध्यंजपतेयस्तुसर्वरोगैःप्रमुच्यते ॥ ८३ ॥ विष्णुभक्तेनकर्तव्यमपामार्जनकंपरं ॥ अनेनसर्वदुःखानि
 प्रशमंयांत्यसंशयं ॥ ८४ ॥ सर्वभूतहितार्थायकुर्वीतस्मात्सदैवहि ॥ कुर्यात्तस्मात्सदैवह्यैनमइतिशक्तिबीजं ॥ ८५ ॥ यइदंधार
 येद्विद्वान्श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ॥ ग्रहास्तन्नोपसर्पतिनरोगानचराक्षसाः ॥ ८६ ॥ धन्योयशस्वीशत्रुघ्नःस्तवोयंमुनिसत्तम ॥ प
 ठतांशृण्वतांचापिददातिपरमांगतिं ॥ ८७ ॥ स्तोत्रराजमिंदनामअपामार्जनकंहरेः ॥ विष्णुभक्तेनकर्तव्यंब्रह्महत्याविनाशनं
 ॥ ८८ ॥ विष्णोःप्रीतिकरंस्तोत्रंयःपठेन्नियमेनतु ॥ तस्यतुष्यतिगोविंदोमनसाचितितंतलभेत् ॥ ८९ ॥ जन्मकोटिकृतंपापंपठ
 नादेवनश्यति ॥ गोसहस्रफलंतस्यपरंपदमवामुयात् ॥ १९० ॥ दाल्भ्योनाममहाभागःपुलस्त्योब्रह्मनंदनः ॥ तयोःसंवादसं
 भूतमपामार्जनकंपरं ॥ ९१ ॥ इतिश्रीविष्णुधर्मोत्तरपुराणेदाल्भ्यपुलस्त्यसंवादेअपामार्जनस्तोत्रसंपूर्णं ॥ ॥ ९१ ॥

॥ २८५ ॥ अथशीतलाष्टकस्तोत्रम् ॥

श्रीः ॥ आचमनादिदेशकालनिर्देशातेमुकगोत्रस्यामुकशर्मणःशरीरेउत्पन्नोत्पत्त्यमानविस्फोटकजनितदाहादिसर्वोपद्रवस्य
 जीवच्छरीराविरोधेनपरिहारार्थशीतलाष्टकस्यनवावृत्तिजपंक० आसनादि० जपकर्मसमारभे॥अस्यश्रीशीतलाष्टकस्तोत्रमंत्रस्य

श्रीरुद्रऋषिः श्रीशीतलादेवता अनुष्टुप् छंदः लक्ष्मीबीजं भवानीशक्तिः विस्फोटकपीडापरिहारार्थे जपे विनियोगः ॥ रुद्रर्षये नमः ॥
शिरसि अनुष्टुप् छंदसे नमो मुखे शीतलां बादेवतायै हृदये ॐ ह्रीं नमः शीतले देवि विस्फोटकान्नाशय नाशय तंतूच्छेदय २ दाहंश
ध्यायेत् ॥ भूतेशं भूतसैन्यैः परिवृतमनिशं कृष्णवेतालपीठे हाहा ही हीति वादैरशनिभरसहैरुहासैरुपेतं ॥ हस्तैः साहस्रसंख्यैरन
लगणसखैः साध्यदेहाधिरूढान्स्फोटान् दंदह्यमानं मुहुरहमनिशं घंटकर्णं नमामि ॥ १ ॥ घंटकर्णं महाप्राज्ञसर्वोपद्रवनाशन ॥
मसूरिकाभयं प्राश्य रक्षरक्षमहाबल ॥ २ ॥ अथ शीतला ध्यानं ॥ सजलां बुदवच्छयामारक्तमाल्यानुलेपनां ॥ तुंगस्तनां विशाला
क्षीनानालंकारभूषितां ॥ लसन्नितंबं विबाढ्यां खारूढां सुशोभनां ॥ हस्ताभ्यां मार्जनीशूर्पदधानां नम्रिकां स्मरेत् ॥ मार्जन्या
मार्जनीकलशोपेतां शूर्पां लंकृतमस्तकां ॥ ३ ॥ वंदे हं शीतलां देवीं सर्वरोगभयापहां ॥ इति ॥ स्कंद उवाच ॥ नमस्ते देवदेवेश
॥ ३ ॥ शीतले शीतले चेति यो ब्रूयादाहपीडितः ॥ विस्फोटकभवो दाहः क्षिप्रं तस्य विनश्यति ॥ ४ ॥ यस्त्वा मुदकमध्ये तु ध्या
त्वासं पूजयेन्नरः ॥ विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥ ५ ॥ शीतले तनुजान्त्रोगान् नृणां हरसि दुस्त्यजान् ॥ प्रनष्टचक्षुषां पुंसां त्वा
माहुर्जीवनौषधं ॥ ६ ॥ शीतले तनुजान्त्रोगान् नृणां त्वमेकामृतवर्षिणी ॥ ७ ॥ ग

लंगडग्रहारोगायेचान्येदारुणानृणां ॥ तेतवस्मरणादेवशीतलेयांतिसंक्षयं ॥ ८ ॥ नमंत्रोनौपधंकिंचित्पापरोगस्यविद्यते ॥
 त्वमेकाशीतलेत्रात्रीनान्यांपश्यामिदेवतां ॥ ९ ॥ मृणालतंतुसदृशीनाभिहृन्मध्यसंस्थितां ॥ यस्त्वांविंचितयेद्देवीतस्यमृत्यु
 नजायते ॥ १० ॥ इतिशीतलाष्टकं ॥ अष्टकंशीतलादेव्यायःपठेन्मानवःसदा ॥ विस्फोटकभयंघोरंकुलेतस्यनजायते ॥ श्रो
 तव्यंपठितव्यंचश्रद्धाभक्तिसमन्वितैः ॥ उपसर्गविनाशायपरंस्वस्त्ययनंमहत् ॥ शीतलाष्टकमेवेदंनदेयंयस्यकस्यचित् ॥ दा
 तव्यंचसदातस्मैश्रद्धाभक्तियुतस्यच ॥ रासभोगदर्भश्चैवखरोवैशाखनंदनः ॥ शीतलावाहनश्चैवदूर्वांकंदनक्रंदनः ॥ एतानि
 खरनामानिशीतलाग्नेतुयःपठेत् ॥ तस्यदेहेहचगेहेचशीतलानैववाध्यते ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेशीतलाष्टकंसंपूर्णं ॥ ॥ ४३ ॥

॥ २८६ ॥ अथनवचंडीशतचंडीप्रयोगः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ यजमानःशुभदिनेसपत्नीकस्तिलतैलेनकृताभ्यंगःस्नात्वासपूर्णकलशहस्तोमंडपंप्रदक्षिणीकृत्यपश्चिमद्वारे
 णप्रविश्योपविश्यदेशकालौस्मृत्वा ममेहजन्मनिदुर्गाप्रीतिद्वारासर्वापच्छांतिपूर्वकदीर्घायुर्विपुलधनधान्यपुत्रपौत्राद्यनवच्छि
 न्नसंततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभशत्रुपराजयसदभीष्टसिद्ध्यर्थममामुककार्यसिद्ध्यर्थवासनवग्रहमखानवचंडीशतचंडीसहस्र
 चंडीवास्वयंब्राह्मणद्वारावाकरिष्ये ॥ तदंगतयागणेशपूजनंपुण्याहवाचनंमातृकापूजनंनंदीश्राद्धमाचार्यादिवरणंचकरिष्ये
 इतिसंकल्प्यतानिकृत्वाआचार्यादीन्वृत्वातान्यथाविभवंवस्त्रादिनामधुपर्केणचसंपूज्यप्रार्थयेच्च ॥ तेचशतचंड्यांदश ॥ सहस्र
 चंड्यांशतं ॥ केचिदत्रग्रहजपार्थमेकमृत्विजंवरयंति ॥ अथाचार्यआचम्यदेशकालौसकीर्त्यजमानेनवृतोहमाचार्यकर्मकरि

ष्येइतिसंकल्प्ययदत्रेतिगौरसर्षपान्विकीर्यपंचगव्येनकुशोदकेनवामंडपंप्रोक्षेत् ॥ शुचीवोहव्या० आपोहिष्ठा० अपवित्रः० ॥
 पृथिवत्वया० इत्युपविश्य अनंतासनायनमः विमलासनाय० पद्मासनाय० ॥ अपक्रामंतु० इतिभूमौवामपादघातत्रयंकृ
 ततोयोनिमुद्रांप्रदर्शय्येत् ॥ श्वेताननानीलभुजाश्वेतस्तनमंडला ॥ रक्तमध्यारक्तपादानीलजंघोरुन्मदा ॥ सुचित्रज
 घनाचित्रमाल्यांबरविभूषणा ॥ चित्रानुलेपनाकांतिरूपसौभाग्यशालिनी ॥ अष्टादशभुजापूज्यासासहस्रमुजासती ॥ आशुधा
 किर्दंडश्चर्मचापंपानपात्रंकमंडलुरिति ॥ ततोवेद्यांसर्वतोभद्रमष्टदलंवाविलिख्यतत्रब्रह्मादिमंडलदेवताः संस्थाप्यबलिंदत्वात
 न्मध्येमहीद्यौरित्यादिमंत्रैः कलशंसंस्थाप्यतस्मिन्गंधपुष्पफलसर्वौषधीदूर्वापंचपल्लवससमृत्तिकास्तत्तन्मंत्रेणनिक्षिप्यवस्त्रद्वये
 नावेष्ट्यतदुपरिपूर्णपात्रंनिधायकलशेवरुणमावाह्यपूजयेत् ॥ ततःकलशेदेवताःस्मरेत् ॥ कलशस्यमुखेविष्णु० देवदानवसंवा
 देमथ्य० प्रसन्नोभवसर्वदाइतिकलशंप्रार्थयेत् ॥ तथाकलशोपरिस्थपूर्णपात्रेऋक्वस्त्रेयंत्रंलिखेत् ॥ तद्यथा ॥ मध्येत्रिकोणंत
 द्वहिःषट्कोणंतद्वाह्येवृत्तंतद्वाह्येष्टौदलानितद्वाह्येचतुर्द्वारंचतुरस्रत्रयमितिएवंयंत्रंविलिख्य तत्रपलेनतदर्धार्धेनवाष्टादशभुजां
 अष्टभुजांवासिंहारूढांसौवर्णीदेवीमूर्तैरक्तवस्त्रयुगच्छन्नामद्भुतारणप्राणप्रतिष्ठापूर्वकंप्रतिष्ठाप्यपूजयेत् ॥ तद्यथा ॥ स्वामे
 कर्पूरादियुतजलपूर्णकलशंसंपूज्यकलशस्यमुखे० इत्यादिपठित्वाधेनुमुद्रांप्रदर्श्य दक्षिणतःशंखंसंपूज्य शंखं

चंद्राकैदवत्यमित्यादिपठित्वा शंखमुद्रांप्रदश्यंशंखोदकेनात्मानंपूजाद्रव्याणिचप्रोक्षेत् ॥ अपवित्रःपवित्रोवा० ॥ पीठपूजां
 कुर्यात् ॥ देवीदक्षिणेंगुगुरुभ्योनमः पंपरमगुरुभ्यो० पंपरात्सरगुरुभ्यो० पंपरमेष्टीगुरुभ्यो० ॥ वामे गंगणपतयेनमः
 हुंदुर्गायैन० क्षंक्षेत्रपालाय० ॥ मध्येआधारशक्त्यै० मूलप्रकृत्यै० कालाग्निरुद्राय० महामंडपाय० कूर्माय० वराहाय० अ
 नंताय० भूम्न्यै० अमृतार्णवाय० रत्नद्वीपाय० हेमगिरये० नंदनोद्यानाय० मणिभूम्न्यै० रत्नमंडपाय० कल्पतरवे० रत्न
 सिंहासनाय० ॥ आग्नेय्यादिकोणेषु धर्माय० ज्ञानाय० वैराग्याय० ऐश्वर्याय० ॥ पूर्वोदिदिक्षु अधर्माय० अज्ञानाय० अवैरा
 ग्याय० अनैश्वर्याय० ऊर्ध्वब्रह्मणे० अधःअनंताय० मध्येवास्तुपुरुषाय० संसत्वाय० रंजसे० तंतमसे० मांमायायै० विंचि
 द्यायै० ॥ पूर्वोद्यष्टदिक्षु ॐ ओंकारगिरिपीठेश्वरसहितामोंकारगिरिपीठेश्वरसहितापूजयामि उड्डानपीठेश्वरसहितामुड्डान
 पीठेश्वर्येबापादुकां० मातृकापीठेश्वरसहितांमातृकापीठेश्वर्येबापादुकां० जालंधरपीठेश्वरसहितांजालंधरपीठेश्वर्येबापा० को
 ल्हगिरिपीठेश्वरसहितांकोल्हगिरिपीठेश्वर्येबापादु० पूर्णगिरिपीठेश्वरसहितांपूर्णगिरिपीठेश्वर्येबापादुकांपू० संहारगिरिपीठे
 श्वरसहितांसंहारगिरिपीठेश्वर्येबापा० कामरूपपीठेश्वरसहितांकामरूपपीठेश्वर्येबापा० ॥ पुनःपूर्वोदिचतुर्दिक्षु गंगणेशायनमः
 क्षंक्षेत्रपालाय० पांपादुकाभ्यो० बंबडुकेभ्यो० ॥ आग्नेय्यादिविदिक्षु जंजयायैन० विंविजयायैन० जंजयंत्यै० अंपपरा
 जितायै० ॥ तत्रैवअग्निमुखवेतालायनमः प्रेतवाहनवेतालाय० ज्वालामुखवेताला० धूम्राक्षवेताला० कंदाय० नालाय०
 दलेभ्यो० केसरेभ्यो० कर्णिकायै० ॥ असूर्यमंडलाय० उंसोममंड० मंवह्निमंडलाय० अंआत्मने० उंअंतरात्मने० पंपर

मात्मने० उज्ञानात्मने० ॥ ततःपूर्वे विविष्णुमायायै० चैचेतनायै० बुंबुद्ध्यै० निनिद्रायै० धुंधुधायै० ॥ दक्षिणे छांछायायै० शं
 शक्त्यै० तंतृष्णायै० क्षांक्षांशायै० जांजातयै० लंलजायै० ॥ पश्चिमे शांशायै० श्रंश्रद्धायै० कांकांतयै० लंलक्ष्म्यै० धुंधृत्यै० वुंवृ
 योगपीठात्मने० इतिपीठपूजा ॥ ततोहृदिस्थांसपरिवारांज्योतिर्मयीं महालक्ष्मीं ध्यात्वा ॥ आगच्छवरदेदेविदैत्यदर्पनिपूद
 सह ॥ इतिमंत्रौ पठित्वा दक्षिणनासारंध्रेण पुष्पांजलावानीयमूलेन मूर्तावावाहनादिमुद्रायोनिसुद्रांचप्रदश्यमूर्तेः षडंगं कु
 त्वा मूलमंत्रेण जयंती मंगलाकालीत्यनेनासनपाद्याध्यांचमनमधुपर्कान्निवेदयेत् ॥ तत्रपात्रचतुष्टयमस्त्रेण प्रक्षाल्य गंधादिनि
 क्षिपेत् ॥ तत्रपाद्येदूर्वाविष्णुक्राताश्यामाकपत्राणि ॥ अर्घ्ये गंधपुष्पाक्षतकुशाग्रसर्षपयवदूर्वाः ॥ आचमनीयेजातीफलकं को
 ललवंगानि ॥ मधुपर्के दधिमधुच ॥ ततःसुगंधितैलपंचामृतोष्णोदकतीर्थोदकैः श्रीसूक्तदेवीसूक्तसरस्वतीसूक्तैरभिषिच्य पु
 नराचमनं दत्वा षट्दुक्कलयुगकंचुकाभरणाष्टगंधविल्वपत्रनानापुष्पहरिद्राकुंकुमसिंदूरालकपरिमलद्रव्याणिसमर्प्य सहस्रं
 पुष्पाणिसमर्पयेत् ॥ अथांगपूजा ॥ दुर्गायै० पादौ० ॥ गिरिजायै० गुल्फौ० ॥ अपर्णायै० जानुनी० ॥ हरिप्रियायै०
 ऊरू० ॥ पार्वत्यै० कटिं० ॥ आर्यायै० नाभिं० ॥ जगन्मात्रे० उदरं० ॥ मंगलायै० कुक्षिं० ॥ शिवायै० हृदयं० ॥ माहेश्व
 र्यै० कंठं० ॥ विश्ववंद्यायै० स्कंधौ० ॥ काल्यै० बाहू० ॥ आद्यायै० हस्तौ० ॥ वरदायै० मुखं० ॥ सुवाण्यै० नासिकां० ॥

कमलाक्ष्यै० नेत्रे० ॥ अंबिकायै० शिरः० ॥ देव्यै० सर्वांगं० ॥ ॥ अथाष्टोत्तरशतनामानि ॥ माहेश्वर्यैः० नमः० महादेव्यै०
 जयंत्यै० सर्वमंगलायै० लज्जायै० भगवत्यै० वंद्यायै० भवान्यै० पापनाशिन्यै० चंडिकायै० कालरात्र्यै० भद्रकाल्यै० अ
 पराजितायै० महाविद्यायै० महामेधायै० महाबलायै० कात्यायन्यै० जयायै० दुर्गायै० मंदारवनवासिन्यै० अं
 आर्यायै० गिरिसुतायै० धात्र्यै० महिषासुरघातिन्यै० सिद्धिदायै० बुद्धिदायै० नित्यायै० वरदायै० वरवाणिन्यै० अं
 बिकायै० सुखदायै० सौम्यायै० जगन्मात्रे० शिवप्रियायै० भक्तसंतापसंहर्त्र्यै० सर्वकामप्रपूरिण्यै० जगत्कर्त्र्यै० जगद्धा
 त्र्यै० जगत्पालनतत्परायै० अव्यक्तायै० व्यक्तरूपायै० भीमायै० त्रिपुरसुंदर्यै० अपर्णायै० ललितायै० वेद्यायै० पूर्णचंद्र
 निभाननायै० चामुंडायै० चतुरायै० चंद्रायै० गुणत्रयविभाविन्यै० हेरंबजनन्यै० काल्यै० त्रिगुणायै० यशोधारिण्यै०
 लुमायै० कलशहस्तायै० दैत्यदर्पनिषूदन्यै० बुद्ध्यै० कांत्यै० क्षमायै० शांत्यै० पुष्ट्यै० धृत्यै० मलयै० वरायुधधरायै० धीरा
 यै० गौर्यै० शाकंभर्यै० शिवायै० अष्टसिद्धिप्रदायै० वामायै० शिववामांगवासिन्यै० धर्मदायै० धनदायै० श्रीदायै०
 कामदायै० मोक्षदायै० अपरायै० चित्स्वरूपायै० चिदानंदायै० जयश्रियै० जयदायिन्यै० सर्वमंगलमंगल्या
 यै० जगन्नयहितैषिण्यै० शर्वाण्यै० पार्वत्यै० धन्यायै० स्कंदमात्रे० अखिलेश्वर्यै० प्रपन्नार्तिहरायै० देव्यै० सुभगायै० का
 मरूपिण्यै० निराकारायै० साकारायै० महाकाल्यै० सुरेश्वर्यै० शर्वार्यै० श्रद्धायै० ध्रुवायै० कृत्यायै० मृडान्यै० भक्तव
 त्सलायै० सर्वशक्तिसमायुक्तायै० शरण्यायै० सर्वकामदायै० ॥ इत्यष्टोत्तरशतनामानि ॥ अथावरणपूजा ॥ देव्यादक्षिणे

ऐंमहाकाल्यैविच्चेनमः ॥ मध्ये ह्रींमहालक्ष्म्यैविच्चेनमः ॥ वामे क्लींमहासरस्वत्यैविच्चेनमः ॥ अभीष्टसिद्धिमेदेहिशरणागत
वत्सले ॥ भक्त्यासमर्पयेतुभ्यंप्रथमावरणार्चनं ॥ १ ॥ एवमग्रेपिद्वितीयाद्यावरणादौयथायथमूढं ॥ वामे ह्रींमहिषायनमः
दक्षिणे क्षौंसिंहायनमः पुरतः गंगणपतयेनमः ह्रीं कालायनमः पश्चात् ह्रींमृत्युवेनमः ॥२॥ षड्दलेषु ह्रीं रुद्रायनमः ह्रीं गौर्यै
नमः श्रीविष्णवेनमः श्रीलक्ष्म्यैनमः ऐं ब्रह्मणेनमः ऐं सरस्वत्यैनमः ॥३॥ तत्रैव ह्रीं हृदयायनमः ह्रीं शिरसेस्वाहा ह्रींशिखायै
वषट् ह्रीं कवचायहुं ह्रीं नेत्रत्रयायवौषट् ह्रीं अस्त्रायफट् ॥४॥ तत्रैव ह्रीं गुणगुरुभ्यो० पं परमेष्ठीगुरुभ्यो० हरीं शिरसेस्वाहा ह्रींशिखायै
राय० गणेशाय० ॥ ५ ॥ अष्टदलेषु ननंदजायै० रंरक्तदंतिकायै० शांशाकंभर्यै० हुं दुर्गायै० हरीं शिरसेस्वाहा ह्रींशिखायै
लौहद्राण्यै० क्षौंनारासिंह्यै० रःप्रौंचामुंडायै० ॥ ६ ॥ पूर्वदिदिक्षु अंसितांगभैरवाय० रं रुद्रभैरवाय० चंचंडभैरवाय० क्रौं
क्रोधभैरवाय० उंउन्मत्तभैरवाय० कंकपालभैरवाय० भींभीषणभैरवाय० संसंहारभैरवाय० ॥ ७ ॥ पुनःपूर्वादिषु लंइंद्राय०
रंअग्नये० मंयमाय० क्षंनिर्ऋतये० वंवरुणाय० संसोमाय० हंइशानाय० ॥ ८ ॥ तद्वहिः पूर्वादिषु वज्राय०
शक्त्यै० दंडाय० खड्गाय० पाशाय० अंकुशाय० गदायै० त्रिशूलाय० ॥ ९ ॥ इत्यावरणपूजा ॥ ततोमूलेनधूपदीपौद
त्वानैवेद्यमस्त्रेणाभिमंत्र्यमूलेनप्रोक्ष्यकवचेत्तावंगुठ्यपुष्पंदत्त्वाधेनुमुद्रयामृतीकृत्यमूलेननिवेद्यग्रासमुद्रांप्रदक्ष्यमध्येपानीयमु
त्तराचमनंचदत्त्वाकरोद्धर्त्तनफलतांबूलदक्षिणानीराजनपुष्पांजल्यंते यथासंभवंछत्रचामरीतनृत्यवाद्यादिसमर्प्यकूष्मांडना
रीकैलकदलीफलादिवलिंदत्वामाषभक्तकूष्मांडबलिंदत्वापूजांसमापयेत् ॥

॥ ततःकुमारीपूजा ॥ देशकालौसंकीर्त्य

शतचंडीजपांगत्वेनकुमारीपूजांकरीष्ये इतिसंकल्प्यमूलेनपङ्गकृत्वामूलमंत्रमुच्चार्य ॥ मंत्राक्षरमयीदेवीमातृणारूपधारिणी
 ॥ नवदुर्गात्मिकांसाक्षात्कन्यामावाहयाम्यहं ॥ इतिकुमारीमावाह्यथासंभवंपूजयेत् ॥ कुमार्यश्चप्रत्यहंशतंनवएकांवायथा
 शक्तिवापूज्याः॥ प्रत्यहमेकवृद्ध्यावापूजयेत् ॥ ततोब्राह्मणसुवासिनीपूजा ॥ एवंदेवीकुमार्यादिपूजाप्रत्यहंकार्या ॥ ततःसर्वेवि
 प्राःकृतांगन्यासाःशतंनवार्णमंत्रंजप्त्वाकवचांगलकीलकानिसकृज्जह्वांसप्तशतींजह्वातेरहस्यानिनवार्णशतंचजपेयुः॥ एकस्मि
 न्दिनेअनेकावृत्तौतुकवचादीनांप्रत्यावृत्तिनावृत्तिः ॥ एवमृत्विजःप्रथमदिनेएकंद्वितीयेद्वे तृतीयेत्रीणिचतुर्थेचत्वारिरूपाणी
 त्येवंजपंकुर्यात् ॥ ऋत्विजांयजमानस्यचप्रत्यहंधक्षीरमात्राशनंअशक्तौहविष्यान्नंवा ॥ प्रत्यहंसहस्रंशतंदशवाब्राह्मणान्भोजये
 त् पंचमेहिहोमः ॥ नवरात्रेतुनवम्यामेवहोमः ॥ केचित्तुअष्टम्यामारभ्यनवम्यांसमापयंति ॥ अथहोमः ॥ देशकालौस्मृ
 त्वामयाब्राह्मणद्वाराकृतस्यशतचंडीजपस्यसंपूर्णतासिद्ध्यर्थजपदशानेतिलादिमिश्रपायसद्रव्येणहोमंकरिष्येइतिसंकल्प्य ॥
 अत्रकेचित्पुण्याहवाचनमपिकुर्वति ॥ तथापूर्वोक्तकलशस्थापनंदेवतास्थापनंपूजनंचात्रैवकुर्वति ॥ ततःसनवग्रहशतचंडीज
 पदशांशहोमंकर्तुंस्थंडिलादिकरिष्ये इतिसंकल्प्यस्थंडिलमुपलिप्योल्लिख्यतत्र(शत)मंगलनामानमग्निंप्रतिष्ठाप्यसमिध्यध्याये
 त् ॥ ततःप्रागकृतंचेदिदानीमीशान्यांदिशिनवग्रहस्थापनंकृत्वातत्पूर्वतःकलशंस्थापयेत् ॥ ततोऽग्निसमीपमागत्यान्वाधानंकु
 र्यात् ॥ समिद्धयमादाय क्रियमाणेशतचंडीजपांगहोमेदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्ये ॥ अस्मिन्नन्वाहितेग्नावित्यादिच
 क्षुषीआज्येनेत्यंतमुक्त्वा आदित्यादिनवग्रहान् प्रतिद्रव्यमष्टाविशतिअष्टौवासंख्याकाभिःसमित्तिलाज्याहुतिभिः अधिदेव

ताःप्रत्याधिदेवताश्चतुःसंख्याकाभिःतैरेवद्रव्यैः गणपतिचतुष्टयंइंद्राद्यष्टौलोकपालांश्चैकैकयासमितिलाज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ म
हाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीःमूलमंत्रेणशतवारं सप्तशतीमंत्रैःजपदशांशसंख्ययापायसतिलपलाशपुष्पसर्षपपूगीफलला
रशक्त्यादिपीठदेवताःमहाकाल्याद्यावरणदेवताश्चएकैकाहुत्यापायसाज्येनयक्ष्ये ॥ नवग्रहादिभ्यःसमितिलाज्यानिहुत्वाउक्तद्रव्याणिमूलमंत्रेणशत
यजमानःइदंहवनीयद्रव्यंयथादेवतमस्तुनममेतित्यजेत् ॥ अत्राध्यायसमाप्तौउवाचस्थलेचपत्रपुष्पफलैर्होमः॥ एवंप्रधानहोमंकृत्वाआधारशक्त्यादिपीठदेवताभ्योनामभिराज्यं
वारंहुत्वासप्तशतीमंत्रैर्जपदशांशेनहुत्वापुनर्मूलमंत्रेणशतवारंजुहुयात् ॥ मूलमंत्रोनवार्णमंत्रः ॥ नवार्णमंत्रस्यकेवलज्येनैववा
पायसंचजुहुयात् तथाऐंमहाकाल्यैविच्चेइत्याद्यावरणदेवताभ्योपितथैवाज्यपायसौहोतव्यौ ॥ एवंहोमंकृत्वा स्विष्टकृदादिप्रा
यश्चित्तहोमांतंकृत्वा इंद्रादिनवग्रहक्षेत्रपालादिभ्यो माषभक्तबलींस्तत्तन्मंत्रैर्दद्यात् ॥ तत्रमंत्राः ॥ इंद्रं० इंद्रो इंद्रःसुरपतिश्चैवव
ज्रहस्तोमहाबलः ॥ शतयागाधिपोदेवस्तस्मैनित्यंनमोनमः ॥ अग्निदूतं० अग्नेयःपुरुषोरक्तःसर्वदेवमयोव्ययः ॥ धूमकेतुरनाधृष्यस्तस्मैनित्यंनमोनमः॥
लिंसमर्पयामि भोइंद्रइमंबलिंभक्षदिशंरक्षममयजमानस्यआयुःकर्ताशांतिकर्तापुष्टिकर्तापुष्टिकर्ताकल्याणकर्तावरदोभव ॥
अनेनबलिदानेनइंद्रःप्रीयतां ॥१॥ अग्निदूतं० अग्नेयःपुरुषोरक्तःसर्वदेवमयोव्ययः ॥ धूमकेतुरनाधृष्यस्तस्मैनित्यंनमोनमः॥
अग्नये० इत्यादि० ॥ २ ॥ यमायसोमं० यमश्चोत्पलपत्राक्षःकिरीटीदंडधृक्सदा ॥ लोकसाक्षीविशुद्धात्मातस्मैनित्यंनमोनमः॥

मः ॥ यमायसांगायेत्यादि० ॥ ३ ॥ मोषुणःपरापरा० निर्ऋतिस्तुपुमान्कृष्णःसर्वरक्षोधिपोमहान् ॥ खड्गहस्तोमहासत्वस्त
 स्मैनित्यं० निर्ऋतयेसांगायेत्यादि० ॥ ४ ॥ तत्वायामि० वरुणःसर्वलोकेषुपुरुषोनिम्नगाधिपः ॥ पाशहस्तोमहाबाहुस्तस्मैनि
 त्यं० वरुणायसांगायेत्यादि० ॥ ५ ॥ तववाय० सर्वप्राणात्मकोवायुःसर्वजंतुष्ववस्थितः ॥ ध्वजहस्तोमहाप्राणस्तस्मैनित्यं०
 वायवेसांगायेत्यादि० ॥ ६ ॥ आप्यायस्व० गौरोयस्तुपुमान्सौम्यःसर्वौषधिसमन्वितः ॥ नक्षत्राधिपतिःसोमस्तस्मैनित्यं०
 सोमायसांगायेत्यादि० ॥ ७ ॥ तमीशानं० ईशानःपुरुषःशुक्लःसर्वदेवाधिपोमहान् ॥ शूलहस्तोविरूपाक्षस्तस्मैनित्यं० ईशा
 नायसांगायेत्यादि० ॥ ८ ॥ आर्यगौःपृश्नि० योसावनंतरूपेणब्रह्मांडंसचरांचरं ॥ पुष्पवद्धारयेन्मूर्ध्नितस्मैनित्यं० अनंताय
 सांगायेत्यादि० ॥ ९ ॥ ब्रह्मजज्ञानं० पद्मयोनिश्चतुर्मूर्तिर्वेदावासःपितामहः ॥ कमंडलुधरोदेवस्तस्मै० ॥ ब्रह्मणेसांगायेत्या
 दि० ॥ १० ॥ नवग्रहेभ्यःसांगेभ्यइत्यादिनाग्रहेभ्योबलिंदत्वाक्षेत्रपालायदद्यात् ॥ क्षेत्रस्यपतिना० सर्वभूताधिपायक्षेत्रा
 धिपतयेशाकिनीडाकिनीभूतमेतपिशाचादिपरिवारसहितायइमंबलिंसमर्पयामि ॥ भोक्षेत्रपालइमंबलिंभक्षदिशोरक्षममयज
 मानस्यवाआयुःकर्तेत्यादि० ॥ बलिंगृह्णत्विमंदेवाआदित्यावसवस्तथा ॥ मरुतश्चाश्विनौरुद्राःसुपर्णाःपन्नगाःखगाः ॥ असु
 रायातुधानाश्चपिशाचोरगराक्षसाः ॥ डाकिन्योयक्षवेतालायोगिन्यःपूतनाःशिवाः ॥ जंभकाःसिद्धगंधर्वानागाविद्याधरान
 गाः ॥ दिक्पालालोकपालाश्चैचविघ्नविनायकाः ॥ जगतांशांतिकर्तारोब्रह्माद्याश्चमहर्षयः ॥ माविघ्नमाचमेपापंमासंतुपरि
 पंथिनः ॥ सौम्याभवंतुतृप्ताश्चभूतमेताःसुखावहाः ॥ इतिमंत्रान्पठेत् ॥ अयंबलिःशूद्रेणदुर्ब्राह्मणेनवानेयः ॥ ततोहस्तौपा

दौप्रक्षाल्याचम्य पूर्णाहुतिं जुहुयात् ॥ ह्यचिन्नुवेणद्वादशवारमाज्यंगृहीत्वानारिकेलादिचगृहीत्वा ॥ समुद्रादूर्मिं ० ३ मूर्धनं ० १ पुनस्त्वा ० पूर्णादर्विं ० ससते अग्ने ० धामंते विश्वं ० मूलमंत्रः नमो देव्यै इत्यादि मंत्राश्च ॥ ततो वसो धारं हुत्वा प्रणीता विमोकादिकर्मशेषं समाप्य मूलमंत्रेण होमदशांशेन दुग्धेन जलेन वातपर्णं कृत्वा तेनैव मंत्रेण तद्दशांशेन मार्जयेत् ॥ ततो यजमान आचार्यादीन् वस्त्राद्यैः संपूज्यते भ्योगो मिथुनानि हिरण्यं च दद्यात् ॥ तत आचार्यादिभ्यो न्येभ्यो वा कपिला गोनीलमणिश्वेता ज्येष्ठा इत्यादिभिः सुरास्त्वेत्यादिभिर्ग्रहमंत्रैश्चाभिपिंचेयुः ॥ ततो यजमानो ग्रहाणामुत्तरपूजां कृत्वा चार्थेण विसर्जने कृते ग्रहपीठदानं कृत्वा देवीपंचोपचारैः संपूज्य महाबलिं दद्यात् ॥ तत्र क्षत्रियादिनाश्वमेपछागमहिषाणामन्यतरो देयः ॥ विप्रेण तु कूष्मांडबिल्वेक्ष्वन्यतमो देयः ॥ सचेत्थं ॥ देवीद्रोणपुष्पविल्वाम्रदलजातीचंपकैः संपूज्य कर्ता उदङ्मुखः पूर्वमुखं देवीमुखं वा बलिं गंधादिनाभ्यर्च्य ॥ पशुस्त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादुपस्थितः ॥ प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणं ॥ यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयं भुवा ॥ अतस्त्वांघातयाम्यदातुरापद्मिनाशनं ॥ चामुंडा बलिरूपा यवलेतुभ्यं नमोस्तुते ॥ यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयं भुवा ॥ अतस्त्वांघातयाम्यद्यतस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥ इति बलिमभिमंत्र्य ऐं ह्रीं श्रीं इति तत्र पुष्पं क्षिप्वा ॥ रसना त्वंचंडिकायाः सुरलोकप्रसाधकः ॥ हां ह्रीं खड्ग आहुं फट् इति खड्गमन्यद्वादशस्त्रं संपूज्य ॐ कालिकालियज्ञेश्वरिलोहदंडायै नमः इति बलिं छेदयित्वा ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं कौशिकी रुधिरैणाप्यायतां इति देव्यै निवेद्य शेषं गृहीत्वा पूतनायै चरक्यै विदार्यै पापराक्षस्यै च निवेद्य ततो मापिष्टमयं शत्रुं कृत्वा खड्गेन छे

दयित्वास्कंदायविशिखायचदत्वाबलशेषरक्षोभ्योहरेत् ॥ मंत्रस्तु ॐ ह्रीं स्फुरस्फुरकुंभ २ सुनु २ गुह्य २ धनु २ मारय २
 विद्रावय २ विदारय २ कंपय २ कंपातय २ कुंतय २ पूरय २ ॐ ह्रीं ॐ हुं फट् २ हुं मर्दय २ हुं इति ॥ ततःशेषंबहिर्दद्या
 त् ॥ तत्रमंत्राः बलिगृह्णत्विमं देवा इत्यादयः पूर्वोक्ता एव ॥ ततः स्नात्वा तिलकं धृत्वा देवीं प्रार्थयेत् ॥ तत्रमंत्राः ॥ खड्गिनी
 शूलिनी घोरा ० १ शूलेन पाहि नो देवि ० ४ नमो देव्यै महादेव्यै ० ५ रूपं देहिय शो देहि भगं भगवति देहि मे ॥ पुत्रान् देहि धनं दे
 हि सर्वान् कामांश्च देहि मे ॥ महिषमिहामाये चामुंडमुंडमालिनि ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोस्तुते ॥ इति देवीसंप्रा
 र्थं गुह्यातिगुह्यगोपनीत्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि प्रसादात्तवसुंदरि ॥ इति देव्यै जपं निवेद्य ॥ कृतस्य कर्मणः
 सांगता सिद्ध्यर्थं कुमारो ब्राह्मण सुवासिनीः पूजापूर्वकं संभोज्य संकल्प्य वा न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं ब्राह्मणेभ्योभूयसीं दक्षि
 णां दत्वाग्निं संपूज्य विभूतिं धृत्वा गच्छ गच्छेत्यग्निं विसृज्य मूलमंत्रेण पुष्पेण देवीमुद्रास्य नासया हृदि प्रतिष्ठां विभाव्य षडंगं कृत्वा उ
 स्तिष्ठ ब्रह्मण ० अभ्यार ० इति मंत्रैर्विसृज्याचार्याय दत्वा मंत्रं पठेत् ॥ त्रैलोक्यमातर्देवित्वं सर्वभूतदयान्विते ॥ दानेनानेन संतु
 द्या सुप्रीता वरदा भव ॥ उत्तिष्ठ देवि चंडेशिशुभां पूजां प्रगृह्य च ॥ कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ ततोऽग्निं संपूज्य वि
 भूतिं धृत्वा गच्छ गच्छेति तं विसृज्य शतं यथाशक्ति वाचि प्रान्सं भोज्य ततः यस्य स्मृत्या ० प्रमादात्कुर्वतां कर्म ० इत्यादिजपित्वा क
 र्मेश्वरार्पणं कृत्वा सुहृद्युक्तो भुंजीत ॥ इदमेव पूजाहोमबल्यादिविधानं नवरात्रे पिज्ञेयं ॥ तत्र विशेषस्तु दशम्यां प्रातर्देवी विसर्जनं ॥
 अन्यच्च महानिबन्धेभ्यो वगंतव्यं ॥ इति संक्षेपेण नवचंडीशतचंडीसहस्रचंडीप्रयोगः ॥ ४३ ॥

श्रीः ॥ देशकालाद्युल्लिख्यममनिखिलदुरितदौर्भाग्यदुःस्वप्नमरुनिर्मितबाधाशांतिपूर्वकमायुरारोग्यधनधान्यद्विपदचतुष्पद
 शांतिपूर्वकंगोरोमतुल्यवत्सरावधिसकलभोगपरिपूर्णस्वर्गलोकप्राप्तिकामःश्रीपर० गोप्रदानमहंकरिष्ये तदंगणपतिपूजनपू
 र्वकंब्राह्मणपूजनंगोःपूजनंचक० ॥ गोत्रोच्चारपूर्वकंगोप्रतिग्रहीतारंब्राह्मणंवृत्वा ॥ तवपादोदकंतीर्थमुखेवेदाःप्रतिष्ठिताः ॥
 अर्घ्यआचमनीयंवस्त्रयशोपवीतगंधालंकारपुष्पधूपदीपान्इदमामंभोजनपर्याप्तं यथाशक्तिदक्षिणातांबूलसहितममृतरूपेणसं
 पद्यतां ॥ यदर्चनंकृतंविप्रतवविष्णुस्वरूपिणः ॥ तत्सर्वममदानस्यविष्णवेस्तुसमर्पणं ॥ इतिसंप्राथम्यंगंगपूजयेत् ॥ तत्रादौ
 न्यासः॥ शृंगमूलयोःब्रह्मविष्णून्यसामि शृंगाग्रयोःसर्वतीर्थानि० ललाटेमहादेवंन्य० ललाटाग्रेमहादेवी० नासावंशेषणमुखं०
 कर्णयोरश्विनौ० चक्षुषोःशशिभास्करो० दंतेषुवायुं० जिह्वायारुणं० हुंकारेसरस्वतीं० गंडयोःयमधर्मो० ओष्ठयोःसंध्या
 द्वयं० ग्रीवायांइंद्रं० कुक्षिदेशेरक्षांसि० उरसिसाध्यान्० चतुष्पादेषुधर्म० खुरमध्येगंधर्वान्० खुराग्रेपन्नगान्० खुरपार्श्वे
 ब्रह्मरसन्य० पृष्ठेएकादशरुद्रान्० सर्वसंधिषुवसून्० श्रोणीतटेपितृन्० लांगूलेसोमं० वालेषुआदित्यरश्मीन्० गोमूत्रेण
 गां० क्षीरेसरस्वतीं० दक्षिणर्मदां० सर्पिविहृताशनं० रोमसुत्रयस्त्रिशक्तोटिदेवान्० उदरेपृथिवीं० पयोधरेषुचतुःसागरान्
 न्यसामिइतिन्यस्य उपह्वयेसुदुधां० गौरीर्ममाय० हिंक्वती० ब्राह्मणोस्य० आयंगौः० उच्छुष्माओषधीनां० इत्यादिमं

त्रैः पूजाकार्यो ॥ सौरभेयि सर्वहिते पवित्रे पापनाशिनि ॥ गृह्णीष्वैतन्मया दत्तं पाद्यं त्रैलोक्यं वंदिते ॥ भूर्भुवः स्वः रुद्ररूपिण्यै ग
 वे नमः पाद्यं ॥ सर्वदेवमये देवि सर्वतीर्थमये शुभे ॥ गृहाणा ध्वं मया दत्तं सौरभेयिनमोस्तुते ॥ अर्घ्यं ॥ देहस्थिता सिरुद्राणीं शं
 करस्य सदा प्रिया ॥ धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥ आचमनीयं ॥ यालक्ष्मीः सर्वलोकेषु याच देवेष्ववस्थिता ॥ धेनुरूपे
 ण ॥ स्नानं ॥ आच्छादनं गेव दद्यां सम्यक् शुद्धं सुशोभनं ॥ सुरभिर्वस्त्रदानेन प्रीयतां परमेश्वरी ॥ वस्त्रं ॥ सर्वदेवमये देवि
 चंदनं चंद्रसंनिभं ॥ कस्तूरीकुंकुमाढ्यं च सुगंधिप्रतिगृह्यतां ॥ चंदनं ॥ गोः अग्रपादाभ्यां नमः आस्याय ० नासावंशाय ० नेत्रा
 भ्यां ० कर्णाभ्यां ० ककुदे ० पृष्ठाय ० पश्चिमपादाभ्यां ० सर्वांगेभ्यो नमः ॥ (अत्रापिकेचनपूर्वनिर्दिष्टमंगेषु देवतान्यासं शृंगमू
 लयोर्ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः इत्यादितत्तदेवतां चतुर्थ्यानिर्दिश्य कुर्वेति) ॥ ततो गेवलं कारान्दद्यात् ॥ शृंगभूपार्थं सुवर्णचरणभूषणा
 धरजतं भालभूपार्थमादर्शने त्रयोः कज्जलं कंठघंटां पुष्पस्रजं च सर्वावयवभूपार्थं पट्टकूलं पृष्ठे ताम्रं पुच्छे मुक्तास्रजं कुंकुमकस्तूरिकागं
 धान्सप्तधान्यानि घृतपूर्णकुंभं च परितः कल्पयेत् ॥ माल्यादीनीति पुष्पाणि ॥ गौस्त्वमादिजगन्नाथो दीपो यं प्रति ० ॥
 च्छामिमहाभागे धूपो यं प्रति गृह्यतां ॥ धूपं ॥ आनंदकृत्स्नं सर्वलोकैर्देवानां च सदा प्रियः ॥ गौस्त्वमादिजगन्नाथो दीपो यं प्रति ० ॥
 दीपं ॥ सुरभिस्त्वं जगन्मातर्देवि विष्णुपदे स्थिता ॥ सर्वदेवमये ग्रासं मया दत्तं मिमं ग्रास ॥ सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराश
 यः ॥ प्रतिगृह्णंस्त्विमं ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ॥ गो ग्रासनैवेद्यं ॥ फलतांबूलदक्षिणाः समर्घ्यं ॥ पंचगावः समुत्पन्ना मथ्यमाने
 महोदधौ ॥ तासां मध्ये तु यानं दातस्वै देव्यै नमो नमः ॥ नमस्कारः ॥ गावो ममाग्रतः संतु गावो मे संतु पृष्ठतः ॥ गावो मे हृदये नित्यं

गवांमध्येवसाम्यहं ॥ प्रदक्षिणाः ॥ हिंक्रण्वतीचसुपत्नी० ॥ इतिपुष्पांजलिः ॥ गावोममाग्रतइतिसंप्रार्थ्यकुशाक्षतान्गृहीत्वा
 गोपुच्छोदकेनतर्पयेत् ॥ गोदानांगत्वेनदेवर्षिपितृतर्पणंकरिष्ये ॥ ब्रह्मातृप्यतु विष्णुस्तु० रुद्रस्तु० शक्राद्यादेवतास्तृप्यंतु०
 ऋषयस्तु० मनवस्तु० विश्वेदेवास्तु० दिक्पालास्तु० मरुतस्तु० वसवस्तु० रुद्रास्तु० दितिपुत्रास्तु० साध्यास्तु० मरुद्गणा
 इमाः० तीर्थानि० जलदाः० नदाः० मनुष्याः० पिशाचाः० पशवः० दिव्यदानवाः० दिव्यादित्याः० योगिन्यः० सरितः०
 धराः० देवयोनयः० ओषधयः० दिग्गजाः० दिक्पालाः० अनिरुद्धः० चलाः० जंतवः० स्थावराः० जंगमास्तृप्यंतु ॥ अ
 थोत्तरीयेणसनकादींस्तर्पयेत् ॥ सनकस्तृप्यतु सनंदनः सनातनः सनत्कुमारः कपिलः आसुरिः पंचशिखाः बर्हिपदः ॥ य
 मंतर्पयामि धर्मराजं अंतकं वैवस्वतं कालं नीलं परमेष्ठिनं औदुंबरं दम्भं सर्वभूतक्षयं वृकोदरं चित्रगुप्तं तर्पयामि ॥ य
 प्राचीनावीतीस्वपितृंस्तर्पयेत् ॥ ततः आयुर्मेतर्पयामि प्राणं मे इति यथालिंगमंगानि स्पृशेत् ॥ इमां गारुद्रदैवत्यां दोग्ध्रीं सवत्साम
 व्यं गं सर्वाभरणभूषितां गंधाद्युपचारैः पूजितां कृतसंकल्पसिद्ध्यर्थं महाविष्णुप्रीत्यर्थं तुभ्यमहंसंप्रददे ॥ गौस्तारयतु पुण्यं वर्धतां
 शांतिरस्तु पुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु अविघ्नमस्तु आरोग्यमस्तु शिवं कर्मास्तु कर्मसमृद्धिरस्तु धर्मसमृद्धिरस्तु अहरहरभिवृद्धिर
 स्तु कल्याणाभ्युदयोस्तु ॥ यज्ञसाधनभूताया विश्वस्याधौ घनाशिनी ॥ विश्वरूपधरो देवः प्रीयताम नयागवा ॥ अनेन रुद्रस्वरू
 पिणी गोप्रदानेन महाविष्णुः प्रीयतां ॥ आगावो अगमन्नितिवर्गपठन्प्रदक्षिणां कुर्यात् ॥ स्वस्त्यस्तु दीर्घं ॥ शिवा आपः संतु सौम

नस्यमस्तुअक्षतंचारिष्टंचास्तु ॥ दानस्यप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिदंयथाशक्तिसुवर्णरुद्रदैवत्यंविष्णुस्वरूपिणेगोप्रतिग्रहीत्रेब्राह्मणाय
तुभ्यमहंसंप्रददे नमम ॥ विप्रोदेवस्यत्वेतिप्रतिगृह्य कइदंकस्माअदादितिकामस्तुतिंपठेत् ॥ ततोविप्रंप्रार्थयेत् ॥ त्वंसर्वदे
वगणमंदिरसर्वभूतविश्वेश्वरत्रिपथगोदधिपर्वतानां ॥ तद्दानशक्तिशलटीकृतपापकोटिःप्राप्तोस्मिनिर्वृतिमतीवपरानंतोस्मि ॥
ततोभूरिदक्षिणांदत्वाकर्मेश्वरार्पणंकुर्यात् ॥ इतिसामान्यगोप्रदानविधिः ॥ ४३ ॥ ॥ ४३ ॥

॥ २८८ ॥ अथवृषभदानप्रयोगः ॥

श्रीः ॥ आचम्यदेशकालौनिर्दिश्यामुकगोत्रस्यामुकशर्मणोममसकलारिष्टनिरसनपूर्वकामुकफलसिद्ध्यर्थंवृषभदानंकरिष्ये त
दंगतयाब्राह्मणपूजनंवृषपूजनंचक० ॥ प्रतिग्रहीतारंब्राह्मणंवृत्वाश्रीविष्णुस्वरूपिणेब्राह्मणायनमइदंपाद्यमित्यादिसंपूज्यततो
वृषभंपूजयेत् ॥ तत्रादौवृषांगेन्यासः ॥ शिरोमध्येमहादेवंन्यसामि ललाटेमहादेवीं दक्षिणश्रृंगमूलेविष्णुं वामश्रृंगमूलेब्रह्मा
णं शृंगग्रेसर्वतीर्थानि नासाग्रेपण्मुखं दंतेषुसर्ववायून् जिह्वायांवरुणं हुंकारेसरस्वतीं गंडयोर्यमं ओष्ठयोःसंध्याद्वयं ग्रीवा
यामिंद्रं कुक्षिदेशेरक्षांसि उरसिसाध्यान् चतुःपादेषुधर्मं खुरमध्यगंधर्वान् खुराग्रेषुपन्नगान् खुरपार्श्वेष्वप्सरसः पृष्ठेएकाद
शरुद्रान् सर्वसंधिषुवसून् श्रोणीतटेपितृन् लांगूलेसोमं वालेष्वादित्यरश्मीन् गोमूत्रेगंगां उदरेपृथ्वीं रोमसुत्रयस्त्रिशत्कोटि
देवान् इतिदेवतान्यासंकृत्वातस्यैवांगेषुमंत्रन्यासंकुर्यात् ॥ इषेत्वोज्जैत्वामूर्ध्वेनमः इमारुद्रायस्थिरधन्वनेशशांकाय नमस्तेरु
द्रमन्यवेचक्रांगाय सहस्राणिसहस्रधाललाटाय विभ्राड्बृहल्यिबतुदक्षिणेनत्राय त्र्यंबकंयजामहेवामनेनत्राय मानस्तोकेनासि

कायै अवतत्यधनुःमुखाय नीलग्रीवद्वयंकंठाय मर्माणि ते बाहुमूलाभ्यां समिधाग्निबाहुभ्यां नमो वः किरिकेभ्यो हृदयाय हिर
 ण्यगर्भः समनाभ्यै मीढुष्टमकट्यै मानोमहांत ऊरुभ्यां उदुत्यं जातजंघाभ्यां इमारुद्राय जानुभ्यां रक्षोहणं गुदाय वृष्णस्तेवृ
 ष्यान्महादेवप्रियः सदा ॥ संप्रदानेन चैवास्वममशांतिकरो भवेत् ॥ भूर्भुवः स्वः रुद्रदेवत्याय वृषभायेदं पाद्यं ॥ शिवस्त्वष्टरिहा गहि० वृषभो धुर्यएव
 मंत्रः सर्वत्र ॥ गवामंगेषु तिष्ठति भुवनानि चतुर्दश ॥ यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च ॥ अर्घ्यं ॥ धर्मस्त्वं वृषरूपेण जग
 दानंदकारक ॥ अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ आचमनीयं ॥ गावः सुरभयो नित्यं गावो गुग्गुलुसंनिभाः ॥ गावः प्र
 तिष्ठाभूतानां गावः शरणमुत्तमं ॥ स्नानं ॥ आच्छादनं गवे दद्यात्सम्यक् शुद्धं सुशोभनं ॥ वृषभो वस्त्रदानेन प्रीयतांशं करप्रियः ॥
 ततो लंकारान् शृंगयोः सुवर्णचरणेषु रजतं भाले आदर्शसुवर्णवानेन त्रयोरलङ्घ्यं कंठे घंटां चामरं च पृष्ठे ताम्रपुच्छे मौक्तिकं विलेपना
 र्थं कुंकुमकस्तूर्यादिप्रावरणार्थं पट्टकूलं इति शक्त्या यथासंभवमर्पयेत् ॥ सर्वाभावे हिरण्यं ॥ मालतीचंपकादीनि माल्यानि वृषभे
 भसत्तम ॥ धूपं ॥ आनंदकृत्सर्वलोके देवानां च सदा प्रियः ॥ सर्वो धकारनाशाय दीपो यं प्रतिगृह्यतां ॥ दीपं ॥ आहारेणास्त्रि
 लालोका जीवंति प्रभवन्ति च ॥ अतः समर्पयेत्तुभ्यमहारं वृषसत्तम ॥ नैवेद्यं ॥ तांबूलं दक्षिणां च समर्घ्यं ॥ वर्षणाद्भर्मकामानां

वृषोलोकेनुगीयते ॥ तस्मात्पूरयमेकामान्धर्मोश्चवृषस्तम ॥ मंत्रपुष्पं ॥ वृषोसिभगवन्धर्मश्चतुष्पादःप्रकीर्तितः ॥ नमामि
 तमहंभक्त्यासमांरक्षतुसर्वतः ॥ नमस्कारं ॥ आगावोअगमन्निप्रदक्षिणां ॥ ऋषभंमेतिपंचर्चस्ववृषभोनुष्टुबंल्यामहापंक्तिः
 उपस्थानेवि० ॥ इत्युपस्थाय ॥ धर्मस्त्वंवृषरूपेणजगदानंदकारक ॥ अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतःपाहिसनातन ॥ इतिप्रार्थ्यस्वयं
 प्राञ्जुखः प्रतिग्रहीतारमुदञ्जुखमुपवेश्यवृषस्यदक्षिणखुरंस्पृष्ट्वा ॥ स्वस्त्यस्तुदीर्घमायुःशांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु ॥ धर्मस्त्वंवृष
 रूपेण० ॥ इमंवृषंरुद्रदैवतंयथाशक्त्यलंकृतंममामुकफलसिद्ध्यर्थममुकगोत्रायामुकशर्मणेमुकशाखिनेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रद
 दे नममइतिसकुशाक्षतोदकंतद्धस्तेक्षिपेत् ॥ ब्राह्मणोदेवस्यत्वेतितंप्रतिगृह्यदक्षिणखुरंस्पृष्ट्वाकइदंकस्माअदादितिमंत्रंपठेत् ॥
 ततोदातासुवर्णैरजतंवायथाशक्तिदक्षिणात्वेनदत्त्वा ऋषभंमेतिपंचर्चनवृषभंप्रदक्षिणीकृत्यब्राह्मणेननीयमानेवृषेशतपदानित
 मनुब्रज्यपुनःस्वस्थानमागत्य कर्मसंपूर्णतावासयेब्राह्मणेभ्योदक्षिणांदद्यात् ॥ इतिवृषभदानविधिः ॥ ४९ ॥

॥ २८९ ॥ अथमहिषीदानप्रयोगः ॥

श्रीः ॥ देशकालोत्कीर्तनांतेऽमुकशर्मणोममापमृत्युनाशपूर्वकंपित्तज्वरादिपीडानिरासेनसद्यआरोग्यावासिद्वारायमात्मकश्री
 विष्णुप्रीतिकामोहयमदैवत्यंमहिषीदानंकरिष्ये ॥ गणेशंसंपूज्याचार्यवृणुयात् ॥ आचार्यःस्थंडिलकरणाद्यग्निप्रतिष्ठांतेभेरी
 शान्यांगणानांत्वेतिगणपतिं यमायसोममितियमं परंमृत्योइतिमृत्युचसंस्थाप्यषोडशोपचारैःसंपूज्यतदीशान्यांमहीद्यौरित्या
 दिविधिनाकलशं संस्थाप्यान्वादध्यात् ॥ चक्षुषीआज्येनेत्यंतेत्रप्रधानंगणपतियमंमृत्युचतत्तन्मंत्रैःप्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्या

काभिराज्यप्लुततिलाहुतिभिःशेषेणस्विष्टकृतमित्यादिहोमशेषं समाप्यकर्ता तिलतैलेनयमंतर्पयेत् ॥ महिषीदानांगत्वेनापमृ
 त्युपरिहारार्थं यमतर्पणं करिष्ये ॥ यमतर्पयामि धर्मराजं मृत्युं अंतकं वैवस्वतं कालं सर्वभूतक्षयं औदुंबरं दध्नं नीलं परमेष्ठिनं
 योगैरमृतं कंठेसिद्धं उदरेहरिद्रां शृंगयोः सुवर्णं खुरेपुरौप्यं कंठे घंटां कृष्णवस्त्रं च पृष्ठे रक्तवस्त्रं लांगूले रौप्यं ललाटे सुवर्णं तिलकं कंठे
 पुष्पमालामित्यादि ॥ ततो महिष्याः समंतादष्टदिक्ष्वष्टौ दीपान्संस्थाप्य पूर्वलवणं आग्नेय्यां गुड्याम्यां कार्पासनैर्ऋत्यां नवनीतं प
 हीतारंवृत्वा तदंगेयमध्यायेत् ॥ महिषारूढं नृकपालहस्तदंडायुधं भस्मसितांगयष्टिं ॥ ततो गोत्रोच्चारपूर्वप्रतिग्र
 पित्वं ॥ असृग्वसाचर्चितकृष्णकायं कर्पीद्रपंचाननचर्मवस्त्रं ॥ विभीतकस्थं त्वतिभीमरूपं कालंतवांगे विनियोजयिष्ये ॥ महा
 कालत्वमृषिरसि प्राणोत्क्रांतिशक्तिमानसि अतस्त्वां प्रतापिनं बहुमानये एवं भूतस्त्वमिहा गच्छे ह तिष्ठ पूजां गृहाण सुप्रसन्नो वरदो म
 मापद्विनाशको भवेति ब्राह्मणशरीरे यमं भावयित्वा ॥ भो भो कालजगद्भूतयममहिषवाहन ॥ दिगीश प्राणराजेंद्रदंडहस्तधनुर्धरा ॥ महा
 ब्रह्माच्युतमहेशानां सेनाधीश्वरवल्लभ ॥ यज्ञभुग्दक्षिणेयस्त्वं सर्वभोगसुखावह ॥ गृहीष्वमहिषीदानं जीवनाय मम प्रभो ॥ पंचभू
 तात्मके देहे स सधा तु समन्विते ॥ विप्रस्यागत्य तिष्ठेह संमुखो भव मे सदा ॥ ध्यानं ॥ यमाय सोममित्यासनं ॥ तेनैव पाद्यं ॥ सुगन्धः
 पंथामित्यर्घ्यं ॥ यमाय मधुमत्तममित्याचमनीयं ॥ यस्मात्त्वं सर्वधर्माणां मंगलानां च मंगलं ॥ महाकालजगद्भूतधर्मराजनमो

स्तुते ॥ स्नानं ॥ कामरूपकरालास्यकृतांतकरुणानिधे ॥ प्रेतराजशिरोरत्नसुखंदेहिनमोस्तुते ॥ इतिवस्त्रं ॥ देवदानवगंधर्वदक्षिणःसरितांपते ॥ सूर्यादिखेचराणांचजीवितेशनमोस्तुते ॥ इत्युपवीतं ॥ कालरूपकरालास्यमहादंष्ट्रसुरप्रिय ॥ शबलाशमयित्रैर्द्रजीवितेशनमोस्तुते ॥ गंधं ॥ कृतांतधर्मराजैर्द्रमृत्योतकविमर्दन ॥ प्रलयान्निसमाभासदक्षिणेशनमोस्तुते ॥ रक्तचंदनं ॥ धर्मराजकरालास्यपुण्यपापविमर्दन ॥ याम्येशमहिषारूढस्रजंचप्रतिगृह्यतां ॥ पुष्पमालां ॥ विद्युत्कपिशकेशाग्रकोकिलांजनसंनिभ ॥ दक्षिणेशसुरश्रेष्ठधूपोयंप्रतिगृह्यतां ॥ धूपं ॥ तप्तहाटककेशाग्रजटिलारक्तलोचन ॥ नंद्यावर्तकवद्धर्णश्राद्धदेवनमोस्तुते ॥ दीपं ॥ महाकालमहाबाहोजगत्प्राणविनाशन ॥ धर्मालयतपोराशेनैवेद्यंप्रतिगृह्यतां ॥ नैवेद्यंमाषाक्षमामांनवा ॥ विप्रवर्यजगद्धस्तकालांतकशरीरग ॥ कालरूपमहादेवधर्मराजनमोस्तुते ॥ इत्याच्छादनं ॥ शश्वदेतित्वयाज्ञसोधातादेवत्वदाज्ञया ॥ ब्रह्माच्युतमहेशैद्रैःस्थीयतेचतवाज्ञया ॥ सर्वालंकारान् ॥ दिगंतरमहाराजसर्वभूतक्षयांतक ॥ शारूरूढशवाधीशमांसशोणितभक्षक ॥ दंडहस्तपरंमृत्योर्धर्मराजनमोस्तुते ॥ नमस्कारः ॥ ब्राह्मणप्रार्थना ॥ प्रेतास्थिचीवसंभारंदधच्चैवतुमस्तके ॥ पवित्रपुरुषांत्राणांशिरसांकृतभूषण ॥ विष्टपत्रयसंस्थानांजीवानानाशकृत्प्रभो ॥ अलक्ष्यंसर्वभूतानांब्रह्माच्युतपिनाकिनां ॥ कश्यपान्निवसिष्ठादिब्रतिनांपरमर्षिणां ॥ वराहगर्गसत्वानामलक्ष्योगणितैरपि ॥ अरूपस्त्वव्ययोनादिर्विदानंमोक्षवस्तुनः ॥ मदीयंजीवितंकालत्वमेवत्रातुमर्हसि ॥ अतोदानंकरिष्येहंमहिष्याःकरुणानिधे ॥ अनेनयमःप्रीयतां ॥ अथमहिषीपूजा ॥ नाममंत्रेणव्याहृतिभिश्चऋप्रेहिपथिभिरितिमंत्रेणमहिषीषोडशोपचारैःपूजयेत् ॥ अर्घ्ये

विशेषः ॥ अपमृत्युहरेदेविकालरात्रिस्वरूपिणि ॥ मातुत्रायस्वमहिषिगृहाणार्घ्यं ० इत्यर्घ्यं ॥ महिष्यामुखेकार्पासबीजानि
 पिण्याकंचदत्वामार्थयेत् ॥ शृंगतःकालरूपेत्वंमुखतोमृत्युरूपिणि ॥ गाधिपुत्रकृतेदेविअकालमरणापहे ॥ धर्मराजप्रियेदेवि
 महिषासुरमातृके ॥ यत्पुत्रोधर्मराजेनद्रष्टुंदानवराक्षसान् ॥ एकःशक्तमोवीक्ष्यकृतंवाहनमात्मनः ॥ सात्वंप्रसीदकल्याणि
 मृत्योर्हृदयनंदिनि ॥ विश्वामित्रकृतेदेविलोकोपकृतयेक्षितौ ॥ यज्ञसंसिद्धयेचात्रतस्यैमहिषितेनमः ॥ राजात्वंसर्वधर्माणांजगत्संहारकारकः ॥ स्वदानपरिसंतुष्टःप्रयत्नाद्रक्षकत्वजं ॥ लवणाद्युपहारस्थांसप्तधा
 लरूपेममप्रिये ॥ संदेहंहरदानान्मेमोक्षयस्वार्तिमागतं ॥ रक्तपुष्पस्रजारक्तवासोभिःकृतभूषणं ॥ जननीमहिषस्यत्वंका
 न्ययुतांतथा ॥ पिण्याकराशिसंभक्ष्यांयथाशक्त्याह्यलंकृतां ॥ महिषीधर्मराजायदास्यामिप्रीतिहेतवे ॥ प्राणदापानदाहेतिर्वचोदाव्यानदापरा ॥
 राजात्वंसर्वधर्माणांजगत्संहारकारकः ॥ स्वदानपरिसंतुष्टःप्रयत्नाद्रक्षकत्वजं ॥ प्राणदापानदाहेतिर्वचोदाव्यानदापरा ॥
 आभिस्तुहेतिभिर्धर्मजीवितंतोषणंपरं ॥ ऋत्विजंरक्षराजैर्द्रधर्मोस्माकंप्रगृह्यतां ॥ ततोदापानदाहेतिर्वचोदाव्यानदापरा ॥
 प्यकांस्यपात्रंकरेधृत्वामहिष्याःपृष्ठदेशेदानंकुर्यात् ॥ अमुकगोत्रोमुकशर्माहं ॥ इन्द्रादिलोकपालानांयाराज्यमहिषीशुभा ॥
 महिषीदानमाहात्म्यात्सास्तुमेसर्वकामदा ॥ यमराजस्यमाहात्म्येयस्यायुःसुप्रतिष्ठितं ॥ महिषासुरस्यजननीसास्तुमेसर्वकाम
 दा ॥ इमौमंत्राबुच्चार्य ॥ (दानेमंत्रविशेषोयथा ॥ यद्वाहिष्ठंतदग्नयेवृहदितिमंत्रः ॥ तंमृत्युभयभीतंमामरणात्त्वंसमुद्धर ॥
 विप्रैर्द्रवेदवेदांगपवित्रकरुणाकर ॥ गृहाणमहिषीगृष्टिसवत्वांस्वर्णभूषितां ॥ इयामांसुनेत्रांसुश्रृंगीमंगैःसंपूर्णविग्रहां ॥ पय
 स्विनीसुशीलांचदरिद्रतिमिरापहां ॥ हेमश्रृंगीरौप्यसुरांकांस्यधंदासमन्वितां ॥ रौप्यलांगूलसंयुक्तांताम्रदोहनसंयुतां ॥ स

मंताद्दीपसंयुक्तांसप्तधान्यसमन्वितां ॥ महिषीवत्ससंयुक्तांसुशीलांचपयस्विनीं ॥ नीलवस्त्रावृतांचाहंदास्येमृत्युहरायच ॥
 यमवाहनंमहिषीमृत्युरूपेणसंस्थिता ॥ सर्वव्याधिहरानित्यमतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ सरलंसजलंशृंगंधृत्वाविप्रकरेर्पयेत् ॥ कां
 स्यपात्रस्थितेपाणौदद्यादानंसदक्षिणं ॥ मृत्युरूपांगृहाणेमांमहिषीद्विजसत्तम ॥ मृत्योःसन्नाहिमांधोराद्गच्छत्वयत्रकुत्रचि
 त् ॥) अमुकप्रवरगोत्रायामुकशखिनेमुकशर्मणेब्राह्मणायइमांमहिषींसवत्सांस्वर्णशृंगीरौप्यखुरांताम्रपात्रदोहनयुतांधंदाभ
 रणोपेतांअष्टौदिक्षुदीपयुतांलवणादिसप्तधान्योपेतांयमैवत्यांतुभ्यमहंसंप्रददेनममेतिवदेत् ॥ देवस्यत्वा०ब्राह्मणःकइदंक
 स्माअदादितिपठेत् ॥ दानस्यप्रतिष्ठार्थंदक्षिणांदत्वातंप्रार्थयेत् ॥ स्वामिन्जगद्गुरोर्ब्रह्मन्मदीयंयदुपाजितं ॥ दुष्कृतंदुरितं
 मृत्युबंधनंचार्जितंमया ॥ शत्रुजंविषजंरोगंशोकजंविहादियत् ॥ पीडापमृत्युविघ्नानिगृहीत्वागम्यतांद्विज ॥ मृत्युरूपगृ
 हाणेमांमहिषींद्विजसत्तम ॥ मृत्योश्चन्नाहिमांधोराद्गच्छत्वंचस्वमाश्रमं ॥ ततोबहिर्द्विजंगमयित्वाशांतापृथिवीतिपथिजलं
 सिंचेत् ॥ पुनःपूर्ववत्तैलेनयमतर्पणंकुर्यात् ॥ ततःकांस्यपात्रस्थंनिरीक्षिताज्यंदत्वा ॥ गोभूतिलहिरण्याज्यवासोधान्यगुडा
 निच ॥ रौप्यंलवणमित्याहुर्दशदानान्यनुक्रमಾದितिदशदानानिदत्वाआचार्यायदक्षिणामन्येभ्यश्चभूयसींदत्वा ॥ अनेनय
 थाशक्त्यनुष्ठितेनमहिषीदानाख्येनकर्मणाश्रीपरमेश्वरःप्रीयतां ॥ इतिमहिषीदानप्रयोगः ॥ ११ ॥ ॥ ११ ॥

॥ २९० ॥ अथमेषदानप्रयोगः ॥

श्रीः ॥ विधानपंक्तौ चंद्रानुकूल्यदिनेविधिज्ञानाहूयदेशकालौनिर्दिश्यामुकगोत्रस्यामुकशर्मणोममपूर्वोपाजितदुरितपापोद

॥३७७॥

शेषदानः ॥३६०॥

1156311

रवृतरम्यं सालंकारं सदक्षिणं ॥ चित्रवस्त्रावृतं चाहं दास्ये मृत्युपशांतये ॥ कृशानुवाहनो मे षोमृत्युरूपेण संस्थितः ॥ सर्वव्याधि
 हरो नित्यमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ विप्राय वेदविदुषे इति मे त्रेण सरस्वजलकरः स्तननाभिमध्य भागं स्पृष्ट्वा विप्रकरेर्पयेत् ॥ कर्त्रा मूर्ध्नि
 मे पंघुत्वादद्यात् ॥ मृत्युरूपं गृहाणे मे मेषं त्वं विप्रसत्तम ॥ मृत्योः संत्राहि मां घोराद् दृच्छ त्वं यत्र कुत्रचित् ॥ इति स मे षं द्विजंगमये
 त् पथि चोदकं निषिंचेत् ॥ मेषप्रतिग्रहीतु ब्राह्मणमुखावलोकनं व्रजेत् ॥ ततो यमतर्पणं कुर्यात् ॥ यमतर्पयामि मृत्युं अंतकं
 नैव स्वतं कालं सर्वभूतक्षयं औदुंबरं दध्नं नीलं परमेष्ठिनं वृकोदरं चित्रं चित्रगुप्तं तर्पयामीति संतर्प्य रूपं रूपमिति मे त्रेणानि
 रीक्षितमाज्यं दत्वा शक्तौ गोभूतिलहिरण्याज्यवासो धान्यगुडरौप्यलवणेति दशदानानि कार्याणि ॥ संभवे मृत्यौ लोहदंडं दद्या
 त् ॥ यथाशक्ति दक्षिणामन्येभ्यो दत्वा विप्रैर्वैदिकपौराणमंत्रैः स्थापितकलशोदकेनाभिषिक्तो यजमानस्तेभ्यः श्रेयः संपाद्य देव
 ताविसर्जनादिकृत्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् ॥ २९३ ॥ अथ ग्रहणशान्तिः ॥ यस्य त्रिजन्मनक्षत्रे ग्रस्येते शशि
 त् ॥ यथाशक्ति दक्षिणामन्येभ्यो दत्वा विप्रैर्वैदिकपौराणमंत्रैः स्थापितकलशोदकेनाभिषिक्तो यजमानस्तेभ्यः श्रेयः संपाद्य देव
 ताविसर्जनादिकृत्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् ॥ २९३ ॥ अथ ग्रहणशान्तिः ॥ यस्य त्रिजन्मनक्षत्रे ग्रस्येते शशि
 त् ॥ यथाशक्ति दक्षिणामन्येभ्यो दत्वा विप्रैर्वैदिकपौराणमंत्रैः स्थापितकलशोदकेनाभिषिक्तो यजमानस्तेभ्यः श्रेयः संपाद्य देव
 ताविसर्जनादिकृत्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् ॥ २९३ ॥ अथ ग्रहणशान्तिः ॥ यस्य त्रिजन्मनक्षत्रे ग्रस्येते शशि

श्री ॥ मात्स्ये ॥ होरायां ग्रस्येते यस्य नक्षत्रे वानि शाकरः ॥ प्राणसंदेहमासाद्य भवेद्ग्रहणसंभवः ॥ पूर्वमेवोपरागस्य समा
 भास्करौ ॥ तज्जनानां भवेत्पीडाये जनाः शांतिवर्जिताः ॥ यस्य राशिसमासाद्य भवेद्ग्रहणसंभवः ॥ पूर्वमेवोपरागस्य समा
 पधिसमन्वितं ॥ चंद्रोपरागं संप्राप्य कृत्वा ब्राह्मणवाचनं ॥ संपूज्य चतुरो विप्रान् शुक्कमाल्यानुलेपनैः ॥ राजद्वारप्रदेशाच्च मृ
 नीयौषधादिकं ॥ स्थापयेच्चतुरःकुंभान् अतः सागरानिव ॥ गजाश्वरथ्यावल्मीकसंगमाद्भद्रगोकुलात् ॥ राजद्वारप्रदेशाच्च मृ

दमानीयनिक्षिपेत् ॥ पंचगव्यंपंचरत्नंपंचत्वक्पंचपल्लवं ॥ रोचनंपद्मकंशंखंकुंभंरक्तचंदनं ॥ शुक्तिस्फटिकतीर्थंबुसितसर्ष-
 पगुग्गुल्फं ॥ मधुकंदेवदारुंचविष्णुक्रांतांशतावरीं ॥ बलांचसहदेवींचनिशाद्वितयमेवच ॥ एतत्सर्वविनिक्षिप्यकुंभेष्वावा-
 हयेत्सुरान् ॥ सर्वसमुद्राःसरितस्तीर्थांनिजलदानदाः ॥ आयांतुयजमानस्यदुरितक्षयकारकाः ॥ गंगेचयमुनेचैवेति ॥ यो
 सौवज्रधरोदेवआदित्यानांप्रभुर्मतः ॥ सहस्रनयनश्चंद्रोऽग्रहपीडांव्यपोहतु ॥ मुखंयःसर्वदेवानांसप्तार्चिरमितद्युतिः ॥ यो
 क्षात्रीलांजनसमप्रभः ॥ खड्गहस्तोतिर्भीमश्चग्रहः ॥ यमश्चंद्रोपरागोत्थांग्रहपीडां ॥ चंद्रो
 हतु ॥ प्राणरूपोहिलोकानांसदाकृष्णमृगप्रियः ॥ वायुश्चंद्रोपरागोत्थांग्रहः ॥ चंद्रोपरागकलुषंवरुणोमेव्यपो
 द्रोपरागदुरितंधनदोमेव्यपोहतु ॥ योसाविंदुधरोदेवःपिनाकीवृषवाहनः ॥ चंद्रोपरागपापानिनिवारयतुशंकरः ॥ चं-
 यानिभूतानिस्थावराणिचराणिच ॥ ब्रह्मविष्ण्वर्करुद्राश्चदहंतुममपातकं ॥ एवमावाहयेत्कुंभान्मंत्रैरेभिश्चवारुणैः ॥ त्रैलोक्ये
 वतथामंत्रान्स्वर्णपट्टेविलेखयेत् ॥ तान्नपट्टेथवालिल्यनववस्त्रेतथैवच ॥ मस्तकेयजमानस्यनिदधुस्तेद्विजोत्तमाः ॥ एताने
 न्द्रव्यंसंयुक्तानारूपसमन्वितान् ॥ गृहीत्वास्थापयेद्गूढंभद्रपीठोपरिस्थिते ॥ पूर्वोक्तैरेवमंत्रैश्चयजमानेद्विजोत्तमाः ॥ कलशा
 भिषेकततःकुचुर्मंत्रैर्वारुणसूक्तैः ॥ ततःशुक्लांबरधरःशुक्लमाल्यानुलेपनः ॥ आचार्यवरयेत्यश्वात्स्वर्णपट्टंनिवेदयेत् ॥ आचा-
 र्येदक्षिणांदद्याद्गोदानंचस्वशक्तिः ॥ होमंचैवप्रकुर्वीततिलैर्व्याहृतिभिस्तथा ॥ निवृत्तेग्रहणेसर्वब्राह्मणेभ्योविशेषतः ॥ दा

नंचशक्तितोदद्याद्यदीच्छेदात्मनोहितं ॥ सूर्यग्रहेसूर्यनामयुक्तान्मंत्रांश्चकीर्तयेत् ॥ अनेनविधिनायस्तुग्रहणेस्नानमाचरेत् ॥
 नतस्यग्रहणेदोषःकदाचिदपिजायते ॥ इतिग्रहणशांतिः ॥ ॥ ६३ ॥

॥ २९२ ॥ अथग्रहणेदानादि ॥

श्रीः ॥ तत्रग्रहसर्शकालेस्नानंमध्येहोमःसुरार्चनंश्राद्धंचमुच्यमानेदानंमुक्तेस्नानमितिक्रमः ॥ तत्रस्नानविधिर्होमश्चोपरिष्ठा
 न्निर्दिष्टएव ॥ पूजाश्राद्धादिनित्यवत् ॥ ग्रहणमध्येपिकालेसंध्योपासनंकार्यं ॥ अत्रगोभूहिरण्यधान्यादिदानंमहाफलं ॥
 अनिष्टेग्रहणेगार्द्युक्ताशांतिःकार्याअथवाबिंबदानंकार्यंतद्यथा ॥ चंद्रग्रहेरजतमयंचंद्रबिंबसुवर्णमयंनागबिंबंचकृत्वा सूर्य
 ग्रहेसौवर्णसूर्यबिंबंनागबिंबंचकृत्वाघृतपूर्णैताम्रपात्रेकांस्यपात्रेवानिधायतिलवस्त्रदक्षिणासाहित्यंसंपाद्य ॥ अमुकगोत्रस्य
 अमुकशर्मणोममजन्मराशिजन्मनक्षत्रस्थितामुकग्रहणसूचित सर्वाणिष्टप्रशांतिपूर्वकमेकादशस्थानस्थितग्रहणसूचितशुभफ
 लावाप्तयेबिंबदानंकरिष्यइतिसंकल्प्यसूर्यचंद्रराहुंचध्यात्वात्मनस्कृत्य ॥ तमोमयमहाभीमसोमसूर्यविमर्दन ॥ हेमताराप्रदा
 नेनममशांतिप्रदोभव ॥ विधुंतुदनमस्तुभ्यंसिंहिकानंदनाच्युत ॥ दानेनानेननागस्यरक्षमांवेधजाद्भयादितिभंत्रमुच्चार्य इदं
 सौवर्णराहुबिंबंनागसौवर्णरविबिंबंराजतंचंद्रबिंबंवाघृतपूर्णकांस्यपात्रनिहितं यथाशक्तितिलवस्त्रदक्षिणासाहितंग्रहणसूचिता
 रिष्टविनाशार्थशुभफलप्राप्त्यर्थंचतुर्भ्यमहंसंप्रददेइतिदानवाक्येनपूजितब्राह्मणायदद्यात् ॥ पूर्वसंकल्पितस्यद्रव्यस्यग्रहणो
 त्तरंदानेतद्विगुणंदेयंभवति ॥ इतिग्रहणेदानादि ॥ ॥ ६३ ॥

श्रीः ॥ स्पर्शकालात्पूर्वस्नात्वाअमुकगोत्रोमुकशर्माहंराहुग्रस्तेदिवाकरेनिशाकरेवामुकदेवतायाअमुकमंत्रसिद्धिकामोआसा
दिमुक्तिपर्यन्तममुकमंत्रस्यजपरूपंपुरश्चरणंकरिष्ये ॥ अथग्रहणेपुरश्चरणविधिः ॥

धृतंमूलमंत्रजपंकुर्यात् ॥ ततःपरदिनेस्नानादिनित्यकृत्यंविधायअमुकमंत्रस्यकृतैतद्ग्रहणकालिकामुकसंख्याकपुरश्चरणजप
सांगतार्थतद्दशांशहोमतद्दशांशतर्पणतद्दशांशमार्जनतद्दशांशब्राह्मणभोजनानिकरिष्येइतिसंकल्प्य होमादिकंतत्तच्चतुर्गुणद्वि
गुणान्यतरजपंवाकुर्यात् ॥ होमांतैतर्पणंतु मूलमंत्रमुच्चार्यतदंतद्वितीयांतंमंत्रदेवतानामोच्चार्यअमुकांदेवतामहंतर्पयामिन
मःइतियवादियुक्तजलांजलिभिस्तर्पणंहोमदशांशेनकार्यं ॥ एवंनमोंतंमूलमंत्रमुक्त्वाअमुकांदेवतामहमभिषिचाम्यनेनेत्यु
च्चार्यजलेनस्वमूर्ध्निअभिषिचेदितिमार्जनंतर्पणदशांशेनकार्यं ॥ मार्जनदशांशेनब्राह्मणभोजनं ॥ एवंजपहोमतर्पणमार्जनवि
प्रभोजनात्मकंपंचप्रकारंपुरश्चरणं ॥ तर्पणाद्यसंभवेतत्तत्संख्याचतुर्गुणोजपएवकार्यः ॥ ग्रहणकालेचतस्रेरितःपुत्रादिरमु
कशर्मणोमुकगोत्रस्यामुकग्रहणस्पर्शस्नानजनितश्रेयःप्राप्त्यर्थं स्पर्शस्नानंकरिष्येइत्यादिसंकल्पपूर्वकंतदीयस्नानदानादिकंकु
चग्रहणेपुरश्चरणप्रकारोग्रस्तोदयेग्रस्तास्तेचनसंभवति ॥ इतिधर्मसिद्धूक्तःपुरश्चरणविधिः ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥ २९४ ॥ अथगायत्रीपुरश्चरणप्रयोगः ॥

श्रीः ॥ देशकालौसंकीर्त्यकरिष्यमाणगायत्रीपुरश्चरणेधिकारसिद्ध्यर्थकृच्छ्रत्रयममुकप्रत्याम्नायेनाहमाचरिष्यइतिसंकल्प्यहो
मादिप्रत्याम्नायविधिनाकृच्छ्राण्यनुष्ठायामुकशर्मणोममगायत्रीपुरश्चरणेनकृच्छ्रत्रयानुष्ठानेनाधिकारसिद्धिरस्त्विति विप्रा
न्वदेत्॥विप्राअधिकारसिद्धिरस्त्वितिब्रूयुः ॥ ततःकरिष्यमाणपुरश्चरणंगत्वेनविहितंगायत्रीजपादिकरिष्येइतिसंकल्प्यस्वयं
विप्रद्वारावाकुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ सप्रणवव्याहृतिगायत्र्याअयुतंजप्त्वा आपोहिष्ठेतिसूक्तंएतौन्विद्रमितिस्त्रःऋतंचेतिसूक्तं
स्वस्तिनइत्याद्याःस्वस्तिमतीःस्वादिष्टयेत्याद्याःपावमानीश्चसर्वाः प्रत्येकंदशवारंस्वयमन्यद्द्वारावाजपित्वा तत्सवितुरित्यस्या
चार्यमृषिंविश्वामित्रंतर्पयामि गायत्रीछंदस्त०सवितारंदेवतांत०इतितर्पणंकृत्वारुद्रंनमस्कृत्यकद्रुद्रायेत्यादीनिरुद्रसूक्तानिज
पेत् ॥ ततोदिनांतरेदेशकालौसंकीर्त्यमसकलपापक्षयद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंचतुर्विंशतिलक्षात्मकगायत्रीपुरश्चरणंस्वयंच
प्रद्वारावाकरिष्ये तदंगत्वेनस्वस्तिवाचनंमातृकापूजनंनांदीश्राद्धंजपकर्तृवरणंचकरिष्यइतिसंकल्पः ॥ संकल्पस्यापिऋत्विक्क
र्तृत्वेमुकशर्मणोयजमानस्यसकलपापक्षयेत्यादियजमानानुष्ठयाकरिष्ये॥एवंपूर्वत्रापिसंकल्पऊह्यः ॥ नांदीश्राद्धांतिसविताप्रीय
तामिति ॥ गायत्रीपुरश्चरणेजपकर्तारंत्वांवृणेइतिविप्रमेकंकवृणुयात्बस्त्रादिभिःपूजयेत् ॥ अथनित्यकर्म ॥ एकैकोविप्रः
स्वयंवाकुशाद्यासनोपविष्टआचम्यपवित्रपाणिःप्राणानायम्यदेवताःप्रार्थयेत् ॥ सूर्यःसोमोयमःकालःसंध्येभूतान्यहःक्षपाः॥
प्रवमानोदिकपतिर्भूराकाशंखेचरामराः ॥ ब्रह्मशासनमास्थायकल्पध्वमिहसंनिधिमिति ॥ ततोदेशकालौसंकीर्त्यप्रात्यहिक

जपसंकल्प्य गुरवेनमः गणपतये० दुर्गायै० मातृभ्यो० इतिनत्वा त्रिःप्राणानायम्य तत्सवितुरितिगायत्र्याविश्वामित्रऋषिः
 सवितादेवतागायत्रीछंदः जपेवि० ॥ विश्वामित्रऋषयेनमःशिरसि गायत्रीछंदसेनमोमुखे सवितृदेवतायैनमोहृदि इतिन्य
 रतलकरपृष्ठाभ्यांनमइतिकरन्यासंकृतवैवंहृदयादिषडंगन्यासंकुर्यात् पूर्वोक्तरीत्यासंस्कृतांजपमालांपात्रेनिधायसंप्रोक्ष्य ॐम
 हामायेमहामालेसर्वशक्तिस्वरूपिणि॥चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्मान्मांसिद्धिदाभवेतिप्रार्थ्य ॐअविघ्नंकुरुमालेत्वंइतितामादाय
 मंत्रदेवतांसवितारंध्यायनूहृदयेमालांधारयन्मंत्रार्थंस्मरन्मध्यंदिनावधिजपेत् ॥ अतित्वरायांसार्धत्रयप्रहरावधि ॥ जपांतेपु
 नःप्रणवमुक्त्वा त्वंमालेसर्वदेवानांप्रीतिदाशुभदाभव ॥ शिवंकुरुष्वमेभद्रेयशोर्वीर्यचसर्वदा ॥ इतिमालांशिरसिनिधायत्रिःप्रा
 णानायम्यन्यासत्रयंकृत्वाजपमीश्वरार्पणंकुर्यात् ॥ प्रत्यहंसमानसंख्यएवजपोनतुन्यूनाधिकः ॥ एवंपुरश्चरणजपसमाप्तौहो
 मः ॥ पुरश्चरणसांगतासिद्ध्यर्थंहोमविधिकरिष्यइतिसंकल्प्याग्निप्रतिष्ठाप्यपीठेसूर्यादिनवग्रहपूजादिकलशस्थापनांतेअन्वाद
 ध्यात् ॥ चक्षुषीआज्येनेत्यंतेग्रहपीठदेवतान्वान्धातिसमिच्चर्वाहुतिभिःकृत्वा प्रधानदेवतांसवितारंचतुर्विंशतिसहस्रति
 लाहुतिभिःत्रिसहस्रसंख्याकाभिःपायसाहुतिभिर्धृतमिश्रतिलाहुतिभिर्दूर्वाहुतिभिःक्षीरद्रुमसमिदाहुतिभिश्च शेषेणस्विष्टकृ
 तमित्यादिचरुपायसतिलैःसहाज्यस्यपर्यग्निकरणादि आज्यभागांतेइदंहवनीयद्रव्यंअन्वाधानोक्तदेवताभ्यःअस्तुनममेतिय
 जमानस्त्यागंकुर्यात् ॥ होमेसप्रणवव्याहृतिरहितास्वाहांतागायत्री दूर्वात्रयस्यैकाहुतिः दूर्वासमिधांदधिमध्वाज्यांजनं स्वि

षट्कृदादिवलिदानांतेसमुद्रज्येष्ठाइत्यादिभिर्यजमानाभिषेकः प्रतिलक्षं सुवर्णनिष्कत्रयं तदर्धं वा शक्त्या वा दक्षिणा ॥ होमांते
 जले देवं सवितारं संपूज्य होमसंख्या दशं शोभनं २४०० गायत्र्यं ते सवितारं तर्पयामीत्युक्त्वा तर्पणं कार्यं ॥ तर्पणदशं शोभनं २४० गाय
 त्र्यं ते आत्मानमभिषिचामि नम इति मूढ्यभिषेकः होमतर्पणाभिषेकाणां मध्ये देवनसंभवतितत्स्थाने तत्तद्विगुणोजपः कार्यः ॥ अ
 भिषेकसंख्या दशं शोभनाधिकं वा विप्रभोजनं ॥ पुरश्चरणं पूर्णमस्त्विति प्राप्त्वा च यित्वे श्वरार्पणं कार्यं ॥ प्रत्यहं यज्जाग्रत इति शिव
 संकल्पमंत्रस्य त्रिः पाठः ॥ कर्ता ब्राह्मणैः सह हविष्याशीसत्यवागधः शार्प्य परिगृहीत भू प्रदेशानतिचारी च भवेत् ॥ इत्यनंत देवी
 यानुसारेण चतुर्विंशतिलक्षपुरश्चरणप्रयोगः ॥ ऋग्विधानेतु ॥ मध्याह्ने मितभुज्जौ नीत्रिः स्नानार्चनतत्परः ॥ लक्षत्रयं जपेद्धी
 मानिति त्रिलक्षं पुरश्चरणमुक्तं ॥ जपशतांशस्त्रिसहस्रं होमः ॥ कलौ चतुर्गुणं प्रोक्तमिति पक्षे द्वादशलक्षजपः द्वादशसहस्रहोम इत्या
 द्यूहं ॥ विष्णुशयनमासेषु पुरश्चरणं न कार्यं ॥ तीर्थार्द्रौ शीघ्रं सिद्धिः ॥ बिल्ववृक्षाश्रयेण जपे एकाहा तिसिद्धिरिति सर्वमंत्रप्रक्रिया ॥
 इति गायत्री पुरश्चरणं ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥

॥ २९५ ॥ अथ गणपत्यथर्वशीर्षपुरश्चरणं ॥

श्रीः ॥ कर्ता आचम्य प्राणानायम्य देशकालाद्युल्लिख्य मम श्रीगणपतिप्रसादसिद्ध्या मुक्तफला वासये स्वयं ब्राह्मणद्वारा वा मुक्तसह
 स्वादिसंख्यात्मकं गणपत्यथर्वशीर्षपुरश्चरणं करिष्ये इति संकल्प्य निर्विघ्नतासिद्ध्यै गणपतिसंपूज्य भूशुद्ध्यादिनात्मानं पावयि

त्वा ॥ अस्यैकाक्षरगणपतिमंत्रस्य गणकऋषिः निचृङ्गायत्रीछंदः गणपतिर्देवता गंबीजं ॐशक्तिः गणपतिप्रतीत्यर्थेन्यासेपु
जनेजपेचविनियोगः ॥ गणकऋषयेनमःशिरसि निचृङ्गायत्रीछंदसेनमोमुखे गणपतिर्देवतायैनमोहृदये गंबीजायनमोगुह्ये
ॐशक्तयेनमःपादयोः ॥ ॐ गांअंगुष्ठाभ्यांनमः गीतर्जनीभ्यां गूंमध्यमाभ्यां गौअनामिकाभ्यां गौकनिष्ठिकाभ्यां गःक
रतलकरपृष्ठाभ्यां ॥ एवंहृदयादिषडंगविधायपुरुषसूक्तन्यासकलशपूजादिकुर्यात् ॥ गजवदनमचिंत्यं ० इतिध्यात्वा ॐ एक
दंतायविद्महे ० गंगणपतयेनम इतिमंत्रेणपोडशोपचारैर्गणपतिमभ्यर्च्यक्षमाप्य जपंसंकल्प्यनिर्दिष्टप्रकारेणन्यासादिविधाय
मूलेनाष्टवारंव्यापकंकृत्वा गणपतिं ध्यात्वा मानसैःपंचोपचारैःसंपूज्य ॥ मानसपूजेत्थं ॥ लंपृथिव्यात्मनेगंधतन्मात्रप्रकृत्या
त्मनेएकाक्षरगणपतयेनमः कनिष्ठिकाभ्यांचंदनंपरिकल्पयामि ॥ एवंसर्वत्र ॥ हंआकाशात्मनेशब्दतन्मात्रप्र० तर्जन्यंगुष्ठा
भ्यांपुष्पंपरि० ॥ यंवाय्वात्मनेस्पर्शतन्मात्रप्र० तर्जन्यंगुष्ठाभ्यांधूपंपरि० ॥ रंअग्न्यात्मनेरूपतन्मात्रप्र० मध्यमांगुष्ठाभ्यांदी
पंपरि० ॥ वंअमृतात्मनेरसतन्मात्रप्र० अनामिकांगुष्ठाभ्यांनैवेद्यंपरि० ॥ संसर्वात्मनेसर्वतन्मात्र० सर्वपदार्थान्परि० ॥ त
तोमालांमूलेनत्रिःप्रोक्ष्य ॥ मांमालेमाहामाये ॐ ह्रींसिद्धयैनम इतिमालांप्राथम्यं ॐ गंअविघ्नंकुरुमालेत्वंजपकालेसदामम ॥ त
त्वंमूलंसर्वमंत्राणामिष्टसिद्धिकरीभव ॥ एकाक्षरगणपतिमंत्रं १०८ जह्वापुनःपूर्ववज्यासादिकृत्वा गुह्यातिगुह्यं ० इतिज
पनिवेद्य त्वंमालेसर्वदेवानामितिमालांशिरसिनिधायअथर्वशीर्षशतवारंविवक्षितसंख्ययावाजह्वातेजपनिवेद्यपुनःपूर्ववन्मा
नसैःपंचोपचारैःपूजयेत् ॥ जपादौ एतदथर्वशीर्षमित्यादिफलश्रुतेःप्रत्यावृत्तिनावृत्तिः किंत्वतेसकृदेव इतिजपविधिः ॥३॥

॥ २९६ ॥ अथगणपत्यथर्वशीर्षहवनविधिः ॥

श्रीः ॥ आचम्यप्राणानायम्येदशकालोत्कीर्तनांतिश्रीगणपतिप्रसादसिद्ध्यामुकफलावाप्तयइत्यादियथोदिष्टंजपदशंशेनहवनं
तद्दशंशेनतर्पणंतद्दशंशेनमार्जनंचकारिष्यद्वतिसंकल्प्यगणपतिपूजनाद्याचार्यवरणांतंकुर्यात् ॥ आचार्यःकर्मसंकल्प्यप्रादेश
करणांतेन्युत्तारणप्रतिष्ठादिनागणपतिप्रतिमासंस्कृत्यमहीद्यौरित्यादिविधिना स्थापितकलशोपरिसंस्थाप्यसंपूज्य तस्य
श्चिमतःस्थंडिलेभिंप्रतिष्ठाप्यध्यात्वान्वादध्यात् ॥ (सग्रहपक्षेग्रहोत्कीर्तनांते) प्रधानंगणपतिंअथर्वशीर्षामुकावृत्तिभिः प्रति
खंडममुकद्रव्येणशेषेणेत्याज्यभागांतेद्रव्यंत्यक्त्वावदानधर्मेणजुहुयात् ॥ तत्रखंडमंत्रविभागः ॥ ॐनमस्तेगणपतये-त्वंसाक्षा
दात्मासिनित्यंस्वाहा १ ऋतंवच्मि सत्यंवच्मि ० २ अवत्वंमां-सर्वतोमांपाहिपाहि ० ३ त्वंवाङ्मयः-त्वंज्ञानमयो ० ४ सर्वं
जगदिदंवत्तो-त्वं चत्वारिवाक् ० ५ त्वंगुणत्रया-त्वंब्रह्मात्वंविष्णु ० ६ गणादिंपूर्वं-गंगणपतयेनमः ७ एकदंताय-प्रचोद
यात् ८ एकदंतंचतुर्हस्तं-एवंध्यायतियो ० ९ नमोब्रातपतये- वरदमूर्तयेनमः स्वाहा १० एवंहुत्वास्विष्टकृदादिहोमशेषं
समाप्य स्थापितकलशोदकेनसकुटुंबंयजमानमभिषिच्यदेवतापूजनविसर्जनंतिपीठमाचार्यहस्तेप्रतिपाद्य ब्राह्मणभोजनंसंक
ल्प्यभूयसींदत्वाशिषोगृहीत्वाकर्मेश्वरार्पणंकुर्यात् ॥ इत्यथर्वशीर्षविधानम् ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥

॥ २९७ ॥ अथज्वरशांतिप्रयोगः ॥

श्रीः ॥ आचमनादिदेशकालस्मरणांतेममश्रीज्वरस्वरूपीरुद्रप्रसादसिद्धिद्वाराशरीरेउत्पन्नोत्पत्त्यमानसमस्तामयनिदानभू

तवातपित्तश्लेष्मप्रक्षोभजन्यविविधज्वरोत्थनिखिलपीडापरिहारपूर्वकक्षिप्रारोग्यावाप्त्यर्थसग्रहमखांज्वरशांतिकरिष्ये इति
 संकल्प्यगणेशपूजनादिऋत्विग्वरणांतंकुर्यात् ॥ ततआचार्यः प्रादेशकरणांतेस्थंडिलात्पूर्वमहीद्यौरित्यादिविधिनाकलशंसे
 स्वकुबेरोज्वररूपीरुद्रोनुष्टुप् रुद्रावाहनेवि० ॥ कुबेरतेमुखरौद्रंनंदिन्नानंदमावह ॥ ज्वरमृत्युभयंघोरंविशनाशयमेज्वरम् ॥ कुबेरतइतिमंत्र
 इतिमंत्रेणज्वरस्वरूपिणंरुद्रमावाह्य पूर्वार्दिदलेषुदेवताआवाहयेत् ॥ ज्वरायनमःज्वरमावाहयामि ॥ एवमग्रेपि ॥ वातज्व
 राय० । पित्तज्वराय० । श्लेष्मज्वराय० । शीतज्वराय० । उष्णज्वराय० । इंद्रज्व० । संनिपातज्व० ॥ तद्वाह्ये ॥
 उग्रज्वराय० । गंभीरज्व० । सततज्व० । सततज्व० । ऐकाहिकज्व० । द्व्याहिकज्व० । त्र्याहिकज्व० ॥ तद्वाह्ये ॥
 तद्वाह्ये ॥ प्राकृतज्व० । वैकृतज्व० । आमज्व० । निरामज्व० । अभिघात० । अभिचारज्व० । अभिपंगज्व० । अभि
 क्षीराण्डुताम्रदलैरष्टोत्तरसहस्रसंख्यामिंशप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् ॥ ग्रहादिर्कीर्तनांतैत्रप्रधानंज्वरस्वरूपिणंरुद्रं
 सःश्यावाश्वोरुद्रोजगती कुंभाभिमंत्रणेवि० ॥ ॐ आरुद्रास० इतिमंत्रमष्टोत्तरशतवारंजपेत् ॥ ततोयजमानेनत्यागेकृतेग्र
 हादिहोमंकृत्वाकुबेरतेइतिमंत्रेण १००८ संख्ययाक्षीराण्डुताम्रदलानिहुत्वा ज्वराद्यंगदेवताभ्योनाममंत्रेणैककामाज्याहुतिं
 जुहुयात् ॥ ततःपूर्वचकुंभमभिमंत्र्यस्विष्टकृदादिप्रायश्चित्तहोमांतैबलिदानपूर्णाहुतीकृत्वासंस्नावहोमादिशेषसमाप्यस्यापि

तकलशोदकेनसमुद्रज्येष्ठाइत्यादिमंत्रैरभिषेकंकुर्यात् ॥ ततःकर्ताधृतशुक्लांबरोविभूतिधृत्वादेवतोत्तरपूजांविधाय कुबेरतइ
तिमंत्रांते ज्वरस्वरूपिणंरुद्रंतर्पयामि इतिपयसातर्पणंकृत्वानाममंत्रेणज्वराद्यंगदेवतास्तर्पयेत् ॥ ततःकृतांजलिः ॥ त्रिपा
द्भस्मप्रहरणस्त्रिशिरारक्तलोचनः ॥ समेप्रीतःसुखंदद्यात्सर्वामयपतिज्वरः ॥ सततंसंततंचैवज्वरमुग्रंतथैवच ॥ ऐकाहिकंद्वया
हिकंचतृतीयादिमथापिवा ॥ ज्वरोरोगपतीराजामृत्युरोगःसनातनः ॥ क्रुद्धोरोगान्ज्वरोहन्याद्रुद्रोभुवनशोभनः ॥ इतिसं
प्रार्थ्यआचार्यादिभ्योदक्षिणादानांतेविसर्जितदेवतापीठंआचार्यायदद्यात् ॥ तत्ररुद्रप्रतिमादानेमंत्रः ॥ ज्वरस्वरूपीयोरुद्रः
सुवर्णेनविनिर्मितः ॥ सोपस्करोमयादत्तस्तेनरुद्रःप्रसीदतु ॥ ततआज्यावलोकनंतद्दानंचकृत्वाविप्रान्संभोज्यभूयसींदत्वा
शिषोगृहीत्वाकर्मसमापयेत् ॥ इतिशांतिकमलाकरोक्ताज्वरशांतिः ॥ ४३ ॥ ॥ ४३ ॥

॥ २९८ ॥ अथमृत्युंजयजपविधिः ॥

श्रीः॥ॐ अस्यश्रीमृत्युंजयमंत्रस्यवसिष्ठऋषिःअनुष्टुप्छंदःमहामृत्युंजयत्र्यंबकरुद्रोदेवता प्रणवोबीजं स्वराःशक्तिःविंदवःकी

१ अन्यस्मिन्प्रयोगेप्रधानहोमोत्तरआरुद्रासइत्यष्टोत्तरजप. ततस्तर्पणतत्रप्रत्येकमादौत्रिपाद्भस्म० ज्वरोरोगपती० इतिश्लोकद्वयोत्तरभूःभुवःस्वः
भूर्भुव स्व पित्तज्वरंतर्पयामि ॥ एवंसर्वत्र वातज्वरंकफज्वरंसीतज्वरंउष्णज्वरंश्लेष्मज्वरंविषमज्वरसनिपातज्वरअतिसारज्वरदोषोत्थज्वरंसंततज्वरउ
ग्रज्वरंऐकाहिकज्वरद्व्याहिकज्वरंत्रिदिवसज्वरचातुर्थिकज्वरअत्युग्रज्वरंआमज्वरअतिवातज्वरंशीतोष्णज्वरमारीप्रमारीकालीमहाकालीईश्वरीकौमारी
चामुंडावास्तोष्पतिज्वरपतिरुद्रंतर्पयामीति ततःस्विष्टकृदाद्यरित तत्रसदसत्सन्धिर्विचारणीयं ॥

लकं ममयजमानस्यवासर्वापमृत्युविनाशार्थसर्वाभीष्टकामनासिद्ध्यर्थमहामृत्युंजयमंत्रजपेविनियोगः॥ अथन्यासः ॐ हौंजूसः
 अंगुष्ठाभ्यांनमः ॐ भूर्भुवःस्वः तर्जनीभ्यांस्वाहा ॐ त्र्यंबकंयजामहे० वर्धनं मध्यमाभ्यांवषट् ॐ उर्वारुकमिवबंधनात् अना
 मिकाभ्यांहं ॐ मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् कनिष्ठिकाभ्यांवौषट् ॐ हौंजूसःहृदयायनमः ॐ भूर्भुवःभूः ॐ सःजुहौं ॐ त्र्यंबकंयजामहे० उर्वारुकमिवबंधनात् अना
 ॐ उर्वारुकमिवबंधनात् कवचायहं ॐ हौंजूसःहृदयायनमः ॐ भूर्भुवःभूः ॐ सःजुहौं ॐ त्र्यंबकंयजामहे० उर्वारुकमिवबंधनात् अना
 हे० उर्वारुकमिवबंधनात् ॐ मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् नेत्रत्रयायवौषट् ॐ स्वःभुवःभूः ॐ सःजुहौं ॐ त्र्यंबकंयजामहे० उर्वारुकमिवबंध
 रकलितकपालंस्वक्षमालांदधानं ॥ कलशममृतपूर्णंशूलहस्तंज्वलंतंत्रिनयनमभिवंदेमृत्युमृत्युमहेशं ॥ अथमूलमंत्रः ॐ हौंजूसः
 ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ त्र्यंबकंयजामहेसुगंधिपुष्टिवर्धनं ॥ अथचतुर्दशप्रणवमृत्युंजयमंत्रजपविधिः ॥ उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॐ
 इतिपट्प्रणवमृत्युंजयमंत्रः ॥ अथचतुर्दशप्रणवमृत्युंजयमंत्रजपविधिः ॥ उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॐ हौंजूसः
 ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यंबकंयजामहेसुगंधिपुष्टिवर्धनं ॥ उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॐ स्वःभुवःभूः ॐ सःजुहौं ॐ
 सः ॐ जूं ॐ हौं ॐ इतिचतुर्दशप्रणवविधिः ॥ विधिवत्कलशेशंरुद्रंसंपूज्यजपदशंशेनतिलाज्याभ्यांहोमःकार्यः ॥ इति० ॥

॥ २९९ ॥ अथाच्युतानंतगोविंदनामजपः ॥

श्रीः॥ आचमनादिदेशकालोत्कीर्तनांतेऽमुकगोत्रस्यामुकशर्मणोममेहजन्मजन्मांतरीयशरीरवाज्जनःसंभूतनानाविधदुरितोद

कर्मविपाकनिदानभूतवातपित्तकफाद्यन्यतमप्रकोपजन्यव्याध्युपशमपूर्वजीवच्छरीराविरोधेनसद्यःशरीरे आरोग्यावाप्त्यर्थं
 समस्तदुस्तरव्याधिसंघध्वंसक्षमस्याच्युतानंतगोविंदेति श्रीमद्भगवतोनामत्रयस्याद्यप्रभृतिब्राह्मणद्वारालक्षाऽयुताष्टाधिकसह
 स्राद्यन्यतमसंख्याकजपाख्यकर्मकरिष्ये ॥ गणेशमभ्यर्च्यस्मृत्वावागोत्रोच्चारपूर्वब्राह्मणंवृणुयात् ॥ सचशुचिराचांतःकर्मसंक
 ल्यासनादिविध्युत्तरं ॥ अस्यश्रीनामत्रयीमहामंत्रस्य कश्यपात्रिभरद्वाजाऋषयः श्रीमहाविष्णुर्देवताअनुष्टुप्छंदः सांकल्पि
 कहेतुसिद्धर्थेन्यासेजपादौविनि० ॥ तत्रादौन्यासः ॥ कश्यपात्रिभरद्वाजऋषिभ्योनमःशिरसि अनुष्टुप्छंदसेनमोमुखे श्रीम
 हाविष्णुदेवतायैनमोहृदये श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थेजपेविनियोगः ॥ अच्युतायनमः अंगुष्ठाभ्यांनमः हृदयायनमः ॥ अनंतायनमः
 तर्जनीभ्यांनमः शिरसेस्वाहा ॥ गोविंदायनमः मध्यमाभ्यांनमः शिखायैवपद् ॥ अच्युतायनमः अनामिकाभ्यांनमः कवचायहुं ॥
 अनंतायनमः कनिष्ठिकाभ्यांनमः नेत्रत्रयायवौपद् ॥ गोविंदायनमः करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः अस्त्रायफद् ॥ अथध्यानं ॥ समस्त
 दुरितव्याधिसंघध्वंसपटीयसे ॥ अच्युतानंतगोविंदनाम्नेधाम्नेनमो नमः ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐअच्युतायनमो नंतायनमोगो
 विंदायनमः ॐ ॥ इतिमंत्रमुक्तसंख्ययाजपेत् ॥ अच्युतानंतगोविंदनामोच्चारणभेपजात् ॥ नश्यंतिसकलारोगाःसत्यंसत्यं
 वदाम्यहं ॥ इतिवा ॥ अनेनामुकसंख्यजपाख्येनकर्मणाश्रीमहाविष्णुःप्रीयतां ॥ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ शुभंभवतु ॥ ॥

॥ ३०० ॥ अथपद्मग्रहादियोगशान्तिः ॥

श्रीः ॥ कर्तागृहस्येशानभागेआचमनादिदेशकालकीर्तनांतेममश्रीपरमेश्वरप्रीतिद्वाराजन्मनक्षत्रेजन्मराशौवाजन्मराशेशेऽस्तु

कस्थानेवात्र्यादिग्रहयोगसूचितसकलानिष्टनिरासपूर्वकैहिकपुत्रलाभसुखवृद्धि चिरायुरैश्वर्यसंपत्तिपारलौकिकशिवपुरव्रज
 नसिद्ध्यर्थं ब्रह्मयामलोक्तां ग्रहयोगशांतिकरिष्ये ॥ (षडादिग्रहयोगेतथोहःकार्यः) तदंगणेशपूजनं स्वस्तिवाचनमाचार्यादिव
 योगकर्तृणां ग्रहाणां संख्यया कलशान्प्राक् संस्थानुदकं संस्थान्पात्रे पूर्णपात्रेषु तत्तद्ग्रहमंडलानि लिखेत् ॥ यद्वा
 एकमेव कुंभं संस्थाप्य महति पूर्णपात्रे ग्रहमंडलानि लिखेत् ॥ तेषु सुवर्णेन तदर्धेन तदर्थेन वा मितेन यथाशक्तिसुवर्णेन वा कृतास्तत्त
 द्ग्रहप्रतिमास्तदधि प्रत्यधि देवताप्रतिमाश्च निधाय तासु ग्रहादींस्तत्तन्मंत्रैरावाह्यग्रहयज्ञोक्तप्रकारेण नैवेद्यांतं पूजयेत् ॥ ततः स्थं
 डिलेग्निं प्रतिष्ठाप्य ध्यात्वा न्वा दध्यात् ॥ चक्षुषी आज्येनेत्यं तस्यापि तद्ग्रहान् तत्तत्समिच्चर्वाज्यतिलैः प्रत्येकं प्रतिद्रव्यं १००८।
 १०८।२८ वा आहुतिभिः अधिदेवताः प्रत्यधि देवताश्च तैरेव द्रव्यैः प्रत्येकं प्रतिद्रव्यं १०८।२८।८ वा शेषेण स्विष्टकृतमित्या
 द्याज्यभागहोमांते ग्रहोत्तरतो भिषेकार्थं कलशं महीधौरित्यादिविधानां संस्थाप्य आपोहिष्ठेत्यादितिसृभिर्नहितेक्षत्रमितितिसृ
 भिर्वाजलेनापूर्यतत्र पंचामृतं पंचगव्यं पंचत्वचः पंचपल्लवान्सर्वौषधीस्तिस्रो वात्र्यवराण्यज्ञियतरुमूलानि गंधादिचतत्तन्मंत्रैः
 प्रक्षिप्य तत्र वरुणं संपूज्यान्वाधानानुसारेण होमं कृत्वा स्विष्टकृदादिप्रायश्चित्तहोमांते पूर्णाहुतिं हुत्वा होमशेषं समाप्य भद्रासनो
 पविष्टं यजमानं सर्वकलशजलैरभिषिचेत् ॥ तत्र मंत्राः योगकारकाणां तत्तदधि देवताप्रत्यधि देवतानां च वैदिकमंत्रांते ग्रहाणामा
 दिरादित्यो ० ९ जातवेदसे ० त्र्यंबकं ० क्षेत्रस्य पतिना ० यत इंद्रेत्यादि द्वयोर्भग इंद्रो बृहती द्वितीया सतो बृहती पंक्तिः इंद्रो वि

श्वतसरीत्यादयोष्टलोकपालमंत्राः सुरास्त्वामभिषिंचंतु० येनदेवाःपवित्रेणेत्यादित्रयाणांखिलमंत्राणांवामदेवइंद्रोनुष्टुबंत्य
 स्यविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् आपोहिष्ठेतिनवर्चस्य० स्वादिष्ठयेतिदशर्चस्यमधुच्छंदाःसोमःपवमानोगायत्रीअभिषेकेवि० ॥ समुद्रज्ये
 ष्ठाइत्यादिपुण्यसूक्तैश्चाभिषिक्तोयजमानोधृतशुक्लांबरःस्नानवस्त्रमाचार्योयदत्त्वाज्यावलोकनं तद्दानंचकृत्वाचार्यादिभ्योद
 क्षिणांदद्यात् ॥ ततोयथाशक्तिब्राह्मणान्संभोज्यभूयसीदत्त्वाशिषोगृहीत्वाकर्मसमापयेत् ॥ इतिग्रहयोगशंतिः ॥ ४३ ॥

॥ ३०१ ॥ अथसर्वान्भुतशंतिः ॥

श्रीः ॥ अद्भुतकारणानिहिरण्यकेशीयशांतिसंस्कारप्रकाशेतोरोकृतग्रंथे ॥ सउदीर्चादिशमन्वावर्ततेथयदास्यकनकरजतवस्त्र
 वैडूर्यमणिमौक्तिकवियोगोभवत्यारंभोवाविपद्यते मधुनिवानिलीयंते काकमैथुनंवापश्येतारिष्टानिवावयांसिचगृहमध्येव
 लमीकंच्छत्राकंवाजायतेवायसकपोतावावन्यविहंगशशमृगप्रवेशोगोमृगःशशकोगृहमारोहेच्छुष्कवृक्षःप्ररोहते गृहमध्येदूर्वाः
 प्ररोहंतेमंडूकोग्निंप्रविशतिसरठोमूर्ध्निपततिचुल्लिनिपततिप्रज्वलन्दीपः (दीपिकासहितः)पततिसर्पोवाहारेणप्रविशेन्निष्क्र
 मतेचेत्येवमादीनितान्येतानिसर्वाणिवैश्रवणदैवत्यान्यद्भुतप्रायश्चित्तानिभवंत्यभित्यंदेवंसवितारमोण्योरिति स्थालीपाक
 मष्टोत्तरशतंहुत्वा पंचभिराज्याहुतिभिर्जुहोतिवैश्रवणाययक्षाधिपतयेहिरण्यपाणयईश्वरायसर्वोत्सातशमनायस्वाहेति महा
 व्याहृतिभिश्चशंतातीयंजेत् ॥ इति ॥ अन्नप्रयोगः ॥ कर्ताचम्यप्राणानायम्यदेशकालौनिर्दिश्यममामुकाद्भुतजनितभाव्य
 रिष्टनिरसनेनायुरारोग्यावासिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थममुकाद्भुतशंतिंकरिष्येइतिसंकल्प्य ॥ गणपतिपूजनंस्वस्तिवाचनंवि

भवेग्रहानाचार्यवरणंचसंकल्प्यकुर्यात् ॥ आचार्यःस्वकर्मनिर्वर्त्यपूर्वस्यांविधिवत्स्थापितकलशेवैश्रवणं अभित्यंवाग्मदेवोवैश्र
वणोष्टिःवैश्रवणावाहनेवि० ॥ ॐ अभित्यंदेवंसंवितारमोण्योःकविक्रतुमर्चोमिसत्यसंवरलुधामभिप्रियं ॥ ऊर्ध्वायस्यामति
ग्रहोत्कीर्तनातेप्रधानंवैश्रवणमष्टोत्तरशतसंख्याकाभिश्चर्वाहुतिभिः ॥ वैश्रवणं १ यक्षाधिपतिं २ हिरण्यपाणिं ३ ईश्वरं ४
सर्वोत्पातशमनं ५ अग्निपृथिवीमहांतं ६ वायुमंतरिक्षमहांतं ७ आदित्यंदिवंमहांतं ८ प्रजापतिंचंद्रमसनक्षत्राणिदिशोम
तूष्णींचतुःप्रोक्ष्य चरुश्रपणादिग्रहादिहोमांतेवदानधर्मेणअशकौपाणिनावाचरुमवदायपूजामंत्रेण १०८ हुत्वासुवेणाज्यं
श्रवणादिभ्यस्तत्तन्नाम्नाहुत्वा ॐ भूर्भुवःचपृथिव्यैचमहुतेचस्वाहा अग्रेपृथिव्यैमहतेचेदं ॥ ॐ भूर्भुवःसुर्वश्चंद्रमसेचनक्षत्रेभ्योदिग्भ्यश्च
वायवेतरिक्षायमहते० ॥ ॐ सुर्वरादित्यार्यचदिवे० आदित्यार्यदिवेमहतेचेदं ॥ ॐ भूर्भुवःसुर्वश्चंद्रमसेचनक्षत्रेभ्योदिग्भ्यश्च
महु० चंद्रमसेनक्षत्रेभ्योदिग्भ्योमहतइदंइति ॥ ततःप्रायश्चित्तादिहोमांतेबलिदानपूर्णाहुतीहुत्वाहोमशेषंसमाप्य स्थापित
कलशोदकेनयजमानमभिमृषेत् ॥ उत्तदेवाइत्यादिसप्तर्चस्यसप्तर्चयोविश्वेदेवाअनुष्टुप्जपे० ॥ केचिच्छन्नइंद्राग्नीतिसूक्तंपठंति ॥ ततःशक्त्या
शंतातीयंजपेत् ॥ इतिसर्वाहुतशान्तिः ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥

॥ ३०२ ॥ अथजनमारशांतिः ॥

श्रीः ॥ शुभकाले राजाग्रामाधिपतिर्वाशिवालये आचमनादिदेशकालस्मरणांति श्रीरुद्रप्रसादसिद्धिद्वारा एतन्नगरग्रामनिवासि
सकलप्राणिशरीरेषु उत्पन्नोत्पत्त्यमानजनमाराख्यप्रबलरोगोपसर्गस्य शीघ्रोपशमपूर्वकं सर्वेषामायुरारोग्याद्यवाप्तये सग्रहमखांज
नमारशांतिकं गणेशपूजनादि ऋत्विग्वरणांतं कुर्यात् ॥ तत आचार्यः प्रादेशकरणंति रुद्रस्य महापूजां विधाय रुद्रसूक्तानि शतरु
द्रियानुवाकं रुद्रार्थं शीर्षं विष्णुसूक्तं च जह्वाग्निं ग्रहांश्च प्रतिष्ठाप्यान्वा दध्यात् ॥ ग्रहाद्युत्कीर्तनांति रुद्रं पलाशसमिद्धं ताकपायस
विल्वदलक्षीरवृक्षसमिद्धं ताकतिलैः प्रतिद्रव्यं सहस्रसंख्याभिराहुतिभिः शेषेणेत्यादि ग्रहादिहोमांति त्र्यंबकमंत्रेण प्रधानं हुत्वा
स्विष्टकृदादिप्रायश्चित्तहोमांति बलीन्दत्वाशांति सूक्तजपांति पूर्णाहुतिं हुत्वा संस्त्रावादिहोमशेषं समाप्य स्थापितकलशोदकेन सर्व
प्राणिनामभिषेकं कुर्यात् ॥ ततः कर्ता विभूतिं धृत्वा ग्रहादीनामुत्तरपूजांति आचार्याय गां दद्यात् ॥ धेनुस्त्वं पृथिवीरूपा सर्वपाप
क्षयंकरी ॥ जनस्यास्य च सर्वस्य मृत्युना शयशोभने इति ॥ ब्रह्मादिभ्यो यथाशक्ति सुवर्णमन्येभ्यश्च सप्तधान्यादिभूम्यश्वशकटा
दियथासंभवं तत्तन्मंत्रैर्दत्वा शिवस्य गर्भागारंगंधादिनोपलिप्य दशांगधूपेन धूपयित्वा शिवं सकर्पूरश्वेतचंदनेन विलिप्य शतपत्र
पुष्पैः संपूज्य धूपदितांबूलदक्षिणासमर्पणांति सर्वैः सह कृतांजलिस्तं प्रार्थयेत् ॥ देवदेव महादेव महापापविनाशन ॥ जनमारकृतां
पीडांसद्योनाशय शंकर ॥ ततो देवं प्रदक्षिणीकृत्य शिवस्तुतिं पठित्वा सहस्रं शतं वा विप्रान्संभोज्य भूयसीं दत्वा शांतिं वाचयित्वा
कर्म समापयेत् ॥ इति शांतिकमलाकरोक्ता जनमारशांतिः ॥ ॥ ३ ॥

श्रीः ॥ यजमानः आचम्य प्राणानाचम्य तिथ्यादि स्मृत्या मम गृहे प्रज्वलद्दीपपतनाद्यनेकास्तुतसूचितसर्वारिष्टनिरसनेन आयुरा
 रोग्यश्रियो भिवृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरमीत्यर्थं दीपपतनास्तुतशांतिकरिष्ये ॥ (अत्र ग्रहयज्ञ आचार्यवरणं च कृताकृतं) तत आचार्योऽस्मिन्नस्तुतशांतिकर्मणि आचार्यकर्मकरिष्ये इति
 संकल्प्य सर्षपविकिरणादि पंचगव्यशुद्धौ दक्षप्रोक्षणांते दीपपतनस्य लेघृतेन पयसा चाभ्युक्ष्य लज्जैः सर्षपैश्चावकीर्य पुनः पंचगव्य
 शुद्धोदकाभ्यामभ्युक्ष्याग्निप्रतिष्ठांतं कुर्यात् ॥ ततो मेः पूर्वतस्तुलपुंजे बृष्टदलं मंडलं विधाय तत्र पूर्वादिदले पुद्गलादीनां वाह्यम
 ध्ये विधिवत्स्थापितकुंभोपरि हैमं राजतीं च वैश्रवणप्रतिमां पृथक् पंचामृतस्नापितां च स्रगुगसंवेष्टितां अभित्यं देवं ० इति स्थाप
 यित्वा तस्मात्पूर्वादिदिक्षु यक्षाधिपतिं सर्वोत्पातशमनं हिरण्यपाणिं ईश्वरं च आवाह्य तत्रैव पूजयेत् ॥ ग्रहपक्षे ग्रहानां वाह्य
 वैश्रवणपूजनं ॥ ततो मेः पश्चादुपविश्यान्वाधानं कुर्यात् ॥ अस्मिन्नन्वाहिते ग्रावित्यादि चक्षुषी आज्येनेत्यंतमुक्त्वा सत्रहपक्षे
 ग्रहानमुक्तसंख्यया समित्ति लाज्यद्रव्यैः पृथगष्टोत्तरशतसंख्यया यक्षाधिपतिं सर्वोत्पातशमनं हिरण्यपा
 णिं ईश्वरं च तैरेव द्रव्यैः २८ तत्तन्नाममंत्रैर्दक्ष्ये शेषेणेत्यादि अन्वाधानपरिसमूहनादि चक्षुषी होमांतं कृत्वोक्तदेवताभ्यः क्रमेण य
 थोक्तद्रव्याणि जुहुयात् ॥ ततः स्विष्टकृदादि होमशेषं समाप्य इंद्रादिदिक्पतिवल्लिदानां तैर्वैश्रवणाय सदीपवल्लिदत्वाद्वा देवता
 भ्यः सदीपपाचसवल्लिदद्यात् ॥ ततः क्षेत्रपालवल्लिदत्वा पूर्णाहुतिं हुत्वा पूर्णमसीति मार्जनांते आचार्यादीन् संपूज्य आचार्यायिगां द

त्वार्चितदेवताःसंपूज्यआचार्यायमंडलमूर्तिदानंकुर्यात् ऋत्विग्भ्योयथाशक्तिदक्षिणांदत्वाअग्निंसंपूज्यविभूतिंधृत्वान्निमुपति
ष्ठेत्ततःकलशोदकेनाभिषिक्तोयजमानःब्राह्मणान्संभोज्यआशिषोगृहीत्वायस्यस्मृत्येतिकर्मेश्वरापणंकृत्वा सुहृद्युकोभुंजीत॥

॥ ३०४ ॥ अथपल्लीसरठशांतिः ॥

श्रीः ॥ पह्याःसरठस्यवास्यशमानेत्रेसचैलंस्नात्वाविधिवलयंगव्यंप्राश्यआज्यपूर्णेकांस्यपानेत्रेस्वप्रतिविंबमवलोक्यसदक्षिणंतद्वा
ह्मणायदत्वाशांतिकुर्यात् ॥ कर्ताआचमनादिदेशकालस्मरणांतेममशरीरेपह्णीयतनसूचितसकलारिष्टपरिहारद्वाराश्री०सम
हमखांवृद्धगर्गोकांशांतिकरिष्यइतिसंकल्प्य (सरठप्ररोहणेतुतसदोहःकार्यः) गणेशपूजनादिऋत्विग्वरणांतंकुर्यात् ॥ तत
आचार्यःप्रादेशकरणांतैस्थंडिलात्पूर्वं महीद्यौरित्यादिविधिनोकलशस्थापनादिपूर्णपात्रनिधानांते पह्याःसरठस्यवायथाश
क्तिहेमनिर्मितप्रतिमांतन्ननिधायरक्तवस्त्रेणसंवेष्ट्यगंधादिभिःसंपूज्याग्निग्रहांश्चप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् ॥ ग्रहादिकीर्तनांते प्रधा
नं मृत्युंजयंखदिरसमिद्भिः१०८ प्रजापतितिलैः१०८ अग्निमृथिवीमहांतं वायुमंतरिक्षमहांतं आदित्यंदिवंमहांतं प्रजाप
तिंचंद्रमसनक्षत्राणिदिशोमहांतं चैतादेवताःधृतमिश्रक्षीरेणैकैकयाहुत्या शेषेणेत्यादिग्रहहोमांते त्र्यंबकमंत्रेणोक्तसंख्ययास
मिद्धोमोत्तरं समस्तव्याहृतिभिस्तिलान्हुत्वा भूरग्नये० भुवोवायवे० सुवरादित्याय० भूर्भुवःसुवश्चंद्रमसे० एतैर्मंत्रैर्धृतमिश्र
क्षीरंजुहुयात् ॥ ततःस्विष्टकृदादिप्रायश्चित्तहोमांतेबलिदानपूर्णहुतीकृत्वासंस्नावहोमादिशेषंसमाप्यस्थापितकलशोदकेन
यजमानमभिषिचेत् ॥ तन्नमन्त्राः ॥ नहितेक्षत्रमितिदशर्चस्यगृत्समदोवरुणस्त्रिष्टुप् अभिषेकेवि० ॥ ततःसमुद्रज्येष्ठेत्यादि

पुण्यसूक्तैर्द्यौःशांतेत्यादिमंत्रैः पौराणमंत्रैश्चाभिषिक्तोयजमानोविभूतिं धृत्वा देवतोत्तरपूजां विधाय आचार्याय धेनुं वस्त्रयुगं ऋ
त्विग्भ्यो दक्षिणां च दत्वा सोपस्करं विसर्जितं देवतापीठमाचार्यहस्ते प्रतिपाद्य शक्त्या विप्रान्संभोज्य भूयसीं दत्वा शिषो गृहीत्वा क
र्म समापयेत् ॥ इति शांतिरत्ने पल्लीसरठशांतिः ॥ ३०५ ॥ ॥ ३१ ॥

श्रीः ॥ कर्ता आचमनादिदेशकालस्मरणांते मम काकमैथुनदर्शनसूचित सकलारिष्टपरिहारद्वारा श्रीपर० सग्रहमखांगोक्तां शां
तिं करिष्ये इति संकल्प्य (शिरसि वायसारोहण—शिरस्युरसि वाकाकपक्षाघात—वायसकृतनखविदारण—शयानस्य काकस्पर्श—
मध्यरात्रे अनिमित्तवायसां क्रंदनसूचितेत्यादि निमित्तांतरे पूह्यं) गणेशपूजनादि ऋत्विग्वरणांतं कुर्यात् ॥ तत आचार्यः प्रादे
॥ ३०५ ॥ अथ काकमैथुनदर्शनादि शांतयः ॥ ॥ ३१ ॥

किसुवर्णनिर्मितप्रतिमायां यत इन्द्रभर्ग इन्द्रो बृहती इन्द्रावाहने० इतींद्रं परितो लोकपालांश्चावाह्य षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ ततस्त
दुत्तरतो ग्रहस्थापनादिकलशप्रार्थनांतं कृत्वान्वादध्यात् ॥ ग्रहाद्युत्कीर्तनांतं त्रप्रधानं इंद्रं पलाशसमिद्धीहिचर्वान्ज्यैः प्रतिद्रव्यं
१००८ वा १०८ लोकपालांश्च तैरेव द्रव्यैः प्रतिद्रव्यं ८ शेषेणेत्यादि प्रणीतास्थापनांतं तूष्णीं निर्वापादिविधिना चरुं श्रपयित्वा
ज्यसंस्कारादिग्रहहोमांतं प्रधानहोमं कृत्वा स्विष्टकृदादि प्रायश्चित्तहोमांतं बलिदानोत्तरं हुतशेषाच्च रुमादाय ॥ ऐंद्रवारुणवाय
व्यायाम्यावै नैर्ऋताश्च ये ॥ तेकाकाः प्रतिगृह्णंतु भूम्यां पिंडं समर्पितं ॥ इतींद्रस्य पुरतो वायसेभ्यो बलिं दत्वा पूर्णाहुतिं संस्त्रावहोमा

दिशेषसमाप्यस्थापितकलशोदकेनसपरिवारंयजमानंसमुद्रज्येष्ठाइत्यादिमंत्रैरभिषिंचेत् ॥ ततःकर्ताधृतवस्त्रोविभूतिंघृतवादे
वतोत्तरपूजांतेआचार्यसंपूज्यतस्मैसोपस्करामिंद्रप्रतिमांदत्वा ऋत्विग्भ्योदक्षिणांदत्वाविप्रान्संभोज्यभूयसींदत्वातैःशांतिंपा
ठयित्वाशिषोगृहीत्वाकर्मसमापयेत् ॥ इतिशांतिरलेकाकर्मैथुनदर्शनादिशांतिः ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥

॥ ३०६ ॥ अथषष्ठितम्राब्दशांतिः ॥

श्रीः ॥ कर्ताषष्ठितमवर्षारंभदिनेतद्वर्षांतर्गतजन्मर्क्षेवाशुभेकालेचंद्रताराबलान्वितेमंगलस्नानंविधायकृतनित्यक्रियोविप्राना
मंत्रयतेभ्योनृणांप्राप्य द्विराचमनादिदेशकालनिर्देशांतेममजन्मनःसकाशात्षष्ठितमवर्षप्राप्त्याभविष्यत्त्वेनसूचितानांअपमृ
त्युदुःस्वप्नदर्शनमातापितृमृतिभार्यापुत्रवियोगग्रहपीडाराजभय विविधरोगच्छायाविकृतिस्फुटनक्षत्र भ्रुवाद्यदर्शनयक्षरक्षो
भूतप्रेतपिशाचादिविविधदर्शनानामन्येषांचमहोत्सातानारिष्टरूपाणांसद्यःपरिहारपूर्वकं सर्वारिष्टविनाशदीर्घायुरारोग्यसर्व
संपन्नवनद्वाराश्रीपर०सग्रहमखांशौनकोक्तांउग्रथशांतिकरिष्येइतिसंकल्प्य गणेशपूजनादिनांदीश्राद्धांतेआचार्यब्रह्माणमृ
त्विजश्चवृणुयात् ॥ ततआचार्यआचमनादिप्रादेशकरणांतेग्रहस्थापनादिकलशप्रार्थनांतंकृत्वातन्नैर्ऋत्यांस्थंडिलेभिंप्रतिष्ठा
प्यध्यात्वान्वादध्यात् ॥ ग्रहकीर्तनांते मार्कण्डेयंप्रधानदेवंसमिदाज्यचरुदूर्वापायसैःप्रतिद्रव्यं १००८ वा १०८ आहुतिभिः
मृत्युंजयंदूर्वातिलैःप्रतिद्रव्यं २५००।१५००।५०० यद्वातिलमिश्रदूर्वाभिरुक्तसंख्यातोद्विगुणाभिः अश्वत्थामानं, बलिं,
व्यासं, हनुमंतं, विभीषणं, कृपं, परशुरामं ७ चएतान्लाजद्रव्येण प्रत्येकं २८ वा ८ शेषेणेत्यादिसमिदाधानांतेग्रहाणामुत्तरतः

महीद्यौरित्यादिविधिनाकलशं संस्थाप्य पूर्णपात्रनिधानांते पलेन तदर्धार्धेन वा सुवर्णप्रतिमायां मार्कण्डेयनाममंत्रेणावाह्यवस्त्रयु
ग्मेनावेष्ट्य षोडशोपचारैः संपूज्येध्माबर्हिषोः संनहनाद्याज्यभागांतं कृत्वा यजमानेन त्यागेकृते ग्रहादिहोमोत्तरं ॥ मार्कण्डेयमहा
भागसप्तकल्पांतजीवन ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि मे मुनिपुंगव स्वाहा इति मंत्रेण समिदाज्यचरुदूर्वापायसानि त्र्यंबकमिति मं
त्रेण दूर्वातिलान् तिलमिश्रदूर्वावाहुत्वा अश्वत्थान्ने स्वाहा बल्ये० व्यासाय० हनुमते० विभीषणाय० कृपाय० परशुरा
माय स्वाहेति मंत्रैः प्रत्येकं २८।८ वालाजान् जुहुयात् ॥ ततः श्रीसूक्तं रुद्राध्यायं च जपित्वा युष्यमंत्रान् जपेत् ॥ तेच ॥ एषवां दे
वाविति द्वयोर्वा मदेवोऽभि नौ गायत्री ॥ परावतो य इति सप्तदश चसूक्तस्य गयो विश्वे देवा जगत्वंत्ये त्रिष्टुभौ ॥ जपेवि० ॥ आनो
भद्रा इति वा युष्यसूक्तं ॥ ततः पुरुषसूक्तं जपित्वा वेदपारायणं कार्यं तदसंभवे गिमीळ इति सूक्तजपः ॥ ततः स्विष्टकृदादिप्रायश्चि
त्तत्र मंत्राः ॥ शंन इंद्राग्नीति पंचदश चसूक्तस्य वसिष्ठो विश्वे देवास्त्रिष्टुप् एकादशी प्रस्तारपंक्तिस्त्रयोदशी जगती चतुर्दशनुष्टुप् ॥ परंमृत्यो इति चतुर्दशर्च
य इति सप्तदशर्चस्य० स्वादिष्ठयेति दशर्चस्य सूक्तस्य मधुच्छंदाः सोमः पवमानो गायत्री यज्जाग्रत इति षण्णां प्रजापतिर्मनस्त्रिष्टुप् ॥
अभिषेके वि० ततोऽग्रहमंत्रैः सुरास्त्वेत्यादिभिस्तच्छंथोरित्यनेन चाभिषिक्तो यजमानो धृतशुक्लांबरगंधमाल्योभिषेकवस्त्रमाचा
र्याय दत्त्वा विभूतिं धृत्वा आचार्येण आनोभद्रा इत्यादिमहाशांतिमंत्रजपपूर्वकं देवतोत्तरपूजने कृते मार्कण्डेयादीन् प्रार्थयेत् ॥ मा

षष्टिः शां-
॥३०६॥

॥३८८॥

केड्यमहाभाग० ॥ द्रौणेमेत्वंमहाभागरुद्रतेजःसमुद्भव ॥ आयुर्बलंयशोदेहिअश्वत्थामन्नमोस्तुते ॥ दैत्यैद्रकुलसंभूतयज्ञदा
 नक्रियारत ॥ बलेत्वांशरणंयामिर्दार्घ्यमायुःप्रयच्छमे ॥ वसिष्ठकुलसंभूतवेदशास्त्रविशारद ॥ नारायणांशसंभूतवेदव्यास
 नमोस्तुते ॥ अंजनागर्भसंभूतकर्पीद्रसचिवोत्तम ॥ रामप्रियनमस्तुभ्यंहनुमन्नक्षमांसदा ॥ विभीषणनमस्तुभ्यंरामपादाब्जपू
 जक ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्येदेहिपौलस्त्यनंदन ॥ द्विजैद्रभरताचार्यसर्वविद्याविशारद ॥ शरणंत्वांप्रपन्नोस्मि कृपमांरक्षसर्वदा ॥
 रेणुकेयमहावीर्यकर्तवीर्यकृतांतक ॥ आयुःप्रयच्छमेरामजामदग्न्यनमोस्तुते ॥ ततआचार्यादीन्संपूज्यआचार्यायमाकर्ण्डेय
 प्रतिमासहितंकलशंगांचदत्वाब्रह्मादिभ्योगवादिदशदानानिशतगुजापरिमितंसुवर्णचविभज्यदद्यात् ॥ अशक्तौशतसर्पपतो
 लितंवा ॥ गवादीनांप्रत्यक्षदानासंभवेतन्मूल्यंदेयं ॥ ततोविसर्जितग्रहपीठदानांतंकांस्यपात्रेआज्यंविलोक्यसदक्षिणंतस्यात्र
 ब्राह्मणायदत्वातिलदानंचकृत्वाआशिषोगृहीत्वानववस्त्रंधृत्वापुरंध्रीभिर्नौराजितोदेवानभिवाद्यशतंविप्रान्संभोज्य भूयसींद
 त्वाकर्मसमाप्यसुहृद्युतोभुंजीत ॥ इतिउग्ररथशांत्याख्याषष्ठितमाब्दशांतिः ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥

त्वाकर्मसमाप्यसुहृद्युतोभुंजीत ॥ इतिउग्ररथशांत्याख्याषष्ठितमाब्दशांतिः ॥

॥ ३०७ ॥ अथद्वादशाब्दोत्तरमवलोकनविधिः ॥

श्रीः॥ उभौस्नात्वादेशकालौसंकीर्त्यं ममअमुकस्यावलोकनेविदेशगमनेनद्वादशवत्सरात्ययसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वाराश्रीप०
 यथाविध्यवलोकनंकरिष्यइतिसंकल्प्य गणेशपूजांतेशिवालयेतीर्थेवागत्वादीपौप्रज्ज्वाल्यपटांतर्हितौभूत्वाशिवस्योभयतउप
 विन्योभौशिवंसंपूज्यब्राह्मणैःसहशांतिमंत्रपाठांते रत्नसहितेजलपूर्णेकांस्यपात्रेन्योन्यमवलोक्यशिवंनमेतां ॥ ततोब्राह्मणा

भ्यांसदक्षिणेकांस्यपात्रेदत्वान्येभ्यश्चयथाशक्तिदक्षिणांदत्वापुनरभौशिवं द्विजान्सूर्यचनत्वा स्वगृहमागत्यपृथग्घोमंकुर्या
तां ॥ सचेत्थं ॥ आचमनादिदेशकालस्मरणांतेमयाकृतामुकावलोकनविध्यंगभूतंहोमंकरिष्यइतिसंकल्प्यस्थंडिलेपावकसंज्ञ
ज्यभागहोमांतेव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिस्तिलान्हुत्वास्विष्टकृद्धोमादिशेषंसमाप्यशक्त्याविप्रान्संभोज्यकर्मसमाप्यबांधवैःसहभुं
जीत ॥ इतिशांतिरत्नेद्वादशाब्दोत्तरमवलोकनविधिः ॥

“श्रीः ॥ वि० मा० गर्गसंहितायां ॥ ३०८ ॥ अथजीवतोभूतिवार्ताश्रवणेविधानम् ॥
तएवेतिवार्तास्यात्सर्वदेशेदुरत्यया ॥ दुष्टस्थानेयदापुंसोभवेत्कूरोनभश्चरः ॥ प्रकोपोवादैवतस्यतदाविघ्नोभिजायते ॥ मृ
त्नात्वातैलेनशुद्धेनपूजयेत्कुलदेवतां ॥ विधानंतत्रकर्तव्यंनरेणहितमिच्छता ॥ आह्वयब्राह्मणान्भक्त्याचतुर्वेदपरायणान् ॥
माहितः ॥ स्वादिष्ठयेतिमंत्रेणजुहुयादयुतंसुधीः ॥ पायसंसर्पिषायुक्तंप्रधानंद्रव्यमुत्तमं ॥ जुहुयाद्विधिवद्ब्रह्माविंद्रप्रीत्यैस
शुभे ॥ पूजितांविधिवद्भक्त्याआचार्यार्चयनिवेदयेत् ॥ हुत्वास्विष्टकृतंविद्वान्गांचदद्यात्स्यस्विनीं ॥ मूर्तिमिंद्रस्येहन्नस्तुपीठेदेवतरोः
विघ्ननाशायभूरिशः ॥ ब्राह्मणान्भोजयेत्सश्चाच्छतंवाशक्त्यपेक्षया ॥ आत्मनस्त्वायसींमूर्तिंपलैस्तुदशभिःकृतां ॥ तैलं दद्याद्विजातिभ्यो
कांततोदद्याद्ब्राह्मणायसदक्षिणां ॥ तत्रमंत्रौ ॥ सहस्राक्षमहाबाहोसर्वविघ्नविनाशन ॥ अनेनमूर्तिदानेनसुप्रीतोभवमेसदा ॥

अपमृत्युविनाशायमूर्तिमेतांददाम्यहं ॥ तुष्टेनमृत्युनानेनपातकमेव्यपोहतु ॥ ततःपुण्यस्त्रियोवृद्धाविप्राश्चगुरवस्तथा ॥ नी
राजनंतुदुर्वार्ताहरणायपुनःपुनः ॥ ततोभिपेचनंकुयुदुर्वार्तापीडितस्यतु ॥ वृद्धान्प्रणमतस्तस्यदद्युराशीर्वचोद्विजाः ॥ शतं
जीवेत्यादयआशीर्मन्त्राः ॥ ग्रहतुपूजयेहुष्टंप्रणमेत्कुलदेवतां ॥ एवंकृतेविधानेचविघ्नःकोपिनजायते” ॥ योजीवन्नेवस्वस्य
मृतवार्ताशृणुयात्सआहिताग्निश्चेदग्नयेसुरभिमेतेवाष्टाकपालेनेष्टिंकुर्यात् ॥ तत्रममस्वमृतिवार्ताश्रवणसूचितसकलानिष्टनि
रसनद्वाराश्रीप० सौरभिमेतेष्ट्यायक्ष्यइतिसंकल्पः ॥ गृह्याग्निमांस्तुलौकिकेग्नौस्थालीपाकंकुर्यात् ॥ इति ॥ ॥ ४३ ॥

॥ ३०९ ॥ अथकृतौर्ध्वदेहिकरयसंग्रहविधिः ॥

श्रीः ॥ यस्यमृतिवार्ताश्रवणेनौर्ध्वदेहिकमपिकृतंतस्यपुनरागमनेसंग्रहप्रकारउच्यते ॥ संग्राह्यापेक्षयावयोधिकःपित्रादिदेश
कालौस्मृत्वाअमुकगोत्रस्यामुकशर्मणःपैतृमेधिककरणोत्तरंपुनरागतस्यसंग्रहसिद्धिद्वाराश्रीपरमे० संग्रहविधिकरिष्यइतिसंक
ल्प्य तंघृतकुंडेमज्जयित्वासुलग्नेउत्थाप्यपुनर्देशकालौस्मृत्वाअमुकगोत्रस्यामुक० जातकर्मादिसंस्कारान्करिष्येइतिसंकल्प्य
गणेशपूजादिनांदीश्राद्धांतेजातकर्मादिचौलांतान्संस्कारांस्तल्लोपप्रायश्चित्तंवाकृत्वापुनरुपनयनंविधाय त्रिरात्रंव्रतचर्याकार
यित्वाबह्वृचश्चेन्मेधाजननमपिकुर्यात् ॥ संस्कार्यस्तुवेदव्रतलोपप्रायश्चित्तंसमावर्तनंचविधायपूर्वपत्न्यासहविवाहहोमंगृहप्रवे
शहोमंचकुर्यात् ॥ अयंविधिरनाहिताग्नेः ॥ आहिताग्नेस्तुश्रौताग्न्याधानाद्यधिकमस्ति ॥ स्त्रीणांतुप्रथमस्थालीपाकोब्राह्मण

द्वाराकार्यः ॥ उपनयनादिसमावर्तनांतनास्ति ॥ सुवासिनीचैत्यतिनासहविवाहहोमादीतिविशेषः ॥ शूद्राणामप्येवं ॥ ए
वंकृतेकर्माधिकारः ॥ इतिजीवतोमृतिवार्ताश्रवणविधानं ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ३९ ॥

एवंपरोपकृतयेबहवःप्रयोगाःसंदर्भितामुखजकर्मसमुच्चयेस्मिन् ॥ सर्वोत्तरस्थजगदीशकृपाकटाक्षान्धूनातिरिक्तमिहतत्प
रिपूर्णमस्तु ॥ जगदीशप्रेरणयाकियतांकृतिनामपि ॥ हृत्सेसमुच्चयेतार्तीयीकोभागोभृतोऽभवत् ॥ ॥ ३९ ॥

समाप्तमिदंतृतीयं प्रकरणम् ॥ ३ ॥

॥ अथौर्ध्वदेहिकादिप्रकरणम् ॥ ४ ॥

॥ ३१० ॥ अथसर्वप्रायश्चित्तप्रयोगः ॥

श्रीः ॥ प्रायश्चित्तेषडब्दत्र्यब्दसार्धाब्दादिव्यवस्थाम्राजापत्यप्रत्याम्रायाश्चपारिभाषिकोक्ताएव ॥ तत्रत्रिंशत्कृच्छ्रमब्दं पंच
चत्वारिंशत्कृच्छ्रंसार्धाब्दं नवतिकृच्छ्रंत्र्यब्दं ॥ कृच्छ्रंम्राजापत्यमितिपर्यायौ ॥ कृच्छ्रेगवादयःतन्निष्क्रयरजतान्यतरनिष्क
तदर्धतत्यादादयःप्रत्याम्रायाः ॥ तत्रसामश्रुपकल्पनं ॥ गंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यफलतांबूलानिपंचगव्यानिगोमूत्रगोमयक्षीरद
धिघृतादीनिमृत्तिकाभस्मगोमयदूर्वातिलाःसमिधोदर्भाःहोमार्थंघृतंपर्षदक्षिणानिबंधानुवादकपूजार्थंदक्षिणापूर्वोत्तरांगोप्र
दानद्रव्यंपूर्वोत्तरांगविष्णुश्राद्धद्रव्यमित्यादि एवंसामग्रीसंपाद्यसंभवेरिक्तायांतिथावन्यस्मिन्वापुण्येहिचतुस्त्रीनेकंवाध्यात्म
विदंब्राह्मणंपर्षत्त्वेनोपवेश्यकृतस्नानःशक्तश्चेद्दर्द्रवासाःअभुंजानःसमाहितमनाःविप्रान्प्रदक्षिणीकृत्यहृदयेनदूयमानोधरण्यां
साष्टांगंप्रणमेत् ॥ विप्रैःकितेकार्थमिथ्यामावादीःसत्यमेववदेतिपृष्टःकर्ताऽऽचम्यप्राणानायभ्यदेशकालौसंकीर्त्यकरिष्यमाणस
र्वप्रायश्चित्तांगत्वेनेदंगोवृषयोर्निष्कयीभूतंनिष्कतदर्धतत्यादान्यतमप्रमाणंरजतद्रव्यंसंभ्येभ्योदातुमहमुत्सृज्येनमेतिसंकल्प
पूर्वकंसंभ्याग्नेनिधाय ॥ अमुकशर्मणोममजन्मप्रभृत्यद्यथावत्ज्ञानकामसकृदसकृत्कृतकायिकवाचिकमानसिक
सांसर्गिकस्पृष्टास्पृष्टभुक्ताभुक्कपीतापीत सकलपातकातिपातकोपपातकलघुपातकसंकरीकरणमलिनीकरणापात्रीकरणजाति

भ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानांमध्येसंभावितपापानानिरासार्थमनुग्रहं कृत्वा प्रायश्चित्तमुपदिशन्तु भवंतः इति वदेत् ॥ (पुत्रादिः प्रतिनिधिश्चेन्ममपितुर्जन्मप्रभृतीत्यादिवदेत्) ॥ ततः सर्वधर्मविवेकारोगोष्ठारः सकला द्विजाः ॥ मम देहस्य संशुद्धिं कुर्वन्तु द्विजसत्तमाः ॥ (पुत्रादौ कर्तारि अस्य देहस्येत्यूहः) ॥ मया कृतं महाघोरं ज्ञातमज्ञातकिल्बिषं ॥ प्रसादः क्रियतां मह्यं शुभानुज्ञां प्रयच्छथ ॥ पूज्यैः कृतः पवित्रो हं भवेयं द्विजसत्तमैः ॥ इति प्रार्थयित्वा मामनुगृह्णन्तु भवंतः इति प्रणमेत् ॥ ततः स भ्यैस्तस्य शक्त्या दिवि चार्चयामास ॥ इति त्रैलोक्ये कर्तारि मासपक्षाद्युच्चार्य करिष्यमाणसर्वप्रायश्चित्तं तां गत्वेन निबन्धपूजामनुवादकपूजां च करिष्ये इति संकल्प्यादौ चंदनपुष्पादिभिः पुस्तकपूजां कृत्वा निबन्धपूजात्वेन किंचिद्रव्यं निधाया अनुवादकपूजां कुर्यात् ॥ अनुवादकमुदञ्जुखमुपवेश्य परमेश्वरस्वरूपिणेऽनुवादकब्राह्मणायेदमासनं इत्यादिदक्षिणांतं पूजनं कृत्वा इमां भृत्यरूपां दक्षिणामनुवादकाय तुभ्यमहं संप्रददं नममेति दद्यात् ॥ ततः स भ्याः पुस्तकवाचनपूर्वकमनुवादकस्याग्नेकथयेयुः ॥ अनुवादकश्च कर्तारं वदेत् ॥ तद्यथा ॥ अमुकशर्मणस्तव जन्मप्रभृति अद्य यावत् ज्ञानाज्ञानकामसंकुदसंकुतकथिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकस्पृष्टास्पृष्टभुक्ताभुक्तापीतासकलपातकतिपातकोपपातकलघुपातकसंस्कारीकरणमलिनीकरणापात्रीकरणजातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये संभावितपापानां निरासार्थं पर्वदुपदिष्टं षडब्दत्र्यब्दसार्धाब्दान्यतमप्रायश्चित्तं प्रतिप्राजापत्यं तत्प्रत्यान्नायगो निष्क्रयी भूतरजतनिष्कतदर्धतस्यादान्यतमद्रव्यदानद्वारा प्राच्यो दीच्यांगसहितं त्वया आचरितव्यं तेन तव शुद्धिर्भविष्यति त्वंकृतार्थो भविष्यसि इति त्रिवारमुपदिशेत् ॥ कर्ता ॐ भवदनुग्रहः इत्यंगीकृत्य संमानपूर्वकं प्रणम्य पर्वदं विसृजेत् ॥ ततः कर्तारि कथायां सायाहं गंगा

दौदेशकालौसंकीर्त्यअमुकशर्मणोसमजन्मप्रभृत्यद्ययावत्ज्ञानाज्ञानकामसकृत्सकृत्कृतकाधिकवाचिकमानसिकसांस
 गिकस्पृष्टास्पृष्टमुक्तामुक्तापीतसकलपातकातिपातकोपपातकलघुपातक संकरीकरणमलिनीकरणापात्रीकरणजातिभ्रंश
 करप्रकीर्णकपातकानांमध्येसंभावितानांपापानांनिरासार्थपुष्पदिष्टिषडब्दत्र्यब्दसार्धोब्दान्यतमप्रायश्चित्तं प्रतिप्राजापत्यंत
 लृत्यान्नायगोनिष्कयीभूतरजतनिष्कतर्धतयादान्यतमपरिमितद्रव्यदानद्वाराप्राच्योदीच्यांगसहितंयथाशक्त्यहमाचरिष्य
 इतिसंकल्प्य ॥ शिरसिहस्तंनिधाय ॥ यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यासमानिच ॥ केशानाश्रित्यतिष्ठंतिस्मात्केशान्वपाम्यहं ॥
 इतिमंत्रेणशिखाकक्षोपस्थवर्जनखकेशादीन्वापयित्वा (अशक्तौक्षौराभावेसार्धोब्दादित्रतंद्विगुणंकृत्वापर्षद्दक्षिणापिद्विगुणा
 देया) क्षौरांतेंगंडूपान्कृत्वायथोकापामागोदिदंतकाष्ठेन ॥ आयुर्बलंयशोवर्चःप्रजाःपशुवसूनिच ॥ ब्रह्मप्रज्ञांचमेधांचत्व
 नोदेहिवनस्यते ॥ इतिमंत्रेणाभिमंत्रितेनद्वादशांगुलप्रमाणेनप्राज्जुखः ॥ मुखदुर्गधिनाशायदंतानांचविशुद्धये ॥ भ
 चगात्राणांकुर्वेहंदंतधावनं ॥ इतिमंत्रेणदंतशुद्धिकृत्वातादृशान्यकाष्ठेनजिह्वामुल्लिख्यद्वादशांगंडूपान्कृत्वाचम्यस्नात्वा ॥ ईशा
 स्मादिदशविधस्नानानिकुर्यात् ॥ तत्रप्रायश्चित्तांगंभस्मस्नानंकरिष्यइतिसंकल्प्य भस्मगृहीत्वा ॐ ईशानःसर्वविद्यानां० ईशा
 नायनमइतिशिरसि ॥ तत्पुरुषायविद्महे० तत्पुरुषायनमइतिमुखे ॥ अघोरैर्भ्योथुघोरैर्भ्यो० अघोरायनमइतिहृदये ॥ यद्वा
 वायुनमोज्येष्ठाय० वामदेवायनमइतिगुह्ये ॥ सद्योजातंप्रपद्यामि० सद्योजातायनमइतिपादयोः ॥ प्रणवेनसर्वांगेषु (यद्वा
 अग्निरितिभस्म वायुरितिभस्म जलमितिभस्म स्थलमितिभस्म व्योमेतिभस्म सर्वह्वाइदंभस्मेतिमंत्रैःकृत्वा) ततःस्नात्वाऽऽ

चामेत् ॥ ॥ ततःप्रायश्चित्तांगोमयस्नानंकरिष्यइतिसंकल्प्य गोमयमादायवामहस्तेकृत्वा ॐ भूर्भुवःस्वरितिव्याहृतिभि
 स्त्रेधाविभज्यदक्षिणभागंप्रणवेनदिक्षुनिक्षिप्योत्तरभागंचतीर्थेप्रक्षिप्यगेपंसूर्यायदर्शयित्वा मानस्तोकेतनये० इत्यभिमन्त्र्य गं
 धद्वारामितिमंत्रेण अग्रमन्त्रंचरंतीनामोपधीनांवेनेवने ॥ इतिमंत्रेणवासर्वांगमनुलिप्यस्नात्वाचामेत् ॥ सर्वप्रायश्चित्तांगभूतंमृत्तिकास्नानंकरिष्यइतिसंकल्प्य अश्वक्रांते
 मयसर्वदा ॥ इतिमंत्रेणसूर्यायप्रदक्ष्य गंधद्वारामितिमंत्रेण स्योनार्पुथिविइतिवा इदंविष्णुइतिमंत्रेणवाशिरःप्रभृत्यंगानिवि
 इतिमृदमभिमन्त्र्य उद्धृतासिवराहेणकृष्णेनशतबाहुना ॥ मृत्तिकेहरमेपापंयन्मयादुष्कृतंकृतं ॥ इतिमृदमादाय नमोमित्र
 लिप्यस्नात्वाद्विराचामेत् ॥ ॥ अथवाविस्तरेणमृत्तिकास्नानं ॥ तद्यथा ॥ वल्लिथापर्वतानांखिद्रंविभर्षिपृथिवि ॥ प्रयाभू
 मिप्रवत्वतिमुहाजिनोर्षिमहिनि ॥ इतिभूमिप्रार्थ्य ॥ मावोरिपत्खनितायस्मैचाहंखनामिवः ॥ द्विपच्चतुष्पदस्माकंसर्वमस्त्व
 नातुरं ॥ इतिखनित्वा ॥ स्योनार्पुथिविभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानुःशर्मसप्रथः ॥ इतिमृदंगृहीत्वा ॥ आर्यनेतेपुरार्यणे
 दूर्वारोहंतुपुष्पिणीः ॥ इदार्थपुंडरीकाणिसमुद्रस्यगृहाइमे ॥ इतिदूर्वामादायगायत्र्याभ्युक्ष्यभूमौमृदंनिधाय मृत्तिकास्नानं
 करिष्यइतिसंकल्प्यमृदंकुशोदकेनप्रोक्ष्यदिक्षुक्षिपेत् ॥ त्रातारुमिंद्रमवितारुमिंद्रहवेहवेसहवंशूरुमिंद्र ॥ हवामिश्रकंपुरुहूत
 मिंद्रस्वस्तिनोमघवाधात्विद्रः ॥ इतिपूर्वस्यां ॥ यमायमधुमत्तमुराज्ञेहव्यंजुहोतन ॥ इदंनमःऋषिभ्यःपूर्वजेभ्यःपूर्वैभ्यःपश्चि
 कृद्भ्यः ॥ इतिदक्षिणस्यां ॥ तत्त्वायामित्रहृणांचदमानस्तदाशास्तेयजमानोहविभिः ॥ अहेळमानोचरणेहवोऽगुरुशंसमानआ

यः प्रमोषीः ॥ इति पञ्चिमायां ॥ वयं सोमव्रते तव मनस्तनूय विभ्रतः ॥ प्रजावतः सचेमहि ॥ इति उत्तरतः ॥ तत्सूर्यरोदसीषु
 भेदोषावस्तोरुपेव ॥ भोजे ब्रह्मो अभ्युच्चरासदा ॥ इत्युपरिष्ठात् ॥ अधः पश्य स्वमोपरि संतरां पादुकोहर ॥ मार्ते कशस्रकोदृश
 नृत्वी हि ब्रह्मा बभूविथ ॥ इत्यधः क्षिप्वांगेषु लिपेद्यथा ॥ सहस्रशीर्षा ० इति शिरसि ॥ अक्षीभ्यां तेनासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबु
 कादधि ॥ यक्ष्मं शीर्षेण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया विवृहामिते ॥ इति मुखे ॥ ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात् ॥ य
 क्ष्मं दोषण्यां मंसाभ्यां बाहुभ्यां विवृहामिते ॥ इति ग्रीवायां ॥ आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोर्हदयादधि ॥ यक्ष्मं मत्स्नाभ्यां य
 क्रः प्लाशिभ्यो विवृहामिते ॥ इति हृदये ॥ नाभानाभिन आर्ददे चक्षुश्चित्सूर्ये सचा ॥ कवेरपत्यमाहुहे ॥ इति नाभौ ॥ त्वमिन्द्रस
 जोषसमर्कं विभर्षि ब्राह्मो ॥ वज्रं शिशानु ओजसा ॥ इति बाह्वोः ॥ सोमानं स्वरं कृणुहि ब्रह्मणसते ॥ कक्षीवतं य औशिजः ॥ इ
 तिकक्ष्योः ॥ यः कुक्षिः सोमपातमः समद्रुद्र इव पिबते ॥ उर्वीरापो न काकुदः ॥ इति कुक्ष्योः ॥ बह्वीनां पिता बृहत्स्य पुत्रश्चिश्चाकृ
 णोति समना वगत्य ॥ इषुचिः संकाः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनृजयति प्रसूतः ॥ इति पृष्ठे ॥ ऊरुभ्यां ते अष्टी वज्रां पाणिभ्यां प्र
 पदाभ्यां ॥ यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासं द्वाङ्गं ससो विवृहामिते ॥ इत्यूर्वोः ॥ मेहनाद्धनं करं णालोर्मभ्यस्ते नखेभ्यः ॥ यक्ष्मं सर्वस्मा
 दात्मनस्तमिदं विवृहामिते ॥ इति जान्वोः ॥ एतावानस्य महिमा तोज्यायाश्च पूरुषः ॥ पादौ स्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं
 द्विवि ॥ इति पादयोः ॥ यस्य विश्वा निहस्तयोः पंचक्षितीनां वसु ॥ स्याशयं स्वयो अस्मद्भुक्रुद्विव्यवाशनिर्जहि ॥ इति हस्तयोः ॥
 अंगादंगाल्लोमो लोमो जातं पर्वणि पर्वणि ॥ यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं विवृहामिते ॥ इति पुरुषसूक्तेन च सर्वांगोद्धर्तनं ॥ ततः

अश्वक्रांतेरथक्रांतेविष्णुक्रांतेवसुंधरे ॥ शिरसाधारयिष्यामिरक्षस्वमांपदेपदे ॥ भूमिर्धेनुर्धरणीलोकधारिणी ॥ उद्धृतासिव
राहेणकृष्णेनशतबाहुना ॥ मृत्तिकेहरमेपापंयन्मयादुष्कृतंकृतं ॥ मृत्तिकेब्रह्मादत्तासिकाश्यपेनाभिमंत्रिता ॥ मृत्तिकेदेहि
मेपुष्टित्वयिसर्वप्रतिष्ठितं ॥ मृत्तिकेप्रतिष्ठितेसर्वतन्मेनिर्णुदमृत्तिके ॥ त्वयाहतेनपापेनगच्छामिपरमांगतिं ॥ इतिसतिलदूर्वा
मृदंशिरसिनिधायमृत्तिकास्थानंप्रक्षालयेत् ॥ अथशुद्धोदकस्नानं ॥ आपोअस्मान्मातरःइत्युक्त्वासूर्याभिमुखः इदंविष्णु०
इतिमंत्रेणप्रवाहाभिमुखोमजेत् ॥ अथवा आपोहिष्ठेतिवृत्तेनवारिस्नानंकुर्यात् ॥ अथपंचगव्यैःकुशोदकेनचेतिषट्स्नानानि ॥
तत्रादौसर्वप्राथश्चित्तांगंगोमूत्रस्नानंकरिष्यइतिसंकल्प्य ॥ तत्संवितु० गोमूत्रस्नानंकृत्वास्नात्वाचामेत् ॥ एवमग्रेपिगोमय
स्नानंकरिष्ये ॥ गंधद्वारां इतिगोमयेन ॥ क्षीरस्नानंकरिष्ये आप्यायस्वसर्मेतुते इतिक्षीरस्नानांतेस्नानमाचमनंच ॥ ततोदधि
स्नानंकरिष्ये ॥ दुधिक्राव्णोअकारिषं इतिदधिस्नानांतेजलेनस्नात्वा आचामेत् ॥ ततोघृतस्नानंकरिष्ये ॥ घृतंमिमिक्षे ॥
इतिघृतस्नानं ॥ ततःस्नानाचमनेचकार्ये ॥ कुशोदकस्नानंकरिष्यइतिसंकल्प्य ॥ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णो
हस्ताभ्यामभिषिचामीतिकुशोदकस्नानांतेशुद्धोदकेनस्नात्वातीर्थंप्राथयेत् ॥ हिरण्यशृंगंवरुणंप्रपद्येतीर्थमेदेहियाचितः ॥
यन्मयाभुक्कमसाधूनांपापेभ्यश्चप्रतिग्रहः ॥ यन्मेमनसावाचाकर्मणावादुष्कृतंकृतं ॥ तन्नइंद्रोवरुणोबृहस्पतिःसविताचपुन
तुपुनःपुनः ॥ इतिद्वाभ्यां ॥ अवतेहेळो० इतिद्वाभ्यांचतीर्थंप्राथ्य याःप्रवतो० इतितीर्थमभिमृश्य स्नात्वाचम्यमार्जयेत् ॥ त
त्रमंत्राः ॥ ॐ इमंमंगे० सुमित्र्यान० समुद्रज्येष्ठाः० एतोन्विद्रं० त्रिभिर्द्वंद्वं० क्षीरंसर्पिर्मधूदकं आपोहिष्ठा० इ

तिर्मन्त्रैर्मार्जनंकृत्वा ॥ इमंमैंगेयमुने० इदंतेन्याभिरसमानमद्भिर्याःकाश्चसिंधुप्रवहंतिनद्यः ॥ सर्पोजीर्णमियत्वचंजहातिपा
 पंसाशिरस्कोभ्युपेत्य ॥ इत्युदकमालोढ्य ॥ ऋतंचसत्यं० इतितृचेनत्रिरावृत्तेनाघमर्पणंकृत्वात्रिद्विदशवारं वामज्जनानिकृत्वा भु
 खानांगतर्पणंकुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ उपवीतीसाक्षताभिरद्भिर्देवतीर्थेन ब्रह्मादयोयेदेवाःतान्देवांस्तर्पयामि भूर्देवांस्तर्पयामि भु
 र्देवांस्तर्पयामि स्वर्देवांस्तर्पयामि भूर्भुवःस्वर्कृषींस्तर्पयामि ॥ प्राचीनार्वातीसतिलाभिरद्भिःऋपितीर्थेन कृष्णद्वैपायनादयोयेऋष
 यः तान्ऋषींस्तर्पयामि भूर्भुवःस्वर्कृषींस्तर्पयामि ॥ भूमौदत्तेनतोयेनतृप्ता
 नसोमःपितृमानयमोगिरस्वानग्निष्वात्ताःकव्यवाहनादयोयेपितरः तान्पितृंस्तर्पयामि ॥ भूमौदत्तेनतोयेनतृप्ता
 मि भूर्भुवःस्वःपितृंस्तर्पयामि इतिस्नानांगतर्पणंकृत्वा ॥ अग्निदग्धाश्चयेजीवायेज्यदग्धाःकुलेमम ॥ तेगृह्णंतुमयादत्तंवस्त्रनिष्पीडनोदकं ॥
 यांतुपरांगतिं ॥ इतितीरेजलंदत्त्वा ॥ येकेचासत्कुलेजाताअपुत्रागोत्रिणोमृताः ॥ तेगृह्णंतुमयादत्तंवस्त्रनिष्पीडनोदकं ॥ इतियक्ष्मतर्प
 इतितीरेउत्तरीयंनिष्पीड्य ॥ यन्मयादूषितंतोयंशारीरमलसंभवात् ॥ तद्वोपपरिहारार्थयक्ष्माणंतर्पयाम्यहं ॥ इतियक्ष्मतर्प
 णंविधाय धौतेवाससीपरिधायद्विराचम्यतिलकंधृत्वाऽऽचम्यदेशकालौस्मृत्वा श्रीविष्णुप्रीत्यर्थसर्वप्रायश्चित्तपूर्वगत्वेनवि
 हितंविष्णुश्राद्धंकरिष्यइतिसंकल्प्य ॥ शालग्रामशिलायांदर्भबटौवा इदंविष्णुं० इतिविष्णुमावाह्य षोडशोपचारैःपंचोपचा
 रैर्वासंपूज्य पापापहश्रीविष्णुप्रीत्यर्थसर्वप्रायश्चित्तांगाद्यविष्णुश्राद्धसंपत्तयेश्रीविष्णुद्देशेनब्राह्मणचतुष्टयभोजनपर्याप्तमनि
 ष्क्रीयभूतंद्रव्यं नानानामगोत्रेभ्यश्चतुर्भ्योब्राह्मणेभ्यःपूजनपूर्वकंविभज्य

दद्यात् ॥ तेनपापापहमहाविष्णुःप्रीयतां ॥ सर्वप्रायश्चित्तपूर्वागत्वेनविहितंगोदानंकरिष्ये इतिसंकल्प्य एकांगांतन्निष्क्रयंवा
द्यगोदानत्वेनकुंडुंविनेद्विजायदद्यात् ॥ तद्यथा ॥ गवामंगेषुतिष्ठंतिभुवनानिचतुर्दश ॥ यस्मात्तस्माच्छिवंमेस्यादिहलोकेप
रत्रच ॥ इमांगांयथाशक्त्यलंकृतांइदंगोनिष्क्रयद्रव्यंवापापापहमहाविष्णुप्रीत्यर्थंब्राह्मणायदातुमहमुत्सृज्येइतिदत्त्वा ततोदेश
कालौसंकीर्त्यश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंसर्वप्रायश्चित्तपूर्वागहोमंकरिष्ये ॥ तदंगतयास्थंडिलोपलेपनोल्लेखनाद्यग्निप्रतिष्ठापनादिक
रिष्येइतिसंकल्प्यतत्कृत्वानुष्टोदमूनेत्यादिविदनामानमग्निंप्रतिष्ठापयामीत्यंतेचत्वारिश्रृंगेत्यादिनाध्यात्वा सर्वप्रायश्चित्तपू
र्वीगहोमेदेवतापरिग्रहार्थमित्यादिचक्षुषीआज्येनेत्यंते अत्रप्रधानंअग्निवायुंसूर्यंप्रजापतिंचप्रतिदेवतंसप्तविंशतिसंख्याज्याहु
तिभिःसप्तसंख्याज्याहुतिभिर्वा तथा पृथिवीं विष्णुरुद्रंब्रह्माणंअग्निंसोमंसवितारंप्रजापतिंप्रजापतिमग्निंस्विष्टकृतंचएकैकया
पंचगव्याहुत्यायक्ष्ये ॥ शेषेणस्विष्टकृतमित्यादिसद्योयक्ष्यइत्यंतमुक्त्वा समिद्धयमग्नावाधायपरिसमूहनादिपात्रासादनांते
तृणेनसहंपंचगव्यपात्रमासाद्याज्यंसंस्कारकालेपंचगव्यंकृत्वाज्येनसहपर्यग्निकुर्यात् ॥ ३९४ ॥

॥ ३९१ ॥ अथब्रह्मकूर्चपंचगव्यविधिः ॥

श्रीः ॥ सुवर्णतान्नपलाशपद्मान्यतमपात्रेताम्राथाःगोमूत्रंत्रिपलमष्टमापंवागायत्र्याप्रणवेनवादाय श्वेतगोशकृदंगुष्ठार्धपरि
मितंपोडशमापंवागंधद्वारामितिमंत्रेणप्रणवेनवादाय पीतायाःकपिलायावागोक्षीरंसप्तपलंद्वादशमापंवा आप्यायस्वेति प्रण
वेनवादाय नीलायाःसप्तपलंदशमापंवादधि दधिक्राव्णइतिप्रणवेनवादाय कृष्णायाधृतमेकपलमष्टमापंवा शुक्रमसिज्योतिर

सितेजोसिइत्यनेनघृतमिमिक्षेइत्यनेनवाप्रणवेनवादाय ततःदेवस्यत्वेतिआपोहिष्ठेतिप्रणवेनवाकुशोदकमेकपलंचतुर्मापंवाप्र
क्षिपेत् एवंगोमूत्रादीन्येकपात्रेकृत्वाप्रणवंसमुच्चार्यहस्तेनालोढ्यपुनःप्रणवमुच्चार्ययज्ञिककाष्ठेननिर्मथ्यप्रणवेनाभिमंत्रयेत् ॥
ततःआज्यपंचगव्यासादनाद्याज्यभागांतस्त्रुवेण ॥ ॐ भूःस्वाहाअग्नयइदंनमम ॥ ॐ भुवःस्वाहावायव ॥ ॐ स्वःस्वाहासू
र्ययेदं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहाप्रजापतयइदंनममेत्याज्यस्यप्रतिदेवतंसप्तविंशतिरित्येवमष्टोत्तरशताहुतीः प्रतिदेवतंसप्तये
वमष्टाविंशतिसंख्याहुतीर्वाहुत्वा साग्नैःसप्तपत्रैर्हरितैःकुशैर्दशाहुतीर्जुहुयात् ॥ तत्रमंत्राः ॥ ॐ इरावतीधेनुमतीहिभूतंसूयव
सिनीमनुषेदशस्या ॥ व्यस्तभ्रारोदसीविष्णवेतेदुधार्थपृथिवीमभितोमयूखैःस्वाहा ॥ पृथिव्याइदंनमम १ ॥ ॐ इदंविष्णु
सुरेस्वाहा ॥ विष्णवइदं २ ॥ ॐ मानस्तोकेतनये ० हवामहेस्वाहा ॥ रुद्रायेदं ३ ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानं ० विवःस्वाहा ॥
ब्रह्मणइदं ४ (ब्रह्मस्थानेशनोदेवीतिमंत्रेणान्ध्यइतिकेचित्) ॥ ॐ अग्नयेस्वाहा अग्नयइदं ५ ॥ ॐ सोमायस्वाहासोमा
येदं ६ ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ० प्रचोदयात्स्वाहा सूर्ययेदं ७ ॥ ॐ प्रजापतेन ० रयीणांस्वाहा ॥ प्रजापतयइदं ८ ॥
ॐ स्वाहाप्रजापतयइदं ९ ॥ ॐ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा अग्नयेस्विष्टकृतइदं १० ॥ इतिदशपंचगव्याहुतीर्हुत्वा केवलज्य
स्ययदस्येतिस्विष्टकृतंहुत्वा प्रायश्चित्तादिहोमशेषसमाप्य बर्हिषिपूर्णपात्रनिनयनाद्यभ्युपस्थानपरिस्तरणविसर्जनादियस्यस्मृ
त्यंते अनेनसर्वप्रायश्चित्तपूर्वागहोमाख्येनकर्मणायज्ञभोक्तायज्ञनारायणरूपीपरमेश्वरःप्रीयतामित्युक्त्वा ॥ व्रतग्रहणंकरिष्यइ
तिद्विजान्पृष्ट्वा कुरुष्वेत्यभ्यनुज्ञातः ॥ यत्स्वगस्थिगतंपापंदेहेतिष्ठतिमामके ॥ प्राशनंपंचगव्यस्यदहत्यग्निरिवंधनं ॥ इत्यु

क्त्वाप्रणवेनहुतशेषमशेषगृहीत्वाप्रणवेनैवसर्वपंचगव्यंपिबेत् ॥ अशक्तौगोमूत्रादिस्वल्पंग्राह्यं सर्वस्यपेयत्वात् ॥ एतच्चग्रामा
ह्निर्नद्यादेस्तीरेनक्षत्रदर्शनेकार्यं ॥ सुमूर्धोस्तुगृहादावेव ॥ अस्मिन्दिनेशक्तस्योपवासः अशक्तौहविष्याशनम् ॥ अयंचेराव
तीत्यादिपंचगव्यस्यदशाहुतिहोमोब्रह्मकूर्चाख्यपंचगव्यपानेसर्वत्रोह्यः ॥ गौनिष्कयरजतादिदानपक्षेपंचगव्यप्राशनातेइदंषडब्देअशीत्युत्तरशतकृ
च्छ्रप्रत्याम्नायगौनिष्कयीभूतं त्र्यब्देनवतिकृच्छ्रप्रत्याम्नायगौनिष्कयीभूतं प्रतिकृच्छ्रं निष्कदर्धतदर्धान्यतमप्रमाणंरजतद्रव्यं
नानानामगोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योदानुमहमुत्सृज्यइतिद्रव्यदानसंकल्पंकृत्वा तदैवद्रव्यंविभज्यदद्यात् ॥ ३१२ ॥

श्रीः ॥ उत्तरांगानिकुर्यात् ॥ संकल्पः ॥ आर्चीणस्यसर्वप्रायश्चित्तस्यसांगतासिद्ध्यर्थमुत्तरांगानिकरिष्ये ॥ तत्रहोमंकर्तुं
स्थंडिलादिकरिष्ये ॥ विटनामाग्निप्रतिष्ठाप्य ध्यात्वासमिद्वयमादायसर्वप्रायश्चित्तोत्तरांगहोमेदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानमि
त्यादिचक्षुषीआज्येनेत्यंतमुक्त्वा अन्नप्रधानं अग्निवायुंसूर्यप्रजापतिंचप्रतिदेवतंसप्तविंशतिसप्तान्यतरसंख्याज्याहुतिभिः ॥
शेषेणस्विष्टकृतमित्यादिसद्योयक्ष्यइत्यंतमुक्त्वा समिद्वयमग्नावाधायपरिसमूहनाद्याज्यभागहोमांते ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहाअग्नयइदं०॥

ॐ भुवःस्वाहावायवइदं० ॥ ॐ स्वःस्वाहासूर्यायेदं० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहाप्रजापतयइदं० ॥ इत्याज्यसप्तविंशतिःसप्त
वेत्येवमष्टोत्तरशताहुतीरष्टाविंशतिसंख्याहुतीर्वाहुत्वा स्विष्टकृदादिहोमशेषसमाप्य बर्हिषिपूर्णपात्रनिनयनादिश्रीपरमेश्व

रःप्रीयतामित्यंतं सर्वं कुर्यात् ॥ ततः आचम्य प्राणनाथस्य देशकालौ स्मृत्वा श्रीविष्णुप्रीत्यर्थं सर्वप्रायश्चित्तोत्तरांगत्वेन विहितं वि
 ष्णुश्राद्धं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ शालग्रामशिलायां दर्भबटौ वा इदं विष्णुरिति मंत्रेण विष्णुमावाह्यपोडशोपचारैः पंचोपचारैर्वासं
 पूज्य पापापहं श्रीविष्णुप्रीत्यर्थं सर्वप्रायश्चित्तोत्तरांगविहितं विष्णुश्राद्धं संपत्तये श्रीविष्णुद्देशेन ब्राह्मणचतुष्टयभोजनपर्याप्ताम
 निष्कुर्यात् भूतं द्रव्यं चतुर्भ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृज्ये नममेति संकल्प्य चतुर्भ्यो ब्राह्मणेभ्यः पूजनपूर्वकं विभज्य दद्यात् ॥ पापा
 पहमहाविष्णुः प्रीयताम् ॥ ततः सर्वप्रायश्चित्तोत्तरांगत्वेन विहितं गोदानं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ एकां गां तन्निष्कुर्यात् वा द्विजाय
 दद्यात् ॥ तद्यथा ॥ गवामंगेषु तिष्ठंति भुवनानि चतुर्दश ॥ यस्मात्तस्माच्छिवमेस्यादिह लोके परत्र चेति मंत्रं पठित्वा ॥ इमां गां
 यथाशक्त्यलंकृतां इदं गोनिष्कुर्यात् द्रव्यं वा पापापहं महाविष्णुप्रीत्यर्थं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये नममेति संकल्पयेत् ॥
 एवं प्रायश्चित्तं कृत्वा शक्तौ सत्यां दशदानान्यपि कुर्यात् ॥ तानि च ॥ गोभूतिलहिरण्याज्यवासोधान्यं गुडानि च ॥ रौप्यं लवण
 मित्याहुर्दशदानान्यनुक्रमादिति ॥ एतानि ब्रतांगत्वेन विहितानीति महार्णवः ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं ० इति वदन् विष्णुं स्मरेत् ॥
 ततो यन्मया कृतं सर्वप्रायश्चित्तं तदच्छिद्रमस्त्वितिकर्त्रोक्ते अच्छिद्रमस्त्विति ब्राह्मणाब्रूयुः ॥ यद्वा ॥ ब्रतच्छिद्रं तपच्छिद्रं यच्छि
 द्रं यज्ञकर्मणि ॥ सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं यस्य चेच्छंति वै द्विजा इति प्रतिवचनं ॥ ततः शक्त्यनुसारेण ब्राह्मणान्भोजयेदित्यलमिति वि
 स्तरेण ॥ इति सर्वप्रायश्चित्तप्रयोगः ॥ गृह्याग्निसागरे तस्मिन्नेव दिने उत्तरांगहोमश्च तस्मिन्नेवाग्नौ कार्य इत्युक्तं ॥ तत्र तत्र प्रयो
 गचिकीर्षायां पूर्वागहोमप्रधानदेवताः पंचगव्यहोमप्रधानदेवताश्च संकीर्त्य तत्तत्सर्वप्रक्रांतप्रायश्चित्तानंतरं उत्तरांगे क्रियमाणेतु

प्रधानं अग्निवायुसूर्यप्रजापतिचप्रतिदेवतंसप्तविंशतिसंख्याज्याहुतिभिः सप्तसंख्याज्याहुतिभिर्वाशेषेणस्विष्टकृतमित्यादि
पंचगव्यहोमांतेस्विष्टकृतःप्राक्पंचगव्यंप्राश्य सर्वप्रायश्चित्तीयंद्रव्यंपूर्ववदुत्सृज्योत्तरांगहोमंकृत्वास्विष्टकृदादिहोमशेषंसमा-
प्यउत्तरांगत्वेनविहितविष्णुश्राद्धगोदानेकृत्वाकर्मशेषंसमापयेदिति ॥ ३१३ ॥ अथस्त्रीशूद्रप्रायश्चित्तम् ॥ ॥ ३१ ॥

श्रीः ॥ स्त्रीणांहोमःकृताकृतः ॥ करणपक्षेविधवानाःक्षौरांतंपूर्ववत्कृत्वा अमंत्रकाणिदशस्नानानि ॥ सधवायास्तुदंतधा-
वनंकृत्वा तूष्णींदशस्नानानि ॥ ३१३ ॥ अथस्त्रीशूद्रप्रायश्चित्तम् ॥ ॥ ३१ ॥

पूर्ववद्विप्रद्वारासर्वपूर्वांगंकारयित्वास्वयंपंचगव्यंतूष्णींप्राश्यमुख्यप्रत्याम्नायद्रव्यंचिसृज्योत्तरांगानिकारयेत् ॥ होमाभावपक्षे
दशविधस्नानांतेविष्णुश्राद्धगोदानेकृत्वा अमंत्रकाणिदशस्नानानि ॥ सधवायास्तुदंतधा-
त्रकस्नानानि॥वस्त्रतिलकदानानिकुर्यात् ॥ इतिविप्रस्त्रियाःप्रायश्चित्तप्रयोगः ॥ अथशूद्रस्यसंकल्पांतमविकृतंत्तरांगविष्णुश्रा-
गव्यानिनपेयानि॥नास्यविप्रद्वारापिहोमः॥प्रायश्चित्तद्रव्यंसंकल्प्यदत्त्वोत्तरांगविष्णुश्रा-
प्राणोक्रमणकालेगोमयोपलिसभूमौकुशोपर्युपविष्टोदक्षिणशिरःशयितोवातुलस्यूध्वंपुंड्रगंगामृत्तिकादिपवित्रैरलंकृतःपरमेश्व-

॥ ३१४ ॥ अथातुरसन्निधौजाप्यम् ॥

रंस्मरन्पुत्रोत्संगेधारितशिरस्तिष्ठेत् ॥ ततो नानानामित्यादिस्वयंपठेदन्योवाश्रावयेत् ॥ ततः अद्येत्यादिअमृतत्वप्राप्तिकामन
 यापुण्यसूक्तादिपाठमहंकरिष्ये श्रोष्ये वा ॥ नानानामितिसूक्तस्य शिशुरंगिरसः पवमानः सोमः पंक्तिः अमृतत्वप्राप्तये जपे श्रवणे वा
 विनियोगः ॥ नानानं वा उ नो धियो विव्रतानि जनानां । तक्षारिष्टं तं भिषग्ब्रह्मा सुन्वंतं मिच्छतीं द्रौण्ये दोषं परिस्त्रव । जरतीभिरोषधी
 भिः पूर्णेभिः शकुनानां । कामारो अश्मभिर्द्युभिर्हिरण्यवंतं मिच्छतीं द्रौण्ये दोषं परिस्त्रव । शेपो रोमण्वतो भेदौ वारिन्मंडूकं इ
 ना धियो वसूवनूगा इव तस्थिर्मेद्रौ यें दोषं परिस्त्रव । अश्वो वोळ्हा सुखं रथं हसना मुपमं त्रिणः । शेषो रोमण्वतो भेदौ वारिन्मंडूकं इ
 च्छतीं द्रौण्ये दोषं परिस्त्रव ॥ १ ॥ शूर्यणावतिसोममिंद्रः पिबतु वृत्रहा । बलं दधाना आत्मनि करिष्यन्वीर्यमहादिद्रो ॥ आप्यवस्व
 विशांपत आर्जीकात्सोममीदृः । ऋतवा केन सत्येन श्रद्धया तपसा सुतं इद्रौ यें दोषं ॥ पर्जन्यं वृद्धं महिषं तं सूर्यं स्य दुहिता भरत् । तं
 गंधर्वाः प्रत्यगृभ्णन्तं सोमे रसमादधुरिद्रो ॥ ऋतं वदन्नतद्युम्न सत्यं वदन्त सत्यकर्मन् । श्रद्धां वदन्त सोमराजन्धा त्रासो मपरिष्कृत
 इंद्रौ यें दोषं ॥ सत्यमुग्रस्य बृहत्संस्त्रवंति संस्त्रवाः । संयतिरसिनोरसाः पुनानो ब्रह्मणा हरइंद्रौ यें दोषं ॥ २ ॥ यत्र ब्रह्मापवमान
 छंदस्यां इवाचं वदन् । प्रावणा सोमैर्महो यते सोमैर्नानंदं जनयन्निद्रौ यें दोषं ॥ यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिंश्छोके स्वाहितं । तस्मिन्मा
 धेहि पवमाना मृतैर्लोकेऽक्षितं इंद्रौ यें दोषं ॥ यत्र राजा वैवस्वतो यत्रावरो धनं दिवः । यत्रा मूर्यं हृतीरापुस्तत्र माममृतं कर्धो द्रौ यें
 दोषं ॥ यत्रानुक्रमं चरणं त्रिना केनेत्रिदिवे दिवः । लोका यत्र ज्योतिष्मंतस्तत्र माममृतं कृ ॥ यत्र कामानि कामाश्च यत्र ब्रह्मस्य वि
 द्युपै । स्वधा च यत्र तृप्तिश्च तत्र माममृतं ॥ यत्रानंदाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते । कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र माममृतं ॥ ३ ॥

यइंदोःपर्वमानुस्थानुधामान्यकमीत् । तमाहुःसुप्रजाइतियस्तेसोमाविधन्मनुइंद्रायेंदो० । ऋषेमंत्रकृतांस्तोमैःकश्यपोद्वधय
 निगरः । सोमंनमस्यराजानंयोजज्ञेवीरुधांपतिरिंद्रायेंदो० । सप्तदिशोनानासूर्याःसप्तहोतारऋत्विजः । देवाआदित्यायेस
 सतेभिःसोमाभिरक्षन्इंद्रायेंदो० । यत्तेराजञ्छतंहविस्तेनसोमाभिरक्षनः । अरातीवामानस्तारीन्मोचनःकिंचनामसदिंद्रायें
 दो० ॥ ४ ॥ यत्रतत्परमंपदंविणोर्लोकैर्महीयते । देवैःसुकृतकर्मभिस्तत्रमाममृतंकूर्धांद्रायेंदो० ॥ यत्रगंगाचयमुनायत्रप्राचीसरस्वती । यत्रतत्परमाय्यभूतानाम
 धिपतिः । भावभाविचयोगीचतत्रमाममृतंकूर्धांद्रायेंदो० ॥ ५ ॥ इतिनानानंसूक्तं ॥ ततउपनिषद्भागान्अन्यानिचपुण्यसूक्तानिगीतांस्तोत्राणिचसहस्रनामादी
 ममृतंकूर्धांद्रायेंदो० ॥ ५ ॥ इतिनानानंसूक्तं ॥ यत्रगंगाचयमुनायत्रप्राचीसरस्वती । यत्रसोमेश्वरोदेवस्तत्रमा
 निपठेत् । शृणुयाद्वा । श्रोतुःसंकल्पाशक्तौश्रावयिताऽमुकशर्मणोस्यामृतत्वरूपफलप्राप्तयेमुकंश्रावयिष्येइतिसंकल्पयेत् । श्री
 रामादिस्मरणंचकार्यं ॥ इतिआतुरसंनिधौजाप्यविधिः ॥

श्रीः ॥ पूर्वमकृतेप्रायश्चित्तेप्राणोक्रमणोत्तरंपुत्रादिःकर्माधिकारीआचम्यप्राणानाचम्यदेवकालौसंकीर्त्य ॥ अमुकगोत्रस्यामु
 कशर्मणःपित्रादेःप्रेतस्यजन्मप्रभृत्यद्ययावत् ज्ञानाज्ञानकामाकामसकृदसकृत्कृतकायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकस्पृष्टास्पृ
 १ तत्रपुत्राद्यधिकारिणापित्रादिकमासन्नमरणंहृद्वापडब्दव्यब्दसार्धव्दादिप्रायश्चित्तंतिलपात्रवैतरणी-उत्काति-मोक्ष-ऋणधेन्वादिदानानिचतेनक
 रणीयानिस्वयंवातमुद्दिश्यकर्तव्यानिउक्तप्रायश्चित्तादिदानांतविधिमकृत्वापित्रादिमरणेपुत्रादिनाप्रायश्चित्तंकृत्वाद्वाहादिकर्तव्यं । दानानित्वेकादशहे॥

॥ ३१५ ॥ अथसंरणोत्तरंविधिः ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

मरणोत्त-
॥३१५॥

॥३९७॥

दृमुक्तामुक्तीतापीत सकलपातकातिपातकोपपातकलघुपातकसंकीकरणमलिनीकरणापात्रीकरणजातिभंशकरप्रकीर्णक
 पातकानांमध्येसंभावितपापानानिरासार्थेषडब्दत्र्यब्दसार्धोब्दान्यतमप्रायश्चित्तं प्रतिप्राजापत्यकृच्छ्रं तत्प्रत्यग्न्यागोनिष्क्रीय
 भूतताम्रकार्षापणपरिमितद्रव्यदानेन सूतकांतेहमाचरिष्ये ॥ (मात्रादौतुअमुकगोत्रायाःअमुकदायाःप्रेतायाःप्रेतत्वेत्यादिपू
 र्ववत्सर्वत्र) पुनर्देशकालौस्मृत्वामुकगोत्रस्यामुकशर्मणःपित्रादेःप्रेतस्य ऊर्ध्वोच्छिष्टाधरोच्छिष्टोभयोच्छिष्टास्पृश्यस्पृष्टांतराल
 खट्वामरणादिजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं पंचदश-द्वादश-नव-षट्-त्रि-कृच्छ्राद्यन्यतमकृच्छ्रात्मकंप्रायश्चित्तंप्रतिकृच्छ्रं तत्प्रत्यग्न्या
 म्नायगोनिष्क्रीयभूतताम्रकार्षापणपरिमितद्रव्यदानेन सूतकांतेहमाचरिष्ये ॥ ॥ रात्रिमृतौदिवादाहे ॥ अमुकगोत्रस्यामुक
 प्रेतस्य रात्रावकृतसंस्कारजनितप्रत्यवायपरिहारपूर्वकं द्वादश-पंचगव्यस्नानपूर्वकं कृच्छ्रत्रयप्रायश्चित्तंप्रतिकृच्छ्रं
 तत्प्रत्यग्न्यागोनिष्क्र० सूतकांतेआचरिष्ये ॥ पुनर्देशकालकथनांतेआत्मशुद्धिद्वारापित्रादेरौर्ध्वदेहिकाधिकारसिद्ध्ये
 द्वादश-षट्-त्रि-कृच्छ्राद्यन्यतमंप्रायश्चित्तंप्रतिकृच्छ्रं तत्प्रत्यग्न्यागोनिष्क्रीय० ॥ ॥ पित्रादेरंत्यकर्मोधिकारार्थवपनंकरिष्ये ॥
 कर्तृभिन्नैःपित्रादिमरणनिमित्तंवपनंकरिष्यइतिसंकल्प्य ॥ यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यासमानिच ॥ केशानाश्रित्यतिष्ठं
 तितस्मात्केशान्वपाग्यहं ॥ इतिकक्षोपस्थवर्जेकेशश्मश्रुलोमनखानिदक्षिणसंस्थानिवापयित्वास्नायात् ॥ ४३ ॥

१ इदवपनरात्रिमृतौपरेहनिदिवैवकार्यं । कर्तृभिन्नैस्तदैवदशमेहनिवायथाचार । भर्तरिमृतेपत्न्याआद्येदशमेहनिवावपनकार्यं ॥

(तत्र पूर्वदशहोत्राभिः प्रेतस्नापनं । इतः सर्वकृत्यं प्राचीनावीतिना कार्यं दक्षिणापर्वणं च । मंत्रास्तु चित्तिः सुगामी इत् । चित्तमा
ज्यमासी इत् । वाग्वेदिमासी इत् । अर्धीतं वेदिमासी इत् । केतो अग्निमासी इत् । विज्ञातमग्नीदासी इत् । प्राणो हविरासी इत् ।
सामाध्वयुरासी इत् । वाचस्पतिर्होतासी इत् । मनउपवकासी इत् १० । तेवा एतं ग्रहमगृह्यत । वार्चस्येते विधेनामन् । विधेमतेना
म । विधेस्त्वमस्माकं नाम ध्यां गच्छ । इति) प्रेतं संस्नाप्य गोपीचंदनतुलसीमूलमृत्तिकाभिरलंकृत्य नलदमालां (काळ्यावाळ्या
च्छाद्य तस्य पाददेशस्थं चतुर्थभागं छित्त्वा तेनात्मन उत्तरीयं कुर्यात् । द्वादशाहं तं प्रेतकृत्येषु तदेव धारयेत् । ततः शिविकायां प्रेतमा
शिरसमूर्ध्वमुखं शाययित्वा सजातीयाः प्रेतं दाहदेशं प्रतिनयेयुः ॥ श्रौतामयः स्मार्ता मिवाग्नेन्येन ते तव्यः । प्रेताश्चोर्मध्येऽन्येन न
गंतव्यं ॥ सर्वे सपिंडादयोऽधःकृतोपवीता अप्रावरणामुक्केशावृद्धपुरःसराः प्रेतमनुगच्छेयुः ॥ तत्र ब्राह्मणो नगरस्य पश्चिमद्वारे
णनेयः ॥ पथिमध्ये शिविकानिर्धाय (सक्तुपिंडद्वयंकृत्वा ॥ अतिद्रवेति द्वयोर्धमश्वानौ त्रिष्टुप् अश्वनिपिंडदाने वि० ॥ अतिद्र
वसारमेयौ श्वानौ चतुरश्रौ शवलौ साधुना पथा ॥ अथापि तृन्सुविदत्रोऽउपैहियमेनये संधमादुंमदंति ॥ शवस्य दक्षिणे श्यामाया

१ अयं यनुश्चिह्नातर्गतः ज्ञानविधिरेतन्मध्वपिंडदानं च प्राचीननारायणभट्टप्रयोगे पुनोपलभ्यते तथापि बहुत्र कुर्वतीत्यत्रोपन्यस्तं ॥ २ अत्राध्वपिंड
तः पूर्वमेजीवेत्यस्य संकुयुको मृत्युस्त्रिष्टुप् प्रेतमुखावलोकने वि० ॥ इमे जीवा विमृतैराववृत्तवर्गं द्रुद्रुद्रिवह्निर्नो अद्य ॥ प्राचो अगम नुतये हसाय द्राघीय आयुः
प्रतुं दर्शनाः ॥ इति मुखावलोकनं वातास्ते वा त्वित्येनानंजलिदानं च क्वचित्पुस्तकेषूपलभ्यते परंतु प्रचाराभावान्न संगृहीतं ॥

गंपिंडउपतिष्ठतु ॥ यौतेश्वानौयमरक्षितारौचतुरक्षौपथिरक्षीनुचर्क्षसौ ॥ ताभ्यामेनंपरिदेहिराजन्स्वस्तिचोस्माअनमीवंचधे
 हि ॥ प्रेतवामभागेशबलायाचंपिंडउपतिष्ठतुइत्यध्वपिंडद्वयंदत्वा) ततोवाहकाव्युक्रमेणप्रेतंवहतःशिविकांश्मशानदेशंनिद
 ध्युः ॥ दाहदेशाद्वायव्यामग्निनिदध्यात्॥ततोमध्यदेशोच्छ्रितंसमंताग्निमंत्रबहुलौषधिकंश्मशानंकल्पयित्वाकंदकिक्षीरवृक्षादी
 न्युद्धास्यतत्रभूम्यैकदेशंआग्नेय्यानैर्ऋत्यांवाप्रकल्प्यतत्रवायवीप्रभृत्याग्नेयीपर्यंतंऊर्ध्वबाहुनरायामंदीर्घमाग्नेयीप्रवर्णंईशानीमा
 रभ्यनिर्ऋतिपर्यंतंपंचारत्निमात्रंतिर्यगायतंद्वादशांगुलमधःस्वातंगतंखानयेत् ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥

॥ ३१७ ॥ अथप्रेतस्यपुनःसंधानं ॥

श्रीः ॥ मृतस्यगृह्याग्निविच्छेदे देशकालौनिर्दिश्यअमुकगोत्रस्यामुकशर्मणःपित्रादेःगृह्याग्निविच्छेदिनादाराभ्यएतावंतंका
 लंगृह्याग्निविच्छेदजनितप्रत्यवायपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रत्यब्दंएककृच्छ्रप्रायश्चित्ततत्प्रत्याम्नायगोनिष्कयीभूतय
 थाशक्तिरजतद्रव्यदानद्वारासूतकांतेहमाचरिष्ये ॥ गृह्याग्निविच्छेदेनलुप्तानांसायंप्रातर्होमानांतथादर्शपूर्णमासस्थालीपाका
 नांचव्रीह्यादिद्रव्यमाज्यंचतन्निष्कयंवासूतकांतेब्राह्मणेभ्योदातुमहमुत्सृज्ये ॥ आचम्यअमंत्रकंप्राणायामंकृत्वातिथ्यादिसं
 कीर्त्यप्राचीनावीतीअमुकगोत्रस्यामुकशर्मणःपित्रादेःअग्निविच्छेदनिमित्तकंदाहायाग्निसिद्ध्यर्थंप्रेताधानंकरिष्ये ॥ चतुर
 स्त्रंस्थंडिलंकृत्वासंभारान्यथालाभंसंपाद्यतद्गोमयेनोपलिप्ययज्ञियकाष्ठेनोल्लिख्यलौकिकाग्निंस्थंडिलस्याग्नेय्यानिधाय जुष्टोद
 मूनेत्यादिनावाह्यव्याहृतिभिरग्निंप्रतिष्ठाप्यसमिध्यचत्वारिंशंगेतिध्यात्वापरिसमुह्यपरिस्तीर्यपर्युक्ष्य अग्नेरुत्तरतोदर्भेषुप्रोक्षणी

सुवौ आज्यपात्रं संमार्गदर्भानासाद्य प्रोक्षणीपात्रमुत्तानं कृत्वा तत्रानंतर्गर्भितसाग्रसमस्थूलप्रादेशमात्रे कुशद्वयरूपेपवित्रे निधाय
 शुद्धाभिरङ्गिस्तत्पात्रं पूरयित्वा गंधादिक्षिप्त्वा हस्तयोरंगुष्ठोपकनिष्ठिकाभ्यामुदगग्रे पृथक्पवित्रे धृत्वा पस्त्रिरुत्पूय पात्राण्युत्ताना
 स्थाने निधाय ज्वलतादर्भोल्लुकेनावज्वल्य अंगुष्ठपर्वमात्रं प्रक्षालितं दर्भाग्रद्वयमाज्ये प्रक्षिप्य पुनर्ज्वलता तेनैव दर्भोल्लुकेन आज्यं
 त्रिःपर्यङ्गि कृत्वा तदुल्लुकेनिरस्य अपउपस्पृश्य सवितुष्टे तिष्ठत्पूय अग्नौ पवित्रं प्रहरेत् ॥ तत आत्मनो ग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्रास्तीर्णदर्भै
 बु आज्यपात्रं निधाय सुवसंमृज्य तूष्णीमग्निमभ्यर्च्य ॥ अयाश्चेति विमदो अयाळग्निः पंक्तिः प्रेताधानां गाज्यहोमे विनियोगः ॥ ॐ
 अयाश्चाग्नेस्य न भिशस्तीश्च सत्यामैत्वमया असि ॥ अयासावर्यसाकृतो यासं हव्यमूहिषेयानो धेहि भेषजं स्वाहा ॥ अयसेग्रय इदं ॥
 इत्याज्याहुतिं हुत्वा ॥ यस्याग्रयो जुह्वतो मांसकामाः संकल्पयंतो यजमानमांसं ॥ जानंतु ते हविषेसादिताय स्वर्गलोकमिमं प्रेतन
 यंतु स्वाहास्वरिदं ॥ भूः स्वाहा अग्रय इदं ॥ भुवः स्वाहा वाग्रय इदं ॥ स्वः स्वाहा सूर्यायेदं ॥ भूर्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतय इदं ॥
 एवं हुत्वा परिस्तरणानि विसृज्य पुनः परिसमुह्य पर्युक्ष्यामि संपूज्य विष्णुं स्मरेत् ॥ एवमौपासनः सिद्धो भवति ॥ ॥ ४३ ॥

१ भर्तुः पूर्वपत्नी मरणेप्येवं ॥ ब्रह्मचारिविधुरविधवाऽविवाहिता नुपनीतकन्या पुत्रनिरग्नि कभार्यादीनां कपालाग्निना लौकिकाग्निना वादाहः । अग्निवर्णकपा
 लेकरीषादिनोत्पादितो भूर्भुवः स्वः स्वाहेत्याज्याहुत्या संस्कृतोऽग्निः कपालाग्निः लौकिकाग्निश्चात्यजाग्निपतिताग्निस्मृतिकाग्निचित्यग्रमेध्याग्निभिन्नो ग्राह्यः ॥

सैद्धांतिकविधिः ॥ असिन्कर्मणिप्रा

[illegible]

दनामासा... इतिउत्तर...
हनपतयेचोह्लिखामि इतिउत्तर...
...किनामिर्वातस्यतुन्याद्वर्ति...

यदहनपतयेपितृभ्यःस्वधानमःइतिमध्येरेखायां ॥ कालायदहनपतयेपितृभ्यःस्वधानमःइतिमध्यादुत्तरस्यां ॥ मृत्यवेदहनप
तयेपितृभ्यःस्वधानमइतिमध्यादक्षिणस्यां ॥ ततःखातेहिरण्यशकलानितिलांश्चप्रक्षिप्य सजातीयाहृतैर्यज्ञियकाष्ठैश्चितिकु
शयेत् ॥ ततःकर्तातस्यांबहिर्वास्तीर्थतदुपरिऊर्ध्वलोकमकृष्णजिनमास्तीर्थप्रेतमग्नेरुत्तरेणनीत्वादक्षिणशिरस्कंचितौनिवे
प्रेतशरीरेघृताक्तांस्तिलान्प्रक्षिप्य॥ततोदेशकालौसंकीर्त्यप्रेतोपासनंकरिष्येइतिसंकल्प्य समिद्वयमादाय अग्निकामंलोकंअनुम
तिंएताःप्रधानदेवताःअग्नादज्येनप्रेतंप्रेतोरसिआज्येनयक्ष्ये ॥ व्याहृतीनांपरमेष्ठीप्रजापतिःप्रजापतिर्वृहती अन्वाधानसमि
द्धोमेविनियोगः ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहाप्रजापतयइदंनमम ॥ अग्निंपरिसमुह्यचितिसहितमग्निंपरिस्तीर्यदक्षिणतोऽग्नेःपर्युक्ष्य
प्रोक्षणींस्ववंचमंसंआज्यभाजनंचेतिएकैकशःउत्तानानिपात्राण्यासादयेत् ॥ ततोर्गतोदकंचमसेआसिच्यदर्भैराच्छाद्यप्रणये
त् ॥ इममग्नइतिदमनोग्निस्त्रिष्टुप्चमसानुमंत्रणेविनियोगः ॥ इममग्नेचमंसमाविजिह्वरःप्रियोदेवानामुतसोभ्यानां ॥ एषय
श्चमसोदेवपानुस्तास्मिन्देवाअमृतामादयंते ॥ इतिचमसानुमंत्रणंकृत्वा प्रोक्षण्यांकुशैकरूपंपवित्रंनिधायजलमापूर्यगंधादिक्षि
प्त्वाअपस्त्रिरूप्यपात्राणिसंप्रोक्ष्यअन्यदर्भेणाच्छाद्य तस्यवित्रंआज्यपात्रेनिधाय आज्यपात्रंपुरतःसंस्थाप्यतस्मिन्नाज्यमासि
ज्यंत्रिःपर्यग्निकृत्वातदुल्मुकंनिरस्यापःस्पृष्ट्वातत्रस्थमेवाज्यंतूष्णीमुत्पृथपवित्रमग्निःप्रोक्ष्याग्नौप्रहरेत्॥ ततआत्मनोऽग्रतोभूमिंप्रो

क्षयतत्रदर्भेषुआज्यपात्रंनिधायस्रुवंदक्षिणहस्तेनगृहीत्वासव्येनदर्भानादायसहैवाग्नौप्रताप्य दर्भग्नैःस्रुवस्यबिलंपृष्ठंचत्रिःसंमृ-
 ज्यमूलैर्मूलंचप्रोक्ष्यप्रताप्यआज्यादुत्तरतःसंस्थाप्यतूष्णीमग्निमलंकृत्यवामंजान्वाच्य प्राचीनावीतीपराचीनपाणिःस्रुवेणाज्यं
 जुहुयात् ॥ अग्नयेस्वाहा अग्नयइदं० ॥ कामायस्वाहा कामायेदं० ॥ लोकायस्वाहा लोकायेदं० ॥ अनुमतयेस्वाहा अनु-
 मतयइदं० ॥ एवंचतस्रआज्याहुतीहुत्वा ॥ अस्माद्वैत्वमजायथाअयंत्वदभिजायतां ॥ असौस्वर्गायलोकायस्वाहेतिमंत्रेणप्रे-
 तस्योरसिपंचमीजुहुयात् ॥ असावित्यत्रसंबुद्ध्याप्रेतनामनिर्दिशेत् ॥ अमुकप्रेतायेदंनममेतित्यजेत् ॥ अत्रस्विष्टकृतंपात्रसं-
 योजनंचनास्ति ॥ एवंप्रेतोपासनंकृत्वाततःसक्तुपिंडेनअपूपंपंचकंककृत्वापुषदाज्येनाभिधार्य ॥ अग्नेर्वर्मेतिदमनोमिस्त्रिष्टुप्प्रेतस्य
 ललाटेमुखेचसक्तुपिंडदानेविनियोगः ॥ अग्नेर्वर्मपरिगोभिव्ययस्वसंप्रोणुष्वपीवसामेदसाच्च ॥ नेत्वाधृणुर्हरसाजहृपाणोदधृग्धि-
 धक्ष्यन्पर्धुंखयाते ॥ इतिललाटेमुखेचद्वौपिंडौदत्वा ॥ अतिद्रवेतिमंत्रद्वयस्ययमश्वानौत्रिष्टुप् बाहुद्वयेहृदयेचसक्तुपिंडदाने
 वि० ॥ अतिद्रवसारमेयौश्वानौचतुरक्षौशबलौसाधुनोपथा ॥ अथापितृन्त्सुविदत्रोऽर्पेहियमेनयेसंधमादुमदति ॥ यौतेश्वा-
 नौयमरक्षितारौचतुरक्षौपथिरक्षीनृचक्षसौ ॥ ताभ्यामेनंपरिदेहिराजन्त्सुस्तिचास्मानमीकंचदेहि ॥ इतिबाहुद्वयोपिंडद्वयं
 हृदयेएकःपिंडइत्येवंपंचसक्तुपिंडान्दद्यात् ॥ ततोऽधनिष्ठापंचकत्रिपान्नक्षत्रादौमरणेतद्विधिंकृत्वानंतरंचित्तिपूरणंकार्य ॥

॥ ३१९ ॥ अथपंचकादिदाहविधिः ॥

श्रीः ॥ पंचकर्मरणेशवसमीपेदेशकालौसंकीर्त्यअमुकगोत्रस्यामुकशर्मणःपित्रादेःप्रेतस्यधनिष्ठापंचकमरणसूचितवंशारिष्टवि-

॥
नाशार्थं पंचकविधिकरिष्ये ॥ दर्भमयीः यवपिष्टानुलिप्ता ऊर्णासूत्रवेष्टिताः पंचप्रतिमाः कृत्वानक्षत्रमंत्रैरभिमन्त्र्य गंधपुष्पैः संपू-
ज्य प्रथमां शिरसि द्वितीयां नेत्रयोः तृतीयां वामकुक्षौ चतुर्थीं नाभौ पंचमीं पादयोः इति न्यस्य तासु क्रमेणाज्यं जुहुयादेभिर्मन्त्रैः ॥
प्रायेदं ॥ प्रेतहर्त्रे स्वाहा प्रेतवाहाय स्वाहा प्रेतसखाय स्वाहा प्रेतसखायेदं ॥ प्रेतपाय स्वाहा प्रेतपायेदं ॥ प्रेतभूमिपाय स्वाहा प्रेतभूमि-
मिदूतो अरंकृतः स्वाहा ॥ यमायेदं ॥ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिपुष्टिवर्धनं ॥ उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्वाहा ॥
मृत्युं जघायेदं इति प्रत्येकं प्रतिमासु आज्याहुती जुहुयात् ॥ ततः प्रेतमुखे कनकहीरकनीलपद्मरागमौक्तिकेति पंचरत्नानि तदभा-
वे कर्षार्धस्वर्णं तदभावे घृतं दत्वा पुत्तलैः सह प्रेतं दहेत् ॥ ॥ त्रिपादहक्षमरणे ॥ अमुकत्रिपादनक्षत्रमरणसूचितवंशारिष्ट-
विनाशार्थं तद्विधिकरिष्ये ॥ पूर्ववत्पुत्तलिकात्रयं निर्माय संपूज्य दाहसमये प्रथमां शिरसि ॥ द्वितीयां नेत्रयोः तृतीयां कुक्षौ ए-
वं न्यस्य प्रेतवाह १ प्रेतसख २ प्रेतप ३ इति नामभिस्तदुपरि पूर्ववच्छृतं हुत्वा यथा लिंगं त्यक्त्वा उदकधारां दत्वा यमाय सोमं त्र्यं-
बकमिति मंत्राभ्यां प्रत्येकमाहुतिद्वयं हुत्वा प्रतिप्रतिमां ॥ अग्नये जाते वेदः पितृभ्यो यत्रै नान्वेत्थ निहितान्पराके ॥ त्रिपुष्करद्विपुष्करमरणे ॥ कुल्या उग्र-
१ तत्रायं विशेषः ॥ नक्षत्रांतरे मृतस्य पंचके दाहप्राप्तौ पुत्तलविधिरेव न शातिकं ॥ पंचकमृतस्य नक्षत्रांतरे श्विन्यादौ दाहप्राप्तौ शांतिकमेव न पुत्तलविधिः ॥

देश० अमुकस्य त्रिपुष्करयोगमरणसूचितवंशारिष्टविनाशार्थत्रिपुष्करविधिकरिष्ये ॥ त्रिपादवत्प्रतिमात्रयकरणाद्याज्याहु
त्यंतसर्वकुर्यात् ॥ द्विपुष्करेतु प्रतिमाद्वयंकृत्वाप्रेतशिरसि १ नेत्रयोः २ न्यस्य प्रेतवाह प्रेतसख इतिनामभ्यांपूर्ववद्धृतंहु
त्वान्यत्सर्वपूर्ववत्कुर्यात् ॥ इतिपंचकादिमरणदाहविधिः ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥

॥ ३२० ॥ अथचिंतिपूरणम् ॥

श्रीः ॥ ततश्चिंतिपरिपूर्य ॥ क्रव्यादमितिदमनोग्निस्त्रिष्टुप् ॥ अग्निप्रज्वालनेविनियोगः ॥ क्रव्यादमग्निं प्राहिणोमिदूरं यमरा
ज्ञोगच्छतुरिप्रवाहः ॥ इहैवायमितरोजातवेदादेवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ॥ इतिमंत्रेणपुंसः शिरोदेशेस्त्रियाः पाददेशेऽग्निं प्र
ज्वाल्यवक्ष्यमाणमंत्रैर्वस्त्रपल्लवैश्चितौ वायुः कार्यः ॥ वातास्तैवांतु पथिपुण्यगंधामनः सुखागात्रसुखानुलोमाः ॥ त्वचः सुखामांस
सुखाअस्थिसौख्यावहतुत्वांमरुतः सुकृतांयत्रलोकाः ॥ इमा आपोमधुमत्योसिंस्तेलोकर्षपुद्गलतामक्षीयमाणाः स्वधानमः ॥
इमा आपोमधुमत्योतर्क्षितेलोकर्षपुद्गलतामक्षीयमाणाः स्वधानमः ॥ इमा आपोमधुमत्यः स्वर्गतेलोकर्षपुद्गलतामक्षीयमाणाः
स्वधानमः ॥ ततोदह्यमानंप्रेतंतिलप्रक्षेपणानुमंत्रयीत ॥ प्रेहिप्रेहीतिद्वयोर्यमः पितरस्त्रिष्टुप् ॥ दह्यमानंप्रेतानुमंत्रणेविनि
योगः ॥ प्रेहिप्रेहिपृथिभिः पूर्व्यैर्भिर्यन्त्रानः पूर्वैपितरः परेयुः ॥ उभाराजानास्वधयामदंतायमंपदयासिन्नरुणंचदेवं ॥ संगच्छ
स्वपितृभिः संयुमेनेष्टापुर्तेनपरमेव्योमन् ॥ हित्वायावद्यं पुनरस्तमेहि संगच्छस्वतन्वासुवर्चाः ॥ अतिद्रवेतिद्वयोर्यमश्चानौ त्रि
ष्टुप् ॥ दह्यमानंप्रेतानु ॥ अतिद्रवसारमेयौ श्वानौ चतुरक्षौ शबलौ साधुनापथा ॥ अथापितृवन्त्सुविदत्रोउपेहियमेनयेसंधमा

दुमदति ॥ यौतेभ्वानौयमरक्षितारौचतुरक्षौर्पथिरक्षीनुचक्षसौ ॥ ताभ्यमेनंपरिदाहेराजन्स्वस्तिचास्मानमीवंचधेहि ॥
 मैनमितिषणांदमनोमिस्त्रिष्टुप् ॥ दह्यमानप्रेतानु० ॥ मैनमग्नेविदहोमाभिशोचोमास्यत्वंचचिक्षिपोमाशरीरं ॥ यदाशृतं
 आदेवानां वशनीर्भवाति ॥ सूर्यचक्षुर्गच्छतुवातमात्माद्यांचगच्छपृथिवीचधर्मणा ॥ अपोवागच्छयदितत्रतेहितमोषधीषुप्राति
 तिष्ठाशरीरैः ॥ अजोभागस्तपसातंतपस्वतंतेशोचिस्तपतंतैर्अर्चिः ॥ यास्तैश्शिवास्तन्वोजातवेदस्ताभिर्वहेनसुकृतांमुलोकं ॥
 अवंसृजपुनरमेपितृभ्योयस्तुऽआहुतश्चरतिस्वधाभिः ॥ आयुर्वसानुऽउपवेतुशेषःसंगच्छतांतन्वाजातवेदः ॥ यत्तैकृष्णःशकु
 नऽआतुतोर्दपिपीलःसर्पउतवाश्वापदः ॥ अग्निष्टद्विश्वाद्गुदं कृणोतुसोमश्चयोब्राह्मणोऽर्वाविवेश ॥ ॥ पूषात्वेतिचतसृणां
 देवश्रवाःपूषान्निष्टुप् ॥ दह्यमानप्रेतानु० ॥ पूषात्वेतश्च्योवयतुप्रविद्भाननष्टपशुर्भुवनस्यगोपाः ॥ सत्वैतेभ्यःपरिददत्पितृभ्यो
 मिद्वेभ्यःसुविदुत्रियेभ्यः ॥ आयुर्विश्वायुःपरिपासतित्वापूषात्वापातुप्रथेपुरस्तात् ॥ यत्रासतेसुकृतोयत्रतेययुस्तत्रत्वादेवः
 सवितार्दधातु ॥ पूषेमाआशाऽअनुवेदुसर्वाःसोऽअस्मोअभयतमेननेषत् ॥ स्वस्तिदाऽआद्युणिःसर्ववीरोप्रयच्छन्पुरएतुप्रजा
 नन् ॥ प्रथेपथामजनिष्टपूषापप्रथेदिवःप्रथेपृथिव्याः ॥ उभेअभिप्रियतमेसधस्थआचपराचचरतिप्रजानन् ॥ ॥ उपसर्पे
 तिचतसृणांसंकुसुकःपितृमेधास्त्रिष्टुप् द्वितीयाप्रस्तारपंक्तिःचतुर्थोजगती॥दह्यमानप्रेतानु० ॥ उपसर्पमातरंभूमिमेतामुरुव्यच
 संपृथिवीसुशेवा ॥ ऊर्णम्रदायुवतिर्दक्षिणावतएषात्वापातुनिर्ऋतेरुपस्थात् ॥ उच्छ्वचस्वपृथिविमानिबाधथाःसूपायुनास्मैभ

वसूपवंचना ॥ मातापुत्रं यथासिचाभ्येनं भूमर्जुणिहि ॥ उच्छृं चमानापृथिवीसुतिष्ठतुसहस्रंमितउपहिश्रयतां ॥ तेगृहासौघृत-
 श्रुतोभवंतुविश्वाहासैशरणाः संत्वत्र ॥ उत्तेस्तन्नामिपृथिवीत्वत्यरीमंलोगंनिदधन्मोऽअंहरिपं ॥ एतांस्थूणापितरोधारयंतुते
 त्रायमःसादनातेमिनोतु ॥ ॥ सोमएकेभ्यइतिपंचानायमोभाववृत्तोनुष्टुप् ॥ दह्यमानप्रेतानु ॥ सोमएकेभ्यःपवतेघृतमेक-
 उपासते ॥ येभ्योमधुप्रधावतितंश्चिदेवापिगच्छतात् ॥ येचित्पूर्वैः ऋतुसार्पऽऋतावानऋतुवृधः ॥
 गुध्यतेप्रधेनेषूशूरासोयेतनत्यजः ॥ येवासहस्रदक्षिणास्तांश्चिदेवापिगच्छतात् ॥ ऋपीन्तर्पस्वतोयमतपोजोऽअपिगच्छतात् ॥
 पितृन्तर्पस्वतोयमतांश्चिदेवापिगच्छतात् ॥ सहस्रणीथाः कवयोयगोपायंतिसूर्य ॥ ऋपीन्तर्पस्वतोयमतपोजोऽअनु ॥ तावस्मभ्यह-
 उरूणसावित्यस्यमश्वानौत्रिष्टुप् ॥ दह्यमानप्रेतानु ॥ उरूणसार्वसुतृपाउदुंबलौयमस्यदूतौचरतोजनोऽअनु ॥ तावस्मभ्यह-
 शयेसर्षीयपुनर्दातामसुमद्येहभद्रं ॥ एतैर्मन्त्रैर्दह्यमानंप्रेतमनुमंत्र्य ॥ ततःकर्तासव्यैसेजलपूर्णकुंभंगृहीत्वाइमशानस्थितना
 तिस्थूलमस्फुटितंश्लक्ष्णमइमानमादायकुंभस्यपृष्ठभागेतेनाइमनाछिद्रंकृत्वाप्रेतपाददेशादारभ्यतल्यर्थतमप्रदक्षिणंपरिव्रजन्ज
 पेत् ॥ वातास्तेवांतुपथिपुण्यगंधामनः सुखागान्नसुखानुलोमाः ॥ त्वचः सुखामांसुखाअस्थिसौख्यावहतुत्वांमरुतः सुकृतांयत्र
 लोकाः ॥ इमाआपोमधुमत्योस्मिंस्तेलोकउपदुह्यतामक्षीयमाणाः स्वधानमः ॥ इत्येकवारंपरिक्रम्यपाददेशएवस्थित्वा तेनैवाभ्रम
 नाकुंभेद्वितीयच्छिद्रंकृत्वात्रजन्जपेत् ॥ वातास्तेवांतु ॥ इमाआपोमधुमत्योस्मिंस्तेलोकउपदुह्यतामक्षीयमा
 नमः ॥ पुनस्तथैवतृतीयच्छिद्रंकृत्वापूर्ववद्भ्रजन्जपेत् ॥ वातास्तेवांतु ॥ इमाआपोमधुमत्यः स्वर्गतेलोकउपदुह्यतामक्षीयमा

णाःस्वधानर्मः ॥ एवमःपारंक्रम्यप्रेतशिरोदेशकुंभंस्फोटयित्वाशिलाहस्तःकर्ता ॥ इमेजीवाःसंकुसुकोमृत्युखिष्टुप् ॥ सव्यमावृ
त्यगमनेविनि० ॥ इमेजीवाविमृतैरावृत्रन्नभूद्भद्रादेवहृतिर्नोऽअद्य ॥ प्रांचौअगामनृतयेहसायद्राधीयआयुःप्रतरंदधानाः॥
इतिमंत्रंजपेत् ॥ ततःकर्तुंसहिताःसव्यावृत्ताभूत्वापृष्ठतोनेवेक्षमाणाःकनिष्ठपूर्वाःकर्तृपुरःसरंसर्वेनिर्गच्छेयुः ॥

श्रीः ॥ ततोयत्रोदकमवहत्स्थिरंभवतितत्रसर्वेगत्वाकपालस्फोटनानंतरंसपिंडाःसोदकाःसगोत्रिणःस्त्रियश्चापिसर्वेमुक्तकेशा
एकवाससोदक्षिणामुखाः ॥ ३२१ ॥ अथतिलांजलिदानम् ॥ ॥ ४१ ॥

नेतिमंत्रेणवामहस्तेनअनामिकयाजलावलंडनंकृत्वा सचैलंस्नात्वाचम्योत्तीयेनारमनाकुंभच्छिद्राणिकृतानितमश्मानंशुचौ
तीरेदक्षिणात्रेष्टुदर्भेषुस्थापयित्वातस्योपरिसतिलमेकैकंजलांजलिंदक्षिणहस्तपितृतीर्थेनसव्योत्तरपाणिकायुगपदयुग्मादद्युःअ
पसव्येनअमुकगोत्रअमुकप्रेतैतत्तेतिलोदकमुपतिष्ठतामिति ॥ अन्येसुहृदोदद्युर्नवा ॥ दानेपिनाश्मनियमः ॥ पतितब्रात्यादयोनदद्युः ॥ ततो
सोपिदद्यात् ॥ शववाहकैश्चांजलिर्देयः ॥ ब्रह्मचारीनदद्यात् ॥ पितृमातृगुर्वाचार्यमातामहमातामहीभ्यः
मुकगोत्रस्यअमुकप्रेतस्यदाहजनिततृपोपशमनार्थइदंतेवासोदकमुपतिष्ठतामितिकर्ताश्मनिउत्तरीयोदकंदद्यात् ॥ ततःकर्तुं
भिन्नाःसर्वेसपिंडादयः शवस्पर्शिनश्चान्यानिवासांसिपरिधायाद्र्गण्यधोदशानिसकृन्निष्पीड्यशोषणार्थमुदग्दशानिनिक्षिप्य
दिनदाहेआतारकोदयात् रात्रिदाहेआदित्योदयात्तत्रैववसीरन् ॥ शववाहकानामप्येवंनियमः ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४१ ॥

॥ ३२२ ॥ अथग्रथमदिननिधिः ॥

श्रीः ॥ कर्तातुआर्द्रवस्त्रःतस्मिन्दिनेतत्कालएवअन्यदिनेषुवा पूर्वाह्णएवप्रागुदीच्यांग्रामाद्धहिःसरित्संगमेमहाजलसन्निधौवा
गत्वाभूमिसंशोध्यतत्रदशाहांतंकर्मकुर्यात् ॥ स्नात्वाआर्द्रेनवीनेवाससीधृत्वाचम्यदेशकालौस्मृत्वासोत्तरीयःप्राचीनावीतीद
क्षिणामुखःअमुकगोत्रस्यामुकशर्मणःप्रेतस्यपित्रादेः (मात्रादौतुअमुकगोत्रायाअमुकदायाःप्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्याउत्तमलो
कप्राप्त्यर्थं प्रथमदिनविधिकरिष्यइतिसंकल्प्यताम्रादिमयनवंभांडसंशोध्यतस्मिन्पिंडार्थसकृत्प्रक्षालितान्प्रसृतिपरिमितांस्तं
डुलान्सोदकान्निधायतस्यात्रलौकिकाम्नावधिश्रित्यस्वयंचरुंश्रपयित्वामृत्तिकास्नानादिकुर्यात् ॥ देशकालौसंकीर्त्यप्राचीनावी
तीपित्रादेरमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वनिवृत्त्याउत्तमलोकप्राप्त्यर्थंप्रथमेहनिदाहजनिततापोपशमनार्थमृत्तिकास्नानानिकरि
ष्यइतिसंकल्प्य ॥ उदुत्यंजातवैदसंदेवंवंहतिकेतवः ॥ हृशेविश्वायसूर्य ॥ इतिशुद्धमृदमादाय ॥ आकृष्णेनरजसावर्तमानोनि
वेशयन्नमृतंमर्त्यंच ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनाद्वेयोयातिभुवनानिपश्यन् ॥ इतिसूर्यायदर्शयित्वा ॥ सहस्रशीर्षोपुरुषःसह
स्त्राक्षःसहस्रपात् ॥ सभूमिंविश्वतोवृत्वात्यतिष्ठदशांगुलं ॥ इतिशिरसिविलिप्य ॥ अंगादंगाहोमोलोमोज्ञातंपर्वणिपर्वणि॥
यक्षंसर्वस्मादात्मनस्तमिदंविबृहामिते ॥ इतिसर्वांगेलिपेत् ॥ स्नात्वाआचम्यएवंपुनर्द्विवारंकार्यं ॥ ततःआचम्यअद्येत्यादि
प्राचीनावीतीपित्रादेरमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यदाहजनिततृषोपशमनार्थंतिलतोयांजलिदानंकरिष्यइतिसंकल्प्य कुशोपर्यश्मा
नंस्थापयित्वातदुपरिअमुकगोत्रामुकप्रेतदाहजनिततृषोपशमनार्थंएषतिलतोयांजलिस्तवोपतिष्ठतां ॥ इतिदक्षिणामुखःति

लतोयांजलिंदद्यात् ॥ प्रत्यंजलिस्नानंकार्यं ॥ तिलांजलिसंख्या ॥ प्रतिदिनं एकैकइतिदश ॥ प्रतिदिनं नवसंख्यइतित्रिंशत् ॥
प्रतिदिनं एकैकवृद्धिरितिपंचपंचाशत् ॥ प्रत्यहंदशदशेत्येवंभवति ॥ प्रत्यहंद्वयोत्तरंवृद्धिरितिदशोत्तरंशतं ॥ एषांपक्षाणामध्ये
तस्यआद्येहनिशिरोवयवनिष्पत्त्यर्थंएषपिंडस्तवोपतिष्ठतामितिकुशोपरिमहांतंपिंडं दत्वा अमुकगोत्रस्यामुकप्रे
कमुपतिष्ठतामितिपिंडोपरिपितृतीर्थेनतिलोदकंप्रक्षिप्यपुनरमुकेत्यादिउपतिष्ठतामित्येतनतुलसीदलंभृगराजपत्रंधूपदीपादि
चदत्वा ॥ अनादिनिधनोदेवःशंखचक्रगदाधरः ॥ अक्षय्यःपुंडरीकाक्षःप्रेतमोक्षप्रदोस्तुवै ॥ इतिपठित्वा ॥ इदंपिंडदानंसति
लोदकंप्रेताप्यायनमस्तु ॥ अस्तुप्रेताप्यायनमितिप्रतिवचनंआचार्योवेदत् ॥ ततःपिंडंजलेप्रवाह्यस्नात्वाआचामेत् ॥ इति ॥

श्रीः ॥ आचम्यप्राणानायम्यदेशकालौस्मृत्वाअमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमोक्षार्थंआद्येहनिनवश्राद्धंकरिष्येइतिसंक
ल्प्य प्राचीनावीतीदक्षिणाभिमुखःआत्मनोऽग्नेर्दग्धंभुवदुर्दग्धंखंडंस्थाप्य अमुकगोत्रामुकप्रेतनवश्राद्धेइदंतेपाद्यमुपतिष्ठतामितिपाद्यं दत्वा अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यनवश्राद्धेआसनमु
पतिष्ठतामितिदग्धंभुवामभागेएकंसतिलंकुशंदत्वास्वाग्नेदक्षिणाग्नेकंकुशंनिधाय तत्रैकमुत्तानंपात्रमासाद्यतत्रैकंपवित्रंनिधा
यतूष्णींजलमासिच्यतूष्णींमेवतिलान्प्रक्षिप्यतूष्णीमर्घ्यंनिवेद्य अमुकगोत्रामुकप्रेतनवश्राद्धेइदमर्घ्यंतवोपतिष्ठतामितिअर्घ्यं

नवश्राद्धं
॥३२३॥

दत्वाऽमुकगोत्रामुकप्रेतआच्छादनमुपतिष्ठतामित्याच्छादनदर्भदद्यात् ॥ नात्रगंधादिदानं ॥ ततोघृताक्तमन्नंसक्तुवादायअमु
कगोत्रायामुकप्रेतायस्वाहेत्येकामाहुतिर्दर्भबहुपाणौहुत्वा अमुकगोत्रायामुकप्रेतायनवश्राद्धेदास्यमानमामंयथाशक्तिसोपस्क
रंतन्निष्क्रयंवासोदकुंभंसदक्षिणमुपतिष्ठतामितितिलोदकंदद्यात् ॥ ततःपिंडदानार्थमेकंकुशंनिधायाभ्युक्ष्यअमुकगोत्रायामु
कप्रेतायाद्येहनिनवश्राद्धेऽयंसक्तुपिंडउपतिष्ठतामितिपिंडदत्वातदुपरितिलोदकमुपतिष्ठतामितिदत्वानुमंत्र्यशक्त्या प्राणंनि
रुध्यपुनरनुमंत्र्यशेषमाघ्रायअमुकगोत्रेत्यादिउपतिष्ठतामित्यंतेन अभ्यंजनांजनेकशिपूपबर्हणेदशांचनिवेद्योपस्थायांमुकगो
त्रायामुकप्रेतायनवश्राद्धेदक्षिणोपतिष्ठतामितिदक्षिणांदत्वातूष्णींविकिरंदत्वा अनादिनिधन इतिश्लोकंपठित्वाऽभिरम्यता
मित्युक्तेऽभिरताःस्मेतिप्रत्युक्तेपिंडंप्रवाह्यन्नायात् ॥ इतिनव (विपम) श्राद्धं ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥

॥ ३२४ ॥ अथनमप्रच्छादनश्राद्धम् ॥

श्रीः ॥ आचम्यप्राणानायम्यदेशकालौस्मृत्वा प्राचीनावीतीअमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वनिवृत्तिकामःप्रथमदिनविहितं
नमप्रच्छादनश्राद्धंकरिष्यइतिसंकल्प्य उदङ्मुखंदर्भबहुमुपवेश्यअमुकगोत्रामुकप्रेतनमप्र० अयंतेक्षणउपतिष्ठतां ॥ एवंअमुके
त्यादिपाद्यं० ॥ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यनमप्र० आसनमुप० ॥ एकपवित्रकोक्ताद्यर्थापत्रेजलमासिच्यानुमंत्र्यतिलोसिमेत
दैवत्योगोसवेदवनिर्मितः ॥ प्रलवद्भिःप्रत्तःप्रेतेमान्लोकान्प्रीणयाहिनःइतिमंत्रेणतूष्णींवातिलान्प्रक्षिप्यतूष्णींनिवेद्यामुकगो
त्रामुकप्रेतनमप्र० इदमर्ध्यंतवोपतिष्ठतां ॥ अमुकेत्यादि इदमाच्छादनंतवोपतिष्ठतां ॥ अमुकगोत्रायामुकप्रेतायस्वाहेतितिप्र

पाणौ हुत्वा अमुकगोत्रायामुकप्रेताय दास्यमानममं यथाशक्तिसोपस्करं सधृतं सोदकुंभं सवस्त्रं यथाशक्तिकां स्य पात्रसुवर्णं रजत
लोहतैलदक्षिणोपेतं सोपानत्कं सोदपात्रमुपतिष्ठतामित्यामंदद्यात् ॥ ततः पिंडदानार्थमेककुशं निधायाभ्युक्ष्य शुभं तां प्रेता इत्यु
दकं निनीयामुकगोत्रायामुकप्रेताय नम्रग्रच्छादय अयं सक्तुपिंडउपतिष्ठतां पिंडोपरितिलोदकमुपतिष्ठतां ॥ ततोऽनुमंत्रणा
दिकशिपूपवर्हणदशदानां तं सर्वं नवश्राद्धवत्तूष्णीं कृत्वा ॥ अमुकेत्यादिप्रेतनम्रग्र० तुलसीदलं भृंगराजं चोपतिष्ठतामिति द
त्वोपस्थायामुकगोत्रायामुकप्रेताय नम्रग्रच्छादय अनादिनिधनो देव इत्यादिस्नानां तं पूर्ववत् ॥ इति ॥

श्रीः ॥ अस्मिन्नेवाहनिपाथेयश्राद्धं ॥ ३२५ ॥ अथपाथेयश्राद्धम् ॥

व्यलोकालेतलोकगमनार्थपाथेयश्राद्धं करिष्ये इति संकल्प्यामुकगोत्रामुकप्रेतपाथेयश्राद्धे अयं तेक्षणउपतिष्ठतां ॥ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य मनु
पाद्यं ० ॥ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य पाथेयश्राद्धे आसनं ० ॥ एकपवित्रार्घ्यपात्रे जलमासि च्यानुमंथ्य तिलोसीत्यूहितमंत्रेण तूष्णीं
वा तिलान्प्रक्षिप्य तूष्णीं निवेद्य अमुकगोत्रामुकप्रेतपाथेय० अर्घ्यं ० ॥ अमुकेत्यादि आच्छादनं उपतिष्ठतां ॥ अमुकगोत्रायामुक
प्रेताय स्वाहेति पाणौ हुत्वाऽमुकगोत्रायामुकप्रेतायामंतन्निष्क्रयं वा यथाशक्तिसोपस्करं सधृतं सोदकुंभं सवस्त्रं यथाशक्तिकां स्य सुव
र्णं रजतलोहतैलदक्षिणोपेतं सोपानत्कं सोदपात्रमुपतिष्ठतामिति तिलोदकं क्षिपेदिति ॥ ततः पिंडदानार्थमेककुशं निधायाभ्युक्ष्य
शुभं तां प्रेता इत्युदकं निनीय अमुकगोत्रायामुकप्रेताय पाथेयश्राद्धे अयं सक्तुपिंडउपतिष्ठतां ॥ अनुमंत्रणादिकशिपूपवर्हणदश

दानांतंसर्वेनवश्राद्धवत्तूणींकृत्वाअमुकेत्यादिप्रेततुलसीदलंभृंगराजंचउप०इति दत्वोपस्थाय ॥ अमुकगोत्रायामुकप्रेतायपाथे
 यश्राद्धेदक्षिणोपतिष्ठतां ॥ अनादिनिधनइत्यादिस्नानांतपूर्ववत् ॥ इतिपाथेयश्राद्धं ॥ ततःपूर्वशोपणार्थस्थापितानिव
 स्त्राणिधारयेयुः ॥ ततःकर्तोपिपरिधानीयंआर्द्रवस्त्रंउत्तीर्यत्रिगुणमधोदशमर्धवस्त्रिष्पीड्यशोपणायउदगग्रंविसृजेत् ॥ त
 तोदिवामृतौदृष्टेवृक्षेषुरात्रिमृतौउदितेसूर्येबालपुरःसराःवृद्धजघन्यागृहंगत्वाद्वारदेशेनिवपत्राणिविदश्यफूत्कृत्याचम्यपापा
 णाग्निगोमयाक्षततिलोदकदूर्वावृषभसर्षपान्यथालाभंसृष्ट्वादहल्यश्मनिचरणंदत्वागृहंविशेयुः ॥ शववाहकानामपिनिवपत्रदं
 शादिएकाहमाशौचंच ॥ ततःशिक्ययोर्नैवेमृन्मयभाजनेजलंदुग्धंचप्रक्षिप्य ॥ प्रेतात्रस्नाहोदंचपिबेतिवदेत् ॥ इदंचकृताकृ
 तं ॥ अस्मिन्दिनेक्रीतंसुहृद्भ्योलब्ध्वाश्रीयुः ॥ गोत्रजादीनांतद्दिनेतद्दृहएवभोजनं ॥ आमिपलवणपयोमिष्टामिष्टामितिगृहोपरिभोजनस्थ
 नाश्रीयुः ॥ हविष्यान्नमेवभुंजीरन् ॥ कर्तोभोजनकालेसघृतमन्नमादायामुकप्रेतायेदमन्नमुपतिष्ठतामितिगृहोपरिभोजनस्थ
 लसमीपेवादद्यात् ॥ दशाहांतंभोजनस्थानविपर्ययोपितावस्यर्थंतनकार्यः ॥ लेखनहास्यहर्षोच्चासनोत्कृष्टवस्त्रादिधारणतैला
 भ्यंगस्त्रीसंगखट्वाशयनान्यस्पर्शादीनिवर्जयेयुः ॥ रात्रौपृथगेवतृणास्तृतभूमौशयीरन् ॥ महागुरुनिपातेषुत्र्यहमेकाहंचोपवा
 सः ॥ पारणाचक्रकीतेनसुहृद्भ्योलब्धेनवा ॥ पत्न्याचैवं ॥ बालवृद्धातुराणानैतेनियमाः ॥ ३२६ ॥

अथास्थिसंचयनम् ॥

॥ ३२६ ॥ अथास्थिसंचयनम् ॥ तत्रद्विपादत्रिपादनक्षत्राणिकर्तुर्जन्मनक्षत्रंच
 श्रीः ॥ तच्चआशौचमध्येतुप्रथमेद्वितीयेतृतीयेचतुर्थेसप्तमेनवमेवादिनेकार्यम् ॥ तत्रद्विपादत्रिपादनक्षत्राणिकर्तुर्जन्मनक्षत्रंच

वर्ज्यं ॥ संभवेर्कभौमसंदवारानंदतिथयश्चवर्ज्याः ॥ अस्माभ्वसूकरशूद्रादिस्यशेषं च गव्येन शालग्रामतुलस्युदकैः प्रोक्षणं ॥ दाह
 देशंगत्वा आचम्य तूष्णीं प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा प्राचीनावीती अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वं निवृत्त्यर्थं अस्थिसंचयनं क
 तिप्रोक्षणे वि० ॥ शीतिकेशीतिकावतिह्लादिं केह्लादिकावति ॥ मंडूक्या इ सुसंगम इमं स्व १ गिर्हर्षय ॥ इति मंत्रेण पादादारभ्य
 सर्वोचितं त्रिः प्रोक्षेत् ॥ प्रतिप्रोक्षणं मंत्रावृत्तिः ॥ ततो वृद्धाविषमाः कर्तुं सहिता अंगुष्ठोपकनिष्ठिकाभ्यां एकैकमस्थिपादादारभ्य
 शिरःपर्यंतं गृहीत्वा यथाशब्देन भवति तथा कुंभे निदधुः ॥ स्त्रियाः कुंभ्यां ॥ स्तनरहितः कुंभः सस्तनी कुंभी ॥ अन्यद्भस्म शूर्पेण सं
 शोध्य सूक्ष्माण्यस्थीन्यपि कुंभे निधाय भस्मंगायां क्षिपेत् ॥ ततो वर्षाकाले जलं नागच्छति तादृशे शुचि प्रदेशे गतं कृत्वा ॥
 उपसर्पेति संकुसुकः पृथिवीमृत्युः पितरो वा त्रिष्टुप् ॥ गते स्थिकुंभनिक्षेपणे विनि० ॥ उपसर्पमातरं भूमिमेतामुरुव्यचंसं पृथिवीं सुशे
 वां ॥ ऊर्णम्वदायुवतिर्दक्षिणावत एषा त्वापातुर्निर्ऋतेरुपस्थात् ॥ गते पांसुक्षेपणे वि० ॥ इति मंत्रेण कर्तारं गतं घटं निदध्यात् ॥ उच्छृं च स्वैति संकुसुको
 मृत्युः पितरः पृथ्वी वा प्रस्तारपंक्तिः ॥ गते पांसुक्षेपणे वि० ॥ अनेन घटस्य समंतात् खाते मृदं क्षिपेत् ॥ उच्छृं चमाना पृथिवी सुतिष्ठतु सहस्रं मित उपहि श्रयंतां ॥ मा
 ता पुत्रं यथा सिंचाभ्येनं भूम ऊर्णहि ॥ अनेन घटस्य समंतात् खाते मृदं क्षिपेत् ॥ उच्छृं चमाना पृथिवी सुतिष्ठतु सहस्रं मित उपहि श्रयंतां ॥ मा
 शरणाः संत्वत्र ॥ इति मंत्रं जलं बद्धा जपेत् ॥ उत्तेस्तन्नामीति संकुसुकः पृथ्वी पितरो मृत्युर्वा त्रिष्टुप् ॥ घटस्य मुखपिधाने वि० ॥

अस्थिसं-
॥३२६॥

॥४०६॥

उत्तैस्तन्नामिपृथिवीत्वत्परीमंलोगंनिदधन्मोऽअहंरिपं ॥ एतांस्थूणापितरौधारयंतुतेत्वायुमःसादनातेमिनोतु ॥ इतिनवखर्ष
रंघटोपरिनिदध्यात् ॥ ततोयथाकुंभोनहृश्यतेतथामृदंनिधायपश्चादनवेक्ष्यमाणोन्यत्रगत्वास्नायात् ॥ ४३ ॥

॥ ३२७ ॥ अथास्थिसंचयनश्राद्धम् ॥

श्रीः ॥ ततोगोमयेनस्मशानदेशमनुलिप्यतत्र (दक्षिणाग्रां) त्रिकोणांवेदिंकृत्वा देशकालौसंकीर्त्यप्राचीनावीतीअमुकगोत्र
स्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वनिवृत्त्यर्थवेदिकाराधनंकरिष्ये ॥ तूष्णींतिलोदकंकृत्वावेदिंहरिद्रादिनालंकृत्यतत्रोदकपूर्णकुंभंनिधायत
दुपरिमहांतंभक्तपिंडंसंस्थाप्य अमुकगोत्रायामुकशर्मणेप्रेतायभोजनार्थमयंपिंडःपानार्थंचोदकुंभोदकमुपतिष्ठतामितिसकुश
तिलोदकंक्षिप्त्वा ॥ तत्पश्चिमभागेस्मशानवासिनेरुद्रायायंपिंडउपतिष्ठतामितिकुंभोपरिपिंडांतरं ॥ ततःतदुत्तरतःस्मशानवा
सिभ्यःप्रेतेभ्योयंपिंडउपतिष्ठतामितिकुंभोपरिपिंडांतरं ॥ पूर्वतोदक्षिणतोवाप्रेतसखिभ्योयंपिंडउपतिष्ठतामितिकुंभोपरिपि
डांतरं ॥ एवंचतुरःपिंडान्दत्त्वापिंडोपरिस्मशानवासिनेरुद्राय स्मशानवासिभ्यःप्रेतेभ्यः प्रेतसखिभ्यश्चक्रमेण इदंतिलोदक
मुपतिष्ठतामितिप्रत्येकंदत्त्वायवपिष्टेनपोलिकात्रयंपादुकापदंछत्रत्रयंचसंपाद्य तन्मध्येएकांपोलिकांपादुकाद्वयंपेकंछत्रंचका
लायदहनपतयेइदमुपतिष्ठतामितिदत्त्वा पोलिकांपादुकाद्वयंछत्रंचमृत्यवेदहनपतयेइदमुपतिष्ठतामितिदत्त्वा पोलिकांपादुका
द्वयंछत्रंचयमायदहनपतयेइदमुपतिष्ठतामितिदद्यात् ॥ ततोयमभ्वभ्यामुपतिष्ठतामितिपोलिकांपादुकांछत्रंचदत्त्वास्नायात् ॥
ततोदेशकालौसंकीर्त्यअमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमोक्षार्थंअस्थिसंचयनश्राद्धंकरिष्ये ॥ प्राचीनावीतींतिलोदकंकृत्वाउ

दङ्मुखं दर्भं बडुं संस्थाप्य अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य अस्थिं संचयनश्राद्धे क्षण उपतिष्ठतामित्यादि पाद्यासनाध्याच्छादनांतं अमुकप्रे-
तेत्यादितत्तद्विभक्त्या उपतिष्ठतामिति दत्त्वा पाणिहोमं कृत्वा आमंतं तन्निष्क्रयं वा अमुकगोत्रायेत्यादि चतुर्थे तेन उपतिष्ठतामिति द-
त्त्वा पिंडदानाद्यभिरभ्यतामित्यंतं नम्रप्रच्छादनवत्कृत्वा अनादिनिधन इति श्लोकं पठित्वाभिरभ्यतामित्यादि पिंडं प्रवाह्य स्नाया-
त् ॥ इत्यस्थिं संचयनश्राद्धं ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४३ ॥

तीर्थे-पूर्वा-
॥ ३२८ ॥

श्रीः ॥ दशाहांतरस्थिक्षेपेनास्तादिविचारः ॥ अथ तीर्थे स्थिक्षेपपूर्वांगविधिः ॥
र्यादिति गौतमः ॥ यत्रास्थीनि निखातानि संसृज्यते तत्र देशकालनिर्देशात् तस्मात्पित्रादेरमुकशर्मणो मुकगोत्रस्य तीर्थे स्थिक्षेपार्थं मस्यु-
द्धरणं करिष्ये ॥ पृथगगोमूत्रादिभिर्गायत्र्यादिमंत्रैस्तांभूमिं प्रोक्ष्य ॥ उपसर्पेति च तत्सृणां शंखः पितरस्त्रिष्टुप् क्रमेण भूप्रार्थं नखन-
मृदुद्धरणास्थिग्रहणेषु विनियोगः ॥ एताभिर्ऋग्भिः क्रमेणास्थिग्रहणां तानि कर्माणि कृत्वा जलाशये गृह्योक्तविधिना स्नात्वा स्थिशु-
द्धिं कुर्यात् ॥ अस्थीनि स्पृष्ट्वा एतो न्विद्रमिति तिसृणामांगिरसस्तिरश्चींद्रोनुष्टुप् अस्थिमार्जने वि० इति तृचावृत्या पंचगव्यैः स्ना-
त्वा स्पृष्ट्वैव दशस्नानानि कुर्यात् ॥ तत्र गायत्र्यादि पंचमंत्रैर्गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्पिः स्नानानि कृत्वा देवस्य त्वेति कुशोदकेन मान-
स्तोक इति भस्मना अश्वक्रांतेरथ क्रान्त इति मृदामधुवाता इति मधुना आपो हि ष्ठेति शुद्धोदकेन च स्नायात् ॥ एवं दशस्नानां तिसृणां कु-
शैर्मार्जनं कुर्यात् ॥ तत्र मंत्राः ॥ अतो देवा इत्यृक् १ अथ सप्त सूक्तानि ॥ एतो न्विद्रमिति तिसृणामांगिरसस्तिरश्चींद्रोनुष्टुप् ३

शुचीवोहव्येतिमैत्रावरुणिर्वसिष्ठोमरुतस्त्रिष्टुप् ३ नतमंहइत्यष्टर्चस्याहोमुग्विश्वेदेवावृहतीअंत्यात्रिष्टुप् ८ इतिवाइतित्रयो
 दशर्चस्यलबइंद्रोगायत्री १३ यदंतियच्चेतिसप्तानांवसिष्ठोद्वयोःपवमानसोमोत्यानामग्निर्गायत्री ७ ममाग्रइतिदशर्चस्यविह
 व्योविश्वेदेवास्त्रिष्टुवंत्याजगती १० कद्रुद्रायेतिनवर्चस्यधौरःकण्वोरुद्रोगायत्री ९ एतैःप्रतिमंत्रमार्जयित्वाततोयदीयान्यस्थी
 नितस्यकृतसपिंडीकरणस्यपार्वणविधिनास्थिक्षेपांगभूतंश्राद्धंहिरण्येनकुर्यात् ॥ दशाहांतरस्थिक्षेपकरणेएकोद्विष्टविधिनाश्रा
 ङ्गं ॥ देशकालसंबंधनामगोत्रादिस्मृत्वांगगायांकरिष्यमाणास्थिक्षेपांगभूतंश्राद्धंहिरण्येनकरिष्ये तिलोदकं ॥ पुरुरवार्ववि
 श्वेदेवार्थेत्वयाक्षणःकरणीयइतिदैवे पित्राद्यर्थेइतिपित्र्येक्षणंदत्वा एवमुभयत्रासनादिआच्छादनांतपूजांकृत्वासक्तुभिरग्नौकर
 णं ॥ यथाशक्तिहिरण्यंपात्रेनिधाय देवेभ्यःपितृभ्यश्चत्यक्त्वातृप्तिप्रश्रवर्जसंपन्नवचनांतंकृत्वासक्तुभिःपिंडदानं ॥ ततःअप
 हतेत्यादिवासोदानांतेनमोवःपितरइत्यत्रइषेपदस्थानेहेमद्रव्यायेत्यूहः ततःश्राद्धसमाहृतंप्रकृतिवत् स्मृत्युक्तसंकल्पेतुउशंत
 स्त्वेत्यादिमंत्रेष्वपियथायथमूहोबोध्यः ॥ एवंश्राद्धंसमाप्यवक्ष्यमाणपदार्थैरस्थीनिवेष्टयेत् ॥ यक्षकदर्मेनानुलिप्यहेममौक्ति
 करौप्यप्रवालनीलमणीनस्थिषुप्रक्षिप्यअजिनकंबलदर्भभूर्जपत्रशाणभूर्जपत्रताडपत्रैःक्रमेणसप्तधावेष्ट्यतान्नपुटेस्थापयेत् ॥ त
 तःस्वसूत्रोक्तविधिनास्थंडिलेग्निप्रतिष्ठाप्याष्टोत्तरंतिलाज्याहुतीःपृथक्जुहुयात् ॥ उदीरतांचतुर्दशर्चस्यशंखःपितरस्त्रिष्टुवेका
 दशीजगतीअस्थिप्रक्षेपांगतिलाज्यहोमेवि० एतत्सुक्तस्यसप्तावृत्तिभिःअष्टमावृतौअंत्यानांचतुर्णांल्यागेन १०८ हुत्वास्विष्टकृ
 दादिहोमशेषसमाप्यास्थीनिगृहीत्वाचांडालपतितब्रात्यादिसर्शमकृत्वैवशुचिस्तीर्थगच्छेत् ॥ मूत्रपुरीषशौचाचमनकालेस्थी

न्यन्यत्रस्थापयेत् ॥ ततस्तीर्थप्राप्यतीर्थप्राप्तिमित्तकं स्नानादिविधायास्थीनि स्नापयित्वा मुकगोत्रस्यामुकशर्मणो ब्रह्मलोकादिप्राप्तये मुकतीर्थे स्थिप्रक्षेपमहंकरिष्ये इति संकल्प्य पलाशपर्णपुटे पंचगव्येनास्थीन्यासिच्य हिरण्यशकलमाल्यघृततिलमिश्रतीर्थे क्षिपेत् ॥ ततः स्नात्वा जलाद्धिरागत्य सूर्यहृद्गारिस्मृत्वा विप्राय यथाशक्ति दक्षिणां दद्यात् ॥ (एतदशक्तौ निर्दिष्टप्रयोगां तर्गत हिरण्यश्राद्धहोमौ वर्जयित्वान्यत्सर्वं यथावत्कुर्यादिति शौनकाशयः) ॥ इत्यस्थिक्षेपविधिः ॥ ३२९ ॥

द्विती-दि-
॥३२९॥

श्रीः ॥ ततः पूर्वदिनकृत्य देशे द्वितीयदिनविधिं कुर्यात् ॥ आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य प्राचीनावीती अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्त्या उत्तमलोकप्राप्त्यर्थं द्वितीयदिनविधिं करिष्ये इति संकल्प्य हविः श्रपयित्वा प्रथमदिनवत्संकल्पपूर्वकं मृत्तिकास्नानत्रयं विधाय प्रथमदिनपरिगृहीत तिलांजलिदानपक्षाश्रयणेन अरुमनिसंकल्पपूर्वकं मंजलिदानं कृत्वा प्रत्यंजलिस्त्वा अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य द्वितीये हनिचक्षुःश्रोत्रनासाय वनिष्पत्त्यर्थं मयं पिंड उपतिष्ठतां ॥ तृतीये हनिभुजवक्षोग्रीवामुखावयनिष्पत्त्यर्थं ३ चतुर्थे पाणि कुक्षि कटिनाभि गुदलिं गावयवनि ० ४ पंचमे रुजानुजंघावयवनि ० ५ षष्ठे गुल्फपादांगुलिमर्माद्यवयवनि ० ६ सप्तमे अस्थिमज्जाशिरावयवनि ० ७ अष्टमे नखरोमाद्यवयवनि ० ८ नवमे मर्मवीर्यादिसर्वावयवनि ० ९ दश

॥४०८॥

मेधुत्पिपासानिवृत्त्यर्थमिति तत्तद्दिनोहेन दध्नि शिखोपरि पिंडं दत्वा तुलसीभृंगराजदानादिकृत्वा अनादिश्लोकपाठपिंडप्रवाहण इति नित्यविधिः ॥

स्नानांतपूर्ववत् ॥ तृतीयपंचमसप्तमनवम॥६॥७॥८॥९॥
॥ ३३० ॥ अथदशमदिनविधिः ॥

॥ ३३० ॥ अथदर्शमदिनावाधः ॥
श्रीः ॥ अथकाकबलिः ॥ प्रात्याहिकपिंडदेशेऽन्यत्रवामृदात्रिकोणावेदिंकृत्वागोमयेनसंमृज्यहरिद्रादिनालंकृत्यकर्तातस्यांम
ध्येपूर्वादिचतुर्दिक्षुजलपूर्णकुंभपंचकंसंस्थाप्य तेषुस्थापनक्रमेणैवोदनपिंडांश्चनिधायक्रमेणसर्वत्रनिवेदयेत् ॥ अमुकगोत्राया
मुकशर्मणेप्रेतायक्षुलिपासानिवृत्यर्थंअथपिंडःसोदकुंभउपतिष्ठतामितिमध्यस्थंनिवेदयेत् १ ॥ प्रेतसखिभ्यःक्षुलिपासा० ता
मितिपूर्वस्थं २ ॥ वैवस्वताययमायक्षुलिपासानि० तामितिदक्षिणस्थं ३ ॥ वायसेभ्यःक्षुलिपासा० तामितिपश्चिमस्थं ४ ॥
प्रेताधिपतयेरुद्रायक्षुलिपासानि० तामितिउत्तरस्थं ५ ॥ पिंडदानक्रमेणैवतिलोदकमुपतिष्ठतामितिप्रत्येकंतिलोदकंदत्वापा
दुकाद्वयंछत्रंपताकापोलिकाचउपतिष्ठतामितिपूर्वभ्यःप्रत्येकंदद्यात् ॥ ततःपश्चिमदेशस्थंपिंडंवायसोयावत्भक्षयतितावत्ति
ष्ठेत् ॥ ततोऽस्मानंतिलतैलेनाभ्यज्यजलेक्षिपेत् ॥ केचित्प्रेतत्वनिवृत्याउत्तमलोकाद्वयर्थंदर्शदानान्यप्यत्रकुर्वति ॥ ततःक
र्त्तव्यार्थिताःसर्वबांधवाःसंबन्धिनश्चत्रीस्त्रीन्धर्मोदकांजलीनैकैकंवांजलिंतीरेप्रेतोद्देशेनदद्युः ॥ ततःपुत्रादीनांयथाचारंवाससां
त्यागःकेशश्मश्रुवपननखच्छेदादिच ॥ ततःसर्वेसगोत्राःपुरंध्रश्चयथादेशाचारंगौरसर्षपकल्केनतिलामलककल्केनवाभ्यक्ताः
एककालेजलेसशिरस्कंत्वात्वाचम्यवाग्यताःवृषभंगांसुवर्णचस्पृष्ट्वाशुक्लवाससोगृहं गत्वासर्वे तत्रैव भुंजीरन् ॥ इति दशाहकृत्यं ॥

५०५०

11208

॥ ३३१ ॥ अथैकादशाहृत्यम् ॥
तत्र प्रातरुत्थाय गृहानुलेपनं कृत्वा स्पृष्टानां मृद्भांडानां त्यागः सर्वेषां सिंढानां सचैलं स्नानं तत्र स्पृष्टवस्त्रादीनां प्रक्षालनं तत्र
माधवप्रायश्चित्तग्रंथे च श्वपाकमपिशोधयेदिति ब्रह्मकूर्चहोमस्यात्यंतपापदाहकत्वश्रवणात् कत्रा स्वस्याशौचजन्य सकलदोषानि
पाद्यप्राशयेन्न होमस्यैवावश्यकत्वं ॥ अथवा पंचगव्यप्राशनमात्रेणापि पापक्षयश्रवणादवश्यं तत्कालं केवलं पंचगव्यं सं
त्वाममाशौचजन्या शुचित्वादिसकलदोषनिवृत्तिपूर्वकं शरीरशुद्धिद्वारा वृषोत्सर्गाद्यधिकारसिद्ध्यर्थं पंचगव्यप्राशनमहंकरिष्य
इति संकल्प्य तान्नेपालांशे वा पात्रे ताम्रायागोमूत्रमष्टमाषप्रमाणं तत्सवित्रुरिति गायत्र्या दाय गंधद्वारामिति श्वेतगोः शकृत् पौडश
मापमादाय आप्याय स्वेति पीतगोः क्षीरं द्वादशमाषं दधिक्राव्ण इति नीलगोर्दधिदशमाषं शुक्रमसिज्योतिरसितेजोसिद्धतिकृ
ष्णगोघृतमष्टमाषमादाय तत्र देवस्य त्वेति कुशोदकं चतुर्माषं प्रक्षिप्य प्रणवेनैव यज्ञियकाष्ठेनालोढ्य प्रणवेनाभिमंत्र्य प्रणवेन पिवे
त् ॥ कतुभिन्नाः सर्वेऽपि यथाचारं पिवेयुराचमेयुश्च ॥ एवं पंचगव्यप्राशनेन शरीरशुद्धिं संपाद्य वृषोत्सर्गादिकं कर्म कुर्यात् ॥ कचि
त्तिस्नानोत्तरं प्रातर्वृषोत्सर्गमहैकोद्दिष्टश्राद्धात् प्रागेव शांतिः कर्तव्येति प्रतीयते ॥ अतः पूर्वशांतिकं ततो वृषोत्सर्गादिसंगृहीतं ॥

एकाद-कुं
॥३३॥

1130811

॥ ३३२ ॥ अथपंचकत्रिपादसाधारणशांतिः ॥

श्रीः ॥ अन्नविशेषः ॥ नक्षत्रांतरेमृतस्यपंचकेदाहप्राप्तौदाहकालेषुत्तलविधिरेघनंशांतिकं पंचकमृतस्याश्विन्यांदाहप्राप्तौशां
तिकमेवनपुत्तलविधिः ॥ तन्नसूतकांतितिलहोमंघृतदानंचकृत्वाकांस्यपात्रेतैलंप्रक्षिप्यतत्रात्मबिंबवीक्ष्यविप्रायदद्यात् ॥
शांतिंश्चलक्षहोमरुद्रजपान्यतररूपायथाविभवंकार्या ॥ अथवाकुंभेयमप्रतिमांसंपूज्यस्वगृह्योक्तविधिनान्निप्रतिष्ठापनान्वाधा
नादिचरुश्रपणांतंकृत्वाज्यभागांतेनामभिश्चतुर्दशचर्वाहुतीर्जुहुयात् ॥ यमायस्वाहा धर्मराजाय मृत्यवे अंतकाय वैवस्वता
यकालाय सर्वभूतक्षयाय औदुंबराय दम्नाय नीलाय चित्राय चित्रगुप्ताय १४ एवंहुत्वाहोमशेषं
समाप्यकृष्णवस्त्रयुतांकृष्णांगायमोमेप्रीयतामितिब्राह्मणायदद्यात् ॥ इतिपंचकत्रिपादसाधारणशांतिः ॥ ४१ ॥

॥ ३३३ ॥ अथपंचकशांतिः ॥

श्रीः ॥ देशकालौसंकीर्त्यअमुकगोत्रस्यामुकशर्मणःपंचकनक्षत्रमरणाधोगतिदोषशुद्धिपूर्वकंममाशुभत्वपरिहारार्थंवशारिष्टवि
नाशार्थंचश्रीपरमेश्वरप्रीतयेपंचकशांतिमहंकरिष्ये ॥ ततोगणपतिपूजनंआचार्यवरणंच ॥ आचार्योयदन्नेत्यादिवरदनामाम्नि
प्रतिष्ठांतंकृत्वापूर्वकलशान्स्थापयेत् ॥ महीद्वौरितिमंत्रावृत्त्यापंचकलशेषुपंचसुवर्णप्रतिमाःसंस्थाप्य तत्र यमायसोममितिम
ध्येइमारुद्रायेतिपूर्वं अपनःशोशुचदधमितिदक्षिणे इदंविष्णुरितिपश्चिमे इन्द्रत्वावृषभमित्युत्तरे ॥ धनिष्ठादिदेवताश्च ज्मया
अन्नं तत्त्वायामि० अभियेमिथो० उतनोहिर्बुध्न्यः० पूषागाअन्वेतुनः० ॥ अत्रैवयमादयः ॥ यमंधर्मराजंमृत्युंअंतकंवैवस्वतं

कालंसवभूर्तक्षयं औदुंबरं दमनीलं परमेष्ठिनं वृकोदरं चित्रं चित्रगुप्तं आवाह्यतेरेवमंत्रैः षोडशोपचारैः संपूज्य पूर्वोक्तानि शांतिस्तू
कानि जप्त्वा उत्तरेग्रहान् कलशं च संपूज्य ग्राथ्यान्वा दध्यात् ॥ चक्षुषी आज्येनेत्यंतमुक्त्वा अत्र प्रधानं नवग्रहान्समितिलैः पूर्वोक्त
संख्याकैः ॥ प्रधानं पंचनक्षत्रदेवताः समित्तिलाज्याहुतिभिः प्रतिद्रव्यं १०८ यमादिचतुर्दशप्रत्येकं ८ शेषेणेति परिसमूहनादि
ति जुहुयात् ॥ देवता विसृज्य ततः शांतिपाठः आज्यावेक्षणं ब्रह्मविष्णुमहेशं द्रवरुणप्रीतये प्रियंगुगोधूममाषमुक्षयवत्रीहितिलसुव
र्णादि दध्यात् ॥ ततो नारिकेलेनार्धं दध्यात् ॥ इति पंचकशांतिः ॥

श्रीः ॥ देशकालौ संकीर्त्य अमुकस्य त्रिपादनक्षत्रमरणाधोगतिदोषशुद्धिद्वारा स्वस्याशुभत्वपरिहारार्थं वंशानिष्टविनाशार्थं च स
नवग्रहां त्रिपादशांतिमहं करिष्ये ॥ गणेशपूजनपूर्वकमाचार्यादीन् वृणुयात् ॥ अथाचार्यः कर्मसंकल्प्य यदत्र संस्थितमित्यादि
अग्निप्रतिष्ठां तं कृत्वा कलशत्रयं महीद्यौरित्यादिविधिना स्थाप्या न्दैवतमंत्रैः आपोहिष्ठा ० ९ समुद्रज्येष्ठा ० ४ त्रायंतामिह ० ३
इत्येतैः कलशमभिमन्त्र्य तत्र देवता आवाहयेत् ॥ कृत्तिकायाः अग्निदेवता अग्निदूतमितिसंपूज्य भरण्याय मोदेवताय मायसोममि
त्यधिदेवतां संपूज्य रोहिण्याः प्रजापतिर्देवता प्रजापतेन त्वदे ० इति प्रत्यधिदेवतां संपूज्य ॥ पुनर्वसोः अदितिर्देवता अदितिर्द्यौ
रितिसंपूज्य आर्द्रायाः रुद्रो देवता कद्रुद्रायेति अधिदेवतां पुष्यदेवता बृहस्पतिः बृहस्पते अतियदिति प्रत्यधिदेवतां ॥ उत्तरायाः

॥ ४१ ॥

॥ ४१ ॥

॥ ४१ ॥

॥ ३३४ ॥ अथ त्रिपादशांतिः ॥

त्रिपा.शां.
॥३३४॥

अर्थमादेवताअर्थमणोअदितिर्य० इतिसंपूज्य पूर्वायाःभगोदेवताभगएवभगवानित्यधिदेवतां हस्तस्यसूर्योदेवताउदुत्यमिति
 प्रत्यधिदेवतां ॥ विशाखायाःइंद्राग्नीदेवतेतदिंद्राग्नीइति स्वात्यक्षस्यवायुर्देवतातववायइत्यधिदेवतां अनुराधायाःमित्रोदेवता
 मित्रोजनानितिप्रत्यधिदेवतां ॥ उत्तराषाढायाविश्वेदेवादेवताविश्वेदेवासआगतेतिसंपूज्य पूर्वाषाढायावरुणोदेवतायत्किं
 वेदंवरुणेत्यधिदेवतां श्रवणस्यविष्णुर्देवताइदंविष्णुरितिप्रत्यधिदेवतां ॥ पूर्वाभाद्रपदायाःअजैकपादोदेवतासमुद्रःसिंधूर
 जो०इतिसंपूज्य शततारकायावरुणोदेवताइमंमेवरुणेत्यधिदेवं उत्तराभाद्रपदायाःअहिर्बुध्नयोदेवताअभियेमिथोवनुपःइति
 प्रत्यधिदेवतांआवाह्यतत्तन्मंत्रैःसंपूज्यशांतिसूक्तानिजपेत् ॥ तद्यथा ॥ यत्तेयमं० परेचिवांसं० इमारुद्रायस्थिर० अपनःशो
 शुच० विष्णोर्नुकं० आशुःशिशानो० श्रीसूक्तंजह्वायमादीनावाहयेत् ॥ यमंधर्मराजंमृत्युंअंतकंवैवस्वतंकालंसर्वभूतक्षयकरं
 औदुंबरंदधंनीलंपरमेष्ठिनंवृकोदरंचित्रंचित्रगुप्तंआवाह्यसंपूज्यतदुत्तरतोग्रहान्संपूज्यान्वादध्यात् ॥ प्रधानंप्रतिद्रव्यंअष्टोत्त
 रशतंसंख्याकाभिःपलाशसमित्तिलचर्वाज्याहुतिभिः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतेतद्दशांशेन यमादिनामभिस्तानष्टाष्टसंख्याका
 भिःशेषेणस्विष्टकृतमित्यादिहोमशेषसमाप्यबलिदानंकृत्वापूर्णहुतिंजुहुयात् ॥ आचार्यायधेनुंऋत्विग्भ्योयथाशक्तिदक्षिणां
 दत्वातान्संतोष्यांतेशांतिपाठःकार्यः ॥ ब्राह्मणभोजनसंकल्पःततोमित्रैःसहभुंजीत ॥ इतित्रिपादशांतिः ॥

श्रीः॥अयंगृहेनकार्यः ॥ गोष्ठादावितरत्रआचम्यप्राणानायम्यदेशकालौस्मृत्वाप्राचीनार्चीतीअमुकगोत्रस्यअमुकशर्मणःप्रेतस्य
 ॥ ३३५ ॥ अथवृषोत्सर्गः ॥ ६३ ॥

दाय यत् तसे मो ॥ ॥

●●●

प्रेतत्वनिवृत्त्योत्तमलोकप्राप्त्यर्थवृषोत्सर्गकरिव्येदितिसंकल्प्य ॥ स्थां डलादेकत्वा अध्वरनामानमग्निप्रतिष्ठाप्यसमिद्वयमादाय
चक्षुष्यते रुद्रं चरुणा सोमं पायसेन इंद्रयावकेन यक्ष्ये शेषेण स्विष्टकृतमित्यादिपरिसमूहनादिपूर्णपात्रनिधानांतं विधाय तू
ष्णीनिर्वापादिक्रमेण हविस्त्रयं संपाद्य जुहुयात् ॥ कद्रुद्रायेति धौरः कण्वोरुद्रो गायत्री ॥ रौद्रचरुहोमे वि० ॥ ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे
मीळहुष्टमाय तव्यसे ॥ वोचेमशंतमंहदे स्वाहा ॥ रुद्रायेदं नमः १ ॥ सोमो धेनुंगो तमः सोमस्त्रिष्टुप् ॥ सौम्यपायसहोमे ॥ सोमो
धेनुंसोमो अर्बुतमांशुंसोमो वीरं कर्मण्यं ददाति ॥ सादुन्यं विदुश्च सभेयं पितृश्रवणं यो ददाश दस्मै स्वाहा ॥ सोमो
इंद्रवोमधुच्छंदा इंद्रो गायत्री ॥ ऐंद्रयावकहोमे वि० ॥ ॐ इंद्रवो विश्वतस्परिहवामहे जनेभ्यः ॥ सोमायेदं नमः २ ॥
इंद्रायेदं नमः ३ ॥ एभिर्मन्त्रैश्चथाक्रमं हुत्वा स्विष्टकृदादिमार्जनांतं कुर्यात् ॥ (अत्र केचिद्रुद्राय स्वाहेत्यादि नानामन्त्रैरेव होम
माहुः) ॥ ततो द्विहाय नमेकहाय नवाजीवत्सायाः पयस्विन्याः पुत्रं नीलादिवर्णयथा लाभं वा आनीय ततश्च तस्योद्वेएकां
एकवर्षाधिकां वत्सतरीमानीय गोसहितवृषस्य मन्त्रैरभिषेकः कार्यः ॥ आपो हि ष्ठे तिसृणां सिंधुद्वीप आपो गायत्री ॥ वृषवत्सत
र्यभिषेके वि० ॥ कायन इति तिसृणां गौतमो वामदेव इंद्रो गायत्री तृतीया पादनिचृत् ॥ वृष० ॥ कर्मानश्चित्रा भुवदूती सदा वृ
धः सखा ॥ कयाशचिष्ठया वृता ॥ कस्त्वासुत्योमदानां महिष्ठो मत्सुदंधसः ॥ इळ्हाचिद्वारुजे वसु ॥ अर्भीषुणः सखीनामविताज
रितृणां ॥ शतं भवास्यतिभिः ॥ वृषवत्सतरीभ्यां नमः वृषवत्सतया वावाहयामीत्यावाह्यासनादिच वस्त्रगंधाक्षतमाल्यादिभिर्य
थाशस्त्यलंकृत्य ॥ ऋषभमिति पंचर्चस्य सूक्तस्य ऋषभो विराडनुष्टुप् अंत्यामहापंक्तिः ॥ वृषभोपस्थाने वि० ॥ ॐ ऋषभं मांसमा

नानासपत्नानां विपासहिं ॥ हुंतांशत्रूणां कृधिविराजंगोपतिगवां ॥ अहमस्मि सपत्नैर्हृद्रङ्गवारिष्टो अर्क्षतः ॥ अधः सपत्नानि पदो
 रिमे सुर्वे अभिष्ठिताः ॥ अत्रैव वोपिन ह्याग्न्युभे आलीङ्ग्य ज्यया ॥ वार्चस्य ते निषेधे मान्यथा मदधरं वदान् ॥ अभिभूरहमार्गमं
 विश्वकर्मैर्णधान्ना ॥ आर्वश्चित्तमावो ब्रतमावो हंसमिति ददे ॥ योगक्षेमं वधाया हंभूया समुत्तम आवोमर्धानमक्रमी ॥ अधस्पदा
 न्म उद्धतमंडूकाऽइवोदूकान्मंडूका उदूका दिव ॥ इति पंचर्चसूक्तं कृतांजलिपुटोजपेत् ॥ ततो वृषं प्रदक्षिणं अग्निपूर्वत आनीय त
 स्य दक्षिणबाहुमूले स्फिभस्मना त्रिशूलाकारं वामे चक्राकारं मंकयित्वा तदुपरित सलोहेन चिह्नं कारयेत् ॥ प्रांचः केचन त्रिशूलां
 कनमात्रमिच्छंति ॥ ततः प्रांचमुत्सृजेत् ॥ व्रजंतमनुमंत्रयीत ॥ एतं युवानमिति मंत्रस्य याज्ञवल्क्य ऋषभस्त्रिष्टुप् वृषोत्सर्गे वि० ॥ ॐ
 एतं युवानं परिबोदामि ते न क्रीडतीश्चरत प्रियेण ॥ मानः शासाजनुषां सुभागा रायस्पोषेण स मिषामदेम ॥ शांता ते पृथिवी शिवमं
 तरिक्षं द्यौस्ते देव्यभयं कृणोतु ॥ शिवादिशः प्रदिश उदिशस्त आपो विद्युतः परिपांतु सर्वतः शांतिः शांतिः शांतिः ॥ सर्वतो ब्रजस्वे
 ति ब्रूयात् ॥ ततो वृषं पूर्वाभिमुखं कृत्वा ॥ कद्रुद्रायेति नवर्चस्य सूक्तस्य धौरः कण्वोरुद्रो गायत्री तृतीयमैत्रावरुणी अंत्यस्तु चः सौ
 म्योत्यानुष्टुप् ॥ पूर्वदिगुपस्थाने वि० ॥ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळुष्टमाय तव्यसे ॥ वोचेम शंतं मंहदे ॥ यथानो अदितिः कर्त्तव्यश्चे
 नृभ्यो यथागवे ॥ यथातो कायं रुद्रिथं ॥ यथानो मित्रो वरुणो यथारुद्रश्चिकेतति ॥ यथा विश्वे सजोपसः ॥ गाथपतिं मे धपतिरु
 द्रं जलापमे पजं ॥ तच्छंयोः सुम्रमीमहे ॥ यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते ॥ श्रेष्ठं दिवानां वसुः ॥ १ ॥ शनः कर्त्तव्यं ते सुगं
 मे पायं मे ष्ये ॥ नृभ्यो नारिभ्यो गवे ॥ अस्मे सौमश्चि यमधिनिधेहि शतस्य नृणां ॥ महिश्चरंस्तु चिनुग्मं ॥ मानः सोमपरिबाधो

मारातयोजुहुरंत ॥ आनंदद्वोवाजैभज ॥ यास्तैप्रजाऽअमृतस्यपरस्मिन्धामन्नतस्य ॥ मूर्धनाभासोमवेनऽआभूषंतीःसोमवे
दः ॥ २ ॥ एतत्सूक्तांतेभोवृष (गोभिःसह) अनयावत्सतर्थासहतृणंभक्षजलंपिवयथासुखंकीडस्वेतिवदेत् ॥ ततोदक्षिणा
द्रार्यतुवसेकपदिनैक्षयद्दीरायप्रभंरामहेमतीः ॥ यथाशमसद्विपदेचतुष्पदेविश्वंपृष्टग्रामेऽअस्मिन्ननातुरं ॥ ॐ इमारु
यस्कृधिक्षयद्दीरायनमसाविधेमते ॥ यच्छंचयोश्चमनुरायेजेपितातदश्यामतवरुद्रप्रणीतिषु ॥ अश्यामतेसुमतिदेवयज्यया
क्षयद्दीरस्यतवरुद्रमीढः ॥ सुम्नायन्निद्विशोऽअस्माकमाचरारिष्टवीराजुहवामतेहविः ॥ त्वेषंवयंरुद्रयज्ञसाधंवृकुंक्विवसेनि
ह्वयामहे ॥ आरेअस्मद्व्यह्वोऽअस्यतुसुमतिमिद्वयमस्यावृणीमहे ॥ द्विवोर्वराहमरुपंकपदिनैत्वेपरूपंनमसानिह्वयामहे ॥ ह
स्तेविभ्रंभेपजावार्यणिशर्मवर्महृदिर्दुस्मभ्ययंसत् ॥ १ ॥ इदंपित्रेमरुतामुच्यतेवचःस्वादोःस्वादीयोरुद्रायवर्धनं ॥ रास्वा
चनोऽअमृतमर्तुभोजनंमनैतोकायतर्नयायमृळ ॥ मानोमहांतमुतमानोअर्भकमानुषक्षतमतमानुषक्षितं ॥ मानोवधीःपितरं
मोतमातरंमानःप्रियास्तन्वोरुद्ररीरिपः ॥ मानस्तोकेतनयेमानेआयौमानोगोपुमानोअश्वपुरीरिपः ॥ वीरान्मानोरुद्रभामि
तोर्वधीर्हविष्मंतःसदुमित्वाहवामहे ॥ उपतेस्तोमान्पशुपाइवाकरंरास्वापितर्मरुतांसुन्नमस्मे ॥ भद्राहितैसुमतिर्मृळयत्तुमाथा
वयमवइत्तेवृणीमहे ॥ आरेतेगोमृतर्परुपघ्नंक्षयद्दीरसुन्नमस्मेतैअस्तु ॥ मळार्चनोअधिचन्नूहिदेवार्धाचनःशर्मयच्छद्विचर्होः ॥
अवोचामनमोअस्माअवस्यवःशणोपुनोहवैरुद्रोमरुत्वान् ॥ तन्नोमित्रोवर्कणोमामहंतामादितिःसिधुःपृथिवीउतद्यौः ॥ २ ॥

वृषोत्सर्गः
॥३३५॥

एतत्सूक्तांते (अनयावत्सतर्यां) गोभिः सहतृणं भक्षजलं पिबयथा सुखं क्रीडस्व ॥ ततः पश्चिमाभिमुखं कृत्वा ॥ आते पितरिति पंच
 दशर्चस्य सूक्तस्य गृत्समदोरुद्रस्त्रिष्टुप् ॥ पश्चिमदिगुपस्थाने वि० ॥ आते पितरमरुतां सुन्नमेतुमानः सूर्यस्य संहशो युयोथाः ॥ अ
 भिनौ वीरो अर्चति क्षमेत प्रजाये महिरुद्र प्रजाभिः ॥ त्वादत्ते भीरुद्र शंतमेभिः शृतं हि मां अशीय भेषजेभिः ॥ व्यशस्मद्वेषो वितरं व्यं
 हो व्यमीवाश्चातय स्वाविषूचीः ॥ श्रेष्ठो जातस्य रुद्रश्चिया सितवस्तमस्तव सां वज्रबाहो ॥ पार्ष्णिणः पारमंहसः स्वस्ति विश्वा अभीती
 रपसो युयोधि ॥ मात्वारुद्र चुक्रुधामानमो भिर्मादुष्टुती वृषभमासहृती ॥ उन्नो वीरो अर्पय भेषजेभिर्भिषकं मत्वा भिषजो शृणो
 मि ॥ हवीमभिर्हवते यो हविर्भिरवस्तो मे भीरुद्रं दिषीय ॥ ऋदूदरः सहवो मानो अस्यैव भुः सुशिप्रो रीरधन्मनायै ॥ १० ॥ उन्मा
 ममंद वृषभो मरुत्वां त्वक्षीय सावयसानाधमानं ॥ घृणी चच्छायामरपा अशीया विवासे यं रुद्रस्य सुम्रं ॥ कशस्य ते रुद्रमृळया कुहं
 स्तोयो अस्ति भेषजो जलापः ॥ अपभर्तारपसो दैव्यस्याभीनुमा वृषभ चक्षमीथाः ॥ प्रबभ्रवै वृषभाय श्विती चे महो मही सुष्टुतिमीर
 यामि ॥ नमस्या कल्मली किन्ननमो भिर्गुणीमसित्वेषं रुद्रस्य नाम ॥ स्थिरे भिरगैः पुरुरूप उग्रो बभ्रुः शुक्रैर्भिः पिपिशे हिरण्यैः ॥
 ईशानादस्य भुर्वनस्य भूरेर्न वा उयोषद्गुद्रादस्यै ॥ अहनि बभर्षि सायकानि धन्वा हन्निष्कं यजतं विश्वरूपं ॥ अहनि दंदयसे विश्व
 मभ्वं न वाऽओजीयो रुद्रत्वदस्ति ॥ २ ॥ स्तुहि श्रुतं गर्तं स दं युवानं मृगं नभीममुपहृत्तुमग्रं ॥ मृळार्जरित्रे रुद्रस्तवानोन्यतै अस्मन्नि
 वपंतु सेनाः ॥ कुमारश्चित्पितरं वंदमानं प्रतिनानाम रुद्रोपयंतं ॥ भूरैर्दुतारं सत्यं तिगृणीषे स्तुतस्त्वभेषजारास्यस्मे ॥ यावो भेष

जामरुतःशुचीनियारांशमावृषणोयामयोभु ॥ यानिमनुरवृणीतापितानस्तांशंचयोश्चरुद्रस्यवदिम ॥ परिणोहेतीरुद्रस्यवृज्याः
परित्वेषस्यदुर्मतिर्महीगात् ॥ अवस्थिरामघर्वन्ध्यस्तनुष्वमीढ्वस्तोकायतनयायमृळ ॥ एवाबभ्रोवृषभचेकितानयथादेवनहणी
पेनहांसि ॥ हवनःशुन्नोरुद्रेहबोधिबृहद्वदेमविदधेसुवीराः ॥ ३ ॥ एतत्सूक्तांतेनयावत्सतर्थासहतृणंभक्षजलंपिबयथासुखंकी
डस्व ॥ उदङ्मुखं कृत्वा ॥ इमारुद्रायेतिचतसृणांवसिष्ठोरुद्रोजगती ॥ अंत्यात्रिष्टुप् ॥ उत्तरदिगुपस्थानेवि० ॥ इमारुद्राय
स्थिरधन्वनेगिरःक्षिप्रैर्षवेदेवार्यस्वधान्वे ॥ अषाळहायसहमानायवेधसेतिगमायुधायभरताशृणोतुनः ॥ सहिक्षयेणक्षम्यस्य
जन्मनःसाम्राज्येनदिव्यस्यचेतति ॥ अवन्नवंतीरुपनोदुरश्चरानमीवोरुद्रजासुनोभव ॥ यातेद्विद्युदवंसुष्टादिवस्यरिक्षमयाच
रतिपरिसावृणक्तुनः ॥ सहस्रैस्तेस्वपिवातेभेषजामानंस्तोकेषुतनयेषुरीरिषः ॥ मानोवधीरुद्रमापराद्रामातेभूमप्रसितौहीळित
स्य ॥ आनोभजबर्हिपिजीवशंसेययंपातस्वस्तिभिःसदानः ॥ १ ॥ एतत्सूक्तांतेनयावत्सतर्थासहतृणंभक्षजलंपिबयथासुखंकी
डस्वेतिपूर्ववत् ॥ ततःवृषपुच्छेप्रेतस्यनामगोत्राद्युच्चार्यतर्पणंकुर्यादितिकेचित् ॥ एतावत्कृत्वास्विष्टकृदादिकुर्यादितिवा ॥
ततःपरिस्तरणविसर्जनादिकर्मशेषंसमापयेत् ॥ ततोरुद्रसोमैर्देभ्योनुरूपमामान्नत्रयंसदक्षिणंदद्यात् ॥ ततोवृषोत्सर्गसंपूर्णता
सिद्ध्यर्थं तिलानुदकुंभंगांवासोहिरण्यं यथाशक्तिदक्षिणांचदद्यात् ॥ पतिपुत्रवत्याः सुवासिन्यानवृषोत्सर्गः तत्स्थाने एकापय
स्विनीगौर्देया ॥ इतिवृषोत्सर्गविधिः ॥

॥ ४१ ॥

॥ ४१ ॥

॥ ४१ ॥

॥ ४१ ॥

वृषोत्सर्गः
॥३३५॥

॥४१३॥

॥ ३३६ ॥ अथमहैकोद्विष्टम् ॥

श्रीः ॥ तस्मिन्नेवाहन्येकं ब्राह्मणं निमंत्र्य तस्य रश्मश्रुकर्मभ्यंगादिकारयित्वा ॥ अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्त्योत्तमलोकप्राप्तये एकादशहैकोद्विष्टं करिष्यइति संकल्प्य । क्षणपाद्यासनाध्यंगपुष्पाच्छादनानि दद्यात् । तत्राध्यैदक्षिणाग्रकुशोपरि एकमध्यपात्रमासाद्य तत्रैकं पवित्रं जलं च क्षिप्त्वा । तिलोन्मिसोमदेवत्योगोसवेदेवनिर्मितः । प्रलवन्निःप्रतःप्रेतेमौल्लोकान्प्राणयाहिनः इति मंत्रेण तूष्णीं वा तिलां निक्षिप्त्वा अमुकगोत्रेत्यादिसंबुद्ध्या प्रेतां तमुक्त्वामहैकोद्विष्टे इदमध्यं तवोपतिष्ठतामित्यर्घ्यं दत्त्वा । पात्रे घृताक्तं सिद्धमन्नमादाय विप्रपाणौ प्रक्षालिते दर्भानां तंकृत्वा अमुकगोत्राया मुकप्रेताया यंतेपि एकामाहुतिं हुत्वा तदन्नमग्नौ क्षिपेत् । नवापाणिहोमः । ततः परिवेषणाद्यंगुष्ठनिवेशनां तंकृत्वा अमुकगोत्रेत्यादि अमुकप्रेताया यंतेपि यथाशक्तिसोपस्कर्ममृतरूपमुपतिष्ठतामिति संकल्प्याऽऽपोशनादि दद्यात् । दर्भशिखायाममुकगोत्रेत्यादि अमुकप्रेताया यंतेपि हुत्वा तदन्नमग्नौ क्षिपेत् । तिलोदकं भृंगराजपत्रं दक्षिणां च दद्यात् । प्रेतस्य वस्त्रशयनाभरणानि पादुकाश्च त्रोटकपात्राणां हनादीनि यथाशक्ति दद्यात् । भूयसी दक्षिणां दत्त्वा संतोषयेत् । अभिरम्यतामिति विसर्जनं । अभिरताः स्मेति प्रतिवचनं । एकोद्विष्टे एको विप्रः दिवैव निमंत्रणं एकमध्यपात्रं धूपदीपौ नस्तः स्वधाशब्दपितृशब्दनमः शब्दानसंति नाभिश्चरणं सर्वप्राचीनावीतिनाकार्यं देवं नास्ति नाग्नौ करणं एकएव पिंडः अनुमंत्रणादिसर्वमंत्रकं अक्षय्यस्थाने उपतिष्ठतामिति वदेत् श्राद्धशेषभोज

३ ततः अद्येत्यादि पिंडप्रवाहणस्नानातनवश्राद्धैकोद्विष्टप्राक्तनविषमदिनवत्कुर्यात् । शिवस्वामिमतैर्नैतत् । किंतु पंचैव नवश्राद्धानि पूर्वोक्तानि तन्मेतत् ।

॥ ३३७ ॥ अथामौ महोद्विष्टम् ॥
होद्विष्टविधिः ॥ अथामौ महोद्विष्टम् ॥ इतिमहोद्विष्टम् ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ध्याप्यपरिसमुह्यपरिस्तीर्यपथुक्ष्यगंधादिभिरभ्यर्च्य द्विजवदग्निं समीपे देशकालौ स्मृत्वा ग्नौ महैको दिष्टश्राद्धं करिष्ये तिलोदकं
 इति संकल्प्य दर्भबटौ अमुकगोत्रामुकप्रेतमहैको दिष्टश्राद्धे क्षण उपतिष्ठतामित्यादि पूर्ववद् दद्यात् । अग्निसमीपे पूर्ववद् हर्षं ।
 अमुकगोत्रायेत्यादि प्रेताय स्वाहेति अग्नौ एकाहुति होमः । ततो मे रतस्त्रिकोण मंडलोपरि पात्रं संस्थाप्य परिवेषणादिसंकल्पांतं पू-
 जयित्वा पुनश्चास्तौ वंद्य पितरो हवे पु स्वाहा ॥ इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वा सो य उपरा स ईशुः । चेपाधि वेरजस्या निष-
 त्वस्त इहा गर्मिष्ठाः ॥ बर्हिषदः पितर ऊत्य ईर्वा गिमार्वो हुव्या च कृमा जुषध्वं । त आग ताव सा शं ते मे नाथानुः शं योर रपो दधात ॥
 उपहृताः पितरः सोम्या सो बर्हिष्ये युनि धियु प्रियेभु । त आर्गं मुत इह श्रुवं त्वधि ब्रुवं तु ते वं त्वस्मान् ॥ आच्या जानुदक्षिण तो निष-

॥ ३८ ॥ आसीनासो अरुणीनामुपस्थैरधिधत्तदाशु
 चेमेयज्ञमभिगृणीतविश्वे । माहिसिष्टपितरुः केन चिन्नोयह्म आगः पुरुषताकराम ॥
 पुत्रेभ्यः पितरस्तस्यवस्वः प्रयच्छत इहोजिदधात ॥ येनः पूर्वपितरः सोम्यासोनूहिरे सोमपीथं वासिष्ठाः । तेभिर्यमः
 पितृभ्यः पितरस्तस्यवस्वः प्रयच्छत इहोजिदधात ॥ येनः पूर्वपितरः सोम्यासोनूहिरे सोमपीथं वासिष्ठाः । तेभिर्यमः
 पुत्रेभ्यः पितरस्तस्यवस्वः प्रयच्छत इहोजिदधात ॥ येनः पूर्वपितरः सोम्यासोनूहिरे सोमपीथं वासिष्ठाः । तेभिर्यमः
 पुत्रेभ्यः पितरस्तस्यवस्वः प्रयच्छत इहोजिदधात ॥ येनः पूर्वपितरः सोम्यासोनूहिरे सोमपीथं वासिष्ठाः । तेभिर्यमः

॥ ३९ ॥ अतसीपुष्प ० ॥ अनादिनिधनो देव इति पठित्वा आप्यायनं वा च धित्वा परिस्तरणानि विसृज्य परिसमुह्य पर्युक्ष्याभ्यर्च्य
 चरुपिंडउप ० तस्योपरितिलोदकमु ० अंजनाभ्यंजनं पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं स्नानं वस्त्रं गंधमाल्यं भृंगराजतुलसीपत्राणिसर्वोप
 चरुपिंडउप ० तस्योपरितिलोदकमु ० अंजनाभ्यंजनं पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं स्नानं वस्त्रं गंधमाल्यं भृंगराजतुलसीपत्राणिसर्वोप

॥ ४० ॥ अथ रुद्रगणश्राद्धम् ॥
 सांगतार्थब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दत्वा अभिरम्यतामिति विसर्जयेत् ॥ इत्यग्नौ महैको द्विष्टविधिः ॥
 तत्रैकादशरुद्रो देशेन रुद्ररूपप्रेतो देशेन वाकार्य ॥ रुद्रो देशपक्षेऽपसव्येन ॥ तत्रैकादशरुद्रनामा
 नि ॥ अजैकपाद् १ अहिर्बुध्न्यः २ कपाली ३ रुद्र एव च । ४ वृषाकपिश्च ५ शंभुश्च ६ कपर्दी ७ रैवतस्तथा ८ हृश्च ९ बहुरुपश्च
 १० त्र्यंबकश्चापराजितः ११ ॥ अथ प्रयोगः । देशकालौ स्मृत्वा अमुकगोत्रस्येत्यादिप्रेतत्वविमुक्तयोत्तमलोकप्राप्त्यर्थं रुद्रग
 णश्राद्धं करिष्य इति संकल्प्य । अपसव्यं तूर्णानि तिलोदकं । शकैर्नैकैकरुद्रनामग्रहणेनैकैकब्राह्मणभोजनं कार्यं । एकैकरुद्ररूपप्रेतो

देशपक्षेअजैकपाद्रूपिन् अमुकप्रेतइदमासनमित्यादिप्रत्येकंक्षणपाद्येसंबुद्ध्यादत्वाआसनंषष्ठयान्नदानंचतुर्थ्याचार्ययेत् ।
अशक्तेनसर्वोद्देशेनैकएवभोजनीयः । भोजनाभावेएकादशामान्नानि । एकब्राह्मणपक्षेतुएकादशनामान्युक्त्वाएतद्रूपिणे
ऽमुकप्रेतायेत्याद्यूह्यं । भोजनानंतरंदक्षिणाविसर्जनादिकार्यं । अत्रपिंडदानाद्यर्थाग्नौकरणविकिराणामभावः॥इतिरुद्र०ग०॥

श्रीः ॥ इदंचकृताकृतं । इदमप्यष्टवसूद्देशपक्षेसव्येनतद्रूपप्रेतोद्देशपक्षेत्वपसव्येनकार्यं । शक्तेनाष्टौब्राह्मणाभोजनीयाः ।
अशक्तेनैकभसर्वोद्देशेन । अन्नाभावेआमान्नदानं । अन्यत्सर्वपूर्ववत् । वसुनामानिच ॥ ध्रुवो १ ऽध्वरश्च २ सोमश्च ३
आपश्चै ४ वानिलो ५ ऽनलः ६ । प्रत्यूषश्च ७ प्रभासश्च ८ वसवोष्टौप्रकीर्तिताइति । अमुकगोत्रेत्यादिसंकल्पांते ध्रुवव
सुरूपिन्अमुकगोत्रामुकप्रेतअयंतेक्षणउपतिष्ठतांइत्यादिसर्वकुर्यात् ॥ अत्रापिपिंडाद्यभावः ॥ इतिवसुगणश्राद्धं ॥

श्रीः ॥ तानिच । आद्यमासिक १ ऊनमासिक २ द्वितीयमासिक ३ त्रैपक्षिक ४ तृतीयमासिक ५ चतुर्थमासिक ६ पंचममा
सिक ७ षष्ठमासिक ८ ऊनषाणमासिक ९ सप्तममासिक १० अष्टममासिक ११ नवममासिक १२ दशममासिक १३
एकादशमासिक १४ द्वादशमासिक १५ ऊनाब्दिकानि १६ तत्तत्कालेकर्तव्यानिद्वादशोहिसपिंडीकरणाधिकारसिद्ध्यर्थम
पकृष्यएकादशेद्वादशेवाहिकार्याण्येकोद्विष्टविधिना । यदिमरणादारभ्यद्वादशमासमध्येकश्चिदधिकस्तदातन्मासिकंद्वि

वारंकार्ये एवं सप्तदशश्राद्धाणि भवन्ति ॥ अथ प्रयोगः । तस्मिन्नेवाहनि प्रातः षोडशब्राह्मणान्निमन्त्र्य ते पांश्चमश्रुकर्मभ्यंगौकारयि
 त्वाकृतमाध्याह्निकः षोडशपाकान्निपाद्याशक्तौ ओदनमात्रभेदं कृत्वा श्राद्धमुपक्रमेत् । अत्यशक्तौ आमन्त्रेन वा कुर्यात् ॥
 देशकालौ स्मृत्वा ऽमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्य प्रेतत्वं निवृत्योत्तमलोकप्राप्त्यर्थं अतिक्रान्तमाद्यमासिकं सपिण्ड्यधिकारार्थं मपकृष्यो
 न मासिकादीन् यूनान् द्विकांतानि पञ्चदशमासिकानि च अन्तेनामान्नेन वा एकोद्विष्टविधिना तन्त्रेण करिष्यति संकल्प्य । अमुकगो
 त्रामुकप्रेतआद्यमासिकेक्षणः क्रियतां । एवं द्वितीयमासिकइत्यादि षोडशस्थानेषु क्षणंदत्वा अमुकगोत्रामुकप्रेताद्यमासिके द्विती
 यमासिकइत्यादि इदं ते पाद्यमुपतिष्ठतामित्येवं षोडशब्राह्मणेषु पाद्यंदद्यात् । एवमासनाद्यर्घ्यगंधपुष्पाच्छादनानि प्रत्येकं षोडश
 भ्योदद्यात् । अर्घ्येति लावापेतिलोसीति मन्त्रेण महैकोद्विष्टवदूहः । एकैकमर्घ्यप्रत्येकं । षोडशपात्रेषु घृताक्तमन्त्रं प्रत्येकमादाय
 महैकोद्विष्टवदमुकशर्मणे प्रेताय स्वाहेति एकैकमाहुतिं तत्तदन्नेन करे हुत्वा हुतमन्नमग्नौ प्रक्षिप्य तत्तदाहुत्यर्थं मन्त्रं यतो गृहीतं त
 तदन्नं तत्र तत्र परिविष्यां गुष्ठनिवेशनांतं कृत्वा अमुकप्रेतायाद्यमासिकश्राद्धे इदमन्नं यथाशक्तिसोपस्करं सोदकुंभममृतरूपमुप
 तिष्ठतामिति संकल्पयेत् । एवं द्वितीयमांसिकादौ । भुक्त्वत्सु द्विजे पुतत्तदन्नं षोडशसु पात्रेषु गृहीत्वा तत्तत्कराहुतिं शिष्टमन्नं तत्र त
 त्रप्रक्षिप्य तत्तद्विप्रसमीपे दर्भशिखायाममुकगोत्रायामुकप्रेतायाद्यमासिकादावर्थं ते पिंडउपतिष्ठतामिति षोडशपिंडान् दद्यात् ।
 आमपक्षे आमन्नस्य संकल्पः । सक्तुपिष्टेन च पिंडदानं । पिंडोपरितिलोदकं भृंगराजपत्रादि महैकोद्विष्टवत् । अंजनादिकं सर्वप्रा
 कृतं । अक्षय्ये उपतिष्ठतामिति वदेत् । यथाशक्ति दक्षिणां दत्वाऽभिरम्यतामिति विसर्जयेत् । अन्यत्सर्वविहितनिषिद्धादि महै

कोद्विष्टवत् । एवं एकदेशकालकर्तृकत्वात्तत्रेण षोडशश्राद्धानि कुर्यात् । आद्यमासिकं सर्वसमाप्य द्वितीयादीनि प्रत्येकं पृथगेव सर्वाणि न तु तत्रेणेति केचित् । एतदनन्तरमाद्याब्दिकमप्येकोद्विष्टविधिना कार्यं । आद्यमासिकेन तत्रेण सिद्धेन पृथक्कार्यं किंतु आद्यमासिकं आद्याब्दिकं च तत्रेण करिष्यइति संकल्पयेदितिकेचित् ॥ इति षोडशश्राद्धानि ॥ ३४१ ॥

॥ ३४१ ॥ अथ दशदानानि ॥

श्रीः ॥ आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ निदिश्य अमुकगोत्रस्य पित्रादेः परलोकोपकारकाणि पूर्वसंकल्पितानि दशदानानि करिष्ये ॥ गोभूतिलहिरण्याज्यवासो धान्यगुडानि च ॥ रौप्यं लवणमित्यादि दशदानान्यनुक्रमामात् ॥ विप्रसंपूज्यगोप्रदानं ॥ यज्ञसाधनभूताया विश्वस्याधौ धनाशिनी ॥ विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा ॥ भूमिदानं ॥ सर्वेषामाश्रया भूमिर्वराहेण समुद्भूता ॥ अनंतसस्यफलदा अतः शांतिं प्रयच्छमे ॥ तिलदानं ॥ महर्षेर्गोत्रसंभूताः काश्यपस्य तिलाः स्मृताः ॥ तस्मादेवांप्रदानेन पितृपापं व्यपोहतु ॥ हिरण्यदानं ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ॥ अनंतपुण्यफलदमतः शांतिं प्रयच्छमे ॥ आज्यदानं ॥ कामधेनोः समुद्भूतं सर्वक्रतुषु संस्थितं ॥ देवानामाज्यमाहार अतः शांतिं प्रयच्छमे ॥ वस्त्रदानं ॥ शीतवातोष्णसंन्नाणं लज्जाया रक्षणं परं ॥ देहालंकरणं वस्त्रमतः शांतिं प्रयच्छमे ॥ धान्यदानं ॥ सर्वदेवमयं धान्यं सर्वोत्तितिकरं महत् ॥ प्राणिनां जीवनोपाय अतः शांतिं प्रयच्छमे ॥ गुडदानं ॥ गुडमिश्रसोद्भूतं मंत्राणां प्रणवो यथा ॥ दानेनानेन चैतस्य परालक्ष्मीः स्थिरा गृहे ॥ रौप्यदानं ॥ प्रीतिर्यतः पितॄणां च विष्णुशंकरयोः सदा ॥ शिवेन त्रोद्भवं रूप्यमतः शांतिं प्रयच्छमे ॥ लवणदानं ॥

यस्मादन्नरसाः सर्वे नोत्कृष्टालत्रणं विना ॥ शंभोः प्रीतिकरं यस्मादतः शांतिं प्रयच्छमे ॥ अनेन दशदानाख्येन कर्मणा प्रेतोद्धर्ता म
हाविष्णुः प्रीयतां ॥ इति दशदानानि ॥ (सर्वत्र पुत्रकर्तृकं संकल्पवाक्ये दानमंत्रे च 'मे-मम' इत्यादि स्थले 'पितुः-तस्य' इत्यूहः कार्यः)

॥ ३४२ ॥ अथाष्टदानानि ॥

श्रीः ॥ तानि च आमाम्नोदकुंभगोवस्त्रभूम्यास्तरणछत्रासनानि ॥ अमुकशर्मणः पित्रादेः परलोकितत्तदानकल्पोक्तफलावासये
ष्टदानानि क० ॥ विप्रसंपूज्य आमाम्नदानं ॥ अन्नमेव यतो लक्ष्मीरन्नमेव जनार्दनः ॥ अन्नं ब्रह्माखिलत्राणमस्तु जन्मनि जन्मनि ॥
उदकुंभदानं ॥ वारिपूर्णे घटश्चायं देवत्रयमयो यतः ॥ प्रीयतां धर्मराजस्तु दानेनानेन पुण्यदः ॥ गोप्रदानं ॥ यज्ञसाधन
भूताया ० ॥ वस्त्रदानं ॥ शीतवातोष्णसंत्राणं ० ॥ भूमिदानं ॥ सर्वेषामाश्रयाभूमिः ० ॥ शय्या (डाळी) ॥ यथानकृ
ष्णशयनं शून्यं सागरजातया ॥ शय्यै तस्याप्यशून्यास्तु तथा जन्मनि जन्मनि ॥ छत्रदानं ॥ इहामुत्रातपत्राणं कुरु मे केशवप्रभो ॥
छत्रं त्वत्प्रीतये दत्तं तस्यास्तु च सदा शुभं ॥ आसनं (पाट) ॥ त्रिलोकीनाथ देवेश सर्वभूतकृपा निधे ॥ आसनेन च तुष्य स्वप्रयच्छ तस्य
वांछितं ॥ इत्यष्टदानानि ॥ वृषोत्सर्गो गाष्टदानानि तु आमाम्नत्रयं तिलानुदकुंभं गां वा सो हिरण्यं चेति ऽतत्र तिलदानं ॥
महर्षेर्गोत्रसंभूताः काश्यपस्य तिलाः स्मृताः ॥ तस्मा देवां प्रदानेन तस्य पापं व्यपोहतु ॥ हिरण्यगर्भेति हिरण्यदानं ॥ अन्ये आमाम्नो
दकुंभगोवस्त्रदानादिमंत्रादशष्टदानां तर्गतास्तत्तदुक्ता ज्ञेयाः ॥ वित्तरभियानपुनः संगृहीताः ॥ एवमग्ने पि उपदानादौ ज्ञेयं ॥

॥ ३४३ ॥ अथोपदानानि ॥

श्रीः ॥ अन्नंचैवोदकुंभचोपानहौचकमंडलुः ॥ छत्रं वस्त्रं तथा यष्टिं लोहदंडं च दापयेत् ॥ अग्निष्टिकां प्रदीपं च तिलांस्तांबूलमेव च ॥ चंदनं पुष्पमालां चोपदानानि चतुर्दश ॥ पित्रादेः प्रेतस्योत्तमलोकप्राप्त्यर्थं परलोके तत्तद्दानकल्पोक्तफलावाप्तये चतुर्दशोपदानानि क० ॥ आमन्त्रं ॥ अन्नमेव यतो० ॥ उदकुंभः ॥ वारिपूर्णो घटः० ॥ उपानहौ प्रदास्यामि कंटकादिनिवारणे ॥ सर्वमार्गेषु सुखदे अतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ कर्मण्डलुः ॥ त्रिलोकीनाथ० उदपात्रेण संतुष्टः प्रयच्छ० ॥ छत्रं ॥ इहामुन्नातप० ॥ वस्त्रं ॥ शीतवातोष्णसं० ॥ यष्टिदानं ॥ त्रिलोकीनाथ० अनेन यष्टिदानेन प्र० ॥ लोहदंडः ॥ ज्ञानाज्ञानकृतं पापं तथा लोभात्कृतं चिरात् ॥ लोहदंडप्रदानेन सर्वपापं व्यपोहतु ॥ अग्निष्टिका ॥ त्रिलोकीनाथ० अग्निष्टिकाप्रदानेन प्र० ॥ दीपदानं ॥ दीपो ज्ञानप्रदो नित्यं देवतानां प्रियः सदा ॥ दानेनास्य भवेत्सौख्यं शांतिस्तद्वांछितं फलं ॥ तिलदानं ॥ महर्षेर्गोत्र० ॥ तांबूलदानं ॥ सोपस्करं च तांबूलं सर्वदामंगलप्रियं ॥ प्रियं चैव तु देवानां सौगंध्यं वदनेस्तु वै ॥ चंदनं ॥ त्रिलोकीनाथ० चंदनस्य प्रदानेन प्रयच्छ० ॥ पुष्पमाला ॥ त्रिलोकीनाथ० पुष्पमालाप्रदानेन प्र० ॥ इति चतुर्दशोपदानानि ॥ ॥ केचित् तिललोहहेमकार्पासलवणभूमिधेनुससधान्येत्यष्टदानान्याहुः ॥ त्रिलोकीनाथ० कार्पासेन च संतुष्टः—सप्तधान्येन संतुष्टः इत्याद्यूहः ॥ सप्तधान्यानि तु यवव्रीहिगोधूमतिलमापमुहप्रियंगुसंज्ञानि ॥ अन्ये मंत्रा उपरिवज्ज्ञेयाः ॥ सिद्धस्थालीदानं ॥ इमां पायसपूर्णयः स्थालीं घृतजलादिभिः ॥ दद्यात्संपत्तिपात्रं स्यादतः पाहि महेश्वर ॥ ऊर्णादानं ॥ ऊर्णावस्त्रं च

रुचिर्देवानांग्रीतिवर्धनं ॥ सुखसर्शकरंयस्मादतःशांतिं० ॥ व्यजनदानं ॥ व्यजनंवायुदैवत्यंग्रीष्मकालेसुखप्रदं ॥ अस्य
प्रदानात्सकलाःसंतुतस्यमनोरथाः ॥ इति ॥ ॥ तिलपात्रदानं ॥ पित्रादेःजन्मप्रभृतिमरणांतंकृतनानाविधपापप्रणा
शार्थं० ॥ तिलाःपुण्याःपवित्राश्चतिलाःसर्वकराःस्मृताः ॥ शुक्लावायदिवाकृष्णाक्रुपिगोत्रसमुद्भवाः ॥ यानिकानिचपापा
निब्रह्महत्यासमानिच ॥ तिलपात्रप्रदानेनतस्यपापंव्यपोहतु ॥ नम्रप्रच्छादनीयवस्त्रदानं ॥ मंत्रउपरिवत् ॥ ॥ ७३ ॥

॥ ३४४ ॥ अथप्रायश्चित्तभोदान्प्रयोगः ॥

श्रीः ॥ आचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यअमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यजन्मप्रभृत्यद्यथावदाचरितसमस्तपातकस्याकृतप्राय
श्चित्तस्यामरणांतंपापपनोदनार्थंप्रायश्चित्तधेनुदानंक० ॥ गोःपूजनंकरिष्ये ॥ पंचगावःसमुत्सन्नामध्यमानेनमहोदधौ ॥ ता
सांमध्येतुयानंदातस्यैदेव्यैनमोनमः ॥ इतिमंत्रेणपूजयेत् ॥ शक्तौस्वर्णशृंगीमित्यादिदानवाक्येवक्षयमाणानलंकारांस्तत्रतत्र
संयोज्यान्यानप्यर्पयेत् ॥ ततआगावोअगमन्निमित्तिसूक्तेनगांनिःप्रदक्षिणीकृत्यप्रार्थयेत् ॥ यालक्ष्मीःसर्वभूतानांयाचदेवेष्वव
स्थिता ॥ धेनुरूपेणसादेवीममपापंव्यपोहतु ॥ देहस्थाय्याचरुद्राणीशंकरस्यप्रियासदा ॥ धेनुरूपेणसादेवीतस्यपापंव्यपोहतु ॥
विष्णोर्वक्षसियालक्ष्मीःस्वाहायाचविभावसोः ॥ चंद्रार्कशक्रशक्तिर्याधिधेनुरूपास्तुसामिन्ने ॥ चतुर्मुखस्ययालक्ष्मीर्यालक्ष्मीर्धन
दस्यच ॥ लक्ष्मीर्यालोकपालानांसाधेनुर्वरदास्तुमे ॥ स्वधात्वंपितृमुख्यानांस्वाहायज्ञमुजांतथा ॥ सर्वपापहराधेनुस्तस्माच्छा
तिंप्रयच्छमे ॥ इतिगांप्रार्थ्यप्रतिग्रहीतारंब्राह्मणंयथाविभवंसंपूज्यगोपुच्छदेशेतमुदङ्मुखमवस्थाप्य स्वयंप्राङ्मुखः स्वर्णयुता

ज्यपूरितकांस्यपात्रे गोपुच्छं निक्षिप्य ॥ प्रायश्चित्ते समुत्पन्ने निष्कृतिर्न कृता क्वचित् ॥ तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं धेनुमेताददामिते ॥ म
यामलित्रावाजन्मप्रभृति अद्यावदाचरितसमस्तपातकस्याकृतप्रायश्चित्तस्यामरणान्तं पापापनोदकामः प्रायश्चित्तत्वेन कल्पि
तां इमां कपिलां धेनुं रुद्रदैवत्यां सुवर्णशृंगीरौ प्यखुरां ताम्रपृष्ठां घंटाग्रैवेयकां मुक्तालां गूलां कांस्यदोहानिकां वस्त्रद्वयाभरणाद्युपस्कर
युतां अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य परलोके सुखसिद्धये अमुकगोत्रायामुकशर्मणे तुभ्यमहं संप्रददेनममेत्युक्त्वा विप्रकरे सकुशतिलोद
कंगोपुच्छं दत्त्वा ॥ यज्ञसाधनभूताया विश्वस्याधौ घनाशिनी ॥ विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा ॥ इति पठेत् ॥ प्रतिग्रही
ता तु देवस्य त्वेति मंत्रेण प्रतिगृह्य ॐ स्वस्तीत्युक्त्वा कइदं कस्मा अदादितिकामस्तु तित्यथा शाखं पठेत् ॥ कर्ता दानस्य प्रतिष्ठा सिद्ध्य
र्थं दक्षिणां दत्त्वा यमोक्तां गोमतीं विद्यां पठेत् ॥ गावः सुरभयो नित्यं गावो गुगुलुगंधिकाः ॥ गावः प्रतिष्ठाभूतानां गावः स्वस्त्ययनं
महत् ॥ अन्नमेव परं गावो देवानां हविरुत्तमं ॥ पावनं सर्वभूतानां रक्षंति च वहति च ॥ हविषामंत्रपूतेन तर्पयं त्यमरा न्दिवि ॥ ऋ
षीणामपि होतृणां गावो होमे प्रतिष्ठिताः ॥ सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमं ॥ गावः पवित्रं परमं गावो मंगलमुत्तमं ॥ गावः स
र्वस्य भूतस्य गावो धन्याः सनातनाः ॥ नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च ॥ नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो न
मः ॥ ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा कृतं ॥ एकत्र मंत्रास्तिष्ठति हविरेकत्र तिष्ठति ॥ इति ॥ ततो ब्राह्मणेन सह गंगं प्रदक्षिणी
कृत्य विष्णुं स्मृत्वा कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा चामेत् ॥ इति गोदानविधिः ॥ अयमेव विधिरेतरे प्रत्यक्षधेनुदाने तत्तदूहेन सर्वत्रोह्यः अत्रां
गन्यासादि विशेषः पूर्वोक्तगोदानप्रयोगे आलोचनीयः ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ३४५ ॥ अथपंचगोदानानि ॥

पापधेनुदानं ॥ आजन्मोपार्जितपापमनोवाक्कायकर्मभिः ॥ तत्सर्वनाशमायातुपापधेनुप्रदानतः ॥ ममपितुःमनोवाक्कायकर्मभिराजन्मोपार्जितपापपनोदनकामोहंइमांकृष्णांपापापनोदधेनुंयथाशक्तिसोपस्करारुद्रदैवत्यांगोत्रायशर्मणेतुभ्यंसंप्रददे ॥ उत्क्रांतिधेनुदानं ॥ असूक्रांतौप्रवृत्तस्यसुखोक्क्रमणसिद्धये ॥ तुभ्यमेनांसंप्रददेधेनुमुक्त्रांतिसंज्ञिकाम् ॥ ममपितुःसुखेनप्राणोक्क्रमणप्रतिबंधकोक्तनिष्कृत्यनुक्तनिष्कृतिजनितसकलपापक्षयद्वारा सुखेनप्राणोक्क्रमणसिद्ध्यर्थमिमासुक्त्रांतिसंज्ञिकां धेनुंयथाशक्तिसोपस्करारुद्रदैवत्यांगोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेनमम ॥ चैतरणीधेनुदानं ॥ तन्नोपकल्पनं ॥ पाटलांकृष्णांवाहेमशृंगाद्युपेतांकृष्णवस्त्रयुगच्छन्नांसप्तधान्यसंयुक्तसंयुक्तान्छत्रोपानद्युगुलसंयुक्तांगांसंनिधायद्रोणमितकार्पासशिखरेताम्रपात्रतत्रमहिषारूढंदक्षिणवामकरधृतलोहदंडपाशुहंसंयमंस्थापयित्वातदग्रेरक्तपट्टवंधेक्षुदंडनिर्मितनौकोपरितांधेनुंस्थापयित्वा तिथ्यादिसंकीर्त्यअमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्ययमद्वारस्थितवैतरणीतर्तुगोदानंकरिष्येइतिसंकल्प्य द्विजंवृत्वाहैमप्रतिमायामक्षतपुंजेवाविष्णुंविप्रंगांचसंपूज्यप्रार्थयेत् ॥ विष्णुरूपद्विजश्रेष्ठभूदेवगतिपावन ॥ तर्तुवैतरणीमस्यकृष्णांगांप्रददाम्यहम् ॥ धेनुकेत्वंप्रतीक्षस्वयमद्वारेमहापथे ॥ उत्तितीर्षुरयंदेविवैतरण्यैनमोस्तुते ॥ यमद्वारपथेघोरेघोरवैतरणीनदी ॥ तांतर्तुमस्ययच्छामिकृष्णाचैतरणींतुगाम् ॥ ममपितुःयमद्वारस्थितवैतरण्याख्यनद्युत्तरणार्थइमांकृष्णांगांसवत्सांयमप्रतिमायुक्तांकृष्णवस्त्रयुगच्छन्नांसप्तधान्ययुतांरक्तमाल्याद्यलंकृतां यथाशक्तिस्वर्णश्रृंगान्धुपस्करोपेतांकार्पासद्रोणशिखरारुद्रदैवत्यांगोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रद

देइतितिलजलकुशयुतंगोपुच्छंविप्रहस्तेदद्यात् ॥ ऋणधेनुदानं ॥ ममपितुःऐहिकामुष्मिकसप्तजन्मार्जितऋणपातकापाकर
णार्थगोदानं० ॥ ऐहिकामुष्मिकंयच्चसप्तजन्मार्जितंऋणं ॥ तत्सर्वंशुद्धिमायातुगामेकांदतोमम ॥ संकल्पवाक्यमुक्त्वा
इमांगांइत्यादिपूर्ववत् ॥ ॥ मोक्षधेनुदानं ॥ मोक्षदोवासुदेवस्तुवेदशास्त्रेषुगीयते ॥ तत्प्रीतयेद्विजाग्यायमोक्षधेनुंददा
म्यहम् ॥ ममपितुःसमस्तपापक्षयपूर्वकंसंसारमोक्षावासिकामःश्रीपापापहमहाविष्णुप्रीतिकामश्चइमांमोक्षधेनुंयथाशक्तिसो
पस्कंरुद्रदैवत्यांगोत्रायशर्मणेसंप्रददेनमम ॥ ॥ ४३ ॥

श्रीः ॥ अद्येत्यादि० ममपितुर्वासमस्तपापक्षयपूर्वकअश्वरोमसंख्याकाब्दसूर्यलोकनिवासासिकामःयथाशक्तिसोपस्कंरंअश्व
दानंकरिष्ये ॥ अश्वकर्णधृत्वादद्यात् ॥ ॥ ३४६ ॥ अथाश्वदानम् ॥ ॥ ४३ ॥

महार्णधममुत्पन्नउच्चैःश्रवसपुत्रक ॥ मयात्वंविप्रमुख्यायदत्तोहयसुखीभव ॥ इमंविप्रनमस्तुभ्यमश्वंतेप्रतिपादितम् ॥ प्रति

गृहीष्वविप्रैर्द्रमयादत्तंसुशोभनं ॥ इतिदानमंत्रमुच्चार्यइममश्वंसुवर्णतिलकालंकारयुतंललाटग्रैवेयकादियुतंचंगंधपुष्पाद्यर्चि
तंसूर्ययमदैवतंममपितुःब्रह्महत्यादिसमस्तपापनाशकामोहयरोमसमसंख्याकाब्दसूर्यलोकनिवासकामश्चगोत्रायशर्मणेनुभ्यम
हंसंप्रददेनमम ॥ सांगतासिद्धयेदक्षिणांदद्यात् ॥ अनेनाश्वदानाख्येनकर्मणांप्रेतोद्धर्तामहाविष्णुःप्रीयतां ॥ ॥ ४३ ॥

॥ ३४७ ॥ अथशय्यादानम् ॥

श्रीः ॥ अष्टदलेतिलप्रस्थं निक्षिप्य तस्मिन्दारुमयीं स्वास्तीर्णाद्युपस्करयुतां शय्यामास्तीर्य तस्याः समंतादीशानादिकोणचतुष्टये शिरोभागे च पंचकुंभान् क्रमात् घृतकुंकुमगोधूमजलपूर्णकुंभमुच्छीर्षे घृतपूर्णकलशं ससधान्यानि च संस्थाप्य अद्येत्यादि ० पित्रा देः समस्तपापक्षयपूर्वकाप्सरोगणसेवायुतविमानकरणैकैर्द्रपुरगमनोत्तरपट्टिसहस्रवर्षाधिकरणकक्रीडनस्त्रीसंघसमावृतसर्वलो कमहिमत्वतदुत्तरपट्टियोजनमंडलराज्यभोगानंतरशिवसायुज्यावासिकामः शय्यादानमहं करिष्ये इति संकल्प्य द्विजंसपत्नी कंवृत्वा यथाविभवं वस्त्रालंकारादिभिः संपूज्य शय्यायां लक्ष्मीनारायणप्रतिमां स्वर्णमयीं संस्थाप्य संपूज्य सपत्नीकविप्रणसहश्र्यां प्रदक्षिणीकृत्य नमः प्रमाणैर्देव्यै इति चतुर्दिक्षु क्रमेण प्रणम्य मंत्रस्तु ॥ यथानकृष्णशयनं शून्यं सागरजातया ॥ तथैतस्याप्यशून्यास्तु शय्याजन्मनि जन्मनि इति ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्य पितुः सर्वपापक्षयेत्यादि शिवसायुज्यावासिकामो गोत्राय शर्मणे सुपूजिताय इमां शय्यां ईशानादिकोणचतुष्टयस्थापनक्रमेण घृतकुंकुमगोधूमजलपूर्णकुंभसमेतां हंसतूलीप्रच्छन्नां शुभ्रगंडोपधानि कां प्रच्छादनपटास्तृताससधान्ययुतां तांबूलाय तनादशैलालवंगकर्पूरयुता सुगंधपरिमलभोग्यवस्तु चंदनागरुदीपिकोपानच्छत्रचामरासनयुतां भोजनभाजनजलपात्रपंचवर्णवितानकेशप्रसाधिन्यं जनशलाकापुष्पमालायुतां लक्ष्मीयुतनारायणप्रतिमासहितां युक्तोपस्करामंगिरोदेवतां गोत्राय शर्मणे सुपूजिताय सालंकृताय सपत्नीकाय तुभ्यमहंसं प्रददेनममेति शय्योपवेशितविग्रहस्ते साक्षतकुशोदकं क्षिपेत् ॥ तस्मै सुवर्णमेव दक्षिणां दद्यात् ॥ इति शय्यादानम् ॥ ॥ ४३ ॥

श्रीः ॥ सागोचर्ममिताधिकावादेया ॥ दशहस्तेनदंडेनत्रिशङ्कानिर्वर्तनं ॥ त्रिभागीनंगोचर्ममानमाहप्रजापतिः ॥ अद्येत्या
 दिपितुःसर्वपापक्षयपूर्वकंषष्टिसहस्रवर्षस्वर्गनिवासोत्तरंशिवपुरनिवासार्थंभूदानं०॥ विप्रंवृत्वा ॥ सर्वेषामाश्रयाभूमिर्वराहेण
 समुद्धृता ॥ अनंतसस्यफलदाअतःशांतिं०॥ यस्यारोहंतिबीजानिर्वर्षाकालेमहीतले ॥ भूमेःप्रदानात्सकलास्तस्यसंतुमनोरथाः ॥
 इमांभूमिवृक्षाद्युपेतांसस्योद्भवांविष्णुदैवत्यांसंकल्पहेतवेसंप्रददे ॥ ॥ पददानम् ॥ आसनोपानहौछत्रंमुद्रिकाचकमंडलुः ॥
 यज्ञोपवीताज्येवस्त्रंभोजनंचान्नभाजनं ॥ दशकंपदमेतत्स्यात्पदान्येवंत्रयोदश ॥ देयानिवायथाशक्तितेनासौप्रीणितोभवेत् ॥
 पित्रादेःमार्गकष्टपरिहारपूर्वकमुत्तमलोकावासयेतृत्थर्थच० ॥ त्रिलोकीनाथदेवेशसर्वभूतकृपानिधे ॥ पददानेनतुष्यस्वप्र
 यच्छतस्यवांछितं ॥ संकल्पवाक्यांतेइदंयथाशक्तिआसनादिदशोपकरणसमूहात्मकंपदंतृतीयांशदक्षिणायुतंतुभ्यंसंप्रददे ॥
 शालग्रामदानम् ॥ सशैलवनभूचक्रदानसमफलावासये० ॥ महाकोशनिवासेनशक्राद्यैरुपशोभितः ॥ शालग्रामप्रदाने
 नतस्यसंतुमनोरथाः ॥ रुद्राक्षमालादानम् ॥ अष्टाविंशतिसंख्याकैरुद्राक्षैर्योजितामया ॥ अर्पितातवहस्तेचगृहाणद्विजस
 त्तम ॥ पुस्तकदानं ॥ गोदानसमफलावासिस्वर्गलोकनिवासविद्यादानादिकल्पोकफलावासये० ॥ सर्वविद्याश्रयायज्ञाः
 कारणंलिखिताक्षरं ॥ पुस्तकस्यप्रदानेनतस्यप्रीणातुभारती ॥ संकल्पवाक्येनदद्यात् ॥ इतिभूम्यादिदानानि ॥ ॥ ४३ ॥

॥ ३४९ ॥ अथसपिंडीकरणम् ॥

श्रीः॥तत्रदेवार्थविप्रद्वयंप्रेतार्थमेकःपार्वणार्थत्रयइतिपट्टअशक्तौदेवार्थप्रेतार्थपार्वणार्थप्रत्येकमेकैकइतित्रयंवानिमंज्य आचम्य
पवित्रंतेइतिपवित्रादिधृत्वाप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्य अमुकगोत्रस्यअमुकशर्मणःप्रेतस्यप्रेतत्वनिवृत्त्यापितृलोकप्राप्त्यर्थं
भारद्वाजगोत्रैःकृष्णविष्णुमहादेवशर्मभिःवसुरुद्रादित्यस्वरूपैःप्रेतपितृपितामहप्रपितामहैःसहसपिंडीकरणंमृताहाद्वादशेहि
पार्वणैकोद्विष्टेनविधिनाकरिष्येइतिसंकल्प्य (मातरितुअमुकगोत्रायाअमुकदायाःभारद्वाजगोत्राभिःअस्मत्पितामहीप्रपिताम
हीवृद्धप्रपितामहीभिर्वसुरुद्रादित्यस्वरूपाभिःसह०इति॥एवंआत्रादिसपिंडनेप्यूह्यं॥) तदंगयवतिलोदकवैश्वदेवसूक्तजपमा
र्जनब्रह्मदंडादि । श्राद्धभूमौ० क्षणादिकरिष्ये । अपोदत्वाकामकालसंज्ञकविश्वेदेवार्थत्वयाक्षणःकरणीयःएवंद्वितीये । अपस
व्यंप्रेतार्थक्षणउपतिष्ठतां । प्रेतस्यपित्रर्थत्वयाक्षणःकरणीयःएवंपितामहार्थप्रपितामहार्थच । स्मृत्युक्तकरणपक्षेतुसर्वेषांपादप्र
क्षालनंमंडलानिकृत्वादेवमंडलादक्षिणेन्निर्कोणमंडलंज्ञेयं । अमुकगोत्रअमुकशर्मन्प्रेतइदंतेपाद्यमुपतिष्ठतां । प्रेतपित्रादौपाव
णयत् । ततःकर्ताब्राह्मणानाचमय्यस्वयंद्विराचम्यदेवानुपवेशयित्वा सव्यंसर्वेषांस्वागतंदेवाःसमाध्वं । प्राची० पित्रादयःसमा
ध्वं । उपक्रांतंसपिंडीकरणश्राद्धंकरिष्ये । शंनोदेवी० यवोसियवया० प्रेतस्थानेतूष्णींपार्वणस्थानेशंनोदेवी० उदीरता० ति
लारक्षंतव० रक्षोहणं० अष्टौवसव० पाकप्रोक्षणं० ॥ आगच्छंतुमहाभागा० श्राद्धभूमौ० ॥ सव्यंकामकालसं० देवानांब्रह्मणेइद
मासनंइत्यादिमंत्रवदध्यसादनावाहनाध्यदानगंधपुष्पधूपदीपाच्छादनांतार्चनंप्रकृतिवत्॥ अपसव्यंततोमुकगोत्रस्यामुकप्रेत

स्येदमासनं ततः पार्वणस्थत्रयेऽपोदत्वा अमुकगोत्राणामित्यादिषष्ठ्यासनं दत्वा पुरतः प्रेतार्थमेकमर्घ्यपात्रमासाद्य तत्पूर्वतः पार्व
णार्थपात्रत्रयमाग्नेयीसंस्थं चासाद्य प्रेतपात्रे दर्भचतुष्टयं निधाय पार्वणपात्रेषु प्रत्येकं कुशत्रयं निधाय पात्रचतुष्टयेऽप्यप आसिच्य शं
त्रेषु प्रकृतिवत्प्रक्षिप्य सर्वत्र गंधादिक्षिप्वा प्रेतपात्रं तूष्णीं निवेद्य पित्रादिपात्रत्रयं स्वधा अर्घ्याः इति प्रत्येकं निवेदयेत् । ततः प्रेतपा
त्रमुक्तमप्रेतपात्रोदकं भारद्वाजगोत्राणां कृष्णविष्णुमहोदवशर्मणां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां प्रेतपितृपितामहप्रपितामहानाम
र्घ्यपात्रोदकैः संयोजयिष्ये संयोजयेत्युक्ते प्रेतपात्रस्थं कुशत्रयं पित्रादिपात्रत्रये दत्वा प्रेतार्थपात्रस्थजलं वक्ष्यमाणमंत्रैः किंचि
त्किंचित्संयोजयेत् । प्रतिसंयोजनं मंत्रावृत्तिः । तत्प्रकारस्तु प्रेतपात्रस्थोदकैकदेशं पात्रांतरेणादाय ॥ ये समानाः सर्मनसः पित
र्येयमराज्ये ॥ तेषां लोकः स्वधानमोयशोयज्ञेषु कल्पतां ॥ ये सजाताः सर्मनसो जीवा जीवेषु मामकाः ॥ तेषां श्रीर्मयिकल्पताम
स्मिँल्लोके शतं सर्माः ॥ संगच्छध्वं संवदध्वं संवोमनो सिजानतां ॥ देवा भागं यथा पूर्वं संजानाना उपासते ॥ समानो मंत्रः समितिः
समानमस्तु वो मनो यथा विसृज्यामहे ॥ एतान्मंत्रानुक्त्वा भारद्वाजगोत्रशिवशर्मन्प्रेत भारद्वाजगोत्रेण कृष्णशर्मणावसुरूपे
ण स्वपित्रा सह सायुज्यं गच्छेत्युक्त्वा हस्ते गृहीतजलं प्रेतपितृपात्रस्थोदके संयोजयेत् । पुनः प्रेतार्थपात्रस्थमुदकं किंचिद्गृहीत्वा ये

सपिंडीक-
॥३४९॥

॥४२१॥

समाना इत्यादि मंत्रान्पठित्वा भारद्वाजगोत्रशिवशर्मन्प्रेतभारद्वाजगोत्रेण विष्णुशर्मणारुद्ररूपेण स्वपितामहेन सह सायुज्यं गच्छत्युक्त्वा तज्जलं प्रेतपितामहपात्रे संयोज्य । ततः प्रेतपात्रस्थोदकं सर्वगृहीत्वा ये समाना इत्यादि मंत्रानुच्चार्य भारद्वाजगोत्रशिवशर्मन्प्रेतभारद्वाजगोत्रेण महादेवशर्मणा आदित्यरूपेण स्वप्रपितामहेन सह सायुज्यं गच्छेत्पुक्त्वा हस्तस्थजलं प्रेतप्रपितामहपात्रे संयोजयेत् ॥ (मातरितु भारद्वाजगोत्रगंगाप्रेतपात्रोदकं भारद्वाजगोत्राणां कृष्णावेणी नर्मदादानां प्रेतभर्तृमातृपितामहीप्रपितामहीनां वस्वादिरूपाणामर्घ्यपात्रोदकैः संयोजयिष्ये । पूर्ववत्त्रिपुकुशनिधानां ते प्रेतपात्रजलैकदेशमादाय ये समानेत्यादि मंत्रान्पठित्वा भारद्वाजगोत्रगंगाप्रेतभारद्वाजगोत्रया कृष्णादया वसुरूपया स्वश्वश्र्वासहसायुज्यं गच्छेत्पुक्त्वा हस्तस्थजलं भर्तृमातृपात्रे संयोज्य पुनर्जलमादाय ये समाना इत्यादि मंत्रांते भारद्वाजगोत्रगंगाप्रेतभारद्वाजगोत्रया वेणीदयारुद्ररूपया स्वभर्तृपितामह्या सह सायुज्यं गच्छेत्पुक्त्वा हस्तस्थजलं तत्पात्रे संयोज्य प्रेतपात्रस्थं सर्वजलं गृहीत्वा ये समाना इत्यादि मंत्रपाठांते भारद्वाजगोत्रगंगाप्रेतभारद्वाजगोत्रयानर्मदादया आदित्यरूपया स्वभर्तृपितामह्या सहसायुज्यं गच्छेत्पुक्त्वा हस्तस्थमुदकं तत्पात्रे संयोजयेत् । आत्रादि संयोजनेष्वेवमेवोह्यं) अनंतरं पार्वणस्थप्रेतपित्रादिभ्यश्च शतस्त्वेत्याद्यावाहनपूर्वक्रमेण पार्वणवदध्यदद्यात् ॥ ततो मुकप्रेतगंधमुपतिष्ठतां माल्यं आच्छादनमुपतिष्ठतामिति प्रेतदेत्वा पित्रादिभ्यः संबुद्ध्या पार्वणवदाच्छादनांतं कुर्यात् ॥ ततो न्नौकरणं करिष्ये इति संकल्प्य भोजनार्थादन्नादुद्धृत्य घृतां कंकृत्वा अमुकगोत्रायामुकशर्मणे प्रेताय स्वाहेत्येकामाहुतिं प्रेतस्थविप्रकरे हुत्वा तदन्नं वह्नौ प्रक्षिप्य पात्रांतरे सघृतमन्नमादाय द्विधा विभज्य पार्वणस्थ ब्राह्मणकरेषु हुत्वा ततोन्नं घृताभिधारपूर्वपात्रेषु परिविष्य पृथिवीं ते

पात्रमित्यादिकामकालसंज्ञकेभ्योविश्वेभ्योदेवेभ्यः इदमन्नमित्यादिप्रकृतिवत्। प्रेतपात्रे मुकगोत्रायामुकशर्मणे प्रेतायेदमन्नं परि
 विष्टं परिवेक्ष्यमाणं चोपतिष्ठतामिति निवेद्या पित्राद्युपविष्टस्य लेपृथिवीतइत्यादिपार्वणवत् । ब्रह्मार्पणं० ईशानविष्णु० एकोवि
 षु० ततस्तृसेषु विश्वे देवाः तृसाः स्थप्रेतस्थाने स्वदितमिति प्रश्नः सुस्वदितं पित्रादौ प्रकृतिवत् । ततश्च च्छिष्टपिंडो देयः उच्छिष्टसमी
 पे पिंडार्थमेकं दर्भं निधाय तत्र शुंधंतां प्रेता इत्युदकं निनीय अमुकगोत्रायामुकप्रेताय सपिंडी० अयं ते पिंड उपतिष्ठतामिति महान्तं
 पिंडं दत्वा तद्दक्षिणतः पश्चिमतो वा अपहतेत्यादि शुंधनांतं कृत्वा पार्वणवत् प्रेतपात्रादिभ्यः पिंडत्रयं दद्यात् । प्रेतपिंडे अनुमंत्रणांज
 नाभ्यं जादिसर्वतूर्णीं कृत्वा तिलोदकं गंधपुष्पभृंगराजाद्युपचारान्समर्प्य अमुकशर्मणः प्रेतस्य यद्दत्तं सपिंडीकरणश्राद्धीयमन्नोद
 कादितदक्षय्यमुपतिष्ठतामित्युक्त्वा विशिष्टदक्षिणां दत्वा अभिरम्यतामिति विसर्जयेत् ॥ सैहववादक्षिणा विसर्जने भवेतां ।
 ततः अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य पिंडं पित्रादिपिंडैः सह संयोजयिष्ये इति पृष्ट्वा संयोजयस्वेति द्विजैः प्रत्युक्तः कर्ता मधुवाता इति तृचे
 न कुशेन प्रेतपिंडं त्रिधा विभज्य तदवयवत्रयं त्रिपुपिंडेषु योजयेद्भिर्मन्त्रैः ये समानाः० ये सजाताः० संगच्छध्वं० समानोमंत्रः० स
 मानीव आकूतिः० इति पंचपूर्वोक्तान् मधुवाता इति तृचं चोक्त्वा (पूर्वमर्घ्यसंयोजने निर्दिष्टप्रकारेण योजयेत्) अमुकगोत्रअमु
 कप्रेतअमुकशर्मणास्वपित्रा संसृजस्वेति वदन् प्रेतपिंडप्रथमभागं तस्यिडे संयोज्य दधिमधुभ्यां मिश्रीकुर्यात् ॥ एवं प्रेतस्य पिताम
 हप्रपितामहयोः प्रेतपिंडेन संयोजनं ॥ ये समाना इत्यादीनां सर्वमंत्राणामावृत्तिः ॥ ततः अत्र पितरो मादयध्वमित्यादिपिंडप्रवा
 हणांतं पार्वणवत् ॥ केचित्तु प्रेतपिंडावयवत्रयेण संयोजितां स्त्रीन् पिंडानि दानीं तनमृतमारभ्य पुरुषत्रयाय पार्वणवत्पुनरपि नाम

गोत्राद्युच्चार्यदद्यादित्याहुःप्रयोगरत्ने ॥ अस्मिन्पक्षेअपहृतेत्यादिकृत्वाप्रवाहणांतं ॥ द्वादशदिनपर्यंतंधारितमुत्तरीयंपि
डोपरिदद्यात्तत्तच्चाचार्योगृहीयात् ॥ अवयवपिंडार्थापाकस्थालींचाचार्यायदद्यात् ॥ ततः ॥ एषवोनुगतःप्रेतःपितृभाग
मवासवान् ॥ शुभंभवतुशेषाणांजायंतांचिरजीविनः॥ इतिमंत्रंपठेत् ॥ ततोविकिरद्वयंदद्यात् ॥ वरयाचनतांबूलदक्षिणा
दि ॐ स्वधोच्यतामित्यादिविसर्जनांतंपार्वणवत् ॥ स्मृत्युक्तसंकल्पेनुशिवाआपःसंवित्यादिसर्वज्ञेयं ॥ प्रेतस्थानेअन्यविप्रा
द्विगुणदक्षिणांदद्यात्॥वाजेवाजेइत्यादिअभिरम्यतामितिविसर्जयेत् ॥ आसीमांतमनुव्रज्यपिंडान्गंगादौप्रक्षिप्यस्नात्वागृ
हमागत्यवैश्वदेवादिकंकुर्यात्॥(अस्मिन्प्रयोगेउच्छिष्टपिंडदानंपिंडनिर्वपणात्प्रागेवास्तितन्मूलंनविद्मः) इतिसापिंडीकरणम् ॥

॥ ३५० ॥ अथपार्श्वेश्वराह्नम् ॥

श्रीः ॥ अथद्वादशेत्रयोदशेवाह्नितिथ्यादिस्मृत्वाप्राचीनावीतीअस्मितुरमुकगोत्रस्यामुकशर्मणःप्रेतलोकालितृलोकगमने
सुखसिद्ध्यर्थं अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानांअमुकगोत्राणांअमुकशर्मणांवसुरुद्रादित्यस्वरूपाणांपाथेयश्राद्धंसदैवंसापिंडं
पार्वणविधिनाकरिष्येइतिसंकल्प्य क्षणपाद्यासनादिसर्वपार्वणवत् ॥ इदंपक्वानेनआमेनवाकुर्यात् ॥ आमपक्षेपाथेयश्राद्धंसदै
वंसापिंडमामेनहविपाकरिष्येइतिसंकल्प्यतिलोदकाद्यन्यत्पार्वणवदेवकुर्यात् ॥ पाकप्रोक्षणस्थानेआमप्रोक्षणं ॥ आवाहनेउशं
तस्वेतिमंत्रेपितृन्हविषेस्वीकर्तवेइत्यूहः ॥ भस्ममर्यादांतंप्राग्वत् ॥ विप्रहस्तेषुतंडुलैरग्नौकरणं ॥ अन्नाच्चतुर्गुणंद्विगुणंसमंवा
तत्तदामंपान्नेषुसंस्थाप्यपाणिहोमशेषंपिंडार्थंसंस्थाप्यपान्नेषुदत्त्वापृथिवीतेपान्नमित्यादि इदमामंहव्यकव्यमित्यादि इदमामम

मृतरूपं स्वाहेत्यादियथाधर्ममध्वित्यंतं प्राकृतं ॥ यथासुखं जुषध्वमित्यस्यापोशनप्राणाहुतितृप्तिप्रश्नानालोपः ॥ संपन्नवाचनांते
नशेषप्रश्नलोपः ॥ सर्वमतेतं दुलैः सक्तुभिर्वापिडदानं ॥ केचिद्बृहसिद्धान्नपयसेनवापिडानाहुः ॥ इति पाथेयश्राद्धम् ॥ ४३ ॥

श्रीः ॥ ततः कर्ता अभ्यंगस्नानं कृत्वा देशकालौ स्मृत्वाममसपरिवारस्य सकलारिष्टोपशान्तये क्षेमायुः सिद्ध्यर्थं श्रीपरमेश्वरीत्यर्थं
निधनशांतिकरिष्ये तदंगत्वेन गणेशपूजनं स्वस्तिवाचनं करिष्ये इति संकल्प्य यथाशाखं स्वस्त्ययनं वाचयित्वा शांति सूक्तानि निध
नसूक्तानि जपेयुः ॥ आनौ भद्रा ० वर्ग १ स्वस्तिनो ० वर्ग २ शन्नं इंद्राग्नी ० वर्ग ३ शर्वतीः पा ० वर्ग १ आशुः शिशानो ० वर्ग
३ मुंचामित्वा ० वर्ग १ त्यमषुवाजि ० वर्ग १ महित्रीणाम ० वर्ग १ ॥ ईळेद्यावापृथिवीपूर्वाचित्तये मिधर्मसुरुचं यामनिष्टये ॥ यामि
भरेकारमंशा यजिन्वथस्ताभिरुषुजतिभिरश्विनार्गतम् ॥ युवोर्दानाय सुभरा असश्चतोरथमातस्थुर्वचसनमंतवे ॥ यामि
योर्वथः कर्म निष्टयेताभिरुषुजतिभिरश्विनार्गतम् ॥ युवंतासां दिव्यस्य प्रशासने विशांक्षयथो अमृतस्य मज्जना ॥ यामिधि
मस्वं १ पिन्वथोनराताभिरुषुजतिभिरश्विनार्गतम् ॥ युवंतासां दिव्यस्य प्रशासने विशांक्षयथो अमृतस्य मज्जना ॥ यामिधि
भिक्षिमंतुरभवद्विचक्षणस्ताभिरुषुजतिभिरश्विनार्गतम् ॥ यामिः परिज्मातर्नयस्य मज्जना द्विमातातृषुतराणि विभूषति ॥ यामिर्धेनु
सिषांसंतुमावतंताभिरुषुजतिभिरश्विनार्गतम् ॥ १ ॥ यामिः परिज्मातर्नयस्य मज्जना द्विमातातृषुतराणि विभूषति ॥ यामिर्धेनु
कंधुवच्यं च जिन्वथस्ताभिरुषुजतिभिरश्विनार्गतम् ॥ यामिः परिज्मातर्नयस्य मज्जना द्विमातातृषुतराणि विभूषति ॥ यामिर्धेनु

[illegible]

तं ॥ ४ ॥ याभिः कशानुमसने दुवस्यथोजवेयाभिर्धूनो अर्वतुमावतं ॥ मधुप्रियं भरथो यत्सरङ्गभ्यस्ताभिरुषुतिभिरश्विनाग
 तं ॥ याभिर्नरगोषु युधं नृपाह्येक्षेत्रस्य सातातनयस्य जिवन्धः ॥ याभीरथो अर्वथो याभिर्वसति पुरुषंतिमावतं ताभिरुषुतिभिरश्विनागं ॥
 तीमश्विनावाचमस्मेकृतं नोदसावृषणामनीषां ॥ अद्यत्येवसेनिह्वयेवावधेचनोभवतं वाजसातौ ॥ द्युभिरकुभिः परिपातमस्मा
 नरिष्टेभिरश्विनासौभगेभिः ॥ तन्नोमित्रोवरुणोमामहतामर्दितिः सिधुः पृथिवीउतद्यौः ॥ ५ ॥ निर्वर्तध्वं मानुगातास्मान्तिस्
 षकरेवतीः ॥ अग्नीषोमापुनर्वसू अस्मेधारयंतरयिं ॥ पुनरेनानिर्वर्तय पुनरेनान्याकुरु ॥ इन्द्र एनानि च्छत्वग्निरेनाउपाजतु ॥
 पुनरेतानिर्वर्ततामस्मिन्पुष्यंतु गोपतौ ॥ इहैवाग्नेनिधारयेहतिष्ठतुयारयिः ॥ वनियानन्ययनं संज्ञानयत्परायणं ॥ आवर्तनं
 निर्वर्तनं योगोपा अपितं हुवे ॥ जीवाभिर्भुनजामहै ॥ परिवोविश्वतोदधऊर्जाघतेन पर्यसा ॥ ये देवाः केचयज्ञियास्तेरथ्यासं सृजंतु ॥
 पुनर्न इन्द्रगादेहि ॥ यजमानः तथास्तु ॥ ततः स्थापितकलशोदकेन समुद्रज्येष्ठादिमंत्रैर्यजमानाभिषेकः ॥ नूतनवस्त्रधा
 वीशिवमंतरिक्षं द्यौर्नोद्व्यभयं नो अस्तु ॥ शिवादिशः प्रदिश उद्दिशो न आपो विद्युतः परिपांतु सर्वतः शांतिः शांतिः ॥ त
 वग्देहसर्वारिष्टशान्तिरस्तु ॥ यजमानः तथास्तु ॥ १ ॥ भद्रज्ञो अपि वातयमनः ॥ शांतापृथि
 रणं ॥ ततः अशुभनिवृत्त्या चंदनादिभोगधारणाधिकारार्थं चंदनपुष्पफलतांबूलगुडदानानि करिष्ये इति संकल्प्य तानि कृत्वा कुल

देवतामिष्टदेवतादींश्चनत्वाअ ध्यारमितिदेवतांविसृज्यद्विराचम्यब्राह्मणैःसहबंधुभिःस्वयंभुंजीत ॥ श्रीखंडंधृत्वातांबूलादि
भक्षयित्वाभूयसींदक्षिणांदद्यात् ॥ आचार्यायवस्त्रदक्षिणांदत्वातोषयेत् ॥ इति ॥ ॥ ४३ ॥

॥ ३५२ ॥ अथत्रयोदशश्रवणामान्नविधिः ॥

श्रीः ॥ देशकालौनिर्दिश्यअमुकगोत्रस्यामुकशर्मणःपित्रादेःजन्मप्रभृतिमरणांतमाचरितसुकृतस्यधर्मराजाग्रेकथयितृणांश्रव
णारूप्यद्वादशब्राह्मणानांप्रीतयेद्वादशतथासमस्तपापक्षयपूर्वक महाविष्णुप्रसादसिद्ध्येएकमितित्रयोदशामान्नानिसोदकुंभा
निसवस्त्रदक्षिणादियुतानिनानामगोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योदातुमहमुत्सृज्यइत्युत्सृज्यपूजापूर्वकतानिदद्यात् ॥ ॥ ४३ ॥

॥ ३५३ ॥ अथउदकुंभश्राद्धम् ॥

श्रीः ॥ देशकालौस्मृत्वाप्रा० अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानांअमुकगोत्राणांअमुकशर्मणांवसुरुद्रादित्यस्वरूपाणांउदकुंभ
श्राद्धंकरिष्येइतिसंकल्प्य अदैवंसंकल्पविधिनापार्वणवत्कुर्यात् ॥ संकल्पक्षणपाद्यासनगंधाच्छादनांतपूजान्नपरिवेषणांतेएष
उदकुंभःइदमन्नंदत्तंचेत्यादित्यागविधिः अंतेतांबूलदक्षिणादि इदमब्दपर्यंतप्रत्यहं अशक्तौप्रतिमासं संकटेएकदिनंकुर्यात् ॥

॥ ३५४ ॥ अथसासिकश्राद्धानि ॥

श्रीः ॥ देशकालौस्मृत्वाप्राचीनावीती अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानांअमुकगोत्राणांशर्मणांवसुरुद्रादित्यस्वरूपाणांऊन

मासिकाद्यनाब्दिकांतानि एतानि पंचदशमासिकानि स्वकाले कर्तव्यानि अस्मत्कुले चो लउपनयनविवाहनां दीश्राद्धनिमित्तं अप
कृष्यसद्यः सदैवानि सपिंडानि सौमौकराणि पार्वणेन विधिना तंत्रेण करिष्ये ॥ अब्दपूरितश्राद्धविधिः ॥ देशकालौ स्मृत्वा प्राचीनावीती अस्मत्पितृपिता
संकार्यं अशक्तौ अपकर्षः ॥ इति मासिकश्राद्धं ॥ इति मासिकश्राद्धं ॥ अब्दपूरितश्राद्धविधिः ॥ देशकालौ स्मृत्वा प्राचीनावीती अस्मत्पितृपिता
महप्रपितामहानां अमुकशर्मणां अमुकगोत्राणां वसुधुद्रादित्यस्वरूपाणां ममपितुः अब्दपूरितश्राद्धं सदैवं सपिंडं सौमौकरणं पार्व
णेन विधिना अन्नेन हविषायुष्मदनुज्ञया सद्यः करिष्ये इति संकल्प्य अन्यत्सर्वपार्वणवत् ॥ अथ प्रथमाब्दिकश्राद्धविधिः ॥ आ
चम्य प्राणायामं कृत्वा देशकालौ स्मृत्वा प्राचीनावीती अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां अमुकशर्मणां अमुकगोत्राणां वसुधुद्रा
दित्यस्वरूपाणां ममपितुः प्रथमाब्दिकश्राद्धं सदैवं सपिंडं सौमौकरणं पार्वणवत् ॥ तत्र ब्राह्मणाय तांबूलं छत्रं पादुकादानं उदकुंभदानं अन्नदानं दीपदानं च दद्यात् ॥
तिसंकल्प्य अन्यत्सर्वपार्वणवत्कुर्यात् ॥ तत्र ब्राह्मणाय तांबूलं छत्रं पादुकादानं उदकुंभदानं अन्नदानं दीपदानं च दद्यात् ॥ अनेन कर्मणा
मृतदिनमारभ्य अब्दपर्यंतं एतत्कर्म सांगता सिद्ध्यर्थं ब्राह्मणाय शक्त्या गोप्रदानं दत्वा भूयसीं दक्षिणां दद्यात् ॥ ॥ ४३ ॥
पितृस्वरूपी श्री परमेश्वरः प्रीयतां ॥ इति मासिक-अब्दपूरित-आद्याब्दिकानां संक्षेपः ॥ ॥ ४३ ॥

श्रीः ॥ तत्र शौनकः ॥ जीवच्छ्राद्धं प्रवक्ष्यामि शौनको हं द्विजन्मनां ॥ कृष्णपक्षेत्रयोदश्यां त्वात्वोपोष्य समाहितः ॥ तस्मिन्नह
निसंभारानुपकल्प्यथाक्रमं ॥ विदुस्त्रहेमसूचीवैअंकुशं तांतवं तथा ॥ पार्श्वकेशांश्च पालाशं वृंतं कृष्णाजिनं तथा ॥ औदुंबरस

मिद्धिंरासनंकलशान्नवान् ॥ श्रीवामान्नजलेतीर्थे स्नात्वामध्यं दिने जपेत् ॥ गायत्रीमित्यर्थः ॥ उत्थाय ब्राह्मणान् भोज्यकृत्वा
 पुण्याहमुब्रतं ॥ वस्त्रांगुलीयकादीनि दत्वा चार्याय भक्तिः ॥ सघृतं पायसान्नं च समुक्त्वा दक्षिणामुखः ॥ सायंकाले निमाधाय
 पुरस्तात् तत्र संस्कृतं ॥ घृताहुतं चरुं हुत्वामंत्रैः षड्भिर्यथाक्रमं ॥ द्वाभ्यां च त्वारिश्रृंगेति तत्सवितुर्कृच्चैकया ॥ अष्टाविंशतिसं
 चजातवेदस इत्युच्चा ॥ हुत्वा पुरुषसूक्तेन प्रत्युचं षोडशाहुतीः ॥ अतो देवादिषड्विंशसावित्र्याष्टशतानि च ॥ कृष्णाय किं
 ख्यां बाहोमशेषं समापयेत् ॥ गत्वा चतुष्पथं सूचीं रज्जुकाद्यं कुशांस्तथा ॥ प्रीयतां किं करार्येति दद्यात्कृष्णाय वैमुने ॥ पुरुषाकृतिव
 करायेत दत्तं नमः अनेन स प्रीयतामित्यम किं करोद्देशेन त्यागः ॥ निधाय कलशान् प्रीतः सोदकांस्तं तु वेष्टितान् ॥ एवमेकविंशति
 त्कुर्व्याच्छिरसि त्रीन्मुखे तथा ॥ ग्रीवैकं चतुरोवक्षो बाह्वोर्द्वौ द्वौ तथैव च ॥ एकलिंगे पादयोश्च पंचपंचेति कथ्यते ॥ पालाशवृंतानीति शो
 कलशाः ॥ यन्मे प्रीतो सि भगवन्नित्याहृत्य सुसंस्कृतान् ॥ पंचगव्येन प्रक्षाल्य एतो न्विन्द्रादिभिस्तथा ॥ बाह्वोश्चैव शतं दद्यात्पंचपंच तथा
 यः ॥ कृष्णाजिने तु पालाशवृंतैः कृत्वानराकृतिं ॥ चत्वारिंशच्छिरो ग्रीवे दशान्निशदुरस्यपि ॥ त्रीणि त्रीणि वृषणयोः पादयोस्त्रि
 गुलौ ॥ जठरे विंशतिं दद्याजं घयो विंशतिं द्वयं ॥ ऊर्वोश्च षष्टिर्दद्याद्वै मे देव चत्वारि विन्यसेत् ॥ त्रीणि त्रीणि वृक्षाणां वृंतान्य
 शतं तथा ॥ विन्यसेच्छेदवृंतानि दशपादांगुलीषु च ॥ शतानि त्रीणि षष्टिश्च पालाशवृंतमाहरेत् ॥ अलाभेयज्ञवृक्षाणां वृंतान्य
 पिसमाहरेत् ॥ निवेद्य कलशे प्राणान्वृते देहं निवेद्य च ॥ कलशे इत्येकवचनमविवक्षितं ॥ कलशेषु प्राणनिवेशनं चित्तयित्वेत्य
 र्थः ॥ मध्ये शयित्वा स्वदेहं विवस्वत्युदिते सति ॥ सुस्नाप्य सकलं ऋग्भिः स्वदेहं स्वयमेव तु ॥ सम्यक् पुरुषसूक्तेन श्रीसूक्तेन समा

प्यच ॥ अन्नेन ब्राह्मणान्भोज्ययमकिंकरतृप्तये ॥ दाहश्च तस्य कर्तव्यः पितृमेधविधानतः ॥ होतृप्रीत्याचवरयेद्बालवृद्धातुरा
 न्जनान् ॥ नद्यादितीरे कर्तव्यं दशाहं वा दिने गृहे ॥ दिने चेद्गृह एवेत्यर्थः ॥ एकादश्यां तु कर्तव्यं श्राद्धं सुब्राह्मणाय च ॥ सर्वमेका
 विधिप्रकर्तव्यं सपिंडीकरणं विना ॥ एकादश्यां च नो कुर्यात्तत्पिंडान्मंत्रवत्तथा ॥ मंत्रकर्माणि जीवेन श्राद्धं कुर्याच्च सत्स्वपि ॥ सर्वमेका
 देशांतरमृतस्यैव चंडालाद्यैर्हृतस्य च ॥ अन्येन स्त्रीच शूद्रश्च वृत्तैर्दग्ध्वा स्वकांतनुं ॥ तदहं येन क्रियाः सर्वाः कुर्यात् ॥ यथा
 सपिंडीकरणवर्जं ॥ स्त्रीशूद्रौ प्रत्याह एकादश्यामिति ॥ चकारादन्यवर्णयोश्चैकादश्यां पिंडोपलक्षितमौर्ध्वदेहिकं न कार्यं ॥ यथा
 णितूष्णीं कार्याणि ॥ सत्सु पिंडादिष्वधिकारिषु जीवच्छ्राद्धं न कार्यं असत्स्वाहयथेति ॥ अनेन कृतप्रायश्चित्त इत्यर्थः ॥ देशांतरे वा
 रमृतादेरस्थामलाभे पणवृत्तदाहमात्रमिति हृश्यते ॥ इति शौनकोक्तो जीवच्छ्राद्धविधिः ॥ ३५६ ॥ अधपालाशविधिः ॥ ४३ ॥

श्रीः ॥ आचम्य प्राणानाचम्य देशकालौ संकीर्त्य प्राचीनावीती अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्त्योत्तमलोकप्राप्त्यर्थं मृता
 हातृविदेशस्थस्य मरणे प्रेतस्य मंत्राग्निरहितस्य अस्थिरहिताश्मरहित उत्तरीरहित निमित्तं और्ध्वदेहिकक्रियाधिकारार्थं पालाश
 विधिकृरिष्ये इति संकल्प्य यवपिष्टेन शरीरनिर्माणं ॥ शिरसि च त्वारिंशत् ग्रीवायां दश बाह्वोः प्रत्येकं पंचाशत् एवं शतं करंगुलि
 ब्रुसर्वासु दश उदरे त्रिंशत् जठरे विंशतिः शिश्ने च त्वारिंशत् अंडयोस्त्रयस्त्रयः ऊर्वोः प्रत्येकं पंचाशत् जंघांतः पादतलांतं यावत्पादयोः प्रत्ये

कंपंचदशसर्वासुपादांगुलिषुदशाएवंषष्ठ्यधिकशतत्रयमित ३६० पालाशपर्णैःशरीरनिर्मयऊर्णासूत्रेणशरीरंबद्धजललोडित
यवपिष्टेनानुलिपेत् ॥ ततःशक्तौसत्यांवक्ष्यमाणान्यपिकार्याणि मूर्धस्थानेकदलीफलं शिरसिफलंवर्तुलं बंध्वा ललाटेकदलीपत्रं
दंतेदाडिमबीजानि कर्णेकंकणं नेत्रयोःकपर्दकौ नासिकायांतिलपुष्पं नाभौअञ्चकं स्तनयोर्ज्वीरफलद्वयं वातेमनःशिलां
पित्तेहरितालं कफेसमुद्रफेनं रुधिरेमधु पुरीषेगोमयं मूत्रेगोमूत्रं रेतसिपारदं वृषणयोर्वृताकद्वयं शिश्रेगृजरं केशेसूकरके
शाः लोमावलीषुऊर्णावस्त्रं मांसस्थानेयवपिष्टेनवामाषपिष्टेनवातंडुलपिष्टेनवाल्लिपेत् ॥ ततःपंचगव्येनप्रोक्ष्यपंचामृतमंत्रैःपं
चामृतेनप्रोक्ष्य ॥ पुनर्नोअसुमितिबृहदुक्थःप्राणास्त्रिष्टुप् प्राणप्रवेशनेवि० ॥ पुनर्नोअसुपृथिवीदंदातुपुनर्द्यौर्दुवीपुनरंतरि
क्षं ॥ पुनर्नःसोमस्तन्वंदंदातुपुनःपूषापृथ्व्यं! यास्वस्तिक्क्रइतिप्राणप्रवेशनंभावयेत् ॥ यद्वा ॥ यत्तेयममितिद्वादशचस्ययमो
नुष्टुप् प्राणप्रवेशनेवि० ॥ यत्तेयमवैवस्वतमनोजगामंदूरकं ॥ तत्तआर्वतयामसीहक्षयायजीवसे ॥ यत्तेदिव्यत्पृथिवीम
नो० ॥ तत्तआर्वत० ॥ यत्तेभूमिंचतुर्भृष्टिमनो० ॥ तत्त० ॥ यत्तेचतस्रःप्रदिशोमनो० ॥ तत्त० ॥ यत्तेसमद्रमर्णवंमनो० ॥
तत्त० ॥ यत्तेमरीचीःप्रवतोमनो० ॥ तत्त० ॥ यत्तेअपोयदोषधीर्म० ॥ तत्त० ॥ यत्तेसूर्य्यदुषसंमनो० ॥ तत्तआ० ॥ य
त्तेपर्वतान्बृहतोम० ॥ तत्त० ॥ यत्तेविश्वमिदंजगन्मनो० ॥ तत्त० ॥ यत्तेपरंपरावतोमनो० ॥ तत्त० ॥ यत्तेभूतंचभव्यं
चमनो० ॥ तत्तआर्वत० ॥ इतिद्वादशर्चेनसूक्तेनप्राणानीय ॥ शुक्रमसिज्योतिरसितेजोसि ॥ इतिमंत्रेणपादेक्षिद्वा ॥
अक्षीभ्यांतइतिषळर्चेनसूक्तेनशरीरंस्पृशेत् ॥ अक्षीभ्यांतेनासिकासंभ्यांकर्णाभ्यांछुबुकादधि ॥ यक्ष्मंशीर्षपयंसस्तिष्काज्जि

अक्षीभ्यात्तइतिषळचनसूक्तेनशरीरंस्पृशेत् ॥ अक्षीभ्यातेनासिकाभ्यांकर्णाभ्यांछुबुकादधि ॥ यक्ष्मंशीर्षण्यंमस्तिष्काज्जि

ह्यायाविबृहामिते ॥ ग्रीवाभ्यस्तउष्णिहाभ्यःकीकसाभ्योऽअनूक्यात् ॥ यक्षमंदोषण्य२मंसाभ्यांबाहुभ्यांविबृहामिते ॥ आं
 त्रेभ्यस्तेगुदाभ्योवनिष्ठोर्हृदयादधि ॥ यक्षमंमर्तस्त्राभ्यांयुक्तःप्लाशिभ्योविबृहामिते ॥ ऊरुभ्यांतेअष्टीवज्यांपाणिभ्यांप्रपदा
 भ्यां ॥ यक्षमंश्रोणिभ्यांभासद्भ्रंससोविबृहामिते ॥ मेहनाडनंकरणाह्लोभभ्यस्तेनखेभ्यः ॥ यक्षमंसर्वस्मादात्मनस्तमिदंविबृ
 हामिते ॥ अंगादंगाह्लोमोलोमोजातंपर्वणिपर्वणि ॥ यक्षमंसर्वस्मादात्मनस्तमिदंविबृहामिते ॥ इत्येतैःस्पृष्ट्वाशरीरंभावयि
 त्वास्त्रापयित्वाचंदनेनानुलिप्यवस्त्रेपरिधाय्यशोपवीतेधारयित्वा शुभ्रसुगंधमाल्यादिभिरलंकृत्यायंसदेवदत्तइतिअभिमृ
 श्य ॥ इदंचास्योपासनं ॥ इत्यग्निंध्यात्वापूर्वोक्तवैतरण्यादिदानपूर्वकंऊर्णासूत्रेणवेष्टयित्वाकृष्णाजिनेनाच्छाद्यचित्स्थान
 माधायपूर्वोक्तविधिनाशववद्देहत् ॥ पालाशवृताभावेकुशैःप्रतिकृतिंकुर्यात् ॥ आहिताग्नेःप्रतिकृतिदाहेअस्थिदाहेवादशाह
 मेवाशौचं ॥ अनाहिताग्नेस्तुसपिंडानांज्यहंपर्णशरदाहे ॥ पूर्वमगृहीताशौचयोर्भार्यापुत्रयोर्दशाहमेव ॥ गृहीताशौचयोस्तुत
 योरपित्रिरात्रमाशौचं ॥ पत्नीसंस्कारेपत्युश्चैवमेव ॥ सपत्न्योःपरस्परंचैवमेवाशौचं ॥ सापलमतुर्दशाहानंतरंज्यहंकार्येसप
 त्नीपुत्रेण ॥ आहिताग्नौविदेशस्थेमृतेयावद्विधिनानसंस्कारःतावत्पुत्रादीनानाशौचं ॥ इतिपालाशविधिः ॥ ४३ ॥

श्रीः ॥ तत्रदुर्मरणेष्व्वात्मघातेजलादिभिःप्रमादमरणेपतितादिमरणेचपूर्वोक्तव्यवस्थयामुक्तगोत्रस्यामुक्तशर्मणोमुक्तदोषमाशा
 र्थमौर्ध्वदेहिकेसंप्रदानत्वयोग्यतासिद्ध्यर्थममुक्तप्रायश्चित्तममुक्तदानंवाकरिष्यइत्यादिसंकल्पपूर्वकतत्तत्प्रायश्चित्तदानंचकार्यं॥

अशक्तैतुदानमेवकार्य ॥ ततोमुकगोत्रस्यामुकशर्मणोमुकदुर्मरणदोषनाशार्थमौर्ध्वदेहिकप्रदानत्वयोग्यतासिद्ध्यर्थनारायण
बलिकरिष्यइतिसंकल्प्यपूर्वोक्तनारायणबलिवत्सर्वैकुर्यात् ॥ एतत्तुवर्षांतरकरणपक्षे ॥ सद्यःकरणपक्षेतुपूर्वोक्तद्विगुणप्राय
श्चित्तिसंकल्प्यशुक्लैकादश्यादिकालमनपेक्षैवसमनंतरोक्तसंकल्पंकृत्वाविधिनास्थापितेकलशद्वयेहेमप्रतिमयोर्विष्णुवैवस्वतंय
मंचावाह्यपुरुषसूक्तनयमायसोममित्तिचक्रमेणषोडशोपचारैःसंपूज्यतत्पूर्वभागेरेखायांदक्षिणाग्रकुशानास्तीर्थं शुंधंतांविष्णुरू
प्यमुकंप्रतइतिदशस्थानेष्वपौनिनीयसधुघृततिलमिश्रानोदनपिंडान्दशअमुकगोत्रामुकशर्मंप्रतविष्णुदैवतायतेपिंडइतिदक्षि
णसंस्थान्प्राचीनावीतीत्यादिपैतृकधर्मेणदत्वातान्गंधादिभिरभ्यर्च्यप्रवाहणांतंकृत्वानद्यांक्षिपेत् ॥ श्वःसद्योवापूर्वस्थादंभा
विष्णुमभ्यर्च्यैकविप्रदर्भेबटौवापादक्षालनादितृप्तिप्रश्नांतंविष्णुरूपंप्रतावाहनप्रपूर्वंकृत्वा विप्रसमीपेतूष्णीरेखाःकृत्वादंभा
स्तरणेअपौनिनयनंचकृत्वा दर्भेषुसव्येनविष्णवेब्रह्मणेशिवायचसपरिवाराययमायचेत्तिचतुर्भ्यःपिंडचतुष्टयंदत्वाऽपसव्येनवि
ष्णुरूपिंप्रेतामुकगोत्रनामायतेपिंडइत्येकंपंचमंपिंडंदत्वा तथैवाभ्यर्च्यप्रवाहणांतंविष्णुरूपिंप्रेतायायंतिलतोयांजलि
विप्रायवस्त्राभरणादिदत्वाविप्रेणंप्रेतायतिलांजलिंदापयेत् ॥ अमुकगोत्रायामुकशर्मणाभगवान्विष्णुरिमममुकंप्रतंशुद्धमपापमहं
रितिमंत्रेणविप्रालाभेस्वयंदद्यात् ॥ ततोविप्रान्वाचयेत् अनेननारायणबलिकर्मणाभगवान्विष्णुर्निमममुकंप्रतंशुद्धमपापमहं
करोत्विति ॥ काम्यप्रयोगेस्मिन्प्रयोगेचसंकल्पेनामगोत्रोच्चारैचविशेषःस्पष्टएव ॥ पूर्वत्रकाश्यपगोत्रदेवदत्तंप्रेतैत्याद्युच्चारःअत्र
तुनामगोत्रज्ञानसत्त्वाहुर्मरणेनमृतस्यन्नामगोत्रंतदेवोच्चारयेदितिसंकल्पविशेषेपिहेतुःस्पष्टएव ॥ इति ॥ ६३ ॥

श्रीः ॥ प्रतिमासं शुक्लपंचम्यामुपवासं कंवाकृत्वा पिष्टमयं नागं पंचफणमनंतवासुकिं शंखपद्मकंबलकर्कोटकश्वतरधृतराष्ट्रं
खपालकालियतक्षकपिलेति द्वादशनामभिर्द्वादशमासेषु संपूज्य पायसेन विप्रान्संभोज्य वत्सरां ते हेमनागं प्रत्यक्षांगं च दत्वाना
रायणबलिपूर्वकं दहाशौचादिकं कार्यं ॥ अथवानमो अस्तु संपूर्णं ॥ प्रायश्चित्तमिदं प्रोक्तं नागदष्टस्य शंभुनेति ॥ ततो नारायणबल्यादि ॥
नकारयेत् ॥ क्षीराज्यपात्रमध्यस्थं पूज्य विप्राय दापयेत् ॥ ३५८ ॥ अथ संपूर्णं इति त्रितम् ॥

श्रीः ॥ ब्रह्मचारिणो मृतिसंभावनायां तन्मरणोत्तरं वा अवकीर्णदोषनिमित्तं प्रायश्चित्तं कृत्वा प्रयोगरत्नसंगृहीतविधानमालोक्य
कौपीनादिदानं ब्रह्मचारिभ्यो दत्वा व्रतविसर्जनं विधाय और्ध्वदेहिकाधिकारसिद्ध्यर्थं अर्कविवाहं कृत्वा और्ध्वदेहिकं कुर्यात् ॥ अ
त्र प्रयोगः ॥ ब्रह्मचारिणो मृतिसंभावनायां मरणोत्तरं तिथ्याद्युच्चार्य अमुकगोत्रस्य अमुकनाम्नो मृतस्य ब्रह्मचारिणः त्रियमाणस्य
ब्रह्मचारिणो वा अवकीर्णदोषनिवृत्त्यर्थं द्वादशाब्दषडब्दत्र्यब्दान्यतमप्रायश्चित्तं प्रतिप्राजापत्यं अमुकगोत्रस्य अमुकनाम्नो ब्रह्मचारिणो
रासद्यः सूतकांते वा अहमाचारिभ्ये इति संकल्प्य ॥ पुनर्देशकालौ निर्दिश्य प्राचीना वीती अमुकगोत्रस्य अमुकनाम्नो ब्रह्मचारिभ्यः प्र
ब्रह्मचर्याश्रमेण मरणजन्मदुर्गतिनिवृत्तिपूर्वकं ब्रह्मसायुज्यसिद्ध्ये मम कुलस्याभिवृद्ध्यर्थं सप्ततिसिद्ध्यर्थं त्रिशब्दो ब्रह्मचारिभ्यः प्र
त्येकं कौपीनादिपदार्थान् नृदास्ये इति संकल्प्य ब्रह्मचारिणं वृत्वा युवं वस्त्राणीत्यादितत्पदार्थलिंगकर्मत्रानुच्चार्य कौपीनां गुलीयक

ब्रह्म.मर.
॥३५९॥

॥४२८॥

॥ कर्णकुंडलकृष्णाजिनपादुकाछत्रमाल्यगोपीचंदनमणिप्रवालमालायज्ञोपवीतंचेतिपदार्थानाममुकगोत्रायामुकनान्नेब्रह्मचारि
 तेषुभ्यमहंसंप्रददेइतिदद्यात्संकल्पयेद्वा ॥ एवंत्रिशब्दोब्रह्मचारिभ्यःतदसंभवेसाधुगृहस्थेभ्योवादत्वापुनःतिथ्याद्युच्चार्यअमु
 कनान्नःब्रह्मचारिणोव्रतविसर्गैकरिज्येतदंगत्वेनमातृपूजाहिरण्यविधिनाआभ्युदयिकंचकृत्वा व्रतविसर्गैकर्मणिस्थंडिलादिक
 रिज्येइतिसंकल्प्यउल्लेखनाद्यश्याधानांतेसमिद्धयमादायआधारांतेअग्निवायुंसूर्यप्रजापतिंअग्निव्रतपतिं अग्निव्रतानुष्ठानफलसं
 पादनंविश्वान्देवान्एताःसप्तदेवताःप्रत्येकमेकैकयाज्याहुत्यायक्ष्ये ॥ अग्नयेव्रतपतयेस्वा ॥ अग्नयेव्र
 तानुष्ठानफलसंपादनायस्वाहाअग्नयेव्रतानुष्ठानफलसंपादनायेदं ॥ भूर्भुवःस्वःस्वाहाप्रजापतयइदं ॥ एवंसप्तहु
 तीर्हुत्वास्विष्टकृदादिहोमशेषं समाप्य अर्कशाखासमीपेगत्वाशाखांगृहेवानीयार्कविवाहःकार्यः ॥ तिथ्यादिसंकीर्त्यअमुकगोत्र
 स्यामुकशर्मणऔर्ध्वदेहिक्काधिकारसिद्ध्यर्थंअर्कविवाहंकरिष्येइतिसंकल्प्य तदंगत्वेनमातृकापूजनपूर्वकंहिरण्यद्वारानांदीश्रा
 ङ्गंकरिष्येइतिसंकल्पंकृत्वाअर्कब्रह्मचारिणौहरिद्रयानुलिप्यपीतसूत्रेणोवेष्ट्यवस्त्रयुग्मेनाच्छादयेत् ॥ ततःउल्लेखनाद्यश्याधानां
 तेसमिद्धयमादायाधारांतमुक्त्वा अग्निबृहस्पतिंविवाहविधियोजकं कामंअग्निवायुंसूर्यप्रजापतिंएताःअष्टौप्रधानदेवताःप्रत्येक
 मेकैकयाज्याहुत्यायक्ष्ये शेषेणेत्यादिआधारांतंकृत्वाप्रधानाज्याहुतीर्जुह्यात् ॥ ॐ अग्नयेस्वाहाअग्नयइदं ॥ बृहस्पतयेस्वाहा
 बृहस्पतयइदं ॥ विवाहविधियोजकायस्वाहाविवाहविधियोजकायेदं ॥ यस्मैत्वाकामकामायवयंसम्यग्यजामहे ॥ तमस्म

स्नातकम्.
॥३६०॥

श्रीः ॥ हरिहरः ॥ एवंस्नातकमृतावपिअर्कशाखांशवंचदेहत्शाखांप्रवाहयेद्वा ॥ भूर्भुवःस्वःस्वा
विवाहोक्तेः ॥ तत्रप्रयोगः ॥ स्नातकमर्णविधिः ॥
मंकृत्वातिश्यामः ॥ स्नातकमर्णविधिः ॥

मंकृत्वातिथ्याद्युच्चार्य ॥ तत्रप्रयोगः ॥ स्नातकमृतिसंभावनार्यातन्मरणोत्तरंवाअवकीर्णदोषनिमित्तंप्रायश्चित्तंकृत्वा आचम्यप्राणाया
कुच्छत्रयप्राजापत्यप्रायश्चित्तभूतद्रव्यंगोनिष्क्रयप्रत्यान्नायद्वारासद्यःसूतकांतेवाअहमाचरिष्ये ॥ अर्कशाखासमीपेगत्वाशा
खांगृहेवानीयअर्कविवाहःकार्यः ॥ तिथ्याद्युच्चार्यअमुकगोत्रस्यअमुकशर्मणःऔर्ध्वदेहिकाधिकारसिद्ध्यर्थंअर्कविवाहंकरिष्ये
इतिसंकल्प्यतदंगत्वेनमातृकापूजापूर्वहिरण्यदानंनंदीश्राद्धंकरिष्येइतिसंकल्पंकृत्वा अर्कस्नातकौहरिद्रयानुलिप्यपीतसूत्रे
णवेष्ट्यवस्त्रयुग्मेनाच्छादयेत् ॥ ततःउल्लेखनाद्यश्याधानांतेसमिद्धयमादायाधारांतमुक्त्वा अभिंबृहस्पतिंविवाहविधियोजकं
कामंअभिंवायुंसूर्यंप्राजापतिंचएताःअष्टप्रधानदेवताःब्रह्मचार्युकविधिनानुत्वास्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्यअर्कशाखां
हेत् ॥ शाखांप्रवाहयेत् ॥ शवंविधिवद्देहेत् ॥ इतिस्नातकमरणविधिः ॥

==31

三三三

==3==

॥ ३६१ ॥ अथरजस्वलामरणविधिः ॥

श्रीः ॥ रजस्वलायाः शुद्धिकर्ता तिथ्याद्युच्चार्य अमुकगोत्रायाः अमुकनाम्याः रजस्वलादशायां मरणजनितदोषपरिहारार्थं और्ध्वं देहिकयोग्यतासिद्ध्यर्थं च चांद्रायणत्रयात्मकंप्रायश्चित्तं प्रतिचांद्रायणंतत्प्रत्यक्षाया गोनिष्क्रयद्वारा कृच्छ्रकमित्यष्टकृच्छ्रानुकल्पत्वेकृच्छ्रत्रयानुकल्पेनवाचांद्रायणत्रयस्यद्रव्यंदद्यात् ॥ तत्कालाचरणासंभवेसूतकांतेवादद्यात् ॥ ततः कर्ता ब्राह्मणवचनाच्चांद्रायणप्रायश्चित्तस्यसंपन्नतांसंपाद्ययवपिष्टेन प्रेतमनुलिप्यस्वयं स्नात्वा शूर्पेण अष्टोत्तरशतवारं स्नापयेत् ॥ प्रेतं प्रक्षाल्य भस्म गोमयमृत्तिकाकुशोदकंपंचगव्यशुद्धोदकैः स्नापयित्वा तथा पावमानीभिर्यदंतियच्चटूरके आपो हिष्ठेति तिसृभिः कयान इति तिसृभिः स्नापयित्वा वस्त्रं परित्यज्य विधिना दहेत् ॥ यद्दामलं प्रक्षाल्य स्नापयित्वा काष्ठवद्गन्धवास्थीनि विधिना दहेदिति भट्टाः ॥

॥ ३६२ ॥ अथगर्भिणीमरणविधिः ॥

श्रीः ॥ मदनरत्नेशौनकः ॥ षणमासोत्तरंगर्भिण्यां मृतायां भर्त्रा दिर्जलैः गोमूत्रेण आपो हिष्ठादिभिर्मंत्रैः प्रतिमंत्रं शवं प्रोक्ष्य स्मशानेनीत्वा नाभेरधः सव्यमुदरंचतुरंगुलं छित्त्वा पुत्रमादाय जीवंश्चेद्यस्तेस्तन इत्युच्चास्तनंदत्वा शिशुग्रामे प्रापयेत् ॥ ततः सूत्रग्रथनेनोदरमव्रणं कृत्वा पृषदाज्येन चापूर्य मृद्भस्मकुशगोमूत्रैरापो हिष्ठादिभिस्त्रिभिः संस्नाप्य वासोभिः प्रेतमाच्छाद्य शवधर्मेण दाहयेदिति ॥ यदि गर्भश्चेदप्राणस्तं निखनेत् ॥ इति शौनकीयकल्पोक्तगर्भिणीमरणविधिः ॥ अथ प्रयोगरत्नोक्तगृह्यकारिकानुसारी च्यते ॥ गर्भिण्यां सशल्यायां मृतायां कर्ता कुक्षिं भित्त्वा शल्यं जीवति चेन्न जिह्वेह प्रापयित्वा प्रमीतं निस्त्राय शल्य सहितमरणदोष

निवृत्तयेत्रयस्त्रिंशत्कृच्छ्रात्मकप्रायश्चित्तंकुर्यात् ॥ कृच्छ्रद्वयमप्युक्तं प्रायश्चित्तमन्तेहेमाद्रौ ॥ छेतुस्तसकृच्छ्रं चरणीयमित्यपितत्रै
व ॥ अथैतत्प्रयोगः ॥ भर्त्रादिः कर्ता तिथ्याद्युच्चार्य अमुकगोत्रायाः अमुकनाम्न्याः गर्भिण्याः सशल्यमरणदोषनिवृत्त्यर्थं त्रयस्त्रिंश
त्कृच्छ्रात्मकं प्रायश्चित्तं प्रति कृच्छ्रं गोत्रिक्याद्यन्यतमद्वारा सद्यः सूतकांते वा अहमाचरिष्ये इति संकल्प्य विधिना दहेत् ॥ यदिग
र्भदहनं कृतं तदा कर्ता सगर्भदहनजन्यदोषपरिहारार्थं संपादकः प्रायश्चित्तंकुर्यात् ॥ प्रायश्चित्तंतु गर्भवधप्रयुक्तातिदेशिकं कार्यं ॥ यदिग
यद्यपि स्त्रीपुत्रपुंसकज्ञानाभावस्तथापि गर्भदहने इदं प्रायश्चित्तं कार्यं ॥ एवमात्मशुद्ध्यर्थं कृते गर्भिण्या अपिसगर्भदहनदोषनिवृ
त्त्यर्थं और्ध्वदेहिकेऽधिकारसिद्ध्यर्थं च त्र्यब्दं प्रायश्चित्तं कार्यं ॥ अत्र ब्रह्मचारिविधानप्रभृति एतदंतविधिना मूलाभिप्रायः प्रयो
गरत्ननिर्णयसिंधवादौ द्रष्टव्यः ॥ इति गर्भिणीमरणविधिः ॥

॥ ३६३ ॥ अथ सू

क्र्याद्यन्यतमप्रत्यान्नायत्वेन कृच्छ्रकमिति कृच्छ्रत्रयात्मकां द्रायणत्रयप्रायश्चित्तपूर्वकं शूर्पेण शतस्नानानिकारयिष्ये ॥ इति सं
कल्प्य स्वयं स्नात्वा शूर्पौ दकेन अष्टोत्तरशतवारं तां स्नापयित्वा कुंभे जलमादाय पंचगव्यं तत्र क्षिप्त्वा आपो हिष्ठीयवामदेव्यवारु
ण्यादिपुण्यऋग्भिर्मन्त्र्यपावमानीयैरपि आपो हिष्ठेति तिसृभिः संस्नाप्य विधिना दहेत् ॥ सूतिकावस्थायां मरणे तत्रापि दिन
भेदेन प्रायश्चित्तमुक्तं निर्णये ॥ तच्च प्रथमे त्र्यब्दं द्वितीये त्र्यब्दं तदूर्ध्वमासपर्यंतं कृच्छ्रत्रयमिति ॥ प्रयोगरत्ने तु दशाहा

॥

॥

इति सूक्तिकामरणविधिः ॥

दुत्तरं यावन्मासं कृच्छ्रत्रयमिति ॥ असूतकीशवंसंस्पृश्य शूर्पशतं क्षिपेदिति निर्णयसिद्धौ ॥ अथ सूक्तिकामरणविधिः ॥

॥ ३६४ ॥ अथ संकेशामरणविधिः ॥

श्रीः ॥ कर्तुं स्नात्वा देशकालौ निर्दिश्य अमुकगोत्राया अमुकनाम्न्याः प्रेतायाः भर्तृवियोगोत्तरमेतावन्तं कालं निषिद्धकेशकंचु-
क्यादिधारणजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं प्रत्यब्दमेकैककृच्छ्रं तथा केशकंचुक्यादियुतायाः प्राणोत्क्रमणजनितदोषनिबर्हणार्थं
व्यादिधारणजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं प्रत्यब्दमेकैककृच्छ्रं इति संकल्प्य कंचुक्यादिपरित्यज्य वपनं कृत्वा संस्ना-
कृच्छ्रत्रयं प्रायश्चित्तं यथा शक्तिव्यावहारिकद्रव्यदानेन सूतकांते हमाचरिष्य ॥ ३६४ ॥ ॥ ३६४ ॥
प्यविधिना दहेत् ॥ ॥ ३६४ ॥

॥ ३६५ ॥ अथ प्रसंगात्संकेशावपनविधिः ॥

श्रीः ॥ तीर्थोद्गतास्नात्वा देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्राया अमुकनाम्न्यामभर्तुं वियोगादेतावन्तं कालं केशकंचुक्यादिधारण-
दिनद्विवारभोजनतांबूलभक्षणादिजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं यतिचांद्रायणप्रतिनिधिभूतं प्रायश्चित्तं प्रत्यब्दमेकैककृच्छ्रं तत्र
त्याम्नायगोनिष्क्रीय भूतताम्रकार्पापणपरिमितमूल्यदानेनाहमाचरिष्ये तथा समस्तपापक्षयार्थं वापनार्थं निधाय वापयित्वा स्ना-
यानिकानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च ॥ केशानां श्रित्यतिष्ठंति तस्मात्केशान्वपाम्यहं ॥ इति शिरसि दर्भे निधाय वापयित्वा स्ना-
यात् ॥ त्वं राजा सर्वतीर्थानामित्यादि तीर्थं प्रार्थयित्वा पुनर्देशकालौ निर्दिश्य मम कायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकज्ञाताज्ञात-
स्पृष्टास्पृष्टभुक्ताभुक् पीतापीतादिसकलदुरितनिबर्हणार्थं अमुकसिंस्तीर्थे स्नानमहं कृतं ततः शरीरशुद्ध्यर्थं दशविधस्नानानि संक-

लप्य भस्मादार्यईशानायनमःशिरसि तत्पुरुषायमुखे अधोरायहृदये वामदेवायनाभौ सद्योजातायपादयोः नमःशिवायेतिस
वीर्गविलिप्यत्नात्वाचम्य १ अग्रमग्रचरंतीनामितिगोमयेन २ त्वंदेव्यादिवराहेणरसायाःस्थानमिच्छता ॥ उद्धृतासिनमस्तु
भ्यंपाप्मानंमेप्रणाशयेतिमृत्तिकया ३ यत्स्वगस्थीतिपंचगव्येन ४ गवामंगेष्वितिगोरजसा ५ तिलत्नानंसदानुणांपरमंपाव
नंस्मृतं ॥ अतस्तत्त्वकरोम्यद्यसर्वपापापनुत्तये इतितिलकल्केन ६ ओषध्यःसर्ववृक्षेषुतृणगुल्मलतादिकाः ॥ तासांस्नानेन
मे शुद्धिःसर्वौषध्यःपुनंतुमां इत्योषधीभिः ७ हिरण्यगर्भगर्भेतिहिरण्योदकेन ८ कुशमूलेस्थितोब्रह्माकुशमूलेजनार्दनः ॥ कु
शाग्नेशंकरंविद्यात्तस्यस्नानेनशुध्यति इतिकुशोदकेन ९ गंगागंगेतिगंगोदकेन १० इतिदशस्नानानि ॥ प्रतिस्नानमाचमनंका
र्थं ॥ ततस्तीर्थप्रार्थयित्वास्नानांगतर्पणंकृत्वा एहिसूर्यसहस्रांशो १ नमःकमलनाभाय ० २ भागीरथिनमस्तुभ्यं ० ३ इत्य
र्ध्यत्रयंदत्वास्नात्वांपचगव्यंप्राश्यतदहरुपोषणंकृत्वापरेहिपुनर्गंगायांस्नात्वाश्राद्धंकुर्यात् तत्रपुरुस्वाद्वौदेवौ भर्तृतत्पितृपि
तामह-स्वपितृपितामहप्रपितामहेतिपावणद्वयोद्देशेनामेनेहेन्नावाशकौगांदत्वापिंडोद्भासनांतेइष्टैःसहभुंजीत ॥ तृतीयेहनिगं
गायांस्नात्वाप्रार्थ्यशुक्लवस्त्रंपरिधायषोडशोपचारैर्गंगांसंपूज्यसांगतासिद्धयेब्राह्मणायवंशपात्रेवायनंपरिपूर्य सर्वस्वफलतांबू
लंगोधूमैश्चप्रपूरितं ॥ वायनंद्विजवर्यायसहिरण्यंददाम्यहं ॥ इतिदत्वाब्राह्मणसमाराधनंकुर्यात् ॥ इति ० ॥ ॥ ४३ ॥

॥ ३६६ ॥ अथसहगमनविधिः ॥

श्रीः ॥ पितुःपुत्रेणपैतृमेधिकसंकल्पादिअग्निदानांतेकृतेपत्नीआचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यअरुंधतीसमाचारत्वस्वर्ग

लोकमर्हायमानत्वमनुष्यलोकसंख्याद्यवच्छिन्नस्वर्गवासभर्तृसहितचतुर्दशैद्रावच्छिन्नकालिकक्रीडयानत्वमातृपितृश्वशुरकुल
 त्रयपूतत्वब्रह्ममित्रघ्नपूतत्वपुत्राद्यवियोगकामासहगमनविधिकरिष्येतदंगभर्तृचितारोहणंकरिष्येइतिसंकल्प्य ॥ श्रीलक्ष्मी
 नारायणप्रीतिद्वारासहगमनेअतिशयसात्त्विकबुद्धिप्राप्त्यर्थं हरिद्राकुंकुमांजनसौभाग्यद्रव्ययुतानिपंचत्रीणिवावंशपात्रदाना
 निकरिष्येइतिसंकल्प्यदानार्थपात्रवृत्वाप्रतिमायांसंपूज्य ॥ लक्ष्मीनारायणोदेवोबलसत्त्वगुणाश्रयः ॥ गाढसत्त्वंचमेदेयाद्वा
 यनैःपरितोषितः ॥ सोपस्कराणिशूपाणिवायनैःसंयुतानिच ॥ लक्ष्मीनारायणप्रीत्यैसत्त्वकामाददाम्यहं ॥ इतिमंत्रमुच्चार्य ॥
 इदंसौभाग्यद्रव्ययुतवंशपात्रंलक्ष्मीनारायणप्रीत्यैअमुकशर्मेणब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददेइतिदत्त्वा ॥ अनेनसोपस्करशूर्पदाने
 नलक्ष्मीनारायणौप्रीयेतामित्युक्त्वासमंत्रंसप्तपंचत्रीणिवासोपस्कराणिदद्यात् ॥ ततःपल्लवेपंचरत्नानिनीलांजनंचाबद्ध्यमुखे
 मुक्ताफलंन्यस्याग्नेःसमीपंगत्वा ॥ स्वाहासंश्लेषनिर्विण्णशर्वगोत्रहुताशन ॥ सत्त्वमार्गप्रदानेननयमांपत्युरंतिकमित्याग्निप्राथ्यं
 आज्येनाग्नौजुहुयात् ॥ अग्नयेतेजाधिपतयेस्वाहाअग्नयेतेजाधिपतयइदं ॥ पृथिव्यैलोकाधिष्ठात्र्यैस्वाहापृथिव्यैलोकाधिष्ठात्र्यैइ
 यइदंन ॥ कालायधर्माधिपतयेस्वाहाकालायधर्माधिपतयइदं ॥ वायवेबलाधिपतयेस्वाहावायवेबलाधिपतयइदं ॥ आ
 दंदं ॥ अन्नोरसाधिष्ठात्रीभ्यःस्वाहाअन्नोरसाधिष्ठात्रीभ्यइदं ॥ अन्नःस
 काशायसर्वाधिपतयेस्वाहाआकाशायसर्वाधिपतयइदं ॥ कालायधर्माधिष्ठात्रेस्वाहाकालायधर्माधिष्ठात्रइदं ॥ अन्नःस
 र्वसाक्षिणीभ्यःस्वाहाअन्नःसर्वसाक्षिणीभ्यइदं ॥ ब्रह्मणेवेदाधिपतयेस्वाहाब्रह्मणेवेदाधिपतयइदं ॥ रुद्रायस्मशानाधि

पतये स्वाहा रुद्राय स्म शानाधिपतय इदं ॥ एत्येकादशाज्याहुती हुत्वा पुत्रादिरग्निदानं कुर्यात् ॥ ततः सहगमनकर्त्री प्रदक्षिणी
कृत्य हवदुपलं संपूज्य चितामारुह्य फलपुष्पांजलिं गृहीत्वा ॥ त्वमेव सर्वभूतानामंतश्चरसि साक्षिवत् ॥ त्वमेव देवजानीषे न विदु
र्यानि मानुषाः ॥ अनुगच्छामि भर्तारं नयमां पत्युरंतिकमिति मंत्रद्वयमुच्चार्य निहुताशनं न प्रविशेत् ॥ अनधिकारात् मंत्रोच्चारणे
प्याधिकाराभावात् ॥ पुत्रादिना विधिवदग्निदानं कृत्वा तूष्णीं प्रज्वलयेदिति युक्तं प्रतिभाति ॥ भर्तुर्वर्मे गेशयीतेति देवराजदे
वीये ॥ इतिसहगमनं ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४३ ॥

॥ ३६७ ॥ अथातुरसंन्यासविधिः ॥

॥ ४३ ॥

श्रीः ॥ उक्तं जाबालोपनिषदि ॥ यद्यातुरः स्यान्मनसा वाचा वा संन्यसेदप्यथा ब्राह्मणा यानुचित्तस्तेनेति संन्यासी ब्रह्मविदित्येव
मेव तद्भवेदिति ॥ आतुरोऽपि द्विविधः रोगादिना मुर्खः जलादिव्याघ्रादिभयाक्रांतश्च ॥ तत्र द्वितीयस्य त्वाहदत्तात्रेयः ॥ उल
न्ने संकटे घोरे चोरव्याघ्रादिगोचरे ॥ भयभीतस्य संन्यासमंगिरा मुनिरब्रवीत् ॥ भारते ॥ आतुराणां च संन्यासेन विधिर्नैव चक्रि
या ॥ प्रेषमात्रस्तु संन्यासः संन्यासं तत्र कारयेत् ॥ तथा च ॥ संन्यस्तमिति यो ब्रूयादित्यादिवाक्यैश्च प्रेषमात्रोच्चारणमेव तस्य सं
न्यासः ॥ स चेज्जीवति यथाधिकारं यथाविधि दंडादिकं गृहीत्वा यतिधर्ममुक्तो भवेत् ॥ रोगाद्यातुरस्य पुरुषसूक्तं होमविरजाहो
मोपवासजागरणाद्यंगकलापस्य लोपः ॥ अन्यत्सर्वं भवत्येव ॥ ॥ तस्यायं प्रयोगः ॥ कात्यायनः ॥ कृच्छ्रांस्तु चतुरः कृत्वा वा
पनार्थमनाश्रमी ॥ आश्रमी चेत्तत्कृच्छ्रं तेनासौ योग्यतां व्रजेत् ॥ मिताक्षरायां चतुर्विंशतिमते प्राजापत्ये एकं सांतपने द्वयं अति

हवोदङ्मुखः प्रणवार्थमनुसंदधन् दक्षिणकर्णे प्रणवमुद्दिश्य तदर्थं पंचीकरणात्प्रबोध्य प्रज्ञानं ब्रह्म अयमात्मा ब्रह्म तत्त्वमसि अ
हं ब्रह्मास्मि इत्याद्युपदिशेत् ॥ तदर्थं च वदेत् ॥ ततः नामापि दद्यात् ॥ ततो जीवति चेद्योगपट्टं च गृहीत्वा वेदांतवर्णनं योगाभ्या
सं च कुर्यात् ॥ यावज्जीवं यतिधर्मेण तिष्ठेत् ॥ आहिताग्निश्चेत्सा जापत्या निष्कृत्वा उत्सर्गेष्ट्याग्नीनुत्सृज्यात्मसमारोपं कृत्वा संन्यसे
त् ॥ इत्यातुरसंन्यासविधिः ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥

॥ ३६८ ॥ अथ संन्यासग्रहणविधिः ॥

श्रीः ॥ तत्रोत्तरायणं प्रशस्तं ॥ आतुरस्य तु दक्षिणायनमपि ॥ तत्रादौ गृह्याग्निमंतं तादृशविधुरं प्रतिच प्रयोगः ॥ तत्र शांत्यादिल
क्षणं गुरुं संशोध्य तन्निकटे त्रिमासं यतिधर्मान् संवीक्ष्य गायत्रीजप रुद्रजप कूष्माण्डहोमादिभिः शुद्धिं लब्ध्वा रिकतिथौ देशकालौ
स्मृत्वा मुक्तस्य मकरिष्यमाणसंन्यासे अधिकारार्थं चतुःकृच्छ्रात्मकं प्रायश्चित्तं प्रकृच्छृत्य तस्मात्प्रायैकैकगो निष्कृत्य द्वाराहमाच
रिष्ये कृच्छ्रप्रत्यन्नायगो निष्कृत्यं द्रव्यं विप्रेभ्यो दातुमुत्सृज्ये इति संकल्पपूर्वकं रजतनिष्कृतदधतदधीन्यतमं प्रतिधेनु दद्यात् ॥ ए
कादश्यां द्वादश्यां वा यथा ब्रह्मरात्रिः स्यात्तथा श्राद्धान्यारभेत् ॥ अत्रानाश्रमिणश्चतुःकृच्छ्रमन्यस्य तसकृच्छ्रमिति सिंधुः ॥ स्वस्य
नवश्राद्धस्य षोडशश्राद्धसपिंडीकरणानि सान्निःपार्वणविधिनानि रग्निरेकोद्दिष्टविधिनानि कुर्यादितिकेचित् ॥ नेत्यन्ये ॥ अ
थाष्टौ श्राद्धानि ॥ तत्रापस्तंबहिरण्यकेशीयादीनामग्नौ करणपिंडादिरहितः सांकल्पिकप्रयोगः आश्वलायनादीनां सपिंडकः पा
र्वणप्रयोगः ॥ तत्रादौ सव्येन सयवजलेन श्राद्धांगतर्पणं ॥ ब्रह्माणंतर्पयामि विष्णुंतं० महेश्वरंतं० देवर्षीन्० ब्रह्मर्षीन्० क्षत्र

जलं किंचित्किंचित्गृहीत्वा आहुतित्रयमप्सु हुत्वा पात्रहुतशेषतोयं आशुः शिशान इत्यनुवाकेनाभिमन्त्र्य किंचिदुदकं गृहीत्वा पु
त्रेषणावित्तोपणालोकेषणामया त्यक्ताः स्वाहा इति मंत्रेण पीत्वा पुनः किंचिद्गृहीत्वा अभयं सर्वभूतेभ्यो मत्तः स्वाहा इति द्वितीयं पिबे
त् ॥ ततो निःशेषं गृहीत्वा संन्यस्तं मया स्वाहा इति तृतीयं पिबेत् ॥ ततः शक्तौ सत्यां नानाभिदग्ने जले स्थित्वा अशक्तश्चेज्जलसमीपे स्थि
ॐ स्वः सावित्री प्रविशामि ॥ धियो योनः प्रचोदयात् ॥ तत्संवितुर्वरेण्यं ॥ ॐ भूः सावित्री प्रविशामि ॥ भर्गो देवस्य धीमहि ॥ पु
वस्य धीमहि ॥ ॐ स्वः सावित्री प्रविशामि ॥ धियो योनः प्रचोदयात् ॥ इति पच्छः ॥ ॐ भूर्भुवः सावित्री प्रविशामि ॥ भर्गो देवस्य धीमहि ॥
तत्संवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो योनः प्रचोदयात् ॥ ॐ भूर्भुवः सावित्री प्रविशामि ॥ ॐ तत्संवितुर्वरेण्यं भर्गो दे
प्रणवं प्रविशामि ॥ इति प्रणवप्रवेशः ॥ ॐ भूः प्रणवं प्रविशामि ॥ ॐ भूर्भुवः सावित्री प्रविशामि ॥ ॐ तत्संवितुर्वरेण्यं भर्गो दे
नाशहेतवे ॥ त्रयीमया यत्रिगुणात्मधारिणे विरिचि नारायणशंकरात्मने इति आदित्यमुपस्थाप्य पूर्वस्थापित शिखाकेशान् निष्कृ
त्य यज्ञोपवीतं जलौ गृहीत्वा भूः स्वाहेत्यप्सु हुत्वा प्राच्यां दिशि प्रातिदिशं ध्वजं अर्धस्ताच्च जलं जलीनुत्सिच्य पुत्रेषणायाश्च वित्तेश
णायाश्च लोकेषणायाश्च व्युत्थितो हमित्युक्त्वा ऊर्ध्वबाहुः सूर्याभिमुखः स्तिष्ठेत् ॥ देवान्साक्षिणः कृत्वा हारं स्मरन् जलाद्वहिः स्थित्वा
ॐ भूः संन्यस्तं मया ॐ भुवः संन्यस्तं मया ॐ स्वः संन्यस्तं मया ॐ भूर्भुवः स्वः संन्यस्तं मया इति त्रिरुपांशु त्रिर्मध्यमस्वरेण त्रिरुच्चैर्व
देत् ॥ यद्वा ॐ भूर्भुवः स्वः संन्यस्तं मयेति त्रिरुपांशु त्रिर्मध्यमस्वरेण त्रिरुच्चैर्ब्रूयात् ॥ अर्थभावनैकचित्ताग्रः प्रेषोच्चारणं कुर्यात् ॥ त

तो जलं प्रविश्या च मयस्त्वात्वा च मय ॥ अभयं सर्वभूतेभ्यो नमः स्वाहेति त्रीनंजलीन जले क्षिप्तवा इदं पठेत् ॥ यत्किंचिद्धंधनं कर्म कृतम
 ज्ञानतो मया ॥ प्रमादालस्यदोषाद्वा तत्सर्वं संत्यजाम्यहं ॥ एवं संपूज्य भूतेभ्यो दद्यादभयदक्षिणां ॥ पद्भ्यां काराभ्यां विहरन्नाहं वाक्का
 यमानसैः ॥ करिष्ये प्राणिनां हिंसां प्राणिनः संतु निभयाः ॥ यमः ॥ दत्त्वा तोयां जलिं विप्रो भक्त्या संप्राप्यैध्वरिं ॥ संन्यस्तं मे जग
 केतो ये तोयाहुतिमहं हरे ॥ दत्त्वा सर्वेषां त्वत्तया युष्मच्छरणमागतः ॥ त्राहि मां सर्वलोके श गतिरन्या न विद्यते ॥ अहं सर्वाभयं दत्त्वा भू
 न्नाथ पाहि मां मधुसूदन ॥ त्राहि मां सर्वदेवेश वासुदेव सनातन ॥ संन्यस्तं मे जगद्योने पुंडरीकाक्षमोक्षद ॥ ततो न्येन
 तानां परमेश्वर ॥ युष्मच्छरणमापन्नस्त्राहि मां पुरुषोत्तम इति ॥ पूर्वघृतवस्त्रं विसृज्य नमो भूत्वा सप्तपदानि गच्छेत् ॥ ततो गुरुं स्वात्मानं
 प्रार्थितः काषायवस्त्रं कौपीनं प्रणवेन स्वीकृत्य ॥ इति मंत्रेण परिदध्यात् ॥ इंद्रस्य वज्रोऽसि वा त्रिंशो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ॥ ततो गुरुं स्वात्मानं
 न्नयंति स्वाभ्योऽमनसा देवयंतः ॥ इति मंत्रेण परिदध्यात् ॥ यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वयो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ॥ ततो गुरुं स्वात्मानं
 गोपायेति दंडं ॥ प्रणवेन सावित्र्या कमंडलुं ॥ एवमासन शिष्यादिकमपि मंत्रैर्गृहीत्वा ॥ महावाक्य ब्रह्मोपदेशार्थमुपहारसहितं
 तं यथाविधि ब्रह्मिष्ठं गुरुमुपसृज्य तस्मै सर्वस्वं दत्त्वा पतिष्ठेत् ॥ यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वयो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ॥ ततो गुरुं स्वात्मानं
 तस्मै देहप्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरणमहंप्रपद्ये ॥ ततो दक्षिणं जान्वा न्यपादाबुपसंगृह्या धीहि भगवो ब्रह्मेति वदेत् ॥ ततस्तच्छिरसि हस्तं दत्त्वा पुरु
 ब्रह्मरूपं ध्यात्वा सजलं शंखं द्वादशप्रणवैरभिमंत्र्य तेन शिष्यमभिषिच्य शंनो मित्र इति शान्तिं पठेत् ॥ ततस्तच्छिरसि हस्तं दत्त्वा पुरु
 षसूक्तं जप्त्वा ॥ मम ब्रते हृदयं ते दधामि मम चित्तमनुचितं ते अस्तु ॥ मम वाचमेक ब्रतो जुपस्व बृहस्पतिष्ठा निशुन कुमह्यं ॥ इति ज

कृच्छ्रेद्वेयगोदानमिति ॥ षट्त्रिंशन्मतेपि पराकृच्छ्रातिकृच्छ्रेचतिस्रोगाः ॥ पराकृच्छृतसकृच्छ्रातिकृच्छ्रस्थानेकृच्छ्रत्रयं
 चरेत् ॥ सांतपनस्यगोद्वयं अशक्तौ ब्रतमाचरेत् ॥ तप्तकृच्छ्रेसार्धकायद्वयं स्मृतमिति स्मृत्यर्थसारे ॥ कायं नाम प्राजापत्यमेव ॥
 आतुरस्ततोद्रव्यवस्त्रगृहदेवपुस्तकादियथायथं विभज्य आचार्यार्थं संन्यासविधिपर्यासं स्थापयित्वा निर्ममो भवेत् ॥ शोकाहंका
 रादिद्वंद्ववासनां त्यजेत् ॥ ततः नित्यक्रियादिसंपादनदीतीरंगत्वोपविश्य पुत्रमुखं दृष्ट्वा जपेत् ॥ अशक्तश्चेच्छुचौ देशे सर्वकुर्वा
 चित् ॥ ततः स्नात्वा देशकालौ संकीर्त्य विष्णुं ध्यात्वा अमुकगोत्रोत्पन्नस्यामुकशर्मणो ममाशेषदुःखनिवृत्त्यतिशयानं दावा सिद्धा
 रापरमपुरुषार्थप्राप्तये परमहंसं संन्यासग्रहणं आतुरोक्तविधिना करिष्ये इति संकल्प्य गृहस्थश्चेत्संकल्पात् पूर्वमेव प्रातरौपासनहोमं
 विधायात्मसमारोपणं कुर्यात् ॥ विच्छिन्नाग्निश्चेत्तद्विच्छिन्नकालातिक्रमप्रायश्चित्तं सद्यः पुनः संधानं कृत्वा ॥ याते अग्नेयुश्चिया
 तनूस्तये ह्यारोहात्मात्मानं ॥ अच्छावसू निकृण्वन्नस्मेन र्यापूरुणि ॥ यज्ञो भूत्वा यज्ञमासीदुस्वां योनिं ॥ जातवेदो भुव आजार्यमा
 नः संक्षय एहि ॥ इति मंत्रेण आत्मसमारोपणं कृत्वा संन्याससंकल्पं कुर्यात् ॥ ततः शक्तौ सत्यां कक्षोपस्थवर्जकांश्चिच्छिखार्थं पंचस
 त्केशान् स्थापयित्वा शिखं वपनं कुर्यात् ॥ ततः स्वशक्त्यनुसारेण भस्मगोमयमृत्तिकास्नानानि कृत्वा वाससीपरिधाय द्विराच
 म्यधर्मान्धारयमाणः पात्रे जलमुद्धृत्य तदेकदेशं हस्ते गृहीत्वा मुजुहुयात् ॥ एष वा अग्नेर्योनिः प्राणः प्राणं च स्वाहा प्राणायेदं ॥
 स्वां योनिं गच्छ स्वाहा प्राणायेदं ॥ आपो वै सर्वा देवताः सर्वाभ्यो जुहोमि स्वाहा सर्वाभ्यो देवताभ्य इदं ॥ इत्युद्धृतं

पीन्० वसून्० रुद्रान्० आदित्यान्० सनकं० सनंदनं० पंचमहाभूतानि० चक्षुरादिकरणानि० भूतग्रामं०
 पितरं० पितामहं० प्रपितामहं० मातरं० पितामहीं० आत्मानं० पितरं० पितामहं० इतिनद्यादौकृत्वागृह
 मागत्यदेशकालौस्मृत्वा करिष्यमाणसंन्यासांगत्वेनाष्टौश्राद्धानिपार्वणविधिनान्नेनमेनवाकरिष्येइतिसंकल्प्यक्षणंदद्यात् ॥
 अन्नसर्वनां दीश्राद्धवत् तेननापसव्यं तिलस्थानेयवाः युग्माविप्राः तथाचदेवस्थानेविप्रौद्वौश्राद्धाष्टकेषोडशेत्यष्टादशविप्राः
 तत्रसत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवानां दीमुखाः स्थानेक्षणः कर्तव्यः इत्येकंवृत्वा द्वितीयंवृणुयात् ॥ एवमग्रेपिप्रथमेदेवश्राद्धेब्रह्मविष्णु
 महेश्वरा नां दीमुखाः स्थानेक्षणः १ द्वितीयेऋषिश्राद्धेदेवर्षिब्रह्मर्षिक्षत्रर्षयः नां दी० २ दिव्यश्राद्धेवसुरुद्रादित्या नां दी० ३ मनु
 ज्यश्राद्धेसनकसनंदनसनातना नां दी० ४ पंचमेभूतश्राद्धेपृथिव्यादिपंचमहाभूतान्येकादशचतुरादिकरणादिचतुर्विधभूत
 ग्रामा नां दी० ५ षष्ठेपितृश्राद्धेपितृपितामहप्रपितामहा नां दी० ६ मातृश्राद्धेमातृपितामहीप्रपितामह्यो नां दी० ७ अष्टमेआत्म
 श्राद्धेआत्मापितृपितामहा नां दी० ८ आत्मांतरात्मापरमात्मेतिकेचित् इतिद्वौद्वौविप्रौवृणुयात् ॥ सर्वत्रनां दीमुखत्वंविशे
 षणं युग्माविप्राः सत्यवसूदक्षक्रतूवादेवौ ततःसर्वेषांपाद्यंदत्वाप्राज्जुलानुदक्संस्थानुपवेद्यप्रार्थयेत् ॥ संन्यासार्थमहंश्राद्धं
 कुर्वेन्नूतद्विजोत्तमाः ॥ अनुज्ञांप्राप्ययुष्माकंसिद्धिंप्राप्स्यामिशाश्वतीं ॥ कुरुइतिप्रत्युक्तःसयवऋजुदूर्वादियुग्मेनाब्दानपूर्वकं
 संबुद्ध्यंतेइदमासनमित्यष्टादशस्वासनंदद्यात् ॥ ततआश्वलायनानामर्घ्यपात्रासादनंआपस्तंबादीनांसांकल्पिकत्वान्नाह्यं दे
 वार्थमेकंपार्वणाष्टकार्थमष्टावित्येवंनवपात्राणि सर्वत्रपवित्रद्वयांतर्हितेषुशन्नोदेवीरित्यपआसिच्यविश्वेदेवपात्रेयवोसीतियवाः

अष्टपात्रेषु तिलोसीति मंत्रस्यो हेनयवानोप्यगंधादिपूजनं ऊहस्तु यवोसिसोमदेवत्योगोसवेदेवनिर्मितः प्रलवङ्गिः प्रसूतः पुष्ट्यानां दीमुखान् देवान् प्रीणयाहिनः स्वाहानमः इति प्रथमपात्रे द्वितीयेनां दीमुखान् प्रीण० तृतीयेनां दीमुखान् दिव्यान् प्री० चतुर्थेनां भज्य सर्वत्रया दिव्या इति मंत्रांते विश्वे देवानां दीमुखान् पिबन् प्रीणयेत्यादि० एकैकं पात्रं द्विधा विद्विनायथायथं षोडशविप्रहस्तेषु दद्यात् ॥ या दिव्या इति स्रवदनुमंत्रणं पात्रं न्युञ्जी कृत्य गंधाद्याच्छादनांतपूजा तत्र सर्वत्र संबुध्यंतेनां दीमुखविशेषणयुक्त उच्चारः ॥ भोजनपात्राण्यासाद्य ब्रह्मादिषोडशविप्रक रेष्वग्रे कव्यवाहनाय स्वाहा सोमाय पितृमते स्वाहेति मंत्राभ्यामाहुतिद्वयं दद्यात् ॥ नेदमापस्तंवादीनां ॥ उपस्तीर्यान् परि विष्यान्नाभावे आमं तन्निष्क्रयं वा प्रोक्ष्य पृथ्वीतेपात्रमित्यादिनायथा देवतमन्नस्यामा देवा त्यागः ॥ ये देवासो० प्रजापतेन० ब्रह्मार्पणं ब्रह्म० अनेनाष्टश्राद्धेन नां दीमुखान् देवा दयः प्रीयंतां ॥ आपोशनदानांते बलिदानवर्ज्यं भुञ्जीयुः तृसे पूपास्मे० अक्षन्नमी० संपन्नमिति पृष्टेरुचिरमिति सर्वे ब्रूयुः नेदमामां न्ने ॥ आचांतेषु यवलाजदधिबदरीयुताग्नेनाष्टचत्वारिंशत्सिङ्गान्कृत्वा प्रागायता उदक् संस्था अष्टौ रेखाः कृत्वा भ्युक्ष्य कुशान्दू र्वावास्तीर्य पिंडस्थानेषु चतुर्विंशतौ जलं सिंचेत् ॥ तद्यथा शुंधंतां ब्रह्माणोनां दीमुखाः शुंधंतां विष्णवोनां दी० शुंधंतां महेश्वरा नां० इति प्रथमरेखायां तदुत्तररेखा सुशुंधंतां देवर्षयोनां० शुंधंतां ब्रह्मर्षयोनां० इत्याद्यहो ज्ञेयः ॥ ततो ब्रह्मणेनां दीमुखाय स्वाहेत्येकं पिंडं दत्वा द्वितीय एव मेव देयस्तूष्णीं वेति प्रतिदिवतं पिंडद्वयं एव मग्नेपि विष्णवेनां दीमुखाय स्वाहेत्यादयः स्वाहांताः पिंडदान

मंत्राञ्ज्याः ॥ अत्रपितरोमादयध्वमित्यादिपुनःशुद्धं ततः तन्त्रमंजनमभ्यंजनं च कृताकृतं ॥ पिंडान्गंधादिनासंपूज्यनत्वोपसंप
 न्नमिति विसृज्य विप्रेभ्यो दक्षिणादितंत्रं ॥ नेदं पिंडदानाद्यापस्तंवादीनां ॥ अष्टश्राद्धोत्तरं तद्दिने द्वितीये वा षट्शिखाकेशान्स्था
 पयित्वा कक्षोपस्थवर्जं केशश्मश्रुनखादिवापयित्वा स्नात्वा कौपीनाच्छादनादिहोमद्रव्यं च विनान्यद्भनादिविप्रादिभ्यः पुत्रादि
 भ्यश्च त्यजेत् ॥ कौपीनादिकंगैरिकरंजितं कृत्वा वैणवं दंडं सत्वचं शिरोभ्रूललाटान्यतमप्रमाणं समूलं गुलिस्थूलं विप्रानीतमेका
 दशनवचतुःसप्तान्यतमपर्वकं पर्वग्रंथि युतं मुद्रायुतं संपाद्य शंखोदकेन प्रणवपुरुषसूक्तकेशवादिनामभिरभिषिच्य स्थापयेत् ॥ त
 तः कमंडलुकौपीनाच्छादनं कथापादुकाः स्थापयेत् शिष्यपात्रादिकमपीतिकेचित् ॥ देशकालौ संकीर्त्या शेषदुःखनिवृत्ति
 निरतिशयानंदप्राप्तिपरमपुरुषार्थप्राप्तये परमहंसाख्यसंन्यासग्रहणं करिष्ये तदंगतया गणपतिपूजनपुण्याहवाचननां दीश्राद्धा
 निकरिष्ये ॥ तानि कृत्वा जपेत् ब्रह्मणे नमः विष्णवे ० रुद्राय ० सूर्याय ० आत्मने ० अंतरात्मने ० परमात्मने ० अग्नि
 मीळेऋक् इषेत्योर्जेत्वा ० अन्नआयाहिऋक् शन्नो देवीऋक् जपित्वा सकुपिष्टं मुष्टिन्नयं प्रणवेन त्रिःप्राश्य नाभिमालभेत आत्म
 ने स्वाहा अंतरात्मने ० परमात्मने स्वा ० प्रजापतये स्वाहेति मंत्रैः ॥ ततः पयोदधिमिश्रमाज्यं जलमेव वा त्रिवृदसीति प्रथमं प्राश्य
 प्रवृदसीति द्वितीयं विवृदसीति तृतीयं प्राश्यापः पुनं त्विति जलं प्राश्याचम्योपवासं कुर्यात् ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥

॥ ३६९ ॥ अथ सावित्री प्रवेशः ॥
 श्रीः ॥ ॐ भूः सावित्रीं प्रविशामि ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ भुवः सावित्रीं प्र ॐ भर्गो देवस्य ॐ स्वः सावित्रीं ० धियो यो ॥ ॐ

शुभुवःस्वःसावित्रीप्र० तत्सचितुर्वरेण्यं० ऋक् ततोस्तात्माकृद्द्व्याग्निंसमिध्यविच्छिन्नश्चेत्पुनःसंधानविधिनानिरग्निर्वाविधुरा
 दिर्वापृष्टोदिविविधानेनाग्निंसंपादयेत् (पृष्टोदिविविधानंचकात्यायनवैश्वदेवप्रसंगेधर्मसिंधौद्रष्टव्यं) ॥ अथास्तात्पूर्वब्रह्मा
 न्वाधानं ॥ संन्यासंकर्तुंब्रह्मान्वाधानंकरिष्येइतिसंकल्प्याग्निध्यानाद्याज्यंसंस्कृत्यसुक्लुवौसंमृज्यस्रुचिचतुराज्यंगृहीत्वोस्वा
 हेतिहुत्वापरमात्मनइदं० परिषेचनादि इतिब्रह्मान्वाधानं ॥ ततःसायंसंध्याहोमवैश्वदेवान्कृत्वाग्निसमीपेजागरंकुर्यात् ॥ ॥
 प्रातर्नित्यहोमांतैवैश्वदेवादिकंकृत्वाग्नेयवैश्वानरंवास्थालीपाकंकुर्यात् ॥ तत्रकरिष्यमाणसंन्यासपूर्वांगभूतमाग्नेयस्थालीपाकं
 करिष्येइतिसंकल्पः ॥ ध्यात्वाचक्षुषीआज्येनेत्यंतेत्रप्रधानमग्निंचरुणारोषेणेत्यादिअग्नेयत्वाजुष्टंनिर्वपामीत्यादिनाम्नानिर्वापा
 दिनाम्नैवप्रधानहोमः एवंवैश्वानरपक्षेप्यूह्यं ॥ ततस्तत्समंदीतिजपित्वाकुशहेमरूप्यजलैःस्नात्वादेशादिस्मृत्वासंन्यासांगभूतं
 षंपुरुषसूक्तेनप्रत्यृचंपोडशवारंसमिच्चर्वाज्यैः प्राणाद्येकोनविंशतिदेवताविरजामंत्रैःप्रतिद्रव्यमेकैकसंख्यसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः
 प्रजापतिसंकृदाज्येनशेषेणेत्यादिषष्ट्युत्तरशतवारंतूष्णींनिरूप्यतथैवप्रोक्ष्यश्रपयित्वाज्यभागांतेप्राणायस्वाहेत्यादिपंचमंत्रैर्द्र
 व्यत्रयंसंकृत्सकृच्छ्रुत्वायथादैवंत्यक्त्वासहस्रशीर्षेतिषोडशर्चेनप्रत्यृचंपृथक्पृथक्द्रव्यत्रयंहुत्वापुरुषायेदंनममेतिसर्वत्रत्यजेत् ॥

श्रीः ॥ प्राणापानव्यानोदानसमानामेशुअंतांज्योतिरहंविरजाविपाप्माभूयांसंस्वाहाप्राणादिभ्यइदं वाज्जनश्चक्षुःश्रोत्रजि

॥ ३७० ॥ अथविरजाहोमः ॥

विरजाहो-
॥३७०॥

ह्याघ्राणरेतोबुद्ध्याकूतिसंकल्पामेशुद्ध्यन्तांज्योतिः० वागादिभ्यइदं त्वक्चर्ममांसरुधिरमेदोमज्जास्नायवोस्थीनिमेशुद्ध्यन्तां० त्व
 गादिभ्यइदं० शिरःपाणिपादपार्श्वपृष्ठोरूदरजंघाशिश्मोपस्थपायवोमेशुद्ध्यं० शिरआदिभ्य० उत्तिष्ठपुरुषहरितपिंगललोहि
 ताक्षदेहिदेहिददापयितामेशुद्ध्यं० पुरुषादिभ्य० पृथिव्यापस्तेजोवायुराकाशोमेशुद्ध्यं० पृथिव्यादिभ्य० शब्दस्पर्शरूपरस
 गंधामेशुद्ध्यं० शब्दादिभ्य० मनोवाक्कायकर्माणिमेशुद्ध्यन्तां० मनआदिकर्मभ्य० अव्यक्तभावैरहंकारैर्ज्योतिरहं० अव्यक्ता
 दिभ्य० आत्मामेशुद्ध्यन्तांज्यो० आत्मन० अंतरात्मा० अंतरात्मा० परमात्मन० क्षुधेस्वाहा क्षुधइदं क्षुलि
 पासायस्वाहा क्षुलिपासायेदं० विविद्यैस्वाहा० विविद्यायाइदं० ऋग्विधानाय० कर्षोत्कायस्वा० क्षुलिपासामलाज्येष्ठांमल
 क्ष्मीनाशयाम्यहं अभूतिमसमृद्धिंचसर्वानिर्णुदमेपाप्मानंस्वाहाअग्नयइदं० अन्नमयप्राणमयमनोमयविज्ञानमयमानंदमयमा
 त्मामेशुद्ध्यन्तां० अन्नमयादिभ्य० एवंसमिच्चर्वाज्यैःप्रतिद्रव्यंचत्वारिंशदाहुतीहुत्वा यदिष्टंयच्चपूर्तयच्चापद्यनापदि प्रजापतौ
 तन्मनसिजुहोमि विमुक्तोहंदेवकिल्बिषात्स्वाहेत्याज्यंहुत्वाप्रजापतयइदमितित्यजेत् ॥ ततःपुरुषसूक्तंअग्निमिळेइत्यादिचतु
 र्वेदादींश्चजपित्वास्विष्टकृदादिहोमशेषसमाप्य ब्रह्मचार्यादिभ्योगोहिरण्यवस्त्रादिदत्त्वासंमासिंचंतुमरुतइतिमंत्रेणगृह्याग्नि
 सुपस्थायतत्रदारुपान्नाणिदहेतैजसानिगुरवेदद्यात् ॥ ततआत्मन्यग्निसमारोपंअयंतेयोनिरित्यूचायातेअग्नेयज्ञियातनूस्तये
 ह्यारोहात्मात्मानमित्यादियजुषाचत्रिरुक्तेनाग्नेज्वालां प्राश्नन्कुर्यात् ॥ कृष्णाजिनमादायगृहान्निष्क्रम्य ॥ सर्वेभवंतुवेदाढ्याः
 सर्वेभवंतुसोमपाः ॥ सर्वेपुत्रमुखंहृष्टासर्वेभवंतुभिक्षुकाइतिपुत्रादिभ्यआशिषंदत्वा नमेकश्चिन्नाहंकस्यचित्इतिपुत्रादीनुक्त्वा

विसृजेत् ॥ जलाशयंगत्वांजलिनाजलमादायाशुःशिशानइतिसूकेनाभिमन्त्र्यसर्वाभ्योदेवताभ्यःस्वाहेतित्यजेत् ॥ तिथ्यादि
 स्मृत्वाऽपरोक्षब्रह्मावासयेसंन्यासं करोमीतिसंकल्प्यजलांजलिं गृहीत्वा ॐ एषहवाअग्निःसूर्यःप्राणंगच्छस्वाहा ॐ स्वांयोनिं
 भयंसर्वभूतेभ्योमत्तःस्वाहाइत्यंजलिंजलेक्षिपेत्॥पुनरेवमभयंदत्वावदेत् ॥ यत्किंचिद्धंधनंकर्मकृतमज्ञानतोमया ॥ प्रमादाल
 स्यदोषोत्थंतत्सर्वसंत्यजाम्यहं ॥ त्यक्तसर्वोविशुद्धात्मागतस्नेहशुभाशुभः ॥ एषत्यजाम्यहंसर्वकामभोगसुखादिकं ॥ रोषतो
 षंविवादंचगंधमाल्यानुलेपनं ॥ भूषणंनर्तनंगेयंदानमादानमेवच ॥ नमस्कारंजपंहोमंयाश्चनित्याःक्रियामम ॥ नित्यनैमित्ति
 कंकाम्यंवर्णधर्माश्रमाश्चये ॥ सर्वमेवपरित्यज्यददाम्यभयदक्षिणां ॥ पद्भ्यांकराभ्यांविहरन्नाहंवाक्कायमानसैः ॥ करिष्येप्रा
 णिनांपीडांप्राणिनःसंतुनिर्भयाः ॥ सूर्यादिदेवान्विप्रांश्चसाक्षित्वेनध्यात्वानाभिमात्रेजलेप्राङ्मुखःसावित्रीप्रवेशंपूर्ववत्कृत्वा
 तरत्समंदीतिसूक्तंपठित्वापुत्रेषणायाचित्तेषणायालोकेषणायाश्चव्युत्थितोहंभिक्षार्च्यचरामीतिजलेजलंजुहुयात् ॥
 प्रेषोच्चारः ॥ ॐ भूःसंन्यस्तंमया ॐ भुवःसंन्यस्तंमया ॐ स्वःसंन्यस्तंमया ॐ भूर्भुवःस्वःसंन्यस्तंमयेतित्रिर्दमध्योच्चस्वरेणो
 क्त्वाऽभयंसर्वभूतेभ्योमत्तःस्वाहेतिजलंजलेक्षिपेत् ॥ शिलामुत्पाद्ययज्ञोपवीतमुद्धृत्यकरेगृहीत्वाआपोवैसर्वादिवताःसर्वाभ्यो
 देवताभ्योजुहोमिस्वाहा ॥ ॐ भूःस्वाहेतिजलेजलैःसहहुत्वाप्रार्थयेत् ॥ त्राहिमांसर्वलोकेशवासुदेवसनातन ॥ संन्यस्तंमेज
 गद्योनेपुंडरीकाक्षमोक्षद ॥ शुष्मच्छरणमापन्नंत्राहिमांपुरुषोत्तम ॥ नन्दिगंबरःपंचपदान्युदङ्मुखोगच्छेत् ॥ विविदिषुश्चे

तस्मादधिकारान्वाकाषायकौपीनाच्छादनेदत्वादंडं दद्यात् ॥ सचकौपीनं वासश्च परिधाय ॐ इंद्रस्य वज्रोसि सखे मांगोपायेति
दंडं गृहीयात् ॥ वार्त्रघ्नः शर्ममेभवयत्पापं तन्निवारय प्रणवेन गायत्र्या वाकमंडलुं इदं विष्णुरित्यासनं ॥ ततः समित्याणि गुरुन
त्वागरुडासनोपविष्टो गुरुं वदेत् ॥ त्रायस्वभोजगन्नाथगुरो संसारवह्निना ॥ दग्धं मां कालदष्टं च त्वामहं शरणागतः ॥ यो ब्रह्मा
णं विदधाति पूर्वयो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ॥ तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये ॥ इति गुरुमुपस्थाय दक्षिणं जा
न्वाच्य पादावुपसंगृह्य अधीहि भगवो ब्रह्मेति वदेत् ॥ गुरुरात्मानं ब्रह्मरूपं ध्यात्वा जलपूर्णं शंखं द्वादशप्रणवैरभिमन्त्र्य तेन शिष्यम
भिषिच्य शन्नो मित्र इति शांतिं पठित्वा तच्छिरसि हस्तं दत्वा पुरुषसूक्तं जपित्वा शिष्यहृदये हस्तं कृत्वा मम ब्रते हृदयं ते दधामीत्यादि मं
त्रं जप्त्वा दक्षिणकर्णे प्रणवमुपदिश्य तदर्थं च पंचीकरणाद्यवबोध्य प्रज्ञानं ब्रह्म अयमात्मा ब्रह्मतत्त्वमसि अहं ब्रह्मास्मीति ऋग्वेदादि
महावाक्येष्वन्यतमं शिष्यशाखानुसारेणोपदिश्य तदर्थं बोधयेत् ॥ ततस्तीर्थाश्रमादिसंप्रदायानुसारेण नाम दद्यात् ॥ ततः पर्य
कशौचं कारयित्वा योगपट्टं दद्यात् ॥ ॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

श्रीः ॥ कस्मिंश्चित्पुण्यदिने कश्चिद्गृहस्थः स्वाग्नेयीठादौ यतिमुपवेश्य गुर्वनुज्ञातो यतये पर्यंकशौचं करिष्ये इति संकल्प्य वामभागे प्रा
क्संस्थानं च मृद्भागान् दक्षिणभागे पितृवपंच संस्थाप्यो भयत्र शुद्धोदकं च संस्थाप्य वामप्रथममृद्भागे न पंचवारं मृज्जलाभ्यं यति
जानुद्वयं कराभ्यां युगपत्क्षालयेत् चरमक्षालने मृद्भागसमाप्तिः एवमग्रेपि ततो दक्षिणभागस्थ प्रथमभागार्धेन स्ववासकरं मृज्ज

॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

लाभ्यां दशवारं प्रक्षाल्यापराधेन तेनैव जलेनोभौ करौ सप्तवारं क्षालयेत् एवमग्रेऽपि योज्यं ॥ संख्यायां विशेषस्तूच्यते ॥ वामद्वितीयभागेन चतुर्वारं जंघाद्वयं युगपत्प्रक्षाल्य दक्षिणद्वितीयभागाधेन सप्तवारं वामकरमर्धातिरेण चतुर्वारमुभौ च करौ क्षालयेत् ॥ वामतृतीयेन यतिगुल्फौ त्रिवारं दक्षिणभागाधेन वामकरं षड्वारमुभौ चतुर्वारं वामचतुर्थेन ॥ यतिपादपृष्ठौ द्विवारं दक्षिणाधेन स्ववामं करं चतुर्वारं भूमौ द्विवारमवशिष्टार्धेन वामपंचमेन यतिपादतले सकृद्दक्षिणपंचमार्धेन वामस्य द्विवारमुभयोश्चापराधेन सकृत्क्षालनमिति ॥ इति पर्यंकशौचप्रयोगः ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३७ ॥

॥ ३७२ ॥ अथ योगपट्टः ॥

श्रीः ॥ कारितपर्यंकशौचोयतिः कटिशौचं कृत्वा कटिसूत्रकौपीने धृत्वा वस्त्रेणावगुंठ्य गुर्वनुज्ञयोच्चासने उपविश्य सभ्यैः सह वेदां ते किंचिदुपन्यसेत् ॥ गुरुर्यतिः शिष्यं यतिं शिरसि शंखेन पुरुषसूक्तेनाभिषिच्य वस्त्रगंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यैः संपूज्य वस्त्रमुपरि धृत्वा यतिभिः सह विश्वरूपाध्यायं पद्यामि देवानित्यारभ्य भुंक्ष्वराज्यं समृद्धमित्यंतं पठित्वा पूर्वकल्पितं नाम दद्यात् ॥ ततः शिष्यं वदेत् इतः परं त्वया संन्यासाधिकारिणे संन्यासो देयो दीक्षायोगपट्टादिकं च कार्यं ज्येष्ठयतयो न मस्कार्याः ॥ ततो गुरुः कटिसूत्रं पंचमुद्रालंकृतं पूर्वदंडं च शिष्याय दत्वा शिष्यं यथासंप्रदायं न मस्कुर्व्यात् अन्ये यतयो गृहिणश्च न मस्कुर्व्युः ॥ शिष्यो नारायणे तु कृत्वोच्चासनादुत्थाय तत्र गुरुमुपवेश्य यथाविधिन त्वान्ययती न्नमेत् ॥ इति गृह्याग्निमतो विधुरादेश्च विविदिषा संन्यासप्रयोगः ॥ अथाग्निहोत्रिणो विशेषः ॥ तत्र श्रौताग्रयो विच्छिन्नाश्चेत्पुनराधानं पावमाने ह्यंतं पूर्णाहुत्यं तं वा कृत्वा प्रायश्चित्तादिसावित्रीप्रवेशां तं पूर्ववत्कुर्व्यात् ॥ इति योगपट्टः ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३७ ॥

॥ ३७३ ॥ अथब्रह्मान्वाधानम् ॥

श्रीः ॥ अग्नित्रयंसमिध्यसंस्कृतमाज्यं सुचिचतुर्वारंगृहीत्वा हवनीये पूर्णाहुतिं ॐ स्वाहा परमात्मन इदमितिकुर्यात् ॥ सायंसं
ध्याग्निहोत्रहोमांते उत्तरेण गार्हपत्यं द्वंद्वशः पात्राण्यासाद्या हवनीयं दक्षिणतः कौपीनं दंडाद्यासादयेत् ॥ रात्रिजागरांते प्रातर्हो
मादिकृत्वा पौर्णमास्यां ब्रह्मान्वाधानं चेत्यौर्णमासेष्टिकृत्वा दशैष्टिमपि पक्षहोमापकर्षपूर्वकमपकृष्य तदैव कुर्यात् ॥ दशैवेदशैष्टि
रेव ॥ अथ पूर्णमास्यां दशैवादेशकालौ स्मृत्वा संन्यासपूर्वांगभूतया प्राजापत्येष्ट्या वैश्वानरं येष्या च समानं तंत्रयायक्ष्ये इतिसं
कल्प्य समुच्चयेनेष्टिद्वयं ॥ अत्र वैश्वानरद्वादशकपालः पुरोडाशः प्राजापत्यश्च रुक्षेणो नवकपालः पुरोडाशः अथवा केवलप्राजा
पत्येष्टिः ॥ अत्र प्रयोगः स्वस्वसूत्रानुसारेणोह्यः ॥ बौधायनसूत्रानुसारेण किंचिदुच्यते ॥ पवनपावनपुण्याहवाचनादिपूर्वांगां
ते केवलैश्चानरेष्ट्याः केवलप्राजापत्यावासंकल्पः ब्रीहिमयः पुरोडाशो द्रव्यं पंचप्रयाजाः अग्निर्वैश्वानरः प्रजापतिर्वादेवता पं
चदशसामिधेन्यः व्रतग्रहणांते ध्वयुराज्यं संस्कृत्य सुचिचतुर्गृहीतं गृहीत्वा पृथिवीहोतेत्यादि चतुर्होतृहोमं कूष्माण्डहोमसारस्वत
होमौ च कृत्वानिर्वापादिः वैश्वानरोद्वादशकपालः पुरोडाशः प्राजापत्यश्च रुक्षेणो नवकपालः इति पुरोनुवाक्या वैश्वानरः
पवमानः पवित्रैरिति याज्या प्राजापत्यायां प्रधानमुपांशुधर्मकं सुभूः स्वयं भूरित्याद्यनुवाक्याः प्रजापते न त्वदेतामिति याज्या ॥
अथ सुवेणाष्टावुपहोमावुभयत्र वैश्वानरो न ऊतय आप्रयातु परावतः अग्निरुक्थेन वाहसा स्वाहा वैश्वानरायेदमिति त्यागः सर्व
त्र ॥ ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषसति अजसंधर्ममीमेह स्वाहा २ वैश्वानरस्य दस० ३ पृष्टोदिविपृष्टो अग्निः० ४ जातो

यदग्ने० ५ त्वमग्नेशोचिषा० ६ अस्माकमग्ने० ७ वैश्वानरस्यसुमतौ० ८ अथैनमुपतिष्ठेतसहस्रशीर्षेति सूक्तेन ॥ ततःस्विष्ट
 कृदादिशेषसमापयेत् ॥ सर्वोवैरुद्रःविश्वंभूतमितिक्षाभ्यामग्न्युत्सर्गः ॥ आयुर्दाअग्नेइतिमन्त्रेणदर्भस्तंबस्थयजमानभागार्त्तिकं
 द्यन्धतरामिष्टिं कृत्वोपासनाग्नौसर्वाधानेदक्षिणाग्नौप्राणादिहोमादिविरजाहोमांतंकार्येअन्यस्मागवत् ॥ आहवनीयेअरणीमुस
 लोद्ध्रुखलातिरिक्तदारुपात्राणांदाहः ॥ ततआत्मन्याहवनीयाग्निसमारोपःपूर्ववत् अरणीद्वयंगार्हपत्येप्रक्षिप्यतत्समारोपंकृत्वा
 दक्षिणाग्नौमुसलोद्ध्रुखलेहुत्वादक्षिणाग्नेरपिसमारोपः ततऔपासनाग्नेःसमारोपइतिक्रमः ॥ अत्रविशेषोन्वयत्रज्ञातव्यः ॥ इति
 साम्निकप्रयोगः ॥ स्नातकंप्रतिब्रह्मान्वाधानविरजाहोमादिरहितोवाप्रयोगोऽग्न्यभावात् ॥

श्रीः ॥ पुत्रःशिष्योवास्तात्वावपनंकृच्छ्रत्रयंचाधिकारार्थंकुर्यात् पुत्रातिरिक्तस्यवपनंकृताकृतं ॥ देशकालौस्मृत्वाब्रह्मीभूतस्य
 यतेःशौनकोक्तविधिनासंस्कारंकरिष्ये । नवंकलशंतीर्थेनापूर्य गंगेचयमुने० नारायणःपरंब्रह्म० उच्चकिंचिज्जगत्सर्वं० इति
 मन्त्रैरभिमन्त्र्यरुद्रसूक्तविष्णुसूक्तापोहिष्ठादिभिर्यतेःस्नानंविधाय चंदनादिभिःकलेवरंसंपूज्यमाल्यादिभिरलंकृत्यवाद्यधोपा
 दिभिःशुद्धदेशंनयेत् जलेस्थलेवासमाहितंकुर्यात् स्थलपक्षेर्गतंव्याहृतिप्रोक्षितमुविदंडप्रमाणंकृत्वामध्येसूक्ष्मगर्तंसार्धहस्तंकृ
 त्वासप्तव्याहृतिभिःपंचगव्येनत्रिःप्रोक्ष्य जलपक्षेनद्यांपंचगव्यंप्रक्षिप्यकुशानास्तीर्थसावित्र्यादेहंप्रोक्ष्यशंखोदकेनपुरुषसूक्तेना

मृतयति-
॥३७४॥

॥४३९॥

द्योत्तरशतावृत्तप्रणवैश्चसंस्त्राप्याष्टाक्षरेणषोडशोपचारैःसंपूज्यतुलसीमालाद्यैरलंकृत्यविष्णोहव्यंरक्षस्वेतिदेहंगर्तेनद्यांवाक्षिपे
 त् । इदंविष्णुरितिदंडत्रेधाभग्नंदक्षिणहस्तेस्थापयेत् । हंसःशुचिपदितिपरेणनाकंनिहितंगुहायांविभ्राजदेतद्यतयोविशंति ।
 वेदांतविज्ञानसुनिश्चितार्थाःसंन्यासयोगाद्यतयःशुद्धसत्त्वाः । इतिहृदयेजपेत् पुरुषसूक्तंभ्रुवोर्मध्येजपेत् ब्रह्मजज्ञानमितिमूर्ध
 निमूर्धानंभूर्भुवःस्वश्चेत्युक्त्वाशंखेनभेदयेत् । अथवाभूमिभूमिमगान्मातामातरमप्यगात् । भूयास्मपुत्रैःपशुभिर्योनोद्वेष्टिस
 भिद्यतामितिमंत्रेणपरश्वादिनाभेदयेत् । शिरोभेत्तुमशक्तःशिरस्थापितंगुडपिंडादिकंभिद्यात् । गर्तपुरुषसूक्तेनलवणेनप्रपू
 रयेत् । सुगालश्वदिदक्षार्थसिक्तादिभिःप्रपूरयेत् । नद्यादौशिरोभेदनोत्तरंदर्भैराच्छाद्यव्याहृतिभिरभिमंत्र्यपाषाणंबद्धा
 ॐ स्वाहेतिहृदेन्यसेत् ॥ ततोऽग्निनाग्निःस० त्वंह्यग्नेअग्निना० तंमर्जयंतसुक्रतु० यज्ञेनयज्ञं० इत्यृक्चतुष्टयेनचित्तिःस्रुगित्या
 दिभिर्दशहोत्रादिसंज्ञकयजुर्मंत्रैश्चाभिमंत्रयेत् । अतोदेवाइतिजपित्वापापैर्मुक्ताअश्वमेधादिफलभागिनोवयमितिभावयंतो
 ऽवभृथबुद्ध्यासर्वेनुगामिनःस्नात्वागंधादिधृत्वासोत्सवागृहंगच्छेयुः । अत्रपरमहंसस्यस्थलेसमाधिमुख्यःजलेमध्यमः । कुटी
 चकंतुप्रदहेत्पूरयेच्चबहूदकं । हंसोजलेतुनिक्षेप्यःपरमहंसंप्रपूरयेदिति वचनात् । अत्रपरमहंसंप्रकीरयेदितिक्वचित्साठः । एको
 द्विष्टंजलं पिंडमाशौचंप्रेतसत्क्रियां । नकुर्थाद्द्वार्पिकादन्यद्ब्रह्मीभूतायभिक्षवे । कुटीचकातिरेकेणनदहेद्यतिनंक्वचित् ॥ ॥
 ततःकर्तास्नात्वाचम्यसिद्धिं गतस्यब्रह्मीभूतभिक्षोस्तृप्त्यर्थतर्पणंकरिष्येइतिसंकल्प्य सव्येनदेवतीर्थेनैवात्मानमंतरात्मानंपरमा
 त्मानमितिचतुश्चस्तुस्तर्पयित्वा शुक्लपक्षेमृतस्यसंकर्पणादिद्वादशनामभिः कृष्णपक्षेमृतस्यसंकर्पणादिद्वादशनामभिःकेशवंतर्प

यामीत्येवंद्वितीयातैः कुर्यात् ॥ इदं क्षीरेणेति केचित् । ततः सिद्धिगतस्य भिक्षोस्तृतीयार्थं नारायणपूजनं बलिदानं घृतदीपदानं च करिष्ये इति संकल्प्य देवयजनोपरितीरे वाममुन्मयलिंगं कृत्वा पुरुषसूक्तेनाष्टाक्षरेण च षोडशोपचारपूजां कृत्वा घृतमिश्रपायसबलिं दत्वा दशदिनांतं प्रत्यहं तर्पणं लिंगपूजनं पायसबलिदीपदानानि कुर्यात् ॥

श्रीः ॥ तत्र मध्याह्ने नद्यादौ श्राद्धांगतिलतर्पणं कृत्वा देशे हनिपार्वणश्राद्धम् ॥
तिलुः करिष्यमाणदशोदिसर्वश्राद्धाधिकारार्थमाद्यपार्वणश्राद्धं करिष्ये इति पुत्रादिः संकल्पयेत् ॥ ४३ ॥

बदादिश्राद्धाधिकारार्थं तत्पितृसंबन्धिनामगोत्रोद्देश्यता सिद्ध्यर्थं च पार्वणश्राद्धमिति संकल्पयेत् । अन्यत्समानं । पुरुरवार्द्रव संज्ञका विश्वेदेवाः । पितृपितामहप्रपितामहानां नामगोत्रादिसहितानामुच्चारः । सर्वत्र पितुर्ब्रह्मीभूत इति विशेषणमात्रमधिकं शेषं प्रत्यब्दश्राद्धवत् । केचिच्छिष्यः कर्ता चेदात्मांतरात्मन उद्दिश्य साधुरुरुसंज्ञकदेवयुतं सव्येन देवधर्मकं नादीश्राद्धं वदेकादशाहं पार्वणश्राद्धं कुर्यादित्याहुः । अत्र सर्वत्र विस्तरस्तोरोक्तसंन्यासपद्धतौ द्रष्टव्यः ॥ ४४ ॥

श्रीः ॥ देशादिस्मृत्वासिद्धिगतस्य भिक्षोः संभावितसर्वपापपक्षयपूर्वकं विष्णुलोकावाप्तिद्वारा श्रीनारायणप्रीत्यर्थं नारायणबलिं

करिष्ये इति संकल्प्य त्रयोदशयतीन्विप्रान्वानिमंत्र्य शुक्लपक्षे केशवरूपिगुर्वथ त्वया क्षणः कर्तव्य इत्येवं दामोदरांतं केशवादिद्वाद-
 शनामभिः क्षणोदेयः । कृष्णे तु संकर्षणादिद्वादशनामभिः । त्रयोदशं विप्रं विष्णवर्थं त्वया क्षणः कर्तव्य इति निमंत्र्य पादान्प्रक्षा-
 ल्य प्राङ्मुखानुपवेशयेत् । विप्रग्रेस्थं डिले निप्रतिष्ठापनादि । अन्वाधाने च क्षुब्ध्या ज्येनेत्येते शिवायुं सूयं प्रजापतिं च व्यस्तसमस्त-
 व्याहृतिभिरेकैकपायसाहुत्या विष्णुमतो देवा इति षड्भिः प्रत्यृचमेकैकपायसाहुत्या नारायणं पुरुषसूक्तेन प्रत्यृचमेकैकपायसाहुत्या
 शुक्लकेशवादिद्वादशदेवताः कृष्णे संकर्षणादिद्वादशदेवताः एकैकपायसाहुत्या शेषेणेत्यादि द्विपंचाशदधिकशतमुष्टीं शिरूज्य
 बलिपर्याप्तं तुलानोप्याष्टत्रिंशदाहुतिपर्याप्तं पुरुषाहारमित विष्णुनैवेद्यपर्याप्तं च क्षीरे श्रपयित्वा ज्यभागं ते निपूर्वतः शालग्रामे
 विष्णुसूक्तेनाष्टाक्षरेण च षोडशोपचारैः संपूज्य सुचाहस्तेन वान्वाधानानुसारं होमत्यागौ विदध्यात् । एवं शुक्लकृष्णभेदेन केश-
 वादिद्वादशांताः संकर्षणाद्यं तावाष्टत्रिंशदाहुतीं हुत्वा स्विष्टकृदादिशेषं समाप्य पुनः शालग्रामं संपूज्य विष्णुगायत्र्या विष्णवेर्ध्वं द-
 त्वा हुतं शेषपायसेन विष्णवे बलिं दत्वा निमंत्रित त्रयोदश विप्रान्केशवादिक्रमेण केशवरूपिगुरवे नम इदमासनमित्यादिनासनं
 धपुष्पधूपदीपाच्छादनादि दत्वा त्रयोदशे विप्रे पुरुषसूक्तेन प्रत्यृचांते विष्णवे नम इत्येवमादिना विष्णुदीपांतोपचारैः पूजयेत् । चतु-
 रस्रमंडलेषु त्रयोदशभोजनपानाण्यासाद्योपस्तीर्यान्नं परिषिच्य पृथिवीते पात्रमित्यादिना केशवादिद्वादशोद्देशेन विष्णूद्देशेन
 चान्नं त्यक्त्वा अतो देवा ॐ तद्ब्रह्म ॐ तद्वायुं ब्रह्मार्पणमित्याद्यापोशनादिप्राणाहुत्यं ते नारायणाद्युपनिषद्भागान्पठेत् । तृसिप्र
 श्रांते आचांतेषु विप्रेषु प्रागग्रान्दर्भानास्तीर्याष्टाक्षरेणाक्षतोदकं दत्वा केशवरूपिणे गुरवे ऽयं पिंडः स्वाहानमम इत्येवं द्वादशपिंडान्द-

द्यात् । कृष्णे तु संकर्षणादिनामभिरितिसर्वत्र । पिंडेषु विष्णुं संपूज्य पुरुषसूक्तेन स्तुत्वा विसर्जयेत् । विप्रेभ्यस्तांबूलदक्षिणादिदत्त्वा त्रयोदशाय विप्राय नाभ्या आसीदित्याद्युक्त्रयेण फलतांबूलदक्षिणां दत्त्वा नमस्कृत्य तां शालग्राममूर्तिमाचार्याय दद्यात् । इति नारायणबलिः ॥ अत्र द्वादशाहे त्रयोदशाहे वा यथाचारमारामनमपेक्षितं तत्प्रयोगः प्रथमे प्रकरणे श्राद्धकांडे गतस्ततो वगंतव्यः ॥

श्रीः ॥ मातरुत्थाय ब्रह्मणस्पत इति जपित्वा दंडादीनि मृदं चादाय भूत्रपुरीषयोर्गृहस्थचतुर्गुणं शौचं कृत्वा चम्य पर्वद्वादशीवर्ज्यं प्रणवेन दंतधावनं कृत्वा मृदाबहिः कटिप्रक्षाल्य जलतर्पणवर्ज्यं स्नात्वा पुनर्जघे प्रक्षाल्य वस्त्रादीनि गृहीत्वा प्रणवेन प्राणायाममार्ज

शेषो माधवादौ विश्वेश्वर्यादौ च ज्ञेयः ॥ सूर्योपस्थानादिकं त्रिकालविष्णुपूजादिकं च सिद्धौ ज्ञेयं । विधूमे सन्नमुसले व्यंगारे भुक्तवज्जने । काले पराल्ले भूयिष्ठे नित्यं भिक्षायतिश्चरेत् । अत्र भिक्षाभेदाः ग्रंथांतरे ज्ञेयाः । अत्र विविदिषोर्दंडिनः माधुकरीमुख्या । दंडवस्त्रादिपरिग्रहणरहितस्य तु करपात्रं मुख्यं । अन्ये पक्षा अशक्तविपयाः । तत्र माधुकरीपक्षे दंडादिगृहीत्वा पंचभ्यः सप्तभ्यो वा गृहेभ्यो भिक्षायां चित्वा न्नं प्रोक्ष्य भूः स्वधानमः इत्यादिव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिः सूर्यादिदेवेभ्यो भूतेभ्यश्च भूमौ क्षिप्त्वा शेषमन्नं विष्णुनिवेदितं भुंजीत । चंडीविनायकादिनैवेद्यं न भुंजीत । भूक्त्वा चम्य षोडशप्राणायामान्कुर्यादितिसंक्षेपः ॥ अथ तिभोजनप्रकारः ॥ यतिहस्ते जलं दद्याद्भिक्षां दद्यात्पुनर्जलं । भैक्ष्यं पर्वतमात्रं स्यात्तज्जलं सागरोपमं । एकरात्रं वसेत् ग्रामेनगरेपं

चरात्रकम् । वर्षाभ्योन्यत्रवर्षासुमासांश्चतुरोवसेत् । अष्टौमासान्विहारः स्याद्यतीनांसंयतात्मना । महाक्षेत्रप्रविष्टानां विहारस्तु न विद्यते । भिक्षादनं जपः स्नानं ध्यानं शौचं सुरार्चनं । कर्तव्यानि पडेता नि सर्वथानृपदंडवत् । मंचकं शुक्लवस्त्रं च स्त्रीकथा लौल्यमेव च । दिवा स्वापश्चयानं च यतीनां पतनानि षट् । वृथा जल्पं पात्रलोभं संचयं शिष्यसंग्रहं । हव्यं कव्यं तथा शं च वज्रये च स दायतिः । यतिपात्राणि मृद्धेणुदार्द्वलाबुमयानि च । नतीर्थवासी नित्यं स्यान्नोपवासपरोचतिः । नचाध्ययनशीलः स्यान्नव्या ख्यानपरो भवेत् । एतद्देदार्थभिन्नपरं । एते संक्षेपतो यतिधर्माः । अन्ये पिमाधवीयमिताक्षरादौ ज्ञेयाः ॥

॥ ३७८ ॥

श्रीः ॥ षण्मासाभ्यंतरेषु स्वपुरुषनिहिते गर्भमात्रे विनष्टे माता तन्माससंख्या समदिनमशुचिः स्नानशुद्धाः सपिंडाः ॥ अंत्ये मास द्वये तु त्रिदिनमशुचयोतः परं सूतिवत्स्याच्चातुर्वर्ण्यस्य तुल्यं भवति वयसि त्र्योच्यते शौचमात्रं ॥ १ ॥ जन्माशौचांतराले यदि दिशि शु

णैव शुद्धिः सर्वेषां सूतिकायास्त्वहचसकलकंप्रेतशुद्धिस्तु सद्यः ॥ २ ॥ स्नानं प्राङ्नामतो वर्गदशनजननतो हः परे ते त्रिदग्धेऽ दग्धे त्वत्रापि सद्यस्तदुपरि दिनमात्र्यब्दतश्चौलशून्ये ॥ सच्चौले तु त्रिरात्रं त्रिदिनमितरथाप्यात्र ताज्जात्यशौचं मातापित्रोस्तु पुत्रे तर्कं तु त्रिरात्रम् ॥ स्त्रीषु स्नानेन शुद्धये त्रिपुरुषविषये ज्ञातिराक्षौरकालादर्वाग्वादानतो ह्नां त्रिभिरुपयमना ऋतुगोत्रं स्वकंच ॥ ४ ॥

जन्मन्यौपेतमृत्यावपिचदशानिशाद्वादशानिपक्षमासवर्णाःक्रमेणाशुचयउचितकृच्छ्रद्रजातिस्तुपक्षम् ॥ वानप्रस्थेयतौचो
परमतिकुलजेषढकेचासुवःस्याद्योषिहोविप्रगुह्यैमृतवतिचदिनंयुद्धविद्धेतुसद्यः ॥ ५ ॥ शान्तेतीतेदशाहास्रभृतिविषयकेप्रा
क्त्रिमासात्रिरात्रंपक्षिण्याषष्ठमासाद्दिनमिहनवमात्स्यात्ततःस्नानमात्रम् ॥ ५ ॥ शान्तेतीतेदशाहास्रभृतिविषयकेप्रा
त्स्वंस्वमातुःसपत्यास्त्रिदिनमिदमतिक्रांतशौचंसमानम् ॥ ६ ॥ पित्रोर्गेहसमूढाप्रसवमरणयोरेकरात्रत्रिरात्रेस्यातांपित्रादि
कानामथपितृमरणेप्यूढपुत्र्यास्त्रिरात्रम् ॥ ६ ॥ पित्रोर्गेहसमूढाप्रसवमरणयोरेकरात्रत्रिरात्रेस्यातांपित्रादि
शुचिःसोदकस्तूभयत्र ॥ ७ ॥ पक्षिण्याशौचमृत्विक्कुदुहितसुतसहाध्यायिबंधुन्नयांतेवासिश्चश्रूसुमित्रश्चशुरभगिनिकाभगि
नेयप्रयाणे ॥ मातामह्यांचपित्रोःस्वसरिचविरतेमातुलेमातुलान्यांचाथोसज्योतिरेवस्वविषयनृपतौग्रामनाथेचनष्टे ॥ ८ ॥
शिष्योपाध्यायबंधुन्नयगुरुतनयाचार्यभार्यासगोत्रानूचानश्रोत्रियेषुस्वगृहपरमृतौमातुलैचैकरात्रम् ॥ ९ ॥ रात्रिसब्रह्मचारिण्यथ
तुकथमपिस्वल्पसंबंधयुक्तेस्नानंवासोयुतंस्यादिदमपिसकलंसर्ववर्णेषुतुल्यम् ॥ ९ ॥ ब्रह्माशौचस्यमध्येत्वपरमपिसमंस्वल्पकं
वासजातिप्रेतेजात्यंतरंवायदिभवतितदापूर्वशेषेणशुद्धिः ॥ द्वाभ्यांतद्रात्रिशेषेन्निभिरपरदिनैर्यामिनीयामशेषेनैवाशौचेनपि
त्र्यंपितुरुपशगनेपक्षिणीमातृमृत्यौ ॥ १० ॥ सर्वेत्वाशौचमंतर्थादिविदितमिदंशेषमात्रेणशुद्धिर्दाहादाहिताग्नौमरणदिवस
तोऽन्यत्रकुर्वाद्दशाहम् ॥ पूर्णेस्नात्वासचैलंविहितहितकृतावर्हकासूतिकातुत्रिंशद्वात्रंनयोग्यासुरपितृकरणेविंशतिपुत्रसूस्तु
॥ ११ ॥ निर्हृत्यान्यप्रमीतंदिवसमशुचिकोऽथासवर्णतदुकाशौचोथानाथमाद्यक्रतुशतफलभागाह्वेनैवशुद्ध्येत् ॥ नीत्वोपा

ध्यायमातापितृपरमगुरुर्ब्रह्मचारीनदोषीतेभ्योन्यनिर्हृतोऽस्यव्रतमपिविततंभश्यतेवश्यमेव ॥ १२ ॥ तुल्योत्कृष्टानुयानेव
 सनसहितकोभस्यबाहुत्यवह्निस्पृष्टाज्यंप्राश्यशुद्धयेदधदिनमशुचिर्होनवर्णानुयाने ॥ पक्षिण्येकांतरानुव्रजनइहभवेद्व्यंतरत्वे
 न्येभ्यस्तुतद्वत्पुनरुपनयनंचाधिकंकारयेत्तु ॥ १३ ॥ तातांवाचार्यकेभ्यो नलजलतिलदोब्रह्मचारीतदीयाशौचो
 हनविधौतंतमेवामुवन्ति ॥ १४ ॥ पालाशीमाहिताग्नेःप्रतिकृतिमथवास्थीनिदग्ध्वादशाहाद्याशौचकृत्स्याद्यावत्तेषांतदंतेव्रतमपिचचरेद्रोदनेत्वेकरात्रम् ॥ १५ ॥
 त्रीण्यहान्येवकुर्युः ॥ अन्योविप्राद्यशौचेसकृददनमदंस्तावदाशौचकृत्स्याद्यावत्तेषांतदंतेव्रतमपिचचरेद्रोदनेत्वेकरात्रम् ॥ १५ ॥
 जन्मन्यस्पृश्यतानोभवतिकुलभुवांमातृवर्जपितुस्तुत्नानादूर्ध्वसचैलादथनिधनकृताशौचकेल्पेत्रिभागे ॥ पूर्वांशस्योपरीत्यंम
 हतिचयदिसंचायनंवृत्तमासीन्नोचेत्तस्योपरिष्टादथतुगृहजयोर्दासयोराल्लवोर्ध्व ॥ १६ ॥ अन्नेनोपात्तयोस्तुत्रिरजनिचरणाद्
 तदासादिकानांस्वाम्याशौचाहसेव्यासमदिनगमनादूर्ध्वमन्यत्तुसूक्तं ॥ जातेपत्येतुतस्मिन्नहनिनिशिचतंमंगलार्थेषुयोग्याःस
 वाशौचंसदानोभवतियतिवनिब्रह्मचर्यस्थितानाम् ॥ १७ ॥ तत्तत्कार्येषुसत्रिब्रतिनृपनृपवदीक्षितर्विक्स्वदेशभ्रंशापत्स्वज्य
 नेकश्रुतिपठनभिषक्कारुशिल्पातुराणां ॥ १८ ॥ नाशौचाज्ञातयःस्युःपतितपतिसुतब्रह्मविद्घातिनीषुदोषात्याखंडिचौराश्रमरहितसुरापेयहीनोपगा
 त्सवेज्वेतदर्थे ॥ १८ ॥ नाशौचाज्ञातयःस्युःपतितपतिसुतब्रह्मविद्घातिनीषुदोषात्याखंडिचौराश्रमरहितसुरापेयहीनोपगा
 सु ॥ संदर्पात्सर्पविप्रक्षितिपपशुदिवाकीर्तिकाद्यैर्हतेषुस्वेच्छापूर्वचशस्त्रज्वलनजलविषानाशकाद्यैर्मृतेषु ॥ १९ ॥ नाशौचंशा

करैर्लघुधियाकृपयाद्विजानांलक्ष्मीशितुश्चतदयंसमभूत्सुपूर्णः ॥ ७ ॥ तमांचकन्निर्णयसागरेशःश्रीमांस्तुकारामचतुर्धराख्यः
(चौधरीत्युपनाम) ॥ वर्षत्रयात्मागधुनासभूयोऽप्यानंकसंवर्धचकर्तृहस्तात् ॥ ८ ॥ वर्णक्षोदकलाकलापकलनाच्छी
गरोविसुमरोवर्वतिलोकोत्तरः ॥ ९ ॥ जातौतत्तनुजाबुदारयशसौदीपात्प्रदीपाविवर्ज्येष्ठःपैतृकसद्गुणैःकिलतुकारामोऽभवन्म
तरमात्मगुणैर्जनप्रकुरुतामधिकंक्वशवर्तिनम् ॥ विनयतो नयतोऽधिकोऽन्यइतिसागरजाप्यवृणोच्चतौ ॥ १० ॥ पितुरनं
रिणीवचपलाकमलेतिलोकवादंविमार्ष्टुमिवयावचलासर्तीसा ॥ वृत्त्वामुदाचिरमरीरमदुत्सवेनलुब्धाप्रलोभकतदीयगुणै
गुणज्ञा ॥ १२ ॥ पूर्वगजेलावस्त्रिदु १८१८ शाकेऽभूदस्यमुद्रणम् ॥ चंद्राक्षिगजम् १८२१ शाकेऽधुनाभूत्पुनरंकनम् ॥ १३ ॥

इदं पुस्तकं पणशीकरोपादेन लक्ष्मणात्मजेन वासुदेवशर्मणा यथामति संशोधितं । तच्च
जावजी दादाजी इत्येतेषां “निर्णयसागरा” ख्यमुद्रणालयाधिपतिना
तुकाराम जावजी इत्यनेन मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।
शके १८२१, सन १८९९.

सन १८६७ मितस्य २५ राजनियमेनास्य पुनर्मुद्रणादयः सर्वेधिकारा अकचिन्ना स्वाधीना रक्षिता. सति.

॥ अथ ब्रह्मवैदियब्रह्मकर्मसमुच्चयः ॥

विषया ॥ ३७८ ॥